श्री मद्देवीभागवत महापुराण
मूल

संशोधक
पं. सरयू प्रसाद शास्त्री 'द्विजेन्द्र'

प्रकाशक -
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी - २२१००१
फोन - (०५४२) २३९०८५४
मूल्य : ५००/-

।।श्रीगणेशाय नमः।।

श्रीमद्देवीभागवतम्

महापुराणम्

श्रीमन्महर्षि-कृष्णद्वैपायनव्यास विरचितम्

(प्रथमस्कन्धादिद्वादशस्कन्धात्मक सम्पूर्ण)

संशोधक

पं. श्रीसरयूप्रसादशास्त्री 'द्विजेन्द्र'

प्रकाशक-

ज्योतिष प्रकाशन

चौक, वाराणसी-२२१००१

फोन नं. २३६०८५४

प्राप्ति स्थान-

ठाकुर प्रसाद बुकसेलर

चौक, वाराणसी-२२१००१

मूल्य सजिल्द : ५००)-

संशोधक-
पं. श्रीसरयूप्रसादशास्त्री 'द्विजेन्द्र'

प्रकाशक-
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी-२२१००१
फोनः-२३६०८५४

सन् २०१२

मूल्य सजिल्द ५००/-

फोटो कम्पोजिंग
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी-२२१००१
फोन नं. २३६०८५४

मुद्रक :
जय भारत प्रिंटिंग प्रेस
डी. ५१/१६८ सी-२
सूरजकुण्ड, वाराणसी - २२१०१०
दूरभाष (०५४२) २४११४१६

नवाह यज्ञ की संक्षिप्त सामग्री

अथ मंडप-विधान

१६ हाथ का वर्गाकार तृण-मण्डप या पट मण्डप। तोरण पताका, अशोकपत्र, केलास्तम्भ से सुसज्जित।

सर्वतोभद्र मण्डल (प्रधान वेदी)

नवग्रह वेदी, ६४ योगिनी, हवनवेदी, शान्ति कलश।
दशदिक्पाल वेदी ६४ योगिनी व्यासगद्दी तथा अन्यान्य आसन

(मण्डपाङ्ग सामग्री)

पंच पल्लव	पूजनसामग्री
पंचगव्य	वरणसामग्री
पंचामृत	दानसामग्री
पंचरत्न	हवनसामग्री
नवरत्न	नवग्रह-समिधा
सप्तमृत्तिका	बलि-सामग्री
सप्तधान्य	विविध पुष्प, फल वस्त्र
	विभूषणादि

कलश २ घट, १० मेटा, पुरवा, ढकनी दीया, पत्तल, दोना, प्रधान कलश तांबे का।

श्रीपूजन - सामग्री

श्रीमद्भागवतं ध्यात्वा देवीप्रीत्यै मयाऽधुना।
नवाहयज्ञ - सामग्री संक्षेपेण निवेद्यते।।

अक्षत	बतासा
छुट्टा पान	शर्करा (गुड़)
कस्तूरी	तिल
रोरी	दूध, दही
गुलाल	गरी गोला
मेहदी बुक्का	नारियल
नारा	सोपारी
कपूर	केशर
सलाई	अतर
कुश	अबीर
विल्वपत्र	हल्दी, बुक्का
विविध पुष्प-मालाएं	सिन्दूर
पंचरंग	सर्वौषधि
शहद	रुई

धूपबत्ती	पंचपात्र
दुर्वा	विविध प्रकार के वस्त्र
तुलसी दल	लवंग
पंचमेवा	पूर्णपात्र
कच्चा सूत	अष्टधातु
गोघृत	शंख
पेड़ा, लड्डू	कमण्डलु
यव, उरद	गंगाजल
ऋतुफल	काँसे की कटोरी
पीली सरसों	लोटा, गिलास
धूप-दीप	यज्ञोपवीत
आरती	आभूषण
कुशासनी ७	लाइची छोटी बड़ी
गुलाबजल	अष्टगन्ध
तीर्थजल	रुद्राक्षमाला
थाली, कटोरी	घरी-घंटा

(वरण-सामग्री व्यास के लिये)

धोती	पीताम्बरी धोती
गमछा	चादर (सिल्क)
पगड़ी	मिर्जई यां कुरता
यज्ञोपवीत	आसनी
जयमाला	जलपान
लघुपात्र	भोजनपात्र

(आचार्यादि वरण)

धोती	गमछी
चादर (शिवनामी)	यज्ञोपवीत
आसनी	पंचपात्र

नवाह यज्ञ की संक्षिप्त सामग्री

(प्रधान वेदीपर)		तश्तरी, बटुली २	चौकी, बेलना
		लोहे का चूल्हा	अन्न-वस्त्र
ताम्र कलश	रेशमी साड़ी	तांबा	फल, व्यंजनादि
चुनरी, लहंगा	लाल वस्त्र	(हवन द्रव्य)	
आभूषण	देवी की स्वर्ण प्रतिमा	धूम्र, चूर्ण	श्वेत चंदन
(शय्यादान)		चंदन धूरा	रक्त चंदन
पलंग, तोषक	पदत्राण	देवदारु	भोजपत्र
तकिया, चादर	भोजन पात्र	चावल	अगर, तगर
दरी-गलैचा	लोटा, गिलास	यव, तिल	तज
दुलाई	कटोरी, कड़ाही	गुड़	कवलगट्टा
धोती	सड़सी, कलछी	गुग्गुल	पंचमेवा
गमछी	बालटी	जटामासी	तालमखाना
मिर्जई, चादर	चिमटा	करायल	जावित्री
छाता	चम्मच	छड़ीला	गोघृत आदि

नवाह्निक पाठ-विधि

सर्वप्रथम किसी दैवज्ञ पुरुष द्वारा 'नवाह-परायण' का शुभ-मुहूर्त्त * निश्चित करे। तत्पश्चात् शुभ-यज्ञ-मण्डप तैयार कराये। मण्डप १६ हाथ लम्बा-चौड़ा सुन्दर तोरणादि से सुसज्जित रहना चाहिये। साधारणतया दोनों नवरात्रों (आश्विन-चैत्र के) तथा आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, कार्तिक, मार्गशीर्ष (अगहन), माघ एवं फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक एक नवाह-यज्ञ (देवीमख) का विधान है। चक्रशुद्धि () भी आवश्यक है, मण्डप के मध्य में चार हाथ लम्बी-चौड़ी तथा एक हाथ ऊँची सुन्दर वेदी बनानी चाहिये, अथवा काठ की कोई सुन्दर चौकी ही व्यास-गद्दी के काम आ सकती है। यज्ञ-सामग्री विधिवत् तैयार करके प्रतिपदा को प्रातःकाल नित्य-कर्म से निवृत्त हो, स्नान-सन्ध्योपरान्त कथावाचक (पाठक) एवं श्रोता (यजमान) को नवग्रहादि, गणेश-पूजन तथा कलश-स्थापन पूर्वक यज्ञारम्भ करना चाहिये।

इस देवीभागवत के नवाह्निक-परायणकर्त्ता किंवा देवीमख (यज्ञ) कर्त्ता यजमान को चाहिये कि वह परम शैव, वैष्णव किंवा शाक्त विद्वान् ब्राह्मण द्वारा ही श्रीमद्देवीभागवत महापुराण का परायण किंवा कथा-श्रवण करे। उस समय यथाशक्ति कथावाचक 'व्यास' की विधिवत् पूजा-अर्चा करके श्रद्धा-भक्तिपूर्वक कथा श्रवण करे। अन्त में नवें दिन देवीयज्ञ

---

* नवाह-परायण यज्ञ में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार तथा अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल और श्रवण नक्षत्र शुभ हैं। गुरु-शुक्र-शुद्धि के साथ चक्र-शुद्धि का विचार भी कर लेना चाहिये। गुर्वास्त तथा शुक्रास्त में यह कार्य निषिद्ध है, हाँ! अधिक मास (मलमास) में भी किया जा सकता है।

()-नवाह यज्ञ की चक्र-शुद्धि के विषय में यह ध्यान रहे कि गुरु स्थित नक्षत्र से चौथे नक्षत्र तक पाठारम्भ करने से धर्म प्राप्ति, पञ्चम से आठवें तक लक्ष्मी-सुख प्राप्त होता है, गुर्वेधिष्ठित नक्षत्र से बीसवें नक्षत्र तक कथारम्भ या पाठारम्भ करने में शरीर पीड़ा, चौबीसवें में राज्य-भय एवं सत्ताइसवें तक पुनः ज्ञान की प्राप्ति होती है, किन्तु दोनों नवरात्रों में तथा देवीभागवत की नित्य परायण-कथा में इस चक्र-शुद्धि का विचार नहीं किया जाता।

(अनुष्ठान या कथा) की पूर्णाहुति करके यथाशक्ति ब्राह्मण-भोजन एवं कुमारी-पूजन भी करे। उस समय मण्डपस्थ प्रधान वेदी पर नवार्ण मंत्र का यन्त्र अथवा कलश पर देवी की धातुमयी प्रतिमा का पूजन अवश्य होना चाहिये। विधिवत् गणेश-पूजन, वटुक-क्षेत्रपाल, सप्तमातृका, नवग्रह एवं योगिनियों का पूजन करके प्रधान देवों, लोकपालों तथा दिक्पालों का भी षोडशोपचार से पूजन-विधान करके श्रीसूक्त या नवार्ण-मंत्र से भगवती महाशक्ति(दुर्गा) की पूजा होनी चाहिये। साथ ही देवीभक्त साधकों को यह विशेष ध्यान रखने योग्य है कि प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर अपने हृदय या शिरोदेश (सहस्रार) में उज्ज्वल पद्म के अन्तर्गत सद्गुरु का स्मरण करके मूल प्रकृति आदि शक्ति भगवती के बीज-मंत्र 'ह्रीँ' का इस प्रकार ध्याम करे—

"प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे प्रतिप्रयाणेऽप्य-मृताममानाम् ।
अन्तःपदव्यामनुसञ्चरन्तीमानन्दरूपामबलां प्रपद्ये ॥१॥"

अर्थात् प्राण क्रिया की गति करते समय जो प्रथम प्रयाण (आरम्भ) में विद्युत् के समान प्रकाशमान रहती हैं और प्रतिप्रयाण (पुनः मूलाधार में लौटते समय) में अमृत सदृश सुखकर जान पड़ती हैं। इसी प्रकार अन्तिम प्रयाण (सुषुम्ना में विचरते समय) में भी जो अत्यानन्द देती हैं, उन परमानन्द स्वरूपिणी भगवती 'कुण्डलिनी' देवी की मैं शरण ग्रहण करता हूँ। ध्यानोपरान्त इस प्रकार स्तुति (प्रार्थना) करनी चाहिये—

"कात्यायिनि महामाये! भवानि भुवनेश्वरि! संसार-सागरे मग्नं मामुद्धर कृपामये!॥२॥
ब्रह्मविष्णुशिवाराध्ये! प्रसीद जग जगदम्बिके! मनोऽभिलषितं देवि! वरं देहि नमोऽस्तु ते"॥३॥

इसके बाद परायण-पाठ (नवाह्निक कथा) का अङ्गन्यास, करन्यास करके नवार्ण मन्त्र द्वारा इस प्रकार विनियोग करे— "ॐ अस्य श्रीमद्देवीभागवताख्यस्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीकृष्णद्वैपायन ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्रीमणिद्वीपाधिवासिनी भगवती महाशक्तिः देवता, ब्रह्म बीजम्, गायत्री शक्तिः, भुक्ति-मुक्ति के कीलकम्, पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः॥" उस समय अनुष्ठान के प्रारम्भ में तथा अन्त में क्रमशः उपरोक्त श्लोक अवश्य सुनाना चाहिये।

---

* नवाह-परायण पाठक्रम *

१- प्रथम दिन - प्रथम स्कन्ध से तृतीय स्कन्ध के ३ अध्याय तक (३५)
२- द्वितीय दिन- ३ स्कन्ध के ४ अध्याय से ४ स्कन्ध के ८ अध्याय तक (३५)
३- तृतीय दिन- ४ स्कन्ध के ९ अध्याय से ५ स्कन्ध के १८ अध्याय तक (३५)
४- चतुर्थ दिन - ५ स्कन्ध के १९ अध्याय से ६ स्कन्ध के १८ अध्याय तक (३५)
५- पंचम दिन - ६ स्कन्ध के १९ अध्याय से ७ स्कन्ध के १८ अध्याय तक (३१)
६- षष्ठ दिन - ७ स्कन्ध के १९ अध्याय से ८ स्कन्ध के १७ अध्याय तक (३९)
७- सप्तम दिन- ८ स्कन्ध के १८ अध्याय से ९ स्कन्ध के २८ अध्याय तक (३५)
८- अष्टम दिन - ९ स्कन्ध के २९ अध्याय से १० स्कन्ध के १३ अध्याय तक (३५)
९- नवम दिन - ११ स्कन्ध के १ अध्याय से १२ स्कन्ध के १४ अध्याय तक (३८)

प्रथमे दर्शनं देव्यां द्वितीये तीर्थदर्शनम्। तृतीये महिषान्तन्तु प्रोक्तं भागवते ततः॥१॥
पूजा देव्याश्चतुर्थे च लक्ष्मीद्वारा विधानतः। पञ्चमे राज्यदानं हि हरिश्चन्द्रस्य सुव्रत!॥२॥
ध्रुवमण्डल-संस्थानं षष्ठेऽथ सप्तमे शृणु। संवादं यम-सावित्र्योश्चाष्टमे भ्रामरीकथा॥३॥
नवमे दिवसे प्रोक्तं पुराण-श्रवणं फलम्। 'द्विजेन्द्र'-विहितञ्चैतन्नवाह्निकमनुत्तमम्॥४॥

॥श्रीगणेशाय नमः॥

श्रीमद्‌देवीभागवत के विषय में

देवी भगवती की दृष्टि से पुराण वाङ्मय का शिरोमणि रत्न है देवीभागवत। श्रीमद्भागवत के ही समान १८००० श्लोकों से युक्त और द्वादश स्कन्धों में विभक्त यह महापुराण है। इसकी गणना महापुराणों में पांचवें क्रमाङ्क पर की जाती है।

देवीभागवतं तत्र पुराणं भोगमोक्षदम्। स्वयं तु श्रावयामास जनमेजयभूपतिम् (मा.१।१८)

कि 'भोग और मोक्ष प्रदान करने वाले देवी भागवत पुराण को महर्षि वेदव्यास ने स्वयं महाराज जनमेजय को सुनाया।' आगे देवी भागवत में महर्षि व्यासदेव ने महाराज जनमेजय से स्वयं कहा है।

श्रीमद्भागवतंनाम पुराणंपरमं शृणु। त्वामहं श्रावयिष्यामि कथां परमपावनीम्
(२।१२।५७-५८)

अर्थात् 'श्रीमद्भागवत महापुराण को श्रवण करो। मैं तुमको परम पावनी कथा सुनाऊँगा। इस प्रकार महर्षि व्यास इस के वक्ता हैं और महाराज जनमेजय श्रोता।

यह महाराज जनमेजय वही हैं जिनके पिता राजा परीक्षित को परमहंस शुकदेवजी ने श्रीमद्भागवत संहिता सुनाई थी। इस संहिता के माहात्म्य में लिखा है—

राज्ञो मोक्षं तथा वीक्ष्य पुरा धाताऽपि विस्मितः। (माहा. १।१७)

अर्थात् श्रीमद्भागवतसंहिता को श्रवण कर महाराज परीक्षित मुक्त हुए। उनके मोक्ष को देखकर पहले पितामह ब्रह्मा को भी आश्चर्य हुआ था। किन्तु यहां लिखा हैः—

कृतेन सुकृतेनाऽपि न पिता स्वर्गतिं गतः। (देवी भागवत २।१२।५४)

इसका अर्थ यह निकलता है कि पिता परीक्षित की परमगति में अब तक महाराज जनमेजय के पुण्य कार्य का कोई उपयोग नहीं हो पाया है। देवीभागवत ने इसकी पूर्ति की है। श्रीमद्भागवत संहिता की परम्परा है- श्रीमन्नारायण-पितामह ब्रह्मा-ब्रह्मर्षि नारद-महर्षि वेदव्यास- परमहंस शुकदेव।

वहां बताया गया है कि ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेद, संहिता, सामवेद संहिता अथर्ववेद संहिता एवं पुराण संहिता के सम्पादन तथा महाभारत की रचना से महर्षि वेदव्यास को शान्ति एवं प्रसन्नता उपलब्ध न हो सकी। ब्रह्मर्षि नारद ने भागवत दृष्टिकोण से पुराण संहिता की रचना करने का परामर्श दिया। तदनुसार महर्षि वेदव्यास सात्वत (भागवत) संहिता की रचना की और परमहंस शुकदेव को इसे पढ़ाया। लिखा हैः—

स संहितां भगवतीं कृत्वाऽनुक्रम्य चात्मजम्। शुकमध्यापयामास निवृत्तिनिरतं मुनिः
(श्रीमद्भागवत१।७।८)

अर्थात् श्रीभगवती संहिता निर्माण कर वेदव्यास ने निवृत्तिपरायण शुकदेव मुनि को इसका अध्ययन कराया। देवीभागवत से ज्ञात होता है कि ब्रह्मचर्याश्रम को पूर्ण कर जब शुकदेव पिता के पास आये तो पिता ने उनको विवाह करने का आदेश दिया। शुकदेव के निषेध करने पर पिता वेदव्यास ने समस्त पुराणों के भूषण देवीभागवत को अध्ययन करने का आदेश दिया। शुकदेव ने पुराण का अध्ययन किया। किन्तु जैसा कि कहा हैः—

शुकोऽधीत्य पुराणन्तु स्थितो व्यासाश्रमेशुभे। न लेभे शर्म धर्मात्मा ब्रह्मात्मज इवापरः
(देवी भागवत१।१६।४०)

अर्थात् उनको शान्ति नहीं मिली। तब व्यासदेव ने उनको महाराज जनक के यहाँ जाने का आदेश दिया। वहाँ पहुंचने पर उनको महाराज जनक का उपदेश मिला। इससे उनके मन को बड़ी शान्ति मिली। पिता के आश्रम पर लौटकर उन्होंने पितरों की कन्या पीवरी से विवाह किया। इस विवाह से उनके चार पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई। इसके पश्चात् यथा समय शुकदेव ने पिता का साथ छोड़ दिया। कैलाश पहुंचकर वे समाधिस्थ हुए और व्यष्टि शरीर को समष्टि में विलीन करने में सफल हो गये।

व्यासजी ने वहाँ पहुँचकर जब अपना दुःख प्रकट किया और पुत्रदर्शन की उत्कट इच्छा की तो शङ्करजी की कृपा से-

तदा ददर्श व्यासस्तु छायां पुत्रस्य सुप्रभाम्। (देवी भागवत१।१९।५८)

देवर्षि व्यासदेव ने शुकदेव की छाया देखा। इन शब्दों में वह सारा रहस्य है जो कथा भेद को निवारण कर देता है।

आगे चल कर छठें स्कन्ध में मोहवश नारद को स्त्री का रूप प्राप्त करने की कथा आई है। स्वयं नारद का वचन हैः-

ततोऽहं स्त्रीत्वमापन्नः। (देवी भागवत६।२८।४५)

कि तब मैं स्त्री बन गया। इस स्त्री रूप में महर्षि नारद का राजा तालध्वज से विवाह हुआ। अनेक पुत्र-पौत्रों की प्राप्ति हुई। बाद में सबका मरण और शोक होने पर भगवत्कृपा से पुनः उनको अपने पुरुष रूप की प्राप्ति हुई।

मज्जनादेव तीर्थेषु पुमाञ्जातः क्षणादपि। (देवी भागवत ६।२९।६२)

महर्षि नारदजी की समझ में स्वयं आ गया कि मैंने माया से मोहित होकर स्त्री भाव को प्राप्त किया था (हरिणा सह स्त्रीभावं प्राप्तो मायाविमोहितः)
(देवी भागवत ६।२९।६४)

श्रीमद्भागवत संहिता में ऐसी कथा नहीं है।

श्रीमद्भागवत का अपना दर्शन है और देवीभागवत का अपना। दोनों ही दर्शन अपने-अपने स्थान पर सुप्रतिष्ठित है। देवी भागवत का सम्बन्ध सारस्वत कल्प से तथा श्रीमद्भागवत का सम्बन्ध पाद्म कल्प से है। वैदिक विज्ञान की दृष्टि से तत्त्वगवेषणा के दो प्रकार रहे हैं। एक अग्नितत्त्व की दृष्टि से और दूसरा सोमतत्त्व की दृष्टि से। सारस्वत और पाद्म इसके भी द्योतक हैं।

तत्त्वमीमांसा के लिये देवीभागवत का अनुशीलन करने पर प्रकट होता है कि इस महापुराण में देवी भगवती का जो वर्णन हैं उसको हृदयङ्गम करने के लिये अन्य किसी दर्शन की आवश्यकता नहीं है। भगवती देवी परम तत्त्व हैं। कहा हैः-

निर्गुणा या सदा नित्या व्यापिकाऽविकृता शिवा ।
योगगम्याऽखिलाधारा तुरीया या च संस्थिता ।।
तस्यास्तु सात्त्विकी शक्ती राजसी तामसी तथा ।
महालक्ष्मीः सरस्वती महाकालीति ताः स्त्रियः ।।

(देवी भागवत१।२।१९।२०)

जो निर्गुण हैं सदा विद्यमान हैं। देशकाल और वस्तु की सीमा जिनको बांध नहीं पाती, जो सर्वव्यापिका हैं, जिनमें कोई विकार नहीं होता, जो कल्याणमयी हैं, जो योगसाधन के द्वारा जानी जाती है जो सबको धारण करने वाली हैं तथा जाग्रत, स्वप्न व सुषुप्ति से परे जो तुरीयावस्था में सदा स्थित हैं वे भगवती हैं। उनकी सात्विकी, राजसी और तामसी शक्तियां क्रमशः महालक्ष्मी, महासरस्वती तथा महाकाली के रूप में प्रकट होती हैं। जहां तक ब्रह्माण्ड की रचना, पालन और संहार का प्रसंग है रचना के लिये रजोगुणी शक्ति, पालन के लिये सतोगुणी शक्ति और संहार के लिये तमोगुणी शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। इसी दृष्टि से सरस्वती का पितामह ब्रह्मा के साथ, लक्ष्मी का विष्णु के साथ और काली का शिव के साथ सम्बन्ध है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश की त्रिमूर्ति पुराणों में इसी दृष्टि से वर्णित है। किन्तु जहां परमतत्त्व की मीमांसा का प्रश्न आता है वहां समस्त पुराण एक ही परमतत्त्व का प्रतिपादन करते हैं। नाम-रूप, सविशेष-निर्विशेष आदि का भेद भले ही रहा करे किन्तु तत्त्वतः परमतत्त्व दो नहीं हो सकते। सभी धर्म-ग्रन्थोंका परमतात्पर्य एक ही परमतत्त्व में है। देवीभागवतके अनुसार यह भगवतीतत्त्व ही है। सविशेष से परे निर्विशेष की चर्चा करते हुए कहा गया है:–

निर्गुणादुर्गमाशक्तिः निर्गुणश्चतथापुमान्। ज्ञानगम्यौ मुनीनांतु भावनीयौपुनःपुनः अनादिनिधनौ विद्धि सदा प्रकृतिपूरुषौ। (देवी भागवत ३।७।१०।११)

इसका तात्पर्य यह निकलता है कि परम शक्ति निर्गुण और परम पुरुष निर्गुण हैं। दोनों के नाम अलग-अलग हैं लेकिन तत्वतः-

या शक्तिः परमात्माऽसौ योऽसौ सा परमा मता। (देवी भागवत ३।७।१५)

जो शक्तिः है वही शक्तिमान परमात्मा है और जो परमात्मा है वही शक्ति है। इन दोनों में तत्त्वतः अभेद है। देवी ने स्वयं कहा है–

सदैकत्वं न भेदोस्ति सर्वदैव ममास्य च। (देवी भागवत ३।६।२)

कि शक्तिऔर शक्तिमान दोनों एक ही तत्व हैं। शक्तिकी दृष्टि से देवीभागवत का प्रतिपादन है। शक्तिकी आराधना स्वतः सिद्ध है। शक्तिकी साधना ही तो शक्तिमान का लक्षण है। जगत में यह साधना आराधना के रूप में अभिव्यक्तिहोती है। ज्ञान, क्रिया आदि इसके विविधरूप हैं। विभिन्न निदर्शनों के द्वारा ये सारे साधन के रूप देवीभागवत में वर्णित हैं।

आधिदैविक धरातल पर भगवती देवी के चरित्र का विश्लेषण करने पर ये पांच प्रसंग उपस्थित होते हैं-(१) मधु-कैटभ वध, (२) महिषासुर वध, (३) चण्ड-मुण्ड वध, (४) धूम्रलोचन वध और (५) शुम्भ-निशुम्भ वध। धार्मिक दृष्टि से ये प्रसंग देवासुरसंग्राम से सम्बद्ध हैं। देवी के विविध रूपों में प्रधानता जिन पाँच रूपों को प्राप्त हुई है वे नवम् स्कन्ध के प्रथम श्लोक में इस प्रकार वर्णित हैं।

गणेशजननी दुर्गा राधा लक्ष्मीः सरस्वती।सावित्री च सृष्टिविधौ प्रकृतिःपञ्चधा स्मृता।।

ये हैं– (१) दुर्गा, (२) राधा, (३) लक्ष्मी, (४) सरस्वती और (५) सावित्री। अन्तिम चार स्कन्धों में इनकी विस्तृत कथा है। सर्वशक्ति स्वरूपा दुर्गा, सर्वसम्पत्स्वरूपा लक्ष्मी, सर्वविद्यास्वरूपा सरस्वती, शुद्धसत्वस्वरूपा सावित्री तथा परमानन्दस्वरूपा राधा ये पांचों परिपूर्णतम् हैं। इनमें से राधा मूलस्थानीया हैं। *॥इति॥*

विषयानुक्रमणिका

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
	माहात्म्यम्	
१	ऋषीणां सूतम्प्रति पुराणश्रवण विपये प्रश्नः, देवीभागवतश्रवण-फलवर्णनम्	२१
२	स्यमन्तकमणिमानेतुंगते श्रीकृष्णे चिरायितेसति तत्प्राप्त्यै वसुदेवेन देवीभागवतश्रवणम्,चिन्ताकुल वसुदेवसमीपे नारदागमनम् नारदेन वसुदेवम्प्रति देवी-भागवत नवाहकथनम्	२३
३	स्कन्दागस्त्यसम्वादवर्णनम् श्राद्धदेवमनुवृत्तान्तवर्णनम् इलायाः पुंस्त्वप्राप्तिवर्णनम्	२६
४	देवीभागवतमाहात्म्यप्रसङ्गेन ऋतवाङ्मुनिचरित्रवर्णनम्, मुनिना रेवतीम्प्रति शापः, रेवत्या दुर्दम-राज्ञा सह विवाहवर्णनम्	२८
५	सविस्तरं श्रीमद्देवीभागवतमहा-पुराण श्रवणविधिवर्णनम्	३१
	प्रथम-स्कन्ध	
१	देवीभागवतस्यमहापुराणत्वादि सिद्धान्तनिर्णयः,ग्रन्थारम्भे मङ्गल-वर्णनपूर्वकमृपीणां, शौनकमुखेन पुराणविषयकः प्रश्नः	३५
२	भगवतीस्तुतिपूर्वकं ग्रन्थसङ्ख्या-विषयवर्णनम्,पुराणलक्षणवर्णनम्	३६
३	ससङ्ख्याकं पुराणाख्या तत्तद्-युगीयव्यासानुकथनञ्च महा-पुराणोपपुराणवर्णनम्	३७
४	देवीसर्वोत्तमेतिकथनम्प्रसङ्गतः शुकजन्मकथनञ्च, देवीसर्वोत्त-मेतिवर्णनम्	३९
५	श्रीविष्णुचरित्रवर्णनम्,ब्रह्मणा-महादेवीस्तवनार्थम्वेदान्प्रत्या-देशः, वेदकृताभगवतीस्तुति एवं हयग्रीवदानवाख्यान वर्णनम्	४१
६	ऋषीणां मधुकैटभयोराख्यान विषयकः प्रश्नः, मधुकैटभयो-रुत्पत्तिवर्णनम्	४५
७	ब्रह्मणामधुकैटभभीतेनपरेशस्तुतिः ब्रह्मकृताभगवतीस्तुतिवर्णनम्	४७
८	आराध्यनिर्णयवर्णनम्	४९
९	भयाकुलम्ब्रह्माणम्प्रतिविष्णोःप्रश्नः हरिणा सह मधुकैटभयोर्युद्धवर्णनम् देवीप्रसादान्मधुकैटभयोर्हरिणावधः	५०
१०	व्यासतपश्चर्यावर्णनम्	५३
११	तारोपाख्यानवर्णनम्, तारार्थे देवदानवयुद्धवर्णनम्	५४
१२	पुरूरवसउत्पत्तिपूर्वकं सुद्युम्नोपाख्यानवर्णनम् इलाकृताभगवतीस्तुतिवर्णनम्	५७
१३	पुरूरवस उर्वश्याश्च चरित्रवर्णनम्	५९
१४	शुकोत्पत्तिवर्णनम्, श्रीशुकस्य-गार्हस्थ्यधर्मे वैराग्यवर्णनम्	६०
१५	शुक वैराग्य वर्णनम्	६२
१६	विष्णुम्प्रति महालक्ष्मीवाक्यम् एतत्पुराण महिमावर्णनम् शुकम्प्रतिव्यासोपदेशः	६४
१७	जनकस्य परीक्षार्थं शुकस्य मिथि-लागमनम्, जनकस्य प्रतिहारेण सह शुकस्यसम्वादवर्णनम्, शुक-स्य राजमन्दिरे प्रवेशवर्णनम्	६६
१८	शुकाय जनकोपदेशवर्णनम्	६८
१९	शुकस्यजनकम्प्रतिस्वसन्देह निवारणार्थम्पुनः प्रश्नः शुकस्य विवाहादिकार्यवर्णनम्	७०
२०	शुकनिर्गमनोत्तरं व्यासकृत्यो पवर्णनम्, भीष्मचरित्रवर्णनम्	७२

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः

द्वितीय-स्कन्ध

१ सत्यवतीव्यासयोश्चरित्रवर्णनम् मत्स्यगन्धोत्पत्तिवर्णनम् ७५
२ पराशरमुनिचरित्रवर्णनम्, पराशराद्दासकन्योदरे व्यासस्य जन्मवर्णनम् ७६
३ ऋषिभिः शन्तनुचरित्रविषये प्रश्ने कृते सूतेन महाभिषराज्ञश्चरित्रवर्णनम्, ब्रह्मणः शापान्महाभिषस्य भूलोकेजन्मवर्णनम्.... ७८
४ गङ्गया सह शन्तनोर्विवाहवर्णनम् शन्तनोः सकाशाद् गङ्गायां पुत्रोत्पत्तिवर्णनम्...................... ८०
५ शन्तनोः सत्यवत्या सह विवाह वर्णनम् शन्तनुसत्यवत्योः सम्वाद वर्णनम्, देवव्रतप्रतिज्ञावर्णनम्...... ८२
६ व्यासाद्धृतराष्ट्रादीनामुत्पत्तिवर्णनम्, कर्णोत्पत्तिवर्णनम् युधिष्ठिरादीनामुत्पत्तिवर्णनम्....... ८५
७ पाण्डवानां कथानकवर्णनम् कर्णादीनां मृतानां दर्शनम्........ ८७
८ यदुकुलसंहारवर्णनपूर्वकं परीक्षितचरित्रवर्णनम्............... ९०
९ रुरुचरित्रवर्णनम्...................... ९१
१० तक्षकद्विजयोः सम्भाषणवर्णनम् नागानां तपस्विवेषेण,परीक्षितराजस्य समीपेगमनम्............... ९३
११ जनमेजयसमीपे मुनेरुत्तङ्कस्यागमनंरुरोराख्यानकथनञ्च सर्पसत्रायवद्धपरिकरस्य जनमेजयस्याऽऽस्तीकेननिवारणम्....... ९५
१२ जरत्कारुमुनिकथानकवर्णनम् एतत्पुराणश्रवणमाहात्म्यवर्णनम्.... ९८

तृतीय स्कन्ध

१ भुवनेश्वरीनिर्णयवर्णनम्............ १०१
२ विमानेन ब्रह्मादीनां गतिवर्णनम् १०२
३ विमानस्थैर्हरादिभिर्देवीदर्शनम्..... १०४
४ विष्णुना कृतं देवीस्तोत्रम्......... १०६
५ शिवकृतं एवं ब्रह्मकृतंदेवीस्तोत्रम् १०८
६ ब्रह्मणे श्रीदेव्याउपदेशः विष्णुशिवयोरर्थेदेवीवाक्यम्........ ११०
७ तत्त्वनिरूपणम्...................... ११३
८ गुणानांरूपसंस्थानादिवर्णनम्...... ११४
९ पुनरपिगुणानां लक्षणमधिकृत्य नारदप्रश्नः, गुणपरिज्ञानवर्णनम् ११६
१० सत्यव्रताख्यानवर्णनम्, मूर्खपुत्र निन्दावर्णनम्...................... ११८
११ सत्यव्रताख्यानवर्णनम्, वाग्बीजोच्चारणात्सत्यव्रतस्य सिद्धिलाभः १२०
१२ सात्त्विकराजसतामसभेदेनाऽम्बायज्ञविधिवर्णनम्................ १२२
१३ अम्बिकामखस्यविष्णुनाऽनुष्ठानम् १२५
१४ जनमेजयप्रश्नोत्तरं व्यासेन ध्रुवसन्धिनृपाख्यानवर्णनम्, युधाजिद्वीरसेनयोर्युद्धार्थसज्जीभवनम्........ १२७
१५ युधाजिद्वीरसेनयोर्दौहित्रार्थं युद्धम् मनोरमया भारद्वाजाश्रमम्प्रतिगमनम्........................ १२८
१६ युधाजितः सुदर्शनजिघांसया भारद्वाजाश्रमम्प्रतिगमनम् मनोरमया मुनिम्प्रति द्रौपद्रीहरणकथनम्.................. १३१
१७ वृद्धमन्त्रिणा सह युधाजितः परामर्शः, विश्वामित्रकथोत्तरं राजपुत्रस्य कामबीजप्राप्तिः....... १३३
१८ काशीराजसुतया शशिकलया मनसा पतिरूपेण सुदर्शनवरणम् शशिकलया मातरम्प्रति सन्देशप्रेषणम् १३५
१९ मात्रा स्वपुत्र्यर्थेसन्तोषप्रद वार्ताकथनम्,सुदर्शनेन सह राज्ञां स्वयम्वरेसमागमनं राजसम्वादवर्णनम् १३६
२० राजसम्वादवर्णनम्, नृपान्प्रति सुदर्शनवचनम्, स्वपितरम्प्रति शशिकलायाःकथनम्................ १३८

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
२१	सुबाहुना राज्ञां समीपे प्रार्थनाकरणम्, सुबाहुम्प्रति युधाजित उत्तरप्रेषणम्, कन्ययास्वपितरम्प्रति सुदर्शनेन सह विवाहार्थं कथनम्	१४१
२२	स्वपुत्रीवाक्यंश्रुत्वासुबाहुनासुदर्शनेन सह स्वकन्याविवाहकरणम् सुदर्शनशशिकलयोर्विवाहवर्णनम् सुबाहुनाऽऽगन्तुकनृपाणांसमीपे प्रार्थनाकरणम्	१४३
२३	सुदर्शनेन सह युधाजिद्राजस्य युद्धकरणम्, सङ्ग्रामे शत्रूणां व्यापादनार्थं महादेव्याः प्रादुर्भावः	१४५
२४	देवीमहिमवर्णनं काश्यां दुर्गावासश्च सुदर्शनेनदेवीमहिमकथनम्	१४७
२५	अयोध्यां गत्वा शत्रुजिन्मातरम्प्रति सुदर्शनद्वारा प्रार्थनाकरणम् लीलावत्या सुदर्शनम्प्रति-राज्य करणार्थकथनम्	१४९
२६	नवरात्रविधिमनुसृत्य नृपाय व्यासकथनम्, कुमारीपूजावर्णनम्	१५१
२७	पूजाविधौ वर्जितकन्यानाम्वर्णनम् अष्टम्यादितिथिपूजामाहात्म्यवर्णनम्	१५३
२८	जनमेजयस्य रामचरित्रविषये प्रश्ने कृते व्यासेन तच्चरित्रवर्णनम्	१५५
२९	रावणकृत सीताहरणवर्णनम् लक्ष्मणकृतरामशोकसान्त्वनम्	१५७
३०	नारदेन रामम्प्रतिव्रतकथनम् रामाय देवीवरदानम्	१५९

चतुर्थ-स्कन्ध

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
१	जनमेजस्य कृष्णावतारविषयकः प्रश्नः, जनमेजयप्रश्नवर्णनम्	१६१
२	कर्मणो जन्मादिकारणत्वनिरूपणम् कश्यपापराधविषये राज्ञः प्रश्नः	१६२
३	कश्यपशापवार्त्तावर्णनम् दित्या अदित्यै शापदानम्	१६४
४	अधमजगतः स्थितिवर्णनम्	१६६
५	नरनारायणकथावर्णनम्	१६८
६	नरनारायणयोः समीपे वसन्तगमनं नारायणेनोर्वशीरचनाकरणम्	१७०
७	अहङ्कारावर्तनवर्णनम्	१७२
८	च्यवनमुनिनापाताले प्रह्लादसमीपेगमनम्, प्रह्लादस्यतीर्थयात्राकरण वर्णनम्	१७४
९	प्रह्लादनारायणयोः समागमवर्णनम् प्रह्लादनारायणयोर्युद्धवर्णनम् प्रह्लादनारायणयोर्युद्धे विष्णोरागमनम्	१७६
१०	नरनारायणयोः कथं युद्धबुद्धिरिति जनमेजयप्रश्नः, व्यासेन जनमेजयम्प्रति भृगुशापकारणकथनम्	१७८
११	शुक्रस्य मन्त्रलाभार्थंगमनम्, शुक्रमात्रा दैत्यरक्षणं तन्मृत्युवर्णनञ्च	१८०
१२	भृगुणा हरये शापदानम् काव्य मातुरुज्जीवनवर्णनम् जयन्त्या सह शुक्रसहवासवर्णनम्	१८२
१३	कथं दैत्यगुरुणा दैत्यवञ्चनेति विषये जनमेजयप्रश्नः, व्यासेन देहवन्तः सर्वेएवरागवन्त इति वर्णनम्	१८४
१४	दैत्यानां समीपे शुक्रगमनं तान्प्रति शुक्रशापश्च, प्रह्लादेन शुक्रस्य क्रोधशान्तिकरणम्	१८६
१५	इन्द्रकृता भगवतीस्तुतिः प्रह्लादकृताभगवतीस्तुतिः	१८८
१६	हरेर्नानावताराणाम्वर्णनम्	१९०
१७	सुराङ्गनानां कृते नारायणवरदानम् कृष्णावतारविषये राज्ञःप्रश्नः	१९१
१८	दुष्टराजभाराक्रान्तयामेदिन्या ब्रह्माणम्प्रतिगमनम्, धरयाब्रह्मसमीपे गमनं, ब्रह्माणम्प्रतिविष्णुवाक्यम्	१९३
१९	देवैःशक्तिस्तवनम्	१९५
२०	भारावतरणोपक्रमे वासुदेवांशावतारवर्णनम्कृष्णावतार-कथोपक्रमवर्णनम्	१९७

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

२१ कंसाय प्रथमपुत्रार्पणसमये वसुदेव-देवक्योःपरामर्शवर्णनम् देवक्या वसुदेवाय पुत्रसमर्पणम्............ २००
२२ कंसेन देवक्याः षड्बालकानाम्वध स्तेषां पूर्वजन्मकथा च देवदान वानामंशावतरणम्.................. २०२
२३ देवक्या अष्टमबालकोत्पत्तिवर्णनम् वसुदेवेनाऽष्टमबालकं समानीय गोकुलेगमनम्......................... २०४
२४ श्रीकृष्णचरित्रवर्णनम्............... २०५
२५ पराशक्तेः सर्वज्ञत्वकथनम्,पुत्रार्थे कृष्णकृताशङ्कराराधनावर्णनम् पराशक्तेःसर्वज्ञत्वकथनम्............ २०८

पञ्चम-स्कन्ध

१ ऋषीणां कृष्णस्य शङ्कराराधन विषये सन्देहेजातेसूतोत्तरम् योगमायाप्रभाववर्णनम्............. २११
२ देवीमाहात्म्यवर्णनं महिषोत्पत्तिश्च महिषासुरोत्पत्तिः..................... २१३
३ महिषासुरसैन्योद्योगवर्णनम् २१४
४ देवैः सह महिषासुरवधपरामर्श-वर्णनं,भयातुराणामिन्द्रादिदेवतानां सुरगुरुणा सह परामर्शवर्णनम् २१६
५ विष्णोराराधना तथा दैत्यसैन्य-पराजयवर्णनम्......................... २१८
६ महिषासुरस्येन्द्रादिदेवैः सह युद्धवर्णनम्........................... २२०
७ पराजितदेवतानां शङ्करशरण गमनवर्णनम्........................... २२१
८ विष्णुपरामर्शेनदेवानां शक्त्यु पासनं तथा शक्तिप्रादुर्भाववर्णनं पराजित देवानां विष्णुशरण गमनवर्णनम् २२४
९ महिषद्वारासौन्दर्यसम्पन्नां, देवी मानेतु मन्त्रीप्रेषणवर्णनम् देव्याः सुरैः प्रार्थनावर्णनम्............... २२६
१० मन्त्रीद्वारा देव्या सह विवाहप्रस्ताव व महिषस्य मन्त्रिणावार्तावर्णनम् २२९

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

११ विरूपाक्षादि भृत्यान्देव्या सह युद्धा देशवर्णनम्, रक्षसां मिथोमन्त्रणम्, ताम्रद्वारादेवीप्रबोधवर्णनम्......... २३१
१२ देवीमानेतुं समर्थोऽहमिति, दुर्मुख-वचनवर्णनम्, विडालाख्यकथनम् दुर्धरप्रबोधवाक्यम्................. २३३
१३ देव्यामहिषसेनाधिपवाष्कल दुर्धरयोर्युद्धेनिपातनम्............... २३५
१४ देव्याचिक्षुरदानवेन युद्धकरणं तत्स हायार्थंताम्रद्वाराप्रहारस्तयोर्वधश्च ताम्रचिक्षुरनिपातवर्णनम्........... २३७
१५ बिडालाख्यासिलोमरक्षसोर्दे,व्यायुद्ध-वर्णनम् देवीम्प्रतिदैत्याऽसिलोमवच-नम्, असिलोमविडालवधवर्णनम् २३९
१६ महिषद्वारा देवीप्रबोधनम्......... २४१
१७ सिंहलदेशाधिपस्य चन्द्रसेनराजस्य राजपुत्र्यामन्दोदर्यावृत्तवर्णनम् कोशलाधिपेन सिंहलपुत्र्याः साक्षात्कारः............................ २४३
१८ महिषासुरवधवर्णनम् युद्धेदेवीसिंहवर्णनम्................ २४५
१९ महिषासुरवधमनुदैवैःकृता भगवती स्तुतिःदेवान्प्रति देवीसान्त्वनवर्णनम् २४७
२० महिषवधमनु सर्वत्रैव सुखशान्ति-प्रसारवर्णनम्........................ २४९
२१ शुम्भनिशुम्भद्वारादेवपराजय वर्णनम्............................... २५१
२२ देवीप्रबोधनायदेवकृतास्तुतिः भगवत्यासान्त्वनम्,देवैः स्तुति-प्रसन्नयादेव्यावार्ताप्रश्नः............. २५३
२३ देवीचरित्रेपार्वत्याः कौशिक्या विर्भा-वस्तत्रपार्वत्याकृष्णवर्ण ग्रहणेन कालिकेति सञ्ज्ञा मधुरं गायन्त्या श्चण्डमुण्डद्वारा देव्यादर्शनं तत्स्वं शुम्भनिशुम्भदूतद्वारातत्पुरस्ताद्वर्ण नम्, देवी सुग्रीवसम्वादवर्णनम् २५५

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

२४ देवीपार्श्वे गमनाय शुम्भनिशुम्भ योर्मिथो मन्त्रद्वारा दूतप्रेषणम् देवीसमीपे धूम्रलोचनप्रेषणम् २५८

२५ देव्यायुद्धार्थं चण्डमुण्डदैत्यप्रेषणं देवीग्रहणाय शुम्भनिशुम्भयो मन्त्रणम्............................ २६०

२६ चण्डमुण्डनिपातवर्णनं देव्याश्चण्डिकेतिनामवर्णनम् देव्याश्चण्डमुण्डाभ्यांसम्वादः चण्डमुण्डवधवर्णनम्................. २६२

२७ शुम्भनिशुम्भद्वारा देव्याः समीपे रक्तबीजप्रेषणम् शुम्भेनरक्षोगण-सान्त्वनम् रक्तवीजद्वारा स्व-स्वामिसम्वाद कथनम्............... २६४

२८ देव्या विवाहप्रस्तावास्वीकारे युद्धार्थं प्रस्तुतस्यरक्तवीजस्ययुद्धंतद्वधश्च, चण्डिकायाःप्रतिज्ञावचनं, देव्यायुद्ध करणाय रक्तवीज समागमवर्णनम् २६६

२९ रक्तवीजेनदेव्या युद्धवर्णनम् रक्तवीजवधवर्णनम्.................. २६९

३० निशुम्भस्य देव्या युद्धाय समागमनं देवीद्वारा निशुम्भशिरःकर्त्तनम्.... २७१

३१ शुम्भद्वारा देवीम्प्रहर्त्तुं युद्धसमा गमवर्णनम्,शुम्भद्वारादेवीप्रबोधन-वर्णनम्, कालिकयाशुम्भवधः...... २७३

३२ सुरथराजस्य राज्याधिकारहननन्त स्य ऋष्याश्रमे गमनवर्णनं, सुमेधस आश्रमे सुरथस्यगमनम् सुरथ-समाधिवैश्ययोः सम्वादवर्णनम्..... २७६

३३ ऋषिसुमेधसम्प्रतिराज्ञा सुरथेन स्वदुःखवर्णनं ऋषिणामहामाया-प्रभाववर्णनं तत्प्रसङ्गे युगादौ-ब्रह्मविष्ण्वोर्विसम्वादोज्योतिर्लिङ्ग-प्रादुर्भावोदेवाधिदेवेनमिथ्यासा क्षित्वेकेतकीपुष्पम्प्रतिसाक्रोशमु पालम्भःआदिशक्ते र्महिवर्णनम् महामायाप्रभाववर्णनम्............ २७८

३४ सुमेधसम्प्रतिसुरथराजस्यभगवत्याः समाराधनविधिसम्बन्धे प्रश्नो देवीमहत्त्वविषयेऋषिराजयोः सम्वादवर्णनम्, ऋषिवचनाद्राज-वैश्याभ्यांतपःकरणम्.............. २८१

३५ राजवैश्ययोर्देवीप्रसादेन कृततपसोस्तत्प्रत्यक्षदर्शनं तयोरिष्टप्राप्तिवर्णनम् राजवैश्ययोस्तपश्चर्यावर्णनम्....... २८३

षष्ठ-स्कन्ध

१ वृत्रासुरकथायांसूतम्प्रतितद्वधार्थं सत्त्वगुणेनविष्णुनाकथंछद्मनाकार्यं कृतमितिऋषिप्रश्नेतदुत्तरवार्त्ता वर्णनम्, ऋषिणा प्रत्युत्तरदान-वर्णनम्, त्रिशिरसस्तपोभङ्गाया-ऽप्सरसांगमनम्..................... २८५

२ इन्द्रकृतत्रिशिरवधानन्तरं त्वष्ट्रा देवराजवधार्थं वृत्रोत्पत्तिवर्णनम् तक्ष्णाइन्द्रसम्वादवर्णनम्, त्वष्ट्रा-वृत्रम्प्रतिशस्त्रदानवर्णनम्......... २८७

३ शक्रवधार्थवृत्रस्यगमनं बृहस्पती-न्द्रसम्वादवर्णनपूर्वकं देवानां परा जयो वृत्रासुरविजयवर्णनम् त्वष्ट्रा वृत्रायसमाराधनोपायवर्णनं,इन्द्रेण वृत्रतपोभङ्गायगन्धर्वादीनाम्प्रेषणम् २९०

४ वृत्रम्प्रति ब्रह्मणोवरदानं वृत्रेण वर गर्वेणपराभूतानांदेवानां ब्रह्मशिव-सहितानां विष्णुसमीपे गमनम्, देवदानवयुद्धवर्णनम् सेन्द्रैः सुरैर्विष्णुसमीपेगमनम्............. २९२

५ विष्णुसमीपे देवैर्वृत्रकृताऽस्वास्थ्य पीडितैः ब्रह्मशङ्करेन्द्रपुरस्सरं वृत्र-वधायगमनं तदुपदेशेन जगन्मातु-राराधनवर्णनं विष्णुनादेवेभ्यः समा श्वासनं स्तुतिमनुदेवीदिव्यरूपदर्शनं २९५

६ ऋषिभिर्युद्धनिवृत्त्यर्थं वृत्रम्प्रति विश्वासवाक्यं पित्रुपदेशेनपुनर्युद्ध-

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
	मिन्द्रद्वारापराशक्तिप्रवेश युत-फेनेनवृत्रमृत्युः,ऋषिभिर्वृत्रासुरम्प्रतिमैत्रीकरण सम्बोधः इन्द्रेणवृत्रवधोपायवर्णनम्………	२९७
७	वृत्रवधानन्तरमृषिभिः पश्चात्ताप करणंत्वष्ट्राशक्रम्प्रति शापदानं वासवस्यगुप्तवासो नहुषस्येन्द्र-पदेऽभिषेकवर्णनम्, देवेन्द्रे प्रतिच्छेन्नेऽराजकत्ववर्णनम्………	३००
८	नहुषेणप्रार्थितांशचीम्प्रति बृहस्पतेरुपदेशो देवीप्रसादतस्तस्या इन्द्र-दर्शनम्, शच्यै देवीसमाराधनो-पदेशवर्णनम्………………………	३०२
९	शचीन्द्रसम्वादवर्णनपूर्वक मिन्द्राण्या ऋषियानेन मत्समीपे आगच्छेतिनहु-षम्प्रतिकथनं नहुषस्यस्थानच्युति-वर्णनञ्च नहुषम्प्रतीन्द्राणीवाक्यम् नहुषस्यस्वर्गच्युतिवर्णनम्………	३०५
१०	राज्ञो जनमेजयस्येन्द्रस्थानभ्रंश प्रश्नेसञ्जाते व्यासेन त्रिविधस्य कर्मणोगतिवर्णनम्………………	३०८
११	जनमेजयसन्देहनिराकरणार्थं व्या-सेनसत्य-त्रेताद्वापरकलि युगानां व्यवस्थावर्णनम् पराम्बाभजनमेव-कलावुद्धार कारण वर्णनम्……	३०९
१२	तीर्थवर्णनप्रसङ्गेहरिश्चन्द्रनृपकथान कमपुत्रस्याऽस्यवरुणप्रसादात्पुत्र-प्राप्तिस्तन्निमित्तमेवजलोदरव्या-धिश्च मनःशुद्धिप्रशंसावर्णनम् वरुणहरिश्चन्द्रसम्वादवर्णनम्……	३१२
१३	दुःखितं पितरंश्रुत्वारोहितस्यत दुःखनिवारणायगमनंवसिष्ठाज्ञया यज्ञे-शुनःशेपानयनमाडीवकयो र्युद्धवर्णनञ्च, ब्रह्मणाऋषियुद्ध-निनिवारणवर्णनम्………………	३१४
१४	राज्ञामैत्रावरुणिरितिवसिष्ठनाम विषयेप्रश्नेकृते व्यासेन निमिवसिष्ठयोःपरस्परशापदानवार्त्ताकथनं देवयज्ञपरावृत्तस्यंमुनेर्निमिना सम्वादवर्णनम्……………………	३१७
१५	निमिराज्ञोदेहान्तरगमनपूर्वकंदेवी वरदानं तस्यनेत्रेषुवासःपुनर्जनमेज जयस्यसन्देहनिवारणाय ज्ञानोपदेशः भगवतीकृपया मोक्षप्राप्तिवर्णनम्	३१९
१६	हैहयक्षत्रियाणामाख्यानवर्णनं भृगूणांतैः सह विरोधवर्णनञ्च ऋषीणां हैहयैः सह सम्वादवर्णनम्	३२२
१७	भृगुपत्नीनांदेवीसमाराधनेनेष्ट सिद्धिवर्णनम्,हैहयैः स्वान्धत्व निराकरणाय प्रार्थनावर्णनम् भगवतारमायैशापदानवर्णनम्….	३२४
१८	शापादनन्तरंलक्ष्म्यावडवारूपेण शिवाराधनकरणंप्रसन्नेनशिवेन तस्यैवरदानञ्च, लक्ष्म्याशङ्करा-राधनवर्णनम्, शिवाज्ञया रमयादेव्याराधनवर्णनम्………	३२६
१९	शिवेनहरिम्प्रतिस्वकीयगणचित्र रूपेणसन्देशप्रेषणं भगवताऽश्व-रूपम्विधायवडवासमीपेगमनंतयोः सङ्गमेन पुत्रोत्पत्तिवर्णनं विष्णुम्प्रति-दूतमुखेन शिववाक्यवर्णनम्……	३२९
२०	चम्पकनामानं विद्याधरंप्रतिहयी जातपुत्रस्यप्राप्तिस्तमानीय नृपतुर्व-सुम्प्रति समर्पणन्त स्यैकवीरेतिनाम करणंतुर्वसुम्प्रतिविष्णोर्वरदानवर्णनं	३३१
२१	एकवीराभीषेचनोदर्ध्ववृत्तान्ते तस्मा एकावलीकन्याप्राप्तिवर्णनम् रैभ्ययज्ञे-कन्योत्पत्तिरितियशोवतीद्वारावर्णनं	३३३
२२	कालकेतुद्वारै कावलीयदास्वस्थानं प्रापितातदनन्तरं यशोवत्याएकवीर-म्प्रति स्वकीयस्वप्नवर्णनम्, एक वीरयशोवत्योः सम्वादवर्णनम्….	३३५
२३	यशोवत्या सहैकवीरस्य पाताल गमनंकालकेतुना सहयुद्धंकाल	

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

केतोर्मृत्युरेकावल्यासहैकवीरस्य विवाहवर्णनं, एकवारं दृष्ट्वा कालकेतुनाऽनु सन्धानकरणवर्णनम् ३३८

२४ व्यासजनमेजयसम्वादे व्यासेनस्वकीयमोहोपपादनवृत्तान्त व सत्यवत्याःसमीपे व्यासागमनवर्णनम् ३४०

२५ धृतराष्ट्रपाण्डुविदुराणांसमुत्पत्ति वर्णनम्, पाण्डवानांजतुगृहेवर्णनम् ३४२

२६ व्यासनारदसम्वादेनारदेन, स्वकीय पुरातनमोहकारण वर्णनम् राजपुत्र्याविवाहप्रस्ताववर्णनम्....... ३४४

२७ नारदेनदमयन्तीविवाहवर्णनं पुनर्नारदपर्वतयोः शापनिवृत्तिश्च दमयन्त्याहठधर्मित्ववर्णनं शापानुग्रहवशान्नारदस्यसुमुख वर्णनम्.. ३४६

२८ नारदेनस्वकीयमोहवर्णने विष्णु लोकगमनंस्वस्यस्त्रीत्वप्राप्तिप्रसङ्गवर्णनम्, सनारदं विष्णुनागरुडयानेनगमन वर्णनम्.............. ३४८

२९ नारदस्यस्त्रीत्वप्राप्त्यनन्तरंताल ध्वजाख्यनृपेण सहस्वस्यसंयोगे पुत्राणामुत्पत्तिर्दूरदेशाधिपस्य राज्ञस्तैः साकं युद्धं तेषांमृत्युः पुनर्नारदस्य पुरुषत्वप्राप्तिश्च ताल ध्वजपुत्राणां युद्धे मरणवर्णनम्.. ३५०

३० नारदस्यपुरुषरूपप्राप्त्यनन्तरं तालध्वजस्यविलापवर्णनं भगवता सत्त्वरजस्तमसाम्वर्णनम्.......... ३५३

३१ व्यासनारदसम्वादे भगवतीध्यानादिकवर्णनम्, नारदेनव्यासमोहापनोदनवर्णनम् काश्यपशाकल्यसम्वादवर्णनम्.... ३५४

सप्तम स्कन्धः

१ सोमसूर्यवंशविषये जनमेजयप्रश्ने व्यासकृतदक्षप्रजापतिवर्णनोत्तरे नारदस्यदक्षेणशापाज्जन्मग्रहणवर्णनम्, देवदानवोत्पत्तिवर्णनम् ३५७

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

२ सूर्यान्वयवंश्यानांराज्ञांवर्णनेशर्यातिनृपाख्यानवर्णनम्, शर्यातिसुकन्ययोराख्यानवर्णनम्, राज्ञा मुन्यपकारवर्णनम्.................... ३५८

३ च्यवनसुकन्ययोर्विवाहस्तत्सम्बन्धेन गृहस्थयोस्तयोर्वर्णनम्, शर्यातिना स्वपुत्रीविषयेचिन्तावर्णनम्, सुकन्यास्वपित्रेसमाश्वासनवर्णनम्........ ३६१

४ सुकन्ययाच्यवनपतिसेवावर्णनम् अश्विभ्यांसुकन्ययावार्त्तावर्णनम् अश्विभ्यांप्रतिबोधवाक्यवर्णनम्..... ३६३

५ अश्विनोःकथनेनच्यवनस्यसरोवरस्नानाद्युवावस्थाप्राप्तिवर्णनं सुकन्ययादेवीप्रार्थन वर्णनम्........ ३६५

६ शर्यातिःस्वपुत्रीदर्शनार्थंच्यवनाश्रमेगमनंयुवानंऋषिंदृष्ट्वापुत्रीम्प्रतिराज्ञःकोपःमुनिनासर्ववृत्तान्तवर्णनम्पश्चाच्छर्यातिनायज्ञकरणम्, च्यवनशर्यातिसम्वादर्ण्णनम्... ३६७

७ शर्यातियज्ञेसोमपानसमयेऽश्विन्योः कृतइन्द्रकोपश्च्यवनेनेन्द्रार्थंमदासुरोत्पत्तिःपुनर्गुरुणेन्द्रसान्त्वन वर्णनं, तपसोबलादश्विनोःसोमपानार्हत्ववर्णनं ३७०

८ सूर्यवंशीयरेवतराज्ञःकन्यायाः कृते-ब्रह्मणाद्वापरेबलभद्रवरस्यपूर्वघोषणा वर्णनम्, ब्रह्मलोकेस्वकन्यावरप्रश्न वर्णनं, ब्रह्मलोकवैशिष्ट्य वर्णनम् ३७१

९ इक्ष्वाकुवंशवर्णनेशशादादिमान्धातृ पर्यन्तराजवंशवर्णनम्, शशादजककुत्स्थवृत्तान्तवर्णनम्, राज्ञायज्ञ कलशान्मन्त्रितजलपान वर्णनम् ३७४

१० मान्धातुर्वंशवर्णनेविश्वामित्रादित्रिशङ्कुराजवृत्तान्तवर्णनम्, अनावृष्टि कारणादबुभुक्षावर्णनम्, देव्याः प्रसादार्थंतपःकरणवर्णनम्.......... ३७६

११ त्रिशङ्कोरुपाख्यानेपित्रात्यक्तस्यत स्याऽऽत्महत्याकरणार्थमग्निप्रवेश

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

समयेभगवतीस्मरणवर्णनं,त्रिशङ्को-
रभिषेकार्थम्पुनरानयन वर्णनम् ३७८
१२ त्रिशङ्कूपाख्यानेतस्यगुरोःशापात्पि-
शाचत्वप्राप्तौतत्पुत्राभिषेक व पुन
श्चाण्डालत्वप्राप्तस्यशुचादुःखवर्णनं ३८०
१३ हरिश्चन्द्रोपाख्यानेविश्वामित्रस्यतपः
समाप्त्यनन्तरंस्वपत्न्यासम्वादवर्णनं
त्रिशङ्कुद्धारायकौशिकमुनितत्प
त्न्योःसम्वादवर्णनम्............... ३८३
१४ विश्वामित्रेणस्वतपोवलेनत्रिशङ्कु
स्वर्गप्रेषणंहरिश्चन्द्रस्यवरुणाराधनेन-
पुत्रोत्पत्तिरितिचवर्णनम् ,हरिश्च-
न्द्रायपुत्रप्राप्त्यैवरदान वर्णनम्.. ३८४
१५ वरुणशापाद्धरिश्चन्द्रस्यजलोदर
व्याधिप्राप्तिवर्णनम्, केनचिन्मि-
षेणवरुणवञ्चनवर्णनम्,वरुणस्य-
राज्ञेजलोदरशापवर्णनम्......... ३८६
१६ वशिष्ठकथनेनक्रीताजीगर्तमध्यम
पुत्रशुनःशेपेनहरिश्चन्द्रस्ययज्ञकरणं-
पुनर्विश्वामित्रद्वाराशुनः शेपस्य-
वधार्थनिवारणं, पुत्रस्य मध्यम-
स्यशुनःशेपस्यविक्रय करणम्
विश्वामित्रानुरोधनिषेधवर्णनम्... ३८८
१७ विश्वामित्रप्रदत्तमन्त्रेणशुनः शेपस्य
वधान्मुक्तिवर्णनम्, मुक्तस्य शुनः-
शेप स्यतत्पितृत्वाधि कारवर्णनं,
विश्वामित्रपणवर्णनम्............. ३९०
१८ सूकरूपविश्वामित्रेणहरिश्चन्द्रस्यो
पवनविध्वंसकरणम्, कोलवधाय
हरिश्चन्द्रोद्योगवर्णनम्............ ३९२
१९ कृतप्रतिज्ञस्यहरिश्चन्द्रस्यसकाशा
द्विश्वामित्रेणकुमारकुमार्योर्विवाह
मिषेणसर्वस्वग्रहणवर्णनम् राज्ञे-
राज्याचिन्ताकारणवर्णनम्....... ३९४
२० विश्वामित्रायदक्षिणादानार्थहरिश्चन्द्र
स्यस्वपत्नीपुत्रसहितस्यवाराणस्यां-
गमनम्,राज्ञीकृतविलापवर्णनम्.. ३९६

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

२१ विश्वामित्रेणहरिश्चन्द्रसकाशाद्
दक्षिणायाचनवर्णनम्, राज्ञेपत्नी
प्रबोधनवाक्यवर्णनम्............... ३९८
२२ हरिश्चन्द्रद्वारास्वपत्नीपुत्रविक्रय
वर्णनम् विश्वामित्रेणराज्ञे,
दक्षिणाकृतेवचन वर्णनम्......... ३९९
२३ हरिश्चन्द्रेणस्वात्मविक्रयंकृत्वा
विश्वामित्रायदक्षिणादानवर्णनं
साक्रोशंविश्वामित्रवचनवर्णनम्.... ४०१
२४ हरिश्चन्द्रस्यमृतचैलापहारकत्व
कर्त्तव्यपरिचर्यावर्णनम्.............. ४०३
२५ विश्वामित्राज्ञयाकृष्णसर्पदंशेन
रोहितस्य हरिश्चन्द्रपुत्रस्यमृत्युस्त
दनन्तरंतन्मातुर्विलापकरणवर्णनम्
रोहितकृतेमातुर्विलापवर्णनम्
हरिश्चन्द्रेणस्त्रीवधेपापवर्णनम्...... ४०४
२६ पुत्रार्थेहरिश्चन्द्रस्यविलापः,पश्चाद्-
दम्पत्योर्मरणायोद्यो व शैव्याविलाप
राज्ञोहुताशनप्रवेशार्थ मुद्योगवर्णनं ४०८
२७ हरिश्चन्द्रस्यधर्मपरीक्षोत्तरणवर्णनम्
स्वर्गगमनायसप्रजस्यराज्ञोऽनुरोध
वर्णनम्................................ ४१०
२८ शताक्षीचरित्रवर्णनेतयादुर्गमाख्य
दानवस्यवधवर्णनम्, देवीदेहात्ती-
व्रशक्तीनाम्प्रादुर्भाव वर्णनम्....... ४१२
२९ पराशक्तेःसर्वोत्कृष्टत्ववर्णनम्
दक्षादीनांदेव्याराधनवर्णनम्....... ४१५
३० गौरीजन्मपीठस्थानशिवविभ्रान्ति
वर्णनम्, दुर्वाससःसकाशाद्भग-
वतीमाला प्रार्थनवर्णनम्
देवीपीठस्थानवर्णनम्............... ४१६
३१ हिमालयगृहेपार्वतीतीजन्मविषये
देव्याकथनवर्णनम्,देवानांकृतेदेवी-
दर्शनवर्णनम्, हिमालयोपरिभग-
वत्यनुकम्पावर्णनम्................. ४२०
३२ देव्यास्वनिगूढतत्त्वप्रतिपादनवर्णनं
सृष्टिप्रकरणवर्णनम्................. ४२२

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः

३३ देवीद्वाराविद्याविद्ययोर्वर्णनंस्वरूप दर्शनंदेवैःकृतातत्स्तुतिवर्णनम् ?. गीस्तुतिवर्णनम्...... ४२४
३४ भगवत्यादेवान्प्रतिस्वरूपसाक्षात्कारोपाययोगप्रतिपादनपुरःसरं समुपदेशवर्णनम्, नगेश्वराय-तत्त्वप्रतिपादनवर्णनम्...... ४२६
३५ श्रीदेव्याहिमालयकृतेमन्त्रसिद्धि साधनवर्णनम्, मूलाधारादिषट्-चक्रनिरूपण वर्णनम्...... ४२७
३६ श्रीदेव्याब्रह्मतत्त्वोपदेशवर्णनम् ४२९
३७ श्रीदेव्याहिमालयकृतस्वकीयात्रैविध्यभक्तिमहिमवर्णनम् ज्ञानमहिमवर्णनम्...... ४३०
३८ श्रीदेव्यामहोत्सवव्रतस्थानानाम्वर्णनम् देवीसिद्धस्थानवर्णनम्... ४३२
३९ श्रीदेव्याःपूजाविधिवर्णनम् देवी-पूजाविधावान्तरपूजावर्णनम्...... ४३४
४० देव्याबाह्यपूजाविधिवर्णनम् बाह्यपूजापठनफलश्रुतिवर्णनम्.... ४३५

अष्टम-स्कन्ध

१ व्यासजनमेजयसम्वादेभुवनकोष वर्णनप्रसङ्गेमनुनादेवीसमाराधन व ब्रह्मपुत्रायदेव्यावरदानवर्णनम्.... ४३७
२ भगवताधरण्युद्धारवर्णनम्...... ४३९
३ स्वायम्भुवमनुवंशकीर्त्तनम्...... ४४०
४ प्रियव्रतवंशवर्णनम्...... ४४१
५ सविस्तरंद्वीपवर्षविभेदवर्णनम्...... ४४२
६ अरुणोदादिनदीनांनिस्सरणस्थान वर्णनम्...... ४४२
७ मेरोश्चतुरस्रमष्टसङ्ख्यक गिरीणाम्वर्णनम्...... ४४४
८ इलावृतभद्राश्ववर्षयोवर्णनम्...... ४४५
९ हरिवर्षकेतुमालरम्यकवर्षाणां क्रमेणवर्णनम्...... ४४६
१० हिरण्यकिम्पुरुषवर्षयो व किम्पुरुष वर्षेहनूमत्कृतंरामस्तव वर्णनम्.... ४४८
११ भारतवर्षवर्णनम् भारतवर्ष-प्रशंसनवर्णनम्...... ४४९
१२ प्लक्षादिद्वीपवर्णनं,कुशद्वीपवर्णनम् ४५०
१३ क्रौञ्चद्वीपशाकद्वीपपुष्करद्वीपानांव क्रौञ्चद्वीपगतवर्षपुरुषाणाम्वर्णनम् ४५२
१४ लोकालोकाचलवर्णनम्...... ४५३
१५ भानुगतिवर्णनेराशिचक्रवर्णनम्... ४५४
१६ सोमादिगतिवर्णनम्...... ४५५
१७ ध्रुवमण्डलसंस्थानवर्णनम्...... ४५६
१८ सराहुमण्डलाद्यवस्थानमधोलोक वर्णनम्...... ४५७
१९ अतलादिवर्णनम्...... ४५९
२० तलातलादिस्थितिवर्णनम्...... ४६०
२१ अनन्तमहिमवर्णनपूर्वकंनरक स्वरूपवर्णनम्...... ४६१
२२ नरकप्रदपातकवर्णनम्...... ४६२
२३ अवशिष्टनरकवर्णनम्...... ४६४
२४ समाराधनविधानेतिथ्यादिक्रमेण देवीपूजननिरूपणम् मासमनुसृत्य देवीनैवेद्यवर्णनम् देवीपूजनान्नरकोद्धारवर्णनम्...... ४६५

नवम स्कन्धः

१ नारायणनारदसम्वादेप्रकृति, चरित्र वर्णनम्,अनन्तायाःप्रकृतेर्वर्णनम् राधानाम्नीपञ्चमीप्रकृतिवर्णनं प्रकृतिनानारूपाणाम्वर्णनम् सत्त्वरजस्तमःप्रधानानांप्रकृति स्त्रीरूपाणाम्वर्णनम्...... ४६७
२ पञ्चप्रकृतितद्भर्त्तृगणोत्पत्तिवर्णनं सरस्वत्याविर्भाववर्णनम्...... ४७२
३ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरादिदेवतोत्पत्ति वर्णनम्, बालकेनवरप्रार्थनवर्णनम् ४७४
४ सरस्वतीस्तोत्रपूजाकवचादिवर्णनं काण्वशाखोक्तसरस्वत्यर्चावर्णनम् विश्वविजयंसरस्वतीकवचवर्णनम् ४७६
५ याज्ञवल्क्यकृतसरस्वतीस्तोत्रवर्णनं ४७९

अध्यायः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
६	लक्ष्मीगङ्गासरस्वतीनांभूलोकावतार वर्णनम्,भगवताकलहसान्त्वनवर्णनम्	४८०
७	गङ्गादीनां शापोद्धारवर्णनम् विष्णुभक्त लक्षणवर्णनम्	४८३
८	कलेर्माहात्म्यवर्णनम् भाविकलिप्रभाववर्णनं मन्वन्तरादियुगानां वर्णनं देवीतपस्यामहत्त्ववर्णनम्	४८५
९	शक्त्युत्पत्तिप्रसङ्गेभूमिशक्तेरुत्पत्ति वर्णनम्, वाराहेकल्पेपृथिव्याविर्भाववर्णनम्, भूमिस्तोत्रवर्णनम्	४८८
१०	पृथिव्यांकृतापराधानांनरक फलाप्तिवर्णनम्	४९०
११	गङ्गोपाख्यानवर्णनं नानापर्वसुगङ्गा स्नानवर्णनं गङ्गापूजाधिकारिवर्णनं	४९१
१२	काण्वशाखोक्तगङ्गाध्यानस्तोत्रादि वर्णनम्, गङ्गास्तुतिवर्णनम् गङ्गोपाख्यानवर्णनम्	४९४
१३	गङ्गोपाख्यानवर्णनम् राधाकृष्णसम्वादवर्णनम् राधाकृष्णलीलावर्णनम्	४९६
१४	कृष्णेनगङ्गाविवाहवर्णनम्	५०१
१५	तुलस्याआख्यानवर्णनम् महादेवेनवैकुण्ठगमनवर्णनम्	५०२
१६	सीताचरित्रेरामवृत्तवर्णनम् सीतापूर्वभववृत्तवर्णनम् वेदवत्याख्यानवर्णनम्	५०३
१७	धर्मध्वजसुतायास्तुलस्याः, कथावर्णनम्, ब्रह्मणाशङ्खचूडजन्मवर्णनम्	५०५
१८	शङ्खचूडेनसहतुलस्याःसङ्गतिवर्णनम् शङ्खचूडेनतुलसीसम्वादवर्णनम् गान्धर्वेणतुलसीसङ्गतिवर्णनम्	५०७
१९	शङ्खचूडेनसहतुलसीसङ्गमवर्णनम् नवसङ्गमेतुलसीशृङ्गारवर्णनंब्रह्मादि देवतानांविष्णुप्रार्थनवर्णनम्	५१०
२०	शङ्खचूडेनदेवानांसङ्ग्रामोद्योगवर्णनं शङ्खचूडेनतुलसीसम्वादवर्णनंतुलसीम्प्रतिशङ्खचूडस्यप्रबोधवाक्यम्	५१३
२१	शङ्करशङ्खचूडसमागमवर्णनम् शङ्खचूडेनशिवसमागमवर्णनम् शङ्करशङ्खचूडयोःसम्वादवर्णनम्	५१६
२२	देवासुरपराक्रमवर्णनम् देवसैन्यदैत्यसैन्ययोर्युद्धवर्णनम् भद्रकाल्याः शङ्खचूडेनयुद्धवर्णनम्	५१९
२३	शङ्खचूडवधवर्णनम्	५२१
२४	तुलसीमाहात्म्यकीर्त्तनम् तुलस्यैसमाश्वासनवर्णनम् शालग्रामशिलामहत्ववर्णनम्	५२२
२५	तुलसीपूजाकथनम् तुलसीमहिमवर्णनम्	५२५
२६	सावित्र्युपाख्यानवर्णनम् ससन्ध्योपासनंगायत्रीवर्णनम् सावित्र्याःषोडशोपचारवर्णनम्	५२७
२७	सावित्र्युपाख्यानेयमसावित्रिसम्वादवर्णनम्	५३०
२८	यमसावित्रीसम्वादवर्णनम् सावित्र्याप्रतिवचनवर्णनम्	५३१
२९	सावित्रीम्प्रतियमवरदानंकर्मविपाककथनञ्च, वापीकूपतडागादिमहत्त्ववर्णनम्	५३२
३०	नानादानानांकर्मविपाककथनम् विविधपर्वसुनानादेवपूजामहत्त्ववर्णनम्, नानादेवप्रतिमापूजन महत्त्ववर्णनम्	५३४
३१	सावित्रीकृतयमाष्टकपूर्वकंतस्यैशक्तिमन्त्रप्रदानवर्णनम्	५३८
३२	विविधपापानांनानानरककुण्डवर्णनम्	५३९
३३	नानादुष्कृतकर्मणांविपाकवर्णनम्	५४०
३४	नानाकर्मविपाकफलवर्णनम्	५४४

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

३५ अगम्यागमनादिनानाकर्मविपाकफलवर्णनम्, मिथ्यासाक्ष्यविधानकर्मविपाकवर्णनम्.................. ५४६
३६ सकर्मक्लेशनिस्तारोपायभूतपञ्चदेवपूजावर्णनम्, भगवत्यादिपूजकानांनिर्भयत्ववर्णनम्............... ५४८
३७ कुण्डानाम्वर्णनं, नरकगतिकानांकुण्डानाम्वर्णनम्..................... ५४९
३८ देवीभक्तिमहिमवर्णनम्
प्राकृतिकलयवर्णनम्
सावित्र्युपाख्यानवर्णनम्............ ५५३
३९ लक्ष्म्युपाख्यानवर्णनम्
देवीलक्ष्मीस्वरूपवर्णनम्............ ५५५
४० लक्ष्म्युत्पत्तिप्रसङ्गवर्णनम् इन्द्रायशापदानवर्णनम् अमरावती दशावर्णनम् मधुसूदनस्मरण माहात्म्यवर्णनम्..................... ५५७
४१ लक्ष्म्युपाख्यानवर्णनम्............... ५६०
४२ महालक्ष्म्याध्यानस्तोत्रवर्णनम्
लक्ष्मीध्यानेनशक्रदर्शनम्............ ५६१
४३ स्वाहोपाख्यानवर्णनम्................. ५६४
४४ स्वधोपाख्यानवर्णनम्.................. ५६६
४५ दक्षिणोपाख्यानवर्णनम्............. ५६७
४६ षष्ठ्यु पाख्यानवर्णनम् राज्ञेषष्ठीपूजाकृतेपुत्रदानवर्णनम्............. ५७०
४७ मङ्गलचण्ड्यु पाख्यानवर्णनम्
मनसाख्यानवर्णनम्.................. ५७२
४८ मनसाध्यानादिमनसोपाख्यानवर्णनं
सूर्येणजरत्कारुसम्वादवर्णनम्
मनसयापतिसम्वादवर्णनम्
मनसापूजाविधिवर्णनम्............ ५७४
४९ सुरभ्युपाख्यानवर्णनम्.............. ५७९
५० देव्याःसावरणपूजावर्णनम्
राधादेव्याःसाङ्गपूजावर्णनम्
दुर्गोपाख्यानवर्णनम्................ ५८०

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

दशमस्कन्धः

१ मनुकृतंदेव्याराधनवर्णनम्.......... ५८३
२ विन्ध्यवासिनीप्रसङ्गेविन्ध्योपाख्यानं नारदविन्ध्यसम्वादवर्णनम्......... ५८४
३ मेरुगर्वापहारायविन्ध्योत्थानवर्णनं विन्ध्योपाख्याननिरूपणम्.......... ५८५
४ ब्रह्मादिभिरुद्रप्रार्थनवर्णनम्
सब्रह्मदेवैःशिवप्रार्थनम्............ ५८६
५ स्तवप्रसन्नेनविष्णुनादेवेभ्योवरदानं विष्णुस्तुतिफलवर्णनम्............ ५८७
६ अगस्त्यस्तुतिपूर्वकंदेवेभ्यःप्रीतेनमुनिनासान्त्वनादानम्
अगस्त्येनदेवसान्त्वनम्.............. ५८८
७ विन्ध्यसमुन्नतिकुण्ठनम् विन्ध्यवासिन्याविर्भाववर्णनम्............ ५८९
८ मनूत्पत्ति व चाक्षुषमनूत्पत्तिवर्णनम् ५९०
९ चाक्षुषमनुवृत्तवर्णनम् चाक्षुष मनोर्देवीपदप्राप्तिवर्णनम्.......... ५९१
१० सुरथनृपतिवृत्तान्तवर्णनम्......... ५९२
११ मधुकैटभवधवर्णनम्............... ५९३
१२ भगवत्याशुम्भादीनाम्वधवर्णनम्
महिषवधमनुशुम्भवधायदेवीस्तुतिवर्णनम्, धूम्रलोचनवधवर्णनम्... ५९४
१३ सवैवस्वतमनुपुत्राणांदेव्याराधनवर्णनंभ्रामरीवृत्तप्रतिपादनं अरुणायब्रह्मणोवरदानवर्णनं देवैर्देवीस्तुतिकरणवभ्रामरीचरित्रवर्णनम् ५९७

एकादशस्कन्धः

१ प्रातश्चिन्तनवर्णनम्, श्रुतिस्मृतिपुराणानांधर्मप्रामाण्यवर्णनम्...... ६०१
२ शौचविधि व दन्तधावनवर्णनम् ६०३
३ रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनम्
रुद्राक्षधारणवर्णनम्................. ६०४
४ रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनम्............. ६०६
५ जपमालाविधानवर्णनम्............ ६०७
६ रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनम्
गुणनिधिवृत्तवर्णनम्.............. ६०८

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

७ रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनम् नानाऽक्ष-
मालाधारणमहत्त्वनिरूपणम्······· ६१०
८ भूतशुद्धिप्रकरणवर्णनम्
प्राणशक्तिध्यानवर्णनम्············ ६११
९ शिरोव्रतविधानवर्णनम्
भस्मत्रिपुण्ड्रधारणकथनम्········· ६१२
१० गौणभस्मविवरणम्
भस्मधारणव्रतवर्णनम्·············· ६१३
११ त्रिविधभस्ममाहात्म्यवर्णनम्······· ६१४
१२ भस्मामाहात्म्यवर्णनम् ललाट
त्रिपुण्ड्रयोरभेदनिरूपणम्·········· ६१५
१३ त्रिपुण्ड्रभस्मधारणमाहात्म्यवर्णनम् ६१७
१४ विभूतिधारणमाहात्म्यवर्णनम्
भस्मस्नानमहत्त्वम्················· ६१८
१५ त्रिपुण्ड्रोर्ध्वपुण्ड्रधारणविधिवर्णनम्
अत्रविषयेप्राचीनेतिहासवर्णनम्
भस्ममाहात्म्यवर्णनम् ऊर्ध्व-
पुण्ड्रविधानवर्णनम्················ ६२०
१६ सन्ध्योपासननिरूपणम्, गायत्री
ध्यानसहितंजपवर्णनम्, गायत्र्याः
सूर्यमण्डलस्थध्यानवर्णनम्········· ६२३
१७ सन्ध्यादिकृत्यप्रतिपादनम्
गायत्रीतर्पणवर्णनम्················ ६२६
१८ श्रीमातुःपूजनक्रमवर्णनम्
बृहद्रथराजस्यवृत्तवर्णनम्·········· ६२८
१९ मध्याह्नसन्ध्याविवरणकथनम्······ ६३०
२० ब्रह्मयज्ञादिकीर्त्तनम् सन्ध्यायाः
प्राधान्यवर्णनम्····················· ६३१
२१ गायत्रीपुरश्चरणविधिकथनम्
पुरश्चरणस्थानविशेषवर्णनम्······· ६३३
२२ वैश्वदेवादिविधिनिरूपणम्
प्राणाग्निहोत्रविद्यावर्णनम्········ ६३४
२३ तप्तकृच्छ्रादिलक्षणवर्णनम्
सविधानंनानावैदिककर्मणां-
निरूपणम्··························· ६३६

अध्यायः विषयः पृष्ठाङ्काः

२४ सदाचारनिरूपणम्, नानाफला-
प्तयेविविधहोमवर्णनम्, नाना-
शुद्धिकरणप्रयोगाणांवर्णनम्······· ६३८

द्वादशस्कन्धः

१ गायत्रीविचारवर्णनम्·············· ६४१
२ गायत्रीशक्त्यादिकथनम्··········· ६४२
३ गायत्रीमन्त्रकवचवर्णनम्·········· ६४२
४ गायत्रीहृदयवर्णनम्··············· ६४३
५ गायत्रीस्तोत्रवर्णनम्··············· ६४४
६ गायत्रीसहस्रनामस्तोत्रवर्णनम्····· ६४५
७ दक्षिणाविधिकथनम्, श्रीशक्ति-
मन्त्रन्यासवर्णनं, पीठपूजाविधि-
वर्णनम् अग्निस्थापनविधिवर्णनं
गुरुणादीक्षाप्रदानवर्णनम्·········· ६५०
८ पराशक्त्याविर्भाववर्णनम् उमाया
दर्शनवर्णनम् गायत्री-
समुपासननिरूपणम्················ ६५५
९ ब्राह्मणादीनांगायत्रीभिन्नदेवोपास-
नाश्रद्धाहेतुनिरूपणम्, गौतमस्या-
श्रममहिमवर्णनम्, गौतमेन-
ब्राह्मणेभ्योशापदानवर्णनम्········ ६५८
१० मणिद्वीपवर्णनम् मणिद्वीपप्रशस्ति-
वर्णनंमणिपर्वतेरुद्राधिष्ठानवर्णनम् ६६१
११ पद्मरागादिमणिनिर्मितप्राकार-
वर्णनम्, वैदूर्यमयप्राकारवर्णनं
त्रिपुरसुन्दरीशक्त्यादिवर्णनम्······ ६६४
१२ मणिद्वीपवर्णनम् भुवनेश्वरीदेव्या-
वर्णनं मणिद्वीपच्छविवर्णनम्······ ६६७
१३ जनमेजयद्वाराभागवतश्रवणाम्बा-
मखणर्वकंस्वपित्रुद्धारकरणम्
जनमेजयस्यकृतकृत्यतावर्णनम्····· ६७०
१४ श्रीमद्देवीभागवतपुराणफलवर्णनम्
एतत्पुराणश्रवणविधिवर्णनम्······· ६७१

समाप्तैश्रीमद्देवीभागवतमहापुराणस्य-
विषयानुक्रमणिका

// श्रीगणेशाय नमः //

श्रीमद्देवीभागवतपुराणम्

अथ माहात्म्यम् प्रारभ्यते

* अथ प्रथमोऽध्यायः *

ऋषीणां सूतम्प्रतिपुराणश्रवणविषयेप्रश्नः

सृष्टौ या सर्गरूपा जगदवनविधौ पालनी या च रौद्री।
संहारे चाऽपि यस्या जगदिदमखिलं क्रीडनं या पराख्या।
पश्यन्ती मध्यमाऽथो तदनु भगवती वैखरी वर्णरूपा।
साऽस्मद्वाचं प्रसन्ना विधिहरिगिरिशाराधिताऽलंकरोतु।।१।।

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।२

ऋषय ऊचुः

सूत जीवसमाबह्वीर्यस्त्वं श्रावयसीह नः।कथा मनोहराः पुण्याव्यासशिष्यमहामते।३
सर्वपापहरं पुण्यं विष्णोश्चरितमद्भुतम्।अवतारकथोपेतमस्माभिर्भक्तितः श्रुतम्।४
शिवस्य चरितंदिव्यं भस्मरुद्राक्षयोस्तथा।सेतिहासंचमाहात्म्यंश्रुतंतवमुखाम्बुजात्।५
अधुना श्रोतुमिच्छामः पावनात्पावनम्परम्।भुक्तिमुक्तिप्रदं नृणामनायासेन सर्वशः।६
तत्त्वं ब्रूहिमहाभागयेनसिद्ध्यन्तिमानवाः।कलावपिपरंत्वत्तोन विद्मःसंशयच्छिदम्।७

सूत उवाच

साधुपृष्टंमहाभागा! लोकानांहितकाम्यया।सर्वशास्त्रस्ययत्सारंतद्वोवक्ष्याम्यशेषतः।८
तावद्गर्जन्ति तीर्थानि पुराणानिव्रतानि च।यावन्न श्रूयते सम्यग्देवीभागवतं नरैः।९
तावत्पापाटवी नृणांक्लेशदाऽदभ्रकण्टका।यावन्न परशुः प्राप्तो देवीभागवताभिधः।१०
तावत्क्लेशावहं नृणामुपसर्गमहातमः।यावन्नैवोदयं प्राप्तो देवीभागवतोष्णगुः।११

ऋषय ऊचुः

सूत सूत महाभाग वद नो वदताम्बर।कीदृशं तत्पुराणंहि विधिच्छ्रवणे च कः।१२
कतिभिर्वासरैरेतच्छ्रोतव्यं किं च पूजनम्।कैर्मानवैःश्रुतंपूर्वं काँस्कान्कामानवाप्नुयुः।१३

सूत उवाच

विष्णोरंशोमुनिर्जातस्सत्यवत्यां पराशरात्।विभज्य वेदांश्चतुरश्शिष्यानध्यापयत्पुरा।१४
व्रात्यानां द्विजबन्धूनांवेदेष्वनधिकारिणाम्।स्त्रीणांदुर्मेधसांनृणांधर्मज्ञानंकथंभवेत्।१५
विचार्यैतत्तु मनसा भगवान्बादरायणः।पुराणसंहितां दध्यौ तेषां धर्मविधित्सया।१६
अष्टादश पुराणानि स कृत्वाभगवान्मुनिः।मामेवाऽध्यापयामास भारताख्यानमेवच।१७
देवीभागवतं तत्र पुराणं भोगमोक्षदम्।स्वयं तु श्रावयामास जनमेजयभूपितम्।१८
पूर्वमस्य पिता राजा परीक्षित्तक्षकाहिना।संदष्टस्तस्यसंशुद्ध्यै राज्ञा भागवतंश्रुतम्।१९
नवभिर्दिवसैः श्रीमद्वेदव्यासमुखाम्बुजात्।त्रैलोक्यमातरंदेवीं पूजयित्वा विधानतः।२०
नवाहयज्ञे सम्पूर्णे परीक्षिदपि भूपतिः।दिव्यरूपधरोदेव्यास्सालोक्यं तत्क्षणादगात्।२१

पितुर्दिव्यां गतिं राजा विलोक्य जनमेजयः। व्यासं मुनिंसमभ्यर्च्यपरांमुदमवाप ह।२२
अष्टादशपुराणानां मध्ये सर्वोत्तमं परम्। देवीभागवतं नाम धर्मकामार्थमोक्षदम्।२३
ये शृण्वन्ति सदा भक्त्या देव्या भागवतीं कथाम्। तेषां सिद्धिर्न दूरस्था तस्मात्सेव्या सदा नृभिः।२४
दिनमर्द्धं तदर्द्धं वा मुहूर्तं क्षणमेव वा। ये शृण्वन्ति नरा भक्त्या न तेषां दुर्गतिःक्वचित्।२५
सर्वयज्ञेषु तीर्थेषु सर्वदानेषु यत्फलम्। सकृत्पुराणश्रवणात्तत्फलं लभते नरः।२६
कृतादौ बहवो धर्माः कलौ धर्मस्तु केवलम्। पुराणश्रवणादन्यो विद्यते नापरो नृणाम्।२७
धर्माचारविहीनानां कलावल्पायुषां नृणाम्। व्यासो हिताय विदधे पुराणाख्यं सुधारसम्।२८
सुधां पिबन्नेक एव नरः स्यादजरामरः। देव्याः कथामृतं कुर्य्यात्कुलमेवाजरामरम्।२९
मासानांनियमो नाऽत्रदिनानांनियमोऽपि न। सदा सेव्यंसदासेव्यंदेवीभागवतंनरैः।३०
आश्विने मधुमासे वा तपोमासे शुचौतथा। चतुर्षु नवरात्रेषु विशेषात्फलदायकम्।३१
अतोनवाहयज्ञोऽयं सर्वस्मात्पुण्यकर्मणः। फलाधिकप्रदानेनप्रोक्तः पुण्यप्रदोनृणाम्।३२

ये दुर्हृदः पापरता विमूढा मित्रद्रुहो वेदविनिंदकाश्च।
हिंसारता नास्तिकमार्गसक्ता नवाहयज्ञेन पुनन्ति तेकलौ।।३३।।
परस्वदाराहणेऽतिलुब्धा ये वै नराः कल्मषभारभाजः।
गोदेताब्राह्मणभक्तिहीना नवाहयज्ञेन भवन्ति शुद्धाः।।३४।।
तपोभिरुग्रैर्व्रततीर्थसेवनैर्दानैरनेकैर्नियमैर्मखैश्च।
हुतैर्जपैर्यच्च फलं न लभ्यते नवाहयज्ञेन तदाप्यते नृणाम्।।३५।।
तथा न गङ्गा न गया न काशी न नैमिषं नो मथुरा न पुष्करम्।
पुनाति सद्यो बदरीवनं नो यथा हि देवीमख एष विप्राः।।३६।।

अतोभागवतं देव्याः पुराणं परतः परम्। धर्मार्थकाममोक्षाणामुत्तमं साधनं मतम्।३७
आश्विनस्य सिते पक्षे कन्याराशिगते रवौ। महाष्टम्यांसमभ्यर्च्यहैमसिंहासनस्थितम्।३८
देवीप्रीतप्रदं भक्त्या श्रीभागवतपुस्तकम्। दद्याद्विप्राययोग्याय स देव्याःपदवींलभेत्।३९
देवीभागवतस्यापि श्लोकंश्लोकार्द्धमेव वा। भक्त्या यश्च पठेन्नित्यं स देव्याः प्रीतिभाग्भवेत्।४०
उपसर्गभयं घोरं महामारीसमुद्भवम्। उत्पातानखिलाँश्चापि हन्ति श्रवणमात्रतः।४१
बालग्रहकृतं यच्च भूतप्रेतकृतं भयम्। देवीभागवतस्याऽस्य श्रवणाद्याति दूरतः।४२
यस्तु भागवतं देव्याः पठेद्भक्त्या शृणोति वा। धर्ममर्थं च कामं च मोक्षं च लभते नरः।४३
श्रवणाद्वसुदेवोऽस्य प्रसेनान्वेषणे गतम्। चिरायितं प्रियं पुत्रं कृष्णं लब्ध्वामुमोदह।४४
य एतांश्शृणुयाद्भक्त्याश्रीमद्भागवतींकथाम्। भुक्तिं मुक्तिंसलभते भक्त्यायश्चपठेदिमाम्।४५
अपुत्रो लभते पुत्रं दरिद्रो धनवान्भवेत्। रोगी रोगात्प्रमुच्येतश्रुत्वा भागवतामृतम्।४६
वन्ध्यावाकाकवन्ध्यावामृतवत्साचयांऽगना। देवीभागवतंश्रुत्वालभेत्पुत्रंचिरायुषम्।४७
पूजितं यद् गृहेनित्यंश्रीभागवतपुस्तकम्। तद् गृहं तीर्थभूतं हि वसतां पापनाशकम्।४८
अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां नवम्यांभक्तिसंयुतः। यःपठेच्छृणुयाद्वाऽपिससिद्धिंलभतेपराम्।४९

पठन्द्विजो वेदविदग्रणीर्भवेद् बाहुप्रजातो धरणीपतिः स्यात्।
वैश्यः पठन्वित्तसमृद्धिमेति शूद्रोऽपि शृण्वन्स्वकुलोत्तमस्स्यात्।।५०।।

इति श्रीस्कन्दपुराणे मानसखण्डे देवीभागवतमाहात्म्ये देवीभागवत-श्रवण माहात्म्यवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः।। १ ।।

* द्वितीयोऽध्यायः *

स्यमन्तकमण्यानयितुंगतेश्रीकृष्णेचिरायितेसतितत्प्राप्त्यै वसुदेवेनदेवीभागवतश्रवणम्

ऋषय ऊचुः

वसुदेवो महाभागः कथंपुत्रमवाप्तवान् । प्रसेनः कुत्र कृष्णेन भ्रमताऽन्वेषितः कथम् ।१
विधिनाकेन कस्माच्च देवीभागवतं श्रुतम् । वसुदेवेन सुमते! वद सूत! कथामिमाम् ।२

सूत उवाच

सत्राजिद्भोजवंशीयो द्वारवत्यां सुखं वसन् । सूर्यस्याराधने यत्तो भक्तश्च परमस्सखा ।३
अथ कालेन कियता प्रसन्नस्सविताऽभवत् । स्वलोकं दर्शयामास तद्भक्त्या प्रणयेनच ।४
तस्मै प्रीतश्चभगवान्स्यमन्तकमणिं ददौ । स तं बिभ्रन्मणिं कण्ठे द्वारकामाजगामह ।५
दृष्ट्वा तं तेजसा भ्रान्ता मत्वाऽऽदित्यं पुरौकसः । कृष्णमूचुस्समभ्येत्यसुधर्मायामवस्थितम् ।६
एषआयातिसवितादिदृक्षुस्त्वां जगत्पते । श्रुत्वाकृष्णस्तु तद्वाचं प्रहस्योवाचसंसदि ।७
सवितानैषभोबालाःसत्राजिन्मणिनाज्वलन् । स्यमन्तकेनचायातिभास्वद्दत्तेनभास्वता ।८
अथविप्रान्समाहूयस्वस्तिवाचनपूर्वकम् । प्रावेशयत्समभ्यर्च्यसत्राजित्स्वगृहेमणिम् ।९
न तत्र मारी दुर्भिक्षं नोपसर्गभयंक्वचित् । यत्रास्ते स मणिर्नित्यमष्टभारसुवर्णदः ।१०
अथसत्राजितोभ्राताप्रसेनोनामकर्हिचित् । कण्ठेबद्ध्वामणिंसद्यो हयमारुह्यसैन्धवम् ।११
मृगयार्थं वनं यातस्तमद्राक्षीन्मृगाधिपः । प्रसेन सहयं सिंहो जग्राह तं मणिम् ।१२
जाम्बवानृक्षराजोऽथ दृष्ट्वा मणिधरं हरिम् । हत्वाचतंविलद्वारिमणिंजग्राह वीर्यवान् ।१३
सतंमणिंस्वपुत्रायक्रीडनार्थमदात्प्रभुः । अथचिक्रीडवालोऽपिमणिंसम्प्राप्यभास्वरम् ।१४
प्रसेनेऽनागते चाथ सत्राजित्पर्यतप्यत । न जाने केन निहतः प्रसेनो मणिमिच्छता ।१५
अथलोकमुखोद्गीर्णा किंवदन्तीपुरेऽभवत् । कृष्णेन निहतो नूनं प्रसेनोमणिलिप्सुना ।१६
स तं शुश्राव कृष्णोऽपि दुर्यशोलिप्तमात्मनि । मार्ष्टुं तत्तस्य पदवीं पुरौकोभिस्सहाऽगमत् ।१७
गत्वा स विपिनेऽपश्यत्प्रसेनंहरिणाहतम् । ययौमृगेन्द्रमन्विष्यन्नसृग्बिंद्वङ्किताध्वना ।१८
अथ कृष्णोहतंसिंहं बिलद्वारि विलोक्यच । उवाच भगवान्वाचं कृपया पुरवासिनः ।१९
तिष्ठध्वं यूयमत्रैव यावदागमनं मम । प्रविशामि बिलं त्वेतन्मणिहारकलब्धये ।२०
तथेत्युक्त्वातुतेतस्थुस्तत्रैवद्वारकौकसः । जगामान्तर्बिलं कृष्णोयत्रजाम्बवतोगृहम् ।२१
ऋक्षराजसुतं दृष्ट्वा कृष्णोमणिधरंतदा । हर्तुमैच्छन्मणिं तावद्धात्री चुक्रोश भीतवत् ।२२
श्रुत्वा धात्रीरवं सद्यः समागत्यर्क्षराट्तदा । युयुधेस्वामिना साकमविश्रममहर्निशम् ।२३
एवं त्रिनवरात्रं तु महद्युद्धमभूत्तयोः । कृष्णागमं प्रतीक्षन्तस्तस्थुर्द्वारि पुरौकसः ।२४
द्वादशाहं ततो भीत्या प्रतिजग्मुर्निजालयम् । तत्र ते कथयामासुर्वृत्तान्तंसर्वमादितः ।२५
सत्राजितंशपंतस्तेसर्वे शोकाकुलाभृशम् । वसुदेवो महाभागः श्रुत्वापुत्रस्यतांकथाम् ।२६
मुमोह सपरीवारस्तदा परमया शुचा । चिन्तयामास बहुधा कथं श्रेयो भवेन्मम ।२७
अथाऽऽजगाम भगवान्देवर्षिर्ब्रह्म लोकतः । उत्थायतंप्रणम्याऽसौवसुदेवोऽभ्यपूजयत् ।२८
नारदोऽनामयम्पृष्ट्वा वसुदेवंमहामतिम् । प्रपच्छ च यदुश्रेष्ठं किं चिन्तयसि तद्वद ।२९

वसुदेव उवाच

पुत्रो मेऽतिप्रियः कृष्णः प्रसेनान्वेषणाय तु। पौरैस्साकंवनंगत्वा निहतं तं तदैक्षत।३०
प्रसेनघातकं दृष्ट्वाबिलद्वारे मृतंहरिम्। द्वारि पौरानधिष्ठाप्य बिलान्तर्गतवान्स्वयम्।३१
बहवो दिवसायाता नायात्यद्यापिमेसुतः। अतश्शोचामितद्ब्रूहि येनलप्स्ये सुतं मुने।३२

नारद उवाच

पुत्रप्राप्त्यैयदुश्रेष्ठदेवीमाराधयाम्बिकाम्। तस्याआराधनेनैवसद्यःश्रेयोह्यवाप्स्यसि।३३

वसुदेव उवाच

भगवन्काहि सा देवी किंप्रभावामहेश्वरी। कथमाराधनं तस्या देवर्षे कृपया वद।३४

नारद उवाच

वसुदेव महाभाग श्रृणु संक्षेपतो मम। देव्या माहात्म्यमतुलं कोवक्तुंविस्तरात्क्षमः।३५
या सा भगवतीनित्या सच्चिदानन्दरूपिणी। परात्परतरादेवी यथा व्याप्तमिदंजगत्।३६
यदाराधनतो ब्रह्मा सृजतीदं चराचरम्। याञ्चस्तुत्वा विनिर्मुक्तो मधुकैटभजाद्भयात्।३७
विष्णुर्यत्कृपयाविश्वं बिभर्तिभगवानिदम्। रुद्रस्संहरतेयस्याः कृपापाङ्गनिरीक्षणात्।३८
संसारबन्धहेतुर्या सैव मुक्तिप्रदायिनी। सा विद्या परमादेवी सैव सर्वेश्वरेश्वरी।३९
नवरात्रविधानेन सम्पूज्य जगदम्बिकाम्। नवाहोभिः पुराणञ्च देव्याभागवतं श्रृणु।४०
यस्यश्रवणमात्रेण सद्यःपुत्रमवाप्स्यसि। भुक्तिर्मुक्तिर्नदूरस्था पठताञ्छृण्वतान्नृणाम्।४१
इत्युक्तो नारदेनाऽसौ वसुदेवः प्रणम्यतम्। उवाच परयाप्रीत्या नारदं मुनिसत्तमम्।४२

वसुदेव उवाच

भगवंस्तववाक्येनसंस्मृतं वृत्तमात्मनः। श्रूयतांतच्च वक्ष्यामि देवीमाहात्म्यसम्भवम्।४३
पुरानभोगिराकंसो देवक्यष्टमगर्भतः। ज्ञात्वाऽऽत्ममृत्युंपापोमांसभार्यांन्यरुणद्धिया।४४
कारागारेऽहमवसं देवक्या सहभार्यया। जातं जातं समवधीत्पुत्रं कंसोऽपिपापकृत्।४५
षट्पुत्रा निहतास्तेन तदा शोकाकुला भृशम्। अतएवदेवकीदेवी नक्तंदिवमनिन्दिता।४६
तदाऽहंगगर्गमाहूय मुनिंनत्वाऽभिपूज्यच। निवेद्यदेवकीदुःखमवोचं पुत्रकाम्यया।४७
भगवन्करुणासिन्धो ! यादवानां गुरुर्भवान्। आयुष्मत्पुत्रसम्प्राप्तिसाधनं वद मेमुने।४८
ततो गर्गः प्रसन्नात्मा मामुवाच दयानिधिः। वसुदेव! महाभाग! श्रृणु तत्साधनम्परम्।४९

गर्ग उवाच

या साभगवतीदुर्गा भक्तदुर्गतिहारिणी। तामाराधयकल्याणीं सद्यःश्रेयोह्यवाप्स्यसि।५०
यदाराधनतस्सर्वे सर्वान्कामानवाप्नुयुः। नकिञ्चिद्दुर्लभंलोके दुर्गार्चनचतांनृणाम्।५१
इत्युक्तोऽहंमुदायुक्तःसभार्योमुनिपुङ्गवम्। प्रणम्यपरया भक्त्या प्रावोचं विहिताञ्जलिः।५२

वसुदेव उवाच

यद्यस्तिभगवन्प्रीतिर्मयितेकरुणानिधे। तदागुरो! मदर्थे त्वं समाराधय चण्डिकाम्।५३
निरुद्धःकंसगेहेऽहं न किञ्चित्कर्तुमुत्सहे। अतस्त्वमेव दुःखाब्धेर्मामुद्धर महामते!।५४
इत्युक्तस्तुमयाप्रीतः प्रोवाच मुनिपुङ्गवः। वसुदेव! तव प्रीत्या करिष्यामि हितं तव।५५

अथ गर्गमुनिः प्रीत्या मया सम्प्रार्थितोऽगमत् । आरिराधयिषुर्दुर्गां विन्ध्याद्रिं ब्राह्मणैस्सह ।५६
तत्रगत्वाजगद्धात्रीं भक्ताभीष्टप्रदायिनीम् । आराधयामास मुनिर्जपपाठपरायणः ।५७
ततस्समाप्तेनियमे वागुवाचाशरीरिणी । प्रसन्नाऽहं मुनेकार्यसिद्धिस्तव भविष्यति ।५८
भूभारहरणार्थाय मया सम्प्रेरिति हरिः । वसुदेवस्य देवक्यां स्वांशेनाऽवतरिष्यति ।५९
कंसभीत्यातमादाय बालमानकदुन्दुभिः । प्रापयिष्यति सद्यस्तु गोकुले नन्दवेश्मनि ।६०
यशोदतनयांनीत्वास्वगृहेकंसभूभुजे । दास्यत्यथच तां हन्तुं कंसआक्षेप्स्यतिक्षितौ ।६१
सा तद्धस्ताद्विनिर्गत्य सद्योदिव्यवपुर्द्धरा । मदंशभूताविन्ध्याद्रौकरिष्यतिजगद्धितम् ।६२
इति दद्वचनंश्रुत्वाप्रणम्यजगदम्बिकाम् । गर्गोमुनिः प्रसन्नात्मा मथुरामागमत्पुरीम् ।६३
वरदानं महादेव्या गर्गाचार्यमुखादहम् । श्रुत्वा सभार्यस्संप्रीतः परांमुदमथाऽगमम् ।६४
तदाऽऽरभ्यपरंजाने देवीमाहात्म्यमुत्तमम् । अधुनाऽपिहिदेवर्षे! श्रुतं तवमुखाम्बुजात् ।६५
अतोभागवतं देव्यास्त्वमेव श्रावयप्रभो । मद्भाग्यादेव देवर्षे सम्प्राप्तोऽसिदयानिधे! ।६६
वसुदेववचः श्रुत्वा नारदः प्रीतमानसः । सुदिने शुभनक्षत्रे कथारम्भमथाकरोत् ।६७
कथाविघ्नविघातार्थंद्विजाजेपुर्नवाक्षरम् । मार्कण्डेयपुराणोक्तं पेठुर्देव्याः स्तवं तथा ।६८
प्रथमस्कन्धमारभ्य श्रीनारदमुखोद्गतम् । शुश्राववसुदेवश्च भक्त्या भागवतामृतम् ।६९
नवमेऽह्नि कथापूर्तौ पुस्तकं वाचकं तथा । प्रसन्नः पूजयामास वसुदेवो महामनाः ।७०
अथतत्रबिलस्यान्तःकृष्णजाम्बवतोर्मृधे । कृष्णमुष्टिविनिष्पातश्लथाङ्गोजाम्बवानभूत् ।७१
अथागतस्मृतिस्सोऽपि भगवन्तंप्रणम्यच । उवाचपरयाभक्त्या स्वापराधं क्षमापयन् ।७२
ज्ञातोऽसि रघुवर्यस्त्वं यद्रोषात्सरितांपतिः । क्षोभं जगामलङ्काचरावणःसानुगोहतः ।७३
सएवासिभवान्कृष्णमद्दौरात्म्यंक्षमस्वभोः । ब्रूहियत्करणीयंमे भृत्योऽहं तव सर्वथा ।७४
श्रुत्वा जाम्बवतो वाक्यमब्रवीज्जगदीश्वरः । मणिहेतोरिह प्राप्ता वयमृक्षपते विलम् ।७५
ऋक्षराजस्ततः प्रीत्या कन्यां जाम्बवतीं निजाम् । ददौ कृष्णाय सम्पूज्य स्यमन्तकमणिं तथा ।७६
स तां पत्नीं समादाय मणिंकण्ठे तथाऽदधत् । अभिमन्त्र्यर्क्षराजंचप्रतस्थेद्वारकांप्रति ।७७
कथासमाप्तिदिवसे वसुदेव उदारधीः । ब्राह्मणान्भोजयामास दक्षिणाभिरतोषयत् ।७८
आशीर्वाचंप्रयुंजाना द्विजायत्समयेहरिः । आजगामक्षणेतस्मिन्पत्न्या सहमणिंदधत् ।७९
भार्यया सहितं कृष्णं वसुदेवपुरोगमाः । दृष्ट्वा हर्षाश्रुपूर्णाक्षास्समवापुःपरां मुदम् ।८०
देवर्षिर्नारदश्चाथ कृष्णागमनहर्षितः । आमन्त्र्य वसुदेवञ्च कृष्णं ब्रह्मसभां ययौ ।८१
हरिचरितमिदंयत्कीर्तितं दुर्यशोघ्नं पठति विमलभक्त्या शुद्धचित्तःशृणोति ।
स भवति सुखपूर्णः सर्वदा सिद्धकामो जगतिच वपुषोऽन्ते मुक्तिमार्गं लभेच्च ।८२

इति स्कन्दपुराणे मानसखण्डे श्रीदेवीभागवतमाहात्म्ये

वसुदेवस्य देवी-भागवतनवाहश्रवणात्पुत्र

प्राप्तिवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

------

* तृतीयोऽध्यायः *

स्कन्दागस्त्यसम्वादवर्णनम्

सूत उवाच

अथेतिहासमन्यञ्च शृणुध्वं मुनिसत्तमाः । देवीभागवतस्यास्य माहात्म्यं यत्र गीयते।१
एकदाकुम्भयोनिस्तुलोपामुद्रापतिर्मुनिः । गत्वाकुमारमभ्यर्च्यप्रपच्छविविधाःकथाः।२
स तस्मै भगवान्स्कन्दः कथयामास भूरिशः । दानतीर्थव्रतादीनां माहात्म्योपचिताः कथाः।३
वाराणस्याश्चमाहात्म्यंमणिकर्णीभवंतथा । गङ्गायाश्चापितीर्थानांवर्णितंबहुविस्तरम्।४
श्रुत्वाऽथ स मुनिःप्रीतःकुमारंभूरिवर्चसम् । पुनःप्रपच्छलोकानांहितार्थंकुम्भसम्भवः।५

अगस्त्य उवाच

भगवंस्तारकाराते देवीभागवतस्य तु । माहात्म्यं श्रवणे तस्य विधिं चापि वद प्रभो।६
देवीभागवतं नाम पुराणं परमोत्तमम् । त्रैलोक्यजननी साक्षाद्गीयते यत्र शाश्वती।७

स्कन्द उवाच

श्रीभागवतमाहात्म्यं को वक्तुं विस्तरात्क्षमः । शृणु संक्षेपतो ब्रह्मन्कथयिष्यामि साम्प्रतम्।८
यानित्यासच्चिदानन्दरूपिणीजगदम्बिका । साक्षात्समाश्रितायत्रभुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।९
अतस्तद्वाङ्मयी मूर्तिर्देवीभागवतं मुने । पठनाच्छ्रवणाद्यस्य न किंचिदिह दुर्लभम्।१०
आसीद्विवस्वतः पुत्रःश्राद्धदेव इतिश्रुतः । सोऽनपत्योऽकरोदिष्टिं वशिष्ठानुमतो नृपः।११
होतारं प्रार्थयामास श्रद्धाऽथदयितामनोः । कन्याभवतुमेब्रह्मंस्तथोपायोविधीयताम् ।१२
मनसाचिन्तयन्होता कन्यामेवाजुहोद्धविः । ततस्तद्व्यभिचारेणकन्येलानामचाऽभवत् ।१३
अथ राजासुतां दृष्ट्वा प्रोवाचविमनागुरुम् । कथं संकल्पवैषम्यमिह जातं प्रभो तव।१४
तच्छ्रुत्वा स मुनिर्दध्यौ ज्ञात्वा होतुर्व्यतिक्रमम् । ईश्वरं शरणं यात इलायाः पुंस्त्वकाम्यया।१५
मुनेस्तपःप्रभावाच्च परेशानुग्रहात्तथा । पश्यतां सर्वलोकानामिला पुरुषतामगात्।१६
गुरुणा कृतसंस्कारः सुद्युम्नोऽथ मनोः सुतः । निधिर्बभूवविद्यानांसरितामिवसागरः ।१७
अथ कालेन सुद्युम्नस्तारुण्यं समवाप्य च । मृगयार्थं वनं यातो हयमारुह्य सैन्धवम्।१८
वनाद्वनांतरं गच्छन्बहु बभ्राम सानुगः । दैवादधस्ताद्धेमाद्रेस्स कुमारो वनं ययौ।१९
कस्मिंश्चित्समये यत्र भार्ययाऽपर्णया सह । अरमद्देवदेवस्तु शंकरो भगवान्मुदा।२०
तदातु मुनयस्तत्र शिवदर्शनलालसाः । आजग्मुरथ तान्दृष्ट्वा गिरिजा व्रीडिताऽभवत्।२१
रममाणौ तु तौ दृष्ट्वा गिरिशौ संशितव्रताः । निवृत्ता मुनयो जग्मुर्वैकुण्ठनिलयंतदा।२२
प्रियायाः प्रियमन्विच्छञ्छिवोऽरण्यं शशाप ह । अद्यारभ्य विशेद्योऽत्र पुमान्योषिद्भवेदिति।२३
तत आरभ्य तं देशं पुरुषा वर्जयन्ति हि । तत्र प्रविष्टः सुद्युम्नो बभूव प्रमदोत्तमा।२४
स्त्रीभूताननुगानश्वं वडवां वीक्ष्य विस्मितः । अथ सा सुन्दरी योषाविचचारवनेवने।२५
एकदासा जगामाऽथबुधस्याश्रमसन्निधौ । दृष्ट्वा तां चारुसर्वांगीं पीनोन्नतपयोधराम्।२६
बिंबोष्ठीं कुन्ददशनां सुमुखीमुत्पलेक्षणाम् । अनङ्गशरविद्धाङ्गश्चकमे भगवान्बुधः।२७
साऽपितं चक्रमे सुभ्रूः कुमारंसोमनन्दनम् । ततस्तस्याश्रमेऽवासीद्रममाणाबुधेन सा।२८

अथकालेन कियता पुरूरवसमात्मजम् । स तस्यां जनयामास मित्रावरुणसंभव! ।२९
अथवर्षेषुयातेषु कदाचित्सा बुधाश्रमे । स्मृत्वा स्वं पूर्ववृत्तांत्तं दुःखिता निर्जगामह ।३०
गुरोरथाश्रमं गत्वा वसिष्ठस्य प्रणम्यतम् । निवेद्यवृत्तं शरणं ययौ पुंस्त्वमभीप्सती ।३१
वसिष्ठो ज्ञातवृतांतो गत्वा कैलाशपर्वतम् । संपूज्य शंभुं तुष्टाव भक्त्यापरमया युतः ।३२

वसिष्ठ उवाच

नमोनमः शिवायाऽस्तु शंकराय कपर्दिने । गिरिजार्द्धांगदेहाय नमस्ते चंद्रमौलये ।३३
मृडाय सुखदात्रे ते नमः कैलासवासिने । नीलकण्ठाय भक्तानां भुक्तिमुक्तिप्रदायिने ।३४
शिवाय शिवरूपाय प्रपन्नभयहारिणे । नमोवृषभवाहाय शरण्याय परात्मने ।३५
ब्रह्मविष्ण्वीशरूपाय सर्गस्थितिलयेषु च । नमो देवाधिदेवाय वरदाय पुरारये ।३६
यज्ञरूपाय यजतां फलदात्रे नमो नमः । गङ्गाधराय सूर्येन्दुशिखिनेत्राय ते नमः ।३७
एवं स्तुतस्स भगवान्प्रादुरासीज्जगत्पतिः । वृषारूढोऽम्बिकोपेतः कोटिसूर्यसमप्रभः ।३८
रजताचलसंकाशस्त्रिनेत्रश्चंद्रशेखरः । प्रणतं परितुष्टात्मा प्रोवाच मुनिसत्तमम् ।३९

श्रीभगवानुवाच

वरं वरय विप्रर्षे यत्ते मनसि वर्तते । इत्युक्तस्तं प्रणम्येलापुंस्त्वमभ्यर्थयन्मुनिः ।४०
अथ प्रसन्नो भगवानुवाच मुनिसत्तमम् । मासं पुमान्स भविता मासंनारीभविष्यति ।४१
इतिप्राप्यवरं शंभोर्महर्षिर्जगदम्बिकाम् । वरदानोन्मुखीं देवीं प्रणनाम महेश्वरीम् ।४२
कोटिचन्द्रकलाकान्तिं सुस्मितां परिपूज्य च । तुष्टाव भक्त्या सततमिलायाः पुँस्त्वकाम्यया ।४३
जय देवि महादेवि भक्तानुग्रहकारिणी । जयसर्वसुराराध्ये जयानन्तगुणालये ।४४
नमो नमस्ते देवेशि शरणागतवत्सले । जयदुर्गे दुःखहंत्रि दुष्टदैत्यनिषूदिनि ।४५
भक्तिगम्ये महामाये नमस्ते जगदम्बिके । संसारसागरोत्तारपोतीभूतपदाम्बुजे ।४६
ब्रह्मादयोऽपि विबुधास्त्वत्पादाम्बुजसेवया । विश्वसर्गस्थितिलयप्रभुत्वंसमवाप्नुयुः ।४७
प्रसन्ना भवदेवेशि चतुर्वर्गप्रदायिनी । कस्त्वांस्तोस्तुं क्षमोदेविकेवलंप्रणतोऽस्म्यहम् ।४८
एवं स्तुता भगवती दुर्गा नारायणी परा । भक्त्या वसिष्ठमुनिनाप्रसन्नातत्क्षणादभूत् ।४९
तदोवाच महादेवी प्रणतार्तिहरी मुनिम् । सुद्युम्नभवनं गत्वा कुरु भक्त्या मदर्चनम् ।५०
सुद्युम्नं श्रावय प्रीत्या पुराणं मत्प्रियङ्करम् । देवीभागवतं नाम नवाहोभिर्द्विजोत्तम ।५१
श्रवणादेव सततं पुँस्त्वमस्य भविष्यति । इत्युक्त्वाचतिरोधानंगच्छतःस्मशिवेश्वरौ ।५२
वसिष्ठस्तां दिशन्नत्वा समागत्याश्रमंनिजम् । समाहूयचसुद्युम्नं देव्याराधनमादिशत् ।५३
आश्विनस्य सिते पक्षे संपूज्यजगदम्बिकाम् । नवरात्रविधानेनश्रावयामासभूपतिम् ।५४
श्रुत्वा भक्त्याऽपि सुद्युम्नः श्रीमद्भागवतामृतम् । प्रणम्याऽभ्यर्च्य च गुरुं लेभे पुंस्त्वं निरन्तरम् ।५५
राज्यासनेऽभिषिक्तस्तु वसिष्ठेन महर्षिणा । भवं शशास धर्मेण प्रजाश्चैवानुरञ्जयन् ।५६
ईजे च विविधैर्यज्ञैः संपूर्णवरदक्षिणैः । पुत्रेषु राज्यं संदिश्य प्रापदेव्याः सलोकताम् ।५७
इति कथितमशेषं सेतिहासं च विप्रा यदि पठति सुभक्त्या मानवो वा शृणोति ।
स इह सकलकामान्प्राप्य देव्याः प्रसादात्परममृतमथान्ते याति देव्यास्सलोकम् ।५८

इति श्रीस्कन्दपुराणे मानसखण्डे देवीभागवतमाहात्म्ये देवीभागवत-नवाहश्रवणादिलायाःपुंस्त्वप्राप्तिवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

देवीभागवतमाहात्म्यप्रसङ्गेन ऋतवाङ्मुनिचरित्रवर्णनम्

सूत उवाच

इति श्रुत्वा कथां दिव्यांविचित्रांकुम्भसम्भवः। शुश्रूषुःपुनराहेदंविशाखंविनयान्वितः ।१

अगस्त्य उवाच

देवसेनापते देव विचित्रेयं श्रुता कथा। पुनरन्यच्च माहात्म्यं वद भागवतस्य मे।२

स्कन्द उवाच

मित्रावरुणसम्भूत! मुने! शृणु कथामिमाम्। यत्रैकदेशमहिमा प्रोक्तो भागवतस्य तु।३
वर्ण्यते धर्मविस्तारो गायत्रीमधिकृत्य च। गायत्र्या महिमा यत्र तद्भागवतमिष्यते।४
भगवत्या इदं यस्मात्तस्माद्भागवतं विदुः। ब्रह्मविष्णुशिवाराध्या परा भगवतीहिसा।५
ऋतवागिति विख्यातो मुनिरासीन्महामतिः। तस्य पुत्रोऽभवत्काले गण्डान्ते पौष्णभान्तिमे।६
स तस्यजातकर्मादिक्रियाश्चक्रेयथाविधि। चूडोपनयनादींश्चसंस्कारानपिसोऽकरोत्।७
यत आरभ्य जातोऽसौपुत्रस्तस्यमहात्मनः। ततएवाथसमुनिश्शोकरोगाकुलोऽभवत्।८
रोषलोभपरीतात्मा तथा माताऽपितस्यच। बहुरोगार्दितानित्यंशुचादुःखीकृताभृशम्।९
ऋतवाक्स मुनिश्चिन्तामवापभृशदुःखितः। किमेतत्कारणं जातं पुत्रोमेऽत्यन्तदुर्मतिः।१०
कस्यचिन्मुनिपुत्रस्य बलात्पत्नीं जहारच। मेने शिक्षांपितुर्नाऽसौ नच मातुर्विमूढधीः।११
ततो विषण्णचित्तस्तु ऋतवागब्रवीदिदम्। अपुत्रता वरं नृणां न कदाचित्कुपुत्रता।१२
पितृन्कुपुत्रः स्वर्यातान्निरये पातयत्यपि। यावज्जीवन्त्सदापित्रोःकेवलं दुःखदायकः।१३
पित्रोर्दुःखाय धिग्जन्म कुपुत्रस्य च पापिनः। सुहृदां नोपकाराय नापकाराय वैरिणाम्।१४
धन्यास्ते मानवालोके सुपुत्रो यद्गृहेस्थितः। परोपकारशीलश्च पितुर्मातुः सुखावहः।१५
कुपुत्रेण कुलं नष्टं कुपुत्रेण हतं यशः। कुपुत्रेणेह चाऽमुत्र दुःखं निरययातनाः।१६
कुपुत्रेणान्वयो नष्टो जन्म नष्टं कुभार्यया। कुभोजनेन दिवसः कुमित्रेण सुखं कुतः।१७

स्कन्द उवाच

एवं दुष्टस्य पुत्रस्य दुष्टैराचरणैर्मुनिः। तप्यमानोऽनिशं काले गत्वा गर्गमपृच्छत।१८

ऋतवागुवाच

भगवन्त्त्वामहं प्रष्टुमिच्छामि वद तत्प्रभो! ज्योतिश्शास्त्रस्य चाचार्य पुत्रदौःशील्यकारणम्।१९
गुरुशुश्रूषया वेदा अधीता विधिवन्मया। ब्रह्मचारिव्रतं तीर्त्वा विवाहोविधिवत्कृतः।२०
भार्ययासह गार्हस्थ्यधर्मश्चानुष्ठितोऽनिशम्। पञ्चयज्ञविधानञ्चमयाऽकारियथाविधि ।२१
नरकाद्बिभ्यताविप्रनतु कामसुखेच्छया। गर्भाधानञ्च विधिवत्पुत्रप्राप्त्यैमयाकृतम्।२२
पुत्रोऽयं ममदोषेण मातुर्दोषेण वा मुने। जातोदुःखावहः पित्रोर्दुःशीलोबन्धुशोकदः।२३
एतन्निशम्य वचनं गर्गाचार्यो मुनेस्तदा। विचार्य सर्वं तद्धेतुं ज्योतिर्विद्वाचमब्रवीत्।२४

गर्ग उवाच

मुने नैवापराधस्ते न मातुर्नकुलस्य च। रेवत्यन्तंतु गण्डान्तंपुत्रदौःशील्यकारणम्।२५
दुष्टे काले यतो जन्मपुत्रस्यतव भो मुने। तेनैव तवदुःखाय नाऽन्यो हेतुर्मनागपि।२६

तद्दुःखशान्तयेब्रह्मञ्जगतां मातरंशिवाम् । समाराधय यत्नेन दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ।२७
गर्गस्यवचनंश्रुत्वाऋतवाक्क्रोधमूर्च्छितः । रेवतींतु शशापाऽसौ व्योम्नः पततु रेवती ।२८
दत्ते शापे तु तेनाऽथ पूष्णोभञ्चपपातखात् । कुमुदाद्रौभासमानं सर्वलोकस्यपश्यतः ।२६
ख्यातो रैवतकश्चाभूत्तत्पातात्कुमुदाचलः । अतीव रमणीयश्च ततः प्रभृतिसोऽप्यभूत् ।३०
दत्त्वाशापंचरेवत्यैगर्गोक्तविधिनामुनिः । समाराध्याम्बिकांदेवींसुखसौभाग्यभागभूत् ।३१

स्कन्द उवाच

रेवत्यृक्षस्य यत्तेजस्तस्माज्ञातानुकन्यका । रूपेणाप्रतिमालोके द्वितीया श्रीरिवाभवत् ।३२
अथ तां प्रमुचःकन्यांरेवतीकान्तिसम्भवाम् । दृष्ट्वानाम चकारास्यारेवतीतिमुदामुनिः ।३३
निन्येऽथ स्वाश्रमे चैनां पोषयामास धर्मतः । ब्रह्मर्षिः प्रमुचोनामकुमुदाद्रौ सुतामिव ।३४
अथ कालेन च प्रौढां दृष्ट्वा तां रूपशालिनीम् । स मुनिश्चिन्तयामास कोऽस्या योग्यो वरो भवेत् ।३५
बहुधाऽन्वेषयंस्तस्या नाससादोचितं पतिम् । ततोऽग्निशालां सम्विश्य मुनिस्तुष्टाव पावकम् ।३६
कन्यावरं तदाऽशंसत्प्रीतस्तमपि हव्यवाट् । धर्मिष्ठो बलवान्वीरः प्रियवागपराजितः ।३७
दुर्दमोभविताभर्तामुनेऽस्याःपृथिवीपतिः । इतिश्रुत्वावचो वह्नेः प्रसन्नोऽभून्मुनिस्तदा ।३८
दैवादाखेटकव्याजात्तत्क्षणादागतो नृपः । दुर्दमो नाम मेधावी तस्याऽऽश्रमपदं मुनेः ।३६
पुत्रो विक्रमशीलस्य बलवान्वीर्यवत्तरः । कालिन्दीजठरे जातः प्रियव्रतकुलोद्भवः ।४०
मुनेराश्रममाविश्य तमदृष्ट्वा महामुनीम् । आमन्त्र्य तां प्रिये चेति रेवतीं पृष्ट्वान्नृपः ।४१

राजोवाच

महर्षिर्भगवानस्मादाश्रमात्क्व गतः प्रिये । तत्पादौद्रष्टुमिच्छामिवदकल्याणितत्त्वतः ।४२

कन्योवाच

अग्निशालामुपगतो महाराज महामुनिः । निश्चक्रामाश्रमात्तूर्णं राजाऽप्याकर्ण्यतद्वचः ।४३
अथाऽग्निशालाद्वारस्थं राजानं दुर्दमं मुनिः । राजलक्षणसंयुक्तमपश्यत्प्रश्रयानतम् ।४४
प्रणनामच तं राजा मुनिःशिष्यमुवाचह । गौतमानीयतामर्घ्यमर्घ्ययोग्योऽस्तिभूपतिः ।४५
आगतश्चिरकालेनजामातेतिविशेषतः । इत्युक्त्वाऽर्घ्यं ददौतस्मैसोऽपिजग्राहचिन्तयन् ।४६
मुनिरासनमासीनं गृहीतार्घ्यं च भूपतिम् । आशीर्भिरभिनन्द्याथ कुशलंचाप्यपृच्छत ।४७
अपि तेऽनामयं राजन्बले कोशेसुहृत्सुच । भृत्येऽमात्येपुरेदेशेतथाऽऽत्मनिजनाधिप ।४८
भार्याऽस्ति ते कुशलिनी यतः साऽत्रैवतिष्ठति । अतो न पृच्छाम्यस्यास्ते चाऽन्यासां कुशलं वद ।४६

राजोवाच

भगवंस्त्वत्प्रसादेन सर्वत्रानामयं मम । एतत्कुतूहलं ब्रह्मन्मद्भार्या काऽत्र विद्यते ।५०

ऋषिरुवाच

रेवतीं नाम ते भार्या रूपेणाप्रतिमा भुवि । विद्यतेऽत्र कथं पत्नीं तांन वेत्सि महीपते ।५१

राजोवाच

सुभद्राद्यास्तुया भार्या मम सन्तिगृहेविभो । जानामितास्तुभगवन्नैवजानामिरेवतीम् ।५२

ऋषिरुवाच

प्रियेतिसाम्प्रतंराजंस्त्वयोक्ताया महामते । सा विस्मृताक्षणादेवयातेश्लाघ्यतमाप्रिया ।५३

राजोवाच

त्वयोक्तं यन्मृषा तन्नो तथैवामन्त्रितामया। मुने दुष्टो न मे भावःकोपंमा कर्तुमर्हसि।५४

ऋषिरुवाच

राजन्नुक्तं त्वया सत्यं न भावो दूषितस्तव। वह्निना प्रेरितेनेत्थं भवता व्याहृतंवचः।५५
अद्य पृष्टो मया वह्निः कोऽस्या भर्ता भविष्यति। तेनोक्तंदुर्दमो राजा भविताऽस्याः पतिर्ध्रुवम्।५६
तदादत्स्व मया दत्तामिमां कन्यां महीपते। प्रियेत्यामंत्रितापूर्वं माविचारंकुरुष्वभोः।५७
श्रुत्वैतत्सोऽभवत्तूष्णींचिंतयन्मुनिभाषितम्। वैवाहिकं विधिंतस्यमुनिःकर्तुंसमुद्यतः।५८
अथोद्यतं विवाहाय दृष्ट्वा कन्याऽब्रवीन्मुनिम्। रेवत्यृक्षे विवाहोमेतातकर्तुं त्वमर्हसि।५९

ऋषि उवाच

वत्से!विवाहयोग्यानि संत्यन्यर्क्षाणि भूरिशः। रेवत्यां कथमुद्वाहः पौष्णभं न दिवि स्थितम्।६०

कन्योवाच

रेवत्यृक्षं विनाकालो ममोद्वाहोचितोनहि। अतः संप्रार्थयाम्येतद्विवाहं पौष्णभे कुरु।६१

ऋषिरुवाच

ऋतवाङ्मुनिना पूर्वं रेवतीभं निपातितम्। भान्तरेचेन्नते प्रीतिर्विवाहः स्यात्कथं तव।६२

कन्योवाच

तपः किं तप्तवानेक ऋतवागेव केवलम्। भवता किं तपो नेदृक्तप्तं वाक्कायमानसैः।६३
जगत्स्रष्टुं समर्थस्त्वं वेद्म्यहन्तेतपोबलम्। रेवत्यृक्षं दिविस्थाप्य ममोद्वाहंपितःकुरु।६४

ऋषिरुवाच

एवं भवतु भद्रन्ते यथैवत्वंब्रवीषिमाम्। त्वत्कृतेसोममार्गेऽहंस्थापयाम्यद्यपौष्णभम्।६५

स्कन्द उवाच

एवमुक्त्वा मुनिस्तूर्णंपौष्णभं स्वतपोबलात्। यथापूर्वंतथाचक्रे सोममार्गे घटोद्भव।६६
रेवतीनाम्नि नक्षत्रे विवाहविधिना मुनिः। रेवतीं प्रददौ राज्ञे दुर्दमाय महात्मने।६७
कृत्वा विवाहं कन्याया मुनीराजानब्रवीत्। किंतेऽभिलषितं वीरवदतत्पूरयाम्यहम्।६८

राजोवाच

मनोः स्वायंभुवस्याहं वंशजातोऽस्मि हेमुने। मन्वंतराधिपं पुत्रंत्वत्प्रसादाच्चकामये।६९

मुनिरुवाच

यद्येषा कामना तेऽस्ति देव्या आराधनंकुरु। भविष्यत्येवते पुत्रो मनुर्मन्वन्तराधिपः।७०
देवीभागवतं नाम पुराणं यत्तु पञ्चमम्। पञ्चकृत्वस्तुतच्छ्रुत्वालप्स्यसेऽभिमतंसुतम्।७१
रेवत्यां रैवतो नाम पञ्चमो भविता मनुः। वेदविच्छास्त्रतत्त्वज्ञो धर्मवानपराजितः।७२
इत्युक्तो मुनिना राजा प्रणम्य मुदितो मुनिम्। भार्ययासहमेधावीजगामनगरंनिजम्।७३
पितृपैतामहं राज्यं चकार स महामतिः। पालयामास धर्मात्माप्रजाःपुत्रानिवौरसान्।७४
एकदा लोमशो नाम महात्मा मुनिरागतः। प्रणिपत्यतमभ्यर्च्य प्राञ्जलिश्चाब्रवीन्नृपः।७५

राजोवाच

भगवंस्त्वत्प्रसादेन श्रोतुमिच्छामि भो मुने। देवीभागवतं नाम पुराणंपुत्रलिप्सया।७६
श्रुत्वा वाचं प्रजाभर्तुः प्रीतः प्रोवाच लोमशः। धन्योऽसि राजंस्ते भक्तिर्जाता त्रैलोक्यमातरि।७७

सुरासुरनराराध्याया परा जगदम्बिका । तस्यां चेद्भक्तिरुत्पन्नाकार्यसिद्धिर्भविष्यति ।७८
अतस्त्वां श्रावयिष्यामि श्रीमद्भागवतं नृप । यस्यश्रवणमात्रेण न किंचिदपिदुर्लभम् ।७९
इत्युक्त्वा सुदिने ब्रह्मन्कथारम्भमथाकरोत् । पञ्चकृत्वस्स शुश्राव विधिवद्भार्ययासह ।८०
समाप्तिदिवसेराजा पुराणं च मुनिं तथा । पूजयामास धर्मात्मा मुदा परमया युतः ।८१
हुत्वा नर्वाणमन्त्रेण भोजयित्वा कुमारिकाः । वाडवांश्च सपत्नीकान्दक्षिणाभिरतोषयत् ।८२
अथ कालेन कियता भगवत्याः प्रसादतः । गर्भन्दधारसाराज्ञीलोककल्याणकारकम् ।८३
पुण्येऽथ समयेप्राप्ते ग्रहैः सुस्थानसंगतैः । सर्वमङ्गलसम्पन्ने रेवती सुषुवे सुतम् ।८४
श्रुत्वा पुत्रस्य जननं स्नात्वा राजा मुदाऽन्वितः । ससुवर्णाम्भसा चक्रे जातकर्म्मादिकाः क्रियाः ।८५
यथाविधि च दानानि दत्त्वा विप्रानतोषयत् । कृतोपनयनं राजासाङ्गान्वेदानपाठयत् ।८६
सर्वविद्यानिधिर्जातोधर्मिष्ठोऽस्त्रविदां वरः । धर्मस्यवक्ताकर्त्ताच रैवतोनामवीर्यवान् ।८७
नियुक्तवानथ ब्रह्मा रैवतं मानवे पदे । मन्वन्तराधिपः श्रीमान् गां शशास स धर्मतः ।८८
इत्थं देव्याःप्रभावोऽयंसंक्षेपेणोपवर्णितः । पुराणस्यचमाहात्म्यंकोवक्तुंविस्तरात्क्षमः ।८९

सूत उवाच

कुंभयोनिस्तुमाहात्म्यंविधिंभागवतस्य च । श्रुत्वाकुमारञ्चाभ्यर्च्यस्वाश्रमंपुनराययौ ।९०

इदं मया भागवतस्य विप्रा ! माहात्म्यमुक्तं भवतां समक्षम् ।
श्रृणोति भक्त्या पठतीह भोगान्भुक्त्वाऽखिलान्मुक्तिमुपैति चान्ते ।।९१।।

इति श्रीस्कन्दपुराणे मानसखण्डे श्रीदेवीभागवतमाहात्म्ये रैवतनामकमनुपुत्रोत्पत्तिवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ।। ४ ।।

* पञ्चमोऽध्यायः *

श्रीमद्देवीभागवतमहापुराणश्रवणसविस्तरविधिवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

सूत सूत महाभागश्रुतं माहात्म्यमुत्तमम् । अधुना श्रोतुमिच्छामःपुराणश्रवणेविधिम् । १

सूत उवाच

श्रूयतां मुनयस्सर्वेपुराणश्रवणेविधिः । नराणां श्रृण्वतांयेनसिद्धिः स्यात्सार्वकामिकी । २
आदौ दैवज्ञमाहूय मुहूर्तं कल्पयेत्सुधीः । आरभ्यशुचिमासं तु मासषट्कं शुभावहम् । ३
हस्ताऽश्विमूलपुष्यर्क्षे ब्रह्ममैत्रेन्दुवैष्णवे । सत्तिथौ शुभवारे च पुराणश्रवणं शुभम् । ४

गुरुभाद्वेद ४वेदा ४ब्ज १शरां ५गा ६ब्धि ४गुणः ३क्रमात् ।
धर्माप्तिरिन्दिराप्राप्तिः कथासिद्धिः परं सुखम् ।।५।।

पीडाऽथ भूपतिभयं ज्ञानप्राप्तिः क्रमात्फलम् । पुराणश्रवणेचक्रंशोधयेच्छिवभाषितम् । ६
अथवा प्रीतये देव्या नवरात्रचतुष्टये । श्रृणुयादन्यमासेऽपि तिथिवारर्क्षशोधिते । ७
संभारं यादृशं कार्यं विवाहादौ च तादृशम् । नवाहयज्ञेचाप्यस्मिन्विधेयं यत्नतोबुधैः । ८
सहाया बहवः कार्या दंभलोभविवर्जिताः । चतुराश्च वदान्याश्च देवीभक्तिपरा नराः । ९
प्रेष्या यत्नेन वार्तेयं देशेदेशे जनेजने । आगन्तव्यमिहावश्यं कथा देव्या भविष्यति । १०
सौराश्च गाणपत्याश्च शैवाःशाक्ताश्चवैष्णवाः । सर्वेषामपिसेव्येयंयतोदेवास्सशक्तयः ।११

श्रीमद्देवीभागवतपीयूषरसलोलुपैः । आगन्तव्यं विशेषेण कथार्थं प्रेमतत्परैः ।१२
ब्राह्मणाद्याश्च ये वर्णाः स्त्रियश्चाश्रमिणस्तथा । सकामाश्चापि निष्कामाः पातव्यंतैः कथामृतम् ।१३
नावकाशःकदाचित्स्यान्नवाहश्रवणेऽपितैः । आगन्तव्यंयथाकालंयज्ञेपुण्याक्षणस्थितिः ।१४
विनयेनैव कर्तव्यमेवमाकारणं नृणाम् । आगतानां च कर्तव्यंवासस्थानंयथोचितम् ।१५
कथास्थानं प्रकर्तव्यं भूमौमार्जनपूर्वकम् । लेपनं गोमयेनाथ विशालायां मनोरमम् ।१६
कार्यस्तु मण्डपोरम्योरंभास्तम्भोपशोभितः । वितानमुपरिष्टात्तुपताकाध्वजराजितः ।१७
वक्तुश्चैवासनं दिव्यं सुखास्तरणसंयुतम् । रचितव्यं प्रयत्नेनप्राङ्मुखंवाप्युदङ्मुखम् ।१८
यथोचितानि कुर्वीत श्रोतॄणामासनानि च । नृणां चैवाथनारीणां कथाश्रवणहेतवे ।१९
वाग्मीदांतश्च शास्त्रज्ञो देव्याराधनतत्परः । दयालुर्निस्स्पृहोदक्षोधीरोवक्तोत्तमोमतः ।२०
ब्रह्मण्यो देवताभक्तः कथारसपरायणः । उदारोऽलोलुपो नम्रः श्रोताहिंसादिवर्जितः ।२१
पाखण्डनिरतोलुब्धःस्त्रैणो धर्मध्वजस्तथा । निष्ठुरःक्रोधनो वक्ता देवीयज्ञेनशस्यते ।२२
संशयच्छेदनायैकः पण्डितश्च तथागुणः । श्रोतृबोधकृदव्यग्रः कार्य्योवक्तुस्सहायकृत् ।२३
मुहूर्त्तदिवसादर्वाग्वक्तृश्रोत्रादिभिर्जनैः । कर्त्तव्यं क्षौरकर्मादि ततो नियमकल्पनम् ।२४
अरुणोदयवेलायां स्नायाच्छौचंविधायच । सन्ध्यातर्पणकार्यञ्च नित्यंसंक्षेपतश्चरेत् ।२५
कथाश्रवणयोग्यत्वसिद्धये गाश्चदापयेत् । समस्तविघ्नहर्तारमादौ गणपतिं यजेत् ।२६
कलशांश्चापिसंस्थाप्यपूजयेत्तत्रदिग्धवान् । बटुकं क्षेत्रपालञ्च योगिनीमातृकास्तथा ।२७
तुलसीं चापिसम्पूज्य ग्रहान्विष्णुञ्चशङ्करम् । नवाक्षरेण मनुना पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।२८
सर्वोपचारैस्सम्पूज्य श्रीभागवतपुस्तकम् । श्रीदेव्यावाङ्मयीं मूर्तिं यथावच्छोभनाक्षरम् ।२९
कथाविघ्नोपशान्त्यर्थंवृणुयात्पञ्चवाडवान् । जाप्योनवार्णमन्त्रस्तैःपाठ्यस्सप्तसतीस्तवः ।३०
प्रदक्षिणनमस्कारान्कृत्वांतेस्तुतिमाचरेत् । कात्यायनि!महामाये! भवानि! भुवनेश्वरि! ।३१
संसारसागरेमग्नं मामुद्धर कृपामये ! । ब्रह्मविष्णुशिवाराध्ये! प्रसीद जगदम्बिके ।३२
मनोभिलषितं देवि ! वरं देहि नमोऽस्तुते । इति सम्प्रार्थ्य शृणुयात्कथांनियतमानसः ।३३
वक्तारञ्चापि सम्पूज्य व्यासबुद्ध्या यतात्मवान् । माल्यालङ्कारवस्त्राद्यैस्संभूष्य प्रार्थयेच्च तम् ।३४
सर्वशास्त्रेतिहासज्ञ!व्यासरूप! नमोऽस्तुते! । कथाचन्द्रोदयेनान्तस्तमस्तोमं निराकुरु ।३५
तदग्रेतुनवाहान्तंकर्त्तव्यानियमास्तदा । विप्रादीनुपवेश्या दौ सम्पूज्योपविशेत्स्वयम् ।३६
श्रोतव्यंसावधानेन चतुर्वर्गफलाप्तये । गृहपुत्रकलत्राप्तधनचिन्तामपास्य च ।३७
सूर्योदयं समारभ्य किञ्चित्सूर्येऽवशेषिते । मुहूर्त्तमात्रे विश्रम्य मध्याह्ने वाचयेत्सुधीः ।३८
मलमूत्रजयायैषां लघु भोजनमिष्यते । हविष्यान्नं वरं भोज्यं सकृदेव कथार्थिना ।३९
अथवास्यात्फलाहारीपयोभुग्वाघृताशनः । यथास्यान्नकथाविघ्नस्तथाकार्यंविचक्षणैः ।४०
कथाश्रवणनिष्ठानांवक्ष्यामिनियमं द्विजाः । ब्रह्मविष्णुमहेशानां मध्ये ये भेददर्शिनः ।४१
देवीभक्तिविहीनायेपाखण्डाहिंसकाःखलाः । विप्रद्रुहोनास्तिकायेनतेयोग्याःकथाश्रवे ।४२
ब्रह्मस्वहरणे लुब्धाः परदारधनेषु च । देवस्वहरणे तेषां नाऽधिकारः कथाश्रवे ।४३
ब्रह्मचारीचभूशायीसत्यवक्ताजितेन्द्रियः । कथासमाप्तौभुञ्जीतपत्रावल्यांयतात्मवान् ।४४
वृन्ताकञ्चकलिन्दञ्च तैलञ्च द्विदलं मधु । दग्धमन्नंपर्युषितं भावदुष्टं त्यजेद् व्रती ।४५

आमिषञ्च मसूरान्नमुदक्यादृष्टमेव च । रसोनं मूलकं हिंगुं पलाण्डुं गृञ्जनं तथा ।४७
कूष्माण्डं नलिकाशाकं न भुञ्जीत कथाव्रती । कामंक्रोधंमदंलोभंदम्भंमानञ्च वर्जयेत् ।४८
विप्रध्रुवपतितव्रात्यश्वपाकयवनान्त्यजैः । उदक्यया वेदबाह्यैर्न वदेद्यः कथाव्रती ।४९
वेदगोगुरुविप्राणां स्त्रीराज्ञां महतां तथा । देवानां देवभक्तानां न निन्दां शृणुयादपि ।४९
विनयंचार्जवं शौचं दयाञ्च मितभाषणम् । उदारं मानसञ्चव कुर्याद्यस्तु कथाव्रती ।५०
श्वित्री कुष्ठी क्षयी रुग्णो भाग्यहीनश्च पापकृत् । दरिद्रश्चानपत्यश्च भक्त्येमां शृणुयात्कथाम् ।५१
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा दुर्भगा वा मृतार्भका । पतद्गर्भांगना या च ताभिः श्राव्या तथा कथा ।५२
धर्मार्थकाममोक्षांश्चयोवाञ्छति विनाश्रमम् । भगवत्याभागवतं श्रोतव्यं तेन यत्नतः ।५३
कथादिनानि चैतानि नवयज्ञैः समानि हि । तेषु दत्तं हुतं जप्तमनन्तफलदं भवेत् ।५४
एवं व्रतं नवाहन्तु कृत्वोद्यापनमाचरेत् । महाष्टमीव्रतं यद्वत्तथा कार्यं फलेप्सुभिः ।५५
निष्कामाःश्रवणेनैव पूतामुक्तिव्रजन्ति हि । भोगमोक्षप्रदा नृणां यतो भगवती परा ।५६
पुस्तकस्यचवक्तुश्चपूजाकार्या तु नित्यशः । वक्त्रादत्तं प्रसादं तु गृह्णीयाद्भक्तिपूर्वकम् ।५७
कुमारीःपूजयेन्नित्यंभोजयेत्प्रार्थयेच्च यः । सुवासिनीश्च विप्रांश्च तस्यसिद्धिर्नसंशयः ।५८
गायत्र्यानामसाहस्रं समाप्तावथवापठेत् । विष्णोर्नामसहस्रञ्च सर्वदोषोपशान्तये ।५९
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति तस्माद्विष्णुञ्च कीर्तयेत् ।६०
देव्याः सप्तशतीमन्त्रैः समाप्तौ होममाचरेत् । देवीमाहात्म्यमूलेननवार्णमनुनाऽथवा ।६१
गायत्र्या त्वथवाहोमः पायसेन ससर्पिषा । यतोभागवतं त्वेतद्गायत्रीमयमीरितम् ।६२
वाचकंतोषयेत्सम्यग्वस्त्रभूषाधनादिभिः । प्रसन्ने वाचके सर्वाः प्रसन्नास्तस्य देवताः ।६३
ब्राह्मणान्भोजयेद्भक्त्या दक्षिणाभिश्चतोषयेत् । पृथिव्यां देवरूपास्ते तुष्टेष्वेष्वीप्सितं फलम् ।६४
सुवासिनीः कुमारीश्च देवीभक्त्या च भोजयेत् । ताभ्योऽपि दक्षिणान्दत्त्वा प्रार्थयेत्सिद्धिमात्मनः ।६५
दद्याद्दानानिचान्यानिसुवर्णङ्गाःपयस्विनीः । हयानिभान्मेदिनीञ्चतस्यस्यादक्षयंफलम् ।६६
देवीभागवतञ्चैतल्लिखितं शोभनाक्षरम् । हेमसिंहासने स्थाप्य पट्टवस्त्रेण वेष्टितम् ।६७
अष्टम्यांवानवम्याञ्चवाचकायार्चितायच । दद्यात्सभोगान्भुक्त्वेहदुर्लभंमोक्षमाप्नुयात् ।६८
दरिद्रो दुर्बलोबालस्तरुणोजरठोऽपिवा । पुराणवेत्तावन्द्यःस्यात्पूज्यो मान्यश्चसर्वदा ।६९
सन्ति लोकस्य बहवो गुरवो गुणजन्मतः । सर्वेषामपि तेषां च पुराणज्ञः परो गुरुः ।७०
पौराणिकोब्राह्मणस्तुव्यासासनसमाश्रितः । असमाप्तेप्रसंगेतु नमस्कुर्यान्नकस्यचित् ।७१
पौराणिकीं कथां दिव्यां येऽपि शृण्वन्त्यभक्तितः । तेषां पुण्यफलं नास्ति दुःखदारिद्र्यभागिनाम् ।७२
असम्पूज्यपुराणन्तुताम्बूलकुसुमादिभिः । येशृण्वन्तिकथां देव्यास्तेदरिद्राभवन्तिहि ।७३
कीर्त्यमानांकथांत्यक्त्वायेव्रजन्त्यन्यतोनराः । भोगान्तरेप्रणश्यन्तितेषांदाराश्चसम्पदः ।७४
येचतुङ्गासनारूढाःकथांशृण्वन्तिदाम्भिकाः । तेवायसाभवन्त्यत्रभुक्त्वानिरययातनाः ।७५
येचाढ्यासनसंस्थाश्चयेवीरासनसंस्थिताः । शृण्वन्तिचकथांदिव्यांतेस्युरर्जुनशाखिनः ।७६
कथायांकीर्त्यमानायां ये वदन्तिदुरुत्तरम् । रासभास्तेभवन्तीहकृकलासास्ततः परम् ।७७
निन्दन्ति ये पुराणज्ञान् कथाम्वा पापहारिणीम् । ते तु जन्मशतं दुष्टाः शुनकाः स्युर्न संशयः ।७८

ये शृण्वंति कथां वक्तुःसमानासनसंस्थिताः । गुरुतल्पसमंपापं लभन्ते नरकालयाः ।७९
ये चाप्रणम्यशृण्वंतितेभवन्तिविषद्रुमाः । शयाना येऽपि शृण्वन्ति भवन्त्यजगराह्वयः ।८०
ये कदाचन पौराणीं नशृण्वन्ति कथांनराः । ते घोरं नरकं भुक्त्वाभवंतिवनसूकराः ।८१
ये कथां नाऽनुमोदन्ते विघ्नंकुर्वन्तियेशठाः । कोट्यब्दंनिरयंभुक्त्वाभवंतिग्रामसूकराः ।८२
आसनं भाजनं द्रव्यं फलंवस्त्राणि कम्बलम् । पुराणज्ञाय यच्छन्तितेव्रजन्तिहरेःपदम् ।८३
पुराणपुस्तकस्यापि ये पटं वसनं नवम् । प्रयच्छन्ति शुभं सूत्रं ते नरास्सुखभागिनः ।८४
पुराणानांतु सर्वेषांश्रवणाद्यत्फलं लभेत् । तस्माच्छतगुणं पुण्यं देवीभागवताल्लभेत् ।८५
यथासरित्सुप्रवरा गङ्गादेवेषु शङ्करः । काव्ये रामायणं यद्वज्ज्योतिष्मत्सु यथारविः ।८६
आह्लादकानां चन्द्रश्च धनानांच यथा यशः । क्षमावतांयथाभूमिर्गाम्भीर्ये सागरोयथा ।८७
मंत्राणां चैव सावित्री पापनाशे हरिस्मृतिः । अष्टादशपुराणानां देवीभागवतं तथा ।८८
येनकेनाप्युपायेन नवकृत्वः शृणोति चेत् । न शक्यं तत्फलंवक्तुंजीवन्मुक्तस्सएवहि ।८९
राजशत्रुभये प्राप्ते महामारीभये तथा । दुर्भिक्षे राष्ट्रभंगे च तच्छांत्यैशृणुयादिदम् ।९०
भूतप्रेतविनाशाय राज्यलाभाय शत्रुतः । पुत्रलाभाय शृणुयाद्देवीभागवतं द्विजाः ।९१
श्रीमद्भागवतं यस्तु पठेद्वा शृणुयादपि । श्लोकार्द्धं श्लोकपादंवास यातिपरमांगतिम् ।९२
भगवत्या स्वयंदेव्या श्लोकार्द्धेनप्रकाशितम् । शिष्यप्रशिष्यद्वारेण तदेवविपुलीकृतम् ।९३
न गात्र्याः परो धर्मो न गायत्र्याः परन्तपः । न गायत्र्याः समो देवो न गायत्र्याः परो मनुः ।९४
गातारंत्रायतेयस्माद्गायत्री तेन सोच्यते । साऽत्र भागवते देवी स रहस्या प्रतिष्ठिता ।९५
अतोभागवतस्यास्यदेव्याःप्रीतिकरस्यच । महांत्यपिपुराणानिकलांनार्हन्तिषोडशीम् ।९६

श्रीमद्भागवतं पुराणममलं यद्ब्राह्मणानां धनं-
धर्मो धर्मसुतेन यत्र गदितो नारायणेनाऽमलः ।
गायत्र्याश्च रहस्यमत्र च मणिद्वीपश्च संवर्णितः श्रीदेव्या-
हिमभूभृते भगवती गीता च गीता स्वयम् ।।९७।।

तस्मान्नास्य पुराणस्यलोकेऽन्यत्सदृशम्परम् । अतस्सदैवसंसेव्यं देवीभागवतंद्विजाः ।९८
यस्याः प्रभावमखिलं न हि वेद धाता नो वा हरिर्न गिरिशो नहिचाप्यनन्तः
अंशांशका अपि च ते किमुताऽन्यदेवास्तस्यै नमोऽस्तु सततं जगदम्बिकायै । ९९
यत्पादपङ्कजरजः समवाप्य विश्वं ब्रह्मा सृजत्यनुदिनं च बिभर्ति विष्णुः ।
रुद्रश्च संहरति नेतरथा समर्थास्तस्यै नमोऽस्तु सततं जगदम्बिकायै ।१००

सुधाकूपारान्तस्त्रिदशतरुवाटीविलसिते
मणिद्वीपे चिन्तामणिमयगृहे चित्ररुचिरे ।
विराजन्तीमम्बां परशिवहृदि स्मेरवदनां-
नरोध्यात्वा भोगं भजति मोक्षं च लभते ।।१०१।।

ब्रह्मेशाच्युतशक्राद्यैर्महर्षिभिरुपासिता । जगतां श्रेयसे साऽस्तु मणिद्वीपाधिदेता ।१०२

इति श्रीस्कन्दपुराणे मानसखण्डे देवीभागवतमाहात्म्ये देवीभागवत-श्रवणविधिवर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीमन्महामुनिवेदव्यासविरचितम्

देवीभागवत पुराणम्

प्रथमम् स्कन्धम्

* प्रथमोऽध्यायः *

श्रीदेवीभागवतस्य महापुराणत्वादिसिद्धान्तनिर्णयः ग्रन्थारम्भमङ्गलवर्णनपूर्वकर्षीणां पुराणविषयःप्रश्नः

ॐ सर्वचैतन्यरूपां तामाद्यां विद्यां च धीमहि । बुद्धिं या नः प्रचोदयात् ।१

शौनक उवाच

सूत सूत महाभाग धन्योऽसिपुरुषर्षभ । यदधीतास्त्वया सम्यकपुराणसंहिताःशुभाः ।२
अष्टादश पुराणानि कृष्णेन मुनिनाऽनघ । कथितानि सुदिव्यानिपठितानित्वयाऽनघ ।३
पञ्चलक्षणयुक्तानिसरहस्यानिमानद । त्वयाज्ञातानिसर्वाणि व्यासात्सत्यवतीसुतात् ।४
अस्माकं पुण्ययोगेन प्राप्तस्त्वंक्षेत्रमुत्तमम् । दिव्यंविश्वसनंपुण्यंकलिदोषविवर्जितम् ।५
समाजोऽयं मुनीनां हि श्रोतुकामोऽस्ति पुण्यदाम् । पुराणसंहितां सूत! ब्रूहि त्वं नः समाहितः ।६
दीर्घायुर्भव सर्वज्ञ ! तापत्रयविवर्जितः । कथयाद्य महाभाग पुराणं ब्रह्मसंमितम् ।७
श्रोत्रेन्द्रिययुताः सूत नराःस्वादविचक्षणाः । नश्रृण्वंतिपुराणानिवंचिताविधिनाहिते ।८
यथा जिह्वेन्द्रियाह्लादःषड्रसैःप्रतिपद्यते । तथाश्रोत्रेन्द्रियाह्लादोवचोभिःसुधियांस्मृतः ।९
अश्रोत्राःफणिनंकामंमुह्यंतिहिनभोगुणैः । सकर्णयेन श्रृण्वंति तेऽप्यकर्णाः कथंन च ।१०
अतः सर्वेद्विजाः सौम्य! श्रोतुकामाः समाहिताः । वर्तन्ते नैमिषारण्येक्षेत्रे कलिभयार्दिताः ।११
येनकेनाप्युपायेन कालातिवाहनं स्मृतम् । व्यसनैरिह मूर्खाणां बुधानांशास्त्रचिन्तनैः ।१२
शास्त्राण्यपि विचित्राणि जल्पवादयुयानि च । (त्रिविधानि पुराणानि शास्त्राणि विविधानि च ।
वितंडाच्छलयुक्तानि गर्वामर्षकराणि च ॥१॥) नानार्थवादयुक्तानिं हेतुमंति बृहंतिच ।१३
सात्त्विकं तत्र वेदान्तंमीमांसाराजसंमतम् । तामसंचन्यायशास्त्रंहेतुवादाभियंत्रितम् ।१४
तथैवच पुराणानि त्रिगुणानिकथानकैः । कथितानि त्वया सौम्य पञ्चलक्षणवन्तिच ।१५
तत्र भागवतं पुण्यं पञ्चमं वेदसम्मितम् । कथितं यत्त्वया पूर्वं सर्वलक्षणसंयुतम् ।१६
उद्देशमात्रेण तदा कीर्तितं परमाद्भुतम् । मुक्तिप्रदं मुमुक्षूणां कामदं धर्मदं तथा ।१७
विस्तरेणतदाख्याहिपुराणोत्तममादरात् । श्रोतुकामा द्विजाःसर्वे दिव्यंभागवतंशुभम् ।१८
त्वं तु जानासि धर्मज्ञ! पौराणीं संहितां किल । कृष्णोक्तां गुरुभक्तत्वात्सम्यक्सत्त्वगुणाश्रयः ।१९
श्रुतान्यन्यानिसर्वज्ञत्वन्मुखान्निःसृतानिच । नैवतृप्तिंव्रजामोऽद्यसुधापानेऽमरायथा ।२०
धिक् सुधां पिबतां सूत मुक्तिर्नैव कदाचन । पिबन्भागवतं सद्योनरोमुच्येतसंकटात् ।२१
सुधापाननिमित्तं यत्कृता यज्ञा सहस्रशः । न शान्तिमधिगच्छामःसूतसर्वात्मनावयम् ।२२
मखानां हि फलंस्वर्गःस्वर्गात्प्रच्यवनं पुनः । एवं संसारचक्रेस्मिन्भ्रमणंचनिरन्तरम् ।२३
विना ज्ञानेन सर्वज्ञ नैवमुक्तिः कदाचन । भ्रमतां कालचक्रेऽत्र नराणां त्रिगुणात्मके ।२४
अतः सर्वरसोपेतं पुण्यं भागवतं वद । पावनं मुक्तिदं गुह्यं मुमुक्षूणां सदा प्रियम् ।२५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे शौनकप्रश्नो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

* द्वितीयोऽध्यायः *

भगवतीस्तुतिपूर्वकग्रन्थसंख्याविषयवर्णनम्

श्रीसूत उवाच

धन्योऽहमतिभाग्योहंपावितोऽहं महात्मभिः । यत्पृष्टंसुमहत्पुण्यंपुराणंवेदविश्रुतम् ।१
तदहं संप्रवक्ष्यामि सर्वश्रुत्यर्थसंमतम् । रहस्यं सर्वशास्त्राणामागमानामनुत्तमम् ।२
नत्वा तत्पदपंकजं सुललितं मुक्तिप्रदं योगिनां -
ब्रह्माद्यैरपि सेवितं स्तुतिपरैर्ध्येयं मुनीन्द्रैः सदा ।
वक्ष्याम्यद्य सविस्तरं बहुरसं श्रीमत्पुराणोत्तमं -
भक्त्या सर्वरसालयं भगवतीनाम्ना प्रसिद्धं द्विजाः ।।३।।
या विद्येत्यभिधीयते श्रुतिपथे शक्तिः सदाऽऽद्या परा-
सर्वज्ञा भवबन्धछित्तिनिपुणाः सर्वाशये संस्थिता ।
दुर्ज्ञेया सुदुरात्मभिश्च मुनिभिर्ध्यानास्पदम्प्रापिता -
प्रत्यक्षा भवतीह सा भगवती सिद्धिप्रदा स्यात्सदा ।।४।।
सृष्ट्वाऽखिलं जगदिदं सदसत्स्वरूपं शक्त्या स्वया त्रिगुणया परिपाति विश्वम् ।
संहृत्य कल्पसमये रमते तथैका तां सर्वविश्वजननीं मनसा स्मरामि ।५
ब्रह्मा सृजत्यखिलमेतदिति प्रसिद्धं पौराणिकैश्च कथितं खलु वेदविद्भिः ।
विष्णोस्तु नाभिकमले किल तस्य जन्म तैरुक्तमेव सृजते नहि स स्वतन्त्रः ।६
विष्णुस्तु शेषशयने स्वपितीतिकाले तन्नाभिपद्ममुकुले खलु तस्य जन्म ।
आधारतां किल गतोऽत्र सहस्रमौलिः संबोध्यतां स भगवान् हि कथं मुरारिः ।७
एकार्णवस्य सलिलं रसरूपमेव पात्रं विना नहि रसस्थितिरस्ति कश्चित् ।
या सर्वभूतविषये किल शक्तिरूपा तां सर्वभूतजननीं शरणं गतोऽस्मि ।८
योगनिद्रामीलिताक्षं विष्णुं दृष्ट्वांऽबुजेःस्थितः । अजस्तुष्टाव यां देवीं तामहं शरणंव्रजे ।९
तां ध्यात्वा सगुणां मायां मुक्तिदां निर्गुणां तथा । वक्ष्ये पुराणमखिलं शृण्वन्तु मुनयस्त्विह ।१०
पुराणमुत्तमं पुण्यं श्रीमद्भागवताभिधम् । अष्टादश सहस्राणिश्लोकास्तत्र तुसंस्कृताः ।११
स्कन्धाद्वादशचैवाऽत्रकृष्णेनविहिताःशुभाः । त्रिशतंपूर्णमध्यायाअष्टादशयुताःस्मृताः ।१२
विंशतिः प्रथमे तत्र द्वितीये द्वादशैव तु । त्रिंशच्चैव तृतीये तु चतुर्थे पञ्चविंशतिः ।१३
पञ्चत्रिंशत्तथाऽध्यायाःपञ्चमे परिकीर्तिताः । एकत्रिंशत्तथा षष्ठे चत्वारिंशच्चसप्तमे ।१४
अष्टमे तत्त्वसंख्याश्च पंचाशन्नवमे तथा । त्रयोदशतु संप्रोक्ता दशमेमुनिना किल ।१५
तथा चैकादशस्कन्धे चतुर्विंशतिरीरिताः । चतुर्दशैव चाऽध्यायाद्वादशे मुनिसत्तमाः ।१६
एवंसंख्यासमाख्याता पुराणेऽस्मिन् महात्मना । अष्टादशसहस्रीया संख्या च परिकीर्तिता ।१७
सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च । वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ।१८
निर्गुणा या सदा नित्या व्यापिकाऽविकृता शिवा । योगगम्याऽखिलाधारा तुरीया या च संस्थिता ।१९
तस्यास्तु सात्त्विकी शक्ती राजसी तामसी तथा । महालक्ष्मीः सरस्वती महाकालीति ताः स्त्रियः ।२०
तासां तिसृणांशक्तीनांदेहांगीकारलक्षणः । सृष्ट्यर्थंचसमाख्यातःसर्गशास्त्रविशारदैः ।२१
हरिद्रुहिणरुद्राणांसमुत्पत्तिस्ततःस्मृता । पालनोत्पत्तिनाशार्थं प्रतिसर्गस्स्मृतोहिसः ।२२
सोमसूर्योद्भवानां च राज्ञां वंशप्रकीर्तनम् । हिरण्यकशिप्वादीनांवंशास्तेपरिकीर्तिताः ।२३
स्वायम्भुवमुखानांच मनूनां परिवर्णनम् । कालसंख्यातथा तेषां तत्तन्मन्वन्तराणिच ।२४

तेषां वंशानुकथनं वंशानुचरितं स्मृतम् । पञ्चलक्षणयुक्तानि भवन्ति मुनिसत्तमाः ।२५
सपादलक्षं च तथा भारतं मुनिना कृतम् । इतिहास इति प्रोक्तं पञ्चमं वेदसम्मितम् ।२६

शौनक उवाच

कानि तानि पुराणानि ब्रूहिसूत सविस्तरम् । कतिसंख्यानिसर्वज्ञश्रोतुकामावयंत्विह ।२७
कलिकालविभीताःस्मो नैमिषारण्यवासिनः । ब्रह्मणाऽत्र समादिष्टाश्चक्रं दत्त्वा मनोमयम् ।२८
कथितंतेननः सर्वान्गच्छंत्वेतस्यपृष्ठतः । नेमिः संशीर्यते यत्र स देशः पावनः स्मृतः ।२६
कलेस्तत्र प्रवेशोन कदाचित्संभविष्यति । तावत्तिष्ठंतु तत्रैव यावत्सत्युगं पुनः ।३०
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य गृहीत्वा तत्कथानकम् । चालयन्निर्गतस्तूर्णं सर्वदेशदिदृक्षया ।३१
प्रेत्याऽत्र चालयंश्चक्रं नेमिःशीर्णोऽत्रपश्यतः । तेनेदं नैमिषं प्रोक्तं क्षेत्रे परमपावनम् ।३२
कलिप्रवेशो नैवात्र तस्मात्स्थानंकृतम्मया । मुनिभिःसिद्धसंघैश्चकलिभीतैर्महात्मभिः ।३३
पशुहीनाः कृतायज्ञाःपुरोडाशादिभिः किल । कालातिवाहनंकार्यं यावत्सत्ययुगागमः ।३४
भाग्ययोगेनसंप्राप्तः सूत! त्वं चाऽत्रसर्वथा । कथयाऽद्यपुणाणं हिपावनं ब्रह्मसंमितम् ।३५
सूत! शुश्रूषवः सर्वे वक्ता त्वं मतिमानथ । निर्व्यापारा वयं नूनमेकचित्तास्तथैव च ।३६
त्वं सूत! भव दीर्घायुस्तापत्रयविवर्जितः । कथयाद्य पुराणंहि पुण्यं भागवतं शिवम् ।३७
यत्रधर्मार्थकामानां वर्णनं विधिपूर्वकम् । विद्यांप्राप्यतया मोक्षःकथितोमुनिनाकिल ।३८
द्वैपायनेन मुनिना कथितां यच्च पावनम् । न तृप्यामो वयं सूत कथांश्रुत्वामनोरमाम् ।३६

सकलगुणगणानामेकपात्रं पवित्रमखिलभुवनमातुर्नाट्यवद्यद्विचित्रम् ।
निखिलमलगणानां नाशकृत्कामकन्दं प्रकटय भगवत्या नामयुक्तं पुराणम् ।।४०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यांसंहितायां प्रथमस्कन्धे ग्रन्थसंख्याविषयवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः ।। २ ।।

* तृतीयोऽध्यायः *

ससंख्याकपुराणाख्या तत्तत्युगीयव्यासानुकथनञ्च

सूत उवाच

शृण्वंतुसंप्रवक्ष्यामिपुराणानिमुनीश्वराः । यथाश्रुतानितत्त्वेनव्यासात्सत्यवतीसुतात् । १
मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् । अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि पृथक्पृथक् । २
चतुर्दशसहस्त्रं च मात्स्यमाद्यं प्रकीर्तितम् । तथाग्रहसहस्त्रं तु मार्कण्डेयं महाद्भुतम् । ३
चतुर्दशसहस्राणि तथा पञ्चशतानि च । भविष्यं परिसंख्यातं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः । ४
अष्टादशसहस्त्रं वै पुण्यं भागवतं किल । तथा चाऽयुतसंख्याकं पुराणं ब्राह्मसंज्ञकम् । ५
द्वादशैव सहस्राणि ब्रह्माण्डं च शताधिकम् । तथाऽष्टादशसाहस्त्रं ब्रह्मवैवर्तमेव च । ६
अयुतं वामनाख्यं च वायव्यं षट्शतानि च । चतुर्विंशतिसंख्यातःसहस्राणितुशौनक ।७
त्रयोविंशतिसाहस्त्रं वैष्णवं परमाद्भुतम् । चतुर्विंशतिसाहस्त्रं वाराहं परमाद्भुतम् । ८
षोडशैव सहस्राणि पुराणं चाऽग्निसंज्ञिकम् । पञ्चविंशतिसाहस्त्रं नारदं परमं मतम् । ६
पञ्चपञ्चाशत्सहस्त्रंपाद्माख्यं विपुलंमतम् । एकादशसहस्राणिलिंगाख्यंचाऽतिविस्तृतम् ।१०
एकोनविंशत्साहस्त्रं गारुडं हरिभाषितम् । सप्तदशसहस्त्रं च पुराणं कूर्मभाषितम् ।११
एकाशीतिसहस्राणिस्कन्दाख्यंपरमाद्भुतम् । पुराणाख्या च संख्या च विस्तरेण मयाऽनघाः ।१२
तथैवोपपुराणानि शृण्वन्तु ऋषिसत्तमाः । सनत्कुमारं प्रथमं नारसिंहं ततः परम् ।१३

नारदीयं शिवं चैव दौर्वाससमनुत्तमम् । कापिलं मानवं चैव तथा चौशनसंस्मृतम् ।१४
वारुणंकालिकाख्यंचसांवंनंदिकृतं शुभम् । सौरंपाराशरंप्रोक्तमादित्यंचातिविस्तरम् ।१५
माहेश्वरं भागवतं वाशिष्ठंच सविस्तरम् । एतान्युपपुराणानिकथितानिमहात्मभिः ।१६
अष्टादश पुराणानि कृत्वा सत्यवतीसुतः । भारताख्यानमतुलं चक्रेतदुपबृंहितम् ।१७
मन्वन्तरेषु सर्वेषु द्वापरे द्वापरे युगे । प्रादुष्करोति धर्मार्थी पुराणानि यथाविधि ।१८
द्वापरे द्वापरे विष्णुर्व्यासरूपेण सर्वदा । वेदमेकं स बहुधा कुरुते हितकाम्यया ।१९
अल्पायुषोऽल्पबुद्धींश्च विप्राञ्ज्ञात्वा कलावथ । पुराणसंहितां पुण्यां कुरुतेऽसौ युगे युगे ।२०
स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनां न वेदश्रवणं मतम् । तेषामेव हितार्थाय पुराणानि कृतानि च ।२१
मन्वन्तरे सप्तमेऽत्र शुभे वैवस्वताभिधे । अष्टाविंशतिमे प्राप्ते द्वापरे मुनिसत्तमाः ।२२
व्यासः सत्यवतीसूनुर्गुरुर्मे धर्मवित्तमः । एकोनत्रिंशत्संप्राप्तेद्रौणिर्व्यासोभविष्यति ।२३
अतीतास्तु तथा व्यासाः सप्तविंशतिरेव च । पुराणसंहितास्तैस्तु कथितास्तुयुगेयुगे ।२४

ऋषय ऊचुः

ब्रूहि सूत महाभाग व्यासाः पूर्वयुगोद्भवाः । वक्तारस्तु पुराणानां द्वापरे द्वापरेयुगे ।२५

सूत उवाच

द्वापरे प्रथमे व्यस्ताः स्वयंवेदाःस्वयंभुवा । प्रजापतिर्द्वितीये तु द्वापरे व्यासकार्यकृत् ।२६
तृतीयेचोशना व्यासश्चतुर्थे तु बृहस्पतिः । पञ्चमेसविताव्यासः षष्ठे मृत्युस्तदाऽपरे ।२७
मघवा सप्तमे प्राप्ते वसिष्ठस्त्वष्टमे स्मृतः । सारस्वतस्तु नवमे त्रिधामा दशमे तथा ।२८
एकादशेऽथ त्रिवृषो भरद्वाजस्ततः परम् । त्रयोदशे चाऽन्तरिक्षो धर्मश्चापि चतुर्दशे ।२९
त्र्य्यारुणिः पञ्चदशे षोडशेतु धनञ्जयः । मेघातिथिः सप्तदशे व्रती ह्यष्टादशे तथा ।३०
अत्रिरेकोनविंशेऽथ गौतमस्तु ततः परम् । उत्तमश्चैकविंशेऽथ हर्यात्मा परिकीर्तितः ।३१
चेनोवाजश्रवाश्चैवसोमोऽमुष्यायणस्तथा । तृणविन्दुस्तथाव्यासोभार्गवस्तुततःपरम् ।३२
ततः शक्तिर्जातुकर्ण्यः कृष्णद्वैपायनस्ततः । अष्टाविंशतिसंख्येयं कथिताया मयाश्रुता ।३३
कृष्णद्वैपायनात्प्रोक्तं पुराणञ्च मयाश्रुतम् । श्रीमद्भागवतं पुण्यं सर्वदुःखाघनाशनम् ।३४
कामदं मोक्षदञ्चैव वेदार्थपरिबृंहितम् । सर्वागमरसारामं मुमुक्षूणां सदा प्रियम् ।३५

व्यासेन कृत्वाऽतिशुभं पुराणं शुकाय पुत्राय महात्मने यत् ।
वैराग्ययुक्ताय च पाठितं वै विज्ञाय चैवाऽरणिसम्भवाय ।।३६।।
श्रुतं मया तत्र तथा गृहीतं यथार्थवद्व्यासमुखान्मुनीन्द्राः ।
पुराणगुह्यं सकलं समेतं गुरोः प्रसादात्करुणानिधेश्च ।।३७।।
सुतेन पृष्टः सकलं जगाद द्वैपायनस्तत्र पुराणगुह्यम् ।
अयोनिजेनाऽद्भुतबुद्धिना वै श्रुतं मया तत्र महाप्रभावम् । ३८ ।

श्रीमद्भागवतामरांघ्रिपफलास्वादाहरः सत्तमाः –
संसारार्णवदुर्विगाह्यसलिलं सन्तर्तुकामः शुकः ।
नानाख्यानरसालयं श्रुतिपुटैः प्रेम्णाऽशृणोदद्भुतम् –
तच्छ्रुत्वा न विमुच्यते कलिभयादेवं विधः कःक्षितौ ।।३९।।
पापीयानपि वेदधर्मरहित स्वाचारहीनाशयो –
व्याजेनाऽपिशृणोतियःपरमिदं श्रीमत्पुराणोत्तमम् ।
भुक्त्वा भोगकलापमत्र विपुलं देहावसानेऽचलम् –
योगिप्राप्यमवाप्नुयाद्भगवतीनामाङ्कितं सुन्दरम् ।।४०।।

या निर्गुणा हरिहरादिभिरप्यलभ्या विद्या सताम्प्रियतमाऽथ समाधिगम्या।
सा तस्य चित्तकुहरे प्रकरोतिभावं यः संशृणोति सततं तु सतीपुराणम् ।४१
सम्प्राप्य मानुषभवं सकलाङ्गयुक्तं पोतम्भवार्णवजलोत्तरणाय कामम्।
सम्प्राप्यवाचकमहोन शृणोति मूढोऽसौ वञ्चितोऽत्र विधिना सुखदंपुराणम् ।४२
यः प्राप्य करणयुगलं पटुमानुषत्वे रागी शृणोति सततं च परापवादान्।
सर्वार्थदं रसनिधिं विमलंपुराणं नष्टः कुतो न शृणुते भुवि मन्दबुद्धिः ।४३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां प्रथमस्कन्धे पुराणवर्णनपूर्वकतत्तद्युगीयव्यासवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

* चतुर्थोऽध्यायः *

देवीसर्वोत्तमेतिकथनम्प्रसङ्गतःशुकजन्मकथनञ्च

ऋषय ऊचुः

सौम्यव्यासस्यभार्यायांकस्यां जातःसुतःशुकः । कथंवाकीदृशोयेन पठितेयंसुसंहिता । १
अयोनिजस्त्वयाप्रोक्तस्तथाचारणिजःशुकः । सन्देहोऽस्तिमहांस्तत्रकथयाद्यमहामते । २
गर्भयोगी श्रुतः पूर्वं शुको नाम महातपाः । कथं च पठितं तेन पुराणं बहुविस्तरम् । ३

सूत उवाच

पुरा सरस्वतीतीरे व्यासः सत्यवतीसुतः । आश्रमे कलविंकौ तु दृष्ट्वा विस्मयमागतः । ४
जातमात्रंशिशुंनीडेमुक्तमण्डान्मनोहरम् । ताम्रास्यंशुभसर्वाङ्गं पिच्छांकुरविवर्जितम् । ५
तौ तु भक्ष्यार्थमत्यंतं रतौ श्रमपरायणौ । शिशोश्चंचुपुटे भक्ष्यं क्षिपंतौ च पुनःपुनः । ६
अङ्गेनांगानि बालस्य घर्षयन्तौ मुदान्वितौ । चुम्बन्तौ च मुखं प्रेम्णा कलविंकौ शिशोः शुभम् । ७
वीक्ष्यप्रेमाद्भुतं तत्र बालेचटकयोस्तदा । व्यासश्चित्तातुरःकामं मनसा समचिन्तयत् । ८
तिरश्चामपियत्प्रेमपुत्रेसमभिलक्ष्यते । किं चित्रं यन्मनुष्याणां सेवाफलमभीप्सताम् । ९
किमेतौ चटकौ चाऽस्य विवाहं सुखसाधनम् । विरच्यसुखिनौ स्यातां दृष्ट्वा वध्वा मुखं शुभम् ।१०
अथवा वार्धके प्राप्ते परिचर्यां करिष्यति । पुत्रः परमधर्मिष्ठः पुण्यार्थं कलविंकयोः ।११
अर्जयित्वाऽथवा द्रव्यंपितरौतर्पयिष्यति । अथवा प्रेतकार्याणि करिष्यतियथाविधि ।१२
अथवाकिंगयाश्राद्धंगत्वासंवितरिष्यति । नीलोत्सर्गञ्च विधिवत्प्रकरिष्यतिबालकः ।१३
संसारेऽत्रसमाख्यातंसुखानामुत्तमंसुखम् । पुत्रगात्रपरिष्वङ्गो लालनञ्च विशेषतः ।१४
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गोनैवच नैवच । पुत्रादन्यतरन्नास्ति परलोकस्यसाधनम् ।१५
मन्वादिभिश्चमुनिभिर्धर्मशास्त्रेषुभाषितम् । पुत्रवान्स्वर्गमाप्नोति अपुत्रस्तु कथञ्चन ।१६
दृश्यतेऽत्र समक्षं तन्नानुमानेन साध्यते । पुत्रवान्मुच्यते पापादाप्तवाक्यञ्च शाश्वतम् ।१७
आतुरोमृत्युकालेऽपिभूमिशय्यागतोनरः । करोतिमनसा चिन्तां दुःखितःपुत्रवर्जितः ।१८
धनंमेविपुलंगेहेपात्राणिविविधानिच । मन्दिरंसुन्दरं चैतत्कोऽस्य स्वामीभविष्यति ।१९
मृत्युकाले मनस्तस्य दुःखेन भ्रमतेयतः । अतोऽस्य दुर्गतिर्नूनं भ्रान्तचित्तस्य सर्वथा ।२०
एवं बहुविधां चिन्तां कृत्वा सत्यवतीसुतः । निश्वस्य बहुधा चोष्णं विमनाः सम्बभूव ह ।२१
विचार्यमनसाऽत्यर्थं कृत्वामनसिनिश्चयम् । जगामच तपस्तप्तुं मेरुपर्वतसंनिधौ ।२२
मनसाचिन्तयामास कं देवं समुपास्महे । वरप्रदाननिपुणं वाञ्छितार्थप्रदं तथा ।२३
विष्णुं रुद्रं सुरेन्द्रं वा ब्रह्माणं वा दिवाकरम् । गणेशंकार्तिकेयंच पावकं वरुणं तथा ।२४

एवं चिन्तयतस्तस्य नारदो मुनिसत्तमः । यदृच्छयासमायातोवीणापाणिःसमाहितः ।२५
तं दृष्ट्वापरमप्रीतोव्यासःसत्यवतीसुतः । कृत्वाऽर्घ्यमासनं दत्त्वा पप्रच्छकुशलंमुनिम् ।२६
श्रुत्वाऽथकुशलप्रश्नं पप्रच्छमुनिसत्तमः । चिन्तातुरोऽसि कस्मात्त्वं द्वैपायनवदस्वमे ।२७

व्यास उवाच

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति न सुखं मानसेततः । तदर्थं दुःखितश्चाहं चिन्तयामि पुनः पुनः ।२८
तपसातोषयाम्यद्य कंदेवं वाञ्छितार्थदम् । इति चिन्तांतुरोऽस्म्यद्यत्वामहंशरणङ्गतः ।२९
सर्वज्ञोऽसिमहर्षे त्वं कथयाऽऽशुकृपानिधे । कं देवं शरणं यामि योमे पुत्रंप्रदास्यति ।३०

सूत उवाच

इति व्यासेन पृष्टस्तु नारदो वेदविन्मुनिः । उवाच परयाप्रीत्या कृष्णम्प्रतिमहामनाः ।३१

नारद उवाच

पाराशर्य! महाभाग! यत्त्वं पृच्छसि मामिह । तमेवार्थम्पुरा पृष्टः पित्रा मे मधुसूदनः ।३२
ध्यानस्थञ्च हरिं दृष्ट्वा पितामे विस्मयङ्गतः । पर्यपृच्छत देवेशं श्रीनाथजगतःपतिम् ।३३
कौस्तुभोद्भाषितं दिव्यंशङ्खचक्रगदाधरम् । पीताम्बरंचतुर्बाहुंश्रीवत्साङ्कितवक्षसम् ।३४
कारणं सर्वलोकानां देवदेवं जगद्गुरुम् । वासुदेवं जगन्नाथं तप्यमानं महत्तपः ।३५

ब्रह्मोवाच

देवदेव ! जगन्नाथ ! भूतभव्यभवत्प्रभो । तपश्चरसि कस्मात्त्वं किं ध्यायसि जनार्दन! ।३६
विस्मयोऽयंममात्यर्थंत्वंसर्वजगताम्प्रभुः । ध्यानयुक्तोऽसिदेवेश किं चचित्रमतःपरम् ।३७
त्वन्नाभिकमलाज्जातःकर्ताहमखिलस्यह । त्वत्तःकोऽप्यधिकोऽस्त्यत्रतंदेवंब्रूहिमापते ।३८
जानाम्यहं जगन्नाथ! त्वमादिः सर्वकारणम् । कर्ता पालयिता हर्ता समर्थः सर्वकार्यकृत् ।३९
इच्छया ते महाराज सृजाम्यहमिदंजगत् । हरःसंहरतेकाले सोऽपि ते वचने सदा ।४०
सूर्योभ्रमतिचाकाशे वायुर्वाति शुभाशुभः । अग्निस्तपति पर्जन्यो वर्षतीश त्वदाज्ञया ।४१
त्वं तु ध्यायसि कं देवं संशयोऽयंमहान्मम । त्वत्तः परं न पश्यामि देवंवै भुवनत्रये ।४२
कृपांकृत्वावदस्वाद्यभक्तोऽस्मितवसुव्रत । महतांनैव गोप्यंहिप्रायःकिञ्चिदितिस्मृतिः ।४३
तच्छ्रुत्वावचनं तस्य हरिराह प्रजापतिम् । शृणुष्वैकमना ब्रह्मंस्त्वां ब्रवीमिमनोगतम् ।४४
यद्यपित्वांशिवंमांचस्थितिसृष्ट्यन्तकारणम् । तेजानन्तिजनास्सर्वेसदेवासुरमानुषाः ।४५
स्रष्टात्वं पालकश्चाहं हरः संहारकारकः । कृताः शक्त्येति संतर्कः क्रियतेवेदपारगैः ।४६
जगत्संजनने शक्तिस्त्वयितिष्ठतिराजसी । सात्त्विकीमयिरुद्रे च तामसीपरिकीर्तिता ।४७
तया विरहितस्त्वं न तत्कर्मकरणे प्रभुः । नाऽहं पालयितुं शक्तः संहर्तुनाऽपि शङ्करः ।४८
तदधीना वयं सर्वे वर्तामः सततं विभो । प्रत्यक्षे च परोक्षे च दृष्टान्तं शृणु सुव्रत! ।४९
शेषे स्वपिमि पर्यङ्के परतन्त्रो न संशयः । तदधीनः सदोत्तिष्ठे काले कालवशं गतः ।५०
तपश्चरामि सततं तदधीनोऽस्म्यहंसदा । कदाचित्सह लक्ष्म्याचविहरामियथासुखम् ।५१
कदाचिद्दानवैः सार्द्धं संग्रामं प्रकरोम्यहम् । दारुणं देहदमनं सर्वलोकभयङ्करम् ।५२
प्रत्यक्षं तव धर्मज्ञ तस्मिन्नेकार्णवे पुरा । पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुयुद्धं मया कृतम् ।५३
तौ कर्णमलजौ दुष्टौ दानवौ मदगर्वितौ । देव देव्याः प्रसादेन निहतौ मधुकैटभौ ।५४
तदा त्वया न किं ज्ञातं कारणन्तु परात्परम् । शक्तिरूपं महाभागकिंपृच्छसिपुनःपुनः ।५५
यदिच्छापुरुषो भूत्वा विचरामि महार्णवे । कच्छपः कोलसिंहौच वामनश्च युगेयुगे ।५६
न कस्यापिप्रियोलोकेतिर्यग्योनिषुसम्भवः । नाऽभवंस्वेच्छयावामवराहादिषुयोनिषु ।५७

विहाय लक्ष्म्या सह संविहारं को याति मत्स्यादिषु हीनयोनिषु ।
शय्याञ्च मुक्तवा गरुडासनस्थः करोति युद्धं विपुलं स्वतन्त्रः ।।५८।।
पुरा पुरस्तेऽज! शिरो मदीयं गतन्धनुर्ज्यास्खलनात्त्वचाऽपि ।
त्वया तदा वाजिशिरो गृहीत्वा संयोजितं शिल्पिवरेण भूयः ।।५९।।
हयाननोऽहं परिकीर्तितश्च प्रत्यक्षमेतत्तव लोककर्तः ।
विडम्बनेयं किल लोकमध्ये कथं भवेदात्मपरो यदि स्यात् ।।६०।।
तस्मान्नाऽहं स्वतन्त्रोऽस्मि शक्त्यधीनोऽस्मि सर्वथा ।
तामेव शक्तिं सततं ध्यायामि च निरन्तरम् ।।६१।।
नाऽतः परतरं किञ्चिज्जानामि कमलोद्भव! ।

नारद उवाच

इत्युक्तं विष्णुना तेन पद्मयोनेस्तु सन्निधौ ।।६२।।
तेन चाप्यहमुक्तोऽस्मि तथैव मुनिपुङ्गव! । तस्मात्त्वमपि कल्याण! पुरुषार्थाप्तिहेतवे ।६३
असंशयं हृदम्भोजे भज देवीपदाम्बुजम् । सर्वं दास्यति सा देवी यद्यदिष्टं भवेत्तव ।६४

सूत उवाच

नारदेनैवमुक्तस्तु व्यासः सत्यवतीसुतः । देवीपादाब्जनिष्णातस्तपसे प्रययौ गिरौ ।६५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां प्रथमस्कन्धे देवी सर्वोत्तमेतिकथनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

* पञ्चमोऽध्यायः *

श्रीविष्णुचरित्रवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

सूताऽस्माकं मनः कामं मग्नं संशयसागरे । यथोक्तं महदाश्चर्यं जगद्विस्मयकारकम् । १
यन्मूर्द्धा माधवस्यापि गतो देहात्पुनः परम् । हयग्रीवस्ततो जातः सर्वकर्ता जनार्दनः । २
वेदोऽपि स्तौति यं देवं देवाः सर्वेयदाश्रयाः । आदिदेवोजगन्नाथः सर्वकारणकारणः । ३
तस्याऽपि वदनं छिन्नं दैवयोगात्कथं तदा । तत्सर्वंकथयाऽऽशुत्वंविस्तरेण महामते । ४

सूत उवाच

शृण्वन्तु मुनयः सर्वे सावधानाः समन्ततः । चरितं देवदेवस्य विष्णोः परमतेजसः । ५
कदाचिद्दा(द्वा)रुणंयुद्धं कृत्वा देवः सनातनः । दशवर्षसहस्राणि परिश्रान्तोजनार्दनः । ६
समे देशे शुभे स्थाने कृत्वापद्मासनं विभुं । अवलम्ब्यधनुः सज्यंकण्ठदेशेधरास्थितम् । ७
दत्त्वा भारं धनुष्कोट्यां निद्रामापरमापतिः । श्रान्तत्वाद्दैवयोगाच्च जातस्तत्राऽतिनिद्रितः । ८
तदा कालेन कियता देवाः सर्वे सवासवाः । ब्रह्मेशसहिताः सर्वे यज्ञं कर्तुं समुद्यताः । ९
गताः सर्वेऽथ वैकुण्ठं द्रष्टुंदेवं जनार्दनम् । देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थं मखानामधिपंप्रभुम् ।१०
अदृष्ट्वा तं तदा तत्र ज्ञानदृष्ट्याविलोक्यते । यत्रास्तेभगवान्विष्णुर्जग्मुस्तत्रतदासुराः ।११
ददृशुस्ते तदेशानं योगनिद्रावशंगतम् । विचेतनं विभुं विष्णुं तत्राऽऽसांचक्रिरेसुराः ।१२
स्थितेषु सर्वदेवेषु निद्रासुप्ते जगत्पतौ । चिन्तामापुः सुराः सर्वे ब्रह्मरुद्रपुरोगमाः ।१३
तानुवाच ततःशक्रः किं कर्त्तव्यंसुरोत्तमाः । निद्राभङ्गःकथंकार्यश्चिन्तयन्तुसुरोत्तमाः ।१४
तमुवाच तदा शंभुर्निद्राभंगेऽस्ति दूषणम् । कार्यं चैव प्रकर्त्तव्यं यज्ञस्य सुरसत्तमाः ।१५
उत्पादिता तदावम्री ब्रह्मणापरमेष्ठिना । तया भक्षयितुं तत्र धनुषोऽग्रंधरास्थितम् ।१६

भक्षितेऽग्रेतदाऽनिम्नंगमिष्यतिशरासनम् । तदानिद्राविमुक्तोऽसौ देवदेवोभविष्यति।१७
देवकार्यं तदा सर्वं भविष्यति न संशयः। स वम्रीं सन्दिदेशाऽथदेवदेवः सनातनः।१८
तमुवाच तदा वम्री देवदेवस्य मापतेः। निद्राभङ्गः कथं कार्यो देवस्य जगतां गुरोः।१९
निद्राभङ्गःकथाच्छेदो दम्पत्योःप्रीतिभेदनम् । शिशुमातृविभेदश्चब्रह्महत्यासमंस्मृतम् ।२०
तत्कथं देवदेवस्य करोमि सुखनाशनम् । किं फलं भक्षणादेव येन पापं करोम्यहम्।२१
सर्वः स्वार्थवशो लोकःकुरुतेपातकंकिल । तस्मादहं करिष्यामि स्वार्थमेवप्रभक्षणम्।२२

ब्रह्मोवाच

तवभागं करिष्यामो मखमध्ये यथा शृणु । तेन त्वंकुरुकार्यंनोविष्णुंबोधयमाचिरम्।२३
होमकर्मणि पार्श्वे च हविर्दानात्पतिष्यति । तत्तेभागंविजानीहि कुरुकार्यंत्वरान्विता।२४

सूत उवाच

इत्युक्ताब्रह्मणावम्रीधनुषोग्रंत्वरान्विता । चखादसंस्थितंभूमौविमुक्ताज्यातदाऽभवत्।२५
प्रत्यञ्चायां विमुक्तायां मुक्ता कोटिस्तथोत्तरा । शब्दः समभवद्घोरस्तेन त्रस्ताः सुरास्तदा।२६
ब्रह्माण्डं क्षुभितं सर्वं वसुधा कम्पिता तदा । समुद्राश्च समुद्विग्नास्त्रेसुश्च जलजन्तवः।२७
ववुर्वातास्तथाचोग्राः पर्वताश्च चकम्पिरे । उल्कापाता महोत्पाता बभुवुर्दुःखशंसिनः।२८
दिशोघोरतराश्चासन्सूर्योऽप्यस्तंगतोऽभवत् । चिंतामापु सुराःसर्वेकिंभविष्यतिदुर्दिने।२९
एवं चिंतयतां तेषां मूर्धाविष्णोः सकुंडलः। गतः समुकुटःक्वापि देवदेवस्य तापसाः।३०
अन्धकारे तदा घोरे शांते ब्रह्महरौ तदा । शिरोहीनं शरीरं तु ददृशाते विलक्षणम्।३१
दृष्ट्वा कबंधंविष्णोस्तेविस्मिताःसुरसत्तमाः। चिंतासागरमग्नाश्चरुरुदुःशोककर्शिताः ।३२
हा नाथ किं प्रभोजातमत्यद्भुतममानुषम् । वैशसं सर्वदेवानां देवदेव सनातन।३३
मायेयं कस्य देवस्यययातेऽद्यशिरोहृतम् । अच्छेद्यस्त्वमभेद्योऽसिअप्रदाह्योसिसर्वदा।३४
एवं गते त्वयि विभो मरिष्यन्तिचदेवताः। कीदृशस्त्वयि नःस्नेहःस्वार्थेनैवरुदामहे।३५
नाऽयं विघ्नः कृतो दैत्यैर्न यक्षैर्न च राक्षसैः। देवैरेवकृतः कस्य दूषणं च रमापते!।३६
पराधीनाःसुराः सर्वे किं कुर्मः क्व व्रजाम च । शरणं नैव देवेशसुराणां मूढचेतसाम्।३७
नचैषा सात्त्विकी माया राजसी न च तामसी । यया छिन्नं शिरस्तेऽद्य मायेशस्य जगद्गुरोः।३८
क्रन्दमानांस्तदा दृष्ट्वा देवाञ्छिवपुरोगमान् । बृहस्पतिस्तदोवाच शमयन्वेदवित्तमः।३९
रुदितेन महाभागाः क्रंदितेनतथाऽपि किम् । उपायश्चात्र कर्तव्यः सर्वथाबुद्धिगोचरः।४०
दैवं पुरुषकारश्च देवेशसदृशावुभौ । उपायश्च विधातव्यो दैवात्फलति सर्वथा।४१

इन्द्र उवाच

दैवमेव परं मन्ये धिक्पौरुषमनर्थकम् । विष्णोरपि शिरश्छिन्नं सुराणांचैवपश्यताम्।४२

ब्रह्मोवाच

अवश्यमेव भोक्तव्यं कालेनापादितं चयत् । शुभंवाऽप्यशुभंवाऽपिदैवंकोऽतिक्रमेत्पुनः ।४३
देहवान्सुखदुःखानां भोक्ता नैवात्र संशयः। यथाकालवशात्कृत्तं शिरोमे शंभुना पुरा।४४
तथैव लिङ्गपातश्च महादेवस्य शापतः। तथैवाऽद्य हरेर्मूर्धा पतितो लवणांभसि।४५
सहस्रभगसंप्राप्तिर्दुःखं चैव शचीपतेः। स्वर्गाद्भ्रंशस्तथा वासः कमले मानसे सरे।४६
एते दुःखस्य भोक्तारः केन दुःखं न भुज्यते । संसारेऽस्मिन्महाभागास्तस्माच्छोकं त्यजन्तु वै।४७
चिन्तयन्तुमहामायांविद्यांदेवींसनातनीम् । साविधास्यतिनःकार्यंनिर्गुणाप्रकृतिः परा।४८
ब्रह्मविद्यां जगद्धात्रीं सर्वेषां जननीं तथा । ययासर्वमिदं व्याप्तं त्रैलोक्यं सचराचरम्।४९

सूत उवाच

इत्युक्त्वा वै सुरान्वेधा निगमानादिदेशह। देहयुक्तान्स्थितानग्रे सुरकार्यार्थसिद्धये।५०

ब्रह्मोवाच

स्तुवन्तुपरमांदेवीं ब्रह्मविद्यांसनातनीम्। गूढांगींच महामायां सर्वकार्यार्थसाधनीम्।५१
तच्छुत्वावचनंतस्यवेदाःसर्वाङ्गसुन्दराः। तुष्टुवुर्ज्ञानगम्यांतांमहामायांजगत्स्थिताम्।५२

वेदा ऊचुः

नमोदेवि! महामाये! विश्वोत्पत्तिकरे! शिवे!। निर्गुणे! सर्वभूतेशि! मातः! शङ्करकामदे।५३
त्वं भूमिः सर्वभूतानां प्राणः प्राणवतां तथा।
धीः श्रीः कान्तिः क्षमा शान्तिः श्रद्धा मेधा धृतिः स्मृतिः॥५४॥
त्वमुद्गीथेऽर्धमात्राऽसिगायत्री व्याहृतिस्तथा। जयाच विजया धात्री लज्जा कीर्त्तिः स्पृहा दया।५५
त्वां संस्तुमोऽम्ब भुवनत्रयसंविधानदक्षां दयारसयुतां जननीं जनानाम्।
विद्यां शिवां सकललोकहितां वरेण्यां वाग्बीजवासनिपुणां भवनाशकर्त्रीम्।५६
ब्रह्मा हरः शौरिसहस्रनेत्रवाग्वह्निसूर्या भुवानाधिनाथाः।
ते त्वत्कृताः संति ततो न मुख्या माता यतस्त्वं स्थिरजङ्गमानाम्॥५७॥
सकलभुवनमेतत्कर्तुकामा यदा त्वं सृजसि जननि! देवान्विष्णुरुद्राजमुख्यान्।
स्थितिलयजननं तैः कारयस्येकरूपा न खलु तव कथंचिद्देवि संसारलेशः।५८
न ते रूपं वेत्तुं सकलभुवने कोऽपि निपुणो न नाम्नां संख्यां ते कथितुमिह योग्योऽस्ति पुरुषः।
यदल्पं कीलालं कलयितुमशक्तः स तु नरः कथं पारावाराकलनचतुरः स्यादृतमतिः।५९
न देवानां मध्ये भगवति! तवानंतविभवं विजानात्येकोऽपि त्वमिह भुवनैकाऽसि जननी।
कथं मिथ्या विश्वं सकलमपि चैका रचयसि प्रमाणं त्वेतस्मिन्निगमवचनं देवि! विहितम्।६०
निरीहैवाऽसि त्वं निखिलजगतां कारणमहो चरित्रं ते चित्रं भगवति मनो नो व्यथयति।
कथंकारं वाच्यः सकलनिगमागोचरगुणप्रभावः स्वं यस्मात्स्वयमपि न जानासि परमम्।६१
न किं जानासि त्वं जननि! मधुजिन्मौलिपतनं शिवे! किं वा ज्ञात्वा विधिदिषसि शक्तिमधुजितः।
हरेः किं वा मातर्दुरिततिरेषा बलवती भवत्याः पादाब्जे भजननिपुणे! क्वाऽस्ति दुरितम्।६२
उपेक्षा किं चेयं तव सुरसमूहेऽतिविषमा हरेर्मूर्ध्नो नाशो मतमिहमहाश्चर्यजनकम्।
महद्दुःखं मातस्त्वमसि जननच्छेदकुशला न जानीमो मौलेर्विघटनविलम्बः कथमभूत्।६३
ज्ञात्वा दोषं समलसुरतापादितं देवि! चित्ते किं वा विष्णावमरजनितं दुष्कृतं पातितं ते।
विष्णोर्वा किं समरजनितःकोऽपि गर्वोऽतिवेगाच्छेत्तुं मातस्तव विलसितं नैव विद्मोऽत्र भावम्।६४
किं वा दैत्यैः समरविजितैस्तीर्थदेशे सुरम्ये घोरं तप्त्वा भगवति! वरं लब्धवद्भिर्भवत्याः।
अन्तर्धानं गमितमधुना विष्णुशीर्षं भवानि! द्रष्टुं किं वा विगतशिरसं वासुदेवं विनोदः।६५
सिन्धोः पुत्र्यां रोषिता किं त्वमाद्ये कस्मादेनां प्रेक्षसे नाथहीनाम्।
क्षन्तव्यस्ते स्वांशजातापराधो व्युत्थाप्यैनं मोदितां मां कुरुष्व॥६६॥
एते सुरास्त्वां सततं नमन्ति कार्येषु मुख्याः प्रथितप्रभावाः।
शोकार्णवात्तारय देवि! देवानुत्थाप्य देवं सकलाधिनाथम्॥६७॥
मूर्धा गतः क्वाऽम्ब हरेर्न विद्मो नान्योऽस्त्युपायः खलु जीवनेऽद्य।
यथा सुधा जीवनकर्मदक्षा तथा जगज्जीवितदाऽसि देवि!॥६८॥

सूत उवाच

एवं स्तुता तदा देवी गुणातीता महेश्वरी। प्रसन्ना परमा मायावेदैः सांगैश्चसामगैः।६९
तानुवाचतदावाणीचाकाशस्थाऽशरीरिणी। देवान्प्रति सुखैः शब्दैर्जनानन्दक रीशुभा।७०

मकुरुध्वंसुराश्चिन्तास्वस्थास्तिष्ठन्तु चाऽमराः। स्तुताऽहं निगमैः कामं सन्तुष्टाऽस्मि न संशयः।७१
यः पुमान्मानुषे लोके स्तौत्येत्यां मामकींस्तुतिम्। पठिष्यति सदा भक्त्या सर्वान्कामानवाप्नुयात्।७२
श्रृणोति वा स्तोत्रमिदं मदीयंभक्त्या त्रिकालं सततं नरो यः।
विमुक्तदुःख स भवेत्सुखी च वेदोक्तमेतन्ननु वेदतुल्यम् ।।७३।।
श्रृण्वन्तु कारणं चाऽद्य यद्गतं वदनं हरेः। अकारणं कथं कार्यं संसारेऽत्र भविष्यति।७४
उदधेस्तनयां विष्णुः संस्थितामंतिकेप्रियाम्। जहासवदनं वीक्ष्यतस्यास्तत्रमनोरमम्।७५
तया ज्ञातं हरिर्नूनं कथं मां हसति प्रभुः। विरूपं हरिणा दृष्टं मुखं मे केन हेतुना।७६
विनाऽपि कारणेनाद्य कथं हास्यस्य सम्भवः। सपत्नीवकृतातेनमन्येऽन्यावरवर्णिनी ।७७
ततः कोपयुता जातामहालक्ष्मीतमोगुणा। तामसीतुतदाशक्तिस्तस्यादेहेसमाविशत्।७८
केनचित्कालयोगेन देवकार्यार्थसिद्धये। प्रविष्ठा तामसी शक्तिस्तस्यादेहेऽतिदारुणा।७९
तामस्याऽऽविष्टदेहासा चुकोपातिशयं तदा। शौनकैः समुवाचेदमिदं पततु ते शिरः।८०
स्त्रीस्वभावाच्च भावित्वात्कालयोगाद्विनिर्गतः। अविचार्य तदा दत्तः शापः स्वसुखनाशनः।८१
सपत्नीसम्भवंदुःखंवैधव्यादधिकं त्विति। विचिन्त्य मनसेत्युक्तंतामसीशक्तियोगतः।८२
अनृतं साहसं मायामूर्खत्वमतिलोभता। अशौचंनिर्दयत्वंचस्त्रीणांदोषाःस्वभावजाः।८३
सशीर्षं वासुदेवं तं करोम्यद्य यथा पुरा। शिरोऽस्य शापयोगेन निमग्नंलवणांबुधौ।८४
अन्यच्च कारणं किंचिद्वर्तते सुरसत्तमाः। भवतां च महत्कार्यं भविष्यति न संशयः।८५
पुरा दैत्योमहाबाहुर्हयग्रीवोऽति विश्रुतः। तपश्चक्रे सरस्वत्यास्तीरे परमदारुणम्।८६
जपन्नेकाक्षरं मन्त्रं मायाबीजात्मकं मम। निराहारो जितात्माचसर्वभोगविवर्जितः।८७
ध्यायन्मां तामसीं शक्तिं सर्वभूषणभूषिताम्। एवं वर्षसहस्रं च तपश्चक्रेऽतिदारुणम्।८८
तदाऽहं तामसंरूपं कृत्वा तत्र समागता। दर्शने पुरतस्तस्य ध्यातं तत्तेन यादृशम्।८९
सिंहोपरि स्थिता तत्र तमवोचं दयान्विता। वरं ब्रूहि महाभाग! ददामि तव सुव्रत!।९०
इति श्रुत्वा वचो देव्या दानवः प्रेमपूरितः। प्रदक्षिणां प्रणामं च चकारत्वरितस्तदा।९१
दृष्ट्वा रूपं मदीयं स प्रेमोत्फुल्लविलोचनः। हर्षाश्रुपूर्णनयनस्तुष्टाव स च मां तदा।९२

हयग्रीव उवाच

नमोदेव्यैमहामाये! सृष्टिस्थित्यन्तकारिणि!। भक्तानुग्रहचतुरे! कामदे! मोक्षदे! शिवे!।९३
धराम्बुतेजःपवनखपञ्चानां च कारणम्। त्वं गंधरसरूपाणां कारणं स्पर्शशब्दयोः।९४
घ्राणंचरसनाचक्षुस्त्वक्छ्रोत्रमिन्द्रियाणिच। कर्मेन्द्रियाणिचाऽन्यानित्वत्तः सर्वंमहेश्वरि।९५

श्रीदेव्युवाच

किं तेऽभीष्टंवरंब्रूहिवाञ्छितंयद्ददामितत्। परितुष्टाऽस्मिभक्त्यातेतपसाचाऽद्भुतेनच ।९६

हयग्रीव उवाच

यथा मे मरणं मातर्नभवेत्तत्तथा कुरु। भवेयममरो योगी तथाऽजेयः सुरासुरैः।९७

देव्युवाच

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। मर्यादाचेदृशी लोके भवेच्चकथमन्यथा।९८
एवं त्वं निश्चयं कृत्वा मरणे राक्षसोत्तम!। वरं वरय चेष्टं ते विचार्य मनसा किल।९९

हयग्रीव उवाच

हयग्रीवाच्च मे मृत्युर्नान्यस्माज्जगदम्बिके। इति मे वाञ्छितं कामं पूरयस्व मनोगतम्।१००

देव्युवाच

गृहं गच्छ महाभाग कुरुराज्यं यथासुखम् । हयग्रीवादृते मृत्युर्न ते नूनं भविष्यति ।१०१
इति दत्वावरं तस्मै अन्तर्धानं गता तथा । मुदं परमिकां प्राप्यसोऽपिस्वभवनंगतः ।१०२
स पीडयति दुष्टात्मा मुनीन्वेदांश्च सर्वशः । न कोऽपि विद्यते तस्यहंताऽद्यभुवनत्रये ।१०३
तस्माच्छीर्षं हयस्याऽस्य समुद्धृत्य मनोहरम् । देहेऽत्र विशिरोविष्णोस्त्वष्टा संयोजयिष्यति ।१०४
हयग्रीवोऽथ भगवान्हनिष्यति तमासुरम् । पापिष्ठं दानवं क्रूरं देवानां हितकाम्यया ।१०५

सूत उवाच

एवंसुरांस्तदाऽऽभाष्यशर्वाणीविरराम ह । देवास्तदाऽतिसंतुष्टास्तमूचुर्देवशिल्पिनम् ।१०६

देवा ऊचुः

कुरुकार्यं सुराणां वै विष्णोः शीर्षाभियोजनम् । दानवप्रवरंदैत्यं हयग्रीवोहनिष्यति ।१०७

सूत उवाच

इतिश्रुत्वा वचस्तेषांत्वष्टाचातित्वरान्वितः । वाजिशीर्षंचकर्त्ताशु खड्गेनसुरसन्निधौ ।१०८
विष्णोःशरीरे तेनाऽऽशुयोजितंवाजिमस्तकम् । हयग्रीवोहरिर्जातोमहामायाप्रसादतः ।१०९
कियता तेन कालेन दानवोमददर्पितः । निहतस्तरसा संख्ये देवानां रिपुरोजसा ।११०
य इदं शुभमाख्यानं शृण्वन्ति भुविमानवाः । सर्वदुःखविनिर्मुक्तास्तेभवन्तिन संशयः ।१११
महामायाचरित्रं च पवित्रं पापनाशनम् । पठतां शृण्वतां चैव सर्वसम्पत्तिकारकम् ।११२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे हयग्रीवावतारकथनं नामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

* षष्ठोऽध्यायः *

ऋषीणाम्मधुकैटभयोराख्यानविषयकःप्रश्नः

ऋषय ऊचुः

सौम्य यच्च त्वया प्रोक्तं शौरेर्युद्धंमहार्णवे । मधुकैटभयोः सार्द्धं पञ्चवर्षसहस्रकम् । १
कस्मात्तौ दानवौ जातौ तस्मिन्नेकार्णवेजले । महावर्यौ दुराधर्षौ देवैरपि सुदुर्जयौ । २
कथं तावसुरौ जातौ कथं च हरिणाहतौ । तदाचक्ष्व महाप्राज्ञ चरितं परमाद्भुतम् । ३
श्रोतुकामा वयंसर्वे त्वंवक्ताचबहुश्रुतः । दैवाच्चैवाऽत्रसञ्जातःसंयोगश्चतथाऽऽवयोः । ४
मूर्खेण सह संयोगो विषादपि सुदुर्जरः । विज्ञेन सह संयोगः सुधारससमः स्मृतः । ५
जीवन्तिपशवः सर्वे खादन्ति मेहयन्ति च । जानन्ति विषयाकारं व्यवायसुखमद्भुतम् । ६
न तेषां सदसज्ज्ञानं विवेको न च मोक्षदः । पशुभिस्तेसमाज्ञेया येषां न श्रवणादयः । ७
मृगाद्याः पशवः केचिज्जानन्तिश्रावणं सुखम् । अश्रोत्राः फणिनश्चैवमुमुहुर्नादपानतः । ८
पञ्चानामिन्द्रियाणां वै शुभे श्रवणदर्शने । श्रवणाद्वस्तुविज्ञानं दर्शनाच्चित्तरञ्जनम् । ९
श्रवणं त्रिविधं प्रोक्तं सात्विकंराजसंतथा । तामसंचमहाभागसुज्ञोक्तंनिश्चयान्वितम् ।१०
सात्त्विकं वेदशास्त्रादि साहित्यं चैव राजसम् । तामसं युद्धवार्ता च परदोषप्रकाशनम् । ११
सात्त्विकंत्रिविधंप्रोक्तंप्रज्ञावद्भिश्च पण्डितैः । उत्तमंमध्यमञ्चैव तथैवाऽधममित्युतः । १२
उत्तमं मोक्षफलदं स्वर्गदं मध्यमं तथा । अधमं भोगदं प्रोक्तं निर्णीय विदितं बुधैः । १३
साहित्यं चैव त्रिविधं स्वीयायां चोत्तमं स्मृतम् । मध्यमं वारयोषायां परोढायां तथाऽधमम् । १४
तामसंत्रिविधं ज्ञेयं विद्वद्भिः शास्त्रदर्शिभिः । आततायिनि युद्धं यत्तदुत्तममुदाहृतम् । १५

मध्यमंचापि विद्वेषात्पाण्डवानांतथाऽरिभिः । अधमंनिर्निमित्तंतु विवादे कलहेतथा । १६
तदत्र श्रवणं मुख्यं पुराणस्य महामते! । बुद्धिप्रवर्धनं पुण्यं ततः पापप्रणाशनम् । १७
तदाख्याहिमहाबुद्धेकथांपौराणिकींशुभाम् । श्रुतांद्वैपायनात्पूर्वंसर्वार्थस्यप्रसाधिनीम् । १८

सूत उवाच

यूयं धन्या महाभागा धन्योऽहं पृथिवीतले । येषांश्रवणबुद्धिश्च ममाऽपि कथनेकिल् । १९
पुरा चैकार्णवे जाते विलीने भुवनत्रये । शेषपर्यङ्कसुप्ते च देवदेवे जनार्दने् । २०
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ दानवौ मधुकैटभौ । महाबलौ च तौ दैत्यौ विवृद्धौसागरेजले । २१
क्रीडमानौस्थितौ तत्र विचरन्तावितस्ततः । तावेकदामहाकायौ क्रीडासक्तौमहार्णवे । २२
चिन्तामवापतुश्चित्तेभ्रातराविव संस्थितौ । नाकारणं भवेत्कार्यं सर्वत्रैषा परम्परा । २३
आधेयन्तु विनाऽऽधारं न तिष्ठतिकथञ्चन । आधाराधेयभावस्तुभातिनोचित्तगोचरः । २४
क्व तिष्ठति जलञ्चेदं सुखरूपं सुविस्तरम् । केन सृष्टं कथं जातं मग्नावावाञ्जलेस्थितौ । २५
आवां वा कथमुत्पन्नौ केन वोत्पादितावुभौ । पितरौक्वेतिविज्ञानं नाऽस्ति कामं तथाऽऽवयोः । २६

सूत उवाच

एवं कामयमानौ तौ जग्मतुर्न विनिश्चयम् । उवाचकैटभस्तत्र मधुं पार्श्वेस्थितंजले । २७

कैटभ उवाच

मधोवामत्र सलिले स्थातुं शक्तिर्महाबला । वर्तते भ्रातरचला कारणं सा हि मे मता । २८
तया ततमिदं तोयं गदाधारञ्च तिष्ठति । सा एव परमा देवी कारणञ्च तथाऽऽवयोः । २९
एवं विबुध्यमानौ तौ चिन्ताविष्टौ यदाऽसुरौ । तदाऽऽकाशे श्रुतौ ताभ्यां वाग्बीजं सुमनोहरम् । ३०
गृहीतञ्चततस्ताभ्यांतस्याभ्यासोदृढःकृतः । तदासौदामनीदृष्टाताभ्यांखेचोत्थिताशुभा । ३१
ताभ्यांविचारितं तत्रमन्त्रोऽयं नाऽत्रसंशयः । तथाध्यानमिदं दृष्टं गगनेसगुणंकिल । ३२
निराहारौ जतात्मानौतन्मनस्कौसमाहितौ । बभूवतुर्विचिन्त्यैवं जपध्यानपरायणौ । ३३
एवं वर्षसहस्रन्तु ताभ्यां तप्तं महत्तपः । प्रसन्ना परमा शक्तिर्जाता सा परमातयोः । ३४
खिन्नौ तौ दानवौ दृष्ट्वा तपसे कृतनिश्चयौ । तयोरनुग्रहार्थाय वागुवाचाऽशरीरिणी । ३५
चरं वां वाञ्छितं दैत्यौ ब्रूतंपरमसम्मतम् । ददामिपरितुष्टाऽस्मि युवयोस्तपसाकिल । ३६

सूत उवाच

इतिश्रुत्वा तु तां वाणीं दानवावूचतुस्तदा । स्वेच्छया मरणंदेवि वरं नो देहिसुव्रते । ३७

वागुवाच

वाञ्छितं मरणं दैत्यौ भवेद्वां मत्प्रसादतः । अजेयौ देवदैत्यैश्च भ्रातरौ नाऽत्र संशयः । ३८

सूत उवाच

इति दत्तवरौ देव्या दानवौ मददर्पितौ । चक्रतुः सागरे क्रीडां यादोगणसमन्वितौ । ३९
कालेन कियता विप्रा दानवाभ्यांयदृच्छया । दृष्टःप्रजापतिर्ब्रह्मा पद्मासनगतः प्रभुः । ४०
दृष्ट्वा तु मुदितावास्तां युद्धकामौ महाबलौ । तमूचतुस्तदातत्र युद्धं नौ देहि सुव्रत । ४१
नोचेत्पद्मंपरित्यज्ययथेष्टंगच्छमाचिरम् । यदित्वंनिर्बलश्चासि क्व योग्यंशुभमासनम् । ४२
वीरभोग्यमिदं स्थानं कातरोऽसि त्यजाऽऽशु वै । तयो रिति वचः श्रुत्वा चिन्तामाप प्रजापतिः । ४३
दृष्ट्वाचवलिनौवीरौकिंकरोमीतितापसः । चिन्ताविष्टस्तदातस्थौचिन्तयन्मनसा तदा । ४४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे प्रथमस्कन्धे मधुकैटभयो-र्युद्धोद्योगवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

* सप्तमोऽध्यायः *

ब्रह्मणा मधुकैटभभीतेनपरेशस्तुतिः

सूत उवाच

तौवीक्ष्यबलिनौब्रह्मातदोपायानचिन्तयत् । सामदानभिदादींश्चयुद्धांतान्सर्वतन्त्रवित् । १
न जानेऽहंबलं नूनमेतयोर्वा यथातथम् । अज्ञाते तु बले कामं नैव युद्धं प्रशस्यते । २
स्तुतिं करोमि चेदद्य दुष्टयोर्मदमत्तयोः । प्रकाशितं भवेन्नूनं निर्वलत्वं मया स्वयम् । ३
वधिष्यतितदैकोऽपिनिर्बलत्वे प्रकाशिते । दानंनैवाद्ययोग्यं वा भेदःकार्योमयाकथम् । ४
विष्णुं प्रबोधयाम्यद्यशेषेसुप्तं जनार्दनम् । चतुर्भुजं महावीर्यं दुःखहा स भविष्यति । ५
इति सञ्चिंत्यमनसापद्मनालगतोऽब्जजः । जगामशरणं विष्णुं मनसादुःखनाशकम् । ६
तुष्टावबोधनार्थं तं शुभैः सम्बोधनैर्हरिम् । नारायणं जगन्नाथं निस्पन्दं योगनिद्रया । ७

ब्रह्मोवाच

दीननाथ हरे विष्णो वामनोत्तिष्ठ माधव । भक्तार्तिहृद्धृषीकेश सर्वावास जगत्पते । ८
अन्तर्यामिन्नमेयात्मन्वासुदेव जगत्पते । दुष्टारिनाशनैकाग्रचित्त ! चक्रगदाधर! । ९
सर्वज्ञ सर्वलोकेश सर्वशक्तिसमन्वित । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ देवेश! दुःखनाशन! पाहिमाम् । १०
विश्वम्भर विशालाक्ष ! पुण्यश्रवणकीर्तन । जगद्योने निराकार सर्गस्थित्यन्तकारक । ११
इमौ दैत्यौ महाराजहन्तुकामौमदोद्धतौ । न जानास्यखिलाधार कथंमां संकटेगतम् । १२
उपेक्षसेऽतिदुःखार्तं यदि मां शरणंगतम् । पालकत्वं महाविष्णो निराधारं भवेत्ततः । १३
एवंस्तुतोऽपि भगवान्न बुबोधयदाहरिः । योगनिद्रासमाक्रान्तस्तदाब्रह्माह्यचिन्तयत् । १४
नूनं शक्तिसमाक्रान्तोविष्णुर्निद्रावशं गतः । जजागारनधर्मात्माकिंकरोम्यद्यदुःखितः । १५
हन्तुकामावुभौप्राप्तौदानवौमदगर्वितौ । किंकरोमिक्व गच्छामिनास्तिमेशरणंक्वचित् । १६
इति सञ्चिन्त्यमनसा निश्चयं प्रतिपद्यत । तुष्टावयोगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः । १७
विचार्यमनसाऽप्येवं शक्तिर्मेरक्षणेक्षमा । ययाह्यचेतनोविष्णुःकृतोऽस्तिस्पन्दवर्जितः । १८
व्यसुर्यथानजानाति गुणाञ्छब्दादिकानिह । तथाहरिर्नजानाति निद्रामीलितलोचनः । १९
नजहातियतोनिद्रांबहुधासंस्तुतोऽप्यसौ । मन्येनास्यवशे निद्रा निद्रयाऽयंवशीकृतः । २०
यो यस्यवशमापन्नःसतस्यकिङ्करः किल । तस्माच्च योगनिद्रेयं स्वामिनी मापतेर्हरेः । २१
सिन्धुजाया अपिवशे यया स्वामीवशीकृतः । नूनंजगदिदं सर्वं भगवत्या वशीकृतम् । २२
अहं विष्णुस्तथा शम्भुः सावित्री च रमाऽप्युमा । सर्वे वयं वशेऽप्यस्या नाऽत्र किञ्चिद्विचारणा । २३
हरिरप्यवशःशेतेयथाऽन्यःप्राकृतोजनः । ययाऽभिभूतःकावार्ताकिलान्येषांमहात्मनाम् । २४
स्तौम्यद्य योगनिद्रां वै यया मुक्तोजनार्दनः । घटयिष्यति युद्धे च वासुदेवः सनातनः । २५
इतिकृत्वामतिंब्रह्मापद्मनालस्थितस्तदा । तुष्टावयोगनिद्रांतां विष्णोरंगेपुसंस्थिताम् । २६

ब्रह्मोवाच

देवि त्वमस्य जगतः किल कारणं हि ज्ञातं मया सकलवेदवचोभिरम्ब ।
यद्विष्णुरप्यखिललोकविवेककर्ता निद्रावशञ्च गमितः पुरुषोत्तमोऽद्य । २७
को वेद ते जननि! मोहविलासलीलां मूढोऽस्म्यहं हरिरयं विवशश्च शेते ।
ईदृक्त्वया सकलभूतमनोनिवासे! विद्वत्तमो बिबुधकोटिषु निर्गुणायाः । २८
सांख्या वदन्ति पुरुषं प्रकृतिञ्च यां तां चैतन्यभावरहितं जगतश्च कर्त्रीम् ।
किं तादृशाऽसि कथमत्र जगन्निवासश्चैतन्यताविरहितो विहितस्त्वयाऽद्य । २९

नाट्यं तनोषि सगुणा विविधप्रकारं नो वेत्ति कोऽपि तव कृत्यविधानयोगम्।
ध्यायन्ति यां मुनिगणा नियतं त्रिकालं सन्ध्येतिनाम परिकल्प्य गुणान्भवानि।३०
बुद्धिर्हि बोधकरणा जगतां सदा त्वं श्रीश्चासि देवि! सततं सुखदा सुराणाम्।
कीर्तिस्तथा मतिधृती किलकान्तिरेव श्रद्धारतिश्च सकलेषु जनेषु मातः!।३१
नातः परं किल वितर्कशतैः प्रमाणं प्राप्तं मया यदिह दुःखगतिं गतेन।
त्वं चाऽत्र सर्वजगतां जननीति सत्यं निद्रालुतां वितरता हरिणाऽत्र दृष्टम्।३२
त्वं देवि! वेदविदुषामपि दुर्विभाव्या वेदोऽपि नूनमखिलार्थतया न वेद।
यस्मात्त्वदुद्भवमसौ श्रुतिराप्नुवाना प्रत्यक्षमेव सकलं तव कार्यमेतत्।३३
कस्ते चरित्रमखिलम्भुवि वेद धीमान्नाऽहं हरिर्न च भुवो न सुरास्तथाऽन्ये।
ज्ञातुं क्षमाश्च मुनयो न ममात्मजाश्च दुर्वाच्य एव महिमा तव सर्वलोके।३४
यज्ञेषु देवि! यदि नाम न ते वदन्ति स्वाहेति वेदविदुषो हवने कृतेऽपि।
न प्राप्नुवन्ति सततं मखभागधेयं देवास्त्वमेव विबुधेष्वपि वृत्तिदाऽसि।३५
त्राता वयं भगवति प्रथमं त्वया वै देवारिसम्भवभयादधुना तथैव।
भीतोऽस्मि देवि! वरदे! शरणं गतोऽस्मि घोरं निरीक्ष्य मधुना सह कैटभञ्च।३६
नो वेत्ति विष्णुरधुना मम दुःखमेतज्जाने त्वयाऽऽत्मविवशीकृतदेहयष्टिः।
मुञ्चादिदेवमथवा जहि दानवेन्द्रौ यद्रोचते तव कुरुष्व महानुभावे!।३७
जानन्ति ये न तव देवि परं प्रभावं ध्यायन्ति ते हरिहरावपि मन्दचित्ताः।
ज्ञातं मयाऽद्य जननि! प्रकटं प्रमाणं यद्विष्णुरप्यतितरां विवशोऽथ शेते।३८
सिन्धूद्भवाऽपि न हरिं प्रतिबोधितुं वै शक्ता पतिं तव वशानुगमाद्यशक्त्या।
मन्ये त्वया भगवति! प्रसभं रमाऽपि प्रस्वापिता न बुबुधे विवशीकृतेव।३९
धन्यास्त एव भुवि भक्तिपरास्तवांघ्रौ त्यक्त्वाऽन्यदेवभजनं त्वयि लीनभावाः।
कुर्वन्ति देवि! भजनं सकलं निकामं ज्ञात्वा समस्तजननींकिल कामधेनुम्।४०
धीकान्तिकीर्तिशुभवृत्तिगुणादयस्ते विष्णोर्गुणास्तु परिहृत्य गताः क्वचाऽद्य।
बन्दीकृतो हरिरसौ ननु निद्रयाऽत्र शक्त्या तवैव भगवत्यतिमानवत्या।४१
त्वं शक्तिरेव जगतामखिलप्रभावा त्वन्निर्मितं च सकलं खलु भावमात्रम्।
त्वं क्रीडसे निजविनिर्मितमोहजाले नाट्ये यथा विहरते स्वकृते नटो वै।४२
विष्णुस्त्वया प्रकटितः प्रथमं युगादौ दत्ता च शक्तिरमला खलु पालनाय।
त्रातं च सर्वमखिलं विवशीकृतोऽद्य यद्रोचते तव तथाऽम्ब करोषि नूनम्।४३
सृष्ट्वा ऽत्र मां भगवति! प्रविनाशितुं चेन्नेच्छाऽस्ति ते कुरु दयां परिहृत्य मौनम्।
कस्मादिमौ प्रकटितौ किलकालरूपौ यद्वा भवानि! हसितुं नु किमिच्छसेमाम्।४४
ज्ञातं मया तव विचेष्टितमद्भुतं वै कृत्वाऽखिलं जगदिदं रमसे स्वतन्त्रा।
लीनं करोषि सकलं किल मां तथव हन्तुं त्वमिच्छसि भवानि! किमत्रचित्रम्।४५
कामं कुरुष्व वधमद्य ममैव मातर्दुःखं न मे मरणजं जगदम्बिकेऽत्र।
कर्ता त्वयैव विहितः प्रथमं स चाऽयं दैत्याहतोऽथ मृत इत्ययशो गरिष्ठम्।४६
उत्तिष्ठ देवि! कुरु रूपमिहाद्भुतं त्वं मां वा त्विमौ जहि यथेच्छसि बाललीले।
नो चेत्प्रबोधय हरिं निहनेदिमौ यस्त्वत्साध्यमेतदखिलं किल कार्यजातम्।४७

सूत उवाच

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्रवेधसा। निःसृत्यहरिदेहात्तुसंस्थितापार्श्वतस्तदा।४८
त्यक्त्वांऽगानि च सर्वाणि विष्णोरतुलतेजसः। निर्गता योगनिद्रा सा नाशाय च तयोस्तदा।४९
विस्पन्दितशरीरोऽसौ यदाजातो जनार्दनः। धाता परमिकांप्राप्तोमुदं दृष्ट्वाहरिं ततः।५०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे विष्णुप्रबोधो नाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥

* अष्टमोऽध्यायः *

आराध्यनिर्णयवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

सन्देहोऽत्र महाभाग ! कथायांतु महाद्भुतः । वेदशास्त्रपुराणैश्च निश्चितं तु सदा बुधैः । १
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्चत्रयोदेवाःसनातनाः । नातः परतरंकिञ्चिद्ब्रह्माण्डेऽस्मिन्महामते । २
ब्रह्मा सृजति लोकान्वै विष्णुःपात्यखिलं जगत् । रुद्रः संहरते काले त्रय एतेऽत्र कारणम् । ३
एका मूर्तिस्त्रयो देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । रजसत्त्वतमोभिश्च संयुताः कार्यकारकाः । ४
तेषां मध्ये हरिः श्रेष्ठो माधवः पुरुषोत्तमः । आदिदेवो जगन्नाथः समर्थः सर्वकर्मसु । ५
नाऽन्यः कोऽपि समर्थोऽस्ति विष्णोरतुलतेजसः । स कथं स्वापितः स्वामी विवशो योगमायया । ६
क्व गतं तस्य विज्ञानं जीवतश्चेष्टितं कुतः । सन्देहोऽयं महाभाग ! कथयस्वयथाशुभम् । ७
का सा शक्तिःपुरा प्रोक्तायययाविष्णुर्जितःप्रभुः । कुतोजाताकथंशक्ताकाशक्तिर्वदसुव्रत । ८
यस्तु सर्वेश्वरो विष्णुर्वासुदेवो जगद्गुरुः । परमात्मा परानन्दः सच्चिदानन्दविग्रहः । ९
सर्वकृत्सर्वभृत्स्त्रष्टा विरजः सर्वगः शुचिः । स कथं निद्रया नीतः परतन्त्रः परात्परः । १०
एतदाश्चर्यभूतोहि सन्देहोनः परन्तप! । छिन्धि ज्ञानाऽसिना सूत व्यासशिष्यमहामते । ११

सूत उवाच

कः सन्देहं छिनत्त्येनं त्रैलोक्ये सचराचरे । मुह्यन्ति मुनयःकामं ब्रह्मपुत्राः सनातनाः । १२
नारदःकपिलश्चैवप्रश्नेऽस्मिन्मुनिसत्तमाः । किंब्रवीमिमहाभाग ! दुर्घटेऽस्मिन्विमर्शने । १३
वेदेषु विष्णुः कथितः सर्वगस्सर्वपालकः । यतो विराडिदं सर्वमुत्पन्नं सचराचरम् । १४
ते सर्वे समुपासन्ते नत्वा देवं परात्परम् । नारायणं हृषीकेशं वासुदेवं जनार्दनम् । १५
तथा केचिन्महादेवं शङ्करं शशिशेखरम् । त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रञ्च शूलपाणिं वृषध्वजम् । १६
तथा वेदेषु सर्वेषु गीतं नाम्ना त्रियम्बकम् । कपर्दिनं पञ्चवक्त्रं गौरीदेहार्धधारिणम् । १७
कैलासवासनिरतं सर्वशक्तिसमन्वितम् । भूतवृन्दयुतं देवं दक्षयज्ञविघातकम् । १८
तथासूर्यवेदविदः सायंप्रातर्दिने दिने । मध्याह्ने तु महाभागाःस्तुवन्ति विविधैःस्तवैः । १९
तथा वेदेषु सर्वेषु सूर्योपासनमुत्तमम् । परमात्मेति विख्यातं नाम तस्य महात्मनः । २०
अग्निः सर्वत्र वेदेषु संस्तुतो वेदवित्तमैः । इन्द्रश्चापित्रिलोकेशो वरुणश्च तथा परः । २१
यथा गङ्गा प्रवाहैश्च बहुभिः परिवर्तते । तथैव सर्वदेवेषु विष्णुः प्रोक्तो महार्षिभिः । २२
त्रीण्येव हि प्रमाणानि पठितानि सुपण्डितैः । प्रत्यक्षं चाऽनुमानं च शाब्दं चैव तृतीयकम् । २३
चत्वार्येवेतरे प्राहुरुपमानयुतानि च । अर्थापत्तियुतान्यन्ये पञ्च प्राहुर्महाधियः । २४
सप्त पौराणिकाश्चैव प्रवदन्ति मनीषिणः । एतैः प्रमाणैर्दुर्ज्ञेयं यद्ब्रह्म परमं च तत् । २५
वितर्कश्चात्र कर्त्तव्यो बुद्ध्याचैवागमेनच । निश्चयात्मिकयायुक्त्याविचार्यचपुनःपुनः । २६
प्रत्यक्षतस्तु विज्ञानं चिंत्यं मतिमता सदा । दृष्टान्तेनापिसततं शिष्टमार्गानुसारिणा । २७
विद्वांसोऽपि वदन्त्येवं पुराणैः परिगीयते । द्रुहिणे सृष्टिशक्तिश्च हरौ पालनशक्तिता । २८
हरे संहारशक्तिश्च सूर्ये शक्तिः प्रकाशिका । धराधरणशक्तिश्च शेषे कूर्मे तथैव च । २९
साऽऽद्या शक्तिः परिणता सर्वस्मिन्या प्रतिष्ठिता । दाहशक्तिस्तथा वह्नौ समीरे प्रेरणात्मिका । ३०
शिवोऽपिशवतांयातिकुण्डलिन्याविवर्जितः । शक्तिहीनस्तुयःकश्चिदसमर्थःस्मृतोबुधैः । ३१
एवं सर्वत्र भूतेषु स्थावरेषु चरेषु च । ब्रह्मादि स्तंबपर्यन्तं ब्रह्माण्डेऽस्मिन्महातपाः । ३२

शक्तिहीनं तु निन्द्यं स्याद्वस्तुमात्रं चराचरम् । अशक्तः शत्रुविजये गमने भोजने तथा ।३३
एवं सर्वगता शक्तिः सा ब्रह्मेति विविच्यते । योपास्या विविधैः सम्यग्विचार्या सुधिया सदा ।३४
विष्णौ च सात्त्विकीशक्तिस्तया हीनोऽप्यकर्मकृत् । द्रुहिणे राजसी शक्तिर्यया हीनो ह्यसृष्टिकृत् ।३५
शिवे च तामसी शक्तिस्तया संहारकारकः । इत्यूह्यं मनसा सर्वं विचार्य च पुनःपुनः ।३६
शक्तिः करोति ब्रह्मांडं सा वै पालयतेऽखिलम् । इच्छयासंहरत्येषा जगदेतच्चराचरम् ।३७
न विष्णुर्न हरः शक्रो न ब्रह्मा नचपावकः । न सूर्यो वरुणः शक्तःस्वे स्वेकार्येकथंचन ।३८
तया युक्ताहि कुर्वन्ति स्वानिकार्याणितेसुराः । सैवकारणकार्येषुप्रत्यक्षेणाऽवगम्यते ।३९
सगुणा निर्गुणा सा तु द्विधा प्रोक्ता मनीषिभिः । सगुणा रागिभिःसेव्या निर्गुणा तु विरागिभिः ।४०
धर्मार्थकाममोक्षाणांस्वामिनीसा निराकुला । ददाति वाञ्छितान्कामान्पूजिता विधिपूर्वकम् ।४१
न जानन्तिजनामूढास्तांसदामाययावृताः । जानन्तोऽपिनराःकेचिन्मोहयन्तिपरानपि ।४२
पण्डिताःस्वोदरार्थं वै पाखण्डानिपृथक्पृथक् । प्रवर्तयन्तिकलिनाप्रेरितामन्दचेतसः ।४३
कलावस्मिन्महाभागा नानाभेदसमुत्थिताः । नाऽन्येयुगेतथाधर्मावेदवाह्याः कथंचन ।४४
विष्णुश्चरत्यसावुग्रं तपोवर्षाण्यनेकशः । ब्रह्माहरस्त्रयोदेवा ध्यायन्तः कमपिध्रुवम् ।४५
कामयानाः सदा कामंतेत्रयःसर्वदैव हि । यजन्ति यज्ञान्विविधान्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।४६
ते वै शक्तिं परां देवीं ब्रह्माख्यां परमात्मिकाम् । ध्यायन्ति मनसा नित्यं नित्यां मत्वा सनातनीम् ।४७
तस्माच्छक्तिः सदा सेव्या विद्वद्भिःकृतनिश्चयैः । निश्चयः सर्वशास्त्राणां ज्ञातव्यो मुनिसत्तमाः ।४८
कृष्णाच्छ्रुतंमयाचैतत्तेनज्ञातंतु नारदात् । पितुःसकाशात्तेनापि ब्रह्मणाविष्णुवाक्यतः ।४९
न श्रोतव्यं न मन्तव्यमन्येषां वचनं बुधैः । शक्तिरेव सदासेव्या विद्वद्भिः कृतनिश्चयैः ।५०
प्रत्यक्षमपिद्रष्टव्यमशक्तस्यविचेष्टितम् । अतः सर्वेषु भूतेषु ज्ञातव्या शक्तिरेव हि ।५१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे आराध्यनिर्णयवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

* नवमोऽध्यायः *

भयाकुलंब्रह्माणम्प्रतिविष्णोःप्रश्नः

सूत उवाच

यदा विनिर्गतानिद्रा देहात्तस्य जगद्गुरोः । नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ।१
निःसृत्य गगने तस्थौ तामसी शक्तिरुत्तमा । उदतिष्ठज्जगन्नाथो जृम्भमाणः पुनः पुनः ।२
तदाऽपश्यत्स्थितं तत्र भयत्रस्तं प्रजापतिम् । उवाच च महातेजा मेघगम्भीरयागिरा ।३

विष्णुरुवाच

किमागतोऽसि भगवंस्तपस्त्यक्त्वाऽत्र पद्मज! । कस्माच्चिंतातुरोऽसि त्वं भयाकुलितमानसः ।४

ब्रह्मोवाच

त्वत्कर्णमलजौ देव! दैत्यौ च मधुकैटभौ । हन्तुं मां समुपायातौ घोररूपौ महाबलौ ।५
भयात्तयोः समायातस्त्वत्समीपं जगत्पते । त्राहिमां वासुदेवाद्य भयत्रस्तंविचेतनम् ।६

विष्णुरुवाच

तिष्ठाद्य निर्भयो जातस्तौहनिष्याम्यहं किल । युद्धायाजग्मतुर्मूढौ मत्समीपंगतायुषौ ।७

सूत उवाच

एवं वदति देवेशे दानवौ तौ महाबलौ । विचिन्वानावजंचोभौ संप्राप्तौ मदगर्वितौ ।८
निराधारौ जले तत्र संस्थितौ विगतज्वरौ । तावूचतुर्मदोन्मत्तौब्रह्माणंमुनिसत्तमाः ।९

पलायित्वा समायातः सन्निधावस्य किं ततः । युद्धं कुरु हनिष्यावः पश्यतोऽस्यैव सन्निधौ ।१०
पश्चादेनं हनिष्यावः सर्पभोगोपरिस्थितम् । त्वमद्य कुरुसंग्रामंदासोऽस्मीतिचवावद ।११

सूत उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णुस्तावुवाच जनार्दनः । कुरुतं समरं कामं मया दानवपुङ्गवौ!।१२
हरिष्यामि मदं चाहं युवयोर्मत्तयोः किल । आगच्छतंमहाभागौ श्रद्धाचेद्वांमहाबलौ ।१३

सूत उवाच

श्रुत्वा तद्वचनं चोभौक्रोधव्याकुललोचनौ । निराधारौ जलस्थौचयुद्धोद्युक्तौबभूवतुः ।१४
मधुश्च कुपितस्तत्र हरिणासह संयुगम् । कर्त्तुं प्रचलितस्तूर्णं कैटभस्तु तथा स्थितः ।१५
बाहुयुद्धं तयोरासीन्मल्लयोरिव मत्तयोः । श्रान्ते मधौ कैटभस्तु संग्राममकरोत्तदा ।१६
पुनर्मधुः कैटभश्च युयुधाते पुनः पुनः । बाहुयुद्धेन रागांधौ विष्णुना प्रभविष्णुना ।१७
प्रेक्षकस्तु तदा ब्रह्मादेवीचैवान्तरिक्षगा । नमम्लतुस्तदातौतुविष्णुस्तुम्लानिमाप्तवान् ।१८
पञ्चवर्षसहस्राणि यदा जातानि युद्ध्यता । हरिणा चिन्तितं तत्रकारणंमरणे तयोः ।१९
पञ्चवर्षसहस्राणि मया युद्धं कृतं किल । न श्रान्तौ दानवौघोरौश्रान्तोऽहंचैतदद्भुतम् ।२०
क्व गतं मे बलंशौर्यं कस्माच्चेमावनामयौ । किमत्र कारणंचिन्त्यंविचार्यमनसात्विह ।२१
इति चिन्तापरं दृष्ट्वा हरिं हर्षपरावुभौ । ऊचतुस्तौ मदोन्मत्तौ मेघगम्भीरनिःस्वनौ ।२२

तव नो चेद् बलं विष्णो! यदि श्रान्तोऽसि युद्धतः ।
ब्रूहि दासोऽस्मि वां नूनं कृत्वा शिरसि चाऽञ्जलिम् ।।२३।।

न चेद्युद्धं कुरुष्वाद्य समर्थोऽसि महामते । हत्वा त्वांनिहनिष्यावः पुरुषंचचतुर्मुखम् ।२४

सूत उवाच

श्रुत्वा तद्भाषितंविष्णुस्तयोस्तस्मिन्महोदधौ । उवाचवचनंश्लक्ष्णंसामपूर्वंमहामनाः ।२५

हरिरुवाच

श्रान्ते भीते त्यक्तशस्त्रे पतिते बालके तथा । प्रहरन्ति न वीरास्ते धर्म एष सनातनः ।२६
पञ्चवर्षसहस्राणि कृतं युद्धं मया त्विह । एकोऽहं भ्रातरौ वां च बलिनौसदृशौतथा ।२७
कृतं विश्रमणं मध्ये युवाभ्यां च पुनःपुनः । तथा विश्रमणंकृत्वायुध्येऽहंनात्रसंशयः ।२८
तिष्ठतां हि युवां तावद्बलवन्तौमदोत्कटौ । विश्रम्याहंकरिष्यामियुद्धंवान्यायमार्गतः ।२९

सूत उवाच

इति श्रुत्वा वचस्तस्य विश्रब्धौ दानवोत्तमौ । संस्थितौदूरतस्तत्रसंग्रामेकृतनिश्चयौ ।३०
अतिदूरे च तौदृष्ट्वा वासुदेवश्चतुर्भुजः । दध्यौ च मनसा तत्र कारणं मरणे तयोः ।३१
चिन्तनाज्ज्ञानमुत्पन्नं देवीदत्तवरावुभौ । कामं वांछितमरणौ न मम्लतुरतस्त्विमौ ।३२
वृथा मया कृतं युद्धं श्रमोऽयं मे वृथागतः । करोमिचकथंयुद्धमेवंज्ञात्वाविनिश्चयम् ।३३
अकृते च तथा युद्धे कथमेतौ गमिष्यतः । विनाशं दुःखदो नित्यं दानवौ वरदर्पितौ ।३४
भगवत्या वरो दत्तस्तया सोऽपि च दुर्घटः । मरणं चेच्छया कामं दुःखितोऽपि न वाञ्छति ।३५
रोगग्रस्तोऽपि दीनोऽपि न मुमूर्षतिकश्चन । कथंचेमौमदोन्मत्तौमर्तुकामौभविष्यतः ।३६
नन्वद्य शरणं यामि विद्यां शक्तिं सुकामदाम् । विना तया न सिध्यन्ति कामाः सम्यक्प्रसन्नया ।३७
एवंसञ्चिन्त्यमानस्तुगगनेसंस्थितांशिवाम् । अपश्यद्भगवान्विष्णुर्योगनिद्रांमनोहराम् ।३८
कृताञ्जलिरमेयात्मा तांच तुष्टावयोगवित् । विनाशार्थं तयोस्तत्र वरदां भुवनेश्वरीम् ।३९

विष्णुरुवाच

नमोदेवि! महामाये! सृष्टिसंहारकारिणि! । अनादिनिधने! चण्डि! भुक्तिमुक्तिप्रदे! शिवे! ।४०
न ते रूपं विजानामि सगुणंनिर्गुणं तथा । चरित्राणिकुतोदेविसंख्यातीतानियानिते ।४१
अनुभूतो मयातेद्य प्रभावश्चातिदुर्घटः । यदहं निद्रयालीनः संजातोऽस्मि विचेतनः ।४२
ब्रह्मणा चातियत्नेन बोधितोऽपि पुनः पुनः । न प्रबुद्धःसर्वथाऽहंसङ्कोचितषडिन्द्रियः ।४३
अचेतनत्वं सम्प्राप्तः प्रभावात्तव चाम्बिके । त्वया मुक्तः प्रबुद्धोऽहंयुद्धं चबहुधाकृतम् ।४४
श्रान्तोऽहं न च तौ श्रान्तौ त्वया दत्तवरौ वरौ । ब्रह्माणं हन्तुमायातौ दानवौ मदगर्वितौ ।४५
आहूतौ च मया कामं द्वन्द्वयुद्धायमानदे । कृतं युद्धं महाघोरं मया ताभ्यां महार्णवे ।४६
मरणे वरदानं ते ततो ज्ञातं महाद्भुतम् । ज्ञात्वाऽहं शरणं प्राप्तस्त्वामद्य शरणप्रदाम् ।४७
साहाय्यं कुरु मे मातः खिन्नोऽहं युद्धकर्मणा । दृप्तौ तौ वरदानेन तव देवार्तिनाशने! ।४८
हन्तुं मामुद्यतौ पापौ किंकरोमि क्व यामिच । इत्युक्ता सा तदादेवीस्मितपूर्वमुवाचह ।४९
प्रणमन्तं जगन्नाथं वासुदेवं सनातनम् । देवदेव! हरे! विष्णो! कुरु युद्धं पुनः स्वयम् ।५०
वञ्चयित्वा त्विमौशूरौ हन्तव्यौचविमोहितौ । मोहयिष्याम्यहंनूनं दानवौवक्रयादृशा ।५१
जहि नारायणाऽऽशु त्वं मम मायाविमोहितौ ।

सूत उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णुस्तस्याः प्रीतिरसान्वितम् ।।५२।।
संग्रामस्थलमासाद्य तस्थौतत्रमहार्णवे । तदाऽऽयातौच तौ धीरौयुद्धकामौमहाबलौ ।५३
वीक्ष्य विष्णुं स्थितं तत्र हर्षयुक्तौ बभूवतुः । तिष्ठ तिष्ठ महाकाम कुरुयुद्धं चतुर्भुज ।५४
दैवाधीनौ विदित्वाऽद्य नूनं जयपराजयौ । सबलो जयमाप्नोति दैवाज्जयति दुर्बलः ।५५
सर्वथैव न कर्तव्यौ हर्षशोकौ महात्मना । पुरा वै बहवो दैत्या जिता दानववैरिणा ।५६
अधुना चाऽनयोः सार्धं युध्यमानः पराजितः ।

सूत उवाच

इत्युक्त्वा तौ महाबाहु युद्धाय समुपस्थितौ ।।५७।।
वीक्ष्य विष्णुर्जघानाशु मुष्टिनाऽद्भुतकर्मणा । तावप्यतिबलोन्मत्तौ जघ्नतुर्मुष्टिनाहरिम् ।५८
एवं परस्परं जातं युद्धं परमदारुणम् । युद्धमानौ महावीर्यौ दृष्ट्वा नारायणस्तदा ।५९
अपश्यत्सम्मुखं देव्याः कृत्वा दीनां दृशं हरिः ।

सूत उवाच

तं वीक्ष्य तादृशं विष्णुं करुणारससंयुतम् ।।६०।।
जहासाऽतीव ताम्राक्षीवीक्षमाणातदाऽसुरौ । तौ जघान कटाक्षैश्चकामबाणैरिवापरैः ।६१
मन्दस्मितयुतैः कामप्रेमभावयुतैरनु । दृष्ट्वा मुमुहतुः पापौ देव्या वक्रविलोकनम् ।६२
विशेषमितिमन्वानौकामबाणातिपीडितौ । वीक्षमाणौस्थितौतत्रतांदेवींविशदप्रभाम् ।६३
हरिणाऽपि च तद् दृष्टं देव्यास्तत्र चिकीर्षितम् । मोहितौ तौ परिज्ञाय भगवान्कार्यवित्तमः ।६४
उवाच तौ हसञ्श्लक्ष्णं मेघगम्भीरयागिरा । वरं वरयतां वीरौयुवयोर्योऽभिवांछितः ।६५
ददामि परमप्रीतो युद्धेन युवयोः किल । दानवा बहवो दृष्टा युध्यमाना मया पुरा ।६६
युवयोः सदृशः कोऽपिनदृष्टोनचवैश्रुतः । तस्मात्तुष्टोऽस्मि कामं वै निस्तुलेनबलेनच ।६७
भ्रात्रोश्च वाञ्छितं कामं प्रयच्छामि महाबलौ । तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णोः साभिमानौ स्मरातुरौ ।६८
वीक्षमाणौ महामायां जगदानन्दकारिणीम् । तमूचतुश्चकामार्तौ विष्णुं कमललोचनौ ।६९

हरे न याचकावावां त्वंकिं दातुमिहेच्छसि । ददाव तुभ्यं देवेश दातारौनौनयाचकौ ।७०
प्रार्थय त्वं हृषीकेश ! मनोभिलषितं वरम् । तुष्टौ स्वस्तव युद्धेन वासुदेवाद्भुतेन च ।७१
तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा प्रत्युवाच जनार्दनः । भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ।७२
तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णोर्दानवौ चाऽतिविस्मितौ । वञ्चिताविति मन्वानौ तस्थतुः शोकसंयुतौ ।७३
विचार्य मनसा तौतु दानवौ विष्णुमूचतुः । प्रेक्ष्यसर्वं जलमयं भूमिंस्थलविवर्जिताम् ।७४
हरे योऽयं वरो दत्तस्त्वया पूर्वं जनार्दन । सत्यवागसि देवेश देहि तं वांछितं वरम् ।७५
निर्जले विपुले देशे हनस्व मधुसूदन । वध्यावावां तु भवतः सत्यवाग्भव माधव ।७६
स्मृत्वाचक्रन्तदा विष्णुस्तावुवाचहसन्हरिः । हन्म्यद्यवांमहाभागौनिर्जलेविपुलेस्थले ।७७
इत्युक्त्वा देवदेवेश ऊरू कृत्वाऽतिविस्तरौ । दर्शयामास तौ तत्र निर्जलं च जलोपरि ।७८
नास्त्यत्र दानवौ वारि शिरसी मुञ्चतामिह । सत्यवागहमद्यैव भविष्यामिचवांतथा ।७९
तदाकर्ण्य वचस्तथ्यं विचिन्त्य मनसा च तौ । वर्धयामासतुर्देहंयोजनानांसहस्रकम् ।८०
भगवान्द्विगुणं चक्रे जघनं विस्मितौ तदा । शीर्षे सन्दधतां तत्र जघने परमाद्भुते ।८१
रथाङ्गेन तदा भिन्ने विष्णुना प्रभविष्णुना । जघनोपरि वेगेन प्रकृष्टे शिरसी तयोः ।८२
गतप्राणौ तदा जातौ दानवौ मधुकैटभौ । सागरः सकलोव्याप्तस्तदावै मेदसातयोः ।८३
मेदिनीति ततो जातं नाम पृथ्व्याः समन्ततः । अभक्षामृत्तिकातेन कारणेनमुनीश्वराः ।८४
इति वः कथितं सर्वं यत्पृष्टोऽस्मि सुनिश्चितम् । महाविद्या महामाया सेवनीया सदा बुधैः ।८५
आराध्या परमा शक्तिः सर्वैरपि सुरासुरैः । नातः परतरं किंचिदधिकं भुवनत्रये ।८६
सत्यंसत्यंपुनःसत्यं वेदशास्त्रार्थनिर्णयः । पूजनीयापरा शक्तिर्निर्गुणा सगुणाऽथवा ।८७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे हरिकृत मधुकैटभवधवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

* दशमोऽध्यायः *

व्यासतपश्चर्यावर्णनम्

ऋषय ऊचुः

सूतपूर्वंत्वया प्रोक्तं व्यासेनामिततेजसा । कृत्वापुराणमखिलंशुकायाऽध्यापितंशुभम् । १
व्यासेनतुतपस्तप्त्वाकथमुत्पादितःशुकः । विस्तरंब्रूहिसकलं यच्छ्रुतंकृष्णतस्त्वया । २

सूत उवाच

प्रवक्ष्यामि शुकोत्पत्तिं व्यासात्सत्यवतीसुतात् । अथोत्पन्नः शुकः साक्षाद्योगिनां प्रवरो मुनिः । ३
मेरुशृङ्गे महारम्ये व्यासः सत्यवतीसुतः । तपश्चचार सोऽत्युग्रं पुत्रार्थं कृतनिश्चयः । ४
जपन्नेकाक्षरंमन्त्रंवाग्बीजंनारदाच्छ्रुतम् । ध्यायन्परां महामायां पुत्रकामस्तपोनिधिः । ५
अग्नेर्भूमेस्तथा वायोरन्तरिक्षस्यचाप्ययम् । वीर्येण संमितःपुत्रोममभूयादिति स्म ह । ६
अतिष्ठत्स गताहारः शतसंवत्सरं प्रभुः । आराधयन्महादेवं तथैव च सदाशिवाम् । ७
शक्तिःसर्वत्रपूज्येति विचार्य च पुनः पुनः । अशक्तो निन्द्यते लोके शक्तस्तु परिपूज्यते । ८
यत्र पर्वतशृङ्गे वै कर्णिकारवनाद्भुते । क्रीडन्तिदेवताः सर्वे मुनयश्च तपोधिकाः । ९
आदित्यावसवोरुद्रा मरुतश्चाश्विनौतथा । वसन्तिमुनयो यत्र ये चान्ये ब्रह्मवित्तमाः । १०
तत्र हेमगिरेः शृङ्गे सङ्गीतध्वनिनादिते । तपश्चचार धर्मात्मा व्यासः सत्यवतीसुतः । ११
ततोऽस्यतेजसाव्याप्तं विश्वं सर्वञ्चराचरम् । अग्निवर्णाजटाजाता पाराशर्यस्यधीमतः । १२
ततोऽस्य तेजालक्ष्य भयमापशचीपतिः । तुरासाहं तदा दृष्ट्वा भयत्रस्तं श्रमातुरम् । १३

उवाच भगवान्रुद्रो मघवन्तं तथास्थितम् ।

शङ्कर उवाच

कथमिन्द्राद्य भीतोऽसि किं दुःखं ते सुरेश्वर! ।।१४।।
अमर्षो नैव कर्तव्यस्तापसेषु कदाचन । तपश्चरन्ति मुनयो ज्ञात्वा मां शक्तिसंयुतम् ।१५
न त्वेतेऽहितमिच्छन्ति तापसाः सर्वथैवहि । इत्युक्तवचनः शक्रस्तमुवाच वृषध्वजम् ।१६
कस्मात्तपस्यति व्यासःकोऽर्थस्तस्य मनोगतः । पाराशर्यस्तु पुत्रार्थी तपश्चरति दुश्चरम् ।१७
पूर्णं वर्षशतं जातं ददाम्यद्य सुतं शुभम् ।

सूत उवाच

इत्युक्त्वा वासवं रुद्रो दयया मुदिताननः ।।१८।।
गत्वा ऋषिसमीपन्तु तमुवाच जगद्गुरुः । उत्तिष्ठ वासवीपुत्र पुत्रस्ते भविताशुभः ।१९
सर्वतेजोमयोज्ञानी कीर्तिकर्ता तवाऽनघ । अखिलस्य जनस्यात्र वल्लभस्ते सुतः सदा ।२०
भविष्यति गुणैः पूर्णः सात्त्विकैः सत्यविक्रमः । तदाकर्ण्य वचः श्लक्ष्णं कृष्णद्वैपायनस्तदा ।२१
शूलपाणिं नमस्कृत्य जगामाऽऽश्रमात्मनः । स गत्वाऽऽश्रममेवाशु बहुवर्षश्रमातुरः ।२२
अरणीसहितं गुह्यं ममन्थाऽग्निं चिकीर्षया । मन्थनं कुर्वतस्तस्यचित्तेचिन्ताभरस्तदा ।२३
प्रादुर्बभूव सहसा सुतोत्पत्तौ महात्मनः । मन्थानारणिसंयोगान्मन्थनाच्च समुद्भवः ।२४
पावकस्य यथा तद्वत्कथंमे स्यात्सुतोद्भवः । पुत्रारणिस्तुयाख्यातासाममाद्य न विद्यते ।२५
तरुणी रूपसम्पन्ना कुलोत्पन्नापतिव्रता । कथंकरोमिकान्ताञ्च पादयोःशृङ्खलासमाम् ।२६
पुत्रोत्पादनदक्षाञ्चपातिव्रत्येसदास्थिताम् । पतिव्रताऽपिदक्षाऽपिरूपवत्यपिकामिनी ।२७
सदाबन्धनरूपाचस्वेच्छासुखविधायिनी । शिवोऽपिवर्ततेनित्यं कामिनीपाशसंयुतः ।२८
कथंकरोम्यहंचात्र दुर्घटञ्च गृहाश्रमम् । एवं चिन्तयतस्तस्य घृताची दिव्यरूपिणी ।२९
प्राप्ता दृष्टिपथंतत्र समीपे गगनेस्थिता । तां दृष्ट्वा चपलापाङ्गींसमीपस्थांवराप्सराम् ।३०
पञ्चबाणपरीतांगस्तूर्णमासीद्धृतव्रतः । चिन्तयामास च तदा किं करोम्यद्य सङ्कटे ।३१
धर्मस्यपुरतः प्राप्ते कामभावे दुरासदे । अङ्गीकरोमि यद्येनां वञ्चनार्थमिहागताम् ।३२
हसिष्यन्ति महात्मानस्तापसा मांतुविह्वलम् । तपस्तप्त्वामहाघोरं पूर्णंवर्षशतन्त्विह ।३३
दृष्ट्वाऽप्सराञ्च विवशःकथञ्जातोमहातपाः । कामनिन्दाऽपिभवतु यदिस्यादतुलंसुखम् ।३४
गृहस्थाश्रमसम्भूतं सुखदम्पुत्रकामदम् । स्वर्गन्दञ्च तथा प्रोक्तं ज्ञानिनां मोक्षदंतथा ।३५
न भविष्यति तन्नूनमनया देवकन्यया, नारदाच्च मयापूर्वंश्रुत -
मस्ति कथानकम्, यथोर्वशीवशो राजा पराभूतः पुरूरवाः ।।३६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे शिववरदानवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ।।१०।।

* एकादशोऽध्यायः *

तारोपाख्यानवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

कोऽसौ पुरूरवा राजा कोर्वशीदेवकन्यका । कथं कष्टञ्च सम्प्राप्तंतेनराज्ञामहात्मना । १
सर्वम्कथानकम्ब्रूहि लोमहर्षणजाऽधुना । श्रोतुकामावयं सर्वे त्वन्मुखाब्जच्युतंरसम् । २
अमृतादपि मिष्टा ते वाणी सूत! रसात्मिका । नतृप्यामोवयंसर्वेसुधयाचयथाऽमराः । ३

सूत उवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे कथां दिव्यां मनोरमाम् । वक्ष्याम्यहं यथा बुद्ध्या श्रुतां व्यासवरोत्तमात् । ४

गुरोस्तुदयिता भार्या तारानामेति विश्रुता । रूपयौवनयुक्तासा चार्वङ्गी मदविह्वला । ५
गतैकदाविधोर्धाम यजमानस्य भामिनी । दृष्ट्वा च शशिनाऽत्यर्थं रूपयौवनशालिनी । ६
कामातुरस्तदाजातःशशीशशिमुखींप्रति । साऽपिवीक्ष्यविधुंकामंजातामदनपीडिता । ७
तावन्योन्यंप्रेमयुक्तौ स्मरार्तौ च बभूवतुः । तारा शशीमदोन्मत्तौकामबाणप्रपीडितौ । ८
रेमाते मदमत्तौ तौ परस्परस्पृहान्वितौ । दिनानि कतिचित्तत्र जातानिरममाणयोः । ९
बृहस्पतिस्तु दुःखार्तस्तारामानयितुंगृहम् । प्रेषयामासशिष्यन्तुनायातासा वशीकृता । १०
पुनः पुनर्यदा शिष्यं परावर्तत चन्द्रमाः । बृहस्पतिस्तदा क्रुद्धो जगाम स्वयमेव हि । ११
गत्वा सोमगृहं तत्र वाचस्पति रुदारधीः । उवाचशशिनं क्रुद्धः स्मयमानं मदान्वितम् । १२
किंकृतंकिल शीतांशो कर्मधर्मविगर्हितम् । रक्षिता मम भार्येयं सुन्दरी केन हेतुना । १३
तव देवगुरुश्चाहं यजमानोऽसि सर्वथा । गुरुभार्या कथं मूढ भुक्ता किं रक्षिताऽथवा । १४
ब्रह्महा हेमहारी च सुरापो गुरुतल्पगः । महापातकिनो ह्येते तत्संसर्गी च पञ्चमः । १५
महापातकयुक्तस्त्वं दुराचारोऽतिगर्हितः । न देवसदनार्होऽसि यदि भुक्तेयमङ्गना । १६
मुञ्चेमामसितापांगीं नयामि सदनं मम । नोचेद्वक्ष्यामि दुष्टात्मन्गुरुदारापहारिणम् । १७
इत्येवं भाषमाणं तमुवाच रोहिणीपतिः । गुरुंक्रोधसमायुक्तं कान्ताविरहदुःखितम् । १८

इन्दुरुवाच

क्रोधात्तेतुदुराराध्याब्राह्मणा क्रोधवर्जिताः । पूजार्हाधर्मशास्त्रज्ञावर्जनीयास्ततोऽन्यथा । १९
आगमिष्यतिसाकामंगृहन्तेवरवर्णिनी । अत्रैवसंस्थिता बाला का ते हानिरिहाऽनव । २०
इच्छया संस्थिता चात्र सुख कामार्थिनी हि सा । दिनानिकतिचित्स्थित्वास्वेच्छयाचाऽऽगमिष्यति । २१
त्वयैवोदाहृतं पूर्वं धर्मशास्त्रमतं तथा । न स्त्री दुष्यतिचारेण न विप्रो वेदकर्मणा । २२
इत्युक्तः शशिना तत्र गुरुरत्यन्तदुःखितः । जगामस्वगृहं तूर्णंचिन्ताविष्टः स्मरातुरः । २३
दिनानिकतिचित्तत्र स्थित्वाचिन्तातुरोगुरुः । ययावथगृहंतस्य त्वरितश्चौषधीपतेः । २४
स्थितःक्षत्त्रानिषिद्धोऽसौद्वारदेशेरुषाऽन्विः । नाजगामशशीतत्रचुकोपातिबृहस्पतिः । २५
अयंमेशिष्यतांयातो गुरुपत्नीं तु मातरम् । जग्राहबलतोऽधर्मी शिक्षणीयो मयाऽधुना । २६
उवाचवाचं कोपात्तु द्वारदेशे स्थितो वहिः । किं शेषे भवनेमन्द पापाचार सुराधम । २७
देहिमे कामिनीं शीघ्रं नोचेच्छापंददाम्यहम् । करोमिभस्मसान्नूनंनददासिप्रियांमम । २८

सूत उवाच

क्रूराणिचैवमादीनिभाषणानि बृहस्पतेः । श्रुत्वाद्विजपतिः शीघ्रं निर्गतःसदनाद्वहिः । २९
तमुवाचहसन्सोमः किमिदं बहुभाषसे । न ते योग्याऽसितापांगी सर्वलक्षणसंयुता । ३०
कुरूपाञ्च स्वसदृशींगृहाणान्यांस्त्रियंद्विज! । भिक्षुकस्य गृहे योग्या नेदृशी वरपर्णिनी । ३१
रतिः स्वसदृशे कान्ते नार्याः किल निगद्यते । त्वं न जानासि मन्दात्मन्कामशास्त्रविनिर्णयम् । ३२
यथेष्टं गच्छ दुर्बुद्धे नाहंदास्यामि कामिनीम् । यच्छक्यंकुरुतत्कामंनदेयावरवर्णिनी । ३३
कामार्तस्यच ते शापो न मां बाधितुमर्हसि । नाहंददेगुरोकान्तां यथेच्छसितथाकुरु । ३४
इत्युक्तःशशिना चेज्यश्चिन्तामापरुषान्वितः । जगामतरसासद्म क्रोधयुक्तःशचीपतेः । ३५
दृष्ट्वा शतक्रतुस्तत्र गुरुंदुःखातुरंस्थितम् । पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैःपूजयित्वासुसंस्थितः । ३६
पप्रच्छ परमोदारस्तंतथाऽवस्थितंगुरुम् । काचिन्तातेमहाभागशोकार्तोऽसिमहामुने । ३७
केनाऽपमानितोऽसि त्वं मम राज्येगुरुश्चमे । त्वदधीनमिदं सर्वं सैन्यंलोकाधिपैःसह । ३८
ब्रह्मा विष्णुस्तथा शम्भुर्ये चाऽन्ये देवसत्तमाः । करिष्यन्ति च साहाय्यं का चिन्ता वद साम्प्रतम् । ३९

गुरुरुवाच

शशिनाऽपहृता भार्या तारा मम सुलोचना। नददातिसदुष्टात्माप्रार्थितोऽपिपुनःपुनः ।४०
किं करोमि सुरेशान त्वमेव शरणं मम। साहाय्यं कुरु देवेश दुःखितोऽस्मिशतक्रतो।४१

इन्द्र उवाच

मा शोकं कुरु धर्मज्ञ दासोऽस्मितव सुव्रत। आनयिष्याम्यहं नूनं भार्यां तवमहामते।४२
प्रेषिते चेन्मया दूते न दास्यति मदाकुलः। ततो युद्धं करिष्यामि देवसैन्यैःसमावृतः।४३
इत्याश्वास्य गुरुं शक्रो दूतं वक्तुं विचक्षणम्। प्रेषयामास सोमाय वार्ताशंसिनमद्भुतम्।४४
स गत्वा शशिलोकं तु त्वरितःसुविचक्षणः। उवाच वचनेनैव वचनं रोहिणीपतिम्।४५
प्रेषितोऽहं महाभाग शक्रेणत्वां विवक्षया। कथितं प्रभुणा यच्च तद्ब्रवीमि महामते।४६
धर्मज्ञोऽसि महाभाग नीतिं जानासिसुव्रत। अत्रिः पितातेधर्मात्माननिंद्यं कर्तुमर्हसि।४७
भार्या रक्ष्या सर्वभूतैर्यथाशक्ति ह्यतन्द्रितैः। तदर्थे कलहः कामं भविता नात्र संशयः।४८
यथा तव तथा तस्य यत्नः स्याद्दाररक्षणे। आत्मवत्सर्वभूतानि चिन्तयत्वंसुधानिधे।४९
अष्टाविंशतिसंख्यास्ते कामिन्यो दक्षजाः शुभाः। गुरुपत्नीं कथं भोक्तुं त्वमिच्छसि सुधानिधे!।५०
स्वर्गे सदावसन्त्येतामेनकाद्याःमनोरमाः। भुङ्क्ष्वताःस्वेच्छयाकामंमुञ्चपत्नींगुरोरपि।५१
ईश्वरा यदि कुर्वन्तिं जुगुप्सितमहन्तया। अज्ञास्तदनुवर्तन्ते तदा धर्मक्षयो भवेत्।५२
तस्मान्मुञ्च महाभागगुरोःपत्नींमनोरमाम्। कलहस्त्वन्निमित्तोऽद्यसुराणांनभवेद्यथा।५३

सूत उवाच

सोमः शक्रवचः श्रुत्वाकिंचित्क्रोधसमाकुलः। भंग्या प्रतिवचः प्राह शक्रदूतंतदाशशी।५४

इन्दुरुवाच

धर्मज्ञोसि महाबाहोदेवानामधिपःस्वयम्। पुरोधाऽपि च ते तादृग्युवयोःसदृशीमतिः।५५
परोपदेशे कुशला भवन्ति बहवोजनाः। दुर्लभस्तु स्वयं कर्ता प्राप्ते कर्मणि सर्वदा।५६
बार्हस्पत्यप्रणीतंचशास्त्रंगृह्णन्तिमानवाः। को विरोधोऽत्रदेवेशकामयानांभजन्स्त्रियम्।५७
स्वकीयं बलिनां सर्वं दुर्बलानां न किञ्चन। स्वीयाचपरकीयाचभ्रमोऽयंमन्दचेतसाम्।५८
तारा मय्यनुरक्ता च यथा न तु तथागुरौ। अनुरक्ताकथंत्याज्याधर्मतोनान्यतस्तथा ।५९
गृहारम्भस्तु रक्तायां विरक्तायां कथं भवेत्। विरक्तेयंतदाजाताचक्रमेऽनुजकामिनीम् ।६०
न दास्येऽहं वरारोहां गच्छ दूतवदस्वयम्। ईश्वरोऽसिसहस्राक्षयदिच्छसिकुरुष्वतत्।६१

सूत उवाच

इत्युक्तः शशिना दूतः प्रययौ शक्रसन्निधिम्। इन्द्रायाऽऽचष्टतत्सर्वंयदुक्तंशीतरश्मिना ।६२
तुराषाडपि तच्छ्रुत्वा क्रोधयुक्तो बभूव ह। सेनोद्योगंतथाचक्रेसाहाय्यार्थंगुरोर्विभुः।६३
शुक्रस्तु विग्रहं श्रुत्वा गुरुद्वेषात्ततो ययौ। मा ददस्वेति तंवाक्यमुवाच शशिनं प्रति।६४
साहाय्यं ते करिष्यामि मन्त्रशक्त्या महामते!। भविता यदि संग्रामस्तव चेन्द्रेण मारिष!।६५
शङ्करस्तु तदाकर्ण्य गुरुदाराभिमर्शनम्। गुरुशत्रुं भृगुं मत्वा साहाय्यमकरोत्तदा।६६
संग्रामस्तु तदावृत्तो देवदानवयोर्द्रुतम्। बहूनि तत्र वर्षाणि तारकासुरवत्किल।६७
देवासुरकृतं युद्धं दृष्ट्वा तत्र पितामहः। हंसारूढो जगामाऽऽशु तं देशं क्लेशशान्तये।६८
राकापतिं तदा प्राह मुञ्च भार्यां गुरोरिति। नोचेद्विष्णुंसमाहूयकरिष्यामितुसंक्षयम्।६९
भृगुं निवारयामास ब्रह्मालोकपितामहः। किमन्यायमतिर्जाता संगदोषान्महामते!।७०
निषेधयामास ततो भृगुस्तं चौषधीपतिम्। मुञ्च भार्यांगुरोरद्य पित्राऽहंप्रेषितस्तव।७१

सूत उवाच

द्विजराजस्तु तच्छ्रुत्वा भृगोर्वचनमद्भुतम् । ददौ च तत्प्रियां भार्यांगुरोर्गर्भवतींशुभाम् ।७२
प्राप्य कान्तां गुरुर्हृष्टः स्वगृहं मुदितो ययौ । ततो देवास्ततो दैत्या ययुःस्वान्स्वान्गृहान्प्रति ।७३
ब्रह्मा स्वसदनं प्राप्तःकैलासंचाऽपिशङ्करः । बृहस्पतिस्तुसन्तुष्टःप्राप्यभार्यांमनोरमाम् ।७४
ततः कालेन कियता ताराऽसूत सुतं शुभम् । सुदिने शुभनक्षत्रे तारापतिसमं गुणैः ।७५
दृष्ट्वा पुत्रं गुरुर्जातं चकार विधिपूर्वकम् । जातकर्मादिकं सर्वं प्रहृष्टेनान्तरात्मना ।७६
श्रुतं चन्द्रमसा जन्म पुत्रस्य मुनिसत्तमाः । दूतञ्च प्रेषयामास गुरुम्प्रति महामतिः ।७७
न चायं तवपुत्रोऽस्तिममवीर्यसमुद्भवः । कथं त्वं कृतवान्कामं जातकर्मादिकंविधिम् ।७८
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य दूतस्य च बृहस्पतिः । उवाच मम पुत्रोमे सदृशो नात्र संशयः ।७९
पुनर्विवादः सञ्जातो मिलिता देवदानवाः । युद्धार्थमागतास्तेषां समाजः समजायत ।८०
तत्राऽऽगतःस्वयंब्रह्माशान्तिकामःप्रजापतिः । निवारयामासमुखेसंस्थितान्युद्धदुर्मदान् ।८१
तारां प्रपच्छ धर्मात्मा कस्यायं तनयः शुभे । सत्यं वदवरारोहेयथा क्लेशःप्रशाम्यति ।८२
तमुवाचाऽसितापाङ्गी लज्जमानाऽप्यऽधोमुखी । चन्द्रस्येति शनैरन्तर्जगामवरवर्णिनी ।८३
जग्राहतं सुतं सोमः प्रहृष्टेनान्तरात्मना । नाम चक्रे बुध इति जगाम स्वगृहं पुनः ।८४
ययौ ब्रह्मा स्वकं धाम सर्वे देवाः सवासवाः । यथागतं गतं सर्वैः सर्वशः प्रेक्षकैर्जनैः ।८५
कथितेयं बुधोत्पत्तिर्गुरुक्षेत्रे च सोमतः । तथा श्रुता मयापूर्वंव्यासात्सत्यवतीसुतात् ।८६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे बुधोत्पत्तिनर्मिकादशोऽध्यायः ।।११।।

* द्वादशोऽध्यायः *

पुरुरवसउत्पत्तिपूर्वकसुद्युम्नोपाख्यानवर्णनम्

सूत उवाच

ततःपुरूरवा जज्ञे इलायां कथयामि वः । बुधपुत्रोऽतिधर्मात्मायज्ञकृद्दानतत्परः ।१
सुद्युम्नो नाम भूपालःसत्यवादी जितेन्द्रियः । सैन्धवं हयमारुह्य चचार मृगयां वने ।२
युतः कतिपयामात्यैर्दंशितश्चारुकुण्डलः । धनुराजगवं बद्ध्वा बाणसंघं तथाऽद्भुतम् ।३
स भ्रमंस्तद्वनोद्देशे हन्यमानो रुरून्मृगान् । शशांश्च सूकरांश्चैव खड्गांश्चगवयांस्तथा ।४
शरभान्महिषांश्चैवसामरान्वनकुक्कुटान् । निघ्नन्मेध्यान्पशून्राजा कुमारवनमाविशत् ।५
मेरोरधस्तले दिव्यं मंदारद्रुमराजितम् । अशोकलतिकाकीर्णं बकुलैरधिवासितम् ।६
सालैस्तालैस्तमालैश्च चम्पकैःपनसैस्तथा । आम्रैर्नीपैर्मधूकैश्च माधवीमण्डपावृतम् ।७
दाडिमैर्नारिकेलैश्च कदलीखण्डमण्डितम् । यूथिका मालतीकुन्दपुष्पवल्लीसमावृतम् ।८
हंसकारण्डवाकीर्णं कीचकध्वनिनादितम् । भ्रमरालिरुतारामं वनं सर्वसुखावहम् ।९
दृष्ट्वा प्रमुदितो राजा सुद्युम्नः सेवकैर्वृतः । वृक्षान्सुपुष्पितान्वीक्ष्य कोकिलारावमण्डितान् ।१०
प्रविष्टस्तत्र राजर्षिः स्त्रीत्वमापक्षणात्ततः । अश्वोऽपिवडवाजातश्चिन्ताविष्टःसभूपतिः ।११
किमेतदिति चिन्तार्तश्चिन्त्यमानःपुनः पुनः । दुःखंबहुतरंप्राप्तःसुद्युम्नोलज्जयाऽन्वितः ।१२
किं करोमि कथं यामि गृहंस्त्रीभावसंयुतः । कथंराज्यंकरिष्यामिकेनवावञ्चितोह्यहम् ।१३

ऋषय ऊचुः

सूताश्चर्यमिदं प्रोक्तं त्वया यल्लोमहर्षण । सुद्युम्नः स्त्रीत्वमापन्नो भूपतिर्देवसन्निभः ।१४
किंतत्कारणमाचक्ष्व वने तत्र मनोहरे । किंकृतं तेन राज्ञा च विस्तरं वद सुव्रत!ः ।१५

सूत उवाच

एकदा गिरिशं द्रष्टुमृषयः सनकादयः। दिशोवितिमिराभासाः कुर्वतः समुपागमन्ः।१६
तस्मिंश्चसमये तत्र शङ्करः प्रमदायतः। क्रीडासक्तो महादेवो विवस्त्रा कामिनी शिवाः।१७
उत्सङ्गे संस्थिता भर्तू रममाणा मनोरमा। तान्विलोक्याऽम्बिका देवी विवस्त्रा व्रीडिता भृशम्।१८
भर्तुरंकात्समुत्थाय वस्त्रमादायपर्यधात्। लज्जाविष्टास्थितातत्रवेपमानाऽतिमानिनी।१६
ऋषयोऽपि तयोर्वीक्ष्य प्रसङ्गं रममाणयोः। परिवृत्य ययुस्तूर्णं नरनारायणाश्रमम्ः।२०
ह्रीयुक्तां कामिनीं वीक्ष्यप्रोवाचभगवान्हरः। कथंलज्जातुराऽसित्वंसुखंतेप्रकरोम्यहम्ः।२१
अद्यप्रभृति योमोहात्पुमान्कोऽपिवरानने। वनं च प्रविशेदेतत्स वै योषिद्भविष्यति।२२
इति शप्तं वनं तेन ये जानन्ति जनाः क्वचित्। वर्जयंतीह तेकामं वनं दोषसमृद्धिमत्।२३
सुद्युम्नस्तु तदज्ञानात्प्रविष्टः सचिवैः सह। तथैव स्त्रीत्वमापन्नस्तैः सहेति न संशयः।२४
चिन्ताविष्टः स राजर्षिर्न जगाम गृहं ह्रिया। विचचार बहिस्तस्माद्वनदेशादितस्ततः।२५
इलेति नाम सम्प्राप्तं स्त्रीत्वे तेन महात्मना। विचरंस्तत्र सम्प्राप्तोबुधःसोमसुतोयुवा।२६
स्त्रीभिःपरिवृतां तांतुदृष्ट्वाकान्तांमनोरमाम्। हावभावकलायुक्तां चकमेभगवान्बुधः।२७
साऽपितंचकमेकान्तंबुधंसोमसुतंपतिम्। संयोगस्तत्रसञ्जातस्तयोः प्रेम्णा परस्परम्।२८
स तस्यां जनयामास पुरूरवसमात्मजम्। २९
सा प्रासूतसुतंबालाचिन्ताविष्टावनेस्थिता। सस्मारस्वकुलाचार्यंवसिष्टंमुनिसत्तमम्।३०
स तदाऽस्य दशां दृष्ट्वा सुद्युम्नस्य कृपान्वितः। अतोषयन्महादेवं शङ्करं लोकशङ्करम्।३१
तस्मैसभगवांस्तुष्टः प्रददौवाञ्छितं वरम्। वसिष्ठःप्रार्थयामासपुंस्त्वंराज्ञःप्रियस्य च।३२
शङ्करस्तु निजां वाचमृतां कुर्वन्नुवाच ह। मासं पुमांस्तुभवितामासंस्त्रीभूपतिःकिल।३३
इत्थं प्राप्य वरंराजाजगामस्वगृहं पुनः। चक्रे राज्यं सधर्मात्मावसिष्ठस्याप्यनुग्रहात्।३४
स्त्रीत्वे तिष्ठते हर्म्येषु पुंस्त्वे राज्यं प्रशास्ति च। प्रजास्तस्मिन्समुद्विग्ना नाऽभ्यनन्दन्महीपतिम्।३५
कालेतु यौवनं प्राप्तः पुत्रः पुरूरवास्तदा। प्रतिष्ठां नृपतिस्तस्मै दत्त्वा राज्यं वनंययौ।३६
गत्वा तस्मिन्वने रम्ये नानाद्रुमसमाकुले। नारदान्मन्त्रमासाद्य नवाक्षरमनुत्तमम्।३७
जजाप मन्त्रमत्यर्थं प्रेमपूरितमानसः। परितुष्टा तदा देवी सगुणा तारिणीशिवा।३८
सिंहारूढा स्थिता चाग्रे दिव्यरूपा मनोरमा। वारुणीपानसंमत्तामदाघूर्णितलोचना।३९
दृष्ट्वा तां दिव्यरूपां च प्रेमाकुलितलोचनः। प्रणम्यशिरसाप्रीत्यातुष्टावजगदम्बिकाम्।४०

इलोवाच

दिव्यं च ते भगवति! प्रथितं स्वरूपं दृष्टं मया सकललोकहितानुरूपम्।
वन्दे त्वदंघ्रिकमलं सुरसङ्घसेव्यं कामप्रदं जननि! चाऽपि विमुक्तिदञ्च।४१
को वेत्ति तेऽम्ब भुवि मर्त्यतनुर्निकामं मुह्यन्ति यत्र मुनयश्च सुराश्च सर्वे।
ऐश्वर्यमेतदखिलं कृपणे दयां च दृष्टव देवि! सकलं किल विस्मयो मे।४२
शम्भुर्हरिः कमलजो मघवा रविश्च वित्तेशवह्निवरुणाः पवनश्च सोमः।
जानन्ति नैव वसवोऽपि हि ते प्रभावं बुध्येत्कथं तव गुणानगुणो मनुष्यः।४३
जानाति विष्णुरमितद्युतिरम्ब साक्षात्त्वां सात्त्विकीमुदधिजां सकलार्थदां च।
को राजसीं हर उमां किल तामसीं त्वां वेदाऽम्बिके न तु पुनःखलुनिर्गुणांत्वाम्।४४
काऽहं सुमन्दमतिरप्रतिमप्रभावः क्वाऽयं तवाऽतिनिपुणो मयि सुप्रसादः।
जाने भवानि! चरितं करुणासमेतं यत्सेवकांश्च दयसे त्वयि भावयुक्तान्।४५
वृत्तस्त्वया हरिरसौ वनजेशयाऽपि नैवाचरत्यपि मुदं मधुसूदनश्च।
पादौ तवाऽऽदिपुरुषः किल पावकेन कृत्वा करोति च करेण शुभौ पवित्रौ।४६

वाञ्छत्यहो हरिरशोक इवाऽतिकामं पादाहतिं प्रमुदितः पुरुषः पुराणः।
तान्त्वं करोषि रुषिता प्रणतञ्च पादे दृष्ट्वा पतिं सकलदेवनुतं स्मरार्तम् ।४७
वक्षःस्थले वससि देवि! सदैव तस्य पर्यङ्कवत्सुचरिते विपुलेऽति शान्ते।
सौदामनीव सुघने सुविभूषिते च किं ते न वाहनमसौ जगदीश्वरोऽपि ।४८
त्वं चेज्जहासि मधुसूदनमम्ब कोपान्नैवार्चितोऽपि स भवेत्किल शक्तिहीनः।
प्रत्यक्षमेव पुरुषं स्वजनास्त्यजन्ति शान्तं श्रियोज्झितमतीव गुणैर्वियुक्तम् ।४९
ब्रह्मादयः सुरगणा न तु किं युवत्यो ये त्वत्पदाम्बुजमहर्निशमाश्रयन्ति।
मन्ये त्वयैव विहताः खलु ते पुमांसः किं वर्णयामि तव शक्तिमनन्तवीर्ये ।५०
त्वं नाऽपुमान्न च पुमानिति मे विकल्पो या काऽसिदेवि सगुणाननुनिर्गुणावा।
तां त्वां नमामि सततं किल भावयुक्तो वाञ्छामि भक्तिमचलांत्वयिमातरन्ते ।५१

सूत उवाच

इतिस्तुत्वा महीपालो जगाम शरणं तदा। परितुष्टा ददौ देवी तत्र सायुज्यमात्मनि ।५२
सुद्युम्नस्तु ततः प्राप पदं परमकं स्थिरम्। तस्या देव्याःप्रसादेनमुनीनामपि दुर्लभम् ।५३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे सुद्युम्नस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ।। १२ ।।

* त्रयोदशोऽध्यायः *

पुरूरवस उर्वश्याश्चचरित्रवर्णनम्

सूत उवाच

सुद्युम्ने तु दिवं याते राज्यं चक्रे पुरूरवाः। सगुणश्च सुरूपश्च प्रजारञ्जनतत्परः। १
प्रतिष्ठाने पुरे रम्ये राज्यं सर्वनमस्कृतम्। चकार सर्वधर्मज्ञः प्रजारक्षणतत्परः। २
मन्त्रः सुगुप्तस्तस्यासीत्परत्राभिज्ञतातथा। सदैवोत्साहशक्तिश्च प्रभुशक्तिस्तथोत्तमा। ३
सामदानादयः सर्वे वशगास्तस्य भूपतेः। वर्णाश्रमान्स्वधर्मस्थान्कुर्वन्राज्यंशशास ह। ४
यज्ञांश्च विविधांश्चक्रेस राजा बहुदक्षिणान्। दानानिचविचित्राणिददावथनराधिपः। ५
तस्य रूपगुणौदार्यशीलद्रविणविक्रमान्। श्रुत्वोर्वशी वशीभूता चकमे तं नराधिपम्। ६
ब्रह्मशापाभितप्ता सा मानुषं लोकमास्थिता। गुणिनंतंनृपं मत्वा वरयामासमानिनी। ७
समयं चेदृशं कृत्वा स्थिता तत्र वराङ्गना। एतावुरणकौ राजन्यस्तौ रक्षस्व मानद। ८
घृतं मे भक्षणं नित्यं नान्यत्किञ्चिन्नृपाशनम्। नेक्षे त्वां च महाराज! नग्नमन्यत्र मैथुनात्। ९
भाषाबन्धस्त्वयंराजन्यदिभग्नोभविष्यति। तदात्यक्त्वागमिष्यामिसत्यमेतद्ब्रवीम्यहम्। १०
अङ्गीकृतं च तद्राज्ञाकामिन्याभाषितंतुयत्। स्थिताभाषेणबन्धेनशापानुग्रहकाम्यया। ११
रेमे तदा स भूपालोलीनो वर्षगणान्बहून्। धर्मकर्मादिकंत्यक्त्वाचोर्वश्यामदमोहितः। १२
एकचित्तस्तु सञ्जातस्तन्मनस्कोमहीपतिः। न शशाक तया हीनः क्षणमप्यतिमोहितः। १३
एवं वर्षगणान्ते तु स्वर्गस्थः पाकशासनः। उर्वशीं नागतां दृष्ट्वा गन्धर्वानाहदेवराट्। १४
उर्वशीमानयध्वं भो गन्धर्वाः सर्वएवहि। हृत्वोरणौ गृहात्तस्य भूपतेः समये किल। १५
उर्वशीरहितं स्थानं मदीयं नाऽतिशोभते। येनकेनाप्युपायेन तामानयत कामिनीम्। १६
इत्युक्तास्तेऽथ गन्धर्वा विश्वावसुपुरोगमाः। ततो गत्वामहागाढतमसिप्रत्युपस्थिते। १७
जह्रुस्तावुरणौ देवा रममाणं विलोक्यतम्। चक्रन्दतुस्तदातौतुह्रियमाणौ विहायसा। १८
उर्वशी तदुपाकर्ण्य क्रन्दितं सुतयोरिव। कुपितोवाच राजानं समयोऽयं कृतो मया। १९
नष्टाऽहं तव विश्वासाद्धृतौ चौरैर्ममोरणौ। राजन्पुत्रसमावेतौत्वंकिंशेषेस्त्रियासमः। २०

हताऽस्म्यहं कुनाथेन नपुंसा वीरमानिना। उरणौ मे गतौ चाऽद्य सदा प्राणप्रियौ मम।२१
एवं विलप्यमानां तां दृष्ट्वा राजा विमोहितः। नग्न एव ययौ तूर्णं पृष्ठतः पृथिवीपतिः।२२
विद्युत्प्रकाशिता तत्र गन्धर्वैर्नृपवेश्मनि। नग्नभूतस्तया दृष्टो भूपतिर्गन्तुकामया।२३
त्यक्त्वोरणौ गताः सर्वेगन्धर्वाः पथिपार्थिवः। नग्नोजग्राहतौश्रान्तोजगामस्वगृहंप्रति ।२४
तदोर्वशीं गतां दृष्ट्वा विललापातिदुःखितः। नग्नं वीक्ष्य पतिंनारीगतासा वरवर्णिनी।२५
क्रन्दन्स देशदेशेषु बभ्रामनृपतिःस्वयम्। तच्चित्तो विह्वलः शोचन्विवशःकाममोहितः।२६
भ्रमन्वै सकलां पृथ्वीं कुरुक्षेत्रे ददर्शताम्। दृष्ट्वा संहृष्टवदनः प्राह सूक्तं नृपोत्तमः।२७
अये जाये तिष्ठ तिष्ठ घोरेनत्यक्तुमर्हसि। मां त्वं त्वन्मनसंकान्तंवशगंचाप्यनागसम्।२८
स देहोऽयं पतत्यत्र देविदूरंहृतस्त्वया। खादंत्येनंवृकाःकाकास्त्वयात्यक्तंवरोरुयत्।२९
एवं विलपमानं तं राजानं प्राह चोर्वशी। दुःखितं कृपणं श्रान्तंकामार्तं विवशंभृशम्।३०

उर्वश्युवाच

मूर्खोऽसि नृपशार्दूल ज्ञानं कुत्र गतं तव। क्वापि सख्यंनचस्त्रीणां वृकाणामिवपार्थिव।३१
न विश्वासो हि कर्तव्यः स्त्रीषु चौरेषु पार्थिवैः। गृहं गच्छ सुखं भुङ्क्ष्व मा विषादे मनः कृथाः।३२
इत्येवं बोधितो राजा न विवेदातिमोहितः। दुःखंचपरमं प्राप्तःस्वैरिणीस्नेहयन्त्रितः।३३

सूत उवाच

इति सर्वं समाख्यातमुर्वशीचरितं महत्। वेदे विस्तरितं चैतत्संक्षेपात्कथितं मया।३४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे पुरूरवसउर्वश्याश्चचरित्रवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

* चतुर्दशोऽध्यायः *

शुकोत्पत्तिवर्णनम्

सूत उवाच

दृष्ट्वातामसितापाङ्गींव्यासश्चिन्तापरोऽभवत्। किंकरोमिनमेयोग्यादेवकन्येयमप्सराः ।१
एवं चिन्तयमानंतु दृष्ट्वा व्यासं तदाऽप्सराः। भयभीताहिसञ्जाताशापंमांविसृजेदयम् ।२
सा कृत्वाऽथशुकीरूपंनिर्गताभयविह्वला। कृष्णस्तुविस्मयंप्राप्तोविहङ्गींतांविलोकयन्।३
कामस्तु देहे व्यासस्य दर्शनादेव सङ्गतः। मनोऽतिविस्मितंजातंसर्वगात्रेषुविस्मितः।४
स तु धैर्येण महता निगृह्णन्मानसं मुनिः। न शशाक नियन्तुं च स व्यासःप्रसृतंमनः।५
बहुशो गृह्यमाणं च घृताच्या मोहितंमनः। भावित्वान्नैवविधृतंव्यासस्यामिततेजसः।६
मन्थनं कुर्वतस्तस्य मुनेरग्निचिकीर्षया। अरण्यामेव सहसा तस्य शुक्रमथापतत्।७
सोऽविचिन्त्य तथा पातं ममन्थारणिमेव च। तस्माच्छुकः समुद्भूतो व्यासाकृतिमनोहरः।८
विस्मयंजनयन्बालःसञ्जातस्तदरण्यजः। यथाऽध्वरेसमिद्धोऽग्निर्भातिहव्येनदीप्तिमान्।९
व्यासस्तु सुतमालोक्य विस्मयं परमङ्गतः। किमेतदितिसञ्चिन्त्य वरदानाच्छिवस्यवै।१०
तेजोरूपीशुकोजातोऽप्यरणीगर्भसम्भवः। द्वितीयोऽग्निरिवात्यर्थंदीप्यमानःस्वतेजसा।११
विलोकयामास तदा व्यासस्तुमुदितंसुतम्। दिव्येन तेजसायुक्तं गार्हपत्यमिवापरम्।१२
गङ्गान्तः स्नापयामाससमागत्यगिरेस्तदा। पुष्पवृष्टिस्तुखाज्जाताशिशोरुपरितापसाः।१३
जातकर्मादिकं चक्रे व्यासस्तस्य महात्मनः। देवदुन्दुभयो नेदुर्ननृतुश्चाऽप्सरोगणाः।१४
जगुर्गन्धर्वपतयो मुदितास्ते दिदृक्षवः। विश्वावसुर्नारदश्च तुम्बुरुः शुकसम्भवे।१५
तुष्टुवुर्मुदिताः सर्वे देवा विद्याधरास्तथा। दृष्ट्वा व्याससुतं दिव्यमरणीगर्भसम्भवम्।१६

अन्तरिक्षात्पपातोर्व्यां दण्डः कृष्णाजिनं शुभम् । कमण्डलुस्तथा दिव्याः शुकस्यार्थे द्विजोत्तमाः! ।१७
सद्यःसववृधेबालोजातमात्रोऽतिदीप्तिमान् । तस्योपनयनंचक्रेव्यासोविद्याविधानवित् ।१८
उत्पन्नमात्रं तं वेदाः सरहस्याः ससंग्रहाः । उपतस्थुर्महात्मानं यथाऽस्य पितरं तथा ।१९
यतो दृष्टं शुकीरूपं घृताच्याः सम्भवे तदा । शुकेतिनामपुत्रस्य चकार मुनिसत्तमाः ।२०
बृहस्पतिमुपाध्यायं कृत्वा व्याससुतस्तदा । व्रतानि ब्रह्मचर्यस्य चकारविधिपूर्वकम् ।२१
सोऽधीत्य निखिलान्वेदान्सरहस्यान्ससंग्रहान् । धर्मशास्त्राणि सर्वाणि कृत्वा गुरुकुले शुकः ।२२
गुरवे दक्षिणां दत्त्वा समावृत्तो मुनिस्तदा । आजगाम पितुःपार्श्वंकृष्णद्वैपायनस्यच ।२३
दृष्ट्वा व्यासःशुकं प्राप्तं प्रेम्णोत्थायससम्भ्रमः । आलिलिङ्गमुहुर्घ्राणंमूर्ध्निनतस्यचकारह ।२४
पप्रच्छ कुशलं व्यासस्तथाचाऽध्ययनं शुचिः । आश्वास्य स्थापयामास शुकं तत्राऽऽश्रमे शुभे ।२५
दारकर्म ततो व्यासःशुकस्यपर्यचिन्तयत् । कन्यां मुनिसुतांकान्तामपृच्छदतिवेगवान् ।२६
शुकं प्राह सुतं व्यासो वेदोऽधीतस्त्वयाऽनघ! । धर्मशास्त्राणि सर्वाणि कुरु भार्यां महामते! ।२७
गार्हस्थ्यं च समासाद्य यजदेवान्पितृनथ । ऋणान्मोचयमांपुत्रप्राप्यदारान्मनोरमान् ।२८
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैवच नैवच । तस्मात्पुत्र महाभागकुरुष्वाद्य गृहाश्रमम् ।२९
कृत्वा गृहाश्रमं पुत्रं सुखिनं कुरु मां शुक! । आशा मे महती पुत्र पूरयस्व महामते! ।३०
तपस्तप्त्वा महाघोरं प्राप्तोऽसि त्वमयोनिजः । देवरूपी महाप्राज्ञ! पाहिमांपितरंशुक ।३१

सूत उवाच

इतिवादिनमभ्याशेप्राप्तःप्राहशुकस्तदा । विरक्तः सोऽतिरक्तन्तं साक्षात्पितरमात्मनः ।३२

शुक उवाच

किंत्वंवदसिधर्मज्ञवेदव्यास महामते । तत्त्वेनाशाधि शिष्यं मां त्वदाज्ञांकरवाण्यलम् ।३३

व्यास उवाच

त्वदर्थेयत्तपस्तप्तं मया पुत्र शतं समाः । प्राप्तस्त्वंचातिदुःखेन शिवस्याराधनेन च ।३४
ददामितव वित्तन्तु प्रार्थयित्वाऽथभूपतिम् । सुखंभुंक्ष्वमहाप्राज्ञ प्राप्ययौवनमुत्तमम् ।३५

शुक उवाच

किं सुखं मानुषे लोके ब्रूहि तात निरामयम् । दुःखविद्धंसुखंप्राज्ञानवदन्तिसुखं किल ।३६
स्त्रियंकृत्वामहाभागभवामितद्वशानुगः । सुखं किं परतन्त्रस्य स्त्रीजितस्य विशेषतः ।३७
कदाचिदपिमुच्येत लोहकाष्ठादि यन्त्रितः । पुत्रदारैर्निबद्धस्तु न विमुच्येत कर्हिचित् ।३८
विण्मूत्रसम्भवोदेहो नारीणांतन्मयस्तथा । कः प्रीतिंतत्रविप्रेन्द्र विबुधःकर्तुमिच्छति ।३९
अयोनिजोऽहं विप्रर्षेयोनौमेकीदृशीमतिः । न वाञ्छाम्यहमग्रेऽपि योनावेव समुद्भवम् ।४०
विट्सुखं किमु वाञ्छामित्यक्त्वाऽत्मसुखमद्भुतम् । आत्मारामश्च भूयोऽपि न भवत्यतिलोलुपः ।४१
प्रथमं पठिता वेदा मया विस्तारिताश्च ते । हिंसामयास्ते पठिताः कर्ममार्गप्रवर्तकाः ।४२
वृहस्पतिर्गुरुः प्राप्तः सोऽपि मग्नोगृहार्णवे । अविद्याग्रस्तहृदयःकथं कारयितुं क्षमः ।४३
रोगग्रस्तो यथा वैद्यःपररोगचिकित्सकः । तथा गुरुर्मुमुक्षोर्मे गृहस्थोऽयंविडम्बना ।४४
कृत्वा प्रमाणं गुरवे त्वत्समीपमुपागतः । त्राहिमां तत्त्वबोधेन भीतं संसारसर्पतः ।४५
संसारेऽस्मिन्महाघोरे भ्रमणं नभचक्रवत् । न च विश्रमणंक्वापि सूर्यस्येव दिवानिशि ।४६
किंसुखंतातसंसारे निजतत्त्वविचारणात् । मूढानां सुखबुद्धिस्तुविट्सुकीटसुखंयथा ।४७
अधीत्य वेदशास्त्राणि संसारे रागिणश्च ये । तेभ्यः परो न मूर्खोऽस्ति सधर्माः श्वाऽश्वसूकरैः ।४८
मानुष्यंदुर्लभम्प्राप्य वेदशास्त्राण्यधीत्यच । बध्यतेयदिसंसारे को विमुच्येत मानवः ।४९
नातः परतरं लोके क्वचिदाश्चर्यमद्भुतम् । पुत्रदारगृहासक्तः पण्डितः परिगीयते ।५०

नबाध्यतेयःसंसारेनारीमायागुणैस्त्रिभिः । स विद्वान्सचमेधावी शास्त्रपारङ्गतोहिसः । ५१
किं वृथाऽध्ययनेनात्र दृढबन्धकरेण च । पठितव्यं तदेवाऽऽशु मोचयेद्भवबन्धनात् । ५२
गृह्णातिपुरुषंयस्माद् गृहं तेन प्रकीर्तितम् । क्व सुखं वन्धनागारे तेनभीतोऽस्म्यहंपितः । ५३
ये बुधामन्दमतयो विधिनामुषिताश्च ये । ते प्राप्यमानुषंजन्म पुनर्बन्धं विशन्त्युत । ५४

व्यास उवाच

न गृहं बन्धनागारं बन्धनेनच कारणम् । मनसायो विनिर्मुक्तो गृहस्थोपि विमुच्यते । ५५
न्यायागतधनः कुर्वन्वेदोक्तं विधिवत्क्रमात् । गृहस्थोऽपि विमुच्येत श्राद्धकृत्सत्यवाक्छुचिः । ५६
ब्रह्मचारी यतिश्चैव वानप्रस्थो व्रतस्थितः । गृहस्थं समुपासन्ते मध्याह्नातिक्रमे सदा । ५७
श्रद्धया चाऽन्नदानेन वाचा सूनृतया तथा । उपकुर्वन्ति धर्मस्था गृहाश्रमनिवासिनः । ५८
गृहाश्रमात्परोधर्मो न दृष्टो नव वै श्रुतः । वसिष्ठादिभिराचार्यैर्ज्ञानिभि समुपाश्रितः । ५९
किमसाध्यंमहाभाग वेदोक्तानिच कुर्वतः । स्वर्गंमोक्षञ्च सज्जन्मयद्यद्वाञ्छति तद्भवेत् । ६०
आश्रमादाश्रमं गच्छेदिति धर्मविदोविदुः । तस्मादग्निं समाधाय कुरुकर्माण्यतन्द्रितः । ६१
देवान्पितॄन्मनुष्यांश्च सन्तर्प्यविधिवत्सुत! । पुत्रमुत्पाद्यधर्मज्ञ संयोज्यच गृहाश्रमे । ६२
त्यक्त्वागृहं वनंगत्वा कर्ताऽसिव्रतमुत्तमम् । वानप्रस्थाश्रमंकृत्वा संन्यासञ्चततःपरम् । ६३
इन्द्रियाणि महाभाग मादकानि सुनिश्चितम् । अदारस्यदुरंतानि पञ्चैव मनसा सह । ६४
तस्माद्दारान्प्रकुर्वीत तंज्जयाय महामते । वार्धके तप आतिष्ठेदिति शास्त्रोदितम्वचः । ६५
विश्वामित्रो महाभाग! तपः कृत्वाऽतिदुश्चरम् । त्रीणि वर्षसहस्राणि निराहारो जितेन्द्रियः । ६६
मोहितश्च महातेजा वने मेनकयास्थितः । शकुन्तला समुत्पन्ना पुत्री तद्वीर्यजा शुभा । ६७
दृष्ट्वा दाससुतांकालीं पितामहपराशरः । कामबाणार्दितःकन्यां तां जग्राहोडुपेस्थितः । ६८
ब्रह्माऽपि स्वसुतां दृष्ट्वा पञ्चबाणप्रपीडितः । धावमानश्च रुद्रेण मूर्च्छितश्चनिवारितः । ६९
तस्मात्त्वमपिकल्याणकुरुमेवचनं हितम् । कुलजां कन्यकां वृत्वा वेदमार्गसमाश्रय । ७०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे व्यासेनगृहस्थधर्मवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

* पञ्चदशोऽध्यायः *

शुकवैराग्यवर्णनम्

श्रीशुक उवाच

नाऽहंगृहं करिष्यामि दुःखदं सर्वदा पितः । वागुरासदृशं नित्यम्बन्धनं सर्वदेहिनाम् । १
धनचिन्तातुराणां हि क्व सुखं तातदृश्यते । स्वजनैःखलुपीड्यन्तेनिर्धनालोलुपाजनाः । २
इन्द्रोऽपि न सुखी तादृग्यादृशो भिक्षुनिःस्पृहः । कोऽन्यः स्यादिह संसारे त्रिलोकीविभवे सति । ३
तपन्तंतापसं दृष्ट्वा मघवादुःखितोऽभवत् । विघ्नान्बहुविधानस्यकरोतिचदिवस्पतिः । ४
ब्रह्माऽपिनसुखीविष्णुर्लक्ष्मींप्राप्यमनोरमाम् । खेदम्प्राप्नोतिसंततंसंग्रामैरसुरैःसह । ५
करोतिविपुलान्यत्नांस्तपश्चरतिदुश्चरम् । रमापतिरपिश्रीमान्कस्यास्तिविपुलंसुखम् । ६
शङ्करोऽपि सदा दुःखी भवत्येवच वेद्म्यहम् । तपश्चर्यांप्रकुर्वाणो दैत्ययुद्धकरः सदा । ७
कदाचिन्नसुखीशेते धनवानपिलोलुपः । निर्धनस्तु कथं तात! सुखंप्राप्नोति मानवः । ८
जानन्नपिमहाभागपुत्रं वा वीर्यसम्भवम् । नियोक्ष्यसि महाघोरे संसारेदुःखदे सदा । ९
जन्मदुःखं जरादुःखं दुःखञ्च मरणे तथा । गर्भवासं पुनर्दुःखं विष्ठामूत्रमये पितः! । १०
तस्मादतिशयं दुःखं तृष्णालोभसमुद्भवम् । याञ्चायां परमं दुःखं मरणादपि मानद । ११

प्रतिग्रहधना विप्रा न बुद्धिबलजीवनाः। पराशा परमं दुःखं मरणञ्च दिने दिने।१२
पठित्वा सकलान्वेदांञ्छास्त्राणि च समन्ततः। गत्वा च धनिनां कार्या स्तुतिःसर्वात्मना बुधैः।१३
एकोदरस्य का चिन्ता पत्रमूलफलादिभिः। येनकेनाप्युपायेन सन्तुष्ट्या च प्रपूर्यते।१४
भार्यापुत्रास्तथापौत्राःकुटुम्बे विपुले सति। पूरणार्थं महद्दुःखं क्व सुखंपितरद्भुतम्।१५
योगशास्त्रं वद मम ज्ञानशास्त्रंसुखाकरम्। कर्मकाण्डेऽखिले तात न रमेऽहं कदाचन।१६
वद कर्मक्षयोपायं प्रारब्धं सञ्चितं तथा। वर्तमानं यथा नश्येत्त्रिविधं कर्ममूलजम्।१७
जलूकेव सदा नारी रुधिरं पिबतीति वै। मूर्खस्तु न विजानातिमोहितोभावचेष्टितैः।१८
भार्गैर्वीर्यं धनं पूर्णं मनः कुटिलभाषणैः। कान्ता हरतिसर्वस्वं कस्तेनस्तादृशोऽपरः।१९
निद्रासुखविनाशार्थं मूर्खस्तु दारसंग्रहम्। करोति वञ्चितो धात्रा दुःखायनसुखायच।२०

सूत उवाच

एवं विधानि वाक्यानि श्रुत्वा व्यासः शुकस्य च। संप्राप महतीं चिन्तां किं करोमीत्यसंशयम्।२१
तस्य सुस्रुवुरश्रूणि लोचनाद्दुःखजानि च। वेपथुश्च शरीरेऽभूद्ग्लानिंप्रापमनस्तथा।२२
शोचन्तं पितरं दृष्ट्वा दीनंशोकपरिप्लुतम्। उवाच पितरंव्यासंविस्मयोत्फुल्ललोचनः।२३
अहोमायाबलं चोग्रं यन्मोहयति पण्डितम्। वेदान्तस्यचकर्त्तारं सर्वज्ञं वेदसम्मितम्।२४
न जाने का च सा मायाकिंस्वित्साऽतीव दुष्करा। या मोहयति विद्वांसं व्यासं सत्यवतीसुतम्।२५
पुराणानां च वक्ताच निर्माताभारतस्य च। विभागकर्तावेदानांसोऽपिमोहमुपागतः।२६
तां यामि शरणं देवीं यामोहयतिवै जगत्। ब्रह्मविष्णुहरादींश्चकथाऽन्येषांचकीदृशी।२७
कोऽप्यास्ति त्रिषु लोकेषु यो नमुह्यतिमायया। यन्मोहंगमिताःपूर्वे ब्रह्मविष्णुहरादयः।२८
अहो बलमहो वीर्यं देव्या खलु विनिर्मितम्। माययैव वशं नीतः सर्वज्ञ ईश्वरः प्रभुः।२९
विष्ण्वंशसम्भवोव्यास इति पौराणिका जगुः। सोऽपि मोहार्णवे मग्नो भग्नपोतो वणिग्यथा।३०
अश्रुपातंकरोम्यद्य विवशः प्राकृतो यथा। अहो मायाबलं चैतद् दुस्त्यजंपण्डितैरपि।३१
कोऽयं कोऽहं कथंचेह कीदृशोऽयम्भ्रमः किल। पञ्चभूतात्मके देहे पितापुत्रेतिवासना।३२
बलिष्ठाखलुमायेयंमायिनामपिमोहिनी। ययाऽभिभूतः कृष्णोऽपिकरोतिरोदनंद्विजः।३३
तां नत्वा मनसादेवीं सर्वकारणकारणम्। जननीं सर्वदेवानां ब्रह्मादीनां तथेश्वरीम्।३४
पितरं प्राहदीनं तं शोकार्णवपरिप्लुतम्। अरणीसम्भवो व्यासं हेतुमद्वचनं शुभम्।३५
पाराशर्य महाभाग सर्वेषां बोधदःस्वयम्। किंशोकंकुरुषेस्वामिन्यथाऽज्ञःप्राकृतोनरः।३६
अद्याहंतवपुत्रोऽस्मिन जानेपूर्वजन्मनि। कोऽहंकस्त्वं महाभागविभ्रमोऽयंमहात्मनि।३७
कुरुधैर्यं प्रबुध्यस्व मा विषादे मनः कृथाः। मोहजालमिमं मत्वा मुञ्चशोकं महामते।३८
क्षुधानिवृत्तिर्भक्ष्येण न पुत्रदर्शनेन च। पिपासाजलपानेन याति नैवाऽऽत्मजेक्षणात्।३९
घ्राणं सुखं सुगन्धेन कर्णजं श्रवणेन च। स्त्रीसुखं तु स्त्रियानूनं पुत्रोऽहंकिंकरोमिते।४०
अजीगर्तेन पुत्रोऽपि हरिश्चन्द्राय भूभुजे। पशुकामाय यज्ञार्थे दत्तो मौल्येन सर्वथा।४१
सुखानां साधनं द्रव्यं धनात्सुखसमुच्चयः। धनमर्जय लोभश्चेत्पुत्रोऽहंकिंकरोम्यहम्।४२
मां प्रबोधयबुद्ध्या त्वं दैवज्ञोऽसि महामते। यथामुच्येयमत्यन्तं गर्भवासभयान्मुने।४३
दुर्लभं मानुषं जन्म कर्मभूमाविहाऽनघ। तत्राऽपि ब्राह्मणत्वं वै दुर्लभं चोत्तमेकुले।४४
बद्धोऽहमितिमे बुद्धिर्नापसर्पति चित्ततः। संसारवासनाजाले निविष्टा वृद्धगामिनी।४५
इत्युक्तस्तु तदा व्यास पुत्रेणाऽमितबुद्धिना। प्रत्युवाचशुकं शान्तंचतुर्थाश्रममानसम्।४६

व्यास उवाच

पठ पुत्र महाभाग मया भागवतं कृतम्। शुभं न चातिविस्तीर्णं पुराणंब्रह्मसम्मितम्।४७

स्कन्धा द्वादश तत्रैव पञ्चलक्षणसंयुतम् । सर्वेषाञ्च पुराणानां भूषणं मम सम्मतम् ।४८
सदसज्ज्ञानविज्ञानं श्रुतमात्रेण जायते । येन भागवतेनेह तत्पठ त्वं महामते! ।४९
वटपत्रशयानाय विष्णवे बालरूपिणे । केनाऽस्मिबालभावेन निर्मितोऽहं चिदात्मना ।५०
किमर्थं केन द्रव्येण कथं जानामि चाऽखिलम् । इत्येवं चिन्त्यमानाय मुकुन्दाय महात्मने ।५१
श्लोकार्द्धेनतयाप्रोक्तंभगवत्याऽखिलार्थदम् । सर्वंखल्विदमेवाहं नान्यदस्तिसनातनम् ।५२
तद्वचो विष्णुना पूर्वं संविज्ञातं मनस्यपि । केनोक्तवागियंसत्याचिन्तयामासचेतसा ।५३
कथं वेद्मिप्रवक्तारं स्त्रीपुंसौवा नपुंसकम् । इतिचिन्ताप्रपन्नेन धृतं भागवतं हृदि ।५४
पुनः पुनः कृतोच्चारस्तस्मिन्नेवास्तचेतसा । वटपत्रे शयानः सन्नभूच्चिंतासमन्वितः ।५५
तदा शान्ता भगवती प्रादुरास चतुर्भुजा । शङ्खचक्रगदापद्मवरायुधधरा शिवा ।५६
दिव्याम्बरधरा देवी दिव्यभूषणभूषिता । संयुतासदृशीभिश्चसखीभिःस्वविभूतिभिः ।५७
प्रादुर्बभूव तस्याग्रे विष्णोरमिततेजसः । मन्दहास्यं प्रयुजाना महालक्ष्मीः शुभानना ।५८

सूत उवाच

तां तथा संस्थितांदृष्ट्वाहृदयेकमलेक्षणः । विस्मितःसलिलेतस्मिन्निराधारांमनोरमाम् ।५९
रतिर्भूतिस्तथा बुद्धिर्मतिः कीर्तिः स्मृतिर्धृतिः । श्रद्धा मेधा स्वधा स्वाहा क्षुधा निद्रा दया गतिः ।६०
तुष्टिः पुष्टिःक्षमालज्जाजृम्भातन्द्राचशक्तयः । संस्थितासर्वतःपार्श्वेमहादेव्यापृथक्पृथक् ।६१
वरायुधधराः सर्वा नानाभूषणभूषिताः । मन्दारमालाकुलिता मुक्ताहारविराजिताः ।६२
तां दृष्ट्वाताश्च संवीक्ष्य तस्मिन्नेकार्णवे जले । विस्मयाविष्टहृदयः सम्बभूवजनार्दनः ।६३
चिन्तयामास सर्वात्मा दृष्टमायोऽतिविस्मितः । कुतोभवाः स्त्रियः सर्वाः कुतोऽहं वटतल्पगः ।६४
अस्मिन्नेकार्णवे घोरे न्यग्रोधः कथमुत्थितः । केनाऽहं स्थापितोऽस्यत्र शिशुं कृत्वा शुभाकृतिः ।६५
ममेयं जननी नो वा मया वा काऽपिदुर्घटा । दर्शनं केनचित्त्वद्य दत्तं वा केन हेतुना ।६६
किं मया चात्रवक्तव्यं गन्तव्यं वानवाक्क्वचित् । मौनमास्थायतिष्ठेयंबालभावादतंद्रितः ।६७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे शुकवैराग्यवर्णनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ।।१५।।

* षोडशोऽध्यायः *

विष्णुम्प्रतिमहालक्ष्मीवाक्यम्

व्यास उवाच

दृष्ट्वा तं विस्मितं देवंशयानंवटपत्रके । उवाचसस्मितंवाक्यंविष्णोकिंविस्मितोह्यसि । १
महाशक्त्याः प्रभावेण त्वं मां विस्मृतवान्पुरा । प्रभवे प्रलये जातेभूत्वाभूत्वापुनःपुनः । २
निर्गुणा सा परा शक्तिः सगुणस्त्वं तथाऽप्यहम् ।
सात्त्विकी किल या शक्तिस्तां शक्ति विद्धि मामिकाम् ।।३।।
त्वन्नाभिकमलाद्ब्रह्मा भविष्यति प्रजापतिः । सकर्त्तासर्वलोकस्यरजोगुणसमन्वितः । ४
स तदा तप आस्थाय प्राप्य शक्तिमनुत्तमाम् । रजसा रक्तवर्णंच करिष्यतिजगत्त्रयम् । ५
सगुणान्पञ्चभूतांश्च समुत्पाद्यमहामतिः । इन्द्रियाणीन्द्रियेशांश्च मनः पूर्वान्समन्ततः । ६
करिष्यति ततःसर्गन्तेनकर्ता स उच्यते । विश्वस्यास्यमहाभाग त्वंवै पालयितातथा । ७
तद्भ्रुवोर्मध्यदेशाच्चक्रोद्धाद्रुद्रोभविष्यति । तपःकृत्वामहाघोरं प्राप्यशक्तिन्तुतामसीम् । ८
कल्पान्ते सोऽपि संहर्ता भविष्यति महामते । तेनाऽहं त्वामुपायाता सात्त्विकीन्त्वमवेहिमाम् । ९
स्थास्येऽहं त्वत्समीपस्था सदाऽहं मधुसूदन । हृदयेतेकृतावासाभवामिसततङ्किल ।१०

विष्णुरुवाच

श्लोकस्यार्धंमयापूर्वंश्रुतं देवि स्फुटाक्षरम् । तत्केनोक्तम्वरारोहेरहस्यम्परमं शिवम् ।११
तन्मे ब्रूहिवरारोहे संशयोऽयं वरानने । निर्धनोहि यथा द्रव्यं तत्स्मरामि पुनः पुनः ।१२

व्यास उवाच

विष्णोस्तद्वचनं श्रुत्वामहालक्ष्मीःस्मिताननां । उवाचपरयाप्रीत्यावचनञ्चारुहासिनी ।१३

महालक्ष्मीरुवाच

शृणुशौरेवचोमह्यंसगुणाऽहंचतुर्भुजा । मांजानासिन जानासि निर्गुणांसगुणालयाम् ।१४
त्वं जानीहि महाभाग! तया तत्प्रकटीकृतम् । पुण्यं भागवतं विद्धि वेदसारं शुभावहम् ।१५
कृपाञ्च महतींमन्ये देव्याःशत्रुनिषूदन । यथाप्रोक्तम्परं गुह्यं हिताय तव सुव्रत! ।१६
रक्षणीयंसदाचित्तेन विस्मार्यङ्कदाचन । सारं हि सर्वशास्त्राणांमहाविद्याप्रकाशितम् ।१७
नातः परं वेदितव्यं वर्तते भुवनत्रये । प्रियोऽसिखलु देव्यास्त्वंतेन ते व्याहृतम्वचः ।१८

व्यास उवाच

इति श्रुत्वावचो देव्या महालक्ष्म्याश्चतुर्भुजः । दधारहृदयेनित्यंमत्वामन्त्रमनुत्तमम् ।१९
कालेनकियता तत्र तन्नाभिकमलोद्भवः । ब्रह्मा दैत्यभयात्त्रस्तो जगाम शरणं हरेः ।२०
ततः कृत्वामहायुद्धंहत्वातौ मधुकैटभौ । जजापभगवान्विष्णुःश्लोकार्धंविशदाक्षरम् ।२१
जपन्तं वासुदेवञ्च दृष्ट्वा देवः प्रजापतिः । पप्रच्छ परमप्रीतः कञ्जजः कमलापतिम् ।२२

किं त्वं जपसि देवेश ! त्वत्तःकोऽप्यधिकोऽस्ति वै ।
यत्स्मृत्वा पुण्डरीकाक्ष! प्रीतोऽसि जगदीश्वर! ॥२३॥

हरिरुवाच

मयित्वयिचयाशक्तिः क्रियाकारणलक्षणा । विचारयमहाभाग या सा भगवतीशिवा ।२४
यस्याधारेजगत्सर्वं तिष्ठत्यत्र महार्णवे । साकारा या महाशक्तिरमेया च सनातनी ।२५
यया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् । सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ।२६
सा विद्या परमामुक्तेर्हेतुभूता सनातनी । संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ।२७
अहंत्वमखिलंविश्वंतस्याश्चिच्छक्तिसम्भवम् । विद्धिब्रह्मन्नसंदेहः कर्त्तव्यः सर्वदाऽनघ ।२८
श्लोकार्धेनतयाप्रोक्तं तद्वैभागवतं किल । विस्तरोभवितातस्य द्वापरादौ युगे तथा ।२९

व्यास उवाच

ब्रह्मणा संगृहीतञ्च विष्णोस्तु नाभिपङ्कजे । नारदाय च तेनोक्तं पुत्रायाऽमितबुद्धये ।३०
नारदेन तथा मह्यं दत्तं हि मुनिना पुरा । मया कृतमिदं पूर्णं द्वादशस्कन्धविस्तरम् ।३१
तत्पठस्व महाभाग पुराणं ब्रह्मसम्मितम् । पञ्चलक्षणयुक्तञ्च देव्याश्चरितमुत्तमम् ।३२
तत्त्वज्ञानरसोपेतं सर्वेषामुत्तमोत्तमम् । धर्मशास्त्रसमं पुण्यं वेदार्थेनोपबृंहितम् ।३३
वृत्रासुरवधोपेतं नानाख्यानकथायुतम् । ब्रह्मविद्यानिधानन्तु संसारार्णवतारकम् ।३४
गृहाणत्वं महाभाग योग्योऽसिमतिमत्तरः । पुण्यं भागवतं नाम पुराणं पुरुषर्षभ ।३५
अष्टादशसहस्राणां श्लोकानां कुरुसंग्रहम् । अज्ञाननाशनन्दिव्यं ज्ञानभास्करबोधकम् ।३६
सुखदंशान्तिदं धन्यं दीर्घायुष्यकरं शिवम् । शृण्वतां पठतां चेदं पुत्रपौत्रविवर्धनम् ।३७
शिष्योऽयंममधर्मात्मालोमहर्षणसम्भवः । पठिष्यतित्वयासार्द्धंपुराणींसहितांशुभाम् ।३८

सूत उवाच

इत्युक्तं तेन पुत्राय मह्यं च कथितं किल । मया गृहीतन्तत्सर्वम्पुराणञ्चातिविस्तरम् ।३९
शुकोऽधीत्य पुराणन्तु स्थितोव्यासाश्रमेशुभे । नलेभेशर्मकर्मात्माब्रह्मात्मजइवापरः ।४०

एकान्तसेवीविकलः स शून्य इव लक्ष्यते । नात्यन्तभोजनासक्तो नोपवासरतस्तथा । ४१
चिन्ताविष्टं शुकं दृष्ट्वा व्यासःप्राह सुतम्प्रति । किं पुत्र! चिन्त्यतेनित्यं कस्माद् व्यग्रोऽसि मानद! । ४२
आस्सेध्यानपरो नित्यमृणग्रस्तइवाऽधनः । का चिन्ता वर्तते पुत्रमयिताते तु तिष्ठति । ४३
सुखं भुंक्ष्वयथाकामम्मुञ्चशोकं मनोगतम् । ज्ञानञ्चिन्तय शास्त्रोक्तं विज्ञानेचमतिंकुरु । ४४
न चेन्मनसि ते शान्तिर्वचसा मम सुव्रत । गच्छ त्वं मिथिलां पुत्र पालिताञ्जनकेनह । ४५
स ते मोहं महाभाग नाशयिष्यतिभूपतिः । जनको नाम धर्मात्माविदेहःसत्यसागरः । ४६
तं गत्वा नृपतिंपुत्र सन्देहंस्वंनिवर्तय । वर्णाश्रमाणां धर्मांस्त्वं पृच्छ पुत्रयथातथम् । ४७
जीवन्मुक्तःसराजर्षिर्ब्रह्मज्ञानमति शुचिः । तथ्यवक्ताऽतिशान्तश्च योगीयोगप्रियःसदा । ४८
तच्छ्रुत्वा वचनन्तस्य व्यासस्यामिततेजसः । प्रत्युवाचमहातेजाःशुकश्चारणिसम्भवः । ४९
दम्भोऽयं किल धर्मात्मन्भाति चित्ते ममाऽधुना । जीवन्मुक्तो विदेहश्च राज्यं शास्ति मुदाऽन्वितः । ५०
बन्ध्यापुत्रइवाभातिराजाऽसौजनकःपितः । कुर्वन्राज्यंविदेहः किं सन्देहोऽयंममाद्भुतः । ५१
द्रष्टुमिच्छाम्यहं भूप विदेहं नृपसत्तमम् । कथं तिष्ठति संसारे पद्मपत्रमिवाम्भसि । ५२
सन्देहोऽयं महांस्तात विदेहे परिवर्तते । मोक्षः किं वदतां श्रेष्ठ सौगतानामिवापरः । ५३
कथं भुक्तमभुक्तस्यादकृतञ्च कृतं कथम् । व्यवहारः कथन्त्याज्य इन्द्रियाणांमहामते । ५४
मातापुत्रस्तथाभार्या भगिनीकुलटातथा । भेदाभेदः कथं न स्याद्यद्येतन्मुक्तताकथम् । ५५
कटुक्षारन्तथा तीक्ष्णं कषायंमिष्टमेव च । रसना यदि जानाति भुंक्तेभोगाननुत्तमान् । ५६
शीतोष्णसुखदुःखादिपरिज्ञानं यदा भवेत् । मुक्तता कीदृशीतात सन्देहोऽयंममाद्भुतः । ५७
शत्रुमित्रपरिज्ञानं वैरप्रीतिकरं सदा । व्यवहारे परे तिष्ठन्कथं न कुरुते नृपः । ५८
चौरंवातापसम्पाऽपिसमानंमन्यते कथम् । असमायदिबुद्धिःस्यान्मुक्ततातर्हिकीदृशी । ५९
दृष्टपूर्वोनमे कश्चिज्जीवन्मुक्तश्च भूपतिः । शङ्केयं महती तात गृहे मुक्तः कथं नृपः । ६०
दिदृक्षामहतीजाताश्रुत्वातं भूपतिं तथा । सन्देहविनिवृत्त्यर्थं गच्छामि मिथिलांप्रति । ६१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे शुकम्प्रतिव्यासोपदेशवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

* सप्तदशोऽध्यायः *

जनकस्य परीक्षार्थं शुकस्य मिथिलागमनम्

सूत उवाच

इत्युक्त्वा पितरं पुत्रः पादयोःपतितः शुकः । बद्धाञ्जलिरुवाचेदं गन्तुकामो महामनाः । १
आपृच्छे त्वां महाभाग ग्राह्यन्ते वचनंमया । विदेहान्द्रष्टुमिच्छामिपालिताञ्जनकेनतु । २
विना दण्डं कथं राज्यं करोति जनकः किल । धर्मे न वर्ततेलोको दण्डश्चेन्नभवेद्यदि । ३
धर्मस्य कारणं दण्डो मन्वादिप्रहितः सदा । स कथं वर्तते तात संशयोऽयंमहान्मम । ४
मम माता त्वियंवन्ध्यातद्वद्भातिविचेष्टितम् । पृच्छामित्वांमहाभागगच्छामिचपरन्तप । ५
तं दृष्ट्वा गन्तुकामं च शुकं सत्यवतीसुतः । आलिंग्योवाच पुत्रंतंज्ञानिनंनिःस्पृहंदृढम् । ६

व्यास उवाच

स्वस्त्यस्तु शुक दीर्घायुर्भव पुत्र महामते । सत्यां वाचंप्रदत्त्वामेगच्छतातयथासुखम् । ७
आगन्तव्यं पुनर्गत्वा ममाश्रममनुत्तमम् । न कुत्रापि च गन्तव्यं त्वया पुत्र कथञ्चन । ८
सुखं जीवामि पुत्राऽहं दृष्ट्वा ते मुखपङ्कजम् । अपश्यन्दुःखमाप्नोमिप्राणस्त्वमसिमेसुत । ९
दृष्ट्वा त्वं जनकं पुत्र! सन्देहं विनिवर्त्य च । अत्रागत्य सुखंतिष्ठ वेदाध्ययनतत्परः । १०

सूत उवाच

इत्युक्तः सोऽभिवाद्याऽऽर्यंकृत्वा चैव प्रदक्षिणाम् । चलितस्तरसाऽतीव धनुर्मुक्तः शरो यथा ।११
सम्पश्यन्विविधान्देशाँल्लोकांश्चवित्तधर्मिणः । वनानिपादपांश्चैवक्षेत्राणिफलितानिच ।१२
तापसांस्तप्यमानांश्च याजकान्दीक्षयाऽन्वितान् । योगाभ्यासरतान्योगिवानप्रस्थान्वनौकसः ।१३
शैवान्पाशुपतांश्चैव सौराञ्छाक्तांश्च वैष्णवान् । वीक्ष्य नानाविधान्धर्माञ्जगामातिस्मयन्मुनिः ।१४
वर्षद्वयेन मेरुञ्च समुल्लङ्घ्य महामतिः । हिमाचलञ्च वर्षेण जगाम मिथिलाम्प्रति ।१५
प्रविष्टो मिथिलाम्मध्ये पश्यन्सर्वर्द्धिमुत्तमाम् । प्रजाश्च सुखिताः सर्वाः सदाचाराः सुसंस्थिताः ।१६
क्षत्त्रा निवारितस्तत्र कस्त्वमत्र समागतः । किं ते कार्यं वदस्वेति पृष्टस्तेननचाब्रवीत् ।१७
निःसृत्य नगरद्वारात्स्थितः स्थाणुरिवाचलः । विस्मितोऽतिहसंस्तस्थौ वचो नोवाच किञ्चन ।१८

प्रतीहार उवाच

ब्रूहि मूकोऽसि किं ब्रह्मन्किमर्थं त्वमिहागतः । चलनंचविनाकार्यंनभवेदितिमे मतिः ।१९
राजाज्ञया प्रवेष्टव्यं नगरेऽस्मिन्सदा द्विज । अज्ञातकुलशीलस्य प्रवेशोनाऽत्र सर्वथा ।२०
तेजस्वी भासि नूनं त्वं ब्राह्मणो वेदवित्तमः । कुलं कार्यंचमेब्रूहि यथेष्टंगच्छमानद ।२१

शुक उवाच

यदर्थमागतोऽस्म्यत्र तत्प्राप्तं वचनात्तव । विदेहनगरं द्रष्टुं प्रवेशो यत्र दुर्लभः ।२२
मोहोऽयं मम दुर्बुद्धेः समुल्लंघ्य गिरिद्वयम् । राजानंद्रष्टुकामोऽहं पर्यटन्समुपागतः ।२३
वञ्चितोऽहं स्वयं पित्रा दूषणं कस्य दीयते । भ्रामितोऽहंमहाभागकर्मणावा महीतले ।२४
धनाशापुरुषस्येहपरिभ्रमणकारणम् । सामेनास्तितथाऽप्यत्रसम्प्राप्तोऽस्मिभ्रमात्किल ।२५
निराशस्य सुखं नित्यंयदिमोहेन मज्जति । निराशोऽहंमहाभागमग्नोऽस्मिन्मोहसागरे ।२६
क्व मेरुर्मिथिला क्वेयं पद्भ्यां च समुपागतः । परिभ्रमफलंकिंमेवञ्चितो विधिनाकिल ।२७
प्रारब्धं किल भोक्तव्यंशुभं वाऽप्यथवाऽशुभम् । उद्यमस्तद्वशे नित्यंकारयत्येवसर्वथा ।२८
न तीर्थं न च वेदोऽत्र यदर्थमिह मे श्रमः । अप्रवेशः पुरे जातो विदेहो नाम भूपतिः ।२९
इत्युक्त्वा विररामाशुमौनीभूत इवस्थितः । ज्ञातोहिप्रतिहारेणज्ञानीकश्चिद्द्विजोत्तमः ।३०
सामपूर्वमुवाचाऽसौतं क्षत्तासंस्थितंमुनिम् । गच्छभो यत्रते कार्यंयथेष्टं द्विजसत्तम ।३१
अपराधो मम ब्रह्मन्यन्निवारितवानहम् । तत्क्षन्तव्यं महाभाग विमुक्तानांक्षमा बलम् ।३२
किं तेऽत्र दूषणं क्षत्तः परतन्त्रोऽसि सर्वदा । प्रभुकार्यंप्रकर्तव्यं सेवकेन यथोचितम् ।३३
न भूपदूषणं चात्र यदहं रक्षितस्त्वया । चोरशत्रुपरिज्ञानं कर्तव्यं सर्वथा बुधैः ।३४
ममैव सर्वथा दोषो यदहं समुपागतः । गमनं परगेहे यल्लघुतायाश्च कारणम् ।३५

प्रतीहार उवाच

किंसुखंद्विज! किं दुःखंकिंकार्यं शुभमिच्छता । कःशत्रुर्हितकर्ताकोब्रूहि सर्वममाऽद्यवै ।३६

शुक उवाच

द्वैविध्यं सर्वलोकेषु सर्वत्र द्विविधोजनः । रागी चैव विरागीचतयोश्चित्तंद्विधा पुनः ।३७
विरागी त्रिविधःकामंज्ञातोऽज्ञातश्चमध्यमः । रागीचद्विविधःप्रोक्तोमूर्खश्चचतुरस्तथा ।३८
चातुर्यं द्विविधं प्रोक्तंशास्त्रजम्मतिजंतथा । मतिस्तुद्विविधालोकेयुक्ताऽयुक्तेतिसर्वथा ।३९

प्रतीहार उवाच

यदुक्तं भवता विद्वन्नार्थज्ञोऽहं द्विजोत्तम । तत्सर्वं विस्तरेणाऽद्य यथार्थं वद सत्तम! ।४०

शुक उवाच

रागो यस्यास्तिसंसारे स रागीत्युच्यतेध्रुवम् । दुःखंबहुविधंतस्यसुखंचविविधंपुनः ।४१

धनं प्राप्य सुतान्दारान्मानंचविजयं तथा। तदप्राप्य महद्दुःखं भवत्येव क्षणेक्षणे।४२
कार्यं तस्य सुखोपायःकर्तव्यंसुखसाधनम्। तस्यारातिःसविज्ञेयःसुखविघ्नंकरोतियः।४३
सुखोत्पादयिता मित्रं रागयुक्तस्य सर्वदा। चतुरो नैव मुह्येत मूर्खः सर्वत्र मुह्यति।४४
विरक्तस्यात्मरक्तस्य सुखमेकान्तसेवनम्। आत्मानुचिन्तनंचैववेदान्तस्यचचिन्तनम्।४५
दुःखं तदेतत्सर्वं हि संसारकथनादिकम्। शत्रवो बहवस्तस्य विज्ञस्य शुभमिच्छतः।४६
कामःक्रोधः प्रमादश्च शत्रवो विविधाःस्मृताः। बन्धुः सन्तोष एवाऽस्य नान्योऽस्ति भुवनत्रये।४७

सूत उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्यमत्वातंज्ञानिनंद्विजम्। क्षत्ताप्रवेशयामासकक्षांचातिमनोरमाम्।४८
नगरं वीक्षमाणः संस्त्रैविध्यजनसङ्कुलम्। नानाविपणिद्रव्याढ्यं क्रयविक्रयकारकम्।४९
रागद्वेषयुतं कामलोभमोहाकुलं तथा। विवदत्सुजनाकीर्णं वसुपूर्णं महत्तरम्।५०
पश्यन्स त्रिविधाँल्लोकान्प्रासरद्राजमन्दिरम्। प्राप्तःपरमतेजस्वी द्वितीय इव भास्करः।५१
निवारितश्च तत्रैव प्रतीहारेण काष्ठवत्। तत्रैव च स्थितोद्वारि मोक्षमेवानुचिन्तयन्।५२
छायायामातपे चैव समदर्शीमहातपाः। ध्यानंकृत्वातथैकान्तेस्थितःस्थाणुरिवाचलः।५३
तं मुहूर्तादुपागत्य राज्ञोऽमात्यः कृताञ्जलिः। प्रावेशयत्ततःकक्षां द्वितीयांराजवेश्मनः।५४
तत्र दिव्यंमनोरम्यंपुष्पितंदिव्यपादपम्। तद्वनं दर्शयित्वातुकृत्वाचातिथिसत्क्रियाम्।५५
वारमुख्याः स्त्रियस्तत्र राजसेवापरायणाः। गीतवादित्रकुशलाःकामशास्त्रविशारदाः।५६
ताआदिश्यचसेवार्थंशुकस्यमन्त्रिसत्तमः। निर्गतःसदनात्तस्माद्व्यासपुत्रःस्थितस्तदा।५७
पूजितःपरयाभक्त्या ताभिःस्त्रीभिर्यथाविधि। देशकालोपपन्नेननानान्नेनातितोषितः।५८
ततोऽन्तःपुरवासिन्यस्तस्यान्तःपुरकाननम्। रम्यं संदर्शयामासुरङ्गनाःकाममोहिताः।५९
स युवा रूपवान्कान्तो मृदुभाषी मनोरमः। दृष्ट्वा तामुमुहुःसर्वास्तंचकाममिवापरम्।६०
जितेन्द्रियं मुनिं मत्वा सर्वाः पर्यचरंस्तदा। आरणेयस्तु शुद्धात्मामातृभावमकल्पयत्।६१
आत्मारामो जितक्रोधो न हृष्यतिन तृप्यति। पश्यंस्तासां विकारांश्च स्वस्थ एव स तस्थिवान्।६२
तस्मै शय्यांसुरम्यांचददुर्नार्यःसुसंस्कृताम्। परार्ध्यास्तरणोपेतांनानोपस्करसंवृताम्।६३
स कृत्वापादशौचं च कुशपाणिरतन्द्रितः। उपास्यपश्चिमांसन्ध्यांध्यानमेवान्वपद्यत।६४
याममेकं स्थितोध्याने सुष्वाप तदनन्तरम्। सुप्त्वा यामद्वयंतत्र चोदतिष्ठत्ततःशुकः।६५
पाश्चात्त्यं यामिनीयामं ध्यानमेवान्वपद्यत। स्नात्वा प्रातःक्रियाः कृत्वा पुनरास्ते समाहितः।६६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे शुकस्य राजमन्दिरेप्रवेशवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

* अष्टादशोऽध्यायः *

शुकाय जनकोपदेशवर्णनम्

सूत उवाच

श्रुत्वा तमागतं राजा मन्त्रिभिःसहितःशुचिः। पुरःपुरोहितंकृत्वागुरुपुत्रंसमभ्ययात्।१
कृत्वाऽर्हणां नृपः सम्यग्दत्तासनमनुत्तमम्। प्रपच्छ कुशलंगांच विनिवेद्यपयस्विनीम्।२
स च तां नृपपूजां वै प्रत्यगृह्णाद्यथाविधि। प्रपच्छ कुशलं राज्ञेस्वं निवेद्य निरामयम्।३
स कृत्वा कुशलप्रश्नमुपविष्टः सुखासने। शुकं व्याससुतं शान्तं पर्यपृच्छत पार्थिवः।४
किं निमित्तंमहाभाग निःस्पृहस्यच मां प्रति। जातं ह्यागमनंब्रूहि कार्यंतन्मुनिसत्तम।५

शुक उवाच

व्यासेनोक्तो महाराज कुरु दारपरिग्रहम्। सर्वेषामाश्रमाणां च गृहस्थाश्रम उत्तमः।६

मयानाऽङ्गीकृतं वाक्यंमत्वाबन्धंगुरोरपि । नबन्धोऽस्तीतितेनोक्तोनाहंतत्कृतवान्पुनः । ७
इति सन्दिग्धमनसं मत्वामां मुनिसत्तमः । उवाच वचनं तथ्यंमिथिलांगच्छमाशुचः । ८
याज्योऽस्ति जनकस्तत्र जीवन्मुक्तो नराधिपः । विदेहो लोकविदितः पाति राज्यमकंटकम् । ६
कुर्वन्राज्यं तथा राजा मायापाशैर्न बध्यते । त्वं बिभेषि कथं पुत्र वनवृत्तिः परन्तपः । १०
पश्य तं नृपशार्दूलं त्यज मोहं मनोगतम् । कुरुदारान्महाभाग पृच्छवाभूपतिं च तम् । ११
सन्देहं ते मनोजातं कथयिष्यति पार्थिवः । तच्छ्रुत्वा वचनंतस्य मामेहि तरसा सुत । १२
सम्प्राप्तोऽहं महाराजत्वत्पुरेच तदाज्ञया । मोक्षकामोऽस्मिराजेन्द्रब्रूहिकृत्यंममाऽनघ । १३
विपस्तीर्थव्रतेज्याश्च स्वाध्यायस्तीर्थसेवनम् । ज्ञानंवावदराजेन्द्र मोक्षंप्रतिचकारणम् । १४

जनक उवाच

शृणु विप्रेण कर्तव्यं मोक्षमार्गाश्रितेन यत् । उपनीतो वसेदादौ वेदाभ्यासायवैगुरौ । १५
अधीत्य वेदवेदान्तान्दत्त्वा च गुरुदक्षिणाम् । समावृत्तस्तु गार्हस्थ्ये सदारो निवसेन्मुनिः । १६
नाऽन्यवृत्तिस्तु सन्तोषी निराशी गतकल्मषः । अग्निहोत्रादिकर्माणि कुर्वाणः सत्यवाक्छुचिः । १७
पुत्रं पौत्रं समासाद्यवानप्रस्थाश्रमे वसेत् । तपसा षड्रिपूञ्जित्वा भार्यांपुत्रेनिवेश्य च । १८
सर्वानग्नीन्यथान्यायमात्मन्यारोप्य धर्मवित् । वसेत्तुर्याश्रमे शान्तःशुद्धेवैराग्यसंभवे । १६
विरक्तस्याधिकारोऽस्ति सन्न्यासे नान्यथा क्वचित् । वेदवाक्यमिदं तथ्यं नान्यथेति मतिर्मम । २०
शुकाऽष्टचत्वारिंशद्वै संस्कारा वेदबोधिताः । चत्वारिंशद् गृहस्थस्य प्रोक्तास्तत्र महात्मभिः । २१
अष्टौ च मुक्तिकामस्यप्रोक्ताःशमदमादयः । आश्रमादाश्रमंगच्छेदितिशिष्टानुशासनम् । २२

श्रीशुक उवाच

उत्पन्नेहृदि वैराग्ये ज्ञानविज्ञानसम्भवे । अवश्यमेव वस्तव्यमाश्रमेषु वनेषु वा । २३

जनक उवाच

इन्द्रियाणि बलिष्ठानिनियुक्तानि मानद । अपक्वस्य प्रकुर्वन्ति विकारांस्ताननेकशः । २४
भोजनेच्छां सुखेच्छाञ्च शय्येच्छामात्मजस्य च । यती भूत्वा कथं कुर्याद्विकारे समुपस्थिते । २५
दुर्जरं वासनाजालं न शान्तिमुपयाति वै । अतस्तच्छमनार्थाय क्रमेण च परित्यजेत् । २६
ऊर्ध्वं सुप्तः पतत्येव न शयानः पतत्यधः । परिव्रज्य परिभ्रष्टो न मार्गं लभते पुनः । २७
यथापिपीलिका मूलाच्छाखायामधिरोहति । शनैः शनैः फलंयातिसुखेनपदगामिनी । २८
विहङ्गस्तरसा याति विघ्नशङ्कामुदस्यवै । श्रान्तोभवति विश्रम्यसुखंयाति पिपीलिका । २६
मनस्तु प्रबलं काममजेयमकृतात्मभिः । अतः क्रमेण जेतव्यमाश्रमानुक्रमेण च । ३०
गृहस्थाश्रमसंस्थोऽपि शान्तः सुमतिरात्मवान् । नच हृष्येन्न च तपेल्लाभालाभे समो भवेत् । ३१
विहितं कर्मकुर्वाणस्त्यजंश्चिन्तान्वितंच यत् । आत्मलाभेनसंतुष्टोमुच्यतेनात्रसंशयः । ३२
पश्याऽहं राज्यसंस्थोऽपि जीवन्मुक्तो यथाऽनघ । विचरामि यथा कामं न मे किंचित्प्रजायते । ३३
भुञ्जानो विविधान्भोगान्कुर्वन्कार्याण्यनेकशः । भविष्यामि यथाऽहं त्वं तथा मुक्तो भवाऽनघ । ३४
कथ्यते खलु यद् दृश्यमदृश्यं बध्यते कुतः । दृश्यानि पञ्चभूतानिगुणास्तेषांतथापुनः । ३५
आत्मागम्योऽनुमानेन प्रत्यक्षो न कदाचन । स कथं बध्यते ब्रह्मन्निर्विकारोनिरञ्जनः । ३६
मनस्तु सुखदुःखानां महतां कारणं द्विज । जाते तु निर्मले ह्यस्मिन्सर्वंभवतिनिर्मलम् । ३७
भ्रमन्सर्वेषु तीर्थेषु स्नात्वा स्नात्वा पुनः पुनः । निर्मलं नमनोयावत्तावत्सर्वंनिरर्थकम् । ३८
न देहो न च जीवात्मा नेन्द्रियाणि परन्तपः । मनएवमनुष्याणांकारणंबन्धमोक्षयोः । ३६

शुद्धो मुक्तः सदैवाऽऽत्मा न वै बध्येत कर्हिचित् ।
बन्धमोक्षौ मनःसंस्थौ तस्मिञ्छान्ते प्रशाम्यति ।।४०।।

शत्रुर्मित्रमुदासीनो भेदाः सर्वे मनोगताः। एकात्मत्वे कथंभेदः सम्भवेद्द्वैतदर्शनात्।४१
जीवो ब्रह्म सदैवाऽहं नाऽत्रकार्या विचारणा। भेदबुद्धिस्तु संसारे वर्तमाना प्रवर्तते।४२
अविद्येयं महाभाग विद्या चैतन्निवर्तनम्। विद्याविद्ये च विज्ञेये सर्वदैव विचक्षणैः।४३
विनाऽऽतपं हि च्छायायाञ्जायते च कथं सुखम्।
अविद्यया विना तद्वत्कथं विद्याञ्च वेत्ति वै ॥४४॥
गुणागुणेषु वर्तन्ते भूतानिच तथैव च। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषुकोदोषस्तत्र चाऽऽत्मनः।४५
मर्यादा सर्वरक्षार्थं कृतावेदेषु सर्वशः। अन्यथा धर्मनाशःस्यात्सौगतानामिवाऽनघ!।४६
धर्मनाशेविनष्टःस्याद्वर्णाचारोऽतिवर्तितः। अतो वेदप्रतिष्ठेन मार्गेणगच्छतां शुभम्।४७

श्रीशुक उवाच

सन्देहो वर्तते राजन्न निवर्तति मे क्वचित्। भवता कथितं यत्तच्छृण्वतो मे नराधिप।४८
वेदधर्मेषु हिंसा स्यादधर्मबहुला हि सा। कथं मुक्तिप्रदो धर्मो वेदोक्तो बत भूपते!।४९
प्रत्यक्षेण त्वनाचारः सोमपानं नराधिप। पशूनां हिंसनं तद्वद्भक्षणञ्चामिषस्य च।५०
सौत्रामणौ तथा प्रोक्तःप्रत्यक्षेणसुराग्रहः। द्यूतक्रीडातथाप्रोक्ता व्रतानिविविधानिच।५१
श्रूयतेस्म पुराह्यासीच्छशबिन्दुर्नृपोत्तमः। यज्वाधर्मपरो नित्यं वदान्यस्सत्यसागरः।५२
गोप्ताचधर्मसेतूनांशास्ताचोत्पथगामिनाम्। यज्ञाश्चविहितास्तेन बहवोभूरिदक्षिणाः।५३
चर्मणांपर्वतोजातो विन्ध्याचलसमः पुनः। मेघाम्बुप्लावनाज्जातानदी चर्मण्वतीशुभा।५४
सोऽपि राजा दिवं यातःकीर्तिरस्याचला भुवि। एवंधर्मेषुवेदेषु न मे बुद्धि प्रवर्तते।५५
स्त्रीसङ्गेनसदाभोगे सुखंप्राप्नोतिमानवः। अलाभे दुःखमत्यन्तंजीवन्मुक्तःकथम्भवेत्।५६

जनक उवाच

हिंसा यज्ञेषुप्रत्यक्षासाऽहिंसापरिकीर्तिता। उपाधियोगतोहिंसानान्यथेतिविनिर्णयः।५७
यथाचेन्धनसंयोगादग्नौ धूमः प्रवर्तते। तद्वियोगात्तथातस्मिन्निर्धूमत्वंविभाति वै।५८
अहिंसाञ्च तथा विद्धि वेदोक्तांमुनिसत्तमः। रागिणां साऽपि हिंसैव निःस्पृहाणां न सा मता।५९
अरागेण च यत्कर्म तथाऽहङ्कारवर्जितम्। अकृतं वेदविद्वांसः प्रवदन्ति मनीषिणः।६०
गृहस्थानान्तुहिंसैव या यज्ञे द्विजसत्तम। अरागेण च यत्कर्म तथाऽहङ्कारवर्जितम्।६१
साऽहिंसैव महाभाग! मुमुक्षूणां जितात्मनाम् ॥६२॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे शुकाय जनकोपदेशवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

* एकोनविंशोऽध्यायः *

शुकस्य जनकम्प्रति स्वकीयसन्देहनिवारणार्थं पुनः प्रश्नः

श्रीशुक उवाच

सन्देहोऽयं महाराज वर्तते हृदये मम। मायामध्ये वर्तमानः स कथं निःस्पृहो भवेत्।१
शास्त्रज्ञानञ्चसम्प्राप्यनित्यानित्यविचारणम्। त्यजते न मनो मोहंसकथम्मुच्यतेनरः।२
अन्तर्गतं तमश्छेत्तुं शास्त्राद्बोधोहिन क्षमः। यथा न नश्यतितमः कृतयादीपवार्तया।३
अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्तव्यः सर्वदा बुधैः। स कथं राजशार्दूल गृहस्थस्य भवेत्तथा।४
वित्तैषणा न ते शान्ता तथाराज्यसुखैषणा। जयैषणाचसंग्रामे जीवन्मुक्तःकथम्भवेत्।५
चौरेषु चौरबुद्धिस्ते साधुबुद्धिस्तु तापसे। स्वपरत्वं तवाप्यस्ति विदेहस्त्वंकथंनृप।६
कटुतीक्ष्णकषायाम्लरसान्वेत्ति शुभाशुभान्। शुभेषु रमतेचित्तंनाशुभेषु तथा नृप।७

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिश्चतवराजन्भवन्ति हि। अवस्थास्तु यथाकालं तुरीयातु कथं नृप।८
पदात्यश्वरथेभाश्च सर्वे वै वशगा मम। स्वाम्यहं चैव सर्वेषां मन्यसे त्वं न मन्यसे।९
मिष्टमत्सि सदा राजन्मुदितो विमनास्तथा। मालायाञ्च तथा सर्पे समदृक् क्व नृपोत्तम!।१०
विमुक्तस्तु भवेद्राजन्समलोष्टाश्मकाञ्चनः। एकात्मबुद्धिः सर्वत्र हितकृत्सर्वजन्तुषु।११
न मेऽद्य रमते चित्तं गृहदारादिषु क्वचित्। एकाकीनिःस्पृहोऽत्यर्थञ्चरेयमितिमेमतिः।१२
निःसङ्गोनिर्ममःशान्तः पत्रमूलफलाशनः। मृगवद्विचरिष्यामि निर्द्वन्द्वोनिष्परिग्रहः।१३
किं मे गृहेण वित्तेन भार्यया च सुरूपया। विरागमनसःकामं गुणातीतस्य पार्थिवः।१४
चिन्त्यसे विविधाकारंनानारागसमाकुलम्। दम्भोऽयं किल ते भाति विमुक्तोऽस्मीति भाषसे।१५
कदाचिच्छत्रुजा चिन्ता धनजा च कदाचन। कदाचित्सैन्यजा चिन्ता निश्चिन्तोऽसि कदा नृप!।१६
वैखानसायेमुनयोमिताहाराजितव्रताः। तेऽपिमुह्यन्तिसंसारे जानंतोऽपिह्यसत्यताम्।१७
तव वंशसमुत्थानां विदेहाइति भूपते। कुटिलं नाम जानीहि नान्यथेति कदाचन।१८
विद्याधरोयथामूर्खोजन्मान्धस्तुदिवाकरः। लक्ष्मीधरो दरिद्रश्च नाम तेषां निरर्थकम्।१९
तववंशोद्भवा येये श्रुताः पूर्वे मया नृपाः। विदेहा इति विख्याता नामतःकर्मतो न ते।२०
निमिनामाऽभवद्राजा पूर्वंतव कुले नृपः। यज्ञार्थं स तु राजर्षिर्वसिष्ठंस्वगुरुंमुनिम्।२१
निमन्त्रयामास तदा तमुवाच नृपं मुनिः। निमन्त्रितोऽस्मियज्ञार्थंदेवेन्द्रेणाधुनाकिल।२२
कृत्वा तस्य मखं पूर्णं करिष्यामि तवापि वै। तावत्कुरुष्व राजेन्द्रसंसारंतुशनैः शनैः।२३
इत्युक्त्वा निर्ययौसोऽथ महेन्द्रयजने मुनिः। निमिरन्यं गुरुं कृत्वाचकारमखमुत्तमम्।२४
तच्छ्रुत्वा कुपितोऽत्यर्थं वसिष्ठो नृपतिं पुनः। शशाप च पतत्वद्य देहस्ते गुरुलोपक।२५
राजाऽपितं शशापाथतवापिचपतत्वयम्। अन्योन्यशापात्पतितौ तावेवचमयाश्रुतम्।२६
विदेहेन च राजेन्द्र कथं शप्तो गुरुः स्वयम्। विनोद इव मे चित्ते विभाति नृपसत्तम।२७

जनक उवाच

सत्यमुक्तंत्वया नात्र मिथ्याकिंचिदिदं मतम्। तथाऽपिशृणुविप्रेन्द्रगुरुर्ममसुपूजितः।२८
पितुः सङ्गम्परित्यज्य त्वं वनं गन्तुमिच्छसि। मृगैःसह सुसम्बन्धो भवितातेनसंशयः।२९
महाभूतानि सर्वत्र निःसङ्गः क्व भविष्यसि। आहारार्थं सदा चिन्ता निश्चितःस्याः कथं मुने!।३०
दण्डाजिनकृता चिन्ता यथा तववनेऽपिच। तथैवराज्यचिन्तामेचिन्तयानस्यवानवा।३१
विकल्पोपहतस्त्वं वै दूरदेशमुपागतः। न मे विकल्प सन्देहोनिर्विकल्पोऽस्मिसर्वथा।३२
सुखंस्वपिमि विप्राहंसुखंभुंजामि सर्वदा। नबद्धोऽस्मीतिबुद्ध्याऽहंसर्वदैवसुखीमुने।३३
त्वं तु दुःखी सदैवासि बद्धोऽहमितिशङ्कया। इतिशङ्काम्परित्यज्यसुखीभवसमाहितः।३४
देहोऽयं ममबन्धोऽयं नममेति च मुक्तता। तथा धनं गृहं राज्यं न ममेति च निश्चयः।३५

सूत उवाच

तच्छ्रुत्वावचनं तस्यशुकःप्रीतमनाभवत्। आपृच्छ्यतंजगामाशुव्यासस्याश्रममुत्तमम्।३६
आगच्छन्तं सुतं दृष्ट्वाव्यासोऽपिसुखमाप्तवान्। आलिंग्याघ्रायमूर्धानंप्रपच्छकुशलंपुनः।३७
स्थितस्तत्राश्रमे रम्ये पितुः पार्श्वे समाहितः। वेदाध्ययनसम्पन्नः सर्वशास्त्रविशारदः।३८
जनकस्य दशां दृष्ट्वा राज्यस्थस्य महात्मनः। सनिर्वृतिंपरांप्राप्यपितुराश्रमसंस्थितः।३९
पितॄणां सुभगा कन्या पीवरी नाम सुन्दरी। शुकश्चकार पत्नीं तां योगमार्गस्थितोऽपि हि।४०
स तस्यां जनयामास पुत्रांश्चतुर एव हि। कृष्णं गौरप्रभं चैव भूरिं देवश्रुतं तथा।४१
कन्यां कीर्तिं समुत्पाद्यव्यासपुत्रःप्रतापवान्। ददौ विभ्राजपुत्रायत्वणुहायमंहात्मने।४२

अणुहस्य सुतः श्रीमान्ब्रह्मदत्तः प्रतापवान् । ब्रह्मज्ञः पृथिवीपालः शुककन्यासमुद्भवः । ४३
कालेन कियता तस्य नारदस्योपदेशतः । ज्ञानं परमकं प्राप्य योगमार्गमनुत्तमम् । ४४
पुत्रे राज्यं निधायाथ गतोबदरिकाश्रमम् । मायाबीजोपदेशेन तस्यज्ञानं निरर्गलम् । ४५
नारदस्य प्रसादेन जातं सद्यो विमुक्तिदम् । कैलासशिखरेरम्ये त्यक्त्वासङ्गंपितुःशुकः । ४६
ध्यानमास्थाय विपुलंस्थितः सङ्गपराङ्मुखः । उत्पपातगिरेःशृङ्गात्सिद्धिंचपरमांगतः । ४७
आकाशगो महातेजा विरराज यथा रविः । गिरेः शृङ्गंद्विधाजातंशुकस्योत्पतनेतदा । ४८
उत्पाताबहवोजाताःशुकश्चाकाशगोऽभवत् । अन्तरिक्षेयथावायुःस्तूयमानःसुरर्षिभिः । ४९
तेजसाऽतिविराजन्वैद्वितीयइवभास्करः । व्यासस्तुविरहाक्रान्तःक्रन्दन्पुत्रेतिचासकृत् । ५०
गिरेः शृङ्गेगतस्तत्रशुकोयत्रस्थितोऽभवत् । क्रन्दमानंतदादीनंव्यासंमत्वाश्रमाकुलम् । ५१
सर्वभूतगतः साक्षी प्रतिशब्दमदात्तदा । तत्राद्यापि गिरेः शृङ्गे प्रतिशब्दस्फुटोऽभवत् । ५२
रुदन्तं तं समालक्ष्य व्यासंशोकसमन्वितम् । पुत्र पुत्रेति भाषन्तंविरहेण परिप्लुतम् । ५३
शिवस्तत्र समागत्य पाराशर्यमबोधयत् । व्यास शोकं मा कुरुत्वंपुत्रस्तेयोगवित्तमः । ५४
परमांगतिमापन्नो दुर्लभां चकृतात्मभिः । तस्यशोकोनकर्तव्यस्त्वयाऽशोकंविजानता । ५५
कीर्तिस्ते विपुले जाता तेन पुत्रेण चाऽनघ! ।

व्यास उवाच

न शोको याति देवेश! किं करोमि जगत्पते! ॥५६॥
अतृप्ते लोचने मेऽद्य पुत्रदर्शनलालसे ।

महादेव उवाच

छायां द्रक्ष्यसि पुत्रस्य पार्श्वस्थां सुमनोहराम् ॥५७॥
तां वीक्ष्य मुनिशार्दूल! शोकं जहि परन्तप! ।

सूत उवाच

तदा ददर्श व्यासस्तु च्छायां पुत्रस्य सुप्रभाम् ॥५८॥
दत्त्वा वरं हरस्तस्मै तत्रैवाऽन्तरधीयत । अन्तर्हिते महादेवे व्यासः स्वाश्रममभ्यगात् । ५९
शुकस्य विरहेणाऽपि तप्तः परमदुःखितः ॥६०॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे शुकस्य विवाहादिकार्यवर्णनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

* विंशोऽध्यायः *

शुकनिर्गमनोत्तरं व्यासकृत्योपवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

शुकस्य परमां सिद्धिमाप्तवान्देवसत्तमः । किं चकारततोव्यासस्तन्नोब्रूहिसविस्तरम् । १

सूत उवाच

शिष्याव्यासस्ययेऽप्यासन्वेदाभ्यासपरायणाः । आज्ञामादायतेसर्वेगताः पूर्वंमहीतले । २
असितोदेवलश्चैव वैशम्पायन एव च । जैमिनिश्च सुमन्तुश्च गताः सर्वे तपोधनाः । ३
तानेतान्वीक्ष्य पुत्रं च लोकान्तरितमप्युत । व्यासः शोकसमाक्रान्तो गमनायाऽकरोन्मतिम् । ४
सस्मारमनसाव्यासस्तांनिषादसुतांशुभाम् । मातरंजाह्नवीतीरेमुक्तांशोकसमन्विताम् । ५
स्मृत्वा सत्यवतीं व्यासस्त्यक्त्वा तं पर्वतोत्तमम् । आजगाम महातेजा जन्मस्थानं स्वकं मुनिः । ६
द्वीपं प्राप्याथ पप्रच्छ क्व गतासा वरानना । निषादास्तेसमाचख्युर्दत्ताराज्ञेतुकन्यका । ७
दाशराजोऽपिसम्पूज्य व्यासं प्रीतिपुरःसरम् । स्वागतेनाऽभिसत्कृत्य प्रोवाच विहिताञ्जलिः । ८

दाशराज उवाच

अद्य मे सफलं जन्म पावितं नः कुलंमुने। देवानामपि दुर्दर्शं यज्ञातं तव दर्शनम्।९
यदर्थमागतोऽसि त्वंतद्ब्रूहि द्विजसत्तम!। अपिदारा धनं पुत्रास्त्वदायत्तमिदंविभो।१०
सरस्वत्यास्तटे रम्ये चकाराश्रममण्डलम्। व्यासस्तपः समायुक्तस्तत्रैवाससमाहितः।११
सत्यवत्याः सुतौ जातौ शन्तनोरमितद्युतेः। मत्वानौभ्रातरौव्यासःसुखमापवनेस्थितः।१२
चित्राङ्गदः प्रथमजो रूपवाञ्छत्रुतापनः। बभूव नृपतेः पुत्रः सर्वलक्षणसंयुतः।१३
विचित्रवीर्यनामाऽसौ द्वितीयः समजायत। सोऽपिसर्वगुणोपेतः शन्तनोःसुखवर्धनः।१४
गाङ्गेयः प्रथमस्तस्य महावीरोबलाधिकः। तत्रैव तौ सुतौ जातौसत्यवत्यांमहाबलौ।१५
शन्तनुस्तान्सुतान्वीक्ष्यसर्वलक्षणसंस्थितान्। अमंस्ताजय्यमात्मानंदेवादीनांमहामनाः।१६
अथ कालेन कियता शन्तनुः कालपर्ययात्। तत्याजदेहंधर्मात्मादेहीजीर्णमिवाम्बरम्।१७
कालधर्मं गते राज्ञि भीष्मश्चक्रे विधानतः। प्रेतकार्याणिसर्वाणिदानानिविविधानिच।१८
चित्राङ्गदंततोराज्ये स्थापयामास वीर्यवान्। स्वयं न कृतवान्राज्यं तस्माद्देवव्रतोऽभवत्।१९
चित्राङ्गदस्तु वीर्येण प्रमत्तः परदुःखदः। बभूव बलवान्वीरः सत्यवत्यात्मजः शुचिः।२०
अथैकदा महाबाहुः सैन्येनमहता वृतः। प्रचचार वनोद्देशान्पश्यन्वध्यान्मृगान्रुरून्।२१
चित्राङ्गदस्तु गन्धर्वो दृष्ट्वा तं मार्गगं नृपम्। उत्ततारऽन्तिकं भूमेर्विमानवरमास्थितः।२२
तत्राऽभूच्च महद्युद्धं तयोःसदृशवीर्ययोः। कुरुक्षेत्रे महास्थाने त्रीणि वर्षाणि तापसाः।२३
इन्द्रलोकमवापाशु गन्धर्वेण हतो रणे। भीष्मः श्रुत्वा चकाराशु तस्यौर्ध्वदेहिकंतदा।२४
गाङ्गेयः कृतशोकस्तु मन्त्रिभिः परिवारितः। विचित्रवीर्यनामानं राज्येशंच चकारह।२५
मन्त्रिभिर्बोधितापश्चाद्गुरुभिश्च महात्मभिः। स्वपुत्रं राज्यगं दृष्ट्वा पुत्रशोकहताऽपि च।२६
सत्यवत्यतिसंतुष्टा बभूव वरवर्णिनी। व्यासोऽपि भ्रातरंश्रुत्वाराजानंमुदितोऽभवत्।२७
यौवनं परमं प्राप्तःसत्यवत्याःसुतःशुभः। चकारचिन्ताभीष्मोऽपिविवाहार्थकनीयसः।२८
काशिराजसुतास्तिस्रः सर्वलक्षणसंयुताः। तेनराज्ञा विवाहार्थं स्थापिताश्चस्वयंवरे।२९
राजानो राजपुत्राश्च समाहूताः सहस्रशः। इच्छास्वयम्वरार्थंवैपूज्यमानाःसमागताः।३०
तत्र भीष्मो महातेजास्ता जहार बलेन वै। निर्मथ्य राजकं सर्वं रथेनैकेन वीर्यवान्।३१
स जित्वापार्थिवान्सर्वांस्ताश्चादाय महारथः। बाहुवीर्येण तेजस्वी ह्याससाद गजाह्वयम्।३२
मातृवद्भगिनीवच्च पुत्रीवच्चिंतयन्किल। तिस्रः समानयामास कन्यका वामलोचनाः।३३
सत्यवत्यै निवेद्याशु द्विजानाहूय सत्वरः। दैवज्ञान्वेदविदुषः पर्यपृच्छच्छुभं दिनम्।३४
कृत्वा विवाहसम्भारं यथावै भ्रातरं निजम्। विचित्रवीर्यंधर्मिष्ठंविवाहयतिता यदा।३५
तदाज्येष्ठाऽभ्युवाचेदंकन्यका जाह्नवीसुतम्। लज्जमानाऽसितापाङ्गी तिसृणाञ्चारुलोचना।३६
गङ्गापुत्र! कुरुश्रेष्ठ! धर्मज्ञ! कुलदीपक!। मया स्वयम्बरे शाल्वो वृतोऽतिमनसा नृपः।३७
वृताऽहंतेनराज्ञावै चित्ते प्रेमसमाकुले। यथायोग्यं कुरुष्वाऽद्य कुलस्याऽस्य परन्तप!।३८
तेनाहंवृतपूर्वाऽस्मि त्वं च धर्मभृतां वरः। बलवानसि गाङ्गेय! यथेच्छसि तथाकुरु।३९

सूत उवाच

एवमुक्तस्तया तत्र कन्यया कुरुनन्दनः। अपृच्छद्ब्राह्मणान्वृद्धान्मातरं सचिवांस्तथा।४०
सर्वेषां मतमाज्ञाय गाङ्गेयो धर्मवित्तमः। गच्छेति कन्यकाम्प्राह यथारुचि वरानने!।४१
विसर्जिताऽथसातेन गताशाल्वनिकेतनम्। उवाच तं वरारोहा राजानंमनसेप्सितम्।४२
विनिर्मुक्तास्मिभीष्मेणत्वन्मनस्केतिधर्मतः। आगताऽस्मिमहाराज!गृहाणाऽद्यकरंमम।४३

धर्मपत्नी तवाऽत्यन्तं भवामिनृपसत्तम। चिन्तितोऽसि मयापूर्वं त्वयाऽहंनात्रसंशयः।४४

शाल्व उवाच

गृहीता त्वं वरारोहे भीष्मेण पश्यतो मम। रथे संस्थापिता तेन न ग्रहीष्येकरं तव।४५

परोच्छिष्टाञ्वकःकन्यांगृह्णातिमतिमान्नरः। अतोऽहंनग्रहीष्यामित्यक्तांभीष्मेणमातृवत्।४६

रुदती विलपन्ती सा त्यक्तातेन महात्मना। पुनर्भीष्मं समागत्य रुदती चेदमब्रवीत्।४७

शाल्वोमुक्तांत्वयावीर!नगृह्णातिगृहाणमाम्। धर्मज्ञोसिमहाभाग! मरिष्याम्यन्यथाह्यहम्।४८

भीष्म उवाच

अन्यचित्तांकथन्त्वांवैगृह्णामि वरवर्णिनि!। पितरं स्वं वरारोहे व्रजशीघ्रंनिराकुला।४९

तथोक्ता सा तु भीष्मेण जगाम वनमेव हि। तपश्चकार विजने तीर्थे परमपावने।५०

द्वे भार्येचातिरूपाढ्येतस्य राज्ञो बभूवतुः। अम्बालिकाचाम्बिकाचकाशिराजसुतेशुभे।५१

राजा विचित्रवीर्योऽसौ ताभ्यां सह महाबलः। रेमेनानाविहारैश्च गृहेचोपवने तथा।५२

वर्षाणिनवराजेन्द्रःकुर्वन्क्रीडांमनोरमाम्। प्रापासौ मरणं भूयो गृहीतोराजयक्ष्मणा।५३

मृते पुत्रेऽतिदुःखार्ताजातासत्यवतीतदा। कारयामास पुत्रस्यप्रेतकार्याणिमन्त्रिभिः।५४

भीष्ममाहतदैकान्ते वचनञ्चातिदुःखिता। राज्यं कुरु महाभाग पितुस्तेशन्तनोःसुत।५५

भ्रातुर्भार्यांगृहाणत्वं वंशञ्च परिरक्षय। यथा न नाशमायाति ययातेर्वंश इत्युत।५६

प्रतिज्ञा मे श्रुता मातःपित्रर्थे या मयाकृता। नाहंराज्यंकरिष्यामि नचाहंदारसंग्रहम्।५७

सूत उवाच

तदा चिन्तातुराजाता कथंवंशो भवेदिति। नालसाद्धिसुखं मह्यं समुत्पन्ने ह्यराजके।५८

गाङ्गेयस्तामुवाचेदं मां चिन्तांकुरु भामिनि। पुत्रं विचित्रवीर्यस्य क्षेत्रजञ्चोपपादय।५९

कुलीनन्द्विजमाहूय बध्वासह नियोजय। नात्रदोषोऽस्ति वेदेऽपिकुलरक्षाविधौकिल।६०

पौत्रञ्चैवं समुत्पाद्य राज्यन्देहि शुचिस्मिते। अहंचपालयिष्यामि तस्य शासनमेवहि।६१

तच्छ्रुत्वा वचनंतस्य कानीनं स्वसुतंमुनिम्। जगाममनसाव्यासं द्वैपायनमकल्मषम्।६२

स्मृतमात्रस्ततो व्यास आजगाम स तापसः। कृत्वा प्रमाणं मात्रेऽथ संस्थितो दीप्तिमान्मुनिः।६३

भीष्मेण पूजितःकामंसत्यवत्याचमानितः। तस्थौतत्रमहातेजा विधूमोऽग्निरिवापरः।६४

तमुवाच मुनिं माता पुत्रमुत्पादयाधुना। क्षेत्रे विचित्रवीर्यस्य सुन्दरंतव वीर्यजम्।६५

व्यासःश्रुत्वावचोमातुराप्तवाक्यममन्यत। ओमित्युक्त्वास्थितस्तत्रऋतुकालमचिन्तयत्।६६

अम्बिका च यदास्नाता नारीऋतुमतीतदा। सङ्गंप्राप्यमुनेः पुत्रमसूताऽन्धं महाबलम्।६७

जन्मान्धञ्च सुतं वीक्ष्य दुःखितासत्यवत्यपि। द्वितीयाञ्चवधूमाह पुत्रमुत्पादयाशु वै।६८

ऋतुकालेऽथसम्प्राप्तेव्यासेनसहसङ्गता। तथाचाऽम्बालिकारात्रौ गर्भन्नारीदधारसा।६९

सोऽपि पाण्डुः सुतो जातो राज्ययोग्यो न सम्मतः।
पुत्रार्थे प्रेरयामास वर्षान्ते च पुनर्वधूम् ॥७०॥

आहूय च ततो व्याससम्प्रार्थ्यमुनिसत्तमम्। प्रेषयामासरात्रौसा शयनागारमुत्तमम्।७१

न गता च वधूस्तत्रप्रेष्यासम्प्रेषितातया। तस्याञ्च विदुरोजातोदास्यांधर्मांशतःशुभः।७२

एवं व्यासेन ते पुत्राधृतराष्ट्रादयस्त्रयः। उत्पादिता महावीरवंशरक्षणहेतवे।७३

एतद्वःसर्वमाख्यातं तस्य वंशसमुद्भवम्। व्यासेन रक्षितोवंशो भ्रातृधर्मविदाऽनघाः।७४

वेदाष्टेन्दुक्षितिमितैः११८४सार्धैःश्लोकैःसविस्तरम्। देवीभागवतस्यास्यप्रथमस्कन्धईरितः

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां प्रथमस्कन्धे धृतराष्ट्रादीनामुत्पत्तिवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः॥२०॥

॥श्रीगणेशाय नमः॥

श्रीमन्महामुनिवेदव्यासविरचितम्

देवीभागवत पुराणम्

द्वितीयं स्कन्धम्

* प्रथमोऽध्यायः *

सत्यवतीव्यासयोश्चरित्रवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

आश्चर्यङ्करमेतत्ते वचनं गर्भहेतुकम्। सन्देहोऽत्र समुत्पन्नः सर्वेषां नस्तपस्विनाम्। १
माता व्यासस्यमेधाविन्नाम्नासत्यतीतिच। विवाहितापुराज्ञाताराज्ञाशन्तनुनायथा। २
तस्याःपुत्रः कथं व्यासःसतीस्वभवनेस्थिता। ईदृशीसा कथं राज्ञा पुनःशन्तनुनावृता। ३
तस्यां पुत्रावुभौ जातौ तत्त्वं कथय सुव्रत। विस्तरेण महाभाग कथांपरमपावनीम्। ४
उत्पत्तिं वेदव्यासस्य सत्यवत्यास्तथा पुनः। श्रोतुकामाः पुनःसर्वेऋषयःसंशितव्रताः। ५

सूत उवाच

प्रणम्य परमांशक्तिंचतुर्वर्गप्रदायिनीम्। आदिशक्तिंवदिष्यामिकथांपौराणिकीं शुभाम्। ६
यस्योच्चारणमात्रेण सिद्धिर्भवतिशाश्वती। व्याजेनापिहिबीजस्य वाग्भवस्यविशेषतः। ७
सम्यक्सर्वात्मना सर्वैः सर्वकामार्थसिद्धये। स्मर्तव्या सर्वथा देवी वाञ्छितार्थप्रदायिनी। ८
राजोपरिचरो नाम धार्मिकः सत्यसङ्गरः। चेदिदेशपतिःश्रीमान्बभूव द्विजपूजकः। ९
तपसा तस्य तुष्टेन विमानं स्फाटिकं शुभम्। दत्तमिन्द्रेणतत्तस्मैसुन्दरंप्रियकाम्यया ।१०
तेनारूढस्तु सर्वत्र याति दिव्येन भूपतिः। न भूमावुपरिस्थोऽसौ तेनोपरिचरो वसुः।११
विख्यातः सर्वलोकेषु धर्मनित्यःस भूपतिः। तस्यभार्यावरारोहागिरिकानामसुन्दरी ।१२
पुत्राश्चास्य महावीर्या पञ्चासन्नमितौजसः। पृथग्देशेषुराजानः स्थापितास्तेनभूभुजा। १३
वसोस्तुपत्नीगिरिकाकामान्काले न्यवेदयत्। ऋतुकालमनुप्राप्तास्नातापुंसवनेशुचिः ।१४
तदहः पितरश्चैनमूचुर्जहि मृगानिति। तच्छ्रुत्वा चिन्तयामास भार्यामृतुमतीं तथा। १५
पितृवाक्यंगुरुंमत्वाकर्तव्यमितिनिश्चितम् ।चचार मृगयांराजागिरिकांमनसास्मरन्। १६
वनेस्थितःसराजर्षिश्चित्तेसस्मार भामिनीम्। अतीव रूपसम्पन्नां साक्षाच्छ्रियमिवापराम्। १७
तस्य रेतः प्रचस्कन्द स्मरतस्तांचकामिनीम्। वटपत्रेतुतद्राजास्कन्नमात्रंसमाक्षिपत् ।१८
इदं वृथा परिस्कन्नं रेतो वै न भवेत्कथम्। ऋतुकालञ्च विज्ञाय मतिंचक्रे नृपस्तदा।१९
अमोघंसर्वथा वीर्यं मम चैतन्न संशयः। प्रियायै प्रेषयाम्येतदिति बुद्धिमकल्पयत्।२०
शुक्रप्रस्थापने कालं महिष्याः प्रसमीक्ष्य सः। अभिमन्त्र्याऽथतद्वीर्यं वटपर्णपुटेकृतम्।२१
पार्श्वस्थंश्येनमाभाष्य राजोवाचद्विजम्प्रति। गृहाणेदं महाभाग गच्छ शीघ्रं गृहं मम।२२
मत्प्रियार्थमिदं सौम्य गृहीत्वा त्वं गृहंनय। गिरिकायैप्रयच्छाशुतस्यास्त्वार्तवमद्यवै ।२३
इत्युक्त्वा प्रददौपर्णं श्येनाय नृपसत्तमः। स गृहीत्वोत्पपाताशु गगनं गतिवित्तमः।२४
गच्छन्तं गगनंश्येनं धृत्वा चञ्चुपुटेपुटम्। तमपश्यदथायान्तं खगं श्येनस्तथाऽपरः।२५
आमिषं स तु विज्ञाय शीघ्रमभ्यद्रवत्खगम्। तुण्डयुद्धमथाकाशे तावुभौ सम्प्रचक्रतुः।२६

युद्ध्यतोरपद्रेतस्तच्चापि यमुनाम्भसि। खगौ तौ निर्गतौ कामं पुटके पतिते तदा।२७
एतस्मिन्समयेकाचिदद्रिकानाम चाप्सराः। ब्राह्मणंसमनुप्राप्तं सन्ध्यावन्दनतत्परम्।२८
कुर्वन्ती जलकेलिंसा जलेमग्ना चचारसा। जग्राह चरणं नारी द्विजस्य वरवर्णिनी।२९
प्राणायामपरःसोऽथदृष्ट्वातांकामचारिणीम्। शशापभवमत्सीत्वंध्यानविघ्नकरीयतः।३०
सा शप्ता विप्रमुख्येन बभूव यमुनाचरी। शफरी रूपसम्पन्ना ह्यद्रिकाच वराप्सराः।३१
श्येनपादपरिभ्रष्टंतच्छुक्रमथवासवी। जग्राह तरसाऽभ्येत्य साऽद्रिकामत्स्यरूपिणी।३२
अथकालेनकियतामत्सींतांमत्स्यजीवनः। सम्प्राप्ते दशमे मासि बबन्धतांमनोरमाम्।३३
उदरंविददाराशु स तस्या मत्स्यजीवनः। युग्मंविनिःसृतंतस्मादुदरान्मानुषाकृतिः।३४
बालः कुमारःसुभगस्तथाकन्याशुभामना। दृष्ट्वाऽऽश्चर्यमिदं सोऽथ विस्मयंपरमङ्गतः।३५
राज्ञे निवेदयामास पुत्रौ द्वौतु झषोद्भवौ। राजाऽपिविस्मयाविष्टःसुतंजग्राहतं शुभम्।३६
स मत्स्योनामराजाऽसौधार्मिकःसत्यसंगरः। वसुपुत्रोमहातेजाःपित्रातुल्यपराक्रमः।३७
कालिकावसुनादत्तातरसाजलजीविने। नाम्नाकालीतिविख्याताथामत्स्योदरीतिच।३८
मत्स्यगन्धेति नाम्नावै गुणेन समजायत। विवर्धमानादासस्यगृहे सा वासवी शुभा।३९

ऋषय ऊचुः

अद्रिकामुनिनाशप्तामत्सीजाता वराप्सराः। विदारिताचदाशेनमृताचभक्षितापुनः।४०
किं बभूवपुनस्तस्या अप्सरायावदस्व तत्। शापस्यान्तं कथं सूत कथं स्वर्गमवापसा।४१

सूत उवाच

शप्तायदासा मुनिना विस्मिता सम्बभूवह। स्तुतिं चकार विप्रस्य दीनेव रुदतीतदा।४२
दयावान्ब्राह्मणःप्राहतांतदारुदतींस्त्रियम्। मा शोकंकुरुकल्याणिशापान्तंतेवदाम्यहम्।४३
मत्क्रोधशापभोगेनमत्स्ययोनिंगताशुभे। मानुषौजनयित्वात्वं शापमोक्षमवाप्स्यसि।४४
इत्युक्तातेनसाप्रापमत्स्यदेहं नदीजले। बालकौ जनयित्वा सा मृतामुक्ताचशापतः।४५
सन्त्यज्यरूपं मत्स्यस्य दिव्यंरूपमवाप्य च। जगामामरमार्गञ्चशापान्ते वरवर्णिनी।४६
एवं जातावरापुत्री मत्स्यगन्धा वरानना। पुत्रीव पाल्यमाना सा दाशगेहे व्यवर्धत।४७
मत्स्यगन्धातदाजाताकिशोरीचातिसुप्रभा। तस्य कार्याणि कुर्वाणा वासवी चाऽतिसुप्रभा।४८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीयस्कन्धे मत्स्यगन्धोत्पत्तिर्नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

* द्वितीयोऽध्यायः *

पराशरमुनिचरित्रवर्णनम्

सूत उवाच

एकदा तीर्थयात्रायां व्रजन्पाराशरोमुनिः। आजगाममहातेजाः कालिन्द्यास्तटमुत्तमम्।१
निषादमाह धर्मात्मा कुर्वन्तं भोजनं तदा। प्रापयस्व परं पारं कालिन्द्याउडुपेनमाम्।२
दाशःश्रुत्वामुनेर्वाक्यंकुर्वाणोभोजनंतटे। उवाचतांसुतांबालां मत्स्यगन्धांमनोरमाम्।३
उडुपेन मुनिं बाले परं पारं नयस्वह। गन्तुकामोऽस्तिधर्मात्मातापसोऽयंशुचिस्मिते।४
इत्युक्तासातदापित्रामत्स्यगन्धाऽथवासवी। उडुपेमुनिमासीनं सम्वाहयतिभामिनी।५
व्रजन्सूर्यसुतातोये भावित्वाद्दैवयोगतः। कामार्तस्तुमुनिर्जातो दृष्ट्वातां चारुलोचनाम्।६
ग्रहीतुकामःसमुनिर्दृष्ट्वा व्यञ्जितयौवनाम्। दक्षिणेन करेणैनामस्पृशद्दक्षिणे करे।७

तमुवाचाऽसितापाङ्गीं स्मितपूर्वमिदंवचः। कुलस्यसदृशं वः किं श्रुतस्यतपसश्चकिम्। ८
त्वं वै वसिष्ठदायादःकुलशीलसमन्वितः। किं चिकीर्षसि धर्मज्ञ मन्मथेन प्रपीडितः। ९
दुर्लभंमानुषं जन्म भुवि ब्राह्मणसत्तम!। तत्राऽपि दुर्लभं मन्ये ब्राह्मणत्वं विशेषतः। १०
कुलेन शीलेन तथा श्रुतेन द्विजोत्तमस्त्वं किल धर्मविच्च।
अनार्यभावं कथमागतोऽसि विप्रेन्द्र! मां वीक्ष्य च मीनगन्धाम्। ११
मदीये शरीरे द्विजामोघबुद्धे शुभं किं समालोक्य पाणिं ग्रहीतुम्।
समीपं समायासि कामातुरस्त्वं कथं नाऽभिजानासि धर्मं स्वकीयम्। १२
अहो मन्दबुद्धिर्द्विजोऽयं ग्रहीष्यञ्जले मग्न एवाद्य मां वै गृहीत्वा।
मनो व्याकुलम्पञ्चबाणाऽतिविद्धं न कोऽपीह शक्तः प्रतीपंहि कर्तुम्। १३
इतिसञ्चिन्त्यसा बालातमुवाच महामुनिम्। धैर्यं कुरु महाभाग परम्पारं नयामि वै। १४
पराशरस्तुतच्छ्रुत्वा वचनं हितपूर्वकम्। करं त्यक्त्वा स्थितस्तत्रसिन्धोःपारंगतःपुनः। १५
मत्स्यगन्धाम्प्रजग्राह मुनिः कामातुरस्तदा। वेपमाना तु सा कन्या तमुवाच पुरःस्थितम्। १६
दुर्गन्धाऽहं मुनिश्रेष्ठ कथं त्वं नोपशंकसे। समानरूपयोः कामसंयोगस्तु सुखावहः। १७
इत्युक्तेन तु सा कन्याक्षणमात्रेणभामिनी। कृता योजनगन्धा तु सुरूपाचवरानना। १८
मृगनाभिसुगन्धां तांकृत्वाकान्तांमनोहराम्। जग्राहदक्षिणेपाणौमुनिर्मन्मथपीडितः। १९
ग्रहीतुकामन्तंप्राह नाम्ना सत्यवतीशुभा। मुने पश्यति लोकोऽयंपिताचैव तटस्थितः। २०
पशुधर्मो न मे प्रीतिं जनयत्यतिदारुणः। प्रतीक्षस्व मुनिश्रेष्ठ! यावद्भवति यामिनी। २१
रात्रौव्यवाय उद्दिष्टोदिवानमनुजस्यहि। दिवा संगे महान्दोषःपश्यन्तिकिलमानवाः। २२
कामंयच्छमहाबुद्धे लोकनिन्दादुरासदा। तच्छ्रुत्वा वचनन्तस्या युक्तमुक्तमुदारधीः। २३
नीहारंकल्पयामास शीघ्रंपुण्यबलेन वै। नीहारे च समुत्पन्ने तटेऽतितमसा युते। २४
कामिनी तं मुनिं प्राह मृदुपूर्वमिदंवचः। कन्याऽहंद्विजशार्दूलभुक्त्वागन्तासिका[illegible]तः। २५
अमोघवीर्यस्त्वं ब्रह्मन्का गतिर्मे भवेदिति। पितरं किं ब्रवीम्यद्य सगर्भाचेद्भवाम्यहम्। २६
त्वङ्गमिष्यसि भुक्त्वा मां किं करोमि वदस्व तत्।

पराशर उवाच

कान्तेऽद्य मत्प्रियं कृत्वा कन्यैव त्वं भविष्यसि ।।२७।।
वृणीष्व च वरं भीरु! यं त्वमिच्छसि भामिनि!।

सत्यवत्युवाच

यथा मे पितरौ लोके न जानीतो हि मानद! ।।२८।।
कन्याव्रतं न मे हन्यात्तथा कुरु द्विजोत्तम!। पुत्रश्च त्वत्समःकामं भवेदद्भुतवीर्यवान्। २९
गन्धोऽयं सर्वदा मे स्याद्यौवनञ्च नवं नवम्।

पराशर उवाच

शृणु सुन्दरि ! पुत्रस्ते विष्णवंशसम्भवः शुचिः ।।३०।।
भविष्यतिचविख्यातस्त्रैलोक्येवरवर्णिनि । केनचित्कारणेनाहं जातःकामातुरस्त्वयि। ३१
कदाऽपि च न संमोहो भूतपूर्वोवरानने। दृष्ट्वा चाप्सरसां रूपं सदाऽहं धैर्यमावहम्। ३२
दैवयोगेनवीक्ष्यत्वांकामस्यवशगोऽभवम् । तत्किञ्चित्कारणंविद्धिनैवंहिदुरतिक्रमम्। ३३
दृष्ट्वाऽहं चातिदुर्गन्धांत्वांकथं मोहमाप्नुयाम्। पुराणकर्ता पुत्रस्ते भविष्यति वरानने!। ३४
वेदविद्भागकर्ता च ख्यातश्च भुवनत्रये ।

सूत उवाच

इत्युक्त्वा [illegible] [illegible]नां भुक्त्वा स मुनिसत्तमः ।।३५।।

जगामतरसास्नात्वा कालिन्दीसलिलेमुनिः। साऽपिसत्यवतीजातासद्योगर्भवतीसती।३६
सुषुवे यमुनाद्वीपे पुत्रं काममिवापरम्। जातमात्रस्तु तेजस्वी तामुवाच स्वमातरम्।३७
तपस्येवमनःकृत्वाविविशेचाऽतिवीर्यवान् । गच्छमातर्यथाकामंगच्छाम्यहमतः परम्।३८
तपःकर्तुंमहाभागे दर्शयिष्यामि वै स्मृतः। मातर्यदा भवेत्कार्यं तव किञ्चिदनुत्तमम्।३९

स्मर्तव्योऽहं तदा शीघ्रमागमिष्यामि भामिनि! ।
स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि त्यक्त्वा चिन्तां सुखं वस ।।४०।।
इत्युक्त्वा निर्ययौ व्यासः साऽपि पित्रन्तिकं गता ।
द्वीपे न्यस्तस्तया बालस्तस्माद् द्वैपायनोऽभवत् ।।४१।।

जातमात्रो जगामाशु वृद्धिं विष्ण्वंशयोगतः। तीर्थे तीर्थे कृतस्नानश्चचारतप उत्तमम्।४२
एवं द्वैपायनो जज्ञे सत्यवत्यां पराशरात्। चकारवेदशाखाश्च प्राप्तंज्ञात्वा कलेर्युगम्।४३
वेदविस्तारकरणाद्व्यासनामाऽभवन्मुनिः । पुराणसंहिताश्चक्रे महाभारतमुत्तमम्।४४
शिष्यानध्यापयामास वेदान्कृत्वाविभागशः। सुमन्तुं जैमिनिं पैलं वैशम्पायनमेवच।४५

असितं देवलञ्चैव शुकञ्चैव स्वमात्मजम् ।
एतच्च कथितं सर्वं कारणं मुनिसत्तमाः ।।४६।।
सत्यवत्याःसुतस्याऽपि समुत्पत्तिस्तथा शुभा ।
संशयोऽत्र न कर्तव्यः सम्भवे मुनिसत्तमाः ।।४७।।

महतां चरिते चैव गुणा ग्राह्यामुनेरिति। कारणाच्च समुत्पत्तिः सत्यवत्याझषोदरे।४८
पराशरेण संयोगः पुनः शन्तनुना तथा। अन्यथा तु मुनेश्चित्तं कथं कामाकुलं भवेत्।४९
अनार्यजुष्टं धर्मज्ञः कृतवान्स कथंमुनिः। सकारणेयमुत्पत्तिः कथिताऽऽश्चर्यकारिणी।५०
श्रुत्वा पापाच्च निर्मुक्तो नरो भवति सर्वथा। यएतच्छुभमाख्यानंशृणोतिश्रुतिमान्नरः।५१
न दुर्गतिमवाप्नोति सुखी भवति सर्वदा।।५२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे व्यासजन्मवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः।।२।।

* तृतीयोऽध्यायः *

ऋषीणां शन्तनुचरित्रविषयेप्रश्नेकृते सूतेनमहाभिषराज्ञश्चरित्रवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

उत्पत्तिस्तु त्वया प्रोक्ता व्यासस्यामिततेजसः। सत्यवत्यास्तथा सूत! विस्तरेण त्वयाऽनघ।१
तथाऽप्येकस्तु संदेहश्चित्तेऽस्माकं सुसंस्थितः। ननिवर्ततिधर्मज्ञकथितेनत्वयाऽनघ ।२
माता व्यासस्ययाप्रोक्तानाम्नासत्यवतीशुभा। साकथंनृपतिंप्राप्ताशन्तनुंधर्मवित्तमम् ।३
निषादपुत्रीं स कथंवृतवान्नृपतिःस्वयम्। धर्मिष्ठः पौरवो राजा कुलहीनामसंवृताम्।४
शन्तनोः प्रथमा पत्नी का ह्यभूत्कथयाधुना। भीष्मःपुत्रोऽथमेधावीवसोरंशःकथंपुनः।५
त्वया प्रोक्तं पुरा सूतराजाचित्राङ्गदःकृतः। सत्यवत्याः सुतोवीरोभीष्मेणामिततेजसा।६
चित्राङ्गदेहते वीरे कृतस्तदनुजस्तथा। विचित्रवीर्यनामाऽसौ सत्यवत्याः सुतो नृपः।७
ज्येष्ठे भीष्मे स्थितेपूर्वं धर्मिष्ठेरूपवत्यपि। कृतवान्सकथंराज्यंस्थापितस्तेनजानता।८
मृते विचित्रवीर्ये तु सत्यवत्यतिदुःखिता। वधूभ्यांगोलकौपुत्रौजनयामाससाकथम्।९
कथं राज्यं न भीष्माय ददौ सा वरवर्णिनी। न कृतस्तु कथं तेन वीरेण दारसंग्रहः।१०
अधर्मस्तु कृतःकस्माद् व्यासेनाऽमिततेजसा। ज्येष्ठेन भ्रातृभार्यायां पुत्रावुत्पादिताविति।११

पुराणकर्ता धर्मात्मा स कथं कृतवान्मुनिः। सेवनंपरदाराणां भ्रातुश्चैव विशेषतः।१२
जुगुप्सितमिदं कर्म स कथं कृतवान्मुनिः। शिष्टाचारः कथं सूत वेदानुमितिकारकः।१३
व्यासशिष्योऽसिमेधाविन्सन्देहं छेत्तुमर्हसि। श्रोतुकामा वयं सर्वेधर्मक्षेत्रेकृतक्षणाः।१४

सूत उवाच

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो महाभिष इति स्मृतः। सत्यवान्धर्मशीलश्च चक्रवर्ती नृपोत्तमः।१५
अश्वमेधसहस्रेण वाजपेयशतेन च। तोषयामास देवेन्द्रं स्वर्गं प्राप महामतिः।१६
एकदा ब्रह्मसदनं गतो राजा महाभिषः। सुराः सर्वे समाजग्मुः सेवनार्थं प्रजापतिम्।१७
गङ्गा महानदी तत्र संस्थिता सेवितुं विभुम्। तस्यावासःसमुद्धूतंमारुतेनतरस्विना।१८
अधोमुखाः सुराः सर्वे नविलोक्यैवतां स्थिताः।
राजा महाभिषस्तां तु निःशङ्कः समपश्यत ॥१९॥
साऽपि तं प्रेमसंयुक्तं नृपं ज्ञातवती नदी। दृष्ट्वा तौ प्रेमसंयुक्तो निर्लज्जौकाममोहितौ।२०
ब्रह्मा चुकोप तौ तूर्णं शशाप च रुषान्वितः। मर्त्यलोकेषुभूपालजन्म प्राप्य पुनर्दिवम्।२१
पुण्येन महताऽऽविष्टस्त्वमवाप्स्यसि सर्वथा। गङ्गां तथोक्तवान्ब्रह्मावीक्ष्यप्रेमवतींनृपे।२२
विमनस्कौ तु तौ तूर्णं निःसृतौ ब्रह्मणोऽन्तिकात्।
स नृपश्चिन्तयित्वाऽथ भूलोके धर्मतत्परान् ॥२३॥
प्रतीपं चिन्तयामास पितरं पुरुवंशजम्। एतस्मिन्समयेचाष्टौ वसवः स्त्रीसमन्विताः।२४
वसिष्ठस्याऽऽश्रमं प्राप्तारममाणायदृच्छया। पृथ्वादीनांवसूनांचमध्येकोऽपिवसूत्तमः ।२५
द्यौर्नामा तस्य भार्याऽथ नन्दिनीं गां ददर्शह। दृष्ट्वा पतिंसा प्रपच्छकस्येयंधेनुरुत्तमा।२६
द्यौस्तामाह वसिष्ठस्य गोरियंशृणुसुन्दरि। दुग्धमस्याःपिबेद्यस्तुनारीवापुरुषोऽथवा।२७
अयुतायुर्भवेन्नूनं सदैवाऽगतयौवनः। तच्छ्रुत्वा सुन्दरी प्राह मृत्युलोकेऽस्तिमेसखी।२८
उशीनरस्य राजर्षेः पुत्री परमशोभना। तस्याहेतोर्महाभाग सवत्सां गां पयस्विनीम्।२९
आनयस्वाऽऽश्रमश्रेष्ठं नन्दिनीं कामदां शुभाम्।
यावदस्याः पयः पीत्वा सखी मम सदैव हि ॥३०॥
मानुषेषु भवेदेका जरारोगविवर्जिता। तच्छ्रुत्वा वचनं तस्या द्यौर्जहारचनन्दिनीम्।३१
अवमन्य मुनिं दान्तं पृथ्वाद्यैःसहितोऽनघः। हृतायामथनन्दिन्यांवसिष्ठस्तुमहातपाः।३२
आजगामाऽऽश्रमपदं फलान्यादाय सत्वरः। नापश्यतयदाधेनुंसवत्सांस्वाश्रमे मुनिः।३३
मृगयामास तेजस्वी गह्वरेषु वनेष्वपि। नासादिता यदा धेनुश्चुकोपाऽतिशयंमुनिः।३४
वारुणिश्चापि विज्ञायध्यानेन वसुभिर्हृताम्। वसुभिर्मे हृताधेनुर्यस्मान्मामवमन्यवै।३५
तस्मात्सर्वे जनिष्यन्ति मानुषेषु न संशयः। एवं शशाप धर्मात्मा वसूंस्तान्वारुणिः स्वयम्।३६
श्रुत्वा विमनसः सर्वे प्रययुर्दुःखिताश्चते। शप्ताः स्म इति जानन्तं ऋषिंतमुपचक्रमुः।३७
प्रसादयन्तस्तमृषिं वसवः शरणंगताः। मुनिस्तानाहधर्मात्मावसून्दीनान्पुरःस्थितान्।३८
अनुसम्वत्सरं सर्वे शापमोक्षमवाप्स्यथ। येनेयं विहृता धेनुर्नन्दिनी मम वत्सला।३९
तस्माद्द्यौर्मानुषे देहे दीर्घकालं वसिष्यति। तेशप्ताःपथिगच्छन्तींगङ्गांदृष्ट्वासरिद्वराम्।४०
ऊचुस्तां प्रणताः सर्वे शप्तां चिन्तातुरां नदीम्।
भविष्यामो वयं देवि कथं देवाः सुधाशनाः ॥४१॥
मानुषाणां च जठरे चिन्तेयं महती हि नः।
तस्मात्त्वंमानुषीभूत्वाजनयास्मान्सरिद्वरे ॥४२॥

शन्तनुर्नाम राजर्षिस्तस्यभार्या भवाऽनघे। जाताञ्जाताञ्जलेचास्मान्निक्षिपस्वसुरापगे।४३
एवंशापविनिर्मोक्षो भवितानात्र संशयः। तथेत्युक्ताश्च ते सर्वे जग्मुर्लोकंस्वकंपुनः।४४
गङ्गाऽपि निर्गता देवी चिन्त्यमानापुनःपुनः। महाभिषोनृपोजातः प्रतीपस्यसुतस्तदा।४५
शन्तनुर्नाम राजर्षिर्धर्मात्मा सत्यसंग्रहः। प्रतीपस्तु स्तुतिं चक्रे सूर्यस्यामिततेजसः।४६
तदा च सलिलात्तस्मान्निःसृता वरवर्णिनी। दक्षिणंशालसंकाशमूरुं भेजे शुभानना।४७
अङ्के स्थितांस्त्रियं चाह मापृष्ट्वाकिंवरानने। ममोरावास्थिताऽसित्वंकिमर्थंदक्षिणेशुभे।४८
सा तमाह वरारोहा यदर्थं राजसत्तम। स्थिताऽस्म्यङ्केकुरुश्रेष्ठकामयानांभजस्वमाम्।४९
तामवोचदथो राजा रूपयौवनशालिनीम्। नाहं परस्त्रियं कामाद्गच्छेयंवरवर्णिनीम्।५०

स्थिता दक्षिणमूरुं मे त्वमाश्लिष्य च भामिनि! ।
अपत्यानां स्नुषाणां च स्थानं विद्धि शुचिस्मिते! ।।५१।।

स्नुषा मे भवकल्याणि जातेपुत्रेऽतिवाञ्छिते। भविष्यतिचमेपुत्रस्तवपुण्यान्नसंशयः ।५२
तथेत्युक्त्वा गता सावैकामिनीदिव्यदर्शना। राजाचापिगृहंप्राप्तश्चिन्तयंस्तांस्त्रियंपुनः।५३
ततः कालेन कियता जातेपुत्रे यशस्विनि। वनं जिगमिषू राजा पुत्रं वृत्तांतमूचिवान्।५४
वृत्तान्तं कथयित्वा तु पुनरूचे निजं सुतम्। यदिप्रयातिसाबालात्वांवनेचारुहासिनी।५५
कामयाना वरारोहातांभजेथामनोरमाम्। न प्रष्टव्यात्वयाकाऽसिमन्नियोगान्नराधिप।५६

धर्मपत्नीं च तां कृत्वा भविता त्वं सुखी किल ।

सूत उवाच

एव संदिश्य तं पुत्रं भूपतिः प्रीतमानसः ।।५७।।

दत्त्वा राज्यश्रियंसर्वां वनंराजाविवेश ह। तत्रापिचतपस्तप्त्वासमाराध्यपराम्बिकाम्।५८
जगाम स्वर्गं राजाऽसौ देहं त्यक्त्वा स्वतेजसा। राज्यं प्राप महातेजाः शन्तनुः सार्वभौमिकम्।५९

प्रजां वै पालयामास धर्मदण्डो महीपतिः।।६०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे प्रतीपसकाशात् शन्तनुजन्मवर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः ।। ३ ।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

गङ्गयासह शन्तनोर्विवाहवर्णनम्

सूत उवाच

प्रतीपेऽथ दिवं यातेशन्तनुःसत्यविक्रमः। बभूवमृगयाशीलो निघ्नन्व्याघ्रान्मृगान्नृपः। १
सकदाचिद्वने घोरे गङ्गातीरे चरन्नृपः। ददर्श मृगशावाक्षीं सुन्दरीं चारुभूषणाम्। २
दृष्ट्वा तां नृपतिर्मग्नः पित्रोक्तेयं वरानना। रूपयौवनसम्पन्ना साक्षाल्लक्ष्मीरिवापरा। ३
पिबन्मुखाम्बुजं तस्या नतृप्तिमगमन्नृपः। हृष्टरोमाऽभवत्तत्र व्याप्तचित्त इवाऽनघ। ४
महाभिषं साऽपि मत्वा प्रेमयुक्ता बभूव ह। किञ्चिन्मन्दस्मितंकृत्वातस्यावग्रेनृपस्यच। ५

वीक्ष्य तामसितापाङ्गीं राजा प्रीतमना भृशम् ।
उवाच मधुरं वाक्यं सान्त्वयञ्छ्लक्ष्णया गिरा ।।६।।

देवीवा त्वंचवामोरुमानुषीवावरानने। गन्धर्वीवाऽथयक्षीवानागकन्याऽप्सराऽपिवा। ७
याऽसि काऽसि वरारोहे भार्या मे भवसुन्दरि। प्रेमयुक्तस्मितैवत्वं धर्मपत्नीभवाद्यमे ।८
राजा तां नाभिजानाति गङ्गेयमितिनिश्चितम्। महाभिषंसमुत्पन्नंनृपंजानातिजाह्नवी ।९

पूर्वप्रेमसमायोगाच्छ्रुत्वावाचंनृपस्यताम् ।उवाच नारी राजानंस्मितपूर्वमिदंवचः।१०

स्त्र्युवाच

जानामि त्वां नृपश्रेष्ठप्रतीपतनयं शुभम्।कानवाञ्छतिचार्वङ्गीभावित्वात्सदृशंपतिम्।११
वाग्बन्धेन नृपश्रेष्ठ चरिष्यामि पतिं किल।शृणु मे समयं राजन्वृणोमित्वांनृपोत्तम।१२
यच्चकुर्यामहं कार्यंशुभंवा यदिवाऽशुभम्।ननिषेध्या त्वयाराजन्नवक्तव्यंतथाऽप्रियम्।१३
यदा च त्वं नृपश्रेष्ठ न करिष्यसि मे वचः।तदा मुक्त्वागमिष्यामियथेष्टंदेशमारिष।१४
स्मृत्वा जन्म वसूनां सा प्रार्थनापूर्वकंहृदि।महाभिषस्यप्रेमाथविचिन्त्यैवचजाह्नवी ।१५
तथेत्युक्ताऽथसा देवी चकारनृपतिं पतिम्।एवं वृता नृपेणाऽथ गङ्गामानुषरूपिणी।१६
नृपस्य मन्दिरं प्राप्ता सुभगावरवर्णिनी।नृपतिस्तां समासाद्य चिक्रीडोपवने शुभे।१७
साऽपितं रमयामास भावज्ञा वै वराङ्गना।न बुबोध नृपः क्रीडन्गतान्वर्षगणानथ।१८
स तयानृगशावाक्ष्याशच्याशतक्रतुर्यथा।सा सर्वगुणसम्पन्नासोऽपिकामविचक्षणः।१९
रेमाते मन्दिरे दिव्ये रमानारायणाविव।एवं गच्छति कालेसा दधार नृपतेस्तदा।२०
गर्भं गङ्गा वसुंपुत्रं सुषुवे चारुलोचना।जातमात्रं सुतं वारि चिक्षेपैवं द्वितीयके।२१
तृतीयेऽथ चतुर्थेऽथ पञ्चमे षष्ठ एव च।सप्तमे वा हते पुत्रे राजा चिन्तापरोऽभवत्।२२
किंकरोम्यद्य वंशोमे कथंस्यात्सुस्थिरो भुवि।सप्तपुत्रा हतानूनमनया पापरूपया।२३
निवारयामियदिमांत्यक्त्वायास्यतिसर्वथा।अष्टमोऽयंसुसम्प्राप्तोगर्भोमेमनसीप्सितः।२४
न वारयामि चेदद्य सर्वथेयं जले क्षिपेत्।भविता वा न वाचाप्रेसंशयोऽयं ममाद्भुतः।२५
सम्भवेऽपि च दुष्टेयं रक्षयेद्वा न रक्षयेत्।क्षयं संशयिते कार्ये किंकर्तव्यंमयाऽधुना।२६
वंशस्य रक्षणार्थं हि यत्नः कार्यः परो मया।ततःकालेयदाजातः पुत्रोऽयमष्टमो वसुः।२७
मुनेर्येन हृताधेनुनन्दिनी स्त्रीजितेन हि।तं दृष्ट्वा नृपतिः पुत्रं तामुवाच पतन्पदे।२८
दासोऽस्मितव तन्वङ्गि प्रार्थयामि शुचिस्मिते।पुत्रमेकंपुषाम्यद्य देहिजीवन्तमद्यमे।२९
हिंसिताः सप्त पुत्रा मे करभोरु त्वयाशुभाः।अष्टमं रक्ष सु[illegible]पतामि तवपादयोः।३०
अन्यद्वै प्रार्थितं तेऽद्य ददाम्यथ च दुर्लभम्।वंशोमे रक्षणीयोऽद्य त्वया परमशोभने।३१
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गे वेदविदो विदुः।तस्मादद्य वरारोहे प्रार्थयाम्यष्टमंसुतम्।३२
इत्युक्ताऽपि गृहीत्वा तं यदा गन्तुं समुत्सुका।तदाऽपि कुपितो राजा तामुवाचातिदुःखिता।३३
पापिष्ठे किंकरोम्यद्यनिरयान्नबिभेषिकिम्।काऽसिपापाकराणांत्वंपुत्रीपापरतासदा।३४
यथेच्छं गच्छ वा तिष्ठ पुत्रो मेस्थीयतामिह।किंकरोमित्वयापापे वंशान्तकरयाऽनया।३५
एवं वदति भूपाले सागृहीत्वा सुतं शिशुम्।गच्छन्ती वचनंकोपसंयुता तमुवाच ह।३६
पुत्राकामा सुतं त्वेनं पालयामि वनेगता।समयोमेगमिष्यामि वचनं ह्यन्यथा कृतम्।३७
गङ्गांमां वै विजानीहि देवकार्यार्थमागताम्।वसवस्तुपुराशप्ता वसिष्ठेनमहात्मना।३८
व्रजन्तुमानुषीं योनिंस्थितांचिन्तातुरास्तुमाम्।दृष्ट्वेदं प्रार्थयामासुर्जननीनोभवानघे।३९
तेभ्यो दत्त्वा वरं जाता पत्नी ते नृपसत्तम।देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थंजानीहिसम्भवोमम।४०
सप्त ते वसवः पुत्रा मुक्ताः शापादृषेस्तुते।कियन्तं कालमेकोऽयंतवपुत्रोभविष्यति।४१
गङ्गादत्तमिमं पुत्रं गृहाण शन्तनोस्वयम्।वसुंदेवं विदित्वानं सुखं भुंक्ष्व सुतोद्भवम्।४२
गाङ्गेयोऽयं महाभाग भविष्यति बलाधिकः।अद्यतत्रनयाम्येनं यत्रत्वं वै मया वृतः।४३
दास्यामि यौवनंप्राप्तं पालयित्वामहीपते।न मातृरहितः पुत्रो जीवेन्नच सुखी भवेत्।४४

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधेगङ्गातंगृहीत्वाचबालकम् ।राजाचातीवदुःखार्तःसंस्थितोनिजमंदिरे ।४५
भार्याविरहजं दुःखं तथा पुत्रस्यचाद्भुतम्।सर्वदाचिन्तयन्नास्ते राज्यं कुर्वन्महीपतिः ।४६
एवं गच्छति कालेऽथ नृपतिर्मृगयाङ्गतः।निघ्नन्मृगगणान्बाणैर्महिषान्सूकरानपि ।४७
गङ्गातीरमनुप्राप्तः स राजा शन्तनुस्तदा।नदीं स्तोकजलां दृष्ट्वाविस्मितःसमहीपतिः ।४८
तत्रापश्यत्कुमारं तंमुञ्चन्तं विशिखान्बहून्।आकृष्यच महाचापंक्रीडन्तंसरितस्तटे।४९
तंवीक्ष्यविस्मितो राजानस्मजानातिकिञ्चन।नोपलेभेस्मृतिंभूपः पुत्रोऽयंममवानवा।५०
दृष्ट्वाऽप्यमानुषं कर्म बाणेषुलघुहस्तताम्।विद्यांवाऽप्रतिमांरूपंतस्यवै स्मरसन्निभम्।५१

पप्रच्छ विस्मितो राजा कस्य पुत्रोऽसि चाऽनघ ।
नोवाच किञ्चिद्वीरोऽसौ मुञ्चञ्छिलीमुखानथ ।।५२।।
अन्तर्धानं गतः सोऽथ राजा चिन्तातुरोऽभवत् ।
कोऽयं मम सुतो बालः किंकरोमि व्रजामि कम् ।।५३।।

गङ्गांतुष्टावभूपालः स्थितस्तत्रसमाहितः।दर्शनं सा ददौचाथ चारुरूपा यथापुरा।५४
दृष्ट्वा तां चारुसर्वाङ्गीं बभाषे नृपतिःस्वयम्।कोऽयंगङ्गेगतोबालो ममत्वंदर्शयाधुना।५५

गङ्गोवाच

पुत्रोऽयंतव राजेन्द्र रक्षितश्चाष्टमे वसुः।ददामि तव हस्ते तु गाङ्गेयोऽयं महातपाः।५६
कीर्तिकर्ताकुलस्यास्यभवितातव सुव्रतः।पाठितस्त्वखिलान्वेदान्धनुर्वेदञ्चशाश्वतम्।५७
वसिष्ठस्याश्रमेदिव्येसंस्थितोऽयं सुतस्तव।सर्वविद्याविधानज्ञः सर्वार्थकुशलःशुचिः।५८
यद्वेद जामदग्न्योवसौ तद्वेदायं सुतस्तव।गृहाण गच्छ राजेन्द्र सुखी भव नराधिप।५९
इत्युक्त्वान्तऽर्दधेगङ्गादत्त्वापुत्रंनृपाय वै।नृपतिस्तुमुदा युक्तो बभूवातिसुखान्वितः।६०
समालिंग्य सुतं राजा समाघ्रायच मस्तकम्।समारोप्यरथेपुत्रं स्वपुरं स प्रचक्रमे।६१
गत्वागजाह्वयं राजा चकारोत्सवमुत्तमम्।दैवज्ञञ्च समाहूय पप्रच्छच शुभंदिनम्।६२
समाहृत्यप्रजाःसर्वाःसचिवान्सर्वशःशुभान् ।यौवराज्येऽथगाङ्गेयंस्थापयासपार्थिवः ।६३
कृत्वातंयुवराजानंपुत्रं सर्वगुणान्वितम्।सुखमास स धर्मात्मानसस्मारचजाह्नवीम्।६४

सूत उवाच

एतद्वःकथितं सर्वं कारणंवसुशापजम्।गाङ्गेयस्य तथोत्पत्तिं जाह्नव्याः सम्भवन्तथा।६५
गङ्गावतरणं पुण्यं वसूनां सम्भवन्तथा।यः शृणोतिनरः पापान्मुच्यते नात्र संशयः।६६
पुण्यंपवित्रमाख्यानं कथितं मुनिसत्तमाः।यथ मयाश्रुतंव्यासात्पुराणंवेदसम्मितम् ।६७
श्रीमद्भागवतं पुण्यं नानाख्यानकथान्वितम्।द्वैपायनमुखोद्भूतं पञ्चलक्षणसंयुतम्।६८
शृण्वतां सर्वपापघ्नं शुभदं सुखदं तथा।इतिहासमिमं पुण्यं कीर्तितं मुनिसत्तमाः।६९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां द्वितीयस्कन्धे देवव्रतोत्पत्तिवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः।।४।।

* पञ्चमोऽध्यायः *

शन्तनोः सत्यवत्यासहविवाहवर्णनम्

ऋषय ऊचुः

वसूनां सम्भवःसूत कथितः शापकारणात्।गाङ्गेयस्य तथोत्पत्तिःकथितालोमहर्षणे।१
माताव्यासस्यधर्मज्ञनाम्ना सत्यवतीसती।कथं शन्तनुना प्राप्ता भार्यागन्धवतीशुभा।२

तन्ममाचक्ष्व विस्तारं दाशपुत्री कथम्वृता। राज्ञाधर्मवरिष्ठेन संशयं छिन्धि सुव्रत। ३

सूत उवाच

शन्तनुर्नाम राजर्षिर्मृगयानिरतः सदा। वनं जगाम निघ्नन्वै मृगाँश्च महिषान्रुरून्। ४
चत्वार्येव तु वर्षाणि पुत्रेण सह भूपतिः। रममाणः सुखं प्राप कुमारेण यथा हरः। ५
एकदा विक्षिपन्बाणान्विनिघ्नन्खड्गसूकरान्। स कदाचिद्वनं प्राप्तः कालिन्दीं सरिताम्वराम्। ६
महीपतिरनिर्देश्यमाजिघ्रद्गन्धमुत्तमम्। तस्य प्रसभमन्विच्छन्सञ्चचर वनन्तदा। ७
न मन्दारस्यगन्धोऽयंमृगनाभिमदस्यन्। चम्पकस्य न मालत्या न केतक्यामनोहरः। ८
कुतोऽयमेति वायुर्वै मम घ्राणविमोहनः ॥९॥
इति सञ्चिन्त्यमानोऽसौ बभ्रामवनमण्डलम्। मोहितोगन्धलोभेनशन्तनुःपवनानुगः। १०
सददर्शनदीतीरेसंस्थितांचारुदर्शनाम्। शृङ्गारसहितांकान्तांसुस्थितांमलिनाम्बराम्। ११
दृष्ट्वातामसितापांगींविस्मितःसमहीपतिः। अस्यादेहस्यगन्धोऽयमितिसञ्जातनिश्चयः। १२

तदद्भुतं रूपमतीव सुन्दरं तथैव गन्धोऽखिललोकसम्मतः।
वयश्चतादृङ् नवयौवनं शुभं दृष्ट्वैव राजा किल विस्मितोऽभवत् ॥१३॥
केयं कुतो वा समुपागताऽधुना देवाङ्गना वा किमु मानुषी वा।
गन्धर्वपुत्री किल नागकन्या जाने कथं गन्धवतीं नु कामिनीम् ॥१४॥
सञ्चिन्त्य चैवं मनसा नृपोऽसौ न निश्चयं प्राप यदा ततः स्वयम्।
गङ्गां स्मरन्कामवशं गतोऽथ पप्रच्छ कान्तां तटसंस्थिताञ्च ॥१५॥
काऽसि प्रिये! कस्य सुताऽसि कस्मादिह स्थिता त्वं विजने वरोरु!।
एकाकिनी किं वद चारुनेत्रे! विवाहिता वा न विवाहिताऽसि ॥१६॥
सञ्जातकामोऽहमरालनेत्रे त्वां वीक्ष्य कान्ताञ्च मनोरमाञ्च।
ब्रूहि प्रिये! याऽसि चिकीर्षसि त्वं किञ्चेति सर्वं मम विस्तरेण ॥१७॥
इत्येवमुक्ता सुदती नृपेण प्रोवाच तं सस्मितमम्बुजेक्षणा।
दासस्य पुत्रीं त्वमवेहि राजन्कन्यां पितुः शासनसंस्थिताञ्च ॥१८॥
तरीमिमां धर्मनिमित्तमेव सम्वाहयामीह जले नृपेन्द्र!।
पिता गृहे मेऽद्य गतोऽस्ति कामं सत्यं ब्रवीम्यर्थपते तवाग्रे ॥१९॥
इत्येवमुक्तवा विरराम बाला कामातुरस्तां नृपतिर्बभाषे।
कुरुप्रवीरं कुरु मां पतिं त्वं वृथा न गच्छेन्ननु यौवनन्ते ॥२०॥
न चाऽस्ति पत्नी मम वै द्वितीया त्वं धर्मपत्नी मम वै मृगाक्षि!।
दासोऽस्मि तेऽहं वशगः सदैव मनोभवस्तापयति प्रिये! माम् ॥२१॥
गताप्रियामांपरिहृत्य कान्तानाऽन्यावृताऽहं विधुरोऽस्मि कान्ते!।
त्वां वीक्ष्य सर्वावयवातिरम्यां मनो हि जातं विवशं मदीयम् ॥२२॥
श्रुत्वाऽमृतास्वादरसं नृपस्य वचोऽतिरम्यं खलु दासकन्या।
उवाच तं सात्त्विकभावयुक्ता कृत्वाऽतिधैर्यं नृपतिं सुगन्धा ॥२३॥
यदात्थ राजन्मयि तत्तथैव मन्येऽहमेतत्तु यथा वचस्ते।
नाऽस्मि स्वतन्त्रा त्वमवेहि कामं दाता पिता मेऽर्थय तं त्वमाशु ॥२४॥
न स्वैरिणीहाऽस्म्यपि दाशपुत्री पितुर्वशेऽहं सततं चरामि।
स चेद्ददाति प्रथितः पिता मे गृहाण पाणिं वशगाऽस्मि तेऽहम् ॥२५॥
मनोभवस्त्वां नृप किं दुनोति यथा पुनर्मान्नवयौवनाञ्च।
दुनोति तत्राऽपि हि रक्षणीया धृतिः कुलाचारपरम्परासु ॥२६॥

इत्याकर्ण्य वचस्तस्या नृपतिःकाममोहितः। गतोदासपतेर्गेहं तस्या याचनहेतवे।२७
दृष्ट्वा नृपतिमायान्तं दाशोऽतिविस्मयंगतः। प्रणामं नृपतेः कृत्वा कृताञ्जलिरभाषत।२८

दाश उवाच

दाशोऽस्मि तव भूपाल कृतार्थोऽहंतवाऽऽगमे। आज्ञान्देहिमहाराजयदर्थमिहचागमः ।२९

राजोवाच

धर्मपत्नींकरिष्यामि सुतामेतान्तवाऽनघ। त्वया चेद्दीयते मह्यं सत्यमेतद् ब्रवीमि ते।३०

दाश उवाच

कन्यारत्नं मदीयं चेद्यत्त्वं प्रार्थयसे नृप। दातव्यं तु प्रदास्यामि न त्वदेयं कदाचन।३१
तस्याः पुत्रो महाराजत्वदन्तेपृथिवीपतिः। सर्वथाचाभिषेक्तव्यो नान्यःपुत्रस्तवेतिवै।३२

सूत उवाच

श्रुत्वावाक्यंतुदाशस्यराजाचिन्तातुरोऽभवत् । गाङ्गेयंमनसाकृत्वानोवाचनृपतिस्तदा।३३
कामातुरो गृहं प्राप्तश्चिन्ताविष्टो महीपतिः। न सस्नौ बुभुजे नाथ न सुष्वापगृहंगतः।३४
चिन्तातुरन्तु तं दृष्ट्वा पुत्रो देवव्रतस्तदा। गत्वाऽपृच्छन्महीपालं तदसन्तोषकारणम्।३५
दुर्जयःकोऽस्ति शत्रुस्ते करोमि वशगं तव। का चिन्तानृपशार्दूल सत्यं वद नृपोत्तम।३६

किं तेन जातेन सुतेन राजन्दुःखं न जानाति न नाशयेद्यः ।
ऋणं ग्रहीतुं समुपागतोऽसौ प्राग्जन्मजं नात्र विचारणाऽस्ति ॥३७॥
विमुच्य राज्यं रघुनन्दनोऽपि ताताज्ञया दाशरथिस्तु रामः ।
वनंगतो लक्ष्मणजानकीभ्यां सहैव शैलं किल चित्रकूटम् ॥३८॥
सुतोहरिश्चन्द्रनृपस्य राजन्यो रोहितश्चेति प्रसिद्धनामा ।
क्रीतोऽथ पित्रा विपणोद्यतश्च दासार्पितो विप्रगृहे तु नूनम् ॥३९॥
तथाऽजिगर्तस्य सुतो वरिष्ठो नाम्ना शुनःशेप (फ) इति प्रसिद्धः ।
क्रीतस्तु पित्राऽप्यथ यूपबद्धः संमोचितो गाधिसुतेन पश्चात् ॥४०॥
पित्राज्ञया जामदग्न्येन पूर्वं छिन्नं शिरो मातुरिति प्रसिद्धम् ।
अकार्यमप्याचरितञ्च तेन गुरोरनुज्ञा च गरीयसी कृता ॥४१॥
इदं शरीरं तव भूपते! न क्षमोऽस्मि नूनं वद किं करोम्यहम् ।
न शोचनीयं मयि वर्तमानेऽप्यसाध्यमर्थं प्रतिपादयाम्यदः ॥४२॥
प्रब्रूहि राजँस्तव काऽस्ति चिन्ता निवारयाम्यद्य धनुर्गृहीत्वा ।
देहेन मे चेच्चरितार्थता वा भवत्वमोघा भवतश्चिकीर्षा ॥४३॥
धिक्तं सुतं यः पितुरीप्सितार्थं क्षमोऽपि सन्न प्रतिपादयेद्यः ।
जातेन किं तेन सुतेन कामं पितुर्न चिन्तां हि समुद्धरेद्यः ॥४४॥

निशम्येति वचस्तस्य पुत्रस्य शन्तुनुर्नृपः। लज्जमानस्तु मनसा तमाह त्वरितं सुतम्।४५

राजोवाच

चिन्तामेमहतीपुत्रयस्त्वमेकोऽसिमे सुतः। शूरोऽतिबलवान्मानीसंग्रामेष्वपराङ्मुखः।४६
एकापत्यस्यमे तात वृथेदं जीवितंकिल। मृतेत्वयिमृधे क्वापि किं करोमिनिराश्रयः।४७
एषा मे महती चिन्ता तेनाऽद्य दुःखितोऽस्म्यहम्। नान्या चिन्ताऽस्ति मे पुत्र! यां तवाग्रे वदाम्यहम्।४८

सूत उवाच

तदाकर्ण्याथगाङ्गेयो मन्त्रिवृद्धानपृच्छत। न मां वदति भूपालोलज्जयाऽद्यपरिप्लुतः।४९
वित्तवार्त्तांनृपस्याद्यपृष्ट्वायूयंविनिश्चयात् ।सत्यं ब्रुवन्तु मां सर्वं तत्करोमिनिराकुलः।५०

तच्छ्रुत्वातेनृपंगत्वासम्विज्ञायचकारणम् ।शशंसुर्विदितार्थस्तुगाङ्गेयस्तदचिन्तयत् ।५१
सहितस्तैर्जगामाऽऽशु दासस्य सदनं तदा।प्रेमपूर्वमुवाचेदं विनम्रो जाह्नवीसुतः।५२

गाङ्गेय उवाच

पित्रे देहि सुतां तेऽद्य प्रार्थयामि सुमध्यमाम् ।
माता मेऽस्तु सुतेयन्ते दासोऽस्म्यस्याः परन्तप! ॥५३॥

दाश उवाच

त्वं गृहाण महाभाग पत्नीं कुरुनृपात्मज।पुत्रोऽस्या न भवेद्राजावर्तमानेत्वयीतिवै।५४

गाङ्गेय उवाच

मातेयंममदाशेयीराज्यंनैव करोम्यहम्।पुत्रोऽस्याः सर्वथा राज्यं करिष्यतिनसंशयः।५५

दाश उवाच

सत्यंवाक्यंमयाज्ञातंपुत्रस्तेबलवान्भवेत् ।सोऽपिराज्यंबलान्नूनंगृह्णीयादितिनिश्चयः।५६

गाङ्गेय उवाच

न दारसंग्रहं नूनं करिष्यामि हि सर्वथा।सत्यं मे वचनं तात मया भीष्मं व्रतं कृतम्।५७

सूत उवाच

एवं कृतां प्रतिज्ञान्तु निशम्य झषजीवकः।ददौ सत्यवतींतस्मै राज्ञेसर्वाङ्गशोभनाम्।५८
अनेन विधिनातेन वृता सत्यवती प्रिया।न जानातिपरं जन्म व्यासस्य नृपसत्तमः।५९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे देवव्रतप्रतिज्ञावर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः॥५॥

* षष्ठोऽध्यायः *

व्यासाद् धृतराष्ट्रादीनामुत्पत्तिवर्णनम्

सूत उवाच

एवं सत्यवती तेन वृता शन्तनुना किल।द्वौपुत्रौचतथा जातौ मृतौ कालवशादपि।१
व्यासवीर्यात्तु सञ्जातोधृतराष्ट्रोऽन्ध एव च।मुनिं दृष्ट्वाऽथकामिन्यानेत्रसंमीलने कृते।२
श्वेतरूपायतोजातादृष्ट्वाव्यासंनृपात्मजा ।व्यासकोपात्समुत्पन्नःपाण्डुस्तेनन संशयः।३
सन्तोषितस्तया व्यासो दास्या कामकलाविदा।विदुरस्तु समुत्पन्नो धर्मांशः सत्यवाक्छुचिः।४
राज्ये संस्थापितः पाण्डुः कनीयानपि मन्त्रिभिः।अन्धत्वाद् धृतराष्ट्रोऽसौ नाऽधिकारे नियोजितः।५
भीष्मस्यानुमते राज्यंप्राप्तःपाण्डुर्महाबलः।विदुरोऽप्यथमेधावीमन्त्रकार्येनियोजितः।६
धृतराष्ट्रस्य द्वेभार्येगान्धारीसौबलीस्मृता।द्वितीयाचतथावैश्यागार्हस्थ्येषुप्रतिष्ठिता।७
पाण्डोरपितथापत्न्यौ द्वे प्रोक्तेवेदवादिभिः।शौरसेनी तथा कुन्ती माद्रीचमद्रदेशजा।८
गान्धारी सुषुवे पुत्रशतं परमशोभनम्।वैश्याऽप्येकंसुतं कान्तं युयुत्सुंसुषुवेप्रियम्।९
कुन्ती तु प्रथमं कन्या सूर्यात्कर्णमनोहरम्।सुषुवे पितृगेहस्था पश्चात्पांडुपरिग्रहः।१०

ऋषय ऊचुः

किमेतत्सूतचित्रन्त्वं भाषसे मुनिसत्तम।जनितश्च सुतः पूर्वं पाण्डुनासाविवाहिता।११
सूर्यात्कर्णःकथंजातःकन्यायांवदविस्तरात् ।कन्याकथंपुनर्जातापांडुनासाविवाहिता।१२

सूत उवाच

शूरसेनसुताकुन्तीबालभावेयदा द्विजाः।कुन्तीभोजेन राजातु प्रार्थिताकन्यकाशुभा।१३
कुन्तिभोजेनसाबालापुत्रीतुपरिकल्पिता ।सेवनार्थन्तुदीप्तस्य विहिता चारुहासिनी।१४
दुर्वासास्तुमुनिःप्राप्तश्चातुर्मास्येस्थितोद्विजः ।परिचर्याकृताकुन्त्यामुनिस्तोषंजगामह।१५

ददौमन्त्रंशुभंतस्यै येनाहूतः सुरःस्वयम्। समायातितथाकामंपूरयिष्यतिवाञ्छितम्।१६
गतेमुनौततःकुन्तीनिश्चयार्थंगृहे स्थिता। चिन्तयामासमनसा कं सुरं समचिन्तये।१७
उदितश्च तदा भानुस्तयादृष्टो दिवाकरः। मन्त्रोच्चारंतथाकृत्वा चाहूतस्तिग्मगुस्तदा।१८
मण्डलान्मानुषंरूपं कृत्वा सर्वातिपेशलम्। अवातरत्तदाऽऽकाशात्समीपेतत्र मन्दिरे।१६
दृष्ट्वादेवंसमायान्तं कुन्ती भानुंसुविस्मिता। वेपमानारजोदोषं प्राप्तासद्यस्तुभामिनी।२०
कृताञ्जलिः स्थितासूर्यम्बभाषेचारुलोचना। सुप्रीतादर्शनेनाद्यगच्छत्वंनिजमण्डलम्।२१

सूर्य उवाच

आहूतोऽस्मिकथंकुन्ति त्वयामन्त्रबलेनवै। न मां भजसिकस्मात्त्वंसमाहूयपुरोगतम्।२२
कामार्तोऽस्म्यसितापांगि भज मां भावसंयुतम्। मन्त्रेणाऽधीनतां प्राप्तं क्रीडितुं नय मामिति।२३

कुन्त्युवाच

कन्याऽस्म्यहंतुधर्मज्ञसर्वसाक्षिन्नमाम्यहम्। तवाप्यहंनदुर्वाच्याकुलकन्याऽस्मिसुव्रत।२४

सूर्य उवाच

लज्जामेमहतीचाद्य यदि गच्छाम्यहं वृथा। वाच्यतां सर्वदेवानां यास्याम्यत्रनसंशयः।२५
शप्स्यामितंद्विजंचाद्ययेनमन्त्रःसमर्पितः। त्वांचापिसुभृशंकुन्तिनोचेन्मांत्वंभजिष्यसि।२६
कन्याधर्मः स्थिरस्ते स्यान्नज्ञास्यन्ति जनाःकिल। मत्समस्तु तथा पुत्रो भविता ते वरानने!।२७
इत्युक्त्वा तरणिः कुन्तीं तन्मनस्कां सुलज्जिताम्। भुक्त्वा जगाम देवेशो वरं दत्त्वाऽतिवाञ्छितम्।२८
गर्भं दधार सुश्रोणी सुगुप्तेमन्दिरेस्थिता। धात्रीवेदप्रियाचैका न मातानजनस्तथा।२६
गुप्तः सद्मनि पुत्रस्तु जातश्चाऽतिमनोहरः। कवचेनाऽतिरम्येणकुण्डलाभ्यांसमन्वितः।३०
द्वितीय इव सूर्यस्तु कुमार इव चापरः। करे कृत्वाऽथ धात्रेयीतामुवाचसुलज्जिताम्।३१
कांचिन्तांकरभोरु!त्वमाधत्सेऽद्य स्थिताऽस्म्यहम्। मञ्जूषायां सुतं कुन्ती मुञ्चन्ती वाक्यमब्रवीत्।३२
किं करोमिसुतार्ताऽहंत्यजे त्वां प्राणवल्लभम्। मन्दभाग्या त्यजामि त्वां सर्वलक्षणसंयुतम्।३३

पातु त्वां सगुणागुणाभगवती सर्वेश्वरी चाऽम्बिका -
स्तन्यं सैव ददातु विश्वजननी कात्यायनीकामदा।
द्रक्ष्येऽहं मुखपङ्कजं सुललितं प्राणप्रियाऽहं कदा -
त्यक्त्वा त्वां विजने वने रविसुतं दुष्टा यथास्वैरिणी ॥३४॥

पूर्वस्मिन्नपि जन्मनित्रिजगतांमातानचाऽऽराधितान ध्यातं पदपङ्कजं सुखकरं देव्याः शिवायाश्चिरम्।
तेनाऽहं सुत! दुर्भगाऽस्मि सततं त्यक्त्वा पुनस्त्वां वने -
तप्स्यामि प्रिय पातकं स्मृतवती बुद्ध्या कृतंयत्स्वयम् ॥३५॥

सूत उवाच

इत्युक्त्वा तं सुतं कुन्ती मञ्जूषायां धृतं किल। धात्रीहस्तेददौभीताजनदर्शनतस्तथा ।३६
स्नात्वा त्रस्ता तदाकुन्ती पितृवेश्मन्युवास सा। मञ्जूषावहमानाचप्राप्ताह्यधिरथेनवै ।३७
राधा सूतस्य भार्या वै तयाऽसौ प्रार्थिता सुतः। कर्णोऽभूद् बलवान्वीरः पालितः सूतसद्मनि।३८
कुन्तीविवाहिता कन्यापाण्डुनासास्वयम्वरे। माद्रीचैवापराभार्यामद्रराजसुताशुभा।३६
मृगयारममाणस्तु वनेपाण्डुर्महाबलः। जघान मृगबुद्ध्या तु रममाणं मुनिं वने।४०
शप्तस्तेनतदा पाण्डुर्मुनिना कुपितेन च। स्त्रीसङ्गं यदिकर्ताऽसि तदा ते मरणं ध्रुवम्।४१
इति शप्तस्तु मुनिनापाण्डुः शोकसमन्वितः। त्यक्त्वाराज्यंवनेवासंचकारभृशदुःखितः।४२
कुन्ती माद्री च भार्ये द्वे जग्मतुः सहसङ्गते। सेवनार्थं सतीधर्मं संश्रिते मुनिसत्तमाः।४३

गङ्गातीरे स्थितः पाण्डुर्मुनीनामाश्रमेषु च। शृण्वानोधर्मशास्त्राणि चकारदुश्चरंतपः।४४
कथायां वर्तमानायां कदाचिद्धर्मसंश्रितम्। अशृणोद्वचनं राजा सुपुष्टंमुनिभाषितम्।४५
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गे गन्तुं परन्तपः। येनकेनाप्युपायेन पुत्रस्य जननं चरेत्।४६
अंशजः पुत्रिकापुत्रः क्षेत्रजोगोलकस्तथा। कुण्डः सहोढः कानीनः क्रीतः प्राप्तस्तथा वने।४७
दत्तः केनापि चाशक्तौ धनग्राहिसुताःस्मृताः। उत्तरोत्तरतः पुत्रानिकृष्टा इतिनिश्चयः।४८
इत्याकर्ण्य तदा प्राहकुन्तींकमललोचनाम्। सुतमुत्पादयाशुत्वंमुनिंगत्वातपोन्वितम् ।४९
ममाऽऽज्ञया नदोषस्तेपुराराज्ञामहात्मना। वसिष्ठाज्जनितः पुत्रः सौदासेनेतिमेश्रुतम्।५०
तं कुन्ती वचनं प्राह ममममन्त्रोऽस्ति कामदः। दत्तोदुर्वाससापूर्वंसिंद्धिदः सर्वथाप्रभो।५१
निमन्त्रयेऽहं यं देवं मन्त्रेणानेन पार्थिव। आगच्छेत्सर्वथासोवै ममपार्श्वेनियंत्रितः।५२
भर्तुर्वाक्येन सा तत्र स्मृत्वा धर्मं सुरोत्तमम्। सङ्गम्य सुषुवे पुत्रंप्रथमंचयुधिष्ठिरम्।५३
वायोर्वृकोदरं पुत्रं जिष्णुं चैव शतक्रतोः। वर्षे वर्षे त्रयः पुत्राः कुन्त्यांजातामहाबलाः।५४
माद्री प्राह पतिं पाण्डुं पुत्रंमेकुरुसत्तम। किं करोमि महाराजदुःखंनाशय मे प्रभो।५५
प्रार्थिता पतिना कुन्ती ददौ मन्त्रं दयान्विता। एकपुत्रप्रबन्धेन माद्रीपतिमते स्थिता।५६
स्मृत्वा तदाऽश्विनौ देवौ मद्रराज सुता सुतौ। नकुलः सहदेवश्च सुषुवे वरवर्णिनी।५७
एवंतेपाण्डवाः पञ्चक्षेत्रोत्पन्नाःसुरात्मजाः। वर्षवर्षान्तरेजातावनेतस्मिन्द्विजोत्तमाः ।५८
एकस्मिन्समयेपाण्डुर्माद्रीं दृष्ट्वाऽथनिर्जने। आश्रमे चातिकामार्तो जग्राहागतवैशसः।५९
मामामामेतिबहुधा निषिद्धोऽपि तयाभृशम्। आलिलिङ्गप्रियांदैवात्पपातधरणीतले ।६०
यथा वृक्षगता वल्लीछिन्ने पतति वै द्रुमे। तथा सा पतिता बाला कुर्वन्ती रोदनंबहु।६१
प्रत्यागता तदा कुन्ती रुदती बालकास्तथा। मुनयश्चमहाभागाःश्रुत्वा कोलाहलंतदा।६२
मृतः पाण्डुस्तदा सर्वे मुनयः संशितव्रताः। सहाग्निभिर्विधिंकृत्वागङ्गातीरेतदाऽदहन् ।६३
चक्रेसहैव गमनं माद्रीदत्वा सुतौ शिशू। कुन्त्यैधर्मं पुरस्कृत्यसतीनां सत्यकामतः।६४
जलदानादिकं कृत्वा मुनयस्तत्रवासिनः। पञ्चपुत्रयुतां कुन्तीमनयन्हस्तिनापुरम्।६५
तां प्राप्तां च समाज्ञाय गाङ्गेयोविदुरस्तथा। नागराधृतराष्ट्रस्य सर्वे तत्र समाययुः।६६
पप्रच्छुश्च जनाः सर्वेकस्यपुत्रावरानने। पाण्डोःशापंसमाज्ञाय कुन्तीदुःखान्वितातदा।६७
तानुवाच सुराणांवैपुत्राःकुरुकुलोद्भवाः। विश्वासार्थे समाहूताःकुन्त्यासर्वेसुरास्तदा।६८
आगत्य खे तदा तैस्तु कथितं नः सुताः किल। भीष्मेण सत्कृतं वाक्यं देवानां सत्कृताः सुताः।६९
गता नागपुरं सर्वे तानादाय सुतान्वधूम्। भीष्मादयः प्रीतचित्ताः पालयामासुरर्थतः।७०
एवं पार्थाः समुत्पन्ना गाङ्गेयेनाऽथ पालितः।।७१।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे युधिष्ठिरादीनामुत्पत्तिवर्णनंनाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

* सप्तमोऽध्यायः *

पाण्डवानांकथानकवर्णनम्

सूत उवाच

पञ्चानां द्रौपदी भार्या सामान्या सा पतिव्रता। पञ्च पुत्रास्तु तस्याः स्युर्भर्तृभ्योऽतीव सुन्दराः। १
अर्जुनस्य तथा भार्या कृष्णस्य भगिनीशुभा। सुभद्रायाहृतापूर्वं जिष्णुनाहरिसम्मते। २
तस्यां जातोमहावीरोनिहतोऽसौ रणाजिरे। अभिमन्युर्हतास्तत्रद्रौपद्याश्चसुताःकिल। ३
अभिमन्योर्वरा भार्या वैराटी चातिसुन्दरी। कुलान्तेसुषुवेपुत्रंमृतोबाणाग्निनाशिशुः। ४

जीवितः सतु कृष्णेन भागिनेयसुतः स्वयम्। द्रौणिबाणाग्निनिर्दग्धःप्रतापेनाद्भुतेनच। ५
परिक्षीणेषु वंशेषु जातोयस्माद्वरः सुतः। तस्मात्परीक्षितोनाम विख्यातःपृथिवीतले। ६
निहतेषु च पुत्रेषु धृतराष्ट्रोऽतिदुःखितः। तस्थौ पाण्डवराज्येचभीमवाग्बाणपीडितः। ७
गान्धारी चतथाऽतिष्ठत्पुत्रशोकातुराभृशम्। सेवांतयोर्दिवारात्रंचकारार्तोयुधिष्ठिरः। ८
विदुरोऽप्यति धर्मात्मा प्रज्ञानेत्रमबोधयत्। युधिष्ठिरस्यानुमते भ्रातृपार्श्वेव्यतिष्ठत। ९
धर्मपुत्रोऽपिधर्मात्मा चकारसेवनं पितुः। पुत्रशोकोद्भवं दुःखंतस्य विस्मारयन्निव। १०
यथा शृणोति वृद्धोऽसौ तथा भीमोऽतिरोषितः। वाग्बाणेनाऽहनत्तं तु श्रावयन्संस्थिताञ्जनान्। ११
मया पुत्रा हताः सर्वे दुष्टस्यान्धस्यते रणे। दुःशासनस्य रुधिरंपीतं हृद्यं तथाभृशम्। १२
भुनक्ति पिण्डमन्धोऽयं मयादत्तं गतत्रपः। ध्वांक्षवद्वा श्ववच्चापिवृथाजीवत्यसौजनः। १३
एवम्विधानिरूक्षाणिश्रावयत्यनुवासरम्। आश्वासयतिधर्मात्मामूर्खोऽयमितिचब्रुवन्। १४
अष्टादशैव वर्षाणि स्थित्वा तत्रैव दुःखितः। धृतराष्ट्रोवनेयानं प्रार्थयामास धर्मजम्। १५
अयाचत धर्मपुत्रं धृतराष्ट्रो महीपतिः। पुत्रेभ्योऽहं ददाम्यद्य निवापं विधिपूर्वकम्। १६
वृकोदरेण सर्वेषां कृतमत्रौर्ध्वदैहिकम्। न कृतं मम पुत्राणां पूर्ववैरमनुस्मरन्। १७
ददासि चेद्धनं मह्यं कृत्वा चैवोर्ध्वदैहिकम्। गमिष्येऽहं वनं तप्तुं तपःस्वर्गफलप्रदम्। १८
एकान्ते विदुरेणोक्तो राजा धर्मसुतः शुचिः। धनं दातुं मनश्चक्रेधृतराष्ट्राय चार्थिने। १९
समाहूय निजान्सर्वानुवाच पृथिवीपतिः। धनं दास्ये महाभागाःपित्रेनिर्वापकामिने। २०
तच्छ्रुत्वा वचनं भ्रातुर्ज्येष्ठस्याऽमिततेजसः। संग्रहेऽस्य महाबाहुर्मारुतिः कुपितोऽब्रवीत्। २१
धनं देयं महाभाग दुर्योधनहितायकिम्। अन्धोऽपि सुखमाप्नोतिमूर्खत्वंकिमतःपरम्। २२
तव दुर्मन्त्रितेनाऽथ दुःखं प्राप्तावनेवयम्। द्रौपदी च महाभागा समानीतादुरात्मना। २३
विराटभवने वासः प्रसादात्तव सुव्रत!। दासत्वंच कृतं सर्वैर्मत्स्यस्याऽमितविक्रमैः। २४
देविता त्वं नचेज्जेष्ठः प्रभवेत्संक्षयःकथम्। सूपकारोविराटस्यहत्वाऽभूवंतुमागधम् । २५
बृहन्नला कथं जिष्णुर्भवेद्बालस्य नर्तकः। कृत्वा वेषं महाबाहुर्योषायावासवात्मजः। २६
गाण्डीवशोभितौहस्तौकृतौकङ्कणशोभितौ। मानुषंचवपुःप्राप्यकिं दुःखंस्यादतःपरम्। २७
दृष्ट्वा वेणीं कृतां मूर्ध्नि कज्जलं लोचने तथा। असिंगृहीत्वा तरसा च्छेद्म्यहं नाऽन्यथा सुखम्। २८
अपृष्ट्वा च महीपालंनिक्षिप्तोऽग्निर्मयागृहे। दग्धुकामश्चपापात्मानिर्दग्धोऽसौपुरोजनः । २९
कीचका निहताः सर्वे त्वामपृष्ट्वा जनाधिप। न तथा निहताःसर्वेसभार्याधृतराष्ट्रजाः। ३०
मूर्खत्वं तव राजेन्द्र! गन्धर्वेभ्यश्च मोचिताः। दुर्योधनादयःकामं शत्रवो निगडीकृताः। ३१
दुर्योधनहितायाद्य धनं दातुं त्वमिच्छसि। नाहं ददे महीपाल सर्वथा प्रेरितस्त्वया। ३२
इत्युक्त्वा निर्गते भीमे त्रिभिःपरिवृतोनृपः। ददौ वित्तंसुबहुलं धृतराष्ट्राय धर्मजः। ३३
कारयामासविधिवत्पुत्राणां चौर्ध्वदैहिकम्। ददौ दानानि विप्रेभ्यो धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः। ३४
कृत्वौर्ध्वदैहिकं सर्वं गान्धारीसहितो नृपः। प्रविवेशवनंतूर्णं कुन्त्या च विदुरेण च। ३५
सञ्जयेन परिज्ञातो निर्गतोऽसौ महामतिः। पुत्रैर्निवार्यमाणाऽपि शूरसेनसुता गताः। ३६
विलपन्भीमसेनोऽपितथाऽन्येचापिकौरवाः। गङ्गातीरात्परावृत्यययुःसर्वे गजाह्वयम्। ३७
ते गत्वा जाह्नवीतीरं शतयूपाश्रमं शुभम्। कृत्वा तृणैः कुटीं तत्र तपस्तेपुःसमाहिताः। ३८
गतान्यब्दानि षट् तेषां यदा याताहितापसाः। युधिष्ठिरस्तुविरहादनुजानिदमब्रवीत् । ३९
स्वप्ने दृष्टा मया कुन्ती दुर्बला वनसंस्थिता। मनोमेजायतेद्रष्टुं मातरं पितरौ तथा। ४०

विदुरं च महात्मानं सञ्जयं च महामतिम्। रोचते यदि वः सर्वान्व्रजामइतिमे मतिः।४१
ततस्ते भ्रातरः सर्वे सुभद्रा द्रौपदी तथा। वैराटी च महाभागा तथा नागरिकोजनः।४२
प्राप्ताः सर्वजनैः सार्धं पाण्डवा दर्शनोत्सुकाः। शतयूपाश्रमं प्राप्य ददृशुः सर्व एव ते।४३
विदुरो न यदा दृष्टो धर्मस्तं पृष्टवांस्तदा। क्वाऽऽस्ते स विदुरो धीमांस्तमुवाचाऽम्बिकासुतः।४४
विरक्तश्चरते क्षत्तानिरीहो निष्परिग्रहः। कुत्राप्येकान्तसम्वासीध्यायतेऽन्तःसनातनम्।४५
गङ्गां गच्छन्द्वितीयेऽह्नि वने राजा युधिष्ठिरः। ददर्शविदुरं क्षामं तपसा संशितव्रतम्।४६
दृष्ट्वोवाच महीपालो वन्देऽहंत्वां युधिष्ठिरः। तस्थौश्रुत्वाचविदुरः स्थाणुभूतइवानघः।४७
क्षणेन विदुरस्यास्यान्निःसृतंतेजअद्भुतम्। लीनंयुधिष्ठिरस्यास्ये धर्मांशत्वात्परस्परम्।४८
क्षत्ता जहौ तदा प्राणाञ्छुशोचाऽति युधिष्ठिरः। दाहार्थंतस्य देहस्य कृतवानुद्यमंनृपः।४९
शृण्वतस्तु तदा राज्ञो वागुवाचाशरीरिणी। विरक्तोऽयं न दाहार्हो यथेष्टंगच्छभूपते।५०
श्रुत्वा ते भ्रातरः सर्वे सस्नुर्गङ्गाजलेऽमले। गत्वानिवेदयामासुर्धृतराष्ट्रायविस्तरात्।५१
स्थितास्तत्राऽऽश्रमे सर्वे पाण्डवानागरैःसह। तत्र सत्यवतीसूनुर्नारदश्च समागतः।५२
मुनयोऽन्ये महात्मानश्चागता धर्मनन्दनम्। कुन्ती प्राह तदाव्यासंसंस्थितंशुभदर्शनम्।५३
कृष्ण! कर्णस्तु पुत्रो मे जातमात्रस्तुवीक्षितः। मनोमे तप्यतेसर्वं दर्शयस्व तपोधन!।५४
समर्थोऽसि महाभाग! कुरु मे वाञ्छितं प्रभो! ।

गान्धार्युवाच

दुर्योधनो रणेऽगच्छद्वीक्षितो न मया मुने! ॥५५॥
तं दर्शय मुनिश्रेष्ठ! पुत्रं मे त्वं सहानुजम् ।

सुभद्रोवाच

अभिमन्युं महावीरं प्राणादप्यधिकं प्रियम् ॥५६॥
द्रष्टुकामाऽस्मि सर्वज्ञ! दर्शयाऽद्य तपोधन! ।

सूत उवाच

एवम्विधानि वाक्यानि श्रुत्वा सत्यवतीसुतः ॥५७॥
प्राणायामंततःकृत्वादध्यौदेवींसनातनीम्। सन्ध्याकालेऽथसम्प्राप्तेगङ्गायांमुनिसत्तमः।५८
सर्वांस्तांश्च समाहूय युधिष्ठिरपुरोगमान्। तुष्टाव विश्वजननीं स्नात्वा पुण्यसरिज्जले।५९
प्रकृतिं पुरुषारामां सगुणां निर्गुणां तथा। देवदेवीं ब्रह्मरूपां मणिद्वीपाधिवासिनीम्।६०
यदा न वेधा न च विष्णुरीश्वरो न वासवो नैव जलाधिपस्तथा।
न वित्तपो नैव यमश्च पावकस्तदाऽसि देवि! त्वमहं नमामि ताम्॥६१॥
जलं न वायुर्न धरा न चाऽम्बरं गुणा न तेषां च न चेन्द्रियाण्यहम्।
मनो न बुद्धिर्न तिग्मगुः शशी तदाऽसि देवि! त्वमहं नमामि ताम्॥६२॥
इमं जीवलोकं समाधाय चित्ते गुणैर्लिङ्गकोशं च नीत्वा समाधौ।
स्थिता कल्पकालं नयस्याऽऽत्मतन्त्रा न कोऽप्यस्तिवेत्ता विवेकं गतोऽपि॥६३॥
प्रार्थयत्येष मां लोकोमृतानांदर्शनंपुनः। नाहं क्षमोऽस्मिमातस्त्वंदर्शयाशुजनान्मृतान्।६४
एवं स्तुता तदा देवी माया श्रीभुवनेश्वरी। स्वर्गादाहूयसर्वान्वैदर्शयामासपार्थिवान्।६५
दृष्ट्वाकुन्तीचगान्धारीसुभद्राचविराटजा। पाण्डवाभुमुहुःसर्वेवीक्ष्यप्रत्यागतान्स्वकान्।६६
पुनर्विसर्जतास्तेनव्यासेनाऽमिततेजसा। स्मृत्वादेवीं महामायामिन्द्रजालमिवोद्यतम्।६७
तदा पृष्ट्वा ययुः सर्वे पाण्डवा मुनयस्तथा। राजा नागपुरंप्राप्तः कुर्वन्व्यासकथांपथि।६८

इति श्री देवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे पाण्डवानांकथानकंमृतानांदर्शनवर्णनंनाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥

* अष्टमोऽध्यायः *

यदुकुलसंहारवर्णनपूर्वकपरीक्षिद्राज्ञश्चरित्रवर्णनम्

सूत उवाच

ततो दिने तृतीये च धृतराष्ट्रः सः भूपतिः। दावाग्निनावनेदग्धः सभार्यः कुन्तिसंयुतः। १
सञ्जयस्तीर्थयात्रायां गतस्त्यक्त्वा महीपतिम्। श्रुत्वा युधिष्ठिरो राजानारदाद् दुःखमाप्तवान्। २
षट्त्रिंशेऽथ गते वर्षे कौरवाणां क्षयात्पुनः। प्रभासेयादवाःसर्वेविप्रशापात्क्षयंगताः। ३
ते पीत्वा मदिरांमत्ताःकृत्वायुद्धंपरस्परम्। क्षयंप्राप्तामहात्मानःपश्यतोरामकृष्णयोः। ४
देहंतत्याज रामस्तु कृष्णः कमललोचनः। व्याधबाणहतः शापं पालयन्भगवान्हरिः। ५
वसुदेवस्तु तच्छ्रुत्वा देहत्यागं हरेरधः। जहौप्राणाञ्छुचीन्कृत्वाचित्तेश्रीभुवनेश्वरीम्। ६
अर्जुनस्तु ततो गत्वाप्रभासेचाऽतिदुःखितः। संस्कारं तत्र सर्वेषांयथायोग्यंचकार ह। ७
समीक्ष्याथ हरेर्देहं कृत्वाकाष्ठस्य सञ्चयम्। अष्टाभिः सहपत्नीभिर्दाहयामासपार्थिवः। ८
देहं रामस्य रेवत्या सह दग्ध्वा विभावसौ। अर्जुनोद्वारकामेत्यपुरान्निष्क्रामयज्जनम्। ९
पुरी सा वासुदेवस्यप्लावितोदधिना ततः। अर्जुनः सर्वलोकान्वै गृहीत्वानिर्गतस्तदा। १०
अनिरुद्धसुतो नाम्नापार्थेनाऽमिततेजसा। व्यासाय कथितंदुःखंतेनोक्तोऽसौमहारथः। ११
पुनर्यदा हरिस्त्वंच भवितासिमहामते। कृष्णपत्न्यस्तदामार्गेचौराभीरैश्च लुण्ठिताः। १२
धनं सर्वं गृहीतं च निस्तेजाश्चार्जुनोऽभवत्। इन्द्रप्रस्थेसमागम्यवज्रोराजाकृतस्ततः। १३
तदा तेजस्तवात्युग्रं भविष्यति पुनर्युगे। तच्छ्रुत्वा वचनं पार्थो गत्वा नागपुरेऽर्जुनः। १४
दुःखितो धर्मराजानं वृत्तान्तं सर्वमब्रवीत्। देहत्यागं हरेः श्रुत्वा यादवानांक्षयंतथा। १५
गमनाय मतिं चक्रे राजाहैमाचलं प्रति। षट्त्रिंशद्वार्षिकंराज्येस्थापयित्वोत्तरासुतम्। १६
निर्जगाम वनं राजा द्रौपद्याभ्रातृभिःसह। षट्त्रिंशच्चैव वर्षाणिकृत्वाराज्यंगजाह्वये। १७
गत्वाहिमाचले षट् ते जहुः प्राणान्पृथासुताः। परीक्षिदपि राजर्षिः प्रजाः सर्वाः सुधार्मिकः। १८
अपालयच्च राजेन्द्रः षष्टिवर्षाण्यतन्द्रितः। बभूव मृगयाशीलो जगाम च वनं महत्। १९
विद्धंमृगं विचिन्वानोमध्याह्नेभूपतिःस्वयम्। तृषितश्चपरिश्रान्तःक्षुधितश्चोत्तरासुतः। २०
राजा धर्मेण सन्तप्तो ददर्शमुनिमन्तिके ध्याने। स्थितं मुनिंराजा जलंपप्रच्छचातुरः। २१
नोवाच किञ्चिन्मौनस्थश्चुकोप नृपतिस्तदा। मृतं सर्पं तदाऽऽदाय धनुष्कोट्या तृषातुरः। २२
कलिनाऽऽविष्टचित्तस्तु कण्ठे तस्यन्यवेशयत्। आरोपितेतथासर्पेनोवाचमुनिसत्तमः। २३
न चचाल समाधिस्थो राजाऽपिस्वगृहं गतः। तस्य पुत्रोऽतितेजस्वी गवि जातो महातपाः। २४
महाशक्तोऽथ शुश्रावक्रीडमानोवनान्तिके। मित्राण्याहुश्च तत्पुत्रंपितुःकण्ठेतवाधुना। २५
लम्बितोऽस्तिमृतःसर्पः केनाऽपीति मुनीश्वर। तेषांतद्वचनंश्रुत्वा चुकोपातिशयं तदा। २६
शशाप नृपतिंक्रुद्धो गृहीत्वाऽऽशुकरेजलम्। पितुःकण्ठेऽद्यमेयेनविनिक्षिप्तोमृतोरगः। २७
तक्षकः सप्तरात्रेण तं दशेत्पापपूरुषम्। मुनेः शिष्योऽथ राजानं समुपेत्यगृहेस्थितम्। २८
शापं निवेदयामास मुनिपुत्रेणचार्पितम्। अभिमन्युसुतः श्रुत्वा शापं दत्तं द्विजेन वै। २९
अनिवार्यञ्च विज्ञाय मन्त्रि वृद्धानुवाच ह। शप्तोऽहं द्विजरूपेण मम द्वेषादसंशयम्। ३०
किंविधेयंमयाऽमात्या उपायश्चिन्त्यतामिह। मृत्युः किलानिवार्योऽसौ वदन्ति वेदवादिनः। ३१
यत्नस्तथाऽपि शास्त्रोक्तःकर्तव्यःसर्वथाबुधैः। उपायवादिनःकेचित्प्रवदन्तिमनीषिणः। ३२
विज्ञोपायेन सिध्यन्ति कार्याणिनेतरस्यच। मणिमन्त्रौषधीनांवैप्रभावाःखलुदुर्विदः। ३३

न भवेदिति किंतैस्तु मणिमद्भिःसुसाधितैः।सर्पदष्टापुराभार्यामुनेः सञ्जीविता मृता।३४
दत्त्वाऽर्धमायुषस्तेन मुनिना सा वराप्सराः।भवितव्येनविश्वासःकर्तव्यःसर्वथाबुधैः।३५
प्रत्यक्षं तत्र दृष्टान्तंपश्यन्तुसचिवाकिल।दिविकोऽपिपृथिव्यांवादृश्यतेपुरुषःक्वचित्।३६
दैवेमतिं समाधाय यस्तिष्ठेत्तु निरुद्यमः।विरक्तस्तु यतिर्भूत्वाभिक्षार्थंयातिसर्वथा।३७
गृहस्थानां गृहेकाममाहूतोप्यऽथवाऽन्यथा।यदृच्छयोपपन्नं च क्षिप्तंकेनापिवा मुखे।३८
उद्यमेनविना चास्यादुदरे संविशेत्कथम्।प्रयत्नश्चोद्यमे कार्यो यदासिद्धिंनयातितत्।३९
तदा दैवं स्थितं चेति चित्तमालम्बयेद् बुधः।

मन्त्रिण ऊचुः

कोमुनिर्येन दत्त्वाऽर्धमायुषो जीविता प्रिया ॥४०॥
कथं मृता महाराज!तन्नो ब्रूहि सविस्तरम्।

राजोवाच

मृगोभार्या वरारोहा पुलोमा नाम सुन्दरी ॥४१॥
तस्यां तु च्यवनोनाममुनिर्जातोऽतिविश्रुतः।च्यवनस्यचशर्यातेःसुकन्यानामसुन्दरी।४२
तस्यां जज्ञे सुतःश्रीमान्प्रमतिर्नाम विश्रुतः।प्रमतेस्तु प्रियाभार्याप्रतापीनामविश्रुता।४३
रुरुर्नाम सुतोजातस्तथा परमतापसः।तस्मिंश्च समये कश्चित्स्थूलकेशश्च विश्रुतः।४४
बभूत तपसायुक्तो धर्मात्मा सत्यसम्मतः।एतस्मिन्नन्तरे मान्यामेनकाचवराप्सराः।४५
क्रीडां चक्रे नदीतीरे त्रिषु लोकेषु सुन्दरी।गर्भं विश्वावसोः प्राप्यनिर्गतावरवर्णिनी।४६
स्थूलकेशाश्रमे गत्वा विससर्ज वराप्सराः।कन्यकां च नदीतीरेत्रिषुलोकेषुसुन्दरीम्।४७
दृष्ट्वाऽनाथां तदा कन्यां जग्राहमुनिसत्तमः।पुपोषस्थूलकेशस्तु नाम्नाचक्रे प्रमद्वराम्।४८
सा काले यौवनंप्राप्तासर्वलक्षणसंयुता।रुरुर्दृष्ट्वाऽथतांबालां कामबाणार्दितोह्यभूत्।४९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे रुरुचरित्रवर्णनंनामाष्टमोऽध्यायः॥८॥

* नवमोऽध्यायः *

रुरुचरित्रवर्णनम्

परीक्षिदुवाच

कामार्तः स मुनिर्गत्वा रुरुस्सुप्तोनिजाश्रमे।पिताप्रपच्छदीनंतंकिं रुरोविमनाअसि।१
सतमाहातिकामार्तःस्थूलकेशस्य चाऽऽश्रम्।कन्या प्रमद्वरानामसामेभार्याभवेदिति।२
सगत्वा प्रमतिस्तूर्णं स्थूलकेशं महामुनिम्।प्रमुह्य सुमुखं कृत्वा ययाचेतांवराननाम्।३
ददौ वाचं स्थूलकेशःप्रदास्यामि शुभेऽहनि।विवाहार्थं च सम्भारं रचयामासतुर्वने।४
प्रमतिः स्थूलकेशश्च विवाहार्थं समुद्यतौ।बभूवतुर्महात्मानौ समीपस्थौ तपोधने।५
तस्मिन्नवसरे कन्या रममाणागृहाङ्गणे।प्रसुप्तं पन्नगं पादेनाऽस्पृशच्चारुलोचना।६
दष्टा तु पन्नगेनाथ सा ममार वराङ्गना।कोलाहलस्तदा जातोमृतां दृष्ट्वाप्रमद्वरान्।७
मिलिता मुनयःसर्वे चुक्रुशुःशोकसंयुताः।भूमौतांपतितांदृष्ट्वापितातस्याऽतिदुःखितः।८
रुरोद विगतप्राणां दीप्यमानां सुतेजसा।रुरुः श्रुत्वा तदाऽऽक्रन्दन्दर्शनार्थंसमागतः।९
ददर्श पतितां तत्र सजीवामिव कामिनीम्।रुदन्तं स्थूलकेशंचदृष्ट्वाऽन्यानृषिसत्तमान्।१०
रुरुः स्थानाद्बहिर्गत्वा रुरोद विरहाकुलः।अहो दैवेन सर्पोऽयम्प्रेषितः परमाद्भुतः।११

मम शर्मविघाताय दुःखहेतुरयं किल। किं करोमि क्वगच्छामि मृता मे प्राणवल्लभा।१२
न वै जीवितुमिच्छामि वियुक्तः प्रियया ऽनया। नाऽऽलिङ्गिता वरारोहा न मया चुम्बिता मुखे।१३
न पाणिग्रहणं प्राप्तं मन्दभाग्येन सर्वथा। लाजाहोमस्तथाचाग्नौ न कृतस्त्वनया सह।१४
मानुष्यं धिगिदं काममंगच्छन्त्वद्यममासवः। दुःखितस्यनवामृत्युर्वाञ्छितःसमुपैतिहि।१५
सुखं तर्हि कथं दिव्यमाप्यते भुवि वाञ्छितम्। प्रपतामिह्रदे घोरे पावके प्रपताम्यहम्।१६
विषमद्मि गलेपाशं कृत्वा प्राणांस्त्यजाम्यहम्। विलथैवंरुरुस्तत्रविचार्यमनसा पुनः।१७
उपायं चिन्तयामास स्थितस्तस्मिन्नदीतटे। मरणात्किंफलंमेस्यादात्महत्यादुरत्यया।१८
दुःखितश्च पिता मे स्याज्जननी चाऽतिदुःखिता। दैवस्तुष्टो भवेत्कामं दृष्ट्वा मां त्यक्तजीवितम्।१९
सर्वः प्रमुदितश्च स्यान्मत्क्षये नाऽत्रसंशयः। उपकारः प्रियायाः कः परलोके भवेदपि।२०
मृते मय्यात्मघातेन विरहात्पीडितेऽपिच। परलोकेप्रियासाऽपिनमेस्यादात्मघातिनः।२१
एतदर्थं मृते दोषामयिनैवामृतेपुनः। विमृश्यैवंरुरुस्तत्र स्नात्वाऽऽचम्यशुचिः स्थितः।२२
अब्रवीद्वचनं कृत्वा जलं पाणावसौमुनिः। यन्मया सुकृतं किञ्चित्कृतंदेवार्चनादिकम्।२३
गुरवः पूजिता भक्त्या हुतं जप्तंतपःकृतम्। अधीतास्त्वखिलावेदागायत्रीसंस्कृतायदि।२४
रविराराधितस्तेन सञ्जीवतु मम प्रिया। यदि जीवेन्न मे कान्ता त्यजे प्राणानहं ततः।२५

इत्युक्त्वा तज्जलंभूमौ विचिक्षेपाऽऽराध्य देवताः।

राजोवाच

एवं विलपतस्तस्य भार्यया दुःखितस्य च ॥२६॥
देवदूतस्तदाऽभ्येत्य वाक्यमाह रुरुं ततः।

देवदूत उवाच

मा कार्षीः साहसं ब्रह्मन्कथं जीवेन्मृता प्रिया ॥२७॥
गतायुरेषा सुश्रोणी गन्धर्वाप्सरसोःसुता। अन्यां कामयचार्वङ्गीं मृतेयंचाविवाहिता।२८
कि रोदिषि सुदुर्बुद्धे ! का प्रीतिस्तेऽनया सह।

रुरुरुवाच

देवदूत! न चान्यां वै वरिष्याम्यहमङ्गनाम् ॥ २९ ॥
यदि जीवेन्न जीवेद्वा मर्तव्यं चाऽधुना मया।

राजोवाच

विदित्वेति हठं तस्य देवदूतो मुदाऽन्वितः ॥३०॥
उवाच वचनं तथ्यं सत्यं चातिमनोहरम्। उपायं शृणु विप्रेन्द्र विहितं यत्सुरैः पुरा।३१
आयुषोऽर्धप्रदानेन जीवयाऽऽशु प्रमद्वराम्।

रुरुरुवाच

आयुषोऽर्धं प्रयच्छामि कन्यायै नाऽत्र संशयः॥३२॥
अद्य प्रत्यावृतप्राणा प्रोत्तिष्ठतु मम प्रिया। विश्वावसुस्तदा तत्र विमानेन समागतः।३३
ज्ञात्वा पुत्रीं मृतां चाशु स्वर्गलोकात्प्रमद्वराम्। ततो गन्धर्वराजश्च देवदूतश्च सत्तमः।३४
धर्मराजमुपेत्येदं वचनं प्रत्यभाषताम्। धर्मराज रुरोः पत्नी सुता विश्वावसोस्तथा।३५
मृता प्रमद्वरा कन्या दष्टा सर्पेण चाधुना। सा रुरोरायुषोऽर्धेन मर्तुकामस्य सूर्यज।३६
समुत्तिष्ठतु तन्वङ्गी व्रतचर्याप्रभावतः।

धर्म उवाच

विश्वावसुसुतां कन्यां देवदूत! यदीच्छसि ॥३७॥

उत्तिष्ठत्वायुषोऽर्धेन रुरुङ्क्त्वा त्वमर्पय ।

राजोवाच

एवमुक्तस्ततो गत्वा जीवयित्वा प्रमद्वराम् ॥३८॥

रुरोः समर्पयामास देवदूतस्त्वरान्वितः। ततः शुभेऽह्निविधिना रुरुणाऽपिविवाहिता।३९
इत्थं चोपाययोगेन मृताऽप्युज्जीविता तदा। उपायस्तु प्रकर्तव्यःसर्वथाशास्त्रसम्मतः।४०
मणिमन्त्रौषधीभिश्चविधिवत्प्राणरक्षणे । इत्युक्त्वासचिवान्राजाकल्पयित्वासुरक्षकान्।४१
कारयित्वाऽथ प्रासादं सप्तभूमिकमुत्तमम्। आरुरोहोत्तरासूनुः सचिवैःसहतत्क्षणम्।४२
मणिमन्त्रधराः शूराः स्थापितास्तत्र रक्षणे। प्रेषयामास भूपालो मुनिं गौरमुखं ततः।४३
प्रसादार्थं सेवकस्य क्षमस्वेति पुनः पुनः। ब्राह्मणान्सिद्धमन्त्रज्ञान्रक्षणार्थमितस्ततः।४४
मन्त्रिपुत्रः स्थितस्तत्रस्थापयामासदन्तिनः। न कश्चिदारुहेत्तत्र प्रासादेचातिरक्षिते।४५
वातोपि न चरेत्तत्र प्रवेशेविनिवार्यते। भक्ष्यभोज्यादिकं राजा तत्रस्थश्चचकार सः।४६
स्नानसन्ध्यादिकंकर्मतत्रैवविनिवर्त्य च। राजकार्याणिसर्वाणि तत्रस्थश्चाकरोन्नृपः।४७
मन्त्रिभिः सहसंमन्त्र्यगणयन्दिवसानपि। कश्चिच्च कश्यपोनामब्राह्मणोमन्त्रिसत्तमः।४८
शुश्राव च तथा शापं प्राप्तं राज्ञा महात्मना। सधनार्थीद्विजश्रेष्ठःकश्यपःसमचिन्तयत्।४९
व्रजामि तत्र यत्रास्तेशप्तोराजा द्विजेन ह। इतिकृत्वामतिंविप्रःस्वगृहान्निःसृतःपथि ।५०

कश्यपो मन्त्रविद्विद्वान्धनार्थी मुनिसत्तमः ॥५१॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे परीक्षिद्राज्ञोगुप्तगृहेवासवर्णनंनाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

* दशमोऽध्यायः *

तक्षकद्विजयोःसम्भाषणवर्णनम्

सूत उवाच

तस्मिन्नेव दिने नाम्नातक्षकस्तं नृपोत्तमम्। शप्तंज्ञात्वा गृहात्तूर्णंनिःसृतःपुरुषोत्तमः। १
वृद्धब्राह्मणवेषेण तक्षकः पथि निर्गतः। अपश्यत्कश्यपं मार्गे व्रजन्तंनृपतिं प्रति। २
तमपृच्छत्पन्नगोऽसौ ब्राह्मणं मन्त्रवादिनम्। क्वभवांस्त्वरितो याति किञ्च कार्यं चिकीर्षति। ३

कश्यप उवाच

परीक्षितं नृपश्रेष्ठं तक्षकश्च प्रधक्ष्यति। तत्राहं त्वरितोयामि नृपं कर्तुमपज्वरम्। ४
मन्त्रोऽस्ति ममविप्रेन्द्रविषनाशकरःकिल। जीवयिष्याम्यहंतंवैजीवितव्येऽधुनाकिल। ५

तक्षक उवाच

अहंसपन्नगोब्रह्मंस्तंधक्ष्यामिमहीपतिम् । निवर्तस्वन शक्तस्त्वंमयादष्टंचिकित्सितुम्। ६

कश्यप उवाच

अहं दष्टं त्वया सर्प नृपं शप्तं द्विजेन वै। जीवयिष्याम्यसन्देहं कामं मन्त्रबलेन वै। ७

तक्षक उवाच

यदि त्वं जीवितं यासि मयादष्टं नृपोत्तमम्। मन्त्रशक्तिबलं विप्रदर्शयत्वं ममानघ। ८

धक्ष्याम्येनं च न्यग्रोधं विषदंष्ट्राभिरद्य वै ।

कश्यप उवाच

जीवयिष्ये त्वया दष्टं दग्धं वा पन्नगोत्तम! ॥९॥

सूत उवाच

अदशत्पन्नगोवृक्षं भस्मसाच्च चकारतम्। उवाच कश्यपं भूयो जीवयैनं द्विजोत्तम!।१०

दृष्ट्वा भस्मीकृतं वृक्षं पन्नगेन विषाग्निना। सर्वं भस्म समाहृत्यकश्यपोवाक्यमब्रवीत्।११
पश्यमन्त्रबलं मेऽद्य न्यग्रोधं पन्नगोत्तम। जीवयाम्यद्य वृक्षं वै पश्यतस्ते महाविष!।१२
इत्युक्त्वाजलमादायकश्यपोमन्त्रवित्तमः। सिषेच भस्मराशिं तं मन्त्रितेनैव वारिणा।१३
तद्वारिसेचनाज्जातांन्यग्रोधःपूर्ववच्छुभः। विस्मयंतक्षकःप्राप्तो दृष्ट्वातंजीवितन्नगम्।१४
तमाह कश्यपं नागः किमर्थं ते परिश्रमः। सम्पादयामितंकामंब्रूहिवाडव वाञ्छितम्।१५

कश्यप उवाच

वित्तार्थी नृपतिं मत्वा शप्तं पन्नग निःसृतः। गृहादहं चोपकर्तुं विद्यया नृपसत्तमम्।१६

तक्षक उवाच

वित्तंगृहाणविप्रेन्द्रयावदिच्छसिपार्थिवात्। ददामिस्वगृहंयाहिसकामोऽहंभवाम्यतः।१७

सूत उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनंतस्यकश्यपःपरमार्थवित्। चिन्तयामास मनसा किं करोमिपुनः पुनः।१८
धनं गृहीत्वा स्वगृहं प्रयामि यद्यहंपुनः। भविष्यतिन मेकीर्त्तिर्लोके लोभसमाश्रयात्।१९
जीवितेऽथ नृपश्रेष्ठेकीर्तिःस्यादचलामम। धनप्राप्तिश्च बहुधा भवेत्पुण्यञ्चजीवनात्।२०
रक्षणीयंयशःकामं धिग्धनं यशसा विना। सर्वस्वं रघुणापूर्वं दत्तं विप्राय कीर्त्तये।२१
हरिश्चन्द्रेण कर्णेन कीर्त्यर्थं बहुविस्तरम्। उपेक्षेयं कथं भूपं दह्यमानं विषाग्निना।२२
जीवितेऽद्य मया राज्ञि सुखं सर्वजनस्य च। अराजके प्रजानाशोभवितानात्र संशयः।२३
प्रजानाशस्य पापंमे भविष्यति मृते नृपे। अपकीर्तिश्च लोकेषु धनलोभाद्भविष्यति।२४
इतिसञ्चिन्त्यमनसाध्यानंकृत्वास कश्यपः। गतायुषंच नृपतिं ज्ञानवान्बुद्धिमत्तरः।२५
आपन्नमृत्युंराजानंज्ञात्वाध्यानेन कश्यपः। गृहं ययौ च धर्मात्माधनमादायतक्षकात्।२६
निवर्त्य कश्यपं सर्पः सप्तमे दिवसेनृपम्। हन्तुकामो जगामाशु नगरं नागसाह्वयम्।२७
शुश्रावनगरस्यान्ते प्रासादस्थंपरीक्षितम्। मणिमन्त्रौषधैःकामं रक्ष्यमाणमतन्द्रितम्।२८
चिन्ताविष्टस्तदानागो विप्रशापभयाकुलः। चिन्तयामासयोगेन प्रविशेऽयंगृहं कथम्।२९
वञ्चयामिकथञ्चैनं राजानं पापकारिणम्। विप्रशापाद्धतं मूढं विप्रपीडाकरं शठम्।३०
पाण्डवानां कुलेजातःकोऽपिनैतादृशोभवेत्। तापसस्य गले येन मृतःसर्पोनिवेशितः।३१
कृत्वा विगर्हितंकर्म जानन्कालगतिं नृपः। रक्षकान्भवने कृत्वा प्रासादमभिगम्य च।३२
मृत्युं वञ्चयते राजा वर्ततेऽद्य निराकुलः। तं कथं धक्षयिष्यामिविप्रवाक्येनचोदितः।३३
नजानातिच मन्दात्मामरणेह्यनिवर्तनम्। तेनासौरक्षकान्स्थाप्यसौधारुढोऽद्यमोदते।३४
यदि वै विहितो मृत्युर्दैवेनाऽमिततेजसा। स कथं परिवर्तेतकृतैर्यत्नैस्तु कोटिभिः।३५
पाण्डवस्यच दायादो जानन्मृत्युंगतंनृपः। जीवनेमतिमास्थायस्थितःस्थानेनिराकुलः।३६
दानपुण्यादिकंराजा कर्तुमर्हति सर्वथा। धर्मेणहन्यते व्याधिर्येनाऽऽयुःशाश्वतंभवेत्।३७
नोचेन्मृत्युविधिंकृत्वा स्नानदानादिकाः क्रियाः। मरणं स्वर्गलोकाय नरकायाऽन्यथा भवेत्।३८
द्विजपीडाकृतं पापं पृथग्वाऽस्य च भूपते। विप्रशापस्तथाघोर आसन्ने मरणेकिल।३९
नकोऽपिब्राह्मणःपार्श्वे य एवं प्रतिबोधयेत्। वेधसाविहितोमृत्युरनिवार्यस्तुसर्वथा।४०

इति सञ्चिन्त्य सर्पोऽसौ स्वान्नागान्निकटेस्थितान्।
कृत्वा तापसवेषांस्तान्प्राहिणोत्सुभुजङ्गमान्।।४१।।

फलमूलादिकं गृह्य राज्ञे नागोऽथ तक्षकः। स्वयञ्चकीटरूपेण फलमध्ये ससार ह।४२

निर्गतास्ते तदा नागाः फलान्यादाय सत्वराः ।
ते राजभवनम्प्राप्य स्थिताः प्रासादसन्निधौ ॥४३॥
रक्षकास्तापसान्दृष्ट्वा पप्रच्छुस्तच्चिकीर्षितम् ।
ऊचुस्ते भूपतिं द्रष्टुं प्राप्ताःस्मोऽद्य तपोवनात् ॥४४॥
अभिमन्युसुतंवीरं कुलार्कञ्चारुदर्शनम्। परिवर्धयितुं प्राप्ता मन्त्रैराथर्वणैस्तथा।४५
निवेदयध्वं राजानं दर्शनार्थागतान्मुनीन्। कृत्वाऽभिषेकान्यास्यामो दत्त्वा मिष्टफलानिच।४६
भारतानांकुलेक्वाऽपि न दृष्टा द्वाररक्षकाः। न श्रुतं तापसानान्तु राज्ञोऽसन्दर्शनंकिल।४७
आरोहामोवयंतत्र यत्र राजा परीक्षितः। आशीर्भिर्वर्धयित्वैनं दत्ताज्ञाः प्रव्रजामहे।४८
इत्याकर्ण्य वचस्तेषां तापसानांतुरक्षकाः। प्रत्यूचुस्तान्द्विजान्मत्वानिदेशंभूपतेर्यथा।४९
नाऽद्यवोदर्शनंविप्रा राज्ञःस्यादितिनोमतिः। श्वः सर्वतापसैरत्रत्वागंतव्यं नृपालये।५०
अनारोहस्तुप्रासादो विप्राणांमुनिसत्तमाः। विप्रशापभयाद्राज्ञ विहितोऽस्तिनसंशयः।५१
तदोचुस्तानथोविप्राःफलमूलजलानिच। विप्राशिषश्चराज्ञेऽथ ग्राहयन्तु सुरक्षकाः।५२
तेगत्वानृपतिंप्रोचुस्तापसानागताञ्जनाः। राजोवाचाऽनयध्वं वै फलमूलादिकञ्च यत्।५३
पृच्छध्वं तापसान्कार्यं प्रातरागमनंपुनः। प्रणामं कथयध्वंमे नाऽद्य संदर्शनंमम।५४
ते गत्वाऽथ समादाय फलमूलादिकञ्च यत्। राज्ञे समर्पयामासुर्बहुमानपुरःसरम्।५५
गतेषुतेषु नागेषु विप्रवेषावृतेषु च। फलान्यादाय राजाऽसौ सचिवानिदमब्रवीत्।५६
सुहृदो भक्षयंत्वद्य फलान्येतानि सर्वशः। अद्म्यहञ्चैकमेतद्वैफलं विप्राऽर्पितं महत्।५७
इत्युक्त्वातत्फलं दत्त्वा सुहृद्भ्यश्चोत्तरासुतः। करे कृत्वा फलं पक्वं ददार नृपतिः स्वयम्।५८
विदारितं फलं राज्ञा तत्र क्रिमिरभूदणुः। स कृष्णनयनस्ताम्रो दृष्टोभूपतिनास्ययम्।५९
तंदृष्ट्वानृपतिःप्राह सचिवान्विस्मितानथ। अस्तमभ्येति सविता विषादद्यन मे भयम्।६०
अङ्गीकरोमितंशापंकृमिकोमांदशत्वयम् ।एवमुक्त्वासराजेन्द्रो ग्रीवायांसन्यवेशयत्।६१
अस्तं जातं दिवानाथेधृतःकण्ठेथकीटकः। तक्षकस्तुतदाजातः कालरूपी भयानकः।६२
राजासम्वेष्टितस्तेन दष्टश्चापि महीपतिः। मन्त्रिणो विस्मयं प्राप्तारुरुदुर्भृशदुःखिताः।६३
घोररूपमहिं वीक्ष्य दुद्रुवुस्ते भयार्दिताः। चुकुशू रक्षकाः सर्वे हाहाकारोमहानभूत्।६४
वेष्टितो भोगिभोगेन विनष्टबहुपौरुषः। नोवाचनृपतिः किञ्चिन्न चचालोत्तरासुतः।६५
उत्थिताग्निशिखा घोरा विषजा तक्षकाननात्। प्रजज्वालनृपंत्वाशुगतप्राणंचकारह ।६६
हृत्वाऽऽशु जीवितं राज्ञस्तक्षको गगनेगतः। जगद्दग्धं तु कुर्वाणं ददृशुस्तं जना इह।६७
स पपात गतप्राणो राजा दग्ध इवद्रुमः। चुक्रुशुश्चजनाः सर्वे मृतं दृष्ट्वा नराधिपम्।६८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां द्वितीयस्कन्धे परीक्षिन्मरणंनामदशमोऽध्यायः॥१०॥

* एकादशोऽध्यायः *

जनमेजयसमीपेमुनिरुत्तङ्कस्यागमनम् रुरोराख्यानकथनञ्च

सूत उवाच

गतप्राणं तु राजानं बालं पुत्रं समीक्ष्य च। चक्रुश्चमन्त्रिणःसर्वेपरलोकस्यसत्क्रियाः। १
गङ्गातीरे दग्धदेहं भस्मप्रायंमहीपतिम्। अगुरुभिश्चाभियुक्तायांचितायामध्यरोपयन्। २
दुर्मरणे मृतस्यास्य चक्रुश्चैवौर्ध्वदैहिकीम्। क्रियां पुरोहितास्तस्य वेदमन्त्रै विंधानतः। ३

ददुर्दानानि विप्रेभ्यो गाः सुवर्णं यथोचितम्। अन्नंबहुविधं तत्रवस्त्राणिविविधानिच।४
सुमुहूर्ते सुतं बालं प्रजानां प्रीतिवर्धनम्। सिंहासने शुभे तत्र मन्त्रिणः सन्यवेशयन्।५
पौरजानपदा लोकाश्चक्रुस्तं नृपतिं शिशुम्। जनमेजयनामानं राजलक्षणसंयुतम्।६
धात्रेयी शिक्षयामास राजचिह्नानि सर्वशः। दिने दिने वर्धमानः स बभूव महामतिः।७
प्राप्तेचैकादशे वर्षे तस्मै कुलपुरोहितः। यथोचितां ददौ विद्यां जग्राहसयथोचिताम्।८
धनुर्वेदं कृपः पूर्णं ददावस्मै सुसंस्कृतम्। अर्जुनाय यथा द्रोणः कर्णायभार्गवो यथा।९
सम्प्राप्तविद्योबलवान्बभूवदुरतिक्रमः। धनुर्वेदे तथा वेदे पारगः परमार्थचित्।१०
धर्मशास्त्रार्थकुशलः सत्यवादी जितेन्द्रियः। चकार राज्यं धर्मात्मापुराधर्मसुतोयथा।११
ततः सुवर्णवर्माक्षो राजाकाशिपतिः किल। वपुष्टमां शुभांकन्यां ददौपारीक्षितायच।१२
स तांप्राप्याऽसितापाङ्गीं मुमुदेजनमेजयः। काशिराजसुतांकान्तांप्राप्यराजायथापुरा।१३
विचित्रवीर्यो मुमुदे सुभद्रां च यथाऽर्जुनः। विजहार महीपालो वनेषूपवनेषु च।१४
तयाकमलपत्राक्ष्या शच्या शतक्रतुर्यथा। प्रजास्तस्य सुसन्तुष्टाबभूवुः सुखलालिताः।१५
मन्त्रिणः कर्मकुशलाश्चक्रुः कार्याणि सर्वशः। एतस्मिन्नेव कालेतु मुनिरुत्तङ्कनामकः।१६
तक्षकेणपरिक्लिष्टोहस्तिनापुरमभ्यगात्। वैरस्यापचितिंकोऽस्यप्रकुर्यादितिचिन्तयन्।१७
परीक्षितसुतं मत्वा तं नृपं समुपागतः। कार्याकार्यंनजानासि समये नृपसत्तम!।१८
अकर्त्तव्यं करोष्यद्य कर्तव्यंन करोषि च। किं त्वां संप्रार्थयाम्यद्यगतामर्षंनिरुद्यमम्।१९
अवैरज्ञमतन्त्रज्ञं बालचेष्टासमन्वितम्।

जनमेजय उवाच

किं वैरं न मया ज्ञातं न किं प्रतिकृतं मया ।।२०।।
तद्वद् त्वं महाभाग ! करोमि यदनन्तरम् ।

उत्तङ्क उवाच

पिता ते निहतो भूप ! तक्षकेण दुरात्मना ।।२१।।
मन्त्रिणस्त्वं समाहूय पृच्छस्व पितृनाशनम् ।

सूत उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं राज पप्रच्छ मन्त्रिसत्तमान् ।।२२।।
ऊचुस्ते द्विजशापेन दष्टः सर्पेण वै मृतः ।

जनमेजय उवाच

शापोऽत्र कारणं राज्ञः शप्तस्य मुनिना किल ।।२३।।
तक्षकस्य तु को दोषो ब्रूहि मे मुनिसत्तम !

उत्तङ्क उवाच

तक्षकेण धनं दत्त्वा कश्यपः सन्निवारितः ।।२४।।
न स किं तक्षको वैरी पितृहा तव भूपते। भार्या रुरोः पुरा भूप दष्टासर्पेण सामृता।२५
अविवाहिता तु मुनिना जीविताचपुनःप्रिया। रुरुणाऽपिकृतातत्रप्रतिज्ञाचातिदारुणा।२६
यं यं सर्पं प्रपश्यामि तं तं हन्म्यायुधेन वै। एवं कृत्वा प्रतिज्ञांस शस्त्रपाणीरुरुस्तदा।२७
व्यचरत्पृथिवीं राजन्निघ्नन्सर्पान्यतस्ततः। एकदा स वने घोरं डुण्डुभंजरसान्वितम्।२८
अपश्यद्दण्डमुद्यम्य हन्तुं तं समुपाययौ। अभ्यहन्नुषितो विप्रस्तमुवाचाऽथडुण्डुभः।२९
नाऽपराध्नोमि ते विप्र! कस्मान्मामभिहंसि वै ।

रुरुरुवाच

प्राणप्रिया मे दयिता दष्टा सर्पेण सा मृता ।।३०।।

प्रतिज्ञेयं तदा सर्प दुःखितेन मया कृता ।

डुण्डुभ उवाच

नाऽहं दशामि तेऽन्ये वै ये दशन्ति भुजङ्गमाः ।।३१।।
शरीरसमयोगेन न मां हिंसितुमर्हसि ।

उत्तङ्क उवाच

श्रुत्वा तां मानुषीं वाणीं सर्पेणोक्तां मनोहराम् ।।३२।।
रुरुः प्रपच्छ कोऽसि त्वं कस्माड्डुण्डुभतां गतः ।

सर्प उवाच

ब्राह्मणोऽहं पुरा विप्र सखा मे खगमाऽभिधः ।।३३।।
विप्रो धर्मभृतां श्रेष्ठः सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
स मया वञ्चितो मौर्ख्यात्सर्पं कृत्वा च तार्णकम् ।।३४।।
भयं च प्रापितोऽत्यर्थमग्निहोत्रगृहे स्थितः । तेन भीतेन शप्तोऽहं विह्वलेनातिवेपिना ।३५
भव सर्पो मन्दबुद्धे । येनाहंधर्षितस्त्वया । मया प्रसादितोऽत्यर्थंसर्पेणाऽसौद्विजोत्तमः ।३६
मामुवाचाऽथ तत्क्रोधात्किञ्चिच्छांतिमवाप्य च ।
रुरुस्ते मोचिता शापस्याऽस्य सर्प ! भविष्यति ।।३७।।
प्रमतेस्तु सुतो नूनमिति मां सोऽब्रवीद्वचः । सोऽहं सर्पो रुरुस्त्वंचशृणुमेपरमंवचः ।३८
अहिंसा परमोधर्मो विप्राणां नाऽत्रसंशयः । दया सर्वत्र कर्तव्या ब्राह्मणेनविजानता ।३९
यज्ञादन्यत्र विप्रेन्द्र न हिंसा याज्ञिकी मता ।

उत्तङ्क उवाच

सर्पयोनेर्विनिर्मुक्तो ब्राह्मणोऽसौ रुरुस्ततः ।।४०।।
कृत्वा तस्य च शापान्तं परित्यक्तंचहिंसनम् । विवाहितातेनबालामृतासञ्जीवितापुनः ।४१
कदनं सर्वसर्पाणां कृतं वैरमनुस्मरन् । त्वं तु वैरं समुत्सृज्य वर्तसे पन्नगेष्वथ ।४२
विमन्युर्भरतश्रेष्ठ पितृघातकरेषु वै । अन्तरिक्षे मृतस्तातः स्नानदानविवर्जितः ।४३
तस्योद्धारं च राजेन्द्र कुरु हत्वाऽथ पन्नगान् । पितुर्वैरंनजानातिजीवन्नेवमृतोहिसः ।४४
दुर्गतिस्ते पितुस्तावद्यावत्तान्न हनिष्यसि । अम्बामखमिषंकृत्वा कुरु यत्नं नृपोत्तम ।४५
सर्पसत्रं महाराज ! पितुर्वैरमनुस्मन् ।

सूत उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा राजा जन्मेजयस्तदा ।।४६।।
नेत्राभ्यामश्रुपातं च चकाराऽतीव दुःखितः । धिङ् मामस्तुसुदुर्बुद्धेर्वृथामानकरस्यवै ।४७
पिता यस्य गतिंघोरां प्राप्तः पन्नगपीडितः । अद्याहंमखमारभ्यकरोम्यपचितिंपितुः ।४८
हत्वा सर्पानसंदिग्धो दीप्यमानेविभावसौ । आहूयमन्त्रिणःसर्वान्राजावचनमब्रवीत् ।४९
कुर्वन्तु यज्ञसम्भारं यथार्हं मन्त्रिसत्तमाः । गङ्गातीरे शुभांभूमिंमापयित्वाद्विजोत्तमैः ।५०
कुर्वन्तु मण्डपं स्वस्थाः शतस्तम्भं मनोहरम् । वेदी यज्ञस्य कर्तव्या ममाऽद्य सचिवाः खलु ।५१
तदङ्गत्वे विधेयोवै सर्पसत्रः सुविस्तरः । तक्षकस्तु पशुस्तत्र होतोत्तङ्को महामुनिः ।५२
शीघ्रमाहूयतां विप्राः सर्वज्ञा वेदपारगाः ।
मन्त्रिणस्तु तदा चक्रुर्भूपवाक्यैर्विचक्षणाः ।।५३।।
यज्ञस्य सर्वसम्भारं वेदिं यज्ञस्य विस्तृताम् । हवने वर्तमाने तु सर्पाणां तक्षको गतः ।५४
इन्द्रम्प्रति भयार्तोऽहंत्राहिमाऽमिति चाऽब्रवीत् ।
भयभीतं समाश्वास्य स्वाऽऽसने सन्निवेश्य च ।।५५।।

ददावभयमत्यर्थं निर्भयो भव पन्नग। तमिन्द्रशरणं ज्ञात्वा मुनिर्दत्ताभयं तथा।५६
उत्तङ्कोऽह्वयदुद्विग्नः सेन्द्रं कृत्वा निमन्त्रणम्। स्मृतस्तदा तक्षकेण यायावरकुलोद्भवः।५७
आस्तीको नाम धर्मात्मा जरत्कारुसुतो मुनिः। तत्रागत्यमुनेर्बालस्तुष्टावजनमेजयम् ।५८
राजा तमर्चयामासदृष्ट्वा बालंसुपण्डितम्। अर्चयित्वानृपस्तंतुछन्दयामासवाञ्छितैः।५९
स तु वव्रे महाभाग यज्ञोऽयं विरमत्विति। सत्यबद्धो नृपस्तेन प्रार्थितश्च पुनस्तथा।६०
होमं निवर्तयामास सर्पाणां मुनिवाक्यतः। भारतं श्रावयामासवैशम्पायनविस्तरात्।६१
श्रुत्वाऽपि नृपतिः कामं न शान्तिमभिजग्मिमान् ।
व्यासं पप्रच्छ भूपालो मम शान्तिः कथं भवेत् ।।६२।।
मनोऽतिदह्यते कामं किं करोमि वदस्व मे। पिता मे दुर्भगस्यैव मृतःपार्थसुतात्मजः।६३
क्षत्रियाणां महाभाग संग्रामे मरणं वरम्। रणे वा मरणं व्यास गृहेवाविधिपूर्वकम्।६४
मरणं न पितुर्मेऽभूदन्तरिक्षेमृतोऽवशः। शान्त्युपायं वदस्वाऽत्र त्वं च सत्यवतीसुत।६५
यथा स्वर्गं व्रजेदाशु पिता मे दुर्गतिं गतः ।।६६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे सर्पसत्रवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ।।११।।

* द्वादशोऽध्यायः *

जरत्कारुमुनिकथानकवर्णनम्

सूत उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य व्यासः सत्यवतीसुतः। उवाच वचनं तत्र सभायांनृपतिंचतम्।१

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि पुराणं गुह्यमद्भुतम्। पुण्यं भागवतं नाम नानाख्यानयुतंशिवम्।२
अध्यापितं मया पूर्वं शुकायात्मसुताय वै। श्रावयामि नृप त्वांहिरहस्यं परमं मम।३
धर्मार्थकाममोक्षाणां कारणं श्रवणात्किल। शुभदं सुखदं नित्यं सर्वागमसमुद्धृतम्।४

जनमेजय उवाच

आस्तीकोऽयंसुतः कस्य विघ्नार्थं कथमागतः। प्रयोजनंकिमत्रास्यसर्पाणांरक्षणेप्रभो।५
कथयैतन्महाभाग विस्तरेण कथानकम्। पुराणं च तथा सर्वं विस्तराद्वद सुव्रत।६

व्यास उवाच

जरत्कारुर्मुनिः शान्तो न चकार गृहाश्रमम्। तेन दृष्टा वने गर्तेलम्बमानाःस्वपूर्वजाः।७
ततस्तमाहुः कुरु पुत्र! दारान्यथा च नः स्यात्परमा हि तृप्तिः ।
स्वर्गे व्रजामःखलु दुःखमुक्ता वयं सदाचारयुते सुते वै ।।८।।
स तानुवाचाऽथ लभे समानामयाचितां चाऽतिवशानुगाञ्च ।
तदा गृहारम्भमहं करोमि ब्रवीमि तथ्यं मम पूर्वजा वै ।।९।।
इत्युक्त्वा ताञ्जरत्कारुर्गतस्तीर्थान्प्रति द्विजः ।
तदैवपन्नगाःशप्तामात्राग्नौनिपतन्त्विति ।।१०।।
कश्यपस्यमुनेः पत्न्यौ कद्रूश्च विनतातथा। दृष्ट्वाऽऽदित्यरथे चाश्वमूचतुश्चपरस्परम्।११
तं दृष्ट्वा च तदा कद्रूर्विनतामिदमब्रवीत्। किम्वर्णोऽयं हयो भद्रे सत्यंप्रब्रूहिमाचिरम्।१२

विनतोवाच

श्वेत एताश्वराजोऽयं किं वा त्वं मन्यसे शुभे। ब्रूहिवर्णंत्वमप्यस्यततस्तुविपणावहे ।१३

कद्रूरुवाच

कृष्णवर्णमहं मन्ये हयमेनं शुचिस्मिते।एहि सार्द्धमया दिव्यं दासीभावायभामिनि।१४

सूत उवाच

कद्रूश्च स्वसुतानाह सर्वान्सर्पान्वशे स्थितान्।वालाञ्छ्यामान्प्रकुर्वन्तु यावन्तोऽश्वशरीरके।१५
नेति केचन तत्राहुस्तानथाऽसौ शशाप ह।जनमेजयस्य यज्ञे वै गमिष्यथहुताशनम्।१६
अन्ये चक्रुर्हयं सर्पाः कर्बुरंवर्णभोगकैः।वेष्टयित्वाऽस्यपुच्छन्तु मातुःप्रियचिकीर्षया।१७
भगिन्यौ च सुसंयुक्ते गत्वा ददृशतुर्हयम्।कर्बुरं तं हयं दृष्ट्वा विनता चातिदुःखिता।१८
तदाऽऽजगाम गरुडः सुतस्तस्या महाबलः।स दृष्ट्वा मातरं दीनामपृच्छत्पन्नगाशनः।१९

मातः ! कथं सुदीनाऽसि रुदितेव विभासि मे ।
जीवमाने मयि सुते तथाऽन्ये रविसारथौ ॥२०॥
दुःखिताऽसि ततो वां धिग्जीवितं चारुलोचने! ।
किं जातेन सुतेनाऽथ यदि माता सुदुःखिता ॥२१॥
शंस मे कारणं मातः ! करोमि विगतज्वराम् ।

विनतोवाच

सपत्न्या दास्यहं पुत्र! किं ब्रवीमि वृथा क्षता ॥२२॥
वह मां स ब्रवीत्यद्य तेनाऽस्मि दुःखिता सुत! ।

गरुड उवाच

वहिष्येऽहं तत्र किल यत्र सा गन्तुमुत्सुका ॥२३॥
मा शोकं कुरु कल्याणि! निश्चिन्तां त्वां करोम्यहम् ।

व्यास उवाच

इत्युक्ता सा गता पार्श्वं कद्रोश्च विनता तदा ॥२४॥

दासीभावमपाकर्तुं गरुडोऽपि महाबलः।उवाह तां सपुत्रां वैसिन्धोःपारं जगाम ह।२५
गत्वा तां गरुडः प्राह ब्रूहि मातर्नमोऽस्तुते।कथं मुच्येतमेमातादासीभावादसंशयम्।२६

कद्रूरुवाच

अमृतं देवलोकात्त्वं बलादानीयमे सुतान्।समर्पयसुताऽद्याऽऽशुमातरंमोचयाबलाम्।२७

व्यास उवाच

इत्युक्तः प्रययौ शीघ्रमिन्द्रलोकं महाबलः।कृत्वायुद्धंजहाराऽऽशुसुधाकुम्भंखगोत्तमः।२८
समानीयामृतं मात्रे वैनतेयः समर्पयत्।मोचिता विनता तेन दासीभावादसंशयम्।२९
अमृतं सञ्जहारेन्द्रःस्नातुं सर्पा यदा गताः।दासीभावाद्विनिर्मुक्ताविनताविपतेर्बलात्।३०
तत्राऽऽस्तीर्णाः कुशास्तैस्तु लीढाः पन्नगनायकैः।द्विजिह्वास्ते सुसम्पन्नाः कुशाग्रस्पर्शमात्रतः।३१
मात्राशप्ताश्च ये नागा वासुकिप्रमुखाःशुचाः।ब्रह्माणंशरणंगत्वातेह्योचुःशापजंभयम्।३२
तानाह भगवान्ब्रह्मा जरत्कारुर्महामुनिः।वासुकेर्भगिनींतस्मै अर्पयध्वं सनामिकाम्।३३
तस्यांयोजायतेपुत्रः स वस्त्राताभविष्यति।आस्तीकइतिनामाऽसौभवितानात्रसंशयः।३४
वासुकिस्तु तदाकर्ण्यवचनंब्रह्मणःशिवम्।वनंगत्वा सुतां तस्मै ददौ विनयपूर्वकम्।३५
समानान्तां मुनिर्ज्ञात्वाजरत्कारुरुवाचतम्।अप्रियंमेयदाकुर्यात्तदातांसन्त्यजाम्यहम्।३६
वाग्बन्धंतादृशंकृत्वामुनिर्जग्राह तां स्वयम्।दत्त्वाचवासुकिःकाभंभवनं स्वं जगामह।३७
कृत्वापर्णकुटींशुभ्रां जरत्कारुर्महावने।तया सह सुखं प्राप्त रममाणः परन्तप!।३८

एकदाभोजनंकृत्वासुप्तोऽसौमुनिसत्तमः। भगिनीवासुकेस्तत्र संस्थिता वरवर्णिनी।३९
न सम्बोधयितव्योऽहंत्वयाकान्तेकथञ्चन। इत्युक्त्वातुगतोनिद्रां मुनिस्तांसुदतींतदा।४०
रविरस्तगिरिंप्राप्तःसन्ध्याकालउपस्थिते। किंकरोमिनमेशान्तिस्त्यजेन्मांबोधितःपुनः।४१
धर्मलोपभयाद्भीता जरत्कारुरचिन्तयत्। नोचेत्प्रबोधयाम्येनं सन्ध्याकालो वृथा व्रजेत्।४२
धर्मनाशाद्वरं त्यागस्तथाऽपि मरणं ध्रुवम्। धर्महानिर्नराणां हि नरकाय भवेत्पुनः।४३
इति सञ्चिन्त्य सा बाला तं मुनिं प्रत्यबोधयत्। सन्ध्याकालोऽपि संजात उत्तिष्ठोत्तिष्ठ सुव्रत!।४४
उत्थितोऽसौ मुनिः कोपात्तामुवाच व्रजाम्यहम्। त्वं तु भ्रातृगृहं याहि निद्राविच्छेदकारिणि!।४५
वेपमानाऽब्रवीद्वाक्यमित्युक्तामुनिनातदा। भ्राता दत्ता यदर्थं तत्कथंस्यादमितप्रभ!।४६
मुनिःप्राहजरत्कारुं तदस्तीति निराकुलः। गता सा मुनिनात्यक्ता वासुकेःसदनं तदा।४७

पृष्टा भ्रात्राऽब्रवीद्वाक्यं यथोक्तं पतिना तदा।
अस्तीत्युक्त्वा च हित्वा मां गतोऽसौ मुनिसत्तमः॥४८॥

वासुकिस्तुतदाकर्ण्यसत्यवाग्मुनिरित्युत। विश्वासंचपरंकृत्वा भगिनींतांसमाश्रयत्।४९
ततःकालेनकियताजातोऽसौमुनिबालकः। आस्तीकइतिनामाऽसौविख्यातःकुरुसत्तम।५०
तेनाऽयंरक्षितोयज्ञस्तव पार्थिवसत्तम। मातृपक्षस्य रक्षार्थं मुनिना भावितात्मना।५१
भव्यंकृतंमहाराज मानितोऽयंत्वयामुनिः। यायावरकुलोत्पन्नो वासुकेर्भगिनीसुतः।५२
स्वस्तितेऽस्तुमहाबाहो भारतंसकलं श्रुतम्। दानानिबहुदत्तानिपूजिता मुनयस्तथा।५३
कृतेन सुकृतेनापि न पिता स्वर्गतिं गतः। पावितं न कुलं कृत्स्नं त्वया भूपतिसत्तम।५४
देव्याश्चाऽऽयतनंभूपविस्तीर्णंकुरु भक्तितः। येन वै सकलासिद्धिस्तव स्याज्जनमेजय।५५
पूजितापरयाभक्त्या शिवासकलदा सदा। कुलवृद्धिंकरोत्येव राज्यञ्च सुस्थिरं सदा।५६
देवीमखं विधानेन कृत्वा पार्थिवसत्तम। श्रीमद्भागवतं नाम पुराणं परमं श्रृणु।५७
त्वामहंश्रावयिष्यामिकथांपरमपावनीम्। संसारतारिणींदिव्यां नानारससमाहृताम्।५८
न श्रोतव्यंपरं चास्मात्पुराणाद्विद्यतेभुवि। नाराध्यंविद्यते राजन्देवीपादाम्बुजादृते।५९
ते सभाग्याः कृतप्रज्ञा धन्यास्ते नृपसत्तम। येषां चित्ते सदा देवी वसति प्रेमसंकुले।६०

सुदुःखितास्ते दृश्यन्ते भुवि भारत भारते।
नाऽऽराधिता महामाया यैर्जनैश्चसदाऽम्बिका॥६१॥
ब्रह्मादयः सुराः सर्वे यदाराधनतत्पराः।
वर्तन्ते सर्वदा राजन्स्तां न सेवेत कोजनः॥६२॥
य इदं श्रृणुयान्नित्यं सर्वान्कामानवाप्नुयात्।
भगवत्या समाख्यातं विष्णवे यदनुत्तमम्॥६३॥
तेन श्रुतेन ते राजंश्चित्तशान्तिर्भविष्यति।
पितृणां चाक्षयः स्वर्गः पुराणश्रवणाद्भवेत्॥६४॥

इति श्री देवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां द्वितीयस्कन्धे श्रोतृप्रवक्तृप्रसंगो नाम द्वादशोऽध्यायः॥१२॥

स्कन्धश्चायं समाप्तः।२।

द्वाविंशत्यधिकसंख्यैःपद्यैःसप्तशतैः शुभैः।
श्रीमद्व्यासमुखोद्गीतैर्द्वितीयस्कन्ध ईरितः॥१॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

देवीभागवतपुराणम्

तृतीयं स्कन्धम्

प्रथमोऽध्यायः

भुवनेश्वरीनिर्णयवर्णनम्

जनमेजय उवाच

भगवन्भवता प्रोक्तं यज्ञमम्बाभिधं महत्। सा का कथंसमुत्पन्नाकुत्रकस्माच्चकिंगुणा। १
कीदृशश्च मखस्तस्याः स्वरूपं कीदृशंतथा। विधानंविधिवद्ब्रूहिसर्वज्ञोऽसिदयानिधे। २
ब्रह्माण्डस्य तथोत्पत्तिं वद विस्तरतस्तथा। यथोक्तं यादृशं ब्रह्मन्नखिलं वेत्सि भूसुर। ३
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च त्रयो देवा मयाश्रुताः। सृष्टिपालनसंहारकारकाःसगुणास्त्वमी। ४
स्वतन्त्रास्ते महात्मानः पाराशर्य! वदस्व मे। आहोस्वित्परतन्त्रास्ते श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम्। ५
मृत्युधर्माश्च ते नोवासच्चिदानन्दरूपिणः। अधिभूतादिभिर्युक्तानवादुःखैस्त्रिधात्मकैः। ६
कालस्य वशगा नो वा ते सुरेन्द्रामहाबलाः। कथंतेवैसमुत्पन्नाःकस्मादितिचसंशयः। ७
हर्षशोकयुतास्तेवैनिद्राऽऽलस्यसमन्विताः। सप्तधातुमयास्तेषांदेहाःकिंवाऽन्यथामुने। ८
कैर्द्रव्यैर्निर्मितास्ते वै कैर्गुणैरिन्द्रियैस्तथा। भोगश्च कीदृशस्तेषां प्रमाणमायुषस्तथा। ९
निवासस्थानमप्येषां विभूतिंचवदस्वमे। श्रोतुमिच्छाम्यहंब्रह्मन्विस्तरेणकथामिमाम्। १०

व्यास उवाच

दुर्गमः प्रश्नभारोऽयंकृतो राजंस्त्वयाऽधुना। ब्रह्मादीनांसमुत्पत्तिःकस्मादितिमहामते। ११
एतदेव मयापूर्वं पृष्टोऽसौ नारदो मुनिः। विस्मितः प्रत्युवाचेदमुत्थितः शृणु भूपते। १२
कस्मिंश्च समये चाऽहं गङ्गातीरे स्थितं मुनिम्। अपश्यंनारदंशान्तंसर्वज्ञंवेदवित्तमम्। १३
दृष्ट्वाऽहं मुदितो गत्वा पादयोरपतं मुनेः। तेनाऽऽज्ञप्तः समीपेऽस्यसम्विष्टश्च वरासने। १४
श्रुत्वा कुशलवार्तां वै तमपृच्छं विधेः सुतम्। निविष्टं जाह्नवीतीरे निर्जने सूक्ष्मवालुके। १५
मुनेऽतिविततस्यास्य ब्रह्माण्डस्य महामते। कः कर्ता परमःप्रोक्तस्तन्मेब्रूहिविधानतः। १६
कस्मादेतत्समुत्पन्नं ब्रह्माण्डं मुनिसत्तम। अनित्यं वा तथानित्यंतदाचक्ष्वद्विजोत्तम। १७
एककर्तृकमेतद्वा बहुकर्तृकमन्यथा। अकर्तृकं न कार्यं स्याद्विरोधोऽयं विभाति मे। १८
इति सन्देहसन्दोहे मग्नंमांतारयाऽधुना। विकल्पकोटीःकुर्वाणंसंसारेऽस्मिन्प्रविस्तरे। १९
ब्रुवन्ति शङ्करं केचिन्मत्वा कारणकारणम्। सदाशिवं महादेवं प्रलयोत्पत्तिवर्जितम्। २०
आत्मारामं सुरेशं च त्रिगुणं निर्मलंहरम्। संसारतारकंनित्यंसृष्टिस्थित्यंतकारणम्। २१
अन्ये विष्णुं स्तुवन्त्येनं सर्वेषां प्रभुमीश्वरम्। परमात्मानमव्यक्तंसर्वशक्तिसमन्वितम्। २२
भुक्तिदं मुक्तिदं शान्तं सर्वादिं सर्वतोमुखम्। व्यापकं विश्वशरणमनादिनिधनंहरिम्। २३
धातारं च तथा चाऽन्ये ब्रुवन्ति सृष्टिकारणम्। तमेव सर्ववेत्तारं सर्वभूतप्रवर्तकम्। २४
चतुर्मुखं सुरेशानं नाभिपद्मभवं विभुम्। स्रष्टारं सर्वलोकानां सत्यलोकनिवासिनम्। २५
दिनेशं प्रवदन्त्यन्ये सर्वेशं वेदवादिनः। स्तुवन्ति चैव गायन्ति सायंप्रातरतन्द्रिताः। २६
यजन्ति च तथा यज्ञे वासवं च शतक्रतुम्। सहस्राक्षं देवदेवं सर्वेषां प्रभुमुल्बणम्। २७
यज्ञाधीशं सुराधीशं त्रिलोकेशं शचीपतिम्। यज्ञानां चैव भोक्तारं सोमपं सोमपप्रियम्। २८
वरुणं च तथा सोमं पावकं पवनं तथा। यमं कुबेरं धनदं गणाधीशं तथाऽपरे। २९

हेरम्बं गजवक्त्रं च सर्वकार्यप्रसाधकम्। स्मरणात्सिद्धिदं कार्यं कामदंकामगंपरम्।३०
भवानीं केचनाचार्याःप्रवदन्त्यखिलार्थदाम्। आदिमायांमहाशक्तिंप्रकृतिं पुरुषानुगाम्।३१
ब्रह्मैकत्वसमापन्नां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम्। मातरं सर्वभूतानां देवतानां तथैव च।३२
अनादिनिधनांपूर्णांव्यापिकांसर्वजन्तुषु । ईश्वरीं सर्वलोकानांनिर्गुणांसगुणांशिवाम्।३३
वैष्णवीं शाङ्करीं ब्राह्मीं वासवीं वारुणीं तथा।
वाराहीं नारिसिंहीं च महालक्ष्मीं तथाऽऽद्भुताम् ॥३४॥
वेदमातरमेकां च विद्यां भवतरोःस्थिराम्। सर्वदुःखनिहन्त्रींचस्मरणात्सर्वकामदाम् ।३५
मोक्षदांच मुमुक्षूणांकामदांचफलार्थिनाम्। त्रिगुणातीतरूपांचगुणविस्तारकारकाम्।३६
निर्गुणांसगुणांतस्मात्तांध्यायन्तिफलार्थिनः । निरञ्जनं निराकारं निर्लेपं निर्गुणं किल।३७
अरूपं व्यापकं ब्रह्म प्रवदन्ति मुनीश्वराः। वेदोपनिषदि प्रोक्तस्तेजोमय इति क्वचित्।३८
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्रनयनस्तथा। सहस्रकरकर्णश्च सहस्रास्यः सहस्रपात्।३९
विष्णोः पादमथाकाशं परमं समुदाहृतम्। विराजं विरजं शान्तं प्रवदन्तिमनीषिणः।४०
पुरुषोत्तमं यथा चान्ये प्रवदन्ति पुराविदः। नैकोऽपीतिवदन्त्यन्ये प्रभुरीशः कदाचन।४१
अनीश्वरमिदं सर्वं ब्रह्माण्डमिति केचन। न कदाऽपीशजन्यं यज्जगदेतदचिन्तितम्।४२
सदैवेदमनीशं च स्वभावोत्थं सदेदृशम्। अकर्ताऽसौ पुमान्प्रोक्तः प्रकृतिस्तुतथाचसा।४३
एवं वदन्ति सांख्याश्च मुनयः कपिलादयः। एते सन्देहसन्दोहाः प्रभवन्ति तथाऽपरे।४४
विकल्पोपहतं चेतः किं करोमि मुनीश्वर। धर्माधर्मविवक्षायां न मनोमे स्थिरंभवेत्।४५
कोधर्मःकीदृशोऽधर्मश्चिह्नंनैवोपलभ्यते । देवाःसत्त्वगुणोत्पन्नाः सत्यधर्मव्यवस्थिताः।४६
पीड्यन्तेदानवैःपापैःकुत्रधर्मव्यवस्थितिः। धर्मस्थिताःसदाचाराःपाण्डवाममवंशजाः।४७
दुःखं बहुविधं प्राप्तास्तत्र धर्मस्य का स्थितिः। अतो मे हृदयं तात! वेपतेऽतीव संशये।४८
कुरु मेऽसंशयं चेतः समर्थोऽसि महामुने। त्राहिसंसारवार्धेस्त्वं ज्ञानपोतेन मां मुने।४९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां
तृतीयस्कन्धे भुवनेश्वरीवर्णनंनामप्रथमोऽध्यायः॥१॥

* द्वितीयोऽध्यायः *

विमानेनब्रह्मादीनाङ्गतिवर्णनम्

व्यास उवाच

यत्त्वया च महाबाहो पृष्टोऽहं कुरुसत्तम। तान्प्रश्नान्नारदः प्राह मया पृष्टो मुनीश्वरः। १

नारद उवाच

व्यास किं ते ब्रवीम्यद्य पुराऽयं संशयो मम। उत्पन्नोहृदयेऽत्यर्थंसन्देहासारपीडितः ।२
गत्वाऽहंपितरंस्थाने ब्रह्माणममितौजसम्। अपृच्छंयत्त्वयापृष्टंव्यासाद्यप्रश्नमुत्तमम्। ३
पितः कुतः समुत्पन्नंब्रह्माण्डमखिलंविभो। भवत्कृतेनवासम्यक्किंवाविष्णुकृतंत्विदम्। ४
रुद्रकृतं वाविश्वात्मन्ब्रूहि सत्यंजगत्पते। आराधनीयः कः कामंसर्वोत्कृष्टश्चकः प्रभुः। ५
तत्सर्वंवद मे ब्रह्मन्सन्देहांश्छिन्धि चानघ। निमग्नो ह्यस्मि संसारेदुःखरुपेऽनृपोत्तमे। ६
सन्देहान्दोलितंचेतो न प्रशाम्यति कुत्रचित्। न तीर्थेषु न देवेषु साधनेष्वितरेषुच। ७
अविज्ञाय परंतत्त्वं कुतः शान्तिः परन्तप। विकीर्णं बहुधा चित्तं नकुत्रस्थिरतांव्रजेत्। ८
कं स्मरामि यजे कम्बा कम्व्रजाम्यर्चयामि कम्। स्तौमि कं नाऽभिजानामि देवं सर्वेश्वरेश्वरम्। ९
ततो मां प्रत्युवाचेदं ब्रह्मा लोकपितामहः। मया सत्यवतीसूनो कृते प्रश्ने सुदुस्तरे।१०

ब्रह्मोवाच

किंब्रवीमिसुताद्याहंदुर्बोधंप्रश्नमुत्तमम् । त्वयाशक्यंमहाभाग विष्णोरपिसुनिश्चयात् ।११
रागी कोऽपि न जानाति संसारेऽस्मिन्महामते! । विरक्तश्च विजानाति निरीहो यो विमत्सरः ।१२
एकार्णवे पुरा जाते नष्टे स्थावरजङ्गमे । भूतमात्रे समुत्पन्ने संजज्ञे कमलादहम् ।१३
नापश्यं तरणिं सोमं न वृक्षान्न च पर्वतान् । कर्णिकायां समाविष्टश्चिन्तामकरवंतदा ।१४
कस्मादहंसमुद्भूतः सलिलेऽस्मिन्महार्णवे । को मे त्राताप्रभुःकर्तासंहर्तावायुगात्यये ।१५
न च भूर्विद्यते स्पष्टा यदाधारं जलं त्विदम् । पङ्कजं कथमुत्पन्नं प्रसिद्धं रूढियोगयोः ।१६
पश्याम्यद्यास्य पङ्कं तं मूलं वै पङ्कजस्य च । भविष्यति धरातत्र मूलंनास्त्यत्रसंशयः ।१७
उत्तरं सलिले तत्र यावद्वर्षसहस्रकम् । अन्वेषमाणो धरणीं नाऽवापं तां यदा तदा ।१८
तपस्तपेति चाऽऽकाशे वागभूदशरीरिणी । ततोमया तपस्तप्तं पद्मे वर्षसहस्रकम् ।१९
सृजेति पुनरुद्भूतः वाणी तत्र श्रुता मया । विमूढोऽहं तदाकर्ण्य कं सृजामि करोमि किम् ।२०
तदा दैत्यावतिप्राप्तौ दारुणौ मधुकैटभौ । ताभ्यां विभीषितश्चाहं युद्धाय मकरालये ।२१
ततोऽहं नालमालंव्य वारिमध्यमवातरम् । तदा तंत्र मया दृष्टः पुरुषः परमाद्भुतः ।२२
मेघश्यामशरीरस्तु पीतवासाश्चतुर्भुजः । शेषशायी जगन्नाथो वनमालाविभूषितः ।२३
शङ्खचक्रगदापद्माद्यायुधैः सुविराजितः । तमद्राक्षं महाविष्णुं शेषपर्यङ्कशायिनम् ।२४
योगनिद्रासमाक्रान्तमविस्पन्दिनमच्युतम् । शयानं तं समालोक्य भोगिभोगोपरि स्थितम् ।२५
चिन्तामभमाद्भुता जाताकिंकरोमीति नारद । मयास्मृतातदादेवीस्तुतानिद्रास्वरूपिणी ।२६
देहान्निर्गत्य सा देवीगगनेसंस्थिताशिवा । अवितर्क्यशरीरासा दिव्याभरणमण्डिता ।२७
विष्णोर्देहं विहायाशु विरराज नभःस्थिता । उदतिष्ठदमेयात्मा तया मुक्तो जनार्दनः ।२८
पञ्चवर्षसहस्राणि कृतवान्युद्धमुत्तमम् । तदा विलोकितौ दैत्यौ हरिणाविनिपातितौ ।२९
उत्सङ्गं विपुलं कृत्वा तत्रैवनिहतौचतौ । रुद्रस्तत्रैवसम्प्राप्तोयत्राऽऽवांसंस्थितावुभौ ।३०
त्रिभिः संवीक्षिताऽस्माभिः स्वस्था देवी मनोहरा । संस्तुता परमा शक्तिरुवाचाऽस्मानवस्थितान् ।३१
कृपावलोकनैः कृत्वा पावनैर्मुदितानथ ।

देव्युवाच

काजेशाः स्वानि कार्याणि कुरुध्वं समतन्द्रिताः ॥३२॥
सृष्टिस्थितिविशिष्टानिहतावेतौमहासुरौ । कृत्वास्वानिनिकेतानिवसध्वंविगतज्वराः ।३३
प्रजाश्चतुर्विधाः सर्वाः सृजध्वं स्वविभूतिभिः ।

ब्रह्मोवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्याः पेशलं सुखदं मृदु ॥३४॥
अब्रूम तामशक्ताःस्मःकथंकुर्मस्त्विमाःप्रजाः । न महीवितता मातः सर्वत्रविततंजलम् ।३५
न भूतानि गुणाश्चापि तन्मात्राणीन्द्रियाणि च । तदाकर्ण्य वचोऽस्माकं शिवा जाता स्मितानना ।३६
झटित्येवाऽऽगतं तत्र विमानं गगनाच्छुभम् । सोवाचाऽस्मिन्सुराः कामं विशध्वं गतसाध्वसाः ।३७
विमाने ब्रह्मविष्णवीशा दर्शयाम्यद्य चाऽद्भुतम् । तन्निशम्य वचस्तस्या ओमित्युक्त्वा पुनर्वयम् ।३८
समारुह्योपविष्टाः स्मोविमानेरत्नमण्डिते । मुक्तादामसुसम्वीतेकिंकिणीजालशब्दिते ।३९
सुरसद्मनिभेरम्येत्रयस्तत्राविशङ्किताः । सोपविष्टांस्ततोदृष्ट्वादेव्यस्मान्विजितेन्द्रियान् ।४०
स्वशक्त्या तद्विमानं वै नोदयामास चाऽम्बरे ॥४१॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे विमानेनब्रह्मादीनाङ्गतिवर्णनंनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

* तृतीयोऽध्यायः *

विमानस्थैर्हरादिभिर्देवीदर्शनम्

ब्रह्मोवाच

विमानं तन्मनोवेगं यत्रस्थानान्तरे गतम्। नजलंतत्रपश्यामोविस्मिताःस्मोवयंतदा ।१
वृक्षाःसर्वफला रम्याःकोकिलारावमण्डिताः। महीमहीधराःकामंवनान्युपवनानिच ।२
नार्यश्च पुरुषाश्चैव पशवश्च सरिद्वराः। वाप्यःकूपास्तडागाश्चपल्वलानि च निर्झराः।३
पुरतो नगरं रम्यं दिव्यप्राकारमण्डितम्। यज्ञशालासमायुक्तं नानाहर्म्यविराजितम्।४
प्रत्यभिज्ञा तदा जाताऽप्यस्माकंप्रेक्ष्य तत्पुरम्। स्वर्गोऽयमिति केनाऽसौनिर्मितोऽस्ति तदाऽद्भुतम्।५
राजानं देवसङ्काशं व्रजन्तंमृगयांवने। अस्माभिःसंस्थितादृष्टाविमानोपरिचाम्बिका।६
क्षणाच्चचाल गगने विमानं पवनेरितम्। मुहूर्ताद्वाततः प्राप्तं देशे चाऽन्ये मनोहरे।७
नन्दनं च वनं तत्र दृष्टमस्माभिरुत्तमम्। पारिजाततरुच्छायासंश्रितासुरभिःस्थिता।८
चतुर्दन्तोगजस्तस्याःसमीपे समवस्थितः। तत्राऽप्सरसां वृन्दानि मेनकाप्रभृतीनिच।९
क्रीडन्ति विविधैर्भावैर्गाननृत्यसमन्वितैः। गन्धर्वाःशतशस्तत्रयक्षाविद्याधरास्तथा ।१०
मन्दारवाटिकामध्ये गायन्तिच रमन्तिच। दृष्टः शतक्रतुस्तत्र पौलोम्या सहितः प्रभुः।११
वयन्तु विस्मिताश्चास्म दृष्ट्वात्रैविष्टपं तदा। यादः पतिं कुवेरञ्च यमं सूर्यं विभावसुम्।१२

विलोक्य विस्मिताश्चास्म वयं तत्र सुरान्स्थितान् ।
तदा विनिर्गतो राजा पुरात्तस्मात्सुमण्डितात् ।।१३।।

देवराज इवाऽक्षोभ्योनरवाह्यावनौ स्थितः। विमानस्था वयं तच्च चचालतरसागतम्।१४
ब्रह्मलोकं तदा दिव्यं सर्वदेवनमस्कृतम्। तत्र ब्रह्माणमालोक्य विस्मितौ हरकेशवौ।१५
सभायां तत्र वेदाश्च सर्वे सांगाः स्वरूपिणः। सागराः सरितश्चैव पर्वताःपन्नगोरगाः।१६
मामूचतुश्चतुर्वक्त्र कोऽयं ब्रह्मा सनातनः। ताववोचमहं नैव जाने सृष्टिपतिं पतिम्।१७
कोऽहंकोऽयंकिमर्थंवाभ्रमोऽयंमम चेश्वरौ। क्षणादथविमानंतच्चचालाऽऽशुमनोजवम् ।१८
कैलासशिखरेप्राप्तं रम्ये यक्षगणान्विते। मन्दारवाटिकारम्ये कीरकोकिलकूजिते।१९
वीणामुरजवाद्यैश्च नादिते सुखदे शिवे। यदा प्राप्तं विमानं तत्तदैव सदनाच्छुभात्।२०
निर्गतो भगवाञ्छम्भुर्वृषारूढस्त्रिलोचनः। पञ्चाननो दशभुजः कृतसोमार्धशेखरः।२१
व्याघ्रचर्मपरीधानो गजचर्मोत्तरीयकः। पार्ष्णिरक्षौमहावीरौ गजाननषडाननौ।२२
शिवेन सह पुत्रौ द्वौ व्रजमानौ विरेजतुः। नन्दिप्रभृतयः सर्वे गणपाश्च वराश्च ते।२३
जयशब्दं प्रयुंजाना व्रजन्ति शिवपृष्ठगाः। तं वीक्ष्य शङ्करंचान्यं विस्मितास्तत्रनारद।२४
मातृभिःसंशयाविष्टस्तत्राहं न्यवसं मुने। क्षणात्तस्माद्गिरेः शृङ्गाद्विमानं वातरंहसा।२५
वैकुण्ठसदनम्प्राप्तं रमारमणमन्दिरम्। असम्भाव्या विभूतिश्च तत्र दृष्टा मया सुत!।२६
विसिष्मिये तदा विष्णुर्दृष्ट्वा तत्पुरमुत्तमम्। सदनाग्रेययौ तावद्धरिः कमललोचनः।२७
अतसीकुसुमाभासः पीतवासाश्चतुर्भुजः। द्विजराजाधिरूढश्च दिव्याभरणभूषितः।२८
वीज्यमानस्तदा लक्ष्म्या कामिन्या चामरैः शुभैः। तं वीक्ष्य विस्मिताः सर्वे वयं विष्णुं सनातनम्।२९
परस्परं निरीक्षन्तः स्थितास्तस्मिन्वरासने। ततश्चचाल तरसा विमानं वातरंहसा।३०
सुधासमुद्रःसम्प्राप्तोमिष्टवारिमहोर्मिमान् । यादोगणसमाकीर्णश्चलद्वीचिविराजितः।३१
मन्दारपारिजाताद्यैःपादपैरतिशोभितः । नानाऽऽस्तरणसंयुक्तोनानाचित्रविचित्रितः।३२
मुक्तादामपरिक्लिष्टो नानादामविराजितः। अशोकबकुलाख्यैश्च वृक्षैःकुरुवकादिभिः।३३

संवृतःसर्वतःसौम्यैः केतकीचम्पकैर्वृतः। कोकिलारावसम्पुष्टो दिव्यगन्धसमन्वितः।३४
द्विरेफातिरणत्कारै रञ्जितः परमाद्भुतः। तस्मिन्द्वीपे शिवाकारः पर्यङ्कः सुमनोहरः।३५
रत्नालिखचितोऽत्यर्थंनानारत्नविराजितः। दृष्टोऽस्माभिर्विमानस्थैर्दूरतःपरिमण्डितः।३६
नानास्तरणसञ्छन्न इन्द्रचापसमन्वितः। पर्यंकप्रवरे तस्मिन्नुपविष्टा वरांगना।३७
रत्नमाल्याम्बरधरा रक्तगन्धानुलेपना। सुरक्तनयना कान्ता विद्युत्कोटिसमप्रभा।३८
सुचारुवदना रक्तदन्तच्छदविराजिता। रमाकोट्यधिकाकान्त्यासूर्यबिम्बनिभाखिला।३९
वरपांशाकुशाभीष्टधरा श्रीभुवनेश्वरी। अदृष्टपूर्वासा दृष्टा सुन्दरी स्मितभूषणा।४०
ह्रींकारजपनिष्ठैस्तु पक्षिवृन्दैर्निषेविता। अरुणाकरुणामूर्तिः कुमारी नवयौवना।४१
सर्वशृङ्गारवेषाढ्या मन्दस्मितमुखाम्बुजा। उद्यत्पीनकुचद्वंद्वनिर्जिताम्भोजकुड्मला।४२
नानामणिगणाकीर्णभूषणैरुपशोभिता। कनकाङ्गदकेयूरकिरीटपरिशोभिता।४३
कनच्छ्रीचक्रताटङ्कविटङ्कवदनाम्बुजा। हृल्लेखा भुवनेशीति नामजापपरायणैः।४४
सखीवृन्दैः स्तुता नित्यं भुवनेशीमहेश्वरी। हृल्लेखाद्याभिरमरकन्याभिःपरिवेष्टिताः।४५
अनङ्गकुसुमाद्याभिर्देवीभिः परिवेष्टिता। देवीषट्कोणमध्यस्थ यन्त्रराजोपरिस्थिता।४६

दृष्ट्वा तां विस्मिताः सर्वे वयं तत्र स्थिता भवन्।
केयं कान्ता च किं नाम न जानीमोऽत्र संस्थिता ।।४७।।

सहस्रनयनारामा सहस्रकरसंयुता। सहस्रवदना रम्या भाति दूरादसंशयम्।४८
नाप्सरा नापि गन्धर्वी नेयं देवांगनाकिल। इति संशयमापन्नास्तत्रनारद संस्थिताः।४९
तदाऽसौ भगवान्विष्णुर्दृष्ट्वा तां चारुहासिनीम्। उवाचाऽम्बां स्वविज्ञानात्कृत्वा मनसि निश्चयम्।५०
एषाभगवती देवी सर्वेषां कारणं हि नः। महाविद्या महामाया पूर्णाप्रकृतिरव्यया।५१
दुर्ज्ञेयाऽल्पधियांदेवीयोगगम्यादुराशया। इच्छापरात्मनःकामंनित्यानित्यस्वरूपिणी।५२
दुराराध्याऽल्पभाग्यैश्चदेवीविश्वेश्वरीशिवा। वेदगर्भाविशालाक्षीसर्वेषामादिरीश्वरी।५३
एषासंहृत्यसकलंविश्वं क्रीडति संक्षये। लिङ्गानिसर्वजीवानां स्वशरीरेनिवेश्य च।५४
सर्वबीजमयीह्येषा राजतेसाम्प्रतंसुरौ। विभूतयःस्थिताःपार्श्वेपश्यतांकोटिशःक्रमात्।५५
दिव्याभरणभूषाढ्या दिव्यगन्धानुलेपनाः। परिचर्यापराः सर्वाःपश्यन्तं ब्रह्मशङ्करौ।५६
धन्यावयंमहाभागाःकृतकृत्याःस्मसाम्प्रतम्। यदत्रदर्शनंप्राप्ताभगवत्याःस्वयंत्विदम्।५७
तपस्तप्तं पुरायत्नात्तस्येदं फलमुत्तमम्। अन्यथा दर्शनं कुत्र भवेदस्माकमादरात्।५८
पश्यन्तिपुण्यपुञ्जायेये वदान्यास्तपस्विनः। रागिणोनैवपश्यन्तिदेवींभगवतींशिवाम्।५९
मूलप्रकृतिरेवैषा सदा पुरुषसङ्गता। ब्रह्माण्डं दर्शयत्येषा कृत्वा वै परमात्मने।६०
दृष्टाऽसौदृश्यमखिलं ब्रह्माण्डं देवतास्सुरौ। तस्यैषाकारणंसर्वामाया सर्वेश्वरीशिवा।६१
क्वाहं वा क्व सुराः सर्वे रमाद्याःसुरयोषितः। लक्षांशेन तुलामस्या न भवामः कथञ्चन।६२
सैषा वराङ्गना नाम या दृष्टा वै महार्णवे। बालभावे महादेवी दोलयन्तीव मां मुदा।६३
शयानंवटपत्रेच पर्यंके सुस्थिरे दृढे। पादाङ्गुष्ठं करे कृत्वा निवेश्य मुखपङ्कजे।६४
लेलिहन्तञ्च क्रीडन्तमनेकैर्बालचेष्टितैः। रममाणं कोमलाङ्गं वटपत्रपुटे स्थितम्।६५
गायन्ती दोलयन्ती च बालभावान्मयि स्थिते। सेयं सुनिश्चितं ज्ञानं जातं मे दर्शनादिव।६६
कामंनो जननी सैषा शृणुतं प्रवदाम्यहम्। अनुभूते मया पूर्वं प्रत्यभिज्ञा समुत्थिता।६७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे विमानस्थैर्हरादिभिर्देवीदर्शनंनाम तृतीयोऽध्यायः ।। ३ ।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

विष्णुनाकृतंदेवीस्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच

इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुःपुनराहजनार्दनः। वयं गच्छेम पार्श्वेऽस्याःप्रणमन्तः पुनःपुनः।१
सेयम्वरामहामायादास्यत्येषावरान्हिनः। स्तुवामः सन्निधिंप्राप्य निर्भयाश्चरणांतिके।२
यदि नो वारयिष्यन्ति द्वारस्थाः परिचारकाः। पठिष्यामश्च तत्रस्थाः स्तुतिं देव्याः समाहिताः।३
इत्युक्ते हरिणावाक्ये सुप्रहृष्टौ सुसंस्थितौ। जातौ प्रमुदितौ कामं निकटेगमनायच।४
ओमित्युक्त्वाहरिंसर्वेविमानात्त्वरितास्त्रयः। उत्तीर्यनिर्गताद्वारिशङ्कमानामनस्यलम्।५
द्वारस्थान्वीक्ष्य तान्सर्वान्देवी भगवती तदा। स्मितं कृत्वा चकाराऽऽशु तांस्त्रीन्स्त्रीरूपधारिणः।६
वयं युवतयोजाताःसुरूपाश्चारुभूषणाः। विस्मयंपरमं प्राप्ता गतास्तत्सन्निधिं पुनः।७
सादृष्ट्वानःस्थितांस्तत्र स्त्रीरूपांश्चरणान्तिके। व्यलोकयतचार्वंगी प्रेमसम्पूर्णया दृशा।८
प्रणम्यतां महादेवीं पुरतः संस्थिता वयम्। परस्परं लोकयन्तः स्त्रीरूपाश्चारुभूषणाः।९
पादपीठं प्रेक्षमाणानानामणिविभूषितम्। सूर्यकोटिप्रतीकाशं स्थितास्तत्र वयं त्रयः।१०
काश्चिद्रक्ताम्बरास्तत्रसहचर्यःसहस्रशः। काश्चिन्नीलाम्बरानार्यस्तथापीताम्बराःशुभाः।११
देव्यःसर्वाःशुभाकाराविचित्राम्बरभूषणाः। विरेजुःपार्श्वतस्तस्याःपरिचर्यापराःकिल।१२
जगुश्चननृतुश्चान्याःपर्युपासततास्त्रियः। वीणामारुतवाद्यानिवादयन्त्योमुदाऽन्विताः।१३
श्रृणुनारदवक्ष्यामियद्दृष्टं तत्र चाद्भुतम्। नखदर्पणमध्ये वै देव्याश्चरणपङ्कजे।१४
ब्रह्माण्डमखिलं सर्वं तत्र स्थावरजङ्गमम्। अहंविष्णुश्चरुद्रश्च वायुरग्निर्यमो रविः।१५
वरुणः शीतगुस्त्वष्टा कुबेरः पाकशासनः। पर्वताःसागरा नद्यो गन्धर्वाप्सरसस्तथा।१६
विश्वावसुश्चित्रकेतुः श्वेतश्चित्रांगदस्तथा। नारदस्तुम्बुरुश्चैव हाहा हूहूस्तथैव च।१७
अश्विनौवसवःसाध्याःसिद्धाश्चपितरस्तथा। नागाःशेषादयःसर्वे किन्नरोरगराक्षसाः।१८
वैकुण्ठो ब्रह्मलोकश्च कैलासः पर्वतोत्तमः। सर्वं तदखिलं दृष्टंनखमध्यस्थितञ्च न।१९
मज्जन्मपङ्कजं तत्र स्थितोऽहं चतुराननः। शेषशायी जगन्नाथस्तथा च मधुकैटभौ।२०

श्रीभगवानुवाच

एवं दृष्टं मया तत्र पादपद्मनखे स्थितम्। विस्मितोऽहंततोवीक्ष्यकिमेतदितिशङ्कितः।२१
विष्णुश्च विस्मयाविष्टः शङ्करश्च तथा स्थितः। तांतदामेनिरेदेवींवयंविश्वस्यमातरम्।२२
ततोवर्षशतं पूर्णं व्यतिक्रान्तं प्रपश्यतः। सुधामये शिवे द्वीपे विहारं विविधं तदा।२३
सख्य इवतदा तत्र मेनिरेऽस्मानवस्थितान्। देव्यःप्रमुदिताकारानानाभरणमण्डिताः।२४
वयमप्यतिरम्यत्वाद्बभूविम विमोहिताः। प्रहृष्टमनसः सर्वेपश्यन्भावान्मनोरमान्।२५
एकदा तां महादेवीं देवीं श्रीभुवनेश्वरीम्। तुष्टाव भगवान्विष्णुर्युवतीभावसंस्थितः।२६
नमोदेव्यै प्रकृत्यैच विधात्र्यैसततं नमः। कल्याण्यैकामदायैचवृद्ध्यैसिद्ध्यैनमोनमः।२७
सच्चिदानन्दरूपिण्यै संसारारणये नमः। पञ्चकृत्यविधात्र्यैते भुवनेश्यै नमो नमः।२८
सर्वाधिष्ठानरूपायै कूटस्थायै नमो नमः। अर्धमात्रार्थभूतायै हृल्लेखायै नमो नमः।२९
ज्ञातं मयाऽखिलमिदं त्वयि सन्निविष्टं त्वत्तोऽस्य सम्भवलयावपि मातरद्य।
शक्तिश्च तेऽस्य करणे विततप्रभावा ज्ञाताऽधुना सकललोकमयीति नूनम्।३०

विस्तार्य सर्वमखिलं सदसद्विकारं संदर्शयस्यविकलं पुरुषाय काले।
तत्वैश्च षोडशभिरेव च सप्तभिश्च भासीन्द्रजालमिव नः किल रञ्जनाय ।३१
न त्वामृते किमपि वस्तु गतंविभातिव्याप्यैवसर्वमखिलं त्वमवस्थिताऽसि ।
शक्तिंविना व्यवहृतौ पुरुषोऽप्यशक्तो बंभण्यते जननि! बुद्धिमता जनेन ।३२
प्रीणाऽसि विश्वमखिलं सततं प्रभावैः स्वैस्तेजसा च सकलंप्रकटीकरोषि ।
अत्स्येव देवि! तरसा किल कल्पकाले को वेद देवि! चरितं तव वैभवस्य ।३३
त्राता वयं जननि! ते मधुकैटभाभ्यां लोकाश्च ते सुवितताः खलुदर्शिता वै ।
नीताः सुखस्य भवने परमां च कोटिं यद्दर्शनं तव भवानि! महाप्रभावम् ।३४
नाऽहं भवो न चविरिञ्चिविवेद मातः कोऽन्योहि वेत्तिचरितंतवदुर्विभाव्यम् ।
कानीह सन्ति भुवनानि महाप्रभावे ह्यस्मिन्भवानि चरिते रचनाकलापे ।३५
अस्माभिरत्र भुवने हरिरन्य एव दृष्टः शिवः कमलजः प्रथितप्रभावः ।
अन्येषु देवि! भुवनेषु न सन्ति किं ते किं विद्म देवि! विततं तव सुप्रभावम् ।३६
याचेऽम्ब तेऽङ्घ्रिकमलं प्रणिपत्य कामं चित्ते सदा वसतु रूपमिदं तवैतत् ।
नामापिवक्त्रकुहरे सततं तवैव संदर्शनं तव पदाम्बुजयोः सदैव ।३७
भृत्योऽयमस्ति सततं मयि भावनीयं त्वां स्वामिनीति मनसा ननुचिन्तयामि ।
एषाऽऽवयोरविरता किल देवि! भूयाद्व्याप्तिः सदैव जननीसुतयोरिवार्ये ।३८
त्वं वेत्सि सर्वमखिलं भुवनप्रपञ्चं सर्वज्ञतापरिसमाप्तिनितान्तभूमिः ।
किम्पामरेण जगदम्ब! निवेदनीयं यद्युक्तमाचर भवानि! तवेङ्गितं स्यात् ।३९
ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरुमापतिश्च संहारकारक इयं तु जने प्रसिद्धः ।
किं सत्यमेतदपि देवि! तवेच्छया वै कर्तुं क्षमा वयमजे तव शक्ति युक्ताः ।४०
धात्री धराधरसुतेन जगद् बिभर्ति आधारशक्ति रखिलं तव वै बिभर्ति ।
सूर्योऽपि भाति वरदे! प्रभया युतस्ते त्वं सर्वमेतदखिलं विरजाविभासि ।४१
ब्रह्माऽहमीश्वरवरः किल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनियुता न यदा तु नित्याः ।
केऽन्येसुराः शतमखप्रमुखाश्च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा ।४२
त्वं चेद्भवानि दयसे पुरुषं पुराणं जानेऽहमद्य तव संनिधिगः सदैव ।
नोचेदहं विभुरनादिरनीह ईशो विश्वात्मधीरिति तमः प्रकृतिः सदैव ।४३
विद्या त्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणां शक्तिस्त्वमेव किल शक्तिमतां सदैव ।
त्वं कीर्तिकान्तिकमलामलतुष्टिरूपा मुक्तिप्रदा विरतिरेव मनुष्यलोके ।४४
गायत्र्यसि प्रथमवेदकला त्वमेव स्वाहा स्वधा भगवती सगुणाऽर्धमात्रा ।
आम्नाय एवविहितो निगमो भवत्या सञ्जीवनाय सततं सुरपूर्वजानाम् ।४५
मोक्षार्थमेव रचयस्यखिलं प्रपञ्चं तेषां गताः खलु यतो ननु जीवभावम् ।
अंशा अनादिनिधनस्य किलाऽनघस्य पूर्णार्णवस्य वितता हि यथा तरङ्गाः ।४६
जीवो यदा तु परिवेत्ति तवैव कृत्यं त्वं संहरस्यखिलमेदिति प्रसिद्धम् ।
नाट्यं नटेन रचितं वितथेऽन्तरङ्गे कार्ये कृते विरमसे प्रथितप्रभावा ।४७
त्राता त्वमेव मम मोहमयाद्भवाब्धेस्त्वामम्बिके सततमेमि महार्तिदे च ।
रागादिभिर्विरचिते वितथे किलान्ते मामेव पाहि बहुदुःखकरे च काले ।४८
नमोदेविमहाविद्ये नमामि चरणौ तव। सदा ज्ञानप्रकाशं मे देहि सर्वार्थदे शिवे ।४९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे विष्णुनाकृतंदेवीस्तोत्रंनामचतुर्थोऽध्यायः ।। ४ ।।

* पञ्चमोऽध्यायः *

शिवकृतंदेवीस्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच

इत्युक्त्वा विरते विष्णौ देवदेवे जनार्दने उवाच शङ्करः शर्वः प्रणतः पुरतः स्थितः।१

शिव उवाच

यदि हरिस्तव देवि! विभावजस्तदनु पद्मज एव तवोद्भवः ।
किमहमत्र तवाऽपि न सद्गुणः सकललोकविधौ च तुराशिवे! ॥२॥
त्वमसि भूः सलिलं पवनस्तथा खमपिवह्निगुणश्च तथा पुनः ।
जननि! तानि पुनः करणानि च त्वमसिबुद्धिमनोऽप्यथहंकृतिः ॥३॥
न च विदन्ति वदन्ति च येऽन्यथा हरिहराजकृतं निखिलं जगत् ।
तव कृतास्त्रय एव सदैव ते विरचयन्ति जगत्सचराचरम् ॥४॥
अवनिवायुखवह्निजलादिभिः स विषयैः सगुणैश्च जगद्भवेत् ।
यदि तदा कथमद्य च तत्स्फुटं प्रभवतीति तवाम्ब कलामृते ॥५॥
भवसि सर्वमिदं सचराचरं त्वमजविष्णुशिवाकृतिकल्पितम् ।
विविधवेषविलासकुतूहलैर्विरमसे रमसेंऽब यथारुचि ॥६॥
सकललोकसिसृक्षुरहं हरिः कमलभूश्च भवाम यदाऽम्बिके ।
तव पदाम्बुजपांसुपरिग्रहं समधिगम्य तदा ननु चक्रिम ॥७॥
यदि दयार्द्रमना न सदाऽम्बिके कथमहं विहितश्च तमोगुणः ।
कमलजश्च रजोगुणसम्भवः सुविहितः किमु सत्त्वगुणो हरिः ॥८॥
यदि न ते विषमा मतिरम्बिके कथमिदं बहुधा विहितं जगत् ।
सचिवभूपतिभृत्यजनावृतं बहुधनैरधनैश्च समाकुलम् ॥९॥
तव गुणास्त्रय एव सदा क्षमाः प्रकटनावनसंहरणेषु वै ।
हरिहरद्रुहिणाश्च क्रमात्त्वया विरचितास्त्रिजगतां किल कारणम् ॥१०॥
परिचितानि मया हरिणा तथा कमलजेन विमानगतेन वै ।
पथि गतैर्भुवनानि कृतानि वा कथय केन भवानि नवानि च ॥११॥
सृजसि पासि जगज्जगदम्बिके स्वकलया कियदिच्छसि नाशितुम् ।
रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विद्म वयं शिवे! ॥१२॥
जननि! देहि पदाम्बुजसेवनं युवतिभावगतानपि नः सदा ।
पुरुषतामधिगम्य पदाम्बुजाद्विरहिताः क्व लभेम सुखं स्फुटम् ॥१३॥
न रुचिरस्ति ममाम्ब पदाम्बुजं तव विहाय शिवेभुवनेष्वलम् ।
निवसितुं नरदेहमवाप्य च त्रिभुवनस्य पतित्वमवाप्य वै ॥१४॥
सुदति! नास्ति मनागपि मे रतिर्युवतिभावमवाप्य तवाऽन्तिके ।
पुरुषता क्व सुखाय भवत्यलं तव पदं न यदीक्षणगोचरः ॥१५॥
त्रिभुवनेषु भवत्वियमम्बिके मम सदैव हि कीर्तिरनाविला ।
युवतिभावमवाप्य पदाम्बुजं परिचितं तव संसृतिनाशनम् ॥१६॥
भुवि विहाय तवान्तिकसेवनं क इह वाञ्छति राज्यमकण्टकम् ।
त्रुटिरसौकिल याति युगात्मतां न निकटं यदि तेंऽघ्रिसरोरुहम् ॥१७॥
तपसि ये निरता मुनयोऽमलास्तव विहाय पदाम्बुजपूजनम् ।
जननि! ते विधिना किल वञ्चिताःपरिभवो विभवे परिकल्पतः ॥१८॥
न तपसा न दमेन समाधिना न च तथा विहितैः क्रतुभिर्यथा ।
तव पदाब्जपरागनिषेवणाद्भवति मुक्ति रजे भवसागरात् ॥१९॥

कुरु दयां दयसे यदि देवि! मां कथय मन्त्रमनाविलमद्भुतम् ।
समभवं प्रजपन्सुखितो ह्यहं सुविशदं च नवार्णमनुत्तमम् ।।२०।।
प्रथमजन्मनि चाधिगतो मया तदधुना न विभाति नवाक्षरः ।
कथय मां मनुमद्य भवार्णवाज्जननि तारय तारय तारके! ।।२१।।

ब्रह्मोवाच

इत्युक्त्वा सा तदा देवी शिवेनाद्भुततेजसा। उच्चचाराम्बिका मन्त्रं प्रस्फुटंचनवाक्षरम् ।२२
तं गृहीत्वा महादेवः परां मुदमवाप ह। प्रणम्य चरणौ देव्यास्तत्रैवाऽवस्थितः शिवः ।२३
जपन्नवाक्षरं मन्त्रं कामदं मोक्षदं तथा। बीजयुक्तं शुभोच्चारं शङ्करस्तस्थिवांस्तदा ।२४
तं तथाऽवस्थितं दृष्ट्वा शङ्करं लोकशङ्करम्। अवोचंतांमहामायांसंस्थितोऽहंपदान्तिके: ।२५
न वेदास्त्वामेवं कलयितुमिहासन्नपटवो यतस्ते नोचुस्त्वां सकलजनधात्रीमविकलाम्।
स्वाहाभूता देवी सकलमखहोमेषु विहिता तदा त्वं सर्वज्ञा जननि! खलु जाता त्रिभुवने ।२६

कर्ताऽहं प्रकरोमि सर्वमखिलं ब्रह्माण्डमत्यद्भुतम्
कोऽन्योऽस्तीह चराचरे त्रिभुवने मत्तः समर्थः पुमान् ।
धन्योऽस्म्यत्र नसंशयः किलयदा ब्रह्माऽस्मिलोकातिगो -
मग्नोऽहं भवसागरे प्रवितते गर्वाभिवेशादिति ।।२७।।

अद्याऽहं तव पादपङ्कजपरागादानगर्वेण वैधन्यो-ऽस्मीति यथार्थवादनिपुणो जातः प्रसादाच्च ते।
याचे त्वां भवभीतिनाशचतुरां मुक्तिप्रदांचेश्वरीं-हित्वा मोहकृतं महातिनिगडं त्वद्भक्तियुक्तं कुरु ।२८

अतोऽहं च जातो विमुक्तः कथं स्यां सरोजादमेयात्त्वदाविष्कृताद्वै।
तवाऽऽज्ञाकरः किं करोऽमीति नूनं शिवे! पाहिमां मोहमग्नं भवाब्धौ ।२९
न जानन्ति ये मानवास्ते वदन्ति प्रभुं मां तवाद्यं चरित्रं पवित्रम्।
यजन्तीह ये याजकाः स्वर्गकामा न ते ते प्रभावं विदन्त्येव कामम् ।३०
त्वया निर्मितोऽहं विधित्वे विहारं विकर्तुं चतुर्धा विधायादिसर्गम्।
अहं वेद्मि कोऽन्यो विवेदाऽऽदिमाये क्षमस्वाऽपराधं त्वहंकारजं मे ।३१
श्रमं येऽष्टधा योगमार्गे प्रवृत्ताः प्रकुर्वन्ति मूढाः समाधौ स्थिता वै।
न जानन्ति ते नाम मोक्षप्रदं वा समुच्चारितं जातु मातर्मिषेण ।३२
विचारे परे तत्त्वसंख्याविधाने पदे मोहिता नाम ते संविहाय।
न किं ते विमूढा भवाब्धौ भवानि! त्वमेवाऽसि संसारमुक्तिप्रदा वै ।३३
परं तत्त्वविज्ञानमाद्यैर्जनैर्यैरजे चानुभूतं त्यजन्त्येव ते किम्।
निमेषार्धमात्रं पवित्रं चरित्रं शिवा चाऽम्बिका शक्तिरीशेति नाम ।३४
न किं त्वं समर्थोऽसि विश्वं विधातुं दृशैवाऽऽशु सर्वं चतुर्धा विभक्तम्।
विनोदार्थमेवं विधिं मां विधायाऽऽदिसर्गे किलेदं करोषीति कामम् ।३५
हरिः पालकः किं त्वयाऽसौ मधोर्वा तथा कैटभाद्रक्षितः सिन्धुमध्ये।
हरः संहृतः किं त्वयाऽसौ न काले कथं मे भ्रुवोर्मध्यदेशात्स जातः ।३६
न ते जन्म कुत्राऽपि दृष्टं श्रुतं वा कुतः सम्भवस्ते न कोऽपीह वेद।
किलाद्याऽसि शक्तिस्त्वमेका भवानि स्वतन्त्रैः समस्तैरतो बोधिताऽसि ।३७
त्वया संयुतोऽहं विकर्तुं समर्थो हरिस्त्रातुमम्ब त्वया संयुतश्च।
हरः संप्रहर्तुं त्वयैवेह युक्तः क्षमा नाऽद्य सर्वे त्वया विप्रयुक्ताः ।३८
यथाऽहं हरिः शङ्करः किं तथाऽन्ये न जाता न सन्तीह नो वा भविष्यन्।
न मुह्यन्ति केऽस्मिंस्तवात्यंतचित्रे विनोदे विवादास्पदेऽल्पाशयानाम् ।३९

अकर्ता गुणस्पृष्ट एवाऽऽद्यदेवो निरीहोऽनुपाधिः सदैवाकलश्च।
तथाऽपीश्वरस्ते वितीर्णं विनोदं सुसम्पश्यतीत्याहुरेवं विधिज्ञाः।४०
दृष्टादृष्टविभेदेऽस्मिन्प्राक्त्वत्तो वै पुमान्परः। नाऽन्यःक्कोऽपितृतीयोऽस्तिप्रमेयेसुविचारिते।४१
नमिथ्यावेदवाक्यं वै कल्पनीयं कदाचन। विरोधोऽयं मयाऽत्यन्तंहृदयेतु विशङ्कितः।४२
एकमेवाद्वितीयं यद्ब्रह्मवेदा वदन्ति वै। सा किंत्वंवाप्यऽसौवाकिंसन्देहंविनिवर्तय।४३
निःसंशयं न मे चेतः प्रभवत्यविशङ्कितम्। द्वित्वैकत्वविचारेऽस्मिन्निमग्नंक्षुल्लकंमनः।४४
स्वमुखेनाऽपि सन्देहं छेत्तुमर्हसि मामकम्। पुण्ययोगाच्चमे प्राप्तासंगतिस्तवपादयोः।४५
पुमानसि त्वं स्त्री वाऽसि वद विस्तरतो मम। ज्ञात्वाऽहं परमां शक्तिमुक्तः स्यां भवसागरात्।४६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे हरब्रह्मकृतास्तुतिवर्णनंनामपञ्चमोऽध्यायः।।५।।

* षष्ठोऽध्यायः *

ब्रह्मणेश्रीदेव्याउपदेशः

ब्रह्मोवाच

इति पृष्टा मया देवी विनयावनतेन च। उवाच वचनंश्लक्ष्णमाद्या भगवती हि सा।१

देव्युवाच

सदैकत्वं न भेदोऽस्ति सर्वदैव ममास्य च। योऽसौसाऽहमहंयोऽसौ भेदोऽस्ति मतिविभ्रमात्।२
आवयोरन्तरं सूक्ष्मं यो वेदमतिमान्हि सः। विमुक्तः स तुसंसारान्मुच्यतेनात्रसंशयः।३
एकमेवाद्वितीयं वै ब्रह्मनित्यं सनातनम्। द्वैतभावं पुनर्याति काल उत्पिसुसंज्ञके।४
यथा दीपस्तथोपाधेर्योगात्संजायते द्विधा। छायेवादर्शमध्येवाप्रतिबिम्बंतथाऽऽवयोः।५
भेदउत्पत्तिकालेर्व सर्गार्थः प्रभवत्यजः। दृश्यादृश्यविभेदोऽयं द्वैविध्ये सति सर्वथा।६
नाहंस्त्री नपुमांश्चाहंनक्लीवं सर्गसंक्षये। सर्गे सति विभेदःस्यात्कल्पितोऽयंधियापुनः।७
अहंबुद्धिरहंश्रीश्चधृतिःकृतिःस्मृतिस्तथा। श्रद्धामेधादयालज्जाक्षुधा तृष्णातथा क्षमा।८
कान्तिःशान्तिः पिपासाच निद्रा तन्द्रा जराऽजरा। विद्याऽविद्या स्पृहा वाञ्छाशक्तिश्चाशक्तिरेव च।९
वसामज्जाचत्वक्चाहंवृष्टिर्वागनृतानृता। परामध्याचपश्यन्तीनाड्योऽहंविविधाश्रयाः।१०
किंनाहंपश्यसंसारेमद्वियुक्तंकिमस्तिहि। सर्वमेवाऽहमित्येवं निश्चयं विद्धि पद्मज!।११
एतैर्मे निश्चितै रूपैर्विहीनं किं वदस्व मे। तस्मादहंविधेचास्मिन्सर्गेवैविततऽभवम्।१२
नूनं सर्वेषु देवेषु नानानामधराह्यहम्। भवामि शक्तिरूपेण करोमि च पराक्रमम्।१३
गौरी ब्राह्मी तथा रौद्री वाराही वैष्णवी शिवा। वारुणी चाथ कौबेरी नारसिंही च वासवी।१४
उत्पन्नेषु समस्तेषुकार्येषुप्रविशामितान्। करोमिसर्वकार्याणि निमित्तं तं विधायवै।१५
जलेशीतंतथा वह्नावौष्ण्यंज्योतिर्दिवाकरे। निशानाथेहिमाकामंप्रभवामि यथा तथा।१६
मयात्यक्तंविधेनूनं स्पन्दितुंनक्षमं भवेत्। जीवजातं च संसारेनिश्चयोऽयंब्रुवेत्वयि।१७
अशक्तःशङ्करोहन्तुं दैत्यान्किलमयोज्झितः। शक्तिहीनंनरं ब्रूते लोकश्चैवाति दुर्बलम्।१८
रुद्रहीनं विष्णुहीनं न वदन्ति जनाः किल। शक्तिहीनं यथासर्वे प्रवदन्ति नराधमम्।१९
पतितः स्खलितोभीतः शांतःशत्रुवशंगतः। अशक्तःप्रोच्यतेलोके नारुद्रःकोऽपिकथ्यते।२०
तद्विद्धिकारणंशक्तिर्ययात्वञ्चसिसृक्षसि। भविताचयदायुक्तःशक्त्याकर्तातदाऽखिलम्।२१
तथा हरिस्तथाशम्भुस्तथेन्द्रोऽथविभावसुः। शशी सूर्यो यमस्त्वष्टावरुणःपवनस्तथा।२२

धरांस्थिरातदाधर्तुं शक्तियुक्तायदा भवेत्। अन्यथा चेदशक्ता स्यात्परमाणोश्चधारणे।२३
तथा शेषस्तथा कूर्मो येऽन्ये सर्वे च दिग्गजाः।
मद्युक्ता वै समर्थाश्च स्वानि कार्याणि साधितुम् ॥२४॥
जलंपिबामिसकलंसंहरामिविभावसुम्। पवनंस्तम्भयाम्यद्ययदिच्छामितथाऽचरम्।२५
तत्त्वानांचैवसर्वेषां कदाऽपि कमलोद्भव!। असतां भावसन्देहः कर्तव्यो न कदाचन।२६
कदाचित्प्रागभावःस्यात्प्रध्वंसाभावएववा। मृत्पिण्डेषुकपालेषुघटाभावो यथातथा।२७
अद्याऽत्र पृथिवीनास्ति क्व गतेतिविचारणे। सञ्जाताइतिविज्ञेया अस्यास्तुपरमाणवः।२८
शाश्वतंक्षणिकं शून्यं नित्यानित्यंसकर्तृकम्। अहंकाराग्रिमञ्चैव सप्तभेदैर्विवक्षितम्।२९
गृहाणाज महत्तत्त्वमहंकारस्तदुद्भवः। ततः सर्वाणि भूतानि रचयस्व यथापुरा।३०
व्रजन्तु स्वानि धिष्ण्यानि विरच्यानि वसन्तु वः।
स्वानि स्वानि च कार्याणि कुर्वन्तु दैवभाविताः ॥३१॥
गृहाणेमां विधे शक्तिं सुरूपांचारुहासिनीम्। महासरस्वतींनाम्नारजोगुणयुतांवराम्।३२
श्वेताम्बरधरांदिव्यां दिव्यभूषणभूषिताम्। वरासनसमारूढां क्रीडार्थंसहचारिणीम्।३३
एषासहचरीनित्यंभविष्यतिवराङ्गना। माऽवमंस्थाविभूतिं मे मत्वापूज्यतमांप्रियाम्।३४
गच्छत्वमनयासार्धं सत्यलोकंवताशु वै। बीजाच्चतुर्विधं सर्वं समुत्पादय साम्प्रतम्।३५
लिंगकोशाश्च जीवैस्तैः सहिताः कर्मभिस्तथा। वर्तन्ते संस्थिताः काले तान्कुरु त्वं यथापुरा।३६
कालकर्मस्वभावाख्यैः कारणैः सकलं जगत्। स्वभावस्वगुणैर्युक्तंपूर्ववत्सचराचरम्।३७
माननीयस्त्वयाविष्णुः पूजनीयश्च सर्वदा। सत्त्वगुणप्रधानत्वादधिकःसर्वतःसदा।३८
यदा यदाहि कार्यम्वोभविष्यतिदुरत्ययम्। करिष्यति पृथिव्यां वै अवतारं तदाहरिः।३९
तिर्यग्योनावथान्यत्र मानुषीं तनुमाश्रितः। दानवानां विनाशम्वै करिष्यतिजनार्दनः।४०
भवोऽयं ते सहायश्च भविष्यतिमहाबलः। समुत्पाद्यसुरान्सर्वान्विहरस्व यथासुखम्।४१
ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्यानानायज्ञैःसदक्षिणैः। यजिष्यन्तिविधानेनसर्वावःसुसमाहिताः।४२
मन्नामोच्चारणात्सर्वे मखेषु सकलेषु च। सदातृप्ताश्च सन्तुष्टा भविष्यध्वंसुराःकिल।४३
शिवश्च माननीयोवै सर्वथा यत्तमोगुणः। यज्ञकार्येषु सर्वेषु पूजनीयः प्रयत्नतः।४४
यदापुनःसुराणाम्वै भयन्दैत्याद्भविष्यति। शक्तयो मे तदोत्पन्ना हरिष्यन्तिसुविग्रहाः।४५
वाराहीवैष्णवीगौरी नारसिंहीसदाशिवा। एताश्चान्याश्चकार्याणिकुरुत्वंकमलोद्भव।४६
नवाक्षरमिमं मन्त्रं बीजध्यानयुतं सदा। जपन्सर्वाणि कार्याणि कुरु त्वं कमलोद्भव।४७
मन्त्राणामुत्तमोऽयं वै त्वं जानीहिमहामते। हृदये ते सदा धार्यः सर्वकामार्थसिद्धये।४८
इत्युक्त्वा मां जगन्माता हरिं प्राह शुचिस्मिता। विष्णो व्रज गृहाणेमां महालक्ष्मीं मनोहराम्।४९
सदावक्षःस्थलेस्थाने भवितानात्र संशयः। कीडार्थं ते मयादत्ताशक्तिःसर्वार्थदाशिवा।५०
त्वयेयंनावमन्तव्या माननीयाचसर्वदा। लक्ष्मीनारायणाख्योऽयंयोगोवैविहितोमया।५१
जीवनार्थं कृता यज्ञा देवानां सर्वथा मया। अविरोधेन संगेन वर्तितव्यं त्रिभिः सदा।५२
त्वं च वेधाःशिवस्त्वेतेदेवामद्गुणसम्भवाः। मान्याःपूज्याश्चसर्वेषां भविष्यतिनसंशयः।५३
ये विभेदं करिष्यन्ति मानवाः मूढचेतसः। निरयन्ते गमिष्यन्ति विभेदान्नात्रसंशयः।५४
यो हरिः स शिवः साक्षाद्यो शिवः स स्वयंहरिः। एतयोर्भेदमातिष्ठन्नरकाय भवेन्नरः।५५
तथैव द्रुहिणोज्ञेयोनात्रकार्याविचारणा। अपरो गुणभेदोऽस्ति शृणुविष्णोब्रवीमिते।५६
मुख्यः सत्त्वगुणस्तेऽस्तु परमात्मविचिन्तने। गौणत्वेऽपि परौ ख्यातौ रजोगुणतमोगुणौ।५७

लक्ष्म्यासह विकारेषु नानाभेदेषु सर्वदा। रजोगुणयुतोभूत्वा विहरस्वाऽनया सह।५८
वाग्बीजं कामराजञ्चमायाबीजंतृतीयकम्। मन्त्रोऽयं त्वं रमाकान्त महत्तःपरमार्थदः।५९
गृहीत्वा जप तं नित्यंविरहस्व यथासुखम्। न ते मृत्युभयंविष्णोनकालप्रभवंभयम्।६०
यावदेष विहारो मे भविष्यति सुनिश्चयः। संहरिष्याम्यहंसर्वं यदा विश्वं चराचरम्।६१
भवन्तोऽपितदानूनंमयिलीनाभविष्यथ। स्मर्तव्योऽयंसदामन्त्रःकामदोमोक्षदस्तथा।६२
उद्गीथेन च संयुक्तः कर्तव्यः शुभमिच्छता। कारयित्वाऽथ वैकुण्ठंवस्तव्यंपुरुषोत्तम।६३
विहरस्व यथाकामं चिन्तयन्मां सनातनीम्।

ब्रह्मोवाच

इत्युक्त्वा वासुदेवं सा त्रिगुणा प्रकृतिः परा ॥६४॥
निर्गुणा शङ्करं देवमवोचदमृतं वचः।

देव्युवाच

गृहाण हर! गौरीं त्वं महाकालीं मनोहराम् ॥६५॥
कैलासं कारयित्वा च विहरस्व यथासुखम्। मुख्यस्तमोगुणस्तेऽस्तु गौणौ सत्त्वरजोगुणौ।६६
विहराऽसुरनाशार्थं रजोगुणतमोगुणौ। तपस्तप्तुं तथा कर्तुं स्मरणं परमात्मनः।६७
शर्वःसत्त्वगुणःशान्तोग्रहीतव्यःसदाऽनघ। सर्वथात्रिगुणायूयंसृष्टिस्थित्यन्तकारकाः।६८
एभिर्विहीनं संसारेवस्तुनैवात्रकुत्रचित्। वस्तु मात्रंतु यद्दृश्यं संसारेत्रिगुणंहि तत्।६९
दृश्यञ्च निर्गुणं लोके न भूतं नो भविष्यति। निर्गुणःपरमात्माऽसौनतुदृश्यःकदाचन।७०
सगुणा निर्गुणाचाहं समये शङ्करोत्तमा। सदाऽहं कारणं शम्भो न च कार्यंकदाचन।७१
सगुणाकारणत्वाद्वै निर्गुणा पुरुषान्तिके। महत्तत्त्वमहंकारो गुणाः शब्दादयस्तथा।७२
कार्यकारणरूपेण संसरन्ते त्वहर्निशम्। सदुद्भूतस्त्वहंकारस्तेनाऽहं कारणं शिवा।७३
अहंकारश्चमेकार्यंत्रिगुणोऽसौप्रतिष्ठितः। अहंकारान्महत्तत्त्वं बुद्धिः सा परिकीर्तिता।७४
महत्तत्त्वंहिकार्यंस्यादहंकारोहिकारणम्। तन्मात्राणि त्वहंकारादुत्पद्यन्ते सदैव हि।७५
कारणम्पञ्चभूतानां तानि सर्वसमुद्भवे। कर्मेन्द्रियाणि पञ्चैव पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि च।७६
महाभूतानि पञ्चैव मनःषोडशमेव च। कार्यञ्च कारणञ्चैव गणोऽयं षोडशात्मकः।७७
परमात्मापुमानाद्योन कार्यं न च कारणम्। एवं समुद्भवः शम्भो सर्वेषामादिसम्भवे।७८
संक्षेपेण मया प्रोक्तस्तव तत्र समुद्भवः। व्रजन्त्वद्य विमानेन कार्यार्थं मम सत्तमाः।७९
स्मरणाद्दर्शनंतुभ्यंदास्येऽहं विषमेस्थिते। स्मर्तव्याऽहं सदा देवाः परमात्मासनातनः।८०
उभयोः स्मरणादेव कार्यसिद्धिरसंशयम्।

ब्रह्मोवाच

इत्युक्त्वाविससर्जाऽस्मान्दत्त्वाशक्तीःसुसंस्कृतान् ॥८१॥
विष्णवेऽथ महालक्ष्मीं महाकालीं शिवाय च। महासरस्वतीं मह्यं स्थानात्तस्माद्विसर्जिताः।८२
स्थलान्तरं समासाद्य ते जाताः पुरुषावयम्। चिन्तयन्तःस्वरूपंतत्प्रभावंपरमाद्भुतम्।८३
विमानन्तत्समासाद्यसंरूढास्तत्रवैत्रयः। न द्वीपोऽसौनसादेवी सुधासिन्धुस्तथैवच।
पुनर्दृष्टंविमानम्वै तत्रास्माभिर्नचाऽन्यथा ॥८४॥
आसाद्य तस्मिन्विततेविमाने प्राप्ता वयंपङ्कजसन्निधौ च।
महार्णवे यत्र हतौ दुरत्ययौ सुरारिणा तौ मधुकैटभाख्यौ ॥८५॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे ब्रह्मणेश्रीदेव्याउपदेशवर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः॥६॥

* सप्तमोऽध्यायः *

तत्त्वनिरूपणम्

ब्रह्मोवाच

एवंप्रभावासादेवीमयादृष्टाऽथविष्णुना । शिवेनापिमहाभाग तास्तादेव्यःपृथक्पृथक् । १

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्य पितुर्वाक्यंनारदो मुनिसत्तमः । पप्रच्छ परमप्रीतः प्रजापतिमिदं वचः । २

नारद उवाच

पुमानाद्योऽविनाशीयोनिर्गुणोऽच्युतिरव्ययः । दृष्टश्चैवानुभूतश्च तद्वदस्व पितामह । ३
त्रिगुणावीक्षिताशक्तिर्निर्गुणाकीदृशीपितः । तस्याःस्वरूपं मे ब्रूहि पुरुषस्यच पद्मज । ४
यदर्थञ्चमयातप्तं श्वेतद्वीपे महातपः । दृष्टाः सिद्धा महात्मानस्तापसा गतमन्यवः । ५
परमात्मा नमयाप्राप्तोमयाऽसौदृष्टिगोचरः । पुनः पुनस्तपस्तीव्रं कृतंतत्र प्रजापते! । ६
भवता सगुणाशक्तिर्दृष्टा तात! मनोरमा । निर्गुणा निर्गुणश्चैव कीदृशौ तौ वदस्व मे । ७

व्यास उवाच

इति पृष्टः पिता तेन नारदेन प्रजापतिः । उवाच वचनन्तथ्यं स्मितपूर्वं पितामहः । ८

ब्रह्मोवाच

निर्गुणस्य मुने रूपं न भवेद्दृष्टिगोचरम् । दृश्यञ्च नश्वरं यस्मादरूपं दृश्यते कथम् । ९
निर्गुणा दुर्गमा शक्तिर्निर्गुणश्च तथापुमान् । ज्ञानगम्यौ मुनीनांतुभावनीयौतथा पुनः । १०
अनादिनिधनौ विद्धि सदा प्रकृतिपूरुषौ । विश्वासेनाऽभिगम्यौ तौ नाऽविश्वासे न कर्हिचित् । ११
चैतन्यं सर्वभूतेषु यत्तद्विद्धि परात्मकम् । तेजः सर्वत्रगं नित्यं नानाभावेषु नारद । १२
तंचतांचमहाभागव्यापकौविद्धि सर्वगौ । ताभ्यांविहीनंसंसारे न किञ्चिद्वस्तुविद्यते । १३
तौ विचिन्त्यौसदा देहे मिश्रीभूतौ सदाऽव्ययौ । एकरूपौ चिदात्मानौ निर्गुणौ निर्मलावुभौ । १४
याशक्तिःपरमात्माऽसौ योऽसौसापरमामता । अन्तरंनैतयोःकोऽपिसूक्ष्मंवेदचनारद । १५
अधीत्यसर्वशास्त्राणिवेदान्साङ्गांश्च नारद । न जानातितयोः सूक्ष्ममन्तरंविरतिंविना । १६
अहंकारकृतं सर्वं विश्वं स्थावरजङ्गमम् । कथं तद्रहितं पुत्र ! भवेत्कल्पशतैरपि । १७
निर्गुणं सगुणः पुत्र कथम्पश्यति चक्षुषा । सगुणञ्च महाबुद्धे चेतसा सम्विचारय । १८
पित्तेनाच्छादिता जिह्वा चक्षुश्च मुनिसत्तम । कटुपित्तंविजानाति रसं रूपं न तत्तथा । १९
गुणैः समावृतं चेतः कथं जानाति निर्गुणम् । अहंकारोद्भवंतच्च तद्विहीनं कथं भवेत् । २०
यावन्न गुणविच्छेदस्तावत्तद्दर्शनं कुतः । तं पश्यति तदा चित्ते यदाऽहंकारवर्जितः । २१

नारद उवाच

स्वरूपंदेवदेवेश त्रयाणामेवविस्तरात् । गुणानां यत्स्वरूपोऽस्तिह्यहंकारस्त्रिरूपकः । २२
सात्त्विकोराजसश्चैव तामसश्च तथाऽपरः । विभेदेन स्वरूपाणि वदस्व पुरुषोत्तम । २३
यज्ज्ञात्वा विप्रमुच्येऽहं ज्ञानं तद्वदमे प्रभो । गुणानांलक्षणान्येव विततानिविभागशः । २४

ब्रह्मोवाच

त्रयाणां शक्तयस्तिस्रस्तद्ब्रवीमि तवानघ । ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिरर्थशक्तिस्तथाऽपरा । २५
सात्त्विकस्य ज्ञानशक्ती राजसस्य क्रियात्मिका । द्रव्यशक्तिस्तामसस्य तिस्रश्च कथितास्तव । २६
तेषां कार्याणि वक्ष्यामि शृणुनारदतत्त्वतः । तामस्या द्रव्यशक्तेश्च शब्दस्पर्शसमुद्भवः । २७
रूपं रसश्च गन्धश्च तन्मात्राणि प्रचक्षते । शब्दैकगुणमाकाशं वायुः स्पर्शगुणस्तथा । २८

सुरूपकगुणोऽग्निश्चजलंरसगुणात्मकम् । पृथ्वी गन्धगुणाज्ञेया सूक्ष्माण्येतानिनारद।२९
दशैतानि मिलित्वा तु द्रव्यशक्तियुतानिवै। तामसाहंकारजःस्यात्सर्गस्तदनुवृत्तिकः।३०
राजस्याश्च क्रियाशक्तेरुत्पन्नानि शृणुष्वमे। श्रोत्रं त्वग्रसनाचक्षुर्घ्राणञ्चैव च पञ्चमम्।३१
ज्ञानेन्द्रियाणिचैतानितथाकर्मेन्द्रियाणिच। वाक्पाणिपादपायुश्चगुह्यान्तानिचपञ्चवै।३२
प्राणोऽपानश्चव्यानश्च समानोदानवायवः। पञ्चदश मिलित्वैव राजसः सर्ग उच्यते।३३
साधनानि किलैतानि क्रियाशक्तिमयानि च। उपादानं किलैतेषां चिदनुवृत्तिरुच्यते।३४
ज्ञानशक्तिसमायुक्ताःसात्त्विकाश्च समुद्भवाः। दिशो वायुश्चसूर्यश्चवरुणश्चाश्विनावपि।३५
ज्ञानेन्द्रियाणां पञ्चानांपञ्चाधिष्ठातृदेवताः। चन्द्रो ब्रह्मा तथा रुद्रः क्षेत्रज्ञश्चचतुर्थकः।३६
इत्यन्तःकरणाख्यस्यबुद्ध्यादेश्चाधिदैवतम् । चत्वार्येवतथाप्रोक्ताः किलाधिष्ठातृदेवताः।३७
मनसा सह चैतानि नूनंपञ्चदशैवतु। सात्त्विकस्यतुसर्गोऽयंसात्त्विकाख्यःप्रकीर्तितः।३८
स्थूलसूक्ष्मादिभेदेन द्वे रूपे परमात्मनः। ज्ञानरूपं निराकारं निदानं तत्प्रचक्षते।३९
साधकस्य तु ध्यानादौ स्थूलरूपं प्रचक्षते। शरीरं सूक्ष्ममेवेदं पुरुषस्य प्रकीर्तितम्।४०
ममचैव शरीरं वै सूत्रमित्यभिधीयते। स्थूलं शरीरं वक्ष्यामि ब्रह्मणः परमात्मनः।४१
शृणुनारद यत्नेन यच्छ्रुत्वाविप्रमुच्यते। तन्मात्राणिपुरोक्तानिभूतसूक्ष्माणियानिवै।४२
पञ्चीकृत्य तु तान्येव पञ्चभूतसमुद्भवः। पञ्चीकरणभेदोऽयं शृणु संवदतः किल।४३
प्रथमं रसतन्मात्रामुपादाय मनस्यपि। कल्पयेच्च तथा तद्वै यथा भवति चोदकम्।४४
शिष्टानां चैव भूतानामंशान्कृत्वा पृथक्पृथक्। उदके मिश्रयेच्चांशान्कृते रसमयेततः।४५
तदा भूतविभागे च चैतन्ये च प्रकाशिते। चैतन्यस्य प्रवेशाच्चतदाऽहमिति संशयः।४६
प्रतीयमाने तेनैव विशेषेणाऽभिमानतः। आदिनारायणो देवो भगवानिति चोच्यते।४७
घनीभूतेऽथ भूतानां विभागे स्पष्टतां गते। वृद्धिं प्राप्यगुणैश्चेत्थमेकैकगुणवृद्धितः।४८
आकाशस्य गुणश्चैकः शब्द एव न चापरः। शब्दस्पर्शौचवायोश्चद्वौगुणौपरिकीर्तितौ।४९
अग्नेः शब्दश्च स्पर्शश्च रूपमेते त्रयो गुणाः। शब्दस्पर्शरूपरसाश्चत्वारो वै जलस्यच।५०
स्पर्शशब्दरसारूपं गन्धश्च पृथिवीगुणाः। एवं मिलितयोगैश्च ब्रह्माण्डोत्पत्तिरुच्यते।५१
सर्वे जीवा मिलित्वैव ब्रह्माण्डांशसमुद्भवाः। चतुरशीतिलक्षाश्च प्रोक्तावैजीवजातयः।५२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां
तृतीयस्कन्धे तत्त्वनिरूपणवर्णनंनाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

* अष्टमोऽध्यायः *

गुणानांरूपसंस्थानादिवर्णनम्

ब्रह्मोवाच

सर्गोऽयंकथितस्तातयत्पृष्टोऽहंत्वयाऽधुना । गुणानांरूपसंस्थावैशृणुष्वैकाग्रमानसः। १
सत्त्वंप्रीत्यात्मकंज्ञेयं सुखात्प्रीतिसमुद्भवः। आर्जवंचतथासत्यंशौचंश्रद्धा क्षमाधृतिः। २
अनुकम्पा तथा लज्जा शान्तिः सन्तोष एव च। एतैः सत्त्वप्रतीतिश्च जायते निश्चला सदा। ३
श्वेतवर्णं तथा सत्त्वं धर्मेप्रीतिकरंसदा। सच्छ्रद्धोत्पादकंनित्यमसच्छ्रद्धा निवारकम्। ४
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी च तथाऽपरा। श्रद्धा तु त्रिविधा प्रोक्ता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः। ५
रक्तवर्णं रजः प्रोक्तमप्रीतिकरमद्भुतम्। अप्रीतिर्दुःखयोगत्वाद्भवत्येव सुनिश्चिता। ६
प्रद्वेषोऽथ तथा द्रोहोमत्सरःस्तम्भएवच। उत्कण्ठाचतथानिद्रा श्रद्धा तत्रच राजसी। ७

मानो मदस्तथा गर्वो राजसःकिलजायते। प्रत्येतव्यं रजस्त्वेतैर्लक्षणैश्च विचक्षणैः। ८
कृष्णवर्णं तमः प्रोक्तं मोहनञ्च विषादकृत्। आलस्यञ्च तथाऽज्ञानं निद्रादैन्यंभयंतथा। ९
विवादश्चैव कार्पण्यं कौटिल्यं रोषएव च। वैषम्यंवाऽतिनास्तिक्यंपरदोषानुदर्शनम्।१०
प्रत्येतव्यं तमस्त्वेतैर्लक्षणैः सर्वथा बुधैः। तामस्या श्रद्धया युक्तं परस्तापोपपादकम्।११
सत्त्वं प्रकाशयितव्यं नियन्तव्यं रजःसदा। संहर्तव्यं तमः कामं जनेन शुभमिच्छता।१२
अन्योन्याभिभवाश्चैते विरुध्यन्ति परस्परम्। तथाऽन्योन्याश्रयाःसर्वे न तिष्ठन्ति निराश्रयाः। १३
सत्त्वंनकेवलंक्वापिनरजोनतमस्तथा । मिलिताश्चसदासर्वे तेनाऽन्योन्याश्रयाःस्मृताः। १४
अन्योन्यमिथुनाश्चैवविस्तारंकथयाम्यहम् । शृणुनारदयज्ज्ञात्वामुच्यते भवबन्धनात्। १५
सन्देहोऽत्र न कर्तव्यो ज्ञात्वेत्युक्तं मया वचः। ज्ञातं तदनुभूतं यत्परिज्ञातं फले सति। १६
श्रवणाद्दर्शनाच्चैव सपद्येव महामते। संस्कारानुभवाच्चैव परिज्ञातं न जायते। १७
श्रुतं तीर्थम्पवित्रञ्च श्रद्धोत्पन्ना च राजसी। निर्गतस्तत्र तीर्थे वै दृष्टंचैव यथाश्रुतम्। १८
स्नातस्तत्र कृतंकृत्यं दत्तं दानञ्च राजसम्। स्थितस्तत्र कियत्कालं रजोगुणसमावृतः। १९
रागद्वेषान्न निर्मुक्तःकामक्रोधसमावृतः। पुनरेव गृहं प्राप्तो यथा पूर्वं तथा स्थितः। २०
श्रुतञ्च नानुभूतम्वै तेन तीर्थं मुनीश्वर। न प्राप्तं च फलं यस्मादश्रुतं विद्धि नारद। २१
निष्पापत्वंफलंविद्धितीर्थस्यमुनिसत्तमः । कृषेःफलं यथा लोकेनिष्पन्नान्नस्यभक्षणम्। २२
पापदेहविकारा ये कामक्रोधादयःपरे। लोभो मोहस्तथा तृष्णा द्वेषोरागस्तथामदः। २३
असूयेर्ष्याऽक्षमाऽशान्तिःपापन्येतानिनारद। न निर्गतानिदेहात्तु तावत्पापयुतोनरः। २४
कृते तीर्थे यदैतानि देहान्न निर्गतानि चेत्। निष्फलःश्रम एवैकः कर्षकस्ययथा तथा। २५
श्रमेणपीडितंक्षेत्रं कृष्टाः भूमिः सुदुर्घटा। उप्तं बीजं महार्घञ्च हिता वृत्तिरूदाहृता। २६
अहोरात्रंपरिक्लिष्टो रक्षणार्थम्फलोत्सुकः। कालेसुप्तस्तुहेमन्ते वनेव्याघ्रादिभिर्भृशम्। २७
भक्षितं शलभैः सर्वं निराशश्च कृतः पुनः। तद्वत्तीर्थश्रमः पुत्र कष्टदो न फलप्रदः। २८
सत्त्वं समुत्कटं जातं प्रवृद्धं शास्त्रदर्शनात्। वैराग्यं तत्फलं जातं तामसार्थेषु नारद। २९
प्रसह्याभिभवत्येव तद्रजस्तमसी उभे। रजः समुत्कटं जातं प्रवृत्तं लोभयोगतः। ३०
तत्तथाऽभिभवत्येव तमःसत्त्वे तथा उभे। तमस्तथोत्कटं भूत्वा प्रवृद्धं मोहयोगतः। ३१
तत्सत्त्वरजसीचोभे संगम्याभिभवत्यपि। विस्तरं कथयाम्यद्य यथाऽभिभवतीतिवै। ३२
यदा सत्त्वं प्रवृद्धं वै मतिर्धर्मे स्थितातदा। न चिन्तयति बाह्यार्थं रजस्तमःसमुद्भवम्। ३३
अर्थसत्त्वसमुद्भूतं गृह्णाति चनचान्यथा। अनायासकृतञ्चार्थं धर्मं यज्ञञ्च वाञ्छति। ३४
सात्त्विकेष्वेव भोगेषु कामं वै कुरुते तदा। राजसेषु न मोक्षार्थी तामसेषुपुनः कुतः। ३५
एवं जित्वारजः पूर्वं ततश्च तमसोजयः। सत्त्वं च केवलं पुत्र तदा भवति निर्मलम्। ३६
यदा रजःप्रवृद्धंवैत्यक्त्वाधर्मान्सनातनान्। अन्यथाकुरुतेधर्माञ्छ्रद्धांप्राप्यतुराजसीम्। ३७
राजसादर्थसम्वृद्धिस्तथा भोगस्तु राजसः। सत्त्वं विनिर्गतं तेन तमसश्चापिनिग्रहः। ३८
यदा तमो विवृद्धं स्यादुत्कटं सम्बभूव ह। तदा वेदे न विश्वासोधर्मशास्त्रे तथैव च। ३९
श्रद्धां च तामसीं प्राप्य करोतिच धनात्ययम्। द्रोहंसर्वत्रकुरुतेनशान्तिमधिगच्छति ।४०
जित्वा सत्त्वं रजश्चैव क्रोधनो दुर्मतिः शठः। वर्तते कामचारेण भावेषु विततेषु च। ४१
एकं सत्त्वं न भवति रजश्चैकं तमस्तथा। सहैवाश्रित्य वर्तन्ते गुणा मिथुनधर्मिणः। ४२
रजोविना न सत्त्वं स्याद्रजः सत्त्वं विना क्वचित्। तमोविनानचैवैतेवर्तन्ते पुरुषर्षभ। ४३

तमस्ताभ्यां विहीनं तु केवलं न कदाचन। सर्वेमिथुनधर्माणो गुणाःकार्यान्तरेषु वै।४४
अन्योन्यसंश्रिताःसर्वेतिष्ठन्ति नवियोजिताः। अन्योन्यजनकाश्चैवयतःप्रसवधर्मिणः ।४५
सत्त्वं कदाचिच्च रजस्तमसी जनयत्युत। कदाचित्तु रजः सत्त्वतमसी जनयत्यपि।४६
कदाचित्तु तमः सत्त्वरजसी जनयत्युभे। जनयन्त्येवमन्योन्यं मृत्पिण्डश्च घटं यथा।४७
बुद्धिस्थास्ते गुणाः कामान्बोधयन्ति परस्परम्। देवदत्तविष्णुमित्रयज्ञदत्तादयोयथा ।४८
यथा स्त्री पुरुषश्चैव मिथुनौ च परस्परम्। तथागुणाःसमायान्तियुग्मभावंपरस्परम्।४९
रजसो मिथुने सत्त्वं सत्त्वस्यमिथुने रजः। उभे ते सत्त्वरजसी तमसो मिथुने विदुः।५०

नारद उवाच

इत्येतत्कथितंपित्रा गुणरूपमनुत्तमम्। श्रुत्वाऽप्येतत्सएवाहं ततोऽपृच्छं पितामहम्।५१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांतृतीयस्कन्धे गुणानांरूपसंस्थानादिवर्णनंनामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

* नवमोऽध्यायः *

पुनरपिगुणानांलक्षणमधिकृत्यनारदप्रश्नः

नारद उवाच

गुणानां लक्षणं तात! भवता कथितं किल। न तृप्तोऽस्मि पिबन्मिष्टं त्वन्मुखात्प्रच्युतं रसम्। १
गुणानां तु परिज्ञानं यथावदनुवर्णय। येनाऽहं परमां शान्तिमधिगच्छामिचेतसी। २

व्यास उवाच

इतिपृष्टस्तु पुत्रेण नारदेन महात्मना। उवाच च जगत्कर्ता रजोगुणसमुद्भवः। ३

ब्रह्मोवाच

शृणुनारद वक्ष्यामि गुणानां परिवर्णनम्। सम्यङ् नाहंविजानामियथामतिवदामिते। ४
सत्त्वं तु केवलं नैव कुत्राऽपि परिलक्ष्यते। मिश्रीभावात्तुतेषांवैमिश्रत्वंप्रतिभातिवै। ५
यथा काचिद्वरा नारी सर्वभूषणभूषिता। हावभावयुताकामं भर्तुःप्रीतिकरी भवेत्। ६
मातापित्रोस्तथा सैव बन्धुवर्गस्य प्रीतिदा। दुःखं मोहं सपत्नीषुजनयत्यपिसैव हि। ७
एवं सत्त्वेन तेनैव स्त्रीत्वमापादितेन च। रजसस्तमसश्चैव जनितावृत्तिरन्यथा। ८
रजसा स्त्रीकृतेनैव तमसा च तथा पुनः। अन्योन्यस्यसमायोगादन्यथाप्रतिभाति वै। ९
अवस्थानात्स्वभावेषुनवैजात्यन्तराणि च। लक्ष्यन्तेविपरीतानियोगान्नारदकुत्रचित् ।१०
यथा रूपवती नारी यौवनेन विभूषिता। लज्जामाधुर्ययुक्ता च तथा विनयसंयुता।११
कामशास्त्रविधिज्ञा च धर्मशास्त्रेऽपिसम्मता। भर्तुःप्रीतिकरीभूत्वासपत्नीनांचदुःखदा ।१२
मोहदुःखस्वभावस्थासत्त्वस्थेत्युच्यते जनैः। तथासत्त्वंविकुर्वाणमन्यभावं विभातिवै।१३
चौरैरुपद्रुतानां हि साधूनां सुखदा भवेत्। दुःखामूढाचदस्यूनां सैव सेना तथागुणा।१४
विपरीतप्रतीतिं वै जनयन्ति स्वभावतः। यथा च दुर्दिनं जातं महामेघघनावृतम्।१५
विद्युत्स्तनितसंयुक्तं तिमिरेणावगुण्ठितम्। सिंचद्भूमिं प्रवर्षद्वै तमोरूपमुदाहृतम्।१६
यदेतत्कर्षकाणाम्वै तदेवाऽतीव दुर्दिनम्। बीजोपस्करयुक्तानां सुखदम्प्रभवत्युत।१७
अप्रच्छन्नगृहाणाञ्च दुर्भगानां विशेषतः। तृणकाष्ठगृहीतानां दुःखदं गृहमेधिनाम्।१८
प्रोषितभर्तृकाणाम्वै मोहदं प्रवदन्त्यपि। स्वभावस्थागुणाः सर्वे विपरीताविभातिवै।१९
लक्षणानि पुनस्तेषां शृणु पुत्र ब्रवीम्यहम्। लघुप्रकाशकं सत्त्वं निर्मलं विषदन्सदा।२०
यदांऽगानि लघून्येव नेत्रादीनीन्द्रियाणि च। निर्मलञ्चतथाचेतोगृह्णातिविषयान्नवान्।२१

तदासत्त्वंशरीरेवै मन्तव्यञ्च समुत्कटम्। जृम्भांस्तम्भं च तन्द्राञ्च चलञ्चैव रजःपुनः।२२
यदा तदुत्कटं जातं देहे यस्य च कस्यचित्। कलिं मृगयते कर्तुं गन्तुं ग्रामान्तरं तथा।२३
चलचित्तश्च सोऽत्यर्थं विवादे चोद्यतस्तथा। गुरुमावरणं कामं तमोभवति तद्यदा।२४
तदाऽङ्गानि गुरूण्याशुप्रभवन्त्यावृतानिच। इन्द्रियाणिमनःशून्यंनिद्रांनैवाभिवाञ्छति।२५
गुणानां लक्षणान्येव विज्ञेयानीह नारद!।

नारद उवाच

विभिन्नलक्षणाः प्रोक्ताः पितामह! गुणास्त्रयः ॥२६॥
कथमेकत्रसंस्थानेकार्यंकुर्वन्तिशाश्वतम् ।परस्परं मिलित्वाहि विभिन्नाःशत्रवःकिल।२७
एकत्रस्थाः कथं कार्यं कुर्वंतीति वदस्व मे।

ब्रह्मोवाच

शृणु पुत्र! प्रवक्ष्यामि गुणास्ते दीपवृत्तयः ॥२८॥
प्रदीपश्च यथाकार्यंप्रकरोत्यर्थदर्शनम्। वर्तिस्तैलं यथाऽर्चिश्च विरुद्धाश्च परस्परम्।२९
विरुद्धं हि तथा तैलमग्निना सह संगतम्। तैलं वर्तिविरोध्येव पावकोपि परस्परम्।३०
एकत्रस्थाः पदार्थानां प्रकुर्वन्ति प्रदर्शनम्।

नारद उवाच

एवं प्रकृतिजाः प्रोक्ता गुणाः सत्यवतीसुत! ॥३१॥
विश्वस्य कारणं ते वै मया पूर्वं यथाश्रुतम्।

व्यास उवाच

इत्युक्तं नारदेनाऽथ मम सर्वं सविस्तरम्। ३२
गुणानां लक्षणं सर्वं कार्यं चैव विभागशः। आराध्या परमाशक्तिर्यथासर्वमिदंततम्।३३
सगुणा निर्गुणा चैव कार्यभेदे सदैव हि। अकर्ता पुरुषःपूर्णो निरीहः परमोऽव्ययः।३४
करोत्येषा महामायाविश्वंसदसदात्मकम्। ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रःसूर्यश्चन्द्रःशचीपतिः।३५
अश्विनौ वसवस्त्वष्टाकुबेरो यादसाम्पतिः। वह्निर्वायुस्तथापूषासेनानीश्चविनायकः।३६
सर्वे शक्तियुताः शक्ताः कर्तुं कार्याणि स्वानि च।
अन्यथा तेऽप्यशक्ता वै प्रस्पन्दितुमनीश्वराः ॥३७॥
सा चैवकारणं राजञ्जगतः परमेश्वरी। समाराधय तां भूप कुरु यज्ञं जनाधिप!।३८
पूजनं परया भक्त्या तस्या एव विधानतः। महालक्ष्मीर्महाकालीतथामहासरस्वती ।३९
ईश्वरी सर्वभूतानां सर्वकारणकारणम्। सर्वकामार्थदा शान्ता सुखसेव्यादयान्विता।४०
नामोच्चारणमात्रेण वाञ्छितार्थफलप्रदा। देवैराराधिता पूर्वं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरैः।४१
मोक्षकामैश्च विविधैस्तापसैर्विजितात्मभिः। अस्पष्टमपि यन्नाम प्रसङ्गेनाऽपि भाषितम्।४२
ददाति वाञ्छितानर्थान्दुर्लभानपि सर्वथा। ऐऐ इति भयार्तेन दृष्ट्वाव्याघ्रादिकं वने।४३
बिन्दुहीनमपीत्युक्तं वाञ्छितं प्रददाति वै। तत्र सत्यव्रतस्यैव दृष्टान्तो नृपसत्तम।४४
प्रत्यक्ष एव चास्माकंमुनीनांभावितात्मनाम्। ब्राह्मणानांसमाजेषुतस्योदाहरणंबुधैः ।४५
कथ्यमानं मया राजञ्छ्रुतं सर्वं सविस्तरम्। अनक्षरोमहामूर्खोनाम्नासत्यव्रतोद्विजः।४६
श्रुत्वाऽक्षरं कोलमुखात्समुच्चार्यस्वयंततः। बिन्दुहीनंप्रसङ्गेन जातोऽसौविबुधोत्तमः।४७
ऐकारोच्चारणाद्देवी तुष्टा भगवती तदा। चकार कविराजं तं दयार्द्रा परमेश्वरी।४८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे गुणपरिज्ञानवर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

* दशमोऽध्यायः *

सत्यव्रताख्यानवर्णनम्

जनमेजय उवाच

कोऽसौ सत्यव्रतो नामब्राह्मणो द्विजसत्तमः। कस्मिन्देशेसमुत्पन्नः कीदृशश्चवदस्वमे।१
कथं तेन श्रुतःशब्दःकथमुच्चारितःपुनः। सिद्धिश्चकीदृशीजातातस्यविप्रस्यतत्क्षणात्।२
कथं तुष्टा भवानी सा सर्वज्ञासर्वसंस्थिता। विस्तरेणवदस्वाद्यकथामेतांमनोरमाम्।३

सूत उवाच

इतिपृष्टस्तदा राज्ञा व्यासः सत्यवतीसुतः। उवाच परमोदारं वचनं रसवच्छुचि।४

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कथां पौराणिकीं शुभाम्। श्रुतामुनिसमाजेषुमयापूर्वं कुरूद्वहः।५
एकदाऽहं कुरुश्रेष्ठ कुर्वंस्तीर्थाटनं शुचि। सम्प्राप्तो नैमिषारण्यं पावनं मुनिसेवितम्।६
प्रणम्याहं मुनीन्सर्वान्स्थितस्तत्रवराश्रमे। विधिपुत्रास्तुयत्रासञ्जीवन्मुक्तामहाव्रताः।७
कथाप्रसङ्गे एवाऽऽसीत्तव विप्रसमागमे। जमदग्निस्तु पप्रच्छ मुनीनेवं समास्थितः।८

जमदग्निरुवाच

सन्देहोऽस्ति महाभागाममचेतसितापसाः। समाजेषु मुनीनांवैनिःसन्देहोभवाम्यहम्।९
ब्रह्माविष्णुस्तथा रुद्रो मघवा वरुणोऽनलः। कुबेरःपवनस्त्वष्टासेनानीश्च गणाधिपः।१०
सूर्योऽश्विनौ भगः पूषा निशानाथो ग्रहास्तथा। आराधनीयतमः कोऽत्र वाञ्छितार्थफलप्रदः।११
सुखसेव्यश्च सततं चाऽऽशुतोषश्च मानदाः। ब्रुवन्तुमुनयः शीघ्रं सर्वज्ञाः संशितव्रताः।१२
एवं प्रश्ने कृते तत्र लोमशो वाक्यमब्रवीत्। जमदग्नेश्शृणुष्वैतद्यत्पृष्टं वै त्वयाऽधुना।१३
सेवनीयतमा शक्तिः सर्वेषांशुभमिच्छताम्। परा प्रकृतिराद्याच सर्वगा सर्वदाशिवा।१४
देवानां जननी सैव ब्रह्मादीनांमहात्मनाम्। आदिप्रकृतिर्मूलं सा संसारपादपस्य वै।१५
स्मृता चोच्चारिता देवी ददाति किल वाञ्छितम्। सर्वदैवाऽऽर्द्रचित्ता सा वरदानाय सेविता।१६
इतिहासम्प्रवक्ष्यामि शृण्वन्तुमुनयः शुभम्। अक्षरोच्चारणादेवयथाप्राप्तं द्विजेन वै।१७
कोसलेषु द्विजः कश्चिद्देवदत्तेति विश्रुतः। अनपत्यश्चकारेष्टिं पुत्राय विधिपूर्वकम्।१८
तमसातीरमास्थाय कृत्वा मण्डपमुत्तमम्। द्विजानाहूय वेदज्ञान्सत्रकर्मविशारदान्।१९
कृत्वावेदिं विधानेन स्थापयित्वाविभावसून्। पुत्रेष्टिं विधिवत्तत्र चकार द्विजसत्तमः।२०
ब्रह्माणं कल्पयामास सुहोत्रंमुनिसत्तमम्। अध्वर्युं याज्ञवल्क्यञ्चहोतारञ्चबृहस्पतिम्।२१
प्रस्तोतारन्तथापैलमुद्गातारंचगोभिलम्। सभ्यानन्यान्मुनीन्कृत्वा विधिवत्प्रददौवसु।२२
उद्गातासामगः श्रेष्ठः सप्तस्वरसमन्वितम्। रथन्तरमगायत्तु स्वरितेन समन्वितम्।२३
तदाऽस्य स्वरभङ्गोऽभूत्कृते श्वासेमुहुर्मुहः। देवदत्तश्चुकोपाऽऽशुगोभिलंप्रत्युवाचह।२४
मूर्खोऽसिमुनिमुख्याद्य स्वरभंगस्त्वयाकृतः। काम्यकर्मणिसञ्जातेपुत्रार्थंयजतश्च मे।२५
गोभिलस्तु तदोवाच देवदत्तं सुकोपितः। मूर्खस्ते भवितापुत्रः शठः शब्दविवर्जितः।२६
सर्वप्राणिशरीरेतु श्वासोच्छ्वासः सुदुर्ग्रहः। न मेऽत्र दूषणंकिञ्चित्स्वरभंगे महामते।२७
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य गोभिलस्यमहात्मनः। शापाद्भीतोदेवदत्तस्तमुवाचातिदुःखितः।२८
कथं क्रुद्धोऽसिविप्रेन्द्रवृथामयिनिरागसि। अक्रोधना हि मुनयोभवन्तिसुखदाः सदा।२९
स्वल्पेऽपराधेविप्रेन्द्र कथंशप्तस्त्वयाह्यहम्। अपुत्रोऽहं सुतप्तः प्राक्तापयुक्तः पुनःकृतः।३०
मूर्खपुत्रादपुत्रत्वं वरं वेदविदो विदुः। तथाऽपि ब्राह्मणो मूर्खः सर्वेषां विद्य एव हि।३१

पशुवच्छूद्रवच्चैव न योग्यः सर्वकर्मसु। किं करोमीह मूर्खेण पुत्रेण द्विजसत्तम।३२
यथा शूद्रस्तथा मूर्खो ब्राह्मणोनात्रसंशयः। न पूजार्हो न दानार्हो निंद्यश्च सर्वकर्मसु।३३
देशे वै वसमानश्च ब्राह्मणो वेदवर्जितः। करदः शूद्रवच्चैव मन्तव्यः स च भूभुजा।३४
नासने पितृकार्येषु देवकार्येषु स द्विजः। मूर्खः समुपवेष्यश्च कार्यस्य फलमिच्छता।३५
राज्ञा शूद्रसमो ज्ञेयो न योज्यः सर्वकर्मसु। कर्षकस्तु द्विजः कार्यो ब्राह्मणो वेदवर्जितः।३६
विना विप्रेण कर्तव्यं श्राद्धंकुशचटेन वै। न तु विप्रेण मूर्खेण श्राद्धं कार्यं कदाचन।३७
आहारादधिकं चान्नं न दातव्यमपण्डिते। दातानरकमाप्नोति ग्रहीता तु विशेषतः।३८
धिग्राज्यं तस्यराज्ञोवैयस्यदेशेऽबुधाजनाः। पूज्यन्तेब्राह्मणामूर्खा दानमानादिकैरपि।३६
आसने पूजने दाने यत्र भेदो न चाण्वपि। मूर्खपण्डितयोर्भेदो ज्ञातव्यो विबुधेन वै।४०
मूर्खा यत्र सुगर्विष्ठा दानमानपरिग्रहैः। तस्मिन्देशेन वस्तव्यं पण्डितेन. कथञ्चन।४१
असतामुपकाराय दुर्जनानां विभूतयः। पिचुमन्दः फलाढ्योऽपि काकैरेवोपभुज्यते।४२
भुक्त्वाऽन्नंवेदविद्विप्रोवेदाभ्यासंकरोतिवै ।क्रीडन्तिपूर्वजास्तस्यस्वर्गेप्रमुदिताःकिल ।४३
गोभिलातः किमुक्तं वै त्वया वेदविदुत्तम। संसारे मूर्खपुत्रत्वं मरणादतिगर्हितम्।४४
कृपां कुरुमहाभाग शापस्यानुग्रहं प्रति। दीनोद्धारणशक्तोऽसि पतामितव पादयोः।४५

लोमश उवाच

इत्युक्त्वा देवदत्तस्तु पतितस्तस्यपादयोः। स्तुवन्दीनहृदत्यर्थं कृपणः साश्रुलोचनः।४६
गोभिलस्तुतदातत्र दृष्ट्वा तं दीनचेतसम्। क्षणकोपामहान्तोवै पापिष्ठाःकल्पकोपनाः।४७
जलं स्वभावतः शीतंपावकातपयोगतः। उष्णं भवति तच्छीघ्रं तद्विनाशिशिरं भवेत्।४८
दयावान्गोभिलस्त्वाह देवदत्तंसुदुःखितम्। मूर्खोभूत्वासुतस्तेवैविद्वानपिभविष्यति।४६
इतिदत्तवरः सोऽथ मुदितोऽभूद्द्विजर्षभः। इष्टिंसमाप्यविप्रान्वै विससर्ज यथाविधि।५०
कालेन कियता तस्य भार्यारूपवती सती। गर्भन्दधारकालेसारोहिणीरोहिणीसमा।५१
गर्भाधानादिकंकर्म चकार विधिवद्द्विजः। पुंसवनविधानञ्च शृङ्गारकरणं तथा।५२
सीमन्तोन्नयनञ्चैव कृतं वेदविधानतः। ददौ दानानि मुदितो मत्वेष्टिं सफलान्तथा।५३
शुभेऽह्नि सुषुवे पुत्रं रोहिणी रोहिणीयुते। दिनेलग्ने शुभेऽत्यर्थं जातकर्मचकार सः।५४
पुत्रदर्शनकं कृत्वा नामकर्म चकार च। उतथ्य इति पुत्रस्य कृतं नाम पुराविदा।५५
स चाऽष्टमे तथा वर्षे शुभे वै शुभवासरे। तस्योपनयनं कर्म चकार विधिवत्पिता।५६
वेदमध्यापयामास गुरुस्तं वै व्रते स्थितम्। नोच्चचार तथोतथ्यःसंस्थितोमुग्धवत्तदा।५७
बहुधा पाटितः पित्रा न दधार मतिं शठः। मूढवत्तिष्ठतेऽत्यर्थं तं शुशोच पिता तदा।५८
एवंकुर्वन्सदाऽभ्यासंजातोद्वादशवार्षिकः ।नवेदविधिवत्कर्तुंसन्ध्यावन्दनकं विधिम्।५६
मूर्खोऽभूदितिलोकेषु गतावार्ताऽतिविस्तरम्। ब्राह्मणेषु चसर्वेषु तापसेष्वितरेषु च।६०
जहासलोकस्तंविप्रंयत्रतत्र गतं वने। पिता-माता निनिन्दाथ मूर्खं तमसिभर्त्सयन्।६१
निन्दितोऽथ जनैःकामं पितृभ्यामथबान्धवैः। वैराग्यमगमद्विप्रोजगाम वनमप्यसौ।६२
अन्धो वरस्तथापंगुर्नमूर्खस्तुवरः सुतः। इत्युक्तोऽसौ पितृभ्यां वै विवेशकाननम्प्रति।६३
गङ्गातीरेशुभेस्थानेकृत्वोटजमनुत्तमम् ।वन्याम्वृत्तिञ्च सङ्कल्प्य स्थितस्तत्रसमाहितः।६४
नियमञ्च परं कृत्वा नासत्यं प्रब्रवीम्यहम्। स्थितस्तत्राश्रमेरम्येब्रह्मचर्यव्रतो हि सः।६५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे सत्यव्रताख्यानवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः॥१०॥

* एकादशोऽध्यायः *

सत्यव्रताख्यानवर्णनम्

लोमश उवाच

नवेदाध्ययनंकिञ्चिज्ज्ञानातिन जपं तथा। ध्यानंन देवतानाञ्च न चैवाऽऽराधनं तथा।१
नाऽऽसनं वेदविप्रोऽसौप्राणायामन्तथापुनः। प्रत्याहारन्तुनोवेदभूतशुद्धिञ्चकारणम्।२
न मन्त्रं कीलकंजाप्यंगायत्रीञ्च न वेद सः। शौचंस्नानविधिञ्चैवतथाऽऽचमनकं पुनः।३
प्राणाग्निहोत्रं नो वेदबलिदानंनचातिथिम्। नसन्ध्यांसमिधोहोमंविवेदचतथा मुनिः।४
सोऽकरोत्प्रातरुत्थाय यत्किञ्चिद्दन्तधावनम्। स्नानञ्च शूद्रवत्तत्र गङ्गायां मन्त्रवर्जितम्।५
फलान्यादायवन्यानिमध्याह्नेऽपियदृच्छया। भक्ष्याभक्ष्यपरिज्ञानंनजानातिशठस्तथा।६
सत्यम्ब्रूते स्थितस्तत्रनानृतंवदते पुनः। जनैःसत्यतपा नाम कृतमस्य द्विजस्य वै।७
नाहितंकस्यचित्कुर्यान्न तथाऽविहितंक्वचित्। सुखंस्वपितितत्रैवनिर्भयश्चिन्तयन्निति ।८
कदामेमरणम्भावि दुःखंजीवामि कानने। जीवितं धिक्चमूर्खस्य तरसा मरणंध्रुवम्।९
दैवेनाऽहं कृतो मूर्खो नान्योऽत्र कारणं मम। प्राप्य चैवोत्तमं जन्म वृथा जातं ममाधुना।१०
यथा वन्ध्यासुरूपाच यथावानिष्फलोद्रुमः। अदुग्धदोहाधेनुश्चतथाऽहंनिष्फलःकृतः।११
किन्तु निन्दाम्यहं दैवंनूनं कर्म ममेदृशम्। न दत्तं पुस्तकं दत्वा ब्राह्मणाय महात्मने।१२
न वै विद्या मया दत्तापूर्वजन्मनिनिर्मला। तेनाहं कर्मयोगेन शठोऽस्मिच द्विजाधमः।१३
नचतीर्थेतपस्तप्तंसेवितानचसाधवः। न द्विजाः पूजिता द्रव्यैस्तेनजातोऽस्मिदुष्टधीः।१४
वर्तन्ते मुनिपुत्राश्च वेदशास्त्रार्थपारगाः। अहं सुमूढः सञ्जातो दैवयोगेन केनचित्।१५
न जानामि तपस्तप्तुं किं करोमि सुसाधनम्। मिथ्याऽयं मेऽत्र सङ्कल्पो न मे भाग्यं शुभं किल।१६
दैवमेवपरं मन्ये धिक्पौरुषमनर्थकम्। वृथा श्रमकृतं कार्यं दैवाद्भवति सर्वथा।१७
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च शक्राद्या किलदेवताः। कालस्यवशगाःसर्वे कालोहिदुरतिक्रमः।१८
एवंविधान्वितर्कांस्तुकुर्वाणोऽहर्निशंद्विजः। स्थितस्तत्राश्रमेतीरेजाह्नव्याःपावनेस्थले ।१९
विरक्तःसतुसञ्जातः स्थितस्तत्राऽऽश्रमेद्विजः। कालातिवाहनं शान्तश्चकारविजने वने।२०
एवं स्थितस्य तु वने विमलोदके वै वर्षाणि तत्र नव पञ्च गतानि कामम्।
नाऽऽराधनं न च जपं न विवेद मन्त्रं कालातिवाहनमसौ कृतवान्वने वै।२१
जानाति तस्य विततं व्रतमेव लोकः सत्यं वदत्यपि मुनिःकिल नाम जातम्।
जातं यशश्च सकलेषु जनेषु कामं सत्यव्रतोऽयमनिशं न मृषाभिभाषी।२२
तत्रैकदा तु मृगयां रममाण एव प्राप्तो निषादनिशठो धृतचापबाणः।
क्रीडन्वनेऽतिविपुले यमतुल्यदेहः क्रूराकृतिर्हननकर्मणि चाऽतिदक्षः।२३
तेनाऽतिकृष्टेन शरेण विद्धः कोलः किरातेन धनुर्धरेण।
पलायमानो भयविह्वलश्च मुनेः समीपं विद्रुतो जगाम॥२४॥
विकम्पमानो रुधिरार्द्रदेहो यदा जगामाऽऽश्रममण्डलम्वै।
कोलस्तदाऽतीव दयार्द्रभावं प्राप्तो मुनिस्तत्र समीक्ष्य दीनम्॥२५॥
अग्रे व्रजन्तं रुधिरार्द्रदेहं दृष्ट्वा मुनिः सूकरमाशु विद्धम्।
दयाभिवेशादतिकम्पमानः सारस्वतं बीजमथोच्चचार॥२६॥
अज्ञातपूर्वञ्च तथाऽश्रुतञ्च दैवान्मुखे वै समुपागतञ्च।
न ज्ञातवान्बीजमसौ विमूढो ममज्ज शोके स मुनिर्महात्मा॥२७॥

कोलः प्रविश्याऽऽश्रममण्डलं तद्गतो निकुञ्जे प्रविलीय गूढम्।
अप्राप्तमार्गो दृढनिर्विण्णचेताः प्रवेपमानः शरपीडितत्वात्।।२८।।
ततः क्षणादाकरणांतकृष्टं चापं दधानोऽतिकरालदेहः।
प्राप्तस्तदन्ते स च मृग्यमाणो निषादराजः किल काल एव।।२९।।
दृष्ट्वा मुनिं तत्र कुशासने स्थितं नाम्ना तु सत्यव्रतमद्वितीयम्।
व्याधः प्रणम्य प्रमुखे स्थितोऽसौ पप्रच्छ कोलः क्वगतो द्विजेश!।।३०।।
जानामि तेऽहं सुव्रतम्प्रसिद्धं तेनाऽद्यपृच्छे मम बाणविद्धः।
क्षुधार्दितं मे सकलं कुटुम्बं विभर्तुकामः किल आगतोऽस्मि।।३१।।
वृत्तिर्ममैषा विहिता विधात्रा नान्याऽस्ति विप्रेन्द्र ऋतं ब्रवीमि।
भर्तव्यमेवेह कुटुम्बमञ्जसा केनाप्युपायेन शुभाशुभेन।।३२।।
सत्यम्ब्रवीत्वद्य सत्यव्रतोऽसि क्षुधातुरो वर्तते पोष्यवर्गः।
क्वाऽसौ गतः सूकरो बाणविद्धः पृच्छाम्यहं पाण्डव ब्रूहि तूर्णम्।।३३।।
तेनेति पृष्टः स मुनिर्महात्मा वितर्कमग्नः प्रबभूव कामम्।
सत्यव्रतं मेऽद्य भवेन्न भग्नं न दृष्ट इत्युच्चरितेत किं वै।।३४।।
गतोऽत्र कोलः शरविद्धदेहः कथं ब्रवीम्यद्य मृषाऽमृषा वा।
क्षुधार्दितोऽयं परिपृच्छतीव दृष्ट्वा हनिष्यत्यपि सूकरं वै।।३५।।
सत्यं न सत्यं खलु यत्र हिंसा दयान्वितं चानृतमेव सत्यम्।
हितं नराणां भवतीह येन तदेव सत्यं न तथाऽन्यथैव।।३६।।
हितं कथं स्यादुभयोर्विरुद्धयोस्तदुत्तरं किं न यथा मृषा वचः।
विचारयन्वाडव धर्मसङ्कटे न प्राप वक्तुं वचनं यथोचितम्।।३७।।
बाणाहतं वीक्ष्य दयान्वितं च कोलं तदन्ते समुदाहृतं वचः।
तेन प्रसन्ना निजबीजतः शिवा विद्यां दुरापां प्रददौ च तस्मै।।३८।।

बीजोच्चारणतो देव्या विद्या प्रस्फुरिताऽखिला।
वाल्मीकेश्च यथा पूर्वं तथा स ह्यभवत्कविः।।३९।।

तमुवाच द्विजो व्याधंसन्मुखस्थंधनुर्धरम्। सत्यकामस्तुधर्मात्माश्लोकमेकंदयापरः।४०
या पश्यतिन साब्रूतेयाब्रूतेसानपश्यति। अहोव्याधस्वकार्यार्थिन्किंपृच्छसिपुनःपुनः।४१
इत्युक्तस्तु तदातेन गतोऽसौ पशुहा पुनः। निराशः सूकरे तस्मिन्परावृत्तोनिजालये।४२
ब्राह्मणस्तु कविर्जातः प्राचेतस इवापरः। प्रसिद्धःसर्वलोकेषु नाम्ना सत्यव्रतो द्विजः।४३
सारस्वतं ततोबीजं जजाप विधिपूर्वकम्। पण्डितश्चाऽतिविख्यातो द्विजोऽसौ धरणीतले।४४
प्रतिपर्वसु गायन्ति ब्राह्मणायद्यशःसदा। आख्यानंजातिविस्तीर्णंस्तुवन्तिमुनयःकिल।४५
तच्छ्रुत्वा सदनं तस्य समागम्य तदाश्रमे। येनत्यक्तः पुरातेन गृहं नीतोऽतिमानितः।४६
तस्माद्राजन्सदा सेव्यापूजनीया चभक्तितः। आदिशक्तिः परादेवीजगतांकारणंहिसा।४७
तस्या यज्ञं महाराज कुरुवेदविधानतः। सर्वकामप्रदं नित्यं निश्चयं कथितं पुरा।४८

स्मृता सम्पूजिता भक्त्या ध्याता चोच्चारिता स्तुता।
ददाति वाञ्छितानर्थान्कामदा तेन कीर्त्यते।।४९।।

अनुमानमिदंराजन्कर्तव्यं सर्वथा बुधैः। दृष्ट्वा रोगयुतान्दीनान्क्षुधितान्निर्धनाञ्छठान्।५०
जनानार्तांस्तथा मूर्खान्पीडितान्वैरिभिः सदा। दासानाज्ञाकरान्क्षुद्रान्विकलान्विह्वलानथ।५१

अतृप्ता भोजने भोगे सदाऽऽर्तानजितेन्द्रियान्। तृष्णाधिकानशक्तांश्च सदाऽऽधिपरिपीडितान्।५२
तथा विभवसम्पन्नान्पुत्रपौत्रविवर्धनान्। पुष्टदेहांश्च सम्भोगैः संयुतान्वेदवादिनः।५३
राजलक्ष्म्या युताञ्छूरान्वशीकृतजनानथ। स्वजनैरवियुक्तांश्च सर्वलक्षणलक्षितान्।५४
व्यक्तिरेकान्वयाभ्याञ्च विचेतव्यं विचक्षणैः। एभिर्नपूजिता देवीसर्वार्थफलदाशिवा।५५
समाराधिता च तथा नृभिरेभिः सदाऽम्बिका। यतोऽमी सुखिनः सर्वे संसारेऽस्मिन्न संशयः।५६

व्यास उवाच

इतिराजञ्छ्रुतं तत्र मयामुनिसमागमे। लोमशस्य मुखात्कामंदेवीमाहात्म्यमुत्तमम्।५७
इतिसञ्चिंत्य राजेन्द्र कर्तव्यं च सदाऽर्चनम्। भक्त्यापरमयादेव्याःप्रीत्याचपुरुषर्षभः ।५८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे सत्यव्रताख्यानवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

* द्वादशोऽध्यायः *

सात्त्विकराजसतामसभेदेनाम्बायज्ञविधिवर्णनम्

राजोवाच

वद यज्ञविधिं सम्यग्देव्यास्तस्याः समन्ततः। श्रुत्वा करोम्यहं स्वामिन्यथाशक्ति ह्यतन्द्रितः। १
पूजाविधिंचमन्त्रांश्च होमद्रव्यमसंशयम्। ब्राह्मणाः कतिसंख्याश्चदक्षिणाश्चतथापुनः। २

व्यास उवाच

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि देव्याः यज्ञं विधानतः। त्रिविधंतु सदाज्ञेयंविधिदृष्टेन कर्मणा। ३
सात्त्विकं राजसं चैव तामसंच तथाऽपरम्। मुनीनां सात्त्विकं प्रोक्तं नृपाणां राजसं स्मृतम्। ४
तामसं राक्षसानां वैज्ञानिनांतुगुणोज्झितम्। विमुक्तानांज्ञानमयंविस्तरात्प्रब्रवीमिते। ५
देशःकालस्तथाद्रव्यंमन्त्राश्चब्राह्मणास्तथा। श्रद्धाचसात्त्विकीयत्रतंयज्ञंसात्त्विकंविदुः। ६
द्रव्यशुद्धिः क्रियाशुद्धिर्मन्त्रशुद्धिश्चभूमिप। भवेद्यदि तदापूर्णफलंभवति नाऽन्यथा।७
अन्यायोपार्जितेनैव द्रव्येण सुकृतं कृतम्। न कीर्तिरिहलोके च परलोकेन तत्फलम्।८
तस्मान्न्यायार्जितेनैव कर्तव्यं सुकृतं सदा। यशसे परलोकाय भवत्येव सुखाय च।९
प्रत्यक्षं तव राजेन्द्र पाण्डवैस्तु मखः कृतः। राजसूयः क्रतुवरः समाप्तवरदक्षिणः।१०
यत्र साक्षाद्धरिःकृष्णोयादवेन्द्रो महामनाः। ब्राह्मणाः पूर्णविद्याश्चभारद्वाजादयस्तथा।११
कृत्वा यज्ञं सुसम्पूर्णं मासमात्रेणपाण्डवैः। प्राप्तं महत्तरं कष्टं वनवासश्च दारुणः।१२
पीडनंचैव पाञ्चाल्यास्तथाद्यूते पराजयः। वनवासो महत्कष्टं क्व गतं मखजं फलम्।१३
दासत्वञ्च विराटस्य कृतं सर्वैर्महात्मभिः। कीचकेन परिक्लिष्टा द्रौपदी च प्रमद्वरा।१४
आशीर्वादाद्द्विजातीनां क्व गता शुद्धचेतसाम्। भक्तिर्वावासुदेवस्यक्वगता तत्र सङ्कटे।१५
न रक्षिता तदा बाला केनाऽपि द्रुपदात्मजा। प्राप्तकेशग्रहाकालेसासाध्वीच वरवर्णिनी।१६
किमत्रचिन्तनीयम्बै धर्मवैगुण्यकारणम्। केशवे सती देवेशे धर्मपुत्रे युधिष्ठिरे।१७
भवितव्यमिति प्रोक्ते निष्फलःस्यात्तदाऽऽगमः। वेदमन्त्रास्तथाऽन्ये वै वितथाः स्युरसंशयम्।१८
साधनं निष्फलं सर्वमुपायश्च निरर्थकः। भवितव्यम्भवत्येव वचने प्रतिपादके।१९
आगमोऽप्यर्थवादः स्यात्क्रियाः सर्वा निरर्थकाः। स्वर्गार्थञ्च तपो व्यर्थं वर्णधर्मश्च वै तथा।२०
सर्वम्प्रमाणं व्यर्थं स्याद्भवितव्ये कृते हृदि। उभयञ्चापि मन्तव्यं दैवं चोपाय एव च।२१
कृते कर्मणि चेत्सिद्धिर्विपरीता यदा भवेत्। वैगुण्यं कल्पनीयं स्यात्प्राज्ञैः पण्डितमौलिभिः।२२

तत्कर्म बहुधा प्रोक्तं विद्वद्भिःकर्मकारिभिः। कर्तृभेदान्मन्त्रभेदाद्द्रव्यभेदात्तथा पुनः।२३
यथा मघवतापूर्वं विश्वरूपो वृतो गुरुः। विपरीतं कृतं तेन कर्म मातृहिताय वै।२४
देवेभ्योदानवेभ्यस्तुस्वस्तीत्युक्त्वा पुनःपुनः। असुरामातृपक्षीयाः कृतंतेषाञ्च रक्षणम्।२५
दैत्यान्दृष्ट्वाऽतिसम्पुष्टांश्चुकोप मघवातदा। शिरांसितस्य वज्रेण चिच्छेदतरसाहरिः।२६
क्रियावैगुण्यमत्रैव कर्तृभेदादसंशयम्। नोचेत्पञ्चालराजेनरोषेणापि कृता क्रिया।२७
भारद्वाजविनाशाय पुत्रस्योत्पादनाय च। धृष्टद्युम्नः समुत्पन्नो वेदिमध्याच्च द्रौपदी।२८
पुरा दशरथेनापि पुत्रेष्टिस्तु कृता यदा। अपुत्रस्य सुतास्तस्य चत्वारःसम्प्रजज्ञिरे।२९
अतःक्रियाकृतायुक्त्यासिद्धिदासर्वदाभवेत्। अयुक्त्याविपरीतास्यात्सर्वथानृपसत्तम।३०
पाण्डवानांयथा यज्ञे किञ्चिद्वैगुण्ययोगतः। विपरीतं फलं प्राप्तं वर्जितास्ते दुरोदरे।३१
सत्यवादी तथा राजन्धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः। द्रौपदी च तथा साध्वी तथाऽन्येऽप्यनुजाः शुभाः।३२
कुद्रव्ययोगाद्वैगुण्यं समुत्पन्नं मखेऽथवा। साभिमानैःकृताद्वाऽपिदूषणंसमुपस्थितम्।३३
सात्विकस्तुमहाराजदुर्लभोवैमखःस्मृतः। वैखानसमुनीनां हिविहितोऽसौमहामखः।३४
सात्त्विकं भोजनं ये वै नित्यं कुर्वन्ति तापसाः। न्यायार्जितञ्च वन्यञ्च तथा ऋध्यं सुसंस्कृतम्।३५
पुरोडाशपरा नित्यं वियूपा मन्त्रपूर्वकाः। श्रद्धाधिका मखा राजन्सात्त्विकाः परमाः स्मृताः।३६
राजसाद्रव्यबहुलाःसयूपाश्चसुसंस्कृताः। क्षत्रियाणांविशाञ्चैवसाभिमानाश्चवै मखाः।३७
तामसा दानवानां वै सक्रोधा मददर्शकाः। सामर्षाः संस्कृताः क्रूरा मखाः प्रोक्ता महात्मभिः।३८
मुनीनां मोक्षकामानांविरक्तानां महात्मनाम्। मानसस्तु स्मृतो यागः सर्वसाधनसंयुतः।३९
अन्येषुसर्वयज्ञेषु किञ्चिन्न्यूनम्भवेदपि। द्रव्येण श्रद्धया वाऽपि क्रिययाब्राह्मणैस्तथा।४०
देशकालपृथग्द्रव्यसाधनैः सकलैस्तथा। नान्यो भवति पूर्णो वै तथा भवति मानसः।४१
प्रथमंतु मनःशोध्यं कर्तव्यं गुणवर्जितम्। शुद्धे मनसि देहो वै शुद्ध एव न संशयः।४२
इन्द्रियार्थपरित्यक्तं यदा जातं मनःशुचि। तदातस्यमखस्यासौ प्रभवेदधिकारवान्।४३
तदाऽसौमण्डपंकृत्वाबहुयोजनविस्तृतम्। स्तम्भैश्चविपुलैःश्लक्ष्णैर्याज्ञियद्रुमसम्भवैः।४४
वेदिञ्च विशदान्तत्रमनसा परिकल्पयेत्। अग्नयोऽपि तथा स्थाप्या विधिवन्मनसा किल।४५
ब्राह्मणानाञ्चवरणं तथैव प्रतिपाद्य च। ब्रह्माऽध्वर्युस्तथा होताप्रस्तोताविधिपूर्वकम्।४६
उद्गाताप्रतिहर्ताच सभ्याश्चान्ये यथाविधि। पूजनीयाः प्रयत्नेनमनसैव द्विजोत्तमाः।४७
प्राणोऽपानस्तथाव्यानःसमानोदान एव च। पावकाःपञ्चएवैतेस्थाप्यावेद्यां विधानतः।४८
गार्हपत्यस्तदा प्राणोऽपानश्चाहवनीयकः। दक्षिणाग्निस्तथा व्यानः समानश्चावसथ्यकः।४९
सभ्योदानः स्मृता ह्येते पावकाःपरमोत्कटाः। द्रव्यञ्चमनसाभाव्यं निर्गुणं परमं शुचि।५०
मन एव तदा होता यजमानस्तथैव तत्। यज्ञाधिदेता ब्रह्म निर्गुणञ्च सनातनम्।५१
फलदानिर्गुणाशक्तिःसदानिर्वेददाशिवा। ब्रह्मविद्याऽखिलाधाराव्याप्यसर्वत्रसंस्थिता।५२
तदुद्देशेनतद्द्रव्यं हुनेत्प्राणाग्निषु द्विजः। पश्चाच्चित्तंनिरालम्बं कृत्वा प्राणानपिप्रभो।५३
कुण्डलीमुखमार्गेण हुनेद् ब्रह्मणि शाश्वते। स्वानुभूत्या स्वयं साक्षात्स्वात्मभूतां महेश्वरीम्।५४
समाधिनैवयोगेन ध्यायेच्चेतस्यनाकुलः। सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।५५
यदा पश्यति भूतात्मा तदा पश्यति तां शिवाम्। दृष्ट्वा तां ब्रह्मविद् भूयात्सच्चिदानन्दरूपिणीम्।५६

तदा मायादिकं सर्वं दग्धं भवति भूमिप!। प्रारब्धकर्ममात्रन्तु यावद्देहञ्च तिष्ठति।५७
जीवन्मुक्तस्तदाजातोमृतोमोक्षमवाप्नुयात्। कृतकृत्योभवेत्तातयोभजेज्जगदम्बिकाम्।५८
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ध्येया श्रीभुवनेश्वरी। श्रोतव्याश्चैवमन्तव्या गुरुवाक्यानुसारतः।५९
राजन्नेवं कृतोयज्ञोमोक्षदोनात्रसंशयः। अन्ये यज्ञाःसकामास्तु प्रभवन्तिक्षयोन्मुखाः।६०
अग्निष्टोमेनविधिवत्स्वर्गकामोयजेदिति। वेदानुशासनं चैतत्प्रवदंतिमनीषिणः।६१
क्षीणे पुण्येमृत्युलोकंविशन्तिचयथामति। तस्मात्तु मानसःश्रेष्ठोयज्ञोऽप्यक्षयएवसः।६२
न राज्ञासाधितुंयोग्योमखोऽसौजयमिच्छता। तामसस्तुकृतःपूर्वंसर्पयज्ञस्त्वयाऽधुना।६३
वैरंनिर्वाहितं राजंस्तक्षकस्य दुरात्मनः। यत्कृतेनिहताः सर्पास्त्वयाऽग्नौकोटिशःपरे।६४
देवीयज्ञं कुरुष्वाऽद्य विततं विधिपूर्वकम्। विष्णुना यःकृतः पूर्वंसृष्ट्यादौनृपसत्तम।६५
तथा त्वं कुरु राजेन्द्रविधिंतेप्रब्रवीम्यहम्। ब्राह्मणाः संतिराजेन्द्रविधिज्ञावेदवित्तमाः।६६
देवीबीजविधानज्ञा मंत्रमार्गविचक्षणाः। याजकास्ते भविष्यंति यजमानस्त्वमेवहि।६७
कृत्वा यज्ञं विधानेन दत्त्वा पुण्यं मखार्जितम्। समुद्धर महाराजपितरं दुर्गतिं गतम्।६८
विप्रावमानजं पापं दुर्घटं नरकप्रदम्। तथैव शापजो दोषः प्राप्तः पित्रा तवाऽनघ।६९
तथा दुर्मरणं प्राप्तं सर्पदंशेन भूभुजा। अन्तराले तथामृत्युर्न भूमौ कुशसंस्तरे।७०
न संग्रामे न गङ्गायां स्नानदानादिवर्जितम्। मरणं ते पितुस्तत्र सौधे जातं कुरूद्वह।७१
कपूणानिच सर्वाणि नरकस्य नृपोत्तम। तत्रैकं कारणन्तस्य न जातं चातिदुर्लभम्।७२
यत्र यत्र स्थितः प्राणी ज्ञात्वा कालं समागतम्। साधनानामभावेऽपि ह्यवशश्चातिसङ्कटे।७३
यदानिर्वेदमायाति मनसा निर्मलेन वै। पञ्चभूतात्मको देहो मम किं चात्रदुःखदम्।७४
पतत्वद्य यथाकामं मुक्तोऽहंनिर्गुणोऽव्ययः। नाशात्मकानितत्त्वानितत्रकापरिदेवना।७५
ब्रह्मैवाऽहं न संसारी सदामुक्तः सनातनः। देहे न मम सम्बन्धःकर्मणा प्रतिपादितः।७६
तानिसर्वाणि मुक्तानि शुभानि चेतराणिच। मनुष्यदेहयोगेन सुखदुःखानुसाधनात्।७७
विमुक्तोऽतिभयाद् घोरादस्मात्संसारसंकटात्। इत्येवं चिन्त्यमानस्तु स्नानदानविवर्जितः।७८
मरणञ्चेदवाप्नोति स मुच्येज्जन्मदुःखतः। एषाकाष्ठा पराप्रोक्तायोगिनामपि दुर्लभा।७९
पिता ते नृपशार्दूल श्रुत्वा शापं द्विजोदितम्। देहे ममत्वं कृतवान्न निर्वेदमवाप्तवान्।८०
नीरोगो मम देहोऽयंराज्यंनिहतकण्टकम्। कथं जीवाम्यहं कामं मन्त्रज्ञानानयन्तुवै।८१
औषधं मणिमन्त्रञ्च यन्त्रं परमकं तथा। आरोहणन्तथा सौधे कृतवान्नृपतिस्तदा।८२
न स्नानं न कृतन्दानं न देव्याः स्मरणं कृतम्। न भूमौ शयनञ्चैव दैवं मत्वापरन्तथा।८३
मग्नो मोहार्णवेघोरं मृतःसौधेऽहिनाहतः। कृत्वापापं कलेर्योगात्तापसस्यावमानजम्।८४
अवश्यमेव नरक एतैराचरणैर्भवेत्। तस्मात्तं पितरं पापात्समुद्धर नृपोत्तमम्।८५

सूत उवाच

इति श्रुत्वावचस्तस्यव्यासस्यामिततेजसः। साश्रुकण्ठोऽतिदुःखार्तोबभूवजनमेजयः।८६
धिगिदंजीवितं मेऽद्य पितामेनरकेस्थितः। तत्करोमि यथैवाद्य स्वर्गंयात्युत्तरासुतः।८७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां
तृतीयस्कन्धे अम्बायज्ञविधिवर्णनंनामद्वादशोऽध्यायः॥१२॥

* त्रयोदशोऽध्यायः *

अम्बिकामखस्यविष्णुनाऽनुष्ठानम्

राजोवाच

हरिणा तु कथं यज्ञःकृतः पूर्वं पितामह। जगत्कारणरूपेण विष्णुना प्रभविष्णुना।१
के सहायास्तुतत्राऽऽसन्ब्राह्मणाःके महामते। ऋत्विजोवेदतत्त्वज्ञास्तन्मे ब्रूहिपरन्तपः।२
पश्चात्करोम्यहं यज्ञं विधिदृष्टेनकर्मणा। श्रुत्वाविष्णुकृतंयागमम्बिकायाःसमाहितः।३

व्यास उवाच

राजञ्छृणु महाभाग विस्तरम्परमाद्भुतम्। यथा भगवतीयज्ञःकृतश्च विधिपूर्वकः।४
विसर्जितायदादेव्यादत्त्वाशक्तीश्चतास्त्रयः। काजेशाः पुरुषाजाताविमानवरमास्थिताः।५
प्राप्ता महार्णवं घोरं त्रयस्ते विबुधोत्तमाः। चक्रुःस्थानानि वासार्थं समुत्पाद्य धरां स्थिताः।६
आधारशक्तिरचलामुक्ता देव्यास्वयंततः। तदाधारास्थिता जाताधरामेदःसमन्विता।७
मधुकैटभयोर्मेदःसंयोगान्मेदिनी स्मृता। धारणाच्चधराप्रोक्तापृथ्वीविस्तारयोगतः।८
मही चापि महीयस्त्वाद्धृतासाशेषमस्तके। गिरयश्चकृताःसर्वे धारणार्थं प्रविस्तराः।९
लोहकीलंयथाकाष्ठे तथाते गिरयःकृताः। महीधरा महाराज प्रोच्यन्तेविबुधैर्जनैः।१०
जातरूपमयो मेरुर्बहुयोजनविस्तरः। कृतोमणिमयैः शृङ्गैः शोभितः परमाद्भुतः।११
मरीचिर्नारदोऽत्रिश्च पुलस्त्यः पुलहःक्रतुः। दक्षो वसिष्ठ इत्येतेब्रह्मणःप्रथिताःसुताः।१२
मरीचेः कश्यपो जातो दक्षकन्यास्त्रयोदश। ताभ्योदेवाश्चदैत्याश्चसमुत्पन्नाह्यनेकशः।१३
ततस्तु काश्यपी सृष्टिः प्रवृत्ता चातिविस्तरा। मनुष्यपशुसर्पादिजातिभेदैरनेकधा।१४
ब्रह्मणश्चार्धदेहात्तु मनुः स्वायम्भुवोऽभवत्। शतरूपातथानारी सञ्जाता वामभागतः।१५
प्रियव्रतोत्तानपादौ सुतौ तस्याः बभूवतुः। तिस्रःकन्या वरारोहाह्यभवन्नातिसुन्दरीः।१६
एवं सृष्टिं समुत्पाद्य भगवान्कमलोद्भवः। चकार ब्रह्मलोकञ्च मेरुशृङ्गे मनोहरम्।१७
वैकुण्ठंभगवान्विष्णु रमारमणमुत्तमम्। क्रीडास्थानंसुरम्यञ्चसर्वलोकोपरिस्थितम्।१८
शिवोऽपि परमं स्थानं कैलासाख्यं चकारह। समासाद्यभूतगणं विजहारयथारुचि।१९
स्वर्गस्त्रिविष्टपो मेरुशिखरोपरि कल्पितः। तच्चस्थानं सुरेन्द्रस्यनानारत्नविराजितम्।२०
समुद्रमथनात्प्राप्तः पारिजातस्तरूत्तमः। चतुर्दन्तस्तथा नागः कामधेनुश्च कामदा।२१
उच्चैःश्रवास्तथाऽश्वो वै रम्भाद्यप्सरसस्तथा। इन्द्रेणोपात्तमखिलं जातं वै स्वर्गभूषणम्।२२
धन्वन्तरिश्चन्द्रमाश्च सागराच्च समुद्बभौ। स्वर्गेस्थितौविराजेते देवौ बहुगणैर्वृतौ।२३
एवं सृष्टिःसमुत्पन्ना त्रिविधा नृपसत्तम। देवतिर्यङ्मनुष्यादिभेदैर्विविधकल्पिता।२४
अण्डजाःस्वेदजाश्चैवचोद्भिज्जाश्चजरायुजाः। चतुर्भेदैःसमुत्पन्नाजीवाःकर्मयुताःकिल।२५
एवंसृष्टिःसमासाद्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। विहारं स्वेषुस्थानेषु चक्रुःसर्वेयथेप्सितम्।२६
एवं प्रवर्तिते सर्गे भगवान्प्रभुरच्युतः। महालक्ष्म्या समं तत्र चिक्रीड भुवने स्वके।२७
एकस्मिन्समये विष्णुर्वैकुण्ठे संस्थितःपुरा। सुधासिन्धुस्थितं द्वीपं सस्मार मणिमण्डितम्।२८
यत्र दृष्ट्वा महामायामन्त्रश्चासादितःशुभः। स्मृत्वातांपरमांशक्तिंस्त्रीभावंगमितोयया।२९
यज्ञं कर्तुं मनश्चक्रे अम्बिकाया रमापतिः। उत्तीर्य भुवनात्तमात्समाहूय महेश्वरम्।३०

ब्रह्माणं वरुणं शक्रं कुबेरं पावकं यमम्। वसिष्ठं कश्यपं दक्षं वामदेवं बृहस्पतिम्।३१
सम्भारंकल्पयामास यज्ञार्थञ्चातिविस्तरम्। महाविभवसंयुक्तंसात्त्विकं च मनोहरम्।३२
मण्डपं विततं तत्र कारयामास शिल्पिभिः। ऋत्विजो वरयामास सप्तविंशतिसुव्रतान्।३३
चितिञ्चकारयामासवेदीश्चैवसुविस्तराः। प्रजेपुर्ब्राह्मणा मन्त्रादेव्या बीजसमन्वितान्।३४
जुहुवुस्ते हविः कामं विधिवत् परिकल्पिते। कृते तु विततेहोमेवागुवाचाशरीरिणी।३५
विष्णुं तदा समाभाष्य सुस्वरा मधुराक्षरा। विष्णोत्वंभवदेवानां हरेःश्रेष्ठतमःसदा।३६
मान्यश्च पूजनीयश्च समर्थश्च सुरेष्वपि। सर्वे त्वामर्चयिष्यन्तिब्रह्माद्याश्चसवासवाः।३७
प्रभविष्यन्ति भो भक्त्यामानवा भुवि सर्वतः। वरदस्त्वं चसर्वेषांभवितामानवेषु वै।३८
कामदः सर्वदेवानां परमः परमेश्वरः। सर्वयज्ञेषु मुख्यस्त्वं पूज्यः सर्वैश्च याज्ञिकैः।३६
त्वां जनाः पूजयिष्यन्ति वरदस्त्वं भविष्यसि। श्रयिष्यन्ति च देवास्त्वां दानवैरतिपीडिताः।४०
शरण्यस्त्वं च सर्वेषां भविता पुरुषोत्तम। पुराणेषु च सर्वेषु वेदेषु विततेषु च।४१
त्वं वैपूज्यतमः कामं कीर्तिस्तव भविष्यति। यदा यदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभूतले।४२
तदांऽशेनावतीर्याशु कर्तव्यंधर्मरक्षणम्। अवताराः सुविख्याताः पृथिव्यांतवभागशः।४३
भविष्यन्ति धरायां वै माननीया महात्मनाम्। अवतारेषु सर्वेषुनानायोनिषुमाधव।४४
विख्यातः सर्वलोकेषु भविता मधुसूदन। अवतारेषु सर्वेषु शक्तिस्ते सहचारिणी।४५
भविष्यति ममांशेन सर्वकार्यप्रसाधिनी। वाराही नारसिंही च नानाभेदैरनेकधा।४६
नानायुधाःशुभाकाराःसर्वाभरणमण्डिताः। ताभिर्युक्तःसदाविष्णोसुरकार्याणिमाधव।४७
साधयिष्यसि तत्सर्वं मद्दत्तवरदानतः। तास्त्वया नावमन्तव्याः सर्वदागर्वलेशतः।४८
पूजनीयाः प्रयत्नेन माननीयाश्च सर्वथा। नूनं ता भारतेखण्डे शक्तयःसर्वकामदाः।४६
भविष्यन्ति मनुष्याणांपूजिताःप्रतिमासुच। तासांतवचदेवेशकीर्तिःस्यादखिलेष्वपि।५०
द्वीपेषु सप्तस्वपि च विख्याता भुविमण्डले। ताश्चत्वांवैमहाभागमानवाभुविमण्डले।५१
अर्चयिष्यन्तिवाञ्छार्थं सकामाः सततं हरे। अर्चासुचोपहारैश्चनानाभावसमन्विताः।५२
पूजयिष्यन्ति वेदोक्तैर्मन्त्रैर्नामजपैस्तथा। महिमा तव भूर्लोके स्वर्गे च मधुसूदन!।५३
पूजनाद्देवदेवेश ! वृद्धिमेष्यति मानवैः।

व्यास उवाच

इति दत्त्वा वरान्वाणी विरराम खसम्भवा ॥५४॥
भगवानपि प्रीतात्मा ह्यभवच्छ्रवणादिव। समाप्यविधिवद्यज्ञं भगवान्हरिरीश्वरः।५५
विसर्जयित्वा तान्देवान्ब्रह्मपुत्रान्मुनीनथ। जगामानुचरैः सार्द्धं वैकुण्ठं गरुडध्वजः।५६
स्वानि स्वानि च धिष्ण्यानि पुनः सर्वे सुरास्ततः। मुनयो विस्मिता वार्तां कुर्वन्तस्ते परस्परम्।५७
ययुः प्रमुदिताः कामं स्वाश्रमान्पावनानथ ॥५८॥
श्रुत्वा वाणीं परमविशदां व्योमजां श्रोत्ररम्यां सर्वेषां वै प्रकृतिविषये भक्तिभावश्च जातः।
चक्रुः सर्वे द्विजमुनिगणाः पूजनं भक्तियुक्तास्तस्याः कामं निखिलफलदं चाऽऽगमोक्तं मुनीन्द्राः।५६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे अम्बिकामखस्यविष्णुनाऽनुष्ठानवर्णनंनामत्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

--०--

* चतुर्दशोऽध्यायः *

जनमेजयप्रश्नोत्तरंव्यासेनध्रुवसन्धिनृपाख्यानवर्णनम्

जनमेजय उवाच

श्रुतोवै हरिणाक्लृप्तोयज्ञो विस्तरतो द्विज। महिमानं तथाऽम्बायावदविस्तरतोमम।१
श्रुत्वा देव्याश्चरित्रं वै कुर्वेमखमनुत्तमम्। प्रसादात्तव विप्रेन्द्रभविष्यामि च पावनः।२

व्यास उवाच

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि देव्याश्चरितमुत्तमम्। इतिहासपुराणं च कथयामिसुविस्तरम्।३
कोसलेषु नृपश्रेष्ठः सूर्यवंशसमुद्भवः। पुष्पपुत्रो महातेजा ध्रुवसंधिरिति स्मृतः।४
धर्मात्मा सत्यसन्धश्चवर्णाश्रमहिते रतः। अयोध्यायांसमृद्धायां राज्यंचक्रेशुचिव्रतः।५
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चान्ये तथा द्विजाः।
स्वां स्वां वृत्तिं समास्थाय तद्राज्ये धर्मतोऽभवन् ॥६॥
नचौराःपिशुनाधूर्तास्तस्यराज्येचकुत्रचित्। दम्भाःकृतघ्नामूर्खाश्चवसन्तिकिलमानवाः।७
एवं वै वर्तमानस्य नृपस्य कुरुसत्तम। द्वे पत्न्यौ रूपसम्पन्ने ह्यासतुः कामभोगदे।८
मनोरमा धर्मपत्नीसुरूपाऽतिविचक्षणा। लीलावतीद्वितीया चसाऽपिरूपंगुणान्विता।९
विजहार सपत्नीभ्यां गृहेषूपवनेषु च। क्रीडागिरौदीर्घिकासु सौधेषु विविधेषु च।१०
मनोरमा शुभेकाले सुषुवे पुत्रमुत्तमम्। सुदर्शनाभिधं पुत्रं राजलक्षणसंयुतम्।११
लीलावत्यपि तत्पत्नी मासेनैकेन भामिनी। सुषुवे सुन्दरं पुत्रं शुभे पक्षे दिने तथा।१२
चकार नृपतिस्तत्र जातकर्मादिकं द्वियोः। ददौ दानानि विप्रेभ्यः पुत्रजन्मप्रमोदितः।१३
प्रीतिं तयोः समां राजा चकार सुतयोर्नृप। नृपश्चकारसौहार्देष्वन्तरं न कदाचन।१४
चूडाकर्म तपोश्चक्रे विधिना नृपसत्तमः। यथा विभवमेवाऽसौ प्रीतियुक्तः परन्तपः।१५
कृतचूडौ सुतौकामं जह्रतुर्नृपतेर्मनः। क्रीडमानावुभौ कान्तौ लोकानामसुरञ्जकौ।१६
तयोः सुदर्शनो ज्येष्ठो लीलावत्याःसुतःशुभः। शत्रुजित्संज्ञकःकामंचाटुवाक्योबभूवह ।१७
नृपतेः प्रीतिजनको मञ्जुवाक्चारुदर्शनः। प्रजानां वल्लभः सोऽभूत्तथामन्त्रिजनस्यवै।१८
यथा तस्मिन्नृपः प्रीतिं चकार गुणयोगतः। मन्दभाग्यान्मन्दभावोनतथा वै सुदर्शने।१९
एवं गच्छति काले तु ध्रुवसन्धिर्नृपोत्तमः। जगाम वनमध्येऽसौ मृगयाभिरतः सदा।२०
निघ्नन्मृगान्रुरूनकम्बून्सूकरान्गवयाञ्छशान्। महिषाञ्छरभान्खड्गांश्चिक्रीडनृपतिर्वने ।२१
क्रीडमाने नृपे तत्र वने घोरेऽतिदारुणे। उदतिष्ठन्निकुञ्जात्तु सिंहः परमकोपनः।२२
राज्ञाशिलीमुखेनादौ विद्धः कोपवशङ्गतः। दृष्ट्वाऽग्रे नृपतिं सिंहो ननादमेघनिःस्वनः।२३
कृत्वाचोर्ध्वं स लांगूलं प्रसारितबृहत्सटः। हन्तुं नृपतिमाकाशादुत्पपातातिकोपनः।२४
नृपतिस्तरसा वीक्ष्य दधारासिं करे तदा। वामे चर्मसमादाय स्थितः सिंह इवापरः।२५
सेवकास्तस्य ये सर्वे तेऽपि बाणान्पृथक्पृथक्। मुञ्चन्प्रकुपिताः कामं सिंहोपरि रुषान्विताः।२६
हाहाकारो महानासीत्संप्रहारश्च दारुणः। उत्पपात ततः सिंहो नृपस्योपरिदारुणः।२७
तं पतन्तं समालोक्य खड्गेनाभ्यहनन्नृपः। सोऽपिक्रूरैर्नखाग्रैश्च तत्राऽगत्यविदारितः।२८
स नखैराहतो राजा पपातच ममार वै। चुक्रुशुः सैनिकास्तेतु निर्जघ्नुर्विशिखैस्तदा।२९
मृतः सिंहोऽपि तत्रैव भूपतिश्च तथामृतः। सैनिकैर्मन्त्रिमुख्याश्चतत्रागत्यनिवेदिताः।३०
परलोकगतं भूपं श्रुत्वा ते मन्त्रिसत्तमाः। संस्कारं कारयामासुर्गत्वातत्र वनान्तिके।३१
परलोकक्रियां सर्वां वसिष्ठो विधिपूर्वकम्। कारयामास तत्रैव परलोकसुखावहम्।३२

प्रजाः प्रकृतयश्चैव वसिष्ठश्च महामुनिः। सुदर्शनं नृपं कर्तुं मन्त्रं चक्रुः परस्परम्। ३३
धर्मपत्नी सुतः शान्तः पुरुषश्च सुलक्षणः। अयं नृपासनार्हश्च ह्यब्रुवन्मन्त्रिसत्तमाः। ३४
वसिष्ठोऽपितथैवाऽऽहयोग्योऽयंनृपतेःसुतः। बालोऽपिधर्मवान्राजानृपासनमिहार्हति। ३५
कृते मन्त्रे मन्त्रिवृद्धैर्युधाजिन्नाम पार्थिवः। तत्राऽऽजगामतरसाश्रुत्वातूज्जयिनीपतिः। ३६
मृतं जामातरं श्रुत्वा लीलावत्याः पिता तदा। तत्राऽऽजगाम त्वरितो दौहित्रप्रियकाम्यया। ३७
वीरसेनस्तथाऽऽयातः सुदर्शनहितेच्छया। कलिङ्गाधिपतिश्चैव मनोरमापिता नृपः। ३८
उभौ तौ सैन्यसंयुक्तौ नृपौ साध्वससंस्थितौ। चक्रतुर्मन्त्रिमुख्यैस्तैर्मन्त्रं राज्यस्य कारणात्। ३९
युधाजित्तु तदाऽपृच्छज्ज्येष्ठः कः सुतयोर्द्वयोः। राज्यं प्राप्नोति ज्येष्ठो वै न कनीयान्कदाचन। ४०
वीरसेनोऽपितत्राऽऽहधर्मपत्नीसुतःकिल। राज्यार्हःसयथाराजञ्छास्त्रज्ञेभ्योमयाश्रुतम्। ४१
युधाजित्पुनराहेदं ज्येष्ठोऽयं च यथा गुणैः। राजलक्षणसंयुक्तो न तथाऽयंसुदर्शनः। ४२
विवादोऽत्र सुसम्पन्नो नृपयोस्तत्रलुब्धयोः। कः सन्देहमपाकर्तुंक्षमःस्यादऽतिसङ्कटे। ४३
युधाजिन्मन्त्रिणः प्राह यूयंस्वार्थपराः किल। सुदर्शनं नृपं कृत्वाधनंभोक्तुंकिलेच्छथ। ४४
युष्माकं तु विचारोऽयं मया ज्ञातस्तथेङ्गितैः। शत्रुजित्सबलस्तस्मात्सम्मतो वो नृपासने। ४५
मयि जीवतिकःकुर्यात्कनीयांसंनृपंकिल। त्यक्त्वा ज्येष्ठंगुणार्हंचसेनयाचसमन्वितम्। ४६
नूनंयुद्धं करिष्यामि तस्मिन्खड्गस्य मेदिनी। धारयाचद्विधाभूयाद्युष्माकंतत्रकाकथा। ४७
वीरसेनस्तु तच्छ्रुत्वा युधाजितमभाषत। बालौ द्वौ सदृशप्रज्ञौकोभेदोऽत्रविचक्षणः। ४८
एवं विवदमानौ तौ संस्थितौनृपतीसदा। प्रजाश्चऋषयश्चैव बभूवुर्व्यग्रमानसाः। ४९
समाजग्मुश्चसामन्ताःससैन्याः क्लेशतत्पराः। विग्रहंचाभिकांक्षन्तःपरस्परमतन्द्रिताः। ५०
निषादा ह्याययुस्तत्र शृङ्गवेरपुराश्रयाः। राज्यद्रव्यमुपाहर्तुं मृतं श्रुत्वा महीपतिम्। ५१
पुत्रौ च बालकौश्रुत्वा विग्रहं च परस्परम्। चौरास्तत्र समाजग्मुर्देशदेशान्तरादपि। ५२
संमर्दस्तत्रसञ्जातः कलहे समुपस्थिते। युधाजिद्वीरसेनश्चयुद्धकामौ बभूवतुः। ५३

इति श्री देवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे युधाजिद्वीरसेनयोर्युद्धार्थसज्जीभवनंनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

* पञ्चदशोऽध्यायः *

युधाजिद्वीरसेनयोर्दौहित्रार्थयुद्धम्

व्यास उवाच

संयुगे च सति तत्र भूपयोराहवाय समुपात्तशस्त्रयोः।
क्रोधलोभवशयोः समन्ततः सम्बभूव तुमुलस्तु विमर्दः ॥१॥
संस्थितः स समरे धृतचापः पार्थिवः पृथुलबाहुयुधाजित्।
संयुतः स्वबलावाहनादिकैराहवाय कृतनिश्चयो नृपः ॥२॥
वीरसेन इह सैन्यसंयुतः क्षात्रधर्ममनुसृत्य सङ्गरे।
पुत्रिकात्मजहिताय पार्थिवः संस्थितः सुरपतेः समतेजाः ॥३॥
स बाणवृष्टिं विससर्ज पार्थिवो युधाजितं वीक्ष्य रणेस्थितञ्च।
गिरिं तडित्वानिव तोयवृष्टिभिः क्रोधान्वितः सत्यपराक्रमोऽसौ ॥४॥
तं वीरसेनो विशिखैः शिलाशितैः समावृणोदाशुगमैरजिह्मगैः।
चिच्छेद बाणैश्च शिलीमुखानसौ तेनैव मुक्तानतिवेगपातिनः ॥५॥

गजरथतुरगाणां संबभूवाऽतियुद्धं सुरनरमुनिसंघैर्वीक्षितं चातिघोरम्।
विततविहगवृन्दैरावृतं व्योमसद्यः पिशितमशितुकामैः काकगृध्रादिभिश्च ।।६।।
तत्राद्भुता क्षतजसिन्धुरुवाहघोरा वृन्देभ्य एव गजवीरतुरङ्गमाणाम्।
त्रासावहा नयनमार्गगतानराणां पापात्मनां रविजमार्गभवेव कामम् ।।७।।
कीर्णानि भिन्नपुलिने नरमस्तकानि केशावृतानि च विभान्ति यथैवसिन्धौ।
तुम्बीफलानि विहितानि विहर्तुकामैर्बालैर्यथा रविसुताप्रभवैश्च नूनम् ।।८।।
वीरं मृतं भुवि गतं पतितं रथाद्वै गृध्रः पलार्थमुपरि भ्रमतीति मन्ये।
जीवोऽप्यसौ निजशरीरमवेक्ष्यकान्तं कांक्षत्यहोऽतिविवशोऽपिपुनःप्रवेष्टुम् ।।६।।
आजौ हतोऽपि नृवरः सुविमानरूढःस्वांके स्थितां सुरवधूं प्रवदत्यभीष्टम्।
पश्याधुना मम शरीरमिदं पृथिव्यां बाणाहतं निपतितं करभोरु कान्तम्।।१०।।
एको हतस्तु रिपुणैव गतोऽन्तरिक्षं दैवांगनां समधिगम्य युतो विमाने।
तावत्प्रिया हुतवहे सुसमर्प्य देहं जग्राह कान्तमबला सबला स्वकीया।।११।।
युद्धे मृतौ च सुभटौ दिवि सङ्गतौ तावन्योन्यशस्त्रनिहतौ सह सम्प्रयातौ।
तत्रैव जघ्नतुरलं परमाहितास्त्रावेकाप्सरोऽर्थविहतौ कलहाकुलौ च।।१२।।
कश्चिद्युवा समधिगम्य सुराङ्गनाम्वै रूपाधिकां गुणवतीं किल भक्तियुक्तः।
स्वीयान्गुणान्प्रविततान्प्रवदंस्तदाऽसौ तां प्रेमदामनुचकार च योगयुक्तः।।१३।।
भौमं रजोऽतिविततं दिवि संस्थितञ्च रात्रिञ्चकार तरणिं च समावृणोद्यम्।
मग्नं तदेव रुधिराम्बुनिधावकस्मात्प्रादुर्बभूव रविरप्यतिकान्तियुक्तः।।१४।।
कश्चिद्गतस्तु गगनं किल देवकन्यां सम्प्राप्य चारुवदनां किल भक्तियुक्ताम्।
नांगीचकार चतुरो व्रतनाशभीतो यास्यत्ययं मम वृथाह्यनुकूलशब्दः।।१५।।
संग्रामे सम्वृते तत्र युधाजित्पृथिवीपतिः। जघान वीरसेनन्तं बाणैस्तीव्रैः सुदारुणैः।१६
निहतःस पपातोर्व्यां छिन्नमूर्धा महीपतिः। प्रभग्नं तद्बलं सर्वं निर्गतञ्च चतुर्दिशम्।१७
मनोरमा हतं श्रुत्वा पितरं रणमूर्धनि। भयत्रस्ताऽथ सञ्जाता पितुर्वैरमनुस्मरन्।१८
हनिष्यति युधाजिद्वै पुत्रं मम दुराशयः। राज्यलोभेन पापात्मा सेति चिन्तापराऽभवत्।१६
किं करोमि क्व गच्छामिपितामेनिहतोरणे। भर्ताचापिमृतोऽद्यैव पुत्रोऽयंमम बालकः।२०
लोभोऽतीवचपापिष्ठस्तेनको न वशीकृतः। किं न कुर्यात्तदाविष्टःपापंपार्थिवसत्तमः।२१
पितरं मातरं भ्रातॄन्गुरून्स्वजनबान्धवान्। हन्तिलोभसमाविष्टोजनो नात्रविचारणा।२२
अभक्ष्यभक्षणं लोभादगम्यागमनं तथा। करोति किल तृष्णार्तो धर्मत्यागन्तथापुनः।२३
नसहायोऽस्तिमेकश्चिन्नगरेऽत्रमहाबलः। यदाधारेस्थिता चाहं पालयामि सुतं शुभम्।२४
हतेपुत्रेनृपेणाद्य किंकरिष्याम्यहम्पुनः। नमेत्राताऽस्ति भुवने येन वै सुस्थिता ह्यहम्।२५
साऽपि वैरयुता कामं सपत्नी सर्वदा भवेत्। लीलावती न मे पुत्रे भविष्यति दयावती।२६
युधाजितिसमायाते न मे निःसरणंभवेत्। ज्ञात्वाबालंसुतंसोऽद्यकारागारंनयिष्यति।२७
श्रूयते हि पुरेन्द्रेण मातुर्गर्भगतः शिशुः। कृन्तितः सप्तधापश्चात्कृतास्ते सप्त सप्तधा।२८
प्रविश्य चोदरंमातुःकरेकृत्वाऽल्पकंपविम्। एकोनपञ्चाशदपि तेऽभवन्मरुतो दिवि।२६
सपत्न्यै गरलं दत्तं सपत्न्या नृपभार्यया। गर्भनाशार्थमुद्दिश्य पुरैतद्वै मया श्रुतम्।३०
जातस्तु बालकःपश्चाद्देहेविषयुतः किल। तेनासौ सगरो नाम विख्यातोभुविमण्डले।३१

जीवमानोऽथभर्त्तावै कैकेया नृपभार्यया। रामः प्रव्राजितोज्येष्ठो मृतो दशरथोनृपः।३२
मन्त्रिणस्त्ववशाः कामं ये मे पुत्रं सुदर्शनम्। राजानं कर्तुकामा वै युधाजिद्वशगाश्च ते।३३
नमेभ्रातातथाशूरो यो मे बन्धात्प्रमोचयेत्। महत्कष्टञ्च सम्प्राप्तंमयावैदैवयोगतः।३४
उद्यमःसर्वथाकार्यःसिद्धिर्दैवाद्धि जायते। उपायं पुत्ररक्षार्थं करोम्यद्य त्वरान्विता।३५
इतिसञ्चिन्त्य सा बालाविदल्लं चातिमानिनम्। निपुणं सर्वकार्येषु चिन्त्यं मन्त्रिवरोत्तमम्।३६
समाहूय तमेकान्ते प्रोवाच बहुदुःखिता। गृहीत्वा बालकंहस्ते रुदती दीनमानसा।३७
पिता मे निहतःसंख्ये पुत्रोऽयंबालकस्तथा। युधाजिद्‌बलवान्राजाकिंविधेयंवदस्वमे ।३८
तामुवाचविदल्लोऽसौनात्रस्थातव्यमेव च। गमिष्यामोवनेकामंवाराणस्याःपुनः किल।३९
तत्र मे मातुलःश्रीमान्वर्तते बलवत्तरः। सुबाहुरिति विख्यातो रक्षिता स भविष्यति।४०
युधाजिद्दर्शनोत्कण्ठमनसा नगराद्‌बहिः। निर्गत्यरथमारुह्य गन्तव्यं नाऽत्र संशयः।४१
इत्युक्ता तेन सा राज्ञी गत्वा लीलावतीम्प्रति। उवाच पितरं द्रष्टुं गच्छाम्यद्य सुलोचने!।४२
इत्युक्त्वारथमारुह्य सैरन्ध्रीसंयुता तदा। विदल्लेन च संयुक्तानिःसृता नगराद्‌बहिः।४३
त्रस्ताह्यार्ताऽतिकृपणापितुःशोकसमाकुला। दृष्ट्वा युधाजितं भूपंपितरं गतजीवितम्।४४
संस्कार्य चत्वरायुक्ता वेपमानाभयाकुला। दिनद्वयेन सम्प्राप्ताराज्ञीभागीरथीतटम्।४५
निषादैर्लुण्ठितातत्रगृहीतं सकलं वसु। रथं चापि गृहीत्वा ते निर्गता दस्यवःशठाः।४६
रुदतीसुतमादाय चारुवस्त्रा मनोरमा। निर्ययौ जाह्नवीतीरे सैरन्ध्रीकरलम्बिता।४७
आरुह्यच भयाच्छीघ्रमुडुपं सा भयाकुला। तीर्त्वाभागीरथीं पुण्यांययौत्रिकूटपर्वतम्।४८
भारद्वाजाश्रमं प्राप्ता त्वरयाच भयाकुला। संवीक्ष्यतापसांस्तत्र सञ्जातानिर्भयातदा।४९
मुनिनासाततः पृष्टाकाऽसिकस्यपरिग्रहः। कष्टेनात्रकथंप्राप्ता सत्यम्ब्रूहिशुचिस्मिते।५०
देवी वा मानुषी वाऽसि बालपुत्रा वने कथम्। राज्यभ्रष्टेव वामोरु! भासि त्वं कमलेक्षणे!।५१
एवं सा मुनिना पृष्टा नोवाच वरवर्णिनी। रुदती दुःखसन्तप्ता विदल्लञ्च समादिशत्।५२
विदल्लस्तमुवाचेदं ध्रुवसन्धिर्नृपोत्तमः। तस्य भार्या धर्मपत्नी नाम्नाचेयं मनोरमा।५३
सिंहेन निहतोराजा सूर्यवंशी महाबलः। पुत्रोऽयं नृपतेस्तस्य नाम्ना चैव सुदर्शनः।५४
अस्याःपिताऽतिधर्मात्मादौहित्रार्थंमृतो रणे। युधाजिद्भयसंत्रस्तासम्प्राप्ताविजनेवने ।५५
त्वामेवशरणं प्राप्ता बालपुत्रा नृपात्मजा। त्राता भवमहाभाग त्वमस्या मुनिसत्तम।५६
आर्तस्य रक्षणे पुण्यं यज्ञाधिकमुदाहृतम्। भयत्रस्तस्यदीनस्य विशेषफलदं स्मृतम्।५७

ऋषिरुवाच

निर्भया वस कल्याणि पुत्रं पालय सुव्रते। नतेभयंविशालाक्षि कर्तव्यं शत्रुसम्भवम्।५८
पालयस्वसुतंकान्तंराजातेऽयंभविष्यति । नात्रदुःखंतथाशोकःकदाचित्सम्भविष्यति।५९

व्यास उवाच

इत्युक्तामुनिनाराज्ञी स्वस्था सा सम्बभूवह। उटजे मुनिनादत्तेवीतशोकातदाऽवसत्।६०
सैरन्ध्री सहितातत्र विदल्लेन च संयुता। सुदर्शनं पालयाना न्यवसत्सा मनोरमा।६१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां तृतीयस्कन्धे मनोरमयाभारद्वाजाश्रमप्रतिगमनंनाम पञ्चदशोऽध्यायः॥१५॥

--०--

* षोडशोऽध्यायः *

युधाजितःसुदर्शनजिघांसयाभारद्वाजाश्रमम्प्रतिगमनम्

व्यास उवाच

युधाजित्त्वथसंग्रामाद्गत्वाऽयोध्यांमहाबलः। मनोरमां च पप्रच्छ सुदर्शनजिघांसया। १
सेवकान्प्रेषयामास क्व गतेतिमुहुर्वदन्। शुभेदिनेऽथदौहित्रं स्थापयामास चाऽऽसने। २
मन्त्रिभिश्च वसिष्ठेन मन्त्रैराथर्वणैःशुभैः। अभिषिक्तश्च सम्पूर्णैःकलशैर्जलपूरितैः। ३
भेरीशङ्खनिनादैश्च तूर्याणांचाथ निःस्वनैः। उत्सवस्तु नगर्यां वै सम्बभूव कुरुद्वह। ४
विप्राणां वेदपाठैश्च बन्दिनां स्तुतिभिस्तथा। अयोध्या मुदितेवाऽऽसीज्जयशब्दैः सुमङ्गलैः। ५
हृष्टपुष्टजनाकीर्णा स्तुतिवादित्रनिःस्वना। नवेतस्मिन्महीपाले पूर्वभौ नूतनेव सा। ६
केचित्साधुजना ये वै चक्रुः शोकं गृहे स्थिताः। सुदर्शनं विचिन्त्याद्य क्व गतोऽसौ नृपात्मजः। ७
मनोरमाऽतिसाध्वी सा क्व गता सुतसंयुता। पिताऽस्या निहतः संख्ये राज्यलोभेन वैरिणा। ८
इत्येवंचिन्त्यमानास्ते साधवः समबुद्धयः। अतिष्ठन्दुःखितास्तत्र शत्रुजिद्वशवर्तिनः। ९
युधाजिदपि दौहित्रं स्थापयित्वा विधानतः। राज्यञ्च मन्त्रिसात्कृत्वा चलितःस्वां पुरीम्प्रति। १०
श्रुत्वासुदर्शनन्तत्र मुनीनामाश्रमे स्थितम्। हन्तुकामोजगामाऽऽशु चित्रकूटंसपर्वतम्। ११
निषादाधिपतिंशूरं पुरस्कृत्य बलाभिधम्। दुर्दर्शाख्यमगादाशु शृङ्गवेरपुराधिपम्। १२
श्रुत्वा मनोरमातत्रबभूवातिसुदुःखिता। आगच्छन्तंबालपुत्राभयार्ता सैन्यसंयुतम्। १३
तमुवाचाऽतिशोकार्ता मुनिं साऽश्रुविलोचना। किं करोमि क्व गच्छामि युधाजित्समुपस्थितः। १४
पितामे निहतोऽनेन दौहित्रोभूपतिःकृतः। सुतंमे हन्तुकामोऽत्रसमायातिबलान्वितः। १५
पुरा श्रुतं मया स्वामिन्पाण्डवा वै वने स्थिताः। मुनीनामाश्रमे पुण्ये पाञ्चाल्या सहितास्तदा। १६
गतास्तेमृगयां पार्था भ्रातरः पञ्च एव ते। द्रौपदीसंस्थितातत्र मुनीनामाश्रमे शुभे। १७
धौम्योऽत्रिर्गालवःपैलो जाबालिर्गौतमो भृगुः। च्यवनश्चाऽत्रिगोत्रश्च कण्वश्चैव जतुः क्रतुः। १८
वीतिहोत्रः सुमन्तुश्च यज्ञदत्तोऽथ वत्सलः। राशासनःकहोडश्च यवक्रीर्यज्ञकृत्क्रतुः। १९
एतेचान्येचमुनयोभारद्वाजादयः शुभाः। वेदपाठयुताः सर्वे संस्थिताश्चाश्रमेस्थिताः। २०
दासीभिःसहितातत्र याज्ञसेनी स्थितामुने। आश्रमेचारुसर्वाङ्गी निर्भया मुनिसम्वृते। २१
पार्थामृगानुगास्तावत्प्रयाताश्च वनाद्वनम्। धनुर्बाणधरावीराः पञ्चैव शत्रुतापनाः। २२
तावत्सिन्धुपतिः श्रीमान्मार्गस्थो बलसंयुतः। आगतश्चाश्रमाभ्याशे श्रुत्वा तु निगमध्वनिम्। २३
श्रुत्वा वेदध्वनिं राजा मुनीनां भावितात्मनाम्। उत्ततार रथात्तूर्णं दर्शनाकांक्षयानृपः। २४
यदा निरगमत्तत्र भृत्यद्वयसमन्वितः। वेदपाठयुतान्वीक्ष्य मुनीनुद्यमसंस्थितः। २५
कृताञ्जलिपुटः स्वामिन्संस्थितोऽथ जयद्रथः। आश्रमे मुनिभिर्जुष्टेभूपतिःसंविवेशह। २६
तत्रोपविष्टंराजानंद्रष्टुकामाःस्त्रियस्तदा। आययुर्मुनिभार्याश्चकोऽयमित्यब्रुवन्नृपम्। २७
तासां मध्ये वरारोहा याज्ञसेनी समागता। जयद्रथेन दृष्टा सा रूपेण श्रीरिवापरा। २८
तां विलोक्याऽसितापाङ्गीं देवकन्यामिवापराम्। पप्रच्छ नृपतिर्धौम्यं केयं श्यामा वरानना। २९
भार्याकस्य सुताकस्य नाम्नाका वरवर्णिनी। रूपलावण्यसंयुक्ता शचीव वसुधाङ्गता। ३०
बर्बूलवनमध्यस्था लवङ्गलतिका यथा। राक्षसीवृन्दगा नूनं रम्भेवाऽऽभातिभामिनी। ३१
सत्यंवद महाभाग कस्येयं वल्लभाऽबला। राजपत्नीव चाऽऽभाति नैषामुनिवधूर्द्विज। ३२

धौम्य उवाच

पाण्डवानां प्रिया भार्याद्रौपदी शुभलक्षणा। पाञ्चालीसिन्धुराजेन्द्रवसत्यत्रवराश्रमे ।३३

जयद्रथ उवाच

क्व गताः पाण्डवाः पञ्चशूराःसम्प्रतिविश्रुताः। वसन्त्यत्रवनेवीरावीतशोकामहाबलाः ।३४

धौम्य उवाच

मृगयार्थंगताःपञ्चपाण्डवारथसंस्थिताः। आगमिष्यन्तिमध्याह्नेमृगानादायपार्थिवाः।३५
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य उदतिष्ठदसौनृपः। द्रौपदीसन्निधौ गत्वा प्रणम्येदमुवाच ह।३६
कुशलं ते वरारोहे क्व गताः पतयश्च ते। एकादश गतान्यद्य वर्षाणि च वने किल।३७
द्रौपदी तु तदोवाच स्वस्ति तेऽस्तु नृपात्मज! [illegible]स्वाश्रमाभ्याशे क्षणादायान्ति पाण्डवाः।३८
एवं ब्रुवन्त्यां तस्यांतुलोभाविष्टःस भूपतिः। जहारद्रौपदींवीरोऽनादृत्यमुनिसत्तमान् ।३९
कस्यचिन्नैव विश्वासःकर्तव्यःसर्वथाबुधैः। कुर्वन्दुःखमाप्नोतिदृष्टान्तस्त्वत्रवैबलिः ।४०
वैरोचनसुतः श्रीमान्धर्मिष्ठः सत्यसङ्गरः। यज्ञकर्ता च दाता च शरण्यः साधुसम्मतः।४१
नाधर्मे निरतः क्वापि प्रह्लादस्य च पौत्रकः। एकोनशतयज्ञान्वै स चकारसदक्षिणान्।४२
सत्त्वमूर्तिः सदाविष्णुः सेव्यः स योगिनामपि। निर्विकारोऽपि भगवान्देवकार्यार्थसिद्धये।४३
कश्यपाच्च समुद्भूतो विष्णुः कपटवामनः। राज्यंछलेनहृतवान्महीं चैवससागराम्।४४
सोऽभवत्सत्यवाग्राजा बलिर्वैरोचनिस्तदा। कपटं कृतवान्विष्णुरिंद्रार्थेतुमयाश्रुतम्।४५
अन्यः किं न करोत्येवं कृतं वै सत्त्वमूर्तिना। वामनं रूपमास्थाययज्ञपातं चिकीर्षता।४६
नचविश्वसितव्यंवैकदाचित्केनचित्तथा ।लोभश्चेतसिचेत्स्वामिन्कीदृक्पापकृतंभयम्।४७
लोभाहताःप्रकुर्वन्ति पापानि प्राणिनः किल। परलोकाद्भयं नास्ति कस्यचित्कर्हिचिन्मुने।४८
मनसा कर्मणा वाचा परस्वादानहेतुतः। प्रपतन्ति नराः सम्यग्लोभोपहतचेतसः।४९
देवानाराध्य सततं वाञ्छन्ति च धनं नराः। नदेवास्तत्करेकृत्वासमर्थादातुमञ्जसा ।५०
अन्यस्यानीय तेवित्तंप्रयच्छन्तिमनीषितम्। वाणिज्येनाथदानेन चौर्येणापिबलेनवा।५१
विक्रयार्थं गृहीत्वाच धान्यवस्त्रादिकं बहु। देवानर्चयते वैश्यो महर्द्धिर्मेभवेदिति।५२
नाऽत्र किम्परवित्तेच्छा वाणिज्येनपरन्तपः। ग्रहणकालेतुसम्प्राप्तेमहर्घंचापिकांक्षति ।५३
एवं हि प्राणिनः सर्वे परस्वादानतत्पराः। वर्तन्ते सततंब्रह्मन्विश्वासः कीदृशः पुनः।५४
वृथातीर्थं वृथादानं वृथाऽध्ययनमेव च। लोभमोहवृतानां वै कृतं तदकृतं भवेत्।५५
तस्मादेनं महाभाग विसर्जय गृहंप्रति। सपुत्राऽहं वसिष्यामिजानकीवद् द्विजोत्तम।५६
इत्युक्तोऽसौ मुनिस्तावद्गत्वा युधाजितं नृपम्। उवाच वचनं राज्ञे भारद्वाजः प्रतापवान्।५७
गच्छराजन्यथाकामं स्वपुरं नृपसत्तम। नेयं मनोरमाऽभ्येति बालपुत्रा सुदुःखिता।५८

युधाजिदुवाच

मुने मुञ्च हठं सौम्यंविसर्जयमनोरमाम्। नच यास्याम्यहंमुक्त्वानेष्याम्यद्यबलात्पुनः।५९

ऋषिरुवाच

नयस्वयदि शक्तिस्ते बलेनाद्य ममाश्रमात्। विश्वामित्रो यथाधेनुंवसिष्ठस्यमुनेःपुरा।६०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे युधाजिद्भारद्वाजयोःसम्वादवर्णनंनामषोडशोऽध्यायः ।।१६।।

--०--

* सप्तदशोऽध्यायः *

वृद्धमन्त्रिणासहयुधाजितःपरामर्शः

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य मुनेस्तत्रावनीपतिः। मन्त्रिवृद्धं समाहूयपप्रच्छ तमतन्द्रितः।१
किं कर्तव्यं सुबुद्धेऽत्र मयाऽद्य वदसुव्रत। बलान्नयामि तांकामंसपुत्रांचसुभाषिणीम्।२
रिपुरल्पोऽपि नोपेक्ष्यःसर्वथा शुभमिच्छता। राजयक्ष्मेवसंवृद्धोमृत्यवेपरिकल्पयेत् ।३
नाऽत्रसैन्यंनयोद्धाऽस्तियोमामत्रनिवारयेत्। गृहीत्वाहन्मितंतत्रदौहित्रस्यरिपुंकिल ।४
निष्कण्टकं भवेद्राज्यं यताम्यद्य बलादहम्। हते सुदर्शनेनूनंनिर्भयोऽसौ भवेदिति।५

प्रधान उवाच

साहसं न हि कर्तव्यं श्रुतंराजन्मुनेर्वचः। विश्वामित्रस्यदृष्टान्तःकथितस्तेन मारिष।६
पुरागाधिसुतःश्रीमान्विश्वामित्रोऽतिविश्रुतः। विचरन्सनृपश्रेष्ठोवसिष्ठाश्रममभ्यगात् ।७
नमस्कृत्य च तं राजा विश्वामित्रः प्रतापवान्। उपविष्टोनृपश्रेष्ठो मुनिनादत्तविष्टरः।८
निमन्त्रितोवसिष्ठेनभोजनायमहात्मना। ससैन्यश्चस्थितो राजागाधिपुत्रोमहायशाः।९
नन्दिन्याऽऽसादितंसर्वं भक्ष्यभोज्यादिकं च यत्। भुक्त्वा राजा ससैन्यश्च वाञ्छितं तत्र भोजनम्।१०
प्रतापं तं च नन्दिन्याः परिज्ञायसपार्थिवः। ययाचेनन्दिनींराजावसिष्ठंमुनिसत्तमम् ।११

विश्वामित्र उवाच

मुने धेनुसहस्रं ते घटोघ्नीनां ददाम्यहम्। नन्दिनीं देहि मे धेनुं प्रार्थयामि परन्तप।१२

वसिष्ठ उवाच

होमधेनुरियं राजन्न ददामि कथञ्चन। सहस्रंचापि धेनूनां तवेदं तव तिष्ठतु।१३

विश्वामित्र उवाच

अयुतं वाऽथ लक्षंवा ददामिमनसेप्सितम्। देहिमे नन्दिनींसाधोग्रहीष्यामिबलादथ।१४

वसिष्ठ उवाच

कामं गृहाणनृपते बलादद्य यथारुचि। नाहं ददामि ते राजन्स्वेच्छयानन्दिनींगृहात्।१५
तच्छ्रुत्वा नृपतिर्भृत्यानादिदेशमहाबलान्। नयध्वं नन्दिनीं धेनुं बलदर्पसुसंस्थिताः।१६
ते भृत्याजगृहुर्धेनुं हठादाक्रम्य यन्त्रिताम्। वेपमाना मुनिंप्राहसुरभिः साश्रुलोचना।१७
मुनेत्यजसिमांकस्मात्कर्षयन्तिसुयन्त्रिताम् । मुनिस्तांप्रत्युवाचेदंत्यजेनाऽहंसुदुग्धदे ।१८
बलान्नयति राजाऽसौ पूजितोऽद्य मया शुभे!। किं करोमि न चेच्छामि त्यक्तुंत्वां मनसा किल।१९
इत्युक्ता मुनिनाधेनुः क्रोधयुक्ता बभूव ह। हंभारवं चकाराऽऽशु क्रूरशब्दं सुदारुणम्।२०
उद्गतास्तत्र देहात्तु दैत्याघोरतरास्तदा। सायुधास्तिष्ठ तिष्ठेति ब्रुवन्तः कवचावृताः।२१
सैन्यंसर्वंहतंतैस्तुनन्दिनीप्रतिमोचिता । एकाकीनिर्गतोराजाविश्वामित्रोऽतिदुःखितः।२२
हन्त पापोऽतिदीनात्मा निन्दन्क्षात्त्रबलं महत्। ब्राह्मं बलं दुराराध्यं मत्वा तपसि संस्थितः।२३
तप्त्वा बहूनिवर्षाणितपोघोरं महावने। ऋषित्वंप्रापगाधेयस्त्यक्त्वाक्षात्त्रंविधिंपुनः।२४
तस्मात्त्वमपि राजेन्द्र माकृथावैरमद्भुतम्। कुलनाशकरं नूनं तापसैः सह संयुगम्।२५
मुनिवर्यंव्रजाद्यत्वंसमाश्वास्यतपोनिधिम् । सुदर्शनोऽपि राजेन्द्रतिष्ठत्वत्रयथासुखम्।२६
बालोऽयंनिर्धनः किं ते करिष्यतिनृपाहितम्। वृथातेवैरभावोऽयमनाथेदुर्बले शिशौ।२७
दया सर्वत्र कर्तव्या दैवाधीनमिदञ्जगत्। ईर्ष्यया किं नृपश्रेष्ठ यद्भाव्यं तद्भविष्यति।२८
वज्रं तृणायते राजन्दैवयोगान्न संशयः। तृणं वज्रायते क्वाऽपि समये दैवयोगतः।२९
शशको हन्ति शार्दूलं मशको वै यथा गजम्। साहसं मुञ्च मेधाविन्कुरु मे वचनं हितम्।३०

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनन्तस्य युधाजिन्नृपसत्तमः। प्रणम्य तं मुनिं मूर्ध्ना जगामस्वपुरं नृपः।३१
मनोरमाऽपि स्वस्थाऽभूदाश्रमेतत्रसंस्थिता। पालयामासपुत्रं तं सुदर्शनमृतव्रतम्।३२
दिने दिने कुमारोऽसौ जगामोपचयं ततः। मुनिबालगतः क्रीडन्निर्भयःसर्वतः शुभः।३३
एकस्मिन्समये तत्र विदल्लं समुपागतम्। क्लीबेति मुनिपुत्रस्तमामन्त्रयत्तदन्तिके।३४
सुदर्शनस्तु तच्छ्रुत्वा दधारैकाक्षरं स्फुटम्। अनुस्वारयुतं तच्च प्रोवाचाति पुनः पुनः।३५
बीजं वै कामराजाख्यं गृहीतंमनसातदा। जजापबालकोऽत्यर्थंधृत्वा चेतसिसादरम्।३६
भावियोगान्महाराज कामराजाख्यमद्भुतम्। स्वभावेनैव तेनेत्थं गृहीतं बालकेन वै।३७
तदाऽसौ पञ्चमेवर्षेप्राप्यमन्त्रमनुत्तमम्। ऋषिच्छन्दोविहीनञ्चध्यानन्यासविवर्जितम्।३८
प्रजपन्मनसा नित्यं क्रीडत्यपि स्वपित्यपि। विसस्मार न तं मन्त्रं ज्ञात्वा सारमिति स्वयम्।३९
वर्षेचैकादशे प्राप्तेकुमारोऽसौनृपात्मजः। मुनिना चोपनीतोऽथ वेदमध्यापितस्तथा।४०
धनुर्वेदंतथासाङ्गं नीतिशास्त्रं विधानतः। अभ्यस्ताःसकलाविद्यास्तेन मन्त्रबलादिव।४१
कदाचित्सोऽपि प्रत्यक्षं देवीरूपं ददर्श ह। रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्तसर्वाङ्गभूषणम्।४२
गरुडे वाहने संस्थां वैष्णवीं शक्तिमद्भुताम्। दृष्ट्वा प्रसन्नवदनः स बभूव नृपात्मजः।४३
वने तस्मिन्स्थितःसोऽथ सर्वविद्यार्थतत्त्ववित्। मातरंसेवमानस्तुविजहार नदीतटे।४४
शरासनञ्च सम्प्राप्तं विशिखाश्च शिलाशिताः। तूणीरंकवचंतस्मैदत्तं चाम्बिकयावने।४५
एतस्मिन्समये पुत्रीकाशीराजस्यसुप्रिया। नाम्ना शशिकलादिव्यासर्वलक्षणसंयुता।४६
शुश्राव नृपपुत्रं तं वनस्थञ्च सुदर्शनम्। सर्वलक्षणसम्पन्नं शूरं काममिवापरम्।४७
बन्दीजनमुखाच्छ्रुत्वा राजपुत्रं सुसम्मतम्। चकमेमनसातम्वै वरं वरयितुं धिया।४८
स्वप्नेतस्याःसमागम्यजगदम्बानिशान्तरे। उवाचवचनञ्चेदं समाश्वास्य सुसंस्थिता।४९
वरं वरयसुश्रोणि! ममभक्तः सुदर्शनः। सर्वकामप्रदस्तेऽस्तु वचनान्मम भामिनि!।५०
एवं शशिकला दृष्ट्वा स्वप्ने रूपं मनोहरम्। अम्बाया वचनं स्मृत्वा जहर्ष भृशमानिनी।५१
उत्थितासामुदायुक्ता पृष्टा मात्रापुनःपुनः। प्रमोदेकारणंबालानोवाचातित्रपान्विता।५२
जहासमुदमापन्नास्मृत्वास्वप्नंमुहुर्मुहुः। सखीम्प्राहतदाऽन्याम्वै स्वप्नवृत्तंसविस्तरम्।५३
कदाचित्साविहारार्थमवापोपवनंशुभम्। सखीयुक्ताविशालाक्षी चम्पकैरुपशोभितम्।५४
पुष्पाणि चिन्वती बाला चम्पकाधःस्थिताऽबला। अपश्यद्ब्राह्मणं मार्गे आगच्छन्तं त्वरान्वितम्।५५
तं प्रणम्यद्विजं श्यामा बभाषे मधुरंवचः। कुतोदेशान्महाभाग कृतमागमनन्त्वया।५६

द्विज उवाच

भारद्वाजाश्रमाद्बालेनूनमागमनं मम। जातम्वै कार्ययोगेन किंपृच्छसिवदस्वमाम्।५७

शशिकलोवाच

तत्राश्रमेमहाभाग वर्णनीयं किमस्ति वै। लोकातिगं विशेषेण प्रेक्षणीयतमं किल।५८

ब्राह्मण उवाच

ध्रुवसन्धिसुतः श्रीमानास्ते सुदर्शनो नृपः। यथार्थनामा सुश्रोणि वर्तते पुरुषोत्तमः।५९
तस्यलोचनमत्यन्तं निष्फलम्प्रतिभाति मे। ये न दृष्टोन वामोरु कुमारस्तु सुदर्शनः।६०
एकत्रनिहिता धात्रागुणाःसर्वेसिसृक्षुणा। गुणानामाकरं द्रष्टुं मन्येतेनैवकौतुकात्।६१
तव योग्यः कुमारोऽसौ भर्ता भवितुमर्हति। योगोऽयं विहितोऽप्यासीन्मणिकाञ्चनयोरिव।६२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां तृतीयस्कन्धे विश्वामित्रकथोत्तरंराजपुत्रस्यकामबीजप्राप्तिवर्णनंनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

* अष्टादशोऽध्यायः *

काशीराजसुतयाशशिकलयामनसापतिरूपेणसुदर्शनवरणम्

व्यास उवाच

श्रुत्वा तद्वचनंश्यामाप्रेमयुक्ताबभूवह । प्रतस्थे ब्राह्मणस्तस्मात्स्थानादुत्तवासमाहितः । १
सा तु पूर्वानुरागाद्वै मग्नाप्रेम्णाऽतिचञ्चला । कामबाणहतेवासगते तस्मिन्द्विजोत्तमे । २
अथ कामार्दिताप्राह सखीं छन्दोनुवर्तिनीम् । विकारश्च समुत्पन्नो देहेयच्छ्रवणादनु । ३
अज्ञातरसविज्ञानं कुमारं कुलसम्भवम् । दुनोति मदनः पापःकिंकरोमि क्व यामि च । ४
स्वप्नेषु वा मया दृष्टः पञ्चबाण इवाऽपरः । तपते मे मनोऽत्यर्थं विरहाकुलितं मृदु । ५
चन्दनन्देहलग्नं मे विषवद्भातिभामिनि । स्रगियं सर्पवच्चैव चन्द्रपादाश्च वह्निवत् । ६
नच हर्म्येवनेशंमे दीर्घिकायां न पर्वते । न दिवा न निशायां वा न सुखं सुखसाधनैः । ७
न शय्या न च ताम्बूलं न गीतं न च वादनम् । प्रीणयन्तिमनोमेऽद्य नतृप्तेममलोचने । ८
प्रयाम्यद्य वने तत्र यत्रासौ वर्तते शठः । भीताऽस्मिकुललज्जायाःपरतन्त्रापितुस्तथा । ९
स्वयम्वरं पितामेऽद्य न करोति करोमि किम् । दास्यामि राजपुत्राय कामं सुदर्शनाय वै । १०
संत्यन्येपृथिवीपालाःशतशःसम्भृतर्द्धयः । रमणीयान मे तेऽद्यराज्यहीनोऽप्यसौमतः । ११

व्यास उवाच

एकाकी निर्धनश्चैव बलहीनः सुदर्शनः । वनवासीफलाहारस्तस्याश्चित्ते सुसंस्थितः । १२
वाग्बीजस्य जपात्सिद्धिस्तस्या एषाऽप्युपस्थिता । सोऽपि ध्यानपरोऽत्यन्तं जजाप मन्त्रमुत्तमम् । १३
स्वप्ने पश्यत्यसौ देवीं विष्णुमायामखण्डिताम् । विश्वमातरमव्यक्तां सर्वसम्पत्कराम्बिकाम् । १४
शृङ्गवेरपुराध्यक्षो निषादः समुपेत्यतम् । ददौ रथवरं तस्मै सर्वोपस्करसंयुतम् । १५
चतुर्भिस्तुरगैर्युक्तं पताकावरमण्डितम् । जैत्रं राजसुते ज्ञात्वा ददौ चोपायनं तदा । १६
सोऽपि जग्राह तत्प्रीत्या मित्रत्वेन सुसंस्थितम् । वन्यैर्मूलफलैः सम्यगर्चयामास शम्बरम् । १७
कृतातिथ्येगते तस्मिन्निषादाधिपतौ तदा । मुनयः प्रीतियुक्तास्ते तमूचुस्तपसामिथः । १८
राजपुत्रध्रुवंराज्यंप्राप्स्यसि त्वं च सर्वथा । स्वल्पैरहोभिरव्यग्रः प्रतापान्नात्रसंशयः । १९
प्रसन्नातेऽम्बिकादेवी वरदा विश्वमोहिनी । सहायस्तु सुसम्पन्नोनचिन्तांकुरु सुव्रत । २०
मनोरमां तथोचुस्ते मुनयःसंस्थितव्रताः । पुत्रस्तेऽद्यधराधीशो भविष्यतिशुचिस्मिते । २१
सा तानुवाच तन्वङ्गी वचनं वोऽस्तु सत्फलम् । दासोऽयं भवतां विप्राः किं चित्रं सदुपासनात् । २२
न सैन्यं सचिवाःकोशोनसहायश्चकश्चन । केन योगेन पुत्रोमे राज्यं प्राप्तुमिहार्हति । २३
आशीर्वादैश्च वोनूनंपुत्रोऽयं मे महीपतिः । भविष्यतिनसन्देहो भवन्तोमन्त्रवित्तमाः । २४

व्यास उवाच

रथारूढः स मेधावी यत्रयातिसुदर्शनः । अक्षौहिणीसमावृत्त इवाऽऽभातिस तेजसा । २५
प्रतापो मन्त्रबीजस्य नान्यः कश्चन भूपते । एवं वै जपतस्तस्य प्रीतियुक्तस्य सर्वदा । २६
संप्राप्य सद्गुरोर्बीजं कामराजाख्यमद्भुतम् । जपेद्यस्तु शुचिः शान्तः सर्वान्कामानवाप्नुयात् । २७
न तदस्ति पृथिव्यां वा दिविवापिसुदुर्लभम् । प्रसन्नायाशिवायाश्चयदप्राप्यंनृपोत्तम । २८
तेमन्दास्तेऽतिदुर्भाग्यारोगैस्तेसमभिद्रुताः । येषांचित्तेनविश्वासोभवेदम्बार्चनादिषु । २९
या मातासर्वदेवानां युगादौ परिकीर्तिता । आदिमातेतिविख्याता नाम्नातेनकुरुद्वह । ३०
बुद्धिःकीर्तिर्धृतिर्लक्ष्मीःशक्तिःश्रद्धा मतिःस्मृतिः । सर्वेषां प्राणिनां सा वै प्रत्यक्षं वै विभासते । ३१
न जानन्ति नरायेवैमोहितामायया किल । नभजन्तिकुतर्कज्ञादेवींविश्वेश्वरींशिवाम् । ३२

वायुरग्निः कुबेरश्चत्वष्टापूषाऽश्विनौभगः।३३
ब्रह्माविष्णुस्तथा शम्भुर्वासवोवरुणो यमः। सर्वे ध्यायन्ति तां देवीं सृष्टिस्थित्यंतकारिणीम्।३४
आदित्यावसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः। सुदर्शनेनसा ज्ञाता देवी सर्वार्थदा शिवा।३५
कोनसेवेतविद्वान्वै तांशक्तिंपरमात्मिकाम्। योगगम्यापराशक्तिर्मुमुक्षूणाञ्चवल्लभा।३६
ब्रह्मैवसाऽतिदुष्प्रापाविद्याऽविद्यास्वरूपिणी। यासृष्टिंत्रिविधांकृत्वादर्शयत्यखिलात्मने।३७
परमात्मस्वरूपं को वेत्तुमर्हति तां विना। राज्यलाभात्परंप्राप्यसुखं वैकाननेस्थितः।३८
सुदर्शनस्तु तां देवीं मनसापरिचिन्तयन्। नानोपचारैरनिशं दधार दुःखितं वपुः।३९
साऽपिचन्द्रकलात्यर्थं कामबाणप्रपीडिता। सुबाहुःकारयामासस्वयम्बरमतन्द्रितः।४०
तावत्तस्याःपिताज्ञात्वाकन्यांपुत्रवरार्थिनीम्। राज्ञांविवाहयोग्योवैनान्येषांकथितःकिल।४१
स्वयम्बरस्तुत्रिविधोविद्वद्भिःपरिकीर्तितः। यथारामेणभग्नं वै त्र्यंबकस्य शरासनम्।४२
इच्छास्वयम्बरश्चैको द्वितीयश्चपणाभिधः। इच्छास्वयम्बरं तत्र चकार नृपसत्तमः।४३
तृतीयःशौर्यशुल्कश्च शूराणां परिकीर्तितः। ततश्च विविधाकाराः सुक्लृप्ताः सभ्यमण्डपाः।४४
शिल्पिभिः कारिता मञ्चाः शुभैरास्तरणैर्युताः। सखीं शशिकलाप्राह दुःखिता चारुलोचना।४५
एवंकृतेऽतिसम्भारे विवाहार्थंसुविस्तरे। मया वृतः पतिश्चित्ते ध्रुवसन्धिसुतः शुभः।४६
इदं मे मातरं ब्रूहि त्वमेकान्तेवचोमम। स मे भर्तानृपसुतोभगवत्या प्रतिष्ठितः।४७
नाऽन्यं वरंवरिष्यामि तमृते वै सुदर्शनम्।

व्यास उवाच

इत्युक्ता सा सखीगत्वामातरं प्राह सत्वरा। वैदर्भीविजनेवाक्यंमधुरंमञ्जुभाषिणी।४८
पुत्री ते दुःखिता प्राह साध्वि! त्वां मन्मुखेन यत्।
शृणु त्वं कुरु कल्याणि! तद्धितं त्वरिताऽधुना ॥४९॥
भारद्वाजाश्रमेपुण्येध्रुवसन्धिसुतोऽस्तियः। स मे भर्तावृतश्चित्तेनान्यंभूपं वृणोम्यहम्।५०
राज्ञीतद्वचनं श्रुत्वा स्वपतौ गृहमागते। निवेदयामास तदा पुत्रीवाक्यं यथातथम्।५१
तच्छ्रुत्वा वचनं राजा विस्मितःप्रहसन्मुहुः। भार्यामुवाचवैदर्भीं सुबाहुस्तुऋतम्वचः।५२
सुभ्रुजानासिबालोऽसौराज्यान्निष्कासितोवने। एकाकीसहमात्रावैवसतेनिर्जने वने।५३
तत्कृते निहतो राजा वीरसेनोयुधाजिता। सकथंनिर्धनोभर्तायोग्यःस्याच्चारलोचने।५४
ब्रूहि पुत्रीं ततो वाक्यं कदाचिदपि विप्रियम्। आगमिष्यन्ति राजानः स्थितिमन्तः स्वयम्वरे।५५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे शशिकलयामातरम्प्रतिसन्देशप्रेषणंनामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

* एकोनविंशोऽध्यायः *

मात्रास्वपुत्र्यर्थेसन्तोषप्रदवार्ताकथनम्

व्यास उवाच

भर्त्रा साऽभिहिता बालां पुत्रीं कृत्वांऽकसंस्थिताम्।
उवाच वचनं श्लक्ष्णं समाश्वास्य शुचिस्मिताम् ॥१॥
किं वृथा सुदति त्वंहिविप्रियं मम भाषसे। पितातेदुःखमाप्नोति वाक्येनानेसुव्रते।२
सुदर्शनोऽतिदुर्भाग्योराज्यभ्रष्टोनिराश्रयः। बलकोशविहीनश्च परित्यक्तस्तुबान्धवैः।३
मात्रा सह वनं प्राप्तः फलमूलाशनःकृशः। न ते योग्यो वरोऽयंवै वनवासीच दुर्भगः।४
राजपुत्राः कृतप्रज्ञा रूपवन्तः सुसंमताः। तवार्हाःपुत्रि सन्त्यन्ये राजचिह्नैरलंकृताः।५
भ्राताऽस्य वर्ततेकान्तः स राज्यं कोसलेषु वै। करोति रूपसम्पन्नःसर्वलक्षणसंयुतः।६

अन्यच्चकारणंसुभ्रुशृणुयच्चमया श्रुतम्। युधाजित्सततन्तस्यवधकामोऽस्तिभूमिपः।७
दौहित्रः स्थापितस्तेन राज्येकृत्वाऽतिसंगरम्। वीरसेनं नृपं हत्वा सम्मन्त्र्य सचिवैः सह।८
भारद्वाजाश्रमंप्राप्तंहन्तुकामःसुदर्शनम्। मुनिनावारितःपश्चाज्जगाम निजमन्दिरम्।९

शशिकलोवाच

मातर्ममेप्सितः कामेवनस्थोऽपिनृपात्मजः। शर्यातिवचनेनैव सुकन्याच पतिव्रता।१०
च्यवनं च यथाप्राप्य पतिशुश्रूषणे रता। भर्तृशुश्रूषणंस्त्रीणां स्वर्गदं मोक्षदं तथा।११
अकैतवकृतं नूनं सुखदं भवति स्त्रियाः। भगवत्या समादिष्टं स्वप्ने वरमनुत्तमम्।१२
तमृतेऽहंकथञ्चान्यं संश्रयामिनृपात्मजम्। मच्चित्तभित्तौलिखितो भगवत्यासुदर्शनः।१३
तं विहाय प्रियं कान्तं करिष्येऽहं न चापरम्।

व्यास उवाच

प्रत्यादिष्टाऽथ वैदर्भी तथा बहुनिदर्शनैः ॥१४॥
भर्तारं सर्वमाचष्ट पुत्र्योक्तं वचनं भृशम्। विवाहस्य दिनादर्वागाप्तं श्रुतसमन्वितम्।१५
द्विजं शशिकलातत्र प्रेषयामास सत्वरम्। यथानवेद मे तातस्तथागच्छ सुदर्शनम्।१६
भारद्वाजाश्रमे ब्रूहि मद्वाक्यात्तरसा विभो। पित्रा मे संभृतःकामं मदर्थेन स्वयम्वरः।१७
आगमिष्यन्तिराजानो बलयुक्ताह्यनेकशः। मयात्वं वै वृतश्चित्ते सर्वथाप्रीतिपूर्वकम्।१८
भगवत्या समादिष्टः स्वप्ने मम सुरोपम। विषमग्निहुताशे वा प्रपतामि प्रदीपिते।१९
वरयेत्वदृतेनान्यं पितृभ्यांप्रेरिताऽपि वा। मनसा कर्मणा वाचा सम्वृतस्त्वंमयावरः।२०
भगवत्या प्रसादेन शर्मावाभ्यांभविष्यति। आगन्तव्यंत्वयाऽत्रैवदैवंकृत्वापरम्बलम्।२१
यदधीनंजगत्सर्वं वर्तते सचराचरम्। भगवत्या यदादिष्टं न तन्मिथ्या भविष्यति।२२
यद्वशे देवताः सर्वा वर्तन्ते शङ्करादयः। वक्तव्योऽसौ त्वया ब्रह्मन्नेकान्तेवैनृपात्मजः।२३
यथाभवति मे कार्यंतत्कर्तव्यंत्वयानघ। इत्युक्त्वादक्षिणांदत्त्वामुनिर्व्यापारितस्तथा।२४
गत्वा सर्वं निवेद्याऽऽशु तत्र प्रत्यागतो द्विजः। सुदर्शनस्तु तज्ज्ञात्वा निश्चयं गमने तदा।२५
चकार मुनिना तेन प्रेरितः परमादरात्।
गमनायोद्यतं पुत्रं तमुवाच मनोरमा ॥२६॥
वेपमानाऽतिदुःखार्ता जातत्रासाऽश्रुलोचना। कुत्रगच्छसितत्राद्यसमाजेभूभृतांकिल।२७
एकाकीकृतवैरश्च किंविचिन्त्यस्वयम्वरे। युधाजिद्धंतुकामस्त्वां समेष्यतिमहीपतिः।२८
न तेऽन्योऽस्ति सहायश्च तस्मान्मा व्रज पुत्रक!। एकपुत्राऽतिदीनाऽस्मि तवाऽऽधारा निराश्रया।२९
नार्हसित्वं महाभागनिराशां कर्तुमद्यमाम्। पितामेनिहतोयेनसोऽपितत्रागतो नृपः।३०
एकाकिनं गतन्तत्र युधाजित्त्वां हनिष्यति।

सुदर्शन उवाच

भवितव्यं भवत्येव नाऽत्र कार्या विचारणा ॥३१॥
आदेशाच्च जगन्मातुर्गच्छाम्यद्य स्वयम्वरे। माशोकंकुरु कल्याणिक्षत्रियासिवरानने।३२
न विभेमि प्रसादेन भगवत्या निरन्तरम्।

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा रथमारुह्य गन्तुकामं सुदर्शनम् ॥३३॥
दृष्ट्वा मनोरमा पुत्रमाशीर्भिश्चान्वमोदयत्। अग्रतस्तेऽम्बिका पातु पार्वतीपातुपृष्ठतः।३४
(पार्वतीपार्श्वयोःपातुशिवःसर्वत्रसाम्प्रतम्)। वाराहीविषमेमार्गेदुर्गादुर्गेषुकर्हिचित्।
कालिका कलहे घोरे पातु त्वां परमेश्वरी। ३५
मण्डपे तत्र मातङ्गी तथासौम्यास्वयंवरे। भवानीभूपमध्ये तु पातु त्वां भवमोचनी।३६

गिरिजा गिरिदुर्गेषु चामुण्डाचत्वरेषुच। कामगा काननेष्वेवं रक्षतु त्वां सनातनी।३७
विवादे वैष्णवी शक्तिरवतात्त्वांरघूद्वह। भैरवी च रणे सौम्य शत्रूणां वै समागमे।३८
सर्वदा सर्वदेशेषु पातु त्वां भुवनेश्वरी। महामाया जगद्धात्री सच्चिदानन्दरूपिणी।३९

व्यास उवाच

इत्युक्त्वातं तदामातावेपमानाभयाकुला। उवाचाहं त्वयासार्धमागमिष्यामिसर्वथा।४०
निमिषार्धं विना त्वांवै नाहंस्थातुमिहोत्सवे। सहैवनयमांवत्सयत्रते गमने मतिः।४१
इत्युक्त्वा निःसृतामाता धात्रेयी संयुता तदा। विप्रैर्दत्ताशिषःसर्वे निर्ययुर्हर्षसंयुताः।४२
वाराणस्यां ततः प्राप्तो रथेनैकेन राघवः। ज्ञातः सुबाहुना तत्रपूजितश्चार्हणादिभिः।४३
निवेशार्थं गृहं दत्तमन्नपानादिकं तथा। सेवकं समनुज्ञाप्य परिचर्यार्थमेव च।४४
मिलितास्त्वथ राजानो नानादेशाधिपाः किल। युधाजिदपि सम्प्राप्तो दौहित्रेण समन्वितः।४५
करूषाधिपतिश्चैव तथा मद्रेश्वरो नृपः। सिंधुराजस्तथावीरो योद्धा माहिष्मतीपतिः।४६
पाञ्चालःपर्वतीयश्चकामरूपोऽति वीर्यवान्। कार्णाटश्चोलदेशीयोवैदर्भश्च महाबलः।४७
अक्षौहिणीत्रिषष्टिश्चमिलितासंख्यायातदा। वेष्टितानगरीसातु सैन्यैःसर्वत्र संस्थितैः।४८
एते चान्ये च बहवः स्वयंवरदिदृक्षया। मिलितास्तत्र राजानो वरवारणसंयुताः।४९
अन्योऽन्यंनृपपुत्रास्तइत्यूचुर्मिलितास्तदा। सुदर्शनोनृपसुतो ह्यागतोऽस्तिनिराकुलः।५०
एकाकी रथमारुह्य मात्रा सह महामतिः। विवाहार्थमिहायातः काकुत्स्थःकिन्नु साम्प्रतम्।५१
एतान्राजसुतांस्त्यक्त्वा ससैन्यान्सायुधानथ। किमेनं राजपुत्री सा वरिष्यति महाभुजम्।५२
युधाजिदथ राजेशस्तानुवाचमहीपतीन्। अहमेनंहनिष्यामिकन्यार्थे नात्र संशयः।५३
केरलाधिपतिः प्राह तं तदा नीतिसत्तमः। नात्रयुद्धं प्रकर्तव्यं राजन्निच्छास्वयंवरे।५४
बलेनहरणंनास्ति नात्र शुल्कस्वयंवरः। कन्येच्छयाऽत्रवरणं विवादः कीदृशस्त्विह।५५
अन्यायेन त्वयापूर्वमसौराज्यात्प्रवासितः। दौहित्रायार्पितं राज्यं बलवन्नृपसत्तम।५६
काकुत्स्थोऽयं महाभागकोसलाधिपतेः सुतः। कथमेनंराजपुत्रंहनिष्यसिनिरागसम्।५७
लप्स्यसे तत्फलं नूनमनयस्य नृपोत्तम!। शास्ताऽस्ति कश्चिदायुष्माञ्जगतोऽस्य जगत्पतिः।५८
धर्मोजयतिनाऽधर्मः सत्यं जयतिनाऽनृतम्। माऽनयं कुरु राजेन्द्रत्यजपापमतिंकिल।५९
दौहित्रस्तवसंप्राप्तःसोऽपिरूपसमन्वितः। राज्ययुक्तस्तथा श्रीमान्कथंतंन वरिष्यति।६०
अन्येराजसुताःकामंवर्तन्ते बलवत्तराः। कन्यास्वयम्वरेकन्यास्वीकरिष्यतिसाम्प्रतम्।६१
वृतेतथाविवादःकःप्रवदन्तु महीभुजः। परस्परं विरोधोऽत्र न कर्तव्यो विजानता।६२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे राजसम्वादवर्णनंनामैकोनविंशोऽध्यायः॥१९॥

* विंशोऽध्यायः *

राजसम्वादवर्णनम्

व्यास उवाच

इतिवादिनि भूपाले केरलाधिपतौ तदा। प्रत्युवाच महाभाग युधाजिदपि पार्थिवः।१
नीतिरियं महीपाल यद् ब्रवीति भवानिह। समाजः पार्थिवानाम्वै सत्यवाग्विजितेन्द्रियः।२
योग्येषुवर्तमानेषु कन्यारत्नंकुलोद्वह। अयोग्योऽर्हतिभूपालन्यायोऽयं तव रोचते।३
भागंसिंहस्य गोमायुर्भोक्तुमर्हतिवा कथम्। तथासुदर्शनोऽयंवैकन्यारत्नं किमर्हति।४
बलंवेदो हि विप्राणां भूभुजांचापजंबलम्। किमन्याय्यं महाराज ब्रवीम्यहमिहाधुना।५

बलं शुल्कं यथा राज्ञां विवाहेपरिकीर्तितम्। बलवानेव गृह्णातुनाबलस्तु कदाचन।६
तस्मात्कन्यां पणं कृत्वा नीतिरत्र विधीयताम्। अन्यथा कलहः कामं भविष्यति महीभुजाम्।७
एवं विवादे सम्वृत्ते राज्ञां तत्र परस्परम्। आहूतस्तु सभामध्ये सुबाहुर्नृपसत्तमः।८
समाहूयनृपाःसर्वे तमूचुस्तत्त्वदर्शिनः। राजन्नीतिस्त्वया कार्याविवाहेऽत्रसमाहिता।९
किंते चिकीर्षितं राजंस्तद्वदस्वसमाहितः। पुत्र्याः प्रदानं कस्मैते रोचते नृप चेतसि।१०

सुबाहुरुवाच

पुत्र्या मे मनसा कामंवृतःकिल सुदर्शनः। मया निवारिताऽत्यर्थं न्सापत्येतिमेवचः।११
किं करोमिसुतायाया मे न वशेवर्ततेमनः। सुदर्शनस्तथैकाकीसम्प्राप्तोऽस्तिनिराकुलः।१२

व्यास उवाच

सम्पन्नभूभुजः सर्वे समाहूय सुदर्शनम्। ऊचुः समागतं शांतमेकाकिनमनन्द्रिताः।१३
राजपुत्र महाभाग केनाहूतोऽसि सुव्रत। एकाकी यः समायातःसमाजे भूभृतामिह।१४
न वै सैन्यं नसचिवा न कोशोन बृहद्बलम्। किमर्थञ्च समायातस्तत्त्वंब्रूहि महामते।१५
युद्धकामानृपतयोवर्तन्तेऽत्रसमागमे । कन्यार्थं सैन्यसम्पन्नाः किंत्वं कर्तुमिहेच्छसि।१६
भ्राता ते सुबलः शूरःसम्प्राप्तोऽस्ति जिघृक्षया। युधाजिच्च महाबाहुः साहाय्यं कर्तुमागतः।१७
गच्छ वा तिष्ठ राजेन्द्र याथातथ्यमुदाहृतम्। त्वयि सैन्यविहीने च यथेष्टंकुरुसुव्रत।१८

सुदर्शन उवाच

न बलं न सहायो मे न कोशो दुर्गसंश्रयः। नमित्राणिनसौहार्दी न नृपारक्षका मम।१९
अत्र स्वयम्वरं श्रुत्वा द्रष्टुकामइहागतः। स्वप्नेदेव्याप्रेरितोऽस्मिभगवत्यानसंशयः।२०
नान्यच्चिकीर्षितं मेऽद्य मामाहजगदीश्वरी। तया यद्विहितं तच्च भविताऽद्यन संशयः।२१
नशत्रुरस्तिसंसारे कोऽप्यत्र जगदीश्वराः। सर्वत्रपश्यतोमेऽद्य भवानींजगदम्बिकाम्।२२
यःकरिष्यतिशत्रुत्वंमयासहनृपात्मजाः । शास्तातस्यमहाविद्यानाहंजानामिशत्रुताम्।२३
यद्भावितद्भवितानान्यथानृपसत्तमाः । का चिन्ताह्यत्रकर्तव्यादैवाधीनोऽस्मिसर्वदा।२४
देवभूतमनुष्येषु सर्वभूतेषु सर्वदा। सर्वेषां तत्कृता शक्तिर्नाऽन्यथा नृपसत्तमाः।२५
सायंचिकीर्षते भूपं तं करोति नृपाधिपाः। निर्धनं वा नरं कामंकाचिन्तावै तदामम।२६
तामृते परमांशक्तिं ब्रह्मविष्णुहरादयः। न शक्ताः स्पन्दितुंदेवाःकाचिन्तामेतदा नृपाः।२७
अशक्तो वा सशक्तो वा यादृशस्तादृशस्त्वहम्। तदाज्ञया नृपाऽद्यैव सम्प्राप्तोऽस्मि स्वयम्वरे।२८
सायदिच्छतितत्कुर्यान्मम किं चिन्तनेनवै। नात्रशङ्काप्रकर्तव्या स यमेतद्ब्रवीम्यहम्।२९
जयेपराजयेलज्जानमेऽत्राण्वपिपार्थिवा। भगवत्यास्तुलज्जाऽस्तितदधीनोऽस्मिसर्वदा।३०

व्यास उवाच

इति तस्य तदाकर्ण्य वचनं राजसत्तमाः। ऊचुः परस्परं प्रेक्ष्य निश्चयज्ञा नराधिपाः।३१
सत्यमुक्तं त्वया साधो! न मिथ्यां कर्हिचित्भवेत्। तथाऽप्युज्जयिनीनाथस्त्वां हन्तुं परिकाङ्क्षति।३२
त्वत्कृतेन दयादिष्टा त्वां ब्रवीमोमहामते। यद्युक्तं तत्त्वयाकार्यं विचार्य मनसाऽनघ।३३

सुदर्शन उवाच

सत्यमुक्तंभवद्भिश्च कृपावद्भिःसुहृज्जनैः। किं ब्रवीमिपुनर्वाक्यमुक्त्वा नृपतिसत्तमाः।३४
न मृत्युःकेनचिद्धाव्यः कस्यचिद्वाकदाचन। दैवाधीनमिदं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्।३५
स्ववशोऽयंनजीवोऽस्तिस्वकर्मवशगःसदा। तत्मर्भत्रिविधंप्रोक्तंविद्वद्भिस्तत्त्वदर्शिभिः।३६
संचितं वर्तमानञ्च प्रारब्धञ्च तृतीयकम्। कालकर्मस्वभावैश्च ततंसर्वमिदं जगत्।३७
न देवो मानुषं हन्तुं शक्तः कालागमंविना। हतंनिमित्तमात्रेण हन्तिकालः सनातनः।३८

यथा पितामे निहतः सिंहेनामित्रकर्षणः। तथा मातामहोऽप्येवं युद्धेयुधाजिता हतः।३९
यत्नकोटिं प्रकुर्वाणो हन्यते दैवयोगतः। जीवेद्वर्षसहस्राणि रक्षणेन विना नरः।४०
नाहंविभेमिधर्मिष्ठाः कदाचिच्चयुधाजितः। दैवमेवपरंमत्वा सुस्थितोऽस्मिसदा नृपाः।४१
स्मरणं सततंनित्यंभगवत्याःकरोम्यहम्। विश्वस्यजननीदेवीकल्याणंसा करिष्यति।४२
पूर्वार्जितंहिभोक्तव्यंशुभंवाऽप्यशुभंतथा। स्वकृतस्यचभोगेनकीदृक्छोकोविजानताम्।४३
स्वकर्मफलयोगेन प्राप्यदुःखमचेतनः। निमित्तकारणेवैरं करोत्यल्पमतिः किल।४४
न तथाऽहं विजानामि वैरंशोकं भयंतथा। निःशङ्कमिहसम्प्राप्तः समाजे भूभृतामिह।४५
एकाकी द्रष्टुकामोऽहं स्वयंवरमनुत्तमम्। भविष्यति च यद्भाव्यं प्राप्तोऽस्मि चण्डिकाज्ञया।४६
भगवत्याःप्रमाणं मे नान्यं जानामि संयतः। तत्कृतंचसुखंदुःखं भविष्यतिचनान्यथा।४७
युधाजित्सुखमाप्नोतु न मेवैरं नृपोत्तमाः। यः करिष्यति मेवैरंसप्राप्स्यतिफलंतथा।४८

व्यास उवाच

इत्युक्तास्ते तथातेनसंतुष्टाभूभुजःस्थिताः। सोऽपिस्वमाश्रमंप्राप्यसुस्थितःसंबभूवह।४९
अपरेऽह्नि शुभे काले नृपाःसम्मन्त्रिताः किल। सुबाहुना नृपेणाथरुचिरेवैस्वमण्डपे।५०
दिव्यास्तरणयुक्तेषु मञ्चेषु रचितेषु च। उपविष्टाश्च राजानः शुभालङ्करणैर्युताः।५१
दिव्यवेषधराः कामं विमानेष्वमरा इव। दीप्यमानाः स्थितास्तत्रस्वयम्वरदिदृक्षया।५२
इति चिन्तापराः सर्वे कदासाऽप्यागमिष्यति। भाग्यवन्तंनृपश्रेष्ठंश्रुतपुण्यंवरिष्यति ।५३
यदा सुदर्शनं दैवात्स्रजासम्भूषणयेदिह। विवादोवै नृपाणां च भविता नाऽत्र संशयः।५४
इत्येवं चिन्त्यमानास्ते भूपामञ्चेषुसंस्थिताः। वादित्रघोषःसुमहानुत्थितोनृपमण्डपे ।५५
अथकाशीपतिःप्राहसुतांस्नातांस्वलंकृताम् । मधूकमालासंयुक्तांक्षौमवासोविभूषताम्।५६
विवाहोपस्करैर्युक्तां दिव्यां सिन्धुसुतोपमाम्। चिन्तापरां सुवसनां स्मितपूर्वमिदं वचः।५७
उत्तिष्ठ पुत्रिसुनसेकरेधृत्वा शुभांस्रजम्। व्रजमण्डपमध्येऽद्य समाजं पश्य भूभुजाम्।५८
गुणवान्रूपसम्पन्नः कुलीनश्च नृपोत्तमः। तवचित्ते वसेद्यस्तु तंवृणुष्व सुमध्यमे।५९
देशदेशाधिपाः सर्वे मञ्चेषु रचितेषु च। संविष्टाः पश्य तन्वङ्गि! वरयस्वयथारुचि।६०
तं तथा भाषमाणं वै पितरं मितभाषिणी। उवाचवचनं बाला ललितं धर्मसंयुतम्।६१

शशिकलोवाच

नाऽहं दृष्टिपथेराज्ञां गमिष्यामि पितः! किल। कामुकानां नरेशानां गच्छन्त्यन्याश्च योषितः।६२
धर्मशास्त्रे श्रुतं तात! मयेदं वचनं किल। एक एववरो नार्या निरीक्ष्यःस्यान्नचापरः।६३
सतीत्वं निर्गतं तस्या या प्रयातिबहूनथ। सङ्कल्पयन्तिते सर्वे दृष्ट्वामे भवतात्विति।६४
स्वयंवरे स्रजं धृत्वा यदागच्छति मण्डपे। सामान्या सा तदाजाताकुलटेवापरावधूः।६५
वारस्त्री विपणेगत्वा यथावीक्ष्यनरान्स्थितान्। गुणागुणपरिज्ञानंकरोतिनिजमानसे ।६६

नैक भावा यथावेश्या वृथा पश्यति कामुकम् ।
तथाऽहं मण्डपे गत्वा कुर्वे वारस्त्रिया कृतम् ।।६७।।

वृद्धैरेतैः कृतं धर्मं न करिष्यामि साम्प्रतम्। पत्नीव्रतंतथा कामं चरिष्येऽहं धृतव्रता।६८
सामान्या प्रथमं गत्वा कृत्वा सङ्कल्पितं बहु। वृणोतिचैकंतद्वद्वैवृणोमि कथमद्य वै।६९
सुदर्शनो मया पूर्ववृतः सर्वात्मना पितः। तमृते नान्यथा कर्तुमिच्छामि नृपसत्तम।७०
विवाहविधिना देहि कन्यादानं शुभेदिने। सुदर्शनाय नृपते! यदीच्छसि शुभं मम।७१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे स्वपितरम्प्रतिशशिकलावाक्यंनामविंशोऽध्यायः ।। २० ।।

* एकविंशोऽध्यायः *

सुबाहुनाराज्ञांसमीपेप्रार्थनाकरणम्.

व्यास उवाच

सुबाहुरपि तच्छ्रुत्वा युक्तमुक्तन्तया तदा। चिन्ताविष्टोबभूवाशुकिंकर्तव्यमितःपरम्। १
सङ्गताः पृथिवीपालाः ससैन्याः सपरिग्रहाः। उपविष्टाश्चमंचेषुयोद्धुकामामहाबलाः। २
यदि ब्रवीमितान्सर्वान्सुतानायातिसाम्प्रतम्। तथाऽपिकोपसंयुक्ताहन्युर्मांदुष्टबुद्धयः। ३
न मे सैन्यबलंतादृङ् न दुर्गबलमद्भुतम्। येनाऽहंनृपतीन्सर्वान्प्रत्यादेष्टुमिहोत्सहे। ४
सुदर्शनस्तथैकाकी ह्यसहायोऽधनः शिशुः। किंकर्तव्यं निमग्नोऽहं सर्वथादुःखसागरे। ५
इति चिन्तापरो राजा जगाम नृपसन्निधौ। प्रणम्य तानुवाचाथ प्रश्रयावनतोनृपः। ६
किं कर्तव्यं नृपाःकामंनैतिमेमण्डपेसुता। बहुशःप्रेर्यमाणाऽपिसामात्राऽपिमयापिच। ७
मूर्ध्ना पतामि पादेषु राज्ञां दासोऽस्मि साम्प्रतम्। पूजादिकं गृहीत्वाऽद्य व्रजन्तु सदनानि वः। ८
ददामिबहुरत्नानि वस्त्राणिचगजान्रथान्। गृहीत्वाऽद्य कृपां कृत्वाव्रजन्तुभवनान्युत। ९
न वशेमेसुताबालाम्रियेतयदिखेदिता। तदामेस्यान्महद् दुःखंतेनचिन्तातुरोऽस्म्यहम्। १०
भवन्तः करुणावन्तो महाभाग्या महौजसः। किमेतयादुहित्रा मे मन्दयादुर्विनीतया। ११
अनुग्राह्योऽस्मि वःकामंदासोऽहमितिसर्वथा। सुतासुतेवमन्तव्याभवद्भिःसर्वथामम। १२

व्यास उवाच

श्रुत्वा सुबाहुवचनंनोचुःकेचनभूमिपाः। युधाजित्क्रोधताम्राक्षस्तमुवाचरुषाऽन्वितः। १३
राजन्मूर्खोऽसि किंब्रूषेकृत्वाकार्यंसुनिन्दितम्। स्वयंवरःकथंमोहाद्रचितःसंशयेसति। १४
मिलिताभूभुजः सर्वे त्वयाहूताः स्वयंवरे। कथमद्यनृपागन्तुं योग्यास्ते स्वगृहान्प्रति। १५
अथमान्यनृपान्सर्वांस्त्वंकिंसुदर्शनाय वै। दातुमिच्छसि पुत्रीं चकिमनार्यमवै परम्। १६
विचार्य पुरुषेणादौ कार्यं वैशुभमिच्छता। आरब्धव्यं त्वयातत्तु कृतं राजन्नजानता। १७
एतान्विहाय नृपतीन्बलवाहनसंयुतान्। वरं सुदर्शनं कर्तुं कथमिच्छसि साम्प्रतम्। १८
अहं त्वां हन्मि पापिष्ठं तथा पश्चात्सुदर्शनम्। दौहित्रायाऽद्य मे कन्यां दास्यामीति विनिश्चयः। १९
मयि तिष्ठति कोऽन्योऽस्ति यः कन्यां हर्तुमिच्छति।
सुदर्शनः कियानद्य निर्धनो निर्बलः शिशुः ॥२०॥
भारद्वाजाश्रमे पूर्वं मुक्तोमुनिकृतेमया। नाद्याहं मोचयिष्यामि सर्वथाजीवितंशिशोः। २१
तस्माद्विचार्य सम्यक्त्वं पुत्र्याचभार्ययासह। दौहित्रायप्रियांकन्यांदेहिमेसुभ्रुवंकिल। २२
सम्बन्धीभवदत्त्वा त्वं पुत्रीमेतां मनोरमाम्। उच्चाश्रयःप्रकर्तव्यःसर्वदाशुभमिच्छता। २३
सुदर्शनाय दत्त्वा त्वं पुत्रीं प्राणप्रियां शुभाम्। एकाकिनेऽप्यराज्याय किं सुखं प्राप्तुमिच्छसि। २४
"कुलं वित्तंबलंरूपं राज्यंदुर्गं सुहृज्जनम्। दृष्ट्वाकन्यांप्रदातव्यानान्यथासुखमृच्छति"। २५
परिचिन्तयधर्मंत्वंराज्यनीतिंचशाश्वतीम्। कुरुकार्यं यथा योग्यं माकृथामतिमन्यथा। २६
सुहृदसि ममात्यर्थं हितं ते प्रब्रवीम्यहम्। समानय सुतां राजन्मण्डपेतांसखीवृताम्। २७
सुदर्शनमृतेचेयंवरिष्यतियदाऽप्यसौ। विग्रहो मे तदा न स्याद्विवाहोऽस्तुतवेप्सितः। २८
अन्येनृपतयः सर्वे कुलीनाः सबलाः समाः। विरोधः कीदृशस्त्वेनंवृणोद्यदिनृपोत्तम। २९
अन्यथाऽहं हरिष्येऽद्य बलात्कन्यामिमां शुभाम्।
मा विरोधं सुदुःसाध्यं गच्छ पार्थिवसत्तम!ः ॥३०॥
युधाजिता समादिष्टः सुबाहुः शोकसंयुतः। निःश्वसन्भवनंगत्वाभार्यांप्राहशुचावृतः। ३१

पुत्रीं ब्रूहि सुधर्मज्ञे कलहे समुपस्थिते। किं कर्तव्यंमया शक्यंत्वद्वशोऽस्मिसुलोचने।३२

व्यास उवाच

सा श्रुत्वा पतिवाक्यं तु गत्वा प्राह सुतान्तिकम् ।
वत्से ! राजाऽतिदुःखार्तः पिता तेऽद्यापि वर्तते ।।३३।।

त्वदर्थे विग्रहः कामं समुत्पन्नोऽद्य भूभृताम्। अन्यं वरय सुश्रोणि सुदर्शनमृतेनृपम्।३४
यदि सुदर्शनं वत्से! हठात्त्वं वै वरिष्यसि। युधाजित्त्वांचमांचैवहनिष्यतिबलान्वितः।३५
सुदर्शनं च राजाऽसौ बलमत्तः प्रतापवान्। द्वितीयस्तेपतिःपश्चाद्भविता कलहे सति।३६
तस्मात्सुदर्शनंत्यक्त्वावरयान्यं नृपोत्तमम्। सुखमिच्छसि चेन्मह्यंतुभ्यंवामृगलोचने।३७

इति मात्रा बोधितां तां पश्चाद्राजाऽप्यबोधयत् ।।३८।।
उभयोर्वचनं श्रुत्वा निर्भयोवाच कन्यका ।

कन्योवाच

सत्यमुक्तं नृपश्रेष्ठ! जानासि च व्रतं मम ।।३९।।

नान्यं वृणोमि भूपालं सुदर्शनमृते क्वचित्। विभेषि यदि राजेन्द्रनृपेभ्यःकिलकातरः।४०
सुदर्शनाय दत्त्वा मां विसर्जय पुराद्बहिः। स मांरथेसमारोप्यनिर्गमिष्यतितेपुरात्।४१
भवितव्यंतुपश्चाद्वै भविष्यतिनचान्यथा। नाऽत्रचिन्तात्वयाकार्याभवितव्ये नृपोत्तम।४२

यद्भावि तद्भवत्येव सर्वथाऽत्र न संशयः ।

राजोवाच

न पुत्रि! साहसं कार्यं मतिमद्भिः कदाचन ।।४३।।

बहुभिर्न विरोधव्यमिति वेदविदो विदुः। विस्रक्ष्यामिकथं कन्यांदत्त्वाराजसुतायच।४४
राजानो वैरसंयुक्ताः किंन कुर्युरसाम्प्रतम्। यदिते रोचतेवत्से! पणंसंविदधाम्यहम्।४५
जनकेन यथा पूर्वं कृतः सीतास्वयम्वरे। शैवंधनुर्यथातेन धृतं कृत्वा पणं तथा।४६
तथाऽहमपि तन्वङ्गि करोम्यद्य दुरासदम्। विवादोयेन राज्ञांवै कृते सति शमंव्रजेत्।४७
पालयिष्यति यःकामंसतेभर्ताभविष्यति। सुदर्शनस्तथाऽन्योवा यःकश्चिद्बलवत्तरः।४८
पालयित्वा पणं त्वां वै वरयिष्यति सर्वथा। एवं कृते नृपाणां तु विवादः शमितो भवेत्।४९

सुखेनाऽहं विवाहं ते करिष्यामि ततः परम् ।

कन्योवाच

सन्देहे नैव मज्जामि मूर्खकृत्यमिदं यतः ।।५०।।

मया सुदर्शनः पूर्वं धृतश्चेतसि नाऽन्यथा। कारणं पुण्यपापानां मन एव महीपते!।५१
मनसा विधृतं त्यक्त्वा कथमन्यंवृणे पितः। कृते पणे महाराज सर्वेषां वशगाह्यहम्।५२
एकः पालयिता द्वौवाबहवोवाभवन्तिचेत्। किं कर्तव्यंतदातात! विवादेसमुपस्थिते।५३
संशयाधिष्ठितेकार्ये मतिंनाहंकरोम्यतः। मा चिन्तांकुरुराजेन्द्र देहि सुदर्शनाय माम्।५४
विवाहंविधिनाकृत्वाशंविधास्यतिचण्डिका। यन्नामकीर्तनादेवदुःखौघोविलयंव्रजेत् ।५५
तां स्मृत्वा परमांशक्तिं कुरुकार्यमतन्द्रितः। गत्वावद नृपेभ्यस्त्वंकृताञ्जलिपुटोऽद्यवै।५६
आगन्तव्यंचश्वःसर्वैरिहभूपैःस्वयम्वरे ।इत्युक्त्वात्वं विसृज्याऽऽशुसर्वंनृपतिमण्डलम्।५७
विवाहं कुरु रात्रौमे वेदोक्तविधिनानृप। पारिबर्हं यथायोग्यं दत्त्वा तस्मै विसर्जय।५८
गमिष्यति गृहीत्वा मांध्रुवसन्धिसुतःकिल। कदाचित्तेनृपाःक्रुद्धाःसंग्रामंकर्तुमुद्यताः।५९
भविष्यन्ति तदा देवी साहाय्यं नः करिष्यति। सोऽपि राजसुतैस्तैस्तु संग्रामं संविधास्यति।६०
दैवान्मृधे मृते तस्मिन्मरिष्याम्यहमप्युत। स्वस्तितेस्तुगृहेतिष्ठ दत्त्वामांसहसैन्यक।६१

एकैवाऽहं गमिष्यामि तेन सार्द्धं रिरंसया ।

व्यास उवाच

इति तस्या वचः श्रुत्वा राजाऽसौ कृतनिश्चयः ।
मतिं चक्रे तथा कर्तुं विश्वासं प्रतिपद्य च ।।६२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांतृतीयस्कन्धे कन्ययास्वपितरम्प्रतिसुदर्शनेनसहविवाहार्थकथनंनामैकविंशोऽध्यायः ।२१।

* द्वाविंशोऽध्यायः *

स्वपुत्रीवाक्यंश्रुत्वासुबाहुनासुदर्शनेनसहस्वकन्याविवाहकरणम्

व्यास उवाच

श्रुत्वा सुतावाक्यमनिन्दितात्मा नृपांश्च गत्वा नृपतिर्जगाद ।
व्रजन्तु कामं शिविराणि भूपाः! श्वो वा विवाहं किल संविधास्ये ।। १ ।।
भक्ष्याणि पेयानि मयाऽर्पितानि गृह्णन्तु सर्वे मयि सुप्रसन्नाः ।
श्वो भावि कार्यं किल मण्डपेऽद्य समेत्य सर्वैरिह संविधेयम् ।।२।।
नाऽऽयाति पुत्री किल मण्डपेऽद्य करोमि किं भूपतयोऽत्र कामम् ।
प्रातः समाश्वास्य सुतां नयिष्ये गच्छन्तु तस्माच्छिविराणि भूपाः! ।। ३ ।।
न विग्रहो बुद्धिमतां निजाश्रिते कृपा विधेया सततं ह्यपत्ये ।
विधाय तां प्रातरिहानयिष्ये सुतां तु गच्छन्तु नृपा यथेष्टम् ।।४।।
इच्छापणं वापरिचिन्त्यचित्ते प्रातःकरिष्याम्यथ संविवाहम् ।
सर्वैः समेत्यात्र नृपैः समेतैः स्वयम्वरः सर्वमतेन कार्यः ।।५।।
श्रुत्वानृपास्तेऽवितथं विदित्वावचो ययुःस्वानि निकेतनानि ।
विधाय पार्श्वे नगरस्य रक्षां चक्रुः क्रिया मध्यदिनोदिताश्च ।।६।।
सुबाहुरप्यार्यजनैः समेतश्चकार कार्याणि विवाहकाले ।
पुत्रीं समाहूय गृहे सुगुप्ते पुरोहितैर्वेदविदां वरिष्ठैः ।।७।।
स्नानादिकं कर्म वरस्य कृत्वा विवाहभूषाकरणं तथैव ।
आनाय्य वेदीरचिते गृहे वै तस्यार्हणां भूमिपतिश्चकार ।।८।।
सविष्टरं चाऽऽचमनीयमर्घ्यं वस्त्रद्वयं गामथ कुण्डले द्वे ।
समर्प्य तस्मै विधिवन्नरेन्द्र ऐच्छत्सुतादानमहीनसत्त्वः ।।९।।
सोऽप्यग्रहीत्सर्वमदीनचेता शशाम चिन्ताऽथ मनोरमायाः ।
कन्यां सुकेशीं निधिकन्यकासमां मेने तदाऽऽत्मानमनुत्तमञ्च ।।१०।।
सुपूजितं भूषणवस्त्रदानैर्वरोत्तमं तं सचिवास्तदानीम् ।
निन्युश्च ते कौतुकमण्डपान्तर्मुदाऽन्विता वीतभयाश्च सर्वे ।।११।।
समाप्तभूषां विधिवद्विधिज्ञाः स्त्रियश्च तां राजसुतां सुयाने ।
आरोप्य निन्युर्वरसंनिधानं चतुष्कयुक्ते किल मण्डपे वै ।।१२।।
अग्निं समाधाय पुरोहितः स हुत्वा यथावच्च तदन्तराले ।
आह्वाययत्तौ कृतकौतुकौ तु वधूवरौ प्रेमयुतौ निकामम् ।।१३।।
लाजाविसर्गं विधिवद्विधाय कृत्वा हुताशस्य प्रदक्षिणां च ।
तौ चक्रतुस्तत्र यथोचितं तत्सर्वं विधानं कुलगोत्रजातम् ।।१४।।
शतद्वयं चाश्वयुजां रथानां सुभूषितं चापि शरौघसंयुतम् ।
ददौ नृपेन्द्रस्तु सुदर्शनाय सुपूजितं पारिबर्हं विवाहे ।।१५।।

मदोत्कटान्हेमविभूषितांश्च गजान्गिरेः शृङ्गसमानदेहान् ।
शतं सपादं नृपसूनवेऽसौ ददावथ प्रेमयुतो नृपेन्द्रः ॥१६॥
दासीशतं काञ्चनभूषितं च करेणुकानां च शतं सुचारु ।
समर्पयामास वराय राजा विवाहकाले मुदितोऽनुवेलम् ॥१७॥
अदात्पुनर्दाससहस्रमेकं सर्वायुधैः संभृतभूषितं च ।
रत्नानि वासांसि यथोचितानि दिव्यानि चित्राणि तथाऽऽविकानि ॥१८॥
ददौ पुनर्वासगृहाणि तस्मै रम्याणि दीर्घाणि विचित्रतानि ।
सिन्धूद्भवानां तुरगोत्तमानामदात्सहस्रद्वितयं सुरम्यम् ॥१९॥
कमेलकानां च शतत्रयं वै प्रत्यादिशद्भारभृतां सुचारु ।
शतद्वयं वै शकटोत्तमानां तस्मै ददौ धान्यरसैः प्रपूरितम् ॥२०॥
मनोरमां राजसुतां प्रणम्य जगाद वाक्यं विहिताञ्जलिः पुरः ।
दासोऽस्मि ते राजसुते! वरिष्ठे! तद् ब्रूहि यत्स्यात्तु मनोगतं ते ॥२१॥
तं चारुवाक्यं निजगादि साऽपि स्वस्त्यस्तु ते भूपकुलस्यवृद्धिः ।
सम्मानिताऽहं मम सूनवे त्वया दत्ता यतो रत्नवरा स्वकन्या ॥२२॥
न बन्दिपुत्री नृपमागधी वा स्तौमीह किं त्वां स्वजनंमहत्तरम् ।
सुमेरुतुल्यस्तु कृतः सुतोऽद्य मे सम्बन्धिना भूपतिनोत्तमेन ॥२३॥
अहोऽतिचित्रं नृपतेश्चरित्रं परं पवित्रं तव किं वदामि ।
यद् भ्रष्टराज्याय सुताय मेऽद्य दत्ता त्वया पूज्यसुता वरिष्ठा ॥२४॥
वनाधिवासाय किलाऽधनाय पित्रा विहीनाय विसैन्यकाय ।
सर्वानिमान्भूमिपतीन्विहाय फलाशनायार्थविवर्जिताय ॥२५॥
समानवित्तेऽथ कुले बले च ददाति पुत्रीं नृपतिश्च भूयः ।
न कोऽपि मे भूपसुतेऽर्थहीने गुणान्वितां रूपवतीं च दद्यात् ॥२६॥
वैरं तु सर्वैः सह संविधाय नृपैर्वरिष्ठैर्वलसंयुतैश्च ।
सुदर्शनायाऽथ सुताऽर्पिता मे किं वर्णये धैर्यमिदं त्वदीयम् ॥२७॥
निशम्य वाक्यानि नृपः प्रहृष्टः कृताञ्जलिर्वाक्यमुवाच भूयः ।
गृहाण राज्यं मम सुप्रसिद्धं भवामि सेनापतिरद्य चाहम् ॥२८॥
नोचेत्तदर्धंप्रतिगृह्य चाऽत्र सुतान्वितोराज्यफलानि भुङ्क्ष्व ।
विहाय वाराणसिकानिवासं वने पुरे वासमतो न मेऽस्ति ॥२९॥
नृपास्तु संत्येव रुषान्विता वै गत्वा करिष्ये प्रथमं तु सान्त्वनम् ।
ततः परं द्वावपरावुपायौ नोचेत्ततो युद्धमहं करिष्ये ॥३०॥
जयाजयौ दैववशौ तथाऽपि धर्मे जयो नैव कृतेऽप्यधर्मे ।
तेषां किलाऽधर्मवतां नृपाणां कथं भविष्यत्यनुचिन्तितं वै ॥३१॥
आकर्ण्य तद्भाषितमर्थवच्च जगाद वाक्यं हितकारकं तम् ।
मनोरमा मानमवाप्य तस्मात्सर्वात्मना मोदयुता प्रसन्ना ॥३२॥
राजञ्छिवं तेस्तु कुरुष्व राज्यं त्यक्त्वा भयं त्वं स्वसुतैः समेतः ।
सुतोऽपि मे नूनमवाप्य राज्यं साकेतपुर्यां प्रचरिष्यतीह ॥३३॥
विसर्जयाऽस्मान्निजसद्म गन्तुं शिवं भवानी तव संविधास्यति ।
न काऽपि चिन्ता मम भूप! वर्तते सञ्चिन्तयन्त्याः परमाम्बिकां व ॥३४॥
दोषा गता विविधवाक्यपदै रसालैरन्योन्यभाषणपदैरमृतोपमैश्च ।
प्रातर्नृपाः समधिगम्य कृतं विवाहं रोषान्विता नगरवाह्यगतास्तथोचुः ॥३५॥

अद्यैव तं नृपकलङ्कधरं च हत्वा बालं तथैव किल तं न विवाहयोग्यम्।
गृह्णीम तां शशिकलां नृपतेश्च लक्ष्मीं लज्जामवाप्य निजसद्म कथं व्रजेम ।।३६।।
शृण्वन्तु तूर्यनिनदान्किल वाद्यमानाञ्छङ्खस्वनानभिभवन्ति मृदङ्गशब्दाः।
गीतध्वनिं च विविधं निगमस्वनं च मन्यामहे नृपतिनाऽत्र कृतो विवाहः ।।३७।।
अस्मान्प्रतार्य वचनैर्विधिवच्चकार वैवाहिकेन विधिना करपीडनं वै।
कर्त्तव्यमद्य किमहो प्रविचिन्तयन्तु भूपाः परस्परमतिं च समर्थयन्तु ।।३८।।
एवं वदत्सु नृपतिष्वथ कन्यकायाः कृत्वा विवाहविधिमप्रतिमप्रभावः।
भूपान्निमन्त्रयितुमाशु जगाम राजा काशीपतिः स्वसुहृदैः प्रथितप्रभावैः ।।३९।।

आगच्छन्तं च तं दृष्ट्वा नृपाः काशीपतिं तदा।
नोचुः किञ्चिदपि क्रोधान्मौनमाधाय संस्थिताः ।।४०।।

स गत्वा प्रणिपत्याह कृताञ्जलिरभाषत। आगन्तव्यं नृपैः सर्वैर्भोजनार्थं गृहे मम।४१
कन्ययाऽसौवृतोभूपःकिंकरोमिहिताहितम्। भवद्भिस्तुशमःकार्योमहान्तोहिदयालवः।४२
तन्निशम्य वचस्तस्य नृपाः क्रोधपरिप्लुताः। प्रत्यूचुर्भुक्तमस्माभिः स्वगृहं नृपते व्रज।४३
कुरुकार्याण्यशेषाणियथेष्टंसुकृतं कृतम्। नृपाःसर्वेप्रयान्त्वद्यस्वानिस्वानिगृहाणिवै।४४
सुबाहुरपितच्छ्रुत्वाजगामशङ्कितोगृहम्। किंकरिष्यन्तिसंविग्नाःक्रोधयुक्तानृपोत्तमाः।४५
गते तस्मिन्महीपालाश्चक्रुश्च समयंपुनः। रुद्ध्वामार्गंग्रहीष्यामःकन्यांहत्वासुदर्शनम्।४६
केचनोचुः किमस्माकं हतं तेन नृपेण वै। दृष्ट्वा तु कौतुकंसर्वं गमिष्यामोयथागतम्।४७
इत्युक्त्वा ते नृपाःसर्वेमार्गमाक्रम्यसंस्थिताः। चकारोत्तरकार्याणिसुबाहुःस्वगृहंगतः ।४८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे सुदर्शनशशिकलयोर्विवाहवर्णनंनामद्वाविंशोऽध्यायः ।।२२।।

* त्रयोविंशोऽध्यायः *

सुदर्शनेनसहयुधाजिद्राज्ञोयुद्धकरणम्

व्यास उवाच

तस्मैगौरवभोज्यानि विधायविधिवत्तदा। वासराणिचषड्राजाभोजयामासभक्तितः।१
एवं विवाहकार्याणिकृत्वासर्वाणि पार्थिवः। पारिबर्हंप्रदत्त्वाऽथमन्त्रयन्सचिवैःसह ।२
दूतैस्तु कथितं श्रुत्वा मार्गसंरोधनं कृतम्। बभूव विमना राजासुबाहुरमितद्युतिः।३
सुदर्शनस्तदोवाच श्वशुरं संहितव्रतः। अस्मान्विसर्जयाशु त्वंगमिष्यामोह्यशङ्किताः।४
भारद्वाजाश्रमंपुण्यंगत्वातत्र समाहिताः। निवासायविचारो वै कर्तव्यः सर्वथा नृप।५
नृपेभ्यश्च न कर्तव्यंभयंकिञ्चित्त्वयाऽनघ। जगन्माताभवानी मे साहाय्यंवैकरिष्यति।६

व्यास उवाच

तस्येतिमतमाज्ञाय जामातुर्नृपसत्तमः। विससर्ज धनन्दत्त्वा प्रतस्थेसोऽपिसत्वरः।७
बलेनमहताऽऽविष्टो ययावनुनृपोत्तमः। सुदर्शनो वृतस्तत्र चचाल पथि निर्भयः।८
रथैः परिवृतः शूरः सदारो रथसंस्थितः। गच्छन्ददर्श सैन्यानि नृपाणां रघुनन्दनः।९
सुबाहुरपितान्वीक्ष्य चिन्ताविष्टोबभूवह। विधिवत्स शिवांचित्ते जगाम शरणं मुदा।१०
जजापैकाक्षरंमन्त्रं कामराजमनुत्तमम्। निर्भयो वीतशोकश्च पत्न्यासह नवोढया।११

ततः सर्वे महीपालाः कृत्वा कोलाहलं तदा।
उत्थिताः सैन्यसंयुक्ता हन्तुकामास्तु कन्यकाम् ।।१२।।

काशीराजस्तुतान्दृष्ट्वा हन्तुकामोबभूव ह। निवारितस्तदाऽत्यर्थं राघवेणजिघांसया।१३
तत्रापिनेदुःशङ्खाश्च भैर्यश्चानकदुंदुभिः। सुबाहोश्च नृपाणाञ्च परस्परजिघांसताम्।१४
शत्रुजित्तु सुसम्वृत्तः स्थितस्तत्रजिघांसया। युधाजित्तत्सहायार्थंसन्नद्धः प्रबभूवह।१५
केचिच्चप्रेक्षकास्तस्यसहानीकैःस्थितास्तदा। युधाजिदग्रतोगत्वा सुदर्शनमुपस्थितः।१६
शत्रजित्तेनसहितो हन्तुंभ्रातरमानुजः। परस्परं ते बाणौघैस्ततक्षुःक्रोधमूर्च्छिताः।१७
सम्मर्दः सुमहांस्तत्र संप्रवृत्तः सुमार्गणैः। काशीपतिस्तदातूर्णं सैन्येन बहुना वृतः।१८
साहाय्यार्थं जगामाशु जामातरमनिन्दितम्। एवंप्रवृत्ते संग्रामे दारुणे लोमहर्षणे।१६
प्रादुर्बभूव सहसा देवी सिंहोपरि स्थिता। नानायुधधरा रम्या वराभूषणभूषिता।२०
दिव्याम्बरपरीधाना मन्दारस्रक्सुसंयुता। तां दृष्ट्वातेऽथभूपालाविस्मयं परमं गताः।२१
केयं सिंहसमारूढा कुतो वेति समुत्थिता। सुदर्शनस्तु तां वीक्ष्य सुबाहुमिति चाब्रवीत्।२२
पश्य राजन्महादेवीमागतांदिव्यदर्शनाम्। अनुग्रहाय मे नूनं प्रादुर्भूता दयान्विता।२३
निर्भयोऽहंमहाराजजातोऽस्मिनिर्भयादपि। सुदर्शनःसुबाहुश्चतामालोक्य वराननाम्।२४
प्रणामं चक्रतुस्तस्या मुदितौ दर्शनेनच। ननादचतथासिंहो गजास्त्रस्ताश्चकम्पिरे।२५
ववुर्वाता महाघोरा दिशश्चासन्सुदारुणाः। सुदर्शनस्तदाप्राह निजं सेनापतिं प्रति।२६
मार्गे व्रज त्वं तरसा भूपाला यत्र संस्थिताः। किं करिष्यन्ति राजानः कुपिता दुष्टचेतसः।२७
शरणार्थञ्च सम्प्राप्ता देवीभगवतीहिनः। निरातङ्कैश्च गन्तव्यंमार्गेऽस्मिन्भूपसंकुले।२८
स्मृतामयामहादेवी रक्षणार्थमुपागता। तच्छ्रुत्वावचनं सेनापतिस्तेनपथाऽव्रजत्।२६
युधाजित्तु सुसंक्रुद्धस्तानुवाच महीपतीन्। किंस्थिता भयसन्त्रस्ता निघ्नन्तु कन्यकान्विताम्।३०
अवमन्यच नःसर्वान्बलहीनोबलाधिकान्। कन्यांगृहीत्वासंयातिनिर्भयस्तरसाशिशुः।३१

किं भीताः कामिनीं वीक्ष्य सिंहोपरि सुसंस्थिताम्।
नोपेक्ष्यो हि महाभाग! हन्तव्योऽत्र समाहितैः॥३२॥

हत्वैनंसंग्रहीष्यामःकन्यांचारुविभूषणाम्। नायंकेसरिणाऽऽदत्तांछेत्तुमर्हतिजम्बुकः।३३
इत्युक्त्वा सैन्यसंयुक्तः शत्रुजित्सहितस्तदा। योद्धुकामः सुसम्प्राप्तो युधाजित्क्रोधसंवृतः।३४
मुमोचविशिखांस्तूर्णंसमपुंखाञ्छिलाशितान्। धनुराकृष्यकर्णांतंकर्मारपरिमार्जितान्।३५
हन्तुकामः सुदुर्मेधाः सुदर्शनमथोपरि। सुदर्शनस्तु तान्बाणैश्चिच्छेदापततः क्षणात्।३६
एवं युद्धे प्रवृत्तेऽथचुकोपचण्डिका भृशम्। दुर्गादेवीमुमोचाथबाणान्युधाजितम्प्रति।३७
नानारूपातदाजाता नानाशस्त्रधरा शिवा। सम्प्राप्तातुमुलं तत्र चकार जगदम्बिका।३८
शत्रुजिन्निहतस्तत्र युधाजिदपि पार्थिवः। पतितौतौरथाभ्यान्तु जयशब्दस्तदाऽभवत्।३६
विस्मयंपरमंप्राप्ताःभूपाःसर्वे विलोक्यतान्। निधनंमातुलस्यापिभागिनेयस्यसंयुगे।४०
सुबाहुरपि तं दृष्ट्वा निधनं संयुगे तयोः। तुष्टाव परमप्रीतो दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।४१

सुबाहुरुवाच

नमोदेव्यै जगद्धात्र्यै शिवायै सततं नमः। दुर्गायै भगवत्यै ते कामदायै नमो नमः।४२
नमःशिवायैशान्त्यैते विद्यायैमोक्षदेनमः। विश्वव्याप्त्यै जगन्मातर्जगद्धात्र्यैनमःशिवे।४३
नाऽहं गतिं तव धिया परिचिन्तयन्वै जानामि देवि! सगुणः किल निर्गुणायाः।
किं स्तौमि विश्वजननि! प्रकटप्रभावां भक्तार्तिनाशनपरां परमाञ्च शक्तिम्।४४
वाग्देवता त्वमसि सर्वगतैव बुद्धिर्विद्यामतिश्च गतिरप्यसि सर्वजन्तोः।
त्वां स्तौमि किं त्वमसिसर्वमनोनियन्त्री किं स्तूयतेहि सततं खलुचात्मरूपम्।४५

ब्रह्मा हरश्च हरिरप्यनिशं स्तुवन्तो नान्तं गताः सुरवराःकिल ते गुणानाम् ।
क्वाऽहं विभेदमतिरम्ब गुणैर्वृतो वै वक्तुं क्षमस्तव चरित्रमहो प्रसिद्धः ।४६
सत्सङ्गतिः कथमहो न करोति कामं प्रासङ्गिकाऽपि विहिताखलु चित्तशुद्धिः ।
जामातुरस्य विहितेन समागमेन प्राप्तं मयाऽद्भुतमिदं तव दर्शनं वै ।४७
ब्रह्माऽपि वाञ्छति सदैव हरो हरिश्च सेन्द्राः सुराश्च मुनयो विदितार्थतत्त्वाः ।
यद्दर्शनं जननि! तेऽद्य मया दुरापं प्राप्तं विना दमशमादिसमाधिभिश्च ।४८
क्वाऽहं सुमन्दमतिराशु तवावलोकं क्वेदं भवानि! भवभेषजमद्वितीयम् ।
ज्ञाताऽसि देवि! सततं किल भावयुक्ता भक्तानुकम्पनपराऽमरवर्गपूज्या ।४६
किं वर्णयामि तव देवि! चरित्रमेतद्यद्रक्षितोऽस्ति विषमेऽत्र सुदर्शनोऽयम् ।
शत्रू हतौ सुबलितौ तरसा त्वया यद्भक्तानुकम्पि चरितं परमं पवित्रम् ।५०
नाश्चर्यमेतदिति देवि! विचारितेऽर्थे त्वं पासि सर्वमखिलं स्थिरजङ्गमं वै ।
त्रातस्त्वया च विनिहत्य रिपुर्दयातः संरक्षितोऽयमधुना ध्रुवसन्धिसू नुः ।५१
भक्तस्य सेवनपरस्य यशोऽतिदीप्तं कर्तुं भवानि! रचितं चरितं त्वयैतत् ।
नो चेत्कथं सुपरिगृह्य सुतां मदीयां युद्धे भवेत्कुशलवाननवद्यशीलः ।५२
शक्ताऽसि जन्ममरणादिभयान्विहन्तुं किं चित्रमत्र किल भक्तजनस्य कामम् ।
त्वं गीयसे जननि! भक्तजनैरपारा त्वं पापपुण्यरहिता सगुणाऽगुणा च ।५३
त्वद्दर्शनादहमहो सुकृती कृतार्थो जातोऽस्मि देवि! भुवनेश्वरी! धन्यजन्मा! ।
बीजं न ते न भजनं किल वेद्मि मातर्ज्ञातस्तवाऽद्य महिमा प्रगटप्रभावः ।५४

व्यास उवाच

एवं स्तुता तदादेवी प्रसन्नवदना शिवा। उवाच च नृपं देवी वरं वरय सुव्रत!।५५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे सुबाहुकृतादेवीस्तुतिवर्णननामत्रयोविंशोऽध्यायः ।। २३ ।।

* चतुर्विंशोऽध्यायः *

देवीमहिमावर्णनं काश्यांदुर्गावासश्च

व्यास उवाच

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा भवान्याः स नृपोत्तमः। प्रोवाचवचनंतत्र सुबाहुर्भक्तिसंयुतः। १

सुबाहुरुवाच

एकतो देवलोकस्य राज्यं भूमण्डलस्य च। एकतो दर्शनन्ते वै नच तुल्यं कदाचन। २
दर्शनात्सदृशंकिंचित्त्रिषुलोकेषुनास्ति मे। कं वरंदेवि! याचेऽहं कृतार्थोऽस्मिधरातले। ३
एतदिच्छाम्यहं मातर्याचितुंवाञ्छितंवरम्। तवभक्तिःसदामेऽस्तुनिश्चलाह्यनपायिनी। ४
नगरेऽत्रत्वयामातःस्थातव्यंममसर्वदा। दुर्गादेवीतिनाम्ना वै त्वं शक्तिरिहसंस्थिता। ५
रक्षा त्वया च कर्तव्या सर्वदा नगरस्य ह। यथा सुदर्शनस्त्रातो रिपुसङ्घादनामयः। ६
तथाऽत्र रक्षा कर्तव्या वाराणस्यास्त्वयाऽम्बिके। यावत्पुरी भवेद् भूमौ सुप्रतिष्ठा सुसंस्थिता। ७
तावत्त्वयाऽत्रस्थातव्यंदुर्गे देविकृपानिधे। वरोऽयं ममतेदेयः किमन्यत्प्रार्थयाम्यहम्। ८
विविधान्सकलान्कामान्देहिमेविद्विषोजहि। अभद्राणांविनाशञ्च कुरुलोकस्यसर्वदा। ६

व्यास उवाच

इतिसम्प्रार्थितादेवी दुर्गादुर्गार्तिनाशिनी। तमुवाच नृपन्तत्र स्तुत्वा वै संस्थितंपुरः। १०

दुर्गोवाच

राजन्सदानिदासो मे मुक्तिपुर्याम्भविष्यति। रक्षार्थं सर्वलोकानांयावत्तिष्ठतिमेदिनी।११
अथोसुदर्शनस्तत्र समागम्य मुदाऽन्वितः। प्रणम्यपरयाभक्त्या तुष्टाव जगदम्बिकाम्।१२
अहो कृपा ते कथयाम्यहं किं त्रातस्त्वया यत्किल भक्तिहीनः।
भक्तानुकम्पी सकलो जनोऽस्ति विमुक्तभक्तेरवनं व्रतन्ते ॥१३॥
त्वं देवि! सर्वं सृजसि प्रपञ्चं श्रुतं मया पालयसि स्वसृष्टम्।
त्वमत्सि संहारपरे च काले न तेऽत्र चित्रं मम रक्षणं वै ॥१४॥
करोमि किं ते वद देवि! कार्यं क्व वा व्रजामीत्यनुमोदयाऽऽशु।
कार्ये विमूढोऽस्मि तवाज्ञयाऽहं गच्छामि तिष्ठे विरहामि मातः! ॥१५॥

व्यास उवाच

तंतथाभाषमाणन्तुदेवीप्राहदयान्विता। गच्छायोध्यांमहाभागकुरुराज्यं कुलोचितम्।१६
स्मरणीयासदाऽहन्ते पूजनीयाप्रयत्नतः। शं विधास्याम्यहंनित्यं राज्ये ते नृपसत्तम।१७
अष्टम्याञ्चचतुर्दश्यां नवम्याञ्च विशेषतः। मम पूजा प्रकर्तव्या बलिदानविधानतः।१८
अर्चा मदीयानगरे स्थापनीयात्वयाऽनघ। पूजनीया प्रयत्नेन त्रिकालम्भक्तिपूर्वकम्।१९
शरत्काले महापूजा कर्तव्या मम सर्वदा। नवरात्रविधानेन भक्तिभावयुतेन च।२०
चैत्रेऽश्विने तथाऽऽषाढेमाघेकार्योमहोत्सवः। नवरात्रे महाराजपूजा कार्याविशेषतः।२१
कृष्णपक्षेचतुर्दश्यां मम भक्तिसमन्वितैः। कर्तव्या नृपशार्दूलतथाऽष्टम्यां सदाबुधैः।२२

व्यास उवाच

इत्युक्त्वांऽतर्हितादेवी दुर्गादुर्गार्तिनाशिनी। नतासुदर्शनेनाथ स्तुताच बहुविस्तरम्।२३
अन्तर्हितां तु तां दृष्ट्वा राजानः सर्व एव ते। प्रणेमुस्तं समागम्य यथाशक्रंसुरास्तथा।२४
सुबाहुरपितंनत्वास्थितश्चाग्रेमुदाऽन्वितः। ऊचुःसर्वेमहीपालाअयोध्याधिपतिस्तदा।२५
त्वमस्माकंप्रभुःशास्तासेवकास्तेवयंसदा। कुरुराज्यमयोध्यायांपालयास्मान्नृपोत्तम।२६
त्वत्प्रसादान्महाराज दृष्टाविश्वेश्वरीशिवा। आदिशक्तिर्भवानीसा चतुर्वर्गफलप्रदा।२७
धन्यस्त्वं कृतकृत्योऽसि बहुपुण्योधरातले। यस्माच्चत्वत्कृतेदेवी प्रादुर्भूतासनातनी।२८
नजानीमोवयं सर्वे प्रभावं नृपसत्तम। चण्डिकायास्तमोयुक्तामायया मोहिताःसदा।२९
धनदारसुतानाञ्च चिन्तनेऽभिरताः सदा। मग्नामहार्णवे घोरे कामक्रोधझषाकुले।३०
पृच्छामस्त्वां महाभाग! सर्वज्ञोऽसि महामते!। केयं शक्तिः कुतो जाता किं प्रभावा वदस्व तत्।३१
भव त्वं नौश्च संसारे साधवोऽतिदयापराः। तस्मान्नो वद काकुत्स्थ! देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।३२
यत्प्रभावाचसादेवीयत्स्वरूपायदुद्भवा। तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामस्त्वं ब्रूहि नृवरोत्तम!।३३

व्यास उवाच

इतिपृष्टस्तदातैस्तु ध्रुवसन्धिसुतो नृप। विचिन्त्य मनसादेवींतानुवाचमुदाऽन्वितः।३४

सुदर्शन उवाच

किंब्रवीमिमहीपालास्तस्याश्चरितमुत्तमम्। ब्रह्मादयोनजानन्ति सेशाःसुरगणास्तथा।३५
सर्वस्याऽऽद्या महालक्ष्मीवरेण्या शक्तिरुत्तमा। सात्त्विकीयं महीपाला! जगत्पालनतत्परा।३६
सृजते या रजोरूपा सत्त्वरूपा च पालने। संहारेचतमोरूपा त्रिगुणा सा सदा मता।३७
निर्गुणा परमाशक्तिःसर्वकामफलप्रदा। सर्वेषां कारणं साहि ब्रह्मादीनां नृपोत्तमाः।३८
निर्गुणासर्वथाज्ञातुमशक्यायोगिभिर्नृपाः। सगुणासुखसेव्यासाचिन्तनीयासदाबुधैः।३९

राजान ऊचुः

बाल एव वनं प्राप्तस्त्वं तु नूनं भयातुरः। कथं ज्ञातात्वया देवी परमा शक्तिरुत्तमा।४०
उपासिता कथं चैवपूजिताच कथं नृप। या प्रसन्नातु साहाय्यंचकारत्वरयाऽन्विता।४१

सुदर्शन उवाच

बालभावान्मयाप्राप्तंबीजंतस्याःसुसंमतम्। स्मरामिप्रजपन्नित्यंकामबीजाभिधं नृपाः।४२
ऋषिभिः कथ्यमाना सा मया ज्ञाताऽम्बिका शिवा।
स्मरामि तां दिवारात्रं भक्त्या परमया पराम् ॥४३॥

व्यास उवाच

तन्निशम्य वचस्तस्य राजानोभक्तितत्पराः। तांमत्वापरमांशक्तिंनिर्ययुःस्वगृहान्प्रति ।४४
सुबाहुरगमत्काश्यांतमापृच्छ्यसुदर्शनम्। सुदर्शनोऽपिधर्मात्मानिर्जगामसुकोशलान्।४५
मन्त्रिणस्तु नृपं श्रुत्वा हतं शत्रुजितम्मृधे। जितं सुदर्शनं चैव बभूवुः प्रेमसंयुताः।४६
आगच्छन्तं नृपं श्रुत्वा तं साकेतनिवासिनः। उपायनान्युपादायप्रययुःसंमुखे जनाः।४७
तथा प्रकृतयः सर्वे नानोपायनपाणयः। ध्रुवसन्धिसुतंमत्वा मुदिता प्रययुः प्रजाः।४८
स्त्रियोपसंयुतःसोऽथप्राप्यायोध्यांसुदर्शनः। संमान्यसर्वलोकांश्चययौराजानिवेशनम्।४९
वन्दिभिःस्तूयमानस्तुवन्द्यमानश्चमन्त्रिभिः। कन्याभिःकीर्यमाणश्चलाजैःसुमनसैस्तथा।५०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे सुदर्शनेनदेवीमहिमावर्णनंनामचतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

* पञ्चविंशोऽध्यायः *

अयोध्याङ्गत्वासुदर्शनेनशत्रुजिन्मातरम्प्रतिप्रार्थनाकरणम्

व्यास उवाच

गत्वाऽयोध्यां नृपश्रेष्ठोगृहंराज्ञः सुहृद्वृतः। शत्रुजिन्मातरं प्राहप्रणम्यशोकसङ्कुलाम्।१
मातर्न ते मया पुत्रः संग्रामे निहतः किल। न पिता ते युधाजिच्चशपेतेचरणौ तथा।२
दुर्गया तौ हतौ संख्ये नाऽपराधो ममात्र वै। अवश्यं भाविभावेषुप्रतीकारोनविद्यते।३
न शोकोऽत्र त्वया कार्यो मृतपुत्रस्य मानिनि!।
स्वकर्मवशगो जीवो भुङ्क्ते भोगान्सुखासुखान् ॥४॥
दासोऽस्मि तव भो मातर्यथामम मनोरमा। तथात्वमपिधर्मज्ञेनभेदोऽस्तिमनागपि ।५
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। तस्मान्नशोचितव्यंते सुखेदुःखे कदाचन।६
दुःखे दुःखाधिकान्पश्येत्सुखेपश्येत्सुखाधिकम्। आत्मानं शोकहर्षाभ्यां शत्रुभ्यामिव नाऽर्पयेत्।७
दैवाधीनमिदं सर्वं नाऽऽत्माधीनंकदाचन। नशोकेनतदाऽऽत्मानंशोषयेन्मतिमान्नरः।८
यथा दारुमयी योषा नटादीनां प्रचेष्टते। तथा स्वकर्मवशगो देहि सर्वत्र वर्तते।९
अहं वनगतो मातर्नाऽभवं दुःखमानसः। चिन्तयन्स्वकृतं कर्म भोक्तव्यमितिवेद्मि च।१०
मृतो मातामहोऽत्रैव विधुरा जननी मम। भयातुरा गृहीत्वा मां निर्ययौगहनं वनम्।११
लुण्ठिता तस्करैर्मार्गे वस्त्रहीनातथा कृता। पाथेयञ्च हृतं सर्वंबालपुत्रा निराश्रया।१२
माता गृहीत्वामांप्राप्ताभारद्वाजाश्रमंप्रति। विदल्लोऽयंसमायातस्तथाधात्रेयिकाबला।१३
मुनिभिर्मुनिपत्नीभिर्दयायुक्तैः समन्ततः। पोषिताः फलनीवारैर्वयं तत्र स्थितास्त्रयः।१४
दुःखं न मे तदाह्यासीत्सुखं नाऽद्यधनागमे। न वैरंनचमात्सर्यं मम चित्तेतुकर्हिचित्।१५

नीवारभक्षणं श्रेष्ठं राजभोगात्परन्तपे। तदाशी नरकं याति न नीवाराशनः क्वचित्।१६
धर्मस्याचरणं कार्यं पुरुषेषु विजानता। संजित्येन्द्रियवर्गं वै यथा न नरकं व्रजेत्।१७
मानुष्यं दुर्लभं मातःखण्डेऽस्मिन्भारते! शुभे। आहारादिसुखंनूनंभवेत्सर्वासुयोनिषु ।१८
प्राप्य तं मानुषं देहं कर्तव्यंधर्मसाधनम्। स्वर्गमोक्षप्रदं नृणां दुर्लभं चाऽन्ययोनिषु।१९

व्यास उवाच

इत्युक्ता सा तदा तेन लीलावत्यतिलज्जिता। पुत्रशोकंपरित्यज्यतमाहाश्रुविलोचना ।२०
सपराधाऽस्मि पुत्राहं कृता पित्रायुधाजिता। हत्वामातामहं तेऽत्रहृतंराज्यंतुयेनवै।२१
न तं वारयितुं शक्ता तदाऽहं न सुतंमम। यत्कृतंकर्मतेनैवनाऽपराधोऽस्ति मे सुत!।२२
तौ मृतौ स्वकृतेनैव कारणंत्वंतयोर्न च। नाऽहंशोचामितंपुत्रंसदाशोचामितत्कृतम्।२३
पुत्रस्त्वमसि कल्याण! भगिनीमे मनोरमा। न क्रोधोनचशोकोमेत्वयिपुत्रमनागपि।२४
कुरु राज्यं महाभाग प्रजाः पालय सुव्रत। भगवत्याः प्रसादेन प्राप्तमेतदकण्टकम्।२५
तदाकर्ण्य वचोमातुर्नत्वा तां नृपनन्दनः। जगाम भुवनं रम्यं यत्र पूर्वं मनोरमा।२६
न्यवसत्तत्र गत्वातु सर्वानाहूय मन्त्रिणः। दैवज्ञानथ पप्रच्छ मूहूर्तं दिवसं शुभम्।२७
सिंहासनं तथा हैमं कारयित्वा मनोहरम्। सिंहासनेस्थितांदेवींपूजयिष्येसदाप्यहम्।२८
स्थापयित्वाऽऽसने देवीं धर्मार्थकाममोक्षदाम्। राज्यं पश्चात्करिष्यामि यथा रामादिभिः कृतम्।२९
पूजनीयासदा देवी सर्वैर्नागरिकैर्जनैः। माननीयाशिवा शक्तिः सर्वकामार्थसिद्धिदा।३०
इत्युक्ता मन्त्रिणस्ते तु चक्रुर्वै राजशासनम्। प्रासादं कारयामासुः शिल्पिभिः सुमनोरमम्।३१
प्रतिमां कारयित्वाऽथ मुहूर्तेऽथ शुभेदिने। द्विजानाहूयवेदज्ञान्स्थापयामास भूपतिः।३२
हवनंविधिवत्कृत्वापूजयित्वाऽथदेवताम्। प्रासादेमतिमान्देव्याःस्थापयामासभूमिपः।३३
उत्सवस्तत्र संवृत्तो वादित्राणांचनिःस्वनैः। ब्राह्मणानांवेदघोषैर्गानैस्तु विविधैर्नृप।३४

व्यास उवाच

प्रतिष्ठाप्यशिवांदेवींविधिवद्वेदवादिभिः। पूजांनानाविधांराजाचकाराऽतिविधानतः।३५
कृत्वा पूजाविधिं राजा राज्यं प्राप्य स्वपैतृकम्।
विख्यातश्चाऽम्बिका देवी कोसलेषु बभूव ह ॥३६॥
राज्यं प्राप्य नृपःसर्वसामन्तकनृपानथ। वशे चक्रेऽतिधर्मिष्ठान्सद्धर्मविजयी नृपः।३७
यथारामः स्वराज्येऽभूद्दिलीपस्यरघुर्यथा। व्रजानांवैसुखंतद्वन्मर्यादाऽपितथाऽभवत्।३८
धर्मा वर्णाश्रमाणांच चतुष्पादभवत्तथा। नाऽधर्मे रमते चित्तं केषामपि महीतले।३९
ग्रामे ग्रामे च प्रासादांश्चक्रुःसर्वे जनाधिपाः। देव्याःपूजातदाप्रीत्याकोसलेषुप्रवर्तिता ।४०
सुबाहुरपि काश्यां तु दुर्गायाःप्रतिमां शुभाम्। कारयित्वा च प्रासादं स्थापयामास भक्तितः।४१
तत्र तस्या जनाः सर्वेप्रेमभक्तिपरायणाः। पूजां चक्रुर्विधानेनयथा विश्वेश्वरस्य ह।४२
विख्याता सा ब्रभूवाथ दुर्गादेवी धरातले। देशेदेशे महाराज तस्याभक्तिर्व्यवर्धत।४३
सर्वत्र भारते लोके सर्ववर्णेषु सर्वथा। भजनीया भवानी तु सर्वेषामभवत्तदा।४४
शक्तिभक्तिरताः सर्वे मानिनश्चाभवन्नृप। आगमोक्तैरथ स्तोत्रैर्जपध्यानपरायणाः।४५
नवरात्रेषु सर्वेषु चक्रुः सर्वे विधानतः। अर्चनं हवनं यागं देव्या भक्तिपरा जनाः।४६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां तृतीयस्कन्धे देवीस्थापनवर्णनंनामपञ्चविंशोऽध्यायः॥२५॥

* षड्विंशोऽध्यायः *

नवरात्रविधेर्नृपायव्यासेनकथनम्

जनमेजय उवाच

नवरात्रे तु सम्प्राप्ते किं कर्तव्यं द्विजोत्तम। विधानं विधिवद्ब्रूहि शरत्कालेविशेषतः।१
किं फलं खलुकस्तत्र विधिः कार्यो महामते। एतद्विस्तरतो ब्रूहि कृपया द्विजसत्तम।२

व्यास उवाच

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि नवरात्रव्रतं शुभम्। शरत्काले विशेषेण कर्तव्यं विधिपूर्वकम्।३
वसन्ते च प्रकर्तव्यं तथैव प्रेमपूर्वकम्। द्वावृतू यमदंष्ट्राख्यौ नूनं सर्वजनेषु च।४
शरद्वसन्तनामानौ दुर्गमौप्राणिनामिह। तस्माद्यत्नादिदं कार्यं सर्वत्र शुभमिच्छता।५
द्वावेव सुमहाघोरावृतू रोगकरौनृणाम्। वसन्तशरदावेवजननाशकरावुभौ ।६
तस्मात्तत्र प्रकर्तव्यं चण्डिकापूजनं बुधैः। चैत्रेऽश्विनेशुभेमासेभक्तिपूर्वं नराधिप!।७
अमावास्यांचसम्प्राप्यसम्भारंकल्पयेच्छुभम्। हविष्यंचाशनंकार्यमेकभुक्तंतुतद्दिने ।८
मण्डपस्तु प्रकर्तव्यः समेदेशे शुभे स्थले। हस्तषोडशमानेन स्तम्भध्वजसमन्वितः।९
गौरमृद्गोमयाभ्यां च लेपनं कारयेत्ततः। तन्मध्ये वेदिकाशुभ्रा कर्तव्याचसमास्थिरा।१०
चतुर्हस्ताचहस्तोच्छ्रापीठार्थंस्थानमुत्तमम्। तोरणानिविचित्राणिवितानंचप्रकल्पयेत्।११
रात्रौद्विजानथामन्त्र्य दैवीतत्त्वविशारदान्। आचारनिरतान्दान्तान्वेदवेदाङ्गपारगान्।१२
प्रतिपद्दिवसे कार्यं प्रातःस्नानं विधानतः। नद्यां नदे तडागेवा वाप्यां कूपे गृहेऽथवा।१३
प्रातर्नित्यं पुरः कृत्वा द्विजानां वरणं ततः। अर्घ्यपाद्यादिकं सर्वं कर्तव्यंमधुपूर्वकम्।१४
वस्त्रालंकरणादीनि देयानिचस्वशक्तितः। वित्तशाठ्यं नकर्तव्यंविभवेसतिकर्हिचित्।१५
विप्रैः सन्तोषितैःकार्यंसम्पूर्णंसर्वथाभवेत्। नवपञ्चत्रयश्चैकोदेव्याःपाठेद्विजाःस्मृताः।१६
वरयेद् ब्राह्मणं शान्तं पारायणकृते तदा। स्वस्तिवाचनकं कार्यं वेदमन्त्रविधानतः।१७
वेद्यां सिंहासनं स्थाप्य क्षौमवस्त्रसमन्वितम्। तत्र स्थाप्याऽम्बिका देवी चतुर्हस्ताऽऽयुधान्विता।१८
रत्नभूषणसंयुक्ता मुक्ताहारविराजिता। दिव्याम्बरधरा सौम्या सर्वलक्षणसंयुता।१९
शङ्खचक्रगदापद्मधरा सिंहे स्थिताशिवा। अष्टादशभुजावाऽपि प्रतिष्ठाप्या सनातनी।२०
अर्चाभावे तथा यन्त्रं नवार्णमन्त्रसंयुतम्। स्थापयेत्पीठपूजार्थंकलशं तत्र पार्श्वतः।२१
पञ्चपल्लवसंयुक्तं वेदमन्त्रैः सुसंस्कृतम्। सुतीर्थजलसम्पूर्णं हेमरत्नैः समन्वितम्।२२
पार्श्वेपूजार्थसम्भारान्परिकल्प्य समन्ततः। गीतावादित्रनिर्घोषान्कारयेन्मङ्गलाय वै।२३
तिथौ हस्तान्वितायां चनन्दायांपूजनंवरम्। प्रथमेदिवसेराजन्विधिवत्कामदंनृणाम् ।२४
नियमं प्रथमं कृत्वा पश्चात्पूजां समाचरेत्। उपवासेननक्तेन चैकभक्तेन वा पुनः।२५
करिष्यामि व्रतं मातर्नवरात्रमनुत्तमम्। साहाय्यंकुरु मेदेवि! जगदम्बममाखिलम्।२६
यथाशक्तिप्रकर्तव्यो नियमोव्रतहेतवे। पश्चात्पूजा प्रकर्तव्या विधिवन्मन्त्रपूर्वकम्।२७
चन्दनागुरुकर्पूरैः कुसुमैश्चसुगन्धिभिः। मन्दारकरजाशोकचम्पकैः करवीरकैः।२८
मालतीब्रह्मकापुष्पैस्तथा बिल्वदलैः शुभैः। पूजयेज्जगतांधात्रीं धूपैर्दीपैर्विधानतः।२९
फलैर्नानाविधैरर्घ्यं प्रदातव्यं च तत्र वै। नारिकेलैर्मातुलिङ्गैर्दाडिमीकदलीफलैः ।३०

नारङ्गैः पनसैश्चैवतथा पूर्णफलैः शुभैः। अन्नदानं प्रकर्त्तव्यं भक्तिपूर्वं नराधिप।३१
मांसाशनं ये कुर्वन्ति तैः कार्यं पशुहिंसनम्। महिषाजवराहाणां बलिदानंविशिष्यते।३२
देव्यग्रे निहतायान्ति पशवः स्वर्गमव्ययम्। न हिंसा पशुजा तत्रनिघ्नतांतत्कृतेऽनघ।३३
अहिंसा याज्ञिकी प्रोक्ता सर्वशास्त्रविनिर्णये। देवतार्थे विसृष्टानांपशूनां स्वर्गतिर्ध्रुवा।३४
होमार्थंचैवकर्तव्यंकुण्डंचैवत्रिकोणकम्। स्थण्डिलंवाप्रकर्तव्यंत्रिकोणंमानतःशुभम्।३५
त्रिकालं पूजनंनित्यं नानाद्रव्यैर्मनोहरैः। गीतवादित्रनृत्यैश्च कर्तव्यश्च महोत्सवः।३६
नित्यं भूमौ च शयनं कुमारीणां च पूजनम्। वस्त्रालङ्करणैर्दिव्यैर्भोजनैश्च सुधामयैः।३७
एकैकां पूजयेन्नित्यमेकबृद्ध्या तथा पुनः। द्विगुणंत्रिगुणंवाऽपिप्रत्येकं नवकं च वा।३८
विभवस्यानुसारेण कर्तव्यं पूजनं किल। वित्तशाठ्यं न कर्तव्यंराजञ्छक्तिमखेसदा।३९
एकवर्षा न कर्तव्या कन्यापूजाविधौनृप। परमज्ञा तु भोगानांगन्धादीनांचबालिका।४०
कुमारिका तु सा प्रोक्ताद्विवर्षायाभवेदिह। त्रिमूर्तिश्चत्रिवर्षाचकल्याणीचतुरब्दिका।४१
रोहिणीपञ्चवर्षाचषड्वर्षाकालिकास्मृता। चण्डिकासप्तवर्षास्यादष्टवर्षाचशाम्भवी।४२
नववर्षा भवेद् दुर्गा सुभद्रा दशवार्षिकी। अतऊर्ध्वं न कर्तव्या सर्वकार्यविगर्हिता।४३
एभिश्चनामभिः पूजाकर्तव्या विधिसंयुता। तासांफलानिवक्ष्यामिनवानांपूजनेसदा।४४
कुमारीपूजिताकुर्याद्दुःखदारिद्र्यनाशनम्। शत्रुक्षयं धनायुष्यं बलवृद्धिंकरोति वै।४५
त्रिमूर्तिपूजनादायुस्त्रिवर्गस्यफलं भवेत्। धनधान्यागमश्चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धयः।४६

विद्यार्थी विजयार्थी च राज्यार्थी यश्च पार्थिवः।
सुखार्थी पूजयेन्नित्यं कल्याणीं सर्वकामदाम्॥४७॥

कालिकां शत्रुनाशार्थं पूजयेद्भक्तिपूर्वकम्। ऐश्वर्यधनकामश्च चण्डिकां परिपूजयेत्।४८
पूजयेच्छाम्भवीं नित्यं नृपसम्मोहनाय च। दुःखदारिद्र्यनाशायसंग्रामेविजयाय च।४९
क्रूरशत्रुविनाशार्थं तथोग्रकर्मसाधने। दुर्गांचपूजयेद्भक्त्या परलोकसुखाय च।५०
वाञ्छितार्थस्य सिद्ध्यर्थं सुभद्रांपूजयेत्सदा। रोहिणीं रोगनाशायपूजयेद्विधिवन्नरः।५१
श्रीरस्त्विति च मन्त्रेण पूजयेद्भक्तितत्परः। श्रीयुक्तमन्त्रैरथवा बीजमन्त्रैरथापिवा।५२
कुमारस्यचतत्त्वानि यासृजत्यपिलीलया। कादीनपिचदेवांस्तान्कुमारींपूजयाम्यहम्।५३
सत्त्वादिभिस्त्रिमूर्तिर्या तैर्हि नानास्वरूपिणी। त्रिकालव्यापिनी शक्तिस्त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम्।५४
कल्याणकारिणी नित्यं भक्तानां पूजिताऽनिशम्। पूजयामि च तां भक्त्या कल्याणीं सर्वकामदाम्।५५
रोहयन्तीचबीजानि प्राग्जन्मसञ्चितानिवै। यादेवीसर्वभूतानांरोहिणीं पूजयाम्यहम्।५६
कालीकालयतेसर्वं ब्रह्माण्डं सचराचरम्। कल्पान्तसमयेयातांकालिकांपूजयाम्यहम्।५७
चण्डिकां चण्डरूपाञ्च चण्डमुण्डविनाशिनीम्। तां चण्डपापहरिणीं चण्डिकाम्पूजयाम्यहम्।५८
अकारणात्समुत्पत्तिर्यन्मयैः परिकीर्तिता। यस्यास्तांसुखदां देवीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्।५९
दुर्गात्त्रायतिभक्तं यासदादुर्गार्तिनाशिनी। दुर्ज्ञेया सर्वदेवानां तां दुर्गां पूजयाम्यहम्।६०
सुभद्राणिच भक्तानां कुरुते पूजितासदा। अभद्रनाशिनीं देवीं सुभद्राम्पूजयाम्यहम्।६१
एभिर्मन्त्रैः पूजनीयाः कन्यकाः सर्वदा बुधैः। वस्त्रालङ्करणैर्माल्यैर्गन्धैरुच्चावचैरपि।६२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे कुमारीपूजावर्णनंनामषड्विंशोऽध्यायः॥२६॥

* सप्तविंशोऽध्यायः *

पूजाविधौवर्जितकन्यानाम्वर्णनम्

व्यास उवाच

हीनाङ्गीं वर्जयेत्कन्यां कुष्ठयुक्तां व्रणाङ्किताम्। गन्धस्फुरितहीनाङ्गीं विशालकुलसम्भवाम्। १
जात्यन्धां केकरां काणीं कुरूपां बहुरोमशाम्। सन्त्यजेद्रोगिणीं कन्यां रक्तपुष्पादिनाऽङ्किताम्। २
क्षामांगर्भसमुद्भूतांगोलकांकन्यकोद्भवाम्। वर्जनीयाःसदाचैताःसर्वपूजादिकर्मसु । ३
अरोगिणींसुरूपांगीं सुन्दरीं व्रणवर्जिताम्। एकवंशसमुद्भूतांकन्यांसम्यक्प्रपूजयेत् । ४
ब्राह्मणीसर्वकार्येषुजयार्थे नृपवंशजा। लाभार्थे वैश्यवंशोत्था मता वा शूद्रवंशजा। ५
ब्राह्मणैर्ब्रह्मजाः पूज्या राजन्यैर्ब्रह्मवंशजा। वैश्यैस्त्रिवर्गजाः पूज्याश्चतस्रः पादसम्भवैः। ६
कारुभिश्चैव वंशोत्था यथायोग्यं प्रपूजयेत्। नवरात्रविधानेन भक्तिपूर्वं सदैव हि। ७
अशक्तो नियतं पूजां कर्तुं चेन्नवरात्रके। अष्टम्याञ्च विशेषेण कर्तव्यं पूजनं सदा। ८
पुराऽष्टम्यां भद्रकाली दक्षयज्ञविनाशिनी। प्रादुर्भूतामहाघोरा योगिनीकोटिभिःसह। ९
अतोऽष्टम्यांविशेषेण कर्तव्यं पूजनं सदा। नानाविधोपहारैश्च गन्धमाल्यानुलेपनैः। १०
पायसैरामिषैर्होमैर्ब्राह्मणानाञ्च भोजनैः। फलपुष्पोपहारैश्च तोषयेज्जगदम्बिकाम्। ११
उपवासे ह्यशक्तानां नवरात्रव्रते पुनः। उपोषणत्रयं प्रोक्तं यथोक्तं फलदं नृप! १२
सप्तम्याञ्च तथाऽष्टम्यां नवम्यांभक्तिभावतः। त्रिरात्रकरणात्सर्वंफलम्भवतिपूजनात् । १३
पूजाभिश्चैव होमैश्च कुमारीपूजनैस्तथा। सम्पूर्णं तद्व्रतं प्रोक्तं विप्राणाञ्चैव भोजनैः। १४
व्रतानियानि चान्यानि दानानिविविधानि च। नवरात्रव्रतस्यास्यनैवतुल्यानिभूतले । १५
धनधान्यप्रदंनित्यं सुखसन्तानवृद्धिदम्। आयुरारोग्यदञ्चैव स्वर्गदं मोक्षदं तथा। १६
विद्यार्थीवाधनार्थीवापुत्रार्थीवाभवेन्नरः। तेनेदं विधिवत्कार्यं व्रतं सौभाग्यदं शिवम्। १७
विद्यार्थी सर्वविद्याम्वै प्राप्नोति व्रतसाधनात्। राज्यभ्रष्टो नृपो राज्यं समवाप्नोति सर्वथा। १८
पूर्वजन्मनि यैर्नूनंन कृतं व्रतमुत्तमम्। ते व्याधिनो दरिद्राश्च भवन्ति पुत्रवर्जिताः। १९
वन्ध्या च या भवेन्नारी विधवा धनवर्जिता। अनुमातत्रकर्त्तव्या नेयं कृतवती व्रतम्। २०
नवरात्रव्रतं प्रोक्तं न कृतं येन भूतले। स कथं विभवं प्राप्य मोदते च तथा दिवि। २१
रक्तचन्दनसंमिश्रैः कोमलैर्बिल्वपत्रकैः। भवानी पूजिता येन स भवेन्नृपतिः क्षितौ। २२
नाऽऽराधिता येन शिवा सनातनी दुःखार्तिहा सिद्धिकरी जगद्धरा।
दुःखावृतः शत्रुयुतश्च भूतले नूनं दरिद्रो भवतीह मानवः। २३
यां विष्णुरिन्द्रो हरपद्मजौ तथा वह्निः कुबेरो वरुणो दिवाकरः।
ध्यायन्ति सर्वार्थसमाप्तिनन्दितास्तां किं मनुष्या न भजन्ति चण्डिकाम्। २४
स्वाहा स्वधानाम मनुप्रभावैस्तृप्यन्ति देवाः पितरस्तथैव ।
यज्ञेषु सर्वेषु मुदा हरन्ति यन्नामयुग्मश्रुतिभिर्मुनीन्द्राः ॥२५॥
यस्येच्छया सृजति विश्वमिदं प्रजेशो नानावतारकलनं कुरुते हरिश्च।
नूनं करोति जगतः किल भस्म शम्भुस्तां शर्मदां न भजते नु कथं मनुष्यः। २६
नैकोऽस्ति सर्वभवनेषु तथा विहीनो देवो नरोऽथ विहगःकिल पन्नगो वा।
गन्धर्वराक्षसपिशाचनगेषु नूनंयः स्पन्दितुं भवति शक्तियुतो यथेच्छम्। २७

तांनसेवेतकश्चण्डींसर्वकामार्थदांशिवाम् । व्रतंतस्यानकःकुर्याद्वाञ्छन्नर्थचतुष्टयम् ।२८
महापातकसंयुक्तो नवरात्रव्रतं चरेत् । मुच्यते सर्वपापेभ्यो नात्र कार्या विचारणा ।२६
पुरा कश्चिद्वणिक्क्षीणोधनहीनःसुदुःखितः । कुटुम्बीचाभवत्कश्चित्कौशलेनृपसत्तम ।३०
अपत्यानि बहून्यस्याऽभवन्क्षुत्पीडितानि च । भक्ष्यं किंचित्तु सायाह्ने प्रापुस्तस्य च बालकाः ।३१
भुंक्ते स्म कार्यकर्ताऽसौ परस्याथ बुभुक्षितः । कुटुम्बभरणं तत्र चकारातिनिराकुलः ।३२
सदा धर्मरतः शान्तः सदाचारश्च सत्यवाक् । अक्रोधनश्चधृतिमान्निर्मदश्चानसूयकः ।३३
सम्पूज्यदेवतानित्यं पितॄनप्यतिथींस्तथा । भुञ्जानेपोष्यवर्गेऽथ कृतवान्भोजनंवणिक् ।३४
एवंगच्छतिकालेवैसुशीलोनामतोगुणैः । दारिद्र्यार्तोद्विजंशान्तं पप्रच्छातिबुभुक्षितः ।३५

सुशील उवाच

भो भूदेव कृपां कृत्वा वदस्वाऽद्य महामते । कथं दारिद्र्यनाशःस्यादितिमेनिश्चयेनवै ।३६
धनेषणामेनैवास्तिधनीस्यामितिमानद । कुटुम्बभरणार्थंवै पृच्छामि त्वां द्विजोत्तम ।३७
पुत्रीसुतस्तु मे बालो भक्षार्थी रोदतेभृशम् । तावन्मात्रंगृहेनान्नंमुष्टिमेकां ददाम्यहम् ।३८
विसर्जितो यतो गेहाद्गतो बालोरुदन्मया । अतो मे दह्यतेऽत्यर्थं किंकरोमिधनंविना ।३६
विवाहोऽस्ति सुताया मे नास्ति वित्तं करोमि किम् ।
दशवर्षाधिकायास्तु दानकालोऽपि यात्यलम् ॥४०॥
तेन शोचामि विप्रेन्द्र सर्वज्ञोऽसिदयानिधे । तपोदानम्व्रतंकिञ्चिद्ब्रूहिमन्त्रंजपं तथा ।४१
येनाहंपोष्यवर्गस्यकरोमि द्विजपोषणम् । तावन्मे स्याद्धनप्राप्तिर्नाधिकं प्रार्थये किल ।४२
त्वत्प्रसादात्कुटुम्बं मे सुखितं प्रभवेदिह । तत्कुरुष्व महाभाग ज्ञानेन परिचिन्त्यच ।४३

व्यास उवाच

इति पृष्टस्तथातेन ब्राह्मणः संशितव्रतः । उवाच परमप्रीतस्तं वैश्यं नृपसत्तम! ।४४
वैश्यवर्य ! कुरुष्वाऽद्य नवरात्रव्रतंशुभम् । पूजनं भगवत्याश्च हवनं भोजनं तथा ।४५
वेदपारायणंशक्तिजपहोमादिकं तथा । कुरुष्वाद्य यथाशक्ति तव कार्यं भविष्यति ।४६
एतस्मादपरं किंचिद्व्रतं नास्ति धरातले । नवरात्राभिधंवैश्य पावनं सुखदन्तथा ।४७
ज्ञानदं मोक्षदञ्चैव सुखसन्तानवर्धनम् । शत्रुनाशकरं कामं नवरात्रव्रतं सदा ।४८
राज्यभ्रष्टेन रामेण सीताविरहितेन च । किष्किन्धायां व्रतञ्चैतत्कृतं दुःखातुरेण वै ।४६
प्रतप्तेनाऽपि रामेण सीताविरहवह्निना । विधिवत्पूजिता देवी नवरात्रव्रतेन वै ।५०
तेन प्राप्ताऽथ वैदेही कृत्वा सेतुंमहार्णवे । हत्वा मन्दोदरीनाथं कुम्भकर्णं महाबलम् ।५१
मेघनादंसुतंहत्वाकृत्वाभूपंविभीषणम् । पश्चादयोध्यामागत्य प्राप्तं राज्यमकण्टकम् ।५२
नवरात्रव्रतस्यास्य प्रभावेणविशाम्वर । सुखं भूमितले प्राप्तं रामेणाऽमिततेजसा ।५३

व्यास उवाच

इति विप्रवचः श्रुत्वासवैश्यस्तंद्विजंगुरुम् । कृत्वाजग्राहसन्मन्त्रंमायाबीजाभिधं नृप ।५४
जजाप परयाभक्त्या नवरात्रमतन्द्रितः । नानाविधोपहारैश्च पूजयामास सादरम् ।५५
नवसंवत्सरं चैव मायाबीजपरायणः । नवमे वत्सरान्ते तु महाष्टम्याम्महेश्वरी ।५६
अर्धरात्रे तु सञ्जाते प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ । नानावरप्रदानैश्च कृतकृत्यं चकार तम् ।५७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे देवीपूजामहत्त्ववर्णनंनामसप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

* अष्टाविंशोऽध्यायः *

जनमेजयस्यरामचरित्रविषयेप्रश्नेकृतेव्यासेनतच्चरित्रवर्णनम्

जनमेजय उवाच

कथं रामेण तच्चीर्णं व्रतं देव्याः सुखप्रदम्। राज्यभ्रष्टःकथंसोऽथ कथंसीताहृतापुनः।१

व्यास उवाच

राजादशरथः श्रीमानयोध्याधिपतिः पुरा। सूर्यवंशवरश्चासीद्देवब्राह्मणपूजकः।२
चत्वारोजज्ञिरेतस्य पुत्रालोकेषु विश्रुताः। रामलक्ष्मणशत्रुघ्ना भरतश्चेति नामतः।३
राज्ञः प्रियङ्कराः सर्वे सदृशा गुणरूपतः। कौसल्यायाःसुतोरामःकैकेय्याभरतःस्मृतः।४
सुमित्रातनयौ जातौ यमलौ द्वौ मनोहरौ। ते जातावैकिशोराश्चधनुर्बाणधराःकिल।५
सूनवःकृतसंस्कारा भूपतेः सुखवर्धकाः। कौशिकेन तदाऽऽगत्य प्रार्थितो रघुनन्दनः।६
राघवंमखरक्षार्थंसूनुंषोडशवार्षिकम्। तस्मैसोऽयं ददौ रामं कौशिकायसलक्ष्मणम्।७
तौ समेत्यमुनिंमार्गे जग्मतुश्चारुदर्शनौ। ताटकानिहता मार्गे राक्षसी घोरदर्शना।८
रामेणैकेन बाणेन मुनीनां दुःखदासदा। यज्ञरक्षा कृता तत्र सुबाहुर्निहतः शठः।९
मारीचोऽथ मृतप्रायो निक्षिप्तोबाणवेगतः। एवं कृत्वा महत्कर्म यज्ञस्य परिरक्षणम्।१०
गतास्ते मिथिलां सर्वे रामलक्ष्मणकौशिकाः। अहल्या मोचिता शापान्निष्पापा सा कृताऽबला।११
विदेहनगरे तौ तु जग्मतुर्मुनिना सह। बभञ्ज शिवचापञ्च जनकेन पणीकृतम्।१२
उपमेये ततःसीतां जानकीञ्चरमांशजाम्। लक्ष्मणायददौ राजापुत्रीमेकांतथोर्मिलाम्।१३
कुशध्वजसुते कन्ये प्रापतुर्भ्रातरावुभौ। तथा भरतशत्रुघ्नौ सुशीलौ शुभलक्षणौ।१४
एवंदारक्रियास्तेषां भ्रातृणांचाभवन्नृप। चतुर्णांमिथिलायान्तुयथाविधिविधानतः।१५
राज्ययोगं सुतं दृष्ट्वा राजादशरथस्तदा। राघवाय धुरं दातुं मनश्चक्रे निजाय वै।१६
सम्भारं विहितं दृष्ट्वा कैकेयी पूर्वकल्पितौ। वरौ सम्प्रार्थयामास भर्तारं वशवर्तिनम्।१७
राज्यं सुताय चैकेन भरताय महात्मने। रामाय वनवासञ्च चतुर्दश समास्तथा।१८
रामस्तु वचनात्तस्याः सीतालक्ष्मणसंयुतः। जगाम दण्डकारण्यंराक्षसैरुपसेवितम्।१९
राजा दशरथः पुत्रविरहेण प्रपीडितः। जहौ प्राणानमेयात्मा पूर्वशापमनुस्मरन्।२०
भरतः पितरं दृष्ट्वा मृतं मातृकृतेन वै। राज्यमृद्धं न जग्राह भ्रातुः प्रियचिकीर्षया।२१
पञ्चवट्यां वसन्रामो रावणावरजांवने। शूर्पणखां विरूपाम्वै चकारातिस्मरातुराम्।२२
खरादयस्तु तां दृष्ट्वा छिन्ननासां निशाचराः। चक्रुःसंग्राममतुलं रामेणाऽमिततेजसा।२३
सजघानखरादींश्चदैत्यानतिबलान्वितान्। मुनीनांहितमन्विच्छन् रामःसत्यपराक्रमः।२४
गत्वा शूर्पणखा लङ्कां खरदूषणघातनम्। दूषिता कथयामास रावणायचराघवात्।२५
सोऽपिश्रुत्वा विनाशंतं जातःक्रोधवशःखलः। जगामरथमारुह्यमारीचस्याश्रमंतदा।२६
कृत्वा हेममृगंनेतुं प्रेषयामास रावणः। सीताप्रलोभनार्थाय मायाविनमसम्भवम्।२७
सोऽथहेममृगोभूत्वासीतादृष्टिपथं गतः। मायावी चातिचित्राङ्गश्चरन्प्रबलमन्तिके।२८
तं दृष्ट्वा जानकी प्राह राघवंदैवनोदिता। चर्मानयस्व कान्तेति स्वाधीनपतिकायथा।२९
अविचार्याथ रामोऽपितत्र संस्थाप्यलक्ष्मणम्। सशरंधनुरादाय ययौ मृगपदानुगः।३०
सारंगोऽपिहरिंदृष्ट्वामायाकोटिविशारदः। दृश्यादृश्योबभूवाथ जगाम च वनान्तरम्।३१

मत्वा हस्तगतं रामःक्रोधाकृष्टधनुः पुनः। जघानचातितीक्ष्णेन शरेण कृत्रिमंमृगम्।३२
सहतोऽतिबलात्तेनचुक्रोशभृशदुःखितः। हालक्ष्मणहतोऽस्मीतिमायावीनश्वरः खलः।३३
स शब्दस्तुमुलस्तावज्ञानक्यासंश्रुतस्तदा। राघवस्येतिसामत्वादीनादेवरमब्रवीत्।३४
गच्छलक्ष्मणतूर्णंत्वंहतोऽसौरघुनंदनः। त्वामाह्वयतिसौमित्रेसाहाय्यं कुरु सत्वरम्।३५
तत्राऽऽहलक्ष्मणःसीतामंब रामवधादपि। नाहंगच्छेऽद्यमुक्त्वात्वामसहायामिहाश्रमे।३६
आज्ञामेराघवस्यात्र तिष्ठेतिजनकात्मजे। तदतिक्रमभीतोऽहं नत्यजामि तवांतिकम्।३७
दूतं वै राघवं दृष्ट्वावनेमायाविनाकिल। त्यक्त्वात्वांनाधिगच्छामिपदमेकं शुचिस्मते।३८
कुरुधैर्यंनमन्येऽद्यरामंहंतुं क्षमंक्षितौ। नाहं त्यक्त्वा गमिष्यामिविलंघ्यरामभाषितम्।३९

व्यास उवाच

रुदती सुदती प्राहतंतदा विधिनोदिता। अक्रूरा वचनं क्रूरं लक्ष्मणं शुभलक्षणम्।४०
अहं जानामि सौमित्रे सानुरागं च मां प्रति। प्रेरितं भरतेनैव मदर्थमिह संगतम्।४१
नाहं तथाविधानारीस्वैरिणीकुहकाधमा। मृते रामे पतिंत्वांनकर्तुमिच्छामिकामतः।४२
नागमिष्यतिचेद्रामोजीवितंसंत्यजाम्यहम्। विनातेननजीवामिविधुरादुःखिताभृशम्।४३
गच्छ वा तिष्ठसौमित्रेनजानेऽहंतवेप्सितम्। क्व गतं तेऽत्रसौहार्दंज्येष्ठे धर्मरतेकिल।४४
तच्छ्रुत्वा वचनंतस्यालक्ष्मणोदीनमानसः। प्रोवाचरुद्धकंठस्तुतांतदाजनकात्मजाम्।४५
किमात्थक्षितिजेवाक्यंमयिक्रूरतरंकिल। किं वदस्यत्यनिष्टंतेभाविजानेधिया ह्यहम्।४६
इत्युक्त्वानिर्ययौवीरस्तांत्यक्त्वाप्ररुदन्भृशम्। अग्रजस्यययौपश्यञ्छोकार्तःपृथिवीपते।४७
गतेऽथ लक्ष्मणे तत्र रावणः कपटाकृतिः। भिक्षुवेषं ततः कृत्वा प्रविवेश तदाश्रमे।४८
जानकीतंयतिंमत्वादत्त्वाऽर्घंवन्यमादरात्। भैक्ष्यं समर्पयामास रावणाय दुरात्मने।४९
तां पप्रच्छसदुष्टात्मानम्रपूर्वंमृदुस्वरम्। काऽसिपद्मपलाशाक्षि वने चैकाकिनीप्रिये।५०

पिता कस्तेऽथ वामोरु ! भ्राता कः कः पतिस्तवः ।
मूढेवैकाकिनी चाऽत्र स्थिताऽसि वरवर्णिनि! ॥५१॥

निर्जनेविपिनेकिंत्वं सौधार्हा त्वमसि प्रिये। उटजेमुनिपत्नीवद्देवकन्यासमप्रभा।५२

व्यास उवाच

इति तद्वचनं श्रुत्वाप्रत्युवाचविदेहजा। दिव्यं दिष्ट्या यतिंज्ञात्वामंदोदर्याःपतिं तदा।५३
राजा दशरथःश्रीमांश्चत्वारस्तस्यवैसुताः। तेषांज्येष्ठःपतिर्मेऽस्तिरामनामेति विश्रुतः।५४
विवासितोऽथकैकेय्या कृते भूपतिनावरे। चतुर्दश समा रामो वसतेऽत्र सलक्ष्मणः।५५
जनकस्य सुताचाहंसीतानाम्नीतिविश्रुता। भंक्त्वा शैवंधनुःकामंरामेणाहंविवाहिता।५६
रामबाहुबलेनात्र वसामो निर्भया वने। कांचनं मृगमालोक्य हंतुं मेनिर्गतः पतिः।५७
लक्ष्मणोऽपि पुनःश्रुत्वारवंभ्रातुर्गतोऽधुना। तयोर्बाहुबलादत्र निर्भयाऽहं वसामिवै।५८
मयेदं कथितं सर्ववृत्तांतं वनवासकम्। तेऽत्रागत्यार्हणां तेवै करिष्यंति यथाविधि।५९

यतिर्विष्णुस्वरूपोऽसि तस्मात्त्वं पूजितो मया ।
आश्रमो विपिने घोरे कृतोऽस्ति रक्षसां कुले ॥६०॥

तस्मात्त्वांपरिपृच्छामिसत्यंब्रूहि ममाग्रतः। कोऽसित्रिदंडीरूपेणविपिनेत्वंसमागतः।६१

रावण उवाच

लंकेशोऽहं मरालाक्षिश्रीमान्मंदोदरीपतिः। त्वत्कृते तु कृतं रूपं मयेत्थं शोभनाकृते।६२

आगतोऽहं वरारोहे भगिन्याप्रेरितोऽत्रवै। जनस्थानेहतौश्रुत्वाभ्रातरौ खरदूषणौ।६३
अङ्गीकुरु नृपं मांत्वं त्यक्त्वातंमानुषंपतिम्। हृतराज्यंगतश्रीकं निर्बलं वनवासिनम्।६४
पट्टराज्ञीभवत्वंमेमंदोदर्युपरिस्फुटम् । दासोऽस्मितव तन्वंगि स्वामिनीभवभामिनी!।६५
जेताऽहं लोकपालानांपतामित्वपादयोः। करंगृहाणमेऽद्य त्वं सनाथं कुरु जानकि!।६६
पिता तेयाचितःपूर्वंमयावैत्वत्कृतेऽबले। जनको मामुवाचेत्थं पणबंधो मया कृतः।६७
रुद्रचापभयान्नाहं संप्राप्तस्तु स्वयंवरे। मनो मे संस्थितं तावन्निमग्नं विरहातुरम्।६८
वनेऽत्र संस्थितां श्रुत्वा पूर्वानुरागमोहितः। आगतोऽस्म्यसितापांगि सफलं कुरु मे श्रमम्।६६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे रामचरित्रवर्णनंनामाऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥२८॥

* ऊनत्रिंशोऽध्यायः *

रावणकृतसीताहरणवर्णनम्

व्यास उवाच

तदाकर्ण्य वचोदुष्टंजानकीभयविह्वला। वेपमाना स्थिरं कृत्वा मनोवाचमुवाच ह।१
पौलस्त्यकिमसद्वाक्यंत्वमात्थस्मरमोहितः। नाहंवैस्वैरिणीकिंतुजनकस्यकुलोद्भवा।२
गच्छलंकांदशास्य त्वंरामस्त्वांवैहनिष्यति। मत्कृतेमरणंतत्रभविष्यति न संशयः।३
इत्युक्त्वापर्णशालायां गता सावह्निसन्निधौ। गच्छगच्छेतिवदतीरावणंलोकरावणम्।४
सोऽथकृत्वानिजंरूपंजगामोटजमंतिकम्। बलाज्जग्राहतांबालांरुदतीं भयविह्वलाम्।५
रामरामेतिक्रंदंती लक्ष्मणेति मुहुर्मुहुः। गृहीत्वा निर्गतः पापो रथमारोप्य सत्वरः।६
गच्छन्नरुणपुत्रेण मार्गे रुद्धो जटायुषा। संग्रामोऽभून्महारौद्रस्तयोस्तत्र वनांतरे।७
हत्वातं तां गृहीत्वाच गतोऽसौराक्षसाधिपः। लंकायांक्रंदती तातकुररीवदुरात्मना।८
अशोकवनिकायांसास्थापिताराक्षसीयुता। स्ववृत्तान्नैवचलितासामदानादिभिःकिल।६
रामोऽपि तं मृगंहत्वा जगामाऽऽदाय निर्वृतः। आयांतं लक्ष्मणं वीक्ष्य किं कृतं तेऽनुजासमम्।१०
एकाकिनींप्रियांहित्वाकिमर्थंत्वमिहागतः। श्रुत्वास्वनंतुपापस्यराघवस्त्वब्रवीदिदम्।११
सौमित्रिस्त्वब्रवीद्वाक्यं सीतावाग्बाणताडितः। प्रभोऽत्राऽहं समायातः कालयोगान्न संशयः।१२
तदा तौपर्णशालायांगत्वावीक्ष्यातिदुःखितौ। जानक्यन्वेषणेयत्नमुभौकर्तुंसमुद्यतौ ।१३
मार्गमाणौतुसंप्राप्तौ यत्रास्ते पतितः खगः। जटायुःप्राणशेषस्तुपतितः पृथिवीतले।१४
तेनोक्तंरावणेनाद्यहृताऽसौजनकात्मजा। मया निरुद्धःपापात्मापातितोऽहंमृधेपुनः।१५
इत्युक्त्वाऽसौगतप्राणःसंस्कृतोराघवेण वै। कृत्वौर्ध्वदेहिकंरामलक्ष्मणौनिर्गतौततः ।१६
कबंधंघातयित्वाऽसौशापाच्चामोचयत्प्रभुः। वचनात्तस्यहरिणासख्यंचक्रेऽथराघवः ।१७
हत्वाचबालिनंवीरंकिष्किंधाराज्यमुत्तमम्। सुग्रीवायददौरामःकृतसख्याय कार्यतः।१८
तत्रैववार्षिकान्मासांस्तस्थौलक्ष्मणसंयुतः। चिंतयञ्जानकींचित्तेदशाननहृतां प्रियाम्।१६
लक्ष्मणं प्राह रामस्तु सीताविरहपीडितः। सौमित्रे कैकयसुता जातापूर्णमनोरथा।२०
नप्राप्ता जानकी नूनंनाहंजीवामितांविना। नागमिष्याम्ययोध्यायामृतेजनकनंदिनीम्।२१
गतंराज्यंवनेवासोमृतस्तातो हृता प्रिया। पीडयन्मांसदुष्टात्मादैवोऽग्रेकिंकरिष्यति।२२
दुर्ज्ञेयंभवितव्यंहिप्राणिनांभरतानुज ।आवयोःका गतिस्तात भविष्यति सुदुःखदा।२३

प्राप्यजन्ममनोर्वंशे राजपुत्रावुभौकिल। वनेऽतिदुःखभोक्तारौ जातौ पूर्वकृतेन च।२४
त्यक्त्वात्वमपिभोगांस्तुमयासहविनिर्गतः। दैवयोगाच्चसौमित्रेभुंक्ष्वदुःखंदुरत्ययम्।२५
नकोप्यस्मत्कुलेपूर्वंमत्समोदुःखभाङ्नरः। अकिंचनोऽक्षमःक्लिष्टोनभूतोनभविष्यति।२६
किंकरोम्यद्यसौमित्रेमग्नोऽस्मिदुःखसागरे। नचास्तितरणोपायोह्यसहायस्यमेकिल।२७
न वित्तंनबलंवीर त्वमेकःसहचारकः। कोपंकस्मिन्करोम्यद्यभोगेऽस्मिन्स्वकृतेऽनुज।२८
गतंहस्तगतंराज्यंक्षणादिंद्रसभोपमम्। वनेवासस्तु संप्राप्तःको वेद विधिनिर्मितम्।२९
बालभावाच्चवैदेही चलिता चावयोःसह। नीतादैवेनदुष्टेनश्यामादुःखतरांदशाम्।३०
लंकेशस्यगृहेश्यामाकथंदुःखंभविष्यति। पतिव्रतासुशीलाचमयि प्रीतियुता भृशम्।३१
नच लक्ष्मणवैदेहीसातस्यवशगाभवेत्। स्वैरिणीववरारोहाकथंस्याज्जनकात्मजा।३२
त्यजेत्प्राणान्नियंतृत्वेमैथिलीभरतानुज। न रावणस्य वशगा भवेदिति सुनिश्चितम्।३३
मृताचेज्जानकीवीरप्राणांस्त्यक्ष्याम्यसंशयम्। मृताचेदसितापांगीकिंमेदेहेनलक्ष्मण।३४
एवं विलपमानंतं रामं कमललोचनम्। लक्ष्मणः प्राह धर्मात्मा सांत्वयन्नृतया गिरा।३५
धैर्यंकुरुमहाबाहोत्यक्त्वाकातरतामिह। आनयिष्यामिवैदेहींहत्वा तंराक्षसाधमम्।३६
आपदिसंपदितुल्याधैर्याद्भवंतिते धीराः। अल्पधियस्तुनिमग्नाःकष्टेभवंतिविभवेऽपि।३७
संयोगो विप्रयोगश्च दैवाधीनावुभावपि। शोकस्तुकीदृशस्तत्रदेहेनाऽत्मनिचक्वचित्।३८
राज्याद्यथा वने वासोवैदेह्याहरणंयथा। तथाकाले समीचीनेसंयोगोऽपिभविष्यति।३९
प्राप्तव्यं सुखदुःखानां भोगान्निर्वर्तनं क्वचित्। नाऽन्यथा जानकीजाने! तस्माच्छोकं त्यजाऽधुना।४०
वानराःसन्तिभूयांसोगमिष्यन्तिचतुर्दिशम्। शुद्धिंजनकनन्दिन्याआनयिष्यन्तितेकिल।४१

ज्ञात्वा मार्गस्थितिं तत्र मत्वा कृत्वा पराक्रमम्।
हत्वा तं पापकर्माणमानयिष्यामि मैथिलीम्॥४२॥

ससैन्यं भरतंवाऽपिसमाहूयसहानुजम्। हनिष्यामोवयं शत्रुं किं शोचसि वृथाऽग्रज।४३
रघुणैकरथेनैवजिताः सर्वा दिशः पुरा। तद्वंशजः कथं शोकं कर्तुमर्हसि राघव!।४४
एकोऽहंसकलाञ्जेतुंसमर्थोऽस्मि सुरासुरान्। किंपुनःससहायोवैरावणंकुलपांसनम्।४५
जनकं वा समानीय साहाय्ये रघुनन्दन। हनिष्यामि दुराचारं रावणं सुरसङ्कटम्।४६
सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखम्। चक्रनेमिरिवैकं तन्न भवेद्रघुनन्दन!।४७
मनोऽतिकातरं यस्य सुखदुःखसमुद्भवे। स शोकसागरेमग्नो न सुखीस्यात्कदाचन।४८
इन्द्रेण व्यसने प्राप्तं पुरा वै रघुनन्दन। नहुषः स्थापितो देवैः सर्वैर्मघवतः पदे।४९
स्थितः पङ्कजमध्ये च बहुवर्षगणानपि। अज्ञानवासं मघवाभीतस्त्यक्त्वा निजं पदम्।५०
पुनःप्राप्तं निजं स्थानंकाले विपरिवर्तते। नहुषः पतितो भूमौ शापादजगराकृतिः।५१
इन्द्राणीं कामयानस्तुब्राह्मणानवमन्य च। अगस्तिकोपात्सञ्जातःसर्पदेहो महीपतिः।५२
तस्माच्छोकोनकर्तव्योव्यसनेसतिराघव। उद्यमेचित्तमास्थायस्थातव्यंवैविपश्चिता।५३
सर्वज्ञोऽसि महाभाग समर्थोऽसि जगत्पते। किं प्राकृतइवात्यर्थं कुरुषेशोकमात्मनि।५४

व्यास उवाच

इतिलक्ष्मणवाक्येन बोधितो रघुनन्दनः। त्यक्त्वा शोकं तथाऽत्यर्थंबभूवविगतज्वरः।५५

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांतृतीयस्कन्धे लक्ष्मणकृतरामशोकसान्त्वनंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः॥२९॥

* त्रिंशोऽध्यायः *

नारदेनरामम्प्रतिव्रतकथनम्

व्यास उवाच

एवं तौ संविदं कृत्वायावत्तूष्णींबभूवतुः। आजगामतदाऽऽकाशान्नारदोभगवानृषिः। १
रणयन्महतीं वीणां स्वरग्रामविभूषिताम्। गायन्बृहद्रथं साम तदा तमुपतस्थिवान्। २
दृष्ट्वा तं राम उत्थाय ददावथ वृषं शुभम्। आसनं चार्घपाद्यं च कृतवानमितद्युतिः। ३
पूजां परमिकांकृत्वा कृताञ्जलिरुपस्थितः। उपविष्टे समीपे तु कृताज्ञो मुनिनाहरिः। ४
उपविष्टं तदा रामं सानुजं दुःखमानसम्। पप्रच्छ नारदः प्रीत्या कुशलंमुनिसत्तमः। ५
कथं राघव शोकार्तो यथावै प्राकृतो नरः। हृता सीता च जानामिरावणेनदुरात्मना। ६
सुरसद्मगतश्चाऽहं श्रुतवाञ्जनकात्मजाम्। पौलस्त्येन हृतां मोहान्मरणं स्वमजानता। ७
तव जन्म च काकुत्स्थ पौलस्त्यनिधनायवै। मैथिलीहरणंजातमेतदर्थं नराधिप। ८
पूर्वजन्मनि वैदेही मुनिपुत्री तपस्विनी। रावणेन वने दृष्टा तपस्यन्ती शुचिस्मिता। ९
प्रार्थिता रावणेनासौ भव भार्येति राघव। तिरस्कृतस्तयाऽसौवैजग्राहकवरंबलात्। १०
शशाप तत्क्षणं राम रावणंतापसी भृशम्। कुपितात्यक्तुमिच्छन्तीदेहंसंस्पर्शदूषितम्। ११
दुरात्मंस्तव नाशार्थं भविष्यामि धरातले। अयोनिजा वरानारीत्यक्त्वादेहंजहावपि। १२
सेयं रमांशसंभूतागृहीता तेनरक्षसा। विनाशार्थं कुलस्यैवव्याली स्रगिव संभ्रमात्। १३
तव जन्म च काकुत्स्थ तस्यनाशाय चामरैः। प्रार्थितस्यहरेरंशादजवंशेऽप्यजन्मनः। १४
कुरु धैर्यं महाबाहो तत्रसावर्ततेऽवशा। सतीधर्मरता सीतात्वांध्यायन्तीदिवानिशम्। १५
कामधेनुपयः पात्रे कृत्वामघवता स्वयम्। पानार्थं प्रेषितं तस्याःपीतं चैवामृतं तथा। १६
सुरभीदुग्धपानात्सा क्षुत्तृड्दुःखविवर्जिता। जाताकमलपत्राक्षीवर्तते वीक्षितामया। १७
उपायं कथयाम्यद्य तस्यनाशाय राघव। व्रतं कुरुष्व श्रद्धावानाश्विनेमासिसाम्प्रतम्। १८
नवरात्रोपवासं च भगवत्याःप्रपूजनम्। सर्वसिद्धिकरं राम जपहोमविधानतः। १९
मेध्यैश्च पशुभिर्देव्या बलिंदत्त्वा विशंसितैः। दशांशंहवनं कृत्वासुशक्तस्त्वं भविष्यसि। २०
विष्णुना चरितं पूर्वं महादेवेन ब्रह्मणा। तथा मघवता चीर्णं स्वर्गमध्यस्थितेन वै। २१
सुखिना राम कर्तव्यं नवरात्रव्रतं शुभम्। विशेषेण च कर्तव्यं पुंसा कष्टगतेन वै। २२
विश्वामित्रेण काकुत्स्थ कृतमेतन्न संशयः। भृगुणाऽथ वसिष्ठेन कश्यपेन तथैव च। २३
गुरुणा हृतदारेण कृतमेतन्महाव्रतम्। तस्मात्त्वं कुरु राजेन्द्र रावणस्य वधाय च। २४
इन्द्रेण वृत्रनाशाय कृतंव्रतमनुत्तमम्। त्रिपुरस्य विनाशाय शिवेनाऽपि पुराकृतम्। २५
हरिणा मधुनाशाय कृतं मेरौ महामते। विधिवत्कुरु काकुत्स्थ व्रतमेतदतन्द्रितः। २६

श्रीराम उवाच

का देवीकिंप्रभावासाकुतोजाताकिमाह्वया। व्रतंकिंविधिवद्ब्रूहिसर्वज्ञोऽसिदयानिधे। २७

नारद उवाच

शृणु राम सदा नित्या शक्तिराद्या सनातनी। सर्वकामप्रदादेवीपूजितादुःखनाशिनी। २८
कारणं सर्वजन्तूनां ब्रह्मादीनांरघूद्वह। तस्याःशक्तिंविनाकोऽपिस्पन्दितुंनक्षमोभवेत्। २९
विष्णोः पालनशक्तिः सा कर्तृशक्तिः पितुर्मम। रुद्रस्य नाशशक्तिः सा त्वन्यशक्तिःपरा शिवा। ३०
यच्चकिंजित्क्वचिद्वस्तु सदसद्भुवनत्रये। तस्य सर्वस्य या शक्तिस्तदुत्पत्तिःकुतोभवेत्। ३१
न ब्रह्मा न यदा विष्णुर्न रुद्रोनदिवाकरः। न चेन्द्राद्याः सुराः सर्वे नधरानधराधराः। ३२
तदा सा प्रकृतिः पूर्णा पुरुषेण परेण वै। संयुता विहरत्येवयुगादौ निर्गुणा शिवा। ३३
साभूत्वा सगुणापश्चात्करोतिभुवनत्रयम्। पूर्वंसंसृज्यब्रह्मादीन्दत्त्वाशक्तीश्चसर्वशः। ३४

तां ज्ञात्वामुच्यतेजन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात्। सा विद्यापरमाज्ञेयावेदाद्यावेदकारिणी।३५
असंख्यातानि नामानि तस्या ब्रह्मादिभिः किल। गुणकर्मविधानैस्तु कल्पितानि च किं ब्रुवे।३६
अकारादिक्षकारान्तैः स्वरैर्वर्णैस्तु योजितैः। असंख्येयानि नामानिभवन्तिरघुनन्दन।३७

राम उवाच

विधिंमे ब्रूहि विप्रर्षेव्रतस्यास्य समासतः। करोम्यद्यैवश्रद्धावाञ्छ्रीदेव्याः पूजनं तथा।३८

नारद उवाच

पीठं कृत्वा समे स्थानेसंस्थाप्यजगदम्बिकाम्। उपवासाश्चवैवत्वंकुरुरामविधानतः।३९
आचार्योऽहंभविष्यामिकर्मण्यस्मिन्महीपते। देवकार्यविधानार्थमुत्साहंप्रकरोम्यहम्।४०

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं सत्यं मत्वा रामः प्रतापवान्। कारयित्वा शुभं पीठं स्थापयित्वाऽम्बिकां शिवाम्।४१
विधिवत्पूजनं तस्याश्चकार व्रतवान्हरिः। सम्प्राप्तेचाश्विनेमासितस्मिन्गिरिवरेतदा।४२
उपवासपरो रामःकृतवान्व्रतमुत्तमम्। होमं च विधिवत्तत्र बलिदानं च पूजनम्।४३
भ्रातरौ चक्रतुः प्रेम्णा व्रतंनारदसम्मतम्। अष्टम्यां मध्यरात्रे तु देवी भगवतीहि सा।४४
सिंहारूढा ददौ तत्र दर्शनंप्रतिपूजिता। गिरिशृङ्गेस्थितोवाच राघवं सानुजं गिरा।४५
मेघगम्भीरया चेदं भक्तिभावेन तोषिता।

देव्युवाच

राम! राम! महाबाहो! तुष्टाऽस्म्यद्य व्रतेन ते ।।४६।।
प्रार्थयस्व वरं कामं यत्ते मनसि वर्तते। नारायणांशसंभूतस्त्वं वंशे मानवेऽनघे।४७
रावणस्य वधायैव प्रार्थितस्त्वमरैरसि। पुरा मत्स्यतनुं कृत्वाहत्वाघोरं चराक्षसम्।४८
त्वयावै रक्षितावेदाःसुराणांहितमिच्छता। भूत्वाकच्छपरूपस्तुधृतवान्मन्दरंगिरिम्।४९
अकूपारं प्रमन्थानं कृत्वा देवानपोषयः। कोलरूपं पुरा कृत्वादशनाग्रेण मेदिनीम्।५०
धृतवानसि यद्राम हिरण्याक्षं जघान च। नारसिंहीं तनुंकृत्वा हिरण्यकशिपुं पुरा।५१
प्रह्लादं राम रक्षित्वा हतवानसि राघव। वामनं वपुरास्थाय पुरा छलितवान्बलिम्।५२
भूत्वेन्द्रस्यानुजः कामं देवकार्यप्रसाधकः। जगदग्निसुतस्त्वंमे विष्णोरंशेन सङ्गतः।५३
कृत्वाऽन्तं क्षत्रियाणांतुदानंभूमेरदाद्द्विजे। तथेदानींतुकाकुत्स्थजातोदशरथात्मजः।५४
प्रार्थितस्तु सुरैः सर्वै रावणेनातिपीडितैः। कपयस्ते सहायावै देवांशा बलवत्तराः।५५
भविष्यन्ति नरव्याघ्र! मच्छक्तिसंयुता ह्यमी। शेषांशोऽप्यनुजस्तेऽयं रावणात्मजनाशकः।५६
भविष्यति न सन्देहः कर्तव्योऽत्र त्वयानघ। वसन्ते सेवनंकार्यंत्वया तत्रातिश्रद्धया।५७
हत्वाऽथ रावणं पापं कुरुराज्यंयथासुखम्। एकादश सहस्राणिवर्षाणि पृथिवीतले।५८
कृत्वा राज्यं रघुश्रेष्ठ गन्तासि त्रिदिवं पुनः।

व्यास उवाच

इत्युक्त्वांऽतर्दधे देवी रामस्तु प्रीतिमानसः ।।५९।।
समाप्य तद्व्रतं चक्रे प्रयाणं दशमीदिने। विजया पूजनंकृत्वा दत्त्वा दानान्यनेकशः।६०
कपिपतिबलयुक्तः सानुजः श्रीपतिश्च प्रकटपरमशक्त्या प्रेरितः पूर्णकामः।
उदधितटगतोऽसौ सेतुबन्धं विधायात्यहनदमरशत्रुं रावणं गीतकीर्तिः।६१
यः शृणोति नरो भक्त्या देव्याश्चरितमुत्तमम्। स भुक्त्वा विपुलान्भोगान्प्राप्नोति परमं पदम्।६२
सन्त्यन्यानि पुराणानिविस्तराणिबहूनिच। श्रीमद्भागवतस्यास्यनतुल्यानीतिमेमतिः।६३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां तृतीयस्कन्धे रामायदेवीवरदानंनाम त्रिंशोऽध्यायः।।३०।।

।।इति तृतीयस्कन्धम् सम्पूर्णम्।।

देवीभागवतस्यास्य तृतीयस्कन्धविस्तरम्। सार्धैः षडब्धिशैलेन्दु पद्यैर्व्यासोव्यरीरचत्॥

// श्रीगणेशायनमः //

श्रीमद्देवीभागवतपुराणम्
चतुर्थ स्कन्धम्
* प्रथमोऽध्यायः *
जनमेजयस्यकृष्णावतारविषयकःप्रश्नः

जनमेजय उवाच

वासवेय मुनिश्रेष्ठ सर्वज्ञाननिधेऽनघ। प्रष्टुमिच्छाम्यहं स्वामिन्नस्माकं कुलवर्धन।१
शूरसेनसुतः श्रीमान्वसुदेवः प्रतापवान्। श्रुतं मया हरिर्यस्य पुत्रभावमवाप्तवान्।२
देवानामपिपूज्योऽभून्नाम्नाचाऽऽनकदुन्दुभिः। कारागारेकथंवद्धःकंसस्यधर्मतत्परः ।३
देवक्या भार्ययासार्धंकिमागःकृतवानसौ। देवक्या बालषट्कस्यविनाशश्चकृतः पुनः।४
तेन कंसेन कस्माद्वै ययातिकुलजेन च। कारागारे कथं जन्म वासुदेवस्य वै हरेः।५
गोकुलेचकथंनीतोभगवान्सात्वतांपतिः। गतोजन्मान्तरंकस्मात्पितरौनिगडेस्थितौ।६
देवकीवसुदेवौच कृष्णस्यामिततेजसः। कथं न मोचितौ बृद्धौ पितरौहरिणाऽमुना।७
जगत्कर्तुंसमर्थेन स्थितेन जनकोदरे। प्राक्तनं किं तयोः कर्म दुर्विज्ञेयं महात्मभिः।८

जन्म वै वासुदेवस्य यात्राऽऽसीत्परमात्मनः ।
के ते पुत्राश्च का बाला या कंसेन विपोथिता ॥६॥

शिलायां निर्गताव्योम्निजातात्वष्टभुजा पुनः। गार्हस्थ्यञ्चहरेर्ब्रूहि बहुभार्यस्यचानघ।१०
कार्याणि तत्र तान्येव देहत्यागञ्च तस्य वै। किं वदन्त्याश्रुतं यत्तन्मनोमोहयतीव मे।११
चरितं वासुदेवस्य त्वमाख्याहियथातथम्। नरनारायणौदेवौ पुराणावृषिसत्तमौ।१२
धर्मपुत्रौ महात्मानौ तपश्चेरतुरुत्तमम्। यौ मुनी बहुवर्षाणि पुण्ये बदरिकाश्रमे।१३

निराहारौ जितात्मानौ निःस्पृहौ जितषड्गुणौ ।
विष्णोरंशौ जगत्स्थेम्ने तपश्चेरतुरुत्तमम् ॥१४॥

तयोरंशावतारौहिजिष्णुकृष्णौ महाबलौ। प्रसिद्धौमुनिभिःप्रोक्तौसर्वज्ञैर्नारदादिभिः।१५
विद्यमानशरीरौतौ कथं देहान्तरं गतौ। नरनारायणौदेवौ पुनःकृष्णार्जुनौ कथम्।१६
यौ चक्रतुस्तपश्चोग्रं मुक्त्यर्थंमुनिसत्तमौ। तौ कथं प्रापतुर्देहौ प्राप्तयोगौ महातपौ।१७
शूद्रःस्वधर्मनिष्ठस्तुदेहान्तेक्षत्रियस्तुतः ।शुभाचारोमृतो यो वै सशूद्रोब्राह्मणोभवेत्।१८
ब्राह्मणोनिःस्पृहःशांतो भवरोगाद्विमुच्यते। विपरीतमिदं भाति नरनारायणौ च तौ।१६
तपसाशोषितात्मानौ क्षत्रियौतौ बभूवतुः। केन तौ कर्मणाशांतौजातौशापेनवापुनः।२०
ब्राह्मणौक्षत्रियौजातौ कारणं तन्मुने वद। यादवानां विनाशश्च ब्रह्मशापादितिश्रुतः।२१
कृष्णस्याऽपि हिगान्धार्याःशापेनैवकुलक्षयः। प्रद्युम्नहरणञ्चैव शम्बरेण कथंकृतम्।२२
वर्तमाने वासुदेवे देवदेवे जनार्दने। पुत्रस्य सूतिकागेहाद्धरणं चातिदुर्घटम्।२३
द्वारकादुर्गमध्याद्वै हरिवेश्माद् दुरत्ययात्। न ज्ञातं वासुदेवेन तत्कथं दिव्यचक्षुषा।२४
सन्देहोऽयंमहान्ब्रह्मन्निःसन्देहंकुरुप्रभो ।यत्पत्न्योवासुदेवस्यदस्युभिर्लुण्ठिताहृताः।२५
स्वर्गते देवदेवे तु तत्कथं मुनिसत्तम। संशयोजायते ब्रह्मंश्चित्तान्दोलनकारकः।२६
विष्णोरंशःसमुद्भूतःशौरिर्भूभारहारकृत् ।स कथं मथुराराज्यंभयात्त्यक्त्वाजनार्दनः।२७

अवतारो हरेः प्रोक्तो भूभारहरणाय वै।२८
द्वारवत्यां गतःसाधो ससैन्यः ससुहृद्गणः। तत्कथं वासुदेवेन चौरास्तेन निपातिताः।२९
पापात्मनांविनाशाय धर्मसंस्थापनायच। तत्कथं वासुदेवेन चौरास्तेन निपातिताः।३०
यैर्हृतावासुदेवस्ययत्न्यःसंलुंठिताश्च ताः। स्तेनास्ते किं न विज्ञाताःसर्वज्ञेनसतापुनः।३१
भीष्मद्रोणवधः कामं भूभारहरणे मतः। अविताश्च महात्मानः पाण्डवाधर्मतत्पराः।३२
कृष्णभक्ताःसदाचारायुधिष्ठिरपुरोगमाः। ते कृत्वाराजसूयञ्च यज्ञराजं विधानतः।३३
दक्षिणाविविधादत्त्वाब्राह्मणेभ्योऽतिभावतः। पांडुपुत्रास्तुदेवांशावासुदेवाश्रितामुने ।३३
घोरंदुःखंकथं प्राप्ताः क्व गतं सुकृतञ्च तत्। किं तत्पापंमहारौद्रं येन तेपीडिताःसदा।३४
द्रौपदीचमहाभागावेदीमध्यात्समुत्थिता। रमांशजाच साध्वीचकृष्णभक्तियुतातथा।३५
साकथंदुःखमतुलं प्रापघोरं पुनः पुनः। दुःशासनेन सा केशे गृहीता पीड़िता भृशम्।३६
रजस्वला सभायान्तुनीताभीतैकवाससा। विराटनगरेदासी जातामत्स्यस्यसापुनः।३७
धर्षिताकीचकेनाथ रुदती कुररी यथा। हृता जयद्रथेनाथ क्रंदमानाऽतिदुःखिता।३८
मोचितापाण्डवैःपश्चाद्बलवद्भिर्महात्मभिः। पूर्वजन्मकृतंपापं किं तद्येनच पीडिताः।३९
दुःखान्यनेकान्याप्तास्ते कथयाद्य महामते। राजसूयं क्रतुवरं कृत्वा ते मम पूर्वजाः।४०
दुःखं महत्तरं प्राप्ताः पूर्वजन्मकृतेन वै। देवांशानां कथं तेषां संशयोऽयं महान्हि मे।४१
सदाचारैस्तु कौन्तेयैर्भीष्मद्रोणादयो हताः। छलेन धनलोभार्थं जानानैर्नश्वरं जगत्।४२
प्रेरिता वासुदेवेन पापेघोरे महात्मना। कुलं क्षयितवन्तस्ते हरिणा परमात्मना।४३
वरंभिक्षाटनं साधोर्नीवारैर्जीवनं वरम्। योधान्नहत्वालोभेन शिल्पेन जीवनं वरम्।४४
विच्छिन्नस्तुत्वयावंशोरक्षितोमुनिसत्तम। समुत्पाद्यसुतानाशुगोलकाञ्छत्रुनाशनात्।४५
सोऽल्पेनैव तु कालेन विराटतनयासुतः। तापसस्य गलेसर्पं न्यस्तवान्कथमद्भुतम्।४६
नकोऽपि ब्राह्मणं द्वेष्टि क्षत्रियस्यकुलोद्भवः। तापसंमौनसंयुक्तंपित्राकिंतत्कृतंमुने ।४७
एतैरन्यैश्च सन्देहैर्विकलं मे मनोऽधुना। स्थिरंकुरुपितःसाधो सर्वज्ञोऽसिदयानिधे।४८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे जनमेजयप्रश्नो नाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

* द्वितीयोऽध्यायः *

कर्मणोजन्मादिकारणत्वनिरूपणम्

सूत उवाच

एवं पृष्टः पुराणज्ञो व्यासः सत्यवतीसुतः। परीक्षितसुतं शान्तं ततो वै जनमेजयम्।१
उवाच संशयच्छेतृवाक्यं वाक्यविशारदः।

व्यास उवाच

राजन्किमेतद्वक्तव्यं कर्मणां गहना गतिः॥२॥
दुर्ज्ञेयाकिलदेवानांमानवानाञ्चकाकथा। यदासमुत्थितंचैतद्ब्रह्माण्डं त्रिगुणात्मकम्।३
कर्मणैव समुत्पत्तिःसर्वेषांनात्रसंशयः। अनादिनिधनाजीवाः कर्मबीजसमुद्भवाः।४
नानायोनिषुजायन्ते म्रियन्तेचपुनःपुनः। कर्मणा रहितो देहसंयोगो न कदाचन।५
शुभाशुभैस्तथा मिश्रैः कर्मभिर्वेष्टितं त्विदम्।
विविधानि ··हितान्याहुर्बुधास्तत्त्वविदश्च ये॥६॥
सञ्चितानिभविष्याणिप्रारब्धानितयापुनः। वर्तमानानिदेहेऽस्मिंस्त्रैविध्यंकर्मणांकिल।७
ब्रह्मादीनाञ्चसर्वेषां तद्वशत्वं नराधिप। सुखदुःखजरामृत्युहर्षशोकादयस्तथा ।८

कामक्रोधौच लोभश्च सर्वेदेहगतागुणाः। दैवाधीनाश्च सर्वेषां प्रभवन्ति नराधिप!।९
रागद्वेषादयोभावाः स्वर्गेऽपि प्रभवन्ति हि। देवानां मानवानाञ्चतिरश्चाञ्चतथा पुनः।१०
विकाराःसर्व एवैते देहेन सह संगताः। पूर्ववैरानुयोगेन स्नेहयोगेन वै पुनः।११
उत्पत्तिःसर्वजन्तूनांविनाकर्मन विद्यते। कर्मणा भ्रमते सूर्यः शशांकः क्षयरोगवान्।१२
कपालीच तथारुद्रः कर्मणैव न संशयः। अनादिनिधनं चैतत्कारणं कर्मसम्भवे।१३
तैनेहशाश्वतं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्। नित्यानित्यविचारे नेमग्ना मुनयः सदा।१४
न जानन्ति किमेतद्वै नित्यंवानित्यमेवच। मायायां विद्यमानायां जगन्नित्यंप्रतीयते।१५
कार्याभावःकथं वाच्यः कारणे सतिसर्वथा। मायानित्याकारणञ्चसर्वेषांसर्वदाकिल।१६
कर्मबीजंततोऽनित्यं चिंतनीयं सदा बुधैः। भ्रमत्येव जगत्सर्वं राजन्कर्मनियन्त्रितम्।१७
नानायोनिषु राजेन्द्र नानाधर्ममयेषु च। इच्छया च भवेज्जन्म विष्णोरमिततेजसा।१८
युगेयुगेष्वनेकासु नीचयोनिषु तत्कथम्। त्यक्त्वावैकुण्ठसम्वासंसुखभोगाननेकशः।१९

विण्मूत्रमन्दिरे वासं संत्रस्तःकोऽभिवाञ्छति ।
पुष्पावचयलीला च जलकेलिः सुखासनम् ।।२०।।
त्यक्त्वा गर्भगृहे वासं कोऽभिवाञ्छति बुद्धिमान् ।
तूलिकां मृदुसंयुक्तां दिव्यां शय्यां विनिर्मिताम् ।।२१।।
त्यक्त्वाऽधोमुखवासं च कोऽभिवाञ्छति पण्डितः ।
गीतं नृत्यं च वाद्यञ्च नानाभावसमन्वितम् ।।२२।।
मुक्त्वा को नरके वासं मनसाऽपि विचिन्तयेत् ।
सिन्धुजाद्भुतभावानां रसं त्यक्त्वा सुदुस्त्यजम् ।।२३।।

विण्मूत्ररसपानञ्च क इच्छेन्मतिमान्नरः। गर्भवासात्परो नास्ति नरको भुवनत्रये।२४
तद्भीताश्चप्रकुर्वन्ति मुनयो दुस्तरं तपः। हित्वाभोगञ्च राज्यञ्च वने यान्तिमनस्विनः।२५
यद्भीतास्तुविमूढात्माकस्तंसेवितुमिच्छति । गर्भेतुदन्तिकृमयो जठराग्निस्तपत्यधः।२६
वपासम्वेष्टनं क्रूरं किं सुखं तत्र भूपते। वरं कारागृहेवासो बन्धनं निगडैर्वरम्।२७
अल्पमात्रंक्षणंनैव गर्भवासः क्वचिच्छुभः। गर्भवासेमहद्दुःखं दशमासनिवासनम्।२८
तथानिःसरणे दुःखं योनियन्त्रेऽतिदारुणे। बालभावे तथा दुःखं मूकाज्ञभावसंयुतम्।२९
क्षुत्तृडावेदनाशक्तः परतन्त्रोऽतिकातरः। क्षुधिते रुदिते बाले माता चिन्तातुरा तदा।३०

भेषजं पातुमिच्छन्ती ज्ञात्वा व्याधिव्यथां दृढाम् ।
नानाविधानि दुःखानि बालभावे भवन्ति वै ।।३१।।

किं सुखंविबुधादृष्ट्वाजन्मवाञ्छन्तिचेच्छया। संग्राममममरैःसार्धंसुखंत्यक्त्वानिरन्तरम्।३२
कर्तुमिच्छेच्च को मूढः श्रमदं सुखनाशनम्। सर्वथैव नृपश्रेष्ठ! सर्वेब्रह्मादयः सुराः।३३

कृतकर्मविपाकेन प्राप्नुवन्ति सुखासुखे ।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
देहवद्भिर्नृभिर्देवैस्तिर्यग्भिश्च नृपोत्तम! ।।३४।।

तपसादानयज्ञैश्च मानवश्चेन्द्रतां व्रजेत्। क्षीणेपुण्येऽथशक्रोऽपि पतत्येवन संशयः।३५
रामावतारयोगेन देवावानरतां गताः। तथा कृष्णसहायार्थं देवा यादवतां गताः।३६
एवं युगे युगे विष्णुरवताराननेकशः। करोति धर्मरक्षार्थं ब्रह्मणा प्रेरितो भृशम्।३७
पुनःपुनर्हरिरेवं नानायोनिषु पार्थिवः। अवतारा भवन्त्यन्ये रथचक्रवदद्भुताः।३८

दैत्यानांहननं कर्मकर्तव्यं हरिणास्वयम्। अंशांशेनपृथिव्यां वै कृत्वाजन्ममहात्मना।३९
तदहंसम्प्रवक्ष्यामि कृष्णजन्मकथांशुभाम्। स एव भगवान्विष्णुरवतीर्णोयदोः कुले।४०
कश्यपस्य मुनेरंशो वसुदेवः प्रतापवान्। गोवृत्तिरभवद्राजन्मपूर्वशापानुभावतः।४१
कश्यपस्य च द्वे पत्न्यौ शापादत्र महीतले। अदितिः सुरसा चैवमासतुः पृथिवीपते।४२
देवकी रोहिणी चोभे भगिन्यौ भरतर्षभ। वरुणेनमहाञ्छापो दत्तःकोपादितिश्रुतम्।४३

राजोवाच

किं कृतं कश्यपेनाऽऽगो येनशप्तोमहानृषिः। सभार्यः स कथं जातस्तद्वदस्वमहामते।४४
कथञ्चभगवान्विष्णुस्तत्र जातोऽस्तिगोकुले। वासीवैकुण्ठनिलयेरमापतिरखण्डितः।४५
निदेशात्कस्य भगवान्वर्तते प्रभुरव्ययः। नारायणः सुरश्रेष्ठो युगादिः सर्वधारकः।४६
स कथं सदनं त्यक्त्वा कर्मवानिव मानुषे। करोतिजननंकस्मादत्रमे संशयोमहान्।४७
प्राप्यमानुषदेहन्तु करोति च विडम्बनम्। भावान्नानाविधांस्तत्र मानुषे दुष्टजन्मनि।४८
कामःक्रोधोऽमर्षशोकौ वैरंप्रीतिश्चकर्हिचित्। सुखंदुःखंभयंनृणां दैन्यमार्जनमेवच।४९
दुष्कृतं सुकृतञ्चैव वचनं हननं तथा। पोषणं चलनं तापो विमर्शश्च विकत्थनम्।५०
लोभोदम्भस्तथा मोहःकपटंशोचनंतथा। एतेचान्येतथाभावा मानुष्येसम्भवन्ति हि।५१
स कथं भगवान्विष्णुस्त्यक्त्वा सुखमनश्वरम्। करोतिमानुषंजन्म भावैतैरभिद्रुतम्।५२
किं सुखंमानुषंप्राप्यभुविजन्म मुनीश्वर। किं निमित्तं हरिः साक्षाद्गर्भवासंकरोतिवै।५३
गर्भदुःखं जन्मदुःखं बालभावे तथा पुनः। यौवने कामजंदुःखं गार्हस्थ्येऽतिमहत्तरम्।५४
दुःखान्येतान्यवाप्नोति मानुषे द्विजसत्तम। कथं स भगवान्विष्णुरवतारान्पुनः पुनः।५५
प्राप्यरामावतारं हि हरिणा ब्रह्मयोनिना। दुःखं महत्तरं प्राप्तं वनवासेऽतिदारुणे।५६
सीताविरहजं दुःखं संग्रामश्च पुनः पुनः। कान्तात्यागोऽप्यनेनैवमनुभूतो महात्मना।५७
तथा कृष्णाऽवतारेऽपि जन्मरक्षागृहेपुनः। गोकुले गमनञ्चैव गवांचारणमित्युत।५८
कंसस्य हननं कष्टाद्द्वारकागमनं पुनः। नानासंसारदुःखानि भुक्तवान्भगवान्कथम्।५९
स्वेच्छयाकःप्रतीक्षेतमुक्तोदुःखानिज्ञानवान्। संशयं छिंधिसर्वज्ञ मम चित्तप्रशान्तये।६०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे कर्मणोजन्मादिकारणत्वनिरूपणंनामद्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

* तृतीयोऽध्यायः *

कश्यपशापवार्त्तावर्णनम्

व्यास उवाच

कारणानि बहून्यत्राप्यवतारे हरेः किल। सर्वेषाञ्चैव देवानामंशावतरणेष्वपि।१
वसुदेवावतारस्य कारणं शृणुतत्त्वतः। देवक्याश्चैव रोहिण्या अवतारस्य कारणम्।२
एकदा कश्यपः श्रीमान्यज्ञार्थं धेनुमाहरन्। याचितोऽयं बहुविधं नददौ धेनुमुत्तमाम्।३

वरुणस्तु ततो गत्वा ब्रह्माणं जगतः प्रभुम्।
प्रणम्योवाच दीनात्मा स्वदुःखं विनयान्वितः ॥४॥
किं करोमि महाभाग! मत्तोऽसौ न ददाति गाम्।
शापो मया विसृष्टोऽस्मै गोपालो भव मानुषे ॥५॥

भार्ये द्वे अपितत्रैव भवेताञ्चातिदुःखिते। ततोवत्सारुदन्त्यत्रमातृहीनाःसुदुःखिताः।६
मृतमत्सादितिस्तस्माद्भविष्यतिधरातले। कारागारनिवासाचतेनापिबहुदुःखिता।७

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वावचनन्तस्य यादोनाथस्यपद्मभूः। समाहूय मुनिं तत्र तमुवाच प्रजापतिः। ८
कस्मात्त्वया महाभाग लोकपालस्यधेनवः। हृताःपुनर्नदत्ताश्च किमन्यायं करोषि वै। ६
जानन्न्यायंमहाभाग परवित्तापहारणम्। कृतवान्कथमन्यायं सर्वज्ञोऽसि महामते!। १०
अहो लोभस्य महिमा महतोऽपि नमुञ्चति। लोभंनरकदं नूनं पापाकरमसम्मतम्। ११
कश्यपोऽपि न तं त्यक्तुं समर्थः किं करोम्यहम् ।
सर्वदेवाधिकस्तस्माल्लोभोवै कलितो मया ।।१२।।
धन्यास्ते मुनयः शांता जितोयैर्लोभएवच। वैखानसैः शमपरैःप्रतिग्रहपराङ्मुखैः। १३
संसारे बलवाञ्छत्रुर्लोभोऽमेध्यावरः सदा। कश्यपोऽपिदुराचारःकृतस्नेहोदुरात्मना ।१४
ब्रह्माऽपि तं शशापाऽथ कश्यपं मुनिसत्तमम् ।
मर्यादारक्षणार्थं हि पौत्रं परमवल्लभम् ।।१५।।
अंशेनत्वंपृथिव्यांवैप्राप्यजन्मयदोःकुले । भार्याभ्यांसंयुतस्तत्रगोपालत्वंकरिष्यसि। १६

व्यास उवाच

एवं शप्तः कश्यपोऽसौ वरुणेनच ब्रह्मणा। अंशावतरणार्थाय भूभारहरणाय च। १७
तथा दित्याऽदितिः शप्ता शोकसन्तप्तया भृशम् ।
जाता जाता विनश्येरंस्तव पुत्रास्तु सप्त वै ।।१८।।

जनमेजय उवाच

कस्माद्दित्या च भगिनी शप्तेन्द्रजननी मुने! कारणंवदशापे च शोकस्तु मुनिसत्तम। १६

सूत उवाच

पारीक्षितेन पृष्टस्तु व्यासः सत्यवतीसुतः। राजानं प्रत्युवाचेदं कारणं सुसमाहितः। २०

व्यास उवाच

राजन्दक्षसुते द्वे तु दितिश्चादितिरुत्तमे। कश्यपस्य प्रिये भार्ये बभूवतुरुरुक्रमे। २१
अदित्यां मघवा पुत्रो यदाऽभूदतिवीर्यवान्। तदातु तादृशंपुत्रं चकमे दितिरोजसा। २२
पतिमाहासितापांगी पुत्रं मे देहि मानद। इन्द्रतुल्यं बलं वीरं धर्मिष्ठं वीर्यवत्तमम्। २३
तामुवाच मुनिः कान्ते स्वस्था भव मयोदिते। व्रतान्तेभवितातुभ्यं शतक्रतुसमःसुतः। २४
सा तथेति प्रतिश्रुत्य चकारव्रतमुत्तमम्। निषिक्तं मुनिना गर्भं बिभ्राणा सुमनोहरम्। २५
भूमौ चकार शयनं पयोव्रतपरायणा। पवित्रा धारणा युक्ता बभूव वरवर्णिनी। २६
एवंजातःसुसम्पूर्णोयदागर्भोऽतिवीर्यवान् । शुभ्रांशुमतिदीसाङ्गीं दितिं दृष्ट्वातुदुःखिता। २७
मघवत्सदृशः पुत्रो भविष्यतिमहाबलः। दित्यास्तदा मम सुतस्तेजोहीनोभवेत्किल। २८
इतिचिन्तापरापुत्रमिन्द्रंचोवाचमानिनी । शत्रुस्तेऽद्यसमुत्पन्नोदितिगर्भेऽतिवीर्यवान्। २६
उपायंकुरुनाशायशत्रोरद्य विचिन्त्य च। उत्पत्तिरेव हन्तव्या दित्यागर्भस्य शोभन। ३०
वीक्ष्य तामसितापांगीं सपत्नीभावमास्थिताम् ।
दुनोति हृदये चिन्ता सुखमर्मविनाशिनी ।।३१।।
राजयक्ष्मेव संवृद्धो नष्टो नैव भवेद्रिपुः। तस्मादंकुरितं हन्याद् बुद्धिमानहितंकिल। ३२
लोहशंकुरिव क्षिप्तो गर्भो वै हृदये मम। येनकेनाऽप्युपायेन पातयाऽद्य शतक्रतो!। ३३
सामदानबलेनापि हिंसनीयस्त्वयासुतः। दित्यागर्भोमहाभागमम चेदिच्छसिप्रियम्। ३४
श्रुत्वा मातृवचः शक्रो विचिन्त्यमनसाततः। जगामापरमातुः स समीपममराधिपः। ३५
ववन्दे विनयात्पादौ दित्याः पापमतिर्नृप। प्रोवाचविनयेनासौ मधुरं विषगर्भितम्। ३६

इन्द्र उवाच

मातस्त्वं व्रतयुक्ताऽसि क्षीणदेहाऽतिदुर्बला। सेवार्थमिहसम्प्राप्तः किंकर्तव्यंवदस्वमे।३७
पादसम्वाहनंतेऽहं करिष्यामि पतिव्रते। गुरुशुश्रूषणात्पुण्यं लभते गतिमक्षयाम्।३८
न मे किमपि भेदोऽस्ति तथाऽदित्या शपे किल ।
इत्युक्त्वा चरणौ स्पृष्ट्वा सम्वाहनपरोऽभवत् ।।३९।।
सम्वाहनसुखं प्राप्य निद्रामापसुलोचना। श्रान्ताव्रतकृशा सुप्ता विश्वस्तापरमासती।४०
तां निद्रावशमापन्नां विलोक्य प्राविशत्तनुम् ।
रूपं कृत्वाऽतिसूक्ष्मञ्च शस्त्रपाणिः समाहितः ।।४१।।
उदरं प्रविवेशाशु तस्या योगबलेन वै। गर्भं चकर्त वज्रेण सप्तधा पविनायकः।४२
रुरोद च तदा बालो वज्रेणाभिहतस्तथा। मा रुदेति शनैर्वाक्यमुवाच मघवानमुम्।४३
शकलानि पुनः सप्त सप्तधा कर्तितानिच। तदाचैकोनपञ्चाशन्मरुतश्चाभवन्नृप ।४४
तदाप्रबुद्धा सुदती ज्ञात्वा गर्भं तथाकृतम्। इन्द्रेण च्छलरूपेण चुकोप भृशदुःखिता।४५
भगिनीकृतन्तु सा बुद्ध्वाशशापकुपिता तदा। अदितिं मघवन्तञ्चसत्यव्रतपरायणा।४६
यथा मे कर्तितो गर्भस्तव पुत्रेण छद्मना। तथातन्नाशमायातु राज्यं त्रिभुवनस्य तु।४७
यथा गुप्तेन पापेन मम गर्भो निपातितः। अदित्यापापचारिण्या यथामेघातितःसुतः।४८
तस्याःपुत्रास्तुनश्यन्तुजाताजाताःपुनःपुनः। कारागारेवसत्वेषापुत्रशोकातुरा भृशम्।४९
अन्यजन्मनि चाप्येव मृतापत्या भविष्यति ।

व्यास उवाच

इत्युत्सृष्टं तदा श्रुत्वा शापं मरीचिनन्दनः ।।५०।।
उवाच प्रणयोपेतो वचनं शमयन्निव। मा कोपं कुरु कल्याणि! पुत्रास्ते बलवत्तराः।५१
भविष्यन्ति सुराः सर्वेमरुतो मघवत्सखाः। शापोऽयंतववामोरु त्वष्टाविंशेऽथद्वापरे।५२
अंशेनमानुषंजन्मप्राप्यभोक्ष्यतिभामिनी। वरुणेनापि दत्तोऽस्तिशापःसन्तापितेनच।५३
उभयोः शापयोगेन मानुषीयं भविष्यति ।
पतिनाऽऽश्वासिता देवी सन्तुष्टा साऽभवत्तदा ।।५४।।
नोवाच विप्रियं किंचित्ततःसा वरवर्णिनी ।
इतिते कथितं राजन्पूर्वशापस्यकारणम्। अदितिर्देवकी जाता स्वांशेन नृपसत्तम!।५५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे दित्याअदित्यैशापदानंनामतृतीयोऽध्यायः ।।३।।

* अथ चतुर्थोऽध्यायः *

अधमजगतःस्थितिवर्णनम्

राजोवाच

विस्मितोऽस्मिमहाभाग श्रुत्वाऽऽख्यानंमहामते!। संसारोऽयं पापरूपः कथं मुच्येत बन्धनात्।१
कश्यपस्यापिदायादस्त्रिलोकीविभवे सति। कृतवानीदृशंकर्मकोनकुर्याज्जुगुप्सितम्।२
गर्भे प्रविश्यबालस्य हननं दारुणं किल। सेवामिषेण मातुश्च कृत्वाशपथमद्भुतम्।३
शास्ताधर्मस्यगोप्ताच त्रिलोक्याःपतिरप्युत। कृतवानीदृशंकर्म कोन कुर्यादसाम्प्रतम्।४
पितामहामे संग्रामे कुरुक्षेत्रेऽतिदारुणम्। कृतवन्तस्तथाऽऽश्चर्यदुष्टं कर्मजगद्गुरो।५
भीष्मोद्रोणः कृपःकर्णोधर्मांशोऽपियुधिष्ठिरः। सर्वे विरुद्धधर्मेणवासुदेवेननोदिताः।६
असारतांविजानन्तः संसारस्य सुमेधसः। देवांशाश्च कथं चक्रुर्निन्दितं धर्मतत्पराः।७

काऽऽस्था धर्मस्य विप्रेन्द्र! प्रमाणं किं विनिश्चितम् ।
चलच्चित्तोऽस्मि सञ्जातः श्रुत्वा चैतत्कथानकम् ।।८।।

आप्तवाक्यं प्रमाणं चेदाप्तः कःपरदेहवान् । पुरुषोविषयासक्तोरागीभवति सर्वथा । ९
रागो द्वेषो भवेन्नूनमर्थनाशादसंशयम् । द्वेषादसत्यवचनंवक्तव्यं स्वार्थसिद्धये ।१०
जरासन्धविघातार्थं हरिणासत्वमूर्तिना । छलेन रचितंरूपं ब्राह्मणस्य विजानतः ।११
तदाप्तः कः प्रमाणं किं सत्त्वमूर्तिरपीदृशः । अर्जुनोऽपि तथैवात्र कार्ये यज्ञविनिर्मिते ।१२
कीदृशोऽयं कृतो यज्ञः किमर्थंशमवर्जितः । परलोकपदार्थंवा यशसे वाऽन्यथा किल ।१३
धर्मस्य प्रथमःपादः सत्यमेतच्छ्रुतेर्वचः । द्वितीयस्तु तथा शौचं दयापादस्तृतीयकः ।१४
दानम्पादश्चतुर्थश्च पुराणज्ञावदन्ति वै । तैर्विहीनः कथं धर्मस्तिष्ठेदिह सुसम्मतः ।१५
धर्महीनं कृतं कर्म कथं तत्फलदम्भवेत् । धर्मे स्थिरामतिःक्वापि न कस्यापिप्रतीयते ।१६
छलार्थञ्च यदा विष्णुर्वामनोऽभूज्जगत्प्रभुः । येन वामनरूपेण वञ्चितोऽसौबलिर्नृपः ।१७
विहर्ताशतयज्ञस्य वेदाज्ञापरिपालकः । धर्मिष्ठो दानशीलश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः ।१८
स्थानात्प्रभ्रंशितोऽकस्माद्विष्णुना प्रभविष्णुना । जितं केन तयोः कृष्ण बलिना वामनेन वा ।१९
छलकर्मविदा चायं सन्देहोऽत्र महान्मम । वञ्चयित्वा वञ्चितेन सत्यं वद द्विजोत्तम ।२०

पुराणकर्ता त्वमसि धर्मज्ञश्च महामतिः, व्यास उवाच
जितं वै बलिना राजन्दत्ता येन च मेदिनी ।।२१।।

त्रिविक्रमोऽपिनाम्नायः प्रथितोवामनोऽभवत् । छलनार्थमिदंराजन्वामनत्वंनराधिप ।२२
सम्प्राप्तं हरिणाभूयो द्वारपालत्वमेव च । सत्यादन्यतरन्नास्ति मूलं धर्मस्य पार्थिवः ।२३
दुःसाध्यं देहिनां राजन्सत्यंसर्वात्मनाकिल । माया बलवती भूपत्रिगुणाबहुरूपिणी ।२४
ययेदं निर्मितं विश्वं गुणैः शबलितं त्रिभिः । तस्माच्छलवता सत्यं कुतोऽविद्धं भवेन्नृप ।२५
मिश्रेण जनितश्चैव स्थितिरेषा सनातनी । वैखानसाश्चमुनयोनिःसङ्गा निष्प्रतिग्रहाः ।२६
सत्ययुक्ता भवंत्यत्र वीतरागा गततृषः । दृष्टान्तदर्शनार्थाय निर्मितास्ते च तादृशाः ।२७
अन्यत्सर्वं शबलितं गुणैरेभिस्त्रिभिर्नृप । नैकं वाक्यं पुराणेषु वेदेषु नृपसत्तम !।२८
धर्मशास्त्रेषु चाङ्गेषु सगुणै रचितेष्विह । सगुणः सगुणं कुर्यान्निर्गुणो न करोति वै ।२९
गुणास्ते मिश्रिताः सर्वे न पृथग्भावसङ्गताः । निर्व्यलीके स्थिरे धर्मे मतिः कस्यापि न स्थिरा ।३०
भवोद्भवे महाराज मायया मोहितस्य वै । इन्द्रियाणि प्रमाथीनि तदासक्तंमनस्तथा ।३१
करोति विविधान्भावान्गुणैस्तैः प्रेरितो भृशम् । ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्ताः प्राणिनः स्थिरजङ्गमाः ।३२
सर्वेमायावशा राजन्साऽनुक्रीडति तैरिह । सर्वान्वै मोहयत्येषाविकुर्वत्यनिशंजगत् ।३३
असत्यो जायते राजन्कार्यवान्प्रथमं नरः । इन्द्रियार्थांश्चिन्तयानोनप्राप्नोति यदानरः ।३४
तदर्थं छलमादत्ते छलात्पापे प्रवर्तते । कामः क्रोधश्च लोभश्च वैरिणो बलवत्तराः ।३५
कृताकृतं न जानन्ति प्राणिनस्तद्वशं गताः । विभवे सत्यहंकारः प्रबलः प्रभवत्यपि ।३६
अहङ्काराद्भवेन्मोहो मोहान्मरणमेव च । सङ्कल्पा बहवस्तत्रविकल्पाः प्रभवन्ति च ।३७
ईर्ष्याऽसूया तथा द्वेषःप्रादुर्भवतिचेतसि । आशातृष्णातथादैन्यंदम्भोऽधर्ममतिस्तथा ।३८
प्राणिनां प्रभवन्त्येते भावा मोहसमुद्भवाः । यज्ञदानानि तीर्थानिव्रतानिनियमास्तथा ।३९
अहङ्काराभिभूतस्तु करोति पुरुषोऽन्वहम् । अहं भावकृतं सर्वंप्रभवेद्वै न शौचवत् ।४०
रागलोभात्कृतं कर्म सर्वाङ्गं शुद्धिवर्जितम् । प्रथमं द्रव्यशुद्धिश्चद्रष्टव्याविबुधैः किल ।४१
अद्रोहेणार्जितं द्रव्यं प्रशस्तं धर्मकर्मणि । द्रोहार्जितेन द्रव्येण यत्करोति शुभं नरः ।४२

विपरीतं भवेत्तु फलकालेनृपोत्तम। मनोऽतिनिर्मलं तस्य स सम्यक्फलभाग्भवेत्। ४३
तस्मिन्विकारयुक्ते तु न यथार्थफलं लभेत्। कर्तारःकर्मणांसर्वेआचार्यऋत्विजादयः। ४४
स्युस्ते विशुद्धमनसस्तदा पूर्णं भवेत्फलम्। देशकालक्रिया द्रव्यकर्तॄणांशुद्धतायदि। ४५
मन्त्राणां च तदा पूर्णं कर्मणांफलमश्नुते। शत्रूणां नाशमुद्दिश्यस्वबुद्धिं परमां तथा। ४६
करोतिसुकृतं तद्वद्विपरीतं भवेत्किल। स्वार्थसक्तःपुमान्नित्यं नजानाति शुभाशुभम्। ४७
दैवाधीनः सदा कुर्य्यात्पापमेव न सत्कृतम्। प्राजापत्याः सुराः सर्वेह्यसुराश्चतदुद्भवाः। ४८
सर्वे ते स्वार्थनिरताः परस्परविरोधिनः। सत्त्वोद्भवाःसुराःसर्वेऽप्युक्तावेदेषुमानुषाः। ४९
रजोद्भवास्तामसास्तु तिर्यञ्चःपरिकीर्तिताः। सत्त्वोद्भवानां तैर्वैरं परस्परमनारतम्। ५०
तिरश्चामत्र किं चित्रं जातिवैरसमुद्भवे। सदा द्रोहपरा देवास्तपोविघ्नकरास्तथा। ५१
असन्तुष्टा द्वेषपराः परस्परविरोधिनः, अहङ्कारसमुद्भूतः
संसारोऽयं यतो नृपः, रागद्वेषविहीनस्तु स कथं जायते नृप! ॥५२॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे अथमजगतःस्थितिवर्णनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

* पञ्चमोऽध्यायः *

नरनारायणकथावर्णनम्

व्यास उवाच

अथ किं बहुनोक्तैनसंसारेस्मिन्नृपोत्तम। धर्मात्माद्रोहबुद्धिस्तुकश्चिद्भवतिकर्हिचित्। १
रागद्वेषावृतं विश्वं सर्वस्थावरजङ्गमम्। आद्ये युगेऽपि राजेन्द्र किमद्यकलिदूषिते। २
देवाः सेर्ष्याश्च सद्रोहाश्छलकर्मरताः सदा। मानुषाणांतिरश्चांचकावार्तानृपगण्यते। ३
द्रोहपरे द्रोहपरो भवेदिति समानता। अद्रोहिणि तथा शान्ते विद्वेषः खलता स्मृता। ४
यः कश्चित्तापसः शान्तोजपध्यानपरायणः। भवेत्तस्य जपेविघ्नकर्ता वै मघवा परम्। ५
सतां सत्ययुगं साक्षात्सर्वदैवाऽसतां कलिः। मध्यमो मध्यमानां तु क्रियायोगौ युगेस्मृतौ। ६
कश्चित्कदाचिद्भवति सत्यधर्मानुवर्तकः। अन्यथाऽन्ययुगानांवै सर्वे धर्मपरायणाः। ७
वासना कारणं राजन्सर्वत्र धर्मसंस्थितौ। तस्यांवैमलिनायांतुधर्मोऽपिमलिनोभवेत्। ८
मलिना वासना सत्यं विनाशयति सर्वथा। ब्रह्मणो हृदयाज्जातः पुत्रो धर्म इति स्मृतः। ९
ब्राह्मणः सत्यसम्पन्नो वेदधर्मरतः सदा। दक्षस्य दुहितारो हि वृतादश महात्मना। १०
विवाहविधिनासम्यङ् मुनिनागृहधर्मिणा। तास्वजीजनयत्पुत्रान्धर्मःसत्यवतांवरः। ११
हरिंकृष्णं नरंचैव तथा नारायणं नृप। योगाभ्यासरतो नित्यं हरिः कृष्णो बभूव ह। १२
नरनारायणौ चैव चेरतुस्तप उत्तमम्। प्रालेयाद्रिं समागत्य तीर्थे बदरिकाश्रमे। १३
तपस्विषु धुरीणौतौ पुराणौ मुनिसत्तमौ। गृणन्तौ तत्परं ब्रह्म गङ्गाया विपुले तटे। १४
हरेरंशौस्थितौ तत्र नरनारायणावृषी। पूर्णंवर्षसहस्रन्तु चक्राते तप उत्तमम्। १५
तापितञ्च जगत्सर्वं तपसा सचराचरम्। नरनारायणाभ्याञ्च शक्रः क्षोभं तदा ययौ। १६
चिन्ताविष्टः सहस्राक्षोमनसा समकल्पयत्। किं कर्तव्यं धर्मपुत्रौ तापसौ ध्यानसंयुतौ। १७
सिद्धार्थौ सुभृशं श्रेष्ठमासनं न ग्रहीष्यतः। विघ्नः कथं प्रकर्तव्यस्तपो येन भवेन्न हि। १८
उत्पाद्यकामंक्रोधञ्चलोभंवाऽप्यतिदारुणम्। इत्युद्दिश्यसहस्राक्षःसमारुह्यगजोत्तमम्। १९
विघ्नकामस्तु तरसा जगामगन्धमादनम्। गत्वातत्राऽऽश्रमेपुण्येतावपश्यच्छतक्रतुः। २०
तपसा दीप्तदेहौ तु भास्कराविव चोदितौ। ब्रह्मविष्णू किमेतौ वै प्रकटौ वा विभावसू। २१

धर्मपुत्रावृषी एतौ तपसा किं करिष्यतः। इतिसञ्चिंत्य तौ दृष्ट्वा तदोवाचशचीपतिः।२२
किंवांकार्यमहाभागौब्रूतंधर्मसुतौकिल ।ददामि वां वरं श्रेष्ठं दातुंयातोऽस्म्यहमृषी।२३
अदेयमपि दास्यामि तुष्टोऽस्मि तपसा किल ।

व्यास उवाच

एवं पुनः पुनः शक्रस्तावुवाच पुरः स्थितः ।।२४।।
नोचतुस्तावृषी ध्यानसंस्थितौ दृढचेतसौ। ततोवैमोहिनींमायां चकारभयदां वृषः।२५
वृकान्सिंहांश्चव्याघ्रांश्चसमुत्पाद्याविभीषयत्। वर्षवातं तथा वह्निं समुत्पाद्यपुनःपुनः।२६
भीषयामास तौ शक्रो मायां कृत्वा विमोहिनीम्। भयतोऽपि वशं नीतौ न तौ धर्मसुतौ मुनी।२७
नरनारायणौ दृष्ट्वा शक्रः स्वभवनं गतः।वरदानेप्रलुब्धौ न न भीतौ वह्निवायुतः।२८
व्याघ्रसिंहादिभिः क्रान्तौ चलितौ नाश्रमात्स्वकात् ।
न तयोर्ध्यानभङ्गं वै कर्तुं कोऽपि क्षमोऽभवत् ।।२६।।
इन्द्रोऽपिसदनंगत्वाचिन्तयामासदुःखितः। चलितौभयलोभाभ्यांनेमौमुनिवरोत्तमौ।३०
चिन्तयन्तौमहाविद्यामादिशक्तिसनातनीम् ।ईश्वरींसर्वलोकानां परां प्रकृतिमद्भुताम्।३१
ध्यायतां कः क्षमोलोकेबहुमायाविदप्युत। यन्मूलाः सकलामाया देवासुरकृताःकिल।३२
ते कथं बाधितुं शक्ताध्यायन्तिगतकल्मषाः। वाग्बीजंकामबीजं च मायाबीजंतथैवच।३३
चित्तेयस्यभवेत्तंतुबाधितुंकोऽपिन क्षमः। माययामोहितःशक्रोभूयस्तस्यप्रतिक्रियाम्।३४
कर्तुं कामवसन्तौतु समाहूयाऽब्रवीद्वचः।मनोभववसन्तेन रत्यायुक्तो व्रजाऽधुना।३५
अप्सरोभिः समायुक्तस्तरसा गन्धमादनम्।नरनारायणौ तत्र पुराणावृषिसत्तमौ।३६
कुरुतस्तप एकान्ते स्थितौ बदरिकाश्रमे।गत्वा तत्र समीपे तु तयोर्मन्मथमार्गणैः।३७
चित्तं कामातुरं कार्यं कुरु कार्य ममाऽधुना। मोहयित्वोच्चाटयित्वा विशिखैस्ताडयाऽऽशु च।३८
वशीकुरुमहाभाग मुनीधर्मसुतावपि। को ह्यस्मिन्सर्वसंसारे देवो दैत्योऽथ मानवः।३६
यस्तेबाणवशंप्राप्तोन यातिभृशताडितः। ब्रह्माऽहंगिरिजानाथश्चन्द्रोबह्निर्विमोहितः।४०
गणनाकाऽनयोःकामत्वद्बाणानांपराक्रमे ।वाराङ्गनागणोऽयं ते सहायार्थंमयेरितः।४१
आगमिष्यति तत्रैव रम्भादीनां मनोरमः। एका तिलोत्तमारम्भाकार्यंसाधयितुंक्षमा।४२
त्वमेवैकःक्षमःकामंमिलितैकस्तुसंशयः ।कुरु कार्यं महाभाग ददामि तववाञ्छितम्।४३
प्रलोभितौ मयाऽत्यर्थं वरदानैस्तपस्विनौ। स्थानान्न चलितौ शान्तौ वृथाऽयं मे गतः श्रमः।४४
तथावैमाययाकृत्वाभीषितौतापसौभृशम् ।तथाऽपिनोत्थितौस्थानाद्देहरक्षापरौनतौ।४५

व्यास उवाच

इतितस्यवचःश्रुत्वा शक्रंप्राहमनोभवः। वासवाद्य करिष्यामि कार्यन्तेमनसेप्सितम्।४६
यदिविष्णुंमहेशंवाब्रह्माणंवादिवाकरम् ।ध्यायन्तौतौतदाऽस्माकंभवितारौवशौमुनी।४७
देवीभक्तं वशकर्तुं नाहं शक्तः कथञ्चन। कामराजं महाबीजं चिन्तयन्तं मनस्यलम्।४८
तांदेवींचेन्महाशक्तिं संश्रितौभक्तिभावतः। न तदा मम बाणानांगोचरौतापसौकिल।४६

इन्द्र उवाच

गच्छ त्वं च महाभाग सर्वैस्तत्रसमुद्यतैः। कार्यं ममातिदुःसाध्यंकर्ताहितमनुत्तमम्।५०

व्यास उवाच

इतितेनसमादिष्टा ययुः सर्वे समुद्यताः।तत्र तौ धर्मपुत्रौ द्वौ तेपाते दुष्करन्तपः।५१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां चतुर्थस्कन्धे नरनारायणकथावर्णनंनामपञ्चमोऽध्यायः ।। ५ ।।

* षष्ठोऽध्यायः *

नरनारायणयोःसमीपेवसन्तगमनम्

व्यास उवाच

प्रथमं तत्र सम्प्राप्तो वसन्तःपर्वतोत्तमे। पुष्पिताःपादपाः सर्वे द्विरेफालिविराजिताः। १
आम्राश्च बकुला रम्यास्तिलकाः किंशुकाः शुभाः।
सालास्तालास्तमालाश्च मधूकाः पुष्पिता बभुः ॥२॥
बभूवुः कोकिलाऽऽलापा वृक्षाग्रेषु मनोहराः। बल्ल्योऽपि पुष्पिताः सर्वा आलिलिंगुर्नगोत्तमान्। ३
प्राणितः स्वासुभार्यासु प्रेमयुक्ताःस्मराऽऽतुराः। बभूवुश्चातिमत्ताश्च क्रीडासक्ताः परस्परम्। ४
ववुर्मन्दाःसुगन्धाश्च सुस्पर्शा दक्षिणाऽनिलाः। इन्द्रियाणि प्रमाथीनि मुनीनामपि चाऽभवन्। ५
रतियुक्तस्ततः कामःपूरयन्पञ्चमार्गणान्। चकारत्वरितस्तत्र वासं बदरिकाऽश्रमे। ६
रम्भातिलोत्तमाद्याश्च गत्वातत्रवराऽऽश्रमे। गानञ्चक्रुःसुगीतज्ञाःस्वरतानसमन्वितम्। ७
तच्छ्रुत्वामधुरोद्गीतंकोविलानाञ्चकूजितम्। भ्रमरालिविरावञ्चप्रबुद्धौ तौ मुनीश्वरौ। ८
ऋतुराजमकाले तु दृष्ट्वा तौ पुष्पितंवनम्। जातौचिन्तापरौतत्र नरनायणावृषी। ९
किमद्यशिशिरापायःसम्वृत्तःसमयंविना। प्राणिनोविह्वलाःसर्वेलक्ष्यंतेऽतिस्मरातुराः। १०
कालधर्मविपर्यासःकथमद्य दुरासदः। नरं नारायणः प्राह विस्मयोत्फुल्ललोचनः। ११

नारायण उवाच

पश्य भ्रातरिमे वृक्षाः पुष्पिताः प्रतिभांति वै। कोकिलाऽऽलापसंघुष्टा भ्रमरालिविराजिताः। १२
शिशिरं भीममातङ्गं दारयन्स्वखरैर्नखैः। वसन्तकेशरी प्राप्तः पलाशकुसुमैर्मुने। १३
रक्तशोककरा तन्वी देवर्षे किंशुकांघ्रिका। नीलाऽशोककचा श्यामा विकासिकमलाऽऽनना। १४
नीलेन्दीवरनेत्रा सा बिल्ववृक्षफलस्तनी। प्रोत्फुल्लकुन्दरदना मञ्जरीकर्णशोभिता। १५
बन्धुजीवाधराशुभ्रा सिन्धुवारनखाद्भुता। पुंस्कोकिलस्वरापुण्या कदम्बवसनाशुभा। १६
बर्हिवृन्दकलापाचसारसस्वननूपुरा। वासन्तीबद्धरशना मत्तहंसगतिस्तथा। १७
पुत्रजीवांशुकन्यस्तरोमराजिविराजिता। वसन्तलक्ष्मीः सम्प्राप्ता ब्रह्मन्बदरिकाश्रमे। १८
अकाले किमियम्प्राप्ता विस्मयोयंममाऽधुना। तपोविघ्नकरानूनं देवर्षे परिचिन्तय। १९
श्रूयते सुरनारीणां गानं ध्यानविनाशनम्। आवयोस्तपिभङ्गाय कृतं मघवता किल। २०
ऋतुराडन्यथाऽकाले प्रीतिं सञ्जनयेत्कथम्। विघ्नोऽयं विहितो भाति भीतेनाऽसुरशत्रुणा। २१
वाताःसुगन्धाःशीताश्च समायान्तिमनोहराः। नान्यत्कारणमस्तीहशतक्रतुकृतिंविना। २२
इति ब्रुवति विप्राऽग्र्ये देवेनारायणेविभौ। सर्वे दृष्टिपथं प्राप्ता मन्मथप्रमुखास्तदा। २३
ददर्श भगवान्सर्वान्नरो नारायणस्तथा। विस्मयाविष्टमनसौ बभूवतुरुभावपि। २४
मन्मथंमेनकाञ्चैव रम्भाञ्चैव तिलोत्तमाम्। पुष्पगन्धांसुकेशीञ्च महाश्वेतांमनोरमाम्। २५
प्रमद्वरांघृताचीञ्चगीतज्ञांचारुहासिनीम्। चन्द्रप्रभाञ्चसोमाञ्चकोकिलालापमण्डिताम्। २६
विद्युन्मालाम्बुजाक्षीं च तथा काञ्चनमालिनीम्। एताश्चान्या वरारोहा दृष्टास्ताभ्यां तदाऽन्तिके। २७
तासां द्व्यष्टसहस्राणि पञ्चाशदधिकानि च। वीक्ष्य तौ विस्मितौ जातौ कामसैन्यं सुविस्तरम्। २८
प्रणम्याऽग्रे स्थिताः सर्वा देववाराङ्गनास्तदा। दिव्याऽऽभरणभूषाढ्या दिव्यमाल्योपशोभिताः। २९
जगुश्छलेनताःसर्वाःपृथिव्यामतिदुर्लभम्। तत्तथाऽवस्थितंदिव्यंमन्मथातिविवर्धनम्। ३०
शुश्रावभगवान्विष्णुर्नरोनारायणस्तदा। श्रुत्वाप्रोवाचतास्तत्रप्रीत्यानारायणोमुनिः। ३१
आस्यतां सुखमत्रैव करोम्यातिथ्यमद्भुतम्। भवन्त्योऽतिथिधर्मेण प्राप्ताः स्वर्गात्सुमध्यमाः। ३२

व्यास उवाच

साभिमानस्तुसञ्जातस्तदा नारायणोमुनिः। इन्द्रेणप्रेषितानूनंतथा विघ्नचिकीर्षया।३३
वराक्यःकाइमाःसर्वाःसृजाम्यद्यनवाःकिलः। एताभ्योदिव्यरूपाश्चदर्शयामितपोबलम्।३४
इतिसञ्चिन्त्यमनसा करेणोरुंप्रताड्य वै। तरसोत्पादयामास नारीं सर्वाङ्गसुन्दरीम्।३५
नारायणोरुसम्भूता ह्युर्वशीति ततः शुभा। ददृशुस्ताःस्थितास्तत्रविस्मयंपरमंययुः ।३६
तासाञ्चपरिचर्यार्थं तावतीश्चातिसुन्दरीः। प्रादुश्चकारतरसा तदा मुनिरसम्भ्रमः।३७
गायन्त्यश्चहसन्त्यश्चनानोपायनपाणयः ।प्रणेमुस्तामुनीसर्वाःस्थिताःकृत्वाऽञ्जलिंपुरः।३८
ता वीक्ष्य विभ्रमकरीं तपसो विभूतिं देवाङ्गनाहि मुमुहुः प्रविमोहयन्त्यः।
ऊचुश्च तौ प्रमुदिताननपद्मशोभा रोमोद्गमोल्लसितचारुनिजाङ्गवल्ल्यः।३९
कुर्युः कथं स्तुतिमहो तपसो महत्त्वं धैर्यंतथैव भवतामभिवीक्ष्य बालाः।
अस्मत्कटाक्षविषदिग्धशरेणदग्धः को वा न तत्र भवतां मनसो व्यथा न।४०
ज्ञातौ युवां नरहरेः परमांशभूतौ देवौ मुनी शमदमादिनिधी सदैव।
सेवानिमित्तमिह नो गमनं न कामं कार्यं हरेः शतमखस्य विधातुमेव।४१
भाग्येन केन युवयोः किलदर्शनं नः सम्पादितं न विदितं खलु संचितं तत्।
चित्तं क्षमं निजजने विहितं युवाभ्यामस्मद्विधे किल कृतागसि तापमुक्तम्।४२
कुर्वन्ति नैव विबुधास्तपसो व्ययं वै शापेन तुच्छफलदेन महानुभावाः।

व्यास उवाच

इत्थं निशम्य वचनं सुरकामिनीनां तावूचतुर्मुनिवरौ विनयानतानाम्।४३
प्रीतौ प्रसन्नवदनौ जितकामलोभौ धर्मात्मजौ निजतपोरुचिशोभिताङ्गे।

नरनारायणावूचतुः

ब्रुवन्तु वाञ्छितान्कामान्ददावस्तुष्टमानसौ ।।४४।।
यान्तु स्वर्गं गृहीत्वेमामुर्वशीं चारुलोचनाम्। उपायनमियं बाला गच्छत्वद्य मनोहरा।४५
दत्ताऽऽवाभ्यांमघवतः प्रीणनायोरुसम्भवा। स्वस्त्यस्तुसर्वदेवेभ्योयथेष्टंप्रव्रजन्तुच ।४६
न कस्याऽपि तपोविघ्नं प्रकर्तव्यमतः परम्।

देव्य ऊचुः

क्व गच्छामो महाभाग प्राप्तास्ते पादपङ्कजम्। नारायणसुरश्रेष्ठ भक्त्या परमया मुदा।४७
वाञ्छितञ्चेद्वरंनाथ ददासि मधुसूदन। तुष्टः कमलपत्राक्ष ब्रवीमो मनसेप्सितम्।४८
पतिस्त्वं भवदेवेश वरमेनं परन्तप। भवामः प्रीतियुक्तास्त्वां सेवितुं जगदीश्वर।४९
त्वया चोत्पादिता नार्यःसन्त्वन्याश्चारुलोचनाः। उर्वश्याद्यास्तथा यान्तु स्वर्गम्वै भवदाज्ञया।५०
स्त्रीणांषोडशसाहस्त्रंतिष्ठत्वत्रशतार्धकम्। सेवान्तेऽत्रकरिष्यामोयुवयोस्तापसोत्तमौ।५१
वाञ्छितंदेहि देवेश सत्यवाग्भव माधव। आशाभङ्गोहिनारीणांहिंसनंपरिकीर्तितम्।५२
कामार्तानां च मुनिभिर्धर्मज्ञैस्तत्त्वदर्शिभिः। भाग्ययोगादिह प्राप्ताः स्वर्गात्प्रेमपरिप्लुताः।५३
त्यक्तुं नाऽर्हसि देवेश! समर्थोऽसि जगत्पते!।

नारायण उवाच

पूर्णं वर्षसहस्रं तु तपस्तप्तं मयाऽत्र वै ।।५४।।
जितेन्द्रियेण चार्वंग्यः कथं भङ्गं करोम्यतः। नेच्छाकामेसुखेकाचित्सुखधर्मविनाशके।५५
पशूनामपि साधर्म्ये रमेत मतिमान्कथम्।

अप्सरस ऊचुः

शब्दादीनां च पञ्चानां मध्ये स्पर्शसुखं वरम् ।।५६।।

आनन्दरसमूलंवै नान्यदस्तिसुखं किल। अतोऽस्माकंमहाराज वचनं कुरु सर्वथा।५७
निर्भरं सुखमासाद्यचरस्वगन्धमादने ।
यदिवाञ्छसिनाकत्वंनाऽधिकोगन्धमादनात् ॥५८॥
रमस्वाऽत्र शुभे स्थाने प्राप्य सर्वाःसुराङ्गनाः ।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां तृतीयस्कन्धे अप्सरसांनारायणसमीपेप्रार्थनाकरणंनामषष्ठोऽध्यायः ॥६॥

* सप्तमोऽध्यायः *

अहङ्कारावर्तनवर्णनम्

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्य वचस्तासां धर्मपुत्रः प्रतापवान्। विमर्शमकरोच्चित्तेकिं कर्तव्यंमयाऽधुना।१
हास्योऽहं मुनिवृन्देषुभविष्याम्यद्यसङ्गमात्। अहङ्कारादिदंप्राप्तंदुःखंनाऽत्रविचारणा ।
मूलं धर्मविनाशस्य प्रथमं यदहंकृतिः ॥२॥
मूलं संसारवृक्षस्ययतः प्रोक्तोमहात्मभिः। दृष्ट्वामौनंसमाधायनस्थितोऽहंसमागतम्।३
वाराङ्गनागणं जुष्टं तेनाऽऽसंदुःखभाजनम्। उत्पादितास्तथानार्योमयाधर्मव्ययेनवै।४
तास्तुमां बाधितुंवृत्ताःकामार्ताःप्रमदोत्तमाः। ऊर्णनाभिरिवाद्याऽहंजालेनस्वकृतेनवै।५
बद्धोऽस्मि सुदृढेनाऽत्र किंकर्तव्यमितः परम्। यदि चिन्तां समुत्सृज्यसंत्यजाम्यबला इमाः।६
शप्त्वा भ्रष्टा व्रजिष्यन्ति सर्वाभग्नमनोरथाः। मुक्तोऽहंसञ्चरिष्यामिविजनेपरमं तपः ।७
तस्मात्क्रोधं समुत्पाद्य त्यक्षामि सुन्दरीगणम् ।

व्यास उवाच

इति संचिन्त्यमनसा मुनिर्नारायणस्तदा ॥८॥
विमर्शमकरोच्चित्ते सुखोत्पादनसाधने। द्वितीयोऽयं महाशत्रुः क्रोधः संतापकारकः।९
कामादप्यधिको लोके लोभादपि च दारुणः। क्रोधाभिभूतः कुरुते हिंसां प्राणविघातिनीम्।१०
दुःखदां सर्वभूतानां नरकारामदीर्घिकाम्। यथाग्निर्घर्षणाज्ञातः पादपं प्रदहेत्तथा।११
देहोत्पन्नस्तथा क्रोधो देहं दहति दारुणः ।

व्यास उवाच

इति संचिन्त्यमानं तं भ्रातरं दीनमानसम् ॥१२॥
उवाच वचनं तथ्यं नरो धर्मसुतोऽनुजः ।

नर उवाच

नारायण! महाभाग! कोपं यच्छ महामते! ॥१३॥
शान्तम्भावंसमाश्रित्यनाशयाऽहंकृतिंपराम्। पुराहंकारदोषेणतपोनष्टंकिलाऽऽवयोः।१४
संग्रामश्चाभवत्ताभ्यां भावाभ्यामसुरेण ह। दिव्यवर्षसहस्रं तु प्रह्लादेन महाद्भुतम्।१५
दुःखं बहुतरं प्राप्तं तत्राऽऽवाभ्यांसुरोत्तम। तस्मात्क्रोधंपरित्यज्यशांतोभवमुनीश्वर।१६
"शान्तत्वं तपसोमूलं मुनिभिः परिकीर्तितम् ।"

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा शान्तोऽभूद्धर्मनन्दनः ।

जनमेजय उवाच

संशयोऽयं मुनिश्रेष्ठ! प्रह्लादेन महात्मना ॥१७॥
विष्णुभक्तेन शान्तेन कथं युद्धं कृतं पुरा। कृतवन्तौ कथं युद्धं नरनारायणवृषी।१८
तापसौ धर्मपुत्रौद्वौ सुशान्तमानसावुभौ। समागमः कथं जातस्तयोर्दैत्यसुतस्य च।१९

संग्रामस्तु कथंताभ्यांकृतस्तेनमहात्मना। प्रह्लादोप्यतिधर्मात्माज्ञानवान्विष्णुतत्परः।२०
नरनारायणौ तद्वत्तापसौ सत्त्वसंस्थितौ। तेन ताभ्यां समुद्भूतं वैरं यदि परस्परम्।२१
तदा तपसि धर्मेच श्रमएवहि केवलम्। क्व जपः क्व तपश्चर्या पुरा सत्ययुगेऽपि च।२२
तादृशैर्न जितंचित्तं क्रोधाऽहङ्कारसंवृतम्। न क्रोधो न च मात्सर्यमहङ्काराङ्कुरंविना।२३
अहङ्कारात्समुत्पन्नाः कामक्रोधादयः किल। वर्षकोटिसहस्रंतुतपःकृत्वाऽतिदारुणम्।२४
अहङ्काराङ्कुरे जाते व्यर्थं भवतिसर्वथा। यथा सूर्योदये जाते तमोरूपं न तिष्ठति।२५
अहङ्काराङ्कुरस्याऽग्रे तथा पुण्यं न तिष्ठति। प्रह्लादोऽपि महाभाग हरिणासमयुध्यत।२६
तदाव्यर्थं कृतं सर्वं सुकृतं किल भूपते। नरनारायणौ शान्तौ विहाय परमं तपः।२७
कृतवन्तौ यदायुद्धं क्व शमः सुकृतं पुनः। ईदृग्भ्यां सत्त्वयुक्ताभ्यामजेया यद्यहंकृतिः।२८
मादृशानां च का वार्ता मुनेऽहंकारसंक्षये। अहङ्कारपरित्यक्तः कोप्यऽस्तिभुवनत्रये।२९
न भूतो भविता नैव यस्त्यक्तस्तेन सर्वथा। मुच्यते लोहनिगडैर्बद्धः काष्ठमयैस्तथा।३०
अहङ्कारनिबद्धस्तु न कदाचिद्विमुच्यते। अहङ्काराऽऽवृतं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्।३१
भ्रमत्येव हि संसारे विष्ठामूत्रप्रदूषिते। ब्रह्मज्ञानं कुतस्तावत्संसारे मोहसंवृते।३२
मतं मीमांसकानां वैसम्मतंभातिसुव्रत। महान्तोऽपिसदायुक्ताःकामक्रोधादिभिर्मुने।३३
मादृशानां कलावस्मिन्का कथा मुनिसत्तम! ।

व्यास उवाच

कार्यं वै कारणाद्भिन्नं कथं भवति भारत! ।।३४।।
कटकं कुण्डलं चैव सुवर्णसदृशं भवेत्। अहङ्कारोद्भवं सर्वं ब्रह्माण्डं सचराचरम्।३५
पटस्तंतुवशः प्रोतस्तद्वियुक्त कथंभवेत्। मायागुणैस्त्रिभिःसर्वंरचितंस्थिरजङ्गमम्।३६
सतृणस्तम्बपर्यन्तं का तत्र परिदेवना। ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रस्तेचाहङ्कारमोहिताः।३७
भ्रमन्त्यस्मिन्महागाधे संसारे नृपसत्तम। वशिष्ठनारदाद्याश्च मुनयोज्ञानिनः परम्।३८
तेऽभिभूताः संसरन्ति संसारेऽस्मिन्पुनःपुनः। न कोऽप्यस्ति नृपश्रेष्ठ:! त्रिषु लोकेषु देहभृत्।३९
एभिर्मायागुणैर्मुक्तः शान्तआत्मसुखे स्थितः। कामःक्रोधो तथा लोभो मोहोऽहङ्कारसम्भवः।४०
मुञ्चन्ति नरं सर्वं देहवन्तं नृपोत्तम। अधीत्य वेदशास्त्राणिपुराणानिविचिन्त्यच।४१
कृत्वा तीर्थाटनं दानं ध्यानंचैवसुराऽर्चनम्। करोति विषयासक्तःसर्वकर्मचचौरवत्।४२
विचारयति नो पूर्वं काममोहमदान्वितः। कृते युगेऽपि त्रेतायां द्वापरे कुरुनन्दन!।४३

विद्धोऽत्रास्ति च धर्मोऽपि का कथाऽद्य कलौ पुनः ।
स्पर्धा सदैव सद्द्रोहा लोभामर्षौ च सर्वदा ।।४४।।
एवं विधोऽस्ति संसारो नाऽत्र कार्या विचारणा ।
साधवो विरला लोके भवन्ति गतमत्सराः ।।४५।।
जितक्रोधा जितामर्षा दृष्टान्तार्थं व्यवस्थिताः ।

राजोवाच

ते धन्याः कृतपुण्यास्ते मदमोहविवर्जिताः ।।४६।।
जितेन्द्रियाः सदाचारा जितंतैर्भुवनत्रयम्। दुनोमि पातकंस्मृत्वापितुर्ममहात्मनः।४७
कृतस्तपस्विनः कण्ठे मृतसर्पोह्यघं विना। अतस्तस्य मुनिश्रेष्ठ भविता किं ममाग्रतः।४८
न जाने बुद्धिसंमोहात्किंवा कार्यं भविष्यति। मधुपश्यतिमूढात्मा प्रपातंनैवपश्यति।४९
करोति निन्दितं कर्म नरकान्न बिभेति च। कथं युद्धं पुरा वृत्तं विस्तरात्तद्वदस्य मे।५०

प्रह्लादेन यथा चोग्रं नरनारायणस्य वै। प्रह्लादस्तु कथं यातः पातालात्तद्वदस्व मे।५१
सारस्वते महातीर्थे पुण्ये बदरिकाश्रमे। नरनारायणौ शान्तौ तापसौ मुनिसत्तमौ।५२
कृतवन्तौ तथा युद्धं हेतुना केन मानद। वैरं भवति वित्तार्थं दारार्थं वा परस्परम्।५३
एषणारहितौ कस्माच्चक्रतुः प्रधनं महत्। प्रह्लादोऽपिच धर्मात्माज्ञात्वादेवौसनातनौ।५४
कृतवान्स कथं युद्धं नरनारायणौमुनी। एतद्विस्तरतोब्रह्मञ्छ्रोतुमिच्छामि कारणम्।५५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे अहङ्कारावर्तनवर्णनंनामसप्तमोऽध्यायः ।।७।।

* अष्टमोऽध्यायः *

च्यवनमुनिनापातालेप्रह्लादसमीपेगमनम्

सूत उवाच

इतिपृष्टस्तदा विप्रोराज्ञा पारीक्षितेन वै। उवाच विस्तरात्सर्वं व्यासःसत्यवतीसुतः।१
जनमेजयोऽपि धर्मात्मा निर्वेदं परमं गतः। चित्तं दुश्चरितं मत्वा वैराटीतनयस्यवै।२
तस्यैवोद्धरणार्थाय चकार सततं मनः। विप्रावमानपापेन यमलोकंगतस्य वै।३
पुन्नामनरकाद्यस्मात्त्रायते पितरं स्वकम्। पुत्रेतिनाम सार्थं स्यात्तेन तस्यमुनीश्वराः।४
सर्पदष्टं नृपं श्रुत्वा हर्म्योपरिमृतं तथा। विप्रशापादौत्तरेयं स्नानदानविवर्जितम्।५
पितुर्गतिं निशम्याऽसौ निर्वेदंगतवान्नृपः। पारीक्षितो महाभागः सन्तप्तोभयविह्वलः।६
पप्रच्छाऽथ मुनिं व्यासं गृहागतमनिन्दितः। नरनारायणस्येमांकथांपरमविस्तृताम् ।७

व्यास उवाच

स यदा निहतो रौद्रोहिरण्यकशिपुर्नृप। अभिषिक्तस्तदा राज्येप्रह्लादो नाम तत्सुतः।८
तस्मिञ्छासति दैत्येन्द्रे देवब्राह्मणपूजके। मखैर्भूभ्यांनृपतयोयजन्तः श्रद्धयाऽन्विताः।९
ब्राह्मणाश्च तपोधर्मतीर्थयात्राश्च कुर्वते। वैश्याश्चस्वस्ववृत्तिस्थाःशूद्राः शुश्रूषणेरताः।१०
नृसिंहेन च पाताले स्थापितः सोऽथ दैत्यराट्। राज्यंचकारतत्रैवप्रजापालनतत्परः ।११
कदाचिद् भृगुपुत्रोऽथ च्यवनाख्यो महातपाः। जगाम नर्मदां स्नातुं तीर्थं वै व्याहृतीश्वरम्।१२
रेवां महानदीं दृष्ट्वा ततस्तस्यामवातरत्। उत्तरन्तं प्रजग्राह नागो विषभयङ्करः।१३
गृहीतो भयभीतस्तु पाताले मुनिसत्तमः। सस्मार मनसा विष्णुं देवदेवं जनार्दनम्।१४
संस्मृते पुण्डरीकाक्षे निर्विषोऽभून्महोरगः। न प्रापच्च्यवनोदुःखंनीयमानोरसातलम्।१५
द्विजिह्वेनमुनिस्त्यक्तोनिर्विण्णेनाऽतिशङ्किना। मांशपेतमुनिक्रुद्धस्तापसोऽयंमहानिति।१६
चचार नागकन्याभिः पूजितो मुनिसत्तमः। विवेशाप्यथनागानांदानवानांमहत्पुरम्।१७
कदाचिद् भृगुपुत्रंतं विचरन्तं पुरोत्तमे। ददर्शदैत्यराजोऽसौ प्रह्लादो धर्मवत्सलः।१८
दृष्ट्वा तं पूजयामास मुनिं दैत्यपतिस्तदा। पप्रच्छ कारणं किं ते पातालगमने वद।१९
प्रेषितोऽसि किमिन्द्रेण सत्यं ब्रूहि द्विजोत्तम। दैत्यविद्वेषयुक्तेनमम राज्यदिदृक्षया।२०

च्यवन उवाच

किं मे मघवता राजन्यदहं प्रेषितः पुनः। दूतकार्यं प्रकुर्वाणः प्राप्तवान्नगरे तव।२१
विद्धि मां भृगुपुत्रं तं स्वनेत्रं धर्मतत्परम्। मा शङ्कां कुरु दैत्येन्द्र वासवप्रेषितस्यवै।२२
स्नानार्थं नर्मदां प्राप्तः पुण्यतीर्थे नृपोत्तमः। नद्यामेवावतीर्णोऽहं गृहीतश्च महाहिना।२३
जातोऽसौ निर्विषं सर्पो विष्णोः संस्मरणादिव। मुक्तोऽहं तेन नागेन प्रभावात्स्मरणस्य वै।२४

अत्राऽऽगतेनराजेन्द्रमयाऽऽप्तंतवदर्शनम् । विष्णुभक्तोऽसिदैत्येन्द्रतद्भक्तंमांविचिन्तय ।२५

व्यास उवाच

तन्निशम्य वचःश्लक्ष्णंहिरण्यकशिपोःसुतः । प्रपच्छपरया प्रीत्या तीर्थानि विविधानि च ।२६

प्रह्लाद उवाच

पृथिव्यां कानि तीर्थानि पुण्यानि मुनिसत्तम! । पाताले च तथाऽऽकाशे तानि नो वद विस्तरात् ।२७

च्यवन उवाच

मनोवाक्काययुद्धानां राजंस्तीर्थं पदेपदे । तथा मलिनचित्तानां गङ्गाऽपि कीकटाधिका ।२८
प्रथमं चेन्मनः शुद्धं जातं पापविवर्जितम् । तदा तीर्थानिसर्वाणिपावनानि भवन्तिवै ।२९
गङ्गातीरे हि सर्वत्र वसन्तिनगराणि च । व्रजाश्चैवाकराग्रामाः सर्वे खेटास्तथाऽपरे ।३०
निषादानां निवासाश्च कैवर्तानां तथाऽपरे । हूणवङ्गखसानां च म्लेच्छानां दैत्यसत्तम ।३१
पिबन्ति सर्वदा गाङ्गं जलंब्रह्मोपमंसदा । स्नानं कुर्वन्ति दैत्येन्द्र त्रिकालं स्वेच्छयाजनाः । ३२
तत्रैकोऽपि विशुद्धात्मा न भवत्येवमारिष । किं फलं तर्हि तीर्थस्य विषयोपहतात्मसु । ३३
कारणं मनएवाऽत्र नाऽन्यद्राजन्विचिन्तय । मनः शुद्धिः प्रकर्तव्या सततं शुद्धिमिच्छता । ३४
तीर्थवासीमहापापी भवेत्तत्रान्यवञ्चनात् । तत्रैवाऽऽचरितं पापमानन्त्याय प्रकल्पते । ३५
यथेन्द्रवारुणं पक्वं मिष्टं नैवोपजायते । भावदुष्टस्तथा तीर्थेकोटिस्नातो न शुध्यति । ३६
प्रथमं मनसः शुद्धिः कर्तव्या शुभमिच्छता । शुद्धे मनसि द्रव्यस्य शुद्धिर्भवति नाऽन्यथा । ३७

तथैवाऽऽचारशुद्धिः स्यात्ततस्तीर्थं प्रसिद्ध्यति ।
अन्यथा तु कृतं सर्वं व्यर्थं भवति तत्क्षणात् ।।३८।।
"हीनवर्णस्यसंसर्गं तीर्थेगत्वा सदात्यजेत्" ।
भूतानुकम्पनंचैव कर्तव्यंकर्मणाधिया ।
यदि पृच्छसि राजेन्द्र! तीर्थं वक्ष्याम्यनुत्तमम् ।।३९।।

प्रथमं नैमिषंपुण्यं चक्रतीर्थंच पुष्करम् । अन्येषां चैव तीर्थानां संख्या नास्ति महीतले ।४०

पावनानि च स्थानानि बहूनि नृपसत्तम! ।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं राजा नैमिषं गन्तुमुद्यतः ।।४१।।
नोदयामास दैत्यान्वै हर्षनिर्भरमानसः ।

प्रह्लाद उवाच

उत्तिष्ठन्तु महाभागा! गमिष्यामोऽद्य नैमिषम् ।।४२।।
द्रक्ष्यामः पुण्डरीकाक्षं पीतवाससमच्युतम् ।

व्यास उवाच

इत्युक्ता विष्णुभक्तेन सर्वे ते दानवास्तदा ।।४३।।

तेनैवसहपातालान्निर्ययुः परया मुदा । ते समेत्य च दैतेया दानवाश्च महाबलाः ।४४
नैमिषारण्यमासाद्य स्नानं चक्रुर्मुदाऽन्विताः । प्रह्लादस्तत्र तीर्थेषु चरन्दैत्यैः समन्वितः ।४५
सरस्वतीं महापुण्यां ददर्शविमलोदकाम् । तीर्थे तत्र नृपश्रेष्ठ प्रह्लादस्य महात्मनः ।४६
मनः प्रसन्नं सञ्जातं स्नात्वा सारस्वतेजले । विधिवत्तत्र दैत्येन्द्रः स्नानदानादिकं शुभे ।४७

चकाराऽतिप्रसन्नात्मा तीर्थे परमपावने ।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे प्रह्लादतीर्थयात्रावर्णनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ।।८।।

नवमोऽध्यायः

प्रह्लादनारायणयोःसमागमवर्णनम्

व्यास उवाच

कुर्वंस्तीर्थविधिं तत्र हिरण्यकशिपोः सुतः। न्यग्रोधं सुमहच्छायमपश्यत्पुरतस्तदा।१
ददर्श बाणानपरान्नानाजातीयकांस्तदा। गृध्रपक्षयुतांस्तीव्राञ्छिलाधौतान्महोज्ज्वलान्।२
चिन्तयामास मनसा यस्येमे विशिखास्त्विह। ऋषीणामाश्रमेपुण्ये तीर्थे परमपावने।३
एवं चिन्तयताऽनेन कृष्णाजिनधरौ मुनी। समुन्नतजटाभारौ दृष्टौ धर्मसुतौ तदा।४
तयोरग्रे धृते शुभ्रे धनुषी लक्षणान्विते। शार्ङ्गमाजगवं चैव तथाऽक्षय्यौ महेषुधी।५
ध्यानस्थौ तौ महाभागौ नरनारायणावृषी। दृष्ट्वा धर्मसुतौ तत्र दैत्यानामधिपस्तदा।६
क्रोधरक्तेक्षणस्तां तु प्रोवाचाऽसुरपालकः। किंभवद्भ्यांसमारब्धोदम्भोधर्मविनाशनः।७
न श्रुतं नैव दृष्टं हि संसारेऽस्मिन्कदाऽपि हि। क्व तपश्चरणंतीव्रं तथाचापस्यधारणम्।८
विरोधोऽयं युगे चाऽऽद्ये कथं युक्तं कलिप्रियम्। ब्राह्मणस्यतपोयुक्तंतत्रकिं चापधारणम्।९
क्व जटाधारणं देहे क्वेषुधी च विडम्बनौ। धर्मस्याऽऽचरणं युक्तंयुवयोर्दिव्यभावयोः।१०

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा नरः प्रोवाच भारत। कातेचिन्ताऽत्रदैत्येन्द्रवृथातपसिचाऽऽवयोः।११
सामर्थ्ये सतियः कुर्यात्तत्संपद्येत तस्यहि। आवांकार्यद्वयेमन्दसमर्थौलोकविश्रुतौ।१२
युद्धे तपसि सामर्थ्यं त्वं पुनः किं करिष्यसि। गच्छमार्गे यथाकामंकस्मादत्रविकत्थसे।१३
ब्रह्मतेजो दुराराध्यं न त्वं वेद विमोहितः। विप्रचर्चान कर्तव्याप्राणिभिःसुखमीप्सुभिः।१४

प्रह्लाद उवाच

तापसौ मन्दबुद्धी स्थौ मृषा वां गर्भमोहितौ। मयि तिष्ठति दैत्येन्द्रे धर्मसेतुप्रवर्तके।१५
न युक्तमेतत्तीर्थेऽस्मिन्नधर्माऽऽचरणं पुनः। काशक्तिस्तवयुद्धेऽस्ति दर्शयाऽद्यतपोधन।१६

व्यास उवाच

तदाऽऽकर्ण्यवचस्तस्य नरस्तं प्रत्युवाचह। युध्यस्वाऽद्यमयासार्धंयदितेमतिरीदृशी।१७
अद्य ते स्फोटयिष्यामि मूर्धानमसुराधम। युद्धेश्रद्धानते पश्चाद्भविष्यति कदाचन

व्यास उवाच

तन्निशम्य वचस्तस्य दैत्येन्द्रः कुपितस्तदा।।१८।।
प्रह्लादो बलवानत्र प्रतिज्ञामारुरोह सः। येनकेनाप्युपायेन जेष्यामितावुभावपि।१९
नरनारायणौ दान्तावृषी तपिसमन्वितौ।

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा वचनं दैत्यः प्रतिगृह्य शरासनम्।।२०।।
आकृष्य तरसा चापं ज्याशब्दञ्च चकारह।
नरोऽपि धनुरादाय शतांस्तीव्राञ्छिलाशितान्।।२१।।
मुमोच बहुशःक्रोधात्प्रह्लादोपरि पार्थिव!।।२२।।
तान्दैत्यराजस्तपनीयपुंखैश्चिच्छेद बाणैस्तरसा समेत्य।
समीक्ष्य छिन्नांश्च नरः स्वसृष्टानन्यान्मुमोचाऽऽशु रुषाऽन्वितोवै।।२३।।
दैत्याऽधिपस्तानपि तीव्रवेगैश्छित्त्वा जघानोरसि तंमुनीन्द्रम्।
नरोऽपि तं पञ्चभिराशुगैश्च क्रुद्धोऽहनद्दैत्यपतिं बाहुदेशे।।२४।।

सेन्द्राःसुरास्तत्र तयोर्हि युद्धं द्रष्टुं विमानैर्गगनस्थिताश्च ।
नरस्य वीर्यं युधि संस्थितस्य ते तुष्टुवुर्दैत्यपतेश्च भूयः ।।२५।।
ववर्ष दैत्याधिप आत्तचापः शिलीमुखानम्बुधरो यथाऽऽपः ।
आदाय शार्ङ्गं धनुरप्रमेयं मुमोच बाणाञ्छितहेमपुंखान् ।।२६।।
बभूव युद्धं तुमुलं तयोस्तु जयैषिणो पार्थिवदेवदैत्ययोः ।
ववर्षुराकाशपथे स्थितास्ते पुष्पाणि दिव्यानि प्रहृष्टचित्ताः ।।२७।।
चुकोप दैत्याधिपतिर्हरौ स मुमोच बाणानतितीव्रवेगान् ।
चिच्छेद तान्धर्मसुतः सुतीक्ष्णैर्धनुर्विमुक्तैर्विशिखैस्तदाऽऽशु ।।२८।।

ततो नारायणंबाणैः प्रह्लादश्चातितर्षितैः। ववर्ष सुस्थितं वीरं धर्मपुत्रं सनातनम्।२९
नारायणोऽपि तं वेगान्मुक्तैर्बाणैः शिलाशितैः ।
तुतोदाऽतीव पुरतो दैत्यानामधिपं स्थितम् ।
सन्निपातोऽम्बरे तत्र दिदृक्षूणां बभूव ह ।।३०।।

देवानां दानवानाञ्च कुर्वतां जयघोषणम्। उभयोः शरवर्षेणच्छादिते गगने तदा।३१
दिवाऽपि रात्रिसदृशं बभूव तिमिरं महत्। ऊचुःपरस्परं देवादैत्याश्चातीवविस्मिताः।३२
अदृष्टपूर्वंयुद्धं वै वर्ततेऽद्य सुदारुणम्। देवर्षयोऽथ गन्धर्वा यक्षकिन्नरपन्नगाः।३३
विद्याधराश्चारणाश्च विस्मयं परमं ययुः। नारदः पर्वतश्चैव प्रेक्षणार्थं स्थितौ मुनी।३४
नारदः पर्वतं प्राह नेदृशं चाभवत्पुरा। तारकासुरयुद्धञ्च तथा वृत्रासुरस्य च।३५
मधुकैटभयोर्युद्धं हरिणाचेदृशं कृतम्। प्रह्लादः प्रबलः शूरो यस्मान्नारायणेन च।३६
करोति सदृशं युद्धं सिद्धेनाऽद्भुतकर्मणा ।

व्यास उवाच

दिनेदिने तथा रात्रौ कृत्वा कृत्वा पुनः पुनः ।।३७।।

चक्रतुः परमं युद्धं तौ तदा दैत्यतापसौ। नारायणस्तु चिच्छेद प्रह्लादस्यशरासनम्।३८
तरसैकेनबाणेन स चाऽन्यद्धनुराददे। नारायणस्तु तरसा मुक्तवाऽन्यञ्चशिलीमुखम्।३९
तदैव मध्यतश्चापं चिच्छेद लघुहस्तकः। छिन्नं छिन्नं पुनर्दैत्यो धनुरन्यत्समाददे।४०
नारायणस्तु चिच्छेदविशिखैराऽऽशु कोपितः। छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रःपरिघन्तु समाददे।४१
जघान धर्मजं तूर्णं बाहोर्मध्येऽतिकोपनः। तमायान्तं स बलवान्मार्गणैर्नवभिर्मुनिः।४२
चिच्छेद परिघं घोरं दशभिस्तमताडयत्। गदामादाय दैत्येन्द्रःसर्वायसमयीं दृढाम्।४३
जानुदेशे जघानाऽऽशुदेवंनारायणं रुषा। गदयाचापिगिरिवत्संस्थितःस्थिरमानसः।४४
धर्मपुत्रोऽतिबलवान्मुमोचाऽऽशु शिलीमुखान् ।
गदां चिच्छेद भगवांस्तदा दैत्यपतेर्दृढाम् ।।४५।।

विस्मयं परमं जग्मुः प्रेक्षकागगने स्थिताः। स तु शक्तिं समादाय प्रह्लादः परवीरहा।४६
चिक्षेप तरसा क्रुद्धो बलान्नारायणोरसि। तामापतन्तींसंवीक्ष्य बाणेनैकेन लीलया।४७
सप्तधा कृतवानाशु सप्तभिस्तं जघान ह। दिव्यवर्षसहस्रं तु तद्युद्धं परमं तयोः।४८
जातं विस्मयदं राजन्सर्वेषां तत्र चाऽऽश्रमे। तदाऽऽजगामतरसापीतवासाश्चतुर्भुजः।४९
प्रह्लादस्याऽऽश्रमं तत्र जगाम च गदाधरः। चतुर्भुजो रमाकान्तो रथाङ्गदरपद्मभृत्।५०
दृष्ट्वा तमागतं तत्र हिरण्यकशिपोःसुत। प्रणम्य परया भक्त्या प्राञ्जलिःप्रत्युवाच ह।

प्रह्लाद उवाच

देवदेव ! जगन्नाथ ! भक्तवत्सल ! माधव! ।।५१।।

कथं न जितवानाजावहमेतौ तपस्विनौ ।
संग्रामस्तु मया देव! कृतः पूर्णं शतं समाः ॥५२॥
सुराणां न जितौ कस्मादिति मे विस्मयो महान् ।

विष्णुरुवाच

सिद्धाविमौ मदंशौ च विस्मयः कोऽत्र मारिष! ॥५३॥
तापसौनजितात्मानौनरनारायणौजितौ। गच्छत्वंवितलंराजन्कुरुभक्तिममाऽचलाम् ।५४
नाऽऽभ्यां कुरु विरोधं त्वं तापसाभ्यां महामते! ।

व्यास उवाच

इत्याज्ञप्तो दैत्यराजो निर्ययावसुरैः सह ॥५५॥
नरनारायणौ भूयस्तपोयुक्तौ बभूवतुः ॥५६॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे प्रह्लादनारायणयोर्युद्धेविष्णोरागमनवर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥९॥

दशमोऽध्यायः

नरनारायणयोःकथंयुद्धबुद्धिरितिजनमेजयप्रश्नः

जनमेजय उवाच

सन्देहोऽयं महानत्रपाराशर्य कथानके। नरनारायणौ शान्तौ वैष्णवांशौ तपोधनौ। १
तीर्थाश्रयौ सत्त्वयुक्तौवन्याशनपरौसदा। धर्मपुत्रौमहात्मानौतापसौसत्यसंस्थितौ। २
कथं रागसमायुक्तौ जातौयुद्धेपरस्परम्। संग्रामंचक्रतुःकस्मात्त्यक्त्वातपिमनुत्तमाम्। ३
प्रह्लादेन समं पूर्णं दिव्यवर्षशतं किल। हित्वा शान्तिसुखं युद्धं कृतवन्तौ कथं मुनी। ४
कथं तौ चक्रतुर्युद्धं प्रह्लादेन समं मुनी। कथयस्व महाभाग! कारणं विग्रहस्य वै। ५
"कामिनी कनकं कार्यं कारणं विग्रहस्यवै" ।
युद्धबुद्धिःकथंजातातयोश्चतद्विरक्तयोः ।
तथाविधं तपस्तप्तं ताभ्यां च केन हेतुना ॥६॥
मोहार्थं सुखभोगार्थं स्वर्गार्थं वा परन्तप। कृतमत्युत्कटंताभ्यांतपः सर्वफलप्रदम्। ७
मुनिभ्यां शान्तचित्ताभ्यां प्राप्तं किंफलमद्भुतम् ।
तपसापीडितोदेहःसंग्रामेणपुनःपुनः ॥८॥
दिव्यवर्षशतं पूर्णं श्रमेण परिपीडितौ। न राज्यार्थे धने वाऽपि न दारेषु गृहेषु च। ९
किमर्थं तु कृतं युद्धं ताभ्यां तेन महात्मना। निरीहःपुरुषः कस्मात्प्रकुर्याद्युद्धमीदृशम्। १०
दुःखदं सर्वथा देहे जानन्धर्मं सनातनम्। सुबुद्धिः सुखदानीह कर्माणि कुरुते सदा। ११
नः दुःखदानि धर्मज्ञ स्थितिरेषा सनातनी। धर्मपुत्रौ हरेरंशौ सर्वज्ञौ सर्वभूषितौ। १२
कृतवन्तौ कथं युद्धे दुःखं धर्मविनाशकम्। त्यक्त्वा ततः समाधीतं सुखारामं महत्फलम्। १३
संयुगं दारुणंकृष्णनैवमूर्खोऽपिवाञ्छति। श्रुतोमयाययातिस्तुच्युतःस्वर्गान्महीपतिः। १४
अहंकारभवात्पापात्पातितः पृथिवीतले। यज्ञकृद्दानकर्ता च धार्मिकः पृथिवीपतिः। १५
शब्दोच्चारणमात्रेण पातितो वज्रपाणिना। अहङ्कारमृते युद्धं न भवत्येव निश्चयः। १६
किं फलं तस्य युद्धस्य मुनेः पुण्यविनाशनम् ।

व्यास उवाच

राजन्संसारमूलं हि त्रिविधः परिकीर्तितः ॥१७॥
अहङ्कारस्तु सर्वज्ञैर्मुनिभिर्धर्मनिश्चये। स कथं मुनिना त्यक्तुं योग्यो देहभृता किल। १८

कारणेन विना कार्यं न भवत्येवनिश्चयः। तपोदानंयथायज्ञाःसात्त्विकात्प्रभवन्तिते।१६

राजसाद्वा महाभाग! तामसात्कलहस्तथा।
क्रिया स्वल्पाऽपि राजेन्द्र! नाऽहङ्कारं विना क्वचित् ॥२०॥
शुभा वाऽप्यशुभा वाऽपि प्रभवत्यविनिश्चयः।
अहङ्काराद्वन्धकारी नाऽन्योस्ति जगतीतले ॥२१॥

तेनेदं रचितं विश्वं कथंतद्रहितं भवेत्। ब्रह्मा रुद्रस्तथाविष्णुरहङ्कारयुतास्त्वमी।२२
अन्येषां चैवकावार्ता मुनीनां वसुधाधिप। अहङ्काराऽऽवृतंविश्वंभ्रमतीदं चराचरम्।२३
पुनर्जन्म पुनर्मृत्युः सर्वकर्मवशाऽनुगम्। देवतिर्यङ्मनुष्याणां संसारेऽस्मिन्महीपते।२४
रथांगवदसर्वार्थंभ्रमणंसर्वदास्मृतम् । विष्णोरप्यवताराणांसंख्यांजानातिनः पुमान्।२५
विततेऽस्मिंस्तुसंसारउत्तमाधमयोनिषु । नारायणोहरिःसाक्षान्मात्स्यं पुरुषाश्रितः।२६
कामठं सौकरञ्चैव नारसिंहञ्च वामनम्। युगेयुगे जगन्नाथो वासुदेवो जनार्दनः।२७
अवतारानसंख्याताान्करोति विधियन्त्रितः। वैवस्वते महाराजसप्तमे भगवान्हरिः।२८
मन्वन्तरेऽवतारान्वै चक्रेताञ्छृणु तत्त्वतः। भृगुशापान्महाराज विष्णुर्देववरः प्रभुः।२६

अवतारानानेकांस्तु कृतवानखिलेश्वरः।

राजोवाच

सन्देहोऽयं महाभाग! हृदये मम जायते ॥३०॥

भृगुणाभगवान्विष्णुः कथं शप्तः पितामह। हरिणाचमुनेस्तस्य विप्रियंकिंकृतं मुने।३१

यद्रोषाद् भृगुणा शप्तो विष्णुर्देवनमस्कृतः।

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि भृगोः शापस्य कारणम् ॥३२॥

पुरा कश्यपदायादो हिरण्यकशिपुर्नृपः। यदा तदाऽसुरैः सार्धं कृतं संख्यं परस्परम्।३३
कृते संख्ये जगत्सर्वं व्याकुलं समजायत। हते तस्मिन्नृपे राजा प्रह्लादः समजायत।३४
देवान्स पीडयामास प्रह्लादः शत्रुकर्षणः। संग्रामो ह्यभवद्घोरः शक्रप्रह्लादयोस्तदा।३५
पूर्णम्वर्षशतं राजँल्लोकविस्मयकारकम्। देवैर्युद्धं कृतं चोग्रं प्रह्लादस्तु पराजितः।३६
निर्वेदं परमं प्राप्तो ज्ञात्वा धर्मं सनातनम्। विरोचनसुतं राज्ये प्रतिष्ठाप्य बलिं नृप।३७
जगाम स तपस्तप्तुं पर्वते गन्धमादने। प्राप्य राज्यं बलिः श्रीमान्सुरैर्वैरंचकार ह।३८
ततः परस्परं युद्धं जातं परमदारुणम्। ततः सुरैर्जिता दैत्या इन्द्रेणाऽमिततेजसा।३६
विष्णुना च सहायेन राज्यभ्रष्टाःकृतानृप। ततःपराजितादैत्याः काव्यस्य शरणंगताः।४०
किं त्वं न कुरुषेब्रह्मन्साहाय्यं नः प्रतापवान्। स्थातुं न शक्नुमोह्यत्रप्रविशामोरसातलम्।४१

यदि त्वं न सहायोऽसि त्रातुं मन्त्रविदुत्तम।

व्यास उवाच

इत्युक्तः सोऽब्रवीद्दैत्यान्काव्यः कारुणिको मुनिः ॥४२॥

माभैष्टधारयिष्यामितेजसास्वेन भोःसुराः। मन्त्रैस्तथौषधीभिश्चसाहाय्यंवःसदैवहि।४३

करिष्यामि कृतोत्साहा भवन्तु विगतज्वराः।

व्यास उवाच

ततस्ते निर्भया जाता दैत्याः काव्यस्य संश्रयात् ॥४४॥

देवैः श्रुतस्तुवृत्तान्तःसर्वैश्चारमुखात्किल। तत्रसम्मन्त्र्य ते देवाःशक्रेणच परस्परम्।४५
मन्त्रंचक्रुःसुसम्विग्नाःकाव्यमन्त्रप्रभावतः। योद्धुं गच्छामहेतूर्णंयावन्नच्यावयन्तिवै।४६

प्रसह्यहत्वा शिष्टांस्तु पातालं प्रापयामहे। दैत्याञ्जग्मुस्ततो देवाःसंरुष्टाःशस्त्रपाणयः।४७
जग्मुस्तान्विष्णुसहिता दानवान्हरिणोदितां। वध्यमानास्तु ते दैत्याः सन्त्रस्ता भयपीडिताः।४८
काव्यस्यशरणंजग्मूरक्षरक्षेति चाऽब्रुवन्। ताञ्छुक्रःपीडितान्दृष्ट्वादेवैर्दैत्यान्महाबलान् ।४९
मा भैष्टेतिवचःप्राहमन्त्रौषधबलाद्विभुः। दृष्ट्वाकाव्यंसुराःसर्वे त्यक्त्वातान्प्रययुः किल।५०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे भृगुशापकारणवर्णनंनामदशमोऽध्यायः ॥१०॥

एकादशोऽध्यायः

शुक्रस्यमन्त्रलाभार्थङ्गमनम्

व्यास उवाच

तथा गतेषु देवेषु काव्यस्तान्प्रत्युवाच ह। ब्रह्मणापूर्वमुक्तं तच्छृणुध्वं दानवोत्तमाः।१
विष्णुर्दैत्यवधे युक्तो हनिष्यति जनार्दनः। वाराहरूपं संस्थाय हिरण्याक्षोयथाहतः।२
यथा नृसिंहरूपेण हिरण्यकशिपुर्हतः। तथा सर्वान्कृतोत्साहोहनिष्यतिनचाऽन्यथा।३
न मे मन्त्रबलंसम्यक्प्रतिभातियथाहरिम्। जेतुं यूयं समर्थाःस्मयात्राताःसुरानथ।४
तस्मात्कालं प्रतीक्षध्वंकियन्तंदानवोत्तमाः। अहमद्य महादेवं मन्त्रार्थं प्रव्रजामि वै।५
प्राप्य मन्त्रान्महादेवादागमिष्यामि साम्प्रतम्। युष्मभ्यं तान्प्रदास्यामि यथार्थं दानवोत्तमाः।६

दैत्या ऊचुः

पराजिताः कथं स्थातुं पृथिव्यां मुनिसत्तम!। शक्ता भवामोऽप्यबलास्तावत्कालं प्रतीक्षितुम्।७
निहता बलिनःसर्वे केचिच्छिष्टाश्चदानवाः। नाद्ययुक्ताश्च संग्रामेस्थातुमेवंसुखावहाः।८

शुक्र उवाच

यावदहंमन्त्रविद्यामानयिष्यामिशङ्करात्। तावद्भवद्भिःस्थातव्यंतपोयुक्तैः समन्वितैः।९
सामदानादयःप्रोक्ता विद्वद्भिःसमयोचिताः। देशंकालंबलंवीरैर्ज्ञात्वाशक्तिबलं बुधैः।१०
सेवाऽथ समयेकार्याशत्रूणांशुभकाम्यया। स्वशक्त्युपचयेकाले हंतव्यास्तेमनीषिभिः।११
तदद्य विनयं कृत्वा सामपूर्वं छलेन वै। तिष्ठध्वं स्वनिकेतेषु मदागमनकांक्षया।१२
प्राप्यमन्त्रान्महादेवादागमिष्यामिदानवाः। युध्यामहेपुनर्देवान्मन्त्रमास्थायवैबलम्।१३
इत्युक्त्वाऽथभृगुस्तेभ्यो जगामकृतनिश्चयः। महादेवंमहाराज मन्त्रार्थं मुनिसत्तमः।१४
दानवाः प्रेषयामासुः प्रह्लादं सुरसन्निधौ। सत्यवादिनमव्यग्रं सुराणां प्रत्ययप्रदम्।१५
प्रह्लादस्तु सुरान्प्राह प्रश्रयावनतो नृपः। असुरैः सहितस्तत्र वचनं नम्रतायुतम्।१६
न्यस्तशस्त्रा वयं सर्वे निःसन्नाहास्तथैवच। देवास्तपश्चरिष्यामःसंवृतावल्कलैर्युताः।१७
प्रह्लादस्यवचःश्रुत्वासत्याऽभिव्याहृतंतु तत्। ततोदेवान्यवर्तन्तविज्वरामुदिताश्चते।१८
न्यस्तशस्त्रेषु दैत्येषु विनिवृत्तास्तदा सुराः। विश्रब्धा स्वगृहान्गत्वा क्रीडासक्ताः सुसंस्थिताः।१९
दैत्या दम्भं समालम्ब्यतापसास्तपिसंयुताः। कश्यपस्याऽऽश्रमे वासं चक्रुः काव्याऽऽगमेच्छया।२०
काव्योगत्वाऽथ कैलासं महादेवं प्रणम्यच। उवाचविभुनापृष्टःकिंते कार्यमितिप्रभुः।२१
मन्त्रानिच्छाम्यहं देव ये न सन्ति बृहस्पतौ। पराजयाय देवानामसुराणांजयाय च।२२

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनन्तस्य सर्वज्ञःशङ्करः शिवः। चिन्तयामासमनसा किंकर्तव्यमतःपरम्।२३
सुरेषु द्रोहबुद्ध्याऽसौ मन्त्रार्थमिह साम्प्रतम्। प्राप्तः काव्यो गुरुस्तेषां दैत्यानां विजयाय च।२४
रक्षणीयामयादेवा इतिसञ्चिन्त्य शङ्करः। दुष्करं व्रतमत्युग्रं तमुवाच महेश्वरः।२५
पूर्णम्वर्षसहस्रं तु कणधूममवाक्छिराः। यदिपास्यसिभद्रन्ते ततोमन्त्रानवाप्स्यसि।२६

इत्युक्तोऽसौ प्रणम्येशं वाढमित्यब्रवीद्वचः। व्रतंचराम्यहन्देव त्वयाऽऽज्ञप्तः सुरेश्वर।२७

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाशङ्करं काव्यश्चकार व्रतमुत्तमम्। धूमपानरतः शान्तो मन्त्रार्थं कृतनिश्चयः।२८
ततो देवाः परिज्ञाय काव्यं व्रतरतं तदा। दैत्यान्दंभरतांश्चैव बभूवुर्मन्त्रतत्पराः।२९
विचार्य मनसा सर्वे संग्रामायोद्यता नृप। ययुर्धृतायुधास्तत्र यत्र ते दानवोत्तमाः।३०
तानागतान्समीक्ष्याऽथ सायुधान्दंशितांस्तथा। आसंस्ते भयसम्विग्ना दैत्या देवान्समन्ततः।३१
उत्पेतुः सहसा ते वै सन्नद्धान्भयकर्शिताः। अब्रुवन्वचनं तथ्यं ते देवान्बलदर्पितान्।३२
न्यस्तशस्त्रेभयवतिआचार्येव्रतमास्थिते। दत्त्वाऽभयंपुरादेवाः सम्प्राप्तानोजिघांसया।३३
सत्यं वः क्व गतं देवा धर्मश्चश्रुतिनोदितः। न्यस्तशस्त्रानहन्तव्याभीताश्चशरणंगताः।३४

देवा ऊचुः

भवद्भिः प्रेषितः काव्यो मन्त्रार्थं कुहकेन च। तपो ज्ञातंहि युष्माकं तेनयुध्यामएवहि।३५
सज्जा भवन्तु युद्धाय संरब्धाः शस्त्रपाणयः। शत्रुश्छिद्रेणहन्तव्य एषधर्मः सनातनः।३६

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं दैत्या विचार्य च परस्परम्। पलायनपराःसर्वे निर्गता भयविह्वलाः।३७
शरणं दानवा जग्मुर्भीतास्ते काव्यमातरम्। दृष्ट्वा तानतिसन्तप्तानभयं च ददावऽथ।३८

काव्यमातोवाच

न भेतव्यं न भेतव्यं भयं त्यजत दानवाः। मत्सन्निधौ वर्तमानान्न भीर्भवितुमर्हति।३९
तच्छ्रुत्वा वचनं दैत्याः स्थितास्तत्र गतव्यथाः। निरायुधा ह्यसम्भ्रान्तास्तत्राऽश्रमवरेऽसुराः।४०
देवास्तान्विद्रुतान्वीक्ष्यदानवांस्तेपदानुगाः। अभिजग्मुःप्रसह्यैतानविचार्यबलाबलम्।४१
तत्राऽऽगताः सुराःसर्वे हन्तुं दैत्यान्समुद्यताः। वारिताः काव्यमात्राऽपि जघ्नुस्तानाश्रमस्थितान्।४२
हन्यमानान्सुरैर्दृष्ट्वाकाव्यमाताऽतिवेपिता। उवाचसर्वान्सनिद्रांस्तपसावैकरोम्यहम्।४३
इत्युक्त्वाप्रेरितानिद्रा तानागत्यपपातच। सेन्द्रानिद्रावशंयाता देवामूकवदास्थिताः।४४
इन्द्रंनिद्राजितं दृष्ट्वा दीनं विष्णुरभाषत। मांत्वंप्रविश भद्रन्ते नयेत्वां च सुरोत्तम।४५
एवमुक्तस्ततो विष्णुं प्रविवेश पुरन्दरः। निर्भयो गतनिद्रश्च बभूव हरिरक्षितः।४६
रक्षितं हरिणा दृष्ट्वा शक्रं तत्र गतव्ययम्। काव्यमाता ततः क्रुद्धा वचनं चेदमब्रवीत्।४७
मघवंस्त्वां भक्षयामिसविष्णुंवैतपोबलात्। पश्यतां सर्वदेवानामीदृशं मे तपोबलम्।४८

व्यास उवाच

इत्युक्तौ तु तया देवौविष्णिवद्रौ योगविद्यया। अभिभूतौ महात्मानौ स्तब्धौ तौ सम्बभूवतुः।४९
विस्मितास्तुतदादेवादृष्ट्वा तावतिबाधितौ। चक्रुःकिलकिलाशब्दंततस्तेदीनमानसाः।५०
क्रोशमानान्सुरान्दृष्ट्वा विष्णुंप्राहशचीपतिः। विशेषेणाभिभूतोऽस्मित्वत्तोहंमधुसूदन।५१
जह्येनां तरसा विष्णो यावन्नौ न दहेत्प्रभो। तपसा दर्पितां दुष्टांमा विचारयमाधव।५२
इत्युक्तो भगवान्विष्णुःशक्रेणप्रथितेन च। चक्रंसस्मारतरसाघृणांत्यक्त्वाऽथमाधवः।५३
स्मृतमात्रं तु सम्प्राप्तं चक्रं विष्णुवशानुगम्। दधारचक्रकरेक्रुद्धो वधार्थं शक्रनोदितः।५४
गृहीत्वा तत्करे चक्रंशिरश्चिच्छेद रंहसा। हतां दृष्ट्वा तु तां शक्रो मुदितश्चाभवत्तदा।५५
देवाश्चातीव सन्तुष्टाः हरिं जयजयेति च। तुष्टुवुर्मुदिताः सर्वे सञ्जाता विगतज्वराः।५६
इन्द्राविष्णू तु सञ्जातौ तत्क्षणाद्धृदयव्यथौ। स्त्रीवधाच्छङ्कमानौ तु भृगोः शापं दुरत्ययम्।५७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे शुक्रमातुर्वधवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः॥११॥

द्वादशोऽध्यायः

भृगुणाहरयेशापदानम्

व्यास उवाच

तं दृष्ट्वा तु वधं घोरं चुक्रोध भगवान्भृगुः। वेपमानोऽतिदुःखार्तःप्रोवाचमधुसूदनम्। १

भृगुरुवाच

अकृतं ते कृतं विष्णो जानन्पापंमहामते। वधोऽयं विप्रजाताया मनसा कर्तुमक्षमः। २
आख्यातस्त्वं सत्त्वगुणः स्मृतो ब्रह्मा च राजसः। तथाऽसौ तामसः शम्भुर्विपरीतं कथं स्मृतम्। ३
तामसस्त्वं कथञ्जातः कृतं कर्मातिनिन्दितम्। अवध्या स्त्रीत्वया विष्णो हता कस्मान्निरागसा। ४
शपामि त्वांदुराचारंकिमन्यत्प्रकरोमिते। विधुरोऽहंकृतःपापत्वयाऽहंशक्रकारणात्। ५
न शपेऽहं तथा शक्रं शपे त्वां मधुसूदन। सदा छलपरोऽसि त्वं कीटयोनिदुराशयः। ६
येचत्वां सात्त्विकंप्राहुस्तेमूर्खामुनयः किल। तामसस्त्वंदुराचारः प्रत्यक्षंमे जनार्दन। ७
अवतारा मृत्युलोके सन्तु मच्छापसम्भवाः। प्रायो गर्भभवंदुःखंभुंक्ष्वपापाज्जनार्दन। ८

व्यास उवाच

ततस्तेनाथशापेन नष्टे धर्मे पुनः पुनः। लोकस्य च हितार्थाय जायते मानुषेष्विह। ९

राजोवाच

भृगुभार्याहतातत्र चक्रेणामिततेजसा। गार्हस्थ्यञ्चपुनस्तस्य कथं जातं महात्मनः। १०

व्यास उवाच

इतिशप्त्वाहरिंरोषात्तदादायशिरस्त्वरन्। कायेसंयोज्यतरसाभृगुःप्रोवाचकार्यवित्। ११
अद्यत्वांविष्णुनादेविहतांसञ्जीवयाम्यहम्। यदिकृत्स्नोमयाधर्मोज्ञायतेचरितोऽपिवा। १२
तेनसत्येनजीवेत यदि सत्यं ब्रवीम्यहम्। पश्यन्तु देवताः सर्वा मम तेजोबलं महत्। १३
अद्भिस्तांप्रोक्ष्यशीताभिर्जीवयामितपोबलात्। सत्यं शौचं तथावेदायदिमेतपसोबलम्। १४
अद्भिःसम्प्रोक्षितादेवीसद्यःसञ्जीवितातदा। उत्थितापरमप्रीताभृगोर्भार्याशुचिस्मिता। १५
ततस्तांसर्वभूतानिदृष्ट्वासुप्तोत्थितामिव। साधुसाध्वितितन्तान्तुतुष्टुवुःसर्वतोदिशम्। १६
एवं सञ्जीवितातेन भृगुणा वरवर्णिनी। विस्मयं परमं जग्मुर्देवाःसेन्द्राविलोक्य तत्। १७
इन्द्रः सुरानथोवाच मुनिना जीविता सती। काव्यस्तप्त्वा तपो घोरं किंकरिष्यति मन्त्रवित्। १८

व्यास उवाच

गतानिद्रासुरेन्द्रस्यदेहेऽक्षेममभून्नृप। स्मृत्वा काव्यस्यवृत्तान्तंमन्त्रार्थमतिदारुणम्। १९
विमृश्य मनसा शक्रो जयन्तीं स्वसुतांतदा। उवाच कन्यांचार्वङ्गींस्मितपूर्वमिदम्वचः। २०
गच्छपुत्रि मयादत्ता काव्यायत्वंतपस्विने। समाराधय तन्वंगि मत्कृते तं वशं कुरु। २१
उपचारैर्मुनिंतैस्तैः समराध्य मनः प्रियैः। भयं मे तरसा गत्वा हर तत्र वराश्रमे। २२
सा पितुर्वचनं श्रुत्वा तत्रागच्छन्मनोरमा। तमपश्यद्विशालाक्षी पिबन्तं धूममाश्रमे। २३
तस्यदेहंसमालोक्यस्मृत्वा वाक्यंपितुस्तदा। कदलीदलमादायबीजयामासतंमुनीम्। २४
निर्मलं शीतलं वारि समानीयसुवासितम्। पानाय कल्पयामास भक्त्यापरमयालघु। २५
छायांवस्त्रातपत्रेण भास्करे मध्यगे सति। रचयामासतन्वंगी स्वयंधर्मे स्थितासती। २६
फलान्यानीयदिव्यानिपक्वानिमधुराणिच। मुचोचाग्रे मुनेस्तस्यभक्ष्यार्थंविहितानिच। २७
कुशाःप्रादेशमात्राहि हरिताःशुकसन्निभाः। दधाराग्रेऽथ पुष्पाणि नित्यकर्मसमृद्धये। २८
निद्रार्थं कल्पयामास संस्तरं पल्लवान्वितम्। तस्मिन्मुनौ चाऽऽदरस्था चकार व्यजनं शनैः। २९
हावभावादिकंकिञ्चिद्विकारजननंच तत्। न चकार जयन्ती सा शापभीतामुनेस्तदा। ३०

स्तुतिंचकारतन्वंगीगीर्भिस्तस्यमहात्मनः। सुभाषिण्यनुकूलाभिःप्रीतिकर्त्रीभिरप्युत।३१
प्रबुद्धे जलमादाय दधाराचमनाय च। मनोनुकूलं सततं कुर्वन्ती व्यचरत्तदा।३२
इन्द्रोऽपिसेवकांस्तत्र प्रेषयामास चातुरः। प्रवृत्तिं ज्ञातुकामोवैमुनेस्तस्यजितात्मनः।३३
एवं बहूनि वर्षाणि परिचर्यापराऽभवत्। निर्विकाराजितक्रोधा ब्रह्मचर्यपरा सती।३४
पूर्णे वर्षसहस्रे तु परितुष्टो महेश्वरः। वरेण छन्दयामास काव्यं प्रीतमना हरः।३५

ईश्वर उवाच

यच्चकिञ्चिदपि ब्रह्मन्विद्यते भृगुनन्दन!। प्रतिपश्यसि यत्सर्वं यच्च वाच्यंनकस्यचित्।३६
सर्वाभिभावकत्वेन भविष्यसि न संशयः। अवध्यः सर्वभूतानां प्रजेशश्च द्विजोत्तमः।३७

व्यास उवाच

एवं दत्त्वावराञ्छम्भुस्तत्रैवान्तरधीयत। काव्यस्तामथसंवीक्ष्यजयन्तीवाक्यमब्रवीत्।३८
काऽसि कऽस्यासि सुश्रोणि! ब्रूहि किं ते चिकीर्षितम्।
किमर्थमिह सम्प्राप्ता कार्यं वद वरोरु! मे ।।३९।।
किं वाञ्छसि करोम्यद्य दुष्करं चेत्सुलोचने। प्रीतोऽस्मित्वत्कृतेनाद्यवरंवरयसुव्रते।४०
ततः सा तु मुनिं प्राह जयन्ती मुदितानना। चिकीर्षितं मे भगवंस्तपसा ज्ञातुमर्हसि।४१

काव्य उवाच

ज्ञातं मयातथाऽपित्वंब्रूहियन्मनसेप्सितम्। करोमिसर्वथाभद्रंप्रीतोऽस्मिपरिचर्यया।४२

जयन्त्युवाच

शक्रस्याऽहं सुताब्रह्मन्पित्रा तुभ्यं समर्पिता। जयन्तीनामतश्चाहं जयन्तावरजामुने।४३
सकामाऽस्मि त्वयि विभो! वाञ्छितं कुरु मेऽधुना। रंस्ये त्वया महाभाग! धर्मतः प्रीतिपूर्वकम्।४४

शुक्र उवाच

मया सह त्वं सुश्रोणि! दशवर्षाणि भामिनि। सर्वैर्भूतैरदृश्या च रमस्वेह यदृच्छया।४५

व्यास उवाच

एवमुक्त्वा गृहं गत्वा जयन्त्याःपाणिमुद्वहन्। तयासहावसद्देव्या दशवर्षाणिभार्गवः।४६
अदृश्यः सर्वभूतानां मायया संवृतः प्रभुः। दैत्यास्तमागतं श्रुत्वाकृतार्थंमन्त्रसंयुतम्।४७
अभिजग्मुर्गृहे तस्य मुदितास्ते दिदृक्षवः। नापश्यन्नममाणं ते जयन्त्यासहसंयुतम्।४८
तदा विमनसः सर्वे जाता भग्नोद्यमाश्च ते। चिन्तापरातिदीनाश्च वीक्षमाणाः पुनः पुनः।४९
अदृष्ट्वा तं तु संवृत्तं प्रतिजग्मुर्यथागतम्। स्वगृहान्दैत्यवर्यास्तेचिन्ताविष्टाभयातुराः।५०
रममाणं तथा ज्ञात्वा शक्रःप्रोवाच तं गुरुम्। बृहस्पतिंमहाभागंकिंकर्तव्यमितःपरम्।५१
गच्छाद्य दानवान्ब्रह्मन्मायया त्वं प्रलोभय। अस्माकं कुरु कार्यं त्वं बुद्ध्या सञ्चिन्त्य मानद!।५२
तच्छ्रुत्वा वचनं काव्यं रममाणंसुसंवृतम्। ज्ञात्वातद्रूपमास्थायदैत्यान्प्रतिययौगुरुः।५३
गत्वा तत्राऽतिभक्त्याऽसौ दानवान्समुपाह्वयत्। आगतास्तेऽसुराः सर्वे ददृशुः काव्यमग्रतः।५४
प्रणम्य संस्थिताः सर्वे काव्यं मत्वाऽतिमोहिताः। न विदुस्ते गुरोर्मायां काव्यरूपविभाविनीम्।५५
तानुवाच गुरुः काव्यरूपः प्रच्छन्नमायया। स्वागतंममयाज्यानांप्राप्तोऽहंवोहितायवै।५६
अहं वो बोधयिष्यामिविद्यांप्राप्ताममायया। तपसा तोषितःशम्भुर्युष्मत्कल्याणहेतवे।५७
तच्छ्रुत्वा प्रीतमनसोजातास्तेदानवोत्तमाः। कृतकार्यंगुरुं मत्वाजहृषुस्तेविमोहिताः।५८
प्रणेमुस्ते मुदा युक्ता निरातङ्कागतव्यथाः। देवेभ्यश्च भयंत्यक्त्वातस्थुःसर्वेनिरामयाः।५९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां चतुर्थस्कन्धे जयन्त्याशुक्रसहवासवर्णनंनामद्वादशोऽध्यायः ।।१२।।

त्रयोदशोऽध्यायः

कथंदेवगुरुणादैत्यवञ्चनेतिविषयेजनमेजयप्रश्नः

राजोवाच

किं कृतं गुरुणा पश्चाद्भृगुरूपेण वर्तता। छलेनैव हि दैत्यानांपौरोहित्येन धीमता।१
गुरुः सुराणामनिशं सर्वविद्यानिधिस्तथा। सुतोऽङ्गिरसएवाऽसौसकथंछलकृन्मुनिः।२
धर्मशास्त्रेषु सर्वेषु सत्यं धर्मस्य कारणम्। कथितं मुनिभिर्येनपरमात्माऽपिलभ्यते।३
वाचस्पतिस्तथा मिथ्यावक्ताचेद्दानवान्प्रति। कःसत्यवक्तासंसारेभविष्यतिगृहाश्रमी।४
आहारादधिकं भोज्यं ब्रह्माण्डविभवेऽपि न। तदर्थं मुनयोमिथ्या प्रवर्तन्ते कथं मुने।५
शब्दप्रमाणमुच्छेदं शिष्टाभावे गतं न किम्। छलकर्मप्रवृत्ते वाऽविगीतत्वंगुरौकथम्।६
देवाःसत्त्वसमुद्भूता राजसा मानवाःस्मृताः। तिर्यंचस्तामसाः प्रोक्ता उत्पत्तौ मुनिभिः किल।७
अमराणां गुरुः सक्षान्मिथ्यावादी स्वयं यदि। तदा कः सत्यवक्तास्याद्राजसस्तामसः पुनः।८
क्व स्थितिस्तस्य धर्मस्य सन्देहोऽयं ममाऽऽत्मनः। का गतिः सर्वजन्तूनां मिथ्याभूते जगत्त्रये।९
हरिर्ब्रह्माशचीकान्तस्तथाऽन्ये सुरसत्तमाः। सर्वेछलविधौ दक्षामनुष्याणांचकाकथा।१०
कामक्रोधाभिसन्तप्ता लोभोपहतचेतसः। छलेदक्षा सुराः सर्वे मुनयश्च तपोधनाः।११
वसिष्ठो वामदेवश्च विश्वामित्रो गुरुस्तथा। एते पापरताः काऽत्रगतिर्धर्मस्य मानद।१२
इन्द्रोऽग्निश्चन्द्रमा वेधाः परदाराभिलम्पटाः। आर्यत्वं भुवनेष्वेषुस्थितंकुत्रमुने वद।१३
वचनं कस्य मन्तव्यमुपदेशधियाऽनघ। सर्वे लोभाऽभिभूतास्ते देवाश्च मुनयस्तदा।१४

व्यास उवाच

किं विष्णुः किं शिवो ब्रह्मामघवाकिंबृहस्पतिः। देहवान्प्रभवत्येवविकारैःसंयुतस्तदा।१५
रागीविष्णुःशिवोरागीब्रह्माऽपिरागसंयुतः ।
"रागवान्किमकृत्यंवैनकरोतिनराधिप" रागवानपि चातुर्याद्विदेह इव लक्ष्यते।१६
संप्राप्ते सङ्कटे सोऽपि गुणैःसंबाध्यते किल। कारणाद्रहितं कार्यं कथं भवितुमर्हति।१७
ब्रह्मादीनां च सर्वेषां गुणा एवहिकारणम्। पञ्चविंशत्समुद्भूतादेहास्तेषांनचान्यथा।१८
काले मरणधर्मास्ते सन्देहः कोऽत्र ते नृप। परोपदेशेविस्पष्टंशिष्टाः सर्वेभवन्तिच।१९
विप्लुतिर्ह्यविशेषेणस्वकार्येसमुपस्थिते । कामःक्रोधस्तथालोभद्रोहाऽहङ्कारमत्सराः।२०
देहवान्कः परित्यक्तुमीशो भवतितान्पुनः। संसारोऽयं महाराज सदैवैवंविधःस्मृतः।२१
नाऽन्यथा प्रभवत्येव शुभाशुभमयः किल। कदाचिद्भगवान्विष्णुस्तपश्चरतिदारुणम्।२२
कदाचिद्विविधान्यज्ञान्वितनोति सुराधिपः। कदाचित्तु रमारङ्गरञ्जितः परमेश्वरः।२३
रमतेकिलवैकुण्ठे तद्वशस्तरुणो विभुः। कदाचिद्दानवैः सार्धं युद्धं परमदारुणम्।२४
करोति करुणासिन्धुस्तद्बाणाऽपीडितो भृशम्। कदाचिज्जयमाप्नोति दैवात्सोऽपि पराजयम्।२५
सुखदुःखाऽभिभूतोऽसौ भवत्येव न संशयः। शेषे शेते कदाचिद्वैयोगनिद्रासमावृतः।२६
काले जागर्तिविश्वात्मास्वभावप्रतिबोधितः। शर्वोब्रह्माहरिश्चेतइन्द्राद्यायेसुरास्तथा।२७
मुनयश्च विनिर्माणैःस्वायुषोविचरन्तिहि। निशाऽवसानेसञ्जातेजगत्स्थावरजङ्गमम्।२८
म्रियते नाऽत्र सन्देहो नृप! किञ्चित्कदाऽपि च। स्वायुषोऽन्ते पद्मजाद्याः क्षयमृच्छन्ति पार्थिव!।२९
प्रभवन्ति पुनर्विष्णुहरशक्रादयः सुराः। तस्मात्कामादिकान्भावान्देहवान्प्रतिपद्यते।३०
नाऽत्रतेविस्मयःकार्यःकदाचिदपिपार्थिव । संसारोऽयंतुसंदिग्धःकामक्रोधादिभिर्नृप।३१

दुर्लभस्तद्विनिर्मुक्तः पुरुषः परमार्थवित्।यो बिभर्तीह संसारे सदारान्न करोत्यपि।३२
विमुक्तः सर्वसङ्गेभ्यो विचरत्यविशङ्कितः।तस्माद्बृहस्पतेर्भार्याशशिनालंभितापुनः।३३
गुरुणा लंभिताभार्या तथाभ्रातुर्यवीयसः।एवंसंसारचक्रेऽस्मिन्रागलोभादिभिर्वृतः।३४
गार्हस्थ्यं चसमास्थायकथंमुक्तोभवेन्नरः।तस्मात्सर्वप्रयत्नेनहित्वासंसारसारताम्।३५
आराधयेन्महेशानीं सच्चिदानन्दरूपिणीम्।तन्मायागुणतश्छन्नं जगदेतच्चराचरम्।३६
भ्रमत्युन्मत्तवत्सर्वं मदिरामत्तवन्नृप।तस्या आराधनेनैव गुणान्सर्वान्विमृद्य च।३७
मुक्तिं भजेतमतिमान्नान्यःपन्थास्त्वितःपरः।आराधितामहेशानीनयावत्कुरुतेकृपाम्।३८
तावद्भवेत्सुखं कस्मात्कोऽन्योऽस्ति दयया युतः।करुणासागरामेतां भजेत्तस्मादमायया।३९
यस्यास्तु भजनेनैवजीवन्मुक्तत्वमश्नुते।मानुष्यं दुर्लभं प्राप्य सेविता न महेश्वरी।४०
निःश्रेणिकाग्रात्पतिता अध इत्येवविद्महे।अहङ्काराऽऽवृतंविश्वं गुणत्रयसमन्वितम्।४१
असत्येनापि संबद्धं मुच्यते कथमन्यथा।हित्वा सर्वंततः सर्वैः संसेव्याभुवनेश्वरी।४२

राजोवाच

किं कृतं गुरुणा तत्र काव्यरूपधरेण च।कदाशुक्रः समायातस्तन्मे ब्रूहि पितामह।४३

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि यत्कृतं गुरुणा तदा।कृत्वा काव्यस्वरूपंचप्रच्छन्नेनमहात्मना।४४

गुरुणा बोधिता दैत्या मत्वा काव्यं स्वकं गुरुम् ।
विश्वासं परमं कृत्वा बभूवुस्तन्मयास्तदा ।।४५।।

विद्यार्थंशरणंप्राप्ताभृगुंमत्वाऽतिमोहिताः।गुरुणाविप्रलब्धास्तेलोभात्कोवानमुह्यति।४६
दशवर्षात्मकेकालेसम्पूर्णसमयेतदा ।जयन्त्यासहक्रीडित्वाकाव्योयाज्यानचिन्तयत्।४७

आशया मम मार्गं ते पश्यन्तः संस्थिताः किल ।
गत्वा तान्वै प्रपश्येऽहं याज्यानतिभयातुरान् ।।४८।।

मादेवेभ्यो भयं तेषांमद्भक्तानां भवेदिति।सञ्चिन्त्यबुद्धिमास्थायजयन्तींप्रत्युवाचह।४९
देवानेवोपसंयान्ति पुत्रा मे चारुलोचने।समयस्तेऽद्यसम्पूर्णोजातोऽयं दशवार्षिकः।५०
तस्माद्गच्छाम्यहं देवि!द्रष्टुं याज्यान्सुमध्यमे!।पुनरेवाऽऽगमिष्यामि तवान्तिकमनुद्रुतः।५१
तथेति तामुवाचाऽथजयन्ती धर्मवित्तमा।यथेष्टं गच्छ धर्मज्ञ न ते धर्मं विलोपये।५२
तच्छ्रुत्वा वचनं काव्यो जगामत्वरितस्ततः।अपश्यद्दानवानांसपार्श्वे वाचस्पतिंतदा।५३
छद्मरूपंधरं सौम्यंबोधयन्तं छलेन तान्।जैनं धर्मं कृतं स्वेन यज्ञनिन्दापरं तथा।५४
भो देवरिपवः सत्यं ब्रवीमि भवतां हितम्।अहिंसापरमोधर्मोऽहन्तव्याह्याततायिनः।५५
द्विजैर्भोगरतैर्वेदे दर्शितं हिंसनं पशोः।जिह्वास्वादपरैः काममहिंसैव परा मता।५६

एवं विधानि वाक्यानि वेदशास्त्र पराणि च ।
ब्रुवाणं गुरुमाकर्ण्य विस्मितोऽसौ भृगोः सुतः ।।५७।।

चिन्तयामास मनसाममद्वेष्योगुरुःकिल।वञ्चिताःकिलधूर्तेनयाज्या मे नाऽत्रसंशयः।५८
धिग्लोभं पापबीजं वै नरकद्वारमूर्जितम्।गुरुरप्यनृतं ब्रूतेप्रेरितो येन पाप्मना।५९
प्रमाणं वचनं यस्य सोऽपिपाखण्डधारकः।गुरुः सुराणांसर्वेषां धर्मशास्त्रप्रवर्तकः।६०
किं किंनलभते लोभान्मलिनीकृतमानसः।अन्योऽपिगुरुरप्येवंजातःपाखण्डपण्डितः।६१
शैलूषवेष्टितं सर्वं परिगृह्य द्विजोत्तमः।वञ्चयत्यतिसंमूढान्दैत्यान्याज्यान्समाप्यसौ।६२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे शुक्ररूपेणगुरुणादैत्यवञ्चनावर्णनंनामत्रयोदशोऽध्यायः।।१३।।

चतुर्दशोऽध्यायः

दैत्यानांसमीपेशुक्रगमनम् तान्प्रतिशुक्रस्यशापः

व्यास उवाच

इति सञ्चिन्त्यमनसा तानुवाच हसन्निव। वञ्चितामत्स्वरुपेण दैत्याःकिंगुरुणाकिल। १
अहं काव्योगुरुश्चाऽयं देवकार्यप्रसाधकः। अनेन वञ्चिता यूयंमद्याज्यानाऽत्रसंशयः। २
मा श्रद्धध्वं वचोऽस्याऽऽर्या दाम्भिकोऽयं मदाकृतिः।
अनुगच्छत मां याज्यास्त्यजतैनं बृहस्पतिम् ।।३।।
इत्याकर्ण्यवचस्तस्यदृष्ट्वातौसदृशौपुनः । विस्मयंपरमंजग्मुःकाव्योऽयमितितिनिश्चिताः। ४
सतान्वीक्ष्य सुसम्भ्रान्तान्गुरुर्वाक्यमुवाच ह। गुरुर्वोवञ्चयत्येवमद्रूपोऽयं बृहस्पतिः। ५
प्राप्तो वञ्चयितुं युष्मान्देवकार्यार्थसिद्धये। माविश्वासंवचस्यस्यकुरुध्वंदैत्यसत्तमाः। ६
प्राप्ता विद्या मया शम्भोर्युष्मानध्यापयामि ताम्।
देवेभ्यो विजयं नूनं करिष्यामि न संशयः ।।७।।
इतिश्रुत्वागुरोर्वाक्यंकाव्यरूपधरस्यते । विश्वासंपरमंजग्मुःकाव्योऽयमितिनिश्चयात्। ८
काव्येन बहुधा तत्र बोधिताः किलदानवाः। बुबुधुर्नगुरोर्मायामोहिताःकालपर्ययात्। ९
एवं ते निश्चयं कृत्वा ततोभार्गवमब्रुवन्। अयं गुरुर्नोधर्मात्मा बुद्धिदश्च हिते रतः। १०
दशवर्षाणि सततमयं नःशास्तिभार्गवः। गच्छ त्वंकुहकोभासिनाऽस्माकंगुरुरप्युत। ११
इत्युक्त्वा भार्गवं मूढा निर्भर्त्स्य च पुनः पुनः।
जगृहुस्तं गुरुं प्रीत्या प्रणिपत्याऽभिवाद्य च ।।१२।।
काव्यस्तु तन्मयान्दृष्ट्वा चुकोपाऽथ शशाप च। दैत्यान्विबोधितान्मत्वा गुरुणाचातिवञ्चितान्। १३
यस्मान्मया बोधिता वै गृह्णीयुर्न च मे वचः। तस्मात्प्रनष्टसंज्ञावैपराभवमवाप्स्यथ। १४
मदवज्ञाफलं कामं स्वल्पे कालेह्यवाप्स्यथ। तदाऽस्यकपटंसर्वंपरिज्ञातं भविष्यति। १५

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाऽसौ जगामाशु भार्गवःक्रोधसंयुतः। बृहस्पतिर्मुदंप्राप्यतस्थौतत्रसमाहितः । १६
ततः शप्तान्गुरुर्ज्ञात्वादैत्यांस्तान्भार्गविणहि। जगामतरसात्यक्त्वास्वरूपंस्वंविधायच। १७
गत्वोवाच तदा शक्रं कृतं कार्यमयाध्रुवम्। शप्ताःशुक्रेणतेदैत्यामयात्यक्ताःपुनः किल। १८
निराधाराः कृतानूनं यतध्वं सुरसत्तमाः। संग्रामाय महाभाग! शापदग्धामयाकृताः। १९
इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं मघवामुदमाप्तवान्। जहृषुश्चसुराः सर्वोप्रतिपूज्य बृहस्पतिम्। २०
संग्रामाय मतिं चक्रुः संविचार्य मिथः पुनः। निर्ययुर्मिलिता सर्वे दानवाऽभिमुखाः सुराः। २१
सुरान्समुद्यताञ्ज्ञात्वा कृतोद्योगान्महाबलान्। अन्तर्हितं गुरुञ्चैव बभूवुश्चिन्तयाऽन्विताः। २२
परस्परमथोचुस्तेमोहितास्तस्यमायया । सम्प्रसाद्योमहात्माचयातोऽसौरुष्टमानसः। २३
वञ्चयित्वागतःपापोगुरुःकपटपण्डितः । भ्रातृस्त्रीलम्भन प्रायोमलिनोऽन्तर्बहिःशुचिः। २४
किं कुर्मः क्व च गच्छामःकथंकाव्यंप्रकोपितम्। कुर्वीमहिसहायार्थंप्रसन्नंहृष्टमानसम्। २५
इति सञ्चिन्त्य ते सर्वेमिलिताभयकम्पिताः। प्रह्लादंपुरतः कृत्वा जग्मुस्तेभार्गवं पुनः। २६
प्रणेमुश्चरणौ तस्य मुनेर्मौनभृतस्तदा। भार्गवस्तानुवाचाऽथ रोषसंरक्तलोचनः। २७
मया प्रबोधिता यूयं मोहिता गुरुमायया। न गृहीतं वचोयोग्यंतदायाज्याहितंशुचि। २८
तदाऽवगणितश्चाहं भवद्भिस्तद्वशं गतैः। प्राप्तं नूनं मदोन्मत्तैममाऽवमानजं फलम्। २९
तत्र गच्छत सद्भ्रष्टा यत्राऽसौ कपटाकृतिः। वञ्चकःसुरकार्यार्थीनाहंतद्वद्धिवञ्चकः। ३०

व्यास उवाच

एवं ब्रुवन्तं शुक्रं तु वाक्यंसंदिग्धयागिरा। प्रह्लादस्तं तदोवाच गृहीत्वाचरणौ ततः।३१

प्रह्लाद उवाच

भार्गवाऽद्य समायातान्याज्यानस्मांस्तथाऽऽतुरान् ।
त्यक्तुं नाऽर्हसि सर्वज्ञ! त्वद्धितांस्तनयान्हि नः ।।३२।।

गते त्वयितु मन्त्रार्थं शैलूषेण दुरात्मना। त्वद्वेषमधुराऽऽलापैर्वयं तेन प्रवञ्चिताः।३३
अज्ञानकृतदोषेण नैवकुप्यति शान्तिमान्। सर्वज्ञस्त्वंविजानासिचित्तंनःप्रवणंत्वयि।३४
ज्ञात्वानस्तपसा भावं त्यजकोपं महामते। ब्रुवन्ति मुनयः सर्वे क्षणकोपाहिसाधवः।३५
जलं स्वभावतः शीतंवह्न्यातपसमागमात्। भवत्युष्णंवियोगाच्चशीतत्वमनुगच्छति।३६
क्रोधश्चाण्डालरूपोवै त्यक्तव्यः सर्वथा बुधैः। तस्माद्रोषंपरित्यज्यप्रसादंकुरु सुव्रत।३७
यदि न त्यजसि क्रोधं त्यजस्यस्मान्सुदुःखितान्। त्वया त्यक्ता महाभाग! गमिष्यामो रसातलम्।३८

व्यास उवाच

प्रह्लादस्य वचः श्रुत्वा भार्गवोज्ञानचक्षुषा। विलोक्यसुमनाभूत्वातानुवाच हसन्निव।३९
न भेतव्यं न गन्तव्यंदानवावारसातलम्। रक्षयिष्यामिवोयाज्यान्मन्त्रैरवितथैःकिल।४०
हितं सत्यं ब्रवीम्यद्य शृणुध्वंतत्तुनिश्चयम्। वचनं मम धर्मज्ञाःश्रुतं यद्ब्रह्मणः पुरा।४१
अवश्यम्भाविनोभावाप्रभवन्तिशुभाऽशुभाः। दैवंनचाऽन्यथाकर्तुंक्षमःकोऽपिधरातले।४२
अद्य मन्दबला यूयं कालयोगादसंशयम्। देवैर्जिताः सकृच्चाऽपि पातालं प्रतिपत्स्यथ।४३
प्राप्तःपर्यायकालो वै इतिब्रह्माऽभ्यभाषत। भुक्तं राज्यंभवद्भिश्चपूर्णंसर्वंसमृद्धिमत्।४४
युगानि दशपूर्णानि देवानाक्रम्य मूर्धनि। दैवयोगाच्चयुष्माभिर्भुक्तंत्रैलोक्यमूर्जितम्।४५
सावर्णिके मनौ राज्यं पुनस्तत्तु भविष्यति। पौत्रस्त्रैलोक्यविजयी राज्यं प्राप्स्यसि ते बलिः।४६
यदा वामनरूपेणहृतं देवेन विष्णुना। तदैव च भवत्पौत्रः प्रोक्तो देवेन जिष्णुना।४७
हृतं येन बले राज्यं देववाञ्छार्थसिद्धये। त्वमिन्द्रो भविताचाग्रेस्थितेसावर्णिकेमनौ।४८

भार्गव उवाच

इत्युक्तो हरिणापौत्रस्तव प्रह्लाद साम्प्रतम्। अदृश्यः सर्वभूतानां गुप्तश्चरति भीतवत्।४९
एकदा वासवेनासौ बलिगर्दभरूपभाक्। शून्येगृहेस्थितः कामं भयभीतः शतक्रतोः।५०
पृष्टश्च बहुधा तेन वासवेन बलिस्तदा। किमर्थं गार्दभं रूपं कृतवान्दैत्यपुङ्गव!।५१
भोक्ता त्वं सर्वलोकस्य दैत्यानांच प्रशासिता। "नलज्जाखररूपेण तव राक्षससत्तम"
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा दैत्यराजो बलिस्तदा ।।५२।।
प्रोवाच वचनं शक्रं कोऽत्रशोकःशतक्रतो!। यथाविष्णुर्महातेजामत्स्यकच्छपताङ्गतः।५३
तथाऽहं खररूपेण संस्थितः कालयोगतः। यथात्वंकमलेलीनःसंस्थितो ब्रह्महत्यया।५४
पीडितश्च तथा ह्यद्य स्थितोऽहंखररूपधृक्। दैवाधीनस्यकिंदुःखंकिंसुखंपाकशासन।५५
कालः करोति वै नूनं यदिच्छति यथा तथा।

भार्गव उवाच

इति तौ बलिदेवेशौ कृत्वा संविदमुत्तमाम् ।।५६।।
प्रबोधं प्रापतुः कामं यथास्थानं च जग्मतुः। इत्येतत्ते समाख्याता-मयादैवबलिष्ठिता।
दैवाधीनं जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम् ।।५७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे प्रह्लादेनशुक्रकोपसान्त्वनंनामचतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

पञ्चदशोऽध्यायः

इन्द्रकृताभगवतीस्तुतिः

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा भार्गवस्य महात्मनः। प्रह्लादस्तुसुसंहृष्टो बभूव नृपनन्दनः। १
ज्ञात्वा दैवं बलिष्ठं च प्रह्लादस्तानुवाच ह। कृतेऽपि युद्धेनजयोभविष्यति कदाचन। २
तदा ते जयिनः प्रोचुर्दानवा मदगर्विताः। संग्रामस्तु प्रकर्तव्यो दैवं किं न विदामहे। ३
निरुद्यमानां दैवंहि प्रधानमसुराधिप। केन दृष्टं क्व वा दृष्टं कीदृशं केन निर्मितम्। ४
तस्माद्युद्धं करिष्यामो बलमास्थय साम्प्रतम्। भवाऽग्रे दैत्यवर्य! त्वं सर्वज्ञोऽसि महामते!। ५
इत्युक्तस्तैस्तदा राजन्प्रह्लादः प्रबलारिहा। सेनानीश्च तदा भूत्वादेवान्युद्धेसमाह्वयत्। ६
तेऽपि तत्रासुरान्दृष्ट्वासंग्रामेसमुपस्थितान्। सर्वेसंभृतसंभारादेवास्तान्समयोधयन्। ७
संग्रामस्तु तदाघोरः शक्रप्रह्लादयोर्भवत्। पूर्णं वर्षशतं तत्रमुनीनां विस्मयावहः। ८
वर्तमाने महायुद्धे शुक्रेण प्रतिपालिताः। जयमापुस्तदादैत्याः प्रह्लादप्रमुखा नृप। ९
तदैवेन्द्रो गुरोर्वाक्यात्सर्वदुःखविनाशिनीम्। सस्मार मनसा देवीं मुक्तिदां परमां शिवाम्। १०

इन्द्र उवाच

जयदेवि! महामाये! शूलधारिणि चाम्बिके!। शङ्खचक्रगदापद्मखड्गहस्तेऽभयप्रदे। ११
नमस्ते भुवनेशानि! शक्तिदर्शननायिके। दशतत्त्वात्मिके! मातर्महाबिन्दुस्वरूपिणि!। १२
महाकुण्डलिनीरूपे! सच्चिदानन्दरूपिणि!। प्राणाग्निहोत्रविद्ये तेनमोदीपशिखात्मिके। १३
पञ्चकोशान्तरगते पुच्छब्रह्मस्वरूपिणि। आनन्दकलिके मातः सर्वोपनिषदर्चिते। १४
मातः! प्रसीद सुमुखी भव हीनसत्त्वांस्त्रायस्व नो जननि! दैत्यपराजितान्वै।
त्वं देवि! नः शरणदा भुवने प्रमाणा शक्ताऽसिदुःखशमनेऽखिलवीर्ययुक्ते। १५
ध्यायन्ति येऽपि सुखिनो नितरां भवन्ति दुःखान्विता विगतशोकभयास्तथाऽन्ये।
मोक्षार्थिनो विगतमानविमुक्तसङ्गाः संसारवारिधिजलं प्रतरन्ति सन्तः। १६
त्वं देवि! विश्वजननि प्रथितप्रभावा संरक्षणार्थमुदिताऽऽर्तिहरप्रतापा।
संहर्तुमेतदखिलं किल कालरूपा को वेत्ति तेऽम्ब चरितं ननु मन्दबुद्धिः। १७
ब्रह्मा हरश्च हरिदश्वरथो हरिश्च इन्द्रो यमोऽथवरुणोऽग्निसमीरणौ च।
ज्ञातुं क्षमा न मुनयोऽपि महानुभावा यस्याःप्रभावमतुलं निगमाऽऽगमाश्च। १८
धन्यास्त एव तव भक्तिपरा महान्तः संसारदुःखरहिताः सुखसिन्धुमग्नाः।
ये भक्तिभावरहिता न कदाऽपि दुःखांभोधिं जनिक्षयतरङ्गमुमे तरन्ति। १९
ये वीज्यमानाः सितचामरैश्च क्रीडन्ति धन्याः शिविकाधिरूढाः।
तैः पूजिता त्वं किल पूर्वदेहे नानोपहारैरिति चिन्तयामि॥२०॥
ये पूज्यमाना वरवारणस्था विलासिनीवृन्दविलासयुक्ताः।
सामन्तकैश्चोपनतैर्व्रजन्ति मन्ये हि तैस्त्वं किल पूजिताऽसि॥२१॥

व्यास उवाच

एवं स्तुता मघवता देवीविश्वेश्वरी यदा। प्रादुर्बभूव तरसा सिंहारूढा चतुर्भुजा। २२
शङ्खचक्रगदापद्मान्बिभ्रती चारुलोचना। रक्ताम्बरधरा देवी दिव्यमाल्यविभूषणा। २३
तानुवाच सुरान्देवी प्रसन्नवदनागिरा। भयं त्यजन्तुभोदेवाःशंविधास्येकिलाऽधुना। २४
इत्युक्त्वा सा तदा देवी सिंहाऽऽरूढाऽतिसुन्दरी। जगाम तरसा तत्र यत्र दैत्या मदान्विताः। २५
प्रह्लादप्रमुखाः सर्वे दृष्ट्वा देवीं पुरःस्थिताम्। ऊचुःपरस्परं भीताःकिंकर्तव्यमितस्तदा। २६

देवं नारायणं चाऽत्र संप्राप्ता चण्डिका किल। महिषान्तकरी नूनं चण्डमुण्डविनाशिनी।२७
न हनिष्यति नः सर्वानऽम्बिकानाऽत्रसंशयः। वक्रदृष्ट्यायया पूर्वंनिहतौ मधुकैटभौ।२८
एवं चिन्ताऽतुरान्वीक्ष्यप्रह्लादस्तानुवाचह। योद्धव्यंनाऽथगन्तव्यंपलाय्यदानवोत्तमाः।२६
नमुचिस्तानुवाचाऽथ पलायनपरानिह। हनिष्यतिजगन्माता रुषिता किल हेतिभिः।३०
तथा कुरु महाभाग! यथा दुःखं न जामते। व्रजामोऽद्यैव पातालंतांस्तुत्वातदनुज्ञया।३१

प्रह्लाद उवाच

स्तौमि देवीं महामायां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम्। सर्वेषां जननीं शक्तिं भक्तानामभयङ्करीम्।३२

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा विष्णुभक्तस्तु प्रह्लादःपरमार्थवित्। तुष्टाव जगतांधात्रींकृताञ्जलिपुटस्तदा।३३
मालासर्पवदाभाति यस्यां सर्वं चराचरम्। सर्वाधिष्ठानरूपायै तस्यै ह्रींमूर्तये नमः।३४
त्वत्तः सर्वमिदं विश्वं स्थावरंजङ्गमंतथा। अन्येनिमित्तमात्रास्तेकर्तारस्तवनिर्मिताः।३५
नमो देवि! महामाये सर्वेषां जननी स्मृता। को भेदस्तव देवेषु दैत्येषु स्वकृतेषु च।३६
मातुः पुत्रेषु कोभेदोऽप्यशुभेषु शुभेषु च। तथैव देवेष्वस्मासु नकर्तव्यस्त्वयाऽधुना।३७
यादृशास्तादृशा मातः सुतास्तेदानवाः किल। यतस्त्वं विश्वजननीपुराणेषुप्रकीर्तिता।३८
तेऽपि स्वार्थपरा नूनं तथैव वयमप्युत। नान्तरं दैत्यसुरयोर्भेदोऽयंमोहसम्भवः।३६
धनदारादिभोगेषु वयं सक्ता दिवानिशम्। तथैव देवा देवेशि! कोभेदोऽसुरदेवयोः।४०
तेऽपिकश्यपदायादावयंतत्सम्भवाःकिल। कुतोविरोधसम्भूतिर्जातामातस्तवाऽधुना।४१
न तथाविहितंमातस्त्वयि सर्वसमुद्भवे। साम्यतैव त्वयास्थाप्यादेवेष्वस्माषुचैवहि।४२
गुणव्यतिकरात्सर्वे समुत्पन्नाःसुरासुराः। गुणान्विताभवेयुस्तेकथं देह भृतोऽमराः।४३
कामः क्रोधश्चलोभश्चसर्वदेहेषुसंस्थिताः। वर्तन्तेसर्वदातस्मात्कोऽविरोधीभवेज्जनः।४४

त्वया मिश्रो विरोधोऽयं कल्पितः किल कौतुकात्।
मन्यामहे विभेदेन नूनं युद्धदिदृक्षया ।।४५।।

अन्यथाखलुभ्रातृणांविरोधःकीदृशोऽनघे। त्वंचेन्नेच्छसिचामुण्डेवीक्षितुंकलहं किल।४६
जानामिधर्मं धर्मज्ञेवेद्मिचाऽहंशतक्रतुम्। तथाऽपिकलहोऽस्माकंभोगार्थन्देविसर्वदा।४७

एकः कोऽपि न शास्ताऽस्ति संसारे त्वां विनाऽम्बिके।
स्पृहावतस्तु कः कर्तुं क्षमते वचनं बुधः।।४८।।

देवासुरैरयं सिन्धुर्मथितःसमये क्वचित्। विष्णुनाविहितो भेदः सुधारत्नच्छलेन वै।४६
त्वयाऽसौ कल्पितः शौरिः पालकत्वे जगद्गुरुः। तेन लक्ष्मीः स्वयं लोभाद् गृहीताऽमरसुन्दरी।५०
ऐरावतस्तथेन्द्रेण पारिजातोऽथकामधुक्। उच्चैःश्रवाःसुरैःसर्वंगृहीतंवैष्णवेच्छया।५१

अनयंतादृशंकृत्वा जातादेवास्तु साधवः।
अन्यायिनः सुरानूनं पश्यत्वं धर्मलक्षणम्।
संस्थापिताः सुरा नूनं विष्णुनाबहुमानिना ।।५२।।
नूनं दैत्याः पराभूवन्पश्य त्वं धर्मलक्षणम्।
क्व धर्मः कीदृशो धर्मः क्व कार्यं क्व च साधुता ।।५३।।

कथयामिचकस्याऽग्रेसिद्धंमैमांसिकंमतम्। तार्किकायुक्तिवादज्ञाविधिज्ञावेदवादकाः।५४
उक्ताःसकर्तृकंविश्वंविवदन्ते जडात्मकाः। कर्ताभवति चेदस्मिन्संसारे वितते किल।५५
विरोधः कीदृशस्तत्रचैककर्मणि वै मिथः। वेदेनैकमतिःकस्माच्छास्त्रेष्वपितथापुनः।५६
नैकवाक्यं वचस्तेषामपि वेदविदां पुनः। यतः स्वार्थपरंसर्वञ्जगत्स्थावरजङ्गमम्।५७

निःस्पृहःकोऽपिसंसारेनभवेन्नभविष्यति ।शशिनाऽथगुरोर्भार्याहृताज्ञात्वा बलादपि।५८
गौतमस्यतथेन्द्रेण जानताधर्मनिश्चयम्।गुरुणाऽनुजभार्याच भुक्ता गर्भवती बलात्।५९
शप्तो गर्भगतोबालः कृतश्चान्धस्तथापुनः।विष्णुनाचशिरश्छिन्नं राहोश्चक्रेणवैबलात्।६०
अपराधंविनाकामं तदासत्त्ववताऽम्बिके।पौत्रो धर्मवतां शूरः सत्यव्रतपरायणः।६१
यज्वा दानपतिः शांतः सर्वज्ञः सर्वपूजकः।कृत्वाऽथ वामनं रूपं हरिणाछलवेदिना।६२
वञ्चितोऽसौबलिःसर्वंहृतंराज्यंपुराकिल ।तथाऽपिदेवान्धर्मस्थान्प्रवदन्तिमनीषिणः।६३
वदन्तिचाटुवादांश्च धर्मवादाञ्जयंगताः।एवं ज्ञात्वा जगन्मातर्यथेच्छसि तथा कुरु।६४
शरणा दानवाः सर्वे जहि वा रक्ष वा पुनः ।

श्रीदेव्युवाच

सर्वे गच्छत पातालं तत्र वासं यथेप्सितम् ।।६५।।
कुरुध्वं दानवाःसर्वे निर्भयागतमन्यवः।कालःप्रतीक्ष्योयुष्माभिःकारणंसशुभेऽशुभे।६६
मुनिर्वेदपराणां हि सुखंसर्वत्र सर्वदा।त्रैलोक्यस्य चराज्येऽपिनसुखंलोभचेतसाम्।६७
कृतेऽपिनसुखंपूर्णंसंस्पृहाणांफलैरपि ।तस्मात्त्यक्त्वा महीमेतां प्रयांत्वद्यमहीतलम्।६८
ममाऽऽज्ञां पुरतः कृत्वा सर्वे विगतकल्मषाः ।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं देव्यास्तथेत्युक्त्वा रसातलम् ।।६९।।
प्रणम्यदानवाःसर्वेगताःशक्त्याऽभिरक्षिताः।अन्तर्दधेततोदेवी देवाःस्वभुवनंगताः।७०
त्यक्त्वावैरंस्थिताः सर्वे ते तदा देवदानवाः।एतदाख्यानमखिलंयःशृणोतिवदत्यथ।
सर्वदुःखविनिर्मुक्तः प्रयाति पदमुत्तमम् ।।७१।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे देवीकथनेनदानवानांरसातलप्रतिगमनंनामपञ्चदशोऽध्यायः ।।१५।।

षोडशोऽध्यायः

हरेर्नानावताराणाम्वर्णनम्

जनमेजय उवाच

भृगुशापान्मुनिश्रेष्ठ हरेरद्भुतकर्मणः।अवताराः कथं जाताःकस्मिन्मन्वन्तरे विभो।१
विस्तराद्वद धर्मज्ञ अवतारकथांहरेः।पापनाशकरीं ब्रह्मञ्छतां सर्वसुखावहाम्।२

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि अवतारान्हरेर्यथा।यस्मिन्मन्वन्तरेजाता युगेयस्मिन्नराधिप।३
येन रूपेण यत्कार्यं कृतं नारायणेन वै।तत्सर्वं नृप! वक्ष्यामि संक्षेपेण तवाऽधुना।४
धर्मस्यैवाऽवतारोऽभूच्चाक्षुषेमनुसम्भवे ।नरनारायणौ धर्मपुत्रौ ख्यातौ महीतले।५
अथ वैवस्वताख्येऽस्मिन्द्वितीयेतु युगेपुनः।दत्तात्रेयोऽवतारोऽत्रेःपुत्रत्वमगमद्धरिः।६
ब्रह्माविष्णुस्तथा रुद्रस्त्रयोऽमीदेवसत्तमाः।पुत्रत्वमगमन्देवास्तस्याऽत्रेर्भार्ययावृताः।७
अनसूयाऽत्रिपत्नीच सतीनामुत्तमा सती।यया सम्प्रार्थिता देवाः पुत्रत्वमगमंस्त्रयः।८
ब्रह्माऽभूत्सोमरूपस्तु दत्तात्रेयोहरिःस्वयम्।दुर्वासा रुद्ररूपोऽसौ पुत्रत्वंते प्रपेदिरे।९
नृसिंहस्यावतारस्तु देवकार्यार्थसिद्धये।चतुर्थे तु युगे जातो द्विधारूपो मनोहरः।१०
हिरण्यकशिपोः सम्यग्वधाय भगवान्हरिः।चक्रेरूपं नारसिंहं देवानां विस्मयप्रदम्।११
बलेर्नियमनार्थाय श्रेष्ठे त्रेतायुगे तथा।चकार रूपं भगवान्वामनं कश्यपान्मुनेः।१२

छलयित्वामखेभूपंराज्यं तस्य जहार ह। पाताले स्थापयामास बलिं वामनरूपधृक्।१३
युगे चैकोनविंशेऽथ त्रेताख्ये भगवान्हरिः। जमदग्निसुतोजातो रामोनाम महाबलः।१४
क्षत्रियान्तकरः श्रीमान्सत्यवादी जितेन्द्रियः। दत्तवान्मेदिनीं कृत्स्नां कश्यपाय महात्मने।१५
यो वै परशुरामाख्यो हरेरद्भुतकर्मणः। अवतारस्तु राजेन्द्र! कथितः पापनाशनः।१६
त्रेतायुगे रघोर्वंशे रामोदशरथात्मजः। नरनारायणांशौ द्वौ जातौ भुवि महाबलौ।१७
अष्टाविंशेयुगेशस्तौद्वापरेऽर्जुनशौरिणौ। धराभाराऽवतारार्थंजातौ कृष्णार्जुनौभुवि।१८
कृतवन्तौ महायुद्धं कुरुक्षेत्रेऽतिदारुणम्। एवं युगे युगे राजन्नवतारा हरेः किल।१९
भवन्ति बहवः कामं प्रकृतेरनुरूपतः। प्रकृतेरखिलं सर्वं वशमेतज्जगत्त्रयम्।२०
यथेच्छति तथैवेयं भ्रामयत्यनिशंजगत्। पुरुषस्य प्रियार्थंसा रचयत्यखिलञ्जगत्।२१
सृष्ट्वा पुराहि भगवाञ्जगदेतच्चराचरम्। सर्वादिः सर्वगश्चासौ दुर्ज्ञेयः परमोऽव्ययः।२२

निरालम्बो निराकारो निःस्पृहश्च परात्परः।
उपाधितस्त्रिधा भाति यस्याः सा प्रकृतिः परा ।।२३।।
उत्पत्तिः कालयोगात्सा भिन्ना भाति शिवा तदा।
सा विश्वं कुरुते कामं सा पालयति कामदा ।।२४।।
कल्पान्ते संहरत्येव विरूपा विश्वमोहिनी।
तया युक्तोऽसृजद्ब्रह्मा विष्णुः पाति तयाऽन्वितः ।।२५।।

रुद्रःसंहरतेकामंतयासंगिलितः शिवः। साचैवोत्पाद्य काकुत्स्थं पुरा वै नृपसत्तमम्।२६
कुत्रचित्स्थापयामास दानवानांजयायच। एवमस्मिंश्चसंसारेसुखदुःखान्विताःकिल।२७

भवन्ति प्राणिनः सर्वे विधितन्त्रनियन्त्रिताः ।।२८।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे हरेर्नानावताराणांवर्णनंनामषोडशोऽध्यायः ।।१६।।

सप्तदशोऽध्यायः

सुराङ्गनानाम्प्रतिनारायणवरदानम्

जनमेजय उवाच

वाराङ्गनास्त्वयाऽऽख्याता नरनारायणाऽऽश्रमे। एकं नारायणं शांतं कामयानाः स्मरातुराः।१
शप्तुकामस्तदाजातो मुनिर्नारायणश्च ताः। निवारितोनरेणाऽथभ्रात्राधर्मविदा नृप।२
किं कृतं मुनिनातेन व्यसने समुपस्थिते। ताभिःसङ्कल्पितेनाऽर्थकामार्थाभिभृशंमुने।३
शक्रेणोत्पादिताभिश्च बहुप्रार्थनयापुनः। याचितेनविवाहार्थं किं कृतं तेन जिष्णुना।४
इत्येतच्छ्रोतुमिच्छामि चरितंतस्यमोक्षदम्। नारायणस्यमे ब्रूहि विस्तरेणपितामह।५

व्यास उवाच

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि यथा तस्य महात्मनः। धर्मपुत्रस्य धर्मज्ञ विस्तरेण वदामि ते।६
शप्तुकामस्तुसन्दृष्टोनरेणाऽथयदाहरिः। वारितोऽसौसमाश्वास्यमुनिर्नारायणस्तदा।७
शांतकोपस्तदोवाचतास्तपस्वीमहामुनिः। स्मितपूर्वमिदंवाक्यं मधुरं धर्मनन्दनः।८
अस्मिञ्जन्मनिचार्वंग्यः कृतसंकल्पवाहनम्। आवाभ्याञ्च न कर्तव्यःसर्वथादारसंग्रहः।९
तस्माद्गच्छन्तुत्रिदिवं कृपां कृत्वा ममोपरि। धर्मज्ञा न प्रकुर्वन्ति व्रतभङ्गं परस्य वै।१०
शृङ्गारेऽस्मिन्रसेनूनंस्थायीभावोरतिःस्मृतः। कथंकरोमिसम्बन्धंतदभावेसुलोचनाः।११
कारणेनविनाकार्यंन भवेदितिनिश्चयः। कविभिःकथितंशास्त्रेस्थायीभावोरसःकिल।१२

धन्यः सुचारुसर्वाङ्गःसभाग्योऽहंधरातले। प्रीतिपात्रंयतोजातो भवतीनामकृत्रिमम्।१३
भवतीभिःकृपां कृत्वा रक्षणीयंव्रतं मम। भविष्यामिमहाभागाः पतिरप्यन्यजन्मनि।१४
अष्टाविंशे विशालाक्ष्यो द्वापरेऽस्मिन्धरातले। देवानां कार्यसिद्ध्यर्थम्प्रभविष्यामि सर्वथा।१५
तदा भवत्यो मद्दाराः प्राप्यजन्मपृथक्पृथक्। भूपतीनांसुताभूत्वापत्नीभावंगमिष्यथ।१६
इत्याश्वास्यहरिस्तास्तु प्रतिश्रुत्य परिग्रहम्। व्यसर्जयत्सभगवाञ्जग्मुश्चविगतज्वराः।१७
एवं विसर्जितास्तेन गताःस्वर्गं तदाङ्गनाः। शक्राय कथयामासुःकारणं सकलं पुनः।१८
आश्रुत्य मघवांस्ताभ्यो वृत्तान्तं तस्य विस्तरात्। तुष्टाव तं महात्मानं नारीर्दृष्ट्वा तथोर्वशी।१९

इन्द्र उवाच

अहोधैर्यं मुने कामं तथैवच तपोबलम्। येनोर्वश्यः स्वतपसा तादृग्रूपाः प्रकल्पिताः।२०
इतिस्तुत्वाप्रसन्नात्माबभूवसुरराट्ततः। नारायणोऽपिधर्मात्मातपस्यभिरतोऽभवत्।२१
इत्येतत्सर्वमाख्यातं मुनेर्वृत्तान्तमद्भुतम्। नारायणस्य सकलं नरस्य च महामुने!।२२
तौहिकृष्णार्जुनौ वीरौ भूभारहरणायच। जातौतौ भरतश्रेष्ठ! भृगोःशापवशादिह।२३

राजोवाच

कृष्णावतारचरितं विस्तरेण वदस्व मे। सन्देहो ममचित्तेऽस्तितं निवारय मानद!।२४
ययोः पुत्रत्वमापन्नो हर्यनन्तौमहाबलौ। देवकीवसुदेवौ तौ दुःखभाजौकथं मुने!।२५
कंसेननिगडेबद्धौपीडितौबहुवत्सरान्। ययोःपुत्रो हरिःसाक्षात्तपसातोषितोऽभवत्।२६
जातोऽसौमधुरायांतुगोकुले स कथंगतः। कंसंहत्वाद्वारवत्यां निवासंकृतवान्कथम्।२७
पित्रादिसेवितंदेशं समृद्धं पावनं किल। त्यक्त्वा देशान्तरेऽनार्येगतवान्सकथंहरिः।२८
कुलञ्च द्विजशापेन कथमुत्सादितंहरेः। भारावतारणं कृत्वा वासुदेवः सनातनः।२९
देहंमुमोच तरसाजगाम च दिवं हरिः। पापिष्ठानाञ्च भारेण व्याकुलाऽभूच्चमेदिनी।३०
ते हतावासुदेवेन पार्थेनामितकर्मणा। लुण्ठितायैर्हरेः पत्न्यस्ते कथं न निपातिताः।३१
भीष्मो द्रोणस्तथा कर्णो बाह्लीकोऽप्यथ पार्थिवः।
वैराटोऽथ विकर्णश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्थिवः॥३२॥
सोमदत्तादयःसर्वे निहताः समरे नृप। तेषामुत्तारितो भारश्चौराणां न हृतः कथम्।३३
कृष्णपत्न्यःकथं दुःखं प्राप्ताः प्रान्तेपतिव्रताः। सन्देहोऽयंमुनिश्रेष्ठ चित्तेमे परिवर्तते।३४
वासुदेवस्तु धर्मात्मा पुत्रदुःखेन तापितः। त्यक्तवान्स कथं प्राणानपमृत्युं जगाम ह।३५
पाण्डवा धर्मसंयुक्ताः कृष्णे चनिरताःसदा। ते कथंदुःखभोक्तारो ह्यभवन्मुनिसत्तम।३६
द्रौपदीचमहाभागाकथंदुःखस्यभागिनी। वेदीमध्याच्चसञ्जातालक्ष्म्यंशसम्भवा किल।३७
सभायाञ्चसमानीता रजोदोषसमन्विता। बाला दुःशासनेनाथ केशग्रहणकर्शिता।३८
पीडिता सिन्धुराज्ञाऽथ वनमध्यगतासती। तथैवकीचकेनापि पीडितारुदती भृशम्।३९
पुत्राः पञ्चैवतस्यास्तु निहता द्रौणिनागृहे। सुभद्रायाः सुतो युद्धेबालएवनिपातित।४०
तथाच देवकी पुत्राःषट्कंसेन निषूदिताः। समर्थेनाऽपि हरिणा दैवं न कृतमन्यथा।४१
यादवानां तथा शापः प्रभासे निधनंपुनः। कुलक्षयस्तथा तीव्रस्तत्पत्नीनाञ्चलुंठनम्।४२
विष्णुना चेश्वरेणापिसाक्षान्नारायणेन च। उग्रसेनस्य सेवावै दासवत्सततं कृता।४३
सन्देहोऽयं महाभाग तत्र नारायणे मुनौ। सर्वजन्तुसमानत्वं व्यवहारे निरन्तरम्।४४
हर्षशोकादयो भावाः सर्वेषां सदृशाः कथम्। ईश्वरस्यहरेर्जाता कथमप्यन्यथा गतिः।४५
तस्माद्विस्तरतो ब्रूहि कृष्णस्य चरितं महत्। अलौकिकेन हरिणा कृतंकर्म महीतले।४६

हता आयुःक्षये दैत्याः क्लेशेन महता पुनः। क्वैश्वर्यशक्तिःप्रथिताहरिणामुनिसत्तम।४७
रुक्मिणीहरणे नूनं गृहीत्वाऽथ पलायनम्। कृतं हि वासुदेवेन चौरवच्चरितं तदा।४८
मथुरामण्डलं त्यक्त्वा समृद्धं कुलसम्मतम्। जरासन्धभयात्तेन द्वारकागमनं कृतम्।४९
तदा केनाऽपि न ज्ञातोभगवान्हरिरीश्वरः। किंचित्प्रब्रूहि मे ब्रह्मन्कारणंव्रजगोपनम्।५०
एते चान्ये च बहवः संदेहा वासवीसुत। नाशयाऽद्य महाभागसर्वज्ञोऽसिद्विजोत्तम।५१
गोप्यस्तथैकः सन्देहो हृदयान्न निवर्तते। पाञ्चाल्याःपञ्चभर्तृत्वं लोकेकिं न जुगुप्सितम्।५२
सदाचारं प्रमाणं हि प्रवदन्ति मनीषिणः। पशुधर्मः कथं तैस्तु समर्थैरपि संश्रितः।५३
भीष्मेणापि कृतं किं वा देवरूपेणभूतले। गोलकौ तौ समुत्पाद्य यत्तुवंशस्य रक्षणम्।५४
धिग्धर्मनिर्णयः कामं मुनिभिः परिदर्शितः। येनकेनाप्युपायेन पुत्रोत्पादनलक्षणः।५५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां चतुर्थस्कन्धे सुराङ्गनानाम्प्रतिनारायणवरदानंनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥१७॥

अष्टादशोऽध्यायः

दुष्टराजभाराक्रान्तायामेदिन्याब्रह्माणम्प्रतिगमनम्

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कृष्णस्य चरितंमहत्। अवतारकारणञ्चैव देव्याश्चरितमद्भुतम्।१
धरैकदाभराक्रान्तारुदतीचातिकर्षिता। गोरूपधारिणीदीना भीताऽगच्छत्त्रिविष्टपम्।२
पृष्टाशक्रेण किन्तेऽद्यवर्तते भयमित्यथ। केनवैपीडिताऽसि त्वं किं ते दुःखंवसुन्धरे।३
तच्छ्रुत्वेला तदोवाच शृणदेवेश! मेऽखिलम्। दुःखं पृच्छसि यत्त्वं मे भाराक्रान्ताऽस्मि मानद।४
जरासन्धो महापापी मागधेषु पतिर्मम। शिशुपालस्तथाचैद्यः काशिराजःप्रतापवान्।५
रुक्मी च बलवान्कंसोनरकश्चमहाबलः। शाल्वःसौभपतिः क्रूरः केशीधेनुकवत्सकौ।६
सर्वधर्मविहीनाश्च परस्परविरोधिनः। पापाचारा मदोन्मत्ता कालरूपाश्च पार्थिवाः।७
तैरहं पीडिता शक्र! भाराक्रान्ताऽक्षमा विभो!। किं करोमि क्वगच्छामि चिन्ता मे महती स्थिता।८
पीडिताऽहंवराहेणविष्णुना प्रभविष्णुना। शक्रजानीहि हरिणादुःखाद्दुःखतरं गता।९
यतोऽहंदुष्टदैत्येनकश्यपस्यात्मजेन वै। हृताऽहं हिरण्याक्षेण मग्ना तस्मिन्महार्णवे।१०
तदासूकररूपेणविष्णुनानिहतोऽप्यसौ। उद्धृताऽहं वराहेणस्थापिताहिस्थिराकृता।११
नोचेद्रसातले स्वस्था स्थिता स्यां सुखशायिनी। न शक्ताऽस्म्यद्य देवेश! भारं वोढुं दुरात्मनाम्।१२
अग्रे दुष्टः समायाति ह्यष्टाविंशस्तथा कलिः। तदाऽहं पीडिता शक्र! गन्ताऽस्म्याशु रसातलम्।१३
तस्मात्त्वं देवदेवेश! दुःखरूपार्णवस्य च। पारदो भव भारं मे हर पादौ नमामि ते।१४

इन्द्र उवाच

इले किन्ते करोम्यद्य ब्रह्माणंशरणं व्रज। अहं तत्राऽऽगमिष्यामिसतेदुःखं हरिष्यति।१५
तच्छ्रुत्वा त्वरिता पृथ्वी ब्रह्मलोकं गता तदा। शक्रोपिपृष्ठतः प्राप्तः सर्वदेवपुरःसरः।१६
सुरभीमागतांतत्रदृष्टोवाच प्रजापतिः। महीं ज्ञात्वा महाराज ध्यानेन समुपस्थिताम्।१७
कस्माद्रुदसिकल्याणि किं तेदुःखंवदाऽधुना। पीडिताऽसिचकेनत्वं पापाचरेणभूर्वद।१८

धरोवाच

कलिरायातिदुष्टोऽयं विभेमितद्भयादहम्। पापाचाराःप्रजास्तत्रभविष्यन्तिजगत्पते।१९
राजानश्च दुराचाराः परस्परविरोधिनः। चौरकर्मरताः सर्वे राक्षसाः पूर्णवैरिणः।२०

तान्हत्वा नृपतीन्भारं हरमेऽद्यपितामह। पीडिताऽस्मिमहाराजसैन्यभारेणभूभृताम्।२१

ब्रह्मोवाच

नाऽहं शक्तस्तथा देवि भारावतरणे तव। गच्छावः सदनं विष्णोर्देवदेवस्य चक्रिणः।२२
स ते भारापनोदम्वैकरिष्यतिजनार्दनः। पूर्वं मयाऽपि ते कार्यंचिन्तितंसुविचार्य च।२३
तत्र गच्छ सुरश्रेष्ठ! यत्र देवो जनार्दनः।

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा वेदकर्ताऽसौ पुरस्कृत्य सुरांश्च गाम् ।।२४।।
जगाम विष्णुसदनं हंसारूढश्चतुर्मुखः। तुष्टाव वेदवाक्यैश्च भक्तिप्रवणमानसः।२५

ब्रह्मोवाच

सहस्रशीर्षा त्वमसि सहस्राक्षः सहस्रपात्। त्वं वेदपुरुषःपूर्वंदेवदेवःसनातनः।२६
भूतपूर्वं भविष्यच्च वर्तमानं च यद्विभो। अमरत्वं त्वया दत्तमस्माकं च रमापते।२७
एतावान्महिमातेऽस्ति कोनवेत्तिजगत्त्रये। त्वंकर्ताऽप्यविताहंतात्वं सर्वगतिरीश्वरः।२८

व्यास उवाच

इतीडितः प्रभुर्विष्णुः प्रसन्नो गरुडध्वजः। दर्शनञ्च ददौ तेभ्यो ब्रह्मादिभ्योऽमलाशयः।२९
पप्रच्छ स्वागतं देवान्प्रसन्नवदनो हरिः। ततस्त्वागमने तेषां कारणञ्च सविस्तरम्।३०
तमुवाचाब्जजोनत्वाधरादुःखञ्चसंस्मरन्। भारावतरणं विष्णो कर्तव्यं ते जनार्दन।३१
भुविधृत्वाऽवतारं त्वं द्वापरान्ते समागते। हत्वा दुष्टान्नृपानुर्व्या हरभारं दयानिधे।३२

विष्णुरुवाच

नाऽहंस्वतन्त्र एवाऽत्रन ब्रह्मानशिवस्तथा। नेन्द्रोऽग्निर्नयमस्त्वष्टानसूर्योवरुणस्तथा।३३
योगमायावशे सर्वमिदं स्थावरजङ्गमम्। ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं ग्रथितं गुणसूत्रतः।३४
यथा सा स्वेच्छया पूर्वं कर्तुमिच्छति सुव्रत! तथा करोति सुहिता वयं सर्वेऽपि तद्वशाः।३५
यद्यहं स्यां स्वतन्त्रो वै चिन्तयन्तु धिया किल। कुतोऽभवन्मत्स्यवपुः कच्छपो वा महार्णवे।३६
तिर्यग्योनिषुकोभोगःकाकीर्तिःकिंसुखंपुनः। किं पुण्यं किं फलं तत्र क्षुद्रयोनिगतस्य मे।३७
कोलोवाऽथनृसिंहोवा वामनोवाऽभवंकुतः। जमदग्निसुतःकस्मात्सम्भवेयंपितामह।३८
नृशंसं वा कथं कर्म कृतवानस्मि भूतले। क्षतजैस्तु ह्रदान्सर्वान्पूरयेयं कथम्पुनः।३९
तत्कथं जमदग्नेश्च पुत्रोभूत्वा द्विजोत्तमः। क्षत्रियान्हतवानादौ निर्दयो गर्भगानपि।४०
रामोभूत्वाऽथ देवेन्द्रप्राविशद्दण्डकंवनम्। पदातिश्चीरवासाश्च जटावल्कलवान्पुनः।४१
असहायो ह्यपाथेयो भीषणे निर्जने वने। कुर्वन्नाखेटकं तत्र व्यचरं विगतत्रपः।४२
न ज्ञातवान्मृगं हैमं मायया पिहितस्तदा। उटजे जानकींत्यक्त्वानिर्गतस्तत्पदानुगः।४३
लक्ष्मणोऽपि च तां त्यक्त्वा निर्गतो मत्पदानुगः।
वारितोऽपि मयाऽत्यर्थं मोहितः प्राकृतैर्गुणैः ।।४४।।
भिक्षुरूपं ततःकृत्वा रावणः कपटाकृतिः। जहार तरसा रक्षो जानकींशोककर्शिताम्।४५
दुःखार्तेन मया तत्र रुदितञ्च वनेवने। सुग्रीवेण च मित्रत्वं कृतं कार्यवशान्मया।४६
अन्यायेनहतोबालीशापाच्चैवनिवारितः। सहायान्वानरान्कृत्वालङ्कायांचलितः पुनः।४७
बद्धोऽहं नागपाशैश्चलक्ष्मणश्चममानुजः। विसंज्ञौपतितौ दृष्ट्वा वानराविस्मयं गताः।४८
गरुडेन तदाऽऽगत्य मोचितौ भ्रातरौकिल। चिंतामेमहतीजाता दैवंकिंवाकरिष्यति।४९
हृतंराज्यंवनेवासो मृतस्तातः प्रियाहृता। युद्धंकष्टंददात्येवमग्रे किं वा करिष्यति।५०

प्रथमं तु महादुःखमराज्यस्य वनाश्रयम्। राजपुत्र्याऽन्वितस्यैवधनहीनस्य मे सुराः।५१
वराटिकाऽपि पित्रामे न दत्तावननिर्गमे। पदातिरसहायोऽहं धनहीनश्च निर्गतः।५२
चतुर्दशैववर्षाणि नीतानि च तदा मया। क्षात्रन्धमं परित्यज्य व्याधवृत्त्या महावने।५३
देवाद्युद्धेजयःप्राप्तोनिहतोऽसौमहासुरः। आनीताचपुनःसीताप्राप्ताऽयोध्यामयातथा।५४
वर्षाणिकतिचित्तत्र सुखं संसारसम्भवम्। प्राप्तं राज्यञ्चसम्पूर्णं कोसलानधितिष्ठता।५५
पुरैवं वर्तमानेन प्राप्तराज्येन वै तदा। लोकापवादभीतेन त्यक्त्वा सीता वने मया।५६
कान्ताविरहजं दुःखं पुनः प्राप्तं दुरासदम्। पातालं सा गता पश्चाद्धरां भित्त्वा धरात्मजा।५७
एवं रामावतारेऽपि दुःखं प्राप्तं निरन्तरम्। परतन्त्रेणमेनूनं स्वतन्त्रः को भवेत्तदा।५८
पश्चात्कालवशात्प्राप्तःस्वर्गोमेभ्रातृभिः सह। परतन्त्रस्यकावार्तावक्तव्याबिबुधेनवै ।५९
परतन्त्रोऽस्म्यहं नूनं पद्मयोने निशामय। तथा त्वमपि रुद्रश्च सर्वेनान्ये सुरोत्तमाः।६०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे ब्रह्माणम्प्रतिविष्णुवाक्यन्नामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

* एकोनविंशोऽध्यायः *

देवैःशक्तिस्तवनम्

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाभगवान्विष्णुःपुनराहप्रजापतिम्। यन्मायामोहितःसर्वस्तत्त्वंजानातिनोजनः।१
वयंमायावृताःकामं न स्मरामो जगद्गुरुम्। परमं पुरुषं शांतं सच्चिदानन्दमव्ययम्।२
अहंविष्णुरहं ब्रह्मा शिवोऽहमिति मोहिताः। नजानीमोवयंधातःपरंवस्तुसनातनम्।३
यन्माया मोहितश्चाहं सदावर्ते परात्मनः। परवान्दारुपाञ्चालीमायिकस्य यथा वशे।४
भवताऽपि तथा दृष्ट्वावि भूतिस्तस्य चाद्भुता। कल्पादौ भवयुक्तेनमयाऽपिचसुधार्णवे।५
मणिद्वीपेऽथ मन्दारविटपे रासमण्डले। समाजे तत्र सा दृष्टा श्रुतानवचसाऽपि च।६

तस्मात्तां परमां शक्तिं स्मरन्त्वद्य सुराः शिवाम्।
सर्वकामप्रदां मायामाद्यां शक्तिं परात्मनः ॥७॥

व्यास उवाच

इत्युक्ता हरिणा देवा ब्रह्माद्या भुवनेश्वरीम्। सस्मरुर्मनसा देवींयोगमायांसनातनीम्।८
स्मृतमात्रा तदादेवी प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ। पाशाङ्कुशवराभीतिधरादेवीजपारुणा ।
दृष्ट्वा प्रमुदिता देवास्तुष्टुवुस्तां सुदर्शनाम् ॥९॥

देवा ऊचुः

ऊर्णनाभाद्यथातन्तुर्विस्फुलिङ्गा विभावसोः। तथा जगद्यदेतस्यानिर्गतंतां नतावयम्।१०
यन्मायाशक्तिसंक्लृप्तं जगत्सर्वं चराचरम्। तां चित्ते भुवनाधीशां स्मरामः करुणार्णवाम्।११
यदज्ञानाद्भवोत्पत्तिर्यज्ज्ञानाद्भवनाशनम्। संविद्रूपां च तां देवींस्मरामःसाप्रचोदयात्।१२
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।१३
मातर्नताः स्म भुवनार्तिहरे! प्रसीद शं नो विधेहि कुरु कार्यमिदं दयार्द्रे!।
भारं हरस्व विनिहत्य सुरारिवर्गं मह्या महेश्वरि! सतां कुरु शं भवानि!।१४
यद्यम्बुजाक्षि दयसे न सुरान्कदाचित्किं ते क्षमा रणमुखेऽसिशरैः प्रहर्तुम्।
एतत्त्वयैव गदितं ननु यक्षरूपं धृत्वा तृणं दह हुताशपदाभिलापैः।१५
कंसः कुजोऽथ यवनेन्द्रसुतश्च केशी बार्हद्रथो बकबकीखरशाल्वमुख्याः।

येऽन्ये तथा नृपतयो भुविसन्ति तांस्त्वं हत्वा हरस्व जगतो भरमाशु मातः! ।१६
ये विष्णुना न निहताः किल शङ्करेण ये वा विगृह्य जलजाक्षि! पुरन्दरेण।
ते ते मुखं सुखकरं सुसमीक्षमाणास्संख्ये शरैर्विनिहिता निजलीलया ते ।१७
शक्तिं विना हरिहरप्रमुखाः सुराश्च नैवेश्वरा विचलितुं तव देवदेवि!।
किं धारणाविरहितः प्रभुरप्यनन्तो धर्तुं धरां च रजनीशकलावतंसे ।१८

इन्द्र उवाच

वाचाविना विधिरलं भवतीह विश्वं कर्तुं हरिः किमु रमारहितोऽथ पातुम्।
संहर्तुमीश उभयोज्झित ईश्वरः किन्ते ताभिरेव सहिताः प्रभवः प्रजेशाः ।१९

विष्णुरुवाच

कर्तुं प्रभुर्न द्रुहिणो न कदाचनाऽहं नाऽपीश्वरस्तव कलारहितस्त्रिलोक्याः।
कर्तुं प्रभुत्वमनघेऽत्र तथा विहर्तुं त्वं वै समस्तविभवेश्वरि भासि नूनम् ।२०

व्यास उवाच

एवं स्तुता तदा देवी तानाहविबुधेश्वरान्। किं तत्कार्यंवदंत्वद्यकरोमिविगतज्वराः ।२१
असाध्यमपिलोकेस्मिंस्तत्करोमिसुरेप्सितम्। शंसंतु भवतां दुःखं धरायाश्चसुरोत्तमाः ।२२

देवा ऊचुः

वसुधेयं भराक्रान्ता संप्राप्ता विबुधान्प्रति। रुदती वेपमाना च पीडितादुष्टभूभुजैः ।२३
भारापहरणं चास्याः कर्तव्यं भुवनेश्वरि। देवानामीप्सितं कार्यमेतदेवाधुनाऽशिवे! ।२४
घातितस्तुपुरामातस्त्वयामहिषरूपभृत्। दानवोऽतिबलाक्रांतस्तत्सहायाश्चकोटिशः ।२५
तथाशुम्भो निशुम्भश्च रक्तबीजस्तथाऽपरः। चण्डमुण्डौमहावीर्यौ तथैव धूम्रलोचनः ।२६
दुर्मुखो दुःसहश्चैव करालश्चातिवीर्यवान्। अन्ये चबहवःक्रूरास्त्वयैव च निपातिताः ।२७
तथैव च सुरारींश्च जहिसर्वान्महीश्वरान्।
"भारं हर धरायाश्च दुर्धरं दुष्टभूभुजाम्"

व्यास उवाच

इत्युक्ता सा तदा देवी देवानाहाम्बिका शिवा ॥२८॥
संप्रहस्याऽसितापाङ्गी मेघगम्भीरया गिरा।

श्रीदेव्युवाच

मयेदं चिन्तितं पूर्वमंशावतरणं सुराः! ॥२९॥
भारावतरणं चैव यथास्याद्दुष्टभूभुजाम्। मया सर्वे निहन्तव्यादैत्येशा ये महीभुजः ।३०
मागधाद्या महाभागाःस्वशक्त्या मन्दतेजसः। भवद्भिरपि स्वैरंशैरवतीर्यधरातले ।३१
मच्छक्तियुक्तैः कर्तव्यं भारावतरणं सुराः। कश्यपो भार्ययासार्धंदिविजानांप्रजापतिः ।३२
यादवानां कुलेपूर्वं भविताऽऽनकदुंदुभिः। तथैव भृगुशापाद्वै भगवान्विष्णुरव्ययः ।३३
अंशेन भविता तत्र वसुदेवसुतो हरिः। तदाऽहंप्रभविष्यामि यशोदायां च गोकुले ।३४
कार्यं सर्वं करिष्यामिसुराणांसुरसत्तमाः। कारागारेगतंविष्णुंप्रापयिष्यामिगोकुले ।३५
शेषं च देवकीगर्भात्प्रापयिष्यामि रोहिणीम्। मच्छक्त्योपचितौ तौ च कर्तारौ दुष्टसंक्षयम् ।३६
दुष्टानां भूभुजां कामं द्वापरान्ते सुनिश्चितम्। इन्द्रांशोऽप्यर्जुनः साक्षात्करिष्यति बलक्षयम् ।३७
धर्मांशोऽपि महाराजो भविष्यति युधिष्ठिरः। वाय्वंशो भीमसेनश्चाऽश्विन्यंशौ च यमावपि ।३८
वसोरंशोऽथ गाङ्गेयः करिष्यति बलक्षयम्। व्रजन्तु चभवन्तोऽद्यधराभवतुसुस्थिरा ।३९
भारावतरणंनूनंकरिष्यामिसुरोत्तमाः । कृत्वानिमित्तमात्रांस्तान्स्वशक्त्याहंनसंशयः ।४०

कुरुक्षेत्रेकरिष्यामिक्षत्रयाणांचसंक्षयम् ।असूयेर्ष्यामतिस्तृष्णाममताऽभिमतास्पृहा।४१
जिगीषा मदनोमोहोदोषैर्नक्ष्यन्तियादवाः।ब्राह्मणस्यचशापेन वंशनाशो भविष्यति।४२
भगवानपिशापेन त्यक्ष्यत्येतत्कलेवरम्।भवन्तोऽपिनिजाङ्गैश्च सहायाःशार्ङ्गधन्वनः।४३
प्रभवन्तु सनारीका मधुरायां च गोकुले ।

व्यास उवाच

इत्युक्त्वांऽर्दधे देवी योगमाया परात्मनः ।।४४।।
सधरा वै सुराः सर्वे जग्मुः स्वान्यालयानि च ।
धराऽपि सुस्थिरा जाता तस्या वाक्येन तोषिता ।।४५।।
ओषधीवीरुधोपेता बभूव जनमेजय! ।
प्रजाश्च सुखिनो जाता द्विजाश्चापुर्महोदयम् ।
सन्तुष्टा मुनयः सर्वे बभूवुर्धर्मतत्पराः ।।४६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे देवान्प्रतिदेवीवाक्यवर्णनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ।।१६।।

विंशोऽध्यायः

भारावतरणोपक्रमेवासुदेवांशावतारकथावर्णनम्

व्यास उवाच

शृणुभारत वक्ष्यामि भारावतरणं तथा।कुरुक्षेत्रे प्रभासे च क्षपितं योगमायया।१
यदुवंशे समुत्पत्तिर्विष्णोरमिततेजसः।भृगुशापप्रतापेन महामायाबलेन च।२
क्षितिभारसमुत्तारनिमित्तमिति मे मतिः।माययाविहितोयोगोविष्णोर्जन्मधरातले।३
किं चित्रं नृप देवी सा ब्रह्मविष्णुसुरानपि।नर्तयत्यनिशं मायात्रिगुणानपरान्किमु।४
गर्भवासोद्भवं दुःखं विण्मूत्रस्नायुसंयुतम्।विष्णोरापादितंसम्यग्ययाविगतलीलया।५
पुरा रामावतारेऽपि निर्जरा वानराः कृताः।विदितंतेयथाविष्णुर्दुःखपाशेनमोहितः।६
अहं ममेति पाशेन सुदृढेन नराधिप!।योगिनो मुक्तसङ्गाश्च भुक्तिकामा मुमुक्षवः।७
तामेव समुपासन्ते देवीं विश्वेश्वरीं शिवाम्।तद्भुक्तिलेशलेशांशलेशलेशलवांशकम्।८
लब्ध्वा मुक्तो भवज्जन्तुस्तां न सेवेत को जनः।भुवनेशीत्येववक्त्रे ददातिभुवनत्रयम्।६
मां पाहीत्यस्य वचसो देवा भावादृणान्विता ।
विद्याविद्येऽति तस्या द्वे रूपे जानीहि पार्थिव! ।।१०।।
विद्यया मुच्यते जन्तुर्बध्यतेऽविद्यया पुनः।ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्च सर्वेतस्यावशानुगाः।११
अवताराः सर्व एव यन्त्रिता इव दामभिः।कदाचिच्चसुखंभुङ्क्ते वैकुण्ठे क्षीरसागरे।१२
कदाचित्कुरुते युद्धं दानवैर्बलवत्तरैः।हरिः कदाचिद्यज्ञान्वै विततान्प्रकरोति च।१३
कदाचिच्च तपस्तीव्रं तीर्थे चरति सुव्रत।कदाचिच्छयनेशेते योगनिद्रामुपाश्रितः।१४
न स्वतन्त्रः कदाचिच्च भगवान्मधुसूदनः।तथा ब्रह्मा तथारुद्रस्तथेन्द्रो वरुणो यमः।१५
कुबेरोऽग्नी रवींदू च तथाऽन्ये सुरसत्तमाः।मुनयःसनकाद्याश्चवसिष्ठाद्यास्तथाऽपरे।१६
सर्वेऽबावसगा नित्यंपाञ्चालीवनरस्य च।नसिप्रोतायथागावोविचरन्तिवशानुगाः।१७
तथैव देवताः सर्वाः कालपाशनियन्त्रिताः।हर्षाशोकादयोभावानिद्रातन्द्रालसादयः।१८
सर्वेषां सर्वदा राजन्देहिनां देहसंश्रिताः।अमरा निर्जरा प्रोक्ता देवाश्च ग्रन्थकारकैः।१६
अभिधानतश्चार्थतो न ते नूनं तादृशाःक्वचित्।उत्पत्तिस्थितिनाशाख्या भावा येषां निरन्तरम्।२०

अमरास्ते कथं वाच्या निर्जराश्चकथंपुनः। कथं दुःखाभिभूतावाजायन्तेविबुधोत्तमाः।२१
कथं देवाश्च वक्तव्याव्यसने क्रीडनंकथम्। क्षणादुत्पत्तिर्नाशश्चदृश्यतेऽस्मिन्नसंशयः।२२
जलजानांचकीटानां मशकानां तथा पुनः। उपमा नकथंचैषामायुषोऽन्तेमराःस्मृताः।२३
ततो वर्षायुषश्चापि शतवर्षायुषस्तथा। मनुष्या ह्यमरादेवास्तस्माद् ब्रह्मापरःस्मृतः।२४
रुद्रस्तथा तथा विष्णुः क्रमशश्च भवन्तिहि। नश्यन्तिक्रमशश्चैववर्धन्तिचोत्तरोत्तरम्।२५
नूनं देहवतो नाशो मृतस्योत्पत्तिरेव च। चक्रवद्भ्रमणं राजन्सर्वेषां नाऽत्र संशयः।२६
मोहजालाऽऽवृतो जन्तुर्मुच्यते न कदाचन। मायायां विद्यमानायां मोहजालं न नश्यति।२७
उत्पित्सुकालउत्पत्तिः सर्वेषां नृपजायते। तथैवनाशःकल्पान्ते ब्रह्मादीनांयथाक्रमम्।२८
निमित्तंयस्तुयन्नाशे स घातयति तं नृप। नान्यथा तद्भवेन्नूनं विधिनानिर्मितन्तु यत्।२९
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखं वा सुखमेववा। तत्तथैवभवेत्कामं नान्यथेह विनिर्णयः।३०
सर्वेषांसुखदौदेवौप्रत्यक्षौशशिभास्करौ। न नश्यति तयोःपीडा क्वचित्तद्वैरिसम्भवा।३१
भास्करस्य सुतो मन्दः क्षयीचन्द्रःकलङ्कवान्। पश्यराजन्विधे सूत्रं दुर्वारं महतामपि।३२
वेदकर्ता जगद्धर्ता बुद्धिदस्तु चतुर्मुखः। सोऽपिविक्लवताम्प्राप्तो दृष्ट्वा पुत्रींसरस्वतीम्।३३

शिवस्याऽपि मृता भार्या सती दग्ध्वा कलेवरम्।
सोऽभवद्दुःखसन्तप्तः कामार्तश्च जनार्तिहा।।३४।।

कामाग्निदग्धदेहस्तुकालिंद्यांपतितःशिवः। साऽपिश्यामजलाजातातन्निदाघवशान्नृप।३५
कामार्तो रममाणस्तु नग्नः सोऽपि भृगोर्वनम्। गतः प्राप्तोऽथ भृगुणा शप्तः कामातुरो भृशम्।३६
पतत्वद्यैव ते लिङ्गं निर्लज्जेति भृशं किल। पपौचामृतवापीञ्च दानवैर्निर्मितां मुदे।३७
इन्द्रोऽपिचवृषोभूत्वावाहनत्वंगतःक्षितौ। आद्यस्यसर्वलोकस्यविष्णोरेवविवेकिनः।३८
सर्वज्ञत्वं गतं कुत्र प्रभुशक्तिः कुतो गता। यद्धेममृगविज्ञानं न ज्ञानं हरिणा किल।३९
राजन्मायाबलम्पश्य रामो हि काममोहितः। रामो विरहसन्तप्तो रुरोदभृशमातुरः।४०
योऽपृच्छत्पादपान्मूढः क्व गता जनकात्मजा। भक्षिता वा हृताकेन रुदन्नुच्चतरं ततः।४१
लक्ष्मणाऽहंमरिष्यामिकान्ताविरहदुःखितः। त्वंचापिममदुःखेनमरिष्यसिवनेऽनुज।४२
आवयोर्मरणंज्ञात्वा मातामममरिष्यति। शत्रुघ्नोऽप्यतिदुःखार्तःकथंजीवितुमर्हति।४३
सुमित्राजीवितं जह्यात्पुत्रव्यसनकर्शिता। पूर्णकामाऽथ कैकेयी भवेत्पुत्रसमन्विता।४४
हासीतेक्वगताऽसित्वंमांविहायस्मरातुरा। एह्येहि मृगशावाक्षि मां जीवयकृशोदरि।४५
किंकरोमि क्वगच्छामित्वदधीनञ्चजीवितम्। समाश्वासयदीनंमांप्रियं जनकनन्दिनि।४६
एवं विलपता तेन रामेणाऽमिततेजसा। वनेवने च भ्रमता नेक्षिता जनकात्मजा।४७
शरण्यःसर्वलोकानां रामः कमललोचनः। शरणं वानराणां स गतोमायाविमोहितः।४८
सहायान्वानरान्कृत्वा वबन्ध वरुणालयम्। जघान रावणंवीरं कुम्भकर्णं महोदरम्।४९
आनीयचततः सीतां रामोदिव्यमकारयत्। सर्वज्ञोऽपिहृतांमत्वा रावणेनदुरात्मना।५०
किं ब्रवीमि महाराज योगमायाबलं महत्। ययाविश्वमिदं सर्वं भ्रामितं भ्रमतेकिल।५१
एवं नानाऽवतारेऽत्र विष्णुःशापवशं गतः। करोतिविविधाश्चेष्टादवाधीनःसदैव हि।५२
तवाहं कथयिष्यामि कृष्णस्याऽपिविचेष्टितम्। प्रथमंमानुषंलोके देवकार्यार्थसिद्धये।५३
कालिन्दीपुलिनेरम्ये ह्यासीन्मधुवनं पुरा। लवणो मधुपुत्रस्तुतत्रासीऽऽद्दानवोबली।५४
द्विजानां दुःखदःपापो वरदानेन गर्वितः। निहतोऽसौ महाभाग लक्ष्मणस्यानुजेन वै।५५
शत्रुघ्नेनाथ संग्रामे तं निहत्य मदोत्कटम्। वासिता मथुरा नाम पुरी परमशोभना।५६

स तत्र पुष्कराक्षौ द्वौ पुत्रौ शत्रुनिषूदनः। निवेश्यराज्येमतिमान्कालेप्राप्तेदिवङ्गतः।५७
सूर्यवंशक्षये तां तु यादवः प्रतिपेदिरे। मथुरां मुक्तिदां राजन्ययातितनयाः पुरा।५८
शूरसेनाभिधः शूरस्तत्राभून्मेदिनीपतिः। माथुराञ्छूरसेनांश्च बुभुजे विषयान्नृप।५६
तत्रोत्पन्नः कश्यपांशः शापाच्चवरुणस्यवै। वासुदेवोऽतिविख्यातो शूरसेनसुतस्तदा।६०
वेश्यवृत्तिरतः सोऽभून्मृते पितरि माधवः। उग्रसेनो बभूवाऽथ कंसस्तस्याऽऽत्मजो महान्।६१
अदितिर्देवकीजाता देवकस्य सुतातदा। शापाद्वै वरुणस्याऽथ कश्यपानुगता किल।६२
दत्ता सा वसुदेवाय देवकेन महात्मना। विवाहे रचिते तत्र वागभूद्गगने तदा।६३
कंस कंस महाभाग देवकीगर्भसम्भवः। अष्टमस्तु सुतः श्रीमांस्तव हंता भविष्यति।६४
तच्छ्रुत्वा वचनं कंसो विस्मितोऽभून्महाबलः। देववाचं तु तां मत्वा सत्यां चिन्तामवाप सः।६५
किं करोमीति सञ्चिन्त्य विमर्शमकरोत्तदा। निहत्यैनां न मे मृत्युर्भवेदद्यैवसत्वरम्।६६
उपायो नाऽन्यथा चाऽस्मिन्कार्ये मृत्युभयावहे। इयं पितृष्वसा पूज्या कथं हन्मीत्यचिन्तयत्।६७
पुनर्विचारयामास मरणं मेऽस्त्यहोस्वसा। पापेनाऽपि प्रकर्तव्या देहरक्षाविपश्चिता।६८
प्रायश्चित्तेन पापस्य शुद्धिर्भवति सर्वदा। प्राणरक्षाप्रकर्तव्या बुधैरप्येनसा तथा।६६
विचिन्त्यमनसाकंसः खड्गमादायसत्वरः। जग्राहतांवरारोहां केशेष्वाकृष्यपापकृत्।७०
कोशात्खड्गमुपाकृष्य हन्तुकामोदुराशयः। पश्यतांसर्वलोकानां नवोढांतांचकर्ष ह।७१
हन्यमानाञ्च तां दृष्ट्वा हाहाकारो महानभूत्। वसुदेवानुगा वीरा युद्धायोद्यतकार्मुकाः।७२
मुञ्चमुञ्चेति प्रोचुस्तं ते तदाऽद्भुतसाहसाः। कृपयामोचायामासुर्देवकीं देवमातरम्।७३
तद्युद्धमभवद्घोरं धीराणाञ्च परस्परम्। वसुदेवसहायानां कंसेन च महात्मना।७४
वर्तमाने तथा युद्धे दारुणे लोमहर्षणे। कंसं निवारयामासुर्वृद्धा ये यदुसत्तमाः।७५
पितृष्वसेयं ते वीर पूजनीया च बालिशा। न हन्तव्या त्वयावीरविवाहोत्सवसङ्गमे।७६
स्त्रीहत्या दुःसहावीर कीर्तिघ्नी पापकृत्तमा। भूतभाषितमात्रेण न कर्तव्याविजानता।७७
अन्तर्हितेन केनाऽपि शत्रुणातवचास्य वा। उदितेति कुतोन स्याद्वागनर्थकरी विभो।७८
यशसस्ते विघाताय वसुदेवगृहस्य च। अरिणा रचिता वाणी गुणमायाविदा नृप।७६
विभेषि वीरस्त्वं भूत्वा भूतभाषितभाषया। यशोमूलविघातार्थमुपायंस्त्वरिणाकृतः।८०
पितृष्वसा न हन्तव्या विवाहसमये पुनः। भवितव्यं महाराज भवेच्च कथमन्यथा।८१
एवंतैर्बोध्यमानोऽसौ निवृत्तोनाऽभवद्यदा। तदा तं वसुदेवोऽपि नीतिज्ञःप्रत्यभाषत।८२
कंस! सत्यं ब्रवीम्यद्य सत्याधारं जगत्त्रयम्। दास्यामि देवकीपुत्रानुत्पन्नांस्तव सर्वशः।८३
जातं जातं सुतं तुभ्यं न दास्यामि यदिप्रभो!। कुम्भीपाकेतदाघोरे पतन्तुममपूर्वजाः।८४
श्रुत्वाऽथ वचनंसत्यंपौरवायेपुरःस्थिताः। ऊचुस्ते त्वरिता कंसंसाधुसाधुपुनःपुनः।८५
न मिथ्याभाषते क्वापि वसुदेवोमहामनाः। केशं मुञ्च महाभाग स्त्रीहत्यापातकंतथा।८६

व्यास उवाच

एवंप्रबोधितःकंसोयदुवृद्धैर्महात्मभिः। क्रोधंत्यक्त्वास्थितस्तत्रसत्यवाक्यानुमोदितः।८७
ततो दुन्दुभयोनेदुर्वादित्राणिच सस्वनुः। जयशब्दस्तुसर्वेषामुत्पन्नस्तत्र संसदि।८८

प्रसाद्य कंसं प्रतिमोच्य देवकीं महायशाः शूरसुतस्तदानीम्।
जगाम गेहं स्वजनानुवृत्तो नवोढया वीतभयस्तरस्वी ।।८६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे कृष्णावतारकथोपक्रमवर्णनंनामविंशोऽध्यायः ।। २० ।।

एकविंशोऽध्यायः

कंसायप्रथमपुत्रार्पणसमयेवसुदेवदेवक्योःपरामर्शवर्णनम्

व्यास उवाच

अथ काले तु सम्प्राप्ते देवकी देवरूपिणी। गर्भन्दधार विधिवद्वसुदेवेन संगता।१
पूर्णेऽथदशमेमासे सुषुवे सुतमुत्तमम्। रूपावयवसम्पन्नं देवकी प्रथमं यदा।२
तदाऽऽहवसुदेवस्तां सत्यवाक्यानुमोदितः। भावित्वाच्चमहाभागोदेवकींदेवमातरम्।३
वरोरु समयं मे त्वं जानासि स्वसुतार्पणे। मोचिता त्वं महाभागे शपथेनमया तदा।४
इमं पुत्रं सुकेशान्ते दास्यामिभ्रातृसूनवे। "खले कंसेविनाशार्थंदैवेकिंवाकरिष्यसि"।५

विचित्रकर्मणांपाकोदुर्ज्ञेयोह्यकृतात्मभिः ।
सर्वेषांकिलजीवानांकालपाशानुवर्तिनाम् ।
भोक्तव्यं स्वकृतं कर्म शुभं वा यदि वाऽशुभम् ।।६।।
प्रारब्धं सर्वथैवाऽत्र जीवस्य विधिनिर्मितम् ।

देवक्युवाच

स्वामिन्पूर्वं कृतं कर्म भोक्तव्यं सर्वथा नृभिः ।।७।।

तीर्थैस्तपोभिर्दानैर्वा किंनयातिक्षयंहितत्। लिखितोधर्मशास्त्रेषुप्रायश्चित्तविधिर्नृप।८
पूर्वार्जितानां पापानां विनाशायमहात्मभिः। ब्रह्महा हेमहारी च सुरापोगुरुतल्पगः।९
द्वादशाब्दव्रतेचीर्णे शुद्धिंयातियतस्ततः। मन्वादिभिर्यथोद्दिष्टं प्रायश्चित्तं विधानतः।१०
तथाकृत्वानरःपापन्मुच्येत वा न वाऽनघ। विगीतवचनास्ते किं मुनयस्तत्त्वदर्शिनः।११
याज्ञवल्क्यादयःसर्वे धर्मशास्त्रप्रवर्तकाः। भवितव्यं भवत्वेव यद्येवं निश्चयः प्रभो।१२
आयुर्वेदःस मिथ्यैव मन्त्रवादास्तथाऽखिलाः। उद्यमस्तु वृथासर्वमेवंचेद्दैवनिर्मितम्।१३
भवितव्यंभवत्येव प्रवृत्तिस्तु निरर्थिका। अग्निष्टोमादिकंव्यर्थं नियतं स्वर्गसाधनम्।१४
यदातदा प्रमाणं हि वृथैव परिभाषितम्। वितथे तत्प्रमाणे तु धर्मोच्छेदःकुतोन हि।१५
उद्यमे च कृते सिद्धिः प्रत्यक्षेणैव साध्यते। तस्मादत्र प्रकर्तव्यः प्रपञ्चश्चित्तकल्पितः।१६
यथाऽयं बालकः क्षेमं प्राप्नोति मम पुत्रकः। मिथ्यायदिप्रकर्त्तव्यंवचनंशुभमिच्छता।१७

न तत्र दूषणं किञ्चित्प्रवदन्ति मनीषिणः ।

वसुदेव उवाच

निशामय महाभागे! सत्यमेतद् ब्रवीमि ते ।।१८।।

उद्यमः खलु कर्तव्यः फलं दैववशानुगम्। त्रिविधानीह कर्माणिसंसारेऽत्रपुराविदः।१९
प्रवदन्तीह जीवानां पुराणेष्वागमेषु च। सञ्चितानि च जीर्णानिप्रारब्धानिसुमध्यमे।२०
वर्तमानानि वामोरु त्रिविधानीहदेहिनाम्। शुभाशुभानिकर्माणिबीजभूतानियानिच।२१
बहुजन्मसमुत्थानि काले तिष्ठन्ति सर्वथा। पूर्वदेहं परित्यज्य जीवः कर्मवशानुगः।२२
स्वर्गं वा नरकं वाऽपि प्राप्नोति स्वकृतेन वै। दिव्यंदेहञ्चसंप्राप्ययातनादेहमर्थजम्।२३
भुनक्ति विविधान्भोगान्स्वर्गे वा नरकेऽथ वा। भोगान्ते च यदोत्पत्तेः समयस्तस्य जायते।२४
लिङ्गदेहेन सहितं जायते जीवसंज्ञितम्। तदैव सञ्चितेभ्यश्च कर्मभ्यः कर्मभिः पुनः।२५
योजयत्येव तं कालं कर्माणिप्राकृतानि च। देहेनानेन भाव्यानिशुभानिचाशुभानिच।२६
प्रारब्धानि च जीवेनभोक्तव्यानि सुलोचने। प्रायश्चित्तेननश्यन्तिवर्तमानानिभामिनि।२७
सञ्चितानि तथैवाऽऽशु यथार्थं विहितेन च। प्रारब्धकर्मणां भोगात्संक्षयो नाऽन्यथा भवेत्।२८

तेनायं तेकुमारोवैदेयःकंसायसर्वथा। नमिथ्यावचनंमेऽस्तिलोकनिन्दाऽभिदूषितम्।२९
अनित्येऽस्मिंस्तु संसारे धर्मसारे महात्मनाम्। दैवाधीनंहिसर्वेषांमरणं जननं तथा।३०
तस्माच्छोको नकर्तव्योदेहिनाहिनिरर्थकः। सत्यंयस्यगतंकान्तेवृथातस्यैवजीवितम्।३१
इहलोको गतो यस्मात्परलोकः कुतस्ततः। अतो देहि सुतंसुभ्रु कंसाय प्रददाम्यहम्।३२
सत्यसंस्तरणाद्देवि! शुभमग्रे भविष्यति। कर्तव्यं सुकृतंपुम्भिःसुखे दुःखे सति प्रिये।
"सत्यसंरक्षणाद्देवि! शुभमेव भविष्यति ।३३"

व्यास उवाच

इत्युक्तवति कान्ते सा देवकी शोकसंयुता। ददौ पुत्रंप्रसूतं च वेपमाना मनस्विनी।३४
वसुदेवोऽपि धर्मात्मा आदाय स्वसुतं शिशुम्। जगाम कंससदनं मार्गे लोकैरभिष्टुतः।३५

लोका ऊचुः

पश्यन्तु वसुदेवं भोलोका एवंमनस्विनम्। स्ववाक्यमनुरुध्यैवबालमादाययात्यसौ।३६
मृत्यवे दातुकामोऽद्य सत्यवागनसूयकः। सफलंजीवितंचाऽस्यधर्मंपश्यन्तुचाद्भुतम्।३७
यः पुत्रं याति कंसाय दातुं कालात्मनेऽपि हि।

व्यास उवाच

इति संस्तूयमानस्तु प्राप्तः कंसालयं नृप!।।३८।।
ददावस्मै कुमारं तं जातमात्रममानुषम्। कंसोऽपि विस्मयंप्राप्तोदृष्ट्वाधैर्यमहात्मनः।३९
गृहीत्वा बालकं प्राह स्मितपूर्वमिदं वचः। धन्यस्त्वं शूरपुत्राद्य ज्ञातःपुत्रसमर्पणात्।४०
मम मृत्युर्न चायं वै गिरा प्रोक्तस्तु चाऽष्टमः। न हन्तव्यो मया कामं बालोऽयं यातु ते गृहम्।४१
अष्टमस्तुप्रदातव्यस्त्वया पुत्रो महामते!। इत्युक्त्वा वसुदेवाय ददावाशुखलः शिशुम्।४२
गच्छत्वयं गृहेबालः क्षेमं व्याहृतवान्नृपः। तमादाय तदा शौरिर्जगाम स्वगृहं मुदा।४३
कंसोऽपि सचिवानाह वृथा किं घातयेशिशुम्। अष्टमाद्देवकीपुत्रान्ममममृत्युरुदाहृतः ।४४
अतः किं प्रथमं बालं हत्वा पापं करोम्यहम्। साधुसाध्विति तेऽप्युक्त्वा संस्थिता मन्त्रिसत्तमाः।४५
विसर्जितास्तु कंसेन जग्मुस्ते स्वगृहान्प्रति। गतेषु तेषु सम्प्राप्तो नारदोमुनिसत्तमः।४६
अभ्युत्थानार्घ्यपाद्यादिचकारोग्रसुतस्तदा। प्रपच्छकुशलंराजातत्राऽऽगमनकारणम्।४७
नारदस्तं तदोवाच स्मितपूर्वमिदं वचः। कंस कंस महाभाग! गतोऽहं हेमपर्वतम्।४८
तत्र ब्रह्मादयो देवा मन्त्रं चक्रुः समाहिताः। देवक्यां वसुदेवस्य भार्यायां सुरसत्तमः।४९
वधार्थं तव विष्णुश्च जन्मचाऽत्रकरिष्यति। तत्कथंनहतःपुत्रस्त्वयानीतिंविजानता।५०

कंस उवाच

अष्टमं च हनिष्येऽहं मृत्युं मे देवभाषितम्।

नारद उवाच

न जानासि नृपश्रेष्ठ राजनीतिं शुभाशुभम्।।५१।।
मायाबलं चदेवानांनत्वंवेत्सिवदामिकिम्। रिपुरल्पोऽपिशूरेणनोपेक्ष्यःशुभमिच्छता।५२
सम्मेलनक्रियायांतुसर्वेतेह्यष्टमाःस्मृताः। मूर्खस्त्वमरिसन्त्यागःकृतोऽयंजानतात्वया।५३
इत्युक्त्वाऽऽशु गतः श्रीमान्नारदो देवदर्शनः।
गतेऽथनारदेकंसःसमाहूयाथबालकम् ।।५४।।
पाषाणे पोथयामास सुखं प्राप च मन्दधीः।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां चतुर्थस्कन्धे कंसेनदेवकीप्रथमपुत्रवधवर्णनंनामैकविंशोऽध्यायः।।२१।।

द्वाविंशोऽध्यायः

कंसेनदेवक्याःषड्बालकानांवधस्तेषांपूर्वजन्मकथाच

जनमेजय उवाच

किं कृतं पातकं तेन बालकेन पितामह। यो जातमात्रोनिहतस्तथा तेन दुरात्मना।१
नारदोऽपि मुनिश्रेष्ठो ज्ञानवान्धर्मतत्परः। कथमेवंविधं पापं कृतवान्ब्रह्मवित्तमः।२
कर्ता कारयिता पापे तुल्यपापौ स्मृतौ बुधैः। सकथंप्रेरयामासमुनिःकंसं खलं तदा।३
संशयोऽयं महान्मेऽत्र ब्रूहिसर्वं सविस्तरम्। येनकर्मविपाकेन बालको निधनं गतः।४

व्यास उवाच

नारदः कौतुकप्रेक्षी सर्वदा कलहप्रियः। देवकार्यार्थमागत्य सर्वमेतच्चकार ह।५
न मिथ्याभाषणे बुद्धिर्मुनेस्तस्य कदाचन। सत्यवक्ता सुराणांसकर्तव्येनिरतःशुचिः।६
एवं षड् बालकास्तेन जाताजातानिपातिताः ।
षड्गर्भाःशापयोगेनसंभूयमरणंगताः ॥७॥
शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि तेषांशापस्यकारणम्। स्वायम्भुवेऽन्तरेपुत्रामरीचेषण्महाबलाः।८
ऊर्णायांचैव भार्यायामासन्धर्मविचक्षणाः। ब्रह्माणं जहसुर्वीक्ष्यसुतां यभितुमुद्यतम्।९
शशाप तांस्तदाब्रह्मादैत्ययोर्निविशंत्वधः। कालनेमिसुताजातास्तेषड्गर्भाविशांपते।१०
अवतारे परे ते तु हिरण्यकशिपोःसुताः। जातास्ते ज्ञानसंयुक्ताः पूर्वशापभयान्नृप।११
तस्मिञ्जन्मनि शान्ताश्च तपश्चक्रुः समाहिताः। तेषां प्रीतोऽभवद् ब्रह्मा षड्गर्भाणां वरान्ददौ।१२

ब्रह्मोवाच

शप्तायूयं मयापूर्वं क्रोधयुक्तेन पुत्रकाः। तुष्टोऽस्मिवोमहाभागा ब्रुवन्तुवाञ्छितंवरम्।१३

व्यास उवाच

ते तुश्रुत्वा वचस्तस्य ब्रह्मणः प्रीतमानसाः। ब्रह्माणमब्रुवन्कामंसर्वे कार्यार्थतत्पराः।१४

गर्भा ऊचुः

पितामहाद्यातुष्टोऽसिदेहिनो वाञ्छितं वरम्। अवध्यादेवतैः सर्वैर्मानवैश्च महोरगैः।१५
गन्धर्वसिद्धपतिभिर्वधो मा भूत्पितामह ।

व्यास उवाच

तानुवाच ततो ब्रह्मा सर्वमेतद्भविष्यति ॥१६॥
गच्छन्तु वो महाभागाः सत्यमेवनसंशयः। दत्त्वावरंततोब्रह्मामुदितास्तेतदाऽभवत्।१७
हिरण्यकशिपुः क्रुद्धस्तानुवाच कुरूद्वह। यस्माद्विहाय मां पुत्रास्तोषितोवैपितामहः।१८
वरेण प्रार्थितोऽत्यर्थं बलवन्तो यतोऽभवन् ।
युष्माभिर्हापितः स्नेनस्ततो युष्मांस्त्यजाम्यहम् ॥१९॥
यूयंव्रजन्तुपातालेषड्गर्भाविश्रुताभुवि । पातालेनिद्रयाऽऽविष्टास्तिष्ठन्तुबहुवत्सरान्।२०
ततस्तु देवकीगर्भे वर्षे वर्षे पुनः पुनः। पिता वः कालनेमिस्तु तत्र कंसो भविष्यति।२१
स एव जातमात्रान्वो वधिष्यति सुदारुणः ।

व्यास उवाच

एवं शप्तांस्तदा तेन गर्भे जातान्पुनः पुनः ॥२२॥
जघान देवकीपुत्रान्षड्गर्भाञ्छापनोदितः। शेषांशःसप्तमस्तत्र देवकीगर्भसंस्थितः।२३

विस्रंसितश्च गर्भोऽसौ योगेन योगमायया। नीतश्चरोहिणीगर्भेकृत्वासंकर्षणंबलात्।२४
पतितः पञ्चमे मासि लोकख्यातिंगतस्तदा। कंसोऽपिज्ञातवांस्तत्रदेवकीगर्भपातनम्।२५
मुदं प्राप स दुष्टात्मा श्रुत्वावार्तांसुखावहाम्। अष्टमेदेवकीगर्भेभगवान्सात्वतांपतिः ।२६
उवाच देवकार्यार्थं भारावतरणाय च।

राजोवाच

वसुदेवः कश्यपांशः शेषांशश्च तदाऽभवत् ।।२७।।
हरेरंशस्तथा प्रोक्तो भवता मुनिसत्तम। अन्ये च येंऽशादेवानां तत्र जातास्तुतान्वद।२८
भारावतरणार्थं वै क्षितेः प्रार्थनयाऽनघ।

व्यास उवाच

सुराणामसुराणां च ये येंऽशा भुवि विश्रुताः ।।२९।।
तानहंसंप्रवक्ष्यामि संक्षेपेण शृणुष्वतान्। वसुदेवःकश्यपांशो देवकी च तथाऽदितिः।३०
बलदेवस्त्वनंतांशो वर्तमानेषु तेषु च। योऽसौ धर्मसुतः श्रीमान्नारायण इति श्रुतः।३१
तस्यांशो वासुदेवस्तुविद्यमाने मुनौ तदा। नरस्तस्यानुजोयस्तुतस्यांशोऽर्जुनएवच।३२
युधिष्ठिरस्तु धर्मांशोवाय्वंशोभीमइत्युत। अश्विन्यंशौततःप्रोक्तौमाद्रीपुत्रौमहाबलौ।३३
सूर्यांशः कर्णआख्यातोधर्मांशोविदुरस्मृतः। द्रोणोबृहस्पतेरंशस्तत्सुतस्तुशिवांशजः।३४
समुद्रः शन्तनुः प्रोक्तो गङ्गा भार्या मताबुधैः। देवकस्तुसमाख्यातोगन्धर्वपतिरागमे।३५
वसुर्भीष्मो विराटस्तु मरुद्गण इतिस्मृतः। अरिष्टस्यसुतोहंसो धृतराष्ट्रः प्रकीर्तितः।३६
मरुद्गणः कृपः प्रोक्तः कृतवर्मा तथापरः। दुर्योधनः कलेरंशः शकुनिं विद्धि द्वापरम्।३७
सोमपुत्रः सुवर्चाख्यः सोमप्ररुरुदाहृतः। पावकांशो धृष्टद्युम्न शिखण्डी राक्षसस्तथा।३८
सनत्कुमारस्यांशस्तु प्रद्युम्नः परिकीर्तितः। द्रुपदो वरुणस्यांशो द्रौपदी च रमांशजा।३९
द्रौपदीतनयाः पञ्च विश्वेदेवांशजाः स्मृताः। कुन्तिः सिद्धिर्धृतिर्माद्री मतिर्गांधारराजजा।४०
कृष्णपत्न्यस्तथा सर्वदेववराङ्गनाः स्मृताः। राजानश्च तथासर्वेअसुराःशक्रनोदिताः।४१
हिरण्यकशिपोरंशः शिशुपालउदाहृतः। विप्रचित्तिर्जरासन्धः शल्यः प्रह्लाद इत्यपि।४२
कालनेमिस्तथा कंसः केशी हयशिरास्तथा। अरिष्टोबलिपुत्रस्तुककुद्मी गोकुले हतः।४३
अनुह्लादो धृतकेतुर्भगदत्तोऽथवाष्कलः। लम्बःप्रलम्बसञ्जातः खरोऽसौ धेनुकोऽभवत्।४४
वाराहश्च किशोरश्च दैत्यौपरमदारुणौ। मल्लौतावेव सञ्जातौ ख्यातौचाणूरमुष्टिकौ।४५
दिति पुत्रस्तथाऽरिष्टो गजः कुवलयाभिधः। बलिपुत्री बकी ख्याता बकस्तदनुजः स्मृतः।४६
यमो रुद्रस्तथा कामः क्रोधश्चैव चतुर्थकः। तेषामंशैस्तु सञ्जातो द्रोणपुत्रो महाबलः।४७
अंशावतरणेपूर्वं दैतेया राक्षसास्तथा। जाताःसर्वे सुरांशास्ते क्षितिभारावतारणे।४८
एतेषां कथितं राजन्नंशावतरणं नृप। सुराणां चासुराणाञ्च पुराणेषु प्रकीर्तितम्।४९
यदा ब्रह्मादयो देवाः प्रार्थनार्थं हरिंगताः। हरिणा च तदादत्तौकेशौखलुसितासितौ।५०
श्यामवर्णस्ततःकृष्णःश्वेतःसंकर्षणस्तथा। भारावतारणार्थंतौ जातौदेवांशसम्भवौ।५१
अंशावतरणं चैतच्छृणोति भक्तिभावतः। सर्वपापविनिर्मुक्तो मोदते स्वजनैर्वृतः।५२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांचतुर्थस्कन्धे देवदानवानामंशावतरणवर्णनंनामद्वाविंशोऽध्यायः ।।२२।।

त्रयोविंशोऽध्यायः

देवक्याअष्टमबालकोत्पत्तिवर्णनम्

व्यास उवाच

हतेषु षट्सु पुत्रेषु देवक्या औग्रसेनिना। सप्तमे पतिते गर्भे वचनान्नारदस्य च।१
अष्टमस्य च गर्भस्य रक्षणार्थमतन्द्रितः। प्रयत्नमकरोद्राजा मरणं स्वं विचिन्तयन्।२
समये देवकीगर्भे प्रवेशमकरोद्धरिः। अंशेन वसुदेवे तु समागत्य यथाक्रमम्।३
तदेयं योगमाया च यशोदायां यथेच्छया। प्रवेशमकरोद्देवी देवकार्यार्थसिद्धये।४
रोहिण्यास्तनयोरामो गोकुलेसमजायत। यतःकंसभयोद्विग्नासंस्थितासाचकामिनी।५
कारागारे ततः कंसो देवकीं देवसंस्तुताम्। स्थापयामास रक्षार्थं सेवकान्समकल्पयत्।६
वसुदेवस्तु कामिन्याः प्रेमतन्तुनियन्त्रितः। पुत्रोत्पत्तिञ्चसञ्चिन्त्यप्रविष्टःसहभार्यया।७
देवकीगर्भगोविष्णुर्देवकार्यार्थसिद्धये। संस्तुतोऽमरसंघैश्च व्यवर्धत यथाक्रमम्।८
सञ्जाते दशमे तत्र मासेऽथ श्रावणेशुभे। प्राजापत्यर्क्षसंयुक्तेकृष्णपक्षेऽष्टमी दिने।९
कंसस्तु दानवान्सर्वानुवाच भयविह्वलः। रक्षणीया भवद्भिश्च देवकी गर्भमन्दिरे।१०
अष्टमोदेवकीगर्भः शत्रुर्मे प्रभविष्यति। रक्षणीयः प्रयत्नेन मृत्युरूपः स बालकः।११
हत्वैनंबालकंदैत्याःसुखंस्वप्स्यामिमन्दिरे। निवृत्तिवर्जितेदुःखे नाशितेचाऽष्टमेसुते।१२
खड्गप्रासधराः सर्वे तिष्ठन्तु धृतकार्मुकाः। निद्रातन्द्राविहीनाश्चसर्वत्र निहतेक्षणाः।१३

व्यास उवाच

इत्यादिश्यासुरगणान्कृशोऽतिभयविह्वलः। मन्दिरं स्वं जगामाऽऽशु न लेभे दानवः सुखम्।१४
निशीथे देवकी तत्र वसुदेवमुवाच ह। किं करोमि महाराज प्रसवावसरो मम।१५
बहवो रक्षपालाश्च तिष्ठन्त्यत्रभयानकाः। नन्दपत्न्यामयासार्धंकृतोऽस्तिसमयः पुरा।१६
प्रेषितव्यस्त्वयापुत्रो मन्दिरेममभामिनि। पालयिष्याम्यहं तत्र तवातिमनसा किल।१७
अपत्यन्ते प्रदास्यामिकंसस्यप्रत्ययायवै। किं कर्तव्यं प्रभोचाऽद्यविषमे समुपस्थिते।१८
व्यत्ययःसन्ततेः शौरे कथं कर्तुंक्षमो भवेः। दूरेतिष्ठस्वकान्ताद्यलज्जामेऽतिदुरत्यया।१९
परावृत्यमुखंस्वामिन्नन्यथा किं करोम्यहम्। इत्युक्त्वातंमहाभागंदेवकीदेवसम्मतम्।२०
बालकं सुषुवे तत्र निशीथे परमाद्भुतम्। तं दृष्ट्वा विस्मयं प्राप देवकी बालकं शुभम्।२१
पतिं प्राह महाभागा हर्षोत्फुल्लकलेवरा। पश्यपुत्रमुखं कान्त दुर्लभं हि तव प्रभो!।२२
अद्यैनंकालरूपोऽसौ घातयिष्यतिभ्रातृजः। वसुदेवस्तथेत्युक्त्वातमादायकरे सुतम्।२३
अपश्यच्चाननं तस्य सुतस्याद्भुतकर्मणः। वीक्ष्य पुत्रमुखं शौरिश्चिन्ताविष्टो बभूव ह।२४
किंकरोमिकथं न स्याद्दुःखमस्यकृतेमम। एवं चिन्तातुरेतस्मिन्वागुवाचाशरीरिणी।२५
वसुदेवं समाभाष्य गगने विशदाक्षरा। वसुदेव गृहीत्वैनं गोकुलं नय सत्वरः।२६
रक्षपालास्तथा सर्वेमयानिद्राविमोहिताः। विवृतानिकृतान्यष्ट कपाटानिच शृङ्खलाः।२७
मुक्त्वैनं नन्दगेहेत्वं योगमायां समानय। श्रुत्वैवं वसुदेवस्तु तस्मिन्कारागृहे गतः।२८
विवृतद्वारमालोक्य बभूव तरसा नृप। तमादाय ययावाशु द्वारपालैरलक्षितः।२९
कालिन्दीतटमासाद्य पुरं दृष्ट्वासुनिश्चितम्। तदैवकटिदघ्नीसा बभूवाऽऽशु सरिद्वरा।३०
योगमायाप्रभावेण ततारानकदुन्दुभिः। गत्वा तु गोकुलं शौरिर्निशीथेनिर्जने पथि।३१
नन्दद्वारे स्थितः पश्यन्विभूतिं पशुसंज्ञिताम्। तदैव तत्र सञ्जाता यशोदा गर्भसम्भवा।३२

योगमायांशजादेवीत्रिगुणादिव्यरूपिणी। जातांतांबालिकांदिव्यांगृहीत्वाकरपङ्कजे।३३
तत्रागत्यददौ देवी सैरन्ध्रीरूपधारिणी। यसुदेवः सुतं दत्त्वा सैरन्ध्रीकरपङ्कजे।३४
तामादाययथौशीघ्रं बालिकांमुदिताशयः। कारागारे ततोगत्वा देवक्याःशयनेसुताम्।३५
निःक्षिप्यसंस्थितःपार्श्वेचिन्ताविष्टोभयाऽऽतुरः। रुरोदसुस्वरंकन्यातदैवागतसंज्ञकाः ।३६
उत्तस्थुःसेवका राज्ञःश्रुत्वातद्रुदितं निशि। तमूचुर्भूपतिंगत्वात्वरितास्तेऽतिविह्वलाः।३७
देवक्याश्चसुतोजातः शीघ्रमेहि महामते। तदाकर्ण्य वचस्तेषां शीघ्रं भोजपतिर्ययौ।३८
प्रावृतं द्वारमालोक्य वसुदेवमथाह्वयत् ।

कंस उवाच

सुतमानय देवक्या वसुदेव ! महामते! ।।३९।।
मृत्युर्मे चाऽष्टमो गर्भस्तन्निहन्मि रिपुं हरिम् ।

व्यास उवाच

श्रुत्वा कंसवचः शौरिर्भयत्रस्तविलोचनः ।।४०।।
तामादाय सुतां पाणौददौचाऽऽशुरुदन्निव। दृष्ट्वाऽथ दारिकां राजाविस्मयंपरमंगतः।४१
देववाणी वृथा जाता नारदस्य च भाषितम्। वसुदेवः कथंकुर्यादनृतंसंकटे स्थितः।४२
रक्षपालाश्च मे सर्वेसावधाना न संशयः। कुतोऽत्रकन्यकाकामंक्वगतःससुतः किल।४३
सन्देहोऽत्र न कर्तव्यः कालस्य विषमागतिः। इति सञ्चिन्त्य तां बालां गृहीत्वा पादयोः खलः।४४
पोथयामास पाषाणे निर्घृणः कुलपांसनः। सा करान्निःसृता बाला ययावाकाशमण्डलम्।४५
दिव्यरूपा तदा भूत्वा तमुवाच मृदुस्वना। किं मयाहतयापाप जातस्ते बलवान्रिपुः।४६
हनिष्यतिदुराराध्यःसर्वथात्वांनराधमम् । इत्युक्त्वासागताकन्यागगनंकामगाशिवा।४७
कंसस्तुविस्मयाविष्टो गतोनिजगृहं तदा। आनाय्यदानवान्सर्वानिदं वचनमब्रवीत्।४८
बकधेनुकवत्सादीन्क्रोधाविष्टोभयाऽऽतुरः। गच्छन्तुदानवाः सर्वेममकार्यार्थसिद्धये।४९
जातमात्राश्चहन्तव्याबालकायत्रकुत्रचित् । पूतनैषाव्रजत्वद्य बालघ्नी नन्दगोकुलम्।५०
जातमात्रान्विनिघ्नन्ती शिशुंस्तत्र ममाऽऽज्ञया। धेनुको वत्सकः केशी प्रलम्बो बक एव च।५१
सर्वे तिष्ठन्तु तत्रैव मम कार्यचिकीर्षया। इत्याज्ञाप्यासुरान्कंसोययौनिजगृहं खलः।५२
चिन्ताविष्टोऽतिदीनात्मा चिंतयित्वैव तं पुनः ।।५३।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे कंसम्प्रतियोगमायावाक्यन्नामत्रयोविंशोऽध्यायः ।।२३।।

चतुर्विंशोऽध्यायः

श्रीकृष्णचरित्रवर्णनम्

व्यास उवाच

प्रातर्नन्दगृहेजातः पुत्रजन्ममहोत्सवः। किं वदंत्यथ कंसेन श्रुता चारमुखादपि।१
जानातिवसुदेवस्य दारास्तत्र वसंतिहि। पशवोदाशवर्गश्च सर्वे ते नन्दगोकुले।२
तेन शंकासमाविष्टो गोकुलं प्रतिभारत। नारदेनाऽपि तत्सर्वं कथितं कारणम्पुरा।३
गोकुलेये च नन्दाद्यास्तत्पत्न्यश्च सुरांशजाः। देवकीवसुदेवाद्याः सर्वे ते शत्रवःकिल।४
इति नारदवाक्येन बोधितौऽसौकुलाधमः। जातःकोपमना राजन्कंसः परमपापकृत्।५
पूतना निहता तत्र कृष्णेनाऽमिततेजसा। बको वत्सासुरश्चापि धेनुकश्च महाबलः।६
प्रलम्बो निहतस्तेन तथा गोवर्धनो धृतः। श्रुत्वैतत्कर्म कंसस्तु मेने मरणमात्मनः।७

तथा विनिहतःकेशीज्ञात्वा कंसोऽतिदुर्मनाः। धनुर्यागमिषेणाशुतावानेतुं प्रचक्रमे।८
अक्रूरं प्रेषयामास क्रूरः पापमतिस्तदा। आनेतुं रामकृष्णौ च वधायामितविक्रमौ।९
रथमारोप्य गोपालौ गोकुलान्नंदिनीसुतः। आगतो मथुरायां तु कंसादेशे स्थितः किल।१०
तावागत्य तदातत्र धनुर्भङ्गञ्च चक्रतुः। हत्वाथ रजकं कामं गजं चाणूरमुष्टिकम्।११
शलञ्चतोशलञ्चैव निजघान हरिस्तदा। जघान कंसं देवेश केशेष्वाकृष्य लीलया।१२
पितरौ मोचयित्वाऽथ गतदुःखौचकारह। उग्रसेनाय राज्यं तद्ददावरिनिषूदनः।१३
वसुदेवस्तयोस्तत्र मौंजीबन्धनपूर्वकम्। कारयामास विधिवद्व्रतबन्धं महामनाः।१४
उपनीतौतदा तौ तु गतौ सांदीपनालयम्। विद्याः सर्वाः समभ्यस्य मथुरामागतौ पुनः।१५
जातौ द्वादशवार्षीयौ कृतविद्यौमहाबलौ। मथुरायांस्थितौवीरौ सुतावानकदुन्दुभेः।१६
मागधस्तुजरासंधोजामातृवधदुःखितः। कृत्वा सैन्यसमाजं स मथुरामागतःपुरीम्।१७
स सप्तदशवारन्तु कृष्णेनकृतबुद्धिना। जितःसंग्राममासाद्य मधुपुर्यां निवासिना।१८
पश्चाच्चप्रेरितस्तेन स कालयवनाभिधः। सर्वम्लेच्छाधिपः शूरो यादवानां भयंकरः।१९
श्रुत्वा यवनमायान्तं कृष्णः सर्वान्यदूत्तमान्। आनाय्य च तथा राममुवाच मधुसूदनः।२०
भयं नोऽत्र समुत्पन्नं जरासंधान्महाबलात्। किं कर्तव्यंमहाभागयवनः समुपैति वै।२१
प्राणत्राणंप्रकर्तव्यं त्यक्त्वा गेहं बलं धनम्। सुखेनस्थीयतेयत्रः सदेशः खलुपैत्रिकः।२२
सदोद्वेगकरःकामंकिंकर्तव्यःकुलोचितः। शैलसागरसान्निध्ये स्थातव्यंसुखमिच्छता।२३
यत्र वैरिभयंनस्यात्स्थातव्यंतत्रपण्डितैः। शेषशय्यां समाश्रित्यहरिःस्वपितिसागरे।२४
तथैवच भयाद्भीतः कैलासे त्रिपुरार्दनः। तस्मान्नात्रैवस्थातव्यमस्माभिःशत्रुतापितैः।२५
द्वारवत्यांगमिष्यामः सहिताः सर्व एव वै। कथितागरुडेनाऽद्य रम्या द्वारवती पुरी।२६
रैवताचलसांनिध्ये सिन्धुकूले मनोहरा।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं तथ्यं सर्वे यादवपुङ्गवाः ।।२७।।
गमनायमतिं चक्रुः सकुटुम्बाःसवाहनाः। शकटानितथोष्ट्राश्च बाभ्यश्च महिषास्तथा।२८
धनपूर्णानिकृत्वा ते निर्ययुर्नगराद्बहिः। रामकृष्णौ पुरस्कृत्य सर्वे ते सपरिच्छदाः।२९
अग्रेकृत्वाप्रजाःसर्वाश्चेलुःसर्वेयदूत्तमाः। कतिचिद्दिवसैः प्रापुःपुरींद्वारावतीं किल।३०
शिल्पिभिःकारयामास जीर्णोद्धारं हि माधवः।
संस्थाप्य यादवांस्तत्र तावेतौ बलकेशवौ ॥३१॥
तरसा मथुरामेत्य संस्थितौ निर्जनंपुरीम्। तदा तत्रैव सम्प्राप्तो बलवान्यवनाधिपः।३२
ज्ञात्वैनमागतं कृष्णो निर्ययौ नगराद्बहिः। पदातिरग्रे तस्याभूद्यवनस्य जनार्दनः।३३
पीताम्बरधरः श्रीमान्प्राहसन्मधुसूदनः। तं दृष्ट्वा पुरतो यान्तं कृष्णं कमललोचनम्।३४
यवनोऽपि पदाशः सन्पृष्ठतोऽनुगतःखलः। प्रसुप्तो यत्र राजर्षिर्मुचुकुन्दो महाबलः।३५
प्रययौ भगवांस्तत्र सकालयवनो हरिः। तत्रैवान्तर्दधे विष्णुर्मुचुकुन्दं समीक्ष्य च।३६
तत्रैव यवनः प्राप्तः सुप्तभूतमपश्यत। मत्वा तं वासुदेवं स पादेनाऽताडयन्नृपम्।३७
प्रबुद्धः क्रोधरक्ताक्षस्तं ददाह महाबलः। तं दग्ध्वा मुचुकुन्दोऽथ ददर्शकमलेक्षणम्।३८
वासुदेवं सुदेवेशं प्रणम्य प्रस्थितो वनम्। जगाम द्वारकां कृष्णो बलदेवसमन्वितः।३९
उग्रसेनं नृपं कृत्वा विजहार यथारुचि। अहरद्रुक्मिणीं कामं शिशुपालस्वयम्वरात्।४०
राक्षसेनविवाहेन चक्रे दारविधिंहरिः। ततोजाम्बवतींसत्यांमित्रविन्दाञ्चभामिनीम्।४१

कालिन्दींलक्ष्मणांभद्रांतथानाग्नजितींशुभाम् । पृथक्पृथक्समानीयाप्युपयेमेजनार्दनः ।४२
अष्टावेव महीपालपत्न्यः परमशोभनाः। प्रासूतरुक्मिणी पुत्रं प्रद्युम्नं चारुदर्शनम् ।४३
जातकर्मादिकं तस्य चकार मधुसूदनः। हृतोऽसौ सूतिकागेहाच्छम्बरेण बलीयसा ।४४
नीतश्च स्वपुरीं बालो मायावत्यैसमर्पितः। वासुदेवो हृतं दृष्ट्वा पुत्रशोकसमन्वितः ।४५
जगाम शरणं देवीं भक्तियुक्तेन चेतसा। वृत्रासुरादयो दैत्या लीलयैव यया हताः ।४६
ततोऽसौ योगमायायाश्चकार परमांस्तुतिम् । वचोभिः परमोदारैरक्षरैः स्तवनैः शुभैः ।४७

श्रीकृष्ण उवाच

मातर्मयाऽतितपसा परितोषिता त्वं प्राग्जन्मनि प्रसुमनादिभिरर्चिताऽसि ।
धर्मात्मजेन बदरीवनखण्डमध्ये किं विस्मृतो जननि! ते त्वयिभक्तिभावः ।४८
सूतीगृहादपहृतः किमु बालको मे केनाऽपि दुष्टमनसाऽप्यथ कौतुकाद्वा ।
मानापहारकरणाय ममाद्य नूनं लज्जा तवाम्ब खलु भक्तजनस्य युक्ता ।४९
दुर्गो महानतितरां नगरी सुगुप्ता तत्राऽपि मेऽतिसदनं किल मध्यभागे ।
अन्तःपुरे च पिहितं ननु सूतिगेहं बालो हृतः खलु तथाऽपि ममैव दोषात् ।५०
नाऽहं गतः परपुरं न च यादवाश्च रक्षावतीव नगरी किल वीरवर्यैः ।
माया तथैव जननि! प्रकटप्रभावा मे बालकः परिहृतः कुहकेन केन ।५१
नो वेद्म्यहं जननि! ते चरितं सुगुप्तं को वेद मन्दमतिरल्पविदेव देही ।
क्वाऽसौ गतो मम भटैर्नच वीक्षितो वा हर्ताऽम्बिके जवनिका तव कल्पितेयम् ।५२
चित्रं न तेऽत्र पुरतो मम मातृगर्भान्नीतस्त्वयाऽर्धसमये किल माययाऽसौ ।
यं रोहिणीं हलधरं सुषुवे प्रसिद्धं दूरे स्थिता पतिपरा मिथुनं विनाऽपि ।५३
सृष्टिं करोषि जगतामनुपालनञ्च नाशं तथैव पुनरप्यनिशं गुणैस्त्वम् ।
को वेद तेंऽब चरितं दुरितान्तकारि प्रायेण सर्वमखिलं विहितं त्वयैतत् ।५४
उत्पाद्य पुत्रजननप्रभवं प्रमोदं दत्त्वा पुनर्विरहजं किल दुःखभारम् ।
त्वं क्रीडसे सुललितैः खलु तैर्विहारैर्नो चेत्कथं मम सुतातिरतिर्वृथा स्यात् ।५५
माताऽस्य रोदिति भृशं कुररीव बाला दुःखं तनोति मम सन्निधिगा सदैव ।
कष्टं न वेत्सि ललितेऽप्रमितप्रभावे मातस्त्वमेव शरणं भवपीडितानाम् ।५६
सीमा सुखस्य सुतजन्म तदीयनाशो दुःखस्य देवि! भवने विबुधा वदन्ति ।
तत्किं करोमि जननि! प्रथमे प्रनष्टे पुत्रे ममाऽद्य हृदयं स्फुटतीव मातः! ।५७
यज्ञं करोमि तव तुष्टिकरं व्रतं वा दैवं च पूजनमथाऽखिलदुःखहात्वम् ।
मातः! सुतोऽत्र यदि जीवति दर्शयाऽऽशु त्वं वै क्षमा सकलशोकविनाशनाय ।५८

व्यास उवाच

एवंस्तुतातदादेवी कृष्णेनाऽक्लिष्टकर्मणा। प्रत्यक्षदर्शना भूत्वा तमुवाच जगद्गुरुम् ।५९

श्रीदेव्युवाच

शोकं मा कुरु देवेश शापोऽयंतेपुरातनः। तस्य योगेन पुत्रस्ते शम्बरेण हृतोबलात् ।६०
अतस्ते षोडशेवर्षे हत्वा तं शम्बरंबलात् । आगमिष्यति पुत्रस्ते मत्प्रसादान्नसंशयः ।६१

व्यास उवाच

इत्युक्त्वांऽतर्दधेदेवीचण्डिकाचण्डविक्रमा । भगवानपिपुत्रस्यशोकंत्यक्त्वाभवत्सुखी ।६२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां चतुर्थस्कन्धे देव्याकृष्णशोकापनोदनंनामचतुर्विंशोऽध्यायः ।।२४।।

पञ्चविंशोऽध्यायः

पराशक्तेःसर्वज्ञत्वकथनम्

राजोवाच

सन्देहो मे मुनिश्रेष्ठ जायते वचनात्तव। वैष्णवांशे भगवति दुःखोत्पत्तिंविलोक्यच।१
नारायणांशसम्भूतो वासुदेवः प्रतापवान्। कथं स सूतिकागाराद् धृतोबालो हरेरपि।२
सुगुप्तनगरेरम्ये सुप्तेऽथ सूतिकागृहे। प्रविश्य तेन दैत्येन गृहीतोऽसौ कथं शिशुः।३
न ज्ञातो वासुदेवेन चित्रमेतन्ममाद्भुतम्। जायतेमहदाश्चर्यं चित्ते सत्यवतीसुत!।४
ब्रूहि तत्कारणं ब्रह्मन्न ज्ञातं केशवेन यत्। हरणं तत्र संस्थेन शिशोर्वा सूतिकागृहात्।५

व्यास उवाच

माया बलवतीराजन्नराणांबुद्धिमोहिनी।
शाम्भवीविश्रुतालोके कोवामोहं न गच्छति ॥६॥

मानुषं जन्मसंप्राप्यगुणाःसर्वेऽपि मानुषाः। भवन्तिदेहजाःकामं नदेवानासुरास्तदा।७
क्षुत्तृण्निद्राभयं तन्द्रा व्यामोहः शोकसंशयः। हर्षश्चैवाऽभिमानश्च जरा मरणमेव च।८
अज्ञानं ग्लानिरप्रीतिरीर्ष्याऽसूया मदःश्रमः। एतेदेहभवाभावाः प्रभवन्ति नराधिप।९
यथा हेममृगं रामो नबुबोध पुरोगतम्। जानक्या हरणं चैव जटायुमरणं तथा।१०
अभिषेकदिने रामो वनवासं न वेद च। तथा न ज्ञातवान्रामः स्वशोकान्मरणंपितुः।११
अज्ञवद्विचचाराऽसौ पश्यमानो वनेवने। जानकीं न विवेदाऽथ रावणेन हृतां बलात्।१२
सहायान्वानरान्कृत्वा हत्वा शक्रसुतं बलात्। सागरे सेतुबन्धं च कृत्वोत्तीर्य सरित्पतिम्।१३
प्रेषयामास सर्वासु दिक्षु तान्कपिकुञ्जरान्। संग्रामं कृतवान्घोरं दुःखं प्रापरणाजिरे।१४
बन्धनं नागपाशेन प्रापरामो महाबलः। गरुडान्मोक्षणं पश्चादन्वभूद्रघुनन्दनः।१५
अहनद्रावणं संख्ये कुम्भकर्णं महाबलम्। मेघनादं निकुम्भंच कुपितो रघुनन्दनः।१६
अदूष्यत्वं च जानक्या न विवेद जनार्दनः। दिव्यं च कारयामास ज्वलिताग्नौ प्रवेशनम्।१७
लोकापवादान्नपरं ततस्तत्याज तांप्रियाम्। अदूष्यांदूषितांमत्वासीतांदशरथात्मजः।१८
न ज्ञातौ स्वसुतौ तेन रामेण च कुशीलवौ। मुनिनाकथितौतौतुतस्यपुत्रौ महाबलौ।१९
पातालगमनं चैव जानक्याज्ञातवान्न च। राघवः कोपसंयुक्तो भ्रातरं हन्तुमुद्यतः।२०
कालस्याऽऽगमनंचैव न विवेद खरान्तकः। मानुषं देहमाश्रित्य चक्रे मानुषचेष्टितम्।२१
तथैवमानुषान्भावान्नात्र कार्याविचारणा। पूर्वं कंसभयात्प्राप्तो गोकुले यदुनन्दनः।२२
जरासन्धभयात्पश्चाद् द्वारवत्यां गतो हरिः। अधर्मं कृतवान्कृष्णो रुक्मिण्या हरणं च यत्।२३
शिशुपालहृतायाश्च जानन्धर्मं सनातंनम्। शुशोच बालकंकृष्णःशंबरेण हृतं बलात्।२४
मुमोद जानन्पुत्रं तं हर्षशोकयुतस्ततः। सत्यभामाज्ञयायत्तु युयुधे स्वर्गतः किल।२५
इन्द्रेणपादपार्थं तु स्त्रीजितत्वं प्रकाशयन्। जहारकल्पवृक्षं यः पराभूय शतक्रतुम्।२६
मानिनीमानरक्षार्थं हरिश्चित्रधरः प्रभुः। बद्ध्वा वृक्षेहरिंसत्या नारदाय ददौ पतिम्।२७
दत्त्वाऽथ कानकं कृष्णं मोचयामास भामिनी। दृष्ट्वापुत्रान्पुरुगुणान्प्रद्युम्नप्रमुखानथ।२८
कृष्णंजाम्बवती दीना ययाचे सन्ततिं शुभाम्। स ययौ पर्वतं कृष्णस्तपस्याकृतनिश्चयः।२९

उपमन्युर्मुनिर्यत्र शिवभक्तः परन्तपः। उपमन्युं गुरुं कृत्वा दीक्षां पाशुपतीं हरिः।३०
जग्राह पुत्रकामस्तु मुण्डी दण्डी बभूव ह। उग्रं तत्र तपस्तेपे मासमेकं फलाशनः।३१
जजाप शिवमन्त्रं तु शिवध्यानपरो हरिः। द्वितीयेतु जलाहारस्तिष्ठन्नेकपदा हरिः।३२
तृतीये वायुभक्षस्तु पादाङ्गुष्ठाग्रसंस्थितः। षष्ठेतु भगवान्रुद्रः प्रसन्नो भक्तिभावतः।३३
दर्शनं च ददौ तत्र सोमः सोमकलाधरः। आजगामवृषारूढः सुरैरिंद्रादिभिर्वृतः।३४
ब्रह्मविष्णुयुतः साक्षाद्यक्षगन्धर्वसेवितः। संबोधयन्वासुदेवं शङ्करस्तमुवाच ह।३५
तुष्टोऽस्मि कृष्णतपसातवोग्रेणमहामते। ददामि वाञ्छितान्कामान्ब्रूहि यादवनन्दन।३६
मयिदृष्टे कामपूरे कामशेषो न सम्भवेत्।
तं दृष्ट्वा शङ्करं तुष्टं भगवान्देवकीसुतः ।।३७।।
पपात पादयोस्तस्य दण्डवत्प्रेमसंयुतः। स्तुतिंचकार देवेशो मेघगम्भीरया गिरा।३८
स्थितस्तु पुरतः शम्भोर्वासुदेवः सनातनः।

कृष्ण उवाच

देव! देव! जगन्नाथ! सर्वभूतार्तिनाशन! ।।३९।।
विश्वयोने! सुरारिघ्न नमस्त्रैलोक्यकारक। नीलकण्ठनमस्तुभ्यं शूलिने ते नमो नमः।४०
शैलजावल्लभायाथ यज्ञघ्नाय नमोऽस्तुते। धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं दर्शनात्तव सुव्रत।४१
जन्म मे सफलंजातंनत्वातेपादपङ्कजम्।
बद्धोऽहंस्त्रीमयैःपाशैःसंसारेऽस्मिञ्जगद्गुरो ।।४२।।
शरणं तेऽद्य सम्प्राप्तो रक्षणार्थं त्रिलोचन। सम्प्राप्यमानुषंजन्मखिन्नोऽहंदुःखनाशन।४३
त्राहिमां शरणं प्राप्तं भवभीतं भवाऽधुना। गर्भवासे महद् दुःखं प्राप्तं मदनदाहक!।४४
जन्मतः कंसभयजमनुभूतं च गोकुले। जातोऽहं नन्दगोपालो वल्लवाज्ञाकरस्तथा।४५
गोरजःकीर्णकेशस्तु भ्रमन्वृन्दावने घने। म्लेच्छराजभयत्रस्तो गतो द्वारवतीं पुनः।४६
त्यक्त्वा पित्र्यं शुभं देशं माथुरं दुर्लभं विभो। ययातिशापबद्धेन तस्मैदत्तंभयाद्विभो।४७
राज्यं सुपुष्टमपि च धर्मरक्षा परेण च। उग्रसेनस्य दासत्वं कृतं वै सर्वदा मया।४८
राजाऽसौ यादवानां वै कृतो न पूर्वजैः किल।
गार्हस्थ्यं दुःखदं शम्भो! स्त्रीवश्यं धर्मखण्डनम् ।।४९।।
पारतन्त्र्यं सदाबन्धो मोक्षवार्ताऽत्रदुर्लभा। रुक्मिण्यास्तनयान्दृष्ट्वा भार्या जाम्बवती मम।५०
प्रेरयामास पुत्रार्थं तपसे मदनान्तक। सकामेन मया तप्तं तपः पुत्रार्थमद्य वै।५१
लज्जा भवति देवेश प्रार्थनायां जगद्गुरो। कस्त्वामाराध्यदेवेशंमुक्तिदंभक्तवत्सलम्।५२
प्रसन्नंयाचतेमूढःफलंतुच्छं विनाशियत्। सोऽयं मायाविमूढात्मायाचेपुत्रसुखंविभो।५३
कामिन्या प्रेरितः शम्भो! मुक्तिदं त्वां जगत्पते!।
जानामि दुःखदं शम्भो! संसारं दुःखसाधनम् ।।५४।।
अनित्यं नाशधर्माणं तथाऽपि विरतिर्न मे।
शापान्नारायणांशोऽहं जातोऽस्मिन्क्षितिमण्डले ।।५५।।
भोक्तुं बहुतर दुःखं मायापाशेन यन्त्रितः।

व्यास उवाच

इत्युक्तवन्तं गोविन्दं प्रत्युवाच महेश्वरः ।।५६।।

बहवस्ते भविष्यन्ति पुत्राःशत्रुनिषूदन। स्त्रीणां षोडशसाहस्रं भविष्यति शतार्धकम्।५७
तासुपुत्रा दशदश भविष्यन्ति महाबलाः। इत्युक्त्वोपररामाऽऽशु शङ्करः प्रियदर्शनः।५८
उवाच गिरिजा देवी प्रणतं मधुसूदनम्। कृष्णकृष्णमहाबाहोसंसारेऽस्मिन्नराधिप।५९
गृहस्थप्रवरो लोके भविष्यति भवानिह। ततोवर्षशतान्तेतु द्विजशापाज्जनार्दन!।६०
गान्धार्याश्च तथाशापाद्भविताते कुलक्षयः। परस्परंनिहत्याजौपुत्रास्तेशापमोहिताः।६१
गमिष्यन्ति क्षयं सर्वे यादवाश्च तथाऽपरे। सानुजस्त्वं तथा देहं त्यक्त्वा यास्यसि वै दिवम्।६२
शोकस्तत्र न कर्तव्योभवितव्यम्प्रति प्रभो। अवश्यम्भाविभावानांप्रतीकारोनविद्यते।६३
तत्रशोको न कर्तव्योनूनंममतं सदा। अष्टावक्रस्य शापेन भार्यास्ते मधुसूदन!।६४
चौरेभ्यो ग्रहणं कृष्ण गमिष्यन्ति मृते त्वयि। इत्युक्त्वांऽतर्दधे शम्भुः सोमः ससुरमण्डलः।६५
उपमन्युं प्रणम्याऽथ कृष्णोऽपि द्वारकां ययौ। तस्माद् ब्रह्मादयो राजन्सन्ति यद्यप्यधीश्वराः।६६

तथाऽपि मायाकल्लोलयोगसंक्षुभितान्तराः ।
तदधीनाः स्थिताः सर्वे काष्ठपुत्तलिकोपमाः ॥६७॥

यथायथा पूर्वभवंकर्मतेषां तथातथा। प्रेरयत्यनिशं माया परब्रह्मस्वरूपिणी।६८
न वैषम्यं न नैर्घृण्यं भगवत्यां कदाचन। केवलं जीवमोक्षार्थं यतते भुवनेश्वरीम्।६९
यदि सानैव सृज्येत जगदेतच्चराचरम्। तदा मायाविना भूतं जडं स्यादेव नित्यशः।७०

तस्मात्कारुण्यमाश्रित्य जगज्जीवादिकं च यत् ।
करोति सततं देवी प्रेरयत्यनिशं च तत् ॥७१॥
तस्माद्ब्रह्मादिमोहेऽस्मिन्कर्तव्यःसंशयोन हि ।
मायान्तःपातिनः सर्वे मायाधीनाःसुरासुराः ॥७२॥

स्वतन्त्रासैवदेवेशीस्वेच्छाचाराविहारिणी। तस्मात्सर्वात्मनाराजन्सेवनीयामहेश्वरी।७३
नातः परतरं किञ्चिदधिकं भुवनत्रये। एतद्धि जन्मसाफल्यं पराशक्तेः पदस्मृतिः।७४
मा भूत्तत्र कुले जन्म यत्र देवी न दैवतम्। अहं देवी न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।७५
इत्यभेदेन तांनित्यांचिन्तयेज्जगदम्बिकाम्। ज्ञात्वागुरुमुखादेनांवेदान्तश्रवणादिभिः।७६
नित्यमेकाग्रमनसा भावयेदात्मरूपिणीम्। मुक्तोभवतितेनाशुनान्यथा कर्मकोटिभिः।७७
श्वेताश्वतरादयः सर्व ऋषयो निर्मलाशयाः। आत्मरूपां हृदा ज्ञात्वा विमुक्ता भवबन्धनात्।७८
ब्रह्मविष्ण्वादयस्तद्वद्गौरीलक्ष्म्यादयस्तथा। तामेवसमुपासन्ते सच्चिदानन्दरूपिणीम्।७९
इति ते कथितं राजन्यद्यत्पृष्टं त्वयाऽनघ। प्रपञ्चतापत्रस्तेन किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।८०
एतत्ते कथितं राजन्मयाऽऽख्यानमनुत्तमम्। सर्वपापहरं पुण्यं पुराणं परमाद्भुतम्।८१
य इदं शृणुयान्नित्यं पुराणं वेदसम्मितम्। सर्वपापविनिर्मुक्तो देवीलोके महीयते।८२

सूत उवाच

एतन्मयाश्रुतंव्यासात्कथ्यमानंसविस्तरम्। पुराणंपञ्चमंनूनं श्रीमद्भागवताभिधम्।८३

इति श्री देवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां चतुर्थस्कन्धे पराशक्तेःसर्वज्ञत्वकथनंनामपञ्चविंशोऽध्यायः।।२५।।

स्कन्धश्चायं समाप्तः

अर्धाधिकैर्वसुविधुयुगविश्वम्भरा भिधैः। पद्यैश्चतुर्थस्कन्धोऽयंकथितोव्यासनिर्मितैः।

।।श्रीगणेशाय नमः।।

देवीभागवतपुराणम्

पञ्चमं स्कन्धम्

* प्रथमोऽध्यायः *

ऋषीणांकृष्णस्यशङ्कराराधनाविषयेसन्देहेजातेसूतोत्तरम्

ऋषय ऊचुः

भवता कथितं सूत महदाख्यानमुत्तमम्। कृष्णस्यचरितं दिव्यं सर्वपातकनाशनम्।१
सन्देहोऽत्र महाभाग! वासुदेवकथानके। जायतेनः प्रोच्यमानेवस्तरेणि महामते।२
वने गत्वा तपस्तप्तंवासुदेवेन दुष्करम्। विष्णोरंशावतारेणशिवस्याऽऽराधनंकृतम्।३
वरप्रदानं देव्याच पार्वत्यायत्कृतं पुनः। जगन्मातुश्चपूर्णायाः श्रीदेव्या अंशभूतया।४
ईश्वरेणापि कृष्णेन कुतस्तौ सम्प्रपूजितौ। न्यूनतावा किमस्त्यस्यतदेवंसंशयो मुने।५

सूत उवाच

श्रृणुध्वं कारणं तत्र मया व्यासश्रुतं च यत्।
प्रब्रवीमि महाभागाः! कथां कृष्णगुणान्विताम् ।।६।।

वृत्तान्तं व्यासतः श्रुत्वा वैराटीसुतजस्तथा। पुनः प्रपच्छमेधावी सन्देहं परमं गतः।७

जनमेजय उवाच

सम्यक्सत्यवतीसूनो श्रुतं परमकारणम्। तथाऽपिमनसो वृत्तिःसंशयंन विमुञ्चति।८

कृष्णेनाऽऽराधितः शम्भुस्तपस्तप्त्वाऽतिदारुणम्।
विस्मयोऽयं महाभाग! देवदेवेन विष्णुना ।।९।।

यः सर्वात्माऽपि देवेशःसर्वसिद्धिप्रदःप्रभुः। स कथं कृतवान्घोरं तपः प्राकृतवद्धरिः।१०
जगत्कर्तुंक्षमः कृष्णस्तथापालयितुं क्षमः। संहर्तुमपि कस्मात्स दारुणंतप आचरत्।११

व्यास उवाच

सत्यमुक्तं त्वयाराजन्वासुदेवो जनार्दनः। क्षमः सर्वेषु कार्येषु देवानां दैत्यसूदनः।१२
तथाऽपि मानुषं देहमाश्रितः परमेश्वरः। कृतवान्मानुषाभावान्वर्णाश्रमसमाश्रितान्।१३
वृद्धानां पूजनञ्चैव गुरुपादाभिवंदनम्। ब्राह्मणानां तथा सेवा देवताराधनं तथा।१४
शोके शोकाभियोगश्च हर्षे हर्षसमुन्नतिः। दैन्यं नानापवादाश्चस्त्रीषु कामोपसेवनन्।१५
कामःक्रोधस्तथालोभःकालेकालेभवन्ति हि। तथा गुणमये देहे निर्गुणत्वं कथं भवेत्।१६
सौबलीशापजाद्दोषात्तथाब्राह्मणशापजात्। निधनं यादवानांतु कृष्णदेहस्यमोचनम्।१७
हरणं लुंठनं तद्वत्तत्पत्नीनां नराधिप। अर्जुनस्याऽस्त्रमोक्षे च क्लीवत्वं तस्करेषु च।१८
अज्ञत्वं हरणे गेहात्तत्प्रद्युम्नानिरुद्धयोः। एवं मानुषदेहेऽस्मिन्मानुषं खलु चेष्टितम्।१९
विष्णोरंशावतारेऽस्मिन्नारायणमुनेस्तथा। अंशजे वासुदेवेऽत्र किं चित्रं शिवसेवने।२०
सहिसर्वेश्वरो देवो विष्णोरपि च कारणम्। सुषुप्तस्थाननाथःसविष्णुनाचप्रपूजितः।२१
तदंशभूताः कृष्णाद्यास्तैः कथं न स पूज्यते। अकारो भगवान्ब्रह्माऽप्युकारः स्याद्धरिः स्वयम्।२२
मकारो भगवान्रुद्रोऽप्यर्धमात्रा महेश्वरी। उत्तरोत्तरभावेनाप्युत्तमत्वं स्मृतं बुधैः।२३
अतः सर्वेषुशास्त्रेषुदेवीसर्वोत्तमास्मृता। अर्धमात्रास्थितानित्यायाऽनुच्चार्याविशेषतः।२४

विष्णोरप्यधिको रुद्रो विष्णुस्तु ब्रह्मणोऽधिकः। तस्मान्न संशयः कार्यः कृष्णेन शिवपूजने।२५
इच्छया ब्रह्मणोवक्त्रा द्वरदानार्थमुद्‌बभौ। मूलरुद्रस्यांशभूतोरुद्रनामा द्वितीयकः।२६
सोऽपिपूज्योऽस्ति सर्वेषां मूलरुद्रस्य का कथा। देवीतत्त्वस्य सान्निध्यादुत्तमत्वं स्मृतं शिवे।२७
अवतारा हरेरेवं प्रभवन्ति युगे युगे। योगमायाप्रभावेन नाऽत्र कार्या विचारणा।२८
या नेत्रपक्ष्मपरिसञ्चलनेन सम्यग्विश्वं सृजत्यवति हन्ति निगूढभावा।
सैषा करोति सततं द्रुहिणाच्युतेशान्नानावतार कलने परिभूयमानान्।२९
सूतीगृहाद् व्रजनमप्यनया नियुक्तं सङ्गोपितश्च भवने पशुपालराज्ञः।
संप्रापितश्च मथुरां विनियोजितश्च श्रीद्वारकाप्रणयने ननु भीतचित्तः।३०
निर्माय षोडशसहस्रशतार्धकास्ता नार्योऽष्टसंमततराः स्वकलासमुत्थाः।
तासां विलासवशगं तु विधाय कामं दासीकृतो हि भगवाननयाऽप्यनन्तः।३१
एकाऽपि बन्धनविधौ युवती समर्था पुंसोयथा सुदृढलोहमयं तु दाम।
किं नाम षोडशसहस्रशतार्धकाश्च तं स्वीकृतं शुकमिवाऽतिनिबन्धयन्ति।३२
सात्राजितीवशगतेन मुदान्वितेन प्राप्तं सुरेन्द्रभवनं हरिणा तदानीम्।
कृत्वा मृधं मघवता विहृतस्तरूणामीशः प्रिया सदनभूषणतां य आप।३३
योभीमजां हि हृतवाञ्छिशुपालकादीञ्जित्वाविधिंनिखिलधर्मकृतोविधित्सुः।
जग्राह तां निजबलेन च धर्मपत्नीं कोऽसौविधिःपरकलत्रहृतौ विजातः।३४
अहङ्कारवशःप्राणी करोति च शुभाऽशुभम्। विमूढो मोहजालेन तत्कृतेनाऽतिपातिना।३५
अहङ्काराद्धि सञ्जातमिदंस्थावरजङ्गमम्। मूलाद्धरिहरादीना मुग्रात्प्रकृतिसम्भवात्।३६
अहङ्कारपरित्यक्तो यदाभवति पद्मजः। तदाविमुक्तो भवति नो चेत्संसारकर्मकृत।३७
तन्मुक्तस्तु विमुक्तो हि बद्धस्तद्वशतां गतः। न नारी न धनंगेहं न पुत्रा न सहोदराः।३८
बन्धनं प्राणिनां राजन्नहंकारस्तु बन्धकः। अहंकर्ता मया चेदं कृतं कार्यं बलीयसा।३९
करिष्यामि करोम्येवं स्वयं बध्नाति प्राणभृत्। कारणेन विना कार्यं न सम्भवति कर्हिचित्।४०
यथान दृश्यतेजातो मृत्पिंडेनविनाघटः। विष्णुःपालयिताविश्वस्याहंकारसमन्वितः।४१
अन्यथा सर्वदा चिन्तां बुधोमग्नः कथं भवेत्। अहङ्कारविमुक्तस्तु यदाभवतिमानवः।४२
अवतारप्रवाहेषु कथं मज्जेच्छुभाशयः। मोहमूलमहङ्कारः संसारस्तत्समुद्भवः।४३
अहङ्कारविहीनानां नमोहोनचसंसृतिः। त्रिविधः पुरुषःप्रोक्तःसात्त्विकोराजसस्तथा।४४
तामसस्तु महाराज ब्रह्माविष्णुशिवादिषु। त्रिविधस्त्रिषु राजेन्द्रकाजेशादिषु सर्वदा।४५
अहङ्कारःसदा प्रोक्तो मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः। अहङ्कारेण तेनैव बद्धा एते न संशयः।४६
मायाविमोहिता मन्दाः प्रवदन्तिमनीषिणः। करोतिस्वेच्छयाविष्णुरवतारानने कशः।४७
मन्दोऽपि दुःखगहने गर्भवासेऽतिसङ्कटे। न करोति मतिं विद्वान्कथं कुर्यात्स चक्रभृत्।४८
कौशल्यादेवकीगर्भे विष्ठामलसमाकुले। स्वेच्छया प्रवदन्त्यद्धा गतो हि मधुसूदनः।४९
वैकुण्ठसदनं त्यक्त्वा गर्भवासेसुखंनुकिम्। चिन्ताकोटिसमुत्थानेदुःखदेविषसंमिते।५०
तपस्तप्त्वा क्रतून्कृत्वा दत्त्वा दानान्यनेकशः। न वाञ्छन्ति यतो लोका गर्भवासं सुदुःखदम्।५१
सकथं भगवान्विष्णुः स्ववशश्चेज्जनार्दनः। गर्भवासरुचिर्भूयाद्भवेत्स्ववशता यदि।५२
जानीहि त्वं महाराज योगमायावशेजगत्। ब्रह्मादिस्तम्बपर्यंतं देवमानुषतिर्यगम्।५३
मायातन्त्रीनिबद्धायेब्रह्मविष्णुहरादयः। भ्रमन्ति बन्धमायान्तिलीलयाचोर्णनाभवत्।५४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे योगमायाप्रभाववर्णनंनाम प्रथमोऽध्यायः।।१।।

* द्वितीयोऽध्यायः *

देवीमाहात्म्यवर्णनंमहिषोत्पत्तिश्च

राजोवाच

योगेश्वर्याः प्रभावोऽयंकथितश्चातिविस्तरात्। ब्रूहितच्चरितंस्वामिञ्छ्रोतुंकौतूहलंमम।१
महादेवीप्रभावंवै श्रोतुं को नाभिवाञ्छति। यो जानातिजगत्सर्वंतदुत्पन्नंचराचरम्।२

व्यास उवाच

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि विस्तरेण महामते। श्रद्दधानायशांताय न ब्रूयात्स तु मन्दधीः।३
पुरायुद्धमभूद्घोरं देवदानवसेनयोः। पृथिव्यां पृथिवीपाल महिषाख्ये महीपतौ।४
महिषो नाम राजेन्द्र चकार तप उत्तमम्। गत्वा हेमगिरौ चोग्रं देवविस्मयकारकम्।५
वर्षाणामयुतं पूर्णं चिन्तयन्हृदि देवताम्। तस्य तुष्टो महाराज ब्रह्मालोक पितामहः।६
तत्राऽऽगत्याब्रवीद्वाक्यंहंसारूढश्चतुर्मुखः। वरं वरय धर्मात्मन्ददामि तववाञ्छितम्।७

महिष उवाच

अमरत्वं देवदेव वाञ्छामि द्रुहिण प्रभो। यथा मृत्युभयं न स्यात्तथा कुरु पितामह।८

ब्रह्मोवाच

उत्पन्नस्यध्रुवंमृत्युर्ध्रुवं जन्ममृतस्य च। सर्वथा मरणोत्पत्ती सर्वेषां प्राणिनांकिल।९
नाशः कालेन सर्वेषां प्राणिनां दैत्यपुङ्गव!। महामहीधराणाञ्च समुद्राणाञ्च सर्वथा।१०
एकं स्थानं परित्यज्य मरणस्यमहीपते। प्रब्रूहि तं वरं साधो! यस्ते मनसि वर्तते।११

महिष उवाच

न देवान्मानुषाद्दैत्यान्मरणं मे पितामह। पुरुषान्न च मे मृत्युर्योषामांका हनिष्यति।१२
तस्मान्मे मरणं नूनं कामिन्याःकुरुपद्मज। अबला हन्त मां हतुं कथंसक्ताभविष्यति।१३

ब्रह्मोवाच

यदाकदाऽपि दैत्येन्द्र नार्यास्ते मरणंध्रुवम्। न नरेभ्योमहाभाग मृतिस्तेमहिषासुर।१४

व्यास उवाच

एवंदत्त्वावरंतस्मैययौब्रह्मानिजालयम्। सोऽपि दैत्यवरःप्रापनिजंस्थानंमुदाऽन्वितः।१५

राजोवाच

महिषःकस्य पुत्रोऽसौ कथञ्जातोमहाबली। कथञ्च माहिषं रूपं प्राप्तं तेनमहात्मना।१६

व्यास उवाच

दनोःपुत्रोमहाराजविख्यातौक्षितिमण्डले। रम्भश्चैवकरम्भश्च द्वावास्तांदानवोत्तमौ।१७
तावपुत्रौ महाराज पुत्रार्थं तेपतुस्तपः। बहून्वर्षगणान्कामं पुण्ये पञ्चनदे जले।१८
करम्भस्तु जले मग्नश्चकार परमन्तपः। वृक्षं रसालवटं प्राप्य स रम्भोऽग्निमसेवयत्।१९
पञ्चाग्निसाधनासक्तःस रम्भस्तुयदाऽभवत्। ज्ञात्वा शचीपतिर्दुःखमुद्ययौ दानवौ प्रति।२०
गत्वा पञ्चनदे तत्र ग्राहरूपं चकार ह। वासवस्तु करम्भं तं तदा जग्राह पादयोः।२१
निजघान च तं दुष्टं करम्भं वृत्रसूदनः। भ्रातरं निहतं श्रुत्वा रम्भः कोपं परङ्गतः।२२
स्वशीर्षं पावके होतुमैच्छच्छित्त्वाकरेणह। केशपाशेगृहीत्वाऽऽशु वमेनक्रोधसंयुतः।२३
दक्षिणेनकरेणोग्रं गृहीत्वा खड्गमुत्तमम्। छिनत्ति शीर्षं तत्तावद्वह्निनाप्रतिबोधितः।२४
उक्तश्च दैत्यमूर्खोऽसि स्वशीर्षं छेत्तुमिच्छसि। आत्महत्याऽतिदुःसाध्या कथं त्वं कर्तुमुद्यतः।२५
वरं वरय भद्रन्ते यस्ते मनसिवर्तते। मा म्रियस्व मृतेनाद्य किन्तेकार्यं भविष्यति।२६

तच्छ्रुत्वा वचनं रम्भः पावकस्य सुभाषितम्। ततोऽब्रवीद्वचो रम्भस्त्यक्त्वा केशकलापकम्।२७
यदितुष्टोऽसिदेवेशदेहिमे वाञ्छितंवरम्। त्रैलोक्यविजयीपुत्रः स्यान्नः परबलार्दनः।२८
अजेयः सर्वथा स स्याद्देवदानवमानवैः। कामरूपी महावीर्यः सर्वलोकाभिवन्दितः।२९
पावकस्तं तथेत्याह भविष्यति तवेप्सितम्। पुत्रस्तवमहाभाग मरणाद्विरमाधुना।३०
यस्यांचित्तंतुरम्भत्वं प्रमदायांकरिष्यसि। तस्यांपुत्रोमहाभागभविष्यतिबलाधिकः।३१

व्यास उवाच

इत्युक्तोवह्निना रम्भो वचनं चित्तरञ्जनम्। श्रुत्वा प्रणम्य प्रययौ वह्निंतं दानवोत्तमः।३२
यक्षैःपरिवृतंस्थानंरमणीयंश्रियाऽन्वितम् ।दृष्ट्वा चक्रे तदाभावं महिष्यांदानवोत्तमः।३३
मत्तायां रूपपूर्णायां विहायान्याञ्च योषिताम्। सा समायाच्च तरसा कामयंती मुदाऽन्विता।३४
रम्भोऽपिगमनञ्चक्रे भवितव्यप्रणोदितः। सा तु गर्भवतीजाता महिषी तस्य वीर्यतः।३५
तां गृहीत्वाऽथपातालं प्रविवेशमनोहरम्। महिषेभ्यश्च तां रक्षन्प्रियामनुमतां किल।३६
कदाचिन्महिषश्चान्य कामार्तस्तामुपाद्रवत्। स्वयमागत्य तं हन्तुं दानवः समुपाद्रवत्।३७
स्वरक्षार्थंसमागम्यमहिषंसमताडयत् ।सोऽपितंनिजघानाशु शृङ्गाभ्यांकाममोहितः।३८
ताडितस्तेनतीक्ष्णाभ्यांशृङ्गाभ्यां हृदये भृशम्। भूमौ पपात तरसा ममार च विमूर्छितः।३९
मृतेभर्तरि सा दीना भयार्ताविद्रुताभृशम्। सा वेगात्तं वटं प्राप्य यक्षाणांशरणंगता।४०
पृष्ठतस्तु गतस्तत्र महिषः कामपीडितः। कामयानस्तु तां कामी बलवीर्यमदोद्धतः।४१
रुदतीसाभृशंदीना दृष्टा यक्षैर्भयातुरा। धावमानञ्च तं वीक्ष्य यक्षास्त्रातुं समाययुः।४२
युद्धं समभवद्घोरं यक्षाणाञ्च हयारिणा। शरेण ताडितस्तूर्णं पपात धरणी तले।४३
मृतं रम्भं समानीय यक्षास्ते परमंप्रियम्। चितायांरोपयामासुस्तस्य देहस्य शुद्धये।४४
महिषी सा पतिं दृष्ट्वा चित्तायांरोपितंतदा। प्रवेष्टुंसामतिं चक्रे पतिनासह पावकम्।४५
वार्यमाणाऽपियक्षैः सा प्रविवेश हुताशनम्। ज्वालामालाकुलं साध्वी पतिमादाय वल्लभम्।४६
महिषस्तु चितामध्यात्समुत्तस्थौ महाबलः। रम्भोऽप्यन्यद्वपुः कृत्वा निःसृतः पुत्रवत्सलः।४७
रक्तबीजोऽप्यसौजातो महिषोऽपिमहाबलः। अभिषिक्तस्तु राज्येऽसौ हयारिरसुरोत्तमैः।४८
एवंसमहिषोजातो रक्तबीजश्च वीर्यवान्। अवध्यैस्तुसुरैर्दैत्यैर्मानवैश्च नृपोत्तम!।४९
इत्येत्कथितं राजञ्जन्मतस्य महात्मनः। वरप्रदानं च तथा प्रोक्तं सर्वं सविस्तरम्।५०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे महिषासुरोत्पत्तिर्नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

* तृतीयोऽध्यायः *

महिषासुरसैन्योद्योगवर्णनम्

व्यास उवाच

एवं स महिषोनाम दानवो वरदर्पितः। प्राप्य राज्यं जगत्सर्वं वशे चक्रे महाबलः।१
पृथिवींपालयामाससागरान्तांभुजार्जिताम् ।एकच्छत्रांनिरातंकांवैरिवर्गविवर्जिताम्।२
सेनानीचिक्षुरस्तस्यमहावीर्योमदोत्कटः। धनाध्यक्षस्तथाताम्रः सेनाऽयुतसमावृतः।३
असिलोमातथोदर्कोविडालाख्यश्चवाष्कलः। त्रिनेत्रोऽथतथाकालबन्धकोबलदर्पितः।४
एतेसैन्यसुताः सर्वे दानवा मेदिनीं तदा। आवृत्यसंस्थिताकाममृद्धासागरमेखलाम्।५
करदाश्च कृताःसर्वे भूमिपालाः पुरातनाः। निहता ये बलोदग्राः क्षात्रधर्मव्यवस्थिताः।६

ब्राह्मणावशगा जाता यज्ञभागसमर्पकाः। महिषस्यमहाराज निखिले क्षितिमण्डले।७
एकातपत्रं तद्राज्यं कृत्वा स महिषासुरः। स्वर्गं जेतुं मनश्चक्रे वरदानेन गर्वितः।८
प्रणिधिं प्रेषयामासहयारिस्तुशचीपतिम्। स सन्देहशहरं शीघ्रमाहूयोवाचदैत्यराट्।६
गच्छ वीर महाबाहो दूतत्वं कुरु मेनऽघ। ब्रूहि शक्रं दिवं गत्वा निःशंकं सुरसन्निधौ।१०
मुञ्च स्वर्गं सहस्राक्ष यथेष्टं गच्छ मा चिरम्। सेवां वा कुरु देवेश! महिषस्य महात्मनः।११
स त्वां संरक्षयेन्नूनं राजा शरणमागतम्। तस्मात्त्वं शरणंयाहि महिषस्य शचीपते।१२
नो चेद्वज्रंगृहाणाशु युद्धाय बलसूदन। पूर्वैर्जितोऽसि चास्मास्कंजानामितवपौरुषम्।१३
अहल्याजारविज्ञातं बलं ते सुरसंघप। युध्यस्व व्रजवाकामं यत्र ते रमते मनः।१४

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनंतस्य शक्रः क्रोधसमन्वितः। उवाचतं नृपश्रेष्ठ स्मितपूर्वं वचस्तदा।१५
न जानेऽहं सुमन्दात्मन्यतस्त्वं मददर्पितः। चिकित्सां संकरिष्यामि रोगस्याऽस्य प्रभोस्तव।१६
अतःपरं करिष्यामि मूलस्याऽस्यनिमूलनम्। गच्छदूततथा ब्रूहि तस्याग्रेममभाषितम्।१७
शिष्टैर्दूता न हन्यव्यास्तस्मात्त्वां विसृजाम्यहम्। युद्धेच्छा चेत्समागच्छ त्वरितोमहिषीसुत!।१८
हयारे त्वद्बलं ज्ञातं तृणादस्त्वंजडाकृतिः। शृङ्गयोस्तेकरिष्यामिसुदृणञ्चशरासनम्।१६
दर्पःशृङ्गबलात्तेऽस्तिविदितंकारणंमया । विषाणेतेपरिच्छिद्यसंहरिष्यामि तद्बलम्।२०
यद्बलेनातिपूर्णस्त्वं जातोऽसिबलदर्पितः। कुशलस्त्वं तदाघाते न युद्धे महिषाधम।२१

व्यास उवाच

इत्युक्तोऽसौ सुरेन्द्रेण स दूतस्त्वरितोगतः। जगाममहिषंमत्तं प्रणम्यप्रत्युवाच ह।२२

दूत उवाच

राजन्देवाधिपः कामं न त्वां विगणयत्यसौ। मन्यते स्वबलं पूर्णं देवसैन्यसमावृतः।२३
यदुक्तं तेन मूर्खेण कथमन्यद्ब्रवीम्यहम्। प्रियं सत्यं च वक्तव्यं भृत्येन पुरतः प्रभोः।२४
प्रियं सत्यञ्च वक्तव्यं प्रभोरग्रे शुभेच्छुना। इति नीतिर्महाराजजागर्तिशुभकारिणी।२५
केवलंचेत्प्रियं ब्रूयान्न ते कार्यं भविष्यति। परुषं च न वक्तव्यंकदाचिच्छुभमिच्छता।२६
यथा रिपुमुखाद्वाचः प्रसरन्ति विषोपमाः। तथाभृत्यमुखान्नाथनिःसरन्तिकथं गिरः।२७

व्यास उवाच

यादृशानीह वाक्यानि तेनोक्तानि महीपते। तादृशानिनमेजिह्वावक्तुमर्हतिकर्हिचित्।२८
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य हेतुगर्भं तृणाशनः। भृशं कोपपरीतात्मा बभूव महिषासुरः।२६
समाहूयाब्रवीद्दैत्यान्क्रोधसंरक्तलोचनः । लांगूलं पृष्ठदेशेच कृत्वा मूत्रं परित्यजन्।३०

भो भो दैत्याः सुरेन्द्रोऽसौ युद्धकामोऽस्ति सर्वथा ।
बलोद्योगं कुरुध्वं वै जेतव्योऽसौ सुराधमः ।।३१।।

मदग्रेकोभवेच्छूरः कोटिशश्चेत्तथाविधाः। न बिभेम्येकतःकामहनिष्याम्यद्य सर्वथा।३२
शूरः शान्तेष्वशौ नूनं तपस्विषु बलाधिकः। बलकर्ता हि कुहको लम्पटःपरदारहृत्।३३
अप्सरोबलसंमत्तस्तपोविघ्नकरः खलः। छिद्रप्रहरणः पापो नित्यं विश्वासघातकः।३४
नमुर्चिनिहतोयेन कृत्वा सन्धि दुरात्मना। शपथान्विविधानादौकृत्वाभीतेनछद्मना।३५
विष्णुस्तुकपटाचार्यः कुहकः शपथाकरः। नानारूपधरः कामं बलकृद्दम्भपण्डितः।३६
कृत्वाकोलाकृतिंयेन हिरण्याक्षो निपातितः। हिरण्यकशिपुर्येननृसिंहेनच घातितः।३७
नाहं तद्वशगोनूनं भवेयं दनुनन्दनः। विश्वासं नैव गच्छामि देवानां कुत्रकर्हिचित्।३८

किंकरिष्यति मे विष्णुरिन्द्रोवाबलवत्तरः। रुद्रोवाऽपि नमे शक्तः प्रतिकर्तुं रणांगणे।३९
त्रिविष्टप्रं ग्रहीष्यामि जित्वेन्द्रं वरुणंयमम्। धनदंपावकञ्चैव चन्द्रसूर्यौविविजत्यच।४०
यज्ञभागभुजः सर्वे भविष्यामोऽद्य सोमपाः। जिवा देवसमूहञ्चविहरिष्यामिदानवैः।४१
न मे भयं सुरेभ्यश्च वरदानेन दानवाः। मरणं न नरेभ्यश्च नारी किं मे करिष्यति।४२
पातालपर्वतेभ्यश्च समाहूयवरान्वरान्। दानवान्ममसैन्येशान्कुर्वन्तु त्वरिताश्चराः।४३
एकोऽहं सर्वदेवेशान्विजेतुं दानवाक्षमः। शोभार्थं वः समाहूय नयामि सुरसंगमे।४४
शृङ्गाभ्याञ्च खुराभ्याञ्च हनिष्येऽहंसुरान्किल। नमेभयंसुरेभ्यश्च वरदान प्रभावतः।४५
अवध्योऽहं सुरगणैरसुरैर्मानवैस्तथा। तस्मात्सज्ञा भवन्त्वद्य देवलोकजयाय वै।४६
जित्वा सुरालयं दैत्या विहरिष्यामि नन्दने। मन्दारकुसुमापीडा देवयोषित्समन्विताः।४७
कामधेनुपयोत्सिक्ताः सुधापानप्रमोदिताः। देवगन्धर्वगीतादिनृत्यलास्यसमन्विताः।४८
उर्वशी मेनकारम्भा घृताची च तिलोत्तमा। प्रमद्वरा महासेना मिश्रकेशी मदोत्कटा।४९
विप्रचित्तिप्रभृतयो नृत्यगीतविशारदाः। रञ्जयिष्यन्ति वः सर्वान्नानासवनिषेवणैः।५०
सर्वेसज्ञाभवन्त्वद्य रोचतां गमनं दिवि। संग्रामार्थं सुरैः सार्धं कृत्वामङ्गलमुत्तमम्।५१
रक्षणार्थञ्च सर्वेषां भार्गवं मुनिसत्तमम्। समाहूय च सम्पूज्य स्थाप्ययज्ञेगुरुंपरम्।५२

व्यास उवाच

इति सन्दिश्य दैत्येन्द्रान्महिषः पापधीस्तदा। जगाम त्वरितोराजन्भवनं स्वं मुदाऽन्वितः।५३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे भगवती माहात्म्ये दैत्यसैन्योद्योगो नाम तृतीयोऽध्यायः।।३।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

देवैःसहमहिषासुरवधपरामर्शवर्णनम्

व्यास उवाच

गते दूते सुरेन्द्रोऽपि समाहूय सुरानथ। यमवायुधनाध्यक्ष वरुणानिदमूचिवान्।१
महिषो नाम दैत्येन्द्रो रम्भपुत्रो महाबलः। वरदर्पमदोन्मत्तो मायाशतविचक्षणः।२
तस्य दूतोऽद्य सम्प्राप्तः प्रेषितस्तेनभोःसुराः। स्वर्गकामेनलुब्धेन मामुवाचेदृशंवचः।३
त्यजदेवालयं शक्र यथेच्छं व्रज वासव। सेवां वा कुरु दैत्यस्य महिषस्य महात्मनः।४
दयावान्दानवेन्द्रोऽसौ स ते वृत्तिं विधास्यति। नतेषु भृत्यभूतेषुनकुप्यदि कदाचन।५
नोचेद्युद्धामदेवेशसेनोद्योगं कुरु स्वयम्। गते मयि स दैत्येन्द्रस्त्वरितः समुपेष्यति।६
इत्युक्त्वा स गतोदूतो दानवस्यदुरात्मनः। किंकर्तव्यमतःकार्यंचिन्तयध्वंसुरोत्तमाः।७
दुर्बलोऽपि न चोपेक्ष्यः शत्रुर्बलवता सुरा। विशेषेण सदोद्योगी बलवान्बलदर्पितः।८
उद्यमः किल कर्तव्यो यथाबुद्धि यथाबलम्। दैवाधीनो भवेन्नूनंजयोवाऽथपराजयः।९
सन्धियोगोनचात्रास्ति खले सन्धिर्निरर्थकः। सर्वथा साधुभिः कार्यं विचार्य च पुनः पुनः।१०
यानमप्यधुना नैव कर्तव्यं सहसा पुनः। प्रेक्षकाः प्रेषणीयाश्च शीघ्रगाः सुप्रवेशकाः।११
इङ्गितज्ञाश्चनिःसंगानिस्पृहाःसत्यवादिनः। सेनाभियोगंप्रस्थानंबलसंख्यां यथार्थतः।१२
वीराणां च परिज्ञानं कृत्वाऽऽयान्तु त्वरान्विताः। ज्ञात्वा दैत्य पतेस्तस्य सैन्यस्य च बलाबलम्।१३
करिष्यामि ततस्तूर्णं यानं वादुर्गसंग्रहम्। "विचार्यखलुकर्तव्यंकार्यंबुद्धिमता सदा"
सहसा विहितं कार्यं दुःखदं सर्वथा भवेत्।।१४।।

तस्माद्विमृश्य कर्तव्यं सुखदं सर्वथा बुधैः। नाऽत्रभेदविधिर्न्याय्योदानवेषुचसर्वथा।१५
एकचित्तेषु कार्येऽस्मिंस्तस्माच्चाराव्रजन्तु वै। ज्ञात्वा बलाबलं तेषां पश्चान्नीतिर्विचार्य च।१६
विधेयाविधिवत्तज्ज्ञैस्तेषु कार्यपरेषुच। अन्यथा विहितं कार्यं विपरीतफलप्रदम्।१७
सर्वधा तद्भवेन्नूनमज्ञातमौषधं यथा।
इति संचिन्त्य तैः सर्वैः प्रणिधिं कार्यवेदिनम् ।।१८।।
प्रेषयामास देवेन्द्रः परिज्ञानाय पार्थिव। दूतस्तुत्वरितोगत्वा समागम्य सुराधिपम्।१९
निवेदयामास तदा सर्वसैन्यबलाबलम्। ज्ञात्वा तद्बलमुद्योगं तुराषाडतिविस्मितः।२०
देवानचोदयत्तूर्णं समाहूय पुरोहितम्। मन्त्रं मन्त्रविदां श्रेष्ठं चकार त्रिदशेश्वरः।२१
उवाचांगिरसश्रेष्ठं समासीनं वरासने।

इन्द्र उवाच

भो भो देवगुरो विद्वान्किं कर्तव्यं वदस्व नः ।।२२।।
सर्वज्ञोऽसिसमुत्पन्नेकार्ये त्वं गतिरद्य नः। दानवोमहिषो नाम महावीर्योमदान्वितः।२३
योद्धुकामःसमायातिबहुभिर्दानवैर्वृतः । तत्र प्रतिक्रियाकार्या त्वयामंत्रविदाऽधुना।२४
तेषां शुक्रस्तथा त्वं मे विघ्नहर्ता सुसंमतः।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं प्राह तुरासाहं बृहस्पतिः ।।२५।।
विचिन्त्य मनसा कामं कार्यसाधनतत्परः।

गुरुरुवाच

स्वस्थो भव सुरेन्द्र त्वं धैर्यमालंब्य मारिष ।।२६।।
व्यसने च समुत्पन्ने न त्याज्यंधैर्यमाशु वै। जयाजयौ सुराध्यक्ष दैवाधीनौ सदैवहि।२७
स्थातव्यं धैर्यमालंब्य तस्माद्बुद्धिमतासदा। भवितव्यं भवत्येव जानन्नेव शतक्रतो।२८
उद्यमः सर्वथा कार्यो यथापौरुषमात्मनः। मुनयोऽपि हि मुक्त्यर्थमुद्यमैकरताः सदा।२९
दैवाधीनञ्चजानन्तो योगध्यानपरायणाः। तस्मात्सदैवकर्तव्यो व्यवहारोदितोद्यमः।३०
सुखं भवतु वा मा वा देवेकापरिदेवना। विनापुरुषकारेणकदाचित्सिद्धिमाप्नुयोत्।३१
अन्धवत्पङ्गुवत्कामं न तथा मुदवाहयेत्। कृते पुरुषकारेऽपि यदि सिद्धिर्न जायते।३२
न तत्र दूषणं तस्य दैवाधीने शरीरिणि। कार्यसिद्धिर्न सैन्येऽस्ति न मन्त्रेनचमंत्रणे।३३
न रथेनाऽऽयुधे नूनं दैवाधीना सुराधिप। बलवान्क्लेशमाप्नोतिनिर्बलसुखमश्नुते।३४
बुद्धिमान्क्षुधितः शेते निर्बुद्धिर्भोगवान्भवेत्। कातरो जयमाप्नोति शूरो याति पराजयम्।३५
दैवाधीने तु संसारे कामं का परिदेवना। उद्यमे योजयेन्नूनं भवितव्यं सुराधिप।३६
दुःखदे सुखदेवाऽपि तत्र तौन विचिन्तयेत्। दुःख दुःखाधिकान्पश्येत्सुखे पश्येत्सुखाधिकान्।३७
आत्मानंहर्षशोकाभ्यां शत्रुभ्यामिव नार्पयेत्। धैर्यमेवावगन्तव्यं हर्षशोकोद्भवेबुधैः।३८
अधैर्याद्यादृशं दुःखं ननु धैर्येऽस्तितादृशम्। दुर्लभं सहनत्वं वै समये सुखदुःखयोः।३९
हर्षशोकोद्भवो यत्र न भवेद् बुद्धिनिश्चयात्। किं दुःखं कस्य वा दुःखं निर्गुणोऽहं सदाऽव्ययः।४०
चतुर्विंशतिरिक्तोऽस्मि किं मे दुःखं सुखं चकिम्। प्राणस्य क्षुत्पिपासे द्वे मनसः शोकमूर्च्छने।४१
जरामृत्यू शरीरस्य षड्ूर्मिरहितः शिवः। शोकमोहौशरीरस्य गुणौकिंमेऽत्र चिन्तने।४२
शरीरंनाहमथवातत्सम्बन्धीन चाप्यहम्। सप्तैकषोडशादिभ्योविभिन्नोऽहंसदासुखी।४३
प्रकृतिर्विकृतिर्नाऽहं किंमेदुःखं सदापुनः। इति मत्वा सुरेश त्वं मनसा भव निर्ममः।४४
उपायः प्रथमोऽयं ते दुःखनाशे शतक्रतो। ममतापरमं दुःखं निर्ममत्वं परं सुखम्।४५

सन्तोषादपरं नास्ति सुखस्थानं शचीपते। अथवा यदि न ज्ञानं ममतानाशने किल।४६
ततोविवेकःकर्तव्यो भवितव्ये सुराधिप। प्रारब्ध कर्मणां नाशो नाभोगाल्लक्ष्यते किल।४७
यद्भावि तद्भवत्येव का चिंतासुखदुःखयोः। सुरैः सर्वैःसहायैर्वा बुद्ध्यावातवसत्तम।४८
सुखं क्षयाय पुण्यस्य दुःखं पापस्य मारिष। तस्मात्सुखक्षयेहर्षःकर्तव्यः सर्वथाबुधैः।४६
अथवामन्त्रयित्वाऽद्य कुरु यत्नं यथाविधि। कृते यत्नेमहाराज भवितव्यंभविष्यति।५०
इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे भयातुरइन्द्रादिदेवाःसुरगुरुसहपरामर्शवर्णनंनाम चतुर्थोऽध्यायः॥४॥

* पञ्चमोऽध्यायः *

विष्णोराराधनातथादैत्यसैन्यपराजयोवर्णनम्

व्यास उवाच

इति श्रुत्वा सहस्राक्षः पुनराह बृहस्पतिम्। युद्धोद्योगं करिष्यामि हयारेर्नाशनायवै।१
नोद्यमेन विना राज्यं न सुखं नचवै यशः। निरुद्यमं न शंसन्ति कातरानचसोद्यमाः।२
यतीनांभूषणंज्ञानं सन्तोषोहि द्विजन्मनाम्। उद्यम शत्रुहननं भूषणं भूतिमिच्छताम्।३
उद्यमेन हतस्त्वाष्ट्रो नमुचिर्बल एव च। तथैनं निहनिष्यामि महिषं मुनिसत्तम।४
बलं देवगुरुस्त्वं मे वज्रमायुधमुत्तमम्। सहायस्तु हरिर्नूनं तथोमापतिरव्ययः।५
रक्षोघ्नान्पठ मे साधो करोम्यद्य समुद्यमम्। स्वसैन्याभिनिवेशञ्च महिषंप्रतिमानद।६

व्यास उवाच

इत्युक्तो देवराजेन वाचस्पतिरुवाच ह। सुरेन्द्रं युद्धसंरक्तं स्मितपूर्वं वचस्तदा।७

बृहस्पतिरुवाच

प्रेरयामिन चाहं त्वां न च निवारयाम्यहम्। संदिग्धेऽत्रजयेकामं युध्यतश्च पराजये।८
न तेऽत्र दूषणं किञ्चिद्भवितव्येशचीपते। सुखंवायदि वा दुःखंविहितं च भविष्यति।६
न मया तत्परिज्ञातं भाविदुःखं सुखं तथा। यद्भार्याहरणे प्राप्तं पुरावासव वेत्सि हि।१०
शशिना मे हृताभार्यामित्रेणामित्रकर्शन। स्वाश्रमस्थेन सम्प्राप्तंदुःखंसर्वसुखापहम्।११
बुद्धिमान्सर्वलोकेषु विदितोऽहं सुराऽधिप। क मे गता तदा बुद्धिर्यदा भार्या हृता बलात्।१२
तस्मादुपायः कर्तव्यो बुद्धिमद्भिःसदानरैः। कार्यसिद्धिः सदानूनं दैवाधीनासुराधिप।१३

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं सत्यं गुरोःसार्थंशचीपतिः। ब्राह्मणं शरणंगत्वा नत्वावचनमब्रवीत्।१४
पितामह सुराध्यक्ष दैत्योमहिषसंज्ञकः। गृहीतुकामः स्वर्गं मे बलोद्योगं करोत्यलम्।१५
अन्येचदानवाःसर्वेतत्सैन्यंसमुपस्थिताः। योद्धुकामामहावीर्याः सर्वे युद्धविशारदाः।१६
तेनाहंभीतभीतोऽस्मि त्वत्सकाशमिहागत। सर्वज्ञोऽसि महाप्राज्ञ साहाय्यं कर्तुमर्हसि।१७

ब्रह्मोवाच

गच्छामः सर्व एवाद्यकैलासंत्वरितावयम्। शंकरं पुरतःकृत्वाविष्णुञ्चबलिनाम्बरम्।१८
ततो युद्धं प्रकर्तव्यं सर्वैः सुरगणैः सह। मिलित्वामन्त्रमाधाय देशंकालंविचिन्त्यच।१६
बलाबलमविज्ञाय विवेकमपहाय च। साहसं तु प्रकुर्वाणो नरः पतनमृच्छति।२०

व्यास उवाच

तन्निशम्य सहस्राक्षः कैलासं निर्जगामह। ब्रह्मणं पुरतः कृत्वा लोकपालसमन्वितः।२१
तुष्टाव शंकरं गत्वा वेदमन्त्रैर्महेश्वरम्। प्रसन्नं पुरतः कृत्वा ययौ विष्णुपुरम्प्रति।२२

स्तुत्वा तं देवदेवेशं कार्यंप्रोवाच चात्मनः। महिषातद्भयं चोग्रं वरदान मदोद्धतात् ।२३
तदाकर्ण्य भयं तस्य विष्णुर्देवानुवाच ह। करिष्यामो वयंयुद्धं हनिष्यामस्तुदुर्जयम् ।२४
इति तेनिश्चयंकृत्वाब्रह्मविष्णुहरीश्वराः। स्वानिस्वानि समारुह्यवाहनानिययुः सुराः ।२५
ब्रह्मा हंस समारूढो विष्णुर्गरुडवाहनः। शङ्करो वृषभारूढो वृत्रहा गजसंस्थितः ।२६
मयूरवाहनः स्कन्दो यमोमहिषवाहनः। कृत्वा सैन्य समायोगं यावत्ते निर्ययुःसुराः ।२७
तावद्दैत्यबलं प्राप्तं दृतं महिषपालितम्। तत्राभूत्तुमुलं युद्धं देवदानव सैन्ययोः ।२८
बाणैः षड्गैस्तथाप्रासैर्मुसलश्च परश्वधैः। गदाभिः पट्टिशैः शूलैश्चक्रैश्च शक्तितोमरैः ।२९
मुद्गरैर्भिन्दिपालैश्च हलैश्चैवातिदारुणैः। अन्यैश्च विविधैरस्त्रैर्निजघ्नुस्ते परस्परम् ।३०
सेनानीचिक्षुरस्तस्य गजारूढो महाबलः। मघवन्तं पञ्चभिस्तैः सायकैःसमताडयत् ।३१
तुराषाडपि तांश्छित्त्वा बाणैर्बाणांस्त्वरान्वितः। हृदये चार्धचन्द्रेण ताडयामास तं कृती ।३२
बाणाहनस्तु सेनानीः प्राप मूर्च्छाङ्गजोपरि। करिणं वज्रघातेन स जघान करे ततः ।३३
तद्वज्राभिहतोनागोभग्नःसैन्यंजगाम ह। दृष्ट्वा तं दैत्यराट्क्रुद्धोविडालाख्यमथाब्रवीत् ।३४
गच्छ वीर महाबाहो जहीन्द्रं मदगर्वितम्। वरुणादीन्परान्देवान्हत्वाऽऽगच्छ ममान्तिकम् ।३५
तच्छ्रुत्वावचनंतस्यविडालाऽऽख्योमहाबलः। आरुह्यवारणंमत्तंजगामत्रिदशाधिपम् ।३६
वासवस्तंसमायान्तं दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः। जघानविशिखैस्तीक्ष्णैराशीविषसमप्रभैः ।३७
स तुच्छित्त्वा शरांस्तूर्णं स्वशरैश्चापनिःसृतैः। पञ्चासद्भिर्जघानाऽऽशु वासवञ्च शिलीमुखैः ।३८
तथेन्द्रोऽपि चतान्बाणांश्छित्त्वाकोपसमन्वितः। जघानविशिखैस्तीक्ष्णैराशीविषसमप्रभैः ।३९
स तुच्छित्त्वा शरांस्तूर्णं स्वशरैश्चापनिःसृतैः। गदयाताडयामासगजंतस्यकरोपरि ।४०
स्वकरे निहतो नागश्चकारार्तस्वरं मुहुः। परिवृत्य जघानाशु दैत्यसैन्यं भयातुरम् ।४१
दानवस्तु गजं वीक्ष्य परावृत्य गतं रणात्। समाविश्यरथेरम्येजगामाऽऽशुसुरान्रणे ।४२
तुराषाडपि तं वीक्ष्य रथस्थं पुनरागतम्। अहनद्विशिखैस्तीक्ष्णैराशीविषमसमप्रभैः ।४३
सोऽपि क्रुद्धश्चकारोग्रां बाणवृष्टिं महाबलः। बभूव तुमुलंयुद्धं तयोस्तत्र जयैषिणोः ।४४
इन्द्रस्तु बलिनं दृष्ट्वा कोपेनाकुलितेन्द्रियः। जयन्तमग्रतः कृत्वा युयुधे तेन संयुतः ।४५
जयन्तस्तु शितैर्बाणैस्तं जघान स्तनान्तरे। पञ्चभिः प्रबलाकृष्टैरसुरं मदगर्वितम् ।४६
स बाणाभिहतस्तावन्निपपात रथोपरि। अतिवाह्य रथं सूतो निर्जगाम रणाजिरात् ।४७
तस्मिन्विनिर्गते दैत्ये विडालाख्येऽथमूर्च्छिते। जयशब्दोमहानाशीद्दुन्दुभीनाञ्च निःस्वनः ।४८
सुराःप्रमुदिताःसर्वे तुष्टुवुस्तं शचीपतिम्। जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ।४९
चुकोप महिषः श्रुत्वा जयशब्दं सुरैः कृतम्। प्रेषयामास तत्रैव ताम्रं परमदापहम् ।५०
ताम्रस्तु बहुभिः सार्धं समागम्यरणाजिरे। शरवृष्टिं चकाराऽऽशुतडित्वानिवसागरे ।५१
वरुणः पाशमुद्यम्य जगाम त्वरितस्तदा। यमश्च महिषारूढो दण्डमादाय परश्वधैः ।५२
तत्र युद्धमभूद्घोरं देवदानवयोमिथः। बाणैः खड्गैश्च मुसलैशक्तिभिश्च परश्वधैः ।५३
दण्डेन निहतस्ताम्रो यमहस्तोद्यतेनच। न चचाल महाबाहुः संग्रामांगणस्तदा ।५४
चापमाकृष्यवेगेनमुक्त्वातीव्रांञ्छिलीमुखान्। इन्द्रादीनहनत्तूर्णंताम्रस्तस्मिनृणाजिरे ।५५
तेऽपि देवाः शरैर्दिव्यैर्निशितैश्च शिलाशितैः। निजघ्नुर्दानवान्क्रुद्धास्तिष्ठ तिष्ठेति चुक्रुशुः ।५६
निहतस्तैः सुरै दैत्यो मूर्च्छामापरणांगणे। हाहाकारोमहानासीद्दैत्यसैन्येभयाऽतुरे ।५७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे दैत्यसैन्यपराजयो नाम पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।

* षष्ठोऽध्यायः *

महिषासुरइन्द्रादिदेवैःसहयुद्धवर्णनम्

व्यास उवाच

ताम्रेथ मूर्छिते दैत्ये महिषः क्रोधसंयुतः। संमुद्यम्य गदां गुर्वीं देवानुपजगाम ह।१
तिष्ठन्त्वद्य सुराः सर्वे हन्म्यहं गदया किल। सर्वे बलिभुजः कामं बलहीनासदैव हि।२
इत्युक्त्वाऽसौ गजारूढं सम्प्राप्य मदगर्वितः। जघानगदया तूर्णं बाहुमूले महाभुजः।३
सोऽपि वज्रेणघोरेण चिच्छेदाशु गताञ्चताम्। प्रहर्तुकामस्त्वरितो जगाममहिषं प्रति।४
हयारिरपिकोपेन खड्गमादाय सुप्रभम्। ययाविन्द्रं महावीर्यंप्रहरिष्यन्निवान्तिकम्।५
बभूव च तयोर्युद्धं सर्वलोकभयावहम्। आयुधैर्विविधैस्तत्र मुनिविस्मयकारकम्।६
चकाराऽऽशु तदा दैत्योमायांमोहकरीं किल। शाम्बरीं सर्वलोकघ्नीं मुनीनामपि मोहिनीम्।७
कोटिशोमहिषास्तत्रतद्रूपास्तत्पराक्रमाः। ददृशुःसायुधाःसर्वेनिघ्नन्तोदेववाहिनीम्।८
मघवा विस्मितस्तत्र दृष्ट्वा तां दैत्यनिर्मिताम्। बभूवातिभयोद्विग्नो मायां मोहकरीं किल।९
वरुणोऽपि सुसंत्रस्तस्तथैव धननायकः। यमो हुताशनः सूर्यः शीत रश्मिर्भयातुरः।१०
पलायनपराः सर्वे बभूवुर्मोहिताः सुराः। ब्रह्मविष्णुमहेशानां स्मरणं चक्रुरुद्यताः।११
तत्राजग्मुश्चकाजेशाःस्मृतमात्राःसुरोत्तमाः। हंसताक्ष्यवृषारूढास्त्रातुकामावरायुधाः।१२
शौरिस्तांमोहनीं दृष्ट्वा सुदर्शनमथोज्ज्वलम्। मुमोच तत्तेजसैवमायासाविलयं गता।१३
वीक्ष्य तान्महिषस्तत्र सृष्टिस्थित्यन्तकारिणः। योद्धुकामः समादाय परिघं समुपाद्रवत्।१४
महिषाख्यो महावीरः सेनानीश्चिक्षुरस्तथा। उग्रास्यश्चोग्रवीर्यश्च दुद्रुवुर्युद्धकामुकाः।१५
असिलोमात्रिनेत्रश्च बाष्कलोऽन्धकएवच। एते चान्येचबहवो युद्धकामाविनिर्ययुः।१६
सन्नद्धाधृतचापास्ते रथारूढा मदोद्धताः। परिवव्रुः सुरान्सर्वान्वृकाइव सुवत्सकान्।१७
बाणवृष्टिं ततश्चक्रुर्दानवा मदगर्विताः। सुराश्चापि तथा चक्रुः परस्परजिघांसवः।१८
अन्धकोरिपुमासाद्य पञ्चबाणाञ्छिलाशितान्। मुमोचविष संदिग्धान्कर्णाऽऽकृष्टामहाबलान्।१९
वासुदेवोऽप्यसम्प्राप्तान्विशिखानाशुगैस्तदा। चिच्छेदतान्पुनःपञ्चमुमोचरिपुनाशकः।२०
तयो परस्परंयुद्धं बभूव हरिदैत्ययोः। बाणासि चक्रमुसलैर्गदाशक्तिपरश्वधैः।२१
महेशान्धकयोर्युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम्। पञ्चाशद्दिनपर्यन्तं बभूव च परस्परम्।२२
इन्द्रबाष्कलयोस्तद्वन्महिषासुरा रुद्रयोः। यमत्रिबेत्रयोस्तद्वन्महाहनुधनेशयोः।२३
असिलोमवरुणयोर्युद्धं परम दारुणम्। गरुडं गदया दैत्यो जघान हरिवाहनम्।२४
स गदापातखिन्नांगो निःश्वसन्नवतिष्ठते। शौरिस्तंदक्षिणेनाशुस्तेनपरि सान्त्वयन्।२५
स्थिरं चकार देवेशो वैनतेयं महाबलम्। समाकृष्य धनुः शार्ङ्गं मुमोच विशिखान्बहून्।२६
अन्धकोपरिकोपेनहन्तुकामोजनार्दनः। दानवोऽपिचतान्बाणांश्चिच्छेदस्वशरैःशितैः।२७
पञ्चाशर्द्भिहरिं कोपाज्जघान च शिलाशितैः। वासुदेवोऽपि तांस्तूर्णं वञ्चयित्वा सरोत्तमान्।२८
चक्रं मुमोच वेगेन सहस्रारं सुदर्शनम्। त्यक्तं सुदर्शनं दूरात्स्वचक्रेण न्यवारयत्।२९
ननाद च महाराज देवान्संमोहयन्निव। दृष्ट्वा तु विफलं जातं चक्रं देवस्यशार्ङ्गिणः।३०
जग्मुःशोकं सुराः सर्वे जहर्षुर्दानवास्तथा। वासुदेवोऽपि तरसा दृष्ट्वा देवाञ्छुचाऽऽवृतान्।३१
गदां कौमोदकीं धृत्वा दानवंसमुपाद्रवत्। तं जघानातिवेगेनमूर्ध्निमायाविनं हरिः।३२

स गदाभिहतो भूमौ निपपातातिमूर्छितः। तं तथा पतिप्तं वीक्ष्य हयारिरतिकोपनः।३३
आजगामरमानाथंत्रासयन्नतिगर्जितैः। वासुदेवोऽपितंदृष्ट्वासमायान्तंक्रुधाऽन्वितम्।३४
चापज्यानिनदंचोग्रं चकारनन्दयन्सुरान्। शरवृष्टिंचकाराऽऽशु भगवान्महिषोपरि।३५
सोऽपि चिच्छेद बाणौघैस्ताञ्छरान्गगनेरितान्। तयोर्युद्धमभूद्राजन्परस्पर भयावहम्।३६
गदया ताडयामासकेशवो मस्तकोपरि। स गदाभिहतोमूर्ध्नि पपातोर्व्यांसुमूर्छितः।३७
हाहाकारो महानासीत्सैन्येतस्यसु दारुणः। स विहायव्यथांदैत्यो मुहूर्तादुत्थितः पुनः।३८
गृहीत्वापरिघं शीर्षे जघान मधुसूदनम्। परिघेणाहतस्तेन मूर्छामाप जनार्दनः।३९
मूर्छितं तमुवाहाशु जगाम गरुडो रणात्। परावृत्तै जगन्नाथे देवा इन्द्रपुरोगमाः।४०
भयं प्रापुः सदुःखर्ताश्चुक्रुशुश्च'रणाजिरे। क्रंदमानान्सुरान्वीज्य शङ्करः शूलभृत्तदा।४१
महिषं तरसाऽभ्येत्य प्राहरद्रोषसंयुतः। सोऽपिशक्तिंमुमोचाथ शङ्करस्योरसिस्फुटम्।४२
जगर्ज स च दुष्टात्मा वञ्चयित्वात्रिशूलकम्। शङ्करोऽपि तदा पीडां न प्रापोरसि ताडितः।४३
तं जघान त्रिशूलेन कोपादरुणलोचनः। संलग्नं शंकरं दृष्ट्वा महिषेण दुरात्मना।४४
आजगाम हरिस्तावत्त्यक्त्वामूर्छाप्रहारजाम्। महिषस्तुतदावीक्ष्यसम्प्राप्तौ हरिशङ्करौ।४५
युद्धकामौ महावीर्यौ चक्रशूलधरौ वरौ। कोपयुक्तो बभूवासौ दृष्ट्वा तौ समुपागतौ।४६
जगामसम्मुखस्तावत्संग्रामार्थंमहाभुजः। माहिषंवपुरास्थाय धुन्वन्पुच्छंसमुत्कटम्।४७
चकार भैरवं नादं त्रासयन्नमरानपि। धुन्वञ्छृङ्गे महाकायो दारुणो जलदो यथा।४८
शृङ्गाभ्यां पार्वताञ्छृगांश्चिक्षेप भृशमुत्कटान्। दृष्ट्वा तौ तु महावीर्यौ दानवं देवसत्तमौ।४९
चक्रतुर्बाणवृष्टिं च दानवोपरिदारुणाम्। कुर्वाणौ बाणवृष्टिं तौ दृष्ट्वा हरिहरौहरिः।५०
चिच्छेप गिरि शृङ्गन्तु पुच्छेनावृत्य दारुणम्। आपतन्तं गिरिं वीक्ष्य भगवान्सात्वतांपतिः।५१
विशिखैः शतधाचक्रे चक्रेणाशुजघानतम्। हरिश्चक्राहतः संख्ये मूर्छामापस दैत्यराट्।५२
उत्तस्थौ च क्षणान्नूनं मानुषं वपुरास्थितः। गदापाणिर्महाघोरो दानवःपर्वतोपमः।५३
मेघनादं ननादोच्चैर्भीषयन्नमरानपि। तच्छ्रुत्वा भगवान्विष्णुःपांचजन्यंसमुज्ज्वलम्।५४
पूरयामास तरसा शब्दं कर्तुं खरस्वरम्। तेन शब्देन शङ्खस्य भयत्रस्ताश्च दानवाः।५५
बभूवुर्मुदिता देवा ऋषयश्च तपोधनाः।।५६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां पञ्चमस्कन्धे महिषासुरइन्द्रादिदेवैःसहयुद्धवर्णनंनाम षष्ठोऽध्यायः।।६।।

* सप्तमोऽध्यायः *

पराजितदेवताशङ्करशरणगमनवर्णनम्

व्यास उवाच

असुरान्महिषो दृष्ट्वा विषण्णमनसस्तदा। त्यक्त्वा तन्माहिषं रूपं बभूव मृगराडसौ।१
कृत्वा नादं महाघोरं विस्तार्य च महासटाम्। पपातसुरसेनायां त्रासयन्नखदंशनैः।२
गरुडञ्चनखाऽऽघातैः कृत्वारुधिरविप्लुतम्। जघान च भुजेविष्णुंनखाघातेनकेसरी।३
वासुदेवोऽपि तं दृष्ट्वा चक्रमुद्यम्य वेगवान्। हन्तुकामो हरिःकाममवापाऽऽशु क्रुधाऽन्वितः।४
यावद्धयरिपुंवेगाच्चक्रेणाभिजघानतम्। तावत्सोऽतिबलःशृङ्गीशृङ्गाभ्यांन्यहनद्धरिम्।५
वासुदेवो विषाणाभ्यां ताडितोरसि विह्वलः। पलायनपरोवेगाज्जगाम भुवनंनिजम्।६

गतं दृष्ट्वा हरिं कामंशङ्करोऽपिभयान्वितः। अवध्यं तं परं मत्वा ययौ कैलासपर्वतम्।७
ब्रह्मापि च निजं धाम त्वरितःप्रययौभयात्। मघवावज्रमालंब्य तथाबाजौमहाबलः।८
वरुणः शक्तिमालम्ब्य धैर्य्यमालम्ब्य संस्थितः। यमोऽपि दण्डमादाय यत्तः समर तत्परः।९
ततो यक्षाधिपः कामं बभूव रणतत्परः। पावकः शक्तिमादाय तत्राऽभूद्युद्धमानसः।१०
नक्षत्राधिपतिः सूर्य समवेतौस्थितावुभौ। वीक्ष्य तं दानवश्रेष्ठं युद्धाय कृतनिश्चयौ।११
एतस्मिन्नन्तरेक्रुद्धं दैत्यसैन्यं समभ्यगात्। विसृजन्बाणजालानिक्रूराहिसदृशानिच।१२
कृत्वाहि माहिषं रूपं भूपतिः संस्थितस्तदा। देवदानव योधानां निनादस्तुमुलोऽभवत्।१३
ज्याघातश्च तलाघातो मेघनादसमोऽभवत्। संग्रामे सुमहाघोरे देवदानवसेनयोः।१४
शृङ्गाभ्यां पार्वताञ्छृगांश्चिक्षेप च महाबलः। जघान सुरसंघांश्च दानवो मदगर्वितः।१५
खुरघातैस्तथा देवान्पुच्छस्य भ्रमणेन च। स जघान रुषाऽविष्टो महिषः परमाद्भुतः।१६
ततोदेवाः स गन्धर्वा भयमाजग्मु रुद्यताः। मघवाः महिषं दृष्ट्वा पलायनपरोऽभवत्।१७
सङ्गरं सम्परित्यज्य गते शक्रे शचीपतौ। यमो धनाधिपः पाशी जग्मुः सर्वे भयाऽऽतुराः।१८
महिषोऽतिजयं मत्वा जगाम स्वगृहंततः। ऐरावतं गजं प्राप्य त्यक्तमिन्द्रेणगच्छता।१९
तथोच्चैःश्रवसं भानोः कामधेनुं पयस्विनीम्। स्वसैन्यसम्वृतस्तूर्णं स्वर्गं गन्तुं मनो दधे।२०
तरसा देवसदनं गत्वा स महिषासुरः। जग्राह सुरराज्यं वै त्यक्तं देवैर्भयाऽऽतुरैः।२१
इन्द्राऽऽसने तथा रम्ये दानवः समुपाविशत्। दानवान्स्थापयामास देवानां स्थानकेषुसः।२२
एवंवर्षशतंपूर्णं कृत्वा युद्धं सुदारुणम्। अवापैन्द्रपदं कामं दानवो मद गर्वितः।२३
निर्जरा निर्गता नाकात्तेन सर्वेऽतिपीडिताः। एवं बहूनि वर्षाणि बभ्रमुर्गिरिगह्वरे।२४
श्रान्ताः सर्वे तदा राजन्ब्रह्माणं शरणं ययुः। प्रजापतिं जगन्नाथं रजोरूपं चतुर्मुखम्।२५
पद्मासनं वेदगर्भं सेवितं मुनिभिः स्वजैः। मरीचिप्रमुखैः शांतैर्वेदवेदाङ्गपारगैः।२६
किन्नरैः सिद्धगन्धर्वैश्चारणोरगपन्नगैः। तुष्टुवुर्भयभीतास्ते देवदेवं जगद्गुरुम्।२७

देवा ऊचुः

धातः किमे तदखिलाऽऽर्तिहरांबुजन्मजन्माऽभिवीक्ष्य न दयां कुरुषेसुरान्यत्।
सम्पीडितानृणजितानसुराधिपेन स्थानच्युतान्गिरिगुहाकृत सन्निवासम्।२८
पुत्रान्पिता किमपराधशतैः समेतान्संत्यज्य लोभरहितः कुरुतेऽतिदुःस्थान्।
यस्त्वं सुरांस्तव पदाम्बुजभक्ति युक्तान्दैत्यार्दितांश्च कृपणान्यदुपेक्षसेऽद्य।२९
अमरभुवनराज्यं तेन भुक्तं नितान्तं मखहविरपि योग्यं ब्राह्मणैराददाति।
सुरतरुवरपुष्पं सेवतेऽसौ दुरात्मा जलनिधिनिधिभूतां गामसौ सेवते ताम्।३०
किं वा गृणीमः सुरकार्यमद्भुतं जानासि देवेश सुरारिचेष्टितम्।
ज्ञानेन सर्वं त्वमशेषकार्यवित्तस्मात्प्रभो ते प्रणताः स्म पादयोः।।३१।।
यत्राऽपि कुत्राऽपि गतान्सुरानसौ नानाचरित्रैः खलुपापमानसः।
पीडां करोत्येव स दुष्टचेष्टितस्त्राताऽसि देवेश विधेहि शंविभो।।३२।।
नोचेद्वयं दावमहाग्निपीडिताः कं शांतिकर्तारमनन्ततेजसम्।
यामः प्रजेशं शरणं सुरेष्टं धातारमाद्यं परिमुच्य कं शिवम्।।३३।।

व्यास उवाच

इति स्तुत्वासुराःसर्वेप्रणेमुस्तं प्रजापतिम्। बद्धाञ्जलिपुटाःसर्वे विषण्णवदनाभृशम्।३४

तांस्तथापीडितान्दृष्ट्वा तदा लोकपितामहः। उवाचश्लक्ष्णयावाचा सुखंसञ्जनयन्निव।३५

ब्रह्मोवाच

किं करोमि सुराः कामंदानवोवरदर्पितः। स्त्रीवध्योऽसौनपुंवध्योविधेयंतत्रकिं पुनः।३६
व्रजामोऽद्य सुराः सर्वे कैलासं पर्वतोत्तमम्। शङ्करं पुरतः कृत्वा सर्वकार्यविशारदम्।३७
ततो व्रजाम वैकुण्ठं यत्र देवो जनार्दनः। मिलित्वा देवकार्यञ्च विमृशामो विशेषतः।३८
इत्युक्त्वा हंसमारुह्य ब्रह्मा कार्यसमुच्चये। देवांश्च पृष्ठतः कृत्वा कैलासाभिमुखोययौ।३९
तावच्छिवोऽपि तरसा ज्ञात्वा ध्यानेनपद्मजम्। आगच्छन्तं सुरैः सार्धं निर्गतः स्वगृहाद्बहिः।४०
दृष्ट्वा परस्परंतौ तु कृताभिवादनौभृशम्। प्रणतौ च सुरैः सर्वैः सन्तुष्टौसम्बभूवतुः।४१
आसनानि पृथग्दत्त्वा देवेभ्योगिरिजापतिः। उपविष्टेषु तेष्वेव निषसादासनेस्वके।४२
कृत्वा तु कुशलप्रश्नं ब्रह्माणंवृषभध्वजः। पप्रच्छ कारणं देवान्कैलासाऽऽगमनेविभुः।४३

शिव उवाच

किमत्राऽऽगमनं ब्रह्मन्कृतं देवैः सवासवैः। भवता च महाभाग ब्रूहितत्कारणं किल।४४

ब्रह्मोवाच

महिषेण सुरेशानपीडिताःस्वर्निवासिनः। भ्रमन्ति गिरिदुर्गेषु भयत्रस्ताःसवासवाः।४५
यज्ञभुग्महिषो जातस्तथाऽन्ये सुरशत्रवः। पीडितालोकपालाश्च त्वामद्यशरणंगताः।४६
मया ते भवनं शम्भो प्रापिताःकार्यगौरवात्। यद्युक्तंतद्विधत्स्वाद्य सुरकार्यसुरेश्वर।४७
त्वयि भारोऽस्ति सर्वेषां देवानां भूतभावन!।

व्यास उवाच

इति तद्वचनं श्रुत्वा शङ्करः प्रहसन्निव।।४८।।
वचनं श्लक्ष्णया वाचा प्रोवाच पद्मजं प्रति।

शिव उवाच

भवतैव कृतं कार्यं वरदानात्पुरा विभो।।४९।।
अनर्थदञ्च देवानां किं कर्तव्यमतः परम्। ईदृशो बलवाञ्छूरः सर्वदेवभयप्रदः।५०
का समर्था वरा नारी तं हन्तुं मददर्पितम्। न मे भार्यानते भार्यासंग्रामं गन्तुमर्हति।५१
गत्वैव ते महाभागे युयुधाते कथं पुनः। इन्द्राणीचमहाभाग न युद्धकुशलाऽस्ति हि।५२
काऽन्याहन्तुंसमर्थाऽस्ति तं पापंमददर्पितम्। ममेदं मतमद्यैव गत्वा देवं जनार्दनम्।५३
स्तुत्वातंदेवकार्याय प्रेरयामःसुसत्वरम्। सोऽतिबुद्धिमतांश्रेष्ठोविष्णुःसर्वार्थसाधने।५४
मिलित्वावासुदेवं वै कर्तव्यं कार्यचिन्तनम्। प्रपञ्चेन च बुद्ध्या स सम्विधास्यति साधनम्।५५

व्यास उवाच

इति रुद्रवचः श्रुत्वा ब्रह्माद्याः सुरसत्तमाः। उत्थितास्ते तथेत्युक्त्वा शिवेन सह सत्वराः।५६
स्वकीयैर्वाहनैःसर्वे ययुर्विष्णुपुरम्प्रति। मुद्रिताः शकुनान्दृष्ट्वाकार्यसिद्धिकराञ्छुभान्।५७
ववुर्वाताः शुभाःशांताःसुगन्धाः शुभशंसिनः। पक्षिणश्च शिवा वाचस्तत्रोचुः पथि सर्वशः।५८
निर्मलञ्चाऽभवद्व्योम दिशश्च विमलास्तथा। गमने तत्र देवानांसर्वंशुभमिवाभवत्।५९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां पञ्चमस्कन्धे पराजितदेवताशङ्करशरणगमनवर्णनंनाम सप्तमोऽध्यायः।।७।।

--०--

* अष्टमोऽध्यायः *

विष्णुपरामर्शेनदेवानांशक्त्युपासनंतथाशक्तिप्रादुर्भाववर्णनम्

व्यास उवाच

तरसा तेऽथ सम्प्राप्यवैकुण्ठंविष्णुवल्लभम्। ददृशुःसर्वशोभाढ्यं दिव्यगृहविराजितम्।१
सरोवापीसरिद्भिश्च संयुतं सुखदं शुभम्। हंससारसचक्राह्वैः कूजद्भिश्च विराजितम्।२
चम्पकाऽशोककल्हारमन्दारबकुलावृत्तैः। मल्लिकातिलकाम्रातयुतैः कुरबकादिभिः।३
कोकिलारावसन्नादैः शिखण्डैर्नृत्यरञ्जितैः। भ्रमरारावरम्यैश्चदिव्यैः रुपवनैर्युतम्।४
सुनन्दनन्दनाद्यैश्च पार्षदैर्भक्तितत्परैः। संस्तुवद्भिर्युतं भक्तैरनन्यभववृत्तिभिः।५
प्रासादै रत्नखचितैः काञ्चनैश्चित्रमंडितैः। अभ्रंलिहैर्विराजद्भिः संयुतं शुभसद्मकैः।६
गायद्भिर्देवगन्धर्वैर्नृत्यद्भिरप्सरोगणैः। रञ्जितं किन्नरैः शश्वद्रक्तकण्ठैर्मनोहरैः।७
मुनिभिश्च तथा शान्तैर्वेदपाठकृताऽऽदरैः। स्तुवद्भिःश्रुतिसूक्तैश्च मण्डितं सदनं हरेः।८
ते च विष्णुगृहम्प्राप्य द्वारपालौ शुभाऽऽकृती। वीक्ष्योचुर्जय विजयौ हेमयष्टिधरौस्थितौ।९
गत्वैकोऽप्युभयोर्मध्ये निवेदयतु संगतान्। द्वारस्थान्ब्रह्मरुद्रादीन्विष्णुदर्शनलालसान्।१०

व्यास उवाच

विजयस्तद्वचः श्रुत्वा गत्वाऽथ विष्णुसन्निधौ।
सर्वान्समागतान्देवान्प्रणम्योवाचसत्वरः ॥११॥

विजय उवाच

देवदेव महाराज रमाकान्त सुरारिहन्। समागताः सुराः सर्वेद्वारितिष्ठन्तिवैविभो।१२
ब्रह्मा रुद्रस्तथेन्द्रश्च वरुणः पावकोयमः। स्तुवन्ति वेदवाक्यैस्त्वाममरादर्शनार्थिनः।१३

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं विष्णुर्विजयस्य रमापतिः। निर्जगामगृहात्तूर्णंसुरान्समधिकोत्सव ।१४
गत्वा वीक्ष्य हरिर्देवान्द्वारस्थाञ्छ्रमकर्शितान्। प्रीतिप्रवणया दृष्ट्या प्रीणयामास दुःखितान्।१५
प्रणेमुस्ते सुराः सर्वे देवदेवं जनार्दनम्। तुष्टुवुश्च सुरारिघ्नं वाग्भिर्वेदविनिश्चितम्।१६

देवा ऊचुः

देवदेव जगन्नाथ सृष्टिस्थित्यन्तकारक। दयासिन्धोमहाराजत्राहि नः शरणागतान्।१७

विष्णुरुवाच

विशन्तु निर्जराः सर्वेकुशलं कथयन्तुवः। आसनेषु किमर्थं वै मिलिताःसमुपागता।१८
चिन्तातुराःकथंजाताविषण्णादीनमानसाः। ब्रह्मरुद्रेणसंहिताःकार्यं प्रब्रूतसत्वरम्।१९

देवा ऊचुः

महिषेण महाराज पीडिताः पापकर्मणा। असाध्येनाऽतिदुष्टेन वरदृप्तेन पापिना।२०
यज्ञभागानसौ भुंक्ते ब्राह्मणैःप्रतिपादितान्। अमरा गिरिदुर्गेषु भ्रमन्तिच भयातुरा।२१
वरदानेन धातुः स दुर्जयो मधुसूदन। तस्मात्त्वांशरणंप्राप्ता ज्ञात्वा तत्कार्यगौरवम्।२२
समर्थोऽसि समुद्धर्तुं दैत्यमायाविशारद। कुरु कृष्णवधोपायं तस्य दानवमर्दन।२३
धात्रा तस्मै वरो दत्तो ह्यवध्योऽसि नरैःकिल। का स्त्री त्वेवंविधा बाला या हन्यात्तं शठं रणे।२४
उमामावाशचीविद्या का समर्थाऽस्य घातने। महिषस्यातिदुष्टस्य वरदानबलादपि।२५
विचिन्त्यबुद्ध्या यत्सर्वंमरणस्याऽस्यकारणम्। कुरुकार्यञ्चदेवानांभक्तवत्सलभूधर ।२६

व्यास उवाच

श्रुत्वा तद्वचनंविष्णुस्तानुवाच हसन्निव। युद्धंकृतंपुराऽस्माभिस्तथाऽपिनमृतोह्यसौ।२७
अद्य सर्वसुराणां वै तेजोभी रूप सम्पदा। उत्पन्ना चेद्वरारोहासाहन्यात्तंरणेबलात्।२८
हयारिं वरदृप्तं च माया शतविशारदम्। हन्तुं योग्या भवेन्नारी शक्त्यंशैर्निर्मिताहिनः।२९
प्रार्थयन्तु च तेजोंऽशान्स्त्रियोऽस्माकं तथा पुनः। उत्पन्नैस्तैश्च तेजोंऽशैस्तेजोराशिर्भवेद्यथा।३०
आयुधानि वयं दद्मः सर्वेरुद्र पुरागमाः। तस्यैसर्वाणिदिव्यानित्रिशूलादीनियानिच।३१
सर्वाऽऽयुधधरा नारी सर्वतेजःसमन्विता। हनिष्यति दुरात्मानं तं पापंमदगर्वितम्।३२

व्यास उवाच

इत्युक्तवति देवेशे! ब्रह्मणो वदनात्ततः। स्वयमेवोद् बभौ तेजोराशिश्चातीव दुःसहः।३३
रक्तवर्णं शुभाकारं पद्मराग मणिप्रभम्। किञ्चिच्छीतं तथा चोष्णं मरीचिजालमण्डितम्।३४
निःसृतं हरिणा दृष्टं हरेण च महात्मना। विस्मितौतौ महाराज बभूवतुरुरुक्रमौ।३५
शङ्करस्य शरीरात्तु निःसृतं महदद्भुतम्। रौप्यवर्णमभूत्तीव्रं दुर्दर्शं दारुणं महत्।३६
भयङ्करं च दैत्यानां देवानां विस्मयप्रदम्। घोररूपं गिरिप्रख्यं तमोगुणमिवापरम्।३७
ततो विष्णुशरीरात्तु तेजोराशिमिवापरम्। नीलं सत्त्वगुणोपेतं प्रादुरास महाद्युति।३८
ततश्चेन्द्रशरीरात्तु चित्ररूपं दुरासदम्। आविरासीत्सुसंवृत्तं तेजः सर्वगुणात्मकम्।३९
कुवेरयमवह्नीनां शरीरेभ्यः समन्ततः। निश्चक्राम महत्तेजो वरुणस्य तथैव च।४०
अन्येषां चैव देवानां शरीरेभ्योऽति भास्वरम्। निर्गतं तन्महातेजोराशिरासीन्महोज्ज्वलः।४१
तं दृष्ट्वाः विस्मृताः सर्वे देवा विष्णुपुरोगमाः। तेजोराशिं महादिव्यं हिमाचलमिवापरम्।४२
पश्यतां तत्र देवानां तेजः पुञ्ज समुद्भवा। बभूवाऽतिवरा नारी सुन्दरी विस्मयप्रदा।४३
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः सर्वदेवशरीरजा। अष्टादशभुजा रम्यात्रिवर्णाविश्वमोहिनी।४४
श्वेतानना कृष्णनेत्रा संरक्ताधरपल्लवा। ताम्रपाणितला कान्ता दिव्यभूषणभूषिता।४५
अष्टादशभुजा देवी सहस्रभुजमण्डिता। सम्भूताऽसुरनाशाय तेजोराशिसमुद्भवा।४६

जनमेजय उवाच

कृष्ण देव महाभाग सर्वज्ञ मुनिसत्तम। विस्तरंब्रूहि तस्यास्त्वं शरीरस्य समुद्भवम्।४७
एकीभूतं च सर्वेषांतेजःकिंवापृथक्स्थितम्। अङ्गानिचैवतस्यास्तुसर्वतेजोमयानिवा।४८
भिन्नभागविभागेन जातान्यङ्गानि यानि तु। मुखनासाऽक्षिभेदेन सर्वत्रैकभवानिच।४९
ब्रूहि तद्विस्तरं व्यास शरीराङ्गसमुद्भवम्। बभूवयस्यदेवस्य तेजसोऽङ्गं यदद्भुतम्।५०
आयुधाऽऽभरणादीनि दत्तानियैर्यथा यथा। तत्सर्वं श्रोतुकामोऽस्मि त्वन्मुखाम्बुजनिर्गतम्।५१
नहि तृप्याम्यहं ब्रह्मन्सुधामयरसं पिवन्। चरितं च महालक्ष्म्यात्वन्मुखाम्भोजनिःसृतम्।५२

सूत उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा राज्ञः सत्यवतीसुतः। उवाचमधुरंवाक्यंप्रीणयन्निवभूपतिम् ।५३

व्यास उवाच

शृणु राजन्महाभाग! विस्तरेण ब्रवीमि ते। यथामति कुरुश्रेष्ठ तस्या देहसमुद्भवम्।५४
न ब्रह्मा न हरिः साक्षान्न रुद्रो न च वासवः। याथातथ्येन तद्रूपं वक्तुमीशः कदाचन।५५
कथं जानाम्यहं देव्या यद्रूपं यादृशं यतः। वाचारम्भणमात्रं तदुत्पन्नेतिब्रवीमि यत्।५६
सा नित्यासर्वदैवास्तेदेवकार्यार्थ सिद्धये। नानारूपा त्वेकरूपाजायतेकार्यगौरवात्।५७
यथा नटोरङ्गगतो नानारूपो भवत्यसौ। एकरूपस्वभावोऽपि लोकरञ्जन हेतवे।५८

तथैषा देवकार्यार्थमरूपाऽपि स्वलीलया। करोति बहुरूपाणि निर्गुणासगुणानि च ।५९
कार्यकर्माऽनुसारेण नामानि प्रभवन्ति हि। धात्वर्थगुणयुक्तानिगौणानिसुबहून्यपि ।६०
तद्वै बुद्ध्यनुसारेण प्रब्रवीमि नराधिप। यथा तेजः समुद्भूतं रूपंतस्या मनोहरम् ।६१
शङ्करस्य च यत्तेजस्तेन तन्मुखपङ्कजम्। श्वेतवर्णं शुभाकारमजायत महत्तरम् ।६२
केशास्तस्यास्तथा स्निग्धा याम्येन तेजसाऽभवन्। वकाग्राश्चाऽतिदीर्घाश्च मेघवर्णा मनोहराः ।६३
नयनत्रितयं तस्या जज्ञे पावकतेजसा। कृष्णं रक्तं तथा श्वेतं वर्णत्रयविभूषितम् ।६४
वक्रे स्निग्धेकृष्णवर्णे सन्ध्ययोस्तेजसाभ्रुवौ। जातेदेव्याः सुतेजस्केकामस्यधनुषीवते ।६५
वायोश्च तेजसा शस्तौ श्रवणौ सम्बभूवतुः। नाऽतिदीर्घौ नाऽतिह्रस्वौ दोलाविव मनोभुवः ।६६
तिलपुष्पसमाकारा नासिका सुमनोहरा। सञ्जाता स्निग्धवर्णा वै धनदस्यचतेजसा ।६७

दन्ताः शिखरिणः श्लक्ष्णाः कुन्दाग्रसदृशाः समाः ।
सञ्जाताः सुप्रभा राजन्प्राजापत्येन तेजसा ।।६८।।

अधरश्चातिरक्तोऽस्याःसञ्जातोऽरुणतेजसा। उत्तरोष्ठस्तथा रम्यःकार्तिकेयस्यतेजसा ।६९
अष्टादशभुजाकाराबाहवो विष्णुतेजसा। वसूनांतेजसाऽङ्गुल्यो रक्तवर्णास्तथाऽभवन् ।७०
सौम्येन तेजसाजातं स्तनयोर्युग्ममुत्तमम्। ऐन्द्रेणास्यास्तथामध्यं जातंत्रिवलिसंयुतम् ।७१
जङ्घोरू वरुणस्याऽथ तेजसाम्बभूवतुः। नितम्बःसतुः साञ्जातोविपुलस्तेजसाभुवः ।७२
एवं नारी शुभाकारासुरूपासुस्वराभृशम्। समुत्पन्नातथाराजं स्तेजोराशि समुद्भवा ।७३
तां दृष्ट्वा सुष्ठुसर्वाङ्गीं सुदतीं चारुलोचनाम्। मुदंप्रापुः सुराःसर्वे महिषेणप्रपीडिताः ।७४
विष्णुस्त्वाहसुरान्सर्वान्भूषणान्यायुधानि च। प्रयच्छन्तु शुभान्यस्यै देवाः सर्वाणि साम्प्रतम् ।७५
स्वायुधेभ्यःसमुत्पाद्यतेजोयुक्तानिसत्वराः। समर्पयन्तुसर्वेऽद्यदेव्यैनानाऽऽयुधानिवै ।७६

इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपञ्चमस्कन्धे स्वरूपोद्भववर्णनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ।।८।।

* नवमोऽध्यायः *

महिषद्वारागुणसौन्दर्यसम्पन्नांदेवीमानेतुंमन्त्रीप्रेषणवर्णनम्

व्यास उवाच

देवाविष्णुवचःश्रुत्वासर्वेप्रमुदितास्तदा । ददुश्चभूषणान्याऽऽशुवस्त्राणिस्वायुधानिच ।१
क्षीरोदश्चाम्बरेदिव्येरक्ते सूक्ष्मे तथाऽजरे। निर्मलचतथाहारंप्रीतस्तस्यै सुमण्डितम् ।२
ददौ चूडामणिंदिव्यं सूर्यकोटिसमप्रभम्। कुण्डले च तथा शुभ्रे कटकानि भुजेषु वै ।३
केयूरान्कंकणान्दिव्यान्नानारत्नविराजितान्। ददौ तस्यै विश्वकर्मा प्रसन्नेन्द्रियमानसः ।४
नूपुरौ सुस्वरौ कान्तौ निर्मलौ रत्नभूषितौ। ददौसूर्यप्रतीकाशौ त्वष्टातस्यैसुपादयोः ।५
तथा ग्रैवेयकं रम्यं ददौ तस्यै महार्णवः। अङ्गुलीयकरत्नानि तेजोवन्ति च सर्वशः ।६
अम्लानपङ्कजांमालां गन्धाढ्यां भ्रमराऽनुगाम्। तथैव वैजयन्तीञ्च वरुणः सम्प्रयच्छत ।७
हिमवानथ सन्तुष्टो रत्नानि विविधानि च। ददौ च वाहनंसिंहं कनकाभं मनोहरम् ।८
भूषणैर्भूषिता दिव्यः सा रराज वरा शुभा। सिंहारूढा वरारोहा सर्वलक्षणसंयुता ।९
विष्णुश्चक्रात्समुत्पाद्यददावस्यैरथांगकम्। सहस्रारं सुदीप्तं च देवारिशिरसांहरम् ।१०
स्वत्रिशूलात्समुत्पाद्य शंकरःशूलमुत्तमम्। ददौदेव्यै सुरारीणां कृन्तनं भयनाशनम् ।११
वरुणश्च प्रसन्नात्मा ददौशङ्खं समुज्ज्वलम्। घोषवन्तंस्वशङ्खात्तुसमुत्पाद्य सुमङ्गलम् ।१२

हुताशनस्तथा शक्तिं शतघ्नीं सुमनोजवाम्। प्रायच्छत्त प्रसन्नात्मा तस्यैदैत्यविनाशिनीम्।१३
इषुधिं बाणपूर्णञ्च चापं चाद्भुतदर्शनम्। मारुतो दत्तवांस्तस्यै दुराकर्षं खरस्वरम्।१४
स्ववज्राद्वज्रमुत्पाद्यददाविंद्रोऽतिदारुणम्। घण्टामैरावतात्तूर्णंसुशब्दांचातिसुन्दराम्।१५
ददौ दण्डं यमः कामं कालदण्डसमुद्भवम्। येनान्तं सर्वभूतानामकरोत्कालआगते।१६
ब्रह्माकमण्डलुं दिव्यं गङ्गावारि प्रपूरितम्। ददावस्यै मुदायुक्तो वरुणःपाशमेव च।१७
कालः खड्गं तथा चर्म प्रायच्छत्तुनराधिप। परशुं विश्वकर्मा च तीक्ष्णमस्यैददावथ।१८
धनदस्तु सुरापूर्णं पानपात्रं सुवर्णजम्। पंकजं वरुणश्चादाद्देव्यै दिव्यं मनोहरम्।१६
गदां कौमोदकींत्वष्टा घण्टाशतनिनादिनीम्। अदात्तस्यै प्रसन्नात्मा सुरशत्रुविनाशिनीम्।२०
अस्त्राण्यनेकरूपाणितथाऽभेद्यंचदंशनम्। ददौत्वष्टा जगन्मात्रे निजरश्मीन्दिवाकरः।२१
सायुधांभूषणैर्युक्तां दृष्ट्वातेविस्मयंगताः। तुष्टवुस्तांसुरा देवीं त्रैलोक्यमोहनींशिवाम्।२२

देवाऊचुः

नमः शिवायै कल्याण्यै शांत्यैपुष्ट्यै नमोनमः। भगवत्यै नमोदेव्यैरुद्राण्यैसततंनमः।२३
कालरात्र्यै तथाऽम्बाया इन्द्राण्यै ते नमोनमः। सिद्ध्यैबुद्ध्यै तथा वृद्ध्यै वैष्णव्यै ते नमो नमः।२४

पृथिव्यां या स्थिता पृथ्व्या न ज्ञाता पृथिवीञ्च या।
अन्तः स्थिता यमयति वन्दे तामीश्वरीं पराम्।।२५।।

मायायांयास्थिताज्ञातामाययानचतामजाम्। अन्तस्थिताप्रेरयतिप्रेरयित्रींनुमःशिवाम्।२६
कल्याणंकुरुभोमातस्त्राहिनःशत्रुतापितान्। जहिपापंहयारिंत्वंतेजसास्वेन मोहितम्।२७
खलं मायाविनं घोरं स्त्रीवध्यं वरदर्पितम्। दुःखदं सर्वदेवानां नानारूपधरं शठम्।२८
त्वमेका सर्वदेवानां शरणं भक्तवत्सले। पीडितान्दानवेनाद्य त्राहिदेविनमोऽस्तुते।२६

व्यास उवाच

एवं स्तुता तदा देवी सुरैःसर्वसुखप्रदा। तानुवाच महादेवी स्मितपूर्वं शुभं वचः।३०

देव्युवाच

भयं त्यजन्तु गीर्वाणा महिषान्मंदचेतसः। हनिष्यामि रणेऽद्यैव वरदृप्तंविमोहितम्।३१

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा सा सुरान्देवी जहासातीवसुस्वरम्। चित्रमेतच्च संसारेभ्रममोहयुतं जगत्।३२
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्याःसेन्द्राश्चान्येसुरास्तथा। कम्पयुक्ताभयत्रस्तावर्तन्तेमहिषात्किल।३३
अहो दैवबलं दुर्जयं सुरसत्तमाः। कालःकर्ताऽस्तिदुःखानां सुखानांप्रभुरीश्वरः।३४
सृष्टिपालनसंहारे समर्था अपि ते यदा। मुह्यन्ति क्लेशसन्तप्ता महिषेण प्रपीडिताः।३५
इतिकृत्वा स्मितं देवीसाट्टहासंचकारह। उच्चैः शब्दं महाघोरं दानवानां भयप्रदम्।३६
चकम्पे वसुधा तत्रश्रुत्वा तच्छब्दमद्भुतम्। चेलुश्चपर्वताःसर्वेचुक्षोभाब्धिश्चवीर्यवान।३७
मेरुश्चचाल शब्देन दिशः सर्वाःप्रपूरिताः। भयंजग्मुस्तदाश्रुत्वा दानवास्तंस्वनंमहत्।३८
जयपाहीति देवास्तामूचुः परमहर्षिताः। महिषोऽपि स्वनं श्रुत्वा चुकोपमदगर्वितः।३६
किमेतदिति तान्दैत्यान्पप्रच्छस्वनशङ्कितः। गच्छन्तुत्वरितादूता ज्ञातुंशब्दसमुद्भवम्।४०
कृतः केनायमत्युग्रः शब्दःकर्णव्यथाकरः। देवोवादानवोवाऽपियोभवेत्स्वन कारकः।४१
गृहीत्वा तं दुरात्मानं मत्समीपंनयन्त्विह। हरिष्यामिदुराचारंगर्जन्तं स्मयदुर्मदम्।४२
क्षीणायुष्यं मन्दमतिं नयामि यमसादनम्। पराजिताःसुराः कामं गर्जन्ति भयातुराः।४३

नासुरा मम वश्यास्ते कस्येदं मूढचेष्टितम्। त्वरिता मामुपायान्तु ज्ञात्वा शब्दस्य कारणम्।४४
अहं गत्वा हनिष्यामि तं पापं वितथश्रमम्।
इत्युक्तास्तेन ते दूता देवीं सर्वाङ्गसुन्दरीम्।।४५।।
अष्टादशभुजां दिव्यां सर्वाभरणभूषिताम्। सर्वलक्षणसम्पन्नां वरायुधधरां शुभाम्।४६
दधतीं चषकं हस्ते पिबन्तीञ्चमुहुर्मधु। संवीक्ष्यभयभीतास्तेजग्मुस्त्रस्तासुशंकिताः।४७
सकाशे महिषस्याऽऽशु तमूचुः स्वनकारणम्।

दूता ऊचुः

देवी दैत्येश्वर प्रौढा दृश्यते काचिदङ्गना।।४८।।
सर्वाङ्गभूषणानारी सर्वरत्नोपशोभिता। न मानुषी नासुरी सा दिव्यरूपा मनोहरा।४९
सिंहारूढाऽऽयुधधरा चाष्टादशकरा वरा। सा नादं कुरुते नारी लक्ष्यते मदगर्विता।५०
सुरापानरताका जानीमोनसभर्तृका। अन्तरिक्षस्थितादेवास्तांस्तुवन्तिमुदान्विताः।५१
जयेतिपाहिनश्चेति जहिशत्रमिति प्रभो। न जानेका वरारोहा कस्य वा सा परिग्रहः।५२
किमर्थमागता चात्र किं चिकीर्षति सुन्दरी। द्रष्टुं नैव समर्थाः स्मस्तत्तेजः परिधर्षिताः।५३
शृङ्गारवीरहासाढ्या रौद्राद्भुतरसान्विता। दृष्ट्वैवैवंविधां नारीमसंभाष्य समागताः।५४
वयं त्वदाज्ञया राजन्किं कर्तव्यमतः परम्।

महिष उवाच

गच्छ वीर मयाऽढदिष्टो मन्त्रिश्रेष्ठ बलान्वितः।।५५।।
सामादिभिरुपायैस्त्वं समानय शुभाननाम्।
नायाति यदि सा नारी त्रिभिः सामादिभिस्त्विह।।५६।।
अहत्वा तां वरारोहां त्वमानय ममान्तिकम्। करोमि पट्टमहिषीं तां मरालभ्रवंमुदा।५७
प्रीतियुक्ता समायाति यदिसा मृगलोचना। रसभङ्गोयथानस्यात्तथाकुरुममेप्सितम्।५८
श्रवणान्मोहितोऽस्म्यद्य तस्या रूपस्य सम्पदा।

व्यास उवाच

महिषस्य वचः श्रुत्वा पेशलं मन्त्रिसत्तमः।।५९।।
जगाम तरसा कामं गजाश्वरथसंयुतः। गत्वा दूरतरं स्थित्वातामुवाच मनस्विनीम्।६०
विनयावनतः श्लक्ष्णं मन्त्री मधुरया गिरा।

प्रधान उवाच

काऽसि त्वं मधुरालापे किमत्रागमनं कृतम्।।६१।।
पृच्छति त्वां महाभागे मन्मुखेन मम प्रभुः। स जेता सर्वदेवानामवध्यस्तु नरैःकिल।६२
ब्रह्मणो वरदानेन गर्वितश्चारुलोचने। दैत्येश्वरोऽसौ बलवान्कामरूपधरः सदा।६३
श्रुत्वा तां समुपायातां चारुवेषां मनोहराम्। द्रष्टुमिच्छति राजा मे महिषो नाम पार्थिवः।६४
मानुषं रूपमादाय त्वत्समीपं समेष्यति। यथा रुच्येत चार्वङ्गि तथा मन्यामहेवयम्।६५
तर्ह्येहि मृगशावाक्षि समीपं तस्य धीमतः। नोचेदिहानयाम्येनं राजानं भक्तितत्परम्।६६
तथा करोमिदेवेशि यथा ते मनसेप्सितम्। वशगोऽसौ तवात्यर्थं रूपसंश्रवणात्तव।६७
करभोरु वदाऽऽशु त्वं संविधेयं मया तथा।।६८।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे महिषमन्त्रिणादेवीवार्त्तावर्णनंनाम नवमोऽध्यायः।।९।।

---

* दशमोऽध्यायः *

मन्त्रीद्वारादेव्यासहविवाहप्रस्ताववर्णनम्

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रहस्य प्रमदोत्तमा। तमुवाच महाराज मेघगम्भीरया गिरा।१

देव्युवाच

मन्त्रिवर्यसुराणांवैजननींविद्धिमांकिल ।महालक्ष्मीमितिख्यातांसर्वदैत्यनिषूदिनीम्।२
प्रार्थिताऽहं सुरैः सर्वैर्महिषस्य वधाय च। पीडितैर्दानवेन्द्रेण यज्ञभागबहिष्कृतैः।३
तस्मादिहागताऽस्म्यद्य तद्वधार्थं कृतोद्यमा। एकाकिनी न सैन्येनसंयुतामन्त्रिसत्तम।४
यत्त्वयाऽहं सामपूर्वं कृत्वास्वागतमादरात्। उक्तामधुरयावाचातेनतुष्टाऽस्मितेऽनघ।५
नोचेद्धन्मि दृशा त्वं वैकालाग्निसमयाकिल। कस्यप्रीतिकरंनस्यान्माधुर्यवचनंखलु ।६
गच्छ तं महिषं पाप वद मद्वचनादिदम्। गच्छपातालमधुनाजीवितेच्छायदस्तिते।७
नोचेत्कृतागसंदुष्ट हनिष्यामि रणाङ्गणे। मद्बाणक्षुण्णदेहस्त्वंगंतासि यमसादनम्।८
दयालुत्वं ममेदं त्वं विदित्वा गच्छ सत्वरम्। हते त्वयि सुरा मूढ स्वर्गं प्राप्स्यन्ति सत्वरम्।९
तस्माद्गच्छस्वत्यक्त्वैकोमेदिनीं च ससागराम्। पातालं तरसा मन्द यावद् बाणा न मेऽपतन्।१०
युद्धेच्छा चेन्मनसिते तर्ह्येहि त्वरितोऽसुर। वीरैर्महाबलैः सर्वैर्नयामि यमसादनम्।११
युगेयुगे महामूढ हतास्त्वत्सदृशाःकिल। असंख्यातास्तथात्वांवैहनिष्यामिरणाङ्गणे।१२
साफल्यं कुरुशस्त्राणांधारणेतु श्रमोऽन्यथा। तद्युद्ध्यस्वमयासार्धंसमरेस्मरपीडितः।१३
मा गर्वंकुरुदुष्टात्मन्यन्मेऽस्तिब्रह्मणोवरः। स्त्रीवध्यत्वेत्वयामूढपीडिताःसुरसत्तमाः।१४
कर्तव्यं वचनं धातुस्तेनाहत्वामुपागता। स्त्रीरूपमतुलंकृत्वा सत्यं हन्तुं कृतागसम्।१५
यथेच्छं गच्छ वा मूढ पातालं पन्नगावृतम्। हित्वा भूसुरसद्माऽद्य जीवितेच्छा यदस्ति ते।१६

व्यास उवाच

इत्युक्तः स ततो देव्यामन्त्रिश्रेष्ठोबलान्वितः। प्रत्युवाचनिशम्यासौवचनंहेतुगर्भितम्।१७
देवि! स्त्रीसदृशं वाक्यं ब्रूषे त्वं मदगर्विता। क्वासौ क्वत्वंकथंयुद्धमसंभाव्यमिदंकिल।१८
एकाकिनी पुनर्बालाप्रारब्धयौवनामृदुः। महिषोऽसौमहाकायोदुर्विभाव्यंहिसङ्गतम्।१९
सैन्यं बहुविधं तस्यहस्त्यश्वरथसङ्कुलम्। पदातिगणसंविद्धंनानाऽऽयुधविराजितम्।२०
कः श्रमः करिराजस्य मालतीपुष्पमर्दने। मारणे तव वामोरु महिषस्य तथा रणे।२१
यदि त्वां परुषं वाक्यंब्रवीमिस्वल्पमप्यहम्। शृङ्गारेतद्विरुद्धंहिरसभङ्गाद्विभेम्यहम् ।२२
राजाऽस्माकं सुररिपुर्वर्तते त्वयि भक्तिमान्। साममेव मया वाच्यं दानयुक्तं तथा वचः।२३
नोचेद्धन्म्यहमद्यैव बाणेन त्वां मृषावदाम्। मिथ्याभिमानचतुरां रूपयौवनगर्विताम्।२४

स्वामी मे मोहितः श्रुत्वा रूपं ते भुवनातिगम् ।
तत्प्रियार्थं प्रियं काम वक्तव्यं त्वयि यन्मया ।।२५।।

राज्यं तव धनं सर्वं दासस्तेमहिषःकिल। कुरुभावंविशालाक्षित्यक्त्वारोषमृतिप्रदम्।२६
पतामि पादयोस्तेऽहं भक्तिभावेनभामिनि। पट्टराज्ञीमहाराज्ञो भवशीघ्रं शुचिस्मिते।२७
त्रैलोक्यविभवं सर्वं प्राप्स्यसित्वमनाविलम्। सुखंसंसारजंसर्वं महिषस्यपरिग्रहात्।२८

देव्युवाच

शृणुसाचिववक्ष्यामि वाक्यानांसारमुत्तमम्। शास्त्रदृष्टेनमार्गेणचातुर्यमनुचिन्त्यच ।२९
महिषस्य प्रधानस्त्वंमयाज्ञातंधियाकिल। पशुबुद्धिस्वभावोऽसिवचनात्तवसाम्प्रतम्।३०

मन्त्रिणस्त्वादृशा यस्य स कथं बुद्धिमान्भवेत् ।
उभयोः सदृशो योगः कृतोऽयं विधिना किल ।।३१।।
यदुक्तं स्त्रीस्वभावाऽसि तद्विचारय मूढ किम् ।
पुमान्नाऽहंतत्स्वभावाऽभवंस्त्रीवेषधारिणी ।।३२।।
याचितं मरणंपूर्वंस्त्रियात्वत्प्रभुणायथा। तस्मान्मन्येऽतिमूर्खाऽसौनवीररसवित्तमः।३३
कामिन्या मरणंक्लीबरतिदं शूरदुःखदम्। प्रार्थितं प्रभुणा तेन महिषेणात्मबुद्धिना।३४
तस्मात्स्त्रीरूपमाधाय कार्यंकर्त्तु मुपागता। कथंबिभेमित्वद्वाक्यैर्धर्मशास्त्र विरोधकैः।३५
विपरीतं यदादैवं तृणंवज्रसमं भवेत्। विधिश्चेत्सुमुखः कामं कुलिशं तूलवत्तदा।३६
किं सैन्यैरायुधैःकिंवा प्रपञ्चैर्दुर्गसेवनैः। मरणंसाम्प्रतंयस्यतस्यसैन्यैस्तु किं फलम्।३७
यदाऽयं देहसम्बन्धो जीवस्यकालयोगतः। तदैवलिखितंसर्वं सुखं दुःखं तथा मृतिः।३८
यस्य येन प्रकारेण मरणं दैवनिर्मितम्। तस्य तेनैव जायेत नान्यथेति विनिश्चयः।३९
ब्रह्मादीनां यथा काले नाशोत्पत्तीविनिर्मिते। तथैवभवतःकामं किमन्येषां विचार्यते।४०
ये मृत्युधर्मिणस्तेषां वरदानेन दर्पिताः। मरिष्यामो न मन्यन्ते ते मूढा मन्दचेतसः।४१
तस्माद्गच्छ नृपं ब्रूहि वचनं मम सत्वरम्। यदाज्ञापयते भूपस्तत्कर्तव्यं त्वया किल।४२
मघवास्वर्गमाप्नोति देवाःसन्तु हविर्भुजः। यूयं प्रयात पातालं यदिजीवितुमिच्छथ।४३
अन्यथा चेन्मतिर्मन्द महिषस्य दुरात्मनः। तद्युध्यस्व मया सार्धं मरणाय कृतादरः।४४
मन्यसे सङ्गरे भग्ना देवा विष्णुपुरोगमाः। दैवं हि कारणं तत्र वरदानं प्रजापतेः।४५

व्यास उवाच

इति देव्या वचःश्रुत्वाचिन्तयामासदानवः। किं कर्तव्यं मयायुद्धं गन्तव्यंवानृपंप्रति।४६
विवाहार्थमिहाज्ञप्तो राज्ञाकामातुरेण वै। तत्कथं विरसंकृत्वा गच्छेयं नृपसन्निधौ।४७
इयं बुद्धिःसमीचीनायद्व्रजामिकलिंविना। यथाऽऽगतंतथा शीघ्रंराज्ञेसंवेदयाम्यहम्।४८
स प्रमाणं पुनः कार्ये राजा मतिमताम्बरः। करिष्यतिविचार्यैव सचिवैर्निपुणैः सह।४९
सहसा न मया युद्धं कर्तव्यमनया सह। जये पराजये वाऽपि भूपतेरप्रियं भवेत्।५०
यदि मां सुन्दरी हन्यादहं वा हन्मि तां पुनः। येन केनाप्युपायेन स कुप्येत्पार्थिवः किल।५१
तस्मात्तत्रैव गत्वाऽहं बोधयिष्यामि तं नृपम्। यथाऽद्याभिहितं देव्या यथारुचि करोतु सः।५२

व्यास उवाच

इति सञ्चिन्त्य मेधावी जगाम नृपसन्निधौ। प्रणम्यतमुवाचेदं कृताञ्जलिरमात्यजः।५३

मन्त्र्युवाच

राजन्देवीवरारोहा सिंहस्योपरि संस्थिता। अष्टादशभुजारम्या वराऽऽयुधधरापरा।५४
सामयोक्तामहाराजमहिषंभजभामिनि। महिषी भवराज्ञस्त्वं त्रैलोक्याधिपतेः प्रिया।५५
पट्टराज्ञी त्वमेवास्य भवितानात्र संशयः। सतेवाऽऽज्ञाकरोजातोवशवर्ती भविष्यति।५६
त्रैलोक्यविभवं भुक्त्वा चिरकालं वरानने। महिषं पतिमासाद्ययोषितां सुभगा भव।५७
इति मद्वचनं श्रुत्वा सा स्मयावेशमोहिता। मामुवाचविशालाक्षीस्मितपूर्वमिदंवचः।५८
महिषीगर्भसम्भूतं पशुनामधवं किल। बलिंदास्याम्यहं देव्यै सुराणां हितकाम्यया।५९
का मूढा कामिनीलोके महिषं वै पतिं भजेत्। मादृशीमन्दबुद्धेकि पशुभावं भजेदिह।६०
महिषी महिषं नाथं सशृङ्गा शृङ्गसंयुतम्। कुरुते क्रन्दमाना व नाहं तत्सदृशी शठा।६१
करिष्येऽहं मृधे युद्धं हनिष्ये त्वां सुराप्रियम्। गच्छ वा दुष्ट पातालं जीवितेच्छा यदस्ति ते।६२

परुषं तु तया वाक्यमित्युक्तं नृपमत्तया। तच्छ्रुत्वाऽहं समायातःप्रतिचिंत्यपुनःपुनः।६३
रसभङ्गंविचिन्त्यैवनयुद्धे तु मया कृतम्। आज्ञांविनातवात्यन्तं कथंकुर्यांवृथोद्यमम्।६४
साऽतीवचवलोन्मत्तावर्ततेभूपभामिनि। भवितव्यं न जानामिकिंवाभाविभविष्यति।६५
कार्येऽस्मिंस्त्वं प्रमाणंनोमन्त्रोऽतीव दुरासदः। युद्धं पलायनं श्रेयो न जानेऽहं विनिश्चयम्।६६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे मन्त्रीद्वारामहिषासुरेणदेव्यासहविवाहप्रस्तावोनामदशमोऽध्यायः।१०।

* एकादशोऽध्यायः *

विरूपाक्षादिभृत्यान्देव्यासहयुद्धादेशवर्णनम्

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा महिषो मदविह्वलः। मन्त्रिवृद्धान्समाहूय राजावचनमब्रवीत्।१

राजोवाच

मन्त्रिणःकिं च कर्तव्यंविश्रब्धंब्रूतमाचिरम्। आगतादेवविहितामायेयंशांबरीव किम्।२
कार्येऽस्मिन्निपुणा यूयमुपायेषुविचक्षणाः। सामादिषुच कर्तव्यःकोऽत्रमह्यंब्रुवन्तुच।३

मन्त्रिण ऊचुः

सत्यं सदैव वक्तव्यं प्रियञ्च नृपसत्तम। कार्यं हितकरं नूनं विचार्य विबुधैः किल।४
सत्यञ्च हितकृद्राजन्प्रियं चाहितकृद्भवेत्। यथैषधं नृणांलोके ह्यप्रियंरोगनाशनम्।५
सत्यस्य श्रोता मन्ताचदुर्लभःपृथिवीपते। वक्ताऽपि दुर्लभःकामं बहवश्चाटुभाषकाः।६
कथं ब्रूमोऽत्र नृपते विचारे गहने त्विह। शुभंवाऽप्यशुभंवाऽपिको वेत्तिभुवनत्रये।७

राजोवाच

स्वस्वमत्यनुसारेणब्रुवन्त्वद्यपृथक्पृथक्। येषांहियादृशोभावस्तच्छ्रुत्वाचिन्तयाम्यहम्।८
बहूनांमतमाज्ञाय विचार्य च पुनः पुनः। यच्छ्रेयस्तद्धि कर्तव्यं कार्यं कार्यविचक्षणैः।९

व्यास उवाच

तस्यैवं वचनं श्रुत्वा विरूपाक्षोमहाबलः। उवाच तरसा वाक्यं रञ्जयन्पृथिवीपतिम्।१०

विरूपाक्ष उवाच

राजन्नारीवराकीयं सा ब्रूते मदगर्विता। विभीषिकामात्रमिदं ज्ञातव्यं वचनं त्वया।११
को विभेतिस्त्रियोवाक्यैर्दुरुक्तैरणदुर्मदैः। अनृतं साहसं चेति जानन्नारींविचेष्टितम्।१२
जित्वात्रिभुवनं राजन्नद्य कान्ताभयं न वै। दीनत्वेऽप्ययशोनूनं वीरस्य भुवनेभवेत्।१३
तस्माद्याम्यहमेकाकी युद्धाय चण्डिकाम्प्रति। हनिष्ये तां महाराज निर्भयो भव साम्प्रतम्।१४
सेनावृतोऽहं गत्वा तां शस्त्रास्त्रैर्विविधैः किल। निषूदयामि दुर्मर्षां चण्डिकां चण्डविक्रमाम्।१५
बद्ध्वासर्पमयैःपाशैरानयिष्येतवांतिकम्। वशगा तुसदा ते स्यात्पश्यराजन्बलंमम।१६

व्यास उवाच

विरूपाक्षवचः श्रुत्वा दुर्धरोवाक्यमब्रवीत्। सत्यमुक्तंवचोराजन्विरूपाक्षेण धीमता।१७
ममापिवचनं श्लक्ष्णं श्रोतव्यंधीमतात्वया। कामातुरैषासुदतीलक्ष्यतेऽप्यनुमानतः।१८
भवत्येवंविधाकामं नायिका रूपगर्विता। भीषयित्वावरारोहात्वांवशेकर्तुमिच्छति।१९
हावोऽयंमाननीनांवैतंवेत्तिरसवित्तमः। वक्रोक्तिरेषाकामिन्याः प्रियं प्रति परायणम्।२०
वेत्ति कोऽपि नरःकामं कामशास्त्रविचक्षणः। यदुक्तं नाम बाणैस्त्वां वधिष्ये रणमूर्धनि।२१
हेतुगर्भामिदं वाक्यं ज्ञातव्यं हेतुवित्तमैः। बाणास्तुमानिनीनांवैकटाक्षाएव विश्रुताः।२२

पुष्पाञ्जलिमयाश्चान्येव्यङ्ग्यानिवचनानि च। काशक्तिरन्यबाणानांप्रेरणेत्वयिपार्थिव।२३
तादृशीनां न साशक्तिर्ब्रह्मविष्णुहरादिषु। ययोक्तंनेत्रबाणैस्त्वांहनिष्येमन्दपार्थिवम्।२४
विपरीतं परिज्ञातं तेनाऽरसविदा किल। पातयिष्यामिशय्यायांरणमय्यां पतिं तव।२५
विपरीतरतिक्रीडाभाषणं ज्ञेयमेव तत्। करिष्ये विगतप्राणं यदुक्तं वचनं तया।२६
वीर्यम्प्राणा इतिप्रोक्तं तद्विहीनं नचान्यथा। व्यङ्ग्याधिक्येनवाक्येनवरयत्युत्तमानृप।२७
तद्वै विचारतो ज्ञेयं रसग्रन्थविचक्षणैः। इतिज्ञात्वा महाराज कर्तव्यं रससंयुतम्।२८
सामदानद्वयं तस्या नान्योपायोऽस्ति भूपते!। रुष्टा वा गर्विता वाऽपि वशगा मानिनी भवेत्।२९
तादृशैर्मधुरैर्वाक्यैरानयिष्ये तवान्तिकम्। किं बहूक्तेन मे राजन्कर्तव्या वशवर्तिनी।३०
गत्वा मयाऽधुनैवेयं किङ्करीव सदैव ते।

व्यास उवाच

इत्थं निशम्य तद्वाक्यं ताम्रस्तत्त्वविचक्षणः ।।३१।।
उवाच वचनं राजन्निशामय मयोदितम्। हेतुमद्धर्मसहितं रसयुक्तं नयान्वितम्।३२
नैषाकामातुरा बाला नानुरक्ता विचक्षणा। व्यङ्ग्यानिनैववाक्यातियोक्तानितुमानद।३३
चित्रमत्र महाबाहो यदेकावरवर्णिनी। निरालम्बा समायाति चित्ररूपा मनोहरा।३४
अष्टादशभुजा नारी न श्रुता न च वीक्षिता। केनाऽपि त्रिषुलोकेषु पराक्रमवतीशुभा।३५
आयुधान्यपि तावन्ति धृतानि बलवन्ति च। विपरीतमिदंमन्ये सर्वं कालकृतं नृप।३६
स्वप्नानि दुर्निमित्तानि मया दृष्टानि वै निशि। तेनजानाम्यहंनूनं वैशसंसमुपागतम्।३७
कृष्णाम्बरधरा नारीरुदतीचगृहाङ्गणे। दृष्टास्वप्नेऽप्युषःकाले चिन्तितव्यस्तदत्ययः।३८
विकृताः पक्षिणो रात्रौ रोरुवन्ति गृहे गृहे। उत्पाता विविधाराजन्प्रभवन्तिगृहेगृहे।३९
तेनजानाम्यहं नूनं कारणं किञ्चिदेव हि। यत्त्वां प्रार्थयते बाला युद्धाय कृतनिश्चया।४०
नैषाऽस्ति मानुषी नो वा गान्धर्वी न तथाऽऽसुरी। देवैः कृतेयं ज्ञातव्या माया मोहकरी विभो!।४१
कातरत्वं न कर्तव्यं ममैतन्मतमित्यलम्। कर्तव्यं सर्वथा युद्धं यद्भाव्यं तद्भविष्यति।४२
कोवेददेवकर्तव्यं शुभंवाऽप्यशुभं तथा। अवलम्ब्यधियाधैर्यं स्थातव्यं वै विचक्षणैः।४३
जीवितं मरणं पुंसां दैवाधीनं नराधिप। कोऽपिनैवान्यथा कर्तुं समर्थो भुवनत्रये।४४

महिष उवाच

गच्छताम्र महाभाग युद्धाय कृतनिश्चयः। तामानय वरारोहांजित्वाधर्मेणमानिनीम्।४५
न भवेद्वशगा नारी संग्रामे यदि सा तव। हन्तव्या नान्यथाकामंमाननीया प्रयत्नतः।४६
वीरस्त्वमसि सर्वज्ञकामशास्त्रविशारदः। येनकेनाप्युपाये न जेतव्या वरवर्णिनी।४७
त्वरन्वीर महाबाहो सैन्येन महतावृतः। तत्र गत्वा त्वयाज्ञेया विचार्य च पुनः पुनः।४८
किमर्थमागता चेयं ज्ञातव्यंतद्धिकारणम्। कामद्वा वैरभावाद्व मायाकस्येयमित्युत।४९
आदौतन्निश्चयं कृत्वा ज्ञातव्यं तच्चिकीर्षितम्। पश्चाद्युद्धंप्रकर्तव्यंयथायोग्यंयथाबलम्।५०
कातरत्वं न कर्तव्यं निर्दयत्वं तथा न च। यादृशं हिमनस्तस्याःकर्तव्यंतादृशंत्वया।५१

व्यास उवाच

इति तद्भाषितं श्रुत्वा ताम्रःकालवशं गतः। निर्गतः सैन्यसंयुक्तः प्रणम्यमहिषं नृपम्।५२
गच्छन्मार्गे दुरात्माऽसौ शकुनान्वीक्ष्य दारुणान्। विस्मयं च भयं प्राप यममार्गप्रदर्शकान्।५३
स गत्वा तां समालोक्य देवीं सिंहोपरिस्थिताम्। स्तूयमानां सुरैः सर्वैः सर्वायुधविभूषिताम्।५४
तामुवाचविनीतः सन्वाक्यं मधुरयागिरा। सामभावंसमाश्रित्यविनयावनतःस्थितः।५५

देविदैत्येश्वरः शृङ्गी त्वद्रूपगुणमोहितः। स्पृहां करोतिमहिषस्त्वत्पाणिग्रहणाय च।५६
भावं कुरु विशालाक्षि तस्मिन्नमरदुर्जये। पतिं तं प्राप्यमृद्वङ्गिनन्दने विहराद्भुते।५७
सर्वाङ्गसुन्दरं देहं प्राप्य सर्वसुखास्पदम्। सुखं सर्वात्मनाग्राह्यंदुःखंहेयमितिस्थितिः।५८
करभोरु किमर्थंते गृहीतान्यायुधान्यलम्। पुष्पकन्दुकयोगास्तेकराः कमलकोमलाः।५९
भ्रूचापेविद्यमानेऽपिधनुषाकिंप्रयोजनम्। कटाक्षविशिखाःसन्तिकिंवाणैर्निष्प्रयोजनैः।६०
संसारे दुःखदं युद्धं न कर्तव्यं विजानता। लोभासक्ताःप्रकुर्वन्तिसंग्रामं च परस्परम्।६१
पुष्पैरपि न योद्धव्यं किं पुनर्निशितैः शरैः। भेदनं निजगात्राणां कस्यतज्जायते मुदे।६२
तस्मात्त्वमपि तन्वङ्गि प्रसादं कर्तुमर्हसि। भर्तारं भज मे नाथं देवदानवपूजितम्।६३
स तेऽत्र वाञ्छितं सर्वं करिष्यति मनोरथम्। त्वं पट्टमहिषी राज्ञः सर्वथा नाऽत्र संशयः।६४
वचनं कुरु मे देवि प्राप्स्यसेसुखमुत्तमम्। संग्रामे जयसन्देहः कष्टं प्राप्य न संशयः।६५
जानासि राजनीतित्वं यथावद्वरवर्णिनी। भुङ्क्ष्व राज्यसुखंपूर्णंवर्षाणामयुतायुतम्।६६
पुत्रस्ते भविता कान्तःसोऽपि राजा भविष्यति। यौवनेक्रीडयित्वाऽन्तेवार्धक्येसुखमाप्स्यसि।६७

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां पञ्चमस्कन्धे ताम्रकृतंदेवीम्प्रतिविस्रंसनवचनवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः॥११॥

* द्वादशोऽध्यायः *

देवीमानेतुंसमर्थोऽहमितिदुर्मुखवचनवर्णनम्

व्यास उवाच

तन्निशम्यवचस्तस्य ताम्रस्य जगदम्बिका। मेघगम्भीरया वाचा हसन्ती तमुवाच ह।१

देव्युवाच

गच्छ ताम्र! पतिं ब्रूहि मुमूर्षुंमन्दचेतसम्। महिषंचातिकामार्तं मूढं ज्ञानविवर्जितम्।२
यथा ते महिषी माता प्रौढायवसभक्षिणी। नाऽहं तथाशृङ्गवती लम्बपुच्छामहोदरी।३
न कामयेऽहं देवेशं नैव विष्णुं न शङ्करम्। धनदं वरुणं नैव ब्रह्माणं न च पावकम्।४
एतान्देवगणान्हित्वा पशुं केन गुणेन वै। वृणोम्यहं वृथा लोके गर्हणा मे भवेदिति।५
नाहं पतिंवरानारी वर्ततेमे पतिः प्रभुः। सर्वकर्ता सर्वसाक्षीह्यकर्तानिःस्पृहः स्थिरः।६
निर्गुणो निर्ममोऽनन्तो निरालम्बो निराश्रयः। सर्वज्ञः सर्वगः साक्षी पूर्णः पूर्णाशयः शिवः।७
सर्वावासक्षमः शान्तः सर्वदृक्सर्वभावनः। तं त्यक्त्वा महिषंमन्दंकथंसेवितुमुत्सहे।८
प्रबुध्य युध्यतां कामं करोमि यमवाहनम्। अथवामनुजानांवै करिष्ये जलवाहकम्।९
जीवितेच्छाऽस्ति चेत्पाप! गच्छपातालमाऽऽशु वै।
समस्तैर्दानवैर्युक्तस्त्वन्यथा हन्मि सङ्गरे॥१०॥
कामं सदृशयोर्योगः संसारे सुखदो भवेत्। अन्यथादुःखदोभूयादज्ञानाद्यदिकल्पितः।११
मूर्खस्त्वमसि यद्ब्रूषे पतिंमेभजभामिनि। क्वाहंक्वमहिषःशृङ्गीसम्बन्धः कीदृशो द्वयोः।१२
गच्छयुध्यस्ववाकामं हनिष्येऽहंसबान्धवम्। यज्ञभागंदेवलोकंनोचेत्त्यक्त्वासुखीभव।१३

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा सा तदा देवी जगर्जभृशमद्भुतम्। कल्पान्तसदृशंनादं चक्रे दैत्यभयावहम्।१४
चकम्पे वसुधाचेलुस्तेन शब्देन भूधराः। गर्भाश्च दैत्यपत्नीनां सस्रंसुर्गर्जितस्वनात्।१५
ताम्रःश्रुत्वा च तं शब्दंभयत्रस्तमनास्तदा। पलायनंततःकृत्वा जगाममहिषान्तिकम्।१६

नगरे तस्य ये दैत्यास्तेऽपि चिन्तामवाप्नुवन्। बधिरीकृतकर्णाश्च पलायनपरा नृप।१७
तदाक्रोधेन सिंहोऽपि ननाद भृशमुत्सटः। तेन नादेन दैतेया भयं जग्मुरपि स्फुटम्।१८
ताम्रं समागतं दृष्ट्वा हयारिरपि मोहितः। चिन्तयामास सचिवैःकिंकर्तव्यमतःपरम्।१९
दुर्गग्रहो वा कर्तव्यो युद्धं निर्गत्य वा पुनः। पलायनेकृते श्रेयो भवेद्वादानवोत्तमाः।२०
बुद्धिमन्तो दुराधर्षाः सर्वे शास्त्रविशारदाः। मन्त्रःखलुप्रकर्तव्यः सुगुप्तःकार्यसिद्धये।२१
मन्त्रमूलं स्मृतं राज्यंयदिसस्यात्सुरक्षितः। मन्त्रिभिश्चसदाचारैर्विधेयःसर्वथाबुधैः।२२
मन्त्रभेदे विनाशः स्याद्राज्यस्य भूपतेस्तथा। तस्माद्भेदभयाद्गुप्तः कर्तव्यो भूतिमिच्छता।२३
तदत्रमन्त्रिभिर्वाच्यं वचनं हेतुमद्धितम्। कालदेशानुसारेण विचिन्त्यनीतिनिर्णयम्।२४
या योषाऽत्र समायाता प्रबला देवनिर्मिता। एकाकिनी निरालम्बा कारणंतद्विचिन्त्यताम्।२५
युद्धं प्रार्थयते बाला किमाश्चर्यमतःपरम्। श्रेयोऽत्र विपरीतं वा को वेत्ति भुवनत्रये।२६
न बहूनां जयोऽप्यस्ति नैकस्य च पराजयः। दैवाधीनौसदाज्ञेयौ युद्धेजयपराजयौ।२७
उपायवादिनः प्राहुर्दैवं किं केन वीक्षितम्। अदृष्टमितियन्नाम प्रवदन्ति मनीषिणः।२८
तत्सत्त्वेऽपि प्रमाणं किंकातराशावलम्बनम्। नसमर्थजनानांहिदैवं कुत्रापिलक्ष्यते।२९
उद्यमो दैवमेतौहि शूरकातरयोर्मतम्। विचिन्त्याद्य धियासर्वं कर्तव्यंकार्यमादरात्।३०
इतिराज्ञोवचःश्रुत्वा हेतुगर्भंमहायशाः। विडालाख्योमहाराजमित्युवाच कृताञ्जलिः।३१
राजन्नेषा विशालाक्षी ज्ञातव्यायत्नतः पुनः। किमर्थमिह सम्प्राप्ताकुतः कस्यपरिग्रहः।३२
मरणं ते परिज्ञाय स्त्रियाः सर्वात्मनासुरैः। प्रेषिता पद्मपत्राक्षी समुत्पाद्यस्वतेजसः।३३
तेऽपिछिन्नाःस्थिताःखेऽत्रसर्वे युद्धदिदृक्षवः। समयेऽस्याः सहायास्तेभविष्यन्तियुयुत्सवः।३४
पुरतःकामिनींकृत्वातेवैविष्णुपुरोगमाः। वधिष्यन्तिचनःसर्वान्सात्वांयुद्धेनिष्यति।३५
एतच्चिकीर्षितं तेषां मया ज्ञातं नराधिप। भवितव्यस्य न ज्ञानं वर्तते मम सर्वथा।३६
योद्धव्यं न त्वयाऽद्येति नाहंवक्तुं क्षमः प्रभो। प्रमाणंत्वंमहाराजकार्येऽत्रदेवनिर्मिते।३७
त्वदर्थेऽस्माभिरनिशं मर्तव्यं कार्यगौरवात्। विहर्तव्यं त्वयासार्धमेषधर्मोऽनुजीविनाम्।३८
विचारोऽत्रमहानस्ति यदेकाकामिनीं नृप। युद्धंप्रार्थयतेऽस्माभिःससैन्यैर्बलदर्पितैः।३९

दुर्मुख उवाच

राजन्युद्धे जयोनोऽद्य भविता वेद्म्यहं किल। पलायनंनकर्तव्यंयशोहानिकरंनृणाम्।४०
इन्द्रादीनां संयुगेऽपिनकृतंयज्जुगुप्सितम्। एकाकिनीं स्त्रियं प्राप्य को हि कुर्यात्पलायनम्।४१
तस्माद्युद्धं प्रकर्तव्यं मरणंवा रणे जयः। यद्भावि तद्भवत्येव काऽत्रचिन्ता विपश्यतः।४२
मरणेऽत्र यशः प्राप्तिर्जीवने च तथा सुखम्। उभयं मनसा कृत्वा कर्तव्यं युद्धमद्य वै।४३
पलायने यशोहानिर्मरणं चायुषःक्षये। तस्माच्छोको न कर्तव्यो जीविते मरणेवृथा।४४

व्यास उवाच

दुर्मुखस्यवचःश्रुत्वा वाष्कलो वाक्यमब्रवीत्। प्रणतः प्राञ्जलिर्भूत्वा राजानं वाक्यकोविदः।४५

वाष्कल उवाच

राजंश्चिन्ता न कर्तव्या कार्येऽस्मिन्कातराऽप्रिये। अहमेको हनिष्यामि चण्डीं चञ्चललोचनाम्।४६
उत्साहस्तु प्रकर्तव्यः स्थायीभावो रसस्य च। भयानकोभवेद्वैरी वीरस्य नृपसत्तम।४७
तस्मात्यक्त्वा भयं भूप! करिष्ये युद्धमद्भुतम्। नयिष्यामिनरेन्द्राहं चण्डिकांयमसादनम्।४८
न बिभेमि यमादिंद्रात्कुबेराद्वरुणादपि। वायोर्वह्नेस्तथाविष्णोःशङ्कराच्छशिनोरवेः।४९
एकाकिनी तथा नारीकिं पुनर्मदगर्विता। अहंतांनिहनिष्यामिविशिखैश्चशिलाशितैः।५०

पश्य बाहुबलं मेऽद्यविहरस्व यथासुखम्। भवताऽत्रनगन्तव्यंसंग्रामेऽप्यनया समम् ।५१

व्यास उवाच

एवं ब्रुवति राजेन्द्र वाष्कले मदगर्विते। प्रणम्य नृपतिं तत्र दुर्धरो वाक्यमब्रवीत् ।५२

दुर्धर उवाच

महिषाऽहं विजेष्यामिदेवींदेवविनिर्मिताम्। अष्टादशभुजांरम्यांकारणाच्चसमागताम् ।५३
राजन्भीषयितुं त्वां वै मायैषानिर्मितासुरैः। विभीषिकेयंविज्ञायत्यजमोहंमनोगतम् ।५४
राजनीतिरियंराजन्मन्त्रिकृत्यंतथाशृणु ।सात्त्विकाराजसाः केचित्तामसाश्चतथापरे ।५५
मन्त्रिणस्त्रिविधा लोके भवन्ति दानवाधिप!। सात्त्विकाः प्रभुकार्याणि साधयन्ति स्वशक्तिभिः ।५६
आत्मकृत्यंप्रकुर्वन्ति स्वामिकार्याविरोधतः। एकचित्ताधर्मपरामन्त्रशास्त्रविशारदाः ।५७
राजसा भिन्नचित्ताश्च स्वकार्यनिरताः सदा। कदाचित्स्वामिकार्यन्ते प्रकुर्वन्ति यदृच्छया ।५८
तामसालोभनिरताः स्वकार्यनिरताःसदा। प्रभुकार्यं विनाश्यैव स्वकार्यंसाधयन्तिते ।५९
समये ते विभिद्यन्तेपरैस्तु परिवञ्चिताः। स्वच्छिद्रंशत्रुपक्षीयानिर्दिशन्तिगृहस्थिताः ।६०
कार्यभेदकरा नित्यंकोशगुप्ताऽसिवत्सदा। संग्रामेऽथसमुत्पन्ने भीषयन्ति प्रभुंसदा ।६१
विश्वासस्तु न कर्तव्यस्तेषां राजन्कदाचन। विश्वासे कार्यहानिः स्यान्मन्त्रहानिः सदैव हि ।६२
खलाः किं किं न कुर्वन्ति विश्वस्ता लोभतत्पराः। तामसाः पापनिरता बुद्धिहीना शठास्तथा ।६३
तस्मात्कार्यंकरिष्यामि गत्वाऽहंरणमस्तके। चिन्तात्वयानकर्तव्यासर्वथा नृपसत्तम ।६४
गृहीत्वातांदुराचारामागमिष्यामिसत्वरः। पश्यमेऽद्य बलंधैर्यं प्रभुकार्यं स्वशक्तितः ।६५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे देवीपराजयकरणायदुर्धरप्रबोधवचनंनामद्वादशोऽध्यायः ।।१२।।

* त्रयोदशोऽध्यायः *

देव्यामहिषसेनाधिपवाष्कलदुर्मुखयोर्युद्धेनिपातनम्

व्यास उवाच

इत्युक्त्वातौमहाबाहूदैत्यौबाष्कलदुर्मुखौ। जग्मतुर्मददिग्धांगौ सर्वशस्त्रास्त्रकोविदौ ।१
तौ गत्वा समरे देवी मूचतुर्वचनं तदा। दानवौचमदोन्मत्तौ मेघगम्भीरया गिरा ।२
देवि देवा जिता येन महिषेण महात्मना। वरय त्वं वरारोहे सर्वदैत्याधिपं नृपम् ।३
स कृत्वा मानुषंरूपं सर्वलक्षणसंयुतम्। भूषितं भूषणैर्दिव्यैस्त्वामेष्यति रहः किल ।४
त्रैलोक्यविभवं कामं त्वमेष्यसिशुचिस्मिते। महिषे परमं भावं कुरुकान्तेमनोगतम् ।५
कृत्वा पतिं महावीरं संसारसुखमद्भुतम्। त्वंप्राप्स्यसि पिकालापे योषितां खलु वाञ्छितम् ।६

श्रीदेव्युवाच

जाल्म! त्वं किं विजानासि नारीयं काममोहिता ।
मन्दबुद्धिबलाऽत्यर्थ भजेयं महिषं शठम् ।।७।।

कुलशीलगुणैस्तुल्यं तं भजन्ति कुलस्त्रियः। अधिकं रूपचातुर्यबुद्धिशीलक्षमादिभिः ।८
का नु कामातुरा नारी भजेच्च पशुरूपिणम्। पशूनामधमं नूनं महिषं देवरूपिणी ।९
गच्छतं महिषं तूर्णं भूपं बाष्कलदुर्मदौ। वदतं मद्वचो दैत्यं गजतुल्यं विषाणिनम् ।१०

पातालं गच्छ वाऽभ्येत्य संग्रामं कुरु वा मया ।
रणे जाते सहस्राक्षो निर्भयः स्यादिति ध्रुवम् ।।११।।

हत्वाऽहंत्वांगमिष्यामिनान्यथागमनंमम। इत्थंज्ञात्वा सुदुर्बुद्धे यथेच्छसितथा कुरु ।१२

मामनिर्जित्यभूभागे न स्थानन्तेकदाचन। भविष्यतिचतुष्पादं दिविवागिरिकन्दरे।१३

व्यास उवाच

इत्युक्तौ तौ तया दैत्यौकोपाकुलितलोचनौ। धनुर्बाणधरौवीरौयुद्धकामौ बभूवतुः।१४
कृत्वा सुविपुलंनादं देवी सा निर्भयास्थिता। उभौचचक्रतुस्तीव्रांबाणवृष्टिं कुरुद्वह।१५
भगवत्यपि बाणौघान्मुमोच दानवौप्रति। कृत्वाऽतिमधुरं नादं देवकार्यार्थसिद्धये।१६
तयोस्तु बाष्कलस्तूर्णंसम्मुखोऽभूद्रणांगणे। दुर्मुखःप्रेक्षकस्तत्रदेवीमभिमुखः स्थितः।१७
तयोर्युद्धमभूद्घोरं देवीबाष्कलयोस्तदा। बाणासिपरिघाघातैर्भयदं मन्दचेतसाम्।१८
ततःक्रुद्धाजगन्माता दृष्ट्वा तं युद्धदुर्मदम्। जघानपञ्चभिर्बाणैःकर्णाकृष्टैःशिलाशितः।१९

दानवोऽपि शरान्देव्याश्छिच्छेद निशितैः शरैः।
सप्तभिस्ताडयामास देवीं सिंहोपरिस्थिताम्॥२०॥
साऽपि तं दशभिस्तीक्ष्णैः सुपीतैः सायकैः खलम्।
जघान तच्छरांश्छित्त्वा जहास च मुहुर्मुहुः॥२१॥

अर्धचन्द्रेण बाणेन चिच्छेद च शराशनम्। बाष्कलोऽपि गदांगृह्यदेवींहन्तुमुपाययौ।२२
आगच्छन्तं गदापाणिं दानवं मदगर्वितम्। चण्डिकास्वगदापातैःपादयामासभूतले।२३
बाष्कलः पतितो भूमौ मुहूर्तादुत्थितः पुनः। चिक्षेप च गदां सोऽपि चण्डिकां चण्डविक्रमः।२४
तमागच्छन्तमालोक्य देवी शूलेन वक्षसि। जघान बाष्कलंक्रुद्धापपात च ममारसः।२५
पतिते बाष्कले सैन्यं भग्नं तस्य दुरात्मनः। जयेतिचमुदादेवाश्चुक्रुशुर्गगनेस्थिताः।२६
तस्मिंश्चनिहते दैत्ये दुर्मुखोऽति बलान्वितः। आजगामरणेदेवीं क्रोधसंरक्तलोचनः।२७
तिष्ठ तिष्ठाऽबले सोऽपि भाषमाणःपुनःपुनः। धनुर्बाणधरः श्रीमान्रथस्थःकवचावृतः।२८
तमागच्छन्तमालोक्य देवीशङ्खमवादयत्। कोपयन्ती दानवंतंज्याघोषं च चकार ह।२९

सोऽपिबाणान्मुमोचाऽऽशु तीक्ष्णानाशीविषोपमान्।
स्वबाणैस्तान्महामाया चिच्छेद च ननाद च॥३०॥

तयोः परस्परं युद्धं बभूव तुमुलं नृप। बाणशक्तिगदाघातमुसलैस्तोमरैस्तथा।३१
रणभूमौ तदा जातारुधिरौघवहा नदी। पतितानि तदा तीरे शिरांसि प्रबभुस्तदा।३२
यथासन्तरणार्थाय यमकिंकरनायकैः। तुम्बीफलानि नीतानि तवशिक्षापरैर्मुदा।३३
रणभूमिस्तदा घोरा बभूवातीव दुर्गमा। शरीरैः पतितैर्भूमौ खाद्यमानैर्वृकादिभिः।३४
गोमायुसारमेयाश्च काकाः कंका [illegible]मुखाः। गृध्राः श्येनाश्च खादन्ति शरीराणि दुरात्मनाम्।३५
ववौ वायुश्चदुर्गन्धो मृतानांदेहसङ्गतः। अभूत्किलकिलाशब्दःखगानांपलभक्षिणाम्।३६
तदा चुकोप दुष्टात्मा दुर्मुखःकालमोहितः। देवीमुवाचगर्वेणकृत्वाचोर्ध्वं करंशुभम्।३७
गच्छचण्डिहनिष्यामि त्वामद्यैव सुबालिशे। दैत्यंवाभजवामोरु महिषं मदगर्वितम्।३८

देव्युवाच

आसन्नमरणःकामं प्रलपस्यद्यमोहितः। अद्यैव त्वां हनिष्यामि यथाऽयंबाष्कलोहतः।३९
गच्छवा तिष्ठवा मन्द मरणं यदिरोचते। हत्वात्वांवैवधिष्यामिबालिशंमहिषीसुतम्।४०
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्या दुर्मुखो मर्तुमुद्यतः। मुमोचबाणवृष्टिंतुचण्डिकांप्रतिदारुणाम्।४१

साऽपि तां तरसा च्छित्त्वा बाणवृष्टिं शितैः शरैः।
जघान दानवं क्रुद्धा वृत्रं वज्रधरो यथा॥४२॥

तयोः परस्परं युद्धं सञ्जातं चातिकर्कशम्। भयदं कातराणांच शूराणां बलवर्धनम्।४३
देवी चिच्छेद तरसा धनुस्तस्य करस्थितम्। तथैव पञ्चभिर्बाणैर्बभञ्ज रथमुत्तमम्।४४

रथे भग्ने महाबाहुः पदातिर्दुर्मुखस्तदा। गदां गृहीत्वा दुर्धर्षांजगामचण्डिकांप्रति।४५
चकार स गदाघातंसिंहमौलौमहाबलात्। नचचालहरिः स्थानात्ताडितोऽपिमहाबलः।४६
अम्बिका तं समालोक्य गदापाणिं पुरस्थितम्।
खड्गेन शितधारेण शिरश्चिच्छेद मौलिमत्॥४७॥
छिन्ने च मस्तके भूमौ पपातदुर्मुखो मृतः। जयशब्दं तदाचक्रुर्मुदिता निर्जरा भृशम्।४८
तुष्टुवुस्तां तदा देवीं दुर्मुखे निहतेऽमराः। पुष्पवृष्टिं तथाचक्रुर्जयशब्दं नभःस्थिताः।४९
ऋषयः सिद्धगन्धर्वाः सविद्याधरकिन्नराः। जहृषुस्तं हतंदृष्ट्वा दानवं रणमस्तके।५०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे महिषसेनाधिपबाष्कलदुर्मुखनिपातनवर्णनंनाम-त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

* चतुर्दशोऽध्यायः *

देव्याश्चिक्षुरदानवेनयुद्धकरणंतत्सहायार्थंताम्रद्वाराप्रहारस्तयोर्वधः

व्यास उवाच

दुर्मुखं निहतंश्रुत्वामहिषःक्रोधमूर्च्छितः। उवाचदानवान्सर्वान्किंजातमितिचासकृत।१
निहतौ दानवौ शूरौ रणेदुर्मुखबाष्कलौ। तन्व्या तत्परमाश्चर्यं पश्यन्तु दैवचेष्टितम्।२
कालोहिबलवान्कर्ता सततं सुखदुःखयोः। नराणां परतन्त्राणां पुण्यपापानुयोगतः।३
निहतौ दानवश्रेष्ठौ किं कर्तव्यमतः परम्। ब्रुवन्तुमिलिताः सर्वे यदुक्तं कार्यसङ्कटे।४

व्यास उवाच

एवंब्रुवति राजेन्द्र महिषेऽतिबलान्विते। चिक्षुराख्यस्तु सेनानीस्तमुवाच महारथः।५
राजन्नहं हनिष्यामि का चिन्ता स्त्रीविहिंसने। इत्युक्त्वास्वबलैर्युक्तःप्रययौ रथसंयुतः।६
द्वितीयं पार्ष्णिरक्षं तु कृत्वा ताम्रं महाबलम्। महतासैन्यघोषेण पूरयन्गगनं दिशः।७
तमागच्छन्तमालोक्य देवी भगवती शिवा। चकारशङ्खज्याघोषंघण्टानादंमहाद्भुतम्।८
तत्रसुस्तेन शब्देन ते च सर्वे सुरारयः। किमेतदिति भाषन्तो दुद्रुवुर्भयकम्पिताः।९
चिक्षुराख्यस्तु तान्दृष्ट्वा पलायनपरायणान्। उवाचातीव संक्रुद्धःकिंभयंवःसमागतम्।१०
अद्यैवाऽहंहनिष्यामि बाणैर्बालां मदोन्नताम्। तिष्ठन्त्वत्र भयं त्यक्त्वा दैत्याः समरमूर्धनि।११
इत्युक्त्वा दानवश्रेष्ठ श्चापपाणिर्बलान्वितः। आगत्य सङ्गरे देवीमित्युवाच गतव्यथः।१२
किं गर्जसि विशालाक्षि! भीषयन्तीतरान्नरान्।
नाहंबिभेमि तन्वङ्गि! श्रुत्वा तेऽद्य विचेष्टितम्॥१३॥
स्त्रीवधे दूषणं ज्ञात्वा तथैवाकीर्तिसम्भवम्। उपेक्षां कुरुते चित्तं मदीयं वामलोचने।१४
स्त्रीणां युद्धं कटाक्षैश्च तथा हावैश्चसुन्दरि। नशास्त्रैर्विहितंक्वापित्वादृशीनांकदाचन।१५
पुष्पैरपि न योद्धव्यं किं पुनर्निशितैः शरैः। भवादृशीनां देहेषु दुनोति मालतीदलम्।१६
धिग्जन्म मानुषेलोके क्षात्रधर्मानुजीविनाम्। लालितोऽयं प्रियो देहः कृन्तनीयः शितैः शरैः।१७
तैलाभ्यङ्गैः पुष्पवातैस्तथा मिष्टान्नभोजनैः। पोषितोऽयं प्रियोदेहोघातनीयःपरेषुभिः।१८
देहं छित्त्वाऽसिधाराभिर्धनभृज्जायते नरः। धिग्धनंदुःखदं पूर्वं पश्चात्किं सुखदंभवेत्।१९
त्वमप्यज्ञैव वामोरु युद्धकामांक्षसे यतः। सुखंसम्भोगजंत्यक्त्वाकं गुणंवेत्सि सङ्गरे।२०
खड्गपातं गदाघातं भेदनं च शिलीमुखैः। मरणान्ते तु संस्कारोगोमायुमुखकर्षणम्।२१
तस्यैव कविभिर्धूर्तैः कृतंचातीवशंसनम्। रणेमृतानां स्वःप्राप्तिरर्थवादोऽस्तिकेवलः।२२
तस्माद् गच्छ वरारोहे यत्र ते रमते मनः। भज वा भूपतिं नाथं हयारिं सुरमर्दनम्।२३

व्यास उवाच

एवं ब्रुवाणं तं दैत्यं प्रोवाच जगदम्बिका। किं मृषा भाषसेमूढबुद्धिमानिवपण्डितः।२४
नीतिशास्त्रंनजानासिविद्यांचान्वीक्षिकींतथा। नसेवितास्त्वयावृद्धानधर्मेमतिरस्तिते।२५
मूर्खसेवापरो यस्मात्तस्मात्त्वं मूर्खएव हि। राजधर्मंन जानासिकिंब्रवीषि ममाग्रतः।२६
संग्रामे महिषं हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमम्। यशःस्तम्भं स्थिरं कृत्वा गमिष्यामि यथासुखम्।२७
देवानां दुःखदातारं दानवं मदगर्वितम्। हनिष्येऽहं दुराचारं युद्धं कुरु स्थिरो भव।२८
जीवितेच्छाऽस्ति चेन्मूढ महिषस्य तथा तव। तदागच्छन्तुपातालंदानवाःसर्वएवते।२९
मुमूर्षा यदिवश्चित्ते युद्धं कुर्वन्तु सत्वराः। सर्वानिववधिष्यामिनिश्चयोऽयं ममाधुना।३०
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य दानवा बलदर्पिताः। मुमोच बाणवृष्टिं तां घनवृष्टिमिवापरम्।३१
चिच्छेद तस्यसाबाणान्स्वबाणैर्निशितैस्तदा। जघान तंतथाघोरैराशीविषतमैःशरैः।३२
युद्धं परस्परं तत्र बभूव विस्मयप्रदम्। गदया घातयामास तं रथाङ्गगदम्बिका।३३
मूर्च्छां प्राप स दुष्टात्मा गदयाऽभिहतोभृशम्। मुहूर्तद्वयमात्रं तु रथोपस्थइवाचलः।३४
तं तथामूर्छितं दृष्ट्वा ताम्रः परबलार्दनः। आजगाम रणेयोद्धुंचण्डिकांप्रतिचापलात्।३५
आगच्छन्तं तु तं वीक्ष्य हसन्तीप्राह चण्डिका। एह्येहि दानवश्रेष्ठ! यमलोकं नयाम्यहम्।३६
किं भवद्भिःसमायातैरबलैश्च गतायुषः। महिषः किं गृहे मूढः करोति जीवनोद्यमम्।३७
किं भवद्भिर्हतैर्मन्दैर्ममापि विफलः श्रमः। अहते महिषे पापे सुरशत्रौ दुरात्मनि।३८
तस्माद्यूयं गृहं गत्वा महिषंप्रेषयन्त्विह। पश्येन्मां सोऽपि मन्दात्मा यादृशीं तादृशीं स्थिताम्।३९
ताम्रस्तद्वचनं श्रुत्वा बाणवृष्टिं चकार ह। चण्डिकांप्रतिकोपेनकर्णाऽऽकृष्टशरासनः।४०
भगवत्यपिताम्राक्षीसमाकृष्यशरासनम्। बाणान्मुमोचतरसाहन्तुकामा सुराहितम्।४१

चिक्षुराख्योऽपि बलवान्मूर्च्छांत्यक्त्वोत्थितः पुनः।
गृहीत्वा सशरं चापं तस्थौ तत्सम्मुखः क्षणात्॥४२॥

चिक्षुराख्यश्च ताम्रश्च द्वावप्यतिबलोत्कटौ। युयुधातेमहावीरौ सह देव्या रणांगणे।४३
कुपिता च महामाया ववर्षशरसंततिम्। चकार दानवान्सर्वान्बाणक्षततनुच्छदान्।४४
असुराः क्रोधसंमूढा बभूवुःशरताडिताः। चिक्षिपुःशरजालानिदेवींप्रतिरुषाऽन्विताः।४५
वभुस्ते राक्षसास्तत्र किंशुका इवपुष्पिणः। शिलीमुखक्षताः सर्वेवसन्ते च वने रणे।४६
बभूव तुमुलं युद्धं ताम्रेणसह संयुगे। विस्मयं परमं जग्मुर्देवाये प्रेक्षकाः स्थिताः।४७
ताम्रोमुसलसादाय लोहजंदारुणं दृढम्। जघान मस्तके सिंहं जहास च ननर्द च।४८
नर्दमानं तदा तं तु दृष्ट्वा देवी रुषाऽन्विता। खड्गेन शितधारेण शिरश्चिच्छेद सत्वरा।४९
छिन्नेशिरसि ताम्रस्तु विशीर्षो मुसली बली। बभ्राम क्षणमात्रं तु पपात रणमस्तके।५०
पतितं ताम्रमालोक्य चिक्षुराख्यो महाबलः। खड्गमादाय तरसादुद्रावचण्डिकांप्रति।५१
भगवत्यपि तं दृष्ट्वा खड्गपाणिमुपागतम्। दानवं पञ्चभिर्बाणैर्जघान तरसा रणे।५२
एकेन पतितं खड्गं द्वितीयेन तु तत्करः। कण्ठाच्च मस्तकं तस्य कृन्तितं चापरैः शरैः।५३
एवं तौ निहतौ क्रूरौ राक्षसौ रणदुर्मदौ। भग्नंसैन्यंतयोस्तूर्णंदिक्षुसन्त्रस्तमानसम्।५४
देवाश्च मुदिताः सर्वे दृष्ट्वा तौ निहतौ रणे। पुष्पवृष्टिंमुदाचक्रुर्जयशब्दं नभःस्थिताः।५५
ऋषयो देवगन्धर्वा वेतालाः सिद्धचारणाः। ऊचुस्तेजयदेवीतिचाऽम्बिकेतिपुनःपुनः।५६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां पञ्चमस्कन्धे ताम्रचिक्षुरवधवर्णनंनामचतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

* पञ्चदशोऽध्यायः *

विडालाख्यासिलोमरक्षसोर्देव्यायुद्धवर्णनम्

व्यास उवाच

तौ तया निहतौश्रुत्वामहिषोविस्मयान्वितः। प्रेषयामासदैतेयांस्तद्वधार्थंमहाबलान् ।१
असिलोमविडालाख्यप्रमुखान्युद्धदुर्मदान् । सैन्येन महता युक्तान्सायुधान्सपरिच्छदान् ।२
ते तत्रददृशुर्देवींसिंहस्योपरिसंस्थिताम्। अष्टादशभुजांदिव्यांखड्गखेटकधारिणीम् ।३
असिलोमाऽग्रतो गत्वा तामुवाचहसन्निव। विनयावनतःशान्तोदेवीदैत्यवधोद्यताम् ।४

असिलोमोवाच

देवि ब्रूहि वचः सत्यंकिमर्थमिहसुन्दरि। आगताऽसिकिमर्थंवाहंसिदैत्यान्निरागसः।५
कारणं कथयाद्यत्वं त्वयासन्धिंकरोम्य म्। काञ्चनंमणिरत्नानिभाजनानिवराणिच।६
यानीच्छसि वरारोहे! गृहीत्वा गच्छ मा चिरम्। किमर्थंयुद्धकामाऽसि दुःखसन्तापवर्धनम्।७
कथयन्ति महात्मानो युद्धं सर्वसुखापहम्। कोमलेऽतीव ते देहेपुष्पघातासहेभृशम्।८
किमर्थं शस्त्रसम्पातान्सहसीतिविसिस्मिये। चातुर्यस्यफलंशान्तिः सततंसुखसेवनम्।६
तत्किमर्थं दुःखहेतुं संग्रामं कर्तुमिच्छसि। संसारेऽत्रसुखंग्राह्यंदुःखंहेयमिति स्थितिः।१०
तत्सुखंद्विविधंप्रोक्तंनित्यानित्यप्रभेदतः । आत्मज्ञानंसुखंनित्यमनित्यंभोगजं स्मृतम्।११
नाशात्मकं तु तत्त्याज्यंवेदशास्त्रार्थचिन्तकैः। सौगतानांमतंचेत्त्वंस्वीकरोषिवराननें।१२
तथाऽपि यौवनं प्राप्य भुङ्क्ष्व भोगाननुत्तमान्। परलोकस्य सन्देहो यदि तेऽस्ति कृशोदरि!।१३
स्वर्गभोगपरा नित्यं भव भामिनि भूतले। अनित्यं यौवनं देहेज्ञात्वेति सुकृतं चरेत्।१४
परोपतापनं कार्यं वर्जनीयं सदा बुधैः। अविरोधेन कर्तव्यं धर्मार्थकामसेवनम्।१५
तस्मात्वमपि कल्याणिमतिंधर्मेसदाकुरु। अपराधंविनादैत्यान्कस्मान्मारयसेऽम्बिके।१६
दयाधर्मोऽस्य देहोऽस्तिसत्येप्राणाःप्रकीर्तिताः। तस्माद्दया तथा सत्यं रक्षणीयं सदा बुधैः।१७
कारणं वद सुश्रोणि! दानवानां वधे तव।

देव्युवाच

त्वया पृष्टं महाबाहो किमर्थमिह चागता ।।१८।।
तदहं सम्प्रवक्ष्यामि हनने च प्रयोजनम्। विचरामि सदा दैत्य! सर्वलोकेषु सर्वदा।१६
न्यायान्यायौ च भूतानां पश्यन्ती साक्षिरूपिणी। न मे कदापि भोगेच्छा न लोभो न च वैरित।२०
धर्मार्थं विचराम्यत्र संसारे साधुरक्षणम्। व्रतमेतत्तु नियतंपालयामि निजं सदा।२१
साधूनां रक्षणं कार्यं हन्तव्या येऽप्यसाधवः। वेदसंरक्षणंकार्यमवतारैरनेकशः ।२२
युगेयुगे तानेवाऽहमवतारान्बिभर्मि च। महिषस्तु दुराचारो देवान्वै हन्तुमुद्यतः।२३
ज्ञात्वाऽहं तद्वधार्थं भोःप्राप्ताऽस्मिराक्षसाधुना। तंहनिष्ये दुराचारंसुरशत्रुं महाबलम् ।२४
गच्छ वा तिष्ठ कामं त्वं सत्यमेतदुदाहृतम्। ब्रूहिवातंदुरात्मानंराजानंमहिषीसुतम्।२५
किमन्यान्प्रेषयस्यत्र स्वयं युद्धं कुरुष्व ह। सन्धिंचेत्कर्तुमिच्छाऽस्ति राज्ञस्तव मया सह।२६
सर्वेगच्छन्तुपातालंवैरंत्यक्त्वायथासुखम्। देवद्रव्यंतुयत्किञ्चिद्धृतंजित्वारणेसुरान्।
तद्दत्वा यान्तु पातालं प्रह्लादो यत्र तिष्ठति।।२७।।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वावचनंदेव्याअसिलोमा पुरःस्थितः। विडालाख्यंमहावीरंपप्रच्छप्रीतिपूर्वकम्।२८

असिलोमोवाच

श्रुतं तेऽद्य विडालाख्यभवान्याकथितंच यत्। एवंगतेकिंकर्तव्योविग्रहःसन्धिरेववा ।२६

विडालाख्य उवाच

न सन्धिकामोऽस्ति नृपोऽभिमानी युद्धे च मृत्युं नियतं हिजानन्।
दृष्ट्वा हतान्प्रेरयतेतथाऽस्मान्देवं हि कोऽतिक्रमितुं समर्थः ।।३०।।
"दुःसाध्य एवास्त्विह सेवकानां धर्मः सदा मानविवर्जितानाम्।
आज्ञापराणांवशवर्तिकानां पाञ्चालिकानामिवसूत्रभेदात्।"
गत्वा कथं तस्य पुरस्त्वया च मयाऽपि वक्तव्यमिदं कठोरम् ।।३१।।
गच्छन्तु पातालमितश्च सर्वे दत्त्वाऽथ रत्नानि धनं सुराणाम्।
"प्रियं हि वक्तव्यमसत्यमेव न च प्रियं स्याद्धितकृत्तु भाषितम्।
सत्यं प्रियं नो भवतीह कामं मौनं ततो बुद्धिमतां प्रतिष्ठितम्।"
न फल्गुवाक्यैः प्रतिबोधनीयो राजा तु वीरैरिति नीतिशास्त्रम् ।।३२।।
न नूनं तत्र गन्तव्यं हितं वा वक्तुमादरात्।प्रष्टुं वाऽपि गते राजा कोपयुक्तो भविष्यति।३३
इतिसञ्चिन्त्य कर्तव्यं युद्धं प्राणस्य संशये।स्वामिकार्यं परं मत्वामरणंतृणवत्तथा।३४

व्यास उवाच

इतिसञ्चिन्त्य तौ वीरौ संस्थितौ युद्धतत्परौ।धनुर्बाणधरौ तत्र सन्नद्धौरथसङ्गतौ।३५
प्रथमं तुविडालाख्यःसप्तबाणान्मुमोच ह।असिलोमास्थितोदूरेप्रेक्षकःपरमास्त्रवित्।३६
चिच्छेद तांस्तथा प्राप्तानम्बिकास्वशरैः शरान्।विडालाख्यं त्रिभिर्बाणैर्जघान च शिलाशितैः।३७
प्राप्यबाणव्यथां दैत्यः पपात समराङ्गणे।मूर्छितोऽथममाराऽऽशुदानवोदैवयोगतः।३८
विडालाख्यंहतंदृष्ट्वारणेशक्तिशिरोत्करः।असिलोमाधनुष्पाणिःसंस्थितोयुद्धतत्परः।३६
ऊर्ध्वं सव्यं करंकृत्वा तामुवाच मितं वचः।देविजानामिमरणंदानवानांदुरात्मनाम्।४०
तथाऽपि युद्धं कर्तव्यं पराधीनेन वै मया।महिषोमन्दबुद्धिश्च नजानाति प्रियाप्रिये।४१
तदग्रे नैव वक्तव्यं हितंचैवाप्रियंमया।मर्तव्यं वीरधर्मेण शुभं वाऽप्यशुभं भवेत्।४२
दैवमेव परं मन्ये धिक्पौरुषमनर्थकम्।पतन्ति दानवास्तूर्णं तव बाणहता भुवि।४३
इत्युक्त्वा शरवृष्टिं स चकार दानवोत्तमः।देवीचिच्छेदतान्बाणैरप्राप्तांस्तुनिजान्तिके।४४
अन्यैर्विव्याध तं तूर्णमसिलोमानमाशुगैः।वीक्षिताऽमरसंघैश्च कोपपूर्णानना तदा।४५
शुशुभे दानवः कामं बाणैर्विद्धतनुः किल।स्रवद्रुधिरधारः स प्रफुल्लः किंशुको यथा।४६
असिलोमा गदां गुर्वी लौहीमुद्यम्य वेगतः।दुद्राव चण्डिकांकोपात्सिंहं मूर्ध्नि जघान ह।४७
सिंहोऽपि नखराघातैस्तं ददार भुजान्तरे।अगणय्य गदाघातं कृतं तेन बलीयसा।४८
उत्पत्य तरसा दैत्यो गदापाणिः सुदारुणः।सिंहमूर्ध्निसमारुह्यजघानगदयाम्बिका।४६
कृतं तेन प्रहारं तु वञ्चयित्वा विशाम्पते।खड्गेन शितधारेणशिरश्चिच्छेद कण्ठतः।५०
छिन्ने शिरसि दैत्येन्द्रःपपाततरसाक्षितौ।हाहाकारोमहानासीत्सैन्येतस्यदुरात्मनः।५१
जयदेवीति देवास्तां तुष्टुवुर्जगदम्बिकाम्।देव दुन्दुभयोनेदुर्जगुश्चनृप! किन्नराः।५२
निहतौ दानवौ वीक्ष्य पतितौ च रणाङ्गणे।निहताः सैनिकाः सर्वे तत्र केसरिणा बलात्।५३
भक्षिताश्चतथाकेचिन्निःशेषं तद्रणं कृतम्।भग्नाः केचिद्गता मन्दामहिषंप्रतिदुःखिताः।५४
चुक्रुशूरुरुदुश्चैव त्राहित्राहीतिभाषणैः।असिलोमविडालाख्यौ निहतौ नृपसत्तम।५५
अन्ये ये सैनिका राजन्सिंहेन भक्षिताश्च ते।एवम्ब्रुवन्तो राजानंतदाचक्रुश्च वैशसम्।५६
तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां महिषो दुर्मनास्तदा।बभूव चिन्ताकुलितोविमनादुःखसंयुतः।५७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे असिलोमविडालवधवर्णनंनामपञ्चदशोऽध्यायः।।१५।।

* षोडशोऽध्यायः *

महिषद्वारादेवीप्रबोधनम्

व्यास उवाच

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा क्रोधयुक्तो नराधिपः। दारुकम्प्राह तरसा रथमानय मेऽद्भुतम्।१
सहस्रखरसंयुक्तं पताकाध्वजभूषितम्। आयुधैः संयुतं शुभ्रं सुचक्रं चारुकूबरम्।२
सूतोऽपि रथमानीय तमुवाच त्वरान्वितः। राजन्नथोऽयमानीतोद्वारितिष्ठतिभूषितः।३
सर्वायुधसमायुक्तो वरास्तरणसंयुतः। आनीतं तं रथं ज्ञात्वा दानवेन्द्रो महावलः।४
मानुषं देहमास्थाय सङ्ग्रामे गन्तुमुद्यतः। विचार्य मनसाचेति देवीमांप्रेक्ष्यदुर्मुखम्।५
शृङ्गिणं महिषंनूनं विमना सा भविष्यति। नारीणांच प्रियंरूपं तथा चातुर्यमित्यपि।६
तस्माद्रूपं च चातुर्यं कृत्वा यास्यामि तां प्रति। यथा मां वीक्ष्य सा बाल प्रेमयुक्ता भविष्यति।७
ममाऽपिच तदैव स्यात्सुखंनान्यस्वरूपतः। इतिसञ्चिन्त्य मनसादानवेन्द्रो महावलः।८
त्यक्त्वा तन्माहिषं रूपं बभूव पुरुषः शुभः। सर्वायुधधरःश्रीमांश्चारुभूषणभूषितः ।९
दिव्याम्वरधरः कान्तः पुष्पबाणइवाऽपरः। रथोपविष्टःकेयूरस्रग्वी वाणधनुर्धरः।१०
सेनापरिवृतो देवीं जगाम मदगर्वितः। मनोज्ञंरूपमास्थाय मानिनीनां मनोहरम्।११
तमागतं समालोक्य दैत्यानामधिपं तदा। बहुभिः संवृतंवीरैर्देवी शङ्खमवादयत्।१२
स शङ्खनिनदं श्रुत्वा जनविस्मयकारकम्। समीपमेत्य देव्यास्तु तामुवाच हसन्निव।१३
देवि! संसारचक्रेऽस्मिन्वर्तमानो जनः किल। नरो वाऽथ तथा नारी सुखं वाञ्छति सर्वथा।१४
सुखं संयोगजं नृणां नासंयोगे भवेदिह। संयोगो बहुधा भिन्नस्तान्ब्रवीमिशृणुष्वह।१५
भेदान्सुप्रीतिहेतूत्थान्स्वभावोत्थाननेकशः। तत्रप्रीतिभवानादौ कथयामियथामति।१६
मातापित्रोस्तु पुत्रेण संयोगस्तूत्तमः स्मृतः। भ्रातुर्भ्रात्रा तथा योगः कारणान्मध्यमो मतः।१७
उत्तमस्य सुखस्यैव दातृत्वादुत्तमःस्मृत। तस्मादल्पसुखस्यैव प्रदातृत्वाच्च मध्यमः।१८
नाविकानां तुसंयोगःस्मृतःस्वाभाविको बुधैः। विविधावृतचित्तानां प्रसङ्गपरिवर्तिनाम्।१९
अत्यल्पसुखदातृत्वात्कनिष्ठोऽयंस्मृतोबुधैः। अत्युत्तमस्तुसंयोगःसंसारेसुखदःसदा।२०
नारीपुरुषयोःकान्तेसमानवयसोः सदा। संयोगोयःसमाख्यातःसएवात्युत्तमःस्मृतः।२१
अत्युत्तमसुखस्यैव दातृत्वात्स तथाविधः। चातुर्यरूपवेषाद्यैः कुलशीलगुणैस्तथा।२२
परस्परसमुत्कर्षः कथ्यते हि परस्परम्। तंचेत्करोषिसंयोगंवीरेण च मया सह।२३
अत्युत्तमसुखस्यैवप्राप्तिःस्यात्तेनसंशयः। नानाविधानिरूपाणिकरोमिस्वेच्छयाप्रिये।२४
इन्द्रादयःसुराःसर्वेसंग्रामेविजितामया । रत्नानियानिदिव्यानि भवनेऽस्मिन्ममाधुना।२५
भुङ्क्ष्व त्वं तानि सर्वाणि यथेष्टं देहि वा यथा। पट्टराज्ञी भवाद्य त्वं दासोऽस्मि तव सुन्दरि!।२६
वैरं त्यजेऽहंदेवैस्तु तव वाक्यान्न संशयः। यथात्वंसुखमाप्नोषितथाऽहंकरवाणिवै।२७
आज्ञापयविशालाक्षि तथाऽहं प्रकरोम्यथ। चित्तंमेतवरूपेणमोहितं चारुभाषिणि।२८
आतुरोऽस्मि वरारोहेप्राप्तस्तेशरणंकिल। प्रसन्नंपाहिरम्भोरुःकामबाणैः प्रपीडितम्।२९
धर्माणामुत्तमोधर्मःशरणागतरक्षणम् । त्वदीयोऽस्म्यसितापाङ्गिसेवकोऽहं कृशोदरि।३०
मरणान्ते वचः सत्यं नान्यथा प्रकरोम्यहम्। पादोनतोऽस्मि तन्वङ्गि! त्यक्त्वा नानायुधानि ते।३१
दयां कुरु विशालाक्षि! तप्तोऽस्मि काममार्गणैः। जन्मप्रभृति चार्वङ्गि! दैन्यं नाऽऽचरितं मया।३२
ब्रह्मादीनीश्वरान्प्राप्य त्वयि तद्विदधाम्यहम्। चरितंममजानन्ति रणेब्रह्मादयः सुराः।३३

सोऽप्यऽहं तवदासोऽस्मि मन्मुखं पश्य भामिनि। इति ब्रुवाणं तं दैत्यं देवी भगवती हि सा।३४
प्रहस्य सस्मितं वाक्यमुवाच वरवर्णिनी।

देव्युवाच

नाहं पुरुषमिच्छामि परमं पुरुषं विना ।।३५।।
तस्य चेच्छाऽस्म्यहं दैत्य! सृजामि सकलं जगत्। स मां पश्यति विश्वात्मा तस्याऽहं प्रकृतिःशिवा।३६
तत्सान्निध्यवशादेव चैतन्यं मयि शाश्वतम्। जडाऽहंतस्यसंयोगात्प्रभवामिसचेतना।३७
अयस्कान्तस्य सान्निध्यादयसश्चेतनायथा। न ग्राम्यसुखवाञ्छामेकदाचिदपिजायते।३८
मूर्खस्त्वमसिमन्दात्मन्यत्स्त्रीसङ्गंचिकीर्षसि। नरस्यबन्धनार्थायशृङ्खलास्त्रीप्रकीर्तिता।३९
लोहबद्धोऽपि मुच्येत स्त्रीबद्धो नैव मुच्यते। किमिच्छसि च मन्दात्मन्मूत्रागारस्य सेवनम्।४०
शमंकुरुसुखायत्वं शमात्सुखमवाप्स्यसि। नारीसङ्गेमहद्दुःखंजानन्किंत्वंविमुह्यसि।४१
त्यजबैरंसुरैःसार्धं यथेष्टंविचरावनौ। पातालं गच्छवाकामं जीवितेच्छायदस्ति ते।४२
अथवा कुरु सङ्ग्रामं बलवत्यस्मिसाम्प्रतम्। प्रेषिताऽहं सुरैः सर्वैस्तव नाशाय दानव।४३
सत्यं ब्रवीमि येनाद्यत्वयावचनसौहृदम्। दर्शितंतेनतुष्टाऽस्मिजीवन्गाच्छयथासुखम्।४४
सतां सप्तपदीमैत्रतेनमुञ्चामिजीवितम्। मरणेच्छाऽस्तिचेद्युद्धं कुरु वीर यथासुखम्।४५
हनिष्यामिमहाबाहो! त्वामहंनाऽत्रसंशयः।

व्यास उवाच

इति तस्या वचः श्रुत्वा दानवः काममोहितः ।।४६।।
उवाचश्लक्ष्णयावाचा मधुरं वचनं ततः। बिभेम्यहं वरारोहे त्वां प्रहर्तुं वरानने।४७
कोमलांचारुसर्वाङ्गींनारीं नरविमोहिनीम्। जित्वाहरिहरादींश्चलोकपालांश्चसर्वशः।४८
किं त्वया सह युद्धंमेयुक्तं कमललोचने। रोचते यदि चार्वङ्गि विवाहं कुरु मां भज।४९
नोचेद्गच्छयथेष्टं ते देशंयस्मात्समागता। नाहंत्वांप्रहरिष्यामियतो मैत्रीकृतात्वया।५०
हितमुक्तंशुभंवाक्यंतस्माद्गच्छयथासुखम्। काशोभामेभवेदन्तेहत्वात्वांचारुलोचनाम्।५१
स्त्रीहत्याबालहत्याच ब्रह्महत्या दुरत्यया। गृहीत्वा त्वां गृहं नूनंगच्छाम्यद्य वरानने।५२
तथाऽपिमेफलंनस्याद्बलाद्भोगसुखं कुतः। प्रब्रवीमि सुकेशि त्वां विनयावनतोयतः।५३
पुरुषस्य सुखंनस्यादृतेकान्तामुखाम्बुजात्। तत्तथैव हि नारीणां तस्माच्चपुरुषंविना।५४
संयोगे सुखसम्भूतिर्वियोगे दुःखसम्भवः। कान्ताऽसि रूपसम्पन्ना सर्वाऽऽभरणभूषिता।५५
चातुर्यंत्वयि किं नास्ति यतो मां नभजस्यहो। तवोपदिष्टंकेनेदंभोगानांपरिवर्जनम्।५६
वञ्चिताऽसि प्रियालापेवैरिणाकेनचित्त्विह। मुञ्चाग्रहमिमंकान्तेकुरुकार्यंसुशोभनम्।५७
सुखं तव ममाऽपि स्याद्विवाहे विहिते किल। विष्णुर्लक्ष्म्यासहाऽभातिसावित्र्याचसहाऽऽत्मभूः।५८
रुद्रोभातिचपार्वत्याशच्याशतमखस्तथा। कानारीपतिहीनाचसुखंप्राप्नोतिशाश्वतम्।५९
येनत्वमसितापाङ्गिनकरोषिपतिंशुभम्। कामःक्वाद्यगतःकान्तेयस्त्वांबाणैःसुकोमलैः।६०
मादनैः पञ्चभिः कामं न ताडयति मन्दधीः। मन्येऽहमिव कामोऽपि दयावांस्त्वयि सुन्दरि।६१
अबलेतिचमन्वानो न प्रेरयति मार्गणान्। मनोभवस्यवैरं वा किमप्यस्ति मया सह।६२
तेनचत्वय्यरालाक्षिनमुञ्चतिशिलीमुखान्। अथवा मेऽहितैर्देवैर्वारितोऽसौ झषध्वजः।६३
सुखविध्वंसिभिस्तेन त्वयिनप्रहरत्यपि। त्यक्त्वामांमृगशावाक्षिपश्चात्तापंकरिष्यसि।६४
मन्दोदरीव तन्वङ्गि परित्यज्य शुभंनृपम्। अनुकूलं पतिंपश्चात्साचकारशठं पतिम्।
कामार्त्ता च यदा जाता मोहेन व्याकुलान्तरा।।६५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे महिषद्वारादेवीप्रबोधनंनाम षोडशोऽध्यायः।।१६।।

* सप्तदशोऽध्यायः *

सिंहलदेशाधिपस्यचन्द्रसेनराजस्यपुत्र्यामन्दोदर्यावृत्तवर्णनम्

व्यास उवाच

इतिश्रुत्वावचस्तस्यदेवीपप्रच्छदानवम् । कासामन्दोदरीनारीकोऽसौत्यक्तोनृपस्तया ।१
शठः को वानृपःपश्चात्तन्मेब्रूहिकथानकम् । विस्तारेण यथा प्राप्तं दुःखंवनितया पुनः ।२

महिष उवाच

सिंहलोनाम देशोऽस्तिविख्यातःपृथिवीतले । घनपादपसंयुक्तो धनधान्यसमृद्धिमान् ।३
चन्द्रसेनाऽभिधस्तत्र राजाधर्मपरायणः । न्यायदण्डधरः शान्तः प्रजापालनतत्परः ।४
सत्यवादी मृदुःशूरस्तितिक्षुर्नीतिसागरः । शास्त्रवित्सर्वधर्मज्ञोधनुर्वेदेऽतिनिष्ठितः ।५
तस्य भार्यावरारोहा सुन्दरीसुभगाशुभा । सदाचाराऽतिसुमुखी पतिभक्तिपरायणा ।६
नाम्नागुणवतीकान्ता सर्वलक्षणसंयुता । सुषुवे प्रथमे गर्भे पुत्रींसाचाऽतिसुन्दरीम् ।७
पिता चातीव सन्तुष्टः पुत्रीं प्राप्य मनोरमाम् । मन्दोदरीति नामास्याः पिता चक्रे मुदाऽन्वितः ।८
इन्दोः कलेवचात्यर्थं ववृधेसा दिनेदिने । दशवर्षा यदा जाता कन्या चातिमनोहरा ।९
वरार्थं नृपतिश्चिन्तामवाप च दिनेदिने । मद्रदेशाधिपः शूरः सुधन्वा नाम पार्थिवः ।१०
तस्यपुत्रोऽतिमेधावी कम्बुग्रीवोऽतिविश्रुतः । ब्राह्मणैः कथितो राज्ञे स युक्तोऽस्या वरः शुभः ।११
सर्वलक्षणसम्पन्नः सर्वविद्यार्थपारगः । राज्ञा पृष्टा तदा राज्ञी नाम्ना गुणवतीप्रिया ।१२
कम्बुग्रीवायकन्यांस्वांदास्यामि वरवर्णिनीम् । सा तु पत्युर्वचः श्रुत्वा पुत्रीं पप्रच्छ सादरम् ।१३
विवाहं ते पिता कर्तुं कम्बुग्रीवेणवाञ्छति । तच्छ्रुत्वामातरम्प्राहवाक्यंमन्दोदरीतदा ।१४
नाहंपतिंकरिष्यामिनेच्छामेऽस्तिपरिग्रहे । कौमारंव्रतमास्थायकालंनेष्यामिसर्वथा ।१५
स्वातन्त्र्येणचरिष्यामि तपस्तीव्रंसदैव हि । पारतन्त्र्य परंदुःखं मातः संसारसागरे ।१६
स्वातन्त्र्यान्मोक्षमित्याहुः पण्डिताः शास्त्रकोविदाः ।
तस्मान्मुक्ता भविष्यामि पत्या मे न प्रयोजनम् ।।१७।।
विवाहेवर्तमाने तु पावकस्य च सन्निधौ । वक्तव्यंवचनंसम्यक्त्वदधीनाऽस्मिसर्वदा ।१८
श्वश्रूदेवरवर्गाणां दासीत्वं श्वशुरालये । पतिचित्तानुवर्त्तित्वंदुःखाद्दुःखतरं स्मृतम् ।१९
कदाचित्पतिरन्यां वा कामिनीञ्च भजेद्यदि । तदा महत्तरं दुःखं सपत्नीसम्भवं भवेत् ।२०
तदेर्ष्याजायते पत्यौ क्लेशश्चापि भवेदथ । संसारे क्व सुखं मातर्नारीणांच विशेषतः ।२१
स्वभावात्परतन्त्राणां संसारे स्वप्नधर्मिणि । श्रुतं मया पुरा मातरुत्तानचरणात्मजः ।२२
उत्तमः सर्वधर्मज्ञो ध्रुवादवरजो नृपः । पत्नीं धर्मपरां साध्वीं पतिभक्तिपरायणाम् ।२३
अपराधं विना कान्तांत्यक्तवान्विपिने प्रियाम् । एवम्विधानि दुःखानि विद्यमाने तु भर्तरि ।२४
कालयोगान्मृते तस्मिन्नारी स्याद् दुःखभाजनम् । वैधव्यं परमं दुःखं शोकसन्तापकारकम् ।२५
परोषितपतित्वेऽपि दुःखं स्यादधिकंगृहे । मदनाग्निविदग्धायाः किंसुखंपतिसङ्गजम् ।२६
तस्मात्पतिर्नकर्तव्यः सर्वथेतिमतिर्मम । एवं प्रोक्ता तदा माता पतिं प्राह नृपात्मजा ।२७
न च वाञ्छति भर्तारं कौमारव्रतधारिणी । व्रतजाप्यपरानित्यं संसाराद्विमुखीसदा ।२८
न काङ्क्षति पतिकर्तुंबहुदोषविचक्षणा । भार्याया भाषितंश्रुत्वातथैवसंस्थितो नृपः ।२९
विवाहो न कृतः पुत्र्या ज्ञात्वा भावविवर्जिताम् । वर्तमाना गृहेष्वेव पित्रा मात्रा च रक्षिता ।३०
यौवनस्याङ्कुरा जाता नारीणां कामदीपकाः । तथाऽपि सा वयस्याभिः प्रेरिताऽपि पुनः पुनः ।३१
चकमे न पतिं कर्तुं ज्ञानार्थपदभाषिणी । एकदोद्यानदेशे सा विहर्तुं बहुपादपे ।३२

जगाम सुमुखी प्रेम्णा सैरन्ध्रीगणसेविता। रेमे कृशोदरी तत्रापश्यत्कुसुमितालताः।३३
पुष्पाणिचिन्वतीरम्या वयस्याभिःसमावृता। कोशलाधिपतिस्तत्रमार्गेदैववशात्तदा।३४
आजगाम महावीरो वीरसेनोऽतिविश्रुतः। एकाकी रथमारूढः कतिचित्सेवकैर्वृतः।३५
सैन्यञ्च पृष्ठतस्तस्य समायाति शनैः शनैः। दृष्टस्तस्यावयस्या तु दूरतःपार्थिवस्तदा।३६
मन्दोदर्यै तथा प्रोक्तं समायाति नरः पथि। रथारूढो महाबाहू रुपवान्मदनोऽपरः।३७
मन्येऽहं नृपतिःकश्चित्प्राप्तो भाग्यवशादिह। एवं ब्रुवत्यां तत्राऽसौ कोशलेन्द्रः समागतः।३८
दृष्ट्वातामसितापाङ्गीं विस्मयं प्राप भूपतिः। उत्तीर्य स रथात्तूर्णंपप्रच्छपरिचारिकाम्।३९
केयंबालाविशालाक्षीकस्यपुत्रीवदाशु मे। एवं पृष्टा तु सैरन्ध्रीतमुवाच शुचिस्मिता।४०
प्रथमंब्रूहिमेवीरपृच्छामित्वांसुलोचन । कोऽसित्वंकिमिहायातःकिंकार्यंवदसाम्प्रतम्।४१
इति पृष्टस्तुसैरन्ध्र्यातामुवाचमहीपतिः। कोसलोनाम देशोऽस्तिपृथिव्यांपरमाद्भुतः।४२
तस्यपालयिताचाहं वीरसेनाभिधः प्रिये। वाहिनी पृष्ठतः कामं समायाति चतुर्विधा।४३
मार्गभ्रमादिह प्राप्तं विद्धि मां कोसलाधिपम्।

सैरन्ध्र्युवाच

चन्द्रसेनसुता राजनाम्ना मन्दोदरी किल ।।४४।।
उद्याने रन्तुकामेयंप्राप्ताकमललोचना। श्रुत्वातद्भाषितंराजा प्रत्युवाचप्रसाधिकाम्।४५
सैरन्ध्रि! चतुराऽसि त्वं राजपुत्रीं प्रबोधय। ककुत्स्थवंशजश्चाऽहं राजाऽस्मि चारुलोचने!।४६
गान्धर्वेणविवाहेनपतिंमांकुरुकामिनि । नमेभार्याऽस्तिसुश्रोणि वयसोऽद्भुतयौवनाम्।४७
वाञ्छामिरूपसम्पन्नांसुकुलांकामिनीं किल। अथवातेपिता मह्यं विधिनादातुमर्हति।४८
अनुकूलपतिश्चाऽहं भविष्यामि न संशयः।

महिष उवाच

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य सैरन्ध्री प्राह तां तदा ।।४९।।
प्रहस्य मधुरं वाक्यं कामशास्त्रविशारदा। मन्दोदरि नृपः प्राप्तः सूर्यवंशसमुद्भवः।५०
रूपवान्वलवान्कान्तोवयसात्वत्समःपुनः। प्रीतिमान्नृपतिर्जातस्त्वयिसुन्दरिसर्वथा।५१
पिताऽपितेविशालाक्षिपरितप्यतिसर्वथा। विवाहकालंतेज्ञात्वात्वाञ्चवैराग्यसंयुताम्।५२
इत्याहाऽस्मान्सनृपतिविनिःश्वस्यपुनः पुनः। पुत्रींप्रबोधयन्त्वेतांसैरन्ध्र्यःसेवनेरताः।५३
वक्तुं शक्ता वयं न त्वां हठधर्मरतां पुनः। भर्तुः शुश्रूषणं स्त्रीणांपरोधर्मोऽब्रवीन्मनुः।५४
भर्तारंसेवमानावैनारीस्वर्गमवाप्नुयात् । तस्मात्कुरुविशालाक्षिविवाहंविधिपूर्वकम्।५५

मन्दोदर्युवाच

नाऽहं पतिं करिष्यामि चरिष्येतपमद्भुतम्। निवारयनृपंबालेकिंमां पश्यति निस्त्रपः।५६

सैरन्ध्र्युवाच

दुर्जयो देविकामोऽसौकालोऽसौदुरतिक्रमः। तस्मान्मेवचनंपथ्यंकर्तुमर्हसिसुन्दरि!।५७
अन्यथा व्यसनंनूनमापतेदितिनिश्चयः। इतितस्यावचःश्रुत्वाकन्योवाचाथतांसखीम्।५८
यद्यद्भवेत्तद्भवतु दैवयोगादसंशयम्। न विवाहं करिष्येऽहं सर्वथा परिचारिके।५९

महिष उवाच

इति तस्यास्तुनिर्बन्धंज्ञात्वाप्राहनृपंपुनः। गच्छराजन्यथाकामंनेयमिच्छतिसत्पतिम्।६०
नृपस्तु तद्वचः श्रुत्वा निर्गतः सह सेनया। कोशलान्विमना भूत्वा कामिनीं प्रति निःस्पृहः।६१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे देवीमहिषसम्वादेराजपुत्रीमन्दोदरीवृत्तवर्णनंनामसप्तदशोऽध्यायः ।।१७।।

* अष्टादशोऽध्यायः *

महिषासुरवधवर्णनम्

महिष उवाच

तस्यास्तुभगिनीकन्यानाम्नाचेन्दुमतीशुभा । विवाहयोग्यासञ्जातासुरूपाऽवरजायदा ।१
तस्या विवाहःसंवृत्तः सञ्जातश्चस्वयम्वरः । राजानो बहुदेशीयाः सङ्गतास्तत्रमण्डपे ।२
तयावृतो नृपः कश्चिद् बलवान्रूपसंयुतः । कुलशीलसमायुक्तः सर्वलक्षणसंयुतः ।३
तदा कामातुराजाता विटं वीक्ष्य नृपं तु सा । चक्रमेदैवयोगात्तु शठं चातुर्यभूषितम् ।४
पितरंप्राहतन्वङ्गी विवाहं कुरु मे पितः । इच्छा मेऽद्य समुद्भूता दृष्ट्वामद्राधिपंत्विह ।५
चन्द्रसेनोऽपि तच्छ्रुत्वापुत्र्या यद्भाषितं रहः । प्रहसन्नेवमनसातत्कार्ये तत्परोऽभवत् ।६
तमाहूय नृपं गेहे विवाहविधिना ददौ । कन्यां मन्दोदरीं तस्मै पारिवर्हं तथा वहु ।७
चारुदेष्णोऽपितांप्राप्यसुन्दरीं मुदितोऽभवत् । जगाम स्वगृहं तुष्टो राजाऽपि सहितः स्त्रिया ।८
रेमेनृपतिशार्दूलः कामिन्या बहुवासरान् । कदाचिद्दासपत्न्यासरममाणो रहः किल ।९
सैरन्ध्र्या कथितं तस्यैतयादृष्टःपतिस्तथा । उपालम्भंददौतस्मै स्मितपूर्वंरुषाऽन्विता ।१०
कदाचिदपि सामान्यां रहोरूपवतीं नृपः । क्रीडयंल्लालयन्दृष्टः खेदं प्राप तदैव सा ।११
न ज्ञातोऽयं शठःपूर्वं यदा दृष्टः स्वयम्वरे । किंकृतंतुमयामोहाद्वञ्चिताऽहं नृपेण ह ।१२
किंकरोम्यद्य सन्तापं निर्लज्जे निर्घृणे शठे । काप्रीतिरीदृशेपत्यौधिगद्यममजीवितम् ।१३
अद्यप्रभृतिसंसारे सुखंत्यक्तं मयाखलु । पतिसम्भोगजं सर्वं सन्तोषोऽद्य मया कृतः ।१४
अकर्तव्यं कृतं कार्यं तज्जातं दुखदं मम । देहत्यागः क्रियते चेद्धत्याऽतीव दुरत्यया ।१५
पितृगेहं व्रजाम्याशु तत्राऽपि न सुखंभवेत् । हास्यःयोग्यासखीनांतुभवेयंनात्रसंशयः ।१६
तस्मादत्रैव सम्वासोवैराग्ययुतमायया । कर्तव्यःकालयोगेन त्यक्त्वा कामसुखं पुनः ।१७

महिष उवाच

इतिसञ्चिन्त्य सा नारीदुःखशोकपरायणा । स्थितापतिगृहंत्यक्त्वासुखंसंसारजंततः ।१८
तस्मात्त्वमपि कल्याणिमामनादृत्यभूपतिम् । अन्यंकापुरुषंमन्दंकामार्तासंश्रयिष्यसि ।१९
वचनं कुरु मे तथ्यं नारीणां परमं हितम् । अकृत्वा परमंशोकंलप्स्यसे नात्र संशयः ।२०

देव्युवाच

मन्दात्मनगच्छ पातालं युद्धं वा कुरु साम्प्रतम् । हत्वा त्वामसुरान्सर्वान्गमिष्यामि यथासुखम् ।२१
यदा यदा हि साधूनां दुःखं भवतिदानव । तदा तेषां च रक्षार्थं देहं संधारयाम्यहम् ।२२
अरूपायाश्च मेरूपमजन्मायाश्च जन्म च । सुराणांरक्षणार्थायविद्धिदैत्यविनिश्चितम् ।२३

सत्यं ब्रवीमि जानीहि प्रार्थिताऽहं सुरैःकिल ।
त्वद्वधार्थं हयारे त्वां हत्वा स्थास्यामि निश्चला ।।२४।।
तस्माद्युध्यस्व वा गच्छ पातालमसुरालयम् ।
सर्वथा त्वां हनिष्यामि सत्यमेतद् ब्रवीम्यहम् ।।२५।।

व्यास उवाच

इत्युक्तः स तया देव्या धनुरादय दानवः । युद्धकामः स्थितस्तत्रसंग्रामाङ्गणभूमिषु ।२६

मुमोच तरसा वाणान्कर्णाऽऽकृष्टाञ्छिलाशितान् ।
देवी चिच्छेद तान्बाणैः क्रोधान्मुक्तैरयोमुखैः ।।२७।।

तयोः परस्परं युद्धं सम्बभूव भयप्रदम्।देवानां दानवां च परस्परजयैषिणाम्।२८
मध्येदुर्धर आगत्य मुमोचचशिलीमुखान्।देवींप्रतिविषासक्तान्कोपयन्नतिदारुणान्।२६
ततो भगवती क्रुद्धा तं जघान शितैःशरैः।दुर्धरस्तुपपातोर्व्यां गतासुंगिरिशृङ्गवत्।३०
तं तथा निहतं दृष्ट्वा त्रिनेत्रः परमास्त्रवित्।आगत्य सप्तभिर्बाणैर्जघान परमेश्वरीम्।३१
अनागतांस्तुचिच्छेद देवीतान्विशिखैः शरान्।त्रिशूलेनत्रिनेत्रन्तुजघानजगदम्बिका।३२

अन्धकस्त्वाजगामाऽऽशु हतं दृष्ट्वा त्रिलोचनाम्।
गदया लोहमय्याऽऽशु सिंहं विव्याध मस्तके ।।३३।।

सिंहस्तु नखघातेन तं हत्वा बलवत्तरम्।चखादतरसामांसमन्धकस्य रुषाऽन्वितः।३४

तान्रणे निहतान्वीक्ष्य दानवो विस्मयं गतः।
चिक्षेप तरसा बाणानतितीक्ष्णाञ्छिलाशितान् ।।३५।।

द्विधाचक्रेशरान्देवीतानप्राप्ताञ्छिलीमुखैः।गदयाताडयामासदैत्यंवक्षसिचाम्बिका।३६
स गदाभिहतो मूर्छामवापाऽमरबाधकः।विषह्यपीडांपापात्मा पुनरागत्य सत्वरः।३७
जघान गदया सिंहं मूर्ध्नि क्रोधसमन्वितः।सिंहोऽपि नखघातेन तं ददार महासुरम्।३८
विहाय पौरुषं रूपं सोऽपि सिंहो बभूव ह।नखैर्विदारयामास देवीसिंहंमहोत्कटम्।३६
तं च केसरिणं वीक्ष्य देवी क्रुद्धाह्ययोमुखैः।शरैरवाकिरत्तीक्ष्णैः शरैराशीविषैरिव।४०
त्यक्त्वा स हरिरूपं तु गजोभूत्वामदस्रवः।शैलश्शृङ्गंकरे कृत्वाचिक्षेपचण्डिकाम्प्रति।४१
आगच्छतं गिरेःशृङ्गं देवीबाणैः शिलाशितैः।चकार तिलशः खण्डाञ्जहास जगदम्बिका।४२
उत्पत्यच तदा सिंहस्तस्यमूर्ध्नि व्यवस्थितः।नखैर्विदारयामासमहिषं गजरूपिणम्।४३
विहाय गजरूपञ्च बभूवाऽष्टापदी तथा।हन्तुकामो हरिंकोपाद्दारुणो बलवत्तरः।४४
तं वीक्ष्य शरभं देवी खड्गेन सरुषान्विता।उत्तमाङ्गेजघानाशुसोऽपितां प्राहरत्तदा।४५
तयोः परस्परं युद्धं बभूवाऽतिभयप्रदम्।माहिषं रूपमास्थाय शृङ्गाभ्यां प्राहरत्तदा।४६
पुच्छप्रभ्रमणेनाशु शृङ्गाघातैर्महासुरः।ताडयामास तन्वगीं घोररूपो भयानकः।४७
पुच्छेन पर्वताञ्छृङ्गे गृहीत्वा भ्रामयन्बलात्।प्रेषयामास पापात्मा प्रहसन्परया मुदा।४८
तामुवाचबलोन्मत्तस्तिष्ठ देवि रणाङ्गणे।अद्याऽहं त्वांहनिष्यामिरूपयौवनभूषिताम्।४६
मूर्खाऽसि मदमत्ताऽद्ययन्मयासहसङ्गरम्।करोषि मोहिताऽतीव मृषाबलवती खरा।५०
हत्वा त्वां निहनिष्यामि देवान्कपटपण्डितान्।ये नारीं पुरतः कृत्वा जेतुमिच्छन्ति मां शठाः।५१

देव्युवाच

मागर्वंकुरुमन्दात्मंस्तिष्ठतिष्ठरणांगणे ।करिष्यामिनिरातङ्कान्हत्वात्वां सुरसत्तमान्।५२
पीत्वाऽद्यमाधवीमिष्टां शातयामिरणेऽधम।देवानांदुःखदंपापं मुनीनां भयकारकम्।५३

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाचषकंहैमं गृहीत्वासुरयायुतम्।पपौ पुनः पुनःक्रोधाद्धन्तुकामा महासुरम्।५४
पीत्वा द्राक्षासवं मिष्टं शूलमादाय सत्वरा।दुद्राव दानवं देवी हर्षयन्देवतागणान्।५५
देवास्तां तुष्टुवुः प्रेम्णा चक्रुः कुसुमवर्षणम्।जय जीवेति ते प्रोचुर्दुन्दुभीनाञ्च निःस्वनैः।५६
ऋषयःसिद्धगन्धर्वाःपिशाचोरगचारणाः।किन्नराःप्रेक्ष्यसंग्राममंमुदिताःगगनेस्थिताः।५७
सोऽपिनानाविधान्देहान्कृत्वा कृत्वा पुनः पुनः।मायामयाञ्जघानाऽऽजौ देवीं कपटपण्डितः।५८
चण्डिकाऽपिचतंपापंत्रिशूलेनबलाद्धृदि।ताडयामास तीक्ष्णेन क्रोधादरुणलोचना।५६
ताडितोऽसौ पपातोर्व्यां मूर्च्छामाप मुहूर्तकम्।पुनरुत्थाय चामुण्डां पद्भ्यां वेगादताडयत्।६०

विनिहत्य पदाघातैर्जहास च मुहुर्मुहुः। रुरावदारुणं शब्दं देवानां भयकारकम्।६१
ततो देवी सहस्रारं सुनाभं चक्रमुत्तमम्। करेकृत्वाजगादोच्चैः संस्थितंमहिषासुरम्।६२
पश्यचक्रंमदान्धाऽद्य तवकण्ठनिकृन्तनम्। क्षणमात्रंस्थिरोभूत्वा यमलोकंव्रजाधुना।६३
इत्युक्त्वा दारुणं चक्रं मुमोच जगदम्बिका। शिरश्छिन्नं रथाङ्गेन दानवस्य तदा रणे।६४
सुस्रावरुधिरंचोष्णं कण्ठनालाद्गिरेर्यथा। गैरिकाद्यरुणं प्रौढं प्रवाहमिव नैर्झरम्।६५
कबन्धस्तस्य दैत्यस्य भ्रमन्वै पतितःक्षितौ। जयशब्दश्च देवानां बभूव सुखवर्धनः।६६
सिंहस्त्वतिबलस्तत्र पलायनपरानथ। दानवान्भक्षयामास क्षुधार्त इव सङ्गरे।६७
मृते च महिषे क्रूरे दानवाभयपीडिताः। मृतशेषाश्च ये केचित्पातालन्ते ययुर्नृप।६८
आनन्दं परमं जग्मुर्देवास्तस्मिन्निपातिते। मुनयोमानवाश्चैव येचान्येसाधवः क्षितौ।६९

चण्डिकाऽपि रणं त्यक्त्वा शुभे देशेऽथ संस्थिता ।
देवास्तत्राऽऽययुः शीघ्रं स्तोतुकामाः सुखप्रदाम् ।।७०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे महिषासुरवधो नामाऽष्टादशोऽध्यायः ।।१८।।

* एकोनविंशोऽध्यायः *

महिषासुरवधमनुदेवैःकृताभगवतीस्तुतिः

व्यास उवाच

अथ प्रमुदिताः सर्वे देवा इन्द्रपुरोगमाः। महिषं निहतं दृष्ट्वा तुष्टुवुर्जगदम्बिकाम्।१

देवा ऊचुः

ब्रह्मा सृजत्यवति विष्णुरिदं महेशः शक्त्या तदैव हरते ननु चान्तकाले।
ईशा न तेऽपि च भवन्ति तया विहीनास्तस्मात्त्वमेव जगतःस्थितिनाशकर्त्री।२
कीर्तिर्मतिः स्मृतिगती करुणा दया त्वं श्रद्धा धृतिश्च वसुधा कमला जया च।
पुष्टिःकलाऽथ विजया गिरिजा जया त्वं तुष्टिः प्रमा त्वमसि बुद्धिरुमा रमा च।३
विद्या क्षमा जगति कान्तिरपीह मेधा सर्वं त्वमेव विदिता भुवनत्रयेऽस्मिन्।
आभिर्विना तव तु शक्तिभिरांशु कर्तुं को वा क्षमः सकललोकनिवासभूमे।४
त्वं धारणा ननु न चेदसि कूर्मनागौ धर्तुं क्षमो कथमिलामपि तौ भवेताम्।
पृथ्वी न चेत्त्वमसि वा गगने कथं स्थास्यत्येतदम्ब निखिलं बहुभारयुक्तम्।५
ये वा स्तुवन्ति मनुजा अमरान्विमूढा मायागुणैस्तव चतुर्मुखविष्णुरुद्रान्।
शुभ्रांशुवह्नियमवायुगणेशमुख्यान्किं त्वामृते जननि! ते प्रभवन्ति कार्ये।६
रुपये जुह्वति प्रविततेऽल्पधियोऽम्ब यज्ञेवह्नौ सुरान्समधिकृत्य हविःसमृद्धम्।
स्वाहा न चेत्त्वमसि ते कथमापुरद्धा त्वामेव किं न हि यजन्ति ततोहिमूढाः।७
भोगप्रदाऽसि भवतीह चराचराणां स्वांशैर्ददासि खलुजीवनमेव नित्यम्।
स्वीयान्सुराञ्जननि! पोषयसीह यद्वत्तद्वत्परानपि च पालयसीति हेतोः।८
मातः स्वयं विरचितान्विपिने विनोदाद्वन्ध्यान्पलाशरहितांश्च कटूंश्च वृक्षान्।
नोच्छेदयन्ति पुरुषा निपुणाः कथञ्चित्तस्मात्त्वमप्यतितरां परिपासि दैत्यान्।९
यत्त्वं तु हंसि रणमूर्ध्नि शरैरातीन्देवाङ्गनासुरतकेलिमतीन्विदित्वा।
देहान्तरेऽपि करुणारसमाददाना तत्ते चरित्रमिदमीप्सितपूरणाय।१०
चित्रं त्वमीयदमुभी रहिता न संति त्वच्चिन्तितेन दनुजाः प्रथितप्रभावाः।
येषां कृते जननि देहनिबन्धनन्ते क्रीडारसस्तव न चान्यतरोऽत्र हेतुः।११

प्राप्ते कलावहह! दुष्टतरे च काले न त्वां भजन्ति मनुजा ननु वञ्चितास्ते।
धूर्तैः पुराणचतुरैर्हरिशंकराणां सेवापराश्च विहितास्तव निर्मितानाम् ।१२
ज्ञात्वा सुरांस्तव वशानसुरार्दितांश्च ये वै भजन्ति भुवि भावयुता विभग्नान्।
धृत्वा करे सुविमलं खलु दीपकं ते कूपे पतन्ति मनुजा विजलेऽतिघोरे।१३
विद्या त्वमेव सुखदाऽसुखदाप्यविद्या मातस्त्वमेव जननार्तिहरा नराणाम्।
मोक्षार्थिभिस्तु कलिता किल मन्दधीभिर्नाराधिता जननिभोगपरैस्तथाऽज्ञैः।१४
ब्रह्माहरश्च हरिरप्यनिशं शरण्यं पादाम्बुजं तव भजन्ति सुरास्तथाऽन्ये।
तद्वै न येऽल्पमतयो मनसा भजन्ति भ्रान्ताः पतन्ति सततं भवसागरे ते।१५
चण्डि! त्वदङ्घ्रिजलजोत्थरजः प्रसादैर्ब्रह्मा करोति सकलं भुवनं भवादौ।
शौरिश्च पाति खलु संहरते हरस्तु त्वां सेवते न मनुजस्त्विह दुर्भगोऽसौ।१६
वाग्देवता त्वमसि देवि! सुरासुराणां वक्तुंन तेऽमरवराः प्रभवन्ति शक्ताः।
त्वं चेन्मुखे वससि नैव यदैव तेषां यस्माद्भवन्ति मनुजा न हि तद्विहीनाः।१७
शप्तो हरिस्तु भृगुणा कुपितेन कामं मीनो बभूव कमठः खलु सूकरस्तु।
पश्चान्नृसिंह इति यश्छलकृद्धरायां तान्सेवतां जननि! मृत्युभयं न किं स्यात्।१८
शम्भोः पपात भुवि लिङ्गमिदं प्रसिद्धं शापेन तेन च भृगोर्विपिने गतस्य।
तं ये नरा भुवि भजन्ति कपालिनन्तु तेषां सुखं कथमिहाऽपि परत्र मातः।१९
योऽभूद्गजाननगणाधिपतिर्महेशात्तं ये भजन्ति मनुजा वितथप्रपन्नाः।
जानन्ति ते न सकलार्थफलप्रदात्रीं त्वां देवी विश्वजननीं सुखसेवनीयाम्।२०
चित्रं त्वयाऽरिजनताऽपि दयार्द्रभावाद्धत्वा रणे शितशरैर्गमिता द्युलोकम्।
नो चेत्स्वकर्मनिचिते निरये नितान्तं दुःखाऽतिदुःखगतिमापदमापतेत्सा।२१
ब्रह्मा हरश्च हरिरप्युत गर्वभावाज्जानन्ति तेऽपि विबुधा न तव प्रभावम्।
केऽन्ये भवन्ति मनुजा विदितुं समर्थाः सम्मोहितास्तव गुणैरमितप्रभावैः।२२
क्लिश्यन्ति तेऽपि मुनयस्तव दुर्विभाव्यं पादाम्बुजं न हि भजन्तिविमूढचित्ताः।
सूर्याग्निसेवनपराः परमार्थतत्त्वं ज्ञातं न तैः श्रुतिशतैरपि वेदसारम्।२३
मन्ये गुणास्तव भुवि प्रथितप्रभावाः कुर्वन्ति ये हि विमुखान्नतु भक्तिभावात्।
लोकान्स्वबुद्धिरचितैर्विविधाऽऽगमैश्च विष्ण्वीशभास्करगणेशपरान्विधाय।२४
कुर्वन्ति ये तव पदाद्विमुखान्नराग्र्यान्स्वोक्तागमैर्हरिहरार्चनभक्तियोगैः।
तेषां न कुप्यसि दयांकुरुषेऽम्बिके त्वं तान्मोहमन्त्रनिपुणान्प्रथयस्यलञ्च।२५
तुर्ये युगेभवति चाऽतिबलं गुणस्य तुर्यस्यतेनमथितान्यसदागमानि।
त्वां गोपयन्ति निपुणाः कवयः कलौ वै त्वत्कल्पितान्सुरगणानपिसंस्तुवन्ति।२६
ध्यायन्ति मुक्तिफलदां भुवियोगसिद्धां विद्यां परां च मुनयोऽतिविशुद्धसत्त्वाः।
ते नाप्नुवन्ति जननी जठरे तु दुःखं धन्यास्तएवमनुजास्त्वयि ये विलीनाः।२७
चिच्छक्तिरस्ति परमात्मनि तेन सोऽपि व्यक्तो जगत्सुविदितोभवकृत्यकर्ता।
कोऽन्यस्त्वया विरहितः प्रभवत्यमुष्मिन्कर्तुं विहर्तुमपिसञ्चलितुं स्वशक्त्या।२८
तत्त्वानि चिद्विरहितानिजगद्विधातुं किंवा क्षमाणि जगदम्ब! यतो जडानि।
किंचेन्द्रियाणिगुणकर्मयुतानि सन्ति देवि त्वया विरहितानि फलं प्रदातुम्।२९
देवा मखेष्वपि हुतं मुनिभिःस्वभागं गृह्णीयुरम्ब! विधिवत्प्रतिपादितं किम्।
स्वाहा न चेत्त्वमसि तत्रनिमित्तभूता तस्मात्त्वमेवननुपालयसीवविश्वम्।३०

सर्वंत्वयेदमखिलं विहितंभवादौ त्वंपासि वै हरिहरप्रमुखान्दिगीशान्।
कालेऽसि विश्वमपि ते चरितं भवाद्यं जानन्ति नैव मनुजाः क्वनु मन्दभाग्याः।३१
हत्वाऽसुरं महिषरूप धरं महोग्रं मातस्त्वया सुरगणः किल रक्षितोऽयम्।
कां ते स्तुतिं जननि! मन्दधियो विदामो वेदा गतिं तव यथार्थतया न जग्मुः।३२
कार्यं कृतं जगति नो यदसौ दुरात्मा वैरीहतोभुवनकण्टकदुर्विभाव्यः।
कीर्तिः कृता ननु जगत्सु कृपा विधेयाऽप्यस्मांश्च पाहि जननि! प्रथितप्रभावे!।३३

व्यास उवाच

एवं स्तुता सुरैर्देवी तानुवाच मृदुस्वरा। अन्यत्कार्यं च दुःसाध्यं ब्रुवन्तुसुरसत्तमाः।३४
यदा यदा हि देवानां कार्यं स्यादतिदुर्घटम्। स्मर्तव्याऽहं तदा शीघ्रं नाशयिष्यामि चाऽऽपदम्।३५

देवा ऊचुः

सर्वं कृतं त्वया देवि! कार्यं नः खलु साम्प्रतम्। यदयं निहतःशत्रुरस्माकं महिषासुरः।३६
स्मरिष्यामोयथा तेऽम्ब! सदैवपदपङ्कजम्। तथाकुरुजगन्मातर्भक्तिंत्वय्यप्यचञ्चलाम्।३७
अपराधसहस्राणि मातैव सहते सदा। इतिज्ञात्वा जगद्योनिं न भजन्ते कुतो जनाः।३८
द्वौसुपर्णौ तु देहेऽस्मिंस्तयोःसख्यं निरन्तरम्। नान्यः सखा तृतीयोऽस्ति योऽपराधं सहेत हि।३९
तस्माज्जीवःसखायंत्वांहित्वा किंनु करिष्यति। पापात्मा मन्दभाग्योऽसौ सुरमानुषयोनिषु।४०
प्राप्य देहं सुदुष्प्रापं न स्मरेत्त्वां नराधमः। मनसः कर्मणा याचाब्रूमः सत्यं पुनः पुनः।४१
सुखेवाऽप्यथवा दुःखे त्वं नः शरणमद्भुतम्। पाहि नः सततं देवि सर्वैस्तववरायुधैः।४२
अन्यथा शरणं नास्ति त्वत्पदाम्बुजरेणुतः।

व्यास उवाच

एवं स्तुता सुरैर्देवी तत्रैवाऽन्तरधीयत ।।४३।।
विस्मयं परमं जग्मुर्देवास्तां वीक्ष्य निर्गताम् ।।४४।।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां पञ्चमस्कन्धे देवीसान्त्वनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ।।१९।।

* विंशोऽध्यायः *

महिषवधमनुसर्वत्रैवसुखशान्तिप्रसारवर्णनम्

जनमेजय उवाच

अथाऽद्भुतं वीक्ष्य मुने! प्रभावं देव्या जगच्छान्तिकरं वरं च।
न तृप्तिरस्ति द्विजवर्य! श्रृण्वतः कथामृतं ते मुखपद्मजातम् ।।१।।
अन्तर्हितायां च तदा भवान्यां चक्रुश्च किं देवपुरोगमास्ते।
देव्याश्चरित्रं परमं पवित्रं दुरापमेवाल्पपुण्यैर्नराणाम् ।।२।।
कस्तृप्तिमाप्नोति कथाऽमृतेन भिन्नोऽल्पभाग्यात्पटुकर्णरन्ध्रः।
पीतेन येनाऽमरतां प्रयाति धिक्तान्नरान्ये न पिबन्ति सादरम् ।।३।।
लीलाचरित्रं जगदम्बिकाया रक्षान्वितं देव महामुनीनाम्।
संसारवार्धेस्तरणं नराणां कथं कृतज्ञा हि परित्यजेयुः ।।४।।
मुक्ताश्च ये चैव मुमुक्षवश्च संसारिणो रोगयुताश्च केचित्।
तेषां सदा श्रोत्रपुटैश्च पेयं सर्वार्थदं वेदविदो वदन्ति ।।५।।
तथा विशेषेण मुने! नृपाणां धर्मार्थकामेषु सदा रतानाम्।
मुक्ताश्च यस्मात्खलु तत्पिबन्ति कथं न पेयं रहितैश्च तेभ्यः ।।६।।

यैः पूजिता पूर्वभवे भवानी सत्कुन्दपुष्पैरथ चम्पकैश्च ।
बैल्वैर्दलैस्ते भुवि भोगयुक्ता नृपाभवन्तीत्यनुमेयमेवम् ।।७।।
मे भक्तिहीनाः समवाप्य देहं तं मानुषं भारतभूमिभागे ।
यैर्नार्चिता तै धनधान्यहीना रोगान्विताः सन्ततिवर्जिताश्च ।।८।।
भ्रमन्ति नित्यं किल दासभूता आज्ञाकराः केवलभारवाहाः ।
दिवानिशं स्वार्थपराः कदाऽपि नैवाप्नुवन्त्यौदरपूर्तिमात्रम् ।।९।।
अन्धाश्च मूको बधिराश्च खञ्जाः कुष्ठान्विता ये भुवि दुःखभाजः ।
तत्रानुमानं कविभिर्विधेयं नाराधिता तैः सततं भवानी ।।१०।।
ये राजभोगान्वितऋद्धिपूर्णाः संसेव्यमाना बहुभिर्मनुष्यैः ।
दृश्यन्ति ये वा विभवैः समेतास्तैः पूजिताऽम्बेत्यनुमेयमेव ।।११।।

तस्मात्सत्यवतीसूनो! देव्याश्चरितमुत्तमम्। कथयस्वकृपांकृत्वादयावानसिसाम्प्रतम्।१२
हत्वा तं महिषं पापं स्तुता सम्पूजिता सुरैः। क्वगतासामहालक्ष्मीःसर्वतेजःसमुद्भवा।१३
कथितं ते महाभाग गताऽन्तर्धानमाशु सा। स्वर्गे वा मृत्युलोके वा संस्थिता भुवनेश्वरी।१४
लयं गता वा तत्रैव वैकुण्ठे वा समाश्रिता। अथवाहेमशैलेसातत्त्वतोमेवदाऽधुना।१५

व्यास उवाच

पूर्वं मया ते कथितं मणिद्वीपं मनोहरम्। क्रीडास्थानं सदा देव्यावल्लभंपरमंस्मृतम्।१६
यत्र ब्रह्मा हरिः स्थाणुः स्त्रीभावं तेप्रपेदिरे। पुरुषत्वंपुनःप्राप्यस्वानिकार्याणिचक्रिरे।१७
यः सुधासिन्धुमध्येऽस्तिद्वीपः परमशोभनः। नानारूपैःसदातत्रविहारंकुरुतेऽम्बिका।१८
स्तुता सम्पूजिता देवैःसातत्रैवगताशिवा। यत्रसङ्क्रीडतेनित्यंमायाशक्तिःसनातनी।१९
देवास्तां निर्गतां वीक्ष्य देवीं सर्वेश्वरीं तथा। रविवंशोद्भवंचक्रुर्भूमिपालं महाबलम्।२०
अयोध्याधिपतिं वीरं शत्रुघ्नंनामपार्थिवम्। सर्वलक्षणसम्पन्नंमहिषस्याऽऽसने शुभे।२१
दत्त्वा राज्यं तदा तस्मै देवा इन्द्रपुरोगमाः। स्वकीयैर्वाहनैः सर्वे जग्मुःस्वान्यालयानि ते।२२
गतेषु तेषु देवेषु पृथिव्यां पृथिवीपते। धर्मराज्यं बभूवाऽथ प्रजाश्च सुखितास्तथा।२३
पर्जन्यः कालवर्षी च धरा धान्यगुणावृता। पादपाः फलपुष्पाढ्याबभूवुःसुखदाःसदा।२४
गावश्चक्षीरसम्पन्ना घटोघ्न्यः कामदा नृणाम्। नद्यः सुमार्गगाः स्वच्छाः शीतोदाः खगसंयुताः।२५
ब्राह्मणा वेदतत्त्वाश्च यज्ञकर्मरतास्तथा। क्षत्रियाधर्मसंयुक्ता दानाध्ययनतत्पराः।२६
शस्त्रविद्यारता नित्यं प्रजारक्षणतत्पराः। न्यायदण्डधराः सर्वे राजानः शमसंयुताः।२७
अविरोधस्तु भूतानां सर्वेषां सम्बभूव ह। आकरा धनदा नृणां व्रजाः गोयूथसंयुता।२८
ब्राह्मणा क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्च नृपसत्तम। देवीभक्तिपराः सर्वे सम्बभूबुर्धरातले।२९
सर्वत्रयज्ञयूपाश्च मण्डपाश्च मनोहराः। मखैः पूर्णा धराश्चासन्ब्राह्मणैःक्षत्रियैः कृतैः।३०
पतिव्रतधरा नार्यः सुशीलाः सत्यसंयुताः। पितृभक्तिपराःपुत्रा आसन्धर्मपरायणाः।३१
न पाखण्डं न वाऽधर्मः कुत्राऽपि पृथिवीतले। वेदवादाःशास्त्रवादा नान्येवादास्तथाऽभवन्।३२
कलहो नैवकेषाञ्चिन्न दैन्यं नाऽशुभा मतिः। सर्वत्र सुखिनो लोका कालेचमरणंतथा।३३
सुहृदां न वियोगश्च नापदश्च कदाचन। नाऽनावृष्टिर्न दुर्भिक्षं न मारी दुःखदा नृणाम्।३४
न रोगो च मात्सर्यं न विरोधः परस्परम्। सर्वत्रसुखसम्पन्नानरानार्यः सुखान्विताः।३५
क्रीडन्ति मानवाः सर्वे स्वर्गेदेवगणा इव। न चोरानैवपाखण्डावञ्चकादम्भकास्तथा।३६
पिशुनालम्पटाः स्तब्धा न बभूवुस्तदानृप! न वेदद्वेषिणःपापा मानवाः पृथिवीपते।३७
सर्वधर्मरतानित्यं द्विजसेवापरायणाः। त्रिधात्वात्सृष्टिधर्मस्यत्रिविधाब्राह्मणास्ततः।३८

सात्त्विका राजसाश्चैव तामसाश्चतथाऽपरे। सर्वेवेदविदोदक्षाःसात्त्विकाःसत्त्ववृत्तयः।३९
प्रतिग्रहविहीनाश्च दयादमपरायणाः। यज्ञास्ते सात्त्विकैरन्नैः कुर्वाणा धर्मतत्पराः।४०
पुरोडाशविधानैश्च पशुभिर्न कदाचन। दानमध्ययनञ्चैव यजनन्तु तृतीयकम्।४१
त्रिकर्मरसिकास्ते वै सात्त्विका ब्राह्मणा नृप!। राजसा वेदविद्वांसः क्षत्रियाणां पुरोहिताः।४२
षट्कर्मनिरताः सर्वे विधिवन्मांसभक्षकाः। यजनं याजनं दानं तथैवच प्रतिग्रहः।४३
अध्ययनन्तु वेदानां तथैवाऽध्यापनं तु षट्। तामसाः क्रोधसंयुक्ता रागद्वेष पराःपुनः।४४
राज्ञां कर्मकरा नित्यं किञ्चिदध्ययने रताः। महिषे निहते सर्वे सुखिनो वेदतत्परा।४५
बभूवुर्व्रतनिष्णाता दानधर्मपरास्तदा। क्षत्रियाः पालने युक्ता वैश्या वणिजवृत्तयाः।४६
कृषिवाणिज्यगोरक्षाकुसीदवृत्तयः परे। एवं प्रमुदितो लोको महिषे विनिपातिते।४७
अनुद्वेगःप्रजानाम्बै सम्बभूव धनाऽऽगमः। बहुक्षीराः शुभा गावो नद्यश्चैवबहूदकाः।४८
वृक्षा बहुफलाश्चाऽऽसन्मानवा रोगवर्जिताः। नाऽऽधयो नेतयः क्वाऽपि प्रजानां दुःखदायकाः।४९
न निधनमुपयान्ति प्राणिनस्तेऽप्यकाले सकलविभवयुक्ता रोगहीनाः सदैव।
निगमविहितधर्मे तत्पराश्चण्डिकायाश्चरणसरसिजानां सेवने दत्तचित्ताः।५०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां-पञ्चमस्कन्धे महिषवधमनुपृथिवीसुखवर्णनंनामविंशोऽध्यायः ।।२०।।

* एकविंशोऽध्यायः *

शुम्भनिशुम्भद्वारादेवपराजयवर्णनम्

व्यास उवाच

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि देव्याश्चरितमुत्तमम्। सुखदं सर्वजन्तूनां सर्वपापप्रणाशनम्।१
यथा शुम्भो निशुम्भश्च भ्रातरौ बलवत्तरौ। बभूवतुर्महावीरावबध्यौ पुरुषैः किल।२
बहुसेनावृतौ शूरौ देवानां दुःखदौ सदा। दुराचारौ मदोत्सिक्तौ बहुदानवसंयुतौ।३
हतावम्बिकया तौ तु संग्रामेऽतीव दारुणे। देवानाञ्च हितार्थाय सर्वैः परिचरैः सह।४
चण्डमुण्डौ महाबाहू रक्तबीजोऽतिदारुणः। धूम्रलोचननामा च निहतांस्ते रणाङ्गणे।५
तान्निहत्य सुराणां सा जहार भयमुत्तमम्। स्तुता सम्पूजिता देवैर्गिरौहेमाचलेशुभे।६

राजोवाच

कावेतावसुरावादौ कथं तौ बलिनाम्वरौ। केनसंस्थापितौचेहस्त्रीवध्यत्वंकुतोगतौ।७
तपसा वरदानेन कस्य जातौ महाबलौ। कथं च निहतौ सर्वं कथयस्वसविस्तरम्।८

व्यास उवाच

शृणु राजन्कथां दिव्यां सर्वपापप्रणाशिनीम्। देव्याश्चरितसंयुक्तां सर्वार्थफलदां शुभाम्।९
पुरा शुम्भनिशुम्भौ द्वावसुरौ भूमिमण्डले। पातालतश्च सम्प्राप्तौ भ्रातरौ शुभदर्शनौ।१०
तौ प्राप्तयौवनौ चैव चेरतुस्तप उत्तमम्। अन्नोदकं परित्यज्य पुष्करे लोकपावने।११
वर्षाणामयुतं यावद्योगविद्यापरायणौ। एकत्रैवाऽऽसनं कृत्वा तेपाते परमन्तपः।१२
तयोस्तुष्टोऽभवद् ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः। तत्राऽऽगतश्च भगवानारुह्यवरटापतिम्।१३
ताबुभौ च जगत्स्रष्टा दृष्ट्वा ध्यानपरौ स्थितौ। उत्तिष्ठतं महाभागौ तुष्टोऽहं तपसा किल।१४
वाञ्छितम्बाम्बरंकामंददामिब्रुवतामिह। कामदोऽहंसमायातौदृष्ट्वावान्तपसोबलम्।१५
इतिश्रुत्वावचस्तस्यप्रबुद्धौतौसमाहितौ। प्रदक्षिणक्रियां कृत्वा प्रणामञ्चक्रतुस्तदा।१६

दण्डवत्प्रणिपातञ्च कृत्वा तौ दुर्बलाकृती। ऊचतुर्मधुरां वाचं दीनौ गद्गदया गिरा।१७
देवदेव दयासिन्धो भक्तानामभयप्रद!। अमरत्वं च नौ ब्रह्मन्देहि तुष्टोऽसि चेद्विभो।१८
मरणादपरं किञ्चिद्भयंनास्ति धरातले। तस्माद्भयाच्च सन्त्रस्तौ युष्माकं शरणङ्गतौ।१९
त्राहि त्वं देवदेवेश जगत्कर्तः क्षमानिधे। परिस्फोटयविश्वात्मन्सद्योमरणजम्भयम्।२०

ब्रह्मोवाच

किमिदम्प्रार्थनीयं वो विपरीतं तु सर्वथा। अदेयं सर्वथा सर्वैः सर्वेभ्यो भुवनत्रये।२१
जातस्य हि ध्रुवोमृत्युर्ध्रुवञ्जन्म मृतस्यच। मर्यादा विहितालोके पूर्वविश्वकृताकिल।२२
मर्तव्यं सर्वथा सर्वैः प्राणिभिर्नात्रसंशयः। अन्यम्प्रार्थयतंकामं ददामितच्चवाञ्छितम्।२३

व्यास उवाच

तदाकर्ण्यवचस्तस्य सुविमृश्यतुदानवौ। ऊचतुःप्रणिपत्याऽथ ब्रह्माणं पुरतःस्थितम्।२४
पुरुषैरमराद्यैश्च मानवैर्मृगपक्षिभिः। अवध्यत्वंकृपासिन्धो देहि नौ वाञ्छितम्वरम्।२५
नारी बलवती काऽस्ति या नो नाशं करिष्यति।
न बिभीवः स्त्रियःकामं त्रैलोक्ये सचराचरे।।२६।।
अवध्यौभातरौस्यातांनरेभ्यःपङ्कजोद्भव!। भयं न स्त्रीजनेभ्यश्च स्वभावादबलाहिसा।२७

व्यास उवाच

इति श्रुत्वातयोर्वाक्यंप्रददौवाञ्छितम्वरम्। ब्रह्मा प्रसन्नमनसा जगामाथस्वमालयम्।२८
गतेऽथ भवने तस्मिन्दानवौ स्वगृहं गतौ। भृगुम्पुरोहितं कृत्व चक्रतुःपूजनन्तदा।२९
शुभे दिने सुनक्षत्रे जातरूपमयं शुभम्। कृत्वा सिंहासनं दिव्यं राज्यार्थम्प्रददौमुनिः।३०
शुम्भाय ज्येष्ठभूतायददौ राज्यासनं शुभम्। सेवनार्थन्तदैवाशु सम्प्राप्ता दानवोत्तमाः।३१
चण्डमुण्डौ महावीरौ भ्रातरौबलदर्पितौ। सम्प्राप्तौसैन्यसंयुक्तौरथवाजिगजान्वितौ।३२
धूम्रलोचननामा च तद्रूपश्चण्डविक्रमः। शुम्भञ्च भूपतिं श्रुत्वा तदागाद्बलसंयुतः।३३
रक्तबीजस्तथा शूरो वरदानबलाधिकः। अक्षौहिणीभ्यां संयुक्तस्तत्रैवागत्यसङ्गतः।३४
तस्यैकं कारणं राजन्संग्रामे युध्यतः सदा। देहाद्रुधिरसम्पातस्तस्य शस्त्राहतस्यच।३५
जायते च यदा भूमावुत्पद्यन्ते ह्यनेकशः। तादृशाः पुरुषाः क्रूरा बहवः शस्त्रपाणयः।३६
सम्भवन्ति तदाकारास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः। युद्धम्पुनस्ते कुर्वन्ति पुरुषारक्तसम्भवाः।३७
अतः सोऽपि महावीर्यः संग्रामेऽतीव दुर्जयः। अवध्यः सर्वभूतानां रक्तबीजो महासुरः।३८
अन्ये च बहवः शूराश्चतुरङ्गसमन्विताः। शुम्भं च नृपतिं मत्वा बभूवुस्तस्य सेवकाः।३९
असंख्याता तदा जाता सेना शुम्भनिशुम्भयोः। पृथिव्याःसकलंराज्यंगृहीतंबलवत्तया।४०
सेनायोगं तदा कृत्वा निशुम्भः परवीरहा। जगाम तरसा स्वर्गे शचीपतिजयाय च।४१
चकाराऽसौ महायुद्धं लोकपालैः समन्ततः। वृत्रहा वज्रपातेन ताडयामास वक्षसि।४२
स वज्राभिहतो भूमौ पपात दानवानुजः। भग्नं बलं तदा तस्य निशुम्भस्यमहात्मनः।४३
भ्रातरं मूर्छितं श्रुत्वा शुम्भः परबलार्दनः। तत्रागत्यसुरान्सर्वांस्ताडयामास सायकैः।४४
कृतं युद्धं महत्तेन शुम्भेनाक्लिष्टकर्मणा। निर्जितास्तु सुराः सर्वे सेन्द्राः पालाश्चसर्वशः।४५
ऐन्द्रं पदं तदा तेन गृहीतं बलवत्तया। कल्पपादपसंयुक्तं कामधेनुसमन्वितम्।४६
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृतास्तेन महात्मना। नन्दनं च वनंप्राप्य मुदितोऽभून्महासुरः।४७
सुधायाश्चैव पानेन सुखमाप महासुरः। कुबेरं स च निर्जित्य तस्य राज्यं चकार ह।४८
अधिकारं तथा भानोः शशिनश्च चकार ह। यमं चैव विनिर्जित्य जग्राह तत्पदंतथा।४९

वरुणस्य तथा राज्यं चकार वह्निकर्म च। वायोःकार्यंनिशुम्भश्च चकारस्वबलान्वितः।५०
ततो देवा विनिर्धूता हृतराज्या हृतश्रियः। सन्त्यज्य नन्दनं सर्वेनिर्ययुर्गिरिगह्वरे।५१
हृताधिकारास्ते सर्वे बभ्रमुर्विजने वने। निरालम्बा निराधारानिस्तेजस्कानिरायुधाः।५२
विचेरुरमराः सर्वे पर्वतानां गुहासु च। उद्यानेषु च शून्येषु नदीनां गह्वरेषु च।५३
न प्रापुस्ते सुखं क्वाऽपिस्थानभ्रष्टाविचेतसः। लोकपालामहाराजदैवाधीनंसुखं किल।५४
बलवन्तो महाभागा बहुज्ञा धनसंयुताः। काले दुःखं तथा दैन्यमाप्नुवन्तिनराधिप।५५
चित्रमेतन्महाराज कालस्यैव विचेष्टितम्। यः करोति नरं तावद्राजानं भिक्षुकं ततः।५६
दातारं याचकं चैव बलवन्तं तथाऽबलम्। पण्डितं विकलंकामंशूरं चाऽतीवकातरम्।५७
मखानाञ्च शतं कृत्वा प्राप्येन्द्रासनमुत्तमम्। पुनर्दुःखं परं प्राप्तं कालस्य गतिरीदृशी।५८
कालः करोति धर्मिष्ठं पुरुषं ज्ञानसंयुतम्। तमेवाऽतीव पापिष्ठं ज्ञानलेशविवर्जितम्।५९
न विस्मयोऽत्र कर्तव्यः सर्वथा कालचेष्टिते। ब्रह्मविष्णुहरादीनापीदृक्कष्ट चेष्टितम्।६०
विष्णुर्जननमाप्नोति सूकरादिषु योनिषु। हरः कपाली सञ्जातः कालेनैव बलीयसा।६१

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे शुम्भनिशुम्भद्वारास्वर्गविजयवर्णनंनामैकविंशोऽध्यायः ।।२१।।

* द्वाविंशोऽध्यायः *

देवीप्रबोधनायदेवकृतास्तुतिःभगवत्यासान्त्वनम्

व्यास उवाच

पराजिताः सुराः सर्वे राज्यं शुम्भः शशास ह। एकवर्षसहस्रं तु जगाम नृपसत्तम।१
भ्रष्टराज्यास्ततोदेवाश्चिन्तामापुःसुदुस्तराम्। गुरुं दुःखातुरास्तेतु पप्रच्छुरिदमादृताः।२
किंकर्तव्यंगुरो! ब्रूहि सर्वज्ञस्त्वंमहामुनिः। उपायोऽस्तिमहाभागदुःखस्यविनिवृत्तये।३
उपचारपरानूनं वेदमन्त्राः सहस्रशः। वाञ्छितार्थकरा नूनं सूत्रैः सँल्लक्षिताः किल।४
इष्टयोः विविधाःप्रोक्ताःसर्वकामफलप्रदाः। ताः कुरुष्वमुनेनूनंत्वंजानासिचतत्क्रियाः।५
विधिः शत्रुविनाशाय यथोद्दिष्टः सदागमे। तंकुरुष्वाऽद्यविधिवद्यथा नो दुःखसंक्षयः।६
भवेदाङ्गिरसाऽद्यैवतथात्वं कर्तुमर्हसि। दानवानां विनाशाय अभिचारं यथामति।७

बृहस्पतिरुवाच

सर्वे मन्त्राश्च वेदोक्ता दैवाधीनफलाश्च ते। न स्वतन्त्राः सुराधीश! तथैकान्तफलप्रदाः।८
मन्त्राणां देवता यूयं ते तुदुःखैकभाजनम्। जाताःस्मकालयोगेनकिंकरोमिप्रसाधनम्।९
इन्द्राग्निवरुणादीनां यजनं यज्ञकर्मसु। ते यूयं विपदं प्राप्ताः करिष्यन्ति किमिष्टयः।१०
अवश्यं भाविभावानां प्रतीकारो न विद्यते। उपायस्त्वथकर्तव्यइतिशिष्टानुशासनम्।११
देवंहि बलवत्केचित्प्रवदन्ति मनीषिणः। उपायवादिनो दैवं प्रवदन्ति निरर्थकम्।१२
देवं चैवाऽप्युपायश्चद्वावेवाऽभिमतौनृणाम्। केवलं दैवमाश्रित्यन स्थातव्यं कदाचन।१३
उपायः सर्वथा कार्यो विचार्य स्वधिया पुनः। तस्माद्ब्रवीमि वःसर्वान्सम्विचार्य पुनः पुनः।१४
पुराभगवती तुष्टा जघान महिषासुरम्। युष्माभिस्तुस्तुतादेवी वरदानं ददावथ।१५
आपदं नाशयिष्यामि संस्मृता वा सदैव हि। यदा यदावो देवेशाआपदोदेवसम्भवाः।१६
प्रभवन्ति तदाकामं स्मर्तव्याऽहंसुरैःसदा। स्मृताऽहंनाशयिष्यामियुष्माकंपरमापदः।१७
तस्माद्धिमाचले गत्वा पर्वते सुमनोहरे। आराधनंचण्डिकायाःकुरुध्वं प्रेमपूर्वकम्।१८
मायाबीजविधानज्ञास्तत्पुरश्चरणेरताः। जानाम्यहं योगबलात्प्रसन्ना सा भविष्यति।१९

दुःखस्याऽन्तोऽद्य युष्माकं दृश्यते नाऽत्र संशयः ।
तस्मिञ्छैले सदा देवी तिष्ठतीति मया श्रुतम् ।।२०।।
स्तुता सम्पूजिता सद्यो वाञ्छितार्थान्प्रदास्यति ।
निश्चयं परमं कृत्वा गच्छध्वं वै हिमालयम् ।।२१।।
सुराः! सर्वाणि कार्याणि सा वः कामं विधास्यति ।

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा देवास्ते प्रययुर्गिरिम् ।।२२।।
हिमालयं महाराज! देवीध्यानपरायणाः। मायाबीजं हृदा नित्यं जपन्तः सर्व एव हि।२३
नमश्चक्रुर्महामायां भक्तानामभयप्रदाम्। तुष्टुवुः स्तोत्रमन्त्रैश्च भक्त्या परमया युताः।२४
नमो देवि विश्वेश्वरि प्राणनाथे सदानन्दरूपे सुरानन्ददे ते ।
नमो दानवान्तप्रदे मानवानामनेकार्थदे भक्ति गम्यस्वरूपे ।।२५।।
न ते नामसंख्यां न ते रूपमीदृक्तथा कोऽपि वेदादिदेवस्वरूपे! ।
त्वमेवाऽसि सर्वेषु शक्तिस्वरूपा प्रजासृष्टिसंहारकाले सदैव ।।२६।।
स्मृतिस्त्वं धृतिस्त्वं त्वमेवाऽसि बुद्धिर्जरा पुष्टितुष्टी धृतिः कान्तिशान्ती ।
सुविद्या सुलक्ष्मीर्गतिः कीर्तिमेधे त्वमेवाऽसि विश्वस्य बीजम्पुराणम् ।।२७।।
यदा यैः स्वरूपैः करोषीह कार्यं सुराणाञ्च तेभ्यो नमामोऽद्य शान्त्यै ।
क्षमा योगनिद्रा दया त्वं विवक्षा स्थिता सर्वभूतेषु शस्तैः स्वरूपैः ।।२८।।
कृतं कार्यमादौ त्वया यत्सुराणां हतोऽसौ महारिर्मदान्धो हयारिः ।
दया ते सदा सर्वदेवेषु देवि! प्रसिद्धा पुराणेषु वेदेषु गीता ।।२९।।
किमत्राऽस्ति चित्रं यदम्बा सुते स्वं मुदा पालयेत्पोषयेत्सम्यगेव ।
यतस्त्वं जनित्री सुराणां सहाया कुरुष्वैकचित्तेन कार्यं समग्रम् ।।३०।।
न वा ते गुणानामियत्तां स्वरूपं वयं देवि जानीमहे विश्ववन्द्ये! ।
कृपापात्रमित्येव मत्वा तथाऽस्मान्भयेभ्यः सदा पाहि पातुं समर्थे! ।।३१।।
विना बाणपातैर्विना मुष्टिघातैर्विना शूलखड्गैर्विना शक्ति दण्डैः ।
रिपून्हन्तुमेवाऽसि शक्ता विनोदात्तथाऽपीह लोकोपकारायलीला ।।३२।।
इदं शाश्वतन्नैव जानन्ति मूढा न कार्यम्विना कारणं सम्भवेद्वा ।
वयं तर्कयामोऽनुमानं प्रमाणं त्वमेवाऽसि कर्ताऽस्य विश्वस्यचेति ।।३३।।
अजः सृष्टिकर्ता मुकुन्दोऽविताऽयं हरो नाशकृद्वै पुराणे प्रसिद्धः ।
न किं त्वत्प्रसूतास्त्रयस्ते युगादौ त्वमेवाऽसि सर्वस्य तेनैव माता ।।३४।।
त्रिभिस्त्वं पुराऽऽराधिता देवि! दत्ता त्वया शक्तिरूपा च तेभ्यः समग्रा ।
त्वया संयुतास्ते प्रकुर्वन्ति कामं जगत्पालनोत्पत्तिसंहारमेव ।।३५।।
ते किं न मन्दमतयो यतयो विमूढास्त्वां ये न विश्वजननीं समुपाश्रयन्ति ।
विद्याम्परां सकलकामफलप्रदां तां मुक्तिप्रदां विबुधवृन्दसुवन्दिताङ्घ्रिम् ।।३६।।
ये वैष्णवाः पाशुपताश्च सौरा दम्भास्त एव प्रतिभान्ति नूनम् ।
ध्यायन्ति न त्वां कमलां च लज्जां कान्तिं स्थितिं कीर्तिमथाऽपि पुष्टिम् ।।३७।।
हरिहरादिभिरप्यथ सेविता त्वमिह देववरैरसुरैस्तथा ।
भुवि भजन्ति न येऽल्पधियो नरा जननि! ते विधिना खलवञ्चिताः ।।३८।।
जलधिजापदपङ्कजरञ्जनं जतुरसेन करोति हरिः स्वयम् ।
त्रिनयनोऽपि धराधरजाङ्घ्रिपङ्कजपरागनिषेवणतत्परः ।।३९।।

किमपरस्य नरस्य कथानकैस्तव पदाब्जयुगं न भजन्ति के ।
विगतरागगृहाश्च दयां क्षमां कृतधियो मुनयोऽपि भजन्ति ते ॥४०॥
देवि त्वदङ्घ्रिभजने न जना रता ये संसारकूपपतिताः पतिताः किलाऽमी ।
ते कुष्टगुल्मशिराधियुता भवन्ति दारिद्र्यदैन्यसहिता रहिताःसुखौघैः ॥४१॥
ये काष्ठभारवहने यवसावहारे कार्ये भवन्ति निपुणा धनदारहीनाः ।
जानीमहेऽल्पमतिभिर्भवदङ्घ्रिसेवा पूर्वे भवे जननि! तैर्न कृता कदापि ॥४२॥

व्यास उवाच

एवं स्तुता सुरैः सर्वैरम्बिका करुणान्विता। प्रादुर्बभूव तरसा रूपयौवनसंयुता।४३
दिव्याम्बरधरा देवी दिव्यभूषणभूषिता। दिव्यमाल्यसमायुक्ता दिव्यचन्दनचर्चिता।४४
जगन्मोहनलावण्या सर्वलक्षणलक्षिता। अद्वितीयस्वरूपा सा देवानां दर्शनं गता।४५
जाह्नव्यां स्नातुकामा सा निर्गता गिरिगह्वरात्। दिव्यरूपधरादेवीविश्वमोहनमोहिनी।४६
देवान्स्तुतिपरानाह मेघगम्भीरया गिरा। प्रेमपूर्वं स्थितं कृत्वा कोकिलामञ्जुवादिनी।४७

देव्युवाच

भोः भोः सुरवराः! काऽत्र भवद्भिः स्तूयते भृशम्। किमर्थं ब्रूत वः कार्यं चिन्ताविष्टाः कुतः पुनः।४८

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा भाषितं तस्या मोहिता रूपसम्पदा। प्रेमपूर्वंहृदुत्साहास्तामूचुःसुरसत्तमाः ।४६

देवा ऊचुः

देवि! स्तुमस्त्वां विश्वेशि! प्रणताः स्म कृपार्णवे! ।
पाहि नः सर्वदुःखेभ्यःसम्विग्नान्दैत्यतापितान् ॥५०॥

पुरात्वया महादेवि! निहत्यासुरकण्टकम्। महिषंनोवरोदत्तःस्मर्तव्याऽहंसदाऽऽपदि।५१
स्मरणाद्दैत्यजांपीडांनाशयिष्याम्यसंशयम्। ते नत्वं संस्मृता देवि! नूनमस्माभिरित्यपि।५२
अद्य शुम्भनिशुम्भौ द्वावसुरौ घोरदर्शनौ। उत्पन्नौ विघ्नकर्तारावहन्यौपुरुषैः किल।५३
रक्तबीजश्च बलवांश्चण्डमुण्डौ तथाऽसुरौ। एतैरन्यैश्च देवानांहृतंराज्यं महाबलैः।५४
गतिरन्यानचाऽस्माकंत्वमेवाऽसि महाबले। कुरु कार्यं सुराणांवैदुःखितानांसुमध्यमे।५५
देवास्त्वदंघ्रिभजने निरताः सदैव ते दानवैरतिबलैर्विपदं सुनीताः।
तान्देवि! दुःखरहितान्कुरु भक्तियुक्तान्मातस्त्वमेव शरणं भव दुःखितानाम्।५६
सकलभुवनरक्षा देवि! कार्या त्वयाऽद्य स्वकृतमिति विदित्वा विश्वमेतद्युगादौ।
जननि! जगति पीडां दानवा दर्पयुक्ताः स्वबलमदसमेतास्ते प्रकुर्वन्ति मातः!।५७

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपञ्चमस्कन्धे देवकृतादेव्याराधनावर्णनंनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥

* त्रयोविंशोऽध्यायः *

देवीचरित्रेपार्वत्याःकौशिक्याविर्भावस्तत्रपार्वत्याकृष्णवर्णग्रहणेनकालिकेति सञ्ज्ञा-मधुरंगायन्त्याश्चण्डमुण्डद्वारादेव्यादर्शनंतत्सर्वंशुम्भनिशुम्भदूतद्वारातत्पुरस्ताद्वर्णनम्

व्यास उवाच

एवं स्तुता तदा देवी दैवतैः शत्रुतापितैः। स्वशरीरात्परं रूपं प्रादुर्भूतं चकार ह।१
पार्वत्यास्तु शरीराद्वै निःसृता चाऽम्बिका यदा। कौशिकीति समस्तेषुततो लोकेषु पठ्यते।२

निःसृतायां तु तस्यां सा पार्वती तनुव्यत्ययात् ।
कृष्णरूपाऽथ सञ्जाता कालिका सा प्रकीर्तिता ॥३॥

मषीवर्णा महाघोरा दैत्यानां भयवर्धिनी। कालरात्रीति सा प्रोक्ता सर्वकामफलप्रदा।४
अम्बिकायाः परं रूपं विरराज मनोहरम्। सर्वभूषणसंयुक्तं लावण्यगुणसंयुतम्।५
ततोऽम्बिका तदादेवानित्युवाच ह सस्मिता। तिष्ठन्तु निर्भयायूयंहरिष्यामिरिपूनिह।६
कार्यं वः सर्वथा कार्यंविहरिष्याम्यहंरणे। निशुम्भादीन्वधिष्यामियुष्माकंसुखहेतवे।७
इत्युक्त्वा सातदादेवीसिंहारूढा मदोत्कटा। कालिकापार्श्वतःकृत्वाजगामनगरेरिपोः।८
सागत्वोपवने तस्थावम्बिका कालिकान्विता। जगावथ कलंतत्रजगन्मोहनमोहनम्।९
श्रुत्वा तन्मधुरं गानं मोहमीयुः खगा मृगाः। मुदञ्च परमाम्प्रापुरमरा गगने स्थिताः।१०
तस्मिन्नवसरे तत्र दानवौ शुम्भसेवकौ। चण्डमुण्डाभिधौघोरौ रममाणौयदृच्छया।११
आगतौ ददृशाते तु तां तदा दिव्यरूपिणीम्। अम्बिकां गानसंयुक्तां कालिकां पुरतःस्थिताम्।१२
दृष्ट्वातां दिव्यरूपाञ्च दानवौ विस्मयान्वितौ। जग्मतुस्तरसा पार्श्वं शुम्भस्य नृपसत्तम!।१३
तौ गत्वा तौ समासीनं दैत्यानामधिपं गृहे। ऊचतुर्मधुरांवाणींप्रणम्यशिरसानृपम्।१४
राजन्हिमालयात्कामंकामिनीकाममोहिनी। सम्प्राप्तासिंहमारूढा सर्वलक्षणसंयुता।१५
नेदृशी देवलोकेऽस्ति न गन्धर्वपुरेतथा। न दृष्टा न श्रुता क्वाऽपिपृथिव्यांप्रमदोत्तमा।१६
गानञ्च तादृशं राजन्करोति जनरञ्जनम्। मृगास्तिष्ठन्ति तत्पार्श्वेमधुरस्वरमोहिताः।१७
ज्ञायतां कस्यपुत्रीयंकिमर्थमिहचागता। गृह्यतां राजशार्दूलतवयोग्याऽस्ति कामिनी।१८
ज्ञात्वाऽऽनय गृहे भार्यां कुरु कल्याणलोचनाम्। निश्चितं नास्ति संसारे नारी त्वेवम्विधा किल।१९
देवानां सर्वरत्नानि गृहीतानि त्वया नृप। कस्मान्नेमां वरारोहां प्रगृह्णासि नृपोत्तम।२०
इन्द्रस्यैरावतःश्रीमान्पारिजाततरुस्तथा। गृहीतोऽश्वः सप्तमुखस्त्वयानृपबलात्किल।२१
विमानंवैधसन्दिव्यंमरालध्वजसंयुतम्। त्वयाऽऽत्तं रत्नभूतं तद्बलेन नृपचाद्भुतम्।२२
कुबेरस्य निधिः पद्मस्त्वया राजन्समाहृतः। छत्रं जलपतेःशुभं गृहीतं तत्त्वयाबलात्।२३
पाशश्चापिनिशुम्भेन भ्रात्रातवनृपोत्तम। गृहीतोऽस्ति हठात्कामं वरुणस्यजितस्यच।२४
अम्लानपङ्कजां तुभ्यं मालां जलनिधिर्ददौ। भयात्तवमहाराज रत्नानि विविधानिच।२५
मृत्योःशक्तिर्यमस्यापिदण्डःपरमदारुणः। त्वयाजित्वाहृतेः कामं किमन्यद्वण्यतेनृप।२६
कामधेनुर्गृहीताऽद्य वर्तते सागरोद्भवा। मेनकाद्यावशे राजंस्तव तिष्ठन्ति चाप्सराः।२७
एवंसर्वाणिरत्नानि त्वयाऽऽत्तानिबलादपि। कस्तां न गृह्यते कान्तारत्नमेषा वराङ्गना।२८
सर्वाणि ते गृहस्थानि रत्नानि विशदान्यथ। अनया सम्भविष्यन्ति रत्नभूतानिभूपते।२९
त्रिषु लोकेषु दैत्येन्द्र नेदृशी वर्तते प्रिया। तस्मात्तामानयाशुत्वं कुरुभार्यांगनोहराम्।३०

व्यास उवाच

इति श्रुत्वा तयोर्वाक्यं मधुरं मधुराक्षरम्। प्रसन्नब्रवूनः प्राह सुग्रीवं सन्निधौस्थितम्।३१
गच्छ सुग्रीव दूत! त्वंकुरु कार्यम्विचक्षण। वक्तव्यञ्च तथातत्रयथाऽभ्येतिकृशोदरी।३२
उपायौ द्वौ प्रयोक्तव्यौकान्तासुसुविचक्षणैः। सामदाने इतिर्प्राहुःशृङ्गाररसकोविदाः।३३
भेदे प्रयुज्यमानेऽपि रसाभासस्तु जायते। निग्रहे रसभङ्गःस्यात्तस्मात्तौदूषितौबुधैः।३४
सामदानमुखैर्वाक्यैःश्लक्ष्णैर्नर्मयुतैस्तथा। कानयाति वशे दूत कामिनीकामपीडिता।३५

व्यास उवाच

सुग्रीवस्तु वचः श्रुत्वाशुम्भोक्तंसुप्रियम्पटु। जगामतरसातत्रयत्राऽऽस्तेजगदम्बिका।३६
सोऽपश्यत्सुमुखींकान्तांसिंहस्योपरि संस्थिताम्। प्रणम्य मधुरं वाक्यमुवाच जगदम्बिकाम्।३७

दूत उवाच

वरोरु त्रिदशारातिः शुम्भःसर्वाङ्ग सुन्दरः। त्रैलोक्याधिपतिःशूरःसर्वजिद्राजतेनृपः ।३८
तेनाऽहं प्रेषितः कामं त्वत्सकाशं महात्मना। त्वद्रूपश्रवणासक्तचित्तेनाऽतिविदूयता ।३९
वचनन्तस्य तन्वङ्गि शृणु प्रेमपुरःसरम्। प्रणिपत्य यथा प्राह दैत्यानामधिपस्त्वयि।४०
देवा मयाजिताःसर्वे त्रैलोक्याधिपतिस्त्वहम्। यज्ञभागानहं कान्ते! गृह्णामीह स्थितः सदा।४१
हृतसारा कृता नूनं द्यौर्मया रत्नवर्जिता। यानिरत्नानि देवानां तानिचाऽऽहृतवानहम्।४२
भोक्ताऽहं सर्वरत्नानांत्रिषुलोकेषुभामिनि!। वशानुगाः सुराः सर्वेममदैत्याश्चमानवाः।४३
त्वद्गुणैः कर्णमागत्य प्रविश्य हृदयान्तरम्। त्वदधीनः कृतः कामं किङ्करोऽस्मि करोमि किम्।४४
त्वमाज्ञापय रम्भोरु तत्करोमि वशानुगः। दासोऽहंतव चार्वङ्गि रक्ष मांकामबाणतः।४५

भज मां त्वं मरालाक्षि! तवाधीनं स्मराकुलम्।
त्रैलोक्यस्वामिनी भूत्वा भुङ्क्ष्व भोगाननुत्तमान् ।।४६।।

तव चाज्ञाकरः कान्ते भवामि मरणावधि। अवध्योऽस्मि वरारोहे सदेवासुरमानुषैः।४७
सदा सौभाग्यसंयुक्ता भविष्यसिवरानने। यत्र ते रमते चित्तं तत्र क्रीडस्व सुन्दरि।४८
इति तस्य वचश्चित्ते विमृश्य मदमन्थरे। वक्तव्यं यद्भवेत्प्रेम्णा तद्ब्रूहि मधुरम्वचः।४९

शुम्भाय चञ्चलापाङ्गि! तद्ब्रवीम्यहमाशुवै।

व्यास उवाच

तद्दूतवचनं श्रुत्वा स्मितं कृत्वा सुपेशलम् ।।५०।।
तं प्राह मधुराम्वाचं देवी देवार्थसाधिका।

श्रीदेव्युवाच

जानाम्यहं निशुम्भञ्च शुम्भञ्चाऽतिबलं नृपम् ।।५१।।

जेतारं सर्वदेवानां हन्तारञ्चैव विद्विषाम्। राशिं सर्वगुणानाञ्च भोक्तारंसर्वसम्पदाम्।५२
दातारञ्चाऽतिशूरञ्च सुन्दरं मन्मथाकृतिम्। द्वात्रिंशल्लक्षणैर्युक्तमवध्यं सुरमानुषैः।५३
ज्ञात्वासमागताऽस्म्यत्र द्रष्टुकामामहासुरम्। रत्नंकनकमायातिस्वशोभाधिकवृद्धये ।५४
तत्राऽहंस्वपतिं द्रष्टुं दूरादेवाऽऽगताऽस्मिवै। दृष्टा मयासुराःसर्वेमानवाभुविमानदाः।५५
गन्धर्वा राक्षसाश्चान्ये ये चाऽतिप्रियदर्शनाः। सर्वेशुम्भभयाद्भीता वेपमानाविचेतसः।५६
श्रुत्वाशुम्भगुणानत्रप्राप्ताऽस्म्यद्यदिदृक्षया । गच्छ दूत महाभाग ब्रूहि शुम्भंमहाबलम्।५७
निर्जने श्लक्ष्णयावाचावचनं वचनान्मम। त्वांज्ञात्वाबलिनांश्रेष्ठंसुन्दराणाञ्चसुन्दरम्।५८
दातारं गुणिनं शूरं सर्वविद्याविशारदम्। जेतारं सर्वदेवानां दक्षं चोग्रं कुलोत्तरम्।५९
भोक्तारंसर्वरत्नानांस्वाधीनंस्वबलोन्नतम् । पतिकामाऽस्म्यहंसत्यंतवयोग्यानराधिप।६०
स्वेच्छया नगरे तेऽत्र समायातामहामते। ममास्तिकारणं किंचिद्विवाहेराक्षसोत्तम!।६१
बालभावाद्व्रतं किञ्चित्कृतं राजन्मया पुरा। क्रीडन्त्या च वयस्याभिः सहैकान्ते यदृच्छया।६२
स्वदेहबलदर्पेण सखीनां पुरतो रहः। मत्समानबलः शूरो रणे मां जेष्यति स्फुटम्।६३
तं वरिष्याम्यहंकामंज्ञात्वातस्यबलाबलम्। जहसुर्वचनंश्रुत्वासख्यो विस्मितमानसाः।६४
किमेतया कृतं क्रूरं व्रतमद्भुतमाशु वै। तस्मात्त्वमपि राजेन्द्र ज्ञात्वामे हीदृशं बलम्।६५

जित्वा मां समरेणाऽत्र (स्वबलेनाऽत्र) विवाहं कुरु सुन्दर!।।६६।।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपञ्चमस्कन्धे देव्यासुग्रीवदूतायस्वव्रतकथनंनाम त्रयोविंशोऽध्यायः।।२३।।

* चतुर्विंशोऽध्यायः *

देवीपार्श्वेगमनायशुम्भनिशुम्भयोर्मिथोमन्त्रद्वारादूतप्रेषणम्

व्यास उवाच

देव्यास्तद्वचनं श्रुत्वा स दूतः प्राह विस्मितः ।
किं ब्रूते रुचिरापाङ्गि! स्त्रीस्वभावाद्धि साहसात् ।।१।।
इन्द्राद्यानिर्जिता येन देवादैत्यास्तथाऽपरे। तं कथं समरेदेविजेतुमिच्छसिभामिनि!।२
त्रैलोक्येतादृशोनास्तियःशुम्भंसमरेजयेत्। कात्वंकमलपत्राक्षितस्याग्रेयुधिसाम्प्रतम्।३
अविचार्यनवक्तव्यं वचनं क्वापिसुन्दरि। बलं स्वपरयोर्ज्ञात्वा वक्तव्यं समयोचितम्।४
त्रैलोक्याधिपतिःशुम्भस्तवरूपेणमोहितः। त्वांचप्रार्थयतेराज्ञा कुरुतस्येप्सितम्प्रिये।५
त्यक्त्वामूर्खस्वभावंत्वंसम्मान्यवचनंमम। भज शुम्भं निशुम्भं वा हितमेतद्ब्रवीमिते।६
शृङ्गारः सर्वथा सर्वैः प्राणिभिः परया मुदा। सेवनीयो बुद्धिमद्भिर्नवानामुत्तमो यतः।७
नागमिष्यसि चेद्बाले! सङ्क्रुद्धःपृथिवीपतिः। अन्यानाज्ञाकरान्प्रेष्य बलान्नेष्यति साम्प्रतम्।८
केशेष्वाकृष्यतेनूनंदानवाबलदर्पिताः। त्वां नयिष्यन्ति वामोरु! तरसाशुम्भसन्निधौ।९
स्वलज्जांरक्षतन्वङ्गिसाहसंसर्वथा त्यज। मानितागच्छतत्पार्श्वेमानपात्रं यतोऽसिवै।१०
क्व युद्धं निशितैर्बाणैः क्व सुखं रतिसङ्गजम्। सारासारं परिच्छिद्य कुरुमेवचनं पटु।११
भज शुम्भं निशुम्भं वा लब्धाऽसि परमं शुभम् ।

देव्युवाच

सत्यं दूत! महाभाग! प्रवक्तुं निपुणोह्यसि ।।१२।।
निशुम्भशुम्भौजानामिबलवन्तावितिध्रुवम्। प्रतिज्ञामेकृताबाल्यादन्यथासाकथंभवेत्।१३
तस्माद्ब्रूहिनिशुम्भञ्चशुम्भंवाबलवत्तरम्। विनायुद्धंनमेभर्ताभविताकोऽपिसौष्ठवात्।१४
जित्वामांतरसाकामंकरंगृह्णातुसाम्प्रतम्। युद्धेच्छयासमायातां विद्धिमामबलां नृप।१५
युद्धंदेहिसमर्थोऽसिवीरधर्मंसमाचर। बिभेषि मम शूलाच्चेत्पातालं गच्छमाचिरम्।१६
त्रिदिवञ्च धरां त्यक्त्वा जीवितेच्छा यदस्ति ते ।
इति दूत वदाऽऽशु त्वं गत्वा स्वपतिमादरात् ।।१७।।
स विचार्य यथायुक्तं करिष्यति महाबलः। संसारे दूतधर्मोऽयंयत्सत्यम्भाषणङ्किल।१८
शत्रौ पत्यौ च धर्मज्ञ! तथा त्वं कुरु मा चिरम् ।

व्यास उवाच

अथ तद्वचनं श्रुत्वा नीतिमद्बलसंयुतम् ।।१९।।
हेतुयुक्तं प्रगल्भञ्च विस्मितः प्रययौ तदा। गत्वा दैत्यपतिं दूतो विचार्य च पुनःपुनः।२०
प्रणम्य पादयोः प्रह्वः प्रत्युवाच नृपं च तम्। राजनीतिकरंवाक्यं मृदुपूर्वंप्रियम्वचः।२१

दूत उवाच

सत्यं प्रियञ्च वक्तव्यं तेन चिन्तापरोह्यहम्। सत्यं प्रियञ्च राजेन्द्र वचनं दुर्लभङ्किल।२२
अप्रियं वदतां कामं राजा कुप्यति सर्वथा। साक्षात्कुतः समायाता कस्यवाकिम्बलाऽबला।२३
नज्ञानगोचरं किञ्चित्किंब्रवीमिविचेष्टितम्। युद्धकामामयादृष्टागर्विता कटुभाषिणी।२४
तयायत्कथितंसम्यक्तच्छृणुष्व महामते। मया बाल्यात्प्रतिज्ञेयं कृतापूर्वं विनोदतः।२५
सखीनां पुरतः कामं विवाहम्प्रति सर्वथा। यो मां युद्धे जयेदद्धा दर्पञ्चविधुनोतिवै।२६
तम्वरिष्याम्यहं कामं पतिं समबलंकिल। न मे प्रतिज्ञामिथ्या सा कर्तव्यानृपसत्तम।२७

तस्माद्युद्ध्यस्व धर्मज्ञ! जित्वा मां स्ववशं कुरु ।
तयेति व्याहृतं वाक्यं श्रुत्वाऽहं समुपागतः ।।२८।।
यथेच्छसि महाराजतथाकुरुतवप्रियम्। सा युद्धार्थं कृतमतिः सायुधा सिंहगामिनी।२९
निश्चला वर्तते भूप! तद्योग्यं तद्विधीयताम् ।

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य सुग्रीवस्य नराधिपः ।।३०।।
पप्रच्छ भूतरं शूरं समीपस्थं महाबलम् ।

शुम्भ उवाच

भ्रातः! किमत्र कर्तव्यं ब्रूहि सत्यं महामते! ।।३१।।
नार्येका योद्धुकामाऽस्ति समाह्वयति साम्प्रतम् ।
अहं गच्छामि संग्रामे त्वं वा गच्छ बलान्वितः ।।३२।।
यद्रोचते निशुम्भाऽद्य तत्कर्तव्यं मया किल ।

निशुम्भ उवाच

न मया न त्वया वीर गन्तव्यं रणमूर्धनि ।।३३।।
प्रेषयस्वमहाराज त्वरितं धूम्रलोचनम्। स गत्वातांरणेजित्वा गृहीत्वाचारुलोचनाम्।३४
आगमिष्यति शुम्भाय विवाहः सम्विधीयताम् ।

व्यास उवाच

तन्निशम्य वचस्तस्य शुम्भो भ्रातुः कनीयसः ।।३५।।
कोपात्सम्प्रेषयामास पार्श्वस्थं धूम्रलोचनम् ।

शुम्भ उवाच

धूम्रलोचन! गच्छाऽऽशु सैन्येन महताऽऽवृतः ।।३६।।
गृहीत्वाऽऽनयतां मुग्धां स्ववीर्यमदमोहिताम् ।
देवो वा दानवो वाऽपि मनुष्यो वा महाबलः ।।३७।।
तत्पार्ष्णिग्राहताम्प्राप्तोहन्तव्यस्तरसात्वया। तत्पार्श्ववर्तिनींकालींहत्वा संगृह्यतांपुनः।३८
शीघ्रमत्रसमागच्छकृत्वाकार्यमनुत्तमम् । रक्षणीयात्वयासाध्वीमुञ्चन्तीमृदु मार्गणान्।३९
यत्नेन महतावीर मृदुदेहा कृशोदरी। तत्सहायाश्च हन्तव्या ये रणे शस्त्रपाणयः।४०
सर्वथा सा न हन्तव्या रक्षणीया प्रयत्नतः ।

व्यास उवाच

इत्यादिष्टस्तदा राज्ञा तरसा धूम्रलोचनः ।।४१।।
प्रणम्य शुम्भं सैन्येन वृतःशीघ्रंययौरणे। असाधूनां सहस्राणां षष्ट्यातेषांवृतस्तथा।४२
स ददर्श ततो देवीं रम्योपवनसंस्थिताम। दृष्ट्वा तां मृगशावाक्षीं विनयेन समन्वितः।४३
उवाचवचनंश्लक्ष्णं हेतुमद्रसभूषितम्। शृणु देवि! महाभागे शुम्भस्त्वद्विरहाऽऽतुरः।४४
दूतं प्रेषितवान्पार्श्वेतव नीतिविशारदः। रसभङ्गभयोद्विग्नः सामपूर्वं त्वयि स्वयम्।४५
तेनागत्य वचः प्रोक्तंविपरीतम्वराननने। वचसा तेन मे भर्ता चिन्ताऽऽविष्टमना नृपः।४६
बभूव रसमार्गज्ञे शुम्भः कामविमोहितः। दूतेन तेन न ज्ञातं हेतुगर्भम्वचस्तव।४७
यो मां जयति संग्रामेयदुक्तंकठिनम्वचः। न ज्ञातस्तेनसंग्रामो द्विविधः खलुमानिनि।४८
रतिजोऽथोत्साहजश्चपात्रभेदेविवक्षितः। रतिजस्त्वयिवामोरुशत्रोरुत्साहजः स्मृतः।४९
सुखदःप्रथमः कान्ते दुःखदश्चारिजःस्मृतः। जानाम्यहम्वरारोहे भवत्या मानसङ्किल।५०

रतिसंग्रामभावस्ते हृदये परिवर्तते। इति तज्ज्ञं विदित्वा मां त्वत्सकाशं नराधिपः।५१
प्रेषयामास शुम्भोऽद्य बलेन महताऽऽवृतम्। चतुराऽसि महाभागे शृणु मेवचनं मृदु।५२
भज शुम्भं त्रिलोकेशं देवदर्पनिबर्हणम्। पट्टराज्ञीप्रिया भूत्वाभुङ्क्ष्व भोगाननुत्तमान्।५३
जेष्यति त्वां महाबाहुः शुम्भः कामबलार्थवित्। विचित्रान्कुरु हावांस्त्वं सोऽपि भावान्करिष्यति।५४
भविष्यति कालिकेयं तत्र वै नर्मसाक्षिणी। एवं सङ्करयोगेन पतिर्मे परमार्थवित्।५५
जित्वात्वां सुखशय्यायां परिश्रान्तां करिष्यति। रक्तदेहां नखाघातैर्दन्तैश्च खण्डिताधराम्।५६
स्वेदक्लिन्नांप्रभग्नांत्वांसम्विधास्यतिभूपतिः। भवितामानसःकामो रतिसंग्रामजस्तव।५७
दर्शनाद्वशएवाऽऽस्ते शुम्भः सर्वात्मना प्रिये। वचनं कुरु मेपथ्यंहितकृच्चाऽपिपेशलम्।५८
भजशुम्भंगणाध्यक्षं माननीयाऽतिमानिनी। मन्दभाग्याश्च ते नूनं ह्यस्त्रयुद्धप्रियाश्चये।५९
नतदर्हाऽसि कान्ते त्वं सदा सुरतवल्लभे। अशोकं कुरु राजानम्पादघातविकासितम्।६०
बकुलं सीधुसेकेन तथा कुरबकं कुरु।।६१।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे देवीमाहात्म्ये देवीपार्श्वेधूम्रलोचनदूतप्रेषणंनामचतुर्विंशोऽध्यायः।।२४।।

* पञ्चविंशोऽध्यायः *

देव्यायुद्धार्थंचण्डमुण्डदैत्यप्रेषणम्

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाविररामाऽसौवचनं धूम्रलोचनः। प्रत्युवाचतदाकाली प्रहस्य ललितम्वच।१
विदूषकोऽसि जाल्म! त्वं शैलूष इव भाषसे। वृथा मनोरथांश्चित्तेकरोषिमधुरं वदन्।२
वलवान्वलसंयुक्तः प्रेषितोऽसि दुरात्मना। कुरु युद्धंवृथा पादं मुञ्च मूढमतेऽधुना।३
हत्वा शुम्भं निशुम्भं च त्वदन्यान्वा बलाधिकान्।
देवीक्रुद्धा शराऽऽघातैर्व्रजिष्यति निजालयम्।।४।।
क्वाऽसौमन्दमतिःशुम्भःक्वाविश्वविमोहिनी। अयुक्तःखलुसंसारेविवाहविधिरेतयोः।५
सिंही किंत्वतिकामार्ताजम्बुकंकुरुतेपतिम्। करिणीगर्दभम्वाऽपिगवयंसुरभिःकिमु।६
गच्छ शुम्भं निशुम्भञ्च वद सत्यं वचोमम। कुरु युद्धं न चेद्याहि पातालंतरसाऽधुना।७

व्यास उवाच

कालिकाया वचः श्रुत्वा स दैत्योधूम्रलोचनः। तामुवाचमहाभागाक्रोधसंरक्तलोचनः।८
दुर्दर्शेत्वां निहत्याजौ सिंहं च मदगर्वितम्। गृहीत्वैनां गमिष्यामिराजानंप्रत्यहंकिल।९
रसभङ्गभयात्कालिबिभेमित्विहसाम्प्रतम्। नो चेत्त्वांनिशितैर्बाणैर्हन्म्यद्यकलहप्रिये।१०

कालिकोवाच

किं विकत्थसि मन्दात्मन्नाऽयं धर्मो धनुष्मताम्।
स्वशक्त्या मुञ्च विशिखान्गन्ताऽसि यमसंसदि।।११।।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वावचनं दैत्यःसंगृह्यकार्मुकं दृढम्। कालिकांतांशरासारैर्ववर्षाऽतिशिलाशितैः।१२
देवास्तु प्रेक्षकास्तत्र विमानवरसंस्थितः। तांस्तुवन्तोजयेत्यूचुर्देवी शक्रपुरोगमाः।१३
तयोः परस्परं युद्धं प्रवृत्तञ्चाऽतिदारुणम्। बाणखड्गगदाशक्तिमुसलादिभिरुत्कटम्।१४
कालिकाबाणपातैस्तु हत्वा पूर्वं खरानथ। बभञ्ज तद्रथं व्यूढं जहास च मुहुर्मुहुः।१५
स चाऽन्यं रथमारूढः कोपेन प्रज्वलन्निव। बाणवृष्टिं चकारोग्रांकालिकोपरि भारत।१६

साऽपि चिच्छेद तरसा तस्य बाणान्नसङ्गतान् ।
मुमोचाऽन्यानुग्रवेगान्दानवोपरि कालिका ॥१७॥
तैर्बाणैर्निहतास्तस्य पार्ष्णिग्राहाः सहस्रशः ।
बभञ्ज च रथम्वेगात्सूतंहत्वा खरानपि ॥१८॥

चिच्छेद तद्धनुःसद्योबाणैरुरगसन्निभैः। मुदं चक्रे सुराणां सा शङ्खनादन्तथाऽकरोत्।१६
विरथं परिघं गृह्य सर्वलोकमयं दृढम्। आजगाम रथोपस्थं कुपितो धूम्रलोचनः।२०
वाचानिर्भर्त्सयन्कालींकरालःकालसन्निभः। अद्यैवत्वांहनिष्यामि कुरूपेपिङ्गलोचने।२१
इत्युक्त्वा सहसाऽऽगत्य परिघं क्षिपते यदा। हुङ्कारेणैव तं भस्म चकार तरसाऽम्बिका।२२
दृष्ट्वा भस्मीकृतंदैत्यं सैनिकाभयविह्वलाः। चक्रुः पलायनं सद्यो हा तातेत्यब्रुवन्पथि।२३
देवास्तन्निहतं दृष्ट्वा दानवं धूम्रलोचनम्। मुमुचुः पुष्पवृष्टिं ते मुदिता गगने स्थिताः।२४
रणभूमिस्तदा राजन्दारुणा समपद्यत। निहतैर्दानवैरश्वैः खरैश्च वारणैस्तथा।२५
गृध्राःकाका वटाःश्येनावरफाजम्बुकास्तथा। ननृतुश्चुक्रुशुः प्रेतान्पतितानृणभूमिषु।२६
अम्बिकातद्रणस्थानं त्यक्त्वाक्रूरंस्थलान्तरे। गत्वा चकार चाप्युग्रंशङ्खनादम्भयप्रदम्।२७
तंश्रुत्वादरशब्दन्तुशुम्भसद्मनिसंस्थितः। दृष्ट्वाऽथदानवान्भग्नानागतान्रुधिरोक्षितान्।२८
छिन्नपादकराक्षांश्च मञ्चकारोपितानपि। भग्नपृष्ठकटिग्रीवान्क्रन्दमानाननेकशः।२६

वीक्ष्य शुम्भो निशुम्भश्च क्व गतो धूम्रलोचनः ।
कथम्भग्नाः समायाता नाऽऽनीता किं वरानना ॥३०॥

सैन्यं कुत्र गतं मन्दाःकथयन्तुयथोचितम्। कस्यायं शङ्खनादोऽद्य भूयते भयवर्धनः।३१

गणा ऊचुः

बलञ्च पातितं सर्वं निहतो धूम्रलोचनः। कृतं कालिकया कर्म रणभूमावमानुषम्।३२
शङ्खनादोऽम्बिकायास्तुगगनं व्याप्य राजते। हर्षदः सुरसङ्घानां दानवानाञ्चशोककृत्।३३
यदा निपातिताः सर्वे तेन केसरिणाविभो!। रथा भग्ना हयाश्चैवबाणपातैर्विनाशिताः।३४
गगनस्थाः सुराश्चक्रुः पुष्पवृष्टिंमुदाऽन्विताः। दृष्ट्वा भग्नम्बलंसर्वम्पातितं धूम्रलोचनम्।३५
निश्चयस्तु कृतोऽस्माभिर्जयोनैवभवेदिति। विचारंकुरुराजेन्द्रमन्त्रिभिर्मन्त्रवित्तमैः।३६
विस्मयोऽयं महाराज यदेका जगदम्बिका। भवद्भिः सहयुद्धायसंस्थितासैन्यवर्जिता।३७
निर्भयैकाकिनी बाला सिंहारूढामदोत्कटा। चित्रमेतन्महाराज! भासतेऽद्भुतमञ्जसा।३८
सन्धिर्वा विग्रहोवाऽद्य स्थानंनिर्याणमेवच। मन्त्रयित्वा महाराज कुरुकार्यंयथारुचि।३६

तत्सन्निधौ बलं नाऽस्ति तथाऽपि शत्रुतापन! ।
पार्ष्णिग्राहाः सुराः सर्वे भविष्यन्ति किलाऽऽपदि ॥४०॥

समये तत्समीपस्थौ ज्ञातौ च हरिशङ्करौ। लोकपालाः समीपेऽद्यवर्तन्तेगगनेस्थिताः।४१
रक्षोगणाश्च गन्धर्वाः किन्नरामानुषास्तथा। तत्सहायाश्च मन्तव्याः समये सुरतापन।४२

अस्माकम्मतिमानेन ज्ञायते सर्वथेदृशम् ।
अम्बिकायाः सहायाऽऽशात्तत्कार्याशा न काचन ॥४३॥

एकानाशयितुं शक्ता जगत्सर्वञ्चराचरम्। का कथा दानवानान्तु सर्वेषामितिनिश्चयः।४४
इति ज्ञात्वा महाभागयथारुचितथा कुरु। हितं सत्यंमितंवाक्यं वक्तव्यमनुयायिभि।४५

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनन्तेषां शुम्भःपरबलार्दनः। कनीयांसं समानीय पप्रच्छ रहसिस्थितः।४६

भ्रातःकालिकयाऽद्यैव निहतो धूम्रलोचनः।बलञ्चशान्तितं सर्वंगणाभग्नाःसमागताः।४७
अम्बिका शङ्खनादम्वै करोति मदगर्विता।ज्ञानिनाञ्चैव दुर्ज्ञेया गतिःकालस्यसर्वथा।४८
तृणं वज्रायते नूनं वज्रञ्चैव तृणायते।बलवान्बलहीनः स्याद्दैवस्य गतिरीदृशी।४९
पृच्छामित्वांमहाभागकिंकर्तव्यमितःपरम् ।अभोग्याचाम्बिकानूनंकारणादत्रवागता।५०
युक्तम्पलायनम्वीर युद्धं वा वद सत्वरम्।लघुज्येष्ठं विजानामि त्वामहंकार्यसङ्कटे।५१

निशुम्भ उवाच

न वा पलायनं युक्तं न दुर्गग्रहणन्तथा।युद्धमेव परं श्रेयः सर्वथैवानयाऽनघ!।५२
ससैन्योऽहंगमिष्यामिरणेतुप्रवराश्रितः ।हत्वा तामागमिष्यामितरसात्वबलामिमाम।५३
अथवा बलवद्दैवादन्यथा चेद्भविष्यति।मृते मयि त्वयाकार्यं विमृश्यच पुनः पुनः।५४

इति तस्य वचः श्रुत्वा शुम्भः प्रोवाच चाऽनुजम् ।
तिष्ठ त्वं चण्डमुण्डौ द्वौ गच्छतांबलसंयुतौ ।।५५।।

शशकग्रहणायाऽत्र नयुक्तं गजमोचनम्।चण्डमुण्डौ महावीरौतां हन्तुं सर्वथा क्षमौ।५६
इत्युक्त्वा भ्रातरंशुम्भंसम्भाष्यचमहाबलौ।उवाचवचनंराजाचण्डमुण्डौपुरः स्थितौ।५७
गच्छतंचण्डमुण्डौद्वौस्वसैन्यपरिवारितौ ।हन्तुंतामबलांशीघ्रं निर्लज्जांमदगर्विताम्।५८

गृहीत्वाऽथ निहत्याऽऽजौ कालिकां पिङ्गलोचनाम् ।
आगम्यतां महाभागौ कृत्वा कार्यं महत्तरम् ।।५९।।
सा नाऽऽयाति गृहीताऽपि गर्विता चाम्बिका यदि ।
तदा बाणैर्महातीक्ष्णैर्हन्तव्याऽऽहवमण्डिता ।।६०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे देव्यासहयुद्धायचण्डमुण्डप्रेषणंनाम पञ्चविंशोऽध्यायः।।२५।।

* षड्विंशोऽध्यायः *

चण्डमुण्डनिपातनवर्णनंदेव्याश्चण्डिकेतिवर्णनम्

व्यास उवाच

इत्याज्ञप्तौतदावीरौचण्डमुण्डौमहाबलौ ।जग्मतुस्तरसैवाऽऽजौसैन्येनमहताऽन्वितौ।१
दृष्ट्वातत्रस्थितांदेवींदेवानांहितकारिणीम् ।ऊचतुस्तौमहावीर्यौतदासामान्वितम्वचः।२
बालेत्वंकिं न जानासिशुम्भंसुरबलार्दनम्।निशुम्भञ्च महावीर्यं तुराषाड्विजयोद्धतम्।३
त्वमेकासिवरारोहे!कालिकासिंहसंयुता।जेतुमिच्छसिदुर्बुद्धेशुम्भं सर्वबलान्वितम्।४

मतिदः कोऽपि ते नास्ति नारी वाऽपि नरोऽपि वा ।
देवास्त्वां प्रेरयन्त्येव विनाशाय तवैव ते ।।५।।

विमृश्य कुरु तन्वङ्गि! कार्यंस्वपरयोर्बलम्।अष्टादशभुजत्वात्त्वं गर्वञ्चकुरुषे मृषा।६
किंभुजैर्बहुभिर्व्यर्थैरायुधैः किं श्रमप्रदैः।शुम्भस्याऽग्रे सुराणाम्वै जेतुःसमरशालिनः।७
ऐरावतकरच्छेत्तुर्दन्तिदारणकारिणः ।जयिनः सुरसङ्घानां कार्यं कुरु मनोगतम्।८
वृथा गर्वायसे कान्ते! कुरुमेवचनम्प्रियम्।हितन्तवविशालाक्षि सुखदं दुःखनाशनम्।९
दुःखदानिचकार्याणित्याज्यानिदूरतोबुधैः।सुखदानिचसेव्यानि शास्त्रतत्त्वविशारदैः।१०
चतुराऽसि पिकालापे पश्य शुम्भबलं महत्।प्रत्यक्षं सुरसङ्घानां मर्दनेन महोदयम्।११
प्रत्यक्षञ्चपरित्यज्य वृथैवानुमितिः किल।सन्देहसहिते कार्ये नविपश्चित्प्रवर्तते।१२
शत्रुः सुराणाम्परमः शुम्भः समरदुर्जयः।तस्मात्त्वां प्रेरयत्यत्र देवा दैत्येशपीडिताः।१३

तस्मात्त्वद्वचनैःस्निग्धैर्वञ्चिताऽसि शुचिस्मिते!। दुःखाय तव देवानां! शिक्षा स्वार्थस्य साधिका।१४
कार्यमित्रं परिक्षिप्य धर्ममित्रं समाश्रयेत्। देवाःस्वार्थपराः कामंत्वामहंसत्यमब्रुवम्।१५
भज शुम्भं सुरेशानं जेतारम्भुवनेश्वरम्। चतुरं सुन्दरं शूरं कामशास्त्रविशारदम्।१६
ऐश्वर्यं सर्वलोकानां प्राप्स्यसे शुम्भशासनात्। निश्चयं परमं कृत्वा भर्तारम्भज शोभनम्।१७

व्यास उवाच

इति तस्य वचःश्रुत्वा चाऽन्धस्य जगदम्बिका। मेघगम्भीरनिनदं जगर्ज पुनरब्रवीत्।१८
गच्छजाल्ममृषाकिंत्वंभाषसेवञ्चकंवचः। त्यक्त्वा हरिहरादींश्च शुम्भंकस्माद्भजेपतिम्।१९
नमेकश्चित्पतिःकार्यो न कार्यं पतिनासह। स्वामिनी सर्वभूतानामहमेव निशामय।२०
शुम्भा मे बहवो दृष्टा निशुम्भाश्चसहस्रशः। घातिताश्च मयापूर्वं शतशो दैत्यदानवाः।२१
ममाऽग्रे देववृन्दानि विनष्टानि युगेयुगे। नाशं यास्यन्ति दैत्यानां यूथानि पुनरद्य वै।२२
काल एवागतोऽस्त्यत्रदैत्यसंहारकारकः। वृथा त्वं कुरुषे यत्नं रक्षणायात्मसन्ततेः।२३
कुरु युद्धं वीरधर्मरक्षायै त्वं महामते। मरणंभाविदुस्त्याज्यं यशो रक्ष्यं महात्मभिः।२४
किन्ते कार्यं निशुम्भेन शुम्भेनचदुरात्मना। वीरधर्मम्परम्प्राप्य गच्छ स्वर्गंसुरालयम्।२५
शुम्भोनिशुम्भश्चैवाऽन्ये ये चाऽत्र तव बान्धवाः। सर्वे तवाऽनुगाः पश्चादागमिष्यन्ति साम्प्रतम्।२६
क्रमशःसर्वदैत्यानांकरिष्याम्यद्यसंक्षयम्। विषादं त्यजमन्दात्मन्कुरुयुद्धं विशाम्पते।२७
त्वामहं निहनिष्यामि भ्रातरन्तवसाम्प्रतम्। तव शुम्भं निशुम्भञ्चरक्तबीजंमदोत्कटम्।२८
अन्यांश्च दानवान्सर्वान्हत्वाऽहं समराङ्गणे। गमिष्यामि यथास्थानं तिष्ठ वा गच्छ वा द्रुतम्।२९
गृहाणाऽस्त्रं वृथापुष्ट! कुरु युद्धंमयाऽधुना। किञ्जल्पसिमृषावाक्यंसर्वथाकातरप्रियम्।३०

व्यास उवाच

तयेत्थं प्रेरितौदैत्यौचण्डमुण्डौक्रुधाऽन्वितौ। ज्याशब्दंतरसाघोरं चक्रतुर्बलदर्पितौ।३१
साऽपि शङ्खस्वनञ्चक्रेपूरयन्तीदिशोदश। सिंहोऽपिकुपितस्तावन्नादंसमकरोद्बली।३२
तेन नादेन शक्राद्या जहर्षुरमरास्तदा। मुनयो यक्षगन्धर्वाः सिद्धाः साध्याश्चकिन्नराः।३३
युद्धं परस्परन्तत्रजातंकातरभीतिदम्। चण्डिका चण्डयोस्तीव्रं बाणखड्गगदादिभिः।३४
चण्डमुक्ताञ्छरान्देवीचिच्छेदनिशितैःशरैः। मुमोच पुनरुग्रा सा चण्डिकापन्नगानिव।३५
गगनंछादितन्तत्र सङ्ग्रामे विशिखैस्तदा। शलभैरिव मेघान्ते कर्षकाणां भयप्रदैः।३६
मुण्डोऽपि सैनिकैः सार्धम्पपाततरसारणे। मुमोच बाणवृष्टिं वै क्रुद्धः परमदारुणः।३७
बाणजालंमहद्दृष्ट्वा क्रुद्धातत्राऽम्बिकाभृशम्। कोपेन वदनन्तस्या बभूव घनसन्निभम्।३८
कदलीपुष्पनेत्रञ्च भ्रुकुटीकुटिलन्तदा। निष्क्रान्ताचतदाकाली ललाटफलकाद्द्रुतम्।३९
व्याघ्रचर्माम्बरा क्रूरा गजचर्मोत्तरीयका। मुण्डमालाधरा घोरा शुष्कवापीसमोदरा।४०
खड्गपाशधराऽतीवभीषणाभयदायिनी। खट्वाङ्गधारिणीरौद्रा कालरात्रिरिवाऽपरा।४१
विस्तीर्णवदना जिह्वाञ्चालयन्ती मुहुर्मुहुः। विस्तारजघना वेगाज्जघानासुरसैनिकान्।४२
करे कृत्वा महावीरांस्तरसा सा रुषान्विता। मुखे चिक्षेप दैतेयान्पिपेष दशनैः शनैः।४३
गजान्घण्टान्वितान् हस्ते गृहीत्वा निदधौ मुखे।
सारोहान्भक्षयित्वाऽऽजौ साट्टहासञ्चकार ह ।।४४।।
तथैव तुरगानुष्ट्रांस्तथा सारथिभिः सह। निक्षिप्यवक्त्रेदशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम्।४५
हन्यमानम्बलम्प्रेक्ष्य चण्डमुण्डौ महासुरौ। छादयामासतुर्देवीं बाणाऽऽसारैरनन्तरैः।४६
चण्डश्चण्डकरच्छायञ्चक्रं चक्रधरायुधम्। चिक्षेप तरसा देवीं ननाद च मुहुर्मुहुः।४७

नदन्तं वीक्ष्य तं काली रथाङ्गञ्च रविप्रभम्। बाणेनैकेन चिच्छेद सुप्रभन्तत्सुदर्शनम्।४८
तञ्जघान शरैस्तीक्ष्णैश्चण्डंचण्डी शिलाशितैः।
मूर्छितोऽसौ पपातोर्व्यां देवीबाणार्दितो भृशम् ।।४९।।
पतितम्भ्रातरम्वीक्ष्य मुण्डो दुःखार्दितस्तदा। चकारशरवृष्टिञ्च कालिकोपरिकोपतः।५०
चण्डिकामुण्डनिर्मुक्तांशरवृष्टिंसुदारुणाम् । ईषिकास्त्रैर्बलान्मुक्तैश्चकारतिलशःक्षणात्।५१
अर्धचन्द्रेणबाणेन ताडयामास तम्पुनः। पतितोऽसौमहावीर्यो मेदिन्यांमदवर्जितः।५२
हाहाकारो महानासीद्दानवानाम्बले तदा। जहर्षुरमराः सर्वे गगनस्था गतव्यथाः।५३
विहाय मूर्च्छाञ्चण्डस्तु संगृह्य महतीङ्गदाम्। तरसा ताडयामास कालिकान्दक्षिणे भुजे।५४
वञ्चयित्वा गदाघातं तम्बबन्ध महासुरम्। तरसा बाणपाशेन मन्त्रमुक्तेन कालिका।५५
उत्थितस्तुतदामुण्डो बद्धं दृष्ट्वाऽनुजम्बलात्। आजगामसुसन्नद्धःशक्तिंकृत्वाकरेदृढाम्।५६
आगच्छन्तंतदाकालीदानवम्वीक्ष्यसत्वरम्। वबन्ध तरसातन्तु द्वितीयम्भ्रातरभृशम्।५७
गृहीत्वा तौ महावीर्यौ चण्डमुण्डौ शशाविव।
कुर्वती विपुलं हासमाजगामाऽम्बिकाम्प्रति ।।५८।।
आगत्य तामथोवाच गृहाणेमौ पशू प्रिये। रणयज्ञार्थमानीतौ दानवौ रणदुर्जयौ।५९
तावानीतौतदावीक्ष्यचण्डिकातौवृकाविव। अम्बिकाकालिकाम्प्राहमाधुरीसंयुतंवचः।६०
वधं मा कुरु मा मुञ्चचतुराऽसि रणप्रिये। देवानांकार्यसंसिद्धिःकर्तव्या तरसात्वया।६१

व्यास उवाच

इतितस्यावचःश्रुत्वाकालिकाप्राहतां पुनः। युद्धयज्ञेऽतिविख्यातेखड्गयूपे प्रतिष्ठिते।६२
आलम्भञ्चकरिष्यामियथाहिंसानजायते। इत्युक्त्वासा तदादेवीखड्गेनशिरसीतयोः।६३
चकर्त तरसा काली पपौचरुधिरम्मुदा। एवन्दैत्यौहतौदृष्ट्वामुदितोवाचचाम्बिका।६४
कृतंकार्यंसुराणान्तेददाम्यद्यवरं शुभम्। चण्डमुण्डौहतौयस्मात्तस्मात्तेनाम कालिके।६५
चामुण्डेति सुविख्यातम्भविष्यति धरातले।।६६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे चण्डमुण्डवधेनदेव्याश्चामुण्डेतिनामवर्णनंषड्विंशोऽध्यायः।।२६।।

* सप्तविंशोऽध्यायः *

शुम्भनिशुम्भद्वारादेव्याःसमीपेरक्तबीजप्रेषणम्

व्यास उवाच

हतौ तौ दानवौ दृष्ट्वाहतशेषाश्चसैनिकाः। पलायनन्ततःकृत्वा जग्मुःसर्वेनृपम्प्रति।१
भिन्नाङ्गाविशिखैःकेचित्केचिच्छिन्नकरास्तथा। रुधिरस्रावदेहाश्चरुदन्तोऽभिययुःपरे।२
गत्वा दैत्यपतिं सर्वे चक्रुर्बुम्बारवम्मुहुः। रक्ष रक्ष महाराज भक्षयत्यद्य कालिका।३
तया हतौ महावीरौचण्डमुण्डौसुरार्दनौ। भक्षिताःसैनिकाःसर्वे वयम्भग्नाभयातुराः।४
भीतिदञ्च रणःस्थानं कृतं कालिकयाप्रभो!। पातितैर्गजवीराश्वैर्दासेरकपदातिभिः।५
शोणितौघ वहा कुल्या कृता मांसातिकर्दमा। केंशशैवलिनीभग्नरथचक्रविराजिता।६
भिन्नवाह्वादिमत्स्याढ्याशीर्षन्तुम्बीफलान्विता। भयदा कातराणाम्वै शूराणां मोदवर्धिनी।७
कुलंरक्ष महाराजपातालं गच्छ सत्वरम्। क्रुद्धा देवी क्षयं सद्यःकरिष्यति न संशयः।८
सिंहोऽपि भक्षयत्याजौ दानवान्दनुजेश्वर!। तथैव कालिकादेवी हन्ति बाणैरनेकधा।९
तस्मात्त्वमपि राजेन्द्र मरणाय मृषा मतिम्। करोषिसहितोभ्रात्राशुम्भेनकुपिताशयः।१०

किङ्करिष्यतिनार्येषाक्रूराकुलविनाशिनी । यस्याहेतोर्महाराजहन्तुमिच्छासिबान्धवान् ।११
दैवाधीनौ महाराज लोके जयपराजयौ । अल्पार्थाय महद्दुःखंबुद्धिमान्न प्रकल्पयेत् ।१२
चित्रम्पश्यविधेःकर्म यदधीनञ्जगत्प्रभो ! । निहताराक्षसाः सर्वे स्त्रियापश्यैकयाऽनया ।१३
जेता त्वं लोकपालानां सैन्ययुक्तो हि साम्प्रतम् । एका प्रार्थयते बाला युद्धायेति सुसम्भ्रमः ।१४
पुरा त्वया तपस्तप्तं पुष्करे देवतायने । वरदानाय सम्प्राप्तो ब्रह्मा लोकपितामहः ।१५
धात्रोक्तस्त्वं महाराजवरम्वरय सुव्रत ! । तदा त्वया ऽमरत्वञ्चप्रार्थितम्ब्रह्मणः किल ।१६
देवदैत्यमनुष्येभ्यो न भवेन्मरणं मम । सर्पकिन्नरयक्षेभ्यः पुल्लिङ्गवाचकादपि ।१७
तस्मात्त्वा हन्तुकामैषाप्राप्ता योषिद्वराप्रभो ! । युद्धंमाकुरुराजेन्द्र विचार्यैवंधियाऽधुना ।१८
देवीह्येषा महामाया प्रकृतिः परमा मता । कल्पान्तकाले राजेन्द्र सर्वसंहारकारिणी ।१९
उत्पादयित्रीलोकानांदेवानामीश्वरीशुभा । त्रिगुणातामसी देवी सर्वशक्तिसमन्विता ।२०
अजय्याचाऽक्षया नित्या सर्वज्ञाचसदोदिता । वेदमाताचगायत्रीसन्ध्यासर्वसुरालया ।२१
निर्गुणा सगुणासिद्धासर्वसिद्धिप्रदाऽव्यया । आनन्दाऽऽनन्ददागौरीदेवानामभयप्रदा ।२२
एवं ज्ञात्वा महाराज! वैरभावं त्यजाऽनया । शरणम्व्रज राजेन्द्रदेवीत्वां पालयिष्यति ।२३
आज्ञाकरो भवैतस्याः सञ्जीवयनिजंकुलम् । हतशेषाश्च ये दैत्यास्तेभवन्तुचिरायुषः ।२४

व्यास उवाच

इति तेषां वचः श्रुत्वा शुम्भः सुरबलार्दनः । उवाच वचनन्तथ्यं वीरवर्यगुणान्वितम् ।२५

शुम्भ उवाच

मानंकुर्वन्तुभोमन्दायूयम्भग्नारणाजिरात् । शीघ्रं गच्छतपातालं जीविताशाबलीयसी ।२६
दैवाधीनञ्जगत्सर्वं का चिन्ताऽत्र जये मम । देवास्तथैव ब्रह्माद्या दैवाधीनम्वयं यथा ।२७
ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रोऽयंयमोऽग्निर्वरुणस्तथा । सूर्यश्चन्द्रस्तथा शक्रः सर्वेदैववशाःकिल ।२८
का चिन्ता तर्हि मे मन्दा यद्भावि तद्भविष्यति ।
उद्यमस्तादृशो भूयाद्यादृशी भवितव्यता ।।२९।।
सर्वथैवंविचार्यैवनशोचन्तिबुधाःक्वचित् । स्वधर्मं न त्यजन्तीह ज्ञानिनोमरणाद्भयात् ।३०
सुखंदुःखं तथैवाऽऽयुर्जीवितं मरणंनृणाम् । कालेभवतिसम्प्राप्तेसर्वथादैवनिर्मितम् ।३१
ब्रह्मा पतति काले स्वे विष्णुश्च पार्वतीपतिः । नाशङ्गच्छन्त्यायुषोऽन्ते सर्वे देवाः सवासवाः ।३२
तथाऽहमपि कालस्य वशगः सर्वथाऽधुना । नाशं जयम्वा गन्ताऽस्मि स्वधर्मपरिपालनात् ।३३
आहूतोऽप्यनयाकामं युद्धायाऽबलया किल । कथम्पलायनपरो जीवेयं शरदां शतम् ।३४
करिष्याम्यद्यसङ्ग्रामंयद्भावितद्भवत्विह । जयोवामरणम्वाऽपिस्वीकरोमि यथातथा ।३५
दैवं मिथ्येति विद्वांसो वदन्त्युद्यमवादिनः । युक्तियुक्तं वचस्तेषां ये जानन्त्यभिभाषितम् ।३६
उद्यमेन विना कामं न सिध्यन्ति मनोरथाः । कातराएव जल्पन्तियद्भाव्यन्तद्भविष्यति ।३७
अदृष्टंबलवान्मूढाःप्रवदन्तिन पण्डिताः । प्रमाणन्तस्य सत्त्वे किमदृश्यंदृश्यतेकथम् ।३८
अदृष्टंक्वापि दृष्टं स्यादेषा मूर्खविभीषिका । अवलम्बं विनैवैषा दुःखेचित्तस्यधारणा ।३९
चक्री समीपे सम्विष्टा संस्थिता पिष्टकारिणी । उद्यमेन विना पिष्टं न भवत्येवसर्वथा ।४०
उद्यमे च कृते कार्यसिद्धिं यात्येव सर्वथा । कदाचित्तस्य न्यूनत्वे कार्यंनैव भवेदपि ।४१
देशङ्कालञ्च विज्ञाय स्वबलं शत्रुजं बलम् । कृतं कार्यं भवत्येव वृहस्पतिवचो यथा ।४२

व्यास उवाच

इति निश्चित्य दैत्येन्द्रो रक्तबीजम्महासुरम् । प्रेषयामास सङ्ग्रामेसैन्येनमहतावृतम् ।४३

शुम्भ उवाच

रक्तबीज महाबाहो! गच्छ त्वं समराङ्गणे। कुरु युद्धं महाभाग! यथातेबलमाहितम् ।४४

रक्तबीज उवाच

महाराज! न तेकार्याचिन्तास्वल्पतराऽपिवा। अहमेनां हनिष्यामिकरिष्यामिवशेतव ।४५
पश्य मे युद्धचातुर्यं क्वेवंबालासुरप्रिया। दासींतेऽहंकरिष्यामिजित्वेमांसमरेबलात् ।४६

व्यास उवाच

इत्याभाष्य कुरुश्रेष्ठ! रक्तबीजो महासुरः। जगाम रथमारुह्य स्वसैन्यपरिवारितः ।४७
हस्त्यश्वरथपादातवृन्दैश्च परिवेष्टितः। निर्जगाम रथारूढो देवीं शैलोपरिस्थिताम् ।४८
तमागत्य समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्। भयदं सर्वदैत्यानां देवानां मोदवर्धनम् ।४६
श्रुत्वा शङ्खस्वनं चोग्रं रक्तबीजोऽतिवेगवान्। गत्वासमीपेचामुण्डांबभाषे वचनं मृदु ।५०

रक्तबीज उवाच

बाले किं मां भीषयसिमत्वात्वंकातरं किल। शङ्खनादेनतन्वङ्गिवेत्सिकिंधूम्रलोचनम् ।५१
रक्तबीजोऽस्मि नाम्नाऽहं त्वत्सकाशमिहागतः। युद्धेच्छा चेत्पिकालापे! सज्जा भव भयं न मे ।५२
पश्याऽद्य मे बलं कान्तेदृष्टायेकातरास्त्वया। नाहंपङ्क्तिगतस्तेषां कुरुयुद्धंयथेच्छसि ।५३
वृद्धाश्चसेविताः पूर्वं नीतिशास्त्रं श्रुतं त्वया। पठितंचार्थविज्ञानंविद्वद्गोष्ठीकृताऽथवा ।५४
साहित्यतन्त्रविज्ञानं चेदस्तितव सुन्दरि। शृणु मे वचनंपथ्यंतथ्यंप्रमितिबृंहितम् ।५५
रसानां च नवानां वै द्वावेव मुख्यताङ्गतौ। शृङ्गारकः शान्तिरसोविद्वज्जनसभासु च ।५६
तयोः शृङ्गारएवाऽऽदौ नृपभावे प्रतिष्ठतः। विष्णुर्लक्ष्म्यासहाऽऽस्ते वै सावित्र्या चतुराननः ।५७
शच्येन्द्रः शैलसुतयाशङ्करः सहशेरते। वल्लया वृक्षो मृगोमृग्या कपोत्याचकपोतकः ।५८
एवं सर्वे प्राणभृतः संयोगरसिका भृशम्। अप्राप्तभोगविभवा ये चान्ये कातरा नराः ।५६
भवन्तियतयस्तेवै मूढा दैवेन वञ्चिताः। असंसाररसज्ञास्ते वञ्चिता वञ्चनापरैः ।६०
मधुरालापनिपुणे रताः शान्तिरसे हि ते। क्व ज्ञानं क्व च वैराग्यं वर्तमाने मनोभवे ।६१
लोभे क्रोधे च दुर्धर्षेमोहे मतिविनाशके। तस्मात्त्वमपि कल्याणिकुरूकान्तंमनोहरम् ।६२
शुम्भं सुराणां जेतारं निशुम्भं वा महाबलम् ।

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा रक्तबीजोऽसौ विरराम पुरः स्थितः ॥६३॥
श्रुत्वा जहास चामुण्डा कालिका चाम्बिका तथा ।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपञ्चमस्कन्धे-रक्तबीजद्वारादेवीसमीपेशुम्भनिशुम्भसम्वादवर्णनंनामसप्तविंशोऽध्यायः ॥२७॥

* अष्टाविंशोऽध्यायः *

देव्याविवाहप्रस्तावास्वीकारेयुद्धार्थंप्रस्तुतस्यरक्तबीजस्ययुद्धंतद्वधश्च

व्यास उवाच

कृत्वा हास्यं ततोदेवी तमुवाच विशाम्पते। मेघगम्भीरयावाचा युक्तियुक्तमिदं वचः ।१
पूर्वमेव मयाप्रोक्तं मन्दात्मन्किंविकत्थसे। दूतस्याऽग्रे यथायोग्यं वचनं हितसंयुतम् ।२
सदृशो मम रूपेण बलेन विभवेन च। त्रिलोक्यांयदिकोऽपिस्यात्तंपतिंप्रवृणोम्यहम् ।३
ब्रूहिं शुम्भं निशुम्भं च प्रतिज्ञा मे पुरा कृता। तस्माद्युद्ध्यस्व जित्वा मां विवाहं विधिवत्कुरु ।४
त्वं वै तदाज्ञया प्राप्तस्तस्य कार्यार्थसिद्धये। सङ्ग्रामंकुरु पातालं गच्छवापतिनासह ।५

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं देव्याः स दैत्योऽमर्षपूरितः। मुमोच तरसा बाणान्सिंहस्योपरि दारुणान् ।६
अम्बिकाताञ्छरान्वीक्ष्य गगने पन्नगोपमान्। चिच्छेद सायकैस्तीक्ष्णैर्लघुहस्ततया क्षणात् ।७
अन्यैर्जघान विशिखै रक्तबीजं महासुरम्। अम्बिकाचापनिर्मुक्तैःकर्णाकृष्टैःशिलाशितैः ।८
देवीबाणहतः पापो मूर्च्छामाप रथोपरि। पतिते रक्तबीजे तु हाहाकारो महानभूत् ।९
सैनिकाश्चुक्रुशुः सर्वे हताः स्मइतिचाऽब्रुवन्। ततो बुम्बारवं श्रुत्वा शुम्भः परमदारुणम् ।१०
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ।

शुम्भ उवाच

निर्यान्तुदानवाः सर्वे काम्बोजाः स्वबलैर्वृताः ।।११।।
अन्येऽप्यतिबलाः शूराः कालकेया विशेषतः ।

व्यास उवाच

इत्याज्ञप्तं बलं सर्वं शुम्भेन च चतुर्विधम् ।।१२।।
निर्जगाम मदाविष्टं देवीसमरमण्डले। तमागतं समालोक्य चण्डिका दानवं बलम् ।१३
घण्टानादं चकाराऽऽशुभीषणंभयदंमुहुः। ज्यास्वनं शङ्खनादं च चकार जगदम्बिका ।१४
तेन नादेन सा जाता कालीविस्तारिताननना। श्रुत्वातन्निनदंघोरंसिंहोदेव्याश्चवाहनम् ।१५
जगर्ज सोऽपि बलवाञ्जनयन्भयमद्भुतम्। तन्निनादमुपश्रुत्य दानवाः क्रोधमूर्छिताः ।१६
सर्वेचिक्षिपुरस्त्राणि देवींप्रतिमहाबलाः। तस्मिन्नेवाऽऽयते युद्धे दारुणे लोमहर्षणे ।१७
ब्रह्मादीनां च देवानां शक्तयश्चण्डिकां ययुः। यस्य देवस्य यद्रूपं यथाभूषणवाहनम् ।१८
तादृग्रूपास्तदा देव्यः प्रययुः समराङ्गणे। ब्रह्माणी वरटारूढा साक्षसूत्रकमण्डलुः ।१९
आगता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणीति प्रतिश्रुता। वैष्णवी गरुडारूढा शङ्खचक्रगदाधरा ।२०
पद्महस्ता समायाता पीताम्बरविभूषिता। शाङ्करीतु वृषाऽऽरूढा त्रिशूलवरधारिणी ।२१
अर्धचन्द्रधरादेवी तथाऽहिवलया शिवा। कौमारी शिखिसंरूढा शक्तिहस्तावरानना ।२२
युद्धकामा समायाता कार्त्तिकेयस्वरूपिणी। इन्द्राणी सुष्ठुवदना सुश्वेतगजवाहना ।२३
वज्रहस्ताऽतिरोषाढ्या संग्रामाभिमुखीययौ। वाराही सूकराकारा प्रौढप्रेतासनामता ।२४
नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः। याम्या च महिषाऽऽरूढा दण्डहस्ता भयप्रदा ।२५
समायाताऽथ संग्रामे यमरूपा शुचिस्मिता। तथैववारुणीशक्तिः कौबेरीचमदोत्कटा ।२६
एवंविधास्तथाऽऽकारा ययुः स्वस्वबलैर्वृताः। आगतास्ताः समालोक्य देवीमुदमवाप च ।२७
स्वस्था मुमुदिरे देवादैत्याश्च भयमाययुः। ताभिः परिवृतस्तत्र शङ्करोलोकशङ्करः ।२८
समागम्य च संग्रामे चण्डिकामित्युवाच ह। हन्यन्तामसुराःशीघ्रंदेवानांकार्यसिद्धये ।२९
निशुम्भं चैव शुम्भंचयेचान्येःदानवाःस्थिताः। हत्वादैत्यबलंसर्वंकृत्वाचनिर्भयंजगत् ।३०
स्वानिस्वानिचधिष्ण्यानिसमागच्छन्तु शक्तयः। देवा यज्ञभुजः सन्तु ब्राह्मणा यजनेरताः ।३१
प्राणिनः सन्तु सन्तुष्टाः सर्वेस्थावरजङ्गमाः। शमं यान्तु तथोत्पाता ईतयश्चतथापुनः ।३२
घनाः काले प्रवर्षन्तु कृषिर्बहुफला तथा ।

व्यास उवाच

एवं ब्रुवति देवेशे शङ्करे लोकशङ्करे ।।३३।।
चण्डिकायाः शरीरात्तु निर्गताशक्तिरद्भुता। भीषणाऽतिप्रचण्डाचशिवाशतनिनादिनी ।३४
घोररूपाऽथ पञ्चास्यमित्युवाच स्मिताननना। देवदेवव्रजाऽऽशुत्वं दैत्यानामधिपं प्रति ।३५

दूतत्वं कुरुकामारे ब्रूहि शुम्भं स्मराकुलम्। निशुम्भं च मदोत्सिक्तंवचनान्मम शङ्कर।३६
मुक्त्वा त्रिविष्टपं यात यूयं पातालमाशु वै। देवाः स्वर्गे सुखं यान्तु तुराषाट्स्वासनं शुभम्।३७
प्राप्नोतुत्रिदिवंस्थानंयज्ञभागांश्चदेवताः। जीवितेच्छा च युष्माकंयदिस्यात्तुमहत्तरा।३८
तर्हि गच्छत पातालं तरसा यत्र दानवाः। अथवा बलमास्थाय युद्धेच्छामरणाय चेत्।३९
तदाऽऽगच्छन्तु तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्याः शूलपाणिस्त्वरान्वितः ॥४०॥
गत्वाऽऽह दैत्यराजानं शुम्भं सदसि संस्थितम्।

शिव उवाच

राजन्दूतोऽहमम्बायास्त्रिपुरान्तकरो हरः ॥४१॥
त्वत्सकाशमिहायातो हितं कर्तुं तवाऽखिलम्। त्यक्त्वा स्वर्गं तथा भूमिं यूयं गच्छत सत्वरम्।४२
पातालं यत्र प्रह्लादो बलिश्च बलिनाम्वरः। अथवा मरणेच्छा चेत्तर्ह्यागच्छेतसत्वरम्।४३
संग्रामेवो हनिष्यामि सर्वनिवाहमाशु वै। इत्युवाच महाराज्ञी युष्मत्कल्याणहेतवे।४४

व्यास उवाच

इति दैत्यवरान्देवी वाक्यंपीयूषसन्निभम्। हितकृच्छ्रावयित्वासप्रत्यायातश्चशूलभृत्।४५
ययाऽसौ प्रेरितःशम्भुर्दूतत्वेदानवान्प्रति। शिवदूतीतिविख्याताजातात्रिभुवनेऽखिले।४६
तेऽपि श्रुत्वा वचोदेव्याःशङ्करोक्तंतुदुष्करम्। युद्धायनिर्ययुःशीघ्रंदंशिताःशस्त्रपाणयः।४७
तरसा रणमाऽऽगत्य चण्डिकां प्रति दानवाः।
निर्जघ्नुश्च शरैस्तीक्ष्णैः कर्णाकृष्टैः शिलाशितैः ॥४८॥
कालिका शूलपातैस्तान् गदाशक्तिविदारितान्।
कुर्वन्ती व्यचरत्तत्र भक्षयन्ती च दानवान् ॥४९॥
कमण्डलुजलाक्षेपगतप्राणान्महाबलान्। ब्रह्माणी चाऽकरोत्तत्र दानवान्समराङ्गणे।५०
माहेश्वरी वृषाऽऽरूढा त्रिशूलेनाऽतिरंहसा। जघानदानवान्संख्ये पातयामास भूतले।५१
वैष्णवी चक्रपातेन गदापातेनदानवान्। गतप्राणांश्चकाराऽऽशु चोत्तमाङ्गविवर्जितान्।५२
ऐन्द्री वज्रप्रहारेण पातयामास भूतले। ऐरावतकराघातपीडितान्दैत्यपुङ्गवान्।५३
वाराही तुण्डघातेन दंष्ट्राग्रपातनेन च। जघान क्रोधसंयुक्ता शतशोदैत्यदानवान्।५४
नारसिंही नखैस्तीव्रै र्दारितान्दैत्यपुङ्गवान्। भक्षयन्ती चचाराऽऽजौ ननादचमुहुर्मुहुः।५५
शिवदूती साट्टहासैः पातयामास भूतले। तांश्चखादाऽथ चामुण्डा कालिका च त्वरान्विता।५६
शिखिसंस्था चकौमारी कर्णाकृष्टैः शिलाशितैः।
निजघानरणेशत्रून्देवानांचहितायवै ॥५७॥
वारुणीपाशसम्बद्धान्दैत्यान्समरमस्तके। पातयामास तत्पृष्ठे मूर्च्छितान्गतचेतनान्।५८
एवं मातृगणेनाऽजावतिवीर्यपराक्रमम्। मर्दितं दानवं सैन्यं पलायनपरं ह्यभूत्।५९
बुम्बारवस्तु सुमहानभूत्तत्र बलार्णवे। पुष्पवृष्टिं तदादेवाश्चक्रुर्देव्या गणोपरि।६०
तच्छ्रुत्वानिनदं घोरं जयशब्दंचदानवाः। रक्तबीजश्चुकोपाशुदृष्ट्वादैत्यान्पलायितान्।६१
गर्जमानां स्तथादेवान्वीक्ष्यदैत्यो महाबलः। रक्तबीजस्तुतेजस्वीरणमभ्याययौ तदा।६२
सायुधो रथसम्विष्टः कुर्वञ्ज्याशब्दमद्भुतम्। आजगाम तदादेवींक्रोधरक्तेक्षणोद्यतः।६३

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपञ्चमस्कन्धे रक्तबीजेनदेव्यायुद्धवर्णनंनामाऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥२८॥

* एकोनत्रिंशोऽध्यायः *

रक्तबीजेनदेव्यायुद्धवर्णनम्

व्यास उवाच

वरदानमिदं तस्य दानवस्य शिवार्पितम्। अत्यद्भुततरं राजञ्छृणुतत्प्रब्रवीम्यहम्।१
तस्यदेहाद्रक्तबिन्दुर्यदा पतति भूतले। समुत्पतन्ति दैतेयास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः।२
असंख्याता महावीर्यादानवारक्तसम्भवाः। प्रभवन्त्विति रुद्रेणदत्तोऽस्त्यत्यद्भुतोवरः।३
स तेन वरदानेन दर्पितः क्रोधसंयुतः। अभ्यगात्तरसा संख्ये हन्तुंदेवीं स कालिकाम्।४
स दृष्ट्वा वैष्णवीं शक्तिं गरूडोपरि संस्थिताम्।
शक्त्या जघान दैत्येन्द्रस्तां वै कमललोचनाम्।।५।।
गदया वरयामास शक्तिः सा शक्तिसंयुता। अताडयच्च चक्रेण रक्तबीजं महासुरम्।६
रथाङ्गहतदेहात्तु बहु सुस्राव शोणितम्। वज्राहतगिरेः शृङ्गान्निर्झरा इव गैरिकाः।७
यत्र यत्र यदाभूमौ पतन्तिरक्तबिन्दवः। समुत्तस्थुस्तदाकाराः पुरुषाश्च सहस्रशः।८
ऐन्द्री तमसुरं घोरं वज्रेणाऽभिजघान च। रक्तबीजं क्रुधाऽऽविष्टा निःससार च शोणितम्।९
ततस्तत्क्षतजाज्जाता रक्तबीजाह्यनेकशः। तद्वीर्याश्च तदाकाराः सायुधायुद्धदुर्मदाः।१०
ब्रह्माणी ब्रह्मदण्डेन कुपिताह्यहनद्भृशम्। माहेश्वरी त्रिशूलेन दारयामास दानवम्।११
नारसिंही नखाघातैस्तं विव्याध महासुरम्। अहनत्तुण्डघातेन क्रुद्धा तं राक्षसाधमम्।१२
कौमारी च तथाशक्त्यावक्षस्येनमताडयत्। सोऽपिक्रुद्धःशरासारैर्बिभेदनिशितैश्चताः।१३
गदाशक्तिप्रहारैस्तु मातृः सर्वाः पृथक्पृथक्।
शक्तयस्तं शराघातैर्विविधुस्तत्प्रकोपिताः।।१४।।
तस्य शस्त्राणि चिच्छेदं चण्डिका स्वशरैःशितैः।
जघानाऽन्यैश्च विशिखैस्तं देवी कुपिता भृशम्।।१५।।
तस्य देहाच्च सुस्राव रुधिरं बहुधा तु यत्। तस्मात्तत्सदृशाःशूराःप्रादुरासन्सहस्रशः।१६
रक्तबीजैर्जगद्व्याप्तं रुधिरौघसमुद्भवैः। सन्नादैः सायुधैः कामं कुर्वद्भिर्युद्धमद्भुतम्।१७
प्रहरन्तश्च तान्दृष्ट्वा रक्तबीजाननेकशः। भयभीताःसुरास्त्रेसुर्विषण्णाःशोककर्षिताः।१८
कथमद्य क्षयं दैत्या गमिष्यन्ति सहस्रशः। महाकाया महावीर्या दानवारक्तसम्भवाः।१९
एकैव चण्डिकाऽत्रास्ति तथा काली च मातरः।
एताभिर्दानवाः सर्वे जेतव्याः कष्टमेव तत्।।२०।।
निशुम्भोवाऽथशुम्भोवा सहसा बलसम्वृतः। आमिष्यतिसंग्रामेततोऽनर्थोमहान्भवेत्।२१

व्यास उवाच

एवं देवा भयोद्विग्नाश्चिन्तामापुर्महत्तराम्। यदा तदाम्बिकाप्राहकालींकमललोचनाम्।२२
चामुण्डे कुरु विस्तीर्णं वदनं त्वरिता भृशम्। मच्छस्त्रपातसम्भूतंरुधिरंपिबसत्वरा।२३
भक्षयन्ती चर रणे दानवानद्य कामतः। हनिष्यामि शरैस्तीक्ष्णैर्गदासिमुसलैस्तथा।२४
तथाकुरुविशालाक्षिपानन्तद्रुधिरस्य च। बिन्दुमात्रंयथा भूम्यां न पतेदपिसाम्प्रतम्।२५
भक्ष्यमाणास्तदा दैत्या न चोत्पत्स्यन्ति चाऽपरे।
एवमेषां क्षयो नूनं भविष्यति न चान्यथा।।२६।।
घातयिष्याम्यहं दैत्यं त्वं भक्षय च सत्वरा। पिबन्तीक्षतजंसर्वंयतमानाऽरिसंक्षये।२७
इत्थं दैत्यक्षयं कृत्वा दत्त्वाराज्यंसुरालयम्। इन्द्रायसुस्थिरंसर्वंगमिष्यामोयथासुखम्।२८

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाऽम्बिकयादेवीचामुण्डाचण्डविक्रमा। पपौ च क्षतजं सर्वं रक्तबीजशरीरजम्।२९
अम्बिका तं जघानाऽऽशु खड्गेनमुसलेन च। चखाददेहशकलांश्चामुण्डातान्कृशोदरी।३०
सोऽपिक्रुद्धोगदाघातैश्चामुण्डांसमघातयत्। तथाऽपि सा पपावाशुक्षतजंतमभक्षयत्।३१
येऽन्येरुधिरजाःक्रूरारक्तबीजामहाबलाः। तेऽपि निष्पातिताःसर्वेभक्षितागतशोणिताः।३२

कृत्रिमा भक्षिताःसर्वे यस्तु स्वाभाविकोऽसुरः।
सोऽपि प्रपातितो हत्वा खड्गेनाऽतिविखण्डितः ॥३३॥

रक्तबीजे हते रौद्रे ये चाऽन्ये दानवा रणे। पलायनन्ततःकृत्वा गतास्तेभयकम्पिताः।३४
हाहेतिविब्रुवन्तस्ते शुम्भम्प्रोचुःसुविह्वलाः। रुधिरारक्तदेहाश्च विगतास्त्रा विचेतसः।३५

राजन्नम्बिकयारक्तबीजोऽसौ विनिपातितः।
चामुण्डा तस्य देहात्तु पपौ सर्वञ्च शोणितम् ॥३६॥

ये चाऽन्येदानवाःशूरावाहनेनाऽतिरंहसा। सिंहेन निहताःसर्वे काल्याच भक्षिताःपरे।३७
वयं त्वां कथितुं राजन्नागतायुद्धचेष्टितम्। चरितञ्चतथादेव्या सङ्ग्रामे परमाद्भुतम्।३८
अजेयेयं महाराज ! सर्वथा दैत्यदानवैः। गन्धर्वासुरयक्षैश्च पन्नगोरगराक्षसैः।३९
अन्यास्तत्रागतादेव्य इन्द्राणीप्रमुखाभृशम्। युध्यमाना महाराज ! वाहनैरायुधैर्युताः।४०
ताभिः सर्वं हतंसैन्यंदानवानांवरायुधैः। रक्तबीजोऽपि राजेन्द्र! तरसा विनिपातितः।४१

एकाऽपि दुःसहा देवी किं पुनस्ताभिरन्विता।
सिंहोऽपि हन्ति सङ्ग्रामे राक्षसानमितप्रभः ॥४२॥

अतोविचार्य सचिवैर्यद्युक्तं तद्विधीयताम्। न वैरमनयायुक्तं सन्धिरेव सुखप्रदः।४३

आश्चर्यं मे तदखिलं यन्नारी हन्ति राक्षसान्।
रक्तबीजोऽपि निहतः पीतन्तस्याऽपि शोणितम् ॥४४॥

अन्ये निपातितादैत्याःसंग्रामेऽम्बिकयानृप। चामुण्डयाचमांसं वै भक्षितं सकलंरणे।४५
वरम्पातालगमनं तस्याः सेवाऽथवा वरा। न तु युद्धं महाराज! कार्यमम्बिकया सह।४६
न नारी प्राकृताह्येषा देवकार्यार्थसाधिनी। मायेयं प्रबला देवी क्षपयन्तीमुत्थिता।४७

व्यास उवाच

इति तेषां वचस्तथ्यं श्रुत्वाकालविमोहितः। मुमूर्षुःप्रत्युवाचेदंशुम्भःप्रस्फुरिताधरः ।४८

शुम्भ उवाच

यूयं गच्छत पातालं शरणं वा भयातुराः। हनिष्याम्यहमद्यैव ताञ्चताश्च समुद्यतः।४९

जित्वा सर्वान्सुरानाजौ कृत्वा राज्यं सुपुष्कलम्।
कथन्नारीभयोद्विग्नः पातालम्प्रविशाम्यहम् ॥५०॥

निहत्य पार्षदान्सर्वान्रक्तबीजमुखान्रणे। प्राणत्राणाय गच्छामि हित्वाकिं विपुलंयशः।५१

मरणं त्वनिवार्यम्वै प्राणिनां कालकल्पितम्।
तद्भयं जन्मनोपात्तं त्यजेत्को दुर्लभं यशः ॥५२॥
निशुम्भाऽहं गमिष्यामि रथारूढो रणाजिरे।
हत्वा तामागमिष्यामि नाऽऽगमिष्यामि चाऽन्यथा ॥५३॥

त्वन्तु सेनायुतोवीर! पार्ष्णिग्राहोभवस्व मे। तरसातांशरैस्तीक्ष्णैर्नारींनय यमालये।५४

निशुम्भ उवाच

अहमद्य हनिष्यामि गत्वा दुष्टाञ्चकालिकाम्।
आगमिष्याम्यहं शीघ्रं गृहीत्वा तामथाऽम्बिकाम् ॥५५॥

मा चिन्तांकुरुराजेन्द्रवराकायास्तुकारणे।क्वैषाबाला क्व मे बाहुवीर्यम्विश्ववशङ्करम्।५६
त्यक्त्वाऽऽर्तिं विपुलाम्भ्रातर्भुङ्क्ष्व भोगाननुत्तमान् ।
आनयिष्याम्यहं कामं मानिनीं मानसंयुताम् ।।५७।।
मयि तिष्ठति ते राजन्न युक्तं गमनं रणे।गत्वाऽहमानयिष्यामि तवार्थेवैजयश्रियम्।५८

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा भ्रातरंज्येष्ठंकनीयान्बलगर्वितः।रथमास्थाय विपुलं सन्नद्धः स्वबलावृतः।५९
जगामतरसातूर्णं सङ्गरे कृतमङ्गलः।संस्तुतो बन्दिसूतैश्च सायुधः सपरिष्करः।६०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे देव्यासहयुद्धकरणायनिशुम्भप्रयाणंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥२९॥

* त्रिंशोऽध्यायः *

निशुम्भस्यदेव्यायुद्धायसमागमनम्

व्यास उवाच

निशुम्भो निश्चयं कृत्वा मरणाय जयाय वा।सोद्यमःसबलः शूरो रणेदेवीमुपापयौ।१
तमाजगामशुम्भोऽपि स्वबलेन समावृतः।प्रेक्षकोऽभूद्रणेराजा संग्रामरसपण्डितः।२
गगने संस्थिता देवास्तदाऽभ्रपटलावृताः।दिदृक्षवस्तु संग्रामे सेन्द्रायक्षगणास्तथा।३
निशुम्भोऽथ रणे गत्वा धनुरादायशार्ङ्गकम्।चकारशरवृष्टिं स भीषयञ्जगदम्बिकाम्।४
मुञ्चन्तंशरजालानिनिशुम्भंचण्डिकारणे ।वीक्ष्याऽऽदायधनुःश्रेष्ठंजहाससुस्वरम्मुहुः।५
उवाच कालिकांदेवीपश्यमूर्खत्वमेतयोः।मरणायागतौ कालि मत्समीपमिहाऽधुना।६
दृष्ट्वा दैत्यवधं घोरं रक्तबीजात्ययन्तथाः।जयाशां कुरुतस्त्वेतौ मोहितौ मम मायया।७
आशा बलवती ह्येषा न जहाति नरं क्वचित्।भग्नं हृतबलं नष्टं गतपक्षं विचेतनम्।८
आँशापाशनिबद्धौ द्वौ युद्धायसमुपागतौ।निहन्तव्यौमयाकालिरणेशुम्भनिशुम्भकौ।९
आसन्नमरणावेतौ सम्प्राप्तौ दैवमोहितौ।पश्यतां सर्वदेवानां हनिष्याम्यहमद्य तौ।१०

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा कालिकां चण्डी कर्णाकृष्टशरोत्करैः।छादयामास तरसा निशुम्भं पुरतः स्थितम्।११
दानवोऽपि शरांस्तस्याश्चिच्छेद निशितैः शरैः।तयोः परस्परं युद्धं बभूवाऽतिभयानकम्।१२
केशरीकेशजालानि धुन्वानः सैन्यसागरम्।गाहयामास बलवान्सरसींवारणो यथा।१३
नखैर्दन्तप्रहारैस्तुदानवान्पुरतः स्थितान्।चखादचविशीर्णाङ्गान्गजानिवमदोत्कटान्।१४
एवम्विमथ्यमानेतु सैन्ये केसरिणातदा।अभ्ययावन्निशुम्भोऽथ विकृष्टवरकार्मुकः।१५
अन्येऽपि क्रुद्धा दैत्येन्द्रा देवींहन्तुमुपाययुः।सन्दष्टदन्तरसना रक्तनेत्रा ह्यनेकशः।१६
तत्राऽऽजगाम तरसा शुम्भः सैन्यसमावृतः।निहत्य कालिकां कोपाद्ग्रहीतुंजगदम्बिकाम्।१७
तत्रागत्यददर्शाजावम्बिकाञ्चपुरःस्थिताम्।रौद्ररसयुतां कान्तांशृङ्गाररससंयुताम्।१८
तां वीक्ष्यविपुलापाङ्गींत्रैलोक्यवरसुन्दरीम्।सुरक्तनयनांरम्यां क्रोधरक्तेक्षणान्तथा।१९
विवाहेच्छां परित्यज्य जयाशान्दूरतस्तथा।मरणेनिश्चयंकृत्वातस्थावाहितकार्मुकः।२०
तन्तथा दानवं देवी स्मितपूर्वमिदम्वचः।बभाषे शृण्वतान्तेषां दैत्यानां रणमस्तके।२१
गच्छध्वम्पामरा यूयम्पातालं वा जलार्णवम् ।
जीविताशां स्थिरां कृत्वा त्यक्त्वाऽत्रैवाऽऽयुधानि च ॥२२॥

अथवा मच्छराघातहतप्राण ा रणाजिरे। प्राप्य स्वर्गसुखं सर्वे क्रीडन्तुविगतज्वराः।२३
कातरत्वञ्च शूरत्वं न भवत्येव सर्वथा। ददाम्यभयदानम्वै यान्तु सर्वे यथासुखम्।२४

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्यवचस्तस्यानिशुम्भोमदगर्वितः। निशितंखड्गमादायचर्मचैवाऽष्टचन्द्रकम्।२५
धावमानस्तु तरसाऽसिना सिंहं मदोत्कटम्। जघानाऽतिबलान्मूर्ध्नि भ्रामयज्जगदम्बिकाम्।२६
ततो देवी स्वगदया वञ्चयित्वाऽसिपातनम्। ताडयामास तं बाहोर्मूलेपरशुनातदा।२७
खड्गेन निहतःसोऽपिबाहुमूलेमहामदः। संस्तभ्यवेदनाम्भूयो जघानचण्डिकान्तदा।२८
साऽपि घण्टास्वनं घोरं चकार भयदं नृणाम्। पपौ पुनः पुनः पानं निशुम्भं हन्तुमिच्छती।२९
एवं परस्परं युद्धं बभूवाऽतिभयप्रदम्। देवानां दानवानां च परस्परजयैषिणाम्।३०
पलादाःपक्षिणःक्रूराःसारमेयाश्चजम्बुकाः। ननृतुश्चऽतिसन्तुष्टागृध्राःकङ्काश्च वायसाः।३१
रणभूर्भाति भूयिष्ठपतिताऽसुरवर्ष्मकैः। रुधिरस्रावसंयुक्तैर्गजाश्वदेहसङ्कुला ।३२
पतितान्दानवान्दृष्ट्वा निशुम्भोऽतिरुषान्वितः। प्रययौ चण्डिकां तूर्णं गदामादाय दारुणाम्।३३
सिंहं जघान गदया मस्तके मदगर्वितः। प्रहृत्य च स्मितं कृत्वा पुनर्देवीमताडयत्।३४

साऽपि तं कुपिताऽतीव निशुम्भं पुरतःस्थितम् ।
प्रहरन्तं समीक्ष्याऽथ देवी वचनमब्रवीत् ॥३५॥

देव्युवाच

तिष्ठ मन्दमते ! तावद्यावत्खड्गमिदं तव। ग्रीवायां प्रेरयाम्वल्माद्गन्तासि यमसादनम्।३६
इत्युक्त्वातरसादेवीकृपाणेनसमाहिता । चिच्छेदमस्तकंतस्यनिशुम्भस्याऽथचण्डिका।३७
सच्छिन्नमस्तकोदेव्या कबन्धोऽतीव दारुणः। बभ्राम च गदापाणिस्त्रासयन्देवतागणान्।३८
देवी तस्यशितैर्बाणैश्चिच्छेद चरणौ करौ। पपातोर्व्यांततः पापी गतासुःपर्वतोपमः।३९
तस्मिन्निपतिते दैत्ये निशुम्भे भीमविक्रमे। हाहाकारोमहानासीत्तत्सैन्ये भयकम्पिते।४०

त्यक्त्वाऽऽयुधानि सर्वाणि सैनिकाः क्षतजाऽऽप्लुताः ।
जग्मुर्बुम्बारवं सर्वे कुर्वाणा राजमन्दिरम् ॥४१॥

तानागतान्सुसम्प्रेक्ष्य शुम्भःशत्रुनिषूदनः। पप्रच्छक्वनिशुम्भोऽसौकथंभग्नाःपलायिताः।४२
तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञस्तेप्रोचुःप्रणताभृशम् । राजंस्ते निहतो भ्राता शेते समरमूर्धनि।४३
तया निपातिताःशूरायेचतेऽप्यनुजानुगाः। वयंत्वां कथितुं सर्वं वृत्तान्तं समुपागताः।४४

निशुम्भो निहतस्तत्र तया चण्डिकयाऽधुना ।
नहि युद्धस्य कालोऽद्य तव राजन्नणाङ्गणे ॥४५॥

देवकार्यं समुद्दिश्य काऽपीयं परमाङ्गना। हन्तुंदैत्यकुलं नूनं प्राप्तेति परिचिन्तय।४६
नैषा प्राकृतयोषैव देवीशक्तिरनुत्तमा। अचिन्त्यचरिता काऽपि दुर्ज्ञेया दैवतैरपि।४७
नानारूपधराऽतीव मायामूलविशारदा। विचित्रभूषणा देवी सर्वायुधधरा शुभा।४८
गहनागूढचरिता कालरात्रिरिवाऽपरा। अपारपारगा पूर्णा सर्वलक्षणसंयुता।४९

अन्तरिक्षस्थिता देवास्तांस्तुवन्त्यकुतो भयाः।
देवकार्यं च कुर्वाणां श्रीदेवीं परमाद्भुताम् ॥५०॥

पलायनं परोधर्मः सर्वथा देहरक्षणम्। रक्षिते किल देहेऽस्मिन्कालेऽस्मत्सुखताङ्गते।५१
संग्रामे विजयो राजन्भविता ते न संशयः। कालः करोति बलिनंसमयेनिर्बलंक्वचित्।५२
तं पुनः सबलं कृत्वा जयायोपदधाति हि। दातारं याचकं कालः करोतिसमयेक्वचित्।५३

भिक्षुकं धनदातारं करोतिसमयान्तरे। विष्णुः कालवशे नूनं ब्रह्मा वा पार्वतीपतिः।५४
इन्द्राद्या निर्जराःसर्वे कालएवप्रभुःस्वयम्। तस्मात्कालं प्रतीक्षस्वविपरीतंतवाऽधुना।५५
सम्मुखो देवतानां च दैत्यानां नाशहेतुकः। एकेन च गतिर्नास्तिकालस्यकिलभूपते।५६

नानारूपधराऽप्यस्ति ज्ञातव्यं तस्य चेष्टितम्।
कदाचित्संभवोनृणां कदाचित्प्रलयस्तथा ॥५७॥

उत्पत्तिहेतुः कालोऽन्यःक्षयहेतुस्तथाऽपरः। प्रत्यक्षंते महाराज! देव्याःसर्वेसवासवाः।५८
करदास्ते कृताः पूर्वं कालेन सम्मुखेन च। तेनैवविमुखेनाऽद्यवलिनोऽबलयाऽसुराः।५९
निहता नितरां कालःकरोति च शुभाशुभम्। नैवाऽत्रकारणं कालीनैवदेवाःसनातनाः।६०
यथा ते रोचते राजंस्तथा कुरु विमृश्य च। कालोऽयंनाऽत्रहेतुस्तेदानवानांतथापुनः ।६१
त्वदग्रतो गतः शक्रो भग्नः संख्ये निरायुधः। तथाविष्णुस्तथारुद्रो वरुणोधनदोयमः।६२
तथा त्वमपिराजेन्द्र! वीक्ष्यकालवशंजगत्। पातालंगच्छतरसाजीवन्भद्रमवाप्स्यसि ।६३
मृते त्वयि महाराज! शत्रवस्ते मुदान्विताः। मङ्गलानिप्रगायन्तेविचरिष्यन्तिसर्वतः ।६४

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपञ्चमस्कन्धे युद्धात्प्रत्यागतानांरक्षसांशुम्भायवार्त्तावर्णनंनामत्रिंशोऽध्यायः ॥३०॥

* एकत्रिंशोऽध्यायः *

शुम्भद्वारादेवीग्रहर्त्तुंयुद्धसमागमवर्णनम्

व्यास उवाच

इति तेषां वचः श्रुत्वाशुम्भोदैत्यपतिस्तथा। उवाचसैनिकानाशुकोपाकुलितलोचनः।१

शुम्भ उवाच

जाल्माः! किं ब्रूतदुर्वाच्यं कृत्वा जीवितुमुत्सहे।
निहत्य सचिवान्भ्रातॄन्निर्लज्जो विचरामि किम् ॥२॥

कालःकर्ता शुभानां वाऽशुभानांबलवत्तरः। का चिन्ताममदुर्वरितस्मिन्नीशेऽप्यरूपके।३
यद्भवति तद्भवतु यत्करोति करोतु तत्। नमेचिन्ताऽस्तिकुत्राऽपिमरणाज्जीवनात्तथा।४
न कालोऽप्यन्यथाकर्तुंभावितोनेशतेक्वचित्। न वर्षति चपर्जन्यःश्रावणेमासिसर्वथा।५

कदाचिन्मार्गशीर्षे वा पौषे माघेऽथ फाल्गुने।
अकाले वर्षतीवाऽऽशु तस्मान्मुख्यो न चाऽस्त्ययम् ॥६॥

कालोनिमित्तमात्रं तु दैवं हि बलवत्तरम्। दैवेन निर्मितं सर्वं नान्यथा भवतीत्यदः।७
दैवमेव परं मन्ये धिक्पौरुषमनर्थकम्। जेता यः सर्वदेवानां निशुम्भोऽप्यनया हतः।८

रक्तबीजो महाशूरः सोऽपि नाशं गतो यदा।
तदाऽहं कीर्तिमुत्सृज्य जीविताशां करोमि किम्? ॥९॥

प्राप्ते काले स्वयंब्रह्मा परार्धद्वयसम्मिते। निधनं याति तरसा जगत्कर्ता स्वयं प्रभुः।१०
चतुर्युगसहस्रं तु ब्रह्मणो दिवसे किल। पतन्ति भवनात्पञ्च नवचेन्द्रास्तथा पुनः।११
तथैव द्विगुणे विष्णुर्मरणायोपकल्पते। तथैव द्विगुणे काले शङ्करः शान्तिमेति च।१२
का चिन्ता मरणे मूढा निश्चले दैवनिर्मिते। महीमहीधराणां च नाशःसूर्यशशाङ्कयोः।१३
जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। अध्रुवेऽस्मिञ्छरीरे तु रक्षणीयं यशः स्थिरम्।१४
रथो मे कल्प्यतांशीघ्रंगमिष्यामि रणाजिरे। जयोवा मरणंवाऽपि भवत्वद्यैव दैवतः।१५
इत्युक्त्वा सैनिकाञ्छुम्भो रथमास्थाय सत्वरः। प्रययावम्बिका यत्र संस्थिता तु हिमाचले।१६

सैन्यं प्रचलितं तस्य सङ्गे तत्र चतुर्विधम्। हस्त्यश्वरथपादातिसंयुतं सायुधं बहु।१७
तत्र गत्वाऽचले शुम्भः संस्थितां जगदम्बिकाम्।
त्रैलोक्यमोहिनीं कान्तामपश्यत्सिंहवाहिनीम्॥१८॥
सर्वाभरणभूषाढ्यां सर्वलक्षणसंवृताम्। स्तूयमानां सुरैः खस्थैर्गन्धर्वयक्षकिन्नरैः।१९
पुष्पैश्च पूज्यमानां च मन्दारपादपोद्भवैः। कुर्वाणां शंखनिनदं घण्टानादं मनोहरम्।२०
दृष्ट्वा तां मोहमगमच्छुम्भःकामविमोहितः।
पञ्चबाणाहतः कामं मनसा समचिन्तयत्॥२१॥
अहो रूपमिदं सम्यगहो चातुर्यमद्भुतम्। सौकुमार्यं च धैर्यं चपरस्परविरोधि यत्।२२
सुकुमाराऽतितन्वङ्गी सद्यः प्रकटयौवना। चित्रमेतदसौ बाला कामभावविवर्जिता।२३
कामकान्तासमारूपे सर्वलक्षणलक्षिता। अम्बिकेयं किमेत्तत्तु हन्ति सर्वान्महाबलान्।२४
उपायः कोऽत्र कर्तव्यो येन मे वशगा भवेत्।
न मन्त्रा वा मरालाक्षी साधने सन्निधौ मम॥२५॥
सर्वमन्त्रमयी ह्येषा मोहिनी मदगर्विता। सुन्दरीयं कथं मे स्याद्वशगावरवर्णिनी।२६
पातालगमनं मेऽद्य न युक्तं समराङ्गणात्। सामदानविभेदैश्च नैयं साध्या महाबला।२७
किं कर्तव्यं क्व गन्तव्यं विषमे समुपस्थिते।
मरणं नोत्तमं चाऽत्र स्त्रीकृतं तु यशोऽपहृत्॥२८॥
मरणमृषिभिः प्रोक्तं सङ्गरे मङ्गलास्पदम्। यत्तत्समानबलयोर्योधयोर्युध्यतोः किलः।२९
प्राप्तेयं दैवरचिता नारीनरशतोत्तमा। नाशायाऽस्मत्कुलस्येह सर्वथाऽतिबलाबला।३०
वृथा किं सामवाक्यानि मया योज्यानि साम्प्रतम्।
हननायाऽऽगता ह्येषा किन्तु साम्ना प्रसीदति॥३१॥
न दानैश्चालितुं योग्या नानाशस्त्रविभूषिता। भेदस्तु विकलः कामं सर्वदेववशानुगा।३२
तस्मात्तु मरणं श्रेयो न सङ्ग्रामे पलायनम्। जयो वा मरणंवाऽद्यभवत्येवयथाविधि।३३

व्यास उवाच

इति सञ्चिन्त्य मनसा शुम्भः सत्त्वाश्रितोऽभवत्।
युद्धाय सुस्थिरो भूत्वा तामुवाच पुरः स्थिताम्॥३४॥
देवि! युद्धस्वकान्तेऽद्यवृथाऽयंतेपरिश्रमः। मूर्खाऽसिकिलनारीणांनाऽयंधर्मकदाचन।३५
नारीणां लोचनेबाणाभ्रुवावेवशरासनम्। हावभावास्तु शस्त्राणिपुमाँल्लक्ष्यविचक्षणः।३६
सन्नाहश्चाङ्गरागोऽत्र रथश्चाऽपि मनोरथः। मन्दप्रजल्पितं भेरीशब्दो नान्यः कदाचन।३७
अन्यास्त्रवारणंस्त्रीणां विडम्बनमसंशयम्। लज्जैवभूषणंकान्ते नच धाष्ट्र्यं कदाचन।३८
युध्यमाना वरा नारी कर्कशेवाऽभिदृश्यते। स्तनौ सङ्गोपनीयौवा धनुषःकर्षणेकथम्।३९
क्व मन्दगमनं कुत्र गदामादाय धावनम्। बुद्धिदा कालिकातेऽत्र चामुण्डापरनायिका।४०
चण्डिका मन्त्रमध्यस्था लालनेऽसुस्वरा शिवा।
वाहनं मृगराडास्ते सर्वसत्त्वभयङ्करः॥४१॥
वीणानादं परित्यज्य घण्टानादं करोषि यत्। रूपयौवनयोः सर्वंविरोधि वरवर्णिनि!।४२
यदि ते सङ्गरेच्छाऽस्ति कुरूपा भव भामिनि!।
लम्बोष्ठी कुनखी क्रूरा ध्वाङ्क्षवर्णा विलोचना॥४३॥
लम्बपादा कुदन्ती च मार्जारनयनाकृतिः। ईदृशं रूपमास्थाय तिष्ठ युद्धे स्थिरा भव।४४
कर्कशं वचनं ब्रूहि ततो युद्धं करोम्यहम्। ईदृशीं सुदतींदृष्ट्वानमेपाणिः प्रसीदति।४५

हन्तुं त्वां मृगशावाक्षि! कामकान्तोपमे मृधे ।

व्यास उवाच

इति ब्रुवाणं कामार्तं वीक्ष्य तं जगदम्बिका ॥४६॥
स्मितपूर्वमिदं वाक्यमुवाच भरतोत्तम! ।

देव्युवाच

किं विषीदसि मन्दात्मन्कामबाणविमोहितः ॥४७॥
प्रेक्षिकाऽहं स्थिताः मूढकुरु कालिकया मृधम्। चामुण्डयावाकुर्वेते तवयोग्ये रणाङ्गणे ।४८
प्रहरस्व यथाकामं नाहं त्वां योद्धुमुत्सहे। इत्युक्त्वाकालिकांप्राहदेवीमधुरया गिरा।४९
जह्येन कालिके ! क्रूरे ! कुरूपंप्रियमाहवे ।

व्यास उवाच

इत्युक्ता कालिका कालप्रेरिता कालरूपिणी ॥५०॥
गदां प्रगृह्य तरसा तस्थावाजौ कृतोद्यमा। तयोः परस्परं युद्धं बभूवाऽतिभयानकम्।५१
पश्यतांसर्वदेवानां मुनीनां च महात्मनाम्। गदामुद्यम्य शुम्भोऽथजघानकालिकांरणे।५२
कालिका दैत्यराजानंगदयान्यहनद्भृशम्। बभञ्जाऽस्यरथंचण्डी गदयाकनकोज्ज्वलम्।५३
खरान्हत्वा जघानाऽऽशु दारुकं दारुणस्वना ।
स पदातिर्गदां गुर्वीं समादाय क्रुधाऽन्वितः ॥५४॥
कालिकामुभयोर्मध्ये प्रहसन्नहनत्तदा। वञ्चयित्वा गदापातं खड्गमादाय सत्वरा।५५
चिच्छेदाऽस्य भुजं सव्यं सायुधं चन्दनार्चितम् ।
स च्छिन्नबाहुर्विरथो गदापाणिः परिप्लुतः ॥५६॥
रुधिरेण समागम्य कालिकामहनत्तदा। काली च करबालेन भुजं तस्याऽथ दक्षिणम्।५७
चिच्छेद प्रहसन्ती सा सगदं किल साङ्गदम्। कर्तुं पादप्रहारंस कुपितःप्रययौजवात्।५८
काली चिच्छेद चरणौ खड्गेनाऽस्य त्वरान्विता।
स च्छिन्नकरपादोऽपि तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रुवन्॥५९॥
धावमानो ययावाशुकालिकांभीषयन्निव। तमागच्छंतमालोक्यकालिका कमलोपमम्।६०
चकर्त मस्तकंकण्ठाद्रुधिरौघवहंभृशम्। छिन्नेऽसौ मस्तके भूमौ पपातगिरिसन्निभः।६१
प्राणा विनिर्ययुस्तस्य देहादुत्क्रम्य सत्वरम् ।
गतासुं पतितं दैत्यं दृष्ट्वा देवाः सवासवाः ॥६२॥
तुष्टुवुस्तां तदा देवीं चामुण्डा कालिकां तथा ।
ववुर्वाताः शिवास्तत्र दिशश्च विमला भृशम् ॥६३॥
बभूवुश्चाऽग्नयोहोमेप्रदक्षिणशिखाःशुभाः। हतशेषाश्च ये दैत्याः प्रणम्यजगदम्बिकाम्।६४
त्यक्त्वाऽऽयुधानि ते सर्वे पातालंप्रययुर्नृप। एतत्ते सर्वमाख्यातन्देव्याश्चरितमुत्तमम्।६५
शुम्भादीनाम्वधञ्चैव सुराणां रक्षणन्तथा। एतदाख्यानकं सर्वम्पठन्ति भुवि मानवाः।६६
शृण्वन्ति च सदा भक्त्या ते कृतार्था भवन्ति हि ।
अपुत्रो लभते पुत्रान्निर्धनश्चधनम्बहु ॥६७॥
रोगी च मुच्यते रोगात्सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।
शत्रुतोनभयन्तस्ययइदञ्चरितं शुभम् ।
शृणोति पठते नित्यं मुक्तिमाञ्जायते नरः ॥६८॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे शुम्भवधोनामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥३१॥

* द्वात्रिंशोऽध्यायः *

सुरथराजस्यराज्याधिकारहननन्तस्यऋष्याश्रमेगमनवर्णनम्

जनमेजय उवाच

महिमावर्णितःसम्यक्चण्डिकायास्त्वयामुने!। केनचाऽऽराधितापूर्वञ्चरित्रत्रययोगतः ।१
प्रसन्ना कस्य वरदा केनप्राप्तम्फलम्महत्। आराध्य कामदां देवीं कथयस्व कृपानिधे।२
उपासनाविधिं ब्रह्मंस्तथा पूजाविधिं वद। विस्तरेण महाभाग! होमस्य च विधिं पुनः।३

सूत उवाच

इति भूपवचः श्रुत्वा प्रीतः सत्यवतीसुतः। प्रत्युवाच नृपं कृष्णो महामायाप्रपूजनम्।४

व्यास उवाच

स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वं सुरथो नाम पार्थिवः। बभूव परमोदारः प्रजापालनतत्परः।५
सत्यवादी कर्मपरो ब्राह्मणानाञ्च पूजकः। गुरुभक्तिरतो नित्यं स्वदारगमने रतः।६
दानशीलोऽविरोधी च धनुर्वेदैकपारगः। एवम्पालयतो राज्यं म्लेच्छाःपर्वतवासिनः।७

बलाच्छत्रुत्वमापन्नाः सैन्यं कृत्वा चतुर्विधम् ।
हस्त्यश्वरथपादातिसहितास्ते मदोत्कटाः ॥८॥

कोलाविध्वंसिनःप्राप्ताः पृथ्वीग्रहणतत्पराः। सुरथःसैन्यमादाय सम्मुखः समपद्यत।९
युद्धं समभवद्धोरं तस्य तैरतिदारुणैः। म्लेच्छानान्तुबलं स्वल्पंराज्ञस्तद्बलमद्भुतम्।१०
तथाऽपि तैर्जितो युद्धे दैवाद्राजापराजिताः। भग्नश्चस्वपुरंप्राप्तः सुरक्षं दुर्गमण्डितम्।११
चिन्तयामासमेधावीराजानीतिविचक्षणः। प्रधानान्विमनादृष्ट्वाशत्रुपक्षसमाश्रितान्।१२
स्थानं गृहीत्वा विपुलं परिखादुर्गमण्डितम्। कालप्रतीक्षा कर्तव्या किम्वा युद्धं वरं मतम्।१३
मन्त्रिणःशत्रुवशगा मन्त्रयोग्यानते किल। किं करोमीतिमनसाभूपतिःसमचिन्तयत्।१४

कदाचित्ते गृहीत्वा मां पापाचाराः पराश्रिताः ।
शत्रुभ्योऽथ प्रदास्यन्ति तदा किं वा भविष्यति ॥१५॥

पापबुद्धिषु विश्वासो न कर्तव्यःकदाचन। किं न ते वै प्रकुर्वन्ति ये लोभवशगानराः।१६
भ्रातरंपितरंमित्रं सुहृदं बान्धवं तथा। गुरुम्पूज्यं द्विजं द्वेष्टि लोभाविष्टः सदा नरः।१७
तस्मान्मया न कर्तव्यो विश्वासःसर्वथाऽधुना। मन्त्रिवर्गेऽतिपापिष्ठे शत्रुपक्षसमाश्रिते।१८
इति सञ्चिन्त्य मनसा राजा परमदुर्मनाः। एकाकी हयमारुह्यनिर्जगाम पुरात्ततः।१९
असहायोऽथ निर्गत्य गहनं वनमाश्रितः। चिन्तयामास मेधावी क्व गन्तव्यम्मयापुनः।२०
योजनत्रयमात्रे तु मुनेराश्रममुत्तमम्। ज्ञात्वा जगाम भूपालस्तापसस्य सुमेधसः।२१
बहुवृक्षसमायुक्तं नदीपुलिनसंश्रितम्। निर्वैरश्वापदाकीर्णं कोकिलारावमण्डितम्।२२
शिष्याध्ययनशब्दाढ्यं मृगयूथशतावृतम्। नीवारान्नसुपक्वाढ्यं सुपुष्पफलपादपम्।२३
होमधूमसुगन्धेन प्रीतिदं प्राणिनां सदा। वेदध्वनिसमाक्रान्तं स्वर्गादपि मनोहरम्।२४

दृष्ट्वा तमाश्रमं राजा बभूवाऽसौ मुदाऽन्वितः ।
भयं त्यक्त्वा मतिं चक्रे विश्रामाय द्विजाश्रमे ॥२५॥
आसज्य पादपेऽश्वन्तु जगाम विनयान्वितः ।
दृष्ट्वा तं मुनिमासीनं सालच्छायासु संश्रितम् ॥२६॥

मृगाजिनासनंशीतंतपसाऽतिकृशमृजुम् । अध्यापयन्तंशिष्यांश्चवेदशास्त्रार्थदर्शिनम्।२७
रहितं क्रोधलोभाद्यैर्द्वन्द्वातीतं विमत्सरम्। आत्मज्ञानरतं सत्यवादिनं शमसंयुतम्।२८

तं वीक्ष्य भूपतिर्भूमौ पपात दण्डवत्तदा। तदग्रेऽश्रुजलापूर्णनयनः प्रेमसंयुतः।२९
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भद्रन्ते तमुवाच तदामुनिः। शिष्योददौवृसींतस्मैगुरुणानोदितस्तदा।३०
उत्थाय नृपतिस्तस्यां समासीनस्तदाज्ञया। अर्घ्यपाद्यार्हणं चक्रे सुमेधा विधिपूर्वकम्।३१
पप्रच्छाऽत्र कुतः प्राप्तः कस्त्वंचिन्तापरः कथम्।
कथयस्व यथाकामं सम्वृतं कारणं त्विह ॥३२॥
किमागमनकृत्यन्ते ब्रूहि कार्यम्मनोगतम्। करिष्ये वाञ्छितं काममसाध्यमपियत्तव।३३

राजोवाच

सुरथोनाम राजाऽहं शत्रुभिश्चपराजितः। त्यक्त्वा राज्यं गृहंभार्यामहं ते शरणङ्गतः।३४
यदाज्ञापयसे ब्रह्मंस्तदहं भक्तितत्परः। करिष्यामि न मे त्राता त्वदन्यः पृथिवीतले।३५
शत्रुभ्यो मे भयङ्घोरं प्राप्तोऽस्म्यद्य तवाऽन्तिकम्।
त्रायस्व मुनिशार्दूल ! शरणाऽऽगतवत्सल! ॥३६॥

ऋषिरुवाच

निर्भयं वस राजेन्द्र! नाऽत्रतेशत्रवःकिल। आगमिष्यन्तिबलिनोनिश्चयन्तपसोबलात्।३७
नाऽत्र हिंसा प्रकर्तव्या वनवृत्त्या नृपोत्तम!। कर्तव्यं जीवनं शस्तैर्नीवारफलमूलकैः।३८

व्यास उवाच

इतितस्यवचःश्रुत्वानिर्भयःस नृपस्तदा। उवासाऽऽश्रमएवाऽसौफलमूलाशनःशुचिः।३९
कदाचित्सनृपस्तत्र वृक्षच्छायांसमाश्रितः। चिन्तयामासचिन्तार्तोगृहएवगताशयः।४०
राज्यंमेशत्रुभिः प्राप्तं म्लेच्छैःपापरतैःसदा। सम्पीडिताःस्युर्लोकास्तैर्दुराचारैर्गतत्रपैः।४१
गजाश्च तुरगाः सर्वे दुर्बला भक्ष्यवर्जिताः।
जाताः स्युर्नाऽत्र सन्देहः शत्रुणा परिपीडिताः ॥४२॥
सेवका मम सर्वे ते शत्रूणां वशवर्तिनः। दुःखिताएवजाताःस्युः पालितायेमया पुरा।४३
धनं मे सुदुराचारैरसद्व्ययपरैः परैः। द्यूतासवभुजिष्यादिस्थानेस्यात्प्रापितङ्किल।४४
कोशक्षयं करिष्यन्ति व्यसनैः पापबुद्धयः। न पात्रदाननिपुणाः म्लेच्छास्ते मन्त्रिणोऽपि मे।४५
इति चिन्तापरोराजावृक्षमूलस्थितोयदा। तदाऽऽजगामवैश्यस्तुकश्चिदार्तिपरस्तथा।४६
नृपेण पुरतो दृष्टः पार्श्वे तत्रोपवेशितः। पप्रच्छतं नृपःकोऽसि कुतएवाऽऽगतोवनम्।४७
कोऽसि कस्माच्च दीनोऽसि हरिणः शोकपीडितः।
ब्रूहि सत्यं महाभाग ! मैत्री साप्तपदी मता ॥४८॥

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वावचनंराज्ञस्तमुवाचविशोत्तमः। उपविश्यस्थिरोभूत्वामत्वासाधुसमागमम्।४९

वैश्य उवाच

मित्राऽहं वैश्यजातीयः समाधिर्नाम विश्रुतः। धनवान्धर्मनिपुणः सत्यवागनसूयकः।५०
पुत्रदारैर्निरस्तोवहं धनलुब्धैरसाधुभिः।
"कृपणेति मिषं कृत्वा त्यक्त्वा मायांसुदुस्त्यजाम्।।"
स्वजनेन च सन्त्यक्तः प्राप्तोऽस्मि वनमाशुवै ॥५१॥
कोऽसि त्वं भाग्यवान्भासि कथयस्व प्रियाऽधुना।

राजोवाच

सुरथो नाम राजाऽहं दस्युभिः पीडितोऽभवम् ॥५२॥
प्राप्तोऽस्मि गतराज्योऽत्र मन्त्रिभिः परिवञ्चितः।
दिष्ट्या त्वमत्र मित्रं मे मिलितोऽसि विशोत्तम! ॥५३॥

सुखेन विहरिष्यावो वनेऽत्रशुभपादपे। शोकं त्यज महाबुद्धे! स्वस्थोभव विशोत्तम! ।५४
"अत्रैव च यथाकामं सुखं तिष्ठ मया सह।"

वैश्य उवाच

कुटुम्बं मे निरालम्बं मयाहीनं सुदुःखितम्।
भविष्यति च चिन्तार्तं व्याधिशोकोपतापितम् ॥५५॥
भार्यादेहे सुखं नो वा पुत्रदेहे न वा सुखम्। इति चिन्तातुरंचेतोन मे शाम्यतिभूमिप।५६
कदा द्रक्ष्ये सुतं भार्यागृहं स्वजनमेव च।
स्वस्थं न मन्मनोराजन्गृहचिन्ताकुलम्भृशम् ॥५७॥

राजोवाच

यैर्निरस्तोऽसि पुत्राद्यैरसद्वृत्तैः सुबालिशैः।
तान्दृष्ट्वा किं सुखं तेऽद्य भविष्यति महामते! ॥५८॥
हितकारी वरः शत्रुर्दुःखदाः सुहृदःकृतः। तस्मात्स्थिरं मनः कृत्वा विहरस्वमयासह।५९

वैश्य उवाच

मनो मे न स्थिरं राजन्भवत्यद्य सुदुःखितम्।
चिन्तयाऽत्र कुटुम्बस्य दुस्त्यजस्य दुरात्मभिः ॥६०॥

राजोवाच

ममाऽपि राज्यजं दुःखं दुनोति किल मानसम्।
पृच्छावोऽद्य मुनिं शान्तं शोकनाशनमौषधम् ॥६१॥

व्यास उवाच

इतिकृत्वामतिंतौतुराजावैश्यश्चजग्मतुः। मुनिंतौविनयोपेतौ प्रष्टुंशोकस्य कारणम्।६२
गत्वा तं प्रणिपत्याऽऽह राजा ऋषिमनुत्तमम्।
आसीनं सम्यगासीनः शान्तं शान्तिमुपागतः ॥६३॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां पञ्चमस्कन्धे सुरथराजसमाधिवैश्ययोर्मुनिसमीपेगमनंनामद्वात्रिंशोऽध्यायः ॥३२॥

* त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः *

ऋषिसुमेधसम्प्रति राज्ञासुरथेन स्वदुःखवर्णनंऋषिणामहामायाप्रभाववर्णनं तत्रसङ्गेयुगादौब्रह्मविष्णवोर्विसम्वादोज्योतिलिंङ्गप्रादुर्भावोदेवाधिदेवेनमिथ्या-साक्षित्वेकेतकीपुष्पम्प्रतिसाक्रोशमुपालम्भआदिशक्तेर्महिमवर्णनम्

राजोवाच

मुने वैश्योऽयमधुना वने मे मित्रताङ्गतः। पुत्रदारैर्निरस्तोऽयं प्राप्तोऽत्र ममसङ्गमम्।१
"कुटुम्ब विरहेणाऽसौ दुःखितोऽतीवदुर्मनाः।
न शान्तिमुपयात्येष तथाऽपि मम साम्प्रतम् ॥२॥
गतराज्यस्यदुःखेनशोकार्तोऽस्मिमहामते"]। निष्कारणञ्च मे चिन्ताहृदयान्ननिवर्तते।३
हया मे दुर्बलाः स्युः किं गजाः शत्रुवशङ्गताः।
भृत्यवर्गस्तथा दुःखी जातःस्यात्तु मया विना।
कोशक्षयं करिष्यन्ति रिपवोऽतिबलात्क्षणात् ॥४॥
इत्येवं चिन्तयानस्य न मे निद्रातनौसुखम्। जानामीदंजगन्मिथ्यास्वप्रवत्सर्वमेव हि।५
जानतोऽपिनवोभ्रान्तंनस्थिरं भवतिप्रभो। कोऽहंकेऽश्वागजाःकेऽमीनतेमेचसहोदराः।६

न पुत्रा नच मित्राणि येषां दुःखं दुनोति माम् ।
भ्रमोऽयमितिजानामि तथाऽपि मम मानसः ॥७॥
मोहोनैवाऽपसरति किं तत्कारणमद्भुतम् । स्वामिंस्त्वमसि सर्वज्ञःसर्वसंशयनाशकृत् ।८
कारणं ब्रूहि मोहस्य ममाऽस्य च दयानिधे! ।

व्यास उवाच

इति पृष्टस्तदा राजा सुमेधा मुनिसत्तमः ॥९॥
तमुवाच परं ज्ञानं शोकमोहविनाशनम् ।

ऋषिरुवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कारणं वन्धमोक्षयोः ॥१०॥
महामायेति विख्याता सर्वेषां प्राणिनामिह ।
ब्रह्मा विष्णुस्तथेशानस्तुराषाड् वरुणोऽनिलः ॥११॥
सर्वे देवा मनुष्याश्च गन्धर्वोरगराक्षसाः । वृक्षाश्चविविधा वल्ल्यः पशवोमृगपक्षिणः ।१२
मायाधीनाश्च ते सर्वे भाजनं बन्धमोक्षयोः । तयासृष्टमिदं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।१३
तद्वशे वर्ततेनूनंमोहजालेनयन्त्रितम् । त्वं कियान्मानुषेष्वेकः क्षत्रियोरजसाऽऽविलः ।१४
ज्ञानिनामपि चेतांसि मोहयत्यनिशं हि सा । ब्रह्मेशवासुदेवाद्याज्ञानेसत्यपि शेषतः ।१५
तेऽपि रागवशाल्लोके भ्रमन्ति परिमोहिताः । पुरा सत्ययुगेराजन्विष्णुर्नारायणःस्वयम् ।१६
श्वेतद्वीपं समासाद्य चकार विपुलं तपः । वर्षाणामयुतं यावद्ब्रह्मविद्याप्रसक्तये ।१७
अनश्वरसुखायाऽसौ चिन्तयानस्ततःपरम् । एकस्मिन्निर्जने देशे ब्रह्माऽपि परमाद्भुते ।१८
स्थितस्तपसिराजेन्द्रमोहस्यविनिवृत्तये । कदाचिद्वासुदेवोऽसौ स्थलान्तरमतिर्हरिः ।१६
तस्माद्देशात्समुत्थाय जगामाऽन्यद्दिदृक्षया ।
चतुर्मुखोऽपि राजेन्द्र! तथैव निःसृतःस्थलात् ॥२०॥
मिलितौ मार्गमध्येतुचतुर्मुखचतुर्भुजौ । अन्योन्यंपृष्टवन्तौतौकस्त्वंकस्त्वमितिस्मह ।२१
ब्रह्मा प्रोवाच तं देवं कर्ताऽहं जगतःकिल । विष्णुस्तमाहभोमूर्खजगत्कर्ताऽहमच्युतः ।२२
त्वं कियान्बलहीनोऽसि रजोगुणसमाश्रितः ।
सत्त्वाश्रितं हि मां विद्धि वासुदेवं सनातनम् ॥२३॥
मया त्वं रक्षितोऽद्यैवकृत्वायुद्धंसुदारुणम् । शरणं मे समायातो दानवाभ्यांप्रपीडितः ।२४
मया तौ निहतौ कामंदानवौमधुकैटभौ । कथंगर्वायसे मन्द! मोहोऽयंत्यजसाम्प्रतम् ।२५
न मत्तोऽप्यधिकः कश्चित्संसारेऽस्मिन्प्रसारिते ।

ऋषिरुवाच

एवं प्रवदमानौ तौ ब्रह्मविष्णू परस्परम् ॥२६॥
स्फुरदोष्ठौ वेपमानौ लोहिताक्षौ वभूवतुः । प्रादुर्बभूव सहसा तयोर्विवदमानयोः ।२७
मध्ये लिङ्गंसुधाश्वेतं विपुलं दीर्घमद्भुतम् । आकाशे तरसा तत्र वागुवाचाऽशरीरिणी ।२८
तौ सम्बोध्य महाभागौ विवदन्तौ परस्परम् ।
ब्रह्मन्विष्णो विवादं मा कुरुतां वां परस्परम् ॥२६॥
लिङ्गस्याऽस्य परं पारमधस्तादुपरि ध्रुवम् । यो यातियुवयोर्मध्ये सश्रेष्ठोवांसदैवहि ।३०
एकः प्रयातु पातामाकाशमपरोऽधुना । प्रमाणं मे वचः कार्यं त्यक्त्वा वादं निरर्थकम् ।३१
मध्यस्थः सर्वदा कार्यो विवादेऽस्मिन्द्वयोरिह ।

ऋषिरुवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं दिव्यं सज्जीभूतौ कृतोद्यमौ ॥३२॥

जग्मतुर्मातुमग्रस्थं लिङ्गमद्भुतदर्शनम्। पातालमगमद्विष्णुर्ब्रह्माऽप्याकाशमेव च।३३
परिमातुं महाल्लिङ्गं स्वमहत्त्वविवृद्धये। विष्णुर्गत्वा कियद्देशं श्रान्तः सर्वात्मना यतः।३४
न प्रापाऽन्तं स लिङ्गस्य परिवृत्य ययौ स्थलम् ।
ब्रह्माऽगच्छत्ततश्चोर्ध्वं पतितं केतकीदलम् ।।३५।।
शिवस्यमस्तकात्प्राप्यपरावृत्तोमुदाऽऽवृतः। आगत्यतरसाब्रह्मा विष्णवे केतकीदलम्।३६
दर्शयित्वा च वितथमुवाच मदमोहितः। लिङ्गस्य मस्तकादेतद् गृहीतं केतकीदलम्।३७
अभिज्ञानाय चाऽऽनीतं तव चित्तप्रशान्तये। श्रुत्वा तद्ब्रह्मणो वाक्यं दृष्ट्वा च केतकीदलम्।३८
हरिस्तं प्रत्युवाचेदं साक्षीकःकथयाऽधुना। यथार्थवादी मेधावीसदाचारःशुचिःसमः।३९
साक्षी भवति सर्वत्र विषादे समुपस्थिते ।

ब्रह्मोवाच

दूरदेशात्समायाति साक्षी कः समयेऽधुना ।।४०।।
यत्सत्यं तद्वचःसेयं केतकी कथयिष्यति। इत्युक्त्वाप्रेरितातत्रब्रह्मणाकेतकीस्फुटम्।४१
वचनं प्राह तरसा शार्ङ्गिणंप्रत्यबोधयत्। शिवमूर्ध्निस्थितांब्रह्मागृहीत्वामांसमागतः।४२
सन्देहोऽत्र न कर्तव्यस्त्वया विष्णो ! कदाचन ।
मम वाक्यप्रमाणं हि ब्रह्मा पारं गतोऽस्य ह ।।४३।।
गृहीत्वा मां समायातः शिवभक्तैः समर्पिताम् ।
केतक्यावचनंश्रुत्वाहरिराहस्मयन्निव ।।४४।।
महादेवः प्रमाणं मे यद्यसौ वचनं वदेत् ।

ऋषिरुवाच

तदाकर्ण्य हरेर्वाक्यं महादेवः सनातनः ।।४५।।
कुपितः केतकींप्राहमिथ्यावादिनि! मा वद। गच्छतोमध्यतःप्राप्तापतितामस्तकान्मम।४६
मिथ्याभिभाषिणी त्यक्ता मया त्वंसर्वदैवहि। ब्रह्मा लज्जापरोभूत्वाननाममधुसूदनम्।४७
शिवेन केतकी त्यक्ता तद्दिनात्कुसुमेषु वै ।
एवं मायाबलं विद्धि ज्ञानिनामपि मोहदम् ।।४८।।
अन्येषां प्राणिनां राजन्कावार्ताविभ्रमंप्रति। देवानां कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वदैव रमापतिः।४९
दैत्यान्वञ्चयते चाऽऽशु त्यक्त्वापापभयं हरिः ।
अवतारकरोदेवोनानायोनिषु माधवः ।।५०।।
त्यक्त्वाऽऽनन्दसुखंदैत्यैर्युद्धंचैवाऽकरोद्विभुः। नूनं मायबलंचैतन्माधवेऽपिजगद्गुरौ।५१
सर्वज्ञेदेवकार्यांशे का वार्ताऽन्यस्य भूपते ।
ज्ञानिनामपि चेतांसि परमा प्रकृतिः किल ।।५२।।
बलादाकृष्य मोहाय प्रयच्छति महीपते!। यया व्याप्तमिदं सर्वं भगवत्या चराचरम्।५३
मोहदा ज्ञानदा सैव बन्धमोक्षप्रदा सदा।

राजोवाच

भगवन्ब्रूहि मे तस्याः स्वरूपं बलमुत्तमम् ।।५४।।
उत्पत्तिकारणं चाऽपि स्थानं परमकं च यत् ।

ऋषिरुवाच

नचोत्पत्तिरनादित्वान्नृप तस्याः कदाचन ।।५५।।
नित्यैवसापरा देवीकारणानांचकारणम् ।
वर्तते सर्वभूतेषु शक्तिःसर्वात्मना नृप ।।५६।।

शववच्छक्तिहीनस्तु प्राणी भवति सर्वथा। चिच्छक्तिः सर्वभूतेषुरूपं तस्यास्तदेवहि।५७
आविर्भावतिरोभावौ देवानां कार्यसिद्धये। यदा स्तुवन्तितांदेवामनुजाश्चविशाम्पते।५८
प्रादुर्भवतिभूतानांदुःखनाशाय चाऽम्बिका। नानारूपधरा देवी नानाशक्तिसमन्विता।५९
आविर्भवति कार्यार्थं स्वेच्छया परमेश्वरी। दैवाधीनानसा देवी यथा सर्वे सुरा नृप।६०
न कालवशगा नित्यं पुरुषार्थप्रवर्तिनी। अकर्ता पुरुषो द्रष्टा दृश्यं सर्वमिदं जगत्।६१
दृश्यस्य जननी सैव देवी सदसदात्मिका। पुरुषं रञ्जयत्येका कृत्वा ब्रह्माण्डनाटकम्।६२
रञ्जिते पुरुषे सर्वं संहरत्यतिरंहसा। तया निमित्तभूतास्ते ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।६३

कल्पिताः स्वस्वकार्येषु प्रेरिता लीलया त्वमी ।
स्वांशं तेषु समारोप्य कृतास्ते बलवत्तराः ॥६४॥

दत्ताश्च शक्तयस्तेभ्योगीर्लक्ष्मीर्गिरिजातथा। तेतांध्यायन्तिदेवेशाःपूजयन्तिपरांमुदा।६५

ज्ञात्वा सर्वेश्वरीं शक्तिं सृष्टिस्थितिविनाशिनीम् ।
एतत्ते सर्वमाख्यातं देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ॥६६॥
मम बुद्ध्यनुसारेण नाऽन्तं जानामि भूपते! ।

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपञ्चमस्कन्धे देवीमाहात्म्यवर्णनंनामत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

* चतुःस्त्रिंशोऽध्यायः *

सुमेधसम्प्रतिसुथरथराजस्यभगवत्याःसमाराधनविधिसम्बन्धेप्रश्नोदेवीमहत्त्व विषयेऋषिराजयोःसम्वादवर्णनम्

राजोवाच

भगवन्ब्रूहिमेसम्यक्तस्याआराधनेविधिम् ।पूजाविधिंचमन्त्रांश्चतथाहोमविधिं वद।१

ऋषिरुवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामितस्याःपूजांविधिंशुभम्। कामदं मोक्षदं नृणांज्ञानदंदुःखनाशनम्।२

आदौ स्नानविधिं कृत्वा शुचिःशुक्लाम्बरोनरः।
आचम्यप्रयतः कृत्वाशुभमायतनंनिजम् ॥३॥
ततोऽवलिप्तभूम्यान्तु संस्थाप्याऽऽसनमुत्तमम् ।
तत्रोपविश्य विधिवत्त्रिराचम्य मुदाऽन्वितः ॥४॥

पूजाद्रव्यं सुसंस्थाप्य यथाशक्त्यनुसारतः। प्राणायामं ततः कृत्वाभूतशुद्धिंविधायच।५

कुर्यात्प्राणप्रतिष्ठां तु सम्भारं प्रोक्ष्य मन्त्रतः ।
कालज्ञानन्ततः कृत्वा न्यासं कुर्याद्यथाविधि ॥६॥

शुभेताम्रमये पात्रे चन्दनेन सितेन च। षट्कोणंविलिखेद्यन्त्रं चाऽष्टकोणंततोबहिः।७
नवाक्षरस्य मन्त्रस्य बीजानिविलिखेत्ततः। कृत्वायन्त्रप्रतिष्ठाञ्च वेदोक्तांसम्विधायच।८
अर्चाम्वा धातवींकुयात्पूजामन्त्रैःशिवोदितैः। पूजनं पृथिवीपाल! भगवत्याः प्रयत्नतः।९
कृत्वावा विधिवत्पूजामागमोक्तांसमाहितः। जपेन्नवाक्षरं मन्त्रं सततं ध्यानपूर्वकम्।१०
होमं दशांशतः कुर्याद्दशांशेन च तर्पणम्। भोजनं ब्राह्मणानाञ्च तद्दशांशेन कारयेत्।११
चरित्रत्रयपाठञ्च नित्यं कुर्याद्विसर्जयेत्। नवरात्रव्रतञ्चैव विधेयं विधिपूर्वकम्।१२
आश्विने च तथा चैत्रे शुक्ले पक्षे नराधिप!। नवरात्रोपवासो वै कर्त्तव्यः शुभमिच्छता।१३
होमः सुविपुलः कार्यो जप्यमन्त्रैःसुपायसैः। शर्करावृतमिश्रैश्च मधुयुक्तैःसुसंस्कृतैः।१४

छागमांसेन वा कार्यो बिल्वपत्रैस्तथाशुभैः। हयारिकुसुमैरक्तै स्तिलैर्वा शर्करायुतैः।१५
अष्टम्याञ्च चतुर्दश्यां नवम्याञ्च विशेषतः। कर्तव्यं पूजनं देव्या ब्राह्मणानाञ्च भोजनम्।१६
निर्धनो धनमाप्नोति रोगी रोगात्प्रमुच्यते। अपुत्रोलभते पुत्राञ्छुभांश्चवशवर्तिनः।१७
राज्यभ्रष्टो नृपो राज्यं प्राप्नोति सार्वभौमिकम् ।
शत्रुभिः पीडितो हन्ति रिपुं मायाप्रसादतः ॥१८॥
विद्यार्थी पूजनं यस्तु करोतिनियतेन्द्रियः। अनवद्यांशुभांविद्यांविन्दतेनाऽत्रसंशयः।१६
ब्राह्मणो क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा भक्तिसंयुतः ।
पूजयेज्जगतां धात्रींससर्वसुखभाग्भवेत् ॥२०॥
नवरात्रव्रतं कुर्यान्नरनारीगणश्च यः। वाञ्छितं फलमाप्नोति सर्वदा भक्तितत्परः।२१
आश्विने शुक्लपक्षे तु नवरात्रव्रतं शुभम्। करोति भावसंयुक्तः सर्वान्कामानवाप्नुयात्।२२
विधिवन्मण्डलं कृत्वा पूजास्थानं प्रकल्पयेत्। कलशं स्थापयेत्तत्र वेदमन्त्रविधानतः।२३
यन्त्रंसुरुचिरंकृत्वास्थापयेत्कलशोपरि । वापयित्वायवांश्चारून्पार्श्वतः परिवर्तितान्।२४
कृत्वोपरि वितानं च पुष्पमालासमावृतम्। धूपदीपसुसंयुक्तं कर्तव्यं चण्डिकागृहम्।२५
त्रिकालं तत्र कर्तव्या पूजा शक्त्यनुसारतः। वित्तशाठ्यंनकर्तव्यंचण्डिकायाश्चपूजने।२६
धूपदीपैः सुनैवेद्यैः फलपुष्पैरनेकशः। गीतवाद्यैः स्तोत्रपाठैर्वेदपारायणैस्तथा।२७
उत्सवस्तत्र कर्तव्यो नानावादित्रसंयुतैः। कन्यकानां पूजनं च विधेयं विधिपूर्वकम्।२८
चन्दनैर्भूषणैर्वस्त्रैर्भक्ष्यैश्च विविधैस्तथा। सुगन्धतैलमाल्यैश्च मनसा रुचिकारकैः।२६
एवं सम्पूजनं कृत्वा होमं मन्त्र विधानतः। अष्टम्यां वा नवम्यां वा कारयेद्विधिपूर्वकम्।३०
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्पारणं दशमीदिने। कर्तव्यं शक्तितो दानं देयं भक्तिपरैर्नृपैः।३१
एवं यः कुरुते भक्त्या नवरात्रव्रतं नरः ।
नारी वा सधवा भक्त्या विधवा वा पतिव्रता ॥३२॥
इह लोके सुखंभोगान्प्राप्नोतिमनसेप्सितान्। देहान्ते परमं स्थानं प्राप्नोति व्रततत्परः।३३
जन्मान्तरेऽम्बिकाभक्तिर्भवत्यव्यभिचारिणी ।
जन्मोत्तमकुले प्राप्य सदाचारो भवेद्धि सः ॥३४॥
नवरात्रव्रतं प्रोक्तं व्रतानामुत्तमं व्रतम्। आराधनं शिवायास्तु सर्वसौख्यकरं परम्।३५
अनेन विधिना राजन्समाराधय चण्डिकाम् ।
जित्वा रिपूनस्खलितं राज्यं प्राप्स्यस्यनुत्तमम् ॥३६॥
सुखञ्च परमं भूप! देहेऽस्मिन्स्वगृहेपुनः। पुत्रदारान्समासाद्य लप्स्यसे नाऽत्र संशयः।३७
वैश्योत्तम! त्वमेवाऽद्य समाराधय कामदाम्। देवीं विश्वेश्वरीं मायां सृष्टिसंहारकारिणीम्।३८
स्वजनानां च मान्यस्त्वं भविष्यसि गृहे गतः। सुखं सांसारिकं प्राप्य यथाभिलषितं पुनः।३६
देवीलोके शुभे वासो भविता ते न संशयः। नाऽऽराधिताभगवतीयैस्तेनरकभागिनः।४०
इह लोकेऽतिदुःखार्ता नानारोगैःप्रपीडिताः। भवन्ति मानवा राजञ्छत्रुभिश्च पराजिताः।४१
निष्कलत्रा ह्यपुत्राश्च तृष्णार्ताः स्तब्धबुद्धयः। बिल्वीदलैःकरवीरैःशतपत्रैश्चचम्पकैः।४२
अर्चिता जगतां धात्री यैस्तेऽतीव विलासिनः। भवन्ति कृतपुण्यास्ते शक्तिभक्तिपरायणाः।४३
धनविभवसुखाढ्या मानवा मानवन्तः सकलगुणगणानां भाजनं भारतीशाः।
निगमपठितमन्त्रैः पूजिता यैर्भवानी नृपतितिलकमुख्यास्ते भवन्तीह लोके।४४

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांपञ्चमस्कन्धे भगवत्याःपूजाराधनविधिवर्णनंनामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३४॥

* पञ्चत्रिंशोऽध्यायः *

राजवैश्ययोर्देवीप्रसादेनकृततपसोस्तत्प्रत्यक्षदर्शनंतयोरिष्टप्राप्तिवर्णनम्

व्यास उवाच

इति तस्य वचःश्रुत्वादुःखितौवैश्यपार्थिवौ। प्रणिपत्यमुनिंप्रीत्याप्रश्रयानवतौभृशम्।१
हर्षेणोत्फुल्लनयनावूचतुर्वाक्यकोविदौ। कृताञ्जलिपुटौ शान्तौ भक्तिप्रवणचेतसौ।२
भगवन्पावितावद्य शान्तौ दीनौ शुचान्वितौ। तव सूक्तसरस्वत्या गङ्गयेव भगीरथः।३
साधवः सम्भवन्तीह परोपकृतितत्पराः। अकृत्रिमगुणारामाः सुखदाः सर्वदेहिनाम्।४
पूर्वपुण्यप्रसङ्गेन प्राप्तोऽयमाश्रमःशुभः। तवाऽऽवाभ्यां महाभाग! महादुःखविनाशकः।५
भवन्ति मानवा भूमौ बहवःस्वार्थतत्पराः। परार्थसाधनेदक्षाःकेचित्क्वाऽपि भवादृशाः।६

दुःखितोऽहं मुनिश्रेष्ठ! वैश्योऽयं चाऽतिदुःखितः।
उभौ संसारसन्तप्तौ तवाऽऽश्रमपदे मुदा ॥७॥

दर्शनादेव हे विद्वन्! गतं दुःखमिहाऽऽवयोः। देहजं मानसंवाक्यश्रवणादेवसाम्प्रतम्।८
धन्यावावां कृतकृत्यौजातौसूक्तिसुधारसात्। पावितौभवताब्रह्मन्कृपया करुणार्णव।९

गृहाणाऽस्मत्करौ साधो! नय पारं भवार्णवे।
मग्नौ श्रान्ताविति ज्ञात्वा मन्त्रदानेन साम्प्रतम् ॥१०॥
तपः कृत्वाऽतिविपुलं समाराध्य सुखप्रदम्।
सम्प्राप्य दर्शनं भूयो यास्यावो निजमन्दिरम् ॥११॥

वदनात्तव संप्राप्य देवीमन्त्रं नवाक्षरम्। स्मरणं च करिष्यावो निराहारौ धृतव्रतौ।१२

व्यास उवाच

इति सञ्चोदितस्ताभ्यां सुमेधामुनिसत्तमः। ददौमन्त्रंशुभंताभ्यांध्यानबीजपुरःसरम्।१३
तौ च प्राप्य मुनेर्मन्त्रं सम्मन्त्र्यगुरुदैवतौ। जग्मतुर्वैश्यराजानौ नदीतीरमनुत्तमम्।१४
एकान्ते विजने स्थानेकृत्वाऽऽसनपरिग्रहम्। उपविष्टौ स्थिरप्रज्ञौ तावतीवकृशोदरौ।१५
मन्त्रजाप्यरतौ शान्तौ चरित्रत्रयपाठकौ। निन्यतुर्मासमेकं तु तत्र ध्यानपरायणौ।१६
तयोर्मासव्रते नैव जाताप्रीतिरनुत्तमा। पादाम्बुजेभवान्यास्तुस्थिराबुद्धिस्तथाऽप्यलम्।१७
कदाचित्पादयोर्गत्वा मुनेस्तस्य महात्मनः। कृतप्राणामावागत्य तस्थतुश्चकुशासने।१८
नान्यकार्यपरौ क्वाऽपि बभूवतुः कदाचन। देवीध्यानपरौ नित्यं जप मन्त्ररतौ सदा।१९
एवं जाते तदा पूर्णे तत्र सम्वत्सरे नृप। बभूवतुः फलाहारं त्यक्त्वा पर्णाशिनौनृप।२०
वर्षमेकं तपस्तत्र चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ। शुष्कपर्णाशनौ दान्तौ जपध्यानपरायणौ।२१
पूर्णे वर्षद्वये जाते कदाचिद्दर्शनं च तौ। प्रापतुः स्वप्नमध्ये तु भगवत्या मनोहरम्।२२
रक्ताम्बरधरां देवीं चारूभूषणभूषिताम्। कदाचिन्नृपतिःस्वप्नेऽप्यपश्यज्जगदम्बिकाम्।२३
वीक्ष्य स्वप्नेचतौदेवींप्रीतियुक्तौबभूवतुः। जलाहारैस्तृतीयेतुस्थितौसम्वत्सरेतुतौ।२४
एवं वर्षत्रयं कृत्वा ततस्तौ वैश्यपार्थिवौ। चक्रतुस्तौतदाचिन्तांचित्तेदर्शनलालसौ।२५

प्रत्यक्षदर्शनं देव्या न प्राप्तं शान्तिदं नृणाम्।
देहत्यागंकरिष्यावोदुःखितौभृशमातुरौ ॥२६॥

इति सञ्चिन्त्यमनसाराजाकुण्डंचकार ह। त्रिकोणंसुस्थिरंसौम्यंहस्तमात्रप्रमाणतः।२७

संस्थाप्य पावकं राजा तथा वैश्योऽतिभक्तिमान्।
जुहावाऽसौ निजं मांसं छित्त्वा छित्त्वा पुनः पुनः ॥२८॥

तथावैश्योऽपिदीप्तेऽग्नौस्वमांसंप्राक्षिपत्तदा। रुधिरेणबलिंचास्यैददतुस्तौकृतोद्यमौ।२९
तदा भगवती दत्त्वा प्रत्यक्षंदर्शनं तयोः। प्राहप्रीतिभरोद्भ्रान्तौदृष्ट्वातौदुःखितौभृशम्।३०

श्रीदेव्युवाच

वरंवरयभोराजन्यत्तेमनसि वाञ्छितम्। तुष्टाऽहंतपसातेऽद्यभक्तोऽसित्वंमतोमम।३१
वैश्यंप्राहतदादेवीप्रसन्नाऽहंमहामते! । किन्तेऽभीष्टं ददाम्यद्यप्रार्थयाऽऽशु मनोगतम्।३२

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वावचनंराजा तामुवाच मुदाऽन्वितः। देहिमेऽद्यनिजंराज्यं हतशत्रुबलं बलात्।३३
तमुवाच तदा देवी गच्छ राजन्निजं गृहम्। शत्रवःक्षीणसत्त्वास्ते गमिष्यन्ति पराजिताः।३४
मन्त्रिणस्तेसमागम्य ते पतिष्यन्तिपादयोः। कुरुराज्यंमहाभागनगरे स्वंयथासुखम्।३५
कृत्वाराज्यंसुविपुलंवर्षाणामयुतंनृप ! । देहान्तेजन्मसंप्राप्यसूर्याच्चभवितामनुः।३६

व्यास उवाच

वैश्यस्तामप्युवाचेदं कृताञ्जलिपुटः शुचिः। न मे गृहेण कार्यं वै न पुत्रेण धनेन वा।३७
सर्वं बन्धकरं मातः! स्वप्नवन्नश्वरं स्फुटम्। ज्ञानंमे देहि विशदं मोक्षदं बन्धनाशनम्।३८
असारेऽस्मिंश्च संसारे मूढा मज्जन्ति पामराः।
पण्डिताः सन्तरन्तीह तस्मान्नेच्छन्ति संसृतिम् ॥३९॥

व्यास उवाच

तदाकर्ण्यमहामाया वैश्यंप्राह पुरःस्थितम्। वैश्यवर्य तवज्ञानं भविष्यति न संशयः।४०
इति दत्त्वा वरं ताभ्यां तत्रैवाऽन्तरधीयत। अदर्शनं गतायां तुराजा तं मुनिसत्तमम्।४१
प्रणम्य हयमारुह्य गमनाय मनो दधे। तदैव तस्य सचिवास्तत्राऽऽगत्य नृपंप्रजाः।४२
प्रणेमुर्विनयोपेतास्तमूचुः प्राञ्जलि स्थिताः। राजंस्ते शत्रवः सर्वे पापाच्च निहतारणे।४३
राज्यं निष्कण्टकं भूपकुरुष्वपुरमास्थितः। तच्छ्रुत्वावचनं राजानत्वातं मुनिसत्तमम्।४४
आपृच्छ्य निर्ययौ तत्र मन्त्रिभिः परिवारितः।
सम्प्राप्य च निजं राज्यं दारान्स्वजनबान्धवान् ॥४५॥
बुभुजे पृथिवीं सर्वां ततः सागरमेखलाम्। वैश्योऽपिज्ञानमासाद्यमुक्तसङ्गःसमन्ततः।४६
कालातिवाहनं तत्र मुक्तबन्धश्चकार ह। तीर्थेषु विचरन्गायन्भगवत्या गुणानथ।४७
एतत्ते कथितं देव्याश्चरितं परमाद्भुतम्। आराधनफलप्राप्तिर्यथावद्भूपवैश्ययोः।४८
दैत्यानां हननं प्रोक्तं प्रादुर्भावस्तथा शुभः। एवंप्रभावा सा देवी भक्तानामभयप्रदा।४९
यः शृणोति नरो नित्यमेतदाख्यानमुत्तमम्। स प्राप्नोति नरःसत्यं संसारसुखमद्भुतम्।५०
ज्ञानदं मोक्षदं चैव कीर्तिदं सुखदं तथा। पावनं श्रवणान्नूनमेतदाख्यानमुत्तमम्।५१
अखिलार्थप्रदं नृणां सर्वधर्मसमावृतम्। धर्मार्थकाममोक्षाणां कारणं परमं मतम्।५२

सूत उवाच

जनमेजयेनराज्ञाऽसौपृष्टःसत्यवतीसुतः। उवाचसंहितांदिव्यांव्यासःसर्वार्थतत्त्ववित्।५३
चरितं चण्डिकायास्तु शुम्भदैत्यवधाश्रितम्।
कथयामास भगवान्कृष्णः कारुणिको मुनिः ॥५४॥
इति वः कथितः सारः पुराणानां मुनीश्वराः! ।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां
संहितायां पञ्चमस्कन्धे
सुरथराजसमाधिवैश्ययोर्देवीभक्त्येष्टप्राप्तिवर्णनंनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः॥३५॥

।।श्रीगणेशाय नमः।।

देवीभागवतपुराणम्

षष्ठं स्कन्धम्

* प्रथमोऽध्यायः *

वृत्रासुरकथायांसूतम्प्रतितद्वधार्थंसत्त्वगुणेनविष्णुनाकथंछद्मना-
कार्यंकृतमिति ऋषिप्रश्नेतदुत्तरवार्त्तावर्णनम्

ऋषय ऊचुः

सूत सूत महाभाग! मिष्टन्ते वचनामृतम्।न तृप्ताः स्मोवयं पीत्वाद्वैपायनकृतंशुभम्।१
पुनस्त्वां प्रष्टुमिच्छामः कथां पौराणिकीं शुभाम् ।
वेदेऽपि कथितां रम्यां प्रसिद्धां पापनाशिनीम् ।।२।।
वृत्रासुर इतिख्यातोवीर्यवांस्त्वष्टुरात्मजः।स कथंनिहतः संख्ये वासवेनमहात्मनः।३
त्वष्टा वै सुरपक्षीयस्तत्पुत्रो बलवत्तरः।शक्रेण घातितः कस्माद्ब्रह्मयोनिर्महाबलः।४
देवाःसत्त्वगुणोत्पन्नामानुषाराजसाःस्मृताः।तिर्यञ्चस्तमसाप्रोक्तापुराणागमवादिभिः।५
विरोधोऽत्र महान्भाति नूनं शतमखेन ह।छलेन बलवान्वृत्रः शक्रेण विनिपातितः।६
विष्णुः प्रेरयिता तत्र स तु सत्त्वधरःपरः।प्रविष्टः पविमध्ये स छद्मना भगवान्प्रभुः।७
सन्धिं विधाय स ह्येवं मन्त्रितोऽसौ महाबलः ।
हरिभ्यां सत्यमुत्सृत्य जलफेनेन शातितः ।।८।।
कृतमिन्द्रेणहरिणाकिमेतत्सूत! साहसम्।महान्तोऽपिच मोहेन वञ्चिताःपापबुद्धयः।९
अन्यायवर्तिनोऽत्यर्थं भवन्ति सुरसत्तमाः।सदाचारेण युक्तेन देवाः शिष्टत्वमागताः।१०
एवं विशिष्टधर्मेण शिष्टत्वं कीदृशंपुनः।हत्वा वृत्रन्तु विश्वस्तं शक्रेणच्छद्मनापुनः।११
प्राप्तं पापफलं नो वा ब्रह्महत्यासमुद्भवम्।किं च त्वया पुरा प्रोक्तं वृत्रासुरवधःकृतः।१२
श्रीदेव्या इति तच्चाऽपि चित्तं मोहयतीह नः ।

सूत उवाच

शृण्वन्तु मुनयो वृत्तं वृत्रासुरवधाश्रयम् ।।१३।।
यथेन्द्रेण च सम्प्राप्तं दुःखं हत्यासमुद्भवम्।एवमेव पुरा पृष्टो व्यासःसत्यवतीसुतः।१४
पारीक्षितेन राज्ञाऽपि स यदाह च तद् ब्रुवे।

जनमेजय उवाच

कथं वृत्रासुरः पूर्वं हतो मघवता मुने! ।।१५।।
सहायंविष्णुमासाद्यच्छद्मनासात्त्विकेन ह।कथञ्चदेव्या निहतो दैत्योऽसौकेनहेतुना।१६
कथमेकवधोद्वाभ्यां कृतः स्यान्मुनिपुङ्गव!।तदेतच्छ्रोतुमिच्छामिपरंकौतूहलं हि मे।१७
महतांचरितं शृण्वन्को विरज्येत मानवः।कथयाऽम्बावैभवं त्वंवृत्रासुरवधाश्रितम्।१८

व्यास उवाच

धन्योऽसि राजंस्तव बुद्धिरीदृशी जाता पुराणश्रवणेऽतिसादरा ।
पीत्वाऽमृतं देववरास्तु सर्वथा पाने वितृष्णाःप्रभवन्ति वै पुनः ।।१९।।

दिने दिने तेऽधिकभक्तिभावः कथासु राजन्महनीयकीर्तेः ।
श्रोता यदैकप्रवणः शृणोति वक्ता तदा प्रीतमना ब्रवीति ॥२०॥
युद्धं पुरा वासववृत्रयोर्यद्विदे प्रसिद्धञ्च तथा पुराणे ।
दुःखं सुरेन्द्रेण तथैव लब्धं हत्वा रिपुं त्वाष्ट्रमपायमेव ॥२१॥
चित्रं किमत्र नृपते! हरिवज्रभृद्भ्यां यच्छद्मना विनिहतस्त्रिशिरोऽथ वृत्रः ।
मायाबलेन मुनयोऽपि विमोहितास्ते चक्रुश्चनिन्द्यमनिशं किल पापभीताः ।२२
विष्णुः सदैव कपटेन जघान दैत्यान्सत्त्वात्ममूर्तिरपि मोहमवाप्य कामम् ।
कोऽन्योऽस्ति तां भगवतीं मनसाऽपि जेतुं शक्तः समस्तजनमोहकरीं भवानीम् ।२३
मत्स्यादियोनिषु सहस्रयुगेषु सद्यः साक्षाद्भवत्यपि यथा विनियोजितोऽत्र ।
नारायणो नरसखो भगवाननन्तः कार्यं करोति विहिताविहितं कदाचित् ।२४
देहं धनं गृहमिदं स्वजना मदीयं पुत्राः कलत्रमिति मोहमुपेत्य सर्वः ।
पुण्यं करोत्यथ च पापचयं करोति मायागुणैरतिबलैर्विकलीकृतो यत् ।२५
न जातु मोहं क्षपितुं नरः क्षमः कश्चिद्भवेद्भूप! परावरार्थवित् ।
विमोहितस्तैस्त्रिभिरेव मूलतो वशीकृतात्मा जगतीतले भृशम् ।२६
अथ तौमाययाविष्णुवासवौमोहितौभृशम् । जघ्नतुश्छद्मना वृत्रं स्वार्थसाधनतत्परौ ।२७
तदहं सम्प्रवक्ष्यामि वृत्तान्तमवनीपते! । कारणं पूर्ववैरस्य वृत्रवासवयोर्मिथः ।२८
त्वष्टाप्रजापतिर्ह्यासीद्देवश्रेष्ठो महातपाः । देवानां कार्यकर्ता च निपुणो ब्राह्मणप्रियः ।२९
सपुत्रं वै त्रिशिरसमिन्द्रद्वेषात्किलाऽसृजत् ।
विश्वरूपेति विख्यातं नाम्ना रूपेण मोहनम् ॥३०॥
त्रिभिःसवदनैःश्रेष्ठैर्व्यरोचयतमनोहरैः । त्रिभिर्भिन्नानिकार्याणिमुखैःसमकरोन्मुनिः ।३१
वेदानेकेन सोऽधीते सुरांचैकेन सोऽपिबत् । तृतीयेन दिशःसर्वा युगपच्च निरीक्षते ।३२
त्रिशिरा भोगमुत्सृज्यतपश्चक्रेसुदुष्करम् । तपस्वी स मृदुर्दान्तो धर्ममेवसमाश्रितः ।३३
पञ्चाग्निसाधनं काले पादपाग्रे निवेशनन् । जलमध्ये निवासञ्च हेमन्ते शिशिरे तथा ।३४
निराहारो जितात्माऽसौत्यक्तसर्वपरिग्रहः । तपश्चचारमेधावी दुष्करं मन्दबुद्धिभिः ।३५
तं च दृष्ट्वा तपस्यन्तं खेदमाप शचीपतिः । विषादमगमत्तत्र शक्रोऽयं मास्मभूदिति ।३६
दृष्ट्वा तस्य तपोवीर्यंसत्यञ्चाऽमिततेजसः । चिन्ताञ्च महतीं प्राप ह्यनिशं पाकशासनः ।३७
विवर्धमानस्त्रिशिरा मामयं शातयिष्यति । नोपेक्ष्यः सर्वथाशत्रुर्वर्धमानबलो बुधैः ।३८
तस्मादुपायः कर्तव्यस्तपोनाशाय साम्प्रतम् ।
कामस्तु तपसां शत्रुः कामान्नश्यति वै तपः ॥३९॥
तथैवाऽद्य प्रकर्तव्यं भोगासक्तो भवेद्यथा । इति सञ्चिन्त्य मनसा बुद्धिमान्बलमर्दनः ।४०
आज्ञापयत्सोऽप्सरसस्त्वाष्ट्रपुत्रप्रलोभने ।
उर्वशीं मेनकां रम्भां घृताचीं च तिलोत्तमाम् ॥४१॥
समाहूयाऽब्रवीच्छक्रस्तास्तदारूपगर्विताः । प्रियंकुरुध्वं मे सर्वाःकार्येऽद्यसमुपस्थिते ।४२
यतोमेऽद्य महाञ्छत्रुस्तपस्तपति दुर्जयः । कार्यं कुरुतगच्छध्वं प्रलोभयत माचिरम् ।४३
शृङ्गारवेषैर्विविधैर्हावैर्देहसमुद्भवैः । प्रलोभयत भद्रम्वः शमयध्वं ज्वरं मम ।४४
अस्वस्थोऽहं महाभागास्तस्य ज्ञात्वा तपोबलम् ।
बलवानासनं मेऽद्य ग्रहीष्यत्यविलम्बितः ॥४५॥

भयं मे समुपायातं क्षिप्रं नाशयताऽबलाः। उपकुर्वन्तु सहिताः कार्येऽद्यसमुपस्थिते।४६
तच्छ्रुत्वा वचनं नार्य ऊचुस्तं प्रणताः पुरः। मा भयं कुरु देवेश! यतिष्यामःप्रलोभने।४७
यथा न स्याद्भयं तस्मात्तथा कार्यं महाद्युते!। नृत्यगीतविहारैश्च मुनेस्तस्यप्रलोभने।४८
कटाक्षैरङ्गभेदैश्च मोहयित्वामुनिं विभो। लोलुपं वशमस्माकंकरिष्यामोनियन्त्रितम्।४९

व्यास उवाच

इत्याभाष्य हरिं नार्यो ययुस्त्रिशिरसोऽन्तिकम् ।
कुर्वन्त्यो विविधान्भावान्कामशास्त्रोचितानपि ॥५०॥
गायन्त्यस्तालभेदैस्ता नृत्यन्त्यः पुरतो मुनेः। तं प्रलोभयितुंचक्रुर्नानाभावान्वराङ्गनाः।५१
नाऽपश्यत्सतपोराशिरङ्गनानां विडम्बनम्। इन्द्रियाणिवशेकृत्वामूकान्धबधिरःस्थिरः।५२
दिनानि कतिचित्तस्थुर्नार्यस्तस्याऽऽश्रमे वरे ।
कुर्वन्त्यो गाननृत्यादिप्रपञ्चानति मोहदान् ॥५३॥
न चचाल यदा कामं ध्यानाच्चत्रिशिरामुनिः। परावृत्य तदा देव्यःपुनःशक्रमुपस्थिताः।५४
कृताञ्जलिपुटाः सर्वादेवराजमथाऽब्रुवन्। श्रांता दीना भयत्रस्ता विवर्णवदनाभृशम्।५५
देवदेवमहाराज ! यत्नश्च परमः कृतः। न स शक्यो दुराधर्षो धैर्याच्चालयितुं विभो!।५६
उपायोऽन्यः प्रकर्तव्यः सर्वथा पाकशासन! ।
नाऽस्माकं बलमेतस्मिंस्तापसे विजितेन्द्रिय ॥५७॥
दिष्ट्या वयं न शप्ताः स्म यदनेन महात्मना। मुनिना वह्नितुल्येन तपसाद्योतितेनहि।५८
विसृज्याऽप्सरसः शक्रश्चिन्तयामास मन्दधीः ।
तस्यैव च वधोपायं पापबुद्धिरसाम्प्रतम् ॥५९॥
विसृज्यलोकलज्जां स तथा पापभयंभृशम्। चकार पापबुद्धिं तु तद्वधाय महीपते!।६०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे त्रिशिरसस्तपोभङ्गायदेवराजेन्द्रद्वारानानोपायचिन्तनवर्णनंनामप्रथमोऽध्यायः।१।

* द्वितीयोऽध्यायः *

इन्द्रकृतत्रिशिरवधानन्तरंत्वष्ट्रादेवराजवधार्थंवृत्रोत्पत्तिरितिवर्णनम्

व्यास उवाच

अथ स लोभमुपेत्य सुराधिपः समधिगम्य गजाननसंस्थितः ।
त्रिशिरसं प्रति दुष्टमतिस्तदा मुनिमपश्यदमेयपराक्रमम् ॥१॥
तमभिवीक्ष्य दृढासनसंस्थितं जितगिरं सुसमाधिवशं गतम् ।
रविविभावसुसन्निभमोजसा सुरपतिः परमापदमभ्यगात् ॥२॥
कथमसौ विनिहन्तुमहो मया! मुनिरपापमतिः किल सम्मतः ।
रिपुरयं सुसमिद्धतपोबलः कथमुपेक्ष्य इहाऽऽसनकामुकः ॥३॥
इति विचिन्त्य पविं परमायुधं प्रति मुमोच मुनिं तपसि स्थितम् ।
शशिदिवाकरसन्निभमाशुगं त्रिशिरसं सुरसङ्घपतिः स्वयम् ॥४॥
तदभिघातहतः स धरातले किल पपात ममार च तापसः ।
शिखरिणः शिखरं कुलिशार्दितं निपतितं भुवि चाऽद्भुतदर्शनम् ॥५॥
तं निहत्य मुदमाप सुरेशश्चुक्रुशुश्च मुनयस्तु संस्थिताः ।
हाहतेति भृशमार्तनिस्वनाः किं कृतं शतमखेन पापिना ॥६॥

विनापराधं तपसां निधिर्हतः शचीपतिः पापमतिर्दुरात्मा ।
फलं किलाऽयं तरसा कृतस्य प्राप्नोतु पापी हननोद्भवस्य ॥७॥
तं निहत्य तरसा सुरराजो निर्जगाम निजमन्दिरमाशु ।
स हतोऽपि विरराज महात्मा जीवमान इव तेजसां निधिः ॥८॥
तं दृष्ट्वा पतितं भूमौ जीवन्तमिववृत्रहा। चिंतामापाऽतिखिन्नाङ्गः किंवाजीवेदयं पुनः।६
विमृश्यमनसाऽतीवतत्क्षणंपुरतःस्थितम् ।मघवा वीक्ष्य तं प्राहस्वकार्यसदृशं वचः।१०
तक्षंश्छिंधिशिरांस्यस्यकुरुष्ववचनं मम। माजीवतुमहातेजाभातिजीवन्निव स्वयम्।११
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य तक्षोवाच विगर्हयन् ।

तक्षोवाच

महास्कन्धो भृशं भाति परशुर्न तरिष्यति ॥१२॥
ततो नाऽहंकरिष्यामिकार्यमेतद्विगर्हितम्। त्वया वै निन्दितंकर्मकृतं सद्भिर्विगर्हितम्।१३
अहं विभेमि पापाद्वै मृतस्यैव च मारणे। मृतोऽयं मुनिरस्त्येव शिरसःकृन्तनेनकिम्।१४
भयं किं तेऽत्र सञ्जातं पाकशासन !कथ्यताम् ।

इन्द्र उवाच

सजीव इव देहोऽयमाभाति विशदाकृतिः ॥१५॥
तस्माद् विभेमि मा जीवेन्मुनिः शत्रुरयं मम ।

तक्षोवाच

नाऽत्र किं त्रपसे विद्वन्क्रूरेणाऽनेन कर्मणा ॥१६॥
ऋषिपुत्रमिमं हत्वा ब्रह्महत्याभयं न किम्? ।

इन्द्र उवाच

प्रायश्चित्तं करिष्यामि पश्चात्पापक्षयाय वै ॥१७॥
शत्रुस्तु सर्वथा वध्यश्छलेनाऽपि महामते! ।

तक्षोवाच

त्वं लोभाऽभिहतः पापं करोषि मघवन्निह ॥१८॥
तं विनाऽहं कथं पापं करोमि वद मे विभो! ।

इन्द्र उवाच

मखेषु खलु भागं ते करिष्यामि सदैव हि ॥१६॥
शिरः पशोस्तु ते भागं यज्ञे दास्यन्ति मानवाः ।
शुक्लेनाऽनेन छिन्धि त्वं शिरांस्यस्य कुरु प्रियम् ॥२०॥

व्यास उवाच

एतच्छ्रुत्वा महेन्द्रस्य वचस्तक्षामुदाऽन्वितः। कुठारेण शिरांस्यस्यचकर्तसुदृढेनहि।२१
छिन्नानि त्रीणि शीर्षाणि पतितानि यदा भुवि ।
तेभ्यस्तु पक्षिणः क्षिप्रं विनिष्पेतुः सहस्रशः ॥२२॥
कलविङ्कास्तित्तिरयस्तथैवच कपिञ्जलाः। पृथक्पृथग्विनिष्पेतुर्मुखतस्तरसा तदा।२३
येनवेदानधीते स्म सोमञ्चपिबते तथा। तस्माद्वक्त्रात्किलोपेतुः सद्यःएवकपिञ्जलाः।२४
येन सर्वादिशः कामं पिबन्निव निरीक्षते ।
तस्मात्तु तित्तिरास्तत्र निःसृतास्तिग्मतेजसः ॥२५॥
यत्सुरापं तु तद्वक्त्रं तस्मात्तुचटकाःकिल। विनिष्पेतुस्त्रिशिरसएवन्ते विहगा नृप।२६

एवं विनिःसृतान्दृष्ट्वा तेभ्यः शक्रस्तदाऽण्डजान्। मुमोदमनसाराजञ्जगामत्रिदिवंपुनः।२७
गते शक्रे तु तक्षाऽपि स्वगृहं तरसा ययौ। यज्ञभागं परं लब्ध्वा मुदमाप महीपते।२८
इन्द्रोऽथ स्वगृहं गत्वा हत्वा शत्रुं महाबलम्।
मेने कृतार्थमात्मानं ब्रह्महत्यामचिन्तयन्॥२९॥
तं श्रुत्वा निहतं त्वष्टा पुत्रम्परमधार्मिकम्। चुकोपाऽतीव मनसा वचनं चेदमब्रवीत्।३०
अनागसं मुनिं यस्मात्पुत्रं निहतवान्मम। तस्मादुत्पादयिष्यामि तद्वधार्थं सुतं पुनः।३१
सुराः पश्यन्तु मे वीर्यं तपसश्च बलन्तथा। जानातुसर्वंपापात्मा स्वकृतस्यफलंमहत्।३२
इत्युक्त्वाऽग्निं जुहावाऽथ मन्त्रैराथर्वणोदितैः।
पुत्रस्योत्पादनार्थाय त्वष्टा क्रोधसमाकुलः॥३३॥
कृते होमेऽष्टरात्रं तु सन्दीप्ताच्च विभावसोः। प्रादुर्बभूव तरसा पुरुषः पावकोपमः।३४
तं दृष्ट्वाऽग्रे सुतं त्वष्टा तेजोबलसमन्वितम्।
वेगात्प्रकटितं वह्नेर्दीप्यमानमिवाऽनलम्॥३५॥
उवाच वचनं त्वष्टा सुतं वीक्ष्यपुरःस्थितम्। इन्द्रशत्रो विवर्धस्व प्रतापात्तपसोमम।३६
इत्युक्ते वचने त्वष्ट्राक्रोधप्रज्वलितेनच। सोऽवर्धतदिवं स्तब्ध्वा वैश्वानरसमद्युतिः।३७
जातः स पर्वताकारः कालमृत्युसमः स्वराट्।
किं करोमीति तं प्राह पितरं परमातुरम्॥३८॥
कुरु मे नामकं नाथ कार्यं कथयसुव्रत। चिन्तातुरोऽसिकस्मात्त्वंब्रूहिमेशोककारणम्।३९
नाशयाम्यद्यते शोकमितिमे व्रतमाहितम्। तेन जातेन किं भूयःपिताभवतिदुःखितः।४०
पिबामिसागरं सद्यश्चूर्णयामिधराधरान्। उद्यन्तं वारयाम्यद्य तरणिं तिग्मतेजसम्।४१
हन्मीन्द्रं ससुरं सद्यो यमं वा देवतान्तरम्। क्षिपामि सागरे सर्वान्समुत्पाट्य च मेदिनीम्।४२
इत्याकर्ण्यवचस्तस्य त्वष्टापुत्रस्य पेशलम्। प्रत्युवाचाऽतिमुदितस्तंसुतंपर्वतोपमम्।४३
वृजिनात्त्रातुमधुना यस्माच्छक्तोऽसि पुत्रक!।
तस्माद् वृत्र इति ख्यातं तव नाम भविष्यति॥४४॥
भ्राता तव महाभाग त्रिशिरानामतापसः। त्रीणितस्यचशीर्षाणिह्यभवन्वीर्यवन्तिच।४५
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञः सर्वविद्याविशारदः। संस्थितस्तपसि प्रायस्त्रिलोकीविस्मयप्रदे।४६
शक्रेण तु हतः सोऽद्य वज्रघातेन साम्प्रतम्।
विनाऽपराधं सहसा छिन्नानिमस्तकानि च॥४७॥
तस्मात्त्वं पुरुषव्याघ्र जहिशक्रंकृतागसम्। ब्रह्महत्यायुतं पापं निस्त्रपं दुर्मतिं शठम्।४८
इत्युक्त्वा च तदा त्वष्टा पुत्रशोकसमाकुलः।
आयुधानि च दिव्यानि चकार विविधानि च॥४९॥
ददावस्मै सहस्राक्षवधाय प्रबलानि च। खड्गशूलगदाशक्तितोमरप्रमुखानि वै।५०
शार्ङ्गंधनुस्तथा बाणं परिघं पट्टिशं तथा। चक्रं दिव्यं सहस्रारं सुदर्शनसमप्रभम्।५१
तूणीरौचाक्षयौदिव्यौ कवचं चाऽतिसुन्दरम्। रथं मेघप्रतीकाशं दृढं भारसहंजवम्।५२
युद्धोपकरणं सर्वं कृत्वा पुत्राय पार्थिव!।
दत्त्वाऽसौ प्रेरयामास त्वष्टा क्रोधसमन्वितः॥५३॥

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां षष्ठस्कन्धे त्वष्ट्रात्रिशिरोवधमनुवृत्रोत्पत्तिवर्णनंनामद्वितीयोऽध्यायः॥२॥

* तृतीयोऽध्यायः *

शक्रवधार्थंवृत्रस्यगमनंइन्द्रबृहस्पतिसम्वादवर्णनपूर्वकंदेवानांपराजयो वृत्रासुरविजयवर्णनंत्वष्ट्रावृत्रायसमाराधनोपदेशवर्णनम्

व्यास उवाच

कृतस्वस्त्ययनो वृत्रो ब्राह्मणैर्वेदपारगैः। निर्जगाम रथारूढो हन्तुं शक्रं महाबलः।१
तदैव राक्षसाः क्रूराः पुरा देवपराजिताः। समाजग्मुश्च सेवार्थं वृत्रं ज्ञात्वा महाबलम्।२
इन्द्रदूतास्तु तंदृष्टा युद्धाय तु समागतम्। वेगादागत्यवृत्तान्तंशशंसुस्तस्यचेष्टितम्।३

दूता ऊचुः

स्वामिञ्छीघ्रमिहाऽऽयाति वृत्रो नाम रिपुस्तव ।
बलवान्स्यन्दने रूढस्त्वष्ट्रा चोत्पादितः किल ।।४।।

अभिचारेण नाशार्थं तव क्रोधान्वितेन वै। पुत्रघाताभितप्तेन दुःसहो राक्षसैर्युतः।५
यत्नंकुरु महाभाग! शीघ्रमायातिसाम्प्रतम्। मेरुमन्दरसङ्काशो घोरशब्दोऽतिदारुणः।६
एतस्मिन्नन्तरे तत्र भीता देवगणा भृशम्। आगत्योचुःसुरपतिंशृण्वन्तं दूतभाषितम्।७

गणा ऊचुः

मघवन्दुर्निमित्तानि भवन्ति त्रिदशालये। बहूनि भयशंसीनि पक्षिणांविरुतानि च।८
काका गृध्रास्तथा श्येनाः कङ्काद्या दारुणाः खगाः ।
रुदन्ति विकृतैः शब्दैरुल्कारैर्भवनोपरि ।।९।।

चीचीकूचीतिनिनदान्कुर्वन्तिविहगाभृशम्। वाहनानाञ्चनेत्रेभ्योजलधाराः पतन्त्यधः।१०
श्रूयतेऽतिमहाञ्छब्दो रुदतीनां निशासु च। राक्षसीनांमहाभाग! भवनोपरि दारुणः।११
प्रपतन्तिध्वजास्तूर्णं विनावातेन मानद। प्रभवन्तिमहोत्पाता दिविभूम्यन्तरिक्षजाः।१२
कृष्णाम्बरधरानार्यो भ्रमन्तिचगृहेगृहे। यान्तु यान्तु गृहात्तूर्णं कुर्वन्त्यो विकृताननाः।१३
रात्रौ स्वप्नेषु कान्तानां सुप्तानां निजमन्दिरे ।
केशाँल्लुनन्ति राक्षस्यो भीपयन्त्यो भृशातुराः ।।१४।।

एवं विधानि देवेश भूकम्पोल्कादयस्तथा। गोमायवोरुदन्तिस्मनिशायां भवनाङ्गणे।१५
सरटानाञ्च जालानि प्रभवन्ति गृहेगृहे। अङ्गप्रस्फुरणादीनि दुर्निमित्तानि सर्वशः।१६

व्यास उवाच

इति तेषां वचः श्रुत्वा चिन्तामाप सुरेश्वरः। बृहस्पतिं समाहूयपप्रच्छ चमनोगतम्।१७

इन्द्र उवाच

ब्रह्मन्किमुतघोराणिनिमित्तानिभवन्तिवै। वाताश्चदारुणा वान्ति प्रपतंत्यलकाःखतः।१८
सर्वज्ञोऽसि महाभाग समर्थो विघ्ननाशने ।
बुद्धिमाञ्छास्त्रतत्त्वज्ञो देवतानां गुरुस्तथा ।।१९।।

कुरुशान्तिंविधानज्ञ! शत्रुक्षयविधायिनीम्। यथामेन भवेद्दुःखंतथाकार्यंविधीयताम्।२०

बृहस्पतिरुवाच

किं करोमि सहस्राक्ष! त्वयाऽद्य दुष्कृतं कृतम् ।
अनागसं मुनिं हत्वा किं फलं समुपार्जितम् ।।२१।।

अत्युग्रपुण्यपापानां फलं भवति सत्वरम्। विचार्य खलुकर्तव्यंकार्यंतद्भूतिमिच्छता।२२
परोपतापनं कर्म न कर्तव्यं कदाचन। न सुखं विन्दते प्राणी परपीडापरायणः।२३

मोहाल्लोभाद्ब्रह्महत्याकृता शक्र त्वयाऽधुना। तस्यपापस्यसहसा फलमेतदुपागतम् ।२४
अवध्यः सर्वदेवानांजातोऽसौवृत्रसञ्ज्ञकः। हन्तुं त्वां ससमायाति दानवैर्बहुभिर्वृतः ।२५
आयुधानि च सर्वाणि वज्रतुल्यानि वासव! ।
त्वष्ट्रा दत्तानि दिव्यानि गृहीत्वा समुपस्थितः ।।२६।।
समागच्छति दुर्धर्षो रथारूढः प्रतापवान्। देवेन्द्र! प्रलयंकुर्वन्नाऽस्यमृत्युर्भविष्यति ।२७
कोलाहलस्तदा जातस्तथाब्रुवति वाक्पतौ ।
गन्धर्वाः किन्नरा यक्षा मुनयश्च तपोधनाः ।।२८।।
सदनानि विहायैवाऽमराःसर्वे पलायिताः। तद् दृष्ट्वा महदाश्चर्यं शक्रश्चिन्तापरायणः ।२९
आज्ञापयामास तदा सेनोद्योगाय सेवकान्। आनयध्वं वसूत्रुद्राश्विनौच दिवाकरान् ।३०
पूषणञ्च भगं वायुं कुबेरं वरुणं यमम्। विमानेषु समारुह्य सायुधाः सुरसत्तमाः ।३१
समागच्छन्तु तरसा शत्रुरायाति साम्प्रतम् ।
इत्याज्ञाप्य सुरपतिः समारुह्य गजोत्तमम् ।।३२।।
बृहस्पतिंपुरोधायनिर्गतोनिजमन्दिरात् । तथैवत्रिदशाःसर्वे स्वं स्ववाहनमास्थिताः ।३३
युद्धाय कृतसंकल्पा निर्ययुः शस्त्रपाणयः। वृत्रोऽथ दानवैर्युक्तः संप्राप्तो मानसोत्तरम् ।३४
पर्वतं देवतावासं रम्यं पादपशोभितम्। इन्द्रोऽप्यागत्य सङ्ग्रामं चकार मानसोत्तरे ।३५
पर्वते देवतायुक्तो वाचस्पतिपुरः सरः। तत्राऽभूद्दारुणंयुद्धं वृत्रवासवयोस्तदा ।३६
गदासिपरिघैः पाशैर्बाणैः शक्तिपरश्वधैः। मानुषेण प्रमाणेन संग्रामः शरदां शतम् ।३७
बभूव भयदो नृणामृषीणां भावितात्मनाम् ।
वरुणः प्रथमं भग्नस्ततो वायुगणः किल ।।३८।।
यमो विभावसुःशक्रः सर्वे तेनिर्गता रणात्। पलायनपरान्दृष्ट्वा देवानिन्द्रपुरोगमान् ।३९
वृत्रोऽपिपितरंप्रागादाश्रमस्थंमुदाऽन्वितम्। प्रणम्यप्राहत्वष्टारं पितुःकार्यं मयाकृतम् ।४०
देवा विनिर्जिताः सर्वे सेन्द्राः सामरसंस्थिताः ।
विद्रुतास्ते गताः स्थानं यथा सिंहान्मृगा गजाः ।।४१।।
इन्द्रः पदातिरगमन्मयाऽऽनीतो गजोत्तमः। ऐरावतोऽयं भगवन्गृहाणद्विरदोत्तमम् ।४२
न हतास्ते मया तस्मादयुक्तं भीतमारणम् ।
आज्ञापय पुनस्तात किं करोमि तवेप्सितम् ।।४३।।
निर्जरा निर्गताः सर्वेभयभीताःश्रमातुराः। इंद्रोऽप्यैरावतं त्यक्त्वा भयभीतःपलायितः ।४४

व्यास उवाच

इतिपुत्रवचःश्रुत्वात्वष्टाप्राहमुदाऽन्वितः । पुत्रवानद्यजातोऽस्मिसफलं ममजीवितम् ।४५
त्वयाऽहंपावितःपुत्रगतो मे मानसोज्वरः ।
निश्चलं मे मनो जातं दृष्ट्वा वीर्यं तवाऽद्भुतम् ।।४६।।
शृणुवक्ष्याम्यहं पुत्रहितं तेऽद्य निशामय। तपः कुरुमहाभाग सावधानः स्थिरासनः ।४७
विश्वासो नैव कर्तव्यः केषाञ्चित्पाकशासनः ।
शत्रुस्ते छलकर्ताऽस्ति नानाभेदविशारदः ।।४८।।
तपसा प्राप्यते लक्ष्मीस्तपसा राज्यमुत्तमम् ।
तपसा बलवृद्धिः स्यात्सङ्ग्रामे विजयस्तथा ।।४९।।
आराध्यद्रुहिणं देवं लब्ध्वा वरमनुत्तमम्। जहि शक्रं दुराचारंब्रह्महत्यासमायुतम् ।५०

सावधानः स्थिरो भूत्वा दातारं भज शङ्करम्। वाञ्छितंस वरंदद्यात्संतुष्टश्चतुराननः।५१

तोषयित्वा विश्वयोनिं ब्रह्माणममितौजसम्।

अविनाशित्वमासाद्य जहि शक्रं कृतागसम् ।।५२।।

वैरं मनसि मे पुत्रं वर्तते सुतघातजम्। नशान्तिमनुगच्छामि न स्वपामि सुखेन ह।५३

तापसो मे हतः पुत्रोनिरागाःपाप्मनायतः। न विन्दामिसुखंवृत्रत्वं मामुद्धरदुःखितम्।५४

व्यास उवाच

तदाकर्ण्य पितुर्वाक्यं वृत्रः क्रोधयुतस्तदा। आज्ञामादाय च पितुर्जगाम तपसे मुदा।५५

गन्धमादनमासाद्य पुण्यां देवधुनींशुभाम्। स्नात्वा कुशासनं कृत्वा संस्थितश्च स्थिरासनः।५६

त्यक्त्वाऽन्नं वारिपानं च योगाभ्यासपरायणः ।

ध्यायन्विश्वसृजं चित्ते सोपविष्टः स्थिरासने ।।५७।।

मघवा तं तपस्यन्तंज्ञात्वाचिन्तातुरोह्यभूत्। गंधर्वान्प्रेषयामासविघ्नार्थं पाकशासनः।५८

यक्षांश्चपन्नगान्सर्पान्किन्नरानमितौजसः। विद्याधरानप्सरसो देवदूताननेकशः।५९

उपायास्तैः कृताः सम्यक्तपोविघ्नाय मायिभिः ।

न चचाल ततो ध्यानात्त्वाष्टः परमतापसः ।।६०।।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांषष्ठस्कन्धे ब्रह्मणःसमाराधनायत्वष्ट्रावृत्रोपदेशवर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ।। ३ ।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

वृत्रम्प्रतिब्रह्मणोवरदानम् वृत्रेणवरगर्वेणपराभूतानांदेवानांब्रह्मशिवसहितानां विष्णुसमीपेगमनम्

व्यास उवाच

निर्गतास्ते परावृत्तास्तपोविघ्नकराःसुराः। निराशाःकार्यसंसिध्यै तं दृष्ट्वादृढचेतसम्। १

जाते वर्षशते पूर्णे ब्रह्मालोकपितामहः। तत्राऽऽजगाम तरसा हंसारूढश्चतुर्मुखः। २

आगत्य तमुवाचेदं त्वष्टृ पुत्र! सुखीभव। त्यक्त्वा ध्यानं वरंब्रूहि ददामि तव वाञ्छितम्। ३

तपसा तेऽद्यतुष्टोऽस्मि त्वां दृष्ट्वाचाऽतिकर्शितम् ।

वरं वरय भद्रं ते मनोऽभिलषितं तव ।।४।।

व्यास उवाच

वृत्रस्तदाऽतिविशदां पुरतो निशम्य वाचं सुधासमरसां जगदेककर्तुः।

संत्यज्य योगकलनां सहसोदतिष्ठत्सञ्जातहर्षनयनाश्रुकलाकलापः ।।५।।

पादौ प्रणम्य शिरसा प्रणयाद्विधातुर्बद्धाञ्जलिः पुरत एव समाससाद।

प्रोवाच तं सुवरदं तपसा प्रपन्नं प्रेम्णाऽतिगद्गदगिरा विनयेन नम्रः ।।६।।

प्राप्तं मया सकलदेवपदं प्रभोऽद्य यद्दर्शनं तव सुदुर्लभमाशु जातम्।

वाञ्छाऽस्ति नाथ! मनसिप्रवणे दुरापा तां प्रब्रवीमि कमलासन! वेत्सि भावम् ।।७।।

मृत्युश्च मा भवतु मे किल लोहकाष्ठशुष्कार्द्रवंशनिचयैरपरैश्च शस्त्रैः।

वृद्धिं प्रयात मम वीर्यमतीव युद्ध यस्माद्भवामि सबलैरमरैरजेयः ।।८।।

व्यास उवाच

इत्थं सम्प्रार्थितोब्रह्मा तमाह प्रहसन्निव। उत्तिष्ठ गच्छ भद्रन्ते वाञ्छितंसफलंसदा। ९

नशुष्केण नचाऽऽर्द्रेण नपाषाणेन दारुणा। भविष्यतिचतेमृत्युरितिसत्यंब्रवीम्यहम्। १०

इति दत्त्वा वरं ब्रह्मा जगाम भुवनं परम् ।
वृत्रस्तु तं वरं लब्ध्वा मुदितः स्वगृहं ययौ ।।११।।
शशंस पितुरग्रे तद्वरदानं महामतिः। त्वष्टा तु मुदितः प्राप्तं पुत्रं प्राप्तवरं तदा।१२
स्वस्ति तेऽस्तु महाभाग! जहि शक्रं रिपुं मम ।
हत्वाऽऽगच्छ त्रिशिरसो हन्तारंपापसंयुतम् ।।१३।।
भव त्वंत्रिदशाधीशःसम्प्राप्यविजयं रणे। ममाऽऽधिंछिन्धिविपुलंपुत्रनाशसमुद्भवम्।१४
जीवतो वाक्यकरणात्क्षयाहे भूरिभोजनात् ।
गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता ।।१५।।
तस्मात्पुत्र ! ममाऽत्यर्थं दुःखं नाशितुमर्हसि ।
त्रिशिरा मम चित्तात्तु नाऽपसर्पति कर्हिचित् ।।१६।।
सुशीलः सत्यवादी च तापसो वेदवित्तमः। अपराधं विना तेन निहतःपापबुद्धिना।१७

व्यास उवाच

इतितस्यवचःश्रुत्वा पुत्रः परमदुर्जयः। रथमारुह्य तरसा निर्जगाम पितुर्गृहात्।१८
रणदुन्दुभिनिर्घोषं शङ्खनादं महाबलम्। कारयित्वा प्रयाणं स चकार मदगर्वितः।१९
निर्ययौनयसंयुक्तःसेवकानिति सम्वदन्। हत्वाशक्रं ग्रहीष्यामि सुरराज्यमकण्टकम्।२०
इत्युक्त्वा निर्जगामाऽऽशु स्वसैन्यपरिवारितः। महतासैन्यनादेनभीषयन्नमरावतीम्।२१
तमागच्छन्तमाज्ञाय तुराषाडपि सत्वरः। सेनोद्योगं भयत्रस्तः कारयामास भारत!।२२
सर्वानाहूय तरसा लोकपालानरिन्दमः ।
युद्धार्थं प्रेरयन्सर्वान्सर्वान्व्यरोचत महाद्युतिः ।।२३।।
गृध्रव्यूहं ततः कृत्वा संस्थितः पाकशासनः। तत्राऽऽजगाम वेगात्तु वृत्राःपरबलार्दनः।२४
देवदानवयोस्तावत्संग्रामस्तुमुलोऽभवत्। वृत्रवासवयोः संख्ये मनसा विजयैषिणोः।२५
एवं परस्परं युद्धे सन्दीप्ते भयदे भृशम्। आकूतं देवताः प्रापुदत्याश्च परमां मुदम्।२६
तोमरैर्भिन्दिपालैश्च खड्गैः परशुपट्टिशैः। जघ्नुः परस्परं देवदैत्याः स्वस्ववरायुधैः।२७
एवं युद्धे वर्तमाने दारुणे लोमहर्षणे। शक्रं जग्राह सहसा वृत्रः क्रोधसमन्वितः।२८
अपावृत्य मुखे क्षिप्त्वा स्थितो वृत्रः शतक्रतुम् ।
मुदितोऽभून्महाराजपूर्ववैरमनुस्मरन् ।।२९।।
शक्रे ग्रस्तेऽथ वृत्रेण सम्भ्रान्तानिर्जरास्तदा। चुक्रुशुःपरमार्तास्ते हाशक्रेतिमुहुर्मुहुः।३०
अपावृतं मुखे शक्रं ज्ञात्वा सर्वे दिवोकसः। बृहस्पतिं प्रणम्योचुर्दीना व्यथितचेतसः।३१
किं कर्तव्यं द्विजश्रेष्ठत्वमस्माकंगुरुः परः। शक्रो ग्रस्तस्तु वृत्रेणरक्षितो देवतान्तरैः।३२
विना शक्रेणकिं कुर्मः सर्वे हीनपराक्रमाः। अभिचारं कुरु विभो! सत्वरः शक्रमुक्तये।३३

बृहस्पतिरुवाच

किं कर्तव्यं सुराः क्षिप्तो मुखमध्येऽस्ति वासवः।
वृत्रेणोत्सादितो जीवन्नस्ति कोष्ठान्तरे रिपाः।।३४।।

व्यास उवाच

देवाश्चिन्तातुराः सर्वेतुरासाहं तथा कृतम्। दृष्ट्वा विमृश्य तरसा चक्रुर्यत्नं विमुक्तये।३५
असृजन्त महासत्त्वां जृम्भिकां रिपुनाशिनीम् ।
ततो विजृम्भमाणः स व्यावृतास्यो बभूव ह ।।३६।।

विजृम्भमाणस्य ततो वृत्रस्याऽऽस्यादवाप तत् ।
स्वान्यङ्गान्यपि संक्षिप्य निष्क्रान्तो बलसूदनः ।।३७।।
ततःप्रभृति लोकेषुजृम्भिका प्राणिसंस्थिता।जहृषुश्चसुराः सर्वेशक्रंदृष्ट्वाविनिर्गतम्।३८
ततः प्रववृते युद्धं तयोर्लोकभयप्रदम्।वर्षाणामयुतं यावद्दारुणं लोमहर्षणम्।३६
एकतश्च सुराः सर्वे युद्धाय समुपस्थिताः।एकतो बलवांस्त्वाष्ट्रः संग्रामे समवर्तत।४०
यदा व्यवर्धत रणे वृत्रो वरमदावृतः।पराजितस्तदा शक्रस्तेजसा तस्य धर्षितः।४१
विव्यथे मघवा युद्धे ततः प्राप्य पराजयम्।विषादमगमन्देवा दृष्ट्वा शक्रंपराजितम्।४२
जग्मुस्त्यक्त्वा रणं सर्वेदेवा इन्द्रपुरोगमाः।गृहीतं देवसदनं वृत्रेणाऽऽगत्य रंहसा।४३
देवोद्यानानि सर्वाणि भुङ्क्तेऽसौ दानवो बलात् ।
ऐरावतोऽपि दैत्येन गृहीतोऽसौ गजोत्तमः ।।४४।।
विमानानि च सर्वाणि गृहीतानिविशाम्पते।उच्चैःश्रवा हयवरोजातस्तस्यवशेतदा।४५
कामधेनुः परिजातो गणश्चाऽप्सरसांतथा।गृहीतं रत्नमात्रं तु तेन त्वष्टृसुतेन ह।४६
स्थानभ्रष्टाःसुराःसर्वेगिरिदुर्गेषुसंस्थिताः।दुःखमापुःपरिभ्रष्टा यज्ञभागात्सुरालयात्।४७
तत्रः सुरपदं प्राप्य बभूव मदगर्वितः।त्वष्टाऽतीव सुखं प्राप्य मुमोद सुतसंयुतः।४८
अमन्त्रयन्हितं देवा मुनिभिः सह भारत!।किं कर्तव्यमिति प्राप्ते विचिन्त्य भयमोहिताः।४६
जग्मुः कैलासमचलं सुराः शक्रसमन्विताः।महादेवं प्रणम्योचुःप्रह्वाःप्राञ्जलयोभृशम्।५०
देवदेव महादेव कृपासिंधो महेश्वर।रक्षाऽस्मान्भयभीतांस्तु वृत्रेणाऽतिपराजितान्।५१
गृहीतं देवसदनं तेन देव! बलीयसा।किं कर्तव्यमतः शम्भोब्रूहिसत्यं शिवाऽद्य नः।५२
किंकुर्मःक्वचगच्छामःस्थानभ्रष्टामहेश्वर!।दुःखस्यनाऽधिगच्छामोविनाशोपायमीश्वर।५३
साहाय्यं कुरु भूतेश ! व्यथिताः स्म कृपानिधे! ।
वृत्रं जहि मदोत्सिक्तं वरदानबलाद्विभो! ।।५४।।

शिव उवाच

ब्रह्माणं पुरतः कृत्वा वयं सर्वे हरेःक्षयम्।गत्वासमेत्यतंविष्णुंचिन्तयामोवधोद्यमम्।५५
सशक्तश्च च्छलज्ञश्च बलवान्बुद्धिमत्तरः।शरण्यश्च दयाब्धिश्च वासुदेवो जनार्दनः।५६
विनातं देवदेवेशं नाऽर्थसिद्धिर्भविष्यति।तस्मात्तत्र च गन्तव्यं सर्वकार्यार्थसिद्धये।५७

व्यास उवाच

इति संचिन्त्य ते सर्वेब्रह्माशक्रःसशंकरः।जग्मुर्विष्णोःक्षयंदेवाःशरण्यंभक्तवत्सलम्।५८
गत्वा विष्णुपदं देवास्तुष्टुवुः परमेश्वरम्।हरिं पुरुषसूक्तेन वेदोक्तेन जगद्गुरुम्।५६
प्रत्यक्षोऽभूज्जगन्नाथस्तेषां न कमलापतिः।सम्मान्य च सुरान्यसर्वानित्युवाच पुरः स्थितः।६०
किमागताःस्मः लोकेशा हरब्रह्मसमन्विताः।कारणं कथयध्वं वःसर्वेषांसुरसत्तमाः।६१

व्यास उवाच

इति श्रुत्वा हरेर्वाक्यं नोचुर्देवा रमापतिम् ।
चिन्ताविष्टाः स्थिताः प्रायः सर्वेप्राञ्जजलयस्तथा ।।६२।।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे ब्रह्मनेतृत्वेसेन्द्रैःसुरै र्विष्णोःशरणगमनवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

* पञ्चमोऽध्यायः *

विष्णुसमीपेदेवैःवृत्रकृतास्वास्थ्यपीडितैःब्रह्मशङ्करेन्द्रपुरःसरंवृत्रवधायगमनं तदुपदेशेनजगन्मातुराराधनवर्णनम्

व्यास उवाच

तथा चिन्तातुरान्वीक्ष्य सर्वान्सर्वार्थतत्त्ववित् ।
प्राह प्रेमभरोद्भ्रान्तान्माधवो मेदिनीपते! ॥१॥

विष्णुरुवाच

किं मौनमाश्रिता यूयं ब्रुवन्तुकारणं सुराः। सदसद्वाऽपियच्छ्रुत्वायतिष्येतन्निवारणे।२

देवा ऊचुः

किमज्ञातं तव विभो त्रिषु लोकेषु वर्तते। सर्वं वेद भवान्कार्यं किं पृच्छसिपुनःपुनः।३
त्वया पूर्वं बलिर्बद्धः शक्रो देवाधिपः कृतः। वामनं वपुरास्थाय क्रान्तं त्रिभुवनं पदैः।४
अमृतंत्वाहृतंविष्णोदैत्याश्च विनिपातिताः। त्वंप्रभुःसर्वदेवानांसर्वापद्विनिवारणे।५

विष्णुरुवाच

न भेतव्यं सुरवरा वेद्म्युपायं सुसम्मतम्। तद्वधाय प्रवक्ष्यामियेनसौख्यंभविष्यति।६
अवश्यं करणीयं मे भवतां हितमात्मना। बुद्ध्या बलेन चार्थेन येन केन च्छलेन वा।७
उपायाःखलुःचत्वारः कथितास्तत्त्वदर्शिभिः। सामादयःसुहृत्स्वेवदुर्हृदेषुविशेषतः।८
ब्रह्मणाऽस्य वरो दत्तस्तपसाऽऽराधितेन च। दुर्जयत्वं च संप्राप्तं वरदानप्रभावतः।९
अजेयः सर्वभूतानां त्वष्ट्रा समुपपादितः। ततो बलेन वृद्धिं स प्राप्तः परपुरञ्जयः।१०
दुःसाध्योऽसौ सुराः शत्रुर्विना सामप्रतारणम् ।
प्रलोभ्यवशमानेयोहन्तव्यस्तु ततः परम् ॥११॥
गच्छध्वं सर्वगन्धर्वा यत्राऽसौ बलवत्तरः। साम तस्य प्रयुञ्जध्वं तत एनं विजेष्यथ।१२
सङ्गम्यशपथान्कृत्वा विश्वास्य समयेन हि। मित्रत्वं च समाधायहन्तव्यःप्रबलोरिपुः।१३
अदृश्य सम्प्रवेक्ष्यामि वज्रमस्य वरायुधम् ।
साहाय्यं च करिष्यामि शक्रस्याऽहं सुरोत्तमाः! ॥१४॥
समयं च प्रतीक्षध्वंसर्वथैवाऽऽयुषःक्षये। मरणं विबुधास्तस्य नान्यथासम्भविष्यति।१५
गच्छध्वमृषिभिःसार्धं गन्धर्वाः कपटावृताः। इन्द्रेण सहमित्रत्वंकुरुध्वंवाक्यदानतः।१६
यथा स याति विश्वासं तथा कार्यं प्रतारणम् ।
गुप्तोऽहं सम्प्रवेक्ष्यामि पविं सञ्छादितं दृढम् ॥१७॥
विश्वस्तंमघवा शत्रुं हनिष्यति नचाऽन्यथा। विश्वासस्यकृतेपापंकृत्वाशक्रस्तुपृष्ठतः।१८
मत्सहायोऽथ वज्रेण शातयिष्यति पापिनम्। नदोषोऽत्रशठेशत्रौशाठ्यमेवप्रकुर्वतः।१९
नाऽन्यथा बलवान्वध्यःशूरधर्मेण जायते। वामनं पमाधाय मयाऽयं वञ्चितो बलिः।२०
कृत्वा च मोहिनी वेषं दैत्याःसर्वेऽपि वञ्चिताः। भवन्तः सहिताः सर्वे देवीं भगवतीं शिवाम्।२१
गच्छध्वं शरणं भावैः स्तोत्रमन्त्रैःसुरोत्तमाः!। साहाय्यं सा योगमाया भवतां सम्विधास्यति।२२
वन्दामहे सदा देवीं सात्त्विकीं प्रकृतिं पराम्। सिद्धिदां कामदां कामां दुरापामकृतात्मभिः।२३
इन्द्रोऽपितांसमाराध्यहनिष्यतिरिपुंरणे । मोहिनीसामहामायामोहयिष्यातिदानवम्।२४
मोहितोमाययावृत्रःसुखसाध्योभविष्यति। प्रसन्नायांपराम्बायांसर्वंसाध्यंभविष्यति।२५
नो चेन्मनोरथावाप्तिर्न कस्याऽपि भविष्यति। अन्तर्यामिस्व पा सा सर्वकारणकारणा।२६

तस्मात्तां विश्वजननीं प्रकृतिं परमादृताः। भजध्वं सात्त्विकैर्भावैःशत्रुनाशायसत्तमाः।२७
पुरा मयाऽपि संग्रामं कृत्वा परमदारुणम्। पञ्चवर्षसहस्राणि निहतौ मधुकैटभौ।२८
स्तुता मया तदाऽऽत्यर्थं प्रसन्ना प्रकृतिः परा।
मोहितौ तौ तदा दैत्यौ छलेन च मया हतौ ॥२९॥
विप्रलब्धौ महाबाहू दानवौ मदगर्वितौ। तथा कुरुध्वं प्रकृतेर्भजनं भावसंयुताः।३०
सर्वथा कार्यसिद्धिं सा करिष्यति सुरोत्तमा। एवं तेदत्तमतयोविष्णुनाप्रभविष्णुना।३१
जग्मुस्ते मेरुशिखरं मन्दारद्रुममण्डितम्। एकान्तेसंस्थितादेवाःकृत्वाध्यानंजपंतपः।३२
तुष्टुवुर्जगतां धात्रींसृष्टिसंहारकारिणीम्। भक्तकामदुघामम्बांसंसारक्लेशनाशिनीम्।३३

देवा ऊचुः

देवि! प्रसीद परिपाहि सुरान्प्रतप्तान्वृत्रासुरेण समरे परिपीडितांश्च।
दीनार्तिनाशनपरे! परमार्थतत्त्वे! प्राप्तांस्त्वदङ्घ्रिकमलं शरणं सदैव।३४
त्वं सर्वविश्वजननी परिपालयाऽस्मान्पुत्रानिवाऽतिपतितान्रिपुसङ्कटेऽस्मिन्।
मातर्न तेऽस्त्यविदितं भुवनत्रयेऽपि कस्मादुपेक्षसि सुरानसुरप्रतप्तान्।३५
त्रैलोक्यमेतदखिलं विहितं त्वयैव ब्रह्मा हरिः पशुपतिस्तव वासनोत्थाः।
कुर्वन्ति कार्यमखिलं स्ववशा न ते ते भ्रूभङ्गचालनवशाद्विहरन्ति कामम्।३६
माता सुतान्परिभवात्परिपाति दीनान्रीतिस्त्वयैव रचिता प्रकटापराधान्।
कस्मान्न पालयसि देवि! विनाऽपराधानस्मांस्त्वदङ्घ्रिशरणान्करुणारसाब्धे!।३७
नूनं मदङ्घ्रिभजनाप्तपदाः किलैते भक्तिं विहाय विभवे सुखभोगलुब्धाः।
नेमे कटाक्षविषया इति चेन्न चैषा रीतिः सुते जननकर्तरि चाऽपि दृष्टा।३८
दोषो न नोऽत्र जननि! प्रतिभाति चित्ते यत्ते विहाय भजनं विभवे निमग्नाः।
मोहस्त्वया विरचितः प्रभवत्यसौ नस्तस्मात्स्वभावकरुणे! दयसे कथं न।३९
पूर्वं त्वया जननि दैत्यपतिर्बलिष्ठो व्यापादितो महिषरूपधरः किलाऽऽजौ।
अस्मत्कृते सकललोकभयावहोऽसौ वृत्रं कथं न भयदं विधुनोषि मातः।४०
शुम्भस्तथाऽतिबलवाननुजो निशुम्भस्तौ भ्रातरौ तदनुगा निहता हतौ च।
वृत्रं यथा जहि खलं प्रबलं दयार्द्रे! मत्तं विमोहय तथा न भवेद्यथाऽसौ।४१
त्वं पालयाऽद्य विबुधानसुरेण मातः सन्तापितानतितरां भयविह्वलांश्च।
नाऽन्योऽस्ति कोऽपिभुवनेषुसुरातिहन्ता यःक्लेशजालमखिलं निदहेत्स्वशक्त्या।४२
वृत्रे दया तव यदि प्रथिता तथापि जह्येनमाशु जनदुःखकरं खलं च।
पापात्समुद्धर भवानि! शरैः पुनाना नो चेत्प्रयास्यति तमो ननु दुष्टबुद्धिः।४३
ते प्रापिता सुरवनं विबुधारयो ये हत्वा रणेऽपि विशिखैः किल पावितास्ते।
त्राता न किं निरयपातभयाद्दयार्द्रे! यच्छत्रवोऽपि नः हि किं विनिहंसि वृत्रम्।४४
जानीमहे रिपुरसौ तव सेवको न प्रायेण पीडयति नः किल पापबुद्धिः।
यस्तावकस्त्विह भवेदमरानसौ किं त्वत्पादपङ्कजरतान्ननु पीडयेद्वा।४५
कुर्मः कथं जननि! पूजनमद्य तेऽम्ब पुष्पादिकं तव विनिर्मितमेव यस्मात्।
मन्त्रा वयं च सकलं परशक्तिरूपं तस्माद्भवानि! चरणे प्रणताः स्म नूनम्।४६
धन्यास्त एव मनुजा हि भजन्ति भक्त्या पादाम्बुजं तव भवाब्धिजलेषु पोतम्।
यं योगिनोऽपि मनसा सततं स्मरन्ति मोक्षार्थिनो विगतरागविकारमोहाः।४७
ये याज्ञिकाः सकलवेदविदोऽपि नूनं त्वां संस्मरन्ति सततं किल होमकाले।
स्वाहां तु तृप्तिजननीममरेश्वराणां भूयः स्वधां पितृगणस्य च तृप्तिहेतुम्।४८

मेधाऽसि कान्तिरसि शान्तिरपि प्रसिद्धा बुद्धिस्त्वमेव विशदार्थकरी नराणाम्।
सर्वं त्वमेव विभवं भुवनत्रयेऽस्मिन्कृत्वा ददासि भजतां कृपया सदैव।४६

व्यास उवाच

एवं स्तुता सुरैर्देवी प्रत्यक्षा साऽभवत्तदा। चारुरूपधरा तन्वी सर्वाभरणभूषिता।५०
पाशाङ्कुशवरा भीतिलसद्बाहुचतुष्टया। रणत्किङ्किणिकाजालरसनाबद्धसत्कटिः।५१
कलकण्ठीरवा कान्ता क्वणत्कङ्कणनूपुरा। चन्द्रखण्डसमाबद्धरत्नमौलिविराजिता।५२
मन्दस्मिताऽरविन्दास्यानेत्रत्रयविभूषिता। पारिजातप्रसूनाच्छनालवर्णसमप्रभा।५३
रक्ताम्बरपरीधाना रक्तचन्दनचर्चिता। प्रसादसुमुखी देवी करुणारससागरा।५४
सर्वशृङ्गारवेषाढ्या सर्वद्वैतारणिः परा। सर्वज्ञा सर्वकर्त्रीच सर्वाधिष्ठानरूपिणी।५५
सर्ववेदान्तसंसिद्धासच्चिदानन्दरूपिणी। प्रणेमुस्तांसमालोक्यसुरादेवींपुरःस्थिताम्।५६
तानाह प्रणतानम्बा किं वः कार्यं ब्रुवन्तु माम्।

देवा ऊचुः

मोहयैनं रिपुं वृत्रं देवानामतिदुःखदम् ॥५७॥
यथा विश्वासतेदेवांस्तथाकुरुविमोहितम्। आयुधे च बलंदेहि हतःस्याद्येनवारिपुः।५८

व्यास उवाच

तथेत्युक्त्वा भगवती तत्रैवाऽन्तरधीयत।
स्वानि स्वानि निकेतानि जग्मुर्देवा मुदाऽन्विताः ॥५६॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे देवीसमाराधनायदेवैःकृतास्तुतिवर्णनं नामपञ्चमोऽध्यायः॥५॥

* षष्ठोऽध्यायः *

ऋषिभिर्युद्धनिवृत्यर्थंवृत्रम्प्रति विश्वासवाक्यम् पित्रुपदेशेनपुनर्युद्धमिन्द्र द्वारापराशक्तिप्रवेशयुतफेनेनवृत्रमृत्युः

व्यास उवाच

एवं प्राप्तवरादेवात्रृषयश्च तपोधनाः।
"जग्मुःसर्वेचसंमन्त्र्यवृत्रस्याऽऽश्रममुत्तमम्।"
ददृशुस्तत्र तं वृत्रं ज्वलन्तमिव तेजसा ॥१॥
धक्ष्यन्तमिव लोकांस्त्रीन्ग्रसन्तमिव चाऽऽमरान्।
ऋषयोऽथ ततोऽभेत्य वृत्रमूचुः प्रियम्वचः ॥२॥
देवकार्यार्थेसिद्ध्यर्थं सामयुक्तं रसात्मकम्।

ऋषय ऊचुः

वृत्र! वृत्र! महाभाग! सर्वलोकभयङ्कर! ॥३॥
व्याप्तंत्वयैतत्सकलं ब्रह्माण्डमखिलं किल। शक्रेण तववैरंयत्तत्तुसौख्यविघातकम्।४
युवयोर्दुःखदंकामं चिन्तावृद्धिकरम्परम्। नत्वं स्वपिषि संतुष्टोनचापिमघवा तथा।५
सुखंस्वपितिचिन्तार्तोद्वयोर्यद्वैरिजंभयम्। युवयोर्युध्यतोः कालोऽप्यतीतस्तुमहानिह।६
पीड्यन्तेचप्रजाःसर्वाःसदेवासुरमानवाः। संसारेऽत्र सुखंग्राह्यंदुःखं हेयमितिस्थितिः।७
न सुखं कृतवैरस्य भवतीति विनिर्णयः। संग्रामरसिकाःशूराःप्रशंसन्ति न पण्डिताः।८
युद्धं शृङ्गारचतुरा इन्द्रियार्थविघातकम्। पुष्पैरपि न योद्धव्यं किं पुनर्निशितैः शरैः।६
युद्धेविजयसन्देहो निश्चयं बाणताडनम्। दैवाधीनमिदं विश्वं तथा जयपराजयौ।१०

दैवाधीनावितिज्ञात्वानयोद्धव्यंकदाचन।कालेऽथभोजनं स्नानं शय्यायांशयनन्तथा।११
परिचर्यापरा भार्या संसारे सुखसाधनम्। किं सुखं युध्यतः संख्ये बाणवृष्टिभयङ्करे।१२
खड्गपातातिरौद्रेचतथाऽराति सुखप्रदे।संग्रामे मरणात्स्वर्गसुखप्राप्तिरितिस्फुटम्।१३
प्रलोभनपरं वाक्यं नोदनार्थं निरर्थकम्। छित्त्वादेहं व्यथां प्राप्य शृगालकरटादिभिः।१४

पश्चात्स्वर्गसुखावाप्तिं को वा वाञ्छति मन्दधीः।
सख्यं भवतु ते वृत्र! शक्रेण सह नित्यदा ॥१५॥

अवाप्स्यसि सुखं त्वं च शक्रश्चापिनिरन्तरम्। वयञ्चतापसाःसर्वेगन्धर्वाश्चनिजाश्रमे।१६
सुखवासं गमिष्यामःशान्तेवैरेऽधुनैववाम्। संग्रामे युवयोर्धीर! वर्तमाने दिवानिशम्।१७

पीड्यन्ते मुनयः सर्वे गन्धर्वा किन्नरा नराः।
सर्वेषां शान्तिकामानां सख्यमिच्छामहे वयम् ॥१८॥

मुनयस्त्वं च शक्रश्च प्राप्नुवन्तुसुखंकिल। मध्यस्थाश्च वयं वृत्रयुवयोःसख्यकारणे।१९

शपथं कारयित्वाऽत्र योजयामोमिथः प्रियम्।
शक्रस्तु शपथान्कृत्वा यथोक्तांश्चतवाऽग्रतः ॥२०॥
चित्तन्ते प्रीतिसंयुक्तं करिष्यति च साम्प्रतम्।
सत्याधारा धरा नूनं सत्येन च दिवाकरः ॥२१॥

तपत्ययं यथाकालं वायुः सत्येन वात्यथ। उदन्वानपि मर्यादांसत्येनैव न मुञ्चति।२२

तस्मात्सत्येन सख्यम्वा भवत्वद्य यथासुखम्।
एकत्र शयनं क्रीडा जलकेलिः सुखासनम् ॥२३॥
युवाभ्यां सर्वथा कार्यं कर्तव्यं सख्यमेत्य च।

व्यास उवाच

महर्षिवचनं श्रुत्वा तानुवाच महामतिः ॥२४॥

अवश्यंभगवन्तोमेमाननीयास्तपस्विनः।भवन्तोमुनयःक्वाऽपिनमिथ्यावादिनोभृशम्।२५
सदाचाराः सुशांताश्च न विदुश्छलकारणम्। कृतवैरे शठे स्तब्धे कामुकेचगतत्विषि।२६
निर्ल्लज्जेनैव कर्त्तव्यंसख्यंमतिमतासदा। निर्लज्जोऽयं दुराचारो ब्रह्महा लम्पटःशठः।२७
न विश्वासस्तु कर्तव्यः सर्वथैवेदृशेजने। भवन्तोनिपुणाः सर्वे न द्रोहमतयः सदा।२८

अनभिज्ञास्तु शान्तत्वाच्चित्तानामतिवादिनाम्।

मुनय ऊचुः

जन्तुः कृतस्य भोक्ता वै शुभस्य त्वशुभस्य च ॥२९॥

द्रोहं कृत्वा कुतः शान्तिमाप्नुयान्नष्टचेतनः। विश्वासघातकर्तारोनरकंयान्तिनिश्चयम्।३०
दुःखञ्च समवाप्नोति नूनंविश्वासघातकः। निष्कृतिर्ब्रह्महन्तॄणांसुरापानाञ्चनिष्कृतिः।३१
विश्वासघातिनां नैव मित्रद्रोहकृतामपि। समयं ब्रूहि सर्वज्ञ यथा ते चेतसि ध्रुवम्।३२

तेनैव समयेनाऽद्य सन्धिः स्यादुभयोःकिल।

वृत्र उवाच

न शुष्केण न चाऽऽर्द्रेण नाऽश्मना नच दारुणा ॥३३॥

न वज्रेण महाभाग न दिवानिशिनैव च। वध्यो भवेयं विप्रेन्द्राः शक्रस्य सह दैवतैः।३४

एवं मे रोचते सन्धिः शक्रेण सह नाऽन्यथा।

व्यास उवाच

ऋषयस्तं तदा प्राहुर्बाढमित्येव चादृताः ॥३५॥

समयंश्रावयामासुस्तत्राऽऽनीयसुरेश्वरम्। इन्द्रोऽपि शपथांस्तत्र चकार विगतज्वरः।३६

साक्षिणं पावकं कृत्वामुनीनांसन्निधौकिल। वृत्रस्तु वचनैस्तस्यविश्वासमगमत्तदा।३७
बभूव मित्रवच्छक्रे सहचर्यापरायणः। कदाचिन्नन्दने चोभौ कदाचिद्गन्धमादने।३८
कदाचिदुदधेस्तीरे मोदमानौ विचेरतुः। एवं कृते च सन्धाने वृत्रः प्रमुदितोऽभवत्।३६
शक्रोऽपि वधकामास्तु तदुपायानचिन्तयत्। रन्ध्रान्वेषी समुद्विग्नस्तदाऽऽसीन्मघवा भृशम्।४०
एवं चिन्तयतस्तस्य कालः समभिवर्तत। विश्वासं परमं प्राप वृत्रः शक्रेऽतिदारुणे।४१
एवं कतिचिदब्दानि गतानिसमयेकृते। वृत्रस्यमरणोपायान्मनसीन्द्रोऽप्यचिन्तयत्।४२
त्वष्टैकदा सुतं प्राह विश्वस्तं पाकशासने। पुत्र वृत्र! महाभाग शृणु मे वचनं हितम्!।४३
न विश्वासस्तु कर्तव्यः कृतवैरे कथञ्चन। मघवा कृतवैरस्ते सदाऽसूयापरः परैः।४४
लोभान्मत्तो द्वेषरतः परदुःखोत्सवान्वितः। परदारलम्पटः स पापबुद्धिप्रतारकः।४५
रन्ध्रान्वेषी द्रोहपरो मायावी मदगर्वितः। यः प्रविश्योदरे मातुर्गर्भच्छेदञ्चकार ह।४६
सप्तकृत्वःसप्तकृप्तकृत्वःक्रन्दमानमनातुरः। तस्मात्पुत्र न कर्तव्योविश्वासस्तुकथञ्चन।४७
कृतपापस्य का लज्जा पुनः पुत्र! प्रकुर्वतः।

व्यास उवाच

एवं प्रबोधितः पित्रा वचनैर्हेतुसंयुतैः ।।४८।।
न बुबोध तदा वृत्र आसन्नमरणः किल। स कदाचित्समुद्रान्ते तमपश्यन्महासुरम्।४६
सन्ध्याकाल उपावृत्ते मुहूर्त्तेऽतीवदारुणे। ततःसञ्चिन्त्य मघवा वरदानं महात्मनाम्।५०
सन्ध्येयं वर्तते रौद्रा न रात्रिर्दिवसो न च। हन्तव्योऽयं मया चाद्य बलेनैवनसंशयः।५१
एकाकी विजने चात्रसम्प्राप्तःसमयोचितः। एवं विचार्यमनसा सस्मार हरिमव्ययम्।५२
तत्राऽऽजगाम भगवानदृश्यः पुरुषोत्तमः। वज्रमध्ये प्रविश्याऽसौ संस्थितो भगवान्हरिः।५३
इन्द्रो बुद्धिं चकाराऽऽशु तदावृत्रवधंप्रति। इति सञ्चिन्त्यमनसा कथं हन्यांरिपुं रणे।५४
अजेयं सर्वथा सर्वदेवैश्च दानवैस्तथा। यदि वृत्तं न हन्म्यद्य वञ्चयित्वा महाबलम्।५५
न श्रेयो ममनूनंस्यात्सर्वथारिपुरक्षणात्। अपां फेनं तदाऽपश्यत्समुद्रे पर्वतोपमम्।५६
नाऽयं शुष्को न चार्द्रोऽयं न च शस्त्रमिदं तथा।
अपां फेनं तदा शक्रो जग्राह किल लीलया ।।५७।।
परांशक्तिञ्चसस्मारभक्त्यापरमयायुतः। स्मृतमात्रा तदा देवीस्वांशंफेनेन्यधापयत्।५८
वज्रं तदावृतं तत्र चकार हरिसंयुतम्। फेनावृतं पविन्तत्र शक्रश्चिक्षेप तं प्रति।५६
सहसा निपपाताऽऽशु वज्रहस्त इवाऽचलः। वासवस्तु प्रहृष्टात्मा बभूव निहते तदा।६०
ऋषयश्च महेन्द्रं तमस्तुवन्विविधैःस्तवैः। हतशत्रुः प्रहृष्टात्मा वासवः सह दैवतैः।६१
देवीं सम्पूजयामास यत्प्रसादाद्धतो रिपुः। प्रसादयामास तदा स्तोत्रैर्नानाविधैरपि।६२
देवोद्याने पराशक्तेः प्रासादमकरोद्धरिः। पद्मरागमयीं मूर्तिं स्थापयायास वासवः।६३
त्रिकालं महतीं पूजां चक्रुः सर्वेऽपिनिर्जराः। तदाप्रभृति देवानां श्रीदेवीकुलदैवतम्।६४
विष्णुं त्रिभुवनश्रेष्ठं पूजयामास वासवः। ततो हते महावीर्ये वृत्रे देवभयङ्करे।६५
प्रववौ च शिवो वायुर्जहृषुर्देवतास्तथा। हते तस्मिन्सगन्धर्वा यक्षराक्षसकिन्नराः।६६
इत्थं वृत्रः पराशक्ति प्रवेशयुतफेनतः। तयाकृतविमोहाच्च शक्रेण सहसा हतः।६७
ततो वृत्रनिहन्त्रीति देवी लोकेषु गीयते। शक्रेण निहतत्वाच्च शक्रेण हत उच्यते।६८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे छद्मनेन्द्रेणफेनद्वारापराशक्तिस्मरणपूर्वकंवृत्रहननवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः।६।

* सप्तमोऽध्यायः *

वृत्रवधानन्तरमृषिभिःपश्चात्तापकरणंत्वष्ट्राशक्रम्प्रतिशापदानंवासवस्य गुप्तवासोनहुषस्येन्द्रपदेऽभिषेकवर्णनम्

व्यास उवाच

अथ तं पतितंदृष्ट्वाविष्णुर्विष्णुपुरीं ययौ। मनसा शङ्कमानस्तु तस्य हत्याकृतंभयम्।१
इन्द्रोऽपि भयसन्त्रस्तो ययाविन्द्रपुरींततः। मुनयो भयसम्विग्ना ह्यभवन्निहते रिपौ।२
किमस्माभिः कृतम्पापं यदसौ वञ्चितःकिल ।
मुनिशब्दो वृथा जातः सुरेशस्य च सङ्गमात् ।।३।।
अस्माकम्वचनाद्वृत्रोविश्वासमगमत्किल। विश्वासघातिनःसङ्गाद्वयंविश्वासघातकाः।४
धिगियं ममता पापमूलमेवमनर्थकृत्। यदस्माभिश्छलं कृत्वा शपथैर्वञ्चितोऽसुरः।५
मन्त्रकृद्बुद्धिदाता च प्रेरकः पापकारिणाम्। पापभाक्सभवेन्नूनं पक्षकर्ता तथैव च।६
विष्णुनाऽपि कृतम्पापं यत्साहाय्यमवाप्तवान् ।
वज्रम्प्रविश्य येनाऽसौ पातितः सत्त्वमूर्तिना ।।७।।
नूनं स्वार्थपरः प्राणी न पापात्त्रासमश्नुते। हरिणा हरिसङ्गेन सर्वथा दुष्कृतं कृतम्।८
द्वावेवस्तः पदार्थानां द्वावेव निधनङ्गतौ। प्रथमश्चतुरीयश्च यौ त्रिलोक्यान्तुदुर्लभौ।९
अर्थकामौप्रशस्तौद्वौसर्वेषांसम्मतौप्रियौ। धर्माधर्मेति वाग्वादोदम्भोऽयंमहतामपि।१०
मुनयोऽपि मनस्तापमेवं कृत्वापुनःपुनः। जग्मुः स्वानाश्रमानेवविमनस्का हतोद्यमाः।११
त्वष्टा तु निहतं श्रुत्वा पुत्रमिन्द्रेण भारत!। रुरोद दुःखसन्तप्तो निर्वेदमगमत्पुनः।१२
यत्राऽसौ पतितस्तत्र गत्वा वीक्ष्य तथागतम् ।
संस्कारं कारयामास विधिवत्पारलौकिकम् ।।१३।।
स्नात्वाऽस्य सलिलं दत्त्वा कृत्वा चैवौर्ध्वदैहिकम् ।
शशापेन्द्रं स शोकार्तः पापिष्ठं मित्रघातकम् ।।१४।।
यथा मे निहतःपुत्रःप्रलोभ्यशपथैर्भृशम्। तथेन्द्रोऽपि महद्दुखंप्राप्नोतुविधिनिर्मितम्।१५
इति शप्त्वा सुरेशानं त्वष्टा तापसमन्वितः। मेरोःशिखरमास्थायतपस्तेपेसुदुष्करम्।१६

जनमेजय उवाच

हत्वा त्वाष्ट्रंसुरेशोऽथ कामवस्थामवाप्तवान्। सुखं वा दुःखमेवाग्रे तन्मेब्रूहिपितामह।१७

व्यास उवाच

किं पृच्छसि महाभाग! संदेहः कीदृशस्तव। अवश्यमेव भोक्तव्यंकृतं कर्म शुभाशुभम्।१८
बलिष्ठैर्दुर्बलैर्वाऽपि स्वल्पं वा बहु वा कृतम्। सर्वथैव हिभोक्तव्यं सदेवासुरमानुषैः।१९
शक्रायेत्थं मतिर्दत्ता हरिणा वृत्रघातिने। प्रविष्टोऽथ पविं विष्णुः सहायःप्रत्यपद्यत।२०
न चापदि सहायोऽभूद्वासुदेवः कथञ्चन। समये स्वजनः सर्वः संसारेऽस्मिन्नराधिप।२१
दैवे विमुखतां प्राप्ते न कोऽप्यस्ति सहायवान् ।
पिता माता तथा भार्या भ्राता वाऽथ सहोदरः ।।२२।।
सेवको वाऽपि मन्त्रं वा पुत्रश्चैव तथौरसः। प्रतिकूले गतेदैवेनकोऽप्येतिसहायताम्।२३
भोक्ता पापस्य पुण्यस्य कर्ता भवति सर्वथा ।
वृत्रं हत्वा गताः सर्वे निस्तेजस्कः शचीपतिः ।।२४।।
शेपुस्तं त्रिदशाः सर्वे ब्रह्महेत्यब्रुवञ्छनैः। को नाम शपथान्कृत्वासत्यंदत्त्वावचःपुनः।२५

जिघांसति सविश्वस्तं मुनिंमित्रत्वमागतम्।देवगोष्ठ्यांसुरोद्यानेगंधर्वाणांसमागमे।२६
सर्वत्रैव कथा तस्यविस्तारमगमत्किल।किं कृतं दुष्कृतं कर्म शक्रेणाऽद्यजिघांसता।२७
वृत्रं छलेन विश्वस्तं मुनिभिश्च प्रतारितम्।वेदप्रमाणमुत्सृज्यस्वीकृतंसौगतं मतम्।२८
यदयं निहतः शत्रुर्वञ्चयित्वाऽतिसाहसात्।कोनामवचनंदत्त्वा विपरीतमथाऽऽचरेत्।२६
विना शक्रं हरिं वाऽपि यथाऽयं विनिपातितः।
एवम्विधाः कथाश्चाऽन्याः समाजेष्वभवन्भृशम्।।३०।।
शुश्रावेन्द्रोऽपि विविधाः स्वकीर्तेर्हानिकारकाः।
यस्य कीर्तिर्हता लोके धिक्तस्यैव कुजीवितम्।।३१।।
यं दृष्ट्वा पथिगच्छन्तंशत्रुःस्मेरमुखोभवेत्।इन्द्रद्युम्नोऽपिराजर्षिःपतितःकीर्तिसंक्षयात्।३२
स्वर्गादकृतपापोऽसौ पापकृत्किं न पात्यते।
स्वल्पेऽपराधेऽपि नृपो ययातिः पतितः किलः।।३३।।
नृपः कर्कटतां प्राप्तो युगानष्टादशैव तु।भृगुपत्नीशिरश्छेदाद्भगवान् हरिरच्युतः।३४
ब्रह्मशापात्पशोर्योनौ सञ्जातो मकरादिषु।विष्णुश्च वामनो भूत्वायाचनार्थंबलेर्गृहे।३५
गतः किमपरं दुःखं प्राप्नोति दुष्कृती नरः।रामोऽपि वनवासेषु सीताविरहजं बहु।३६
दुःखञ्चप्राप्तवान्घोरं भृगुशापेनभारत!।तथेन्द्रोऽपि ब्रह्महत्याकृतं प्राप्य महद्भयम्।३७
नस्वास्थ्यंप्रापगेहेऽसौसर्वसिद्धिसमन्विते ।पौलोमीतंसभाहीनंदृष्ट्वाप्रोवाच वासवम्।३८
निःश्वसंतं भयत्रस्तं नष्टसंज्ञं विचेतनम्।किंप्रभोऽद्यभयार्तोऽसिमृतस्तेदारुणोरिपुः।३६
का चिन्ता वर्तते कान्ततवशत्रुनिषूदन।कस्माच्छोचसिलोकेशनिःश्वसन्प्राकृतोयथा।४०
नाऽन्योऽस्ति बलवाञ्छत्रुर्येन चिन्तापरो भवान्।

इन्द्र उवाच

नाऽरातिर्बलवान्मेऽस्ति न शांतिर्न सुखं तथा।।४१।।
ब्रह्महत्याभयाद्राज्ञि बिभेमि सततं गृहे।नन्दनं न सुखाकारं नाऽमृतं न गृहं वनम्।४२
गन्धर्वाणां तथा गेयं नृत्यमप्सरसां पुनः।न त्वं सुखकरानारीनाना च सुरयोषितः।४३
न तथा कामधेनुश्च देववृक्षः सुखप्रदः।किं करोमि क्व गच्छामि क्व शर्म मम जायते।४४
इति चिन्तापरः कान्ते ! न लभे सुखमात्मनि।

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा वचनं शक्रः प्रियां परमकातराम्।।४५।।
निर्जगाम गृहान्मन्दो मानसं सरउत्तमम्।पद्मनाले प्रविष्टोऽसौ भयार्तःशोककर्शितः।४६
नप्राज्ञायत देवेन्द्रस्त्वभिभूतश्च कल्मषैः।प्रतिच्छन्नो वसत्यप्सु चेष्टमान इवोरगः।४७
असहायस्तुराषाडैश्चिन्तार्तो विकलेन्द्रियः।ततः प्रनष्टेदेवेंद्रे ब्रह्महत्याभयार्दिते।४८
सुराश्चिंतातुराश्चासन्नुत्पाताश्चाऽभवन्नथ।ऋषयः सिद्धगंधर्वा भयार्ताश्चाभवन्भृशम्।४६
अराजकं जगत्सर्वमभिभूतमुपद्रवैः।अवर्षणं तदा जातं पृथिवी क्षीणवैभवा।५०
विच्छिन्नस्रोतसो नद्यःसरांस्यनुदकानि वै।एवं त्वराजके जाते देवता मुनयस्तथा।५१
विचार्य नहुषं चक्रुः शक्रं सर्वे दिवौकसः।
सम्प्राप्य नहुषो राजा धर्मिष्ठोऽपि रजोबलात्।।५२।।
बभूव विषयासक्तः पञ्चबाणशराहतः।अप्सरोभिर्वृतः क्रीडन्देवोद्यानेषु भारत!।५३
शक्रपत्नी गुणाञ्छ्रुत्वा चकमे तां स पार्थिवः।
ऋषीनाह किमिंद्राणी नोपगच्छति मां किल।।५४।।

भवद्भिश्चामरैः सर्वैः कृतोऽहं वासवस्त्विह। प्रेषयध्वं सुराः कामं सेवार्थंममवैशचीम्।५५
प्रियं चेन्मम कर्तव्यं सर्वथा मुनयोऽमराः। अहमिंद्रोऽद्य देवानां लोकाना चतथेश्वरः।५६
आगच्छतु शची मह्यं क्षिप्रमद्य निवेशनम्। इति तस्य वचः श्रुत्वादेवा देवर्षयस्तथा।५७
गत्वा चिंतातुराःप्रोचुःपौलोमींप्रणतास्ततः। इन्द्रपत्निदुराचारोनहुषस्त्वामिहेच्छति।५८
कुपितोऽस्मानुवाचेदं प्रेषयध्वं शचीमिह। किंकुर्मस्तदधीनाःस्मयेनेंद्रोऽयंकृतः किल।५९
तच्छ्रुत्वा दुर्मना देवीवृहस्पतिमुवाच ह। रक्ष मां नहुषाद्ब्रह्मंस्तवाऽस्मि शरणं गता।६०

बृहस्पतिरुवाच

न भेतव्यं त्वया देवि! नहुषात्पापमोहितात्।
न त्वां दास्याम्याहं वत्से! त्यक्त्वा धर्मंसनातनम् ॥६१॥

शरणागतमार्तं च यो ददाति नराधिपः। स एव नरकं याति यावदाभूतसंप्लवम्।६२

स्वस्था भव पृथुश्रोणि! न त्यक्ष्ये त्वां कदाचन।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे वृत्रेहतइन्द्रेणमानससरसिपद्मनालेप्रवेशेसर्वत्राराजकत्वनहुषस्यदेवेन्द्रत्वाभिषेक वर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥

* अष्टमोऽध्यायः *

नहुषेणप्रार्थितांशचीम्प्रतिबृहस्पतेरुपदेशोदेवीप्रसादतस्तस्याइन्द्रदर्शनम्

व्यास उवाच

नहुषस्त्वथ तां श्रुत्वा गुरोस्तुशरणंगताम्। चुक्रोधस्मरबाणार्तस्तमाङ्गिरसमाशु वै।१
देवानाहाङ्गिरासूनुर्हन्तव्योऽयंमया किल। इतींद्राणीं गृहे मूढो रक्षतीति मयाश्रुतम्।२
इति तं कुपितं दृष्ट्वा देवा सर्षिपुरोगमाः। अब्रुवन्नहुषं घोरं सामपूर्वं वचस्तदाः।३
क्रोधं संहर राजेन्द्र! त्यज पापमतिंप्रभो। निन्दन्ति धर्मशास्त्रेषु परदाराभिमर्शनम्।४
शक्रपत्नीसदा साध्वी जीवमानेपतौ पुनः। कथमन्यंपतिं कुर्यात्सुभगाऽतिपतिव्रता।५

त्रिलोकीशस्त्वमधुना शास्ता धर्मस्य वै विभो।
त्वादृशोऽधर्ममातिष्ठेत्तदा नश्येत्प्रजा ध्रुवम् ॥६॥

सर्वथा प्रभुणा कार्यं शिष्टाचारस्य रक्षणम्। वारमुख्याश्चशतशोवर्तन्तेऽत्रशचीसमाः।७
रतिस्तु कारणं प्रोक्तंश्रृङ्गारस्यमहात्मभिः। रसहानिर्बलात्कारे कृते सति तु जायते।८
उभयोः सदृशं प्रेम यदि पार्थिवसत्तम!। तदा वै सुखसंपत्तिरुभयोरुपजायते।९
तस्माद्भावमिमं मुञ्च परदाराभिमर्शने। सद्भावं कुरु देवेन्द्रपदं प्राप्तोऽस्यनुत्तमम्।१०
ऋद्धिक्षयस्तुपापेनपुण्येनाऽतिविवर्धनम्। तस्मात्पापंपरित्यज्यसन्मतिं कुरुपार्थिव।११

नहुष उवाच

गौतमस्ययदाभुक्तादाराः शक्रेण देवताः!। वाचस्पतेस्तुसोमेनक्वयूयं संस्थितास्तदा।१२
परोपदेशे कुशलाः प्रभवन्ति नराः किल। कर्ता चैवोपदेष्टा च दुर्लभः पुरुषो भवेत्।१३
मामागच्छतुसादेवी हितं स्यादद्भुतं हि वः। एतस्याः परमं देवाःसुखमेवंभविष्यति।१४
अन्यथानहितुष्येऽहंसत्यमेतद्ब्रवीमिवः। विनयाद्वा बलाद्वाऽपि तामाशुप्रापयंत्विह।१५
इति तस्य वचः श्रुत्वा देवाश्च मुनयस्तथा। तमूचुश्चातिसंत्रस्ता नहुषं मदनातुरम्।१६
इन्द्राणीमानयिष्यामःसाम पूर्वंतवान्तिकम्। इत्युक्त्वातेतदा जग्मुर्बृहस्पतिनिकेतनम्।१७

व्यास उवाच

ते गत्वाऽङ्गिगरसःपुत्रंप्रोचुःप्राञ्जलयः सुराः। जानीमःशरणंप्राप्तामिन्द्राणीं तववेश्मनि।१८
सा देया नहुषायाऽद्य वासवोऽसौकृतोयतः। वृणोत्वियं वरारोहा पतित्वेवरवर्णिनी।१९
वृहस्पतिः सुरानाहतच्छ्रुत्वादारुणं वचः। नाहंत्यक्ष्येतु पौलोमींसतींचशरणागताम्।२०

देवा ऊचुः

उपायोऽन्यःप्रकर्तव्योयेनसोऽद्यप्रसीदति। अन्यथाकोपसंयुक्तोदुराराध्योभविष्यति।२१

गुरुरुवाच

तत्र गत्वा शची भूपं प्रलोभ्य वचसा भृशम्। करोतु समयंबालापतिंज्ञात्वामृतंभजे।२२
इन्द्रे जीवति मे कांते कथमन्यंकरोम्यहम्। अन्वेषणार्थंगंतव्यंमयातस्य महात्मनः।२३
इति सा समयंकृत्वा वञ्चयित्वा च भूपतिम्। भर्तुरानयनेयत्नं करोतु ममवाक्यतः।२४
इति सञ्चिन्त्य ते सर्वेबृहस्पतिपुरोगमाः। नहुषं सहिता जग्मुरिंन्द्रपत्न्यादिवौकसः।२५

तानागतान्समीक्ष्याऽऽह तदा कृत्रिम वासवः।
जहर्ष च मुदा युक्तस्तांवीक्ष्यमुदितोऽब्रवीत् ॥२६॥

अद्याऽस्मिवासवःकान्तेभजमांचारुलोचने । पतित्वेसर्वलोकस्यपूज्योऽहंविहितःसुरैः।२७
इत्युक्ता सा नृपं प्राह वेपमानात्रपायुता। वरमिच्छाम्यहं राजंस्त्वत्तःप्राप्तं सुरेश्वरः।२८

किञ्चित्कालं प्रतीक्षस्व यावत्कुर्वे विनिर्णयम्।
इन्द्रोऽस्तीति न वाऽस्तीति सन्देहो मे हृदि स्थितः ॥२९॥
ततस्त्वां समुपस्थास्ये कृत्वा निश्चयमात्मनि।
तावत्क्षमस्व राजेन्द्र! सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥३०॥

नहिविज्ञायतेशक्रोनष्टः किंवाक्व वा गतः। एवमुक्तः स चेन्द्राण्यानहुषःप्रीतिमानभूत्।३१
व्यसर्जयत्सतांदेवींतथेत्युक्त्वामुदाऽन्वितः । साविसृष्टानृपेणाशुगत्वाप्राहसुरान्सती।३२
इन्द्रस्याऽऽगमने यत्नं कुरुताऽद्य कृतोद्यमाः। श्रुत्वा तद्वचनं देवाइंद्रण्यारसवच्छुचि।३३
मन्त्रयायामासुरेकाग्राः शक्रार्थंनृपसत्तम!। ते गत्वा वैष्णवं धाम तुष्टुवुःपरमेश्वरम्।३४
आदिदेवं जगन्नाथं शरणागतवत्सलम्। ऊचुश्चैनं समुद्विग्ना वाक्यं वाक्यविशारदाः।३५
देवदेवः सुरपतिर्ब्रह्महत्याप्रपीडितः। अदृश्यः सर्वभूतानां क्वाऽपि तिष्ठति वासवः'३६
त्वद्धिया निहते विप्रेब्रह्महत्या कुतःप्रभो। त्वंगतिस्तस्य भगवन्नस्माकं चतथैव हि।३७
त्राहिनः परमापन्नान्मोक्षंतस्य विनिर्दिश। देवानां वचनं श्रुत्वा कातरंविष्णुरब्रवीत्।३८
यजतामश्वमेधेन शक्रपापनिवृत्तये। पुण्येन हयमेधेन पावितः पाकशासनः।३९
पुनरेष्यति देवानामिन्द्रत्वमकुतोभयः। हयमेधेन सन्तुष्टा देवी श्रीजगदम्बिका।४०
ब्रह्महत्यादिपापानि नाशयिष्यत्यसंशयम्। यस्याः स्मरणमात्रेण पापजालं विनश्यति।४१
किं पुनर्वाजिमेधेन तत्प्रीत्यर्थंकृतेन च। इन्द्राणी कुरुतान्नित्यं भगवत्याःप्रपूजनम्।४२

आराधनं शिवायास्तु सुखकारि भविष्यति।
नहुषोऽपि जगन्मातुर्मायया मोहितः किल ॥४३॥

विनाशं स्वकृतेनाऽऽशुगमिष्यत्येनसा सुराः। पावितश्चाऽश्वमेधेनतुराषाडपिवैभवम्।४४
प्राप्स्यत्यचिरकलेन स्वमासनमनुत्तमम्। तेतुश्रुत्वाशुभां वाणींविष्णोरमिततेजसः।४५

जग्मुस्तं देशमनिशं यत्राऽऽस्ते पाकशासनः।
तमाश्वास्यसुराः शक्रं बृहस्पतिपुरोगमाः ॥४६॥

कारयामासुरखिलं हयमेधं महाक्रतुम्। विभज्य ब्रह्महत्यांतु वृक्षेषु च नदीषु च।४७
पर्वतेषु पृथिव्यांचस्त्रीषुचैवाऽक्षिपद्विभुः। तांविसृज्यचभूतेषु विपापःपाकशासनः।४८
विज्वरः समभूद्भूयः कालाकाङ्क्षी स्थितो जले।
अदृश्यः सर्वभूतानां पद्मनाले व्यतिष्ठत ॥४६॥
देवास्तु निर्गताः स्थानेकृत्वाकार्यंतदद्भुतम्। पौलोमीतुगुरुंप्राहदुःखिताविरहाकुला।५०
कृतयज्ञोऽपि मे भर्ताकिमदृश्यः पुरन्दरः। कथं द्रक्ष्येप्रियंस्वामिंस्तमुपायंवदस्व मे।५१

बृहस्पतिरुवाच

त्वमाराधयपौलोमिदेवींभगवतीं शिवाम्। दर्शयिष्यति तेनाथं देवीविगतकल्मषम्।५२
आराधिता जगद्धात्री नहुषं वारयिष्यति।
मोहयित्वा नृपं स्थानात्पातयिष्यति चाऽम्बिका ॥५३॥
इत्युक्ता सा तदा तेन पुलोमतनया नृप। जग्राह मन्त्रंविधिवद्गुरोर्देव्याः ससाधनम्।५४
विद्यां प्राप्य गुरोर्देवी देवींश्रीभुवनेश्वरीम्। सम्यगाराधयामास बलिपुष्पार्चनैःशुभैः।५५
त्यक्तान्यभोगसम्भारातापसी वेषधारिणी। चकार पूजनं देव्याः प्रियदर्शनलालसा।५६
कालेन कियता तुष्टा प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ। सौम्यरूपधरा देवी वरदा हंसवाहिनी।५७
कोटिसूर्यप्रतीकाशा चन्द्रकोटिसुशीतला। विद्युत्कोटिसमानाभा चतुर्वेदसमन्विता।५८
पाशांकुशाभयवरान्दधतीनिजबाहुभिः। आपादलम्बिनींस्वच्छांमुक्तामालांचबिभ्रती।५६
प्रसन्नस्मेरवदना लोचनत्रयभूषिता। आब्रह्मकीटजननी करुणामृतसागरा।६०
अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिका परमेश्वरी। सौम्यानन्तरसैर्युक्तस्तनद्वयविराजिता।६१
सर्वेश्वरी चसर्वज्ञा कूटस्थाऽक्षररूपिणी। तामुवाच प्रसन्ना सा शक्रपत्नीं कृतोद्यमाम्।६२
मेघगम्भीरशब्देन मुदमाददती भृशम्।

देव्युवाच

वरम्वरय सुश्रोणि ! वाञ्छितं शक्रवल्लभे! ॥६३॥
ददाम्यद्य प्रसन्नाऽस्मिपूजिता सुभृशं त्वया। वरदाऽहं समायाता दर्शनं सहजं न मे।६४
अनेककोटिजन्मोत्थपुण्यपुञ्जैर्हि लभ्यते। इत्युक्ता सा तदा देवी तामाहप्रणतापुरः।६५
शक्रपत्नी भगवतीं प्रसन्नां परमेश्वरीम्। वाञ्छामि दर्शनं मातः पत्युःपरमदुर्लभम्।६६
नहुषाद्भयनाशञ्च स्वपदप्रापणं तथा।

देव्युवाच

गच्छ त्वमनया दूत्या सार्द्धं श्रीमानसं सरः ॥६७॥
यत्र मे मूर्तिरचला विश्वकामाभिधामता। तत्र पश्यसि शक्रं त्वं दुःखितंभयविह्वलम्।६८
मोहयिष्यामिराजानंकालेनकियतापुनः। स्वस्थाभवविशालाक्षिकरोमितवचेप्सितम्।६६
भ्रंशयिष्यामि भूपालं मोहितं त्रिदशासनात्।

व्यास उवाच

देवीदूती तां गृहीत्वा शक्रपत्नीं त्वरान्विता ॥७०॥
प्रापयामाससान्निध्यंस्वपत्युःपरमेश्वरीम्।
सा दृष्ट्वा तं पतिंबालासुरेशंगुप्तसंस्थितम्।
मुदिताऽभूद्वरं वीक्ष्य बहुकालाऽभिवाञ्छितम् ॥७१॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे इन्द्राण्याशक्रदर्शनं नामाऽष्टमोऽध्यायः ॥८॥

* नवमोऽध्यायः *

शचीन्द्रसम्वादवर्णनपूर्वमिन्द्राण्याऋषियानेनमत्समीपेआगच्छेतिनहुषम्प्रति कथननं नहुषस्यस्थानच्युतिवर्णनञ्च

व्यास उवाच

तां वीक्ष्य विपुलापाङ्गीं रहः शोकसमन्विताम् ।
आखण्डलः प्रियां भार्यां विस्मितश्चाऽब्रवीत्तदा ।।१।।

कथमत्रागता कान्तेकथंज्ञातस्त्वयाह्यहम्।दुर्ज्ञेयःसर्वभूतानांसंस्थितोऽस्मि शुभानने।२

शच्युवाच

देवदेव्याःप्रसादेनज्ञातोऽस्यद्यभवानिह ।पुनःस्तस्याःप्रसादेनप्राप्तास्मि त्वांदिवस्पते।३
नहुषोनाम राजर्षिः स्थापितो भवदासने।त्रिदशैर्मुनिभिश्चैवस मां बाधति नित्यशः।४
पतिं मां कुरु चार्वङ्गि! तुरासाहं सुराधिपम् ।
एवं वदति मां पाप्मा किं करोमि बलार्दन! ।।५।।

इन्द्र उवाच

कालाकाङ्क्षी वरारोहे! संस्थितोऽस्मि यदृच्छया ।
तथा त्वमपि कल्याणि! सुस्थिरं स्वमनः कुरु ।।६।।

व्यास उवाच

इत्युक्तातेनसादेवीपतिनाऽतिप्रशंसिना ।निःश्वस्याह तं शक्रं वेपमानाऽतिदुःखिता।७
कथं तिष्ठे महाभाग पापात्मामांवशानुगाम्।करिष्यसिमदोन्मत्तोवरदानेन गर्वितः।८
देवाश्चमुनयःसर्वे मामूचुस्तद्भयाकुलाः।तं भजस्व वरारोहे! देवराजं स्मरातुरम्।९
बृहस्पतिस्तु शत्रुघ्न! वाडवो बलवर्जितः।कथं मां रहितुं शक्तो भवेद्देवानुगः सदा।१०
तस्माच्चिन्ताऽस्ति महती नार्यहं वशवर्तिनी ।
अनाथा किं करिष्यामि विपरीते विधौ विभो! ।।११।।
नार्यस्म्यहं न कुलटा त्वच्चित्ताऽतिपतिव्रता ।
नाऽस्ति मे शरणं तत्र यो मां रक्षति दुःखिताम् ।।१२।।

इन्द्र उवाच

उपायं प्रब्रवीम्यद्य तं कुरुष्व वरानने।शीलं ते दुःखितेकाले परित्रातं भविष्यति।१३
परेण रक्षिता नारी न भवेच्चपतिव्रता।उपायैःकोटिभिःकामभिन्नचित्ताऽतिचञ्चला।१४
शीलमेव हि नारीणां सदा रक्षति पापतः ।
तस्मात्त्वं शीलमास्थाय स्थिरा भव शुचिस्मिते! ।।१५।।
यदा त्वां नहुषो राजा बलादाकर्षयेत्खलः।तदा त्वं समयं कृत्वागुप्तंवञ्चयभूपतिम्।१६
एकान्ते तत्समीपे त्वं गत्वा वद मदालसे।ऋषियानेन दिव्येन मामुपेहि जगत्पते।१७
एवं तववशे प्रीता भविष्यामीतिमे व्रतम्।इति तं वद सुश्रोणि तदातुपरिमोहितः।१८
कामान्धः स मुनीन्याने योजयिष्यति पार्थिव! ।
अवश्यं तापसो भूपं शापदग्धं करिष्यति ।।१९।।
साहाय्यं जगदम्बा ते करिष्यति न संशयः।जगदम्बापदस्मर्तुःसङ्कटं न कदाचन।२०
यदि जायेत तच्चाऽपि ज्ञेयं तत्स्वस्तये किल ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मणिद्वीपाधिवासिनीम् ।।२१।।

भज त्वं भुवनेशानीं गुरुवाक्यानुसारतः ।

व्यास उवाच

इत्याख्याता शची तेन जगाम नहुषम्प्रति ।।२२।।

तथेत्युक्त्वाऽतिविश्वस्ता भाविकार्ये कृतोद्यमा। नहुषस्तां समालोक्य मुदितो वाक्यमब्रवीत् ।२३

स्वागतं सत्यवचनैस्त्वदधीनोऽस्मि कामिनि!। दासोऽहं तव सत्येन पालितम्वचनं त्वया।२४

यदागता समीपे मे तुष्टोऽस्मि मितभाषिणी!। न च व्रीडा त्वया कार्या भक्तंमां भज सुस्मिते!।२५

कार्यं वद विशालाक्षि! करिष्यामि तव प्रियम् ।

शच्युवाच

सर्वं कृतं त्वया कार्यं मम कृत्रिमवासव! ।।२६।।

मनोरथोऽस्तिमेदेवशृणुचित्तेऽधुनाविभो । वाञ्छितंकुरुकल्याणत्वद्वशाऽहमतःपरम् ।२७

ब्रवीमिमानसोत्साहंत्वंतंकर्तुमिहाऽर्हसि । कार्यंत्वंब्रूहिचन्द्रास्येकरोमितववांछितम् ।२८

अलभ्यमपि दास्यामि तुभ्यं सुभ्रु ! वदस्व माम् ।

शच्युवाच

कथं ब्रवीमि राजेन्द्र ! प्रत्ययो नास्ति मे तव ।।२९।।

शपथं कुरु राजेन्द्र यत्करोमि प्रियं तव। राजानः सत्यवचसो दुर्लभा एव भूतले।३०

पश्चाद्ब्रवीम्यहं राजञ्ज्ञात्वासत्येनयंत्रितम्। कृते चेद्वांछिते भूप! सदातेवशवर्तिनी।३१

भविष्यामि तुराषाड् वै सत्यमेतद्वचो मम ।

नहुष उवाच

अवश्यमेव कर्तव्यं वचनं तव सुन्दरि! ।।३२।।

शपामि सुकृतेनाऽहं यज्ञदानकृतेन वै ।

शच्युवाच

इन्द्रस्य हरयो वाहा गजश्चैव रथस्तथा ।।३३।।

गरुडो वासुदेवस्य यमस्य महिषस्तथा। वृषभः शङ्करस्याऽपि ब्रह्मणो वरटापतिः।३४

मयूरः कार्त्तिकेयस्य गजास्यस्य तु मूषकः। इच्छाम्यहमपूर्वम्वै वाह ते सुराधिप!।३५

यन्नविष्णोर्न रुद्रस्य नाऽसुराणांनरक्षसाम्। वहन्तुत्वांमहाराज! मुनयःसंशितव्रताः।३६

सर्वेशिबिकयाराजन्नेतद्धि मम वाञ्छितम्। सर्वदेवाधिकं त्वांवैजानामिवसुधाधिपः।३७

तेन ते तेजसो वृद्धिं वाञ्छाम्यहमतन्द्रिता ।

व्यास उवाच

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा प्रहस्य ज्ञानदुर्बलः ।।३८।।

मोहितस्तु महादेव्या कृतं मोहेन तत्क्षणम्। उवाच वचनं भूपःसंस्तुन्वासवप्रियाम् ।३९

नहुष उवाच

सत्यमुक्तं त्वया तन्वि! वाहनं रुचिरं मम। करिष्यामिसुकेशान्तेवचनं तव सर्वथा।४०

नह्यल्पवीर्यो भवति योवाहान्कुरुतेमुनीन्। अहमारुह्ययानेन त्वामेष्यामिशुचिस्मिते।४१

सप्तर्षयो मां वक्ष्यन्ति सर्वेदेवर्षयस्तथा। समर्थंत्रिषुलोकेषुज्ञात्वामांतपसाऽधिकम्।४२

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा तां सुसन्तुष्टो विससर्ज हरिप्रियाम् ।

मुनीनाहूय सर्वांस्तानित्युवाच स्मरान्वितः ।।४३।।

नहुष उवाच

अहमिंद्रोऽद्य भो विप्राःसर्वशक्तिसमन्वितः। कार्यमत्रप्रकुर्वन्तु भवन्तो विगतस्मयाः।४४
इन्द्रासनं मया प्राप्तं नेन्द्राणी मामुपैति च। आकारिता च मां ब्रूते प्रेमपूर्वमिदं वचः।४५
मुनियानेन देवेन्द्र मामुपैहि सुराधिप। देवदेव महाराज मत्प्रियं कुरु मानद!।४६
एतत्कार्यं मुनिश्रेष्ठा ममाऽत्यन्तं दुरासदम्। भवद्भिस्तु प्रकर्तव्यं सर्वथैवदयालुभिः।४७
मनो दहतिमे कामः शक्रपत्न्यां प्रवर्तितम्। भवन्तः शरणं मेऽद्य कुरुध्वंकार्यमद्भुतम्।४८
अगस्तिप्रमुखास्तस्य श्रुत्वा वाक्यमसत्करम्। अङ्गीचक्रुश्चभावित्वात्कृपयापरमर्षया ।४९
अङ्गीकृतेऽथतद्वाक्ये मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः। मुदं प्राप नृपःकामंपौलोमीकृतमानसः।५०
आरुह्य शिबिकां रम्यां संस्थितस्त्वरयाऽन्वितः।
वाहान्कृत्वा मुनीन्दिव्यान्सर्पसर्पेति चाऽब्रवीत् ।।५१।।
कामार्तः सोऽस्पृशन्मूढः पादेनमुनिमस्तकम्। अगस्तिं तापसश्रेष्ठंलोपामुद्रापतिंतदा।५२
वातपिभक्षकर्तारं समुद्रस्याऽपि शोषकम्। कशया ताडयामास पञ्चबाणशराहतः।५३
इन्द्राणीहृतचित्तोऽसौ सर्पेति प्रब्रुवन्मुनिम्।
तं शशाप मुनिः क्रुद्धः कशाघातमनुस्मरन् ।।५४।।
सर्पो भव दुराचार वने घोरवपुर्महान्। बहुवर्षसहस्राणि यत्र क्लेशो महान्भवेत्।५५
विचरिष्यसि वीर्येण पुनःस्वर्गमवाप्स्यसि। दृष्ट्वा युधिष्ठिरंनामतवमोक्षोभविष्यति।५६
प्रश्नानाममुत्तरं श्रुत्वा धर्मपुत्रमुखात्ततः।

व्यास उवाच

एवं शप्तः स राजर्षिः स्तुत्वा तं मुनिसत्तमम् ।।५७।।
स्वर्गात्पपात सहसा सर्परूपधरोऽभवत्। बृहस्पतिस्ततो गत्वा तरसामानसं प्रति।५८
इन्द्राय सर्ववृत्तान्तंकथयामासविस्तरम्। तच्छ्रुत्वामघवाराज्ञःस्वर्गात्प्रच्यवनादिकम्।५९
मुदितोऽभून्महाराजः स्थितस्तत्रैव वासवः। देवाश्च मुनयो दृष्ट्वा नहुषं पातितं भुवि।६०
जग्मुः सर्वेऽपि तत्रैव यत्रेन्द्रः सरसि स्थितः।
तमाश्वास्य सुराः सर्वे मुनिभिः सहितास्तथा।।६१।।
स्वर्गे समानयामासुर्मानपूर्वं शचीपतिम्। समागतं ततः शक्रं सर्वे ते मुनयः सुराः।६२
स्थापयित्वाऽऽसने पश्चादभिषेकं दधुः शिवम्।
इन्द्रोऽपि स्वाऽऽसनं प्राप्य शच्या सह सुराऽऽलये ।।६३।।
चिक्रीड नन्दने रम्ये कानने प्रेमयुक्तया।

व्यास उवाच

एवमिन्द्रेण सम्प्राप्तं दुःखं परमदारुणम् ।।६४।।
तवाऽसुरं कामरूपं विश्वरूपं मुदा मुनिम्। पुनर्देव्याः प्रसादेन स्वस्थानंप्राप्तवान्नृप।६५
एतत्ते सर्वमाख्यातं वृत्रासुरवधाश्रयम्। यत्पृष्टोऽहं त्वया राजन्कथानकमनुत्तमम्।६६
यादृशं कुरुते कर्म तादृशं फलमाप्नुयात्। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।६७

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कंधे नहुषस्वर्गच्युतिवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः।।९।।

--o--

* दशमोऽध्यायः *

राज्ञोजनमेजयस्येन्द्रस्थानभ्रंशप्रश्नेसञ्जातेव्यासेनत्रिविधस्यकर्मणोगतिवर्णनम्

जनमेजय उवाच

कथितंचरितं ब्रह्मञ्छक्रस्याऽद्भुतकर्मणः। स्थानभ्रंशस्तथा दुःखप्राप्तिरुक्ता विशेषतः। १
यत्रदेवाधिदेव्याश्चमहिमाऽतीववर्णितः। संदेहोऽत्रममाप्यस्तियच्छक्रोऽपिमहातपाः। २
देवाधिपत्यमासाद्य दुःखहं दुःखमन्वभूत्। मखानां तु शतंकृत्वाप्राप्तुंस्थानमनुत्तमम्। ३
देवेशत्वं च सम्प्राप्यभ्रष्टः स्थानादसौ कथम्। एतत्सर्वं समाचक्ष्वकारणंकरुणानिधे। ४
सर्वज्ञोऽसि मुनिश्रेष्ठ! पुराणानां प्रवर्तकः। नाऽवाच्यं महतां किंचिच्छिष्ये च श्रद्धयाऽन्विते। ५
तस्मात्कुरु महाभाग! मत्सन्देहाऽपनोदनम्।

सूत उवाच

इति पृष्टः स राज्ञा वै तदा सत्यवतीसुतः ।।६।।
तमाहाऽतिप्रसन्नात्मा यथानुक्रममुत्तरम्।

व्यास उवाच

निबोध नृपतिश्रेष्ठ! कारणं परमाद्भुतम् ।।७।।
कर्मणस्तु त्रिधा प्रोक्तागतिस्तत्त्वविदां वरैः। सञ्चितंवर्तमानं चप्रारब्धमितिभेदतः। ८
अनेकजन्मसञ्जातं प्राक्तनं सञ्चितं स्मृतम्। सात्त्विकं राजसं कर्म तामसंत्रिविधंपुनः। ९
शुभं वाऽप्यशुभं भूप सञ्चितं बहुकालिकम्। अवश्यमेव भोक्तव्यं सुकृतं दुष्कृतं तथा। १०
जन्मजन्मनि देवानां सञ्चितानां च कर्मणाम्।
निःशेषस्तु क्षयोनाऽभूत्कल्पकोटिशतैरपि ।।११।।
क्रियमाणं च यत्कर्म वर्तमानं तदुच्यते। देहं प्राप्य शुभं वाऽपि ह्यशुभं वासमाचरेत्। १२
सञ्चितानां पुनर्मध्यात्समाहृत्य कियान्किल। देहारम्भे च समये कालःप्रेरयतीवतत्। १३
प्रारब्धं कर्मविज्ञेयं भोगात्तस्यक्षयःस्मृतः। प्राणिभिःखलुभोक्तव्यंप्रारब्धंनात्रसंशयः। १४
पुरा कृतानि राजेन्द्र ह्यशुभानि शुभानि च।
अवश्यमेवकर्माणिभोक्तव्यानीतिनिश्चयः ।।१५।।
देवैर्मनुष्यैरसुरैर्यक्षगन्धर्वकिन्नरैः। कर्मैवहि महाराज! देहारम्भस्य कारणम्। १६
कर्मक्षये जन्मनाशः प्राणिनांनात्रसंशयः। ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रइन्द्राद्याश्च सुरास्तथा। १७
दानवा यक्षगन्धर्वाः सर्वे कर्मवशाः किल। अन्यथा देहसम्बन्धः कथं भवति भूपते। १८
कारणं यस्तु भोगस्य देहिनः सुखदुःखयोः।
तस्मादनेकजन्मोत्थसञ्चितानां च कर्मणाम् ।।१९।।
मध्ये वेगः समायाति कस्यचित्कालपाकतः।
तत्प्रारब्धवशात्पुण्यं करोति च यथा तथा ।।२०।।
पापं करोति मनुजस्तथा देवादयोऽपि च। तथा नारायणो राजन्नरश्च धर्मजावुभौ। २१
जातौ कृष्णार्जुनौ काममंशौनारायणस्य तौ। पुराणपीठिकेयंवैमुनिभिःपरिकीर्तिता। २२
देवांशः स तु विज्ञेयो यो भवेद्विभवादिकः। नानृषिः कुरुतेकाव्यंनारुद्रो रुद्रमर्चति। २३
नाऽदेवांशोददात्यन्नं नाविष्णुः पृथिवीपतिः। इन्द्रादग्नेर्यमाद्विष्णोर्धनदादितिभूपते। २४
प्रभुत्वं च प्रभावं च कोपं चैव पराक्रमम्। आदाय क्रियते नूनं शरीरमिति निश्चयः। २५
यः कश्चिद् बलवाँल्लोके भाग्यवानथ भोगवान्।
विद्यावान्दानवान्वाऽपि स देवांशः प्रपठ्यते ।।२६।।

तथैवैते समाख्याताःपाण्डवाः पृथिवीपते!। देवांशोवासुदेवोऽपिनारायणसमद्युतिः।२७
शरीरं प्राणिनां नूनं भाजनं सुखदुःखयोः। शरीरी प्राप्नुयात्कामं सुखंदुःखमनन्तरम्।२८
देही नास्ति वशः कोऽपिदैवाधीनःसदैव हि। जननं मरणंदुःखंसुखंप्राप्नोतिचावशः।२९
पाण्डवास्ते वने जाताः प्राप्तास्तु स्वगृहंपुनः। स्वबाहुबलतः पश्चाद्राजसूयंक्रतूत्तमम्।३०
वनवासं पुनः प्राप्ता बहुदुःखकरं परम्। अर्जुनेन तपस्तप्तंदुष्करं ह्यजितेन्द्रियैः।३१
सन्तुष्टस्तु सुरैर्दत्तं वरदानं पुनः शुभम्। नरदेहकृतं पुण्यं क्व गतं वनवासजम्।३२
नरदेहे तपस्तप्तं चोग्रे बदरिकाश्रमे। नार्जुनस्य शरीरे तत्फलदं सम्बभूव ह।३३
प्राणिनां देहसम्बन्धे गहना कर्मणो गतिः। दुर्ज्ञेया सर्वथादेवैर्मानवानां तु का कथा।३४
वासुदेवोऽपि सञ्जातः कारागारेऽतिसङ्कटे। नीतोऽसौवसुदेवेननन्दगोपस्यगोकुलम्।३५
एकादशैव वर्षाणि संस्थितस्तत्र भारत!। पुनः स मथुरां गत्वा जघानोग्रसुतंबलात्।३६

मोचयामास पितरौ बन्धनाद् भृशदुःखितौ।
उग्रसेनं च राजानं चकार मथुरापुरे ॥३७॥

जगाम द्वारवत्यां स म्लेच्छराजभयात्पुनः। सर्वं भाविवशात्कृष्णःकृतवान्पौरुषंमहत्।३८
कृत्वा कार्याण्यनेकानि द्वारवत्यां जनार्दनः। देहंत्यक्त्वाप्रभासेतुसकुटुम्बोदिवंगतः।३९

पुत्राः पौत्राश्च सुहृदो भ्रातरो जामयस्तथा।
प्रभासे यादवाः सर्वे विप्रशापात्क्षयं गताः ॥४०॥

एवं ते कथिता राजन्कर्मणो गहना गतिः। वासुदेवोऽपि व्याधस्यबाणेननिधनंगतः।४१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे कर्मणांगहनागतिवर्णनं नामदशमोऽध्यायः॥१०॥

* एकादशोऽध्यायः *

जनमेजयसन्देहनिराकरणार्थंव्यासेनसत्य-त्रेता-द्वापर-कलियुगानां व्यवस्थावर्णनम्

जनमेजय उवाच

भारावतरणार्थाय कथितं जन्म कृष्णयोः। संशयोऽयं द्विजश्रेष्ठ हृदये मम तिष्ठति।१
पृथिवी गोस्वरूपेण ब्रह्माणं शरणं गता। द्वापरान्तेऽतिदीनाऽऽर्तागुरुभारप्रपीडिता।२
वेधसा प्रार्थितो विष्णुः कमलापतिरीश्वरः। भूभारोत्तरणार्थायसाधूनां रक्षणाय च।३
भगवन्भारते खण्डे देवैः सह जनार्दन!। अवतारं गृहाणाऽऽशु वसुदेवगृहे विभो।४
एवं सम्प्रार्थितो धात्राभगवान्देवकीसुतः। बभूव सह रामेणभूभारोत्तराणाय वै।५
कियानुत्तारितो भारो हत्वादुष्टाननेकशः। ज्ञात्वा सर्वान्दुराचारान्पापबुद्धिनृपानिह।६

हतो भीष्मो हतो द्रोणो विराटो द्रुपदस्तथा।
वाह्लीकः सोमदत्तश्च कर्णो वैकर्तनस्तथा ॥७॥

यैर्लुण्ठितं धनं सर्वं हृताश्चहरियोषितः। कथं न नाशितादृष्टा येस्थिताःपृथिवीतले।८

आभीराश्चशकाम्लेच्छानिषादाःकोटिशस्तथा।
भारावतरणंकिंतत्कृतंकृष्णेनधीमता ॥९॥
सन्देहोऽयं महाभाग ! न निवर्तति चित्ततः।
कलावस्मिन्प्रजाः सर्वाः पश्यतः पापनिश्चयाः ॥१०॥

व्यास उवाच

राजन्यस्मिन्युगेयादृक्प्रजाभवति कालतः। नाऽन्यथातद्भवेन्नूनंयुगधर्मोऽत्रकारणम्।११
ये धर्मरसिकाजीवास्तेवैसत्ययुगेऽभवन्। धर्मार्थरसिका ये तु ते वै त्रेतायुगेऽभवन्।१२
धर्मार्थकामरसिका द्वापरे चाऽभवन्युगे। अर्थकामपराः सर्वे कलावस्मिन्भवन्ति हि।१३
युगधर्मस्तुराजेन्द्र ! नयाति व्यत्ययंपुनः। कालःकर्त्ताऽस्ति धर्मस्यह्यधर्मस्यचवैपुनः।१४

राजोवाच

ये तु सत्ययुगे जीवा भवन्तिधर्मतत्पराः। कुत्र तेऽद्यमहाभागतिष्ठन्तिपुण्यभागिनः।१५
त्रेतायुगे द्वापरे वा ये दानव्रतकारकाः। वर्तन्ते मुनयःश्रेष्ठ! कुत्र ब्रूहि पितामह।१६
कलावद्य दुराचारा येऽत्र सन्ति गतत्रपाः। आद्येयुगेक्वयास्यन्तिपापिष्ठादेवनिन्दकाः।१७
एतत्सर्वं समाचक्ष्व विस्तरेण महामते!। सर्वथाश्रोतुकामोऽस्मियदेतद्धर्मनिर्णयम्।१८

व्यास उवाच

ये वै कृतयुगे राजन्सम्भवन्तीह मानवाः। कृत्वाते पुण्यकर्माणि देवलोकान्व्रजन्तिवै।१९
ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चनृपसत्तम! । स्वधर्मनिरतायान्तिलोकान्कर्मजितान्किल।२०

सत्यं दया तथा दानं स्वदारगमनं तथा।
अद्रोहः सर्वभूतेषु समता सर्वजन्तुषु ।।२१।।

एतत्साधारणं धर्मं कृत्वा सत्ययुगे पुनः। स्वर्गं यान्तीतरे वर्णा धर्मतो रजकादयः।२२
तथा त्रेतायुगे राजन्द्वापरेऽथ युगे तथा। कलावस्मिन्युगेपापा नरकं यान्तिमानवाः।२३
तावत्तिष्ठन्ति ते तत्र यावत्स्याद्युगपर्ययः। पुनश्च मानुषे लोके भवंति भुवि मानवाः।२४
यदासत्ययुगस्यादिःकलेरन्तश्च पार्थिव!। तदास्वर्गात्पुण्यकृतोजायन्तेकिलमानवाः।२५
यदा कलियुगस्यादिर्द्वापरस्यक्षयस्तथा। नरकात्पापिनःसर्वे भवन्ति भुवि मानवाः।२६
एवंकालसमाचारोनान्यथाऽभूत्कदाचन। तस्मात्कलिरसत्कर्तातस्मिंस्तुतादृशीप्रजा।२७
कदाचिद्दैवयोगात्तुप्राणिनांव्यत्ययोभवेत्। कलौभ्ये साधवःकेचिद्द्वापरेसम्भवन्तिते।२८
अथ त्रेतायुगे केचित् केचित्सत्ययुगेतथा। दुष्टाःसत्ययुगे ये तु ते भवन्तिकलावपि।२९
कृतकर्मप्रभावेण प्राप्नुवन्त्यसुखानि च। पुनश्च तादृशंकर्म कुर्वन्ति युगभावतः।३०

जनमेजय उवाच

युगधर्मान्महाभाग ब्रूहिसर्वानशेषतः। यस्मिन्वैयादृशो धर्मो ज्ञातुमिच्छामि तं तथा।३१

व्यास उवाच

निबोधनृपशार्दूल दृष्टान्तं ते ब्रवीम्यहम्। साधूनामपिचेतांसियुगभावाद्भ्रमन्तिहि।३२
पितुर्यथा ते राजेन्द्र बुद्धिर्विप्रावहेलने। कृता वै कलिना राजन्धर्मज्ञस्य महात्मनः।३३
अन्यथा क्षत्रियो राजाययातिकुलसंभवः। तापसस्य गले सर्पं मृतं कस्मादयोजयत्।३४
सर्वं युगबलं राजन्वेदितव्यं विजानता। प्रयत्नेन हि कर्तव्यं धर्मकर्मविशेषतः।३५
नूनं सत्ययुगे राजन्ब्राह्मणा वेदपारगाः। पराशक्त्यर्चनरता देवीदर्शनलालसाः।३६
गायत्रीप्रणवासक्ता गायत्रीध्यानकारिणः। गायत्रीजपसंसक्ता मायाबीजैकजापिनः।३७

ग्रामे ग्रामे पराम्बायाः प्रासादकरणोत्सुकाः।
स्वकर्मनिरताः सर्वे सत्यशौचदयान्विताः ।।३८।।

त्रय्युक्तकर्मनिरतास्तत्त्वज्ञानविशारदाः । अभवन्क्षत्रियास्तत्र प्रजाभरणतत्पराः।३९

वैश्यास्तु कृषिबाणिज्यगोसेवानिरतास्तथा। शूद्राः सेवापरास्तत्र पुण्येसत्ययुगेनृप।४०
पराम्बापूजनासक्ताः सर्वे वर्णाः परे युगे। तथात्रेतायुगेकिंचिन्न्यूनाधर्मस्यसंस्थितिः।४१
द्वापरे च विशेषेण न्यूना सत्ययुगस्थितिः। पूर्वं ये राक्षसा राजंस्ते कलौ ब्राह्मणाः स्मृताः।४२
पाखण्डनिरताःप्रायोभवन्ति जनवञ्चकाः। असत्यवादिनः सर्वे वेदधर्मविवर्जिताः।४३
दाम्भिकालोकचतुरा मानिनो वेदवर्जिताः। शूद्रसेवापराः केचिन्नानाधर्मप्रवर्तकाः।४४
वेदनिन्दाकराःक्रूरा धर्मभ्रष्टातिवादुकाः। यथायथा कलिर्वृद्धिं याति राजंस्तथातथा।४५

धर्मस्य सत्यमूलस्य क्षयः सर्वात्मना भवेत्।
तथैव क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्च धर्मवर्जिताः ।।४६।।

असत्यवादिनः पापास्तथा वर्णेतराः कलौ। शूद्रधर्मरता विप्राः प्रतिग्रहपरायणाः।४७

भविष्यन्ति कलौ राजन्युगे वृद्धिं गताः किल।
कामचाराः स्त्रियः कामलोभमोहसमन्विताः ।।४८।।

पापा मिथ्याभिवादिन्यःसदाक्लेशरतानृप। स्वभर्तृवञ्चकानित्यंधर्मभाषणपण्डिताः।४९
भवन्त्येवंविधानार्यः पापिष्ठाश्च कलौ युगे। आहारशुद्ध्यानृपतेचित्तशुद्धिस्तुजायते।५०
शुद्धे चित्ते प्रकाशः स्याद्धर्मस्य नृपसत्तम। वृत्तसंकरदोषेण जायते धर्मसंकरः।५१
धर्मस्य सङ्करे जाते नूनं स्याद्वर्णसङ्करः। एवं कलियुगे भूप सर्वधर्मविवर्जिते।५२
स्ववर्णधर्मवार्तैषा न कुत्राप्युपलभ्यते। महान्तोऽपि च धर्मज्ञाअधर्मं कुर्वते नृप।५३

कलिस्वभाव एवैष परिहार्यो न केनचित्।
(तस्मादत्र मनुष्याणां स्वभावाःपापकारिणाम्) ।।५४।।
निष्कृतिर्न हि राजेन्द्र! सामान्योपायतो भवेत्।

जनमेजय उवाच

भगवन्सर्वधर्मज्ञ ! सर्वशास्त्रविशारद ! ।।५५।।

कलावधर्मबहुले नराणां का गतिर्भवेत्। यद्यस्ति तदुपायश्चेद्दयया तं वदस्व मे।५६

व्यास उवाच

एकएव महाराज! तत्रोपायोस्ति नाऽपरः। सर्वदोषनिरासार्थं ध्यायेद्देवीपदाम्बुजम्।५७

न सन्त्यघानि तावन्ति यावती शक्तिरस्ति हि।
नाम्नि देव्याः पापदाहे तस्माद्भीतिः कुतो नृपः ।।५८।।

अवशेनाऽपि यन्नाम लीलयोच्चारितं यदि। किं किं ददाति तज्ज्ञातुं समर्थानहरादयः।५९
प्रायश्चित्तं तु पापानांश्रीदेवीनामसंस्मृतिः। तस्मात्कलिभयाद्राजन्पुण्यक्षेत्रेवसन्नरः।६०
निरंतरं पराम्बायानामसंस्मरणं चरेत्। छित्त्वा भित्त्वा चभूतानिहत्वासर्वमिदंजगत्।६१
देवीं नमति भक्त्या यो नसपापैर्विलिप्यते। रहस्यंसर्वशास्त्राणांमयाराजन्नुदीरितम्।६२
विमृश्यैतदशेषेण भज देवीपदाम्बुजम्। अजपां नाम गायत्रीं जपन्तिनिखिलाजनाः।६३
महिमानं नजानन्ति मायायावैभवं महत्। गायत्रींब्राह्मणाः सर्वे जपन्ति हृदयान्तरे।६४

महिमानं न जानन्तिमायाया वैभवं महत्।
एतत्सर्वं समाख्यातं यत्पृष्टं तत्त्वया नृप।
युगधर्मव्यवस्थायां किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।।६५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे सयुगधर्मव्यवस्थादेवीजपवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ।।११।।

* द्वादशोऽध्यायः *

तीर्थवर्णनप्रसङ्गेहरिश्चन्द्रनृपकथानकम् अपुत्रस्यास्यवरुणप्रसादात्पुत्रप्राप्ति स्तन्निमित्तमेवजलोदरव्याधिश्च

राजोवाच

तीर्थानिभुवि पुण्यानि ब्रूहि मेमुनिसत्तम!। गम्यानिमानवैर्देवैः क्षेत्राणिसरितस्तथा।१
फलं च यादृशं यत्र तीर्थेषुस्नानदानतः। विधिंतु तीर्थयात्रायांनियमांश्च विशेषतः।२

व्यास उवाच

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामि तीर्थानि विविधानि च। येषुतीर्थेषुदेवीनांप्रशस्तान्यायनानिच ।३
नदीनां जाह्नवीश्रेष्ठा यमुनाच सरस्वती। नर्मदा गण्डकीसिन्धुर्गोमती तमसा तथा।४
कावेरी चन्द्रभागा च पुण्यावेत्रवती शुभा। चर्मण्वती चसरयूस्तापीसाभ्रमतीतथा।५
एताश्च कथिता राजन्नन्याश्च शतशः पुनः। तासांसमुद्रगाःपुण्याः स्वल्पपुण्याः ह्यनब्धिगाः।६
समुद्रगानां ताःपुण्याःसर्वदौघवहास्तु याः। मासद्वयंश्रावणादौताश्चसर्वा रजस्वलाः ।७
भवन्ति वृष्टियोगेन ग्राम्यवारिवहास्तथा। पुष्करञ्च कुरुक्षेत्रं धर्मारण्यं सुपावनम्।८
प्रभासं च प्रयागं च नैमिषारण्यमेव च। विश्रुतं चाऽर्बुदारण्यं शैलाश्च पावनास्तथा।९
श्रीशैलश्च सुमेरुश्च पर्वतो गन्धमादनः। सरांसि चैव पुण्यानि मानसं सर्वविश्रुतम्।१०

तथा बिन्दुसरः श्रेष्ठमच्छोदं नाग पावनम्।
आश्रमास्तु तथा पुण्या मुनीनां भावितात्मनाम् ।।११।।

विश्रुतस्तु सदा पुण्यः ख्यातोबदरिकाश्रमः। नरनारायणौ यत्र तेपाते तौ मुनीतपः।१२
वामनाऽऽश्रम आख्यातःशत यूपाश्रमस्तथा। येन यत्रतपस्तप्तंतस्यनाम्नाऽतिविश्रुतः ।१३
एवं पुण्यानि स्थाना निह्यसंख्यातानि भूतले। मुनिभिःपरिगीतानिपावनानिमहीपते ।१४
एषुस्थानेषु सर्वत्र देवीस्थानानि भूपते। दर्शनात्पापहारीणि वसन्ति नियमेन च।१५
कथयिष्यामि तान्यग्रे प्रसङ्गेनच कानिचित्। तीर्थानिनृपदानानिव्रतानिचमखास्तथा ।१६

तपांसि पुण्यकर्माणि सापेक्षाणि महीपते!।
द्रव्यशुद्धिं क्रियाशुद्धिं मनःशुद्धिमपेक्ष्य च ।।१७।।
पावनानि हि तीर्थानि तपांसि च व्रतानि च।
कदाचिद् द्रव्यशुद्धिः स्यात्क्रियाशुद्धिः कदाचन ।।१८।।

दुर्लभामनसःशुद्धिः सर्वेषां सर्वदा नृप। मनस्तु चञ्चलं राजन्ननेकविषयाश्रितम्।१९
कथं शुद्धं भवेद्राजन्नानाभावसमाश्रितम्। कामक्रोधौतथालोभोह्यहङ्कारो मदस्तथा।२०
सर्वविघ्नकराह्येते तपस्तीर्थव्रतेषु च। अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।२१
स्वधर्मपालनं राजन्सर्वतीर्थफलप्रदम्। नित्यकर्मपरित्यागान्मार्गे संसर्गदोषतः।२२
व्यर्थं तीर्थाधिगमनं पापमेवावशिष्यते। क्षालयन्तिहि तीर्थानि सर्वथादेहजं मलम्।२३
मानसं क्षालितन्तानि न समर्थानिवै नृप। शक्तानि यदिचेत्तानि गंगातीरनिवासिनः।२४

मुनयो द्रोहसंयुक्ताः कथं स्युर्भावितेश्वराः।
वसिष्ठ सदृशाः प्रज्ञा विश्वामित्रादयः किल ।।२५।।

रागद्वेषरताः सर्वे कामक्रोधाकुलाःसदा। चित्तशुद्धिमयंतीर्थं गंगादिभ्योऽतिपावनम्।२६
यदि स्याद्दैवयोगेनक्षालयत्यान्तरं मलम्। विशेषेणतु सत्संगो ज्ञाननिष्ठस्य भूपते।२७
न वेदान चशास्त्राणि नव्रतानि तपांसि न। नमखा न चदानानिचित्तशुद्धेस्तुकारणम्।२८

वसिष्ठो ब्रह्मणः पुत्रो वेदविद्याविशारदः। रागद्वेषान्वितः कामंगंगातीरसमाश्रितः।२९
आडीबकं महायुद्धं विश्वामित्रवसिष्ठयोः। जातं निरर्थकं द्वेषाद्देवानां विस्मयप्रदम्।३०
विश्वामित्रो बकस्तत्र जातः परमतापसः। शप्तः स तु वसिष्ठेनहरिश्चंद्रस्यकारणात्।३१

कौशिकेन वसिष्ठोऽपि शप्त्वाऽऽडीदेहभाक्कृतः।
शापादाडीबकौ जातौ तौ मुनी बिशदप्रभौ ।।३२।।

निवासं प्रापतुस्तीरे सरसो मानसस्य च। चक्रतुर्दारुणं युद्धं नखञ्चंचुप्रताडनैः।३३
वर्षाणामयुतं यावत्तावृषी रोषसंयुतौ। युयुधाते मदोन्मत्तौ सिंहाविव परस्परम्।३४

राजोवाच

कथं तौ मुनिशार्दूलौ तापसौ धर्मतत्परौ। परस्परं वैरपरौ सञ्जातौ केन हेतुना।३५
शापं परस्परं केन कारणेन महामती। दत्तवंतौ मिथः क्लेशकारकौ दुःखदौनृणाम्।३६

व्यास उवाच

हरिश्चन्द्रो नृपश्रेष्ठस्त्रिशङ्कुतनयः पुरा। बभूव रविवंशीयो रामचन्द्रस्य पूर्वजः।३७
अनपत्यः स राजर्षिर्वरुणाय महाक्रतुम्। प्रतिजज्ञे पुत्रकामो नरमेधं दुरासदम्।३८
वरुणस्तस्य सन्तुष्टो यज्ञस्य नियमे कृते। दधार गर्भं राज्ञस्तु भार्या परमसुन्दरी।३९
राजा बभूव सन्तुष्टो दृष्टा भार्यांसदोहदाम्। चकारविधिवत्कर्म गर्भसंस्कारकारकम्।४०
सुषुवे तनयं नारी सर्वलक्षणसंयुतम्। मुदम्प्राप नृपस्तत्र पुत्रे जाते विशाम्पते।४१
कृतावञ्जातकर्मादिसंस्कारविधिमुत्तमम्। ददौ हिरण्यं गा दोग्ध्रीर्ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः।४२
जन्मोत्सवेऽतिसम्वृत्ते गेहे वै यादसांपतिः। आजगाम महाराज! विप्रवेषधरस्तथा।४३

पूजितः पार्थिवेनाऽथ दत्त्वा विधिवदासनम्।
कार्ये पृष्टेऽब्रवीद्वाक्यं वरुणोऽस्मीति भूपतिम् ।।४४।।

कुरु यज्ञं सुतं कृत्वा पशुंपरमपावनम्। सत्यवाग्भव राजेन्द्र संकल्पस्तु त्वया कृतः।४५

तच्छ्रुत्वा वचनं राजा विह्वलोऽतिव्यथाकुलः।
संस्तभ्याऽऽधिं नृपः प्राह वरुणं सत्कृताञ्जलिः ।।४६।।

स्वामिन्करोमि तं यज्ञं सर्वथाविधिपूर्वकम्। मयातेयत्प्रतिज्ञातंभवामिसत्यवागहम् ।४७
पूर्णे मासे विशुध्येत धर्मपत्नी सुरोत्तम। विशुद्धायां तु भार्यायांकर्तव्यःसपशुर्मखः।४८

व्यास उवाच

इत्युक्ते वचने राज्ञा वरुणः स्वगृहंगतः। राजा बभूव सन्तुष्टः किञ्चिच्चिंतातुरस्तथा।४९
पूर्णेमासि पुनः पाशीपरीक्षार्थं नृपालये। आजगामद्विजोभूत्वा सुवेषः सुष्ठुभाषकः।५०
कृतार्हणं सुखासीनं भूपतिस्तं सुरोत्तमम्। उवाच विनयोपेतो हेतुगर्भं वचस्तदा।५१

असंस्कृतं सुतं स्वामिन्यूपे बध्नामि तं कथम्।
संस्कृत्य क्षत्रियं कृत्वा यजेऽहं यज्ञमुत्तमम् ।।५२।।
दयसे यदि देव! त्वं ज्ञात्वा दीनं स्वसेवकम्।
असंस्कृतस्य बालस्य नाऽधिकारोऽस्ति कुत्रचित् ।।५३।।

वरुण उवाच

प्रतारयसि राजेन्द्र! कृत्वा समयमग्रतः। दुस्त्यजस्तव जानामिसुतस्नेहोह्यपुत्रिणः।५४
गृहं व्रजामिभूपाल! वचनात्तवकोमलात्। कियत्कलंप्रतीक्ष्याहमागमिष्यामितेगृहम् ।५५

भवितव्यं त्वया तात! तदा सत्यवचोऽन्वितम्।
अन्यथा त्वयि मुञ्चामि कोपं शापसमन्वितम् ।।५६।।

राजोवाच

समावर्तनकर्मान्ते सर्वथा यादसाम्पते। कृत्वा वृत्रपशुंयज्ञे यजिष्ये विधिपूर्वकम्।५७

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं राज्ञो वरुणः प्रीतिमानसः। तथेत्युक्त्वा ययौ तूर्णं नृपस्तु सुस्थितोऽभवत्।५८
रोहिताख्यइतिख्यातःसुतस्तस्य विवृद्धिमान्। सञ्जातश्चतुरःसर्वविद्यानाञ्चविशारदः।५९
यज्ञस्यकारणं तेन ज्ञातं सर्वंसविस्तरम्। भयभीतस्ततःसोऽपि मत्वा मरणमात्मनः।६०
कृत्वा पलायनं वीरो गतोऽसौगिरिगह्वरे। अगम्ये नृपतिस्थाने स्थितस्तत्रभयातुरः।६१
प्राप्ते कालेऽथ वरुणो यज्ञार्थी नृपतेर्गृहम्। गत्वा तमाह भूपालं कुरु यज्ञं विशाम्पते।६२
प्रम्लानवदनो राजा तमाहव्यथितेन्द्रियः। किं करोमिगतः क्वाऽपि सुतोमेसुरसत्तम।६३
श्रुत्वा तद्वचनं राज्ञःकुपितोयादसाम्पतिः। शशाप तं नृपं कोपादसत्यवादिनम्भृशम्।६४
जलोदराभिधो व्याधिर्देहेभवतु ते नृपः। यतः प्रतारितश्चाऽहं कृत्वा कपटपण्डित!।६५
इति शप्त्वा ययौ धाम स्वकं पाशधरस्तदा। राजा चिन्तातुरस्तस्थौ भवने व्याधिपीडितः।६६
यदाऽतिव्याधितोराजारोगेणशापजेनह। तदाशुश्रावपुत्रोऽपिपितरम्व्याधिपीडितम्।६७
पान्थिकःप्राह पुत्रं हि पिता ते भृशदुःखिताः। जलोदरविकारेण शापजेन नृपात्मज।६८
विनष्टं जीवितं तेऽद्य वृथा जातस्य दुर्मते!।
यत्त्यक्त्वा पितरं दुःस्थं प्राप्तोऽसि गिरिगह्वरम्॥६९॥
किमनेन शरीरेणप्राप्तन्तेजन्मनः फलम्। देहदंदुःखितं कृत्वा स्थितोऽस्यत्रसुताधम!।७०
प्राणास्त्याज्याःपितुःकार्ये सत्पुत्रेणेति निश्चयः।
त्वदर्थे दुःखितो राजा क्रन्दति व्याधिपीडितः॥७१॥

व्यास उवाच

तदाकर्ण्य वचस्तथ्यंपान्थिकाद्धर्मसंयुतम्। यदा चक्रे मनोगन्तुंद्रष्टुंतातंव्यथातुरम्।७२
तदा विप्रवपुर्भूत्वा वासवस्तमुपागतम्। रहः प्राह हितंवाक्यंदयावानिव भारत!।७३
मूर्खोऽसि राजपुत्र त्वं गमनाय मतिंवृथा। करोषिपितरंत्वद्य नजानासि व्यथायुतम्।७४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे हरिश्चन्द्रस्यजलोदरव्याधिपीड़ावर्णनंनामद्वादशोऽध्यायः॥१२॥

* त्रयोदशोऽध्यायः *

दुःखितंपितरंश्रुत्वारोहितस्यतद्दुःखनिवारणायगमनंवसिष्ठाज्ञयायज्ञे शुनःशेपानयनमाडीवकयोर्युद्धवर्णनञ्च

इन्द्र उवाच

साहसं कृतवान्राजा पूर्वं यत्कथितोमखः। वरुणाय प्रतिज्ञातः पुत्रं कृत्वापशुंप्रियम्।१
गतेत्वयिपितापुत्रं बद्धवायूपेऽघृणः पुनः। पशुं कृत्वा महाबुद्धे वधिष्यति वृथातुरः।२
इत्थं निषिद्धस्तत्पुत्रः शक्रेणाऽमिततेजसा। स्थितस्तत्रैव मायेशीमायया मोहितो भृशम्।३
यदा पुनः पुनः श्रुत्वा पितरं रोगपीडितम्। गमनाय मतिं चक्रे तदेन्द्रः प्रत्यषेधयत्।४
हरिश्चन्द्रोऽतिदुःखार्तः प्रपच्छ गुरुमन्तिके। स्थितंवसिष्ठमेकान्ते सर्वज्ञं हितत्परम्।५

राजोवाच

भगवन्किंरोम्यद्य कातरोऽस्मिव्यथाकुलः। त्राहिमांदुःखमनसं महाव्याधिभयातुरम्।६

वसिष्ठ उवाच

श्रृणुराजन्नुपायोऽस्ति रोगनाशं प्रतिस्तुतः। त्रयोदशभिधाः पुत्राःकथिताधर्मसंग्रहे।७
तस्मात्क्रीतंसुतंकत्वायजस्वमखमुत्तमम् ।द्रव्यंदत्त्वायथोद्दिष्टमानयस्वद्विजोत्तमम्।८
एवं कृतेमखेभूपरोगनाशोभविष्यति। वरुणोऽपि प्रसन्नात्मा भविष्यति यथासुखम्।९

व्यास उवाच

इति तस्यवचः श्रुत्वा राजा प्रोवाचमन्त्रिणम्। अन्वेषयमहाबुद्धे विषयेष्वतियत्नतः।१०
कदाचित्कोऽपि लोभार्थी ददाति स्वसुतं पिता।
समानय धनं दत्त्वा यावत्प्रार्थयतेऽप्यसौ।।११।।
सर्वथैव समानेयो यज्ञार्थे द्विजबालकः। न कार्या कृपणा बुद्धिस्त्वयामत्कार्यहेतवे।१२
प्रार्थनीयस्त्वया पुत्रः कस्यचिद् द्विजवादिनः।
द्रव्येण देहि यज्ञार्थं कर्तव्योऽसौ पशुः किल।।१३।।
इति सञ्चोदितस्तेन सचिवः कार्यहेतवे। अन्वेषयामास पुरे ग्रामे ग्रामे गृहे गृहे।१४
एवमन्वेषतस्तस्य विषये कश्चिदातुरः। निर्धनस्त्रिसुतश्चासीदजीगर्तेति नामतः।१५
तस्य पुत्रं शुनःशेपं मध्यमं मन्त्रसत्तमः। आनयामास दत्त्वाऽर्थं प्रार्थितं यद्धनन्तदा।१६
समानीय शुनःशेपं सचिवः कार्यतत्परः। राज्ञे निवेदयामास पशुयोग्यं द्विजात्मजम्।१७
राजाऽतिमुदितस्तेन विप्रानानीय सर्वतः।
कारयामास सम्भारान्यज्ञार्थं वेदवित्तमान्।।१८।।
प्रारब्धे तु मखे तत्र विश्वामित्रो महामुनिः। बद्धं दृष्ट्वा शुनःशेपं निषिषेध नृपं तदा।१९
राजन्मा साहसंकार्षीर्मुञ्चैनंद्विजबालकम्। प्रार्थयाम्यहमायुष्मन्सुखंतेऽद्य भविष्यति।२०
क्रन्दत्ययं शुनःशेपः करुणा मां दुनोत्यपि। दयावान्भव राजेन्द्र कुरु मे वचनं नृप।२१
परदेहस्य रक्षार्थं स्वदेहं ये दयापराः। ददति क्षत्रियाः पूर्वं स्वर्गकामाः शुचिव्रताः।२२
तं स्वदेहस्य रक्षार्थं हंसि द्विजसुतम्बलात्। पापम्मा कुरु राजेन्द्रदयावान्भवबालके।२३
सर्वेषां सदृशी प्रीतिर्देहे वेत्सि स्वयं नृप!। मुञ्चैनं बालकंतस्मात्प्रमाणंयदिमेवचः।२४

व्यास उवाच

अनादृत्य च तद्वाक्यं राज दुःखातुरो भृशम्।
न मुमोच मुनिस्तस्मै चुकोपाऽतीव तापसः।।२५।।
उपदेशं ददौ तस्मै शुनःशेपाय कौशिकः। मन्त्रं पाशधरस्याऽथ दयावान्वेदवित्तमः।२६
शुनःशेपोऽपि तं यन्त्रमसकृद्वधकर्शितः। प्लुतस्वरेण चुक्रोश संस्मरन्वरुणं भृशम्।२७
स्तुवन्तं मुनिपुत्रं तं ज्ञात्वा वै यादसाम्पतिः।
तत्राऽऽगत्य शुनःशेपं मुमोच करुणार्णवः।।२८।।
रोगहीनं नृपं कृत्वा वरुणःस्वगृहंययौ। विश्वामित्रस्तु तं पुत्रंकृतवान्मोचितंमृते।२९
न कृतं वचनं राज्ञा कौशिकस्यमहात्मनः। रोषं दधार मनसा राजोपरि सगाधिजः।३०
एकस्मिन्समये राजा हयारूढो वनङ्गतः। सूकरं हन्तुकामस्तु मध्याह्नेकौशिकीतटे।३१
वृद्धब्राह्मणवेषेणविश्वामित्रेण वञ्चितः। सर्वस्वं प्रार्थितं तस्य गृहीतं राज्यमद्भुतम्।३२
पीडितोऽसौ हरिश्चन्द्रो यजमानो यतो भृशम्।
वशिष्ठः कौशिकं प्राह वने प्राप्तं यदृच्छया।।३३।।
क्षत्रियाधर्म दुर्बुद्धे वृथाब्राह्मणवेषभृत्। वकधर्म वृथा किं त्वं गर्वं वहसि दाम्भिक।३४

कस्मात्त्वयानृपश्रेष्ठोयजमानोममाऽप्यसौ। अपराधंविनाजाल्म! गमितोदुःखमद्भुतम् ।३५
बकध्यानपरो यस्मात्तस्मात्त्वं वै बको भव ।
इति शप्तो वसिष्ठेन कौशिकः प्राह तम्मुनः ।।३६।।
त्वमप्याडिर्भवाऽऽयुष्मन्बकोऽहं यावदेव हि ।

व्यास उवाच

एवं परस्परं दत्त्वा शापं तौ क्रोधपीडितौ ।।३७।।
अण्डजौ तरसा जातौ सरस्याडीबकौ मुनी ।
एकस्मिन्पादपे नीडं कृत्वाऽसौ बकरूपभाक् ।।३८।।
विश्वामित्रः स्थितस्तत्र दिव्ये सरसि मानसे ।
अन्यस्मिन्पादपे कृत्वा वसिष्ठो नीडमुत्तमम् ।।३९।।
आडीरूपधरस्तथावन्योन्यं द्वेषतत्परौ। दिने दिने तौ सङ्ग्रामं चक्रतुःक्रोधसंयुतौ।४०
दुःखदं सर्वलोकानां क्रन्दमानावुभौ भृशम्। चञ्चपक्षप्रहारैस्तु नखाघातैः परस्परम्।४१
जघ्नतू रुधिरक्लिन्नौ पुष्पिताविव किंशुकौ। एवं बहूनि वर्षाणि पक्षिरूपधरौ मुनी।४२
स्थितौ तत्र महाराज! शापपाशेन यन्त्रितौ ।

राजोवाच

कथं मुक्तौ मुनिश्रेष्ठौ शापाद्वसिष्ठकौशिकौ ।।४३।।
तन्ममाऽऽचक्ष्व विपर्षे! परं कौतूहलं हि मे ।

व्यास उवाच

युध्यमानावुभौ दृष्ट्वा ब्रह्मा लोकपितामहः ।।४४।।
तत्राऽऽजगामाऽनिमिषैर्वृतःसर्वैर्दयापरैः। तावाश्वास्यजगत्कर्त्तायुद्धतोविनिवार्य च।४५
शापं सम्मोचयामास तयोःक्षिप्तं परस्परम् ।
ततो जग्मुः सुराः सर्वे स्वानि धिष्ण्यानि पद्मभूः ।।४६।।
सत्यलोकं जगामाऽऽशु हंसाऽऽरूढः प्रतापवान् ।
विश्वामित्रोऽप्यगात्तूर्णं वसिष्ठः स्वाऽऽश्रमं गतः ।।४७।।
मिथः स्नेहं ततः कृत्वा प्रजापत्युपदेशतः। मैत्रावरुणिनाऽप्येवं कृतं युद्धमकारणम्।४८
कौशिकेन समंभूप! दुःखदं च परस्परम्। को नाम मानवोलोकेदेवोवादानवोऽपिवा।४९
अहङ्कारजयंकृत्वा सर्वदा सुखभाग्भवेत्। तस्माद्राजंश्चित्तशुद्धिर्महतामपि दुर्लभा।५०
यत्नेन साधनीया सा तद्विहीनं निरर्थकम् ।
तीर्थदानं तपः सत्यं यत्किञ्चिद्धर्मसाधनम् ।।५१।।
("श्रद्धाऽत्र त्रिविधा प्रोक्ता सात्त्विकी राजसी तथा ।
तामसी सर्वदेहेषु देहिनां धर्मकर्मसु) ।।५२।।
सात्त्विकी दुर्लभा लोके यथोक्तफलदा सदा। तदर्धफलदाप्रोक्ताराजसीविधिसंयुता।५३
तामसीत्वफला राजन्नतुकीर्तिकरी पुनः। कामक्रोधाभिभूतानांजनानां नृपसत्तम!"।५४
वासनारहितं कृत्वा तच्चित्तं श्रवणादिना। तीर्थादिषु वसेन्नित्यं देवीपूजनतत्पर।५५
देवीनामानि वचसा गृह्णंस्तस्या गुणान्स्तुवन् ।
ध्यायंस्तस्याः पदाम्भोजं कलिदोषभयार्दितः ।।५६।।
एवं तु कुर्वतस्तस्य न कदाचित्कलेर्भयम्। अनायासेन संसारान्मुच्यतेपातकीजन।५७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां षष्ठस्कन्धे आडीबकयुद्धवर्णनसहितंदेवीमाहात्म्यवर्णनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ।।१३।।

* चतुर्दशोऽध्यायः *

राज्ञामैत्रावरुणिरितिवशिष्ठनामविषयेप्रश्नेकृतेव्यासेननिमि-वशिष्ठयोः परस्परशापदानवार्त्ताकथनम्

जनमेजय उवाच

मैत्रावरुणिरित्युक्तं नाम तस्य मुनेः कथम्। बसिष्ठस्यमहाभागब्रह्मणस्तनुजस्य ह।१
किमसौ कर्मतोनाम प्राप्तवान्गुणतस्तथा। ब्रूहि मे वदतांश्रेष्ठ! कारणंतस्यनामजम्।२

व्यास उवाच

निबोध नृपतिश्रेष्ठ वसिष्ठोब्रह्मणः सुतः। निमिशापात्तनुं त्यक्त्वापुनर्जातोमहाद्युतिः।३
मित्रावरुणयोर्यस्मात्तस्मात्तन्नाम विश्रुतम्। मैत्रावरुणिरित्यस्मिँल्लोकेसर्वत्रपार्थिव।४

राजोवाच

कस्माच्छप्तः स धर्मात्मा राज्ञा ब्रह्मात्मजो मुनिः।
चित्रमेतन्मुनिं लग्नो राज्ञः शापोऽतिदारुणः ।।५।।
अनागसं मुनिं राजा किमसौ शप्तवान्मुने। कारणं वद धर्मज्ञ! तस्य शापस्य मूलतः।६

व्यास उवाच

कारणं तु मया प्रोक्तं तव पूर्वं विनिश्चितम्।
संसारोऽयं त्रिभिर्व्याप्तो राजन्मायागुणैः किल ।।७।।
धर्मं करोतु भूपालश्चरन्तु तापसास्तपः। सर्वेषां तु गुणैर्विद्धं नोज्वलं तद्भवेदिह।८
कामक्रोधाभिभूताश्च राजानो मुनयस्तथा। लोभाहङ्कारसंयुक्ताश्चरन्ति दुश्चरं तपः।९
यजन्ति क्षत्रिया राजन्रजोगुणसमावृताः। ब्राह्मणास्तुतथाराजन्नकोऽपिसत्त्वसंयुतः।१०
ऋषिणाऽसौ निमिः शप्तस्तेन शप्तो मुनिः पुनः।
दुःखाद् दुःखतरं प्राप्तावुभाऽपि विधेर्बलात् ।।११।।
द्रव्यशुद्धिः क्रियाशुद्धिर्मनसः शुद्धिरुज्वला। दुर्लभाप्राणिनांभूपसंसारे त्रिगुणात्मके।१२
पराशक्तिप्रभावोऽयं नोल्लङ्घ्यःकेनचित्क्वचित्।
यस्यानुग्रहमिच्छेत्सा मोचयत्येव तं क्षणात् ।।१३।।
महान्तोऽपि न मुच्यन्ते हरिब्रह्महरादयः। पामरा अपि मुच्यन्ते यथा सत्यव्रतादयः।१४
तस्यास्तु हृदयं कोऽपि न वेत्ति भुवनत्रये। तथापिभक्तवश्येयंभवत्येवसुनिश्चितम्।१५
तस्मात्तद्भक्तिरास्थेयादोषनिर्मूलनाय च। रागदम्भादियुक्ताचेत्साभक्तिर्नाशिनीभवेत्।१६
इक्ष्वाकुकुलसम्भूतो निमिर्नाम नराधिपः। रूपवान्गुणसम्पन्नो धर्मज्ञो लोकरञ्जकः।१७
सत्यवादी दानपरो याजको ज्ञानवाञ्छुचिः।
द्वादशस्तनयो धीमान्प्रजापालनतत्परः ।।१८।।
पुरं निवेशयामास गौतमाश्रमसन्निधौ। जयन्तु पुरसञ्ज्ञन्तु ब्राह्मणानांहिताय सः।१९
बुद्धिस्तस्य समुत्पन्ना यजेयमिति राजसी। यज्ञेन बहुकालेन दक्षिणासंयुतेन च।२०
इक्ष्वाकुं पितरं दृष्ट्वा यज्ञकार्यायपार्थिव!। कारयामास सम्भारं यथोद्दिष्टंमहात्मभिः।२१
भृगुमङ्गिरसञ्चैव वामदेवञ्च गौतमम्। वसिष्ठञ्च पुलस्त्यञ्च ऋचीकं पुलहं क्रतुम्।२२
मुनीनामन्त्रयामास सर्वज्ञान्वेदपारगान्। यज्ञविद्याप्रवीणांश्च तापसान्वेदवित्तमान्।२३
राजा सम्भृतसम्भारः सम्पूज्य गुरुमात्मनः।
वसिष्ठं प्राह धर्मज्ञो विनयेन समन्वितः ।।२४।।

यजेयंमुनिशार्दूल ! याजयस्वकृपानिधे ! । गुरुस्त्वंसर्ववेत्ताऽसिकार्यं मे कुरु साम्प्रतम् ।२५
यज्ञोपकरणं सर्वं समानीतं सुसंस्कृतम् । पञ्चवर्षसहस्रन्तु दीक्षां कर्तुं मतिश्च मे ।२६
यस्मिन्यज्ञेसमाराध्यादेवीश्रीजगदम्बिका । तत्प्रीत्यर्थमहं यज्ञं करोमि विधिपूर्वकम् ।२७
तच्छ्रुत्वाऽसौ निमेर्वाक्यं वसिष्ठः प्राह भूपतिम् । इन्द्रेणाऽहं वृतः पूर्वं यज्ञार्थं नृपसत्तम ! ।२८
पराशक्तिमखं कर्तुमुद्युक्तः पाकशासनः । स दीक्षां गमितो देवः पञ्चवर्षशतात्मिकाम् ।२९
तस्मात्त्वमन्तरं तावत्प्रतिपालय पार्थिव । इन्द्रयज्ञेसमाप्तेऽत्र कृत्वा कार्यं दिवस्पतेः ।३०
आगमिष्याम्यहं राजंस्तावत्त्वं प्रतिपालय ।

राजोवाच

मया निमन्त्रिताश्चाऽन्ये मुनयो यज्ञकारणात् ।।३१।।
सम्भाराःसम्भृताःसर्वेपालयामिकथंगुरो ! । इक्ष्वाकूणां कुले ब्रह्मन्गुरुस्त्वंवेदवित्तमः ।३२
कथं त्यक्त्वाऽद्य मे कार्यमुद्यतोगन्तुमाशु वै । न ते युक्तं द्विजश्रेष्ठ यदुत्सृज्यमखंमम ।३३
गन्ताऽसिधनलोभेनलोभाकुलितऽचेतनः । निवारितोऽपिराज्ञा स जगामेन्द्रमखंगुरुः ।३४
राजाऽपि विमना भूत्वागौतमंप्रत्यपूजयत् । इयाज हिमवत्पार्श्वे सागरस्यसमीपतः ।३५
दक्षिणा बहुला दत्ता विप्रेभ्य मखकर्मणि । निमिना पञ्चसाहस्री दीक्षातत्रकृतानृप ।३६
ऋत्विजःपूजिताःकामं धनैर्गोभिर्मुदायुताः । शक्र यज्ञे समाप्ते तु पञ्चवर्षशतात्मके ।३७
आजगाम वसिष्ठस्तु राज्ञः सत्रदिदृक्षया । आगत्य संस्थितस्तत्र दर्शनार्थं नृपस्यच ।३८
तदा राजा प्रसुप्तस्तु निद्रयाऽपहृतोभृशम् । नाऽसौ प्रबोधितोभृत्यैर्नागतस्तुमुनिंनृप ।३९
वसिष्ठस्य ततो मन्युः प्रादुर्भूतोऽवमानतः । अदर्शनान्निमेस्तत्र चुकोप मुनिसत्तमः ।४०
शापञ्च दत्तवांस्तस्मै राज्ञे मन्युवशङ्गतः ।
यस्मात्त्वं मां गुरुं त्यक्त्वा कृत्वाऽन्यं गुरुमात्मनः ।।४१।।
दीक्षितोऽसि बलान्मन्द ! मामवज्ञाय पार्थिव ! ।
वारितोऽपि मया तस्माद्विदेहस्त्वं भविष्यसि ।।४२।।
पतत्विदं शरीरन्ते विदेहो भव भूपते ! ।

व्यास उवाच

इति तद्व्याहृतं श्रुत्वा राज्ञस्तु परिचारकाः ।।४३।।
सद्यः प्रबोधयामासुर्मुनिमाहुः प्रकोपितम् । कुपितं तं समागत्य राजा विगतकल्मषः ।४४
उवाच वचनंश्लक्ष्णंहेतुगर्भञ्चयुक्तिमत् । मम दोषो न धर्मज्ञ ! गतस्त्वंतृष्णयाऽऽकुलः ।४५
हित्वा मां यजमानम्वै प्रार्थितोऽसि मया भृशम् ।
न लज्जसे द्विजश्रेष्ठ ! कृत्वा कर्म जुगुप्सितम् ।।४६।।
सन्तोषे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! जानन्धर्मस्यनिश्चयम् । पुत्रोऽसिब्रह्मणःसाक्षाद्वेदवेदाङ्गवित्तमः ।४७
न वेत्सि विप्रधर्मस्य गतिं सूक्ष्मां दुरत्ययाम् ।
आत्मदोषं मयि ज्ञात्वा मृषा मां शप्तुमिच्छसि ।।४८।।
त्याज्यस्तुसुजनैःक्रोधश्चण्डालादधिको यतः । वृथाक्रोधपरीतेनमयिशापःप्रपातितः ।४९
तवाऽपि च पतत्वद्य देहोऽयं क्रोधसंयुतः । एवंशप्तोमुनी राज्ञा राजा च मुनिनातथा ।५०
परस्परम्प्राप्य शापं दुःखितौतौ बभूवतुः । वसिष्ठस्त्वतिचिन्तार्त्तोब्रह्माणंशरणंगतः ।५१
निवेदयामास तथा शापं भूपकृतम्महत् ।

वसिष्ठ उवाच

राज्ञा शप्तोऽस्मि देहोऽयं पततवद्य तवेति वै ।।५२।।

किं करोमि पितः! प्राप्तं कष्टं कायप्रपातजम् ।
अन्यदेहसमुत्पत्तौजनकम्वदसाम्प्रतम् ॥५३॥
तथा मे देहसंयोगः पूर्ववत्समपद्यताम्।यादृशं ज्ञानमेतस्मिन्देहे तत्राऽस्तुतत्पितः।५४
समर्थोऽसि महाराज प्रसादं कर्तुमर्हसि।वसिष्ठस्य वचः श्रुत्वाब्रह्माप्रोवाचतंसुतम्।५५
मित्रावरुणयोस्तेजस्त्वं प्रविश्यस्थिरोभव।तस्मादयोनिजःकालेभवितात्वंनसंशयः।५६
पुनर्देहं समासाद्य धर्मयुक्तो भविष्यसि।भूतात्मा वेदवित्कामं सर्वज्ञः सर्वपूजितः।५७
एवमुक्तस्तदा पित्रा प्रययौ वरुणालयम्।कृत्वाप्रदक्षिणम्प्रीत्याप्रणम्यचपितामहम्।५८
विवेश स तयोर्देहे मित्रावरुणयोःकिल।जीवांशेनवसिष्ठोऽथ त्यक्त्वादेहमनुत्तमम्।५९
कदाचित्तूर्वशी राजन्नांगता वरुणालयम्।यदृच्छया वरारोहा सखीगणसमावृता।६०
दृष्ट्वा तामप्सरांदिव्यांरूपयौवनसंयुताम्।जातौ कामातुरौ देवौ तदा तामूचतुर्नृप।६१
विवशौचारुसर्वाङ्गीं देवकन्यांमनोरमाम्।आवान्त्वमनवद्याङ्गि वरयस्व समाकुलौ।६२
विहरस्व यथाकामं स्थानेऽस्मिन्वरवर्णिनि! ।
तथोक्ता सा ततो देवी ताभ्यां तत्र स्थिता वशा ॥६३॥
कृत्वा भावं स्थिरन्देवीमित्रावरुणयोर्गृहे।सागृहीत्वातयोर्भावंसंस्थिताचारुदर्शना।६४
तयोस्तु पतितम्वीर्यं कुम्भेदैवादनावृते।तस्माज्जातौ मुनीराजन्द्वावेवाऽतिमनोहरौ।६५
अगस्तिः प्रथमस्तत्र वसिष्ठश्चाऽपरस्तथा।मित्रावरुणयोर्वीर्यात्तापसावृषिसत्तमौ।६६
प्रथमस्तु वनम्प्राप्तो बाल एव तहातपाः।इक्ष्वाकुस्तुवसिष्ठन्तंबालं वव्रेपुरोहितम्।६७
वंशस्याऽस्यसुखार्थन्तेपालयामासपार्थिव ।विशेषेण मुनिं ज्ञात्वाप्रीत्यायुक्तोबभूवह।६८
एतत्ते सर्वमाख्यातं वसिष्ठस्य च कारणम्।शापादेहान्तरप्राप्तिर्मित्रावरुणयोःकुले।६९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे वसिष्ठस्यमैत्रावरुणिरितिनामवर्णनंनाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥

* पञ्चदशोऽध्यायः *

निमिराज्ञोदेहान्तरगमनपूर्वकंदेवीवरदानं तस्य नेत्रेषुवासः
पुनर्जनमेजयसन्देहनिवारणाय ज्ञानोपदेशः

जनमेजय उवाच

देहप्राप्तिर्वसिष्ठस्य कथिता भवता किल।निमिः कथं पुनर्देहम्प्राप्तवानिति मे वद।१

व्यास उवाच

वसिष्ठेन च सम्प्राप्तः पुनर्देहोनराधिप।निमिना न तथा प्राप्तो देहः शापादनन्तरम्।२
यदा शप्तो वसिष्ठेन तदा ते ब्राह्मणाःक्रतौ।ऋत्विजो येवृताराज्ञातेसर्वेसमचिन्तयन्।३
किंकर्तव्यमहोऽस्माभिःशापदग्धोमहीपतिः।अस्मिन्यज्ञे त्वसम्पूर्णे दीक्षायुक्तश्च धार्मिकः।४
किं कर्तव्यं कार्यमेतद्विपरीतमभूत्किल।अवश्यंभाविभावत्वादशक्ताः स्म निवारणे।५
मन्त्रैर्बहुविधैर्देहं तदा तस्य महात्मनः।रक्षितं धारयामासुः किंचिच्छ्वसनसंयुतम्।६
गन्धैर्माल्यैश्च विविधैः पूज्यमानंमुहुर्मुहुः।मन्त्रशक्त्याप्रतिष्टभ्यनिर्विकारं सुपूजितम्।७
समाप्ते च क्रतौतत्रदेवाःसर्वेसमागताः।ऋत्विग्भिस्तुस्तुताःसर्वेसुप्रीताश्चाभवन्नृप।८
विज्ञप्ता मुनिभिः स्तोत्रैर्निर्विण्णात्मानमब्रुवन् ।
प्रसन्नाःस्म महीपाल! वरंवरयसुव्रत ॥९॥

यज्ञेनाऽनेन राजर्षे वरं जन्म विधीयते। देवदेहं नृदेहम्वायत्ते मनसिवाञ्छितम्।१०
दृप्तः कामं पुरोधास्ते मृत्युलोके यथासुखम्। एवमुक्तो निमेरात्मा संतुष्टस्तानुवाचह।११
न देहे मम वाञ्छाऽस्ति सर्वदैव विनश्वरे। वासोमेसर्वसत्त्वानांदृष्टावस्तुसुरोत्तमाः।१२
नेत्रेषु सर्वभूतानां वायुभूतश्चराम्यहम्। एवमुक्ताः सुरास्तत्र निमेरात्मानमब्रुवन्।१३

प्रार्थय त्वं महाराज! देवीं सर्वेश्वरीं शिवाम्।
मखेनानेनसंतुष्टासाऽतेभीष्टंविधास्यति ॥१४॥
स देवैरेवमुक्तस्तु प्रार्थयामास देवताम्।
स्तोत्रैर्नानाविधैर्दिव्यैर्भक्त्या गद्गदयागिरा ॥१५॥

प्रसन्ना सा तदा देवी प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ। कोटिसूर्यप्रतीकाशं रूपं लावण्यदीपितम्।१६
दृष्ट्वा प्रमुदिताः सर्वे कृतकृत्याश्च चेतसि। प्रसन्नायां देवतायां राजा वव्रे वरं नृप!।१७
ज्ञानं तद्विमलं देहि येन मोक्षो भवेदपि। नेत्रेषु सर्वभूतानां निवासो मे भवेदिति।१८
ततः प्रसन्नादेवेशी प्रोवाच जगदम्बिका। ज्ञानं ते विमलं भूयात्प्रारब्धस्याऽवशेषतः।१९
नेत्रेषु सर्वभूतानां निवासोऽपिभविष्यति। निमिषंयान्तिचक्षूंषित्वत्कृतेनैवदेहिनाम्।२०

तव वासात्सनिमिषा मानवाः पशवस्तथा।
पतङ्गाश्च भविष्यन्ति पुनश्चाऽनिमिषाः सुराः ॥२१॥

इतिदत्त्वावरं तस्मै तदाश्रीवरदेवता। आमन्त्र्यचमुनीन्सर्वां स्तत्रैवांतर्हिताऽभवत्।२२
अन्तर्हितायांदेव्यां तु मुनयस्तत्र संस्थिताः। विचिंत्यविधिवत्सर्वे निमेर्देहंसमाहरन्।२३
अरणिं तत्र संस्थाप्य ममन्थुर्मन्त्रवत्तदा। मन्त्रहोमैर्महात्मानः पुत्रहेतोर्निमेरथ।२४
अरण्यां मथ्यमानायां पुत्रः प्रादुरभूत्तदा। सर्वलक्षणसम्पन्नः साक्षान्निमिरिवाऽपरः।२५

अरण्या मथनाज्जातस्तस्मान्मिथिरिति स्मृतिः।
येनाऽयं जनकाज्जातस्तेनाऽसौ जनकोऽभवत् ॥२६॥
विदेहस्तु निमिर्जातो यस्मात्तस्मात्तदन्वये।
समुद्भूतास्तु राजानो विदेहा इति कीर्तिताः ॥२७॥

एवं निमिसुतो राजा प्रथितो जनकोऽभवत्। नगरी निर्मिता तेन गङ्गातीरे मनोहरा।२८
मिथिलेति सुविख्याता गोपुराट्टालसंयुता। धनधन्यसमायुक्ता हट्टशालाविराजिता।२९
वंशेऽस्मिन्येऽपि राजानस्ते सर्वे जनकास्तथा। विख्याता ज्ञानिनः सर्वे विदेहाः परिकीर्तिताः।३०
एतत्ते कथितं राजन्निमेराख्यानमुत्तमम्। शापाद्यस्य विदेहत्वं विस्तरादुदितं मया।३१

राजोवाच

भगवन्भवता प्रोक्तं निमिशापस्य कारणम्। श्रुत्वा सन्देहमापन्नंमनोमेऽतीवचञ्चलम्।३२
वसिष्ठो ब्राह्मणः श्रेष्ठो राज्ञश्चैव पुरोहितः। पुत्रः पङ्कजयोनेस्तु राज्ञा शप्तः कथंमुनिः।३३
गुरुं च ब्राह्मणं ज्ञात्वानिमिना न कृता क्षमा। यज्ञकर्म शुभं कृत्वा कथं क्रोधमुपागतः।३४
ज्ञात्वा धर्मस्यविज्ञानंकथमिक्ष्वाकुसम्भवः। क्रोधस्यवशमापन्नःशप्तवान्ब्राह्मणंगुरुम्।३५

व्यास उवाच

क्षमाऽति दुर्लभा राजन्प्राणिभिरजितात्मभिः।
क्षमावान्दुर्लभो लोके सुसमर्थो विशेषतः ॥३६॥

सर्वसङ्गपरित्यागी मुनिर्भवतु तापसः। निद्राक्षुधोर्विजेता च योगाभ्यासे सुनिष्ठितः।३७
कामः क्रोधस्तथा लोभो ह्यहङ्कारश्चतुर्थकः। दुर्ज्ञेया देहमध्यस्था रिपवस्तेनसर्वथा।३८

न भूतपूर्वः संसारे न चैववर्ततेऽधुना। भविता न पुमान्कश्चिद्यो जयेत रिपूनिमान्।३९
न स्वर्गे न च भूलोके ब्रह्मलोके हरेःपदे। कैलासे नेदृशः कश्चिद्यो जयेत रिपूनिमान्।४०
मुनयो ब्रह्मपुत्राश्च तथाऽन्येतापसोत्तमाः। तेऽपिगुणत्रयाविद्धाः किं पुनर्मानवाभुवि।४१

कपिलः साङ्ख्यवेत्ता च योगाभ्यासरतः शुचिः।
तेनाऽपि दैवयोगाद्धि प्रदग्धाः सगरात्मजाः।।४२।।

तस्माद्राजन्नहङ्कारात्सञ्जातं भुवनत्रयम्। कार्यकारणभावात्तु तद्वियुक्तं कथम्भवेत्।४३
ब्रह्मा गुणत्रयाविष्टो विष्णुश्चैवाऽथशङ्करः। प्रभवन्ति शरीरेषु तेषाम्भावाःपृथक्पृथक्।४४
मानवानाञ्चकावार्तासत्त्वैकान्तव्यवस्थितौ। गुणानांसङ्करोराजन्सर्वत्र समवस्थितः।४५

कदाचित्सत्त्ववृद्धिः स्यात्कदाचिद्रजसः किल।
कदाचित्तमसो वृद्धिः समभावः कदाचन।।४६।।

निगुणः परमात्माऽसौ निर्लेपः परमोऽव्ययः। अलक्ष्यःसर्वतत्त्वानामप्रमेयःसनातनः।४७
तथैव परमाशक्तिर्निर्गुणा ब्रह्मसंस्थिता। दुर्ज्ञेयाचाल्पमतिभिः सर्वभूतव्यवस्थितिः।४८
परात्मनस्तथा शक्तेस्तयोरैक्यं सदैवहि। अभिन्नं तद्वपुर्ज्ञात्वा मुच्यते सर्वदोषतः।४९

तज्ज्ञानादेव मोक्षः स्यादिति वेदान्तडिण्डिमः।
यो वेद स विमुक्तोऽस्मिन्संसारे त्रिगुणात्मके।।५०।।
ज्ञानं तु द्विविधं प्रोक्तं शाब्दिकं प्रथमंस्मृतम्।
वेदशास्त्रार्थविज्ञानात्तद्भवेद्बुद्धियोगतः ।
विकल्पास्तत्र बहवो भवन्ति मतिकल्पिताः।।५१।।

"कुतर्ककल्पिताः केचित्सुतर्ककल्पिताःपरे। वितर्कैर्विभ्रमोत्पत्तिर्विभ्रमाद्बुद्धिभ्रंशता।५२
बुद्धिभ्रंशाज्ज्ञाननाशः प्राणिनांपरिकीर्तितः।" अनुभवाख्यंद्वितीयंतुज्ञानंतद्दुर्लभंनृप।५३
तत्तदा प्राप्यतेतस्यवेत्तुः सङ्गोयदा भवेत्। शब्दज्ञानान्न कार्यस्य सिद्धिर्भवतिभारत।५४
तस्मान्नानुभवज्ञानं संभवत्यतिमानुषम्। अन्तर्गतं तमश्छेत्तंशाब्दबोधो हि न क्षमः।५५
यथा न नश्यति तमः कृतयादीपवार्तया। तत्कर्म यन्न बन्धाय साविद्या या विमुक्तये।५६
आयासायाऽपरंकर्मविद्याऽन्याशिल्पनैपुणम्। शीलंपरहितत्वंचकोपाभावःक्षमाधृतिः।५७

सन्तोषश्चेति विद्यायाः परिपाकोज्ज्वलं फलम्।
विद्यया तपसा वाऽपि योगाभ्यासेन भूपते!।।५८।।

विना कामादिशत्रूणां नैव नाशः कदाचन। "मनस्तु चञ्चलं राजन्स्वभावादतिदुर्ग्रहम्।५९
तद्वशःसर्वथाप्राणीत्रिविधोभुवनत्रयम्"। कामक्रोधादयोंभावाश्चित्तजाःपरिकीर्तिताः।६०
ते तदा न भवन्त्येव यदावै निर्जितं मनः। तस्मात्तु निमिना राजन्नक्षमाविहितामुनौ।६१
यथा ययातिना पूर्वं कृता शुक्रे कृतागसि। भृगुपुत्रेण शप्तोऽपि ययातिर्नृपसत्तमः।६२

न शशाप मुनिं क्रोधाज्जरां राजा गृहीतवान्।
कश्चित्सौम्यो भवेत्कश्चित्क्रूरो भवति पार्थिव!।।६३।।

स्वभावभेदान्नृपते कस्यदोषोऽत्र कल्प्यते। हैहयाभार्गवान्पूर्वं धनलोभात्पुरोहितान्।६४
ब्राह्मणान्मूलतःसर्वांश्चिच्छिदुःक्रोधमूर्च्छिताः। पातकंपृष्ठतःकृत्वाब्रह्महत्यासमुद्भवम्।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे देवीमहिम्निनानाभावानांवर्णनंनामपञ्चदशोऽध्यायः।।१५।।

--०--

* षोडशोऽध्यायः *

हैहयक्षत्रियाणामाख्यानवर्णनं भृगूणांतैःसहविरोधवर्णनञ्च

जनमेजय उवाच

कुले कस्य समुत्पन्नाः क्षत्रिया हैहयाश्च ये। ब्रह्महत्यामनादृत्य निजघ्नुर्भार्गवांश्चये।१
वैरस्य कारणं तेषां किं मे ब्रूहि पितामह। निमित्तेन विनाक्रोधंकथंकुर्वन्तिसत्तमाः।२
वैरं पुरोहितैः सार्धं कस्मात्तेषामजायत। नाल्पहेतोर्हि तद्वैरं क्षत्रियाणां भविष्यति।३
अन्यथा ब्राह्मणान्पूज्यान्कथं जघ्नुरनागसः। बाहुजाबलवन्तोऽपिपापभीताःकथंन ते।४
स्वल्पेऽपराधे को हन्याद्वाडवान्क्षत्रियर्षभः। सन्देहो मे मुनिश्रेष्ठकारणं वक्तुमर्हसि।५

सूत उवाच

इति पृष्टस्तदा तेन राज्ञा सत्यवतीसुतः। उवाच परमप्रीतः कथां संस्मृत्य चेतसा।६

व्यास उवाच

श्रृणु पारिक्षिते! वार्तां क्षत्रियाणां पुरातनीम्।
आश्चर्यकारिणीं सम्यग्विदितां च पुरा मया।।७।।

कार्तवीर्येति नाम्नाऽभूद्धैहयः पृथिवीपतिः। सहस्रबाहुर्बलवानर्जुनो धर्मतत्परः।८
दत्तात्रेयस्यशिष्योऽभूदवतारोहरेरिव। सिद्धःसर्वार्थदःशाक्तोभृगूणां याज्यएव सः।९
यज्वापरमधर्मिष्ठःसदादानपरायणः। ददौ वित्तं भृगुभ्योऽसौकृत्वा यज्ञाननेकशः।१०
धनिनस्तेद्विजाजाता भृगवोनृपदानतः। हयरत्नसमृद्ध्याऽऽढ्यासञ्जाताःप्रथिताभुवि।११
स्वर्यति नृपशार्दूले कार्तवीर्यार्जुनेपुनः। हैहया निर्धना जाताः कालेन महता नृप।१२
धनकार्यं समुत्पन्नं हैहयानांकदाचन। याचिष्णवोऽभिजग्मुस्तान्भृगूंस्तेहैहया नृप।१३
विनयं क्षत्रियाः कृत्वाऽप्ययाचत धनम्बहु। न ददुस्तेऽतिलोभार्ता नाऽस्ति नाऽस्तीति वादिनः।१४

भूमौ च निदधुः केचिद् भृगवो धनमुत्तमम्।
ददुःकेचिद्द्विजातिभ्यो ज्ञात्वा क्षत्रियतोभयम्।।१५।।
कृत्वा स्थानान्तरे द्रव्यं ब्राह्मणा भयविह्वलाः।
त्यक्त्वाऽऽश्रमान्ययुः सर्वे भृगवस्तृष्णयाऽन्विताः।।१६।।

याज्यांश्चदुःखितान्दृष्टानददुर्लोभमोहिताः। पलायित्वागताःसर्वेगिरिदुर्गानुपाश्रिताः।१७
ततस्ते हैहयास्तातदुःखिताःकार्यगौरवात्। भृगूणामाश्रमाञ्जग्मुर्द्रव्यार्थंक्षत्रियर्षभाः।१८
भृगूंस्तुनिर्गतान्वीक्ष्य शून्यांस्त्यक्तागृहानथ। चखनुर्भूतलंतत्र द्रव्यार्थंहैययाभृशम्।१९
खनताऽधिगतं वित्तं केनचिद् भृगुवेश्मनि। ददृशुः क्षत्रियाः सर्वेतद्वित्तंश्रमकर्शिताः।२०
यत्र तत्र समुत्पन्नं भूरि द्रव्यं महीतलात्। तदा तेपार्श्वभागस्थब्राह्मणानांगृहाण्यपि।२१
निर्भिद्य हैहया द्रव्यं ददृशुर्धनलिप्सया। ब्राह्मणाश्चुक्रुशुः सर्वे भीताश्च शरणं गताः।२२
अतिचिन्वत्सु विप्राणां भवनान्निःसृतं बहु। निजघ्नुस्ताञ्छरैः कोपाद्वाडवाञ्छरणागतान्।२३
ययुस्तेगिरिदुर्गांश्च यत्र वै भृगवःस्थिताः। आगर्भादनुकृन्तंतश्चेरुश्चैवमहीमिमाम्।२४
प्राप्तान्प्राप्तान्भृगून्सर्वान्निजघ्नुर्निशितैः शरैः। आबालवृद्धानपरानवमन्य च पातकम्।२५
एवमुत्पाट्यमानेषु भार्गवेषु यतस्ततः। हन्युर्गर्भांश्च नारीणांगृहीत्वा हैहया भृशम्।२६
रुरुदुस्ताः स्त्रियः कामंकुरर्य इव दुःखिताः। गर्भाश्चकृन्तितायासांक्षत्रियैःपापनिश्चयैः।२७

अन्येऽप्याहुश्च तान्दृप्तान्मुनयस्तीर्थवासिनः। मुञ्चन्तुक्षत्रियः क्रोधंब्राह्मणेषुभयावहम्।२८
अयुक्तमेतदारब्धं भवद्भिः कर्म गर्हितम्। यद्गर्भान्भृगुपत्नीनां निहन्युः क्षत्रियर्षभाः।२९
अत्युग्रपुण्यपापानामिहैवफलमाप्नुयात् । तस्माज्जुगुप्सितंकर्मत्यक्तव्यंभूतिमिच्छता।३०
तानाहुर्हैहयाः क्रुद्धा मुनीनथ दयापरान्। भवन्तः साधवः सर्वे नार्थज्ञाः पापकर्मणाम्।३१
एभिर्हृतं धनं सर्वं पूर्वजानां महात्मनाम्। वञ्चयित्वा छलाभिज्ञैर्मार्गे पाटच्चरैरिव।३२
एते प्रतारका दंभास्तादृशा बकवृत्तयः। उत्पन्ने च महाकार्ये प्रार्थिता विनयेन ते।३३

न ददुः प्रार्थितं विप्राःपादवृद्ध्याऽपि याचिताः ।
नाऽस्तीति वादिनः स्तब्धाः दुःखितान्वीक्ष्य याज्यकान् ।।३४।।

धनं प्राप्तं कार्तवीर्याद्रक्षितं केन हेतुना। न कृताः क्रतवः किं तैर्दानं चार्थिषु भूरिशः।३५
न संचितव्यं विप्रैस्तुधनंकाऽपि कदाचन। यष्टव्यं विधिवद्देयंभोक्तव्यंचयथासुखम्।३६
द्रव्ये चौरभयं प्रोक्तं तथा राजभयं द्विजाः। वह्नेर्भयं महाघोरं तथाधूर्तभयं महत्।३७
येन केनाऽप्युपायेन धनं त्यजति रक्षकम्। अथवाऽसौ मृतो याति द्रव्यं त्यक्त्वा ह्यसद्गतिम्।३८

पादवृद्ध्या तथाऽस्माभिः प्रार्थितं विनयान्वितैः ।
तथाऽपि लोभसन्दिग्धैर्न दत्तं नः पुरोहितैः ।।३९।।

दानं भोगस्तथानाशोधनस्यगतिरीदृशी। दानभोगौ कृतीनाञ्च नाशःपापात्मनांकिल।४०

न दाता न च यो भोक्ता कृपणो गुप्तितत्परः ।
राज्ञाऽसौ सर्वथा दण्ड्यो वञ्चको दुःखभाङ् नरः ।।४१।।

माद्वयं गुरूनेतान्वञ्चकान्ब्राह्मणाधमान्। हन्तुंसमुद्यताःसर्वे न क्रोधव्यंमहात्मभिः।४२

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा हेतुमद्वाक्यं तानाश्वास्य मुनीनथ। विचेरुश्चविचिन्वानाभृगुदाराननेकशः ।४३
भयार्ता भृगुपत्न्यस्तु हिमवन्तं धराधरम्। प्रपेदिरे रुदन्त्यश्चवेपमानाः कृशा भृशम्।४४
एवं ते हैहयैर्विप्राः पीडिता धनकामुकैः। निहताश्च यथाकामं संरब्धैः पापकर्मभिः।४५
लोभ एव मनुष्याणां देहसंस्थो महारिपुः। सर्व दुःखाकरःप्रोक्तोदुःखदःप्राणनाशकः।४६

सर्वपापस्य मूलं हि सर्वदा तृष्णयाऽन्वितः ।
विरोधकृत्त्रिवर्णानां सर्वार्तेः कारणं तथा ।।४७।।

लोभात्त्यजन्ति धर्मं वै कुलधर्म तथैव हि। मातरं भ्रातरं हन्ति पितरं बान्धवं तथा।४८
गुरुं मित्रं तथा भार्यां पुत्रं च भगिनीं तथा। लोभाविष्टोनकिंकुर्यादकृत्यंपापमोहितः।४९
क्रोधात्कामादहङ्काराल्लोभ एव महारिपुः। प्राणांस्त्यजति लोभेन किं पुनः स्यादनावृतम्।५०
पूर्वजास्तेमहाराज! धर्मज्ञाःसत्पथेस्थिताः। पाण्डवाःकौरवाश्चैवलोभेननिधनङ्गताः।५१
यत्र भीष्मश्च द्रोणश्च कृपः कर्णश्च वाह्लिकः। भीमसेनो धर्मपुत्रस्तथैवाऽर्जुनकेशवौ।५२
तथापि युद्धमत्युग्रं कृतं तैश्चपरस्परम्। कुटुम्बकदनं भूरि कृतं लोभातुरैरिह।५३

हतो द्रोणो हतो भीष्मस्तथैव पाण्डवात्मजाः ।
भ्रातरः पितरः पुत्राः सर्वे वै निहता रणे ।।५४।।

तस्माल्लोभाभिभूतस्तु किं न कुर्यान्नरःकिल। हैहयैर्निहताः सर्वे भृगवःपापबुद्धिभिः।५५

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायांषष्ठस्कन्धे हैहयैर्भृगूणां धनाहरणेनवधवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः।।१६।।

* सप्तदशोऽध्यायः *

भृगुपत्नीनांदेवीसमाराधनेनेष्टसिद्धिवर्णनम्

जनमेजय उवाच

कथं ताश्च स्त्रियः सर्वा भृगूणां दुःखसागरात् ।
मुक्तो वंशः पुनस्तेषां ब्राह्मणानां स्थिरोऽभवत् ।।१।।
हैहयैः किं कृतं कार्यं हत्वा तान्ब्राह्मणानपि। क्षत्रियैर्लोभसंयुक्तैःपापाचारैर्वदस्वतत्।२
नतृप्तिरस्ति मे ब्रह्मन्पिबतस्ते तथाऽमृतम्।पावनं सुखदं नृणांपरलोकेफलप्रदम्।३

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि कथां पापप्रणाशिनीम् ।
यथा स्त्रियस्तु ता मुक्ता दुःखात्तस्माद्दुरत्ययात् ।।४।।
भृगुपत्न्यो यदा राजन्हिमवन्तंगिरिंगताः। भयत्रस्तानिमग्नाशाहैहयैःपीडिताभृशम्।५
गौरीं तत्र तु संस्थाप्य मृन्मयीं सरितस्तटे।उपोषणपराश्चक्रुर्निश्चयं मरणं प्रति।६
स्वप्ने गत्वा तदा देवी प्राह ता प्रमदोत्तमाः ।
युष्मासु मध्ये कस्याश्चिद्भविता चोरुजः पुमान् ।।७।।
मदंशशक्तिसम्भिन्नः स वः कार्यं विधास्यति ।
इत्यादिश्य पराम्बा सा पश्चादन्तर्हिताऽभवत् ।।८।।
जागृतास्तु ततः सर्वामुदमापुर्वराङ्गनाः।काचित्तासांभयोद्विग्नाकामिनीचतुराभृशम्।९
दधार चोरुणैकेन गर्भं सा कुलवृद्धये।पलायनपरा दृष्टा क्षत्रियैर्ब्राह्मणी यदा।१०
विह्वला तेजसायुक्ता तदा ते दुद्रुवुर्भृशम्।गृह्यतां वध्यतांनारीसगर्भायातिसत्वरा।११
इतिब्रुवन्तःसम्प्राप्ताः कामिनीखड्गपाणयः।साभयार्तातुतान्दृष्ट्वा रुरोदसमुपागतान्।१२
गर्भस्य रक्षणार्थंसा चुक्रोशाऽतिभयातुरा।रुदतींमातरं श्रुत्वादीनांत्राणविवर्जिताम्।१३
निराधारां क्रन्दमानां क्षत्त्रियैर्भृशतापिताम्।गृहीतामिव सिंहेन सगर्भां हरिणीं तथा।१४
साश्रुनेत्रां वेपमानां सङ्क्रुध्यबालकस्तदा।भित्त्वोरुंनिर्जगामाऽऽशुगर्भःसूर्यइवापरः।१५
मुष्णन्दृष्टीःक्षत्त्रियैर्भृशतापिताम् ।गृहीतामिव सिंहेन सगर्भां हरिणीं तथा।१४
साश्रुनेत्रां वेपमानां सङ्क्रुध्यबालकस्तदा।भित्त्वोरुंनिर्जगामाऽऽशुगर्भःसूर्यश्वापरः।१५
मुष्णन्दृष्टीःक्षत्त्रियाणां तेजसा बालकः शुभः ।
दर्शनाद्बालकस्याऽऽशुसर्वे जाता विलोचनाः ।।१६।।
बभ्रमुर्गिरिदुर्गेषु जन्मान्धा इव क्षत्त्रियाः ।
चिन्तितं मनसा सर्वैः किमेतदिति साम्प्रतम् ।।१७।।
सर्वेचक्षुर्विहीना यज्जाताःस्मबालदर्शनात्।ब्राह्मण्यास्तुप्रभावोऽयंसतीव्रतबलंमहत्।१८
क्षणाद्वाऽमोघसङ्कल्पाः किं करिष्यन्ति दुःखितः ।
इति सञ्चिन्त्य मनसा नेत्रहीना निराश्रयाः ।।१९।।
ब्राह्मणीं शरणं जग्मुर्हैहया गतचेतसः।प्रणेमुस्तां भयत्रस्तां कृताञ्जलिपुटाश्च ते।२०
ऊचुश्चैनां भयोद्विग्नांदृष्ट्यर्थं क्षत्रियर्षभाः।प्रसीद सुभगे मातः सेवकास्ते वयंकिल।२१
कृतापराधा रम्भोरु! क्षत्रियाःपापबुद्धयः।दर्शनात्तव तन्वङ्गि! जाताः सर्वेविलोचनाः।२२
मुखं ते नैव पश्यामो जन्मान्धा इव भामिनि! ।
अद्भुतं ते तपो वीर्यं किं कुर्मः पापकारिणः ।।२३।।
शरणं ते प्रपन्नाः स्मो देहिचक्षूंषि मानदे!।अन्धत्वंमरणादुग्रं कृपां कर्तुं त्वमर्हसि।२४

पुनर्दृष्टिप्रदानेन सेवकान्क्षत्रियान्कुरु। उपरम्य च गच्छेम सहिताः पापकर्मणः।२५
अतःपरं न कर्तव्यमीदृशं कर्म कर्हिचित्। भार्गवाणांतु सर्वेषां सेवकाःस्मोवयंकिल।२६
अज्ञानाद्यत्कृतं पापं क्षन्तव्यं तत्त्वयाऽधुना।
वैरं नाऽतः परं क्वाऽपि भृगुभिः क्षत्त्रियैः सह ।।२७।।
कर्तव्यंशपथैःसम्यग्वर्तितव्यंतुहैहयैः ।सुपुत्राभव सुश्रोणि! प्रणताःस्मो वयञ्चच ते।२८
प्रसादं कुरु कल्याणि! न द्विष्यामः(?) कदाचन।

व्यास उवाच

इति तेषां वचः श्रुत्वा ब्राह्मणी विस्मयान्विता ।।२६।।
तानाह प्रणतान्दुःस्थानाश्वास्य गतलोचनान्।
गृहीता न मयादृष्टिर्युष्माकं क्षत्रियाः किल ।।३०।।
नाऽहंरुषाऽन्वितासत्यंकारणंश्रृणुताऽद्य यत्। अयं च भार्गवोनूनमूरुजःकुपितोऽद्यवः।३१
चक्षूंषि तेन युष्माकं स्तम्भितानि रुषावता।
स्वबन्धून्निहताञ्ज्ञात्वा गर्भस्थानपि क्षत्त्रियैः ।।३२।।
अनागसो धर्मपरांस्तापसान्धनकाम्यया। गर्भानपि यदा यूयं भृगूनघ्नंस्तु पुत्रकाः।३३
तदाऽयमूरुणा गर्भो मयावर्षशतं धृतः। षडङ्गश्चाखिलो वेदो गृहीतोऽनेन चाऽञ्जसा।३४
गर्भस्थेनाऽपि बालेनभृगुवंशविवृद्धये। सोऽपि पितृवधान्नूनं क्रोधेद्धोहन्तुमिच्छति।३५
भगवत्याःप्रसादेन जातोऽयंममबालकः। तेजसा यस्य दिव्येन चक्षूंषि मुषितानि च।३६
तस्मादौर्वं सुतं मेऽद्य याचध्वं विनयान्विताः।
प्रणिपातेन तुष्टोऽसौ दृष्टिं वः प्रतिमोक्ष्यति ।।३७।।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्या हैहयास्तुष्टुवुश्च तम्। प्रणेमुर्विनयोपेता ऊरुजं मुनिसत्तमम्।३८
स सन्तुष्टोबभूवाऽथतानुवाचविचक्षुषः। गच्छध्वं स्वगृहान्भूपाममाख्यानकृतं वचः।३६
अवश्यम्भाविभावास्तेभवन्तिदेवनिर्मिताः। नाऽत्र शोकस्तुकर्तव्यःपुरुषेणविजानता।४०
पूर्ववदृषयः सर्वे प्राप्नुवन्तु यथासुखम्। व्रजन्तु विगतक्रोधा भवनानि यथासुखम्।४१
इति तेन समादिष्टा हैहयाः प्राप्तलोचनाः।
औैर्वमामन्त्र्य जग्मुस्ते सदनानि यथारुचि ।।४२।।
ब्राह्मणी तं सुतं दिव्यं गृहीत्वा स्वाश्रमं गता।
पालयामास भूपालं तेजस्विनमतन्द्रिता ।।४३।।
एवं ते कथितंराजन्भृगूणांतु विनाशनम्। लोभाविष्टैःक्षत्त्रियैश्चयत्कृतं पातकंकिल।४४

जनमेजय उवाच

श्रुतं मयामहत्कर्मक्षत्त्रियाणांच दारुणम्। कारणं लोभएवाऽत्रदुःखदश्चोभयोस्तुसः।४५
किञ्चित्प्रष्टुमिहेच्छामिसंशयंवासवीसुत!। हैहयास्तेकथंनाम्नाख्याताभुविनृपात्मजाः।४६
यदोस्तु यादवाः कामं भरताद्भारतास्तथा। हैहयः कोऽपि राजाऽभूत्तेषांवंशेप्रतिष्ठितः।४७
तदहं श्रोतुमिच्छामि कारणंकरुणानिधे!। हैहयास्ते कथं जाताः क्षत्रियाःकेनकर्मणा।४८

व्यास उवाच

हैहयानां समुत्पत्तिं शृणु भूपसविस्तराम्। पुरातनांसुपुण्यांचकथांपापप्रणाशिनीम्।४६
कस्मिंश्चित्समये भूप सूर्यपुत्रः सुशोभनः। रेवन्तेति च विख्यातो रूपवानमितप्रभः।५०
उच्चैःश्रवसमारुह्यहयरत्नं मनोहरम्। जगामविष्णुसदनं वैकुण्ठं भास्करात्मजः।५१

भगवद्दर्शनाकाङ्क्षी हयारुढो यदा गतः। हयस्थस्तु तदादृष्टोलक्ष्म्याऽसौरविनन्दनः।५२
रमा वीक्ष्यहयंदिव्यंभ्रातरंसगरोद्भवम्। रूपेणविस्मितातस्यतस्थौस्तम्भितलोचना।५३
भगवानपि तं दृष्ट्वा हयारूढं मनोहरम्। आगच्छन्तं रमां विष्णुः पप्रच्छ प्रणयात्प्रभुः।५४
कोऽयमायाति चार्वङ्गि! हयारूढ इवापरः। स्मरतेजस्तनुःकान्ते मोहयन्भुवनत्रयम्।५५
प्रेक्षमाणा तदा लक्ष्मीस्तच्चित्ता दैवयोगतः। नोवाच वचनंकिंचित्पृष्टाऽपिचपुनःपुनः।५६

व्यास उवाच

अश्वासक्तमतिं वीक्ष्य कामिनीमतिमोहिताम्।
पश्यन्तीं परमप्रेम्णा चञ्चलाक्षीं च चञ्चलाम्।।५७।।

तामाह भगवान्क्रुद्धः किं पश्यसि सुलोचने!। मोहिताच हरिंदृष्ट्वापृष्टानैवाऽभिभाषसे।५८
सर्वत्र रमसे यस्माद्रमा तस्माद्भविष्यसि। चञ्चलत्वाच्चलेत्येवं सर्वथैव न संशयः।५९
प्राकृता च यथा नारी नूनं भवति चञ्चला। तथात्वमपि कल्याणिस्थिरानैवकदाचन।६०
त्वं हयं मत्समीपस्था समीक्ष्ययदि मोहिता। वडवाभववामोरुमर्त्यलोकेऽतिदारुणे ।६१
इति शप्ता रमा देवी हरिणा दैवयोगतः। रुरोद वेपमाना सा भयभीताऽतिदुःखिता।६२
तमुवाच रमानाथं शङ्किता चारुहासिनी। प्रणम्य शिरसा देवं स्वपतिं विनयान्विता।६३
देवदेव! जगन्नाथ! करुणाकर! केशव!। स्वल्पेऽपराधेगोविन्दकस्माच्छापंददासि मे।६४
न कदाचिन्मया दृष्टः क्रोधस्ते हीदृशः प्रभो। क्व गतस्ते मयि स्नेहःसहजोनतुनश्वरः।६५
वज्रपातस्तु शत्रौ वै कर्तव्यो न सुहृज्जने। सदाऽहं वरयोग्या ते शापयोग्याकथं कृता।६६
प्राणांस्त्यक्ष्यामिगोविन्दपश्यतोऽद्यतवाग्रतः। कथंजीवेत्वयाहीनाविरहानलतापिता।६७
प्रसादं कुरु देवेश! शापादस्मात्सुदारुणात्। कदा मुक्तासमीपंतेप्राप्नोमिसुखदंविभो।६८

हरिरुवाच

यदा ते भवितापुत्रपृथिव्यांमत्समःप्रिये। तदामांप्राप्यतन्वङ्गिसुखितात्वंभविष्यसि।६९

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां षष्ठस्कन्धे हैहयानामुत्पत्तिप्रसङ्गेरमाविष्णुसम्वादवर्णनंनाम सप्तदशोऽध्यायः।।१७।।

* अष्टादशोऽध्यायः *

शापादनन्तरंलक्ष्म्यावडवारूपेणशिवाराधनकरणं प्रसन्नेनशिवेनतस्यैवरदानञ्च

जनमेजय उवाच

इति शप्ता भगवता सिन्धुजा कोपयोगतः। कथं सावडवाजातारेवन्तेन च किं कृतम्।१
कस्मिन्देशेऽब्धिजा देवी बडवारूपधारिणी। संस्थितैकाकिनी बाला परोषितपतिका यथा।२
कालंकियन्तमायुष्मन्वियुक्ता पतिना रमा। संस्थिता विजनेऽरण्येकिंकृतंचतयापुनः।३
समागमं कदा प्राप्ता वासुदेवस्य सिन्धुजा। पुत्रः कथं तया प्राप्तो नारायणवियुक्तया।४
एतद्वृत्तान्तमार्येशकथयस्वसविस्तरम् । श्रोतुकामोऽस्मिविप्रेन्द्रकथाख्यानमनुत्तमम्।५

सूत उवाच

इति पृष्टस्तदा व्यासः परीक्षित्तनयेन वै। कथयामासभोविप्राःकथामेतांसुविस्तराम्।६

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामिकथांपौराणिकींशुभाम्। पावनींसुखदांकर्णेविशदाक्षरसंयुताम्।७

रेवन्तस्तु रमां दृष्ट्वा शप्तां देवेन कामिनीम्।भयार्तः प्रययौदूरात्प्रणम्यजगतांपतिम्।८
पितुः सकाशंत्वरितोवीक्ष्यकोपंजगत्पतेः।निवेदयामासकथांभास्करायसशापजाम्।९
दुःखिता सा रमा देवी प्रणम्यजगदीश्वरम्।आज्ञप्ता मानुषं लोकम्प्राप्ताकमललोचना।१०
सूर्यपत्न्या तपस्तप्तं यत्र पूर्वं सुदारुणम्।तत्रैव सा ययावाशु वडवारूपधारिणी।११
कालिन्दीतमसासङ्गे सुपर्णाक्षस्य चोत्तरे।सर्वकामप्रदे स्थाने सुरम्यवनमण्डिते।१२
तत्र स्थितामहादेवं शङ्करं वाञ्छितप्रदम्।दध्यौ चैकेनमनसा शूलिनं चन्द्रशेखरम्।१३
पञ्चाननं दशभुजं गौरिदेहार्धधारिणम्।कर्पूरगौरदेहाभं नीलकण्ठं त्रिलोचनम्।१४
व्याघ्राजिनधरं देवं गजचर्मोत्तरीयकम्।कपालमालाकलितं नागयज्ञोपवीतिनम्।१५
सागरस्य सुता कृत्वा हयीरूपं मनोहरम्।तस्मिंस्तीर्थे रमादेवी चकार दुश्चरं तपः।१६
ध्यायमाना परं देवं वैराग्यं समुपाश्रिता।दिव्यं वर्षसहस्रं तु गतं तत्र महीपते!।१७
ततस्तुष्टो महादेवो वृषारूढस्त्रिलोचनः।प्रत्यक्षोऽभून्महेशानः पार्वतीसहितः प्रभुः।१८
तत्रैत्य सगणःशम्भुस्तामाहहरिवल्लभाम्।तपस्यन्तींमहाभागामश्विनीरूपधारिणीम्।१९
किं तपस्यसि कल्याणि!जगन्मातर्वदस्व मे।सर्वार्थदः पतिस्तेऽस्ति सर्वलोकविधायकः।२०

हरिं त्यक्त्वाऽद्य मां कस्मात्स्तौषि देवि!जगत्पतिम्।
वासुदेवं जगन्नाथं भुक्तिमुक्ति प्रदायकम्।।२१।।
वेदोक्तम्वचनं कार्यं नारीणां देवता पतिः।
नाऽन्यस्मिन्सर्वथाभावः कर्तव्यः कर्हिचित्क्वचित्।।२२।।

पतिशुश्रूषणं स्त्रीणां धर्म एव सनातनः।यादृशस्तादृशः सेव्यः सर्वथा शुभकाम्यया।२३
नारायणस्तु सर्वेषां सेव्योयोग्यःसदैवहि।तंत्यक्त्वादेवदेवेशंकिंमांध्यायसिसिन्धुजे।२४

लक्ष्मीरुवाच

आशुतोष!महेशान!शप्ताऽहं पतिना शिव!।मां समुद्धर देवेश!शापादस्माद्दयानिधे।२५
तदोक्तं हरिणा शम्भो शापानुग्रहकारणम्।विज्ञप्तेन मया कामं दयायुक्तेन विष्णुना।२६
यदा ते भवितापुत्रस्तदा शापस्य मोक्षणम्।भविष्यति चवैकुण्ठवासस्तेकमलालये।२७
इत्युक्ताऽहं तपस्तप्तुमागताऽस्मि तपोवने।आराधितो मयादेवत्वंसर्वार्थप्रदायकम्।२८
पतिसङ्गं विना पुत्रं देवदेव! लभे कथम्।स तु तिष्ठतिवैकुण्ठेत्यक्त्वामामनागसम्।२९
वरं मे देहि देवेश! यदि तुष्टोऽसि शंकर!।तव तस्यद्विधा भावोनास्तिनूनंकदाचन।३०

मयैतद्गिरिजाकान्त ज्ञातं पत्युः पुरो हर!।
यस्त्वं सोऽसौ पुनर्योऽसौ स त्वं नास्त्यत्र संशयः।।३१।।

एकत्वञ्च मयाज्ञात्वामयातेस्मरणंकृतम्।अन्यथाममदोषस्त्वामाश्रयन्त्याभवेच्छिव।३२

शिव उवाच

कथं ज्ञातस्त्वया देवि ममतस्य च सुन्दरि।ऐक्यभावो हरेर्नूनं सत्यंमे वद सिन्धुजे।३३
एकत्वं च न जानन्ति देवाश्च मुनयस्तथा।ज्ञानिनी वेदतत्त्वज्ञाः कुतर्कोपहताःकिल।३४
मद्भक्ता वासुदेवस्य निन्दकाबहवस्तथा।विष्णुभक्तास्तु बहवो मम निन्दापरायणाः।३५
भवन्ति कालभेदेन कलौ देवि विशेषतः।कथं ज्ञातस्त्वया भद्रे दुर्ज्ञेयोह्यकृतात्मभिः।३६

सर्वथा त्वैक्यभावस्तु हरेर्मम च दुर्लभः।

व्यास उवाच

इति सा शम्भुना पृष्टा तुष्टेन हरिवल्लभा।।३७।।

वृत्तान्तं तस्य विज्ञातं प्रवक्तुमुपचक्रमे। शिवम्प्रति रमा तत्र प्रसन्न वदना भृशम्।३८

लक्ष्मीरुवाच

एकदा देवदेवेश! विष्णुर्ध्यानपरो रहः। दृष्टो मया तपः कुर्वन्पद्मासनगतो यदा।३९
तदाऽहं विस्मिता देवं तमपृच्छंपतिं किल। प्रबुद्धं सुप्रसन्नं च ज्ञात्वा विनयपूर्वकम्।४०
देवदेव! जगन्नाथ! यदाऽहं निर्गताऽर्णवात्।
मथ्यामानात्सुरैर्दैत्यैःसर्वैर्ब्रह्मादिभिः प्रभो! ।।४१।।
वीक्षिताश्च मयासर्वेपतिकामनयातदा। वृतस्त्वंसर्वदेवेभ्यःश्रेष्ठोऽसीतिविनिश्चयात्।४२
त्वं कं ध्यायसिसर्वेशसंशयोऽयंमहान्मम। प्रियोऽसिकैटभारे मे कथयस्वमनोगतम्।४३

विष्णुरुवाच

शृणुकान्ते प्रवक्ष्यामि यं ध्यायामि सुरोत्तमम्। आशुतोषंमहेशानंगिरिजावल्लभंहृदि।४४
कदाचिद्देवदेवोमां ध्यायत्यमितविक्रमः। ध्यायाम्यहञ्चदेवेशं शङ्करं त्रिपुरान्तकम्।४५
शिवस्याऽहं प्रियः प्राणःशङ्करस्तुतथा मम। उभयोरन्तरंनास्तिमिथःसंसक्तचेतसोः।४६
नरकंयान्तितेनूनंये द्विषन्ति महेश्वरम्। भक्ता मम विशालाक्षि सत्यमेतद्ब्रवीम्यहम्।४७
इत्युक्तं देवदेवेन विष्णुना प्रभविष्णुना। एकान्ते किल पृष्टेन मया शैलसुताप्रिय!।४८
तस्मात्त्वाम्वल्लभंविष्णोर्ज्ञात्वाध्यातवतीह्यहम्।
तथा कुरु महेशानयथामेप्रियसङ्गमः ।।४९।।

व्यास उवाच

इति श्रियो वचः श्रुत्वा प्रत्युवाच महेश्वरः।
तमाश्वास्य प्रियैर्वाक्यैर्यथार्थम्वाक्यकोविदः ।।५०।।
स्वस्था भव पृथुश्रोणि! तुष्टोऽहंतपसा तव। समागमस्तेपतिनाभविष्यतिनसंशयः।५१
अत्रैव हयरूपेण भगवाञ्जगदीश्वरः। आगमिष्यति ते कामं पूर्णं कर्तुं मयेरितः।५२
तथाऽहं प्रेरयिष्यामि तं देवं मधुसूदनम्। यथाऽसौ हयरूपेण त्वामेष्यति मदातुरः।५३
पुत्रस्ते भविता सुभ्रु! नारायणसमःक्षितौ। भविष्यति सभूपाल सर्वलोकनमस्कृतः।५४
सुतम्प्राप्यमहाभागेत्वंतेनपतिनासह । गन्ताऽसिदिवि वैकुण्ठं प्रियातस्यभविष्यसि।५५
एकवीरेति नाम्नाऽसौ ख्यातिं यास्यति ते सुतः।
तस्मात्तु हैहयो वंशो भुवि विस्तारमेष्यति ।।५६।।
परन्तुविस्मृताऽसित्वंहृदिस्थाम्परमेश्वरीम्। मदान्धामत्तचित्ताचतेनते फलमीदृशम्।५७
अतस्तद्दोषशान्त्यर्थंहृदिस्थाम्परदेवताम्। शरणं याहि सर्वात्मभावेनजलधेः सुते!।५८
अन्यथा तव चित्तन्तु कथं गच्छेद्धयोत्तमे।

व्यास उवाच

इति दत्त्वा वरं देव्यै भगवाञ्छैलजापतिः ।।५९।।
अन्तर्धानङ्गतःसाक्षादुमयासहितःशिवः। साऽपितत्रैवचार्वङ्गी संस्थिता कमलासना।६०
ध्यायन्ती चरणाम्भोजं देव्याःपरमशोभनम्। देवासुरशिरोरत्ननिघृष्टनखमण्डलम् ।६१
प्रेमगद्गदया वाचा तुष्टाव च मुहुर्मुहुः। प्रतीक्षमाणा भर्तारं हयरूपधरं हरिम्।६२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे शिवप्रसादेनलक्ष्मीद्वाराभगवत्याःसमाराधनवर्णनं नामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

* एकोनविंशोऽध्यायः *

शिवेनहरिम्प्रतिस्वकीयगणचित्ररूपेणसन्देशप्रेषणम् भगवताऽश्वरूपंविधाय वडवासमीपेगमनं तयोःसङ्गमेनपुत्रोत्पत्तिः

व्यास उवाच

तस्यै दत्त्वावरंशम्भुःकैलासंत्वरितोययौ। रम्यंदेवगणैर्जुष्टमप्सरोभिश्चमण्डितम्।१
तत्र गत्वाचित्ररूपं गणङ्कार्यविशारदम्। प्रेषयामास वैकुण्ठे लक्ष्मीकार्यार्थसिद्धये।२

शिव उवाच

चित्ररूप हरिंगत्वाब्रूहित्वंवचनान्मम। यथाऽसौदुःखिताम्पत्नींविशोकाञ्चकरिष्यति।३
इत्युक्तश्चित्ररूपोऽथ निर्जगामत्वरान्वितः। वैकुण्ठंपरमं स्थानं वैष्णवैश्च गणैर्वृतम्।४
नानाद्रुमगणाकीर्णम्वापीशतविराजितम्। संजुष्टं हंसकारण्डमयूरशुककोकिलैः।५
उच्चप्रासादसंयुक्तं पताकाभिरलङ्कृतम्। नृत्यगीतकलापूर्णं मन्दारद्रुमसंयुतम्।६
वकुलाशोकतिलकचम्पकालिविमण्डितम्। कूजितैर्विहगानान्तु कर्णाह्लादकरैर्युतम्।७
सम्वीक्ष्यभवनंविष्णोर्द्वास्थौप्राहप्रणम्यच। जयविजयनामानौवेत्रपाणीस्थितावुभौ।८

चित्ररूप उवाच

भो निवेदयतं शीघ्रं हरये परमात्मने। दूतम्प्राप्तं हरस्याऽत्र प्रेरितं शूलपाणिना।९
तच्छ्रुत्वा वचनन्तस्य जयःपरमबुद्धिमान्। गत्वाहरिम्प्रणम्याऽऽह कृताञ्जलिपुटःपुरः।१०
देवदेव! रमाकान्त! करुणाकर! केशव!। द्वारि तिष्ठति दूतोऽत्र शङ्करस्य समागतः।११
आज्ञापय प्रवेष्टव्यो न वेति गरुडध्वज। चित्ररूपधरोऽप्यस्ति न जाने कार्यगौरवम्।१२
इत्याकर्ण्य हरिः प्राह जयम्प्रज्ञातकारणः। प्रवेशयाऽत्र रुद्रस्य भृत्यंसमयसंस्थितम्।१३
इत्याकर्ण्य जयस्तूर्णंगत्वा तं परमाद्भुतम्। एहीत्याकारयामास जयः शङ्करसेवकम्।१४
प्रवेशितोजयेनाऽथ चित्ररूपस्तथाकृतिः। प्रणम्यदण्डवद्विष्णुं कृताञ्जलिपुटःस्थितः।१५
दृष्ट्वा तंविस्मयम्प्राप भगवान्गरुडध्वजः!। चित्ररूपधरं शम्भोःसेवकम्विनयान्वितम्।१६
पप्रच्छ तं स्मितं कृत्वा चित्ररूपं रमापतिः। कुशलं देवदेवस्य. सकुटुम्बस्य चाऽनघ!।१७
कस्मात्त्वंप्रेषितोऽस्यत्रब्रूहिकार्यंहरस्य किम्। अथवा देवतानाञ्च किञ्चित्कार्यं समुत्थितम्।१८

दूत उवाच

किमज्ञातंतवाऽस्तीह संसारे गरुडध्वज!। वर्तमानं त्रिकालज्ञ यदहं प्रब्रवीमि वै।१९
प्रेषितोऽस्मि भवेनाऽत्रविज्ञप्तुंत्वां जनार्दन। हरस्यवचनाद्वाक्यंप्रब्रवीमित्वयि प्रभो।२०
तेनोक्तमेतद्देवेश भार्या ते कमयालया। तपस्तपति कालिन्दीतमसासङ्गमे विभो!।२१
हयीरूपधरा देवी सर्वार्थसिद्धिदायिनी। ध्यातुं योग्याऽमरगणैर्मानवैर्यक्षकिन्नरैः।२२
विना तया नरः कोऽपि सुखभागीभवेद्भुवि। तां त्यक्त्वा पुण्डरीकाक्ष! प्राप्नोषि किं सुखं हरे!।२३
दुर्बलोऽपिस्त्रियम्पातिनिर्धनोऽपिजगत्पते। विनाऽपराधञ्चविभोकिंत्यक्ताजगदीश्वरी।२४
दुःखंप्राप्नोतिसंसारेयस्यभार्याजगद्गुरो!। धिक्तस्यजीवितंलोकेनिन्दितंत्वरिमण्डले।२५

सकामा रिपवस्तेऽद्य दृष्ट्वा तां दुःस्थितां भृशम्।
त्वां वियुक्तञ्च रमया हसिष्यन्ति दिवानिशम्।।२६।।

रमां रमय देवेश त्वदुत्सङ्गगतांकुरु। सर्वलक्षणसम्पन्नां सुशीलाञ्च सुरूपिणीम्।२७
सुखितो भवताम्प्राप्य वल्लभाञ्चारुहासिनीम्। कान्ताविरहजंदुःखंस्मराम्यहमनातुरः।२८

मम भार्या मृता विष्णो दक्षयज्ञेसतीयदा। तदाऽहं दुःसहं दुःखं भुक्तवानम्बुजेक्षण।२९
संसारेऽस्मिन्नरःकोऽपिमाभून्मत्सदृशोऽपरः। मनसाऽकरवंशोकंतस्याविरहपीडितः।३०
कालेनमहताप्राप्ता मया गिरिसुतापुनः। तपस्तप्त्वाऽतिदुःसाध्यंयादग्धातुरुषाऽध्वरे।३१
हरेकिंसुखमापन्नंत्वयासन्त्यज्यकामिनीम्। एकाकीतिष्ठताकालंसहस्रवत्सरात्मकम्।३२
गत्वाऽऽश्वास्यमहाभागांसमानयनिजालयम्। माभूत्कोपीहसंसारेवियुक्तोरमयातया।३३

कृत्वा तुरगरूपं त्वं भजतात्कमलालयाम्।
उत्पाद्य पुत्रमायुष्मंस्तामानय शुचिस्मिताम्॥३४॥

व्यास उवाच

हरिराकर्ण्य तद्वाक्यं चित्ररूपस्य भारत!। तथेत्युक्त्वा तु दूतं तं प्रेषयामासशङ्करम्।३५
गते दूतेऽथभगवान्वैकुण्ठात्कामसंयुतः। जगाम धृत्वा तत्राऽऽशु वाजिरूपंमनोहरम्।३६
यत्रसावडवारूपंकृत्वातपतिसिन्धुजा । विष्णुस्तं देशमासाद्यतामपश्यद्धयींस्थिताम्।३७

साऽपि तं वीक्ष्य गोविन्दं हयरूपधरम्पतिम्।
ज्ञात्वा वीक्ष्य स्थिता साध्वी विस्मिता साश्रुलोचना॥३८॥

तयोस्तु सङ्गमस्तत्र प्रवृत्तो मन्मथार्तयोः।
कालिन्दीतमसासङ्गे पावने लोकविश्रुते॥३९॥

सगर्भा सा तदा जाता वाडवा हरिवल्लभा। सुषुवे सुन्दरं बाले तत्रैव सुगुणोत्तरम्।४०
तमाह भगवान्वाक्यं प्रहस्य समयाश्रितम्। त्यजाऽद्य वाडवन्देहं पूर्वदेहा भवाधुना।४१
गमिष्यावःस्ववैकुण्ठमावांकृत्वानिजम्वपुः। तिष्ठत्वत्रकुमारोऽयंत्वयाजातः सुलोचने।४२

लक्ष्मीरुवाच

स्वदेहसम्भवंपुत्रंकथंहित्वा व्रजाम्यहम्। स्नेहः सुदुस्त्यजः कामंस्वात्मजस्यसुरर्षभ।४३
कागतिःस्यादमेयात्मन्बालस्यास्यनदीतटे। अनाथस्यासमर्थस्य विजनेऽल्पतनोरिह।४४

अनाश्रयं सुतं त्यक्त्वा कथं गन्तुं मनो मम।
समर्थं सदयं स्वामिन्भवेदम्बुजलोचन!॥४५॥

दिव्यदेहौ ततो जातौलक्ष्मीनारायणावुभौ। विमानवरसम्विष्टौस्तूयमानौसुरैर्दिवि।४६
गन्तुकामम्पतिम्प्राहकमलाकमलापतिम्। गृहाणेमंसुतंनाथनाऽहं शक्ताऽस्मिहापितुम्।४७

प्राणप्रियोऽस्ति मे पुत्रा! कान्त्या त्वत्सदृशः प्रभो!।
गृहीत्वेनं गमिष्यावो वैकुण्ठं मधुसूदन!॥४८॥

हरिरुवाच

मा विषादम्प्रियेकर्तुं त्वमर्हसि वरानने। तिष्ठत्वयं सुखेनाऽत्र रक्षा मे विहितात्विह।४९
कार्यं किमपि वामोरु! वर्ततेमहदद्भुतम्। निबोध कथयाम्यद्य सुतस्याऽत्र विमोचने।५०
तुर्वसुर्नाम विख्यातो ययातितनुजोभुवि। हरिवर्मेति पित्राऽस्यकृतंनामसुविश्रुतम्।५१
स राजा पुत्रकामोऽद्य तपस्तपति पावने। तीर्थे वर्षशतं जातन्तस्य वै कुर्वतस्तपः।५२
तस्याऽर्थे निर्मितःपुत्रो मयाऽयं कमलालये। तत्रगत्वानृपंसुभ्रुप्रेरयिष्यामिसाम्प्रतम्।५३
तस्मैदास्याम्यहम्पुत्रंपुत्रकामायकामिनि। गृहीत्वास्वगृहंराजाप्रापयिष्यतिबालकम्।५४

व्यास उवाच

इत्याश्वास्य प्रियाम्पद्मां कृत्वा रक्षाञ्च बालके। विमानवरमारुह्य प्रययौ प्रियया सह।५५

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे पुत्रजन्ममनुस्वस्वरूपेणवैकुण्ठगमनवर्णनंनाम एकोनविंशोऽध्यायः॥१९॥

* विंशोऽध्यायः *

चम्पकनामानंविद्याधरम्प्रतिहयीजातपुत्रस्यप्राप्तिस्तमानीयनृपतुर्वसुम्प्रति समर्पणन्तस्यैकवीरेतिनामकरणम्

जनमेजय उवाच

संशयोऽयं महानत्र जातमात्रः शिशुस्तथा। मुक्तःकेन गृहीतोऽसावेकाकीविजने वने।१
का गतिस्तस्य बालस्य जाता सत्यवतीसुत! ।
व्याघ्रसिंहादिभिर्हिंस्त्रैर्गृहीतो नाऽतिबालकः ।।२।।

व्यास उवाच

लक्ष्मीनारायणौतस्मात्स्थानाच्चलितौयदा। तदैवतत्रचम्पाख्यःप्राप्तोविद्याधरःकिल।३
विमानवरमारूढः कामिन्या सहितोनृप!। मदनालसया कामं क्रीडमानोयदृच्छया।४
विलोक्य तं शिशुम्भूमावेकाकिनमनुत्तमम्। देवपुत्रप्रतीकाशं रममाणं यथासुखम्।५
विमानात्तरसोत्तीर्य चम्पकस्तं शिशुं जवात् ।
जग्राह च मुदं प्राप निधिम्प्राप्य यथाऽधनः ।।६।।
गृहीत्वा चम्पकःप्रादाद्देव्यै तं मदनोपमम्। मदनालसायै तं बालंजातमात्रंमनोहरम्।७
सागृहीत्वाशिशुं प्रेम्णासरोमाञ्चासविस्मया। मुखंचुचुम्बबालस्यकृत्वातुहृदयेभृशम्।८
आलिङ्गितश्चुम्बितश्च तयाऽसौ प्रीतिपूर्वकम् ।
उत्सङ्गे च कृतस्तन्व्या पुत्रभावेन भारत! ।।९।।
कृत्वाऽङ्के तौ समारूढौविमानं दम्पती मुदा। पतिम्पप्रच्छचार्वङ्गीप्रहस्यमदनालसा।१०
कस्याऽयंबालकः कान्त! त्यक्तःकेनचकानने। पुत्रोऽयं ममदेवेनदत्तस्त्र्यम्बकपाणिना।११

चम्पक उवाच

प्रिये गत्वाऽद्यपृच्छेयं शक्रं सर्वज्ञमाशु वै। देवोवादानवोवाऽपिगन्धर्वोवाशिशुःकिल।१२
तेनाऽऽज्ञप्तःकरिष्यामि पुत्रं प्राप्तं वनादमुम्। अपृष्ट्वानैवकर्तव्यंकार्यंकिंचिन्मयाध्रुवम्।१३
इत्युक्त्वा तां गृहीत्वा तं विमानेनाऽथचम्पकः ।
ययौशक्रपुरंतूर्णंहर्षेणोत्फुल्ललोचनः ।।१४।।
प्रणम्य पादयोः प्रीत्या चम्पकस्तु शचीपतिम् ।
निवेद्य बालकं प्राह कृताञ्जलिपुटः स्थितः ।।१५।।
देवदेव मया लब्धस्तीर्थे परमपावने। कालिन्दीतमसासङ्गे बालकोऽयं स्मरप्रभः।१६
कस्याऽयं बालकःकान्तःकथंत्यक्तः शचीपते। आज्ञाचेत्तंवदेवेशकुर्वेऽहंबालकं सुतम्।१७
अतीव सुन्दरो बालः प्रियायावल्लभः सुतः। कृत्रिमस्तुसुतःप्रोक्तोधर्मशास्त्रेषुसर्वथा।१८

इन्द्र उवाच

पुत्रोऽयंवासुदेवस्य वाजिरूपधरस्य ह। हैहयोऽयं महाभाग! लक्ष्म्यांजातःपरं तपः।१९
उत्पादितो भगवता कार्यार्थं किल बालकः। दातुं नृपतये नूनं ययातितनयाय च।२०
हरिणाप्रेरितः सोऽद्य राजापरमधार्मिकः। आगमिष्यति पुत्रार्थं तीर्थेतस्मिन्मनोरमे।२१
तावत्त्वं गच्छ तत्रैव गृहीत्वा बालकं शुभम्। यावन्नयातिनृपतिर्ग्रहीतुं हरिणेरितः।२२
गत्वा तत्र विमुञ्चैनं विलम्बं मा कृथा वर। अदृष्ट्वा बालकंराजादुःखितश्च भविष्यति।२३
तस्माच्चम्पक! मुञ्चैनं राजा प्राप्नोतु पुत्रकम् ।
एकवीरेति नाम्नाऽयं ख्यातः स्यात्पृथिवीतले ।।२४।।

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वाचम्पकस्त्वरयान्वितः। जगामपुत्रमादायस्थलेतस्मिन्महीपते ।२५
मुमोच बालकं तत्र यत्र पूर्वंस्थितोह्यभूत्। आरुह्यस्वविमानंतुययौस्वाश्रममण्डलम् ।२६
तदैव कमलाकान्तो लक्ष्म्या सह जगद्गुरुः। विमानवरमारूढो जगाम नृपतिं प्रति ।२७

दृष्टस्तदा तेन नृपेण विष्णुः समुत्तरंस्तत्र विमानमुख्यात् ।
जहर्ष राजा हरिदर्शनेन पपात भूमौ खलु दण्डवच्च ।।२८।।
उत्तिष्ठ वत्सेति हरिः पतन्तमाश्वासयद्भूमिगतं स्वभक्तम् ।
सोऽप्युत्सुको वासुदेवं पुरःस्थं तुष्टाव भक्त्या मुखरीकृतोऽथ ।।२९।।
देवाधिदेवाखिललोकनाथ! कृपानिधे! लोकगुरो! रमेश! ।
मन्दस्य मे ते किल दर्शनं यत्सुदुर्लभं योगिजनैरलभ्यम् ।।३०।।
ये निःस्पृहास्ते विषयैरपेतास्तेषां त्वदीयं खलु दर्शनं स्यात् ।
आशापरोऽहं भगवन्ननन्त! योग्या न ते दर्शने देवदेव! ।।३१।।
इति स्तुतस्तेन नृपेण विष्णुस्तमाह वाक्येन सुधामयेन ।
वृणीष्व राजन्मनसेप्सितं ते ददामि तुष्टस्तपसा तवेति ।।३२।।
ततो नृपस्तं प्रणिपत्य पादयोः प्रावोच विष्णुं पुरतः स्थितञ्च ।
तपस्तु तप्तं हि मया सुतार्थे पुत्रं ददस्वाऽऽत्मसमं मुरारे! ।।३३।।
श्रुत्व नृपप्रार्थितमादिदेवस्तामाह राजानममोघवाक्यम् ।
ययातिसूनो! व्रज तत्र तीर्थे कलिन्दकन्यातमसाप्रसङ्गे ।।३४।।
मयाऽद्य पुत्रस्तु यथेप्सितस्ते तत्रैव मुक्तोऽस्त्यमितप्रभावः ।
लक्ष्म्याः प्रसूतो मम वीर्यजश्च कृतस्तवाऽर्थेऽथ गृहाण राजन्! ।।३५।।
श्रुत्वा हरेर्वाक्यमतीव मृष्टं सन्तुष्टचित्तः प्रबभूव राजा ।
हरिस्तु दत्त्वेति वरं जगाम वैकुण्ठलोकं रमया युतश्च ।।३६।।
गते हरौ सोऽथ ययातिसूनुर्ययावनुदघातरथेन राजा ।
प्रेमान्वितस्तत्र सुतोऽस्ति यत्र वचो निशम्येति जनार्दनस्य ।।३७।।
स तत्र गत्वाऽतिमनोहरं तं ददर्श बालं भुवि खेलमानम् ।
मुखे निवेश्यैककरेण कृत्वा श्लक्ष्णम्पदाङ्गुष्ठमनन्यसत्त्वः ।।३८।।
तं वीक्ष्य पुत्रं मदनस्वरूपं नारायणांशं कमलाप्रसूतम् ।
हरिप्रभावं हरिवर्मनामा हर्षप्रफुल्लाननपङ्कजोऽभूत् ।।३९।।
गृह्णन्सुवेगात्करपङ्कजाभ्यां बभूव प्रेमार्णवमग्नदेहः ।
मूर्धन्युपाघ्राय मुदाऽन्वितोऽसौ ननन्द राजा सुतमालिलिङ्ग ।।४०।।
मुखं समीक्ष्याऽतिमनोहरं तमुवाच नेत्राऽम्बुनिरुद्धकण्ठः ।
दत्तोऽसि देवेन जनार्दनेन मात्रा हि पुत्रावमदुःखभीतेः ।।४१।।
तप्तं मया पुत्र! तपस्तवाऽर्थे सुदुष्करं वर्षशतञ्च पूर्णम् ।
तेनैव तुष्टेन रमाप्रियेण दत्तोऽसि संसारसुखोदयाय ।।४२।।
माता रमा त्वां तनुजं मदर्थे त्यक्त्वा गता सा हरिणा समेता ।
धन्या तु सा या प्रहसन्तमङ्के कृत्वा सुतं त्वाम्मुदिताननना स्यात् ।।४३।।
त्वमेव संसारसमुद्रनौकारूपः कृतः पुत्र! लक्ष्मीधरेण ।
इत्येवमुक्त्वा नृपतिः सुतं तं मुदा समादाय ययौ गृहाय ।।४४।।

पुरीसमीपे नृपमाऽऽगतं तमाकर्ण्य सर्वे सचिवास्तु राज्ञः ।
ययुः समीपं नृपतेश्च लोकाः सोपायनास्ते सपुरोहिताश्च ।।४५।।
बन्दीजना गायनकाश्च सूताः समाययुः सम्मुखमाशु राज्ञः ।
नृपः पुरं प्राप्य पुरः समागतं जनं समाश्वास्य वाक्यैश्च दृष्ट्या ।।४६।।
सम्पूजितः पौरजनेन राजा विवेश पुत्रेण युतो नगर्याम् ।
मार्गेषु लाजैः कुसुमैः समन्ताद्विकीर्यमाणो नृपतिर्जगाम ।।४७।।
गृहं समृद्धं सचिवैः समेतः सुतं समादाय मुदा कराभ्याम् ।
राज्यै ददौ चाऽथ सुतं मनोज्ञं सद्यःप्रसूतं च मनोभवाभम् ।।४८।।
राज्ञी गृहीत्वाऽभिनवं तनूजं पप्रच्छ राजानमनिन्दिता सा ।
राजन्कुतश्चैष सुतः सुजन्मा प्राप्तस्त्वया मन्मथतुल्यरूपः ।।४९।।
केनैष दत्तः कथयाऽऽशु कान्त! चेतो मदीयं प्रहृतं सुतेन ।
नृपस्तदोवाच मुदाऽन्वितोऽसौ प्रिये! रमेशेन सुतोऽति मह्यम् ।।५०।।
लोलाक्षि! दत्तः कमलासमुत्थो जनार्दनांशोऽयमहीनसत्त्वः ।
सा तं गृहीत्वा मुदमाप राज्ञी राजा चकारोत्सवमद्भुतं च ।।५१।।
ददौ च दानं किल याचकेभ्यो गीतानि वाद्यानि बहूनिनेदुः ।
कृत्वोत्सवं भूपतिरात्मजस्य नामैकवीरेति चकार विश्रुतम् ।।५२।।
सुखञ्च सम्प्राप्य मुदाऽन्वितोऽसौ ननन्द देवाधिपतुल्यवीर्यः ।
पुत्रं हरे रूपगुणानुरूपं सम्प्राप्य वंशस्य ऋणाच्च मुक्तः ।।५३।।
इति सकलसुराणामीश्वरेणाऽर्पितं तं सकलगुणगणाढ्यं पुत्रमासाद्य राजा ।
विविधसुखविनोदैर्भार्यया सेव्यमाने व्यहरत निजगेहे शक्रतुल्यप्रतापः ।५४

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे एकवीराख्यानवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः ।।२०।।

* एकविंशोऽध्यायः *

एकवीराभिषेचनोद्ध्र्ववृत्तान्तेतस्माएकावलीकन्याप्राप्तिवर्णनम्

व्यास उवाच

जातकर्मादिसंस्कारांश्चकार नृपतिस्तदा ।
दिनेदिने जगामाऽऽशु वृद्धिं बालः सुलालितः ।।१।।

नृपः संसारजं प्राप्य सुखं पुत्रसमुद्भवम् । ऋणत्रयविमोक्षञ्च मेने तेन महात्मना ।२
षष्ठेऽन्नप्राशनंतस्य कृत्वा मासि. यथाविधि । तृतीयेऽथ तथा वर्षे चूडाकरणमुत्तमम् ।३
चकार ब्राह्मणान्द्रव्यैः सम्पूज्य विविधैर्धनैः । गोभिश्चविविधैर्दानैर्याचकानितरानपि ।४
वर्षे चैकादशे तस्य मौञ्जीबन्धनकर्म वै । कारयित्वा धनुर्वेदमध्यापयत पार्थिवः ।५
अधीतवेदम्पुत्रं तं राजधर्मविशारदम् । दृष्ट्वा तस्याऽभिषेकाय मतिञ्चक्रे जनाधिपः ।६
पुष्यार्कयोगसंयुक्तेदिवसे नृपसत्तमः । कारयामास सम्भारानभिषेकार्थमादरात् ।७
द्विजानाहूयवेदज्ञान्सर्वशास्त्रविचक्षणान् । अभिषेकञ्चकारासौविधिवत्स्वात्मजस्यह ।८
जलमानीय तीर्थेभ्यः सागरेभ्यश्च पार्थिवः । स्वयं चकार विधिवदभिषेकं शुभे दिने ।९
धनंदत्त्वाऽथविप्रेभ्योराज्यं पुत्रे निवेश्य सः । जगामवनमेवाऽऽशुस्वर्गकामःसभूपतिः ।१०
एकवीरं नृपं कृत्वा सम्मान्य सचिवानथ । भार्यया सह भूपालः प्रविवेश वनं वशी ।११

मैनाकशिखरे राजा कृत्वा तार्तीयमाश्रमम् ।
नित्यं पत्रफलाहारश्चिन्तयामास पार्वतीम् ।।१२।।
एवं स नृपतिः कृत्वादिष्टान्ते सह भार्यया। मृतोऽसौवासवंलोकंगतःपुण्येनकर्मणा।१३
इन्द्रलोकं पिता प्राप्त इति श्रुत्वाऽथ हैहयः। चकार वेदनिर्दिष्टं कर्म चैवोर्ध्वदेहिकम्।१४
कृत्वोत्तराःक्रियाःसर्वाः पितुःपार्थिवनन्दनः। राज्यंचकारमेधावीपित्रादत्तंसुसंमतम्।१५
एकवीरोऽथ धर्मज्ञःप्राप्य राज्यमनुत्तमम्। बुभुजेविविधान्भोगान्सचिवैश्चसुमानितः।१६
एकस्मिन्दिवसे राजा मन्त्रिपुत्रैः समन्वितः। जगाम जाह्नवीतीरेहयारूढःप्रतापवान्।१७
सम्पश्यन्पादपान्रम्यान्कोकिलालापसंयुतान्। पुष्पितान्फलसंयुक्तान्षट्पदालिविराजितान्।१८
मुनीनामाश्रमान्दिव्यान्वेदध्वनिनिनादितान्। होमधूमावृताकाशान्मृगशावसमावृतान्।१९
केदाराञ्छालिसम्पक्वान्गोपिकाभिः सुरक्षितान् ।
प्रफुल्लपङ्कजारामान् निकुञ्जांश्चमनोरमान् ।।२०।।
प्रेक्षमाणः प्रियालांस्तु चम्पकान्पनसद्रुमान् ।
बकुलांस्तिलकान्नीपान्मन्दारांश्च प्रफुल्लितान् ।।२१।।
शालांस्तालांस्तमालांश्च जम्बूचूतकदम्बकान् ।
स गच्छञ्जाह्नवी तोये प्रफुल्लं शतपत्रकम् ।।२२।।
पङ्कजंचातिगन्धाढ्यममपश्यदवनीपतिः। दक्षिणेजलजस्याऽथपार्श्वेकमललोचनाम्।२३
कनकाभां सुकेशीं च कम्बुग्रीवां कृशोदरीम् ।
विम्बोष्ठीं सुन्दरींकिञ्चित्समुद्यत्सुपयोधराम् ।।२४।।
सुनासां चारुसर्वाङ्गीमपश्यत्कन्यकां नृपः ।
रुदतीं तां सखीं त्यक्त्वा विह्वलां दुःखपीडिताम् ।।२५।।
साश्रुनेत्रां क्रन्दमानां विजनेकुररीमिव। सम्वीक्ष्यराजाप्रपच्छकन्यकांशोककारणम्।२६
सुनसे ब्रूहि काऽसि त्वंकस्य पुत्रीशुभानने। गन्धर्वीदेवकन्याऽथकथंरोदिषिसुन्दरि।२७
कथमेकाकिनी बाले त्यक्ताकेनपिकस्वरे। पतिस्तेक्वगतःकान्तेपितावाब्रूहिसाम्प्रतम्।२८
किं ते दुःखमरालभ्रु कथयाऽद्यममाऽन्तिके। करोमि दुःखनाशं ते सर्वथैव कृशोदरि।२९
न राज्ये मम तन्वङ्गि! पीडां कोऽपिकरोत्यलम् ।
नभयंचौरजंकान्तेनराक्षसभयंतथा ।।३०।।
मयि शासति भूपाले नोत्पातादारुणाभुवि। भयंनव्याघ्रसिंहेभ्योनभयंकस्यचिद्भवेत्।३१
वद वामोरु कस्मात्त्वं विलापं जाह्नवीतटे। करोषि त्राणहीनाऽत्रकिं तेदुःखंवदस्वमे।३२
हन्म्यहं दुःखमत्युग्रं प्राणिनां पृथिवीतले। दैवं च मानुषं कान्ते व्रतमेतन्ममाऽद्भुतम्।३३
विशाललोचने ब्रूहि करोमि तव चिन्तितम्। इत्युक्ते वचने राज्ञाश्रुत्वोवाचमृदुस्वना।३४
शृणु राजेन्द्र! वक्ष्यामि मम शोकस्य कारणम् ।
विपत्तिरहितः प्राणी कथं रुदति भूपते! ।।३५।।
प्रब्रवीमि महाबाहो यदर्थं रुदती त्वहम्। तव राज्यादन्येदेशे राजा परमधार्मिकः।३६
रैभ्यो नाम महाराजःसन्तानरहितोभृशम्। तस्यभार्यासुविख्यातारुक्मरेखेतिनामतः।३७
सुरूपा चतुरा साध्वी सर्वलक्षणसंयुता। अपुत्रा दुःखिता कान्तमित्युवाच पुनःपुनः।३८
किं जीवितेन मे नाथ धिग्वृथा जीवितंमम। वन्ध्यायाःसुखहीनायाह्यपुत्रायाधरातले।३९
इत्येवं भार्यया भूपः प्रेरितो मखमुत्तमम्। चकार ब्राह्मणांस्तज्ज्ञानाहूय विधिवत्तदा।४०
पुत्रकामो धनं भूरि ददावथ यथोदितम्। हूयमाने घृतेऽत्यर्थं पावकादतिसुप्रभात्।४१

आविर्बभूव चार्वङ्गीकन्यका शुभलक्षणा। बिम्बोष्ठी सुदती सुभ्रूः पूर्णचन्द्रनिभानना।४२
कनकाभा सुकेशान्ता रक्तपाणितला मृदुः। सुरक्तनयना तन्वी रक्तपादतला भृशम्।४३
हुताशनात्समुद्भूता होत्रा सा स्वीकृता तदा।
होता प्रोवाच राजानं गृहीत्वा तां सुमध्यमाम् ।।४४।।
राजन्पुत्रीं गृहाणेमां सर्वलक्षणसंयुताम्। एकावलीव सम्भूता हूयमानाद्धुताशनात्।४५
नाम्ना चैकावली लोके ख्याता पुत्रीभविष्यति। सुखितोभवभूपालपुत्र्यापुत्रसमानया ।४६
सन्तोषं कुरुराजेन्द्र! दत्तादेवेनविष्णुना। होतुर्वाक्यंनृपःश्रुत्वादृष्ट्वातांकन्यकांशुभाम्।४७
जग्राह परमप्रीतो होत्रा दत्तांसुसन्मताम्। गृहीत्वानृपतिस्तांतुददौपत्न्यैवराननाम्।४८
आभाष्य रुक्मरेखायै गृहाण सुभगे! सुतम्।
सा तां कमलपत्राक्षीं प्राप्य कन्यां मनोरमाम् ।।४९।।
जहर्ष मुदिता राज्ञी पुत्रं प्राप्य यथासुखम्। चकार मङ्गलं कर्म जातकर्मादिकं शुभम्।५०
पुत्रजन्मसमुत्थं यत्तत्सर्वं विधिवत्ततः। समाप्यचमखंराजाद्विजेभ्योदक्षिणांशुभाम्।५१
दत्त्वा विसृज्य विपेन्द्रान्मुदंप्रापमहीपतिः। दिनेदिनेऽसितापाङ्गीपुत्रवृद्ध्याभृशंबभौ।५२
मुदं च परमां प्राप नृपभार्या सुतान्विता। उत्सवस्तद्दिने तस्य प्रवृत्तः सुतजन्मजः।५३
पुत्री पुत्रसमाऽत्यर्थं बभूव वल्लभा किल। राज्ञो मन्त्रिसुताचाऽहं सुबुद्धे मन्मथाकृते।५४
यशोवती च मे नाम समानं वय आवयोः। वयस्याऽहं कृता राज्ञा क्रीडनायतयासह।५५
सदा सहचरी जाता प्रेमयुक्ता दिवानिशम्। एकावली गन्धवन्तियत्रपद्मानिपश्यति।५६
तत्र सा रमते वाला नाऽन्यत्र सुखमाप्नुयात्। सुदूरे जाह्नवीतीरेभवन्तिकमलान्यपि।५७
रममाणा तत्र याता मत्समेता सखीयुता। मया निवेदितं राजन्पुत्री तेकमलाकरान्।५८
प्रेक्षमाणाऽतिदूरे सा प्रयातिनिर्जनेवने। निषेधिताऽथपित्राऽसौगृहेकृत्वाजलाशयान्।५९
कमलान्वापयित्वाऽथपुष्पितान्भ्रमरावृतान्। तथाऽपिनिर्ययौबालाकमलासक्तचेतना।६०
तदा राज्ञा रक्षपालाः प्रेरिता शस्त्रपाणयः।
एवं रक्षायुता तन्वी मत्समेता सखीयुता ।।६१।।
क्रीडार्थं जाह्नवीतोये नित्यमायाति याति च ।।६२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे राजपुत्र्याएकावल्यावर्णनंनाम एकविंशोऽध्यायः ।।२१।।

* द्वाविंशोऽध्यायः *

कालकेतुद्वारैकावलीयदास्वस्थानंप्रापितातदनन्तरंयशोवत्याएकवीरम्प्रतिस्वकीयस्वप्नवर्णनम्

यशोवत्युवाच

प्रातरुत्थाय तन्वङ्गी चलिता च सखीयुता। चामरैर्वीज्यमानासारक्षिताबहुरक्षिभिः।१
सायुधैश्चातिसन्नद्धैः सहितावरवर्णिनी। क्रीडार्थमत्रराजेन्द्र! सम्प्राप्तानलिनीं शुभाम्।२
अहमप्यनया सार्धं गङ्गातीरे समागता। अप्सरोभिः समेता च कमलैःक्रीडमानया।३
एकावली तथा चाहं जाते क्रीडापरे यदा। सहसैव तदाऽयातौ दानवो बलसंयुतः।४
कालकेतुरिति ख्यातो राक्षसैर्बहुभिर्युतः। परिघाऽसिगदाचापबाणतोमरपाणिभिः।५
दृष्ट्वा चैकावली तेन रूपयौवनशालिनी। द्वितीया कामपत्नीव क्रीडमाना सुपङ्कजैः।६
मयोक्तैकावली राजन्कोऽयं दैत्यः समागतः।
गच्छावो रक्षपालानां मध्ये पङ्कजलोचने! ।।७।।

विमृश्यैवंसखीचाऽहंत्वरयैवगते भयात्। मध्ये वै सैनिकानान्तुसायुधानां नृपात्मज।८
कालकेतुस्तु तां दृष्ट्वा मोहिनीं मदनातुरः। गदांगुर्वीं गृहीत्वा तु धावमानःसमागतः।९
रक्षकान्दूरतःकृत्वाजग्राहाऽम्बुजलोचनाम्। त्रस्तांवेपथुसंयुक्तांक्रन्दमानांकृशोदरीम्।१०
त्यजैनां मां गृहाणेति मया चोक्तोऽपि दानवः। न मां जग्राह कामार्तस्तां गृहीत्वा विनिःसृतः।११
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो रक्षकास्तं महाबलम्। प्रतिषिध्य तु सङ्ग्रामं चक्रुर्विस्मयकारकम्।१२
तस्याऽपिराक्षसाःक्रूराःसर्वतःशस्त्रपाणयः। युयुधूरक्षकैःसार्धंस्वामिकार्येकृतोद्यमाः।१३
सङ्ग्रामस्तु तदा जातःकालकेतोस्तथारणे। निहत्यरक्षकान्सर्वान्गृहीत्वैनांमहाबलः।१४
युक्तो राक्षससैन्येन निर्जगाम पुरम्प्रति। वीक्ष्यतां रुदतीम्बालां गृहीतां दानवेन तु।१५
पृष्ठतोऽहं गतातत्रयत्रनीतासखीमम। विक्रोशन्ती यथा सा मां पश्येदितिपदानुगा।१६

साऽपि मामागतां वीक्ष्य किंचित्स्वस्थाऽभवत्तदा।
गताऽहं तत्समीपे तु तामाभाष्य पुनः पुनः।।१७।।
सा माम्प्राप्याऽतिदुःखार्ता स्तम्भस्वेदसमाकुला।
कण्ठे गृहीत्वा मां भूप! रुरोद भृशदुःखिता।।१८।।

स मामाहकालकेतुःप्रीतिपूर्वमिदम्वचः। समाश्वासयभीतां त्वंसखींचञ्चललोचनाम्।१९
प्राप्तम्ममाऽद्यनगरं देवलोकसमंप्रिये। दासोऽस्मितवरत्याहिकस्मात्क्रन्दसिकातरा।२०
कथयैनां सखीं तेऽद्य स्वस्था भव सुलोचने!। इत्युक्त्वा मां सखीपार्श्वे समारोप्य रथोत्तमे।२१
जगाम तरसा दुष्टः पुरे स्वस्य मनोहरे। सैन्येन महता युक्तः प्रफुल्लवदनाम्बुजः।२२
एकावलींतथामाञ्च संस्थाप्य धवले गृहे। राक्षसान्गृहरक्षार्थं कल्पयामासकोटिशः।२३
द्वितीयेदिवसेसोऽथमामुवाचरहोनृपः। प्रबोधय सखी बालां शोचन्तींविरहातुराम्।२४

पत्नी मे भव सुश्रोणि! सुखम्भुङ्क्ष्व यथेप्सितम्।
राज्यं त्वदीयं चन्द्रास्ये! सेवकोऽहं सदा तव।।२५।।

पुनरुक्तं मयावाक्यंश्रुत्वा तद्भाषितं खरम्। नाऽहं क्षमाऽप्रियं वक्तुं त्वमेनांकथयप्रभो।२६
इत्युक्ते वचने दुष्टो मदनक्षतमानसः। उवाच विनयादेनां सखीं क्षामोदरीं प्रियाम्।२७
कृशोदरि! त्वयामन्त्रोनिक्षिप्तोऽस्ति ममोपरि। तेन मे हृदयंकान्तेहृतन्तेवशताङ्गतम्।२८
तेनाऽहंतव दासोऽद्य कृतोऽस्मीति विनिश्चियः। भज मां कामबाणेन पीडितम्विवशं भृशम्।२९
यौवनं याति रम्भोरु! चञ्चलं दुर्लभन्तदा। सफलंकुरु कल्याणि पतिम्मांपरिरभ्यच।३०

एकावल्युवाच

पित्राऽहं कल्पिता पूर्वं दातुं राजसुताय वै। हैहयस्तु महाभाग! स मयामनसावृतः।३१
कथमन्यं भजे कान्तं त्यक्त्वा धर्मं सनातनम्। कन्याधर्मं विहायाऽद्य वेत्सि शास्त्रविनिश्चयम्।३२
यस्मैदद्यात्पिताकामंकन्यातंपतिमाप्नुयात्। परतन्त्रासदाकन्याऽन स्वातन्त्र्यंकदाचन।३३

इत्युक्तोऽपि तथा पापी विरराम न मोहितः।
न मुमोच विशालाक्षीं मां च पार्श्वस्थितां तथा।।३४।।

पातालविवरे तस्य पुरम्परमसङ्कटे। राक्षसै रक्षितं दुर्गम्मण्डितं परिखावृतम्।३५
तत्र तिष्ठति दुःखार्ता सखी मे प्राणवल्लभा। तेनाऽहंविरहेणाऽत्रराटीमिसुदुःखिता।३६

एकवीर उवाच

कथं त्वमत्र सम्प्राप्ता पुरात्तस्य दुरात्मनः। विस्मयो मे महानत्र तत्त्वं ब्रूहि वरानने।३७

त्वया च कथितम्वाक्यं संदिग्धं भाति भामिनि!।
हैहयार्थे कल्पिता सा पित्रेति मम साम्प्रतम्।।३८।।

हैहयोनामराजाऽहंनान्योऽस्तिपृथिवीपतिः। मदर्थेकथितासा किंसखीतवसुलोचना।३६
एतन्मे संशयं सुभ्रु च्छेत्तुमर्हसि भामिनि!। अहंतामानयिष्यामितंहत्वाराक्षसाधमम्।४०
स्थानं दर्शयमेतस्ययदि जानासिसुव्रते। राज्ञेनिवेदितंकिं वा तत्पित्रेचाऽतिदुःखिता।४१

यस्यैषा वल्लभा पुत्री न किं जानाति तां हृताम्।
नोद्यमः किं कृतस्तेन ततो मोचनहेतवे ॥४२॥

बन्दीकृतांसुतांज्ञात्वाकथंतिष्ठतिसुस्थिरः। असमर्थोनृपःकिंवाकारणम्ब्रूहिसत्वरम्।४३
त्वयामेऽपहृतञ्चेतोगुणानुक्त्वाह्यमानुषान्। सख्याःपङ्कजपत्राक्षि! कृतःकामवशोभृशम्।४४

कदा पश्यामि तां कान्तां मोचयित्वाऽतिसङ्कटात्।
इति मे हृदयं चाऽद्य करोत्यतिमनोरथम् ॥४५॥

ब्रूहि मे गमनोपायं पुरे तस्याऽतिदुर्गमे। कथं त्वमागता तस्मात्सङ्कटादत्र तद्वद।४६

यशोवत्युवाच

बालभावान्मया मन्त्रो भगवत्या विशाम्पते!।
प्राप्तोऽस्ति ब्राह्मणात्सिद्धात्सबीजध्यानपूर्वकः ॥४७॥
तत्राऽवस्थितया राजन्मया चित्ते विचारितम्।
आराधयामि सततं चण्डिकां चण्डविक्रमाम् ॥४८॥

सा देवी सेविताकामंबन्धमोक्षं करिष्यति। भक्तानुकम्पिनीशक्तिःसमर्थासर्वसाधने।४६
या विश्वंसृजते शक्त्यापालयत्येवसा पुनः। कल्पान्ते संहरत्येव निराकारानिराश्रया।५०

इति सञ्चिन्त्य मनसा देवीं विश्वेश्वरीं शिवाम्।
ध्यात्वा रक्ताम्बरां सौम्यां सुरक्तनयनां हृदि ॥५१॥
संस्मृत्य मनसा रूपं मन्त्रजाप्यपराऽभवम्।
उपासिता मया देवी मासमेकं समाधिना ॥५२॥

स्वप्नेममसमायाताभक्तिभावेनतोषिता। मामाहाऽमृतयावाचाकिंसुप्तासीतिचण्डिका।५३
उत्तिष्ठ याहि तरसा गङ्गातीरं मनोहरम्। आगमिष्यति तत्राऽसौ हैहयो नृपपुङ्गवः।५४
एकवीरो महाबाहुः सर्वशत्रुविमर्दनः। दत्तात्रेयेण मन्मन्त्रो महाविद्याभिधः परः।५५

दत्तोऽस्मै सोऽपि सततं मामुपास्तेऽतिभक्तितः।
मय्यासक्तमतिर्नित्यं मम पूजापरायणः ॥५६॥

मामेव सर्वभूतेषु ध्यायन्नास्ते च मत्परः। सते दुःखविनाशं वैकरिष्यति महामतिः।५७
मासुतोविहरंस्तत्रतवत्राता भविष्यति। हत्वातं राक्षसंघोरंमोचयिष्यति मानिनीम्।५८
एकावलीमेकवीरः सर्वशास्त्रविशारदः। पश्चात्सैव पतिः कार्यस्त्वयाराजसुतः शुभः।५६
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवीप्रबुद्धाऽहंतदैव हि। कथितं स्वप्नवृत्तान्तंदेव्याश्चाऽऽराधनं तथा।६०
प्रसन्नवदना जाता श्रुत्वा सा कमलेक्षणा। विशेषेण च सन्तुष्टा मामुवाच शुचिस्मिता।६१
गच्छतत्रत्वरायुक्ता कुरुकार्यममप्रिये। सत्यवाक्याभगवतीसाऽऽवांमोक्षंविधास्यति।६२
इत्याज्ञप्ता तया चाऽहंसख्या वैप्रेमयुक्तया। मत्वोपशरणं युक्तं तस्मात्स्थानात्तदानृप।६३
चालिताऽहं ततः शीघ्रं महादेवीप्रसादतः। मार्गज्ञानंशीघ्रगतिर्मया प्राप्ता नृपात्मज!।६४

इत्येतत्कथितं सर्वं कारणं मम दुःखजम्।
कस्त्वं कस्य सुतश्चेति वद वीर! यथा तथा ॥६५॥

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे हैहयैकवीराययशोवत्यैकावलीमोचनायदेवीस्वप्नवर्णनंनामद्वाविंशोऽध्यायः ॥२२॥

* त्रयोविंशोऽध्यायः *

यशोवत्यासहैकवीरस्यपातालगमनंकालकेतुनासहयुद्धंकालकेतोमृत्यु-रेकावल्यासहतस्यविवाहवर्णनम्

व्यास उवाच

तस्यास्तु वचनं श्रुत्वा रमापुत्रः प्रतापवान्। प्रफुल्लवदनाम्भोजस्तामुवाच विशाम्पते।१

राजोवाच

रम्भोरु! यस्त्वयापृष्टोवृत्तान्तोविशदाक्षरः। हैहयोऽहंचैकवीरनाम्नासिन्धुसुतासुतः।२
मनोमे यत्त्वया नूनं परतन्त्रं कृतंकिल। किं करोमिक्व गच्छामिविरहेणाऽतिपीड़ितः।३
प्रथमं रूपमाख्यातं सर्वलोकातिगं त्वया। तेन मे विह्वलं जातं कामबाणहतं मनः।४

ततस्तस्या गुणाः प्रोक्तास्तैस्तु चित्तं हृतं पुनः।
यत्त्वयोक्तं पुनर्वाक्यं तेन मे विस्मयोऽभवत् ।।५।।

एकावल्या वचःप्रोक्तं दानवाऽग्रे मयावृतः। हैहयस्तं विनानान्यंवृणोमीतिविनिश्चयः।६
तेन वाक्येनतन्वङ्गिभृत्योऽहमधुनाकृतः। त्वयातस्याःसुकेशान्तेब्रूहिकिंकरवाणिवाम्।७

स्थानं तस्य न जानामि राक्षसस्य दुरात्मनः।
गतिर्मे नास्ति गमने पुरे तस्मिन्सुलोचने! ।।८।।
वद मां त्वं विशालाक्षि! तत्र प्रापयितुं क्षमा।
प्रापयाऽऽशु सखी ते सा यत्र तिष्ठति सुन्दरी ।।९।।
हत्वा तं राक्षसं क्रूरं मोचयिष्यामि साम्प्रतम्।
विवशां शोकसंतप्तां राजपुत्रीं तव प्रियाम् ।।१०।।
विमुक्तदुःखां कृत्वाऽऽशु प्रापयिष्यामि ते पुरम्।
पित्रे चाऽस्याः प्रदास्यामि कन्यामेकावलीमहम् ।।११।।

पश्चाद्विवाहं कर्ताऽसौ राजापुत्र्याःपरंतप। एवं तेमनसः कामो ममचापि प्रियम्वदे!।१२
भविष्यति ससम्पूर्णः साधनेन तवाऽधुना। दर्शयाऽशुपुरंयस्य पश्यमे त्वं पराक्रमम्।१३
यथा हन्मि दुराचारं परदारापहारकम्। तथा कुरु प्रियं कर्तुं शक्ताऽसि वरवर्णिनि।१४

मार्गं दर्शय तस्याऽद्य पुरस्य दुर्गमस्य च।

व्यास उवाच

तन्निशम्य प्रियं वाक्यं मुदिता च यशोवती ।।१५।।

तमुवाच रमापुत्रं गमनोपायमादरात्। मन्त्रं गृहाण राजेन्द्र! भगवत्यास्तु सिद्धिदम्।१६
दर्शयिष्यामि तस्याऽद्यपुरंराक्षसपालितम्। सज्जोभवमहाभाग! गमनाय मया सह।१७
सैन्येन महता युक्तस्तत्र युद्धं भविष्यति। कालकेतुर्महावीरो राक्षसैर्बलिभिर्वृतः।१८

तस्मान्मन्त्रं गृहीत्वा तं व्रज तत्र मया सह।
दर्शयिष्यामि ते मार्गं पुरस्याऽस्य दुरात्मनः ।।१९।।

हत्वातं पापकर्माणंमोचयाऽऽशु सखींमम। श्रुत्वा तद्वचनंवीरोमन्त्रं जग्राहसत्वरः।२०

दत्तात्रेयाद्दैवयोगात्प्राप्ताज्ज्ञानिवराच्छुभात्।
योगेश्वरीमहामन्त्रं त्रिलोकीतिलकाभिधम् ।।२१।।

तेन सर्वज्ञता जाता सर्वान्तश्चारिता यथा। तया सह जगामाऽशु पुरंतस्यसुदुर्गमम्।२२
रक्षितं राक्षसैर्घोरैः पातालमिव पन्नगैः। यशोवत्या च सैन्येन महता संयुतो नृपः।२३

तमायान्तं समालोक्य दूतास्तस्य भयातुराः। क्रोशन्तोऽभिययुः पार्श्वं कालकेतोस्तरस्विनः।२४
तमूचुः सहसामत्वा राक्षसं काममोहितम्। एकावलीसमीपस्थंकुर्वन्तंविनयान्बहून्।२५

दूता ऊचुः

राजन्यशोवती नारीकामिन्याः सहचारिणी। आयाति सहसैन्येन राजपुत्रेण संयुता।२६
जयन्तो वा महाराज! कार्त्तिकेयोऽथ वा नु किम्।
आगच्छति बलोन्मत्तो वाहिनीसहितः किल ।।२७।।
संयतोभवराजेन्द्रंसङ्ग्रामःसमुपस्थितः ।देवपुत्रेणयुध्वस्वत्यज वा कमलेक्षणाम्।२८
इतो दूरेऽस्ति सैन्यं तद्योजनत्रयमात्रतः। सज्जोभव महीपालदुन्दुभिंघोषयाऽऽशुवै।२६

व्यास उवाच

तेषां तद्वचनंश्रुत्वा राक्षसःक्रोधमूर्च्छितः। राक्षसान्प्रेरयामास सायुधान्सबलान्बहून्।३०
गच्छध्वंराक्षसाःसर्वेसम्मुखाःशस्त्रपाणयः। तानाज्ञाप्यकालकेतुःपप्रच्छप्रणयान्वितः।३१
एकावलीं समीपस्थां विवशां भृशदुःखिताम्।
कोऽयमायाति तन्वङ्गि ! पिता ते वा परः पुमान् ।।३२।।
त्वदर्थे सैन्यसंयुक्तो ब्रूहिसत्यं कृशोदरि!। पिताते यदिसम्प्राप्तो नेतुंत्वांविरहातुरः।३३
ज्ञात्वाते पितरंसम्यक्सङ्ग्रामं नकरोम्यहम्। आनयित्वागृहेपूजां रत्नैर्वस्त्रैर्हयैःशुभैः।३४
करोमि तस्य चाऽऽतिथ्यं गृहं प्राप्तस्य सर्वथा।
अन्यश्चेद्यदि सम्प्राप्तस्तं हन्मि निशितैः शरैः ।।३५।।
आनीतःकिलकालेनमरणायमहात्मना ।तस्माद्वदविशालाक्षि!कोऽयमायातिमन्दधीः।३६
अज्ञात्वा मां दुराधर्षं कालरूपं महाबलम्।

एकावल्युवाच

न जानेऽहं महाभाग ! कोऽयमायाति सत्वरः ।।३७।।
न मेऽस्ति विदितः कोऽपि स्थितायास्तव बन्धने।
नाऽयं पिता मे न भ्राता कोऽप्यन्योऽस्ति महाबलः ।।३८।।
किमर्थमिह चाऽऽयाति नाऽहं वेद विनिश्चयम्।

दैत्य उवाच

एवं वदन्त्यमी दूता वयस्या ते यशोवती ।।३६।।
समानीयच त वीरमागतेति कृतोद्यमा। क्व गतासासखी कान्ते विदग्धाकार्यनिश्चये।४०
नाऽन्यः कोऽपि ममारातिर्यो मे प्रतिबलो भवेत्।

व्यास उवाच

एतस्मिन्नन्तरे दूतास्तत्राऽन्ये वै समागताः ।।४१।।
ते ह्योचुस्त्वरिता भीताः कालकेतुं गृहे स्थितम्।
किं स्वस्थोऽसि महाराज! समीपे सैन्यमागतम् ।।४२।।
निर्गच्छ नगरात्तूर्णं सैन्येन महतावृतः। इतितेषां वचःश्रुत्वा कालकेतुर्महाबलः।४३
रथमारुह्य त्वरितोनिर्ययौ स्वपुराद्वहिः। एकवीरोऽपि सहसा हयारूढःप्रतापवान्।४४
आगतस्तत्र कामिन्या विरहेण समाकुलः। युद्धं तयोरभूत्तत्र वृत्रवासवयोरिव।४५
शस्त्रास्त्रैर्बहुधामुक्तैरादीपितदिगन्तरम्। वर्तमाने तदा युद्धे कातराणां भयावहे।४६
गदयाताड़यामासदैत्यं सिन्धुसुतासुतः। सगतासुः पपातोर्व्यां वज्राहत इवाऽचलः।४७
पलायित्वा गताः सर्वे राक्षसा भयपीडिताः।
यशोवती ततो गत्वा वेगादेकावलीं तदा ।।४८।।

उवाच मधुरांवाणींविस्मितांमुदिताभृशम्। एह्यालिनृपपुत्रेणदानवोऽसौनिपातितः।४९
एकवीरेणधीरेणयुद्धंकृत्वासुदारुणम् । स्कन्धावारेऽप्यसौ राजा तिष्ठत्यद्यश्रमातुरः।५०
दर्शनं काङ्क्षमाणस्ते श्रुतरूपगुणस्तव। पश्यत्वं कुटिलापाङ्गि मनोभवसमं नृपम्।५१
कथितात्वं मयापूर्वन्तस्याऽग्रे जाह्नवीतटे। पूर्णानुरागःसञ्जातस्तेनाऽसौविरहातुरः।५२
वाञ्छति त्वांचारुरूपांद्रष्टुं नृपतिनन्दनः। सा तस्या वचनं श्रुत्वा गमनायमनोदधे।५३
लज्जमाना भृशं भीत्या कौमारप्राप्तया तथा। कथन्तस्य मुखं द्रक्ष्ये कुमारी ह्यवशा भृशम्।५४
स मां गृह्णाति कामार्त इति चिन्ताकुला सती। यशोवत्या युता तत्र नरयानस्थिता ययौ।५५
स्कन्धावारेऽतिमलिनामलिनाम्बरधारिणी। तामागतां विशालाक्षीं दृष्ट्वा राजसुतोऽब्रवीत्।५६
दर्शनन्देहितन्वङ्गि! तृषिते नयने मम। कामातुरञ्च तम्वीक्ष्य तां च लज्जाभरावृताम्।५७
नीतिज्ञाशिष्टमार्गज्ञातमुवाचयशोवती । राजपुत्रपिताऽप्यस्यास्त्वामेनांदातुमिच्छति।५८
एषाऽपि त्वद्वशानूनंभवितासङ्गमस्तव। कालम्प्रतीक्ष्यराजेन्द्रनयैनाम्पितुरन्तिकम्।५९

स विवाहविधिं कृत्वा दास्यतीति विनिश्चयः ।
स तस्या वचनं तथ्यं मत्वा सैन्यसमन्वितः ।।६०।।
समेतः कामिनीभ्यान्तु ययौ तत्पितुराश्रमम् ।
राजपुत्रीन्तथाऽऽयातां श्रुत्वा प्रेमसमन्वितः ।।६१।।

प्रययौसम्मुखस्तूर्णं सचिवैः परिवेष्टितः। बहुभिर्दिवसैर्दृष्टा पुत्री सा मलिनाम्बरा।६२

यशोवत्या तु वृत्तान्तः कथितो विस्तरात्पुनः ।
एकवीरं मिलित्वाऽसौ गृहमानीय चाऽऽदरात् ।।६३।।

पुण्येऽह्नि कारयामासविवाहंविधिपूर्वकम्। पारिबर्हंततो दत्त्वासम्पूज्यविधिवत्तदा।६४

पुत्रीं विसर्जयामास यशोवत्या समन्विताम् ।
एवं विवाहे सम्वृत्ते रमापुत्रो मुदान्वितः ।।६५।।

गृहम्प्राप्यबहून्भोगान्बुभुजेप्रियया समम्। बभूव तस्यां पुत्रस्तु कृतवीर्याभिधःकिल।६६

तत्सुतः कार्तवीर्यस्तु वंशोऽयं कथितो मया ।।६७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे एकवीरैकावल्योर्विवाहवर्णनंनामत्रयोविंशोऽध्यायः ।।२३।।

* चतुर्विंशोऽध्यायः *

व्यासजनमेजयसम्वादेव्यासेनस्वकीयमोहोपपादनवृत्तान्तवर्णनम्

राजोवाच

भगवंस्त्वन्मुखाम्भोजाच्च्युतं दिव्यकथारसम् ।
न तृप्तिमधिगच्छामि पिबंस्तु सुधयासमम् ।।१।।

विचित्रमिदमाख्यानं कथितं भवता मम। हैहयानां समुत्पत्तिर्विस्तराद्विस्मयप्रदा।२
परं कौतूहलं मेऽत्रयद्विष्णुःकमलापतिः। देवदेवो जगन्नाथः सृष्टिस्थित्यन्तकारकः।३
सोऽप्यश्वभावमापन्नो भगवान्हरिरच्युतः। परतन्त्रः कथञ्जातः स्वतन्त्रः पुरुषोत्तमः।४
एतन्मे संशयं ब्रह्मञ्छेत्तुमर्हसि साम्प्रतम्। सर्वज्ञस्त्वं मुनिश्रेष्ठ! ब्रूहिवृत्तान्तमद्भुतम्।५

व्यास उवाच

शृणुराजन्प्रवक्ष्यामिसन्देहस्याऽस्यनिर्णयम्। यथाश्रुतम्मयापूर्वनारदान्मुनिसत्तमात्।६
ब्रह्मणोमानसः पुत्रो नारदो नाम तापसः। सर्वज्ञः सर्वगःशान्तःसर्वलोकप्रियः कविः।७

सचैकदामुनिश्रेष्ठोविचरन्पृथिवीमिमाम्।वादयन्महतीं वीणां स्वरतानसमन्वितम्।८
बृहद्रथन्तरादीनां साम्नां भेदाननेकशः।गायन्गायत्रममृतं सम्प्राप्तोऽथममाऽऽश्रमम्।९
शम्याप्रासं महातीर्थं सरस्वत्याःसुपावनम्।निवासंमुनिमुख्यानांशर्मदं ज्ञानदन्तथा।१०
तमागतमहं प्रेक्ष्य ब्रह्मपुत्रं महाद्युतिम्।अभ्युत्थानादिकं सर्वं कृतवानर्चनादिकम्।११
अर्घ्यपाद्यविधिं कृत्वा तस्याऽऽसनस्थितस्य च।
उपविष्टः समीपेऽहं मुनेरमिततेजसः॥१२॥
दृष्ट्वा विश्रमिणं शान्तं नारदं ज्ञानपारदम्।तमपृच्छमहं राजन्यत्पृष्टोऽहं त्वयाऽधुना।१३
असारेऽस्मिंस्तु संसारे प्राणिनां किं सुखं मुने!।
न पश्यामि विनिश्चित्य कदाचित्कुत्रचित्कचित्॥१४॥
द्वीपे जातो जनन्याऽहंसंत्यक्तस्तत्क्षणादपि।अनाश्रयोवने वृद्धिम्प्राप्तःकर्मानुसारतः।१५
तपस्तप्तं मया चोग्रं पर्वते बहुवार्षिकम्।पुत्रकामेन देवर्षे शङ्करः समुपासितः।१६
ततो मया शुकः प्राप्तः पुत्रो ज्ञानवताम्वरः।
पाठितन्तु मया सम्यग्वेदानां सार आदितः॥१७॥
स त्यक्त्वा मां गतः क्वाऽपि रुदन्तं विरहातुरम्।
लोकाल्लोकान्तरं साधो! वचनात्तव बोधितः॥१८॥
ततोऽहंपुत्रसन्तप्तस्त्यक्त्वामेरुंमहागिरिम्।मातरंमनसा कृत्वासम्प्राप्तः कुरुजाङ्गलम्।१९
पुत्रस्नेहादतितरांकृशाङ्गः शोकसंयुतः।जानन्मिथ्येति संसारं मायापाशनियन्त्रितः।२०
ततो राज्ञावृतां ज्ञात्वा मातरं वासवीं शुभाम्।
स्थितोऽत्रैवाऽऽश्रमं कृत्वा सरस्वत्यास्तटे शुभे॥२१॥
शन्तनुःस्वर्गतिम्प्राप्तोविधुराजननीस्थिता।पुत्रद्वययुतासाध्वीभीष्मेणप्रतिपालिता।२२
चित्राङ्गदः कृतो राजा गङ्गापुत्रेणधीमता।कालेनसोऽपिमेभ्रातामृतः कामसमद्युतिः।२३
ततः सत्यवतीमाता निमग्ना शोकसागरे।चित्राङ्गदं मृतं पुत्रं रुरोद भृशमातुरा।२४
सम्प्राप्तोऽहं महाभाग! ज्ञात्वा तां दुःखितां सतीम्।
आश्वासिता मयाऽत्यर्थं भीष्मेण च महात्मना॥२५॥
विचित्रवीर्यस्त्वपरो वीर्यवान्पृथिवीपतिः।कृतो भीष्मेण भ्राता वै स्त्रीराज्यविमुखेन ह।२६
काशीराजसुते रम्ये विजित्य पृथिवीपतीन्।भीष्मेणाऽऽनीय स्वबलात्कन्यके द्वे समर्पिते।२७
सत्यवत्यै शुभेकालेविवाहःपरिकल्पितः।भ्रातुर्विचित्रवीर्यस्यतदाऽहंसुखितोऽभवम्।२८
पुनः सोऽपि मृतो भ्राता यक्ष्मणा पीडितोभृशम्।
अनपत्यो युवा धन्वी माता मे दुःखिताऽभवत्॥२९॥
काशिराजसुते द्वे तु मृतं दृष्ट्वा पतिं तदा।पतिव्रताधर्मपरे भगिन्यौ सम्बभूवतुः।३०
ते ऊचतुः सतीं श्वश्रूं रुदतींभृशदुःखिताम्।पतिनासहगामिन्यौभविष्यावोहुताशने।३१
पुत्रेण सह ते श्वश्रु! स्वर्गे गत्वाऽथ नन्दने।सुखेन विहरिष्यावः पतिनासह संयुते।३२
निवारिते तदा मात्रा वध्वौ तस्मान्महोद्यमात्।स्नेहभावं समाश्रित्य भीष्मस्य वचनात्तदा।३३
गाङ्गेयेन च मात्रा मेसम्मन्त्र्य चपरस्परम्।कृत्वौर्ध्वदेहिकंसर्वंसंस्मृतोऽहं गजाह्वये।३४
स्मृतमात्रस्तु मात्रा वै ज्ञात्वा भावं मनोगतम्।तरसैवाऽऽगतश्चाहं नगरं नागसाह्वयम्।३५
प्रणम्यमातरंमूर्ध्ना संस्थितोऽथकृताञ्जलिः।तामब्रुवंसुतप्ताङ्गीं पुत्रशोकेनकर्शिताम्।३६
मातस्त्वया किमाहूतो मनसाऽहं तपस्विनि!।आज्ञापय महत्कार्यं दासोऽस्मि करवाणि किम्।३७
त्वम्मे तीर्थपरं मातर्दैवश्च प्रथितः परः।आगतश्चिन्तितश्चाऽत्रब्रूहिकृत्यं तव प्रियम्।३८

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाऽहंस्थितस्तत्रमातुरग्रे यदामुने!। तदासामामुवाचेदंपश्यन्तीभीष्ममन्तिके।३९
पुत्र! तेऽद्य मृतो भ्राता पीडितो राजयक्ष्मणा। तेनाऽहं दुःखिता जाता वंशच्छेदभयादिह।४०
तस्मात्त्वमद्यमेधाविन्मयाऽऽहूतःसमाधिना। गाङ्गेयस्यमतेनाऽत्र पाराशर्यार्थसिद्धये।४१
कुलंस्थापय नष्टंत्वं शन्तनोर्नामकारणात्। रक्षमां दुःखतःकृष्णवंशच्छेदोद्भवाद्द्रुतम्।४२
काशिराजसुते भार्ये भ्रातुस्तव यवीयसः। साधोर्विचित्रवीर्यस्य रूपयौवनभूषिते।४३
ताभ्यां सङ्गम्य मेधाविन्पुत्रोत्पादनकं कुरु। रक्षस्व भारतं वंशं नाऽत्र दोषोऽस्ति कर्हिचित्।४४

व्यास उवाच

इतिमातुर्वचःश्रुत्वाजातश्चिन्तातुरोह्ययम्। लज्जयाऽऽकुलचित्तस्तामब्रुवंविनयानतः।४५
मातः पापाधिकं कर्म परदाराभिमर्शनम्। ज्ञात्वा धर्मपथं सम्यक्करोमि कथमादरात्।४६
तथा यवीयसोभ्रातुर्वधूः कन्या प्रकीर्तिता। व्यभिचारं कथं कुर्यामधीत्य निगमानहम्।४७
अन्यायेन न कर्तव्यं सर्वथाकुलरक्षणम्। न तरन्ति हि संसारात्पितरः पापकारिणः।४८
लोकानामुपदेष्टा यः पुराणानांप्रवर्त्तकः। स कथंकुत्सितं कर्मज्ञात्वा कुर्यान्महाद्भुतम्।४९
पुनरुक्तो ह्यहं मात्रा रुदत्या भृशमन्तिके। पुत्रशोकातितप्ताया वंशरक्षणकाम्यया।५०
पाराशर्य! न ते दोषो वचनान्मम पुत्रक!। गुरूणां वचनं तथ्यं सदोषमपि मानवैः।५१
कर्तव्यमविचार्यैव शिष्टाचारप्रमाणतः। वचनं कुरु मे पुत्र! न ते दोषोऽस्ति मानद!।५२
पुत्रस्य जननं कृत्वा सुखिनीं कुरु मातरम्। विरोषेण तु सन्तप्तां मग्नां शोकार्णवे सुत!।५३
इति तां ब्रुवतीं श्रुत्वा तदा सुरनदीसुतः। मामुवाच विशेषज्ञः सूक्ष्मधर्मस्य निर्णये।५४
द्वैपायन! विचारोऽत्र न कर्तव्यस्त्वयाऽनघ। मातुर्ववचनमादाय विहरस्वयथासुखम्।५५

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा मातुश्च प्रार्थनं तथा। निःशङ्कोऽहं तदा जातः कार्येतस्मिञ्जुगुप्सिते।५६
अम्बिकायांप्रवृत्तोऽहमृतुमत्यांमुदानिशि। मयिविमनसायांतुतापसेकुत्सिते भृशम्।५७
शप्ता मया सा सुश्रोणी प्रसङ्गे प्रथमेतदा। अन्धस्तेभवितापुत्रोयतो नेत्रे निमीलिते।५८
द्वितीयेऽह्नि मुनिश्रेष्ठ! पृष्टो मात्रा रहः पुनः। भविष्यतिसुतःपुत्र काशिराजसुतोदरे।५९
मयोक्ता जननी तत्र व्रीडानम्रमुखेन ह। विनेत्रा भविता पुत्रो मातः शापान्ममैव हि।६०
तया निर्भर्त्सितस्तत्र कठोरवचसा मुने!। कथंपुत्रत्वयाशप्तापुत्रस्तेऽन्धो भविष्यति।६१

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे अम्बिकायांनियोगात्पुत्रोत्पादनायगर्भधारणवर्णनंनामचतुर्विंशोऽध्यायः॥२४॥

* पञ्चविंशोऽध्यायः *

धृतराष्ट्रपाण्डुविदुराणांसमुत्पत्तिवर्णनम्

व्यास उवाच

वासवी चकिताजाता श्रुत्वामे वाक्यमीदृशम्। दाशेयीमामुवाचेदंपुत्रार्थे भृशमातुरा।१
अम्बालिकावधूर्धन्याकाशिराजसुतासुत। भार्याविचित्रवीर्यस्य विधवाशोकसंयुता।२
सर्वलक्षणसम्पन्ना रूपयौवनशालिनी। तस्यांजनय सङ्गं त्वं कृत्वापुत्रं सुसम्मतम्।३
नान्धो राजाऽधिकारी स्यात्तस्मात्पुत्रं मनोहरम्। उत्पादय राजपुत्र्यां वचनान्मम मानद!।४
इत्युक्तोऽहं तदा मात्रा स्थितस्तत्र गजाह्वये। यावदृतुमती जाता काशिराजसुता मुने।५

एकान्ते शयनागारेप्राप्ता सा मम सन्निधौ। लज्जमानासुकेशान्तास्वश्वश्रूवचनात्तदा।६
दृष्ट्वा मां जटिलंदान्तं तापसंरसवर्जितम्। सा स्वेदवदनाजाता पाण्डुराविमनाभृशम्।७
कुपितोऽहंतदादृष्ट्वाकामिनींनिशिसङ्गताम्। वेपमानांस्थिताम्पार्श्वे ह्यब्रुवं तामहंरुषा।८
दृष्ट्वा मां यदि गर्वेण पाण्डुवर्णा समावृता। अतस्ते तनयःपाण्डुर्भविष्यति सुमध्यमे।९
इत्युक्त्वा निशि तत्रैव स्थितोबालिकया युतः। भुक्त्वातां निशि निर्यातः स्थानमापृच्छ्य मातरम्।१०
ततस्ताभ्यां सुतौ काले प्रसूतावन्धपाण्डुरौ। धृतराष्ट्रश्चाण्डुश्च प्रथितौ सम्बभूवतुः।११
मातामे विमनाजातातादृशौवीक्ष्यतौसुतौ। ततःसम्वत्सरस्यान्तेमामाहूयतदाब्रवीत्।१२
द्वैपायनसुतौ जातौ राज्ययोग्यौ न तादृशौ। अन्यं मनोहरं पुत्रं समुत्पादय मेप्रियम्।१३
तथेति सा मया प्रोक्ता मुदिता जननी तदा। अम्बिकांप्रार्थयामाससुतार्थेकालआगते।१४
पुत्रि!व्यासं समालिङ्ग्यपुत्रमुत्पादयाऽद्भुतम्। कुरु वंशस्यकर्तारंराज्ययोग्यंवरानने।१५
वधूर्लज्जान्विता किञ्चिन्नोवाच वचनं तदा। गतोऽहं शयनागारे मातुस्तद्वचनान्निशि।१६
दासी विचित्रवीर्यस्य रूपयौवनसंयुता। प्रेषिताऽम्बिकयात्वत्रविचित्राभरणाम्बरा।१७
चन्दनारक्तदेहा सा पुष्पमालाविभूषिता। आयाता हावसंयुक्ता सुकेशी हंसगामिनी।१८
पर्यङ्केमां समावेश्य संस्थिता प्रेमसंयुता। प्रसन्नोऽहं तदा तस्याविलासेनाऽभवंमुने।१९
रात्रौ संक्रीडितं प्रेम्णा तया सह मया भृशम्। वरो दत्तः पुनस्तस्य प्रसन्नेनतुनारद।२०
सुभगे! भविता पुत्रः सर्वलक्षणसंयुतः। सुरूपः सर्वधर्मज्ञः सत्यवादी शमे रतः।२१
स तदा विदुरो जातस्त्रयःपुत्रा मयाऽभवन्। मया वृद्धिंगतासाधो! परक्षेत्रोद्भवे मम।२२
विस्तृतः शुकसम्बन्धी विरहः शोककारणम्। दृष्टा त्रीन्स्वसुतान्कामं वीर्यवान्वीर्यसम्मतान्।२३
मायाबलवती ब्रह्मन्दुस्त्यजा ह्यकृतात्मभिः। अरूपाचनिरालम्बाज्ञानिनामपिमोहिनी।२४
मातरि स्नेहसम्बद्धं तथा पुत्रेषु सम्वृतम्। न मेचित्तम्वने शान्तिमगान्मुनिवरोत्तम।२५
दोलारूढं मनो जातं कदाचिद्धस्तिनापुरे। पुनः सरस्वतीतीरे नचैकत्र व्यवस्थितिः।२६
कदाचिच्चिन्तयज्ज्ञानं मानसे प्रतिभाति वै। केऽमी पुत्राःक्वमोहोऽयंनश्राद्धार्हामृतस्यमे।२७
व्यभिचारोद्भवाःकिंमे सुखदाःस्युः सुताः किल। माया बलवती मोहं वितनोति हि मानसे।२८
जानन्मोहान्धकूपेऽस्मिन्पतितोऽहंमृषा मुने। इत्थकुर्वंरहस्तापंकदाचित्सुसमाहितः।२९
राज्यं प्राप ततः पाण्डुर्बलवान्भीष्मसम्मतः। तदा मम मनो जातं प्रसन्नं सुतकारणात्।३०
कुन्ती माद्री सुरूपे द्वे भार्ये तस्य बभूवतुः। शूरसेनसुता कुन्ती मद्रराजसुताऽपरा।३१
स शापं द्विजतः प्राप्यकामिनीद्वयसंयुतः। पाण्डुर्निर्वेदमापन्नस्त्यक्त्वा राज्यंवनंगतः।३२
तदा मामाविशच्छोकः श्रुत्वा पुत्रं वने स्थितम्। गतोऽहं तत्र यत्राऽसौ भार्याभ्यां सह संस्थितः।३३
तमाश्वास्य वने पाण्डुम्पुनः प्राप्तो गजाह्वये। धृतराष्ट्रं समाभाष्य ह्यगमं ब्रह्मजातटे।३४
क्षेत्रजान्पञ्चपुत्रान्ससमुत्पाद्यवनाश्रमे। धर्मतो वायुतः शक्रादश्विभ्यां पञ्चपाण्डवान्।३५
युधिष्ठिरोभीमसेनस्तथैवाऽर्जुनइत्यपि। कुन्तीपुत्राःसमाख्याताधर्माऽनिलसुरेशजाः।३६
नकुलः सहदेवश्च मद्रराजसुतासुतौ। कदाचित्तु रहो माद्रीं समालिङ्ग्य महीपतिः।३७
मृतः शापात्तु मुनिभिः संस्कृतो हुतभुङ्मुखे। माद्री तत्र सती भूत्वा प्रविष्टा पतिना सह।३८
स्थिता पुत्रयुता कुन्ती ज्वलिते जातवेदसि। मुनयः सुतसंयुक्तां शूरसेनसुतांतदा।३९
दुःखितां पतिहीनां तामानिन्युर्गजसाह्वये। समर्पिताऽथ भीष्माय विदुरायमहात्मने।४०
श्रुत्वाऽहंसुखदुःखाभ्यां पीडितस्तु परात्मभिः। भीष्मेण पालिताःपुत्रा पाण्डोरिति विचिन्त्यते।४१

विदुरेण तथा प्रीत्या धृतराष्ट्रेणधीमता। दुर्योधनादयस्तस्य पुत्रा ये क्रूरमानसाः।४२
एकत्रस्थितिमापन्नाविरोधंचक्रुरद्भुतम् । द्रोणाचार्यस्तु सम्प्राप्तस्तत्रभीष्मेणमानितः।४३
अध्यापनायपुत्राणांपुरेतस्मिन्निवासितः। कर्णःकुन्त्यापरित्यक्तोजातमात्रःशिशुर्यदा।४४
येन पालितोऽनद्यां प्राप्तश्चाधिरथेन ह। दुर्योधनप्रियश्चाऽभूत्कर्णः शूरतमस्तथा।४५
परस्परम्विरोधोऽभूद्धीमदुर्योधनादिषु । धृतराष्ट्रस्तु सञ्चिन्त्य क्लेशं पुत्रेषु तेषु च।४६
निवासं कल्पयामास पाण्डवानां महात्मनाम्। विरोधशमनायैव नगरे वारणावते।४७
दुर्योधनेनतत्रैव द्रोहाज्जतुगृहाणि वै। कारितानि च दिव्यानि प्रेष्य मित्रम्पुरोचनम्।४८
श्रुत्वा जतुगृहे दग्धान्पाण्डवान्पृथया च तान्। पौत्रभावान्मुनिश्रेष्ठ! मग्नोऽहं व्यसनार्णवे।४९
शोकातुरो भृशं शून्ये वने पश्यन्नहर्निशम्। दृष्ट्वा मयैकचक्रायां पाण्डवा दुःखकर्शिताः।५०
ततस्तुष्टमनाश्चाऽहंजातःपार्थान्विलोक्य च। प्रेरितास्ते मया तूर्णंद्रुपदस्यपुरम्प्रति।५१
ते गतास्तत्र दुःखार्ताविप्रवेषधराःकृशाः। मृगचर्मपरीधाना सभायांसंस्थितास्तदा।५२
कृत्वापराक्रमंजिष्णुःसजित्वाद्रुपदात्मजाम्। चक्रुर्विवाहंमानिन्यापञ्चैवमातृवाक्यतः।५३
दृष्ट्वा विवाहं तेषान्तु मुदितोऽहं भृशं तदा। ततोनागाह्वये प्राप्ताःपाञ्चालीसहितामुने!।५४
निवासं खाण्डवप्रस्थं धृतराष्ट्रेण कल्पितम्। पाण्डवानां द्विजश्रेष्ठ वसुदेवसुतेन वै।५५
तर्पितः पावकस्तत्र विष्णुना सह जिष्णुना। राजसूयः कृतो यज्ञस्तदाऽहं मुदितोऽभवम्।५६
दृष्ट्वाऽथ विभवं तेषां तथामयकृतांसभाम्। दुर्योधनोऽतिसन्तप्तोदुरोदरमथाऽकरोत्।५७
दुर्द्यूतवेदी शकुनिरनक्षज्ञश्च धर्मजः। हृतं राज्यं धनं सर्वं याज्ञसेनी च क्लेशिता।५८
वनेद्वादशवर्षाणिपाण्डवास्तेविवासिताः। पाञ्चालीसहितास्तेनदुःखंमेजनितम्भृशम्।५९
एवं नारद! संसारं सुखदुःखात्मके भृशम्। निमग्नोऽहं भ्रमेणैव जानन्धर्मं सनातनम्।६०

कोऽहं कस्य सुतास्तेऽमी का माता किं सुखं पुनः ।
येन मे हृदयं मोहाद् भ्रमतीति दिवानिशम् ।।६१।।
किं करोमि क्व गच्छामि सन्तोषो नाऽधिगच्छति ।
दोलारूढं मनो मेऽत्र चञ्चलं न स्थिरम्भवेत् ।।६२।।

सर्वज्ञोऽसिमुनिश्रेष्ठ! सन्देहं मे निवर्तय। तथाकुरुयथाऽहं स्यांसुखितोविगतज्वरः।६३

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां षष्ठस्कन्धे नारदाय व्यासमोहवर्णनं नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ।।२५।।

* षड्विंशोऽध्यायः *

व्यासनारदसम्वादेनारदेनस्वकीयपुरातनमोहकारणवर्णनम्

व्यास उवाच

इतिमेवचनंश्रुत्वा नारदः परमार्थवित्। मामाहच स्मितं कृत्वा पृच्छन्तं मोहकारणम्। १

नारद उवाच

पाराशर्य! पुराणज्ञ! किं पृच्छसि सुनिश्चयम्। संसारेऽस्मिन्विना मोहं कोऽपि नास्ति शरीरवान्। २
ब्रह्माविष्णुस्तथारुद्रःसनकःकपिलस्तथा । माययावेष्टिताःसर्वे भ्रमन्तिंभववर्त्मनि। ३
ज्ञानिनंमांजनोवेत्तिभ्रान्तोऽहंसर्वलोकवत्। शृणु मे पूर्ववृत्तान्तंप्रब्रवीमिसुनिश्चितम्। ४
दुःखं मया यथा पूर्वमनुभूतम्महत्तरम्। स्वकृतेन च मोहेन भार्यार्थे वासवीसुत!।५
एकदा पर्वतश्चाऽहं देवलोकान्महीतलम्। प्राप्तो विलोकनार्थाय भारतं खण्डमुत्तमम्। ६

भ्रमन्तौ सहितावुर्व्यां पश्यन्तौ तीर्थमण्डलम्। पावनानि च स्थानानि मुनीनामाश्रमाञ्छुभान्।७
शपथं देवलोकात्तु कृत्वा पूर्वं परस्परम्। चलितौ समयं चेमं सम्मन्त्र्य निश्चयेन वै।८
चित्तवृत्तिस्तुवक्तव्यायादृशीयस्यजायते।शुभावाऽप्यशुभावाऽपिन गोप्तव्याकदाचन।९

भोजनेच्छा धनेच्छाऽपि रतीच्छा वा भवेदपि।
यादृशी यस्य चित्ते तु कथनीया परस्परम् ।।१०।।
इत्यावां समयं कृत्वा स्वर्गाद् भूलोकमागतौ।
एकचित्तौ मुनीभूतौ विचरन्तौ यथेच्छया ।।११।।

एवं भ्रमन्तौ लोकेऽस्मिन्ग्रीष्मान्तेसमुपागते। सञ्जयस्यपुरं रम्यंसम्प्राप्तौनृपतेःपुनः।१२
तेन सम्पूजितौ भक्त्या राज्ञा सम्मानितौ भृशम्। स्थितौ तत्र गृहे तस्य चातुर्मास्यं महात्मनः।१३
वार्षिकाश्चतुरो मासा दुर्गमाःपथिसर्वदा। तस्मादेकत्रविबुधैःस्थातव्यमितिनिश्चयः।१४
अष्टौमासांस्तुप्रवसेत्सदाकार्यवशाद्‌द्विजः। वर्षाकालेनगन्तव्यं प्रवासेसुखमिच्छता।१५
इति सञ्चिन्त्य मनसा सञ्जयस्य गृहे तदा। संस्थितौ मानितौ राज्ञा कृतातिथ्यौ महात्मना।१६
दमयन्तीति विख्यातातस्य पुत्री महीपतेः। आज्ञप्ता परिचर्यार्थंसुदती सुन्दरीभृशम्।१७
विवेकज्ञा विशालाक्षी राजपुत्रीकृतोद्यमा। सेवनं सर्वकाले च व्यदधादुभयोरपि।१८
स्नानार्थमुदकं काले भोजनम्मृष्टमायतम्। मुखवासं तथा चान्यं यदिष्टं तद्ददातिसा।१९
मनोऽभिलषितान्कामानुभयोरपि कन्यका। व्यजनासनशय्यादीन्वाञ्छितानप्यकल्पयत्।२०
एवं संसेव्यमानौ तु स्थितौ राज्ञो गृहे किल। वेदाध्ययनसंशीलावावां वेदव्रते रतौ।२१
अहं वीणाकरेकृत्वासाधयित्वास्वरोत्तमम्। गायत्रं सामसुस्वादमगांकर्णरसायनम्।२२
राजपुत्री तु तच्छ्रुत्वा सामगानम्मनोहरम्। बभूवमयिरागाढ्या प्रीतियुक्ता विशारदा।२३
दिनेदिनेऽनुरागोऽस्यामयिवृद्धिङ्गतःपरः। ममापिप्रीतियुक्तायां मनोजातंस्पृहापरम्।२४

मम तस्य च सा कन्या भोजनादिषु कर्हिचित्।
अकरोदन्तरं किञ्चित्सेवाभेदं रसान्विता ।।२५।।

स्नानायोष्णजलंमह्यंपर्वताय च शीतलम्। दधिमह्यन्तथातक्रं पर्वतायाऽभ्यकल्पयत्।२६
शयनास्तरणं शुभ्रं मदर्थे पर्यकल्पयत्। प्रीत्या परमया यद्वत्पर्वताय न तादृशम्।२७
विलोकयति मां प्रेम्णा सुन्दरी न च पर्वतम्। ततोऽस्यास्तादृशं दृष्ट्वा पर्वतः प्रेमकारणम्।२८
मनसा चिन्तयामासकिमेतदितिविस्मितः। पप्रच्छ मां रहः सम्यग्ब्रूहिनारदसर्वथा।२९
राजपुत्री त्वयिप्रेमकरोतिमुदिताभृशम्। ददातिभक्ष्यभोज्यानिस्नेहयुक्ता समन्ततः।३०
न यथा मयिभेदोऽत्रसन्देहंजनयत्यसौ। मन्यते त्वां पतिं कर्तुं सर्वथासञ्जयात्मजा।३१
तवाऽपि तादृशम्भावं जानामि लक्षणैरहम्। नेत्रवक्त्रविकारैश्च ज्ञायतेप्रीतिकारणम्।३२
सत्यम्वदन तेमिथ्यावक्तव्यंवचनम्मुने!। स्वर्गतःसमयं कृत्वा चलितौ संस्मराऽधुना।३३

नारद उवाच

पृष्टोऽहं पर्वतेनेदं कारणं तु हठाद्यदा। तदाऽहं ह्रीसमाक्रान्तः सञ्जातश्चाब्रुवम्मुनः।३४
पर्वतैषा विशालाक्षी पतिं मा कर्तुमुद्यता। ममापिमानसोभावो वर्ततेऽस्यांविशेषतः।३५
तच्छ्रुत्वा वचनं सत्यंपर्वतःकोपसंयुतः। मामुवाचमुनिर्वाक्यं धिग्धिगिति पुनःपुनः।३६
प्रथमं शपथान्कृत्वा वञ्चितोऽहं त्वया यतः। भव वानरवक्त्रस्त्वं शापाच्च मम मित्रध्रुक्।३७
इति शप्तस्तु तेनाऽहं कुपितेन महात्मना। सहसा ह्यभवं क्रूरःशाखामृगमुखस्तदा।३८
मयाऽपि न कृता तस्मिन्क्षमा तु भगिनीसुते। सोऽपि शप्तोऽतिकोपाद्वै मा स्वर्गे ते गतिः किल।३९

स्वल्पेऽपराधे यस्मान्मां शप्तवानसि पर्वत! ।
तस्मात्त्वाऽपि मन्दात्मन्मृत्युलोके स्थितिः किल ।।४०।।

पर्वतस्तु गतस्तस्मान्नगराद्विमनाभृशम्। अहं वानरवक्त्रस्तु सञ्जातस्तत्क्षणादपि।४१
दृष्ट्वा मां वानरं क्रूरं राजपुत्री विलक्षणा। विमनाऽतीव सञ्जातावीणाश्रवणलालसा।४२

व्यास उवाच

ततः किमभवद्ब्रह्मन्कथं शापोनिवर्तितः। मानुषास्यःपुनर्जातोभवान्ब्रूहि यथाविधि।४३
पर्वतः क्व गतो भूयः सङ्गमो युवयोरभूत्। कदा कुत्र कथं सर्वं विस्तरेण वदस्व।४४

नारद उवाच

किं ब्रवीमि महाभाग! मायायाश्चरितं महत्। दुःखितोऽहंभृशं तत्र पर्वते रुषिते गते।४५
पुनः सेवापराऽत्यर्थं राजपुत्री ममाऽभवत्। गतेऽथ पर्वते कामं स्थितस्तत्रैवसद्मनि।४६
अहं दुःखान्वितो दीनस्तथा वानरवन्मुखः। विशेषेण तु चिन्तार्तः किं मे स्यादिति चिन्तयन्।४७
सञ्जयोऽथसुतांदृष्ट्वा किञ्चित्प्रकटयौवनाम्। विवाहार्थे राजसुतामपृच्छत्सचिवन्तदा।४८
विवाहकालःसम्प्राप्तःसुतायाममम साम्प्रतम्। योग्यं वरं मम ब्रूहि राजपुत्रंसुसंमतम्।४६
रूपौदार्यगुणैर्युक्तं शूरं सुकुलसंभवम्। विवाहं विधिवत्पुत्र्याःकरोमिकिलसाम्प्रतम्।५०
प्रधानस्त्वब्रवीद्राजन् राजपुत्राह्यनेकशः। वर्तन्तेभुविपुत्र्यास्तेयोग्याःसर्वगुणान्विताः।५१
यस्मिन्रुचिस्ते राजेन्द्र! तमाहूय नृपात्मजम्। देहि कन्यां धनं भूरि हस्त्यश्वरथसंयुतम्।५२

नारद उवाच

पितुश्चिकीर्षितं ज्ञात्वा दमयन्तीतदानृपम्। धात्र्यामुखेनवाक्यज्ञातमुवाचरहःस्थितम्।५३

धात्र्युवाच

दमयन्तीमहाराजपुत्री ते मामथाब्रवीत्। पितरं ब्रूहि धात्रेयि! वचनान्मेसुखान्वितम्।५४
मया वृतोऽयं मेधावी नारदो महतीयुतः। नारदोहितयाकामंनाऽन्यःकोऽपिप्रियोमम।५५
कुरुमे वाञ्छितं तात! विवाहं मुनिना सह। नान्यं वरिष्ये धर्मज्ञ! नारदं तु पतिंविना।५६
मग्नाऽहं नादसिन्धौ वै नक्रहीने रसात्मके। अक्षारे सुखसम्पूर्णे तिमिङ्गिलविवर्जिते।५७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे दमयन्तीविवाहप्रस्ताववर्णनं नाम षड्विंशोऽध्यायः ।।२६।।

* सप्तविंशोऽध्यायः *

नारदेनसहदमयन्तीविवाहवर्णनं पुनर्नारदपर्वतयोः शापनिवृत्तिश्च

नारद उवाच

तत्पुत्र्या वचनं श्रुत्वा राजा धात्रीमुखात्ततः। भार्याम्प्रोवाच कैकेयीं समीपस्थां सुलोचनाम्। १

नारद उवाच

यदुक्तं वचनं कान्ते! धात्र्या तत्तुत्वयाश्रुतम्। वृतोऽयंनारदःकामंमुनिर्वानरवक्त्रभाक्। २
किमिदंचिन्तितंपुत्र्या बुद्धिहीनंविचेष्टितम्। कथमस्मैमयादेयाकन्याहरिमुखायसा। ३
क्वाऽसौभिक्षुःकुरूपःक्वदमयन्तीममाऽऽत्मजा। विपरीतमिदं कार्यं न विधेयंकदाचन। ४
तामेकान्तेसुकेशान्ते!निवारयहठात्सुताम्। युक्त्या मुनिरतां मुग्धांशास्त्रवृद्धानुसारया। ५
इति भर्तृवचः श्रुत्वा जननीतामथाऽब्रवीत्। क्व तेरूपंमुनिःक्वासौवानरास्योऽधनःपुनः। ६
कथं मोहमवाप्ताऽसिभिक्षुके चतुराः पुनः। लताकोमलदेहा त्वं भस्मरूक्षतनुस्त्वयम्। ७
वार्ता वानरवक्त्रेणकथंयुक्तातवाऽनघे। काप्रीतिःकुत्सितेपुंसिभविष्यतिशुचिस्मिते। ८

वरस्ते राजपुत्रोऽस्तुमा कुरुत्वंवृथाहठम्। पितातेदुःखमाप्नोतिश्रुत्वाधात्रीमुखाद्वचः।९
लग्नां बुब्बूलवृक्षेण कोमलां मालतीलताम्। दृष्ट्वा कस्य मनः खेदं चतुरस्य नगच्छति।१०
दासेरकाय ताम्बूलीदलानि कोमलानि कः। ददाति भक्षणार्थायमूर्खोऽपिधरणीतले।११
वीक्ष्य त्वां करसंल्लग्नां नारदस्य समीपतः। विवाहे वर्तमाने तु कस्यचेतो नदह्यति।१२
कुमुखेन समं वार्ता न रुचिंजनयत्यतः। आमरणात्तुकथंकालःक्षपितव्यस्त्वयाऽमुना।१३

नारद उवाच

इति मातुर्वचः श्रुत्वा दमयन्ती भृशातुरा। मातरं प्राह तन्वङ्गी मयि सा कृतनिश्चया।१४
किं मुखेन च रूपेणमूर्खस्यचधनेनकिम्। किंराज्येनाविदग्धस्यरसमार्गाविदोऽस्यच।१५

हरिण्योऽपि वने धन्या या नादेन विमोहिताः।
मातः प्राणान्प्रयच्छन्ति धिङ् मूर्खान्मानुषान्भुवि ॥१६॥
नारदो वेत्ति यां विद्यां मातः! सप्तस्वरात्मिकाम्।
तृतीयः कोऽपि नो वेद शिवादन्यः पुमान्किल ॥१७॥

मूर्खेण सह सम्वासो मरणं तत्क्षणे क्षणे। रुपवान्धनवांस्त्याज्योगुणहीनोनरःसदा।१८
धिङ्मैत्रीं मूर्खभूपाले वृथागर्वसमन्विते। गुणज्ञे भिक्षुके श्रेष्ठावचनात्सुखदायिनी।१९
स्वरज्ञो ग्रामवित्कामं मूर्छनाज्ञानभेदभाक्। दुर्लभः पुरुषश्चाऽष्टरसज्ञो दुर्बलोऽपि वै।२०
यथा नयति कैलासं गङ्गा चैव सरस्वती। तथा नयति कैलासं स्वरज्ञानविशारदः।२१
स्वरमानं तु यो वेद स देवो मानुषोऽपि सन्। सप्तभेदं न यो वेद सपशुःसुरराडपि।२२
मूर्छनातानमार्गं तु श्रुत्वा मोदं न याति यः। स पशुः सर्वथा ज्ञेयोहरिणाःपशवोनहि।२३
वरं विषधरःसर्पः श्रुत्वानादंमनोहरम्। अश्रोत्रोऽपिमुदंयातिधिक्सकर्णांश्चमानवान्।२४
बालोऽपि सुस्वरंगेयंश्रुत्वामुदितमानसः। जायतेकिन्तुयेवृद्धानजानन्तिधिगस्तुतान्।२५
पितामेकिं नजानातिनारदस्यगुणान्बहून्। द्वितीयःसामगोनास्तित्रिषुलोकेषुतत्समः।२६
तस्मादसौ मया नूनं वृतःपूर्वंसमागमात्। पश्चाच्छापवशाज्ञातोवानरास्योगुणाकरः।२७
किन्नरा न प्रियाः कस्य भवन्ति तुरगाननाः। गानविद्यासमायुक्ताः किंमुखेनवरेण ह।२८
पितरम्ब्रूहि मे मातर्वृतोऽयं मुनिसत्तमः। तस्मात्त्वमाग्रहं त्यक्त्वादेहितस्मैचमांमुदा।२९

नारद उवाच

इति पुत्र्या वचः श्रुत्वा राज्ञी राज्ञे न्यवेदयत्। आग्रहं सुन्दरी ज्ञात्वा सुताया नारदे मुने।३०
विवाहं कुरु राजेन्द्र! दमयन्त्याः शुभेदिने। मुनिना सचसर्वज्ञोवृतोऽसौमनसाऽनया।३१

नारद उवाच

इति सञ्चोदितोराज्ञासञ्जयःपृथिवीपतिः। चकार विधिवत्सर्वंविधिंवैवाहिकंततः।३२
एवंदारग्रहं कृत्वा वानरास्यः परन्तप!। स्थितस्तत्रैव मनसादह्यमानेन चाऽन्वहम्।३३
यदाऽऽगच्छद्राजसुता सेवार्थं मम सन्निधौ। अभवं दुःखसन्तप्तस्तदाऽहं वानराननः।३४
दमयन्ती तु माम्वीक्ष्य प्रफुल्लवदनाम्बुजा। शोकंवानरवक्त्रत्वान्न चकार कदाचन।३५
एवं गच्छति काले तु सहसा पर्वतो मुनिः। कुर्वंस्तीर्थान्यनेकानि द्रष्टुं मां समुपागतः।३६
मयाऽतिमानितःप्रेम्णा पूजितश्च यथाविधि। आसीनआसने दिव्ये वीक्ष्य मां दुःखितो ह्यभूत्।३७
कृतदारं वानरास्यं दीनं चिन्तातुरम्भृशम्। दयावान्मामुवाचेदंपर्वतो मातुलं कृशम्।३८
मया नारद! कोपात्त्वं शप्तोऽसिमुनिसत्तम!। निष्कृतिं तस्य शापस्य करोम्यद्य निशामय।३९
भवत्वं चारुवदनो मम पुण्येननारद!। दृष्ट्वा राजसुतां चित्ते कृपा जाता ममाऽधुना।४०

नारद उवाच

मयाऽपि प्रवणं चित्तं कृत्वा श्रुत्वाऽस्य भाषितम् ।
अनुग्रहः कृतः सद्यस्तस्य शापस्य तत्क्षणात् ।।४१।।

भागिनेय! तवाऽप्यस्तुगमनं सुरसद्मनि। शापस्याऽनुग्रहःकामंकृतोऽयं पर्वताऽधुना।४२

नारद उवाच

जातोऽहं चारुवदनो वचनात्तस्यपश्यतः। राजपुत्री तु सन्तुष्टा मातरं प्राह सत्वरम्।४३
मातस्तेसुमुखो जातोजामाता चमहाद्युतिः। वचनात्पर्वतस्याऽद्यमुक्तशापोमुनेरभूत्।४४
तच्छ्रुत्वा वचनंराज्ञाकथितंतत्रराजनि। ययौ द्रष्टुं मुनिं तत्र सञ्जयःप्रीतिमांस्तदा।४५
धनं समर्पितं राज्ञा सन्तुष्टेन तदा महत्। मह्यञ्च भागिनेयाय पारिबर्हं महात्मना।४६
एतत्ते सर्वमाख्यातं वर्तनं यत्पुरातनम्। मायाया बलमाहात्म्यं ह्यनुभूतं यथा मया।४७
संसारेऽस्मिन्महाभाग! मयागुणकृतेऽनृते। तनुभृत्तु सुखी नास्ति न भूतो न भविष्यति।४८
कामक्रोधौ तथा लोभो मत्सरो ममतातथा। अहङ्कारो मदःकेनजिताःसर्वेमहाबलाः।४९
सत्त्वंरजस्तमश्चैव गुणास्त्रय इमे किल। कारणं प्राणिनां देहसम्भवे सर्वथामुने!।५०
कस्मिंश्चित्समये व्यास! वनेऽहं विष्णुना सह। गच्छन्हास्यविनोदेन स्त्रीभावङ्गमितः क्षणात्।५१
राजपत्नीत्वमापन्नो मायाबलविमोहितः। पुत्रा प्रसूता बहवो गेहे तस्य नृपस्य ह।५२

व्यास उवाच

संशयोऽयंमहान्साधो! श्रुत्वातेवचनंकिल। कथंनारीत्वमापन्नस्त्वंमुने!ज्ञानवान्भृशम्।५३
कथं च पुरुषो जातोब्रूहिसर्वमशेषतः। कथं पुत्रास्त्वयाजाताःकस्य राज्ञो गृहेऽञ्जसा।५४
एतदाख्याहि चरितं मायाया महदद्भुतम्। मोहितञ्च यथा सर्वमिदंस्थावरजङ्गमम्।५५
न तृप्तिमधिगच्छामिश्रृण्वंस्तवकथामृतम्। सर्वग्रन्थार्थतत्त्वं च सर्वसंशयनाशनम्।५६

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे बलान्नारदस्यमायादमयन्त्यासहविवाहवर्णनं नाम सप्तविंशोऽध्यायः।।२७।।

* अष्टाविंशोऽध्यायः *

नारदेन स्वकीयमोहवर्णनेविष्णुलोकगमनं स्वस्यस्त्रीत्वप्राप्तिप्रसङ्गवर्णनम्

नारद उवाच

निशामय मुनिश्रेष्ठ! गदतो मम सत्कथाम्। मायाबलं सुदुर्ज्ञेयं मुनिभिर्योगवित्तमैः।१
मायया मोहितं सर्वं जगस्थावरजङ्गमम्। ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तमजया दुर्विभाव्यया।२
कदाचित्सत्यलोकाद्वै श्वेतद्वीपे मनोहरे। गतोऽहंदर्शनाकाङ्क्षी हरेरद्भुतकर्मणः।३
वादयन्महतींवीणां स्वरतानविभूषिताम्। गायत्रंगायमानस्तु सामसप्तस्वरान्वितम्।४
दृष्टो मया देवदेवश्चक्रपाणिर्गदाधरः। कौस्तुभोद्भासितोरस्को मेघश्यामश्चतुर्भुजः।५
पीताम्बरपरीधानो मुकुटाङ्गदराजितः। लक्ष्म्या सह विलासिन्याक्रीडमानोमुदायुतः।६
वीक्ष्यमांकमलादेवीगताऽन्तर्धानमन्तिकात्। सर्वलक्षणसम्पन्ना सर्वभूषणभूषिता।७
नारीणां प्रवरा कान्ता रूपयौवनगर्विता। सुप्रिया वासुदेवस्य वरचामीकरप्रभा।८

अन्तर्गृह गतां दृष्ट्वा सिन्धुजां व्यञ्जनान्विताम् ।
मया पृष्टो देवदेवो वनमाली जगत्प्रभुः ।।९।।

भववन्देवदेवेश ! पद्मनाभ सुरारिहन् । कथं च मा गता दृष्ट्वा मामागच्छन्तमन्तिकात् ।१०
नाहंविटो नवा धूर्तस्तापसोऽहंजगद्गुरो ! । जितेन्द्रियोजितक्रोधोजितमायोजनार्दन ।११

नारद उवाच

निशम्यवचनंकिञ्चिद्गर्वयुक्तंजनार्दनः । उवाच मां स्मितं कृत्वा वीणावन्मधुरांगिरम् ।१२

विष्णुरुवाच

नारदैवम्विधा नीतिर्न स्थातव्यं कदाचन । पतिं विनाऽन्यसान्निध्ये कस्यचिद्योषया क्वचित् ।१३
मायासुदुर्जयाविद्वन्योगिभिर्जितमारुतैः । सांख्यविद्भिर्निराहारैस्तापसैश्चजितेन्द्रियैः ।१४
देवैश्च मुनिशार्दूल ! यत्त्वयोक्तंवचोऽधुना । जितमायोऽस्मि गीतज्ञ ! नैवंवाच्यंकदाचन ।१५

नाऽहं शिवो न वा ब्रह्मा जेतुं तां प्रभवोऽप्यजाम् ।
मुनयः सनकाद्याश्च कस्त्वं केऽन्ये क्षमा जये ।।१६।।

देवदेहं नृदेहं वा तिर्यग्देहमथापि वा । विभृयाद्यः शरीरं च स कथं तां जयेदजाम् ।१७
त्रियुतस्तांकथंमायांजेतुंशक्तःपुमान्भवेत् । वेदविद्योगविद्वाऽपिसर्वज्ञोविजितेन्द्रियः ।१८

कालोऽपि तस्या रूपं हि रूपहीनः स्वरूपकृत् ।
तद्वशे वर्तते देही विद्वान्मूर्खोऽथ मध्यमः ।।१६।।

कालः करोतिधर्मज्ञकदाचिद्विकलम्पुनः । स्वभावात्कर्मतोवाऽपिदुर्ज्ञेयंतस्य चेष्टितम् ।२०

नारद उवाच

इत्युक्त्वा विरतो विष्णुरहं विस्मयमानसः । तमब्रुवं जगन्नाथं वासुदेवं सनातनम् ।२१
रमापते ! कथंरूपामायासा कीदृशीपुनः । कियद्बला क्वसंस्थाना कस्याधारावदस्वमे ।२२

द्रष्टुकामोऽस्मि तां मायां दर्शयाऽऽशु महीधर ! ।
ज्ञातुमिच्छामि तां सम्यक्प्रसादं कुरु मापते ! ।।२३।।

विष्णुरुवाच

त्रिगुणा साऽखिलाधारा सर्वज्ञा सर्वसम्मता । अजेयाऽनेकरूपाऽऽच सर्वम्व्याप्यस्थिता जगत् ।२४
दिदृक्षा यदि ते चित्ते नारदारोहणंकुरु । गरुडेमत्समेतोऽद्यगच्छावोऽन्यत्रसाम्प्रतम् ।२५
दर्शयिष्यामितेमायांदुर्जयामजितात्मभिः । दृष्ट्वा तां ब्रह्मपुत्र त्वं विषादे मामनःकृथाः ।२६
इत्युक्त्वा देवदेवोमांसस्मारविनतासुतम् । स्मृतमात्रस्तु गरुडस्तदागाद्धरिसन्निधौ ।२७
आगतं गरुडं वीक्ष्य आरुरोह जनार्दनः । समारोप्य च मां पृष्ठे गमनाय कृतादरः ।२८
चलितो विनतापुत्रो वैकुण्ठाद्वायुवेगवान् । प्रेरितो यत्र कृष्णेन गन्तुकामेन काननम् ।२६
महावनानि दिव्यानि सरांसि सरितस्तथा । पुरग्रामाकरादींश्च खेटखर्वटगोव्रजान् ।३०
मुनीनामाश्रमान्रम्यान्वापीश्च सुमनोहराः । पल्वलानिविशालानि ह्रदान्पङ्कजभूषितान् ।३१
मृगाणाञ्च वराहाणां वृन्दान्यप्यवलोक्य च । गतावावां कान्यकुब्जसमीपं गरुडाऽऽसनौ ।३२
तत्र रम्यं सरो दिव्यंदृष्टंपङ्कजमण्डितम् । हंसकारण्डवाकीर्णं चक्रवाकोपशोभितम् ।३३
नानावर्णैः प्रफुलैश्च पङ्कजैरूपरञ्जितम् । शुचिमिष्टजलं भृङ्गयूथनादविराजितम् ।३४
मामाह भगवान्वीक्ष्यतडागं परमाद्भुतम् । स्पर्धकं चोदधेः क्षीरंमिष्टं वारि विशेषतः ।३५

श्रीभगवानुवाच

पश्य नारद ! गम्भीरं सरः सारसनादितम् । सर्वत्र पङ्कजैश्छन्नं स्वच्छनीरप्रपूरितम् ।३६
अत्रस्नात्वागमिष्यावःकान्यकुब्जं पुरोत्तमम् । इत्युक्त्वा गरुडादाऽऽशु मामुत्तार्य व्यतारयत् ।३७

विहस्य भगवांस्तत्र जग्राह मम तर्जनीम्। स्तुवन्सरोवरं भूयस्तीरं मामनयत्प्रभुः।३८
विश्रम्य तटभागे तु स्निग्धच्छाये मनोहरे। मामुवाच मुने! स्नानं कुरुत्वंविमले जले।३९
पश्चादहं करिष्यामि तडागेऽस्मिन्सुपावने। साधूनामिव चेतांसि जलानि निर्मलानि च।४०
सुरभीणि परागैस्तु पङ्कजानांविशेषतः। इत्युक्तोऽहंभगवतामुक्त्वावीणांमृगाजिनम्।४१
स्नानायकृतधीस्तीरे गतःप्रेमसमन्वितः। पादौप्रक्षाल्यहस्तौचशिखांबद्ध्वाकुशग्रहम्।४२
कृत्वाऽऽचम्यशुचिस्तोयेस्नातवानस्मितज्जले। यदातस्मिञ्जलेरम्येस्नातोऽहंपश्यतोहरेः।४३
विहाय पौरुषं रूपं प्राप्तःस्त्रीत्वमनुत्तमम्। हरिर्गृहीत्वावीणांमेतथाकृष्णाजिनंशुभम्।४४
आरुह्य गगनं तूर्णं जगाम स्वगृहं क्षणात्। ततोऽहं स्त्रीत्वमापन्नश्चारुभूषणभूषितः।४५
तत्क्षणान्मनसो जाता पूर्वदेहस्य विस्मृतिः। विस्मृतोऽसौ जगन्नाथो महती विस्मृता पुनः।४६
संप्राप्य मोहिनीरूपं तडागान्निर्गतो बहिः। अपश्यं नलिनीजुष्टं सरस्तद्विमलोदकम्।४७
किमेतदिति मनसाऽकरवं विस्मयं मुहुः। एवं चिन्तयमानस्य नारीरूपधरस्य मे।४८
सहसा दृक्पथं प्राप्तस्तत्र तालध्वजो नृपः। गजाश्वरथवृन्दैश्च सम्वृतो रथसंस्थितः।४९
युवा भूषणसम्वीतो देहवानिव मन्मथः। वीक्ष्य मांभूपतिस्तत्रदिव्यभूषणभूषिताम्।५०
राकाचन्द्रमुखीं योषांविस्मयंपरमंगतः। पप्रच्छकाऽसिकल्याणिकस्यपुत्रीसुरस्यवा।५१
मानुषस्य च वा कान्ते! गन्धर्वस्योरगस्य च। एकाकिनीकथंबालारूपयौवनभूषिता!।५२

विवाहिताऽथ कन्या वा सत्यं वद सुलोचने! ।
किं पश्यसि सुकेशान्ते तडागेऽस्मिन्सुमध्यमे! ।।५३।।
चिकीर्षितं पिकालापे!ब्रूहिमन्मथमोहिनि ।
भुङ्क्ष्वभोगान्मरालाक्षिमयासहकृशोदरि ।
वाञ्छितान्मनसा नूनं कृत्वा मां पतिमुत्तमम् ।।५४।।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे नारदस्य-स्त्रीत्वप्राप्त्यातालध्वजेनमेलनवर्णनं नामाऽष्टाविंशोऽध्यायः।।२८।।

* ऊनत्रिंशोऽध्यायः *

नारदस्यस्त्रीत्वप्राप्त्यनन्तरंतालध्वजाख्यनृपेणसहस्वस्यसंयोगेपुत्राणामुत्पत्ति-र्दूरदेशाधिपस्यराज्ञस्तैस्साकंयुद्धंतेषाम्मृत्युःपुनर्नारदस्यपुरुषत्वप्राप्तिः

नारद उवाच

इत्युक्तोऽहं तदा तेन राज्ञा तालध्वजेन च। विमृश्य मनसाऽत्यर्थं तमुवाचविशाम्पते।१

राजन्नाऽहं विजानामि पुत्री कस्येति निश्चयम् ।
पितरौ क्व च मे केन स्थापिता च सरोवरे ।।२।।

किं करोमि क्व गच्छामि कथं मे सुकृतं भवेत्। निराधाराऽस्मि राजेन्द्र! चिन्तयामि चिकीर्षितम्।३
दैवमेव परं राजन्नास्त्यत्र पौरुषं मम। धर्मज्ञोऽसि महीपाल! यथेच्छसि तथा कुरु।४

तवाधीनाऽस्म्यहं भूप! न मे कोऽप्यस्ति पालकः ।
न पिता न च माता च न स्थानं न च बान्धवाः ।।५।।

इत्युक्तोऽसौ मया राजा बभूवमदनातुरः। मांनिरीक्ष्यविशालाक्षींसेवकानित्युवाचह।६
नरयानमानयध्वं चतुर्वाह्यं मनोहरम्। आरोहणार्थमस्यास्तुकौशेयाम्बरवेष्टितम्।७

मृद्वास्तरणसंयुक्तं मुक्ताजालविभूषितम्।चतुरस्रं विशालञ्च सुवर्णरचितं शुभम्।८
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा भृत्याः सत्वरगामिनः।आनिन्युः शिबिकां दिव्यां मदर्थे वस्त्रवेष्टिताम्।९
आरूढाऽहं तदा तस्यां तस्य प्रियचिकीर्षया।मुदितोऽसौ गृहे नीत्वा मां तदा पृथिवीपतिः।१०
विवाहविधिना राजा शुभे लग्ने शुभे दिने।उपयेमे च मां तत्र हुतभुक्सन्निधौ ततः।११

तस्याऽहं वल्लभा जाता प्राणेभ्योऽपिगरीयसी ।
सौभाग्यसुन्दरीत्येवं नामतत्रकृतंमम ।।१२।।
रममाणो मया सार्धं सुखमापमहीपतिः ।
नानाभोगविलासैश्चकामशास्त्रोदितैस्तथा ।।१३।।
राजकार्याणि सन्त्यज्य क्रीडासक्तो दिवानिशम् ।
नाऽसौ विवेद गच्छन्तं कालं कामकलारतः ।।१४।।

उद्यानेषु च रम्येषु वापीषु च गृहेषु च।हर्म्येषु वरशैलेषु दीर्घिकासु वरासु च।१५
वारुणीमदमत्तोऽसौ विहरन्काननेशुभे।विसृज्य सर्वकार्याणि मदधीनो बभूव ह।१६
व्यासाहं तेन संसक्ता क्रीडारसवशीकृता।स्मृतवान्पूर्वदेहंन पुम्भावं मुनिजन्म च।१७
ममैवाऽयम्पतिर्योषाऽहं पत्नीषु प्रिया सती।पट्टराज्ञी विलासज्ञा सफलं जीवितंमम।१८
इति चिन्तयती तस्मिन्प्रेमबद्धा दिवानिशम्।क्रीडासक्ता सुखे लुब्धा तं स्थिता वशवर्तिनी।१९
विस्मृतं ब्रह्मविज्ञानं ब्रह्मज्ञानञ्च शाश्वतम्।धर्मशास्त्रपरिज्ञानं तदासक्तमनास्थिता।२०
एवं विहरतस्तत्र वर्षाणि द्वादशैव तु।गतानि क्षणवत्कामक्रीडासक्तस्य मे मुने!।२१
जाता गर्भवती चाहम्मुदम्प्राप नृपस्तदा।कारयामास विधिवद्गर्भसंस्कारकर्म च।२२
अपृच्छद्दोहदं राजा प्रीणयन्मां पुनः पुनः।नाऽब्रुवं लज्जमानाऽहं नृपम्प्रीतमना भृशम्।२३
सम्पूर्णे दशमे मासि पुत्रो जातस्ततो मम।शुभेऽह्नि ग्रहनक्षत्रलग्नताराबलान्विते।२४
बभूव नृपतेर्गेहे पुत्रजन्म महोत्सवः।राजा परमसन्तुष्टो बभूव सुतजन्मतः।२५
सूतकान्ते सुतं वीक्ष्य राजा मुदमवाप ह।अहंभूमिपतेश्चाऽसम्प्रियाभार्या परन्तपः।२६
ततो वर्षद्वयान्ते वै पुनर्गर्भो मया धृतः।द्वितीयस्तु सुतो जातः सर्वलक्षणसंयुतः।२७
सुधन्वेति सुतस्याऽथनामचक्रेनृपस्तदा।वीरवर्मेति ज्येष्ठस्यब्राह्मणैःप्रेरितस्त्वयम्।२८
एवं द्वादश पुत्राश्च प्रसूता भूपसम्मताः।मोहितोऽहंतदा तेषां प्रीत्या पालनलालने।२९
पुनरष्ट सुताः काले काले जाताः स्वरूपिणः।गार्हस्थ्यं मे ततः पूर्णं सम्पन्नं सुखसाधनम्।३०
तेषां दारक्रियाःकालेकृता राज्ञायथोचिताः।स्नुषाभिश्चतथापुत्रैःपरिवारोमहानभूत्।३१

ततः पौत्रादिसम्भूतास्तेऽपि क्रीडारसान्विताः ।
आसन्नानारसोपेता मोहवृद्धिकरा भृशम् ।।३२।।

कदाचित्सुखमैश्वर्यं कदाचिद्दुखमद्भुतम्।पुत्रेषु रोगजनितं देहसन्तापकारकम्।३३
परस्परं कदाचित्तु विरोधोऽभूत्सुदारुणः।पुत्राणां वा वधूनाञ्च तेनसन्तापसम्भवः।३४
सुखदुःखात्मके घोरे मिथ्याचारकरे भृशम्।सङ्कल्पजनिते क्षुद्रे मग्नोऽहं मुनिसत्तम!।३५
विस्मृतं पूर्वविज्ञानं शास्त्रज्ञानं तथा गतम्।योषाभावेविलीनोऽहंगृहकार्येषु सर्वथा।३६
अहङ्कारस्तु सञ्जातो भृशं मोहविवर्धकः।एते मेबलिनःपुत्राःस्नुषाःस्वकुलसम्भवाः।३७
एते पुत्राः सुसन्नद्धाः क्रीडन्ति मम वेश्मसु।धन्याऽहं खलु नारीणां संसारेऽस्मिन्नहो भृशम्।३८

नारदोऽहं भगवता वञ्चितो मायया किल। न कदाचिन्मयाऽप्येवंचिन्तितंमनसाकिल।३९
राजपत्नी शुभाचारा बहुपुत्रा पतिव्रता। धन्याऽहं किलसंसारेकृष्णैवंमोहितस्त्वहम्।४०
अथ कश्चिन्नृपः कामं दूरदेशाधिपो महान्। अरातिभावमापन्नः पतिना सह मानद!।४१
कृत्वा सैन्यसमायोगं रथैश्च वारणैर्युतम्। आजगाम कान्यकुब्जे पुरे युद्धमचिन्तयत्।४२
वेष्टितं नगरं तेन राज्ञा सैन्ययुतेन च। मम पुत्राश्च पौत्राश्च निर्गता नगरात्तदा।४३
संग्रामस्तुमुलस्तत्र कृतस्तैस्तेन पुत्रकैः। हता रणे सुताः सर्वे वैरिणा कालयोगतः।४४
राजा भग्नस्तु संग्रामादागतः स्वगृहं पुनः। श्रुतं मया मृताः पुत्राःसंग्रामेभृशदारुणे।४५
स हत्वा मे सुतान्पौत्रान्गतो राजा बलान्वितः। क्रन्दमाना ह्यहंतत्रगतासमरमण्डले।४६
दृष्ट्वातान्पतितान्पुत्रान्पौत्रांश्चदुःखपीडिता। विललापाऽहमायुष्मञ्छोकसागरसंप्लवे।४७
हा पुत्राः क्व गता मेऽद्यहाहताऽस्मिदुरात्मना। दैवेनातिबलिष्ठेनदुर्वारेणाऽतिपापिना।४८
एतस्मिन्नन्तरे तत्र भगवान्मधुसूदनः। कृत्वारूपंद्विजस्याऽगाद्वृद्धः परमशोभनः।४९
सुवासा वेदवित्कामं मत्समीपंसमागतः। मामुवाचाऽतिदीनांसक्रन्दमानांरणाजिरे।५०

ब्राह्मण उवाच

किं विषीदसि तन्वङ्गि! भ्रमोऽयंप्रकटीकृत। मोहेनकोकिलालापेपतिपुत्रगृहात्मके।५१
का त्वं कस्याः सुताः केऽमी चिन्तयाऽऽत्मगतिं पराम्।
उत्तिष्ठ रोदनं त्यक्त्वा स्वस्था भव सुलोचने!।।५२।।
स्नानं च तिलदानं च पुत्राणां कुरु कामिनि!। परलोकगतानाञ्च मर्यादारक्षणाय वै।५३
कर्तव्यं सर्वथा तीर्थे स्नानं तु न गृहेक्वचित्। मृतानांकिलबन्धूनांधर्मशास्त्रस्यनिर्णयः।५४

नारद उवाच

इत्युक्त्वा तेन विप्रेण वृद्धेन प्रतिबोधिता। उत्थिताऽहं नृपेणाऽथ युक्ताबन्धुभिरावृता।५५
अग्रतो द्विजरूपेण भगवान्भूतभावनः। चलिताऽहं ततस्तूर्णं तीर्थम्परमपावनम्।५६
हरिर्मां कृपया तत्र पुन्तीर्थे सरसि प्रभुः। नीत्वाऽहं भगवान्विष्णुर्द्विजरूपी जनार्दनः।५७
स्नानं कुरु तडागेऽस्मिन्पावनेगजगामिनि। त्यजशोकंक्रियाकालःपुत्राणांचनिरर्थकम्।५८
कोटिशस्ते मृताः पुत्रा जन्मजन्मसमुद्भवाः। पितरः पतयश्चैव भ्रातरो जामयस्तथा।५९
केषां दुःखं त्वया कार्यंभ्रमेऽस्मिन्मानसोद्भवे। वितथे स्वप्नसदृशे तापदे देहिनामिह।६०

नारद उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा तीर्थे पुरुषसञ्ज्ञके। प्रविष्टास्नातुकामाऽहं प्रेरिता तत्रविष्णुना।६१
मज्जनादेव तीर्थेषु पुमाञ्जातः क्षणादपि। हरिर्वीणां करे कृत्वास्थितस्तीरेस्वदेहवान्।६२
उन्मज्ज्यचमयातीरेदृष्टःकमललोचनः। प्रत्यभिज्ञा तदा जाता मम चित्ते द्विजोत्तम!।६३
सञ्चिन्तितं मया तत्र नारदोऽहमिहागतः। हरिणा सह स्त्रीभावंप्राप्तोमायाविमोहितः।६४
इति चिन्तापरश्चाऽहंयदाजातस्तदाहरिः। मामाहनारदाऽऽगच्छकिंकरोषिजलेस्थितः।६५
विस्मितोऽहं तदा स्मृत्वा स्त्रीभावं दारुणं भृशम्।
पुनः पुरुषभावश्च सम्पन्नः केन हेतुना।।६६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे नारदस्यस्त्रीभावप्राप्त्यापुनःस्वरूपप्राप्ति-वर्णनंमैकोनत्रिंशोऽध्यायः।।२९।।

* त्रिंशोऽध्यायः *

नारदस्यपुरुषरूपप्राप्त्यनन्तरंतालध्वजस्यविलापवर्णनम्

नारद उवाच

मां दृष्ट्वा नारदं विप्रं विस्मितोऽसौमहीपतिः। क्वगताममभार्यासाकुतोऽयंमुनिसत्तमः।१
विललाप नृपस्तत्र हा प्रियेति मुहुर्मुहुः। क्व गता मां परित्यज्यविलपन्तंवियोगिनम्।२
विना त्वां विपुलश्रोणि! वृथा मे जीवितं गृहम्।
राज्यं कमलपत्राक्षि! किं करोमि शुचिस्मिते ।।३।।
न प्राणा मे बहिर्यान्तिविरहेणतवाऽधुना। गतो वै प्रीतिधर्मस्तुत्वामृतेप्राणधारणात्।४
विलपामि विशालाक्षि देहि प्रत्युत्तरं प्रियम्। क्वगतासामयिप्रीतिर्याऽभूत्प्रथमसङ्गमे।५
विमग्नाकिंजले सुभ्रूर्भक्षितामत्स्यकच्छपैः। गृहीता वरुणेनाऽऽशु ममदौर्भाग्ययोगतः।६
धन्या सुचारुसर्वाङ्गि या त्वंपुत्रैःसमागता। अकृत्रिमस्तुपुत्रेषुस्नेहस्तेऽमृतभाषिणि।७
न युक्तमधुना यन्मां विहाय त्रिदिवं गता। विलपन्तं पतिं दीनं पुत्रस्नेहेन यन्त्रिता।८
उभयं मे गतं कान्ते! पुत्रास्त्वंप्राणवल्लभा। तथाऽपिमरणं नास्तिदुःखितस्यभृशंप्रिये।९
किं करोमि क्व गच्छामि रामो नास्ति महीतले। रामाविरहजंदुःखंजानातिरघुनन्दनः ।१०
विधिना निष्ठुरेणाऽत्र विपरीतं कृतं भुवि। दम्पत्योर्मरणं भिन्नं सर्वथासमचित्तयोः।११
उपकारस्तु नारीणां मुनिभिर्विहितः किल। यदुक्तं धर्मशास्त्रेषु ज्वलनं पतिना सह।१२
एवं विलपमानं तं राजानं भगवान्हरिः। निवारयामास तदा वचनैर्युक्तियोजितैः।१३

श्रीभगवानुवाच

किं विषीदसि राजेन्द्र! क्व गता ते प्रियाङ्गना।
न श्रुतं किं त्वया शास्त्रं न कृतोऽसौ बुधाश्रयः ।।१४।।
का सा कस्त्वं क्व संयोगो वियोगःकीदृशस्तव। प्रवाहरूपसंसारेनृणांनौतरतामिव ।१५
गृहे गच्छ नृपश्रेष्ठ! वृथा ते रुदितेन किम्?। संयोगश्च वियोगश्च दैवाधीनः सदा नृणाम्।१६
अनयासह ते राजन्संयोगस्त्विह सम्भृतः। भुक्तात्वयाविशालाक्षीसुन्दरीतनुमध्यमा।१७
न दृष्टौ पितरावस्यास्त्वयाप्राप्ता सरोवरे। काकतालीप्रसङ्गेन यद्भूतं तत्तथागतम्।१८
मा शोकं कुरु राजेन्द्र! कालो हि दुरतिक्रमः।
कालयोगं समासाद्य भुङ्क्ष्व भोगान्गृहे यथा ।।१९।।
यथाऽऽगता गता सा तु तथैव वरवर्णिनी। यथापूर्वं तथा तत्र गच्छकार्यंकुरुप्रभो!।२०
रुदितेन तवाऽद्यैव नाऽऽगमिष्यति कामिनी। वृथा शोचसि पृथ्वीश! योगयुक्तो भवाऽधुना।२१
भोगः कालवशादेति तत्रैव प्रतियाति च। नाऽत्रशोकस्तुकर्तव्यो निष्फलेभववर्त्मनि।२२
नैकत्र सुखसंयोगो दुःखयोगस्तु नैकतः। घटिकायन्त्रवत्कामं भ्रमणंसुखदुःखयोः।२३
मनःकृत्वास्थिरंभूप! कुरुराज्यंयथासुखम्। अथवाऽन्यस्यदायादेवनंसेवयसाम्प्रतम्।२४
दुर्लभोमानुषोदेहःप्राणिनांक्षणभङ्गुरः । तस्मिन् प्राप्तेतुकर्त्तव्यं सर्वथैवाऽऽत्मसाधनम्।२५
जिह्वोपस्थरसो राजन्पशुयोनिषु वर्तते। ज्ञानं मानुषदेहे वैनाऽन्यासु च कुंयोनिषु।२६
तस्माद्गच्छगृहंत्यक्त्वाशोकंकान्तासमुद्भवम्। मायेयंभगवत्यास्तुययासम्मोहितंजगत्।२७

नारद उवाच

इत्युक्तो हरिणा राजा प्रणम्य कमलापतिम्। कृत्वा स्नानविधिं सम्यग्जगाम निजमन्दिरम्।२८
दत्त्वाराज्यं स्वपौत्राय प्राप्यनिर्वेदमद्भुतम्। वनं जगाम भूपालस्तत्त्वज्ञानमवाप च।२९

गते राजन्यहं वीक्ष्य भगवन्तमधोक्षजम्। तमब्रुवं जगन्नाथं हसन्तं मां पुनः पुनः।३०
वञ्चितोऽहं त्वया देव! ज्ञातं मायाबलंमहत्। स्मरामि चरितंसर्वंस्त्रीदेहेयत्कृतंमया।३१
ब्रूहि मे देवदेवेश! प्रविष्टोऽहं सरोवरे। विगतं पूर्वविज्ञानं स्नानादेवं कथं हरे!।३२
योषिद्देहं समासाद्य मोहितोऽहं जगद्गुरो!। पतिं प्राप्यनृपश्रेष्ठ! पुलोमीवासवंयथा।३३
मनस्तदेव तच्चित्तं देहः स च पुरातनः। लिङ्गं तदेव देवेश! स्मृतेर्नाशः कथं हरे!।३४
विस्मयोऽयंमहान्मेऽत्रज्ञाननाशं प्रतिप्रभो!। कथयाऽद्यरमाकान्त! कारणंपरमञ्च यत्।३५
नारीदेहं मया प्राप्य भुक्ता भोगाह्यनेकशः। सुरापानं कृतं नित्यंविधिहीनञ्चभोजनम्।३६
मया तदेव न ज्ञातं नारदोऽहमितिस्फुटम्। जानाम्यद्य यथासर्वंविविक्तंन तथातदा।३७

विष्णुरुवाच

पश्य नारद मायाविविलासोऽयं महामते!। देहेषु सर्वजन्तूनां दशा भेदाह्यनेकशः।३८
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिश्च तुरीया देहिनां दशा। तथादेहान्तरे प्राप्ते सन्देहः कीदृशः पुनः।३९
सुप्तो नरो न जानाति न शृणोति वदत्यपि। पुनः प्रबुद्धो जानातिसर्वंज्ञानमशेषतः।४०
निद्रया चाल्यते चित्तंभवन्तिस्वप्नसम्भवाः। न नाविधामनोभेदामनोभावाह्यनेकशः।४१
गजो मां हन्तुमायाति न शक्तोऽस्मि पलायने। किं करोमि न मे स्थानं यत्र गच्छामि सत्वरः।४२
मृतं पितामहं स्वप्ने पश्यति स्वगृहागतम्। संयोगस्तेन वार्ता च भोजनंसहमन्यते।४३
प्रबुद्धःखलुजानातिस्वप्नेदृष्टं सुखासुखम्। स्मृत्वासर्वंजनेभ्यस्तु विस्तरात्प्रवदत्यपि।४४
स्वप्ने कोऽपि न जानाति भ्रमोऽयमिति निश्चयः। तथा तथैव विभवो मायाया दुर्गमःकिल।४५
नाऽहं नारद! जानामि पारम्परमदुर्घटम्। गुणानां किल मायायानैव शम्भुर्न पद्मजः।४६
कोऽन्यो ज्ञातुं समर्थोऽभून्मानतोमन्दधीःपुनः। मातागुणपरिज्ञानंनकस्यापिभवेदिह।४७
गुणत्रयकृतं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्। विना गुणैर्नसंसारो वर्तते किञ्चिदप्यदः।४८
अहं सत्त्वप्रधानोऽस्मिरजस्तमसमन्वितः। नकदाचित्त्रिभिर्हीनो भवामिभुवनेश्वरः।४९
तथा ब्रह्मा पिता तेऽत्र रजोमुख्यः प्रकीर्तितः। तमः सत्त्वसमायुक्तो नताभ्यामुज्झितः किल।५०
शिवस्तथा तमोमुख्यो रजःसत्त्वसमावृतः। गुणत्रयविहीनस्तुनैवकोऽपिमयाश्रुतः।५१
तस्मान्मोहोन कर्तव्यःसंसारेऽस्मिन्मुनीश्वर!। मायाविनिर्मितेऽसारेऽपारेपरमदुर्घटे।५२

दृष्टा माया त्वयाऽद्यैव भुक्ता भोगा ह्यनेकशः।
किं पृच्छसि महाभाग! तस्याश्चरितमद्भुतम्॥५३॥

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यांसंहितायांषष्ठस्कन्धे मायाप्राबल्यवर्णनं नाम त्रिंशोऽध्यायः॥३०॥

* एकत्रिंशोऽध्यायः *

व्यासनारदसम्वादेभगवतीध्यानादिकवर्णनम्

व्यास उवाच

निशामय महाराज! ब्रवीमिविशदाक्षरम्। माहात्म्यंखलुमायायानारदात्तुमयाश्रुतम्।१
मया पुनर्मुनिः पृष्टो नारदः सर्ववित्तमः। श्रुत्वा कथां मुनेस्तस्यनारीदेहसमुद्भवाम्।२
ब्रूहिनारद पश्चात्किं कथितं हरिणा तदा। क्व गतश्च जगन्नाथो भवता सह माधवः।३

नारद उवाच

इत्युक्त्वाभगवांस्तस्मिंस्तडागेऽतिमनोहरे। आरुह्य गरुडं गन्तुंवैकुण्ठे च मनो दधे।४

मामुवाच रमाकान्तो यथेष्टं गच्छ नारद!।एहिवा मम लोकं स्वं यथारुचितथाकुरु।५
ब्रह्मलोकं गतश्चाऽहमापृच्छ्य मधुसूदनम्।भगवानपि देवेशस्तत्क्षणाद्गरुडासनः।६
वैकुण्ठमगमत्तूर्णं मामादिश्य यथासुखम्।ततोऽहं पितृसदनं गतो याते जनार्दने!।७
चिन्तयन्सकलंदुःखं सुखं च परमाद्भुतम्।गत्वा प्रणम्यपितरंस्थितोयावत्पुरःपितुः।८
तावत्पृष्टो मुने! पित्रा वीक्ष्य चिन्तातुरं तु माम्।

ब्रह्मोवाच

क्व गतोऽसि महाभाग! कस्माच्चिन्तातुरः सुत! ।।९।।
स्वस्थं नैवाऽद्य पश्यामि मनस्ते मुनिसत्तम!।
केनाऽपि वञ्चितोऽसि त्वं दृष्टं वाकिञ्चिदद्भुतम् ।।१०।।
विषण्णं गतविज्ञानं पश्यामि त्वां कथं सुत!।

नारद उवाच

इति पृष्टस्तदा पित्रा बृस्यां समुपवेश्य च ।।११।।
तमब्रुवं स्ववृत्तान्तं मायाबलसमुद्भवम्।वञ्चितोऽहंपितःकामं विष्णुना प्रभविष्णुना।१२
स्त्रीभावङ्गमितः कामं वर्षाणि सुबहून्यपि।अनुभूतं महद्दुःखं पुत्रशोकसमुद्भवम्।१३
प्रबोधितोऽहंतेनैवमृदुवाक्यामृतेन च।पुनः सरोवरेस्नात्वा जातोऽहं नारदः पुमान्।१४
किमेतत्कारणं ब्रह्मन्यन्मोहमगमं तदा।विस्मृतं पूर्वविज्ञानं तन्मयस्तरसा कृतः।१५
एतन्मायाबलम्ब्रह्मन्न जानेऽहं दुरत्ययम्।ज्ञानहानिकरंजातम्मूलं मोहस्य विस्फुटम्।१६
अनुभूतम्मया सम्यग्ज्ञातंसर्वं शुभाशुभम्।कथं त्वं जितवांस्तात! तमुपायम्वदस्वमे।१७
विज्ञप्तोऽसौ मया धाता प्रीतिपूर्वमतः परम्।मामुवाच स्मितं कृत्वा पिता मे वासवीसुत!।१८

ब्रह्मोवाच

दुर्जयैषा सुरैः सर्वैर्मुनिभिश्च महात्मभिः।तापसैर्ज्ञानयुक्तैश्च योगिभिः पवनाशनैः।१९
नाहंतांसर्वथाज्ञातुंशक्तोमायांमहाबलाम्।विष्णुर्ज्ञातुं न शक्तश्च तथा शम्भुरुमापतिः।२०
दुर्ज्ञेयासामहामाया सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी।कालकर्मस्वभावाद्यैर्निमित्तकारणैर्वृता।२१
शोकं माकुरुमेधाविंस्तत्रमायामहाबले।न चैवविस्मयःकार्यो वयं सर्वे विमोहिताः।२२

नारद उवाच

पित्रेत्युक्तस्तदा व्यास! तमापृच्छ्य गतस्मयः।आगतोऽस्म्यत्र पश्यन्वै तीर्थानि च वराणि च।२३
तस्मात्त्वमपि सन्त्यज्य मोहं कौरवनाशजम्।कालक्षयं सुखासीनः स्थानेऽस्मिन्कुरुसत्तम!।२४
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।निश्चयं हृदयेकृत्वा विचरस्व यथासुखम्।२५

व्यास उवाच

इत्युक्त्वानारदोराजन्गतोमांप्रतिबोध्य च।अहंतच्चिन्तयन्वाक्यं यदुक्तं मुनिनातदा।२६
स्थितः सरस्वतीतीरे कल्पे सारस्वते वरे।कालातिवाहनायैतत्कृतं भागवतम्मया।२७
पुराणमुत्तमम्भूप ! सर्वसंशयनाशनम्।नानाख्यानसमायुक्तं वेदप्रामाण्यसंश्रितम्।२८
सन्देहोऽत्र न कर्तव्यःसर्वथा नृपसत्तम!।यथेन्द्रजालिकः कश्चित्पाञ्चालींदारवींकरे।२९
कृत्वा नर्तयते कामं स्वेच्छया वशवर्तिनी।तथा नर्तयते माया जगत्स्थावरजङ्गमम्।३०
ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं सदेवासुरमानुषम्।पञ्चेन्द्रियसमायुक्तं मनश्चित्तानुवर्तनम्।३१
गुणास्तु कारणं राजन्सर्वेषां सर्वथा त्रयः।कार्यकारणसंयुक्तं भवतीति विनिश्चयः।३२
भिन्नभिन्नस्वभावास्ते गुणामायासमुद्भवाः।शान्तो घोरस्तथामूढस्त्रयस्तु विविधायतः।३३

तत्समेतः पुमान्नित्यं तद्विहीनः कथम्भवेत्। न भवत्येव संसारे रहितस्तन्तुभिःपटः।३४
तथागुणैस्त्रिभिर्हीनो न देहीतिविनिश्चयः। देवदेहो मनुष्यो वा तिरश्चोवानराधिप!।३५
गुणैर्विरहितो न स्यान्मृद्विहीनो घटो यथा। ब्रह्मा विष्णुस्तथा रुद्रस्त्रयश्चाऽमी गुणाश्रयाः।३६
कदाचित्प्रीतियुक्तास्तेतथाप्रीतियुताःपुनः। तथाविषादयुक्तास्ते भवन्तिगुणयोगतः।३७

ब्रह्मा कदाचित्सत्त्वस्थस्तदा शान्तः समाधिमान्।
प्रीतियुक्तो भवेत्सर्वभूतेषु ज्ञानसंयुतः ॥३८॥

पुनः सत्त्वविहीनस्तु रजोगुणसमावृतः। तदाभवेद्धोररूपः सर्वत्राऽप्रीतिसंयुतः।३९
यदा तमोगुणाविष्टो बाहुल्येन भवेद्विधिः। तदाविषादसम्पन्नोमूढोभवतिनाऽन्यथा।४०
माधवोऽपि सदा सत्त्वसंश्रितः सर्वथाभवेद्। तदा शान्तः प्रीतियुक्तो भवेज्ज्ञानसमन्वितः।४१
स एव रजाधिक्यादप्रीतिसंयुतो भवेत्। घोरश्च सर्वभूतेषु गुणाधीनो रमापतिः।४२

रुद्रोऽपि सत्त्वसंयुक्तः प्रीतिमाञ्छान्तिमान्भवेत्।
रजोनिमीलितः सोऽपि घोरः प्रीतिविवर्जितः ॥४३॥

तमोगुणयुतः सोऽपि मूढो विषादयुग्भवेत्। एते यदि गुणाधीनाब्रह्मविष्णुहरादयः।४४
सूर्यवंशोद्भवास्तद्वत्सोमवंशभवाअपि। मन्वादयश्च ये प्रोक्ताश्चतुर्दश युगेयुगे।४५
अन्येषाञ्चैव का वार्तासंसारेऽस्मिन्नृपोत्तम!। मायाधीनं जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्।४६
तस्माद्राजन्नकर्तव्यः सन्देहोऽत्र कदाचन। देही मायापराधीनश्चेष्टते तद्वशानुगः।४७
सा चा माया परे तत्त्वे सम्विद्रूयेऽति सर्वदा। तदधीनाप्रेरिताच तेन जीवेषु सर्वदा।४८
ततो मायाविशिष्टां तां सम्विदं परमेश्वरीम्। मायेश्वरीं भगवतीं सच्चिदानन्दरूपिणीम्।४९
ध्यायेत्तथाऽऽराधयेच्च प्रणमेच्च जपेदपि। तेन सा सदया भूत्वा मोचयत्येव देहिनम्।५०

स्वमायां सन्तरत्येव स्वानुभूतिप्रदानतः।
भुवनं खलु माया स्यादीश्वरी तस्य नायिका ॥५१॥

भुवनेशी ततः प्रोक्ता देवी त्रैलोक्यसुन्दरी। तद्रूपे यदि सक्तं स्याच्चित्तंभूमिपतेसदा।५२

मायया किम्भवेत्तत्र सदसद्भूतया नृप!।
तस्मान्मायानिरासार्थं नान्यद्वै देवतान्तरम् ॥५३॥

समर्थन्तु विनां देवीं सच्चिदानन्दरूपिणीम्। तमोराशिंनाशयितुं शक्तं नैवतमोभवेत्।५४
किन्तु भानुप्रभाचन्द्रविद्युद्वह्निप्रभादयः। तस्मान्मायेश्वरीमम्बां स्वप्रकाशान्तुसम्विदम्।५५
आराधयेदतिप्रीत्या मायागुणनिवृत्तये। इति सम्यङ् मयाऽऽख्यातं वृत्रासुरवधादिकम्।५६
यत्पृष्टं राजशार्दूल किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि। पूर्वार्धोऽयं पुराणस्यकथितस्तवसुव्रत।५७
यत्रदेव्यास्तुमहिमा विस्तारेणोपपादितः। एतद्रहस्यं श्रीमातुर्नदेयं यस्य कस्यचित्।५८
देयं भक्ताय शान्ताय देवीभक्तिरताय च। शिष्याय ज्येष्ठपुत्राय गुरुभक्तियुताय च।५९
इदमखिलकथानां सारभूतं पुराणम् निखिलनिगमतुल्यं सप्रमाणान्नुविद्धम्।
पठति परमभावाद्यः शृणोतीह भक्त्या स भवति धनवान्वै ज्ञानवान्मानवोऽत्र।६०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां षष्ठस्कन्धे भगवतीमाहात्म्ये एकत्रिंशोऽध्यायः॥३१॥

वेदाष्टवसुभूसंख्यैः(१८८४) पद्यैर्व्यासकृतैः शुभैः।
देवीभागवतस्याऽस्य षष्ठस्कन्धः समाप्तवान्॥१॥

पूर्वार्धं समाप्तम्- भुवनेश्यर्पणमस्तु शम्भूयात्
सा मां पातु सरस्वतीभगवती निःशेषजाड्यापहा

।।श्रीगणेशाय नमः।।

श्रीमद्देवीभागवत पुराणम्

सप्तमं स्कन्धम्

* प्रथमोऽध्यायः *

सोमसूर्यवंशविषयेजनमेजयप्रश्नेव्यासकृतदक्षप्रजापति वर्णनोत्तरेनारदस्यदक्षेण शापाज्जन्मग्रहणवर्णनम्।

सूत उवाच

श्रुत्वैतां तापसाद् दिव्यां कथां राजा मुदान्वितः।
व्यासम्पप्रच्छ धर्मात्मा परीक्षितसुतः पुनः ।।१।।

जनमेजय उवाच

स्वामिन्सूर्यान्वयानाञ्च राज्ञां वंशस्य विस्तरम्।
तथा सोमान्वयानाञ्च श्रोतुकामोऽस्मि सर्वथा ।।२।।
कथयाऽनघ सर्वज्ञ! कथांपापप्रणाशिनीम्। चरितम्भूपतीनाञ्चविस्तराद्वंशयोर्द्वयोः।३
ते हि सर्वे पराशक्तिभक्ता इति मया श्रुतम्। देवीभक्तस्यचरितं शृण्वन्कोऽस्ति विरक्तिभाक्।४
इति राजर्षिणापृष्टोव्यासः सत्यवतीसुतः। तमुवाच मुनिश्रेष्ठः प्रसन्नवदनो मुनिः।५

व्यास उवाच

निशामय महाराज विस्तराद्गदतोमम। सोमसूर्यान्वयानाञ्च तथाऽन्येषां समुद्भवम्।६
विष्णोर्नाभिसरोजाद्वैब्रह्माऽभूच्चतुराननः। तपस्तप्त्वासमाराध्य महादेवींसुदुर्गमाम्।७
तया दत्तवरो धाता जगत्कर्तुं समुद्यतः। नाऽशकन्मानुषीं सृष्टिं कर्तुं लोकपितामहः।८
विचिन्त्यबहुधाचित्ते सृष्ट्यर्थञ्चतुराननः। नविस्तारं जगामाऽऽशुरचिताऽपिमहात्मना।९
"ससर्जमानसान्पुत्रान्सप्तसंख्यान्प्रजापतिः"। मरीचिरङ्गिराऽत्रिश्चवसिष्ठः पुलहः क्रतुः।
पुलस्त्यश्चेति विख्याताः सप्तैते मानसाः सुताः।।१०।।
रुद्रो रोषात्समुत्पन्नोऽप्युत्सङ्गान्नारदोऽभवत्। दक्षोऽङ्गुष्ठात्तथाऽन्येऽपि मानसाः सनकादयः।११
वामाङ्गुष्ठाद्दक्षपत्नी जाता सर्वाङ्गसुन्दरी। वीरिणीनामविख्याता पुराणेषु महीपते!।१२
असिन्कीति च नाम्ना सा यस्यांजातोऽथनारदः।
देवर्षिप्रवरः कामंब्रह्मणोमानसःसुतः ।।१३।।

जनमेजय उवाच

अत्र मे संशयो ब्रह्मन्यदुक्तं भवतावचः। वीरिण्यांनारदो जातो दक्षादिति महातपाः।१४
कथं दक्षस्य पत्न्यां तुवीरिण्यांनारदोमुनिः। जातोहिब्रह्मणःपुत्रोधर्मज्ञस्तापसोत्तमः।१५
विचित्रमिदमाख्यातंभवतानारदस्य च। दक्षाज्जन्माऽस्यभार्यायांतद्वदस्वसविस्तरम्।१६
पूर्वदेहः कथं मुक्तः शापात्कस्य महात्मना। नारदेन बहुज्ञेन कस्माज्जन्म कृतं मुने।१७

व्यास उवाच

ब्रह्मणाऽसौसमादिष्टो दक्षः सृष्ट्यर्थमादितः। प्रजाःसृजेतिसुभृशंवृद्धिहेतोःस्वयम्भुवा।१८
ततः पञ्चसहस्रांश्च जनयामास वीर्यवान्। दक्षः प्रजापतिःपुत्रान्वीरिण्यांबलवत्तरान्।१९
दृष्ट्वातान्नारदः पुत्रान्सर्वान्वर्धयिषून्प्रजाः। उवाच प्रहसन्वाचं देवर्षिः कालनोदितः।२०

भुवः प्रमाणमज्ञात्वा स्रष्टुकामाः प्रजाः कथम् ।
लोकानां हास्यतां यूयं गमिष्यथ न संशयः ।।२१।।
पृथिव्या वै प्रमाणं तु ज्ञात्वा कार्यः समुद्यमः ।
कृतोऽसौ सिद्धिमायाति नाऽन्यथेति विनिश्चयः ।।२२।।
बालिशा बत यूयं वै यदज्ञात्वा भुवस्तलम्। समुद्यताः प्रजाः कर्तुं कथं सिद्धिर्भविष्यति ?।२३

व्यास उवाच

नारदेनैवमुक्तास्ते हर्यश्वा दैवयोगतः। अन्योन्यमूचुः सहसा सम्यगाह मुनिः किल।२४
ज्ञात्वा प्रमाणमूर्व्यास्तुसुखंस्रक्ष्यामहेप्रजाः। इतिसञ्चिन्त्यतेसर्वे प्रयाता प्रेक्षितुंभुवः।२५
तलं सर्वं परिज्ञातुं वचनान्नारदस्य च। प्राच्यां केचिद्गताः कामंदक्षिणस्यांतथाऽपरे।२६
प्रतीच्यामुत्तरस्यांतु कृतोत्साहाः समन्ततः। दक्षः पुत्रान्गतान्दृष्ट्वा पीडितस्तु शुचा भृशम्।२७
अन्यानुत्पादयामास प्रजार्थं कृतनिश्चयः। तेऽपि तत्रोद्यताः कर्तुम्प्रजार्थमुद्यमं सुताः।२८
नारदः प्राह तान्दृष्ट्वा पूर्वंयद्वचनं मुनिः। बालिशा बत यूयं वै यदज्ञात्वा भुवः किल।२९
प्रमाणं तु प्रजाः कर्तुं प्रवृत्ताः केन हेतुना। श्रुत्वा वाक्यं मुनेस्तेऽपि मत्वा सत्यं विमोहिताः।३०
जग्मुः सर्वे यथापूर्वं भ्रातरश्चलितास्तथा। तान्सुतान्प्रस्थितान्दृष्ट्वादक्षःकोपसमन्वितः।३१
शशाप नारदं रोषात्पुत्रशोकसमुद्भवात् ।

दक्ष उवाच

नाशिता मे सुता यस्मात्तस्मान्नाशमवाप्नुहि ।।३२।।
पापेनाऽनेन दुर्बुद्धे! गर्भवासं व्रजेति च। पुत्रोमे भवकामं त्वं यतो मे भ्रंशिताः सुताः।३३
इति शप्तस्ततो जातो वीरिण्यां नारदो मुनिः ।
षष्टिर्भूयोऽसृजत्कन्या वीरिण्यामिति नः श्रुतम् ।।३४।।
शोकं विहाय पुत्राणांदक्षःपरमधर्मवित्। तासां त्रयोदशप्रादात्कश्यपाय महात्मने।३५
दश धर्माय सोमाय सप्तविंशति भूपते। द्वे चैव भृगवे प्रादाच्चतस्रोऽरिष्टनेमिने।३६
द्वेचैवाऽङ्गिरसेकन्येतथैवाऽङ्गिरसेपुनः ।तासांपुत्राश्च पौत्राश्च देवाश्च दानवास्तथा।३७
जाता बलसमायुक्ताः परस्परविरोधकाः। रागद्वेषान्विताः सर्वे परस्परविरोधिनः।
सर्वे मोहावृताः शूरा ह्यभवन्नतिमायिनः।।३८।।

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे सोमसूर्यवंशवर्णनेदक्षप्रजापतिवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः।।१।।

* द्वितीयोऽध्यायः *

सूर्यान्वयवंशानांराज्ञाम्वर्णनेशर्यातिनृपाख्यानवर्णनम्

जनमेजय उवाच

ममाऽऽख्याहि महाभाग! राज्ञांवंशंसविस्तरम् ।
सूर्यान्वयप्रसूतानांधर्मज्ञानांविशेषतः ।।१।।

व्यास उवाच

शृणु भारत!वक्ष्यामिरविवंशस्य विस्तरम्। यथा श्रुतं मया पूर्वंनारदादृषिसत्तमात्।२
एकदानारदः श्रीमान्सरस्वत्यास्तटेशुभे। आजगामाऽऽश्रमेपुण्येविचरन्स्वेच्छयामुनिः।३
प्रणम्य शिरसा पादौ तस्याऽग्रे संस्थितस्तदा। ततस्तस्याऽऽसनं दत्त्वा कृत्वाऽर्हणमथादरात्।४
विधिवत्पूजयित्वातमुक्तवान्वचनंत्विदम्। पावितोऽहंमुनिश्रेष्ठ! पूज्यस्याऽगमनेन वै।५

कथां कथय सर्वज्ञ! राज्ञां चरितसंयुताम्। राजानो ये समाख्याताः सप्तमेऽस्मिन्मनोः कुले। ६
तेषामुत्पत्तिरतुला चरितं परमाद्भुतम्। श्रोतुकामोऽस्म्यहं ब्रह्मन्सूर्यवंशस्य विस्तरम्।७
समाख्याहि मुनिश्रेष्ठ! समासख्यासपूर्वकम्। इति पृष्टो मयाराजन्नारदः परमार्थवित्।८
उवाच प्रहसन्प्रीतः समाभाष्य मुदाऽन्वयम् ।

नारदउवाच

शृणु सत्यवतीसूनो! राज्ञां वंशमनुत्तमम् ।। ९ ।।
पावनं कर्णसुखदं धर्मज्ञानादिभिर्युतम्। ब्रह्मा पूर्वं जगत्कर्ता नाभिपङ्कजसम्भवः।१०
विष्णोरितिपुराणेषुप्रसिद्धः परिकीर्तितः। सर्वज्ञः सर्वकर्ताऽसौस्वयम्भूःसर्वशक्तिमान्।११
तपस्तप्त्वा स विश्वात्मा वर्षाणामयुतं पुरा। सृष्टिकामः शिवां ध्यात्वा प्राप्य शक्तिमनुत्तमाम्।१२
पुत्रानुत्पादयामास मानसाञ्छुभलक्षणान्। मरीचिः प्रथितस्तेषामभवत्सृष्टिकर्मणि।१३
तस्यपुत्रोऽतिविख्यातःकश्यपः सर्वसम्मतः। त्रयोदशैवतस्यासन्भार्यादक्षसुताः किल।१४
देवाः सर्वे समुत्पन्ना दैत्यायक्षाश्चपन्नगाः। पशवः पक्षिणश्चैवतस्माच्छृष्टिस्तुकाश्यपी।१५
देवानां प्रथितः सूर्यो विवस्वन्नाम तस्य तु। तस्यपुत्रःसविख्यातो वैवस्वतमनुर्नृपः।१६
तस्य पुत्रस्तथेक्ष्वाकुः सूर्यवंशविवर्धनः। नवाऽभवन्सुतास्तस्यमनोरिक्ष्वाकुपूर्वजाः।१७
तेषां नामानि राजेन्द्र शृणुष्वैकमनाः पुनः। इक्ष्वाकुरथ नाभागो धृष्टः शर्यातिरेव च।१८
नरिष्यन्तस्तथा प्रांशुर्नृगो दिष्टश्च सप्तमः। करूषश्च पृषध्रश्च नवैते मानवाः स्मृताः।१९
इक्ष्वाकुस्तु मनोः पुत्रः प्रथमः समजायत। तस्य पुत्रशतं चाऽऽसीज्ज्येष्ठो विकुक्षिरात्मवान्।२०
नवानां वंशविस्तारं संक्षेपेण निशामय। शूराणां मनुपुत्राणां मनोरन्तरजन्मनाम्।२१
नाभागस्य तु पुत्रोऽभूदम्बरीषः प्रतापवान्। धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजापालनतत्परः।२२
धृष्टात्तु धार्ष्टकं क्षत्त्रं ब्रह्मभूतमजायत। सङ्ग्रामकातरं सम्यग्ब्रह्मकर्मरतं तथा।२३
शर्यातिस्तनयश्चाऽभूदानर्तो नाम विश्रुतः। सुकन्या च तथा पुत्री रूपलावण्यसंयुता।२४
च्यवनाय सुता दत्ता राज्ञाऽप्यन्धायसुन्दरी। मुनिः सुलोचनेजातस्तस्याः शीलगुणेनह।२५
विहितो रविपुत्राभ्यामश्विभ्यामिति नःश्रुतम् ।

जनमेजय उवाच

सन्देहोऽयं महान्ब्रह्मन्कथायां कथितस्त्वया ।।२६।।
यद्राज्ञा मुनयेऽन्धाय दत्ता पुत्री सुलोचना। कुरूपा गुणहीना वा नारी लक्षणवर्जिता।२७
पुत्री यदा भवेद्राजा तदाऽन्धाय प्रयच्छति। ज्ञात्वाऽन्धं सुमुखि कस्माद्दत्तवान्नृपसत्तम।२८
कारणं ब्रूहि मे ब्रह्मन्ननुग्राह्योऽस्मि सर्वदा ।

सूत उवाच

इति राज्ञो वचः श्रुत्वा परीक्षितसुतस्य वै ।।२९।।
द्वैपायनः प्रसन्नात्मा तमुवाच हसन्निव ।

व्यास उवाच

वैवस्वतसुतः श्रीमाञ्छर्यातिर्नाम पार्थिवः ।।३०।।
तस्यस्त्रीणां सहस्राणि चत्वार्यासन्परिग्रहाः। राजपुत्र्यः सरूपाश्चसर्वलक्षणसंयुताः।३१
पत्न्यः प्रेमयुताः सर्वाः प्रियाराज्ञः सुसम्मताः। एका पुत्री तु तासां वै सुकन्या नाम सुन्दरी।३२
पितुः प्रियाचमातृणांसर्वासांचारुहासिनी। नगरान्नाऽतिदूरेऽभूत्सरोमानससन्निभम्।३३
बद्धसोपानमार्गंचस्वच्छपानीयपूरितम् । हंसकारण्डवाकीर्णं चक्रवाकोपशोभितम्।३४

दात्यूहसारसाकीर्णं सर्वपक्षिगणावृतम्। पञ्चधा कमलोपेतं चञ्चरीकसुसेवितम्।३५
पार्श्वतश्च द्रुमाकीर्णंवेष्टितंपादपैः शुभैः। सालैस्तमालैः सरलैः पुन्नागाशोकमण्डितम्।३६
वटाश्वत्थकदम्बैश्च कदलीखण्डराजितम्। जम्बीरैर्बीजपूरैश्च खर्जूरैः पनसैस्तथा।३७
क्रमुकैर्नारिकेलैश्च केतकैः काञ्चनद्रुमैः। यूथिकाजालकैः शुभैः संवृतं मल्लिकागणैः।३८
जम्ब्वाम्रतिंतिणीभिश्चकरञ्जकुटकावृतम्। पलाशनिम्बखदिरबिल्वामलकमण्डितम्।३९
बभूव कोकिलारावकेकास्वनविराजितम्। तत्समीपे शुभे देशे पादपानां गणावृते।४०

भार्गवश्च्यवनः शान्तस्तापसः संस्थितो मुनिः।
ज्ञात्वाऽसौ विजनं स्थानं तपस्तेपे समाहितः।।४१।।

कृत्वा दृढासनं मौनमाधायजितमारुतः। इन्द्रियाणिचसंयम्यत्यक्ताहारस्तपोनिधिः।४२
जलपानादिरहितो ध्यायन्नास्ते पराम्बिकाम्। स वल्मीकोऽभवद्राजँल्लताभिः परिवेष्टितः।४३
कालेन महता राजन्समाकीर्णःपिपीलकैः। तथाससम्वृतोधीमान्मृतपिण्डइवसर्वतः।४४
कदाचित्स महीपालः कामिनीगणसम्वृतः। आजगाम सरो राजन्विहर्तुमिदमुत्तमम्।४५
शर्यातिः सुन्दरीवृन्दसंयुतः सलिलेऽमले। क्रीडासक्तो महीपालो बभूव कमलाकरे।४६
सुकन्या वनमासाद्य विजहार सखीवृता। सुमनांसिविचिन्वन्तीचञ्चलाचञ्चलोपमा।४७
सर्वाभरणसंयुक्ता रणच्चरणनूपुरा। चङ्क्रममाणा वल्मीकं च्यवनस्य समाददत्।४८
क्रीडासक्तोपविष्टा सा वल्मीकस्य समीपतः। ददर्श चाऽस्य रन्ध्रे वै खद्योत इव ज्योतिषी।४९
किमेतदिति सञ्चिन्त्य समुद्धर्तुंमनोदधे। गृहीत्वा कण्टकंतीक्ष्णंत्वरमाणाकृशोदरी।५०
सा दृष्टा मुनिना बाला समीपस्था कृतोद्यमा। विचरन्ती सुकेशान्ता मन्मथस्येव कामिनी।५१
तांवीक्ष्य सुदतींतत्रक्षामकण्ठस्तपोनिधिः। तामभाषतकल्याणींकिमेतदितिभार्गवः।५२
दूरं गच्छ विशालाक्षि! तापसोऽहं वरानने!। मा भिन्दस्वाऽद्य वल्मीकं कण्टकेन कृशोदरि!।५३

तेनेदं प्रोच्यमानाऽपि सा चाऽस्य न शृणोति वै।
किमु खल्विदमित्युक्त्वा निर्बिभेदाऽस्य लोचने।।५४।।

दैवेन नोदिता भित्त्वा जगाम नृपकन्यका। क्रीडन्तीशङ्कमानासाकिंकृतं तु मयेतिच।५५
चुक्रोध स तथा विद्धनेत्रः परममन्युमान्। वेदनाभ्यर्दितः कामं परितापं जगाम ह।५६
शकृन्मूत्रनिरोधोऽभूत्सैनिकानांतु तत्क्षणात्। विशेषेण तु भूपस्य सामात्यस्य समन्ततः।५७
गजोष्ट्रतुरगाणां च सर्वेषां प्राणिनां तदा। ततोरुद्धेशकृन्मूत्रेशर्यातिर्दुखितोऽभवत्।५८
सैनिकैः कथितं तस्मै शकृन्मूत्रनिरोधनम्। चिन्तयामासभूपालः कारणंदुःखसम्भवे।५९

विचिन्त्याऽऽह ततोराजा सैनिकान्स्वजनांस्तथा।
गृहमाऽऽगत्य चिन्तार्तः केनेदं दुष्कृतं कृतम्।।६०।।

सरसः पश्चिमे भागे वनमध्ये महातपाः। च्यवनस्तापसस्तत्र तपश्चरति दुश्चरम्।६१
केनाऽप्यपकृतं तत्र तापसेऽग्निसमप्रभे। तस्मात्पीडा समुत्पन्ना सर्वेषामितिनिश्चयः।६२
तपोवृद्धस्य वृद्धस्य वरिष्ठस्य विशेषतः। केनाऽप्यपकृतं मन्ये भार्गवस्यमहात्मनः।६३
ज्ञातं वा यदि वाऽज्ञातं तस्येदं फलमुत्तमम्। कैश्च दुष्टैः कृतं तस्य हेलनं तापसस्यह।६४
इति पृष्टास्तमूचुस्ते सैनिका वेदनार्दिताः। मनोवाक्कायजनितं न विद्मोऽपकृतं वयम्।६५

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे शर्यातिराजवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः।।२।।

* तृतीयोऽध्यायः *

च्यवनसुकन्ययोर्विवाहस्तत्सम्बन्धेनगृहस्थयोस्तयोर्वर्णनम्

व्यास उवाच

इति पप्रच्छ तान्सर्वान्राजा चिन्ताकुलस्तथा ।
पर्यपृच्छत्सुहृद्वर्गं साम्ना चोग्रतयाऽपि च ।।१।।

पीड्यमानं जनं वीक्ष्य पितरं दुःखितं तथा। विचिन्त्यशूलभेदंसासुकन्याचेदमब्रवीत्। २
वने मया पितस्तत्र वल्मीको वीरुधावृतः। क्रीडन्त्यासुदृढोदृष्टश्छिद्रद्वयसमन्वितः। ३
तत्र खद्योतवद्दीप्तज्योतिषी वीक्षिते मया। सूच्याविद्धे महाराज! पुनः खद्योतशङ्कया। ४
जलक्लिन्ना तदा सूची मया दृष्टापितः किल। हाहेतिचश्रुतः शब्दोमन्दोवल्मीकमध्यतः। ५
तदाऽहं विस्मिता राजन्किमेतदिति शङ्कया। न जाने किम्मया विद्धं तस्मिन्वल्मीकमण्डले। ६
राजा श्रुत्वा तुशर्यातिः सुकन्यावचनंमृदु। मुनेस्तद्धेलनंज्ञात्वावल्मीकंक्षिप्रमभ्यगात्। ७
तत्राऽपश्यत्तपोवृद्धं च्यवनं दुःखितं भृशम्। स्फोटयामास वल्मीकं मुनिदेहावृतं भृशम्। ८
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ राजा तं भार्गवम्प्रति। तुष्टावविनयोपेतस्तमुवाच कृताञ्जलिः। ९
पुत्र्या मम महाभाग! क्रीडन्त्यादुष्कृतंकृतम्। अज्ञानाद्बालयाब्रह्मन्कृतंतत्क्षन्तुमर्हसि। १०
अक्रोधना हि मुनयो भवन्तीति मया श्रुतम्। तस्मात्त्वमपि बालायाः क्षन्तुमर्हसि साम्प्रतम्। ११

व्यास उवाच

इति श्रुत्वा वचस्तस्य च्यवनो वाक्यमब्रवीत्। विनयोपनतंदृष्ट्वाराजानंदुःखितंभृशम्। १२

च्यवन उवाच

राजन्नाऽहं कदाचिद्वै करोमि क्रोधमण्वपि। न मयाऽद्यैव शप्तस्त्वंदुहित्रा पीडनेकृते। १३
नेत्रे पीडासमुत्पन्ना मम चाऽद्यनिरागसः। तेन पापेन जानामि दुःखितस्त्वं महीपते। १४
अपराधं परं कृत्वा देवी भक्तस्यको जनः। सुखंलभेतयदपिभवेत्त्राता शिवः स्वयम्। १५
किं करोमि महीपाल!-नेत्रहीनोजरावृतः। अन्धस्यपरिचर्याञ्च कःकरिष्यतिपार्थिव। १६

राजोवाच

सेवकाबहवः सेवांकरिष्यन्तितवानिशम्। क्षमस्वमुनिशार्दूलस्वल्पक्रोधाहितापसाः। १७

च्यवन उवाच

अन्धोऽहं निर्जनो राजंस्तपस्तप्तुं कथं क्षमः। त्वदीयाः सेवकाः किन्ते करिष्यन्ति मम प्रियम्। १८
क्षमापयसिचेन्मांत्वं कुरु मे वचनं नृप!। देहि मे परिचर्यार्थंकन्यां कमललोचनाम्। १९
तुष्येऽनया महाराज पुत्र्या तव महामते!। करिष्यामितपश्चाहंसा मे सेवांकरिष्यति। २०
एवं कृते सुखं मे स्यात्तव चैव भविष्यति। सन्तुष्टे मयि राजेन्द्रसैनिकानांनसंशयः। २१
विचिन्त्य मनसा भूप कन्यादानं समाचर। न चात्र दूषणं किञ्चित्तापसोऽहंयतव्रतः। २२

व्यास उवाच

शर्यातिर्वचनं श्रुत्वा मुनेश्चिन्तातुरोऽभवत्। न दास्येऽप्यथ वा दास्ये किञ्चिन्नोवाच भारत!। २३
कथमन्धाय वृद्धाय कुरूपाय सुतामिमाम्। देवकन्योपमां दत्त्वा सुखी स्यामात्मसम्भवाम्। २४

कोवाऽऽत्मनः सुखार्थाय पुत्र्याःसंसारजं सुखम् ।
हरतेऽल्पमतिः पापो जानन्नपि शुभाशुभम् ।।२५।।

प्राप्यसाच्यवनंसुभ्रूः पञ्चबाणशरार्दिता। अन्धं वृद्धं पतिम्प्राप्यकथं कालंनयिष्यति। २६
यौवने दुर्जयः कामोविशेषेणसुरूपया। आत्मतुल्यम्पतिम्प्राप्य किमुवृद्धंविलोचनम्। २७

गौतमं तापसम्प्राप्य रूपयौवनसंयुता। अहल्या वासवेनाऽऽशु वञ्चिता वरवर्णिनी।२८
शप्ताच पतिनापश्चाज्ज्ञात्वा धर्मविपर्ययम्। तस्माद्भवतु मेदुःखंनददामिसुकन्यकाम्।२९
इतिसञ्चिन्त्यशर्यातिर्विमनाः स्वगृहंययौ। सचिवांश्च समादाय मन्त्रं चक्रेऽतिदुःखितः।३०
भो मन्त्रिणो ब्रुवन्त्वद्य किं कर्तव्यं मयाऽधुना। पुत्रीदेयाऽथ विप्रायभोक्तव्यंदुःखमेववा।३१
विचारयध्वं मिलित हितंस्यान्मम वैःकथम ।

मन्त्रिण ऊचुः

किं ब्रूमोऽस्मिन्महाराज! सङ्कटेऽतिदुरासदे ॥३२॥
दुर्भगाय सुकन्यैषा कथं देयाऽतिसुन्दरी ।

व्यास उवाच

तदा चिन्ताकुलम्वीक्ष्य पितरं मन्त्रिणस्तदा ॥३३॥

व्यास उवाच

सुकन्यात्विङ्गितंज्ञात्वाप्रहस्येदमुवाचह । पितः कस्माद्भवानद्यचिन्ताव्याकुलितेन्द्रियः।३४
मत्कृतेदुःखसम्विग्नो विषण्णवदनोऽसिवै। अहंगत्वामुनिंतत्रसमाश्वास्यमयार्दितम्।३५
करिष्यामि प्रसन्नंतमात्मदानेन वै पितः!। इतिराजावचः श्रुत्वा भाषितंयत्सुकन्यया।३६
तामुवाच प्रसन्नात्मा सचिवानाञ्च शृण्वताम्। कथं पुत्रि! त्वमन्धस्य परिचर्यांवनेऽबला।३७
करिष्यसि जरार्तस्यक्रोधनस्यविशेषतः। कथमन्धायचाऽनेन रूपेण रतिसन्निभाम्।३८
ददामि जरया ग्रस्तदेहाय सुवाञ्छया। पित्रा पुत्री प्रदातव्या वयोज्ञातिबलाय च।३९
धनधान्यसमृद्धाय नाऽधनाय कदाचन। क्व ते रूपंविशालाक्षि! क्वाऽसौ वृद्धोवनेचरः।४०
कथं देया मया पुत्री तस्मैचातिवरायच। उटजे नियतम्वासो यस्य नित्यम्मनोहरे।४१
कथमम्बुजपत्राक्षि! कल्पनीयो मया तव। मरणं मे वरंप्राप्तं सैनिकानां तथैव च।४२
न ते प्रदानमन्धाय रोचते पिकभाषिणि!। भवितव्यं भवत्येव धैर्यं नैव त्यजाम्यहम्।४३
सुस्थिरा भव सुश्रोणि! न दास्येऽन्धाय कर्हिचित् ।
राज्यं तिष्ठतुवा यातु देहोऽयं च तथैव मे ॥४४॥
न त्वां दास्याम्यहंतस्मै नेत्रहीनायबालिके। सुकन्यातंतदाप्राह श्रुत्वातद्वचनम्पितुः।४५
प्रसन्नवदनाऽतीव स्नेहयुक्तमिदम्वचः ।

सुकन्योवाच

न मे चिन्ता पितः! कार्या देहि मां मुनयेऽधुना ॥४६॥
सुखम्भवतु सर्वेषां लोकानां मत्कृतेन हि। सेवयिष्यामि सन्तुष्टापतिं परमपावनम्।४७
भक्त्यापरमयाचाऽपि वृद्धं च विजने वने। सतीधर्मपराचाऽहं चरिष्यामिसुसम्मतम्।४८
न भोगेच्छाऽस्ति मे तात! स्वस्थंचित्तंममाऽनघ!।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा भाषितं तस्या मन्त्रिणो विस्मयङ्गताः ॥४९॥
राजा च परमप्रीतो जगाम मुनिसन्निधौ। गत्वा प्रणम्य शिरसातमुवाचतपोधनम्।५०
स्वामिन्गृहाणपुत्रींमेसेवार्थंविधिवद्विभो । इत्युक्त्वाऽस्मैददौपुत्रींविवाह विधिनानृपः।५१
प्रतिगृह्य मुनिःकन्यां प्रसन्नो भार्गवोऽभवत्। पारिबर्हं न जग्राहदीयमानं नृपेण ह।५२
कन्यामेवाऽग्रहीत्कामंपरिचर्यार्थमात्मनः। प्रसन्नेऽस्मिन्मुनौजातंसैनिकानांसुखंतदा।५३
राज्ञश्च परमाह्लादः सञ्जातस्तत्क्षणादपि। दत्त्वा पुत्रीं यदा राजा गमनाय गृहम्प्रति।५४

मतिञ्चकार तन्वङ्गी तदोवाच नृपं सुता ।

सुकन्योवाच

गृहाण मम वासांसि भूषणानि च मे पितः! ।।५५।।

वल्कलम्परिधानाय प्रयच्छाऽजिनमुत्तमम्। वेषन्तुमुनिपत्नीनां कृत्वा तपसिसेवनम्।५६
करिष्यामि तथा तात! तथातेकीर्तिरच्युता। भविष्यतिभुवः पृष्ठे तथास्वर्गे रसातले।५७
परलोकसुखायाऽहं चरिष्यामि दिवानिशम्। दत्त्वाऽन्धाय च वृद्धाय सुन्दरीं युवतीं तु माम्।५८
चिन्ता त्वया न कर्तव्या शीलनाशसमुद्भवा। अरुन्धती वसिष्ठस्यधर्मपत्नीयथाभुवि।५९

तथैवा हंभविष्यामिनात्रकार्याविचारणा ।
अनसूयायथासाध्वीभार्याऽत्रेःप्रथिताभुवि ।।६०।।

तथैवाऽहं भविष्यामि पुत्रीकीर्तिकरीतव। सुकन्यावचनं श्रुत्वा राजा परमधर्मवित्।६१

दत्त्वाऽजिनं रुरोदाऽऽशु वीक्ष्य तां चारुहासिनीम् ।
त्यक्त्वा भूषणवासांसि मुनिवेषधरां सुताम् ।।६२।।

विवर्णवदनो भूत्वा स्थितस्तत्रैव पार्थिवः। राज्ञ्यः सर्वाःसुतां दृष्ट्वा वल्कलाजिनधारिणीम्।६३
रुरुदुर्भृशशोकार्ता वेपमानाइवाऽभवन्। तामापृच्छ्यमहीपालोमन्त्रिभिःपरिवारितः।

ययौ स्वनगरं राजा मुक्त्वा पुत्रीं शुचाऽर्पिताम् ।।६४।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे च्यवनसुकन्ययोर्गार्हस्थ्यवर्णनंनामतृतीयोऽध्यायः ।।३।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

सुकन्ययाच्यवनपतिसेवावर्णनम्

व्यास उवाच

गते राजनि सा बाला पतिसेवापरायणा। बभूव च तथाऽग्नीनां सेवने धर्मतत्परा।१
फलान्यादाय स्वादूनिमूलानि विविधानि च। ददौ सामुनये बालापतिसेवापरायणा।२
पतिं तप्तोदकेनाऽऽशु स्नापयित्वा मृगत्वचा। परिवेष्ट्य शुभायां तु वृस्यां स्थापितवत्यपि।३
तिलान्यवकुशानग्रे परिकल्प्य कमण्डलुम्। तमुवाच नित्य कर्मकुरुष्व मुनिसत्तम!।४
तमुत्थाप्यकरे कृत्वा समाप्ते नित्यकर्मणि। वृस्यांवासंस्तरे बालाभर्तारं संन्यवेशयत्।५
पश्चादानीय पक्वानि फलानिच नृपात्मजा। भोजयामासच्यवनंनीवारान्नंसुसंस्कृतम्।६
भुक्तवन्तं पतिं तृप्तं दत्त्वाऽऽचमनमादरात्। पश्चाच्च पूगं पत्राणि ददौ चादरसंयुता।७
गृहीतमुखवासं तं सम्वेश्यच शुभाऽऽसने। गृहीत्वाऽऽज्ञांशरीरस्यचकारसाधनंततः।८
फलाहारं स्वयं कृत्वा पुनर्गत्वा च सन्निधौ। प्रोवाच प्रणयोपेताकिमाज्ञापयसेप्रभो।९
पादसंवाहनं तेऽद्यकरोमि यदि मन्यसे। एवं सेवापरा नित्यं बभूव पतितत्परा।१०
सायं होमाऽवसाने सा फलान्याहृत्य सुन्दरी। अर्पयामास मुनये स्वादूनि च मृदूनि च।११
ततः शेषाणि बुभुजे प्रेमयुक्ता तदाज्ञया। सुस्पर्शास्तरणंकृत्वा शाययामास तं मुदा।१२
सुप्ते सुखं प्रिये कान्ता पादसम्वाहनं तथा। चकार पृच्छतीधर्मंकुलस्त्रीणांकृशोदरी।१३
पादसम्वाहनं कृत्वा निशिभक्ति परायणा। निद्रितंचमुनिंज्ञात्वा सुष्वापचरणान्तिके।१४
शुचौ प्रतिष्ठितं वीक्ष्यतालवृन्तेन भामिनी। कुर्वाणाशीतलं वायुंसिषेवेस्वपतिंतदा।१५

हेमन्ते काष्ठसम्भारं कृत्वाऽग्निज्वलनं पुरः ।
स्थापयित्वा तथाऽपृच्छत्सुखं तेऽस्तीति चाऽसकृत् ।।१६।।

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय जलंपात्रंचमृत्तिकाम्।समर्पयित्वाशौचार्थंसमुत्थाप्यपतिंप्रिया।१७
स्थानाद्दूरेचसंस्थाप्यदूरंगत्वास्थिराऽभवत्।कृतशौचम्पतिंगत्वाज्ञात्वाजग्राहतंपुनः।१८
आनीयाश्रममव्यग्राचोपवेश्याऽऽसनेशुभे।मृज्जलाभ्यांचप्रक्षाल्यपादावस्ययथाविधि।१९
दत्त्वाऽऽचमनपात्रं तु दन्तधावनमाहरत्।समर्प्य दन्तकाष्ठं च यथोक्तं नृपनन्दिनी।२०
चकारोष्णं जलं शुद्धं समानीतंसुपावनम्।स्नानार्थं जलमाहृत्य पप्रच्छ प्रणयान्विता।२१
किमाज्ञापयसे ब्रह्मन्कृतं वै दन्तधावनम्।उष्णोदकं सुसंपन्नंकुरु स्नानं समन्त्रकम्।२२
वर्तते होमकालोऽयं सन्ध्या पूर्वा प्रवर्तते।विधिवद्धवनं कृत्वा देवतापूजनं कुरु।२३
एवं कन्या पतिं लब्ध्वा तपस्विनमनिन्दिता।नित्यंपर्यचरत्प्रीत्या तपसानियमेन च।२४
अग्नीनामतिथीनां च शुश्रूषांकुर्वती सदा।आराधयामास मुदा च्यवनं सा शुभानना।२५
कस्मिंश्चिदथकालेतुरविजावश्विनावुभौ ।च्यवनस्याश्रमाभ्याशेक्रीडमानौसमागतौ।२६

जले स्नात्वा तु तां कन्यां निवृत्तां स्वाऽऽश्रमम्प्रति ।
गच्छन्तीं चारुसर्वांगीं रविपुत्रावपश्यताम् ।।२७।।

तां दृष्ट्वादेवकन्यायांगत्वाचान्तिकमादरात्।ऊचतुः समभिद्रुत्यनासत्यावतिमोहितौ।२८
क्षणं तिष्ठ वरारोहे! प्रष्टुं त्वांगजगामिनि।आवांदेवसुतौप्राप्तौब्रूहिसत्यंशुचिस्मिते।२९
पुत्रीकस्यपतिः कस्तेकथमुद्यानमागता।एकाकिनीतडागेऽस्मिन्स्नानार्थंचारुलोचने!।३०

द्वितीया श्रीरिवाऽऽभासि कान्त्या कमललोचने! ।
इच्छामस्तु वयं ज्ञातुं तत्त्वमाख्याहि शोभने! ।।३१।।

कोमलौ चरणौकान्ते स्थितौ भूमावनावृतौ।हृदये कुरुतः पीडांचलन्तौचललोचने।३२
विमानार्हाऽसितन्वङ्गि!कथं पद्भ्यांव्रजस्यदः।अनावृताऽत्रविपिनेकिमर्थंगमनं तव।३३
दासीशतसमायुक्ता कथं न त्वं विनिर्गता।राजपुत्र्यप्सरावाऽसिवदसत्यंवरानने!।३४
धन्या मातायतोजाताधन्योऽसौजनकस्तव।वक्तुंत्वांनैवशक्तौच भर्तुर्भाग्यंतवाऽनघे।३५
देवलोकाऽधिकाभूमिरियंचैव सुलोचने!।प्रचलंश्चरणस्तेऽद्य सम्पावयतिभूतलम्।३६

सौभाग्याश्च मृगाः कामं ये त्वाम्पश्यन्ति वै वने ।
ये चाऽन्ये पक्षिणः सर्वे भूरियं चाऽतिपावना ।।३७।।
स्तुत्याऽलं तव चात्यर्थं सत्यं ब्रूहि सुलोचने! ।
पिता कस्ते पतिः क्वाऽसौ द्रष्टुमिच्छाऽस्ति सादरम् ।।३८।।

व्यास उवाच

तयोरितिवचः श्रुत्वाराजकन्याऽतिसुन्दरी।तावुवाच त्रपाक्रान्तादेवपुत्रौनृपात्मजा।३९
शर्यातितनयां मां वां वित्तंभार्यांमुनेरिह।च्यवनस्यसतींकान्तांपित्रादत्तांयदृच्छया।४०
पतिरन्धोऽस्तिमे देवौ !वृद्धश्चाऽतीवतापसः।तस्यसेवामहोरात्रंकरोमिप्रीतमानसा।४१

कौयुवां किमिहाऽऽयातौपतिस्तिष्ठतिचाऽऽश्रमे ।
तत्रागत्यप्रकुरुतमाश्रमंचाद्यपावनम् ।।४२।।

तदाकर्ण्य वचो दस्रावूचतुस्तांनराधिप!।कथं त्वमपिकल्याणिपित्रादत्तातपस्विने।४३
भ्राजसेऽस्मिन्वनोद्देशे विद्युत्सौदामिनी यथा।न देवेष्वपि तुल्या हि तव दृष्टाऽस्ति भामिनि!।४४
त्वं दिव्याम्बरयोग्याऽसिशोभसेनाजिनैर्वृता।सर्वाभरणसंयुक्ता नीलालकवरूथिनी।४५

अहो विधेर्दुष्कलिन्विचेष्टितं यदत्र रम्भोरु ! वने विषीदसि ।
विशालनेत्रेऽन्धमिमं पतिं प्रिये! मुनिं समासाद्य जरातुरं भृशम् ॥४६॥

वृथा वृतस्तेन भृशं न शोभसे नवं वयः प्राप्य सुनृत्यपण्डिते! ।
मनोभवेनाऽऽशु शराः सुसंहिताः पतन्ति कस्मिन्पतिरीदृशस्तव ॥४७॥
त्वमन्धभार्या नवयौवनान्विता कृताऽसि धात्रा ननु मन्दबुद्धिना ।
न चैनमर्हस्यसितायतेक्षणे! पतिं त्वमन्यं कुरु चारुलोचने! ॥४८॥
वृथैव ते जीवितम्बुजेक्षणे! पतिं च सम्प्राप्य मुनिं गतेक्षणम् ।
वने निवासं च तथाऽजिनाम्बरप्रधारणं योग्यतरं न मन्महे ॥४९॥
अतोऽनवद्याङ्ग्युभयोस्त्वमेकक्कं वरं कुरुष्वाऽवहितासुलोचने! ।
किं यौवनम्मानिनिनि! सङ्करोषि वृथा मुनिं सुन्दरि! सेवमाना ॥५०॥
किं सेवसे भाग्यविवर्जितं तं समुज्झितं पोषणरक्षणाभ्याम् ।
त्यक्त्वा मुनिं सर्वसुखापवर्जितं भजाऽनवद्याङ्ग्युभयोस्त्वमेकम् ॥५१॥
त्वं नन्दने चैत्ररथे वने च कुरुष्व कान्ते! प्रथितं विहारम् ।
अन्धेन वृद्धेन कथं हि कालं विनेष्यसे मानिनि! मानहीनम् ॥५२॥
भूपात्मजा त्वं शुभलक्षणा च जानासि संसारविहारभावम् ।
भाग्येन हीना विजने वनेऽत्र कालं कथं वाहयसे वृथा च ॥५३॥
तस्माद्भजस्व पिकभाषिणि! चारुवक्त्रे! एवं द्वयोस्तव सुखाय विशालनेत्रे! ।
देवालयेषु च कृशोदरि! भुङ्क्ष्व भोगांस्त्यक्त्वा मुनिंजरठमाशु नृपेन्द्रपुत्रि! ॥५४॥
किं ते सुखं यत्र वने सुकेशि! वृद्धेन सार्धं विजने मृगाक्षि! ।
सेवा तथाऽन्धस्य नवं वयश्च किं ते मतं भूपतिपुत्रि! दुःखम् ॥५५॥
नववयः सुखभोगसमीहितं चटुलपक्ष्मधरे वरवर्णिनि ।
शशिमुखि! त्वमतीव सुकोमला फलजलाहरणं तव नोचितम् ॥५६॥

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे अश्विनीकुमारयोःसुकन्याम्प्रतिबोधवचनवर्णनं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

* पञ्चमोऽध्यायः *

अश्विभ्यांकथनेनच्यवनस्यसरोवरस्नानाद्युवावस्थाप्राप्तिवर्णनम्

व्यास उवाच

तयोस्तद्भाषितं श्रुत्वा वेपमाना नृपात्मजा। धैर्यमालम्ब्य तौतत्रवभाषेमितभाषिणी। १
देवौ वां रविपुत्रौ च सर्वज्ञौसुरसम्मतौ। सतीं मां धर्मशीलां च नैवम्वदितुमर्हथः। २
पित्रा दत्ता सुरश्रेष्ठौ मुनये योगधर्मिणे। कथं गच्छामि तं मार्गंपुंश्चलीगणसेवितम्। ३
द्रष्टाऽयं सर्वलोकस्य कर्मसाक्षी दिवाकरः। कश्यपाच्चैवसम्भूतो नैवं भाषितुमर्हथः। ४
कुलकन्या पतिं त्यक्त्वाकथमन्यंभजेन्नरम्। असारेऽस्मिन्हि संसारे जानन्तौ धर्मनिर्णयम्। ५
यथेच्छंगच्छतंदेवौशापं दास्यामि वाऽनघौ। सुकन्याऽहंचशर्यातेः पतिभक्तिपरायणा। ६

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्यवचस्तस्य नासत्यौ विस्मितौ भृशम् ।
तावब्रूतां पुनस्त्वेनां शङ्कमानौ भयं मुनेः ॥७॥

राजपुत्रि! प्रसन्नौ ते धर्मेण वरवर्णिनि!। वरं वरय सुश्रोणि! दास्यावःश्रेयसे तव। ८
जानीहि प्रमदे! नूनमावां देवभिषग्वरौ। युवानंरूपसम्पन्नं प्रकुर्यावः पतिं तव। ९
ततस्त्रयाणामस्माकं पतिमेकतमं वृणु। समानरूपदेहानां मध्ये चातुर्यपण्डिते। १०
सा तयोर्वचनं श्रुत्वा विस्मिता स्वपतिं तदा। गत्वोवाच तयोर्वाक्यं ताभ्यामुक्तं यदद्भुतम्। ११

सुकन्योवाच

स्वामिन्सूर्यसुतौदेवौसम्प्राप्तौच्यवनाऽऽश्रमे। दृष्टौ मयादिव्यदेहौ नासत्यौ भृगुनन्दन।१२
वीक्ष्य मां चारुसर्वाङ्गीं जातौ कामातुरावुभौ। कथितं वचनं स्वामिन्पतिं ते नवयौवनम्।१३
दिव्यदेहं करिष्यावश्चक्षुष्मन्तम्मुनिंकिल। एतेनसमयेनाऽद्य तं शृणु त्वं मयोदितम्।१४
समावयवरूपं च करिष्यावः पतिं तव। तत्र त्रयाणामस्माकं पतिमेकतमं वृणु।१५
तच्छ्रुत्वाऽहमिहायाताप्रष्टुंत्वांकार्यमद्भुतम्। किंकर्तव्यमतः साधोब्रूह्यस्मिन्कार्यसङ्कटे।१६
देवामायाऽपि दुर्ज्ञेया न जाने कपटं तयोः। यदाज्ञापय सर्वज्ञ! तत्करोमि तवेप्सितम्।१७

च्यवन उवाच

गच्छकान्तेऽद्यनासत्यौवचनान्ममसुव्रते!। आनयस्व समीपं मे शीघ्रं देवभिषग्वरौ।१८
क्रियतामाशु तद्वाक्यं नाऽत्र कार्या विचारणा।

व्यासउवाच

एवं सा समनुज्ञाता तत्र गत्वा वचोऽब्रवीत् ॥१९॥
क्रियतामाशु नासत्यौ समयेन सुरोत्तमौ!।
तच्छ्रुत्वाचाऽश्विनौ वाक्यंतस्यास्तौतत्र चाऽऽगतौ ॥२०॥
ऊचतू राजपुत्रीं तां पतिस्तव विशस्त्वपः। रूपार्थं च्यवनस्तूर्णंततोऽम्भः प्रविवेशह।२१
अश्विनावपिपश्चात्तत्प्रविष्टौसरउत्तमम्। ततस्तेनिःसृतास्तस्मात्सरसस्तत्क्षणात्त्रयः।२२
तुल्यरूपा दिव्यदेहा युवानः सदृशाः किल। दिव्यकुण्डलभूषाढ्याः समानावयवास्तथा।२३
तेऽब्रुवन् सहिताः सर्वे वृणीष्व वरवर्णिनि!। अस्माकमीप्सितंभद्रेपतिंत्वममलानने।२४
यस्मिन्वाऽप्यधिका प्रीतिस्तं वृणुष्व वरानने।

व्यास उवाच

सा दृष्ट्वा तुल्यरूपांस्तान्समानवयसस्तथा ॥२५॥
एक स्वरांस्तुल्यवेषांस्त्रीन्वैदेवसुतोपमान्। सातुसंशयमापन्नावीक्ष्यतान्सदृशाकृतीन्।२६
अजानती पतिं सम्यग्व्याकुला समचिन्तयत्। किं करोमि त्रयस्तुल्याः कं वृणोमि न वेद्म्यहम्।२७
पतिं देवसुताह्येतेसंशयेपतिताऽस्म्यहम्। इन्द्रजालमिदंसम्यग्देवाभ्यामिहकल्पितम्।२८
कर्तव्यं किं मया चाऽत्रमरणं समुपागतम्। न मया पतिमुत्सृज्य वरणीयः कथञ्चन।२९
देवस्त्वाधुनिकः कश्चिदित्येषाममधारणा। इतिसञ्चिन्त्यमनसापरांविश्वेश्वरींशिवाम्।३०
दध्यौ भगवतीं देवीं तुष्टाव च कृशोदरी।

सुकन्योवाच

शरणं त्वां जगन्मातः प्राप्ताऽस्मि भृशदुःखिता ॥३१॥

रक्ष मेऽद्य सतीधर्मं नमामि चरणौ तव। नमः पद्मोद्भवे! देवि! नमः शङ्करवल्लभे!।३२
विष्णुप्रिये! नमो लक्ष्मि वेदमातः सरस्वति!। इदं जगत्त्वयासृष्टं सर्वंस्थावरजङ्गमम्।३३
पासि त्वमिदमव्यग्रातथाऽस्तिलोकशान्तये। ब्रह्मविष्णुमहेशानांजननीत्वंसुसम्मता।३४
बुद्धिदाऽसि त्वमज्ञानां ज्ञानिनां मोक्षदा सदा।
आज्ञा त्वं प्रकृतिः पूर्णापुरुषप्रियदर्शना ॥३५॥
भुक्तिमुक्ति प्रदाऽसि त्वं प्राणिनां विशदात्मनाम्।
अज्ञानां दुःखदा कामं सत्त्वानां सुखसाधना ॥३६॥
सिद्धिदा योगिनामम्ब! जयदा कीर्तिदा पुनः। शरणंत्वांप्रपन्नाऽस्मिविस्मयंपरमंगता।३७

पतिं दर्शय मे मातर्मग्नाऽस्मिञ्छोकसागरे। देवाभ्यां चरितंकूटंकंवृणोमिविमोहिता।३८
पतिं दर्शय सर्वज्ञे! विदित्वा मे सतीव्रतम्।

व्यास उवाच

एवं स्तुता तदा देवी तथा त्रिपुरसुन्दरी ।।३९।।
हृदयेऽस्यास्तदाज्ञानं ददावाऽऽशुसुखोदयम्। निश्चित्यमनसातुल्यवयोरूपधरान्सती।४०
प्रसमीक्ष्य तु तान्सर्वान्वव्रे बाला स्वकंपतिम्। वृतेऽथ च्यवने देवौ सन्तुष्टौ तौ बभूवतुः।४१
सतीधर्मं समालोक्य सम्प्रीतौ ददतुर्वरम्। भगवत्याः प्रसादेन प्रसन्नौ तौ सुरोत्तमौ।४२
मुनिमामन्त्र्य तरसागमनायोद्यतावुभौ। लब्ध्वा तु च्यवनो रूपं नेत्रेभार्याञ्चयौवनम्।४३
हृष्टोऽब्रवीन्महातेजास्तौ नासत्याविदं वचः। उपकारः कृतोऽयंमेयुवाभ्यांसुर सत्तमौ।४४
किं ब्रवीमि सुखं प्राप्तंसंसारेऽस्मिन्ननुत्तमे। प्राप्यभार्यांसुकेशान्तांदुःखंमेऽभवदन्वहम्।४५
अन्धस्य चाऽतिवृद्धस्य भोगहीनस्य कानने। युवाभ्यां नयने दत्ते यौवनं रूपमद्भुतम्।४६
सम्पादितं ततः किञ्चिदुपकर्तुमहं ब्रुवे। उपकारिणि मित्रे यो नोपकुर्यात्कथञ्चन।४७
तं धिगस्तु नरं देवौ! भवेच्च ऋणवान्भुवि।
तस्माद्वां वाञ्छितं किञ्चिद्दातुमिच्छामि साम्प्रतम् ।।४८।।
आत्मनो ऋणमोक्षाय देवेशौ! नूतनस्य च। प्रार्थितंवांप्रदास्यामियदलभ्यंसुरासुरैः।४९
ब्रुवाथांवांमनोद्दिष्टंप्रीतोऽस्मिसुकृतेनवाम्। श्रुत्वातौतुमुनेर्वाक्यमभिमन्त्र्यपरस्परम्।५०
तमूचतुर्मुनिश्रेष्ठ!सुकन्यासहितं स्थितम्। मुने! पितुः प्रसादेन सर्वंनोमनसेप्सितम्।५१
उत्कण्ठा सोमपानस्य वर्तते नौ सुरैः सह। भिषजाविति! देवेन निषिद्धौ चमसग्रहे।५२
शक्रेण वितते यज्ञे ब्रह्मणः कनकाचले। तस्मात्त्वमपि धर्मज्ञ यदि शक्तोऽसि तापस।५३
कार्यमेतद्धि कर्तव्यं वाञ्छितं नौ सुसम्मतम्। एतद्विज्ञाय वा ब्रह्मन्कुरुवांसोमपायिनौ।५४
पिपासाऽस्ति सुदुष्प्रापा त्वत्तः समुपयास्यति। च्यवनस्तु तयोः प्राह तच्छ्रुत्वा वचनं मृदु।५५
यदहं रूपसम्पन्नो वयसा च समन्वितः। कृतो भवद्भ्यां वृद्धःसन्भार्यांचप्राप्तवानिति।५६
तस्माद्युवांकरिष्यामिप्रीत्याऽहं सोमपायिनौ। मिषतो देवराजस्य सत्यमेतद्ब्रवीम्यहम्।५७
राज्ञस्तु वितते यज्ञे शर्यातेरमितद्युतेः। इत्याकर्ण्य वचो हृष्टौ तौ दिवं प्रति जग्मतुः।५८
च्यवनस्तां गृहीत्वा तु जगामाऽऽश्रममण्डलम्।।५९।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे अश्विभ्यांच्यवनद्वारासोमपानायप्रतिज्ञावर्णनं नाम पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।

* षष्ठोऽध्यायः *

शर्यातिः स्वपुत्रीदर्शनार्थंच्यवनाश्रमेगमनंऋषिंयुवानंदृष्ट्वापुत्रीम्प्रतिराज्ञः कोपः
मुनिनासर्ववृत्तान्तवर्णनंपश्चाच्छर्यातिनायज्ञकरणम्

जनमेजय उवाच

च्यवनेन कथं वैद्यौ तौ कृतौ सोमपायिनौ। वचनं च कथं सत्यंजातंतस्यमहात्मनः।१
मानुषस्य बलं कीदृग्देवराजबलंप्रति। निषिद्धौ भिषजौतेन कृतौ तौ सोमपायिनौ।२
धर्मनिष्ठ! तदाश्चर्यंविस्तरेणवद प्रभो। चरितंच्यवनस्याऽद्यश्रोतुकामोऽस्मिसर्वथा।३

व्यास उवाच

निशामय महाराज चरितं परमाद्भुतम्। च्यवनस्य मखे तस्मिञ्छर्यातिर्भुवि भारत!।४
सुकन्यां सुन्दरीं प्राप्य च्यवनः सुरसन्निभः। विजहार प्रसन्नात्मादेवकन्यामिवाऽपरः।५

कदाचिदथ शर्यातिभार्या चिन्तातुरा भृशम्। पतिम्प्राहवेपमाना वचनं रुदती प्रिया।६
राजन्पुत्री त्वया दत्ता मुनयेऽन्धाय कानने। मृता जीवतिवासातुद्रष्टव्यासर्वथात्वया।७
गच्छनाथ! मुनेस्तावदाश्रमंद्रष्टुमादरात्। किंकरोतिसुकन्यासाप्राप्यनाथंतथाविधम्।८
पुत्रीदुःखेन राजर्षे दग्धाऽस्मि सर्वथा हृदि। वशालाक्षींतपःक्षामांमदन्तिके ।९
पश्यामि सर्वथापुत्रींकृशाङ्गींवल्कलावृताम्। अन्धंपतिंसमासाद्यदुःखभाजंकृशोदरीम्।१०

शर्यातिरुवाच

गच्छामोऽद्य विशालाक्षि सुकन्यांद्रष्टुमादरात्।
प्रियपुत्रींवरारोहेमुनिंतंसंशितव्रतम् ।।११।।

व्यास उवाच

एवमुक्त्वा तु शर्यातिः कामिनींशोकसङ्कुलाम्। जगामरथमारुह्यत्वरितश्चाऽऽश्रमंमुनेः ।१२
गत्वाऽऽश्रमसमीपे तु तमपश्यन्महीपतिः। नवयौवनसम्पन्नं देवपुत्रोपमं मुनिम्।१३
तं विलोक्याऽमराकारं विस्मयंनृपतिर्गतः। किंकृतंकुत्सितंकर्मपुत्र्यालोकविगर्हितम्।१४
निहतोऽसौ मुनिर्वृद्धस्त्वनयाऽन्यः पतिः कृतः। कामपीडितया कामं प्रशान्तोऽप्यतिनिर्धनः।१५
दुःसहोऽयं पुष्पधन्वा विशेषेण च यौवने। कुले कलङ्कः सुमहाननया मानवे कृतः।१६
धिक्तस्यजीवितंलोकेयस्यपुत्रीहिकुत्सिता। सर्वपापैस्तुदुःखायपुत्रीभवतिदेहिनाम्।१७
मया त्वनुचितं कर्मकृतं स्वार्थस्य सिद्धये। वृद्धायाऽन्धाययादत्तापुत्रीसर्वात्मनाकिल।१८
कन्या योग्याय दातव्या पित्रासर्वात्मना किल। तादृशं हि फलं प्राप्तं यादृशंवैकृतंमया।१९
हन्मि चेदद्यतनयांदुःशीलांपापकारिणीम्। स्त्रीहत्यादुस्तरास्यान्मेतथापुत्र्याविशेषतः।२०
मनुवंशस्तुविख्यातः सकलङ्कः कृतोमया। लोकापवादोबलवान्दुस्त्याज्यास्नेहशृङ्खला।२१

किं करोमीति चिन्ताब्धौ यदा मग्नः स पार्थिवः।
सुकन्यया तदा दैवाद्दृष्टश्चिन्ताकुलः पिता ।।२२।।

सा दृष्ट्वा तं जगामाऽऽशु सुकन्या पितुरन्तिके। गत्वा पप्रच्छभूपालं प्रेमपूरितमानसा।२३
किं विचारयसे राजंश्चिन्ताव्याकुलिताननः। उपविष्टं मुनिं वीक्ष्य युवानमम्बुजेक्षणम्।२४
एह्येहि पुरुषव्याघ्र! प्रणमस्व पतिं मम। मा विषादं नृपश्रेष्ठ! साम्प्रतं कुरु मानव!।२५

व्यास उवाच

इति पुत्र्या वचः श्रुत्वा शर्यातिः क्रोधपीडितः। प्रोवाचवचनंराजापुरःस्थांतनयांततः ।२६

राजोवाच

क्व मुनिश्च्यवनः पुत्रि! वृद्धोऽन्धस्तापसोत्तमः।
कोऽयं युवा मदोन्मत्तः सन्देहोऽत्र महान्मम ।।२७।।

मुनिः किंनिहतः पापेत्वयादुष्कृतकारिणि!। नूतनोऽसौपतिःकामात्कृतःकुलविनाशिनी।२८
सोऽहंचिन्तातुरस्तेन पश्याम्याश्रमसंस्थितम्। किंकृतं दुष्कृतंकर्मकुलटाचरितं किल।२९
निमग्नोऽहं दुराचारे शोकाब्धौत्वत्कृतेऽधुना। दृष्ट्वैनंपुरुषंदिव्यमदृष्ट्वा च्यवनंमुनिम्।३०
विहस्य तमुवाचाऽऽशु सा श्रुत्वा वचनं पितुः। गृहीत्वाऽनीय पितरं भर्तुरन्तिकमादरात्।३१
च्यवनोऽसौमुनिस्तातजामातातेनसंशयः। अश्विभ्यामीदृशःकान्तःकृतःकमललोचनः।३२
यदृच्छयाऽत्र सम्प्राप्तौनासत्यावाश्रमेमम। ताभ्यां करुणया नूनं च्यवनस्तादृशःकृतः।३३
नाऽहं तवसुता तात तथा स्यां पापकारिणी। यथात्वं मन्यसे राजन्विमूढो रूपसंशये।३४

प्रणमत्वं मुनिं राजन्भार्गवंच्यवनं पितः। आपृच्छ कारणं सर्वंकथयिष्यतिविस्तरम्।३५
इतिश्रुत्वावचः पुत्र्याः शर्यातिस्त्वरितस्तदा। प्रणनाम मुनिंतत्र गत्वापप्रच्छ सादरम्।३६

राजोवाच

कथयस्व स्ववृत्तान्तं भार्गवाशु यथोचितम्। नयने च कथम्प्राप्तेंक्व गताते जरा पुनः।३७
संशयोऽयं महान्मेऽस्ति रूपं दृष्ट्वाऽतिसुन्दरम्। वद विस्तरतो ब्रह्मञ्छ्रु त्वाऽहं सुखमाप्नुयाम्।३८

च्यवन उवाच

नासत्यावत्र सम्प्राप्तौ देवानां भिषजावुभौ। उपकारः कृतस्ताभ्यां कृपया नृपसत्तम।३६
मया ताभ्यां वरोदत्त उपकारस्यहेतवे। करिष्यामि मखेराज्ञो भवन्तौ सोमपायिनौ।४०
एवं मया वयः प्राप्तंलोचनेविमलेतथा। स्वस्थोभवमहाराज! सम्विशस्वाऽऽसने शुभे।४१
इत्युक्तः स तु विप्रेण सभार्यः पृथिवीपतिः। सुखोपविष्टः कल्याणीः कथाश्चक्रे महात्मना।४२
अथैनं भार्गवः प्राहराजानंपरिसान्त्वयन्। याजयिष्यामिराजंस्त्वांसम्भारानुपकल्पय।४३
मया प्रतिश्रुतंताभ्यां कर्तव्यौ सोमपौ युवाम्। तत्कर्तव्यं नृपश्रेष्ठ तव यज्ञेऽतिविस्तरे।४४
इन्द्रं निवारयिष्यामि क्रुद्धं तेजोबलेन वै। पाययिष्यामि राजेन्द्र सोमं सोममखे तव।४५
ततः परमसन्तुष्टः शर्यातिः पृथिवीपतिः। च्यवनस्यमहाराज! तद्वाक्यं प्रत्यपूजयत्।४६
सम्मान्य च्यवनं राजा जगाम नगरम्प्रति। सभार्यश्चाऽतिसन्तुष्टः कुर्वन्वार्तां मुनेः किल।४७
प्रशस्तेऽहनि यज्ञीये सर्वकामसमृद्धिमान्। कारयामासशर्यातिर्यज्ञायतनमुत्तमम्।४८
समानीय मुनीन्पूज्यान्वसिष्ठप्रमुखानसौ। भार्गवो याजयामासच्यवनः पृथिवीपतिम्।४६
वितते तु तथा यज्ञे देवाः सर्वे सवासवाः। आजग्मुश्चाश्विनौ तत्र सोमार्थमुपजग्मतुः।५०
इन्द्रस्तु शङ्कितस्तत्र वीक्ष्य तावश्विनावुभौ। पप्रच्छ च सुरान्सर्वान्किमेतौ समुपागतौ!।५१
चिकित्सकौ न सोमार्हौ केनानीताविहेति च। नाब्रुवन्नमरास्तत्र राज्ञस्तु वितते मखे।५२
अगृह्णाच्च्यवनः सोममश्विनोर्देवयोस्तदा। शक्रस्तं वारयामास मा गृहाणैतयोर्ग्रहम्।५३
तमाह च्यवनस्तत्र कथमेतौ रवेः सुतौ। न ग्रहार्हौ च नासत्यौब्रूहि सत्यं शचीपते!।५४
न सङ्करौ समुत्पन्नौ धर्मपत्नीसुतौ रवेः। केन दोषेण देवेन्द्र! नाऽर्हौ सोमं भिषग्वरौ।५५
निर्णयोऽत्रमखेशक्र! कर्तव्यो दैवतैःसह। ग्राहयिष्याम्यहं सोमंकृतौतौ सोमपौमया।५६
प्रेरितोऽसौ मया राजा मखाय मघवन्किल। एत्तदर्थं करिष्यामि सत्यं मे वचनं विभो!।५७
आभ्यामुपकृतं शक्र! तथा दत्तं नवं वयः। तस्मात्प्रत्युपकारस्तु कर्तव्यः सर्वथा मया।५८

इन्द्र उवाच

चिकित्सकौ कृतावेतौ नासत्यौ निन्दितौसुरैः। उभावेतौ न सोमार्हौ मा गृहाणैतयोर्ग्रहम्।५६

च्यवन उवाच

अहल्याजार! संयच्छ कोपंचाऽद्यनिरर्थकम्। वृत्रघ्नकिंहिनासत्यौनसोमार्हौसुरात्मजौ।६०
एवं विवादे समुपस्थिते च न कोऽपि वाचं तमुवाचभूप!।
ग्रहं तयोर्भार्गवतिग्मतेजाः संग्राहयामास तपोबलेन ॥६१॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे च्यवनेनाश्विनोःकृतेसोमपानाधिकारत्वचेष्टावर्णनंनामषष्ठोऽध्यायः॥६॥

----

* सप्तमोऽध्यायः *

शर्यातियज्ञे सोमपानसमयेऽश्विनोः
कृतेइन्द्रकोपश्च्यवनेनेन्द्रार्थेमदासुरोत्पत्तिःपुनर्गुरुणेन्द्रसान्त्वनवर्णनम्

व्यास उवाच

दत्ते ग्रहे तु राजेन्द्र! वासवः कुपितो भृशम्। प्रोवाच च्यवनं तत्रदर्शयन्बलमात्मनः। १
माब्रह्मबन्धोमर्यादामिमांत्वंकर्तुमर्हसि । वधिष्यामिद्विषन्तंत्वांविश्वरूपमिवाऽपरम्। २

च्यवन उवाच

माऽवमंस्था महात्मानौ रूपद्रविणवर्चसा। यौ चक्रतुर्मां मघवन्वृन्दारकमिवाऽपरम्। ३
ऋते त्वांविबुधाश्चान्ये कथंवाऽऽददतेग्रहम्। अश्विनावपिदेवेन्द्रदेवौविद्धिपरन्तपौ। ४

इन्द्र उवाच

भिषजौ नाऽर्हतः कामं ग्रहं यज्ञे कथञ्चन।
यदि दित्ससि मन्दात्मन्! शिरश्छेत्स्यामि साम्प्रतम् ॥५॥

व्यास उवाच

अनादृत्यतु तद्वाक्यं वासवस्यच भार्गवः। ग्रहंतु ग्राहयामास भर्त्सयन्निव तं भृशम्। ६
सोमपात्रं यदा ताभ्यां गृहीतं तु पिपासया। समीक्ष्य बलभिद्देव इदं वचनमब्रवीत्। ७
आभ्यामर्थायसोमंत्वंग्राहयिष्यसिचेत्स्वयम्। वज्रंतुप्रहरिष्यामिविश्वरूपमिवापरम्। ८
वासवेनैवमुक्तस्तुभार्गवश्चाऽतिगर्वितः । जग्राह विधिवत्सोममश्विभ्यामतिमन्युमान्। ९
इन्द्रोऽपि प्राक्षिपत्कोपाद्वज्रमस्मै स्वमायुधम्। पश्यतां सर्वदेवानां सूर्यकोटिसमप्रभम्। १०
प्रेरितंचाऽशनिंऽप्रेक्ष्य च्यवनस्तपसा ततः। स्तम्भयामासवज्रंसशक्रस्यामिततेजसः। ११
कृत्यया स महाबाहुरिन्द्रं हन्तुमिहोद्यतः। जुहावाऽग्नौश्रृतं हव्यंमन्त्रेण मुनिसत्तमः। १२
तत्र कृत्या समुत्पन्ना च्यवनस्य तपोबलात्। प्रबलः पुरुषः क्रूरो बृहत्कायो महासुरः। १३
मदोनाम महाघोरो भयदः प्राणिनामिह। शरीरे पर्वताकारस्तीक्ष्णदंष्ट्रो भयानकः। १४
चतस्रश्चाऽऽयता दंष्टा योजनानां शतं शतम्। इतरे त्वस्य दशना बभूवुर्दशयोजनाः। १५
बाहू पर्वतसङ्काशावायतौ क्रूरदर्शनौ। जिह्वा तु भीषणा क्रूरा लेलिहाना नभस्तलम्। १६
ग्रीवातुगिरिश्रृङ्गाभाकठिनाभीषणाभृशम्। नखाव्याघ्रनखप्रख्याःकेशाश्चातीवभीषणा। १७
शरीरं कज्जलाभं च तस्य चाऽऽस्यंभयानकम्। नेत्रे दावानलप्रख्ये भीषणे च भयानके। १८
हनुरेकास्थिता तस्या भूमावेका दिवं गता। एवम्विधः समुत्पन्नो मदोनाम बृहत्तनुः। १९
तं विलोक्य सुराःसर्वे भयमाजग्मुरंहसा। इन्द्रोऽपिभयसन्त्रस्तो युद्धाय न मनोदधे। २०
दैत्योऽपि वदने कामं वज्रमादाय संस्थितः। व्याप्तं नभोघोरदृष्टिर्ग्रसन्निव जगत्रयम्। २१
स भक्षयिष्यन्सङ्क्रुद्धः शतक्रतुमुपाद्रवत्। चुक्रुशुश्च सुराः सर्वे हा हताः स्मेति संस्थिताः!। २२
इन्द्रःस्तम्भितबाहुस्तुमुमुक्षुर्वज्रमन्तिकात्। न शशाक पविंतस्मिन्प्रहर्तुंपाकशासनः। २३
वज्रहस्तः सुरेशानस्तं वीक्ष्यकालसन्निभम्। सस्मार मनसातत्र गुरुंसमयकोविदम्। २४
स्मरणादाजगामाऽऽशुबृहस्पतिरुदारधीः। गुरुस्तत्समयं दृष्ट्वा विपत्तिसदृशं महत्। २५
विचार्य मनसा कृत्यं तमुवाच शचीपतिम्। दुःसाध्योऽयं महामन्त्रैस्त्वयं वज्रेण वासव!। २६
असुरोमदसञ्ज्ञस्तुयज्ञकुण्डात्समुत्थितः । तपोबलमृषेः सम्यक् च्यवनस्य महाबलः। २७
अनिवार्यो ह्ययं शत्रुस्त्वया देवैस्तथामया। शरणं याहि देवेश! च्यवनस्यमहात्मनः। २८
स निवारयिता नूनं कृत्यामात्मकृतां किल। न निवारयितुं शक्ताः शक्तिभक्तरुषं क्वचित्। २९

व्यास उवाच

इत्युक्तोगुरुणाशक्रस्तदाऽऽगच्छन्मुनिं प्रति। प्रणम्यशिरसानम्रस्तमुवाचभयान्वितः।३०
क्षमस्व मुनिशार्दूल! शमयाऽसुरमुद्यतम्। प्रसन्नो भव सर्वज्ञ वचनं ते करोम्यहम्।३१
सोमार्हावश्विनावेतावद्यप्रभृति भार्गव!। भविष्यतः सत्यमेतद्वचो विप्र प्रसीद मे।३२
मिथ्या ते नोद्यमो ह्येष भवत्वेष तपोधन!। जाने त्वमपि धर्मज्ञ मिथ्या नैव करिष्यसि।३३
सोमपावश्विनावेतौत्वत्कृतौचसदैव हि। भविष्यतश्चशर्यातेःकीर्तिस्तु विपुलाभवेत्।३४
मया यद्धि कृतं कर्म सर्वथा मुनिसत्तम!। परीक्षार्थं तु विज्ञेयं तव वीर्यप्रकाशनम्।३५
प्रसादं कुरु मे ब्रह्मन्मदं संहर चोत्थितम्। कल्याणंसर्वदेवानांतथाभूयोविधीयताम्।३६
एवमुक्तस्तु शक्रेण च्यवनः परमार्थवित्। सञ्जहार ततः कोपं समुत्पन्नं विरोधजम्।३७
देवमाश्वास्य सम्विग्नं भार्गवस्तु मदं ततः। व्यभजत्स्त्रीषु पानेषु द्यूतेषुमृगयासु च।३८
मदं विभज्य देवेन्द्रमाश्वास्य चकितं भिया। संस्थाप्य च सुरान्सर्वान्मखं तस्य न्यवर्तयत्।३९
ततस्तु संस्कृतं सोमं वासवाय महात्मने। अश्विभ्यांसर्वधर्मात्मापाययामासभार्गवः।४०
एवं तौ च्यवनेनार्यावश्विनौ रविपुत्रकौ। विहितौसोमपौ राजन्सर्वथातपसोबलात्।४१
सरस्तदपि विख्यातं जातं यूपविमण्डितम्। आश्रमस्तु मुनेः सम्यक्पृथिव्यां विश्रुतोऽभवत्।४२
शर्यातिरपि सन्तुष्टो ह्यभवत्तेन कर्मणा। यज्ञं समाप्य नगरे जगाम सचिवैर्वृतः।४३
राज्यं चकार धर्मज्ञो मनुपुत्रः प्रतापवान्। आनर्तस्तस्य पुत्रोऽभूदानर्ताद्रेवतोऽभवत्।४४
सोऽन्तःसमुद्रेनगरींविनिर्मायकुशस्थलीम्। आस्थितोभुङ्क्तविषयानानर्तादीनरिंदमः।४५
तस्य पुत्रशतं जज्ञे ककुद्मिज्येष्ठमुत्तमम्। पुत्री च रेवती नाम्ना सुन्दरी शुभलक्षणा।४६
वरयोग्या यदाजाता तदा राजा च रेवतः। चिन्तयामासराजेन्द्रोराजपुत्रान्कुलोद्भवान्।४७
रैवतं नाम च गिरिमाश्रितः पृथिवीपतिः। चकार राज्यं बलवानानर्तेषु नराधिपः।४८
विचिन्त्य मनसा राजा कस्मैदेयामयासुता। गत्वापृच्छामिब्रह्माणं सर्वज्ञंसुरपूजितम्।४९
इति सञ्चिन्त्य भूपालः सुतामादायरेवतीम्। ब्रह्मलोकं जगामाशु प्रष्टुकामः पितामहम्।५०
यत्र देवाश्चयज्ञाश्चछन्दांसिपर्वतास्तथा। अब्धयः सरितश्चाऽपिदिव्यरूपधराः स्थिताः।५१
ऋषयः सिद्धगन्धर्वाः पन्नगाश्चारणास्तथा। तस्थुःप्राञ्जलयः सर्वे स्तुवन्तश्चपुरातनाः।५२

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे रेवतस्यरेवतीवरार्थंब्रह्मलोकगमनवर्णनंनामसप्तमोऽध्यायः ।।७।।

* अष्टमोऽध्यायः *

सूर्यवंशीयरेवतराज्ञःकन्यायाःकृतेब्रह्मणाद्वापरेबलभद्रवरस्यपूर्वघोषणावर्णनम्

जनमेजय उवाच

संशयोऽयं महान्ब्रह्मन्वर्तते मम मानसे। ब्रह्मलोकं गतो राजा रेवती संयुतः स्वयम्।१
मयापूर्वंश्रुतंकृत्स्नंब्राह्मणेभ्यः कथान्तरे। ब्राह्मणोब्रह्मविच्छान्तो ब्रह्मलोकमवाप्नुयात्।२
राजा कथं गतस्तत्ररेवतीसंयुतः स्वयम्। सत्यलोकेऽतिदुष्प्राप्ते भूर्लोकादितिसंशयः।३
मृतः स्वर्गमवाप्नोतिसर्वशास्त्रेषुनिर्णयः। "मानुषेण तु देहेनब्रह्मलोकेगतिः कथम्।।"
स्वर्गात्पुनः कथं लोके मानुषे जायते गतिः।।४।।
एतन्मे संशयंविद्वंश्छेत्तुमर्हसिसाम्प्रतम्। यथा राजा गतस्तत्र प्रष्टुकामःप्रजापतिम्।५

व्यास उवाच

मेरोस्तुशिखरेराजन्सर्वेलोकाःप्रतिष्ठिताः। इन्द्रलोकोवह्निलोको याचसंयमिनी पुरी।६

तथैव सत्यलोकश्च कैलासश्च तथा पुनः। वैकुण्ठश्च पुनस्तत्र वैष्णवं पदमुच्यते। ७
यथाऽर्जुनः शक्रलोके गतः पार्थोधनुर्धरः। पञ्च वर्षाणिकौन्तेय स्थितस्तत्रसुरालये। ८
मानुषेणैव देहेन वासवस्य च सन्निधौ। तथैवान्येऽपिभूपाला ककुत्स्थप्रमुखाःकिल। ६
स्वर्लोकगतयःपश्चाद् दैत्याश्चा पिमहाबलाः। जित्वेन्द्रसदनम्प्राप्यसंस्थितास्तत्रकामतः। १०
महाभिषःपुराराजाब्रह्मलोकङ्गतः स्वराट्। आगच्छन्तींनृपोगङ्गामपश्यच्चातिसुन्दरीम्। ११
वायुनाम्बरमस्यास्तु दैवादपहृतं नृप। किञ्चिन्नग्ना नृपेणाऽथदृष्ट्वा सा सुन्दरी तथा। १२
स्मितञ्चकारकामार्तः साचकिंचिज्जहास वै। ब्रह्मणातौतदादृष्टौ शप्तौजातौवसुन्धराम्। १३
वैकुण्ठेऽपि सुराःसर्वेपीडितादैत्यदानवैः। गत्वा हरिं जगन्नाथमस्तुवन्कमलापतिम्। १४
सन्देहो नाऽत्र कर्तव्यःसर्वथा नृपसत्तम!। गम्याः सर्वेऽपि लोकाः स्युर्मानवानां नराधिप!। १५
अवश्यं कृतपुण्यानां तापसानां नराधिप!। पुण्यसद्भाव एवाऽत्रगमने कारणं नृप। १६
तथैव यजमानानां यज्ञेन भावितात्मनाम् ।

जनमेजय उवाच

रेवतो रेवतीं कन्यां गृहीत्वा चारुलोचनाम् ।।१७।।
ब्रह्मलोकंगतः पश्चात्किं कृतंतेन भूभुजा। ब्रह्मणा किं समादिष्टं कस्मै दत्तासुतापुनः। १८
तत्सर्वं विस्तराद् ब्रह्मन्कथय त्वं ममाऽधुना ।

व्यास उवाच

निशामय महीपाल राजा रेवतकः किल ।।१६।।
पुत्र्या वरं परिप्रष्टुंब्रह्मलोकंगतोयदा। आवर्तमाने गान्धर्वे स्थितो लब्धक्षणःक्षणम्। २०
शृण्वन्नतृप्यद्धृष्टात्मासभायां तु सकन्यकः। समाप्ते तत्र गान्धर्वे प्रणम्य परमेश्वरम्। २१
दर्शयित्वा सुतां तस्मै स्वाभिप्रायं न्यवेदयत् ।

राजोवाच

वरं कथय देवेश! कन्येयं मम पुत्रिका ।।२२।।
देया कस्मै मयाब्रह्मन्प्रष्टुं त्वांसमुपागतः। बहवोराजपुत्रामे वीक्षिताः कुलसम्भवाः। २३
कस्मिंश्चिन्मेमनःकामंनोपतिष्ठतिचञ्चलम् । तस्मात्त्वांदेवदेवेश! प्रष्टुमत्रागतोस्म्यहम्। २४
तदाज्ञापय सर्वज्ञ योग्यं राजसुतम्वरम्। कुलीनम्बलवन्तञ्च सर्वलक्षणसंयुतम्। २५
दातारं धर्मशीलञ्च राजपुत्रं समादिश ।

व्यास उवाच

तदाकर्ण्य जगत्कर्ता वचनं नृपतेस्तदा ।।२६।।
तमुवाच हसन्वाक्यं दृष्ट्वा कालस्य पर्ययम् ।

ब्रह्मोवाच

राजपुत्रास्त्वया राजन्वरा ये हृदये कृताः ।।२७।।
ग्रस्ताः कालेन ते सर्वे सपितृपौत्रबान्धवाः। सप्तविंशतिमोऽद्यैव द्वापरस्तु प्रवर्तते। २८
वंशजास्तेमृताःसर्वेपुरीदैत्यैर्विलुण्ठिता । सोमवंशोद्भवस्तत्रराजाराज्यं प्रशास्ति हि। २६
उग्रसेन इति ख्यातो मथुराधिपतिः किल। ययातिवंशसम्भूतो राजामाथुरमण्डले। ३०
उग्रसेनात्मजः कंसः सुरद्वेषी महाबलः। दैत्यांशःपितरंसोऽपि कारागारं न्यवेशयत्। ३१
स्वयं राज्यं चकाराऽसौनृपाणां मदगर्वितः। मेदिनीचाऽतिभारार्ताब्रह्माणंशरणंगता। ३२
दुष्टराजन्यसैन्यानां भारेणाऽतिसमाकुला। अंशावतरणं तत्र गदितं सुरसत्तमैः। ३३

वासुदेवः समुत्पन्नः कृष्णः कमललोचनः। देवक्यां देवरूपिण्यांयोऽसौनारायणोमुनिः।३४
तपश्चचार दुःसाध्यं धर्मपुत्रः सनातनः। गङ्गातीरे नरसखः पुण्ये बदरिकाश्रमे।३५
सोऽवतीर्णो यदुकुले वासुदेवोऽपि विश्रुतः। तेनाऽसौ निहतः पापः कंसः कृष्णेन सत्तमः।३६
उग्रसेनाय राज्यं वै दत्तं हत्वाखलं सुतम्। कंसस्य श्वशुरः पापो जरासन्धोमहाबलः।३७
आगत्यमथुरांक्रोधाच्चकारसङ्गरम्मुदा । कृष्णेनाऽसौजितःसङ्ख्येजरासन्धोमहाबलः।३८
प्रेषयामास युद्धाय सबलं यवनंततः। श्रुत्वाऽऽयान्तं महाशूरं ससैन्यं यवनाधिपम् ।३९

"कृष्णस्तु मथुरां त्यक्त्वा पुरीं द्वारावतीमगात् ।
प्रभग्नां तां पुरीं कृष्णः शिल्पिभिः सह सङ्गतैः ॥
कारयामास दुर्गाढ्यां हट्टशालाविमण्डिताम् ।
जीर्णोद्धारम्पुरः कृत्वा वासुदेवः प्रतापवान् ॥
उग्रसेनञ्च राजानं चकार वशवर्तिनम् ॥"

यादवान्स्थापयामास द्वारवत्यां यदूत्तमः। वासुदेवस्तु तत्राऽद्य वर्तते बान्धवैः सह।४०
तस्याग्रजः सविख्यातोबलदेवोहलायुधः। शेषांशोमुसली वीरोवरोऽस्तुतवसम्मतः।४१
सङ्कर्षणाय देह्याशु कन्यां कमललोचननाम्। रेवतीं बलभद्राय विवाहविधिना ततः।४२
दत्त्वा पुत्रीं नृपश्रेष्ठगच्छत्वंबदरिकाश्रमम्। तपस्तप्तुं सुरारामं पावनं कामदंनृणाम्।४३

व्यास उवाच

इति राजा समादिष्टोब्रह्मणापद्मयोनिना। जगाम तरसा राजन्द्वारकांकन्ययाऽन्वितः।४४
ददौ तां बलदेवायकन्याम्वैशुभलक्षणाम्। ततस्तप्त्वा तपस्तीव्रं नृपतिःकालपर्यये।४५
जगाम त्रिदशावासं त्यक्त्वा देहं सरित्तटे ।

राजोवाच

भगवन्महदाश्चर्यं भवता समुदाहृतम् ।।४६।।
रेवतस्तु स्थितस्तत्र ब्रह्मलोके सुतार्थतः। युगानांन्तु गतन्तत्र शतमष्टोत्तरं किल।४७
कन्यावृद्धानसञ्जाताराजावाऽतितरांनुकिम्। एतावन्तंतथाकालमायुःपूर्णन्तयोःकथम्।४८

व्यास उवाच

न जराक्षुत्पिपासावा न मृत्युर्न भयम्पुनः। न तु ग्लानिः प्रभवति ब्रह्मलोकेसदाऽनघ।४९
मेरुं गतस्य शर्यातेः सन्ततीराक्षसैर्हता। गताकुशस्थलींत्यक्त्वा भयभीताइतस्ततः।५०
मनोश्चक्षुवतः पुत्र उत्पन्नो वीर्यवत्तरः। इक्ष्वाकुरिति विख्यातः सूर्यवंशकरस्तु सः।५१
वंशार्थं तप आतिष्ठद्देवींध्यात्वा निरन्तरम्। नारदस्योपदेशेनप्राप्य दीक्षामनुत्तमाम्।५२
तस्यपुत्रशतंराजन्निक्ष्वाकोरितिविश्रुतम् । विकुक्षिः प्रथमस्तेषां बलवीर्यसमन्वितः।५३
अयोध्यायांस्थितोराजाइक्ष्वाकुरितिविश्रुतः । शकुनिप्रमुखाः पुत्राः पञ्चाशद्बलवत्तराः।५४
उत्तरापथदेशस्य रक्षितारः कृताः किलः। दक्षिणस्यां तथा राजन्नादिष्टास्तेन ते सुताः।५५
चत्वारिंशत्तथाऽष्टौचरक्षणार्थंमहात्मना । अन्येद्वौसंस्थितौपार्श्वेसेवार्थन्तस्यभूपतेः।५६

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे इक्ष्वाकुवंशवर्णनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ।।८।।

-----

* नवमोऽध्यायः *

इक्ष्वाकुवंशवर्णनेशशादादिमान्धातृपर्यन्तराजवंशवर्णनम्

व्यास उवाच

कदाचिदष्टकाश्राद्धे विकुक्षिं पृथिवीपतिः। आज्ञापयदसंमूढो मांसमानय सत्वरम्।१
मेध्यं श्राद्धार्थमधुना वनेगत्वासुतादरात्। इत्युक्तोऽसौ तथेत्याशु जगामवनमस्त्रभृत्।२
गत्वा जघान बाणैः स वराहान्सूकरान्मृगान्। शशांश्चाऽपि परिश्रान्तो बभूवाऽथ बुभुक्षितः।३
विस्मृता चाऽष्टका तस्य शशञ्चाऽऽददसौवने। शेषंनिवेदयामासपित्रेमासमनुत्तमम् ।४
प्रोक्षणाय समानीतं मांसं दृष्ट्वा गुरुस्तदा। अनर्हमितितज्ज्ञात्वा चुकोप मुनिसत्तमः।५
भुक्तशेषं तु न श्राद्धे प्रोक्षणीयमिति स्थितिः। राज्ञे निवेदयामासवशिष्ठःपाकदूषणम्।६
पुत्रस्य कर्म तज्ज्ञात्वा भूपतिर्गुरुणोदितम्। चुकोप विधिलोपात्तंदेशान्निःसारयत्ततः।७
शशाद इति विख्यातो नाम्ना जातोनृपात्मजः। गतोवनेशशादस्तु पितृकोपादसम्भ्रमः ।८
वन्येन वर्तयन्कालं नीतवान्धर्मतत्परः। पितर्युपरते राज्यं प्राप्तं तेन महात्मना।९
शशादस्त्वकरोद्राज्यमयोध्यायाःपतिः स्वयम्। यज्ञाननेकशः पूर्णांश्चकार सरयूतटे।१०
शशादस्याऽभवत्पुत्रः ककुत्स्थ इति विश्रुतः। तस्यैव नामभेदाद्वै इन्द्रवाहः पुरञ्जयः।११

जनमेजय उवाच

नामभेदः कथं जातो राजपुत्रस्यचाऽनघ!। कारणं ब्रूहि मे सर्वंकर्मणायेनचाऽभवत्।१२

व्यास उवाच

शशादे स्वर्गते राजाककुत्स्थइतिचाऽभवत्। "राज्यंचकारधर्मज्ञः पितृपैतामहंबलात्"
एतस्मिन्नन्तरे देवा दैत्यैः सर्वे पराजिताः।।१३।।
जग्मुस्त्रिलोकाधिपतिं विष्णुं शरणमव्ययम्। तान्प्रोवाच महाविष्णुस्तदा देवान्सनातनः।१४

विष्णुरुवाच

पार्ष्णिग्राहं महीपालं प्रार्थयन्तुशशादजम्। सहनिष्यति वैदैत्यान्सङ्ग्रामेसुरसत्तमाः।१५
आगमिष्यतिधर्मात्मा साहाय्यार्थं धनुर्धरः। पराशक्तेःप्रसादेनसामर्थ्यंतस्यचाऽतुलम्।१६
हरेः सुवचनाद्देवा ययुः सर्वे सवासवाः। अयोध्यायां महाराज! शशादतनयं प्रति।१७
तानागतान्सुरान्राजा पूजयामास धर्मतः। पप्रच्छाऽऽगमने राजा प्रयोजनमतन्द्रितः।१८

राजोवाच

धन्योऽहं पावितश्चाऽस्मि जीवितं सफलं मम। यदागत्य गृहे देवाददुश्चदर्शनंमहत्।१९
ब्रुवन्तु कृत्यं देवेशा दुःसाध्यमपि मानवैः। करिष्यामि महत्कार्यं सर्वथाभवतांमहत्।२०

देवा ऊचुः

साहाय्यंकुरु राजेन्द्र! सखा भव शचीपतेः। संग्रामे जय दैत्येन्द्रान्दुर्जयांस्त्रिदशैरपि।२१
पराशक्तिप्रसादेनदुर्लभंनाऽस्ति ते क्वचित्। विष्णुना प्रेरिताश्चैवमागतास्तवसन्निधौ।२२

राजोवाच

पार्ष्णिग्राहो भवाम्यद्यदेवानांसुरसत्तमाः। इन्द्रो मे वाहनं तत्र भवेद्यदि सुराधिपः।२३
संग्रामं तु करिष्यामि दैत्यैर्देवकृतेऽधुना। आरुह्येन्द्रं गमिष्यामिसत्यमेतद्ब्रवीम्यहम्।२४
तदोचुर्वासवंदेवाः कर्तव्यं कार्यमद्भुतम्। पत्रंभव नरेन्द्रस्य त्यक्त्वा लज्जां शचीपते।२५
लज्जमानस्तदाशक्रः प्रेरितो हरिणा भृशम्। बभूव वृषभस्तूर्णं रुद्रस्येवाऽपरो महान्।२६
तमारुरोह राजाऽसौ सङ्ग्राममगमनाय वै। स्थितः ककुदि येनाऽस्य ककुत्स्थस्तेन चाऽभवत्।२७

इन्द्रोवाहः कृतो येन तेन नाम्नेन्द्रवाहकः। पुरं जितं तु दैत्यानां तेनाऽभूच्चपुरञ्जयः।२८
जित्वा दैत्यान्महाबाहुर्धनं तेषां प्रदत्तवान्। पप्रच्छ चैवं राजर्षेरिति सख्यं बभूव ह।२९
ककुत्स्थश्चाऽतिविख्यातो नृपतिस्तस्य वंशजाः। काकुत्स्था भुवि राजानो बभूवुर्बहुविश्रुताः।३०
ककुत्स्थस्याऽभवत्पुत्रो धर्मपत्न्यांमहाबलः। अनेनाविश्रुतस्तस्यपृथुःपुत्रश्चवीर्यवान्।३१
विष्णोरंशःस्मृतःसाक्षात्पराशक्तिपदार्चकः। विश्वरन्धिस्तुविज्ञेयःपृथोःपुत्रोनराधिपः।३२
चन्द्रस्तस्य सुतःश्रीमान्राजावंशकरः स्मृतः। तत्सुतोयुवनाश्वस्तुतेजस्वीबलवत्तरः।३३
श्रावन्तो युवनाश्वस्य जज्ञे परमधार्मिकः। श्रावन्ती निर्मिता तेन पुरी शक्रपुरीसमा।३४
बृहदश्वस्तुपुत्रोऽभूच्छ्रावस्तस्यमहात्मनः। कुवलयाश्वःसुतस्तस्तबभूवपृथिवीपतिः।३५
धुन्धुर्नामाहतोदैत्यस्तेनाऽसौपृथिवीतले। धुन्धुमारेतिविख्यातंनामप्रापातिविश्रुतम्।३६
पुत्रस्तस्यदृढाश्वस्तु पालयामासमेदिनीम्। दृढाश्वस्यसुतःश्रीमान्हर्यश्वइतिकीर्तितः।३७
निकुम्भस्तत्सुतः प्रोक्तो बभूव पृथिवीपतिः। बर्हणाश्वो निकुम्भस्य कृशाश्वस्तस्य वै सुतः।३८
प्रसेनजित्कृशाश्वस्य बलवान्सत्यविक्रमः। तस्य पुत्रोमहाभागोयौवनाश्वेतिविश्रुतः।३९
यौवनाश्वसुतः श्रीमान्मान्धातेति महीपतिः। अष्टोत्तरसहस्रं तु प्रासादायेन निर्मिताः।४०
भगवत्यास्तु तुष्ट्यर्थं महातीर्थेषु मानद!। मातृगर्भे न जातोऽसावुत्पन्नो जनकोदरे।४१
निःसारितस्ततः पुत्रः कुक्षिं भित्त्वा पितुः पुनः।

राजोवाच

न श्रुतं न च दृष्टं वा भवता तदुदाहृतम्।।४२।।
असम्भाव्यंमहाभागतस्यजन्मयथोदितम्। विस्तरेणवदस्वाऽद्यमान्धातुर्जन्मकारणम्।४३
राजोदरे यथोत्पन्नः पुत्रः सर्वाङ्गसुन्दरः।

व्यास उवाच

यौवनाश्वोऽनपत्योऽभूद्राजा परमधार्मिकः।।४४।।
भार्याणां च शतं तस्यबभूव नृपतेर्नृप। राजा चिन्तापरः प्रायश्चिन्तयामासनित्यशः।४५
अपत्यार्थे यौवनाश्वो दुःखितस्तुवनंगतः। ऋषीणामाश्रमेपुण्येनिर्विण्णःसचपार्थिवः।४६
मुमोच दुःखितःश्वासांस्तापसानां च पश्यताम्। दृष्ट्वा तु दुःखितं विप्रा बभूवुश्च कृपालवः।४७
तमूचुर्ब्राह्मणा राजन्कस्माच्छोचसिपार्थिव!। किंतेदुःखंमहाराजब्रूहिसत्यंमनोगतम्।४८
प्रतिकारं करिष्यामो दुःखस्य तव सर्वथा।

यौवनाश्व उवाच

राज्यं धनं सदश्वाश्च वर्तन्ते मुनयो मम।।४९।।
भार्याणां च शतंशुद्धं वर्ततेविशदप्रभम्। नाऽरातिस्त्रिषुलोकेषुकोऽप्यस्तिबलवान्मम।५०
आज्ञाकरास्तु सामन्ता वर्तन्ते मन्त्रिणस्तथा। एकं सन्तानजं दुःखंनाऽन्यत्पश्यामि तापसाः!।५१
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नैव च। तस्माच्छोचामि विप्रेन्द्राः! सन्तानार्थं भृशं ततः।५२
वेदशास्त्रर्थतत्वज्ञास्तापसाश्च कृतश्रमाः। इष्टिं सन्तानकामस्य युक्तांज्ञात्वादिशन्तुमे।५३
कुर्वन्तु मम कार्यं वै कृपा चेदस्ति तापसाः!।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं राज्ञः कृपया पूर्णमानसाः।।५४।।
कारयामासुरव्यग्रास्तस्येष्टिमिन्द्रदेवताम्। कलशः स्थापितस्तत्रजलपूर्णस्तुवाडवैः।५५
मन्त्रितो वेदमन्त्रैश्च पुत्रार्थं तस्य भूपतेः। राजा तद्यज्ञसदनं प्रविष्टस्तृषितो निशि।५६
विप्रान्दृष्ट्वा शयानान्स पपौ मन्त्रजलं स्वयम्। भार्यार्थं संस्कृतं विप्रैर्मन्त्रितं विधिनोद्धृतम्।५७
पीतं राज्ञा तृषार्तेन तदज्ञानान्नृपोत्तम!। व्युदकं कलशं दृष्ट्वा तदा विप्रा विशङ्किताः।५८

पप्रच्छुस्ते नृपं केन पीतं जलमितिद्विजाः। राज्ञापीतंविदित्वाते ज्ञात्वादैवबलं महत्।५९
इष्टिं समापयामासुर्गतास्ते मुनयो गृहान्। गर्भं दधारनृपतिस्ततोमन्त्रबलादथ।६०
ततः काले स उत्पन्नः कुक्षिं भित्त्वाऽस्य दक्षिणम्। पुत्रं निष्कासयामासुर्मन्त्रिणस्तस्य भूपतेः।६१
देवानां कृपया तत्र न ममारमहीपतिः। कंधास्यतिकुमारोऽयंमन्त्रिणश्चुक्रुशुर्भृशम्।६२
तदेन्द्रोदेशिनींप्रादान्मान्धातेत्यवदद्वचः। सोऽभवद्बलवान्राजामान्धातापृथिवीपतिः।
तदुत्पत्तिस्तु भूपाल! कथिता तव विस्तरात्।।६३।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे मान्धातोत्पत्तिवर्णनंनामनवमोऽध्यायः।।९।।

* दशमोऽध्यायः *

मान्धातुर्वंशवर्णनेविश्वामित्रादित्रिशङ्कुराजवृत्तान्तवर्णनम्

व्यास उवाच

बभूव चक्रवर्ती स नृपतिः सत्यसङ्गरः। मान्धाता पृथिवीं सर्वामजयन्नृपतीश्वरः।१
दस्यवोऽस्यभयत्रस्ताययुर्गिरिगुहासु च। इन्द्रेणास्यकृतंनाम त्रसदस्युरितिस्फुटम्।२
तस्य बिन्दुमती भार्या शशबिन्दोः सुताऽभवत्। पतिव्रतासुरूपाचसर्वलक्षणसंयुता।३
तस्यामुत्पादयामासमान्धाताद्वौ सुतौ नृप। पुरुकुत्संसुविख्यातंमुचुकुन्दंतथाऽपरम्।४
पुरुकुत्सात्ततोऽरण्यः पुत्रः परमधार्मिकः। पितृभक्तिरतश्चाऽभूद् बृहदश्वस्तदात्मजः।५
हर्यश्वस्तस्य पुत्रोऽभूद्धार्मिकः परमार्थवित्। तस्याऽऽत्मजस्त्रिधन्वाभूदरुणस्तस्य चाऽऽत्मजः।६
अरुणस्य सुतः श्रीमान्सत्यव्रत इति श्रुतः। सोऽभूदिच्छाचरः कामी मन्दात्मा ह्यतिलोलुपः।७
स पापात्मा विप्रभार्यां हृतवान्काममोहितः। विवाहे तस्यविघ्नंसचकारनृपतेः सुतः।८
मिलिता ब्राह्मणास्तत्र राजानमरुणं नृप। ऊचुर्भृशंसुदुःखार्ताहाहताःस्मेतिचासकृत्।९
पप्रच्छ राजा तान्विप्रान्दुःखितान्पुरवासिनः। किं कृतं मम पुत्रेण भवतामशुभंद्विजाः।१०
तन्निशम्य द्विजा वाक्यं राज्ञोविनयपूर्वकम्। तदोचुस्त्वरुणं विप्रा कृताशीर्वचना भृशम्।११

ब्राह्मणा ऊचुः

राजंस्तव सुतेनाऽद्य विवाहेप्रहृता किल। विवाहिता विप्रकन्या बलेन बलिनां वर!।१२

व्यास उवाच

श्रुत्वा तेषां वचस्तथ्यं राजा परमधार्मिकः। पुत्रमाह वृथानाम कृतं ते दुष्टकर्मणा।१३
गच्छ दूरं सुमन्दात्मन्दुराचार गृहान्मम। न स्थातव्यंत्वयापाप! विषये मम सर्वथा।१४
कुपितं पितरं प्राह क्व गच्छमीति वै मुहुः। अरुणस्तमथोवाच श्वपाकैः सह वर्तय।१५
श्वपुत्रस्य कृतं कर्म द्विजदारापहारणम्। तस्मात्तैः सह संसर्गंकृत्वातिष्ठयथासुखम्।१६
नाऽहं पुत्रेण पुत्रार्थी त्वया च कुलपांसन। यथेष्टं व्रजदुष्टात्मन्कीर्तिनाशःकृतस्त्वया।१७
स निशम्य पितुर्वाक्यं कुपितस्यमहात्मनः। निश्चक्रामपुरात्तस्मात्तरसाश्वपचान्ययौ।१८
सत्यव्रतस्तदा तत्र श्वपाकैः सह वर्तते। धनुर्बाणधरः श्रीमान्कवची करुणालयः।१९
यदा निष्कासितः पित्राकुपितेनमहात्मना। गुरुणाऽथवसिष्ठेन प्रेरितोऽसौमहीपतिः।२०
तस्मात्सत्यव्रतस्तस्मिन्बभूव क्रोधसंयुतः। वसिष्ठे धर्मशास्त्रज्ञे निवारणपराङ्मुखे।२१
केनचित्कारणेनाऽथ पिता तस्य महीपतिः। पुत्रार्थेसौतपस्तप्तुं पुरंत्यक्त्वावनंगतः।२२
न ववर्ष तदा तस्मिन्विषये पाकशासनः। समा द्वादश राजेन्द्र! तेनाऽधर्मेण सर्वथा।२३
विश्वामित्रस्तदा दारांस्तस्मिंस्तु विषये नृप। सन्यस्य कौशिकीतीरे चचार विपुलं तपः।२४
कातरा तत्र सञ्जाता भार्या वै कौशिकस्य ह। कुटुम्बभरणार्थायदुःखितावरवर्णिनी।२५

बालकान्क्षुधयाऽऽक्रान्तान्रुदत पश्यतीभृशम्। याचमानांश्चनीवारान्कष्टमापपतिव्रता ।२६
चिन्तयामास दुःखार्तातोकान्वीक्ष्य क्षुधाऽऽतुरान्। नृपो नास्ति पुरे ह्यद्य कं याते वा करोमि किम्।२७
नमेत्राताऽस्तिपुत्राणांपतिर्मेनास्तिसन्निधौ । रुदन्तिबालकाःकामंधिङ्मेजीवनमद्यवै।२८
धनहीनांचमांत्यक्त्वातपस्तप्तुंगतः पतिः। नजानातिसमर्थोऽपिदुःखितांधनवर्जिताम्।२६
बालानां भरणं केन करोमिपतिनाविना। मरिष्यन्तिसुताः सर्वेक्षुधयापीडिताभृशम्।३०
एकं सुतं तु विक्रीयद्रव्येण कियता पुनः। पालयामि सुतानन्यानेष मे विहितोविधिः।३१
सर्वेषां मारणं नाद्धा युक्तंममविपर्यये। कालस्यकलनायाहंविक्रीणामितथाऽऽत्मजम्।३२
हृदयं कठिनं कृत्वासञ्चिन्त्यमनसा सती। सा दर्भरज्वा बद्ध्वाऽथगलेपुत्रंविनिर्गता।३३
मुनिपत्नी गलेबद्ध्वा मध्यमं पुत्रमौरसम्। शेषस्य भरणार्थाय गृहीत्वा चलितागृहात्।३४
दृष्ट्वासत्यव्रतेनाऽऽर्तातापसीशोकसंयुता। पप्रच्छनृपतिस्तां तुकिंचिकीर्षसिशोभने।३५
रुदन्तं बालकं कण्ठे बद्ध्वा नयसिकाऽधुना। किमर्थं चारुसर्वाङ्गिसत्यंब्रूहिममाऽग्रतः।३६

ऋषिपत्न्युवाच

विश्वामित्रस्य भार्याऽहं पुत्रोऽयंमेनृपात्मज। विक्रेतुमौरसंकामंगमिष्ये विषमेसुतम्।३७
अन्नंनाऽस्तिपतिर्मुक्त्वा गतस्तप्तुंनृपक्वचित्। विक्रीणामिक्षुधार्तैनंशेषस्यभरणायवै।३८

राजोवाच

पतिव्रते रक्ष पुत्रं दास्यामि भरणं तव। तावदेव पतिस्तेऽत्रवनाच्चैवाऽऽगमिष्यति।३६
वृक्षे तवाऽऽश्रमाभ्याशे भक्ष्यं किञ्चिन्निरन्तरम्। बन्धयित्वा गमिष्यामि सत्यमेतद् ब्रवीम्यहम्।४०
इत्युक्ता सा तदा तेन राज्ञा कौशिककामिनी। विबन्धं तनयं कृत्वा जगामाऽऽश्रममण्डलम्।४१
सोऽभवद्गालवोनामगलबन्धान्महातपाः। सातुस्वस्याऽऽश्रमेगत्वामुमोदबालकैर्वृता।४२
सत्यव्रतस्तु भक्त्याच कृपया च परिप्लुतः। विश्वामित्रस्यचमुनेःकलत्रंतद्बभार ह।४३
वनेस्थितान्मृगान्हत्वावराहान्महिषांस्तथा । विश्वामित्रवनाभ्याशे मांसंवृक्षेबबन्धह।४४
ऋषिपत्नी गृहीत्वा तन्मांसंपुत्रानदात्ततः। निर्वृतिं परमाम्प्राप प्राप्यभक्ष्यमनुत्तमम्।४५
अयोध्याञ्चैव राज्यञ्च तथैवाऽन्तःपुरंमुनिः। गते तप्तुं नृपेतस्मिन्वसिष्ठः पर्यरक्षत।४६
सत्यव्रतोऽपि धर्मात्मा ह्यतिष्ठन्नगराद्बहिः। पितुराज्ञां समास्थाय पशुघ्नव्रतवान्वने।४७
सत्यव्रतो ह्यकस्माच्च कस्यचित्कारणान्नृपः। वसिष्ठे चाऽधिकं मन्युं धारयामास नित्यदा।४८
त्याज्यमानंवनेपित्रा धर्मिष्ठं च प्रियं सुतम्। न वारयामास मुनिर्वसिष्ठःकारणेन ह।४६
पाणिग्रहणमन्त्राणां निष्ठा स्यात्सप्तमे पदे। जानन्नपि स धर्मात्मा विप्रदारपरिग्रहे।५०
कस्मिंश्चिद्दिवसेऽरण्ये मृगाभावे महीपतिः। वसिष्ठस्य च गां दोग्ध्रीमपश्यद्वनमध्यगाम्।५१
तांजघानक्षुधार्तस्तुक्रोधान्मोहाच्चदस्युवत्। वृक्षेबबन्धतन्मांसंनीत्वास्वयमभक्षयत्।५२
ऋषिपत्नीसुतान्सर्वान्भोजयामासतत्तदा। शङ्कमाना मृगस्येति न गोरितिचसुव्रता।५३
वसिष्ठस्तुहतांदोग्ध्रींज्ञात्वाक्रुद्धस्तमब्रवीत्। दुरात्मन्किंकृतंपापंधेनुघातात्पिशाचवत्।५४
एवं ते शङ्कवः क्रूराः पतन्तु त्वरितास्त्रयः। गोवधाहारहरणात्पितुः क्रोधात्तथाभृशम्।५५
त्रिशङ्कुरिति नाम्ना वै भुवि ख्यातो भविष्यसि। पिशाचरूपमात्मानं दर्शयन्सर्वदेहिनाम्।५६

व्यास उवाच

एवं शप्तोवशिष्ठेनतदासत्यव्रतोनृपः। चचार च तपस्तीव्रं तस्मिन्नेवाऽऽश्रमेस्थितः।५७
कस्माच्चिन्मुनिपुत्रात्तुप्राप्यमन्त्रमनुत्तमम्। ध्यायन्भगवतींदेवीं प्रकृतिंपरमांशिवाम्।५८

इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे सत्यव्रताख्यानवर्णनंनामदशमोऽध्यायः॥१०॥

* एकादशोऽध्यायः *

त्रिशङ्कोरुपाख्यानेपित्रात्यक्तस्यतस्यात्महत्याकरणार्थमग्निप्रवेशसमये भगवतीस्मरणवर्णनम्

जनमेजय उवाच

वशिष्ठेन चशप्तोऽसौत्रिशङ्कुनृपतेः सुतः। कथं शापाद्विविनिर्मुक्तस्तन्मेब्रूहिमहामते।१

व्यास उवाच

सत्यव्रतस्तथाशप्तः पिशाचत्वमवाप्तवान्। तस्मिन्नेवाऽऽश्रमेतस्थौ देवीभक्तपरायणः।२
कदाचिन्नृपतिस्तत्रजप्त्वामन्त्रंनवाक्षरम्। होमार्थंब्राह्मणान्गत्वाप्रणम्योवाचभक्तितः।३
भूमिदेवाः शृणुध्वं वै वचनं प्रणतस्य मे। ऋत्विजो मम सर्वेऽत्रभवन्तःप्रभवन्तु ह।४
जपस्य च दशांशेन होमः कार्यो विधानतः। भवद्भिः कार्यसिद्ध्यर्थं वेदविद्भिः कृपाकरैः।५
सत्यव्रतोऽहं नृपतेः पुत्रो ब्रह्मविदाम्वराः। कार्यं मम विधातव्यं सर्वथा सुखहेतवे।६
तच्छ्रुत्वा ब्राह्मणास्तत्र तमूचुर्नृपतेः सुतम्। शप्तस्त्वं गुरुणा प्राप्तं पिशाचत्वं त्वयाऽधुना।७
न यागार्होऽसि तस्मात्त्वं वेदेष्वनधिकारतः। पिशाचत्वमनुप्राप्तं सर्वलोकेषुगर्हितम्।८

व्यास उवाच

तन्निशम्य वचस्तेषांराजादुःखमवापह। धिग्जीवितमिदम्मेऽद्यकिंकरोमिवनेस्थितः।९
पित्रा चाऽहं परित्यक्तः शप्तश्च गुरुणा भृशम्। राज्याद् भ्रष्टः पिशाचत्वमनुप्राप्तः करोमि किम्।१०
तदापृथुतरांकृत्वाचितांकाष्ठैर्नृपात्मजः। सस्मारचण्डिकांदेवीं प्रवेशमनुचिन्तयन्।११
स्मृत्वा देवीं महामायां चितां प्रज्वलिताम्पुरः। कृत्वा स्नात्वा प्रवेशार्थं स्थितः प्राञ्जलिरग्रतः।१२
ज्ञात्वा भगवती तंतु मर्तुकामं महीपतिम्। आजगामतदाकाशं प्रत्यक्षं तस्यचाग्रतः।१३
दत्त्वाऽथदर्शनंदेवी तमुवाच नृपात्मजम्। सिंहारूढा महाराज मेघगम्भीरया गिरा।१४

देव्युवाच

किंतेव्यवसितंसाधोहुताशेमातनुन्त्यज। स्थिरोभव महाभाग पितातेजरसाऽन्वितः।१५
राज्यं दत्त्वा वने तुभ्यंगन्ताऽस्तितपसेकिल। विषादं त्यज हे वीरपरश्वोऽहनिभूपते।१६
नेतुंत्वामागामिष्यन्तिसचिवाश्चपितुस्तव। मत्प्रसादात्पिताचत्वामभिषिच्यनृपासने।१७
जित्वा कामं ब्रह्मलोकं गमिष्यत्येष निश्चयः।

व्यासउवाच

इत्युक्त्वा तं तदा देवी तत्रैवाऽन्तरधीयत।।१८।।
राजपुत्रो विरमितो मरणात्पावकात्ततः। अयोध्यायां तदाऽऽगत्य नारदेनमहात्मना।१९
वृत्तान्तःकथितः सर्वोराज्ञेसत्वरमादितः। श्रुत्वा राजाऽथ पुत्रस्य तं तथामरणोद्यमम्।२०
खेदमाधाय मनसि शुशोच बहुधा नृपः। सचिवानाह धर्मात्मा पुत्रशोकपरिप्लुतः।२१
ज्ञातं भवद्भिरत्युग्रं पुत्रस्य मम चेष्टितम्। त्यक्तो मया वने धीमान्पुत्रः सत्यव्रतोमम।२२
आज्ञयाऽसौगतःसद्योराज्याहःपरमार्थवित्। स्थितस्तत्रैवविज्ञानेधनहीनःक्षमान्वितः।२३
वसिष्ठेन तथा शप्तः पिशाचसदृशः कृतः। सोऽद्य दुःखेन सन्तप्तः प्रवेष्टुञ्चहुताशनम्।२४
उद्यतः श्रीमहादेव्यानिषिद्धः संस्थितः पुनः। तस्माद्गच्छतुतंशीघ्रं ज्येष्ठपुत्रम्महाबलम्।२५
आश्वास्य वचनैरत्र तरसैऽऽवानयन्त्विह। अभिषिच्यसुतंराज्ये औरसं पालनक्षमम्।२६

वनंयास्यामिशान्तोऽहंतपसेकृतनिश्चयः। इत्युक्त्वामन्त्रिणः सर्वान्प्रेषयामासपार्थिवः।२७
तस्यैवाऽऽनयनार्थं हि प्रीतिप्रवणमानसः। ते गत्वा तं समाश्वास्य मन्त्रिणः पार्थिवात्मजम्।२८
अयोध्यायां महात्मानं मानपूर्वं समानयन्। दृष्ट्वा सत्यव्रतं राजा दुर्बलं मलिनाम्बरम्।२९
जटाजूटधरं क्रूरं चिन्तातुरमचिन्तयत्। किं कृतं निष्ठुरं कर्म मया पुत्रो निवासितः।३०
राज्यार्हश्चातिमेधावीजानताधर्मनिश्चयम्। इतिसञ्चिन्त्यमनसातमालिङ्ग्यमहीपतिः।३१
आसने स्वसमीपस्थे समाश्वास्योपवेशयत्। उपविष्टं सुतं राजा प्रेमपूर्वमुवाच ह।३२
प्रेमगद्गदया वाचा नीतिशास्त्रविशारदः।

राजोवाच

पुत्र! धर्मे मतिः कार्या माननीया मुखोद्भवाः ॥३३॥
न्यायागतं धनं ग्राह्यं रक्षणीयाः सदा प्रजाः। नासत्यंक्वापिवक्तव्यंनामार्गेगमनंक्वचित्।३४
शिष्टप्रोक्तं प्रकर्तव्यं पूजनीयास्तपस्विनः। हन्तव्या दस्यवःक्रूराइन्द्रियाणांतथाजयः।३५
कर्तव्यः कार्यसिद्ध्यर्थं राज्ञा पुत्रसदैवहि। मन्त्रस्तुसर्वथागोप्यः कर्तव्यः सचिवैः सह।३६
नोपेक्ष्योऽल्पोऽपि कृतिना रिपुः सर्वात्मना सुत!।
न विश्वसेत्परासक्तं सचिवं च तथा नतम् ॥३७॥
चाराः सर्वत्र योक्तव्याः शत्रुमित्रेषु सर्वथा। धर्मे मतिः सदाकार्यादानंदद्याच्चनित्यशः।३८
शुष्कवादो न कर्तव्यो दुष्टसङ्गं च वर्जयेत्। यष्टव्या विविधा यज्ञाः पूजनीयामहर्षयः।३९
न विश्वसेत्स्त्रियं क्वाऽपि स्त्रैणं द्यूतरतंनरम्। अत्यादरो न कर्तव्योमृगयायांकदाचन।४०
द्यूते मद्ये तथा गेये नूनं वारवधूषु च। स्वयं तद्विमुखोभूयात्प्रजास्तेभ्यश्च रक्षयेत्।४१
ब्राह्मे मुहूर्ते कर्तव्यमुत्थानं सर्वथा सदा। स्नानादिकं सर्वविधिंविधायविधिवद्यथा।४२
पराशक्तेः परां पूजां भक्तया कुर्यात्सुदीक्षितः। पुत्रैतज्जन्मसाफल्यं पराशक्तेः पदार्चनम्।४३
सकृत्कृत्वा महापूजां देवीपादजलं पिबन्। न जातु जननीगर्भे गच्छेदिति विनिश्चयः।४४
सर्वं दृश्यं महादेवी द्रष्टा साक्षी च सैव हि। इति तद्भावभरितस्तिष्ठेन्निर्भयचेतसा।४५
कृत्वा नित्यविधिं सम्यग्गन्तव्यं सदसि द्विजान्।
समाहूय च प्रष्टव्यो धर्मशास्त्रविनिर्णयः ॥४६॥
सम्पूज्य ब्राह्मणान्पूज्यान्वेदवेदाङ्गपारगान्। गोभूहिरण्यादिकं च देयं पात्रेषु सर्वदा।४७
अविद्वान्ब्राह्मणः कोऽपि नैव पूज्यः कदाचन। आहारादधिकं नैवदेयंमूर्खायकर्हिचित्।४८
न वा लोभात्त्वया पुत्र! कर्तव्यं धर्मलङ्घनम्। अतः परंन कर्तव्यं क्वचिद्विप्रावमाननम्।४९
ब्राह्मणा भूमिदेवाश्च माननीयाः प्रयत्नतः। कारणं क्षत्रियाणां च द्विजा एव नसंशयः।५०
अद्भ्योऽग्निर्ब्रह्मणः क्षत्रमश्मनो लोहमुत्थितम्।
तेषां सर्वत्रगं तेजः स्वासु योनिषु शाम्यति ॥५१॥
तस्माद्राज्ञा विशेषेण माननीया मुखोद्भवाः। दानेन विनयेनैव सर्वथा भूतिमिच्छता।५२
दण्डनीतिः सदाकार्याधर्मशास्त्रानुसारतः। कोशस्य संग्रहः कार्यो नूनं न्यायागतस्यह।५३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे अष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे सत्यव्रतायराजनीत्युपदेशवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

-----

* द्वादशोऽध्यायः *

त्रिशङ्कूपाख्यानेतस्यगुरोःशापात्पिशाचत्वप्राप्तौतत्पुत्राभिषेकवर्णनम्

व्यास उवाच

एवं प्रबोधितः पित्रा त्रिशङ्कुः प्रणतो नृपः। तथेति पितरंप्राह प्रेमगद्गदया गिरा।१
विप्रानाहूय मन्त्रज्ञान्वेदशास्त्रविशारदान्। अभिषेकाय सम्भारान्कारयामास सत्वरम्।२
सलिलं सर्वतीर्थानां समानाप्य विशाम्पतिः। प्रकृतीश्च समाहूय सामन्तान् भूपतींस्तथा।३
पुण्येऽह्निविधिवत्तस्मैददावासनमुत्तमम्। अभिषिच्यसुतंराज्येत्रिशङ्कुंविधिवत्पिता।४
तृतीयमाश्रमम्पुण्यं जग्राह भार्यया युतः। वने त्रिपथगाकूले चचार दुश्चरं तपः।५
काले प्राप्ते ययौ स्वर्गं पूजितस्त्रिदशैरपि। इन्द्रासनसमीपस्थो रराज रविवत्सदा।६

राजोवाच

पूर्वं भगवता प्रोक्तंकथायोगेनसाम्प्रतम्। सत्यव्रतोवसिष्ठेन शप्तो दोग्ध्रीवधात्किल।७
कुपितेन पिशाचत्वं प्रापितोगुरुणाततः। कथं मुक्तः पिशाचत्वादित्येतत्संशयः प्रभो।८
नसिंहासनयोग्योहिभवेच्छापसमन्वितः। मुनिनामोचितः शापात्केनाऽन्येनचकर्मणा।९
एतन्मे ब्रूहि विप्रर्षेशापमोक्षणकारणम्। आनीतस्तु कथं पित्रास्वगृहे तादृशाकृतिः।१०

व्यास उवाच

वसिष्ठेन च शप्तोऽसौ सद्यः पैशाचताङ्गतः। दुर्वेषश्चाऽतिदुर्धर्षः सर्वलोकभयङ्करः।११
यदैवोपासिता देवी भक्त्यासत्यव्रतेन ह। तया प्रसन्नयाराजन्दिव्यदेहः कृतःक्षणात्।१२
पिशाचत्वंगतंतस्यपापञ्चैववक्षयङ्गतम्। विपाप्माचातितेजस्वीसम्भूतस्तत्कृपामृतात्।१३
वसिष्ठोऽपि प्रसन्नाऽऽत्मा जातः शक्ति प्रसादतः। पिताऽपि च बभूवाऽस्य प्रेमयुक्तस्त्वनुग्रहात्।१४
राज्यं शशास धर्मात्मा मृते पितरि पार्थिवः। ईजे च विविधैर्यज्ञैर्देवदेवींसनातनीम्।१५
तस्य पुत्रोबभूवाऽथहरिश्चन्द्रःसुशोभनः। लक्षणैःशास्त्रनिर्दिष्टैःसंयुतश्चाऽतिसुन्दरः।१६
युवराजं सुतं कृत्वा त्रिशङ्कुः पृथिवीपतिः। मानुषेण शरीरेण स्वर्गं भोक्तुं मनो दधे।१७
वसिष्ठस्याऽश्रमं गत्वा प्रणम्य विधिवन्नृपः। उवाच वचनंप्रीतःकृताञ्जलिपुटस्तदा।१८

राजोवाच

ब्रह्मपुत्र महाभाग सर्वमन्त्रविशारद!। विज्ञप्तिं मे सुमनसा श्रोतुमर्हसि तापस!।१९
इच्छा मेऽद्य समुत्पन्ना स्वर्गलोकसुखाय च। अनेनैवशरीरेणभोगान्भोक्तुममानुषान्।२०
अप्सरोभिश्च सम्वासः क्रीडितुं नन्दने वने। देवगन्धर्वगानञ्च श्रोतव्यं मधुरं किल।२१
याजय त्वं मखेनाऽऽशु तादृशेन महामुने!। यथाऽनेन शरीरेण वसेलोकं त्रिविष्टपम्।२२
समर्थोऽसि मुनिश्रेष्ठ कुरुकार्यं ममाऽधुना। प्रापयाऽऽशुमखं कृत्वादेवलोकेदुरासदम्।२३

वसिष्ठ उवाच

राजन्मानुषदेहेन स्वर्गे वासः सुदुर्लभः। मृतस्य हि ध्रुवंस्वर्गः कथितः पुण्यकर्मणा।२४
तस्माद्बिभेमि सर्वज्ञ! दुर्लभाच्च मनोरथात्। अप्सरोभिश्च संवासो जीवमानस्य दुर्लभः।२५
कुरु यज्ञान्महाभाग! मृतः स्वर्गमवाप्स्यसि।

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य राजा परमदुर्मनाः॥२६॥
उवाच वचनं भूयो वसिष्ठं पूर्वरोषितम्। न त्वं याजयसे ब्रह्मन् गर्वविशाच्चमांयदि।२७
अन्यं पुरोहितंकृत्वायक्ष्येऽहंकिलसाम्प्रतम्। तच्छ्रुत्वावचनंतस्यवसिष्ठःकोपसंयुतः।२८
शशाप भूपतिञ्चेति चाण्डालोभव दुर्मते!। अनेन त्वं शरीरेण श्वपचो भव सत्वरम्।२९

स्वर्गकृन्तनपापिष्ठ ! सुरभीवधदूषित !। ब्रह्मपत्नीहरोच्छिन्नधर्ममार्गविदूषक !।३०
न ते स्वर्गगतिः पाप मृतस्याऽपि कथञ्चन ।

व्यास उवाच

इत्युक्तो गुरुणा राजंस्त्रिशङ्कुस्तत्क्षणादपि ।।३१।।
तत्र तेन शरीरेणवभूवश्वपचाकृतिः। कुण्डलेऽश्ममयेवाऽपि जाते तस्य चतत्क्षणात्।३२
देहे चन्दनगन्धश्च विगन्धो ह्यभवत्तदा। नीलवर्णे च सञ्जाते दिव्ये पीताम्बरेतनौ।३३
गजवर्णोऽभवद्देहःशापात्तस्य महात्मनः। शक्त्युपासकरोषेण फलमेतदभून्नृप!।३४
तस्माच्छ्रीशक्तिभक्तोहिनाऽवमान्यःकदाचन। गायत्रीजपनिष्ठोहिवसिष्ठोमुनिसत्तमः।३५
दृष्ट्वा निन्द्यं निजं देहं राजादुःखमवाप्तमान्। न जगामगृहे दीनो वनमेवाऽभितो ययौ।३६
चिन्तयामास दुःखार्तस्त्रिशङ्कुःशोकविह्वलः। किं करोमि क्व गच्छामि देहो मेऽतीव निन्दितः।३७
कर्तव्यं नैव पश्यामि येनमेदुःखसंक्षयः। गृहेगच्छामिचेत्पुत्रःपीडितोऽद्यभविष्यति।३८
भार्याऽपि श्वपचं दृष्ट्वा नाऽङ्गीकारं करिष्यति। सचिवा नाऽऽदरिष्यन्ति वीक्ष्य मामीदृशं पुनः।३९
ज्ञातयो बन्धुवर्गश्च संङ्गतो न भजिष्यति। सर्वैस्त्यक्तस्य मे नूनंजीवितान्मरणंवरम्।४०
विषं वा भक्षयित्वाऽद्य पतित्वावाजलाशये। कृत्वावाकण्ठपाशंचदेहत्यागंकरोम्यहम्।४१
अग्नौ वा ज्वलिते देहं जुहोमि विधिद्बलात्। कृत्वा वाऽनशनं प्राणांस्त्यजामि दूषितान्भृशम्।४२
आत्महत्या भवेन्नूनं पुनर्जन्मनि जन्मनि। श्वपचत्वं च शापश्च हत्यादोषाद्भवेदपि।४३
पुनर्विचार्य भूपालश्चेतसा समचिन्तयत्। आत्महत्या न कर्तव्या सर्वथैव मयाऽधुना।४४
भोक्तव्यं स्वकृतं कर्म देहेनाऽनेन कानने। भोगेनाऽस्यविपाकस्यभवितासर्वथाक्षयः।४५
प्रारब्धकर्मणां भोगादन्यथानक्षयोभवेत्। तस्मान्मयाऽत्रभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम्।४६
कुर्वन्पुण्याश्रमाभ्याशे तीर्थानांसेवनंतथा। स्मरणंचाम्बिकायास्तुसाधूनांसेवनंतथा।४७
एवं कर्मक्षयं नूनंकरिष्यामि वने वसन्। भाग्ययोगात्कदाचित्तु भवेत्साधुसमागमः।४८
इति सञ्चिन्त्यमनसात्यक्त्वास्वनगरंनृपः। गङ्गातीरेगतःकामंशोचंस्तत्रैवसंस्थितः।४९
हरिश्चन्द्रस्तदाज्ञात्वापितुः शापस्यकारणम्। दुःखितःसचिवांस्तत्रप्रेषयामासपार्थिवः।५०
सचिवास्तत्रगत्वाऽऽशुतमूचुः प्रश्रयान्विताः। प्रणम्यश्वपचाकारंनिःश्वसन्तंमुहुर्मुहुः।५१
राजन्पुत्रेण तेनूनंप्रेषितान्समुपागतान्। अवेहिसचिवांस्त्वंनोहरिश्चन्द्राज्ञयास्थितान्।५२
युवराजसुतः प्राह यत्तच्छृणु नराधिप!। आनयध्वं नृपं यूयं सम्मान्य पितरं मम।५३
तस्माद्राजन्समागच्छराज्यंप्रतिगतव्यथः । सेवांसर्वेकरिष्यन्तिसचिवाश्चप्रजास्तथा।५४
गुरुम्प्रसादयिष्यामः स यथा तु दयेत वै। प्रसन्नोऽसौ महातेजा दुःखस्यान्तं करिष्यति।५५
इति पुत्रेण ते राजन्कथितं बहुधा किल। तस्माद्गमनमेवाऽऽशु रोचतां निजसद्मनि।५६
इति तेषां नृपः श्रुत्वा भाषितं श्वपचाकृतिः। स्वगृहं गमनायाऽसौनमतिंकृतवानदः।५७
तानुवाच तदा वाक्यं व्रजन्तु सचिवाः पुरम्। गत्वा पुरं महाभाग ब्रुवन्तु वचनाद्यमे।५८
नागमिष्याम्यहं! पुत्र कुरु राज्यमतन्द्रितः। मानयन्ब्राह्मणान्देवान्यजन्यज्ञैरनेकशः।५९
नाऽहं श्वपचवेषेण गर्हितेन महात्मभिः। आगमिष्याम्ययोध्यायांसर्वेगच्छन्तुमाचिरम्।६०
पुत्रं सिंहासने स्थाप्य हरिश्चन्द्रं महाबलम्। कुर्वन्तु राज्यकर्माणि यूयं तत्रममाज्ञया।६१
इत्यादिष्टास्ततस्तेतुरुरुदुश्चाऽऽतुराभृशम् । सचिवानिर्ययुस्तूर्णंनत्वातंचवनाश्रमात्।६२
अयोध्यायामुपागत्यपुण्येऽह्निविधिपूर्वकम् ।अभिषेकं तदाचक्रुर्हरिश्चन्द्रस्यमूर्ध्नि ते।६३
अभिषिक्तस्तु तेजस्वी सचिवैश्चनृपाज्ञया। राज्यंचकारधर्मिष्ठः पितरंचिन्तयन्भृशम्।६४

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे त्रिशङ्कूपाख्यानवर्णनंनामद्वादशोऽध्यायः।।१२।।

* त्रयोदशोऽध्यायः *

हरिश्चन्द्रोपाख्यानेविश्वामित्रस्यतपःसमाप्त्यनन्तरंस्वपत्न्यासम्वादवर्णनम्

राजोवाच

हरिश्चन्द्रः कृतोराजासचिवैर्नृपशासनात्। त्रिशङ्कुस्तुकथंमुक्तस्तस्माच्चाण्डालदेहतः। १
मृतो वा वनमध्ये तु गङ्गातीरे परिप्लुतः। गुरुणा वा कृपां कृत्वा शापात्तस्माद्विमोचितः। २
एतद्वृत्तान्तमखिलंकथयस्व ममाऽग्रतः। चरितं तस्यनृपतेः श्रोतुकामोऽस्मिसर्वथा। ३

व्यास उवाच

अभिषिक्तं सुतं कृत्वा राजासन्तुष्टमानसः। कालातिक्रमणंतत्रचकारचिन्तयञ्छिवाम्। ४
एवं गच्छति काले तु तपस्तप्त्वा समाहितः। द्रष्टुं दारान्सुतादींश्च तदाऽगात्कौशिको मुनिः। ५
आगत्य स्वजनं दृष्ट्वा सुस्थितंमुदमाप्तवान्। भार्यां पप्रच्छमेधावीस्थितामग्रेसपर्यया। ६
दुर्भिक्षे तु कथं कालस्त्वया नीतः सुलोचने। कन्नं विनात्विमेबालाःपालिताःकेनतद्वद। ७
अहं तपसि सन्नद्धो नाऽऽगतःशृणुसुन्दरि!। किंकृतंतुत्वयाकान्ते विनाद्रव्येणशोभने। ८
मया चिन्ता कृता तत्र श्रुत्वा दुर्भिक्षमद्भुतम्। नागतोऽहं विचार्यैवं किं करिष्यामि निर्धनः। ९
अहमप्यतिवामोरु! पीडितः क्षुधया वने। प्रवृष्टश्चौरभावेनकुत्रचिच्छ्वपचालये ।१०
श्वपचं निद्रितं दृष्ट्वा क्षुधया पीडितो भृशम्। महानसं परिज्ञायभक्ष्यार्थंसमुपस्थितः।११
यदा भाण्डं समुद्घाट्यपक्वंश्वतनुजामिषम्। गृह्णामिभक्षणार्थायतदादृष्टस्तु तेन वै।१२
पृष्टः कस्त्वं कथं प्राप्तोगृहेमेनिशिसादरम्। ब्रूहिकार्यंकिमर्थंत्वमुद्घाटयसिभाण्डकम्।१३
इत्युक्तःश्वपचनेनाऽहंक्षुधयापीडितो भृशम्। तमवोचंसुकेशान्तेकामं गद्गदया गिरा।१४
ब्राह्मणोऽहं महाभाग! तापसः क्षुधयाऽर्दितः। चौरभावमनुप्राप्तोभक्ष्यंपश्यामिभाण्डके।१५
चौरभावेन सम्प्रातोऽस्म्यतिथिस्तेमहामते!। क्षुधितोऽस्मि ददस्वाऽऽज्ञां मांसमद्मि सुसंस्कृतम्।१६

विश्वामित्र उवाच

श्वपचस्तु वचः श्रुत्वामामुवाचसुनिश्चितम्। भक्षंमाकुरुवर्णाग्र्यजानीहिश्वपचालयम्।१७
दुर्लभं खलु मानुष्यं तत्राऽपिच द्विजन्मता। द्विजत्वेब्राह्मणत्वंचदुर्लभंवेत्सिकिं नहि।१८
दुष्टाहारो न कर्तव्यः सर्वथालोकमिच्छता। अग्राह्या मनुनाप्रोक्ताः कर्मणासप्तचान्त्यजाः।१९

त्याज्योऽहं कर्मणा विप्र! श्वपचो नाऽत्र संशयः।
निवारयामि भक्ष्यात्त्वां न लोभेनाऽञ्जसा द्विज! ॥२०॥
वर्णसङ्करदोषोऽयं माऽऽयातु त्वां द्विजोत्तम!।

विश्वामित्र उवाच

सत्यं वदसि धर्मज्ञ! मतिस्ते विशदाऽन्त्यज ॥२१॥

तथाऽप्यापदि धर्मस्य सूक्ष्ममार्गं ब्रवीम्यहम्। देहस्यरक्षणं कार्यं सर्वथायदि मानद।२२
पापस्याऽन्ते पुनःकार्यं प्रायश्चित्तंविशुद्धये। दुर्गतिस्तुभवेत्पापादनापदिनचाऽऽपदि।२३
मरणात्क्षुधितस्याऽथनरकोनाऽत्र संशयः। तस्मात्क्षुधापहरणंकर्तव्यं शुभमिच्छता।२४
तेनाऽहं चौर्यधर्मेणदेहं रक्षेऽप्यथान्त्यज!। अवर्षणे च चौर्येण यत्पापं कथितम्बुधैः।२५

यो न वर्षति पर्जन्यं यत्तु तस्मै भविष्यति।

विश्वामित्र उवाच

इत्युक्ते वचने कान्ते! पर्जन्यः सहसाऽपतत् ॥२६॥

गगनाद्धस्तिहस्ताभिर्धाराभिरभिकाङ्क्षितः। मुदितोऽहं घनम्वीक्ष्य वर्षन्तं विद्युता सह।२७

तदाऽहंतद्गृहंत्यक्त्वानिः सृतः परया मुदा। कथय त्वं वरारोहेकालोनीतस्त्वयाकथम्।२८

कान्तारे परमः क्रूरः क्षयकृत्प्राणिनामिह।

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा पतिमाह प्रियम्वदा ।।२९।।

यथा शृणु मया नीतः कालः परमदारुणः। गते त्वयि मुनिश्रेष्ठ दुर्भिक्षं समुपागतम्।३०

अन्नार्थं पुत्रकाः सर्वेबभूवुश्चाऽतिदुःखिताः। क्षुधितान्बालकान्वीक्ष्यनीवारार्थंवनेवने।३१

भ्रान्ताऽहं चिन्तयाऽऽविष्टा किञ्चित्प्राप्तं फलं तदा।

एवं च कतिचिन्मासा नीवारेणाऽतिवाहिताः ।।३२।।

तदभावे मया कान्त! चिन्तितं मनसा पुनः। नभिक्षाकिलदुर्भिक्षेनीवारानाऽपिकानने।३३

न वृक्षेषु फलान्यासुर्न मूलानि धरातले। क्षुधयापीडिता बाला रुदन्ति भृशमातुराः।३४

किंकरोमिक्वगच्छामिकिंब्रवीमिक्षुधार्दितान्। एवंविचिन्त्यमनसा निश्चयस्तुमयाकृतः।३५

पुत्रमेकं ददाम्यद्य कस्मैचिद्धनिने किल। गृहीत्वातस्यमौल्यं तुतेनद्रव्येणबालकान्।३६

पालयेऽहं क्षुधार्तांस्तु नाऽन्योपायोऽस्ति पालने।

इति सञ्चिन्त्य मनसा पुत्रोऽयं प्रहितो मया ।।३७।।

विक्रयार्थं महाभाग! क्रन्दमानो भृशातुरः। क्रन्दमानं गृहीत्वैनं निर्गताऽहं गतत्रपा।३८

तदा सत्यव्रतो मार्गे मामुद्वीक्ष्यभृशातुरम्। प्रपच्छसचराजर्षिः कस्माद्रोदितिबालकः।३९

तदाऽहं तमुवाचेदं वचनं मुनिसत्तम!। विक्रयार्थं नीयतेऽसौ बालकोऽद्य मया नृप।४०

श्रुत्वा मे वचनं राजा दयार्द्रहृदयस्ततः। मामुवाच गृहं याहि गृहीत्वैनं कुमारकम्।४१

भोजनार्थे कुमाराणामामिषं विहितं तव। प्रापयिष्याम्यहं नित्यं यावन्मुनिसमागमः।४२

अहन्यहनि भूपालो वृक्षेऽस्मिन्मृगसूकरान्। विन्यस्य याति हत्वाऽसौ प्रत्यहं दययान्वितः।४३

तेनैवबालकाःकान्त! पालितावृजिनार्णवात्।

वशिष्ठेनाऽथशप्तोऽसौभूपतिर्ममकारणात् ।।४४।।

कस्मिंश्चिद्दिवसे मांसंनप्राप्तंतेनकानने। हता दोग्ध्रीवसिष्ठस्यतेनाऽसौकुपितोमुनिः।४५

त्रिशङ्कुरिति भूपस्य कृतं नाम महात्मना। कुपितेन वधाद्धेतोश्चाण्डालश्च कृतो नृपः।४६

तेनाऽहं दुःखिता जाता तस्य दुःखेनकौशिक। श्वपचत्वमसौ प्राप्तो मत्कृते नृपनन्दनः।४७

येनकेनाऽप्युपायेन भवता नृपतेः किल। तस्माद्रक्षा प्रकर्तव्या तपसा प्रबलेन ह।४८

व्यास उवाच

इति भार्यावचःश्रुत्वाकौशिकोमुनिसत्तमः। तामाहकामिनींदीनांसान्त्वपूर्वमरिन्दम्।४९

विश्वामित्र उवाच

मोचयिष्यामि तं शापान्नृपंकमललोचने। उपकारः कृतो येन कान्ताराद्रक्षिताऽसिवै।५०

विद्यातपोबलेनाऽहंकरिष्येदुःखसंक्षयम्। इत्याश्वास्यप्रियांतत्रकौशिकः परमार्थवित्।५१

चिन्तयामास नृपतेः कथंस्याद्दुःखनाशनम्। सम्विमृश्यमुनिस्तत्रजगामयत्रपार्थिवः।५२

त्रिशङ्कुः पक्वणे दीनःसंस्थितः श्वपचाकृतिः। आगच्छन्तं मुनिं दृष्ट्वा विस्मितोऽसौ नराधिपः।५३

दण्डवन्निपपातोर्व्यां पादयोस्तरसा मुनेः। गृहीत्वा तं करेभूपंपतितंकौशिकस्तदा।५४

उत्थाप्योवाच वचनं सान्त्वपूर्वंद्विजोत्तमः। मत्कृतेत्वंमहीपालशप्तोऽसिमुनिनायतः।५५

वाञ्छितं ते करिष्यामि ब्रूहि किं करवाण्यहम्।

राजोवाच

मया सम्प्रार्थितः पूर्वं वसिष्ठो मखहेतवे ।।५६।।

मां याजय मुनिश्रेष्ठ करोमिमखमुत्तमम्। यथेष्टं कुरु विप्रेन्द्र! यथा स्वर्गंव्रजाम्यहम्।५७
अनेनैव शरीरेण शक्रलोकं सुखालयम्। कोपं कृत्वा वसिष्ठोऽसौमामाहेति सुदुर्मते!।५८
मानुषेण हि देहेन स्वर्गवासः कुतस्तव। पुनर्मयोक्तो भगवांस्वर्गलुब्धेन चाऽनघ!।५९
अन्यं पुरोहितं कृत्वा यक्ष्येऽहं यज्ञमुत्तमम्। तदा तेनैव शप्तोऽहंचाण्डालो भवपामर।६०
इत्येतत्कथितं सर्वं कारणं शापसम्भवम्। मम दुःखविनाशायसमर्थोऽसि मुनीश्वर!।६१
इत्युक्त्वा विररामाऽसौ राजा दुःखरुजार्दितः। कौशिकोऽपि निराकर्तुं शापं तस्य व्यचिन्तयत्।६२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे त्रिशङ्कुशापोद्धारायविश्वामित्रसान्त्वनवर्णनंनाम त्रयोदशोऽध्यायः ।।१३।।

* चतुर्दशोऽध्यायः *

विश्वामित्रेणस्वतपोवलेनत्रिशङ्कुस्वर्गप्रेषणं हरिश्चन्द्रस्यवरुणाराधनेन पुत्रोत्पत्तिरितिचवर्णनम्

व्यास उवाच

विचिन्त्य मनसा कृत्यं गाधिसूनुर्महातपाः। प्रकल्प्य यज्ञसम्भारान्मुनीनामन्त्रयत्तदा।१
मुनयस्तंमखं ज्ञात्वाविश्वामित्रनिमन्त्रिताः। नाऽऽगताःसर्वएवैते वसिष्ठेननिवारिताः।२
गाधिसूनुस्तदाज्ञाय विमनाश्चाऽतिदुःखितः। आजगामाऽऽश्रमं तत्र यत्राऽसौ नृपतिः स्थितः।३
तमाह कौशिकः क्रुद्धो वसिष्ठेन निवारिताः। नागता ब्राह्मणाः सर्वेयज्ञार्थं नृपसत्तम!।४
पश्य मे तपसः सिद्धिं यथा त्वांसुरसद्मनि। प्रापयामिमहाराजवाञ्छितंतेकरोम्यहम्।५
इत्युक्त्वा जलमादाय हस्तेन मुनिसत्तमः। ददौ पुण्यं तदा तस्मै गायत्रीजपसम्भवम्।६
दत्त्वाऽथ सुकृतं राज्ञे तमुवाच महीपतिम्। यथेष्टं गच्छ राजर्षे! त्रिविष्टपमतन्द्रितः।७
पुण्येन मम राजेन्द्र! बहुकालार्जितेन च। याहिशक्रपुरीं प्रीतः स्वस्तितेऽस्तुसुरालये।८

व्यास उवाच

इत्युक्तवतिविप्रेन्द्रे त्रिशङ्कुस्तरसा ततः। उत्पपात यथा पक्षीवेगवाँस्तपसोबलात्।९
उत्पत्य गगने राजा गतः शक्रपुरीं यदा। दृष्टो देवगणैस्तत्रक्रूरश्चाण्डालवेषभाक्।१०
कथितोऽसौ सुरेन्द्राय कोऽयमायाति सत्वरः। गगने देववद्धायोर्दुर्दर्शःश्वपचाकृतिः।११
सहसोत्थायशक्रस्तमपश्यत्पुरुषाधमम् । ज्ञात्वात्रिशङ्कुमपिसनिर्भर्त्स्यतरसाऽब्रवीत्।१२
श्वपच! क्व समायासि देवलोके जुगुप्सितः। याहि शीघ्रं ततो भूमौ नाऽत्र स्थातुं त्वयोचितम्।१३
इत्युक्तः स्खलितःस्वर्गाच्छक्रेणाऽमित्रकर्शन!। निपपाततदाराजाक्षीणपुण्योयथाऽमरः।१४
पुनश्चुक्रोश भूपालो विश्वामित्रेतिचासकृत्। पतामिरक्षदुःखार्तंस्वर्गाच्चलितमाशुगम्।१५
तस्य तत्क्रन्दितं राजन्पततः कौशिको मुनिः। श्रुत्वा तिष्ठेति होवाच पतन्तं वीक्ष्य भूपतिम्।१६
वचनात्तस्य तत्रैव स्थितोऽसौ गगनेनृपः। मुनेस्तपःप्रभावेणचलितोऽपिसुरालयात्।१७

विश्वामित्रोऽप्यपः स्पृष्ट्वा चकारेष्टिं सुविस्तराम् ।
विधातुं नूतनां सृष्टिं स्वर्गलोकं द्वितीयकम् ।।१८।।
तस्योद्यमं तथा ज्ञात्वा त्वरितस्तुशचीपतिः ।
तत्राजगामसहसामुनिंप्रतितुगाधिजम् ।।१९।।

किंब्रह्मन्क्रियतेसाधो! कस्मात्कोपसमाकुलः। अलंसृष्ट्यामुनिश्रेष्ठब्रूहिकिंकरवाणिते।२०

विश्वामित्र उवाच

स्वंनिवासंमहीपालंच्युतंत्वद्भुवनाद्विभो । नयस्वप्रीतियोगेनत्रिशङ्कुञ्चाऽतिदुःखितम्।२१

व्यास उवाच

तस्य तं निश्चयंज्ञात्वातुराषाडतिशङ्कितः। ततो बलंम्विदित्वोग्रमोमित्योवाचवासवः।२२
दिव्यदेहं नृपं कृत्वाविमानवरसंस्थितम्। आपृच्छ्यकौशिकंशक्रोऽगमन्निजपुरींतदा।२३
गते शक्रे तु वै स्वर्गं त्रिशङ्कुसहिते ततः। विश्वामित्रः सुखं प्राप्य स्वाश्रमे सुस्थिरोऽभवत्।२४
हरिश्चन्द्रोऽथ तच्छ्रुत्वा विश्वामित्रोपकारकम्। पितुः स्वर्गमनं कामं मुदितो राज्यमन्वशात्।२५
अयोध्याधिपतिः क्रीडां चकार सह भार्यया। रूपयौवनचातुर्ययुक्तया प्रीतिसंयुतः।२६
अतीतकाले युवती न सा गर्भवती ह्यभूत्। तदाचिन्तातुरोराजाबभूवाऽतीवदुःखितः।२७
वसिष्ठस्याऽऽश्रमंगत्वाप्रणम्य शिरसा मुनिम्। अनपत्यत्वजां चिन्तां गुरवे समवेदयत्।२८
दैवज्ञोऽसि भवान्कामं मन्त्रविद्याविशारदः। उपायं कुरु धर्मज्ञ! सन्ततेर्मम मानद!।२९
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति जानासिद्विजसत्तम!। कस्मादुपेक्षसेजानन्दुःखंममचशक्तिमान्।३०
कलविङ्कास्त्विमे धन्या ये शिशुं लालयन्ति हि। मन्दभाग्योऽहमनिशं चिन्तयामि दिवानिशम्।३१

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्यमुनिस्तस्यनिर्वेदमिश्रितंवचः ।सञ्चिन्त्यमनसासम्यक्तमुवाचविधेःसुत।३२

वसिष्ठ उवाच

सत्यं ब्रूषे महाराज संसारेऽस्मिन्न विद्यते। अनपत्यत्वजं दुःखं यत्तथादुःखमद्भुतम्।३३
तस्मात्त्वमपि राजेन्द्र वरुणं यादसां पतिम्। समाराधाय यत्नेनसतेकार्यंकरिष्यति।३४
वरुणादधिकोनाऽस्तिदेवः सन्तानदायकः। तमाराधय धर्मिष्ठाकार्यसिद्धिर्भविष्यति।३५
दैवं पुरुषकारश्च माननीयाविमौ नृभिः। उद्यमेन विना कार्यसिद्धिः सञ्जायते कथम्।३६
न्यायतस्तुनरैः कार्यउद्यमस्तत्त्वदर्शिभिः। कृतेतस्मिन्भवेत्सिद्धिर्नाऽन्यथानृपसत्तम।३७
इति तस्य वचः श्रुत्वा गुरोरमिततेजसः। प्रणम्य निर्ययौ राजा तपसेकृतनिश्चयः।३८
गङ्गातीरे शुभे स्थाने कृतपद्मासनो नृपः। ध्यायन्पाशधरं चित्ते चचार दुश्चरं तपः।३९
एवं तपस्यतस्तस्य प्रचेता दृष्टिगोचरः। कृपयाऽभून्महाराज! प्रसन्नमुखपङ्कजः।४०
हरिश्चन्द्रमुवाचेदं वचनं यादसाम्पतिः। वरं वरय धर्मज्ञ! तुष्टोऽस्मि तपसा तव।४१

राजोवाच

अनपत्योऽस्मि देवेश! पुत्रं देहि सुखप्रदम्। ऋणत्रयापहारार्थमुद्यमोऽयं मया कृतः।४२
नृपस्य वचनं श्रुत्वा प्रगल्भं दुःखितस्य च। स्मितपूर्वंततः पाशीतमाहपुरतः स्थितम्।४३

वरुण उवाच

पुत्रो यदि भवेद्राजन्गुणी मनसि वाञ्छितः। सिद्धे कार्ये ततः पश्चात्किं करिष्यसि मे प्रियम्।४४
यदि त्वं तेन पुत्रेण मां यथेजा विशङ्कितः। पशुबन्धेन तेनैव ददामि नृपते! वरम्।४५

राजोवाच

देव! मेमाऽस्तुवन्ध्यत्वंयजिष्येऽहंजलाधिपम्!। पशुंकृत्वासुतंपुत्रंसत्यमेतद्ब्रवीमिते ।४६
वन्ध्यत्वेपरमं दुःखमसह्यं भुवि मानद। शोकाग्निशमनं नृणां तस्माद्देहिसुतं शुभम्।४७

वरुण उवाच

भविष्यति सुतः कामं राजन्गच्छगृहाय वै। सत्यं तद्वचनंकार्यं यद्ब्रवीषि ममाग्रतः।४८

व्यास उवाच

इत्युक्तो वरुणेनाऽसौ हरिश्चन्द्रो गृहं ययौ। भार्यायै कथयामासवृत्तान्तं वरदानजम्।४९
तस्य भार्याशतं पूर्णं बभूवातिमनोहरम्। पट्टराज्ञी शुभा शैव्या धर्मपत्नी पतिव्रता।५०

काले गतेऽथ सा गर्भं दधार वरवर्णिनी। बभूव मुदितो राजा श्रुत्वा दोहदचेष्टितम्।५१
कारयामास विधिवत्संस्कारान्नृपतिस्तदा। मासेऽथ दशमेपूर्णे सुषुवे साशुभेदिने।५२
ताराग्रहबलोपेते पुत्रं देवसुतोपमम्। पुत्रे जाते नृपः स्नात्वा ब्राह्मणैः परिवेष्टितः।५३
चकारजातकर्माऽऽदौददौ दानानि भूरिशः। राज्ञश्चाऽतिप्रमोदोऽभूत्पुत्रजन्मसमुद्भवः।५४
बभूव परमोदारो धनधान्यसमन्वितः। विशेषदानसंयुक्तो गीतवादित्रसङ्कुलः।५५

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे वरुणकृपयाशैव्यायांपुत्रोत्पत्तिवर्णनंनाम चतुर्दशोऽध्यायः ।।१४।।

* पञ्चदशोऽध्यायः *

वरुणशापाद्धरिश्चन्द्रस्यजलोदरव्याधिप्राप्तिवर्णनम्

व्यास उवाच

प्रवृत्ते सदने तस्य राज्ञः पुत्रमहोत्सवे। आजगाम तदा पाशी विप्रवेषधरः शुभः।१
स्वस्तीत्युक्त्वा नृपं प्राह वरुणोऽहं निशामय। पुत्रो जातस्तवाऽधीश यजाऽनेन नृपाऽऽशु माम्।२
सत्यं कुरु वचो राजन्यत्प्रोक्तं भवता पुरा। वन्ध्यत्वं तु गतं तेऽद्य वरदानेन मेकिल।३
इति तस्य वचः श्रुत्वा राजा चिन्तां चकार ह। कथंहन्मिसुतंजातंजलजेनसमाननम्।४
लोकपालः समायातो विप्रवेषेण वीर्यवान्। न देवहेलनं कार्यं सर्वथा शुभमिच्छता।५
पुत्रस्नेहः सुदुश्छेद्यः सर्वथा प्राणिभिः सदा। किं करोमि कथं मे स्यात्सुखं सन्ततिसम्भवम्!।६
धैर्यमालम्ब्य भूपालस्तं नत्वा प्रतिपूज्य च। उवाच वचनं श्लक्ष्णंयुक्तंविनयपूर्वकम्।७

राजोवाच

देवदेव! तवाऽनुज्ञां करोमि करुणानिधे!। वेदोक्तेन विधानेन मखञ्च बहुदक्षिणम्।८
पुत्रे जाते दशाहेन कर्मयोग्यो भवेत्पिता। मासेन शुद्ध्येज्जननी दम्पती तत्रकारणम्।९
सर्वज्ञोऽसि प्रचेतस्त्वं धर्मं जानासि शाश्वतम्। कृपांकुरुत्वंवारीश! क्षमस्वपरमेश्वर।१०

व्यास उवाच

इत्युक्तस्तु प्रचेतास्तं प्रत्युवाच जनाधिपम्। स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि कुरु कार्याणि पार्थिव!।११
आगमिष्यामि मासान्तेयष्टव्यंसर्वथात्वया। कृत्वौत्थानिकमाचारंपुत्रस्यनृपसत्तम!।१२
इत्युक्त्वा श्लक्ष्णयावाचाराजानं यादसाम्पतिः।
हरिश्चन्द्रो मुदं प्राप गते पाशिनि पार्थिवः ।।१३।।
कोटिशःप्रददौ गास्ताघटोघ्नीर्हेमपूरिताः। विप्रेभ्योवेदविद्भ्यश्चतथैवतिलपर्वतान्।१४
राजा पुत्रमुखं दृष्ट्वा सुखमाप महत्तरम्। नामाऽस्य रोहितश्चेति चकारविधिपूर्वकम्।१५
पूर्णेमासे ततः पाशी विप्रवेषेण भूपतेः। आजगाम गृहे सद्यो यजस्वेति ब्रुवन्मुहुः।१६
वीक्ष्य तं नृपतिर्देवं निमग्नः शोकसागरे। प्रणिपत्यकृतातिथ्यं तमुवाच कृताञ्जलिः।१७
दिष्ट्या देव! त्वमायातोगृहंमे पावितंप्रभो। मखं करोमि वारीशविधिवद्वाञ्छितंतव।१८
अदन्तो न पशुः श्लाघयित्याहुर्वेदवादिनः। तस्मद्दन्तोद्भवे तेऽहंकरिष्यामिमहामखम्।१९

व्यास उवाच

इत्युक्तस्तेन वरुणस्तथेत्युक्त्वा ययावथ। हरिश्चन्द्रो मुदं प्राप्य विजहार गृहाश्रमे।२०
पुनर्दन्तोद्भवं ज्ञात्वा प्रचेता द्विजरूपवान्। आजगाम गृहेतस्य कुरु कार्यमिति ब्रुवन्।२१
भूपालोऽपिजलाधीशंवीक्ष्यप्राप्तंद्विजाकृतिम्। प्रणम्यासनसन्मानैः पूजयामाससादरम्।२२
स्तुत्वा प्रोवाच वचनं विनयानतकन्धरः। करोमि विधिवत्कामं मखं प्रबलदक्षिणम्।२३

बालोऽप्यकृतचौलोऽयं गर्भकेशो न सम्मतः। यज्ञार्थे पशुकरणे मयावृद्धमुखाच्छ्रुतम्।२४
तावत्क्षमस्व वारीश! विधिं जानासि शाश्वतम्। कर्तव्यः सर्वथा यज्ञो मुण्डनान्ते शिशोः किल।२५
तस्येति वचनं श्रुत्वा प्रचेताः प्राह तं पुनः। प्रतारयसि मां राजन्पुनः पुनरिदं ब्रुवन्।२६
अपि ते सर्वसामग्री वर्तते नृपतेऽधुना। पुत्रस्नेहनिबद्धस्त्वं वञ्चयस्येव साम्प्रतम्।२७
क्षौरकर्मविधिं कृत्वा न कर्ताऽसि मखंयदि। तदाऽहंदारुणंशापंदास्येकोपसमन्वितः ।२८
अद्य गच्छामि राजेन्द्र! वचनात्तव मानद। न मृषा वचनं कार्यंत्वयेक्ष्वाकुकुलोद्भव!।२९
इत्याऽऽभाष्य ययावाशु प्रचेता नृपतेर्गृहात्। राजा परमसन्तुष्टो ननन्द भवने तदा।३०
चूडाकरणकाले तु प्रवृत्ते परमोत्सवे। सम्प्राप्तस्तरसापाशी भवने नृपतेः पुनः।३१
यदाङ्के सुतमादाय राज्ञीनृपतिसन्निधौ। उपविष्टा क्रियाकाले तदैव वरुणोऽभ्यगात्।३२
कुरु कर्मेति विस्पष्टं वचनं कथयन्नृपम्। विप्ररूपधरः श्रीमान्प्रत्यक्ष इव पावकः।३३
नृपतिस्तं समालोक्य बभूवाऽतीवविह्वलः। नमश्चकार तं भीत्या कृताञ्जलिपुटः पुरः।३४
विधिवत्पूजयित्वा तं राजोवाच विनीतवान्। स्वामिन्कार्यं करोम्यद्य मखस्य विधिपूर्वकम्।३५
वक्तव्यमस्ति तत्राऽपि शृणुष्वैकमना विभो!। युक्तं चेन्मन्यसे स्वामिंस्तद्ब्रवीमि तवाऽग्रतः।३६
ब्राह्मणः क्षत्रियोवैश्यस्त्रयोवर्णाद्विजातयः। संस्कृताश्चान्यथाशूद्रा एवंवेदविदोविदुः।३७
तस्मादयं सुतो मेऽद्य शूद्रवद्वर्तते शिशुः। उपनीतः क्रियार्हः स्यादितिवेदेषु निर्णयः।३८
राज्ञामेकादशे वर्षे सदोपनयनं स्मृतम्। अष्टमे ब्राह्मणानाञ्च वैश्यानां द्वादशे किल।३९
दयसे यदि देवेश दीनं मां सेवकं तव। तदोपनीय कर्ताऽस्मि पशुना यज्ञमुत्तमम्।४०
लोकपालोऽसि धर्मज्ञ सर्वशास्त्रविशारद!। मन्यसे यद्वचः सत्यं तद्गच्छभवनं विभो।४१

व्यास उवाच

इतितस्यवचःश्रुत्वादयावान्यादसाम्पतिः। ओमित्युक्त्वाययावाशुप्रसन्नवदनो नृपः।४२
गतेऽथ वरुणे राजा बभूवाऽतिमुदान्वितः। सुखं प्राप्य सुतस्यैवं राजामुदमवाप ह।४३
चकार राजकार्याणि हरिश्चन्द्रस्तदा नृप!। कालेन व्रजता पुत्रो बभूव दशवार्षिकः।४४
तस्योपवीतसामग्रीं विभूतिसदृशीं नृपः। चकार ब्राह्मणैः शिष्टैरन्वितः सचिवैस्तथा।४५
एकादशेसुतस्याब्देव्रतबन्धविधौ नृपः। विदधे विधिवत्कार्यं चित्ते चिन्तातुरः पुनः।४६
वर्तमाने तथा कार्ये उपनीते कुमारके। आजगामाऽथ वरुणो विप्रवेषधरस्तदा।४७
तं वीक्ष्यनृपतिस्तूर्णंप्रणम्यपुरतः स्थितः। कृताञ्जलिपुटः प्रीतः प्रत्युवाच सुरोत्तमम्।४८
देवदत्तोपवीतोऽयं पशुयोग्योऽस्ति मे सुतः। प्रसादात्तव मे शोको गतो वन्ध्यापवादजः।४९
कर्तुमिच्छाम्यहं यज्ञं प्रभूतवरदक्षिणम्। समये शृणु धर्मज्ञ! सत्यमद्य ब्रवीम्यहम्।५०
समावर्तनकर्मान्ते करिष्यामि तवेप्सितम्!। ममोपरिदयांकृत्वा तावत्त्वंक्षन्तुमर्हसि।५१

वरुण उवाच

प्रतारयसि मां राजन्पुत्रप्रेमाकुलो भृशम्। मुहुर्मुहुमतिंकृत्वा युक्तियुक्तां महामते!।५२
गच्छाम्यद्य महाराज! वचसा तव नोदितः। आगमिष्यामि समये समावर्तनकर्मणि।५३
इत्युक्त्वा प्रययौ पाशीतमापृच्छ्य विशाम्पते!। राजा प्रमुदितः कार्यं चकार च यथोत्तरम्।५४
आगतंवरुणं दृष्ट्वाकुमारोऽतिविचक्षणः। यज्ञस्य समयं ज्ञात्वातदा चिन्तातुरोऽभवत्।५५
शोकस्य कारणंराज्ञःपर्यपृच्छदितस्ततः। ज्ञात्वाऽऽत्मवधमायुष्मन्गमनायमतिन्दधौ।५६
निश्चयं परमं कृत्वा सम्मन्त्र्य सचिवात्मजैः। प्रययौ नगरात्तस्मान्निर्गत्यवनमप्यसौ।५७
गतेपुत्रेनृपः कामंदुःखितोऽभूद्भृशन्तदा। प्रेरयामासदूतान्स्वांस्तस्याऽन्वेषणकाम्यया।५८

एवं गतेऽथ कालेऽसौ वरुणस्तद्गृहङ्गतः। राजानं शोकसन्तप्तं कुरु यज्ञमिति ब्रुवन्।५९
राजा प्रणम्य तं प्राहदेवदेवकरोमिकिम्। न जानेक्वाऽपि पुत्रो मे गतस्त्वद्भयाकुलः।६०
सर्वत्र गिरिदुर्गेषु मुनीनामाश्रमेषु च। अन्वेषितो मे दूतैस्तु न प्राप्तो यादसाम्पते।६१
आज्ञापय महाराज! किं करोमि गतेसुते। न मे दोषोऽत्र सर्वज्ञ! भाग्यदोषस्तुसर्वदा।६२

व्यास उवाच

इति भूपवचः श्रुत्वा प्रचेताः कुपितोभृशम्। शशाप च नृपं क्रोधाद्वञ्चितस्तुपुनः पुनः।६३
नृपतेऽहं त्वया यस्माद्वचसा च प्रवञ्चितः। तस्माज्जलोदरो व्याधिस्त्वां तुदत्वतिदारुणः।६४
इति शप्तो महीपालः कुपितेन प्रचेतसा। पीडितोऽभूत्तदा राजा व्याधिनादुःखदेनतु।६५
एवंशप्त्वानृपंपाशीजगामनिजमास्पदम्। राजाप्राप्यमहाव्याधिंबभूवाऽतीवदुःखितः।६६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे हरिश्चन्द्रस्यजलोदरव्याधिप्राप्तिवर्णनं नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

* षोडशोऽध्यायः *

वशिष्ठकथनेनक्रीताजीगर्तमध्यमपुत्रशुनःशेपेनहरिश्चन्द्रस्ययज्ञकरणम्
पुनःविश्वामित्रस्यशुनःशेपवधाथनिवारणम्

व्यास उवाच

गतेऽथवरुणेराजारोगेणाऽतीवपीडितः। दुःखाद्दुःखंपरम्प्राप्यव्यथितोऽभूद्भृशं तदा।१
कुमारोऽसौ वने श्रुत्वा पितरं रोगपीडितम्। गमनायमतिंराजंश्चकार स्नेहयन्त्रितः।२
सम्वत्सरे व्यतीते तु पितरं द्रष्टुमादरात्। गन्तुकामन्तु तं ज्ञात्वा शक्रस्तत्राऽऽजगाम ह।३
वासवस्तु तदारूपं कृत्वाविप्रस्यसत्वरः। वारयामासयुक्त्या वै कुमारं गन्तुमुद्यतम।४

इन्द्र उवाच

राजपुत्र! न जानासि राजनीतिंसुदुर्लभाम्। अतः करोषि मूढस्त्वं गमनायमतिंवृथा।५
पिता तव महाभाग ब्राह्मणैर्वेदपारगैः। कारयिष्यति होमं ते ज्वलितेऽथ विभावसौ।६
आत्माहि वल्लभस्तात सर्वेषांप्राणिनांखलु। तदर्थे वल्लभाः सन्ति पुत्रदारधनादयः।७
आत्मनो देहरक्षार्थं हत्वा त्वांवल्लभंसुतम्। हवनंकारयित्वाऽसौरोगमुक्तोभविष्यति।८
तस्मात्त्वया न गन्तव्यं राजपुत्र पितुर्गृहे। मृते पितरि गन्तव्यं राज्यार्थे सर्वथापुनः।९
एवं निषेधितस्तत्र वासवेन नृपात्मजः। वनमध्ये स्थितः कामं पुनः संवत्सरं नृप!।१०
अत्यन्तं दुःखितं श्रुत्वा हरिश्चन्द्रंतदात्मजः। गमनाय मतिञ्चक्रे मरणे कृतनिश्चयः।११
तुराषाड् द्विजरूपेणतत्रागत्य च रोहितम्। निवारयामास सुतं युक्तिवाक्यैः पुनः पुनः।१२
हरिश्चन्द्रोऽतिदुःखार्तोवसिष्ठंस्वपुरोहितम्। पप्रच्छरोगनाशायतत्रोपायंसुनिश्चितम्।१३
तमाह ब्रह्मणः पुत्रो यज्ञं कुरु नृपोत्तम। क्रयक्रीतेन पुत्रेण शापमोक्षो भविष्यति।१४
पुत्रा दशविधाः प्रोक्ताब्राह्मणैर्वेदपारगैः। द्रव्येणाऽऽनीयतस्मात्त्वं पुत्रं कुरु नृपोत्तम!।१५
वरुणोऽपि प्रसन्नः सन्सुखकारी भविष्यति। लोभात्कोऽपि द्विजः पुत्रम्प्रदास्यति स्वराष्ट्रजः।१६
एवं प्रमोदितो राजा वसिष्ठेन महात्मना। प्रधानम्प्रेरयामास तदन्वेषणकाम्यया।१७
अजीगर्तोद्विजः कश्चिद्विषयेतस्यभूपतेः। तस्याऽऽसंश्च त्रयः पुत्रानिर्धनस्य विशेषतः।१८
प्रधानेनाऽप्यसौ पृष्टः पुत्रार्थंदुर्बलद्विजः। गवां शतं ददामीति देहिपुत्रं मखाय वै।१९
शुनः पुच्छः शुनः शेपः शुनोलाङ्गूल इत्यमी। तेषामेकतमं देहि ददामि तु गवांशतम्।२०

अजीगर्तस्तु तच्छ्रुत्वा क्षुधया पीडितो भृशम्। पुत्रञ्च कतमं तेभ्यो विक्रेतुं वै मनो दधे।२१
कार्याधिकारिणं ज्येष्ठं मत्वा नाऽसावदादमुम्। कनिष्ठंनाऽप्यदान्माता ममैष इति वादिनी।२२
मध्यमञ्च शुनःशेपं ददौ गवां शतेन च। आनिनाय पशुञ्चक्रे नरमेधे नराधिपः।२३
रुदन्तं दुःखितं दीनं वेपमानम्भृशातुरम्। यूपबद्धं निरीक्ष्याऽमुं चुक्रुशुर्मुनयस्तदा।२४
शामित्राय पशुञ्चके नरमेधेनराधिपः। शमितानाऽऽददेशस्त्रं तमालम्भयितुंशिशुम्।२५
नाऽहंद्विजसुतंदीनंरुदन्तंकरुणं भृशम्। हनिष्यामिस्वलोभार्थमित्युवाचाप्यसौतदा।२६
इत्युक्त्वा विररामाऽसौ कर्मणो दुष्करादथ। राजा सभासदः प्राह किं कर्तव्यमिति द्विजाः!।२७
जातः किलकिलाशव्दो जनानां क्रोशतां यदा। क्रन्दमानेशुनःशेपेसभायांभृशमद्भुतम्।२८
अजीगर्तस्तदोत्थाय तमुवाचनृपोत्तमम्। राजन्कार्यं करिष्यामितवाऽहंसुस्थिरोभव।२९
वेतनं द्विगुणंदेहि हनिष्यामि पशुं किल। कर्तव्यं मखकार्यम्वै मया तेऽद्य धनार्थिना।३०
दुःखितस्य धनार्थस्य सदाऽसूया प्रसूयते।

व्यास उवाच

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य हरिश्चन्द्रो मुदाऽन्वितः।।३१।।
तमुवाच ददाम्यद्य गवां शतमनुत्तमम्। तदाकर्ण्य पिता तस्य पुत्रं हन्तुं समुद्यतः।३२
लोभेनाकुलचित्तोऽसौ शामित्रेकृतनिश्चयः। समुद्यतं च तं दृष्ट्वा जनाः सर्वेसभासदः।३३
चुक्रशुर्भृशदुःखार्ता हाहेति जगदुर्वचः। पिशाचोऽयं महापापी क्रूरकर्मा द्विजाकृतिः।३४
यत्स्वयं स्वसुतं हन्तुमुद्यतः कुलपांसनः। धिक्चाण्डाल किमेतत्ते पापकर्म चिकीर्षितम्।३५
हत्वा सुतं धनं प्राप्य किं सुखं ते भविष्यति। आत्मावैजायतेपुत्रअङ्गाद्वैवेदभाषितम्।३६
तत्कथं पापबुद्धे!त्वमात्मानं हन्तुमिच्छसि। एवं कोलाहलेतत्रजातेकौशिकनन्दनः।३७
समीपं नृपतेर्गत्वा तमुवाच दयापरः।

विश्वामित्र उवाच

राजन्नमुं शुनःशेपं रुदन्तं भृशदुःखितम्।।३८।।
क्रतुस्ते भविता पूर्णो रोगनाशश्च सर्वथा। दयासमं नास्ति पुण्यं पापंहिंसासमंनहि।३९
रोगिणां रोचनार्थाय नोदनेयं विचारय। आत्मदेहस्य रक्षार्थं परदेहनिकृन्तनम्।४०
न कर्तव्यं महाराज! सर्वतः शुभमिच्छता। दयया सर्वभूतेषु संतुष्टो येन केन च।४१
सर्वेन्द्रियोपशान्त्याचतुष्यत्याऽऽशु जगत्पतिः। आत्मवत्सर्वभूतेषु चिन्तनीयं नृपोत्तम!।४२
जीवितव्यं प्रियं नूनं सर्वेषां सर्वदाकिल। त्वंमिच्छसिसुखंकर्तुंदेहेहत्वात्वमुंद्विजम्।४३
कथं नेच्छेदसौ देहं रक्षितुंस्वसुखास्पदम्। पूर्वजन्मकृतं वैरंनाऽनेन सहते नृप!।४४
येनाऽमुं हन्तुकामस्त्वं द्विजपुत्रं निरागसम्। योऽयं हन्ति विना वैरं स्वकामः सततं पुनः।४५
हन्तारं हन्ति तं प्राप्य जननं जननान्तरे। जनकोऽस्य सुदुष्टात्मायेनाऽसौतेसमर्पितः।४६
स्वात्मजो धनलोभेन पापाचारः स दुर्मतिः। एष्टव्याबहवःपुत्रायद्येकोऽपिगयांव्रजेत्।४७
यजेत चाऽश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत्। देशमध्ये च यः कश्चित्पापकर्म समाचरेत्।४८
षष्ठांशस्तस्य पापस्य राजा भुङ्क्ते न संशयः। निषेधनीयोराज्ञाऽसौपापंकर्तुंसमुद्यतः।४९
न निषिद्धस्त्वया कस्मात्पुत्रं विक्रेतुमुद्यतः। सूर्यवंशे समुत्पन्नस्त्रिशङ्कुतनयः शुभः।५०
आर्यस्त्वनार्यवत्कर्मकर्तुमिच्छसि पार्थिव!। मोचनान्मुनिपुत्रस्यकरणाद्वचनस्य मे।५१
तव देहे सुखं राजन्भविष्यत्यविचारणात्। पिता ते शापयोगेनचाण्डालत्वमुपागतः।५२
मयाऽसौ तेन देहेन स्वर्लोकं प्रापितः किल। तेनैव प्रीतियोगेन कुरु मे वचनं नृप!।५३

मुञ्चैनं बालकं दीनं रुदन्तंभृशमातुरम्। याचितोऽसि मया नूनं यज्ञेऽस्मिन्राजसूयके।५४
प्रार्थनाभङ्गजं दोषं कथं त्वं नाऽवबुध्यसे। प्रार्थितं सर्वदादेयंमखेऽस्मिन्नृपसत्तम!।५५
अन्यथा पापमेव स्यात्तव राजन्न संशयः।

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा कौशिकस्य नृपोत्तमः ।।५६।।
प्रत्युवाच महाराजं कौशिकं मुनिसत्तमम्। जलोदरेण गाधेय दुःखितोऽहं भृशं मुने।५७
तस्मान्न मोचयाम्येनमन्यत्प्रार्थय कौशिक!। न त्वया विग्रहः कार्यः कार्येऽस्मिन्मम सर्वथा।५८
तच्छ्रुत्वा वचनंराज्ञो विश्वामित्रोऽतिकोपतः। बभूव दुःखसन्तप्तो वीक्ष्य दीनं द्विजात्मजम्।५६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धेयज्ञपशुभूतस्यब्राह्मणपुत्रस्यवधकरणायविश्वामित्र-निषेधवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ।।१६।।

* सप्तदशोऽध्यायः *

विश्वामित्रप्रदत्तमन्त्रेणशुनःशेपस्यवधान्मुक्तिवर्णनम्

व्यास उवाच

रुदन्तं बालकं वीक्ष्यविश्वामित्रोदयातुरः। शुनः शेपमुवाचेदंगत्वापार्श्वेऽतिदुःखितम्।१
मन्त्रं प्रचेतसः पुत्र! मयोक्तं मनसा स्मर। जपतस्तवकल्याणंभविष्यति ममाऽऽज्ञया।२
विश्वामित्रवचः श्रुत्वा शुनःशेपः शुचाकुलः। मन्त्रं जजाप मनसा कौशिकोक्तं स्फुटाक्षरम्।३
जपतस्तत्र तस्याऽऽशु प्रचेतास्तु कृपाकरः। प्रादुर्बभूव सहसा प्रसन्नो नृप! बालके।४
दृष्ट्वा तमागतं सर्वे विस्मयं परमं गताः। तुष्टुवुर्वरुणं देवं मुदिता दर्शनेन ते।५
राजाऽतिविस्मितः पादौ प्रणनामरुजातुरः। बद्धाञ्जलिपुटो देवं तुष्टावपुरतः स्थितम्।६

हरिश्चन्द्र उवाच

देवदेव! कृपासिन्धो! पापात्माऽहं सुमन्दधीः। कृतापराधः कृपणः पावितः परमेष्ठिना।७
मया ते पुत्रकामेन दुःखसंस्थेन हेलनम्। कृतं क्षमाप्यं प्रभुणा कोऽपराधः सुदुर्मते।८
अर्थी दोषं न जानाति तस्मात्पुत्रार्थिना मया। वञ्चितस्त्वं देवदेवभीतेननरकाद्विभो।६
अपुत्रस्य गतिर्नास्ति स्वर्गो नैव च नैव च। भीतोऽहंतेनवाक्येनतस्मात्तेहेलनंकृतम् ।१०
नाऽज्ञस्य दूषणं चिन्त्यं नूनं ज्ञानवता विभो!। दुःखितोऽहं रुजाऽऽक्रान्तो वञ्चितःस्वसुतेन ह।११
न जानेऽहं महाराज! पुत्रो मे क्व गतः प्रभो। वञ्चयित्वा वनेभीतोमरणान्मांकृपानिधे।१२
प्रययौद्रविणं दत्त्वा गृहीतो द्विजबालकः। यज्ञोऽयं क्रीतपुत्रेण प्रारब्धस्तव तुष्टये।१३
दर्शनं तव सम्प्राप्य गतं दुःखं ममाऽऽद्भुतम्। जलोदरकृतं सर्वं प्रसन्नेत्वयिसाम्प्रतम्।१४

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा राज्ञो रोगातुरस्य च। दयावान्देवदेवेशः प्रत्युवाचनृपोत्तमम्।१५

वरुण उवाच

मुञ्च राजञ्छुनःशेपं स्तुवन्तं मां भृशातुरम्। यज्ञोऽयं परिपूर्णस्ते रोगमुक्तोभवात्मना।१६
इत्युक्त्वा वरुणस्तूर्णं राजानं विरुजंतथा। चकारपश्यतांतत्रसदस्यानांसुसंस्थितम्।१७
विमुक्तोऽसौ द्विजः पाशाद्वरुणेन महात्मना। जयशब्दस्ततस्तत्र सञ्जातोमखमण्डपे।१८
राजा प्रमुदितः सद्योरोगान्मुक्तः सुदारुणात्। यूपान्मुक्तः शुनःशेपो बभूवाऽतीव संस्थितः।१६
राजा त्विमं मखं पूर्णंचकारविनयान्वितः। शुनः शेपस्तदासभ्यानित्युवाचकृताञ्जलिः।२०

भोभोः सभ्याः सुधर्मज्ञाः ब्रवन्तु धर्णनिर्णयम्। वेदशास्त्रानुसारेणयथार्थवादिनः किल।२१
पुत्रोऽहं कस्य सर्वज्ञाः पिता मे कोऽग्रतः परम्। भवतांवचनात्तस्यशरणंप्रव्रजाम्यहम्।२२
इत्युक्ते वचने तत्र सभ्याः प्रोचुः परस्परम्।

सभ्याऊचुः

अजीगर्तस्य पुत्रोऽयं कस्याऽन्यस्य भवेदसौ ।।२३।।
अङ्गादङ्गात्समुद्भूतः पालितस्तेनभक्तितः। अन्यस्यकस्यपुत्रोऽसौप्रभवेदितिनिश्चयः।२४
तच्छ्रुत्वा वामदेवस्तुतानुवाचसभासदः। विक्रीतस्तेनतातेनद्रव्यलोभात्सुतः किल।२५
पुत्रोऽयं धनदातुश्च राज्ञस्तत्र न संशयः। अथवा वरुणस्यैव पाशान्मुक्तोऽस्त्यनेन वै।२६
अन्नदाता भयत्राता तथा विद्याप्रदश्च यः। तथा वित्तप्रदश्चैव पञ्चैते पितरः स्मृताः।२७
तदा केचित्पितुः प्राहुः केचिद्राज्ञस्तथापरे। वरुणस्येति सम्वादे निर्णयं न ययुश्च ते।२८
इत्थं सन्देहमापन्ने वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत्। सभ्यान्विवदतस्तत्र सर्वज्ञः सर्वपूजितः।२९
शृणुध्वं भो महाभागा निर्णयं श्रुतिसम्मतम्। निःस्नेहेन यदा पित्रा विक्रीतोऽयं सुतः शिशुः।३०
सम्बन्धस्तु गतस्तस्य तदैव धनसङ्ग्रहात्। हरिश्चन्द्रस्यसञ्जातःपुत्रोऽसौक्रीतएवच।३१
यूपे बद्धो यदा राज्ञा तदा तस्य न वै सुतः। वरुणस्तु स्तुतोऽनेन तेनतुष्टेनमोचितः।३२
तस्मान्नाऽयं महाभागा ह्यसौ पुत्रः प्रचेतसः। योऽयं स्तौति महामन्त्रैः सोऽपि तुष्टो ददाति च।३३
धनं प्राणान्पशून्राज्यं तथामोक्षंकिलेप्सितम्। कौशिकस्यसुतश्चायमरिष्टेयेनरक्षितः ।३४
मन्त्रं दत्त्वा महावीर्यं वरुणस्याऽतिसङ्कटे।

व्यास उवाच

श्रुत्वा वाक्यं वसिष्ठस्य बाढमूचुः सभासदः ।।३५।।
विश्वामित्रस्तु जग्राह तं करे दक्षिणे तदा। एहि पुत्र! गृहं मेत्वमित्युक्त्वा प्रेमपूरितः।३६
शुनः शेपो जगामाऽऽशु तेनैव सह सत्वरः। वरुणस्तुप्रसन्नात्माजगामचस्वमालयम्।३७
ऋत्विजश्च तथा सभ्याः स्वगृहान्निर्ययुस्तदा। राजाऽपि रोगनिर्मुक्तो बभूवाऽतिमुदान्वितः।३८
प्रजास्तु पालयामास सुप्रसन्नेन चेतसा। रोहिताख्यस्तु तच्छ्रुत्वावृत्तान्तंवरुणस्यह।३९
आजगाम गृहं प्रीतो दुर्गमाद्वनपर्वतात्। दूता राजानमभ्येत्यप्रोचुः पुत्रं समागतम्।४०
मुदितोऽसौ जगामाऽऽशु सम्मुखः कोसलाधिपः। दृष्ट्वा पितरमायान्तं प्रेमोद्रिक्तः सुसम्भ्रमः।४१
दण्डवत्पतितो भूमावश्रुपूर्णमुखः शुचा। राजाऽपि तं समुत्थाप्य परिरभ्यमुदान्वितः।४२
तमाघ्राय सुतं मूर्ध्नि पप्रच्छ कुशलं पुनः। उत्सङ्गे तं समारोप्यमुदितोमेदिनीपतिः।४३
उष्णैर्नेत्रजलैः शीर्षण्यभिषेकमथाऽकरोत्। राज्यं शशासतेनाऽसौ पुत्रेणाऽति प्रियेण च।४४
वृत्तान्तं नरमेधस्य कथयामास विस्तरात्। राजसूयं क्रतुवरं चकार नृपसत्तमः।४५
वसिष्ठं पूजयित्वाऽथ होतारमकरोद्विभुः। समाप्ते त्वथयज्ञेशेवसिष्ठोऽतीवपूजितः।४६
शक्रस्य सदनं रम्यं जगाम मुनिरादरात्। विश्वामित्रोऽपि तत्रैव वसिष्ठेन चसङ्गतः।४७
मिलित्वा तौ स्थितौ देवसदने मुनिसत्तम!। विश्वामित्रोऽपि पप्रच्छ वसिष्ठं प्रतिपूजितम्।४८
वीक्ष्य विस्मयचित्तस्तं सभायां तु शचीपतेः।

विश्वामित्रउवाच

क्वेयं पूजा त्वया प्राप्ता महती मुनिसत्तम! ।।४९।।
कृता केन महाभाग! सत्यं ब्रूहि ममाऽन्तिके।

वसिष्ठ उवाच

यजमानोऽस्ति मे राजा हरिश्चन्द्रः प्रतापवान् ।।५०।।

राजसूयः कृतस्तेन राज्ञा प्रवरदक्षिणः। नेदृशोऽस्ति नृपश्चान्यः सत्यवादीधृतव्रतः।५१
दाता च धर्मशीलश्च प्रजारञ्जनतत्परः। तस्य यज्ञे मयापूजा प्राप्ता कौशिकनन्दन!।
"किं पृच्छसि पुनः सत्यं ब्रवीम्यकृत्रिमं द्विज!"।।५२।।
हरिश्चन्द्रसमो राजा न भूतो न भविष्यति। सत्यवादी तथा दाताशूरः परमधार्मिकः।५३

व्यास उवाच

इतितस्यवचः श्रुत्वाविश्वामित्रोऽतिकोपनः। बभूवक्रोधसंरक्तलोचनोऽप्यब्रवीच्चतम्।५४

विश्वामित्र उवाच

एवं स्तौषि नृपंमिथ्यावादिनं कपटप्रियम्। वञ्चितो वरुणो येनप्रतिश्रुत्यवरं पुनः।५५
मम जन्मर्जितं पुण्यं तपसः पठितस्य च। त्वदीयं वाऽतितपसो ग्लहं कुरु महामते।५६
अहं चेत्तं नृपं सद्यो न करोम्यतिसंस्तुतम्। असत्यवादिनं काममदातारंमहाखलम्।५७
आजन्मसञ्चितं सर्वं पुण्यं मम विनश्यतु। अन्यथा त्वत्कृतं सर्वंपुण्यंत्वितिपणावहे।५८
ग्लहं कृत्वा ततस्तौ तु विवदन्तौ मुनी तदा। स्वाश्रमं स्वर्गलोकाच्च गतौ परमकोपनौ।५९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे वशिष्ठविश्वामित्रपणवर्णनंनामसप्तदशोऽध्यायः ।।१७।।

* अष्टादशोऽध्यायः *

सूकररूपविश्वामित्रेणहरिश्चन्द्रस्योपवनविध्वंसकरणम्

व्यास उवाच

कदाचित्तु हरिश्चन्द्रो मृगयार्थं वनं ययौ। अपश्यद्रुदतीं बालां सुन्दरींचारुलोचनाम्।१
तामपृच्छन्महाराजः कामिनीं करुणापरः। पद्मपत्रविशालाक्षि! किं रोदिषि वरानने!।२
केनाऽसिपीडिताऽत्यर्थंकिन्तेदुःखंवदाशुमे। काचत्वंविजनेघोरेकस्तेभर्तापिताऽथवा।३
नबाधतेचराज्येमेराक्षसोऽपिपराङ्गनाम्। तं हन्मितरसाकान्तेयस्त्वांसुन्दरि! बाधते।४
ब्रूहि दुःखं वरारोहे स्वस्था भव कृशोदरि। विषये ममपापात्मानतिष्ठति सुमध्यमे।५
इति तस्य वचः श्रुत्वा नारीतमब्रवीन्नृपम्। प्रमृज्याऽश्रूणिवदनाद्धरिश्चन्द्रंनृपोत्तमम्।६

नार्युवाच

राजन्मां बाधतेऽत्यर्थंविश्वामित्रोमहामुनिः। तपः करोति यद्धोरंमदर्थं कौशिकोवने।७
तेनाऽहंदुःखिताराजन्विषयेतवसुव्रत! । विद्धिमांकमनांकान्तांपीडितांमुनिना भृशम्।८

राजोवाच

स्वस्थाभवविशालाक्षि!न ते दुःखंभविष्यति। तमहंवारयिष्यामिमुनिंतापपरायणम्।९
इत्याश्वास्य स्त्रियं राजा तरसामुनिसन्निधौ। नत्वाप्रणम्यशिरसातमुवाचमहीपतिः।१०
स्वामिन्किं क्रियतेऽत्यर्थं तपसादेहपीडनम्। किमर्थं तेसमारम्भोब्रूहिसत्यं महामते।११
वाञ्छितं तव गाधेय! करोमि सफलं किल। उत्तिष्ठोत्तिष्ठतरसातपसाऽलमतः परम्।१२
विषयेममसर्वज्ञ न कर्तव्यं सुदारुणम्। लोकपीडाकरं घोरं तपः केनापि कर्हिचित्।१३
इत्थंनिषिध्यतंराजाविश्वामित्रंगृहंययौ । मनसाक्रोधमाधायागतोऽसौकौशिकोमुनिः।१४
स गत्वा चिन्तयामास नृपकृत्यमसाम्प्रतम्। वसिष्ठस्य च सम्वादंतपसःप्रतिषेधनम्।१५
कोपाविष्टेन मनसा प्रतीकारमथाऽकरोत्। विचिन्त्य बहुधाचित्तेदानवं घोरविग्रहम्।१६
प्रेषयामास तद्देशं विधाय सूकराकृतिम्। सोऽतिकायोमहाकालःकुर्वन्नादं सुदारुणम्।१७
राज्ञश्चोपवने प्राप्तस्त्रासयन्रक्षकांस्तदा। मालतीनां च खण्डानि कदम्बानांतथैव च।१८

यूथिकानां च वृन्दानि कम्पयंश्च मुहुर्मुहुः। दन्तेन विलिखन्भूमिं समुन्मूलयतेद्रुमान् ।१९
चम्पकान्केतकीखण्डान्मल्लिकानांचपादपान्। करवीरानुशीरांश्चनिचखानशुभान्मृदून् ।२०
मुचुकन्दानशोकांश्च बकुलांस्तिलकांस्तथा। उन्मूल्य कदनं तत्र चकार सूकरोवने ।२१
वाटिकारक्षकाः सर्वे दुद्रुवुः शस्त्रपाणयः। हाहेति चुक्रुशुस्तत्र मालाकारा भृशातुराः ।२२
बाणैः सन्ताड्यमानोऽपि यदा त्रस्तो न वै मृगः। रक्षकान्पीडयामास कोलः कालसमद्युतिः ।२३
ते तदाऽतिभयाक्रान्ता राजानं शरणं ययुः। तमूचुस्त्राहि त्राहीतिवेपमानाभयाकुलाः ।२४
तानागतान्समालोक्यभयार्थान्भूपतिस्तदा। पप्रच्छकिंभयंकस्मान्मांब्रुवन्तुसमागताः ।२५
नाहं बिभेमि देवेभ्यो राक्षसेभ्यश्च रक्षकाः। कस्माद्भयं समुत्पन्नं तद्ब्रुवन्तुममाग्रतः ।२६
हन्मि चैकेन बाणेन तं शत्रुंदुर्भगं किल। यो मेऽरातिःसमुत्पन्नोलोके पापमतिः खलः ।२७
देवोवादानवोवाऽपितन्निहन्मिशरैः शितैः। क्व तिष्ठतिकियद्रूपः कियद्बलसमन्वितः ।२८

मालाकारा ऊचुः

नदेवोनचदैत्योऽस्तिनयक्षोनचकिन्नरः । कश्चित्कोलोमहाकायोराजंस्तिष्ठति कानने ।२९
पुष्पवृक्षानतिमृदून्दन्तेनोन्मूलयत्यसौ । विदीर्णं तद्वनं सर्वं सूकरेणाऽतिरंहसा ।३०
विशिखैस्ताडितोऽस्माभिर्दृषद्भिर्लकुटैस्तथा। नबिभेतिमहाराजहन्तुमस्मानुपाद्रवत् ।३१

व्यास उवाच

इत्याकर्ण्य वचस्तेषां राजा कोपसमाकुलः। अश्वमारुह्य तरसा जगामोपवनम्प्रति ।३२
सैन्येन महता युक्तो गजाश्वरथसंयुतः। पदातिवृन्दसहितः प्रययौ वनमुत्तमम् ।३३
तत्राऽपश्यन्महाकोलंघुर्घुरन्तंभयानकम् । वनंभग्नंचसम्वीक्ष्यराजाक्रोधयुतोऽभवत् ।३४
चापेबाणं समारोप्य विकृष्य च शरासनम्। तं हन्तुं सूकरं पापं तरसा समुपाक्रमत् ।३५
समालोक्य च राजानं चापहस्तं रुषाऽऽकुलम्। सम्मुखोऽभ्यद्रवत्तूर्णं कुर्वञ्छब्दं सुदारुणम् ।३६
तमायान्तंसमालोक्यवराहंविकृताननम् । मुमोचविशिखंतस्मिन्हन्तुकामोमहीपतिः ।३७
वञ्चयित्वाऽथ तद्बाणं सूकरस्तरसा बलात्। निर्जगाममहावेगात्तमुल्लङ्घ्यनृपंतदा ।३८
गच्छन्तं तं समालोक्य राजा कोपसमन्वितः। मुमोच विशिखांस्तीक्ष्णांश्चापमाकृष्य यत्नतः ।३९
क्षणं दृष्टिपथं राज्ञः क्षणं चादर्शनं गतः। कुर्वन्बहुविधारावं सूकरः समुपाद्रवत् ।४०
हरिश्चन्द्रोऽतिकुपितो मृगस्याऽनुजगाम ह। अश्वेनवायुवेगेन विकृष्य च शरासनम् ।४१
इतस्तत स्ततः सैन्यमगमच्चवनान्तरम्। एकाकी नृपतिः कोलं व्रजन्तं समुपाद्रवत् ।४२
मध्याह्नसमये राजा सम्प्राप्तो विजने वने। तृषितः क्षुधितोऽत्यर्थं बभूव श्रान्तवाहनः ।४३
सूकरोऽदर्शनंप्राप्तोराजाचिन्तातुरोऽभवत् । मार्गभ्रष्टोऽतिविपिनेदारुणेदीनवत्स्थितः ।४४

किं करोमि क्व गच्छामि न सहायोऽस्ति मे वने ।
अज्ञातस्वपथः कुत्र व्रजामीति व्यचिन्तयत् ॥४५॥

एवं चिन्तयतस्तत्र विपिनेजनवर्जिते। राजाचिन्तातुरोऽपश्यन्नदींसुविमलोदकाम् ।४६
वीक्ष्य तां मुदितोराजापाययित्वा तुरङ्गमम्। अश्वादुत्तीर्य विमलंपपौपानीयमुत्तमम् ।४७
जलं पीत्वा नृपस्तत्रसुखमाप महीपतिः। इयेष नगरं गन्तुं दिग्भ्रमेणाऽतिमोहितः ।४८
विश्वामित्रस्तु सम्प्राप्तोवृद्धब्राह्मणरूपधृक्। ननामवीक्ष्यराजातंप्रीतिपूर्वं द्विजोत्तमम् ।४९
तमुवाच गाधिराजः प्रणमन्तंनृपोत्तमम्। स्वस्ति तेऽस्तुमहाराज किमर्थमिहचागतः ।५०
एकाकी विजनेराजन्किंचिकीर्षितमत्र ते। ब्रूहि सर्वंस्थिरो भूत्वा कारणं नृपसत्तम! ।५१

राजोवाच

सूकरोऽतिमहाकायो बलवान्पुष्पकाननम्। समुपेत्यममर्दाऽऽशुकोमलान्पुष्पपादपान्।५२
तं निवारयितुं दुष्टं करे कृत्वा च कार्मुकम्। ससैन्योऽहंस्वनगरान्निर्गतो मुनिसत्तम।५३
गतोऽसौ दृक्पथात्पापो मायावी क्वाऽपिवेगवान्।
पृष्ठतोऽहमपि प्राप्तः सैन्यं क्वाऽपि गतं मम ॥५४॥
क्षुधितस्तृषितश्चाऽहं सैन्यभ्रष्टस्त्विहाऽऽगतः। न जाने पुरमार्गंचतथासैन्यगतिंमुने।५५
पन्थानं दर्शय विभो! व्रजामिनगरम्प्रति। ममाऽत्रभाग्ययोगेन प्राप्तस्त्वंविजने वने।५६
अयोध्याधिपतिश्चाहंहरिश्चन्द्रोऽतिविश्रुतः। राजसूयस्यकर्ताचवाञ्छितार्थप्रदःसदा।५७
धनेच्छा यदितेब्रह्मन्यज्ञार्थंद्विजसत्तम। आगन्तव्यमयोध्यायांदास्यामिविपुलं धनम्।५८

इतिश्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे हरिश्चन्द्रद्वारावृद्धब्राह्मणायधनदानप्रतिज्ञावर्णनंनामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

* एकोनविंशोऽध्यायः *

कृतप्रतिज्ञस्यहरिश्चन्द्रस्यसकाशाद्विश्वामित्रेणकुमारकुमार्योर्विवाहमिषेण सर्वस्वग्रहणवर्णनम्

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वा भूपतेःकौशिकोमुनिः। प्रहस्य प्रत्युवाचेदंहरिश्चन्द्रं तदानृपः।१
राजंस्तीर्थमिदं पुण्यं पावनं पापनाशनम्। स्नानं कुरु महाभाग पितॄणां तर्पणं तथा।२
कालःशुभतमोऽस्तीह तीर्थे स्नात्वा विशाम्पते!। दानं ददस्व शक्त्याऽत्र पुण्यतीर्थेऽतिपावने।३
प्राप्यतीर्थंमहापुण्यमस्नात्वायस्तुगच्छति। सभवेदात्महाभूयइतिस्वायम्भुवोऽब्रवीत्।४
तस्मात्तीर्थवरेराजन्कुरुपुण्यंस्वशक्तितः। दर्शयिष्यामिमार्गं ते गन्ताऽसि नगरंततः।५
आगमिष्याम्यहं मार्गदर्शनार्थं तवाऽनघ। त्वया सहाऽद्यकाकुत्स्थ! तवदानेनतोषितः।६
तच्छ्रुत्वा वचनं राज्ञः मुनेः कपटमण्डितम्। वासांस्युत्तार्य विधिवत्स्नातुमभ्या ययौनदीम्।७
बन्धयित्वा हयं वृक्षे मुनिवाक्येनमोहितः। अवश्यम्भावियोगेनतद्वशस्तुतदाऽभवत्।८
राजा स्नानविधिंकृत्वासन्तर्प्यपितृदेवताः। विश्वामित्रमुवाचेदंस्वामिन्दानंददामि ते।९
यदिच्छसि महाभागतत्तेदास्यामिसाम्प्रतम्। गावो भूमिंहिरण्यंचगजाश्वरथवाहनम्।१०
नाऽदेयं मे किमप्यस्ति कृतमेतद्व्रतं पुरा। राजसूये मखश्रेष्ठे मुनीनां सन्निधावपि।११
तस्मात्त्वमिह सम्प्राप्तस्तीर्थेऽस्मिन्प्रवरे मुने!। यत्तेऽस्ति वाञ्छितं ब्रूहिददामितव वाञ्छितम्।१२

विश्वामित्र उवाच

मयापूर्वंस्मृताराजन्कीर्तिस्तेविपुलाभुवि। वसिष्ठेनचसम्प्रोक्तादातानास्तिमहीतले।१३
हरिश्चन्द्रो नृपश्रेष्ठः सूर्यवंशे महीपतिः। तादृशो नृपतिर्दाता न भूतो न भविष्यति।१४
पृथिव्यांपरमोदारस्त्रिशङ्कुतनयोयथा। अतस्त्वांप्रार्थयाम्यद्यविवाहोमेऽस्तिपार्थिव।१५
पुत्रस्य च महाभाग तदर्थं देहि मे धनम्।

राजोवाच

विवाहं कुरु विप्रेन्द्र! ददामि पार्थितं तव ॥१६॥
यदिच्छसि धनं कामं दाता तस्याऽस्मि निश्चितम्।

व्यासउवाच

इत्युक्तः कौशिकस्तेन वञ्चनातत्परो मुनिः ॥१७॥

उद्भाव्य मायांगान्धर्वीं पार्थिवायाऽप्यदर्शयत्।कुमारः सुकुमारश्चकन्याचदशवार्षिकी।१८
एतयोः कार्यमप्यद्य कर्तव्यं नृपसत्तम!।राजसूयाधिकं पुण्यं गृहस्थस्य विवाहितः।१९
भविष्यतितवाऽद्यैव विप्रपुत्रविवाहतः।तच्छ्रुत्वा वचनंराजा मायया तस्यमोहितः।२०
तथेति च प्रतिज्ञायनोवाचाऽल्पं वचस्तथा।तेन दर्शितमार्गोऽसौ नगरं प्रतिजग्मिवान्।२१
विश्वामित्रोऽपि राजानं वञ्चयित्वाऽश्रमंययौ।कृतोद्वाहविधिस्तावद्विश्वामित्रोऽब्रवीन्नृपम्।२२
वेदीमध्ये नृपाऽद्य त्वं देहि दानं यथेप्सितम्।

राजोवाच

किं तेऽभीष्टं द्विज! ब्रूहि ददामि वाञ्छितं किल ।।२३।।
अदेयमपिसंसारेयशःकामोऽस्मिसाम्प्रतम् ।व्यर्थंहिजीवितंतस्यविभवंप्राप्य येन वै।२४
नोपार्जितं यशः शुद्धं परलोकसुखप्रदम्।

विश्वामित्र उवाच

राज्यं देहि महाराज वराय सपरिच्छदम् ।।२५।।
गजाश्वरथरत्नाढ्यं वेदीमध्येऽतिपावने।

व्यास उवाच

मोहितो मायया तस्य श्रुत्वा वाक्यं मुनेर्नृपः ।।२६।।
दत्तमित्युक्तवान्राज्यमविचार्य यदृच्छया।गृहीतमितितंप्राहविश्वामित्रोऽतिनिष्ठुरः।२७
दक्षिणां देहि राजेन्द्र! दानयोग्यां महामते।दक्षिणारहितं दानं निष्फलं मनुरब्रवीत्।२८
तस्मातद्दानफलाय त्वं यथोक्तांदेहि दक्षिणाम्।इत्युक्तस्तु तदा राजा तमुवाचाऽतिविस्मितः।२९
ब्रूहि किंयद्धनंतुभ्यंदेयंस्वामिन्मयाऽधुना।दक्षिणानिष्क्रयंसाधोवदतावत्प्रमाणकम्।३०
दानपूर्त्यैप्रदास्यामिस्वस्थोभवतपोधन ।विश्वामित्रस्तु तच्छ्रुत्वातमाहमेदिनीपतिम्।३१
हेमभारद्वयंसार्धंदक्षिणांदेहिसाम्प्रतम् ।दास्यामीतिप्रतिश्रुत्यतस्मैराजाऽतिविस्मितः।३२
तदैवसैनिकास्तस्यवीक्षमाणाः समागताः।दृष्ट्वामहीपतिंव्यग्रंतुष्टुवुस्तेमुदाऽन्विताः।३३

व्यास उवाच

श्रुत्वा तेषां वचो राजा नोक्त्वा किञ्चिच्छुभाशुभम्।
चिन्तयन्स्वकृतं कर्म ययावन्तःपुरे ततः ।।३४।।
किं मया स्वीकृतं दानं सर्वस्वं यत्समर्पितम्।वञ्चितोऽहं द्विजेनात्रवनेपाटच्चरैरिव।३५
राज्यंसोपस्करं तस्मै मया सर्वं प्रतिश्रुतम्।भारद्वयं सुवर्णस्यसार्धंचदक्षिणापुनः।३६
किं करोमिमतिर्भ्रष्टा न ज्ञातं कपटं मुनेः।प्रतारितोऽहं सहसा ब्राह्मणेन तपस्विना।३७
न जानेदैवकार्यं वै हा दैव! किंभविष्यति।इतिचिन्तापरोराजागृहंप्राप्तोऽतिविह्वलः।३८
पतिंचिन्तापरंदृष्ट्वाराज्ञीपप्रच्छकारणम् ।किम्प्रभोविमनाभासिकाचिन्ताब्रूहिसाम्प्रतम्।३९
वनात्पुत्रः समायातो राजसूयः कृतः पुरा।कस्माच्छोचसिराजेन्द्रशोकस्यकारणं वद।४०
नाऽरातिर्विद्यतेक्वापिबलवान्दुर्बलोऽपिवा।वरुणोऽपिसुसन्तुष्टः कृतकृत्योऽसिभूतले।४१
चिन्तयाक्षीयतेदेहोनास्तिचिन्तासमामृतिः।त्यज्यतांनृपशार्दूलस्वस्थोभवविचक्षण।४२
तन्निशम्यप्रियावाक्यंप्रीतिपूर्वंनराधिपः ।प्रोवाचकिञ्चिच्चिन्तायाःकारणंचशुभाशुभम्।४३
भोजनंनचकाराऽसौचिन्ताविष्टस्तथानृपः।सुप्त्वाऽपिशयनेशुभ्रेलेभेनिद्रांनभूमिपः।४४
प्रातरुत्थाय चिन्तार्तो यावत्सन्ध्याधिकाः क्रियाः।
करोति नृपतिस्तावद्विश्वामित्रः समागतः ।।४५।।
क्षत्त्रा निवेदितो राज्ञे मुनिः सर्वस्वहारकः।आगत्योवाच राजानं प्रणमन्तंपुनः पुनः।४६

विश्वामित्र उवाच

राजंस्त्यजस्व राज्यं मे देहि वाचा प्रतिश्रुतम्। सुवर्णं स्पृश्य राजेन्द्र! सत्यवाग्भव साम्प्रतम्।४७

हरिश्चन्द्र उवाच

स्वामिन्राज्यं तवेदं मे मया दत्तं किलाऽधुना। त्यक्त्वाऽन्यत्रगमिष्यामिमाचिन्तां कुरु कौशिक!।४८
सर्वस्वं मम ते ब्रह्मन्गृहीतं विधिवद्विभो। सुवर्णदक्षिणां दातुमशक्तो ह्यधुना द्विज।४९
दानंददामितेतावद्यावन्मेस्याद्धनागमः। पुनश्चेत्कालयोगेनतदादास्यामिदक्षिणाम्।५०
इत्युक्त्वा नृपतिः प्राह पुत्रं भार्याञ्च माधवीम्।
राज्यमस्मै प्रदत्तं वै मया वेद्यां सुविस्तरे।।५१।।
हस्त्यश्वरथसंयुक्तं रत्नहेमसमन्वितम्। त्यक्त्वा त्रीणि शरीराणि सर्वं चाऽस्मै समर्पितम्।५२
त्यक्त्वाऽयोध्यां गमिष्यामि कुत्रचिद्वनगह्वरे। गृह्णात्विदं मुनिः सम्यग्राज्यं सर्वसमृद्धिमत्।५३
इत्याभाष्य सुतं भार्यां हरिश्चन्द्रःस्वमन्दिरात्। विनिर्गतः सुधर्मात्मा मानयंस्तं द्विजोत्तमम्।५४
व्रजन्तं भूपतिं वीक्ष्यभार्यापुत्रावुभावपि। चिन्तातुरौसुदीनास्यौजग्मतुः पृष्ठतस्तद।५५
हाहाकारो महानासीन्नगरे वीक्ष्य तांस्तथा। चुक्रुशुः प्राणिनः सर्वे साकेतपुरवासिनः।५६
हा राजन्किं कृतं कर्म सुतः क्लेशः समागतः। वञ्चितोऽसि महाराज! विधिनाऽपण्डितेन ह।५७
सर्वेवर्णास्तदादुःखमाप्नुयुस्तंमहीपतिम्। विलोक्य भार्यया सार्धंपुत्रेणचमहात्मना।५८
निनिन्दुर्ब्राह्मणं तं तु दुराचारं पुरौकसः। धूर्तोऽयमितिभाषन्तोदुःखार्ताब्राह्मणादयः।५९
निर्गत्यनगरात्तस्माद्विश्वामित्रःक्षितीश्वरम्। गच्छन्तं तमुवाचेदं समेत्य निष्ठुरंवचः।६०
दक्षिणायाःसुवर्णंमेदत्त्वागच्छनराधिप। नाऽहंदास्यामिवा ब्रूहि मयात्यक्तंसुवर्णकम्।६१
राज्यं गृहाण वा सर्वं लोभश्चेद्धृदि वर्तते। दत्तञ्चेन्मन्यसे राजन्देहियत्तत्प्रतिश्रुतम्।६२
एवं ब्रुवन्तं गाधेयं हरिश्चन्द्रो महीपतिः। प्रणिपत्यसुदानात्माकृताञ्जलिपुटोऽब्रवीत्।६३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहीस्त्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे कौशिकायसर्वस्वसमर्पणंतदक्षिणादानवर्णनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ।।१९।।

* विंशोऽध्यायः *

विश्वामित्रायदक्षिणादानार्थंहरिश्चन्द्रस्यपत्नीपुत्रसहितस्य

वाराणस्यांगमनम्

हरिश्चन्द्र उवाच

अदत्त्वातेहिरण्यंवै न करिष्यामिभोजनम्। प्रतिज्ञा मे मुनिश्रेष्ठ! विषादं त्यजसुव्रत।१
सूर्यवंशसमुद्भूतः क्षत्रियोऽहं महीपतिः। राजसूयस्य यज्ञस्य कर्तावाञ्छितदो नृषु।२
कथंकरोमि नाकारं स्वामिन्दत्त्वायदृच्छया। अवश्यमेव दातव्यमृणं ते द्विजसत्तम!।३
स्वस्थो भव प्रदास्यामि सुवर्णं मनसेप्सितम्। कञ्चित्कालं प्रतीक्षस्व यावत्प्राप्स्याम्यहं धनम्।४

विश्वामित्र उवाच

कुतस्ते भविता राजन्धनप्राप्तिरतः परम्। गतं राज्यन्तथाकोशो बलञ्चैवार्थसाधनम्।५
वृथाऽऽशातेमहीपाल धनार्थे किं करोम्यहम्। निर्धनं त्वाञ्च लोभेनपीडयामिकथंनृप।६
तस्मात्कथयभूपाल! नदास्यामीति साम्प्रतम्। त्यक्त्वाऽऽशांमहतीं कामं गच्छाम्यहमतः परम्।७
यथेष्टं व्रज राजेन्द्र! भार्यापुत्रसमन्वितः। सुवर्णं नास्ति किंतुभ्यंददामीतिवदाऽधुना।८

व्यास उवाच

गच्छन्वाक्यमिदंश्रुत्वा ब्राह्मणस्यचभूपतिः। प्रत्युवाच मुनिंब्रह्मन्धैर्यंकुरुददाम्यहम्।९

मम देहोऽस्ति भार्यायाः पुत्रस्य च ह्यनामयः। क्रीत्वा देहन्तु तं नूनमृणं दास्यामि ते द्विज!।१०
ग्राहकं पश्य! विप्रेन्द्रवाराणस्यां पुरि प्रभो। दासभावंगमिष्यामिसदारोऽहंसपुत्रकः ।११
गृहाण काञ्चनम्पूर्णं सार्धभारद्वयं मुने। मौल्येन दत्त्वा सर्वान्नः सन्तुष्टो भव भूधर।१२
इति ब्रुवञ्जगामाऽथ सह पत्न्या सुतान्वितः। उमया कान्तया सार्धं यत्राऽऽस्ते शङ्करः स्वयम्।१३
तांदृष्ट्वाचपुरींरम्यांमनसोह्लादकारिणीम्। उवाचसकृतार्थोऽस्मि पुरीं पश्यन्सुवर्चसम्।१४
ततोभागीरथीम्प्राप्यस्नात्वादेवादितर्पणम्। देवार्चनञ्चनिर्वर्त्यकृतवान्दिग्विलोकनम्।१५
प्रविश्य वसुधापालो दिव्यांवाराणसीपुरीम्। नैषामनुष्यभुक्तेतिशूलपाणेः परिग्रहः।१६
जगामपद्भ्यांदुःखार्तः सहपत्न्यासमाकुलः। पुरींप्रविश्यस नृपो विश्वासमकरोत्तदा।१७
ददृशेऽथ मुनिश्रेष्ठंब्राह्मणं दक्षिणार्थिनम्। तं दृष्ट्वा समनुप्राप्तं विनयावनतोऽभवत्।१८
प्राह चैवाञ्जलिंकृत्वा हरिश्चन्द्रोमहामुनिम्। इमे प्राणाःसुतश्चायंप्रियापत्नी मुने! मम।१६
येनते कृत्यमस्त्याशु गृहाणाऽद्य द्विजोत्तम!। यच्चाऽन्यत्कार्यमस्माभिस्तन्ममाऽऽख्यातुमर्हसि।२०

विश्वामित्र उवाच

पूर्णः समासोभद्रंतेदीयतांममदक्षिणा। पूर्वं तस्य निमित्तं हि स्मर्यते स्ववचो यदि।२१

राजोवाच

व्रह्मन्नाद्याऽपि सम्पूर्णोवासोज्ञानतपोबल!। तिष्ठत्येकदिनार्धंयत्तत्प्रतीक्षस्वनाऽपरम्।२२

विश्वामित्र उवाच

एवमस्तु महाराज आगमिष्याम्यहम्पुनः। शापं तव प्रदास्यामि न चेदद्य प्रयच्छसि।२३
इत्युक्त्वाऽथ ययौ विप्रो राजा चाऽचिन्तयत्तदा।
कथमस्मै प्रयच्छामि दक्षिणा या प्रतिश्रुता।।२४।।
कुतः पुष्टानि मित्राणिकुत्रार्थःसाम्प्रतं मम। प्रतिग्रहःप्रदुष्टो मे तत्रयाच्ञाकथम्भवेत्।२५
राज्ञां वृत्तित्रयम्प्रोक्तं धर्मशास्त्रेषु निश्चितम्। यदि प्राणान्विमुञ्चामि ह्यप्रदाय च दक्षिणाम्।२६
व्रह्मस्वाहा कृमिः पापोभविष्याम्यधमाधमः। अथवा प्रेततांयास्ये वरएवात्मविक्रयः।२७

सूत उवाच

राजानं व्याकुलं दीनं चिन्तयानमधोमुखम्। प्रत्युवाचतदा पत्नी बाष्पगद्गदया गिरा।२८
त्यज चिन्तां महाराज स्वधर्ममनुपालय। प्रेतवद्वर्जनीयो हि नरः सत्यवहिष्कृतः।२६
नाऽतः परतरं धर्मं वदन्ति पुरुषस्य च। यादृशंपुरुषव्याघ्र! स्वसत्यस्याऽनुपालनम्।३०
अग्निहोत्रमधीतंचदानाद्याः सकलाः क्रियाः। भवन्तितस्यवैफल्यंवाक्यंयस्याऽनृतंभवेत्।३१
सत्यमत्यन्तमुदितं धर्मशास्त्रेषुधीमताम्। तारणायाऽनृतं तद्वत्पातनायाऽकृतात्मनाम्।३२
शताश्वमेधानाहृत्य राजसूयं च पार्थिवः। कृत्वाराजासकृत्स्वर्गादसत्यवचनाच्च्युतः।३३

राजोवाच

वंशवृद्धिकरश्चाऽयं पुत्रस्तिष्ठतिबालकः। उच्यतांवक्तुकामाऽसियद्वाक्यंगजगामिनि।३४

पत्न्युवाच

राजन्माभूदसत्यं ते पुंसां पुत्रफलाः स्त्रियः। तन्मांप्रदायवित्तेनदेहिविप्रायदक्षिणाम्।३५

व्यास उवाच

एतद्वाक्यमुपश्रुत्य ययौ मोहम्महीपतिः। प्रतिलभ्य चसञ्ज्ञांवैविललापातिदुःखितः।३६
महद्दुःखमिदं भद्रे यत्त्वमेवं ब्रवीषि मे। किं तवस्मितसँल्लापाममपापस्य विस्मृताः।३७
हा हा त्वया कथं योग्यंवक्तुमेतच्छुचिस्मिते। दुर्वाच्यमेतद्वचनंकथंवदसिभामिनि ।३८

इत्युक्त्वा नृपतिः श्रेष्ठोन धीरो दारविक्रये। निपपातमहीपृष्ठेमूर्च्छयाऽतिपरिप्लुतः।३९
शयाननं भुवितं दृष्ट्वा मूर्च्छयाऽपि महीपतिम्। उवाचेदंसुकरुणं राजपुत्रीसुदुःखिता ।४०
हा महाराज! कस्येदमपध्यानादुपागतम्। यस्त्वं निपतितोभूमौरङ्कवच्छरणोचितः।४१
येनैव कोटिशो वित्तं विप्राणामपवर्जितम्। स एवपृथिवीनाथोभुविस्वपितिमेपतिः।४२
हा कष्टं किं तवाऽनेनकृतंदैवमहीक्षिता। यदिन्द्रोपेन्द्रतुल्योऽयंनीतःपापामिमांदशाम्।४३

इत्युक्त्वासाऽपि सुश्रोणी मूर्च्छिता निपपातह ।
भर्तुर्दुःखमोहभारेणाऽसह्येनाऽतिपीडिता ।।४४।।

शिशुर्दृष्ट्वाक्षुधाऽविष्टःप्राह वाक्यं सुदुःखितः। तातततातप्रदेह्यन्नंमातर्मेदेहिभोजनम् ।
क्षुन्मे बलवती जाता जिह्वाऽग्रे मेऽतिशुष्यति ।।४५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे हरिश्चन्द्रोपाख्याने विंशोऽध्यायः ।।२०।।

* एकविंशोऽध्यायः *

विश्वामित्रेणहरिश्चन्द्रसकाशाद्दक्षिणायाचनवर्णनम्

एतस्मिन्नन्तरे प्राप्तो विश्वामित्रो महातपाः। अन्तकेन समःक्रुद्धोधनंस्वंयाचितुंहृदा।१
तमालोक्य हरिश्चन्द्रः पपातभुविमूर्च्छितः। सवारिणातमभ्युक्ष्यराजानमिदमब्रवीत्।२
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ राजेन्द्र! स्वां ददस्वेष्टदक्षिणाम्। ऋणंधारयतां दुःखमहन्यहनि वर्द्धते।३
आप्यायमानःसतदा हिमशीतेन वारिणा। अवाप्य चेतनां राजाविश्वामित्रमवेक्ष्य च।४
पुनर्मोहं समापेदे ह्यथ क्रोधं ययौमुनिः। समाश्वास्य च राजानंवाक्यमाहद्विजोत्तमः।५

विश्वामित्र उवाच

दीयतां दक्षिणा सा मे यदि धैर्यमवेक्षसे। सत्येनाऽर्कःप्रतपतिसत्येतिष्ठतिमेदिनी।६
सत्ये प्रोक्तः परोधर्मः स्वर्गःसत्येप्रतिष्ठितः। अश्वमेधसहस्रं तुसत्यं चतुलयाधृतम्।७
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेकंविशिष्यते। अथवा किंममैतेनप्रोक्तेनाऽस्तिप्रयोजनम्।८
मदीयांदक्षिणांराजन्नदास्यतिभवान्यदि ।अस्ताचलगतेह्यर्केशप्स्यामित्वामतोध्रुवम्।९

इत्युक्त्वा स ययौ विप्रो राजा चाऽऽसीद्भयातुरः ।
दुःखीभूतोऽवने निःस्वोनृशंसमुनिनाऽर्दितः ।।१०।।

सूत उवाच

एतस्मिन्नन्तरे तत्र ब्राह्मणो वेदपारगः। ब्राह्मणैर्बहुभिः सार्धं निर्ययौस्वगृहाद्बहिः।११
ततोराज्ञीतुतंदृष्ट्वाआयान्तंतापसंस्थितम् ।उवाच वाक्यं राजानं धर्मार्थसहितं तदा।१२
त्रयाणामपि वर्णानां पिता ब्राह्मण उच्यते। पितृद्रव्यं हि पुत्रेण ग्रहीतव्यं नसंशयः।१३
तस्मादयं प्रार्थनीयो धनार्थमिति मे मतिः ।

राजोवाच

नाऽहं प्रतिग्रहं काङ्क्षे क्षत्रियोऽहं सुमध्यमे! ।।१४।।
याचनं खलुविप्राणां क्षत्रियाणांनविद्यते। गुरुर्हिविप्रोवर्णानांपूजनीयोऽस्तिसर्वदा।१५
तस्माद्गुरुर्नयाच्यः स्यात्क्षत्रियाणांविशेषतः। यजनाध्ययनंदानंक्षत्रियस्यविधीयते ।१६
शरणागतानामभयंप्रजानां प्रतिपालनम्। न चाऽप्येवंतु वक्तव्यं देहीति कृपणं वचः।१७
ददामीत्येव मे देवि हृदये निहितं वचः। अर्जितं कुत्रचिद्द्रव्यं ब्राह्मणायददाम्यहम्।१८

पत्न्युवाच

कालः समविषमकरः परिभवसम्मानमानदः कालः ।
कालः करोति पुरुषं दातारं याचितारं च ॥१९॥
विप्रेणविदुषाराजाक्रुद्धेनातिबलीयसा ।राज्यान्निरस्तःसौख्याच्चपश्यकालस्यचेष्टितम्।२०

राजोवाच

असिना तीक्ष्णधारेण वरंजिह्वा द्विधा कृता।नतुमानंपरित्यज्यदेहिदेहीतिभाषितम् ।२१
क्षत्रियोऽहं महाभागेनयाचेकिञ्चिदप्यहम्।ददामिवाऽहंनित्यंहिभुजवीर्यार्जितंधनम्।२२

पत्न्युवाच

यदि ते हि महाराज याचितुं न क्षमं मनः।अहं तु न्यायतो दत्ता देवैरपि सवासवैः।२३
अहं शास्याच पत्याचरक्ष्याचैवमहाद्युते।मन्मौल्यंसंगृहीत्वाऽथगुर्वर्थं सम्प्रदीयताम्।२४
एतद्वाक्यमुपश्रुत्य हरिश्चन्द्रो महीपतिः।कष्टंकष्टमितिप्रोच्यविललापाऽतिदुःखितः।२५
भार्या च भूयः प्राहेदंक्रियतांवचनं मम।विप्रशापाऽग्निदग्धत्वान्नीचत्वमुपयास्यसि।२६
न द्यूतहेतोर्न च मद्यहेतोर्न राज्यहेतोर्न च भोगहेतोः ।
ददस्व गुर्वर्थमतो मया त्वं सत्यव्रतत्वं सफलं कुरुष्व ॥२७॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे हरिश्चन्द्रोपाख्यानवर्णनंनामैकविंशोऽध्यायः ॥२१॥

* द्वाविंशोऽध्यायः *

हरिश्चन्द्रस्यपत्नीपुत्रविक्रयवर्णनम्

व्यास उवाच

स तया नोद्यमानस्तु राजा पत्न्या पुनः पुनः।प्राहभद्रेकरोम्येष विक्रयंते सुनिर्घृणः।१
नृशंसैरपियत्कर्तुं न शक्यंतत्करोम्यहम्।यदि ते भ्राजतेवाणीवक्तुमीदृक्सुनिष्ठुरम्।२
एवमुक्त्वाततोराजा गत्वा नगरमातुरः।अवतार्यतदारङ्गे तां भार्यां नृपसत्तमः।३
वाष्पगद्गदकण्ठस्तु ततो वचनमब्रवीत्।भो भो नागरिकाः! सर्वेशृणुध्वंवचनंमम।४
कस्यचिद्यदिकार्यंस्याद्दास्याप्राणेष्टयामम ।सब्रवीतुत्वरायुक्तोयावत्स्वंधारयाम्यहम्।५
तेऽब्रुवन्पण्डिताः कस्त्वं पत्नीं विक्रेतुमागतः ।

राजोवाच

किं मां पृच्छथ कस्त्वं भो नृशंसोऽहममानुषः ॥६॥
राक्षसो वाऽस्मि कठिनस्ततः पापं करोम्यहम् ।

व्यास उवाच

तं शब्दं सहसा श्रुत्वा कौशिको विप्ररूपधृक् ॥७॥
वृद्धरूपं समास्थाय हरिश्चन्द्रमभाषत।समर्पयस्व मे दासीमहं क्रेता धनप्रदः।८
अस्ति मे वित्तमतुलं सुकुमारीच मे प्रिया।गृह कर्मनशक्नोति कर्तुमस्मात्प्रयच्छमे।९
अहं गृह्णामि दासीं तु कति दास्यामि ते धनम्।एवमुक्ते तु विप्रेणहरिश्चन्द्रस्यभूपतेः ।१०
विदीर्णं तु मनो दुःखान्न चैनं किञ्चिदब्रवीत् ।

विप्रउवाच

कर्मणश्च वयोरूपशीलानां तव योषितः ॥११॥
अनुरूपमिदं वित्तं गृहाणाऽर्पय मेऽबलाम्।धर्मशास्त्रेषु यद्दृष्टं स्त्रियो मौल्यंनरस्यच।१२
द्वात्रिंशल्लक्षणोपेता दक्षा शीलगुणान्विता।कोटिमौल्यं सुवर्णस्य स्त्रियःपुंसस्तथाऽर्बुदम्।१३

इत्याकर्ण्यवचस्तस्यहरिश्चन्द्रोमहीपतिः ।दुःखेनमहताऽऽविष्टोनचैनंकिञ्चिदब्रवीत्।१४
ततः स विप्रो नृपतेःपुरतो वल्कलोपरि।धनं निधाय केशेषु धृत्वा राज्ञीमकर्षयत्।१५

राज्युवाच

मुञ्चमुञ्चाऽर्यमां सद्योयावत्पश्याम्यहं सुतम्।दुर्लभंदर्शनंविप्र ! पुनरस्यभविष्यति।१६
पश्येह पुत्र! मामेवं मातरं दास्यतां गताम्।मां मास्प्राक्षी राजपुत्र! न स्पृश्याऽहं त्वयाऽधुना।१७
ततः स बालः सहसा दृष्ट्वाऽऽकृष्टांतुमातरम्।समभ्यधावदम्बेतिवदन्साश्रुविलोचनः ।१८
हस्ते वस्त्रं समाकर्षन्काकपक्षधरः स्खलन्।तमागतं द्विजःक्रोधाद्बालमप्याहनत्तदा।१९
वदंस्तथापि सोऽम्बेति नैव मुञ्चति मातरम् ।

राज्युवाच

प्रसादं कुरु मे नाथ! क्रीणीष्वेमं हि बालकम् ॥२०॥
क्रीताऽपि नाऽहं भविताविनैनंकार्यसाधिका।इत्थंममाल्पभाग्यायाः प्रसादंकुरुमेप्रभो।२१

ब्राह्मण उवाच

गृह्यतां वित्तमेतत्ते दीयतां मम बालकः।स्त्रीपुंसोर्धर्मशास्त्रज्ञैः कृतमेवं हि वेतनम्।२२
शतं सहस्रं लक्षं च कोटिमौल्यं तथापरैः।द्वात्रिंशल्लक्षणोपेतादक्षाशीलगुणान्विता।२३
कोटिमौल्यं स्त्रियः प्रोक्तंपुरुषस्य तथाऽर्बुदम् ।

सूतउवाच

तथैव तस्य तद्वित्तं पुरः क्षिप्तम्पटे पुनः ॥२४॥
प्रगृह्य बालकं मात्रासहैकस्थमबन्धयत्।प्रतस्थे स गृहं क्षिप्रं तया सह मुदान्वितः।२५
प्रदक्षिणांतुसाकृत्वाजानुभ्यांप्रणतास्थिता।वाष्पपर्याकुलादीनात्विदंवचनमब्रवीत्।२६
यदि दत्तं यदि हुतं ब्राह्मणास्तर्पिता यदि।तेनपुण्येनमेभर्ताहरिश्चन्द्रोऽस्तु वै पुनः।२७
पादयोःपतितांदृष्ट्वाप्राणेभ्योऽपिगरीयसीम्।हाहेतिचवदन्राजाविललापाकुलेन्द्रियः।२८
वियुक्तेयं कथं जाता सत्यशीलगुणान्विता।वृक्षच्छायाऽपि वृक्षंतंनजहातिकदाचन।२९
एवं भार्या वदित्वाऽथ सुसम्बद्धं परस्परम्।पुत्रंचतमुवाचेदंमांत्वंहित्वाक्वयास्यसि।३०
कांदिशं प्रतियास्यामिको मेदुःखंनिवारयेत्।राज्यत्यागेनमेदुःखंवनवासेनमे द्विजः।३१
यत्पुत्रेण वियोगो मे एवमाह स भूपतिः।सद्भर्तृ भोग्याहिसदालोकेभार्याभवन्तिहि।३२
मया त्यक्ताऽसि कल्याणि! दुःखेन विनियोजिता ।
इक्ष्वाकुवंशसम्भूतं सर्वराज्यसुखोचितम् ॥३३॥
मामीदृशं पतिं प्राप्य दासीभावं गता ह्यसि।ईदृशे मज्जमानं मां सुमहच्छोकसागरे।३४
को मामुद्धरते देवि! पौराणाख्यानविस्तरैः ।

सूत उवाच

पश्यतस्तस्य राजर्षेः कशाघातैः सुदारुणैः ॥३५॥
घातयित्वा तु विप्रेशो नेतुं समुपचक्रमे।नीयमानौ तु तौ दृष्ट्वा भार्यापुत्रौसपार्थिवः।३६
विललापाऽतिदुःखार्तो निश्वस्योष्णं पुनःपुनः।यां न वायुर्न वाऽऽदित्यो न चन्द्रो न पृथग्जनाः।३७
दृष्टवन्तः पुरा पत्नीं सेयं दासीत्वमागता।सूर्यवंशप्रसूतोऽयं सुकुमारकराङ्गुलिः।३८
सम्प्राप्तो विक्रयं बालो धिङ्मामस्तु सुदुर्मतिम्।हा प्रिये!हा शिशो!वत्स!ममाऽनार्यस्य दुर्नयः।३९
दैवाधीनदशां प्राप्तो न मृतोऽस्मि तथाऽपि धिक् ।

व्यासउवाच

एवं विलपतो राज्ञोऽग्रे विप्रोऽन्तरधीयत ॥४०॥

वृक्षगेहादिभिस्तुङ्गैस्तावादाय त्वरन्वितः। अत्रान्तरेमुनिश्रेष्ठस्त्वाजगाममहातपाः।४१
सशिष्यः कौशिकेन्द्रोऽसौ निष्ठुरः क्रूरदर्शनः।

विश्वामित्रउवाच

या त्वयोक्ता पुरा राजन्राजसूयस्य दक्षिणा ।।४२।।
तां ददस्व महाबाहो! यदि सत्यं पुरस्कृतम्।

हरिश्चन्द्र उवाच

नमस्करोमि राजर्षे! गृहाणेमां स्वदक्षिणाम् ।।४३।।
राजसूयस्य यागस्य या मयोक्ता पुराऽनघ!।

विश्वामित्रउवाच

कुतो लब्धमिदं द्रव्यं दक्षिणार्थे प्रदीयते ।।४४।।
तदाचक्ष्व राजेन्द्र! यथा द्रव्यं त्वयाऽर्जितम्।

राजोवाच

किमनेन महाभाग! कथितेन तवाऽनघ ।।४५।।
शोकस्तु वर्धते विप्र! श्रुतेनाऽनेन सुव्रत!।

ऋषिरुवाच

अशस्तं नैव गृह्णामि शस्तमेव प्रयच्छ मे ।।४६।।
द्रव्यस्याऽऽगमनं राजन्कथयस्व यथातथम्।

राजोवाच

मया देवी तु सा भार्या विक्रीता कोटिसम्मितैः ।।४७।।
निष्कैः पुत्रो रोहिताख्यो विक्रीतोऽर्बुदसङ्ख्यया। विप्रैकादशकोट्यस्त्वं सुवर्णस्य गृहाण मे।४८

सूत उवाच

तद्वित्तं स्वल्पमालक्ष्य दारविक्रयसम्भवम्। शोकाभिभूतं राजानं कुपितःकौशिकोऽब्रवीत्।४६

ऋषिरुवाच

राजसूयस्य यज्ञस्य नैषा भवति दक्षिणा। अन्यदुत्पादय क्षिप्रं सम्पूर्णायेनसाभवेत्।५०
क्षत्रवन्धो ममेमां त्वं सदृशीं यदि दक्षिणाम्। मन्यसेतर्हितत्क्षिप्रंपश्यत्वंमेपरंबलम् ।५१
तपसोऽस्यसुतप्तस्यब्राह्मणस्याऽमलस्यच। मत्प्रभावस्यचोग्रस्यशुद्धस्याध्ययनस्यच।५२

राजोवाच

अन्यद्दास्यामि भगवन्कालः कश्चित्प्रतीक्ष्यताम्।
अधुनैवाऽस्ति विक्रीता पत्नी पुत्रश्च बालकः ।।५३।।

विश्वामित्र उवाच

चतुर्भागः स्थितो योऽयंदिवसस्य नराधिप!। एषएवप्रतीक्ष्योमेवक्तव्यंनोत्तरंत्वया ।५४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे हरिश्चन्द्रस्यपत्नीपुत्रविक्रयवर्णनंनाम द्वाविंशोऽध्यायः ।।२२।।

* त्रयोविंशोऽध्यायः *

हरिश्चन्द्रेणस्वात्मविक्रयंकृत्वाविश्वामित्रायदक्षिणादानवर्णनम्

व्यास उवाच

तमेवमुक्त्वा राजानं निर्घृणं निष्ठुरं वचः।तदादाय धनं पूर्णंकुपितः कौशिकोययौ।१
विश्वामित्रेगतेराजाततः शोकमुपागतः। श्वासोच्छ्वासंमुहुःकृत्वांप्रोवाचोच्चैरधोमुखः।२
वित्तक्रीतेन यस्यार्तिर्मया प्रेतेन गच्छति। स ब्रवीतु त्वरायुक्तो यामेतिष्ठतिभास्करः।३

अथाजगामत्वरितोधर्मश्चाण्डालरूपधृक् । दुर्गन्धोविकृतोरस्कःश्मश्रुलोदन्तुरोऽघृणी । ४
कृष्णो लम्बोदरः स्निग्धः करालःपुरुषाधमः । हस्तजर्जरयष्टिश्चशवमाल्यैरलङ्कृतः ।५

चाण्डाल उवाच

अहं गृह्णामि दासत्वे भृत्यार्थः सुमहान्मम । क्षिप्रमाचक्ष्व मौल्यंकिमेतत्तेसम्प्रदीयते । ६

व्यास उवाच

तं तादृशमथाऽऽलक्ष्यक्रूरदृष्टिंसुनिर्घृणम् । वदन्तमतिदुःशीलंकस्त्वमित्याहपार्थिवः । ७

चाण्डाल उवाच

चाण्डालोऽहमिह ख्यातःप्रवीरेति नृपोत्तम! । शासने सर्वदातिष्ठ मृतचैलापहारकः । ८
एवमुक्तस्तदा राजा वचनं चेदमब्रवीत् । ब्राह्मणः क्षत्रियो वाऽपि गृह्णात्विति मतिर्मम । ९
उत्तमस्योत्तमो धर्मो मध्यमस्य च मध्यमः । अधमस्याऽधमश्चैवइतिप्राहुर्मनीषिणः ।१०

चाण्डाल उवाच

एवयेव त्वया धर्मः कथितो नृपसत्तम! । अविचार्य त्वया राजन्नधुनोक्तं ममाऽग्रतः । ११
विचारयित्वा यो ब्रूते सोऽभीष्टंलभते नरः । सामान्यमेवतत्प्रोक्तमविचार्यत्वयाऽनघ । १२
यदि सत्यं प्रमाणं ते गृहीतोऽसि न संशयः ।

हरिश्चन्द्रउवाच

असत्यान्नरके गच्छेत्सद्यः क्रूरे नराधमः ।। १३ ।।
ततश्चाण्डालता साध्वी न वरा मे ह्यसत्यता ।

व्यासउवाच

तस्यैवं वदतः प्राप्तो विश्वामित्रस्तपोनिधिः ।। १४ ।।
क्रोधामर्षविवृत्ताक्षः प्राह चेदं नराधिपम् । चाण्डालोऽयंमनस्थंतेदातुं वित्तमपुस्थितः । १५
कस्मान्न दीयते मह्यमशेषा यज्ञदक्षिणा ।

राजोवाच

भगवन्सूर्यवंशोत्थमात्मानं वेद्मि कौशिक! ।।१६।।
कथं चाण्डालदासत्वं गमिष्ये वित्तकामतः ।

विश्वामित्र उवाच

यदि चाण्डालवित्तं त्वमात्मविक्रयजं मम ।।१७।।
नप्रदास्यसिचेत्तर्हिशप्स्यामित्वामसंशयम् । चाण्डालादथवाविप्राद्देहिमेदक्षिणाधनम् । १८
विना चाण्डालमधुनानान्यः कश्चिद्धनप्रदः । धनेनाऽहं विना राजन्न यास्यामि न संशयः । १९
इदानीमेव वित्तं न प्रदास्यसिचेन्नृप! । दिनेऽर्धघटिकाशेषे तत्त्वांशापाग्निना दहे । २०

व्यास उवाच

हरिश्चन्द्रस्ततो राजा मृतवच्छ्रितजीवितः । प्रसीदेति वदन्पादौ ऋषेर्जग्राहविह्वलः । २१

हरिश्चन्द्र उवाच

दासोऽस्म्यार्तोऽस्मि दीनोऽस्मि त्वद्भक्तश्च विशेषतः ।
प्रसादं कुरु विप्रर्षे! कष्टश्चाण्डालसङ्करः ।।२२।।
[illegible] वित्तशेषेण तव कर्मकरो वशः । तवैव मुनिशार्दूल! प्रेष्यश्चित्तानुवर्तकः । २३

विश्वामित्र उवाच

एवमस्तु महाराज! ममैव भव किङ्कर । किन्तु मद्वचनं कार्यं सर्वदैव नराधिप! । २४

व्यास उवाच

एवमुक्तेऽथ वचने राजा हर्षसमन्वितः । अमन्यत पुनर्जातमात्मानं प्राह कौशिकम् । २५

तवाऽऽदेशंकरिष्यामि सदैवाऽहंन संशयः। आदेशय द्विजश्रेष्ठ! किं करोमि तवाऽनघ।२६

विश्वामित्र उवाच

चाण्डालगच्छमद्दासमौल्यं किंमेप्रयच्छसि। गृहाण दासं मौल्येनमया दत्तंतवाऽधुना।२७
नाऽस्ति दासेन मे कार्यं वित्ताशा वर्ततेमम।

व्यासउवाच

एवमुक्ते तदा तेन श्वपचो हृष्टमानसः॥२८॥
आगत्य सन्निधौ तूर्णं विश्वामित्रमभाषत।

चाण्डाल उवाच

दशयोजनविस्तीर्णे प्रयागस्य च मण्डले॥२९॥
भूमिं रत्नमयींकृत्वा दास्ये तेऽहं द्विजोत्तम। अस्यविक्रयणेनेयमार्तिश्च प्रहृता त्वया।३०

व्यास उवाच

ततो रत्नसहस्राणिसुवर्णमणिमौक्तिकैः। चाण्डालेन प्रदत्तानि जग्राह द्विजसत्तमः।३१
हरिश्चन्द्रस्तथा राजा निर्विकारमुखोऽभवत्। अमन्यत तथा धैर्याद्विश्वामित्रो हि मे पतिः।३२
तत्तदेव मया कार्यं यदयं कारयिष्यति। अथाऽन्तरिक्षे सहसा वागुवाचाऽशरीरिणी।३३
अनृणोऽसि महाभाग! दत्ता सा दक्षिणात्वया। ततोदिवःपुष्पवृष्टिःपपातनृपमूर्धनि ।३४
साधुसाध्विति तं देवाःप्रोचुःसेन्द्रा महौजसः। हर्षेण महताऽविष्टो राजा कौशिकमब्रवीत्।३५

राजोवाच

त्वं हि मातापिताचैवत्वंहिबन्धुर्महामते!। यदर्थंमोचितोऽहंतेक्षणाच्चैवाऽनृणीकृतः।३६
किं करोमि महाबाहो श्रेयो मे वचनं तव। एकमुक्ते तु वचने नृपं मुनिरभाषत।३७

विश्वामित्र उवाच

चाण्डालवचनं कार्यमद्यप्रभृति ते नृप। स्वस्तितेऽस्त्वितितंप्रोच्यतदादायधनंययौ।३८

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां
सप्तमस्कन्धेहरिश्चन्द्रोपाख्याने त्रयोविंशोऽध्यायः॥२३॥

* चतुर्विंशोऽध्यायः *

हरिश्चन्द्रस्यमृतचैलापहारकत्वकर्तव्यपरिचर्यावर्णनम्

शौनक उवाच

ततः किमकरोद्राजाचाण्डालस्य गृहे गतः। तद्ब्रूहि सूतवर्य! त्वंपृच्छतः सत्वरंहिमे।१

सूत उवाच

विश्वामित्रे गतेविप्रेश्वपचोहृष्टमानसः। विश्वामित्रायतद्द्रव्यं दत्त्वाबद्ध्वानरेश्वरम्।२
असत्योयास्यसीत्युक्त्वा दण्डेनाऽताडयत्तदा। दण्डप्रहारसम्भ्रान्तमतीवव्याकुलेन्द्रियम्।३
इष्टबन्धुवियोगार्तमानीयनिजपक्वणे । निगडे स्थापयित्वा तं स्वयं सुष्वाप विज्वरः।४
निगडस्थस्ततोराजा वसंश्चाण्डालपक्वणे। अन्नपाने परित्यज्य सदा वै तदशोचयत्।५
तन्वींदीनमुखींदृष्ट्वा बालं दीनमुखम्पुरः। मां स्मरत्यसुखाविष्टा मोक्षयिष्यतिनौनृपः।६
उपात्तवित्तोविप्रायदत्त्वावित्तंप्रतिश्रुतम्। रोदमानंसुतम्वीक्ष्यमांच सम्बोधयिष्यति।७
तातपार्श्वम्व्रजामीति रुदन्तं बालकंपुनः। तात तातेति भाषन्तं तथासम्बोधयिष्यति।८
नसामांमृगशावाक्षीवेत्तिचाण्डालतांगतम्। राज्यनाशःसुहृत्त्यागो भार्यातनयविक्रयः।९
ततश्चाण्डालता चेयमहो दुःखपरम्परा। एवं स निवसन्नित्यं स्मरंश्च दयितां सुतम्।१०

निनाय दिवसान्राजा चतुरोविधिपीडितः। अथाऽह्नि पञ्चमेतेननिगडान्मोचितोनृपः।११
चाण्डालेनानुशिष्टश्च मृतचैलापहारणे। क्रुद्धेनपरुषैर्वाक्यैर्निर्भर्त्स्य च पुनः पुनः।१२
काश्याश्च दक्षिणे भागे श्मशानं विद्यते महत्। तद्रक्षस्व यथान्यायं न त्याज्यं तत्त्वया क्वचित्।१३
इमञ्च जर्जरं दण्डं गृहीत्वा याहि मा चिरम्। वीरबाहोरयं दण्डइति घोषस्वसर्वतः।१४

सूत उवाच

कस्मिंश्चिदथ काले तु मृतचैलापहारकः। हरिश्चन्द्रोऽभवद्राजा श्मशाने तद्वशानुगः।१५
चाण्डालेनाऽनुशिष्टस्तु मृतचैलापहारिणा। राजा तेन समादिष्टोजगाम शवमन्दिरम्।१६
पुर्यास्तु दक्षिणे देशे विद्यमानं भयानकम्। शवमाल्यसमाकीर्णं दुर्गन्धंवहुधूमकम्।१७
श्मशानं घोरसन्नादं शिवाशतसमाकुलम्। गृध्रगोमायुसङ्कीर्णं श्ववृन्दपरिवारितम्।१८
अस्थिसङ्घातसंकीर्णंमहादुर्गन्धसङ्कुलम्। अर्धदग्धशवास्यानिविकसद्दन्तपङ्क्तिभिः।१९
हसन्तीवाऽग्निमध्यस्थकायस्यैवं व्यवस्थितिः। नानामृतसुहृन्नादं महाकोलाहलाकुलम्।२०
हा पुत्र मित्र हा बन्धोभ्रातर्वत्सप्रियाद्य मे। हाप्यते भागिनेयार्ह हा मातुलपितामह।२१
मातामह पितः पौत्रक्व गतोऽस्येहिबान्धव। इतिशब्दैः समाकीर्णंभैरवैः सर्वदेहिनाम्।२२
ज्वलन्मांसवसामेदच्छूमितिध्वनिसंकुलम्। अग्नेश्चटचटाशब्दो भैरवो यत्र जायते।२३
कल्पान्तरसदृशाकारं श्मशानं तत्सुदारुणम्। सराजातत्रसम्प्राप्तो दुःखादेवमशोचत।२४

हा भृत्या मन्त्रिणो यूयं क्व तद्राज्यं कुलोचितम्।
हा प्रिये! पुत्र! मे बाल! मां त्यक्त्वा मन्दभाग्यकम्।।२५।।

ब्राह्मणस्य च कोपेन गता यूयंक्व दूरतः। विनाधर्मं मनुष्याणां जायतेन शुभंक्वचित्।२६
यत्नतो धारयेत्तस्मात्पुरुषोधर्ममेवहि। इत्येवं चिन्तयंस्तत्र चाण्डालोक्तम्पुनः पुनः।२७
मलेन दिग्धसर्वाङ्गः शवानां दर्शनेव्रजन्। लकुटाकारकल्पश्च धावंश्चाऽपि ततस्ततः।२८
अस्मिञ्छव इदं मौल्यं शतं प्राप्स्यामि चाग्रतः। इदंममइदंराज्ञ इदंचाण्डालकस्यच।२९
इत्येवं चिन्तयन्राजा व्यवस्थां दुस्तरां गतः। जीर्णैकपटसुग्रन्थिकृतकन्थापरिग्रहः।३०
चिताभस्मरजोलिप्तमुखबाहूदराङ्घ्रिकः। नानामेदोवसामज्जालिप्तपाण्यङ्गुलिःश्वसन्।३१
नानाशवौदनकृतक्षुन्निवृत्तिपरायणः। तदीयमाल्यसंश्लेषकृतमस्तकमण्डलः।३२
न रात्रौ न दिवा शेते हाहेतिप्रवदन्मुहुः। एवं द्वादश मासास्तु नीता वर्षशतोपमाः।३३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे हरिश्चन्द्रस्यचिन्ता वर्णनंनामचतुर्विंशोऽध्यायः।।२४।।

* पञ्चविंशोऽध्यायः *

विश्वामित्राज्ञयाकृष्णसर्पदंशेन रोहितस्यमृत्युस्तदनन्तरंतन्मातुर्विलापवर्णनम्

सूत उवाच

एकदातु गतो रन्तुं बालकैः सहितो बहिः। वाराणस्यानातिदूरे रोहिताख्यः कुमारकः।१
क्रीडां कृत्वा ततो दर्भान्ग्रहीतुमुपचक्रमे। कोमलानल्पमूलांश्चसाग्राञ्छक्त्यनुसारतः।२
आर्यप्रीत्यर्थमित्युक्त्वा हस्तयुग्मेनयत्नतः। सलक्षणाश्च समिधोबर्हिरिध्मंसलक्षणम्।३
पलाशकाष्ठान्यादायत्वग्निहोमार्थमादरात्। मस्तके भारकं कृत्वा खिद्यमानः पदेपदे।४
उदकस्थानमासाद्यतदा बालस्तृषान्वितः। भुविभारंविनिक्षिप्य जलस्थानेतदाशिशुः।५

कामतः सलिलं पीत्वा विश्रम्य च मुहूर्तकम्। वल्मीकोपरिविन्यस्तभारो हर्तुं प्रचक्रमे ।६
विश्वामित्राऽऽज्ञया तावत्कृष्णसर्पो भयावहः। महाविषो महाघोरो वल्मीकान्निर्गतस्तदा।७
तेनाऽसौ बालको दष्टस्तदैव च पपात ह। रोहिताख्यं मृतं दृष्ट्वा ययुर्बाला द्विजालयम्।८
त्वरिता भयसंविग्नाः प्रोचुस्तन्मातुरग्रतः। हे विप्रदासि! ते पुत्रः क्रीडां कर्तुं बहिर्गतः।९
अस्माभिः सहितस्तत्रः सर्पदष्टो मृतस्ततः। इति सा तद्वचः श्रुत्वा वज्रपातोपमं तदा।१०
पपात मूर्च्छिता भूमौ छिन्नेव कदली यथा। अथ तां ब्राह्मणो रुष्टः पानीयेनाऽभ्यषिञ्चत।११

मुहूर्ताच्चेतनां प्राप्ता ब्राह्मणस्तामथाऽब्रवीत् ।

ब्राह्मण उवाच

अलक्ष्मीकारकं निन्द्यं जानती त्वं निशामुखे ।।१२।।

रोदनं कुरुषे दुष्टे लज्जा ते हृदये न किम्। ब्राह्मणेनैवमुक्ता सा न किञ्चिद्वाक्यमब्रवीत्।१३
रुरोद करुणं दीना पुत्रशोकेन पीडिता। अश्रुपूर्णमुखी दीना धूसरा मुक्तमूर्द्धजा।१४
अथ तां कुपितो विप्रो राजपत्नीमभाषत। धिक्त्वां दुष्टे क्रयं गृह्य मम कार्यम्विलुम्पसि।१५
अशक्ता चेत्कथं तर्हि गृहीतं मम तद्धनम्। एवं निर्भर्त्सिता तेन क्रूरवाक्यैः पुनः पुनः।१६
रुदिता कारणम्प्राह विप्रं गद्गदया गिरा। स्वामिन्मम सुतो बाल सर्पदष्टो मृतो बहिः।१७
अनुज्ञां मे प्रयच्छस्व द्रष्टुं यास्यामि बालकम्। दुर्लभं दर्शनं तेन सञ्जातं मम सुव्रत!।१८
इत्युक्त्वा करुणं बाला पुनरेव रुरोद ह। पुनस्तां कुपितो विप्रो राजपत्नीमभाषत।१९

ब्राह्मण उवाच

शठे! दुष्टसमाचारे किं न जानासि पातकम्। यः स्वामिवेतनं गृह्य तस्य कार्यं विलुम्पति।२०
नरके पच्यते सोऽथ महारौरवपूर्वके। उषित्वा नरके कल्पं ततोऽसौ कुक्कुटो भवेत्।२१
किमनेनाऽथवा कार्यं धर्मसङ्कीर्तनेन मे। यस्तु पापरतो मूर्खः क्रूरो नीचोऽनृतः शठः।२२
तद्वाक्यं निष्फलं तस्मिन्भवेद् बीजमिवोषरे। एहि ते विद्यते किञ्चित्परलोकभयं यदि ।२३
एवमुक्ताऽथ सा विप्रं वेपमानाऽब्रवीद्वचः। कारुण्यं कुरु मे नाथ! प्रसीद सुमुखो भव।२४
प्रस्थापय मुहूर्तं मां यावद्द्रक्ष्यामि बालकम्। एवमुक्त्वाऽथ सा मूर्ध्ना निपत्य द्विजपादयोः।२५
रुरोद करुणं बाला पुत्रशोकेन पीडिता। अथाऽऽह कुपितो विप्रः क्रोधसंरक्तलोचनः।२६

विप्र उवाच

किं ते पुत्रेण मे कार्यं गृहकर्म कुरुष्व मे। किं न जानासि मे क्रोधं कशाघातफलप्रदम्।२७
एवमुक्ता स्थिता धैर्याद् गृहकर्म चकार ह। अर्धरात्रो गतस्तस्याः पादाभ्यङ्गादिकर्मणा।२८
ब्राह्मणेनाऽथ सा प्रोक्ता पुत्रपार्श्वं व्रजाधुना। तस्य दाहादिकं कृत्वा पुनरागच्छ सत्वरम्।२९
न लुप्येत यथा प्रातर्गृहकर्म ममेति च। ततस्त्वेकाकिनी रात्रौ विलपन्ती जगाम ह।३०
दृष्ट्वा मृतं निजं पुत्रं भृशं शोकन पीडिता। यूथभ्रष्टा कुरङ्गीव विवत्सा सौरभी यथा।३१

वाराणस्या बहिर्गत्वा क्षणाद्दृष्ट्वा निजं सुतम् ।
शयानं रङ्कवद्भूमौ काष्ठदर्भतृणोपरि ।।३२।।
विललापाऽतिदुःखार्ता शब्दं कृत्वा सुनिष्ठुरम् ।
एहि मे सम्मुखं कस्माद्रोषितोऽसि वदाऽधुना ।।३३।।
आयास्यभिमुखो नित्यमम्बेत्युक्त्वा पुनः पुनः ।
गत्वा स्खलत्पदा तस्य पपातोपरि मूर्च्छिता ।।३४।।

पुनः साचेतनांप्राप्यदोर्भ्यामालिङ्ग्यबालकम् । तन्मुखेवदनंन्यस्यरुरोदार्तस्वनैस्तदा ।३५
कराभ्यां ताडनं चक्रे मस्तकस्योदरस्य च । हा बालहा शिशोवत्सहाकुमारकसुन्दर ।३६
हा राजन्क्वगतोऽसित्वंपश्येमंबालकंनिजम् । प्राणेभ्योऽपिगरीयांसंभूतलेपतितंमृतम् ।३७
तथाऽपश्यन्मुखं तस्य भूयो जीवितशङ्कया । निर्जीववदनं ज्ञात्वामूर्च्छितानिपपातह ।३८
हस्तेन वदनं गृह्य पुनरेवमभाषत । शयनं त्यज हे बाल! शीघ्रं जागृहि भीषणम् ।३९
निशार्धं वर्धते चेदं शिवाशतनिनादितम् । भूतप्रेतपिशाचादिडाकिनीयूथनादितम् ।४०
मित्राणि ते गतान्यस्तात्त्वमेकस्तु कुतः स्थितः ।

सूतउवाच

एवमुक्त्वा पुनस्तन्वी करुणं प्ररुरोद ह ॥४१॥
हा शिशो बाल हा वत्स रोहिताख्यकुमारक! । रेपुत्रप्रतिशब्दंमेकस्मात्त्वंनप्रयच्छसि ।४२
तवाऽहंजननीवत्सकिंनजानासिपश्यमाम् । देशत्यागाद्राज्यनाशात्पुत्रभर्त्रात्स्वविक्रयात् ।४३
यद्दासीत्वाच्चजीवामित्वां दृष्ट्वा पुत्र! केवलम् । ते जन्मसमयेविप्रै रादिष्टंयत्त्वनागतम् ।४४
दीर्घायुः पृथिवीराजः पुत्रपौत्रसमन्वितः । शौर्यदानरतिः सत्त्वो गुरुदेवद्विजार्चकः ।४५
मातापित्रोस्तु प्रियकृत्सत्यवादी जितेन्द्रियः । इत्यादि सकलंजातमसत्यमधुनासुत ।४६
चक्रमत्स्यावातपत्रश्रीवत्सस्वस्तिकध्वजाः । तव पाणितले पुत्र! कलशश्चामरंतथा ।४७
लक्षणानि तथाऽन्यानि त्वद्धस्ते यानि सन्ति च ।
तानि सर्वाणि मोघानि सञ्जातान्यधुना सुत! ॥४८॥
हा राजन्पृथिवीनाथक्वतेराज्यंक्वमन्त्रिणः । क्व ते सिंहासनं छत्रंक्वतेखड्गःक्वतद्धनम् ।४९
क्व साऽयोध्याक्वहर्म्याणिक्वगजाश्वरथप्रजाः ।
सर्वमेतत्तथापुत्रमांत्यक्त्वाक्वगतोऽसिरे ॥५०॥
हा कान्त!हानृपाऽऽगच्छपश्येमं स्वसुतंप्रियम् । येनतेरिङ्गतावक्षःकुङ्कुमेनावलेपितम् ।५१
स्वशरीररजःपङ्कैर्विशालं मलिनीकृतम् । येन ते बालभावेन भृगनाभिविलेपितः ।५२
भ्रंशितो भालतिलकस्तवाङ्कस्थेन भूपते! । यस्य वक्त्रंमृदालिप्तंस्नेहाद्वैचुम्बितंमया ।५३
तन्मुखं मक्षिकालिङ्ग्यम्पश्ये कीटैर्विदूषितम् । हा राजन्पश्य तं पुत्रं भुविस्थं रङ्कवन्मृतम् ।५४
हा देव किं मयाऽकृत्यं कृतं पूर्वभवान्तरे । तस्य कर्मफलस्येह नपारमुपलक्षये ।५५
हा पुत्र हा शिशो वत्स हा कुमारकसुन्दर! । एवं तस्या विलापंतेश्रुत्वानगरपालकाः ।५६
जागृतास्त्वरितास्तस्या पार्श्वमीयुः सुविस्मिताः ।

जना ऊचुः

का त्वं बालश्च कस्याऽयं पतिस्ते कुत्र तिष्ठति ॥५७॥
एकैव निर्भया रात्रौयस्मात्त्वमिहरोदिषि । एवमुक्ताऽथसातन्वीनकिञ्चिद्वाक्यमब्रवीत् ।५८
भूयोऽपि पृष्टासा तूष्णीं स्तब्धीभूताबभूव ह । विललापाऽतिदुःखार्ता शोकाश्रुप्लुतलोचना ।५९
अथ तेशङ्कितास्तस्यांरोमाञ्चिततनूरुहाः । सन्त्रस्ताःप्राहुरन्योन्यमुद्धृतायुधपाणयः ।६०
नूनं स्त्री न भवत्येषा यतः किञ्चिन्न भाषते । तस्माद्वध्याभवेदेषायत्नतोबालघातिनी ।६१
शुभाचेत्तर्हि किं ह्यत्र निशार्धेतिष्ठते बहिः । भक्षार्थमनयानूनमानीतः कस्यचिच्छिशुः ।६२
इत्युक्त्वा तैर्गृहीता सा गाढं केशेषुसत्वरम् । भुजयोरपरैश्चैव कैश्चाऽपि गलके तथा ।६३
खेचरीयास्यतीत्युक्तं बहुभिः शस्त्रपाणिभिः । आकृष्यपक्वणेनीताचाण्डालायसमर्पिता ।६४

हेचाण्डालबहिर्दृष्टाह्यस्माभिर्बालघातिनी। वध्यतांवध्यतामेषाशीघ्रंनीत्वाबहिःस्थले।६५
चाण्डालः प्राह तां दृष्ट्वा ज्ञातेयंलोकविश्रुता। नदृष्टपूर्वाकेनापिलोकडिम्भान्यनेकधा ।६६
भक्षितान्यनया भूरि भवद्भिः पुण्यमर्जितम्। ख्यातिर्वः शाश्वती लोके गच्छध्वं च यथासुखम्।६७
द्विजस्त्री बालगोघाती स्वर्णस्तेयीचयोनरः। अग्निदोवर्त्मघातीचमद्यपोगुरुतल्पगः ।६८
महाजनविरोधीच तस्य पुण्यप्रदोवधः। द्विजस्याऽपिस्त्रियोवाऽपिनदोषोविद्यतेवधे।६६
अस्या वधश्च मे योग्य इत्युक्त्वा गाढबन्धनैः। बद्ध्वा केशेष्वथाऽऽकृष्य रज्जुभिस्तामताडयत्।७०
हरिश्चन्द्रमथोवाच वाचा परुषया तदा। रे दास! वध्यतामेषादुष्टात्मा मा विचारय।७१
तद्वाक्यं भूपतिः श्रुत्वा वज्रपातोपमं तदा। वेपमानोऽथचाण्डालंप्राह स्त्रीवधशङ्कितः।७२
न शक्तोऽहमिदं कर्तुंप्रेष्यं देहिममापरम्। असाध्यमपियत्कर्मतत्करिष्येत्वयोदितम्।७३
श्रुत्वा तदुक्त वचनं श्वपचो वाक्यमब्रवीत्। मा भैषीस्त्वं गृहाणाऽसिं वधोऽस्याः पुण्यदो मतः।७४
बालानामेव भयदा नेयं रक्ष्या कदाचन। तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य राजा वचनमब्रवीत्।७५
स्त्रियो रक्ष्याःप्रयत्नेन न हन्तव्याः कदाचन। स्त्रीवधे कीर्तितंपापंमुनिभिर्धर्मतत्परैः।७६
पुरुषोयःस्त्रियं हन्याज्ज्ञानतोऽज्ञानतोऽपि वा। नरके पच्यतेसोऽथमहारौरवपूर्वके।७७

चाण्डाल उवाच

मा वदाऽसिं गृहाणैनं तीक्ष्णं विद्युत्समप्रभम्। यत्रैकस्मिन्वधं नीते बहूनां तु सुखं भवेत्।७८
तस्य हिंसा कृता नूनं बहुपुण्यप्रदा भवेत्। भक्षितान्यनयाभूरिलोकेडिम्भानिदुष्टया।७६
तत्क्षिप्रं वध्यतामेषा लोकः स्वस्थो भविष्यति।

राजोवाच

चाण्डालाधिपते! तीव्रं व्रतं स्त्रीवधवर्जनम् ॥८०॥
आजन्मतस्ततो यत्नं न कुर्यां स्त्रीवधे तव।

चाण्डालउवाच

स्वामिकार्यं विना दुष्ट! किं कार्यं विद्यते परम् ॥८१॥
गृहीत्वावेतनंमेऽद्यकस्मात्कार्यंविलुम्पसि। यः स्वामिवेतनंगृह्यस्वामिकार्यंविलुम्पति।८२
नरकान्निष्कृतिस्तस्य नास्ति कल्पायुतैरपि।

राजोवाच

चाण्डालनाथ! मे देहि प्राप्यमन्यत्सुदारुणम् ॥८३॥
स्वशत्रुं ब्रूहितंक्षिप्रंघातयिष्याम्यसंशयम्। घातयित्वातुतंशत्रुंतवदास्यामिमेदिनीम्।८४
देवदेवोरगैः सिद्धैर्गन्धर्वैरपि संयुतम्। देवेन्द्रमपि जेष्यामि निहत्य निशितैः शरैः।८५
एतच्छ्रूत्वा ततो वाक्यं हरिश्चन्द्रस्य भूपतेः। चाण्डालः कुपितः प्राह वेपमानं महीपतिम्।८६

चाण्डाल उवाच

"नैतद्वाक्यं सुघटितं यद्वाक्यं दासकीर्तितम्।"
चाण्डालदासतां कृत्वा सुराणां भाषसे वचः।
दास! किं बहुना नूनं शृणु मे गदतो वचः ॥८७॥
निर्लज्ज तव चेदस्तिकिञ्चित्पापभयंहृदि। किमर्थंदासतांयातश्चाण्डालस्यतुवेश्मनि।८८
गृहाणैनं ततः खड्गमस्याश्छिन्धि शिरोऽम्बुजम्। एवमुक्त्वाऽथ चाण्डालो राज्ञे खड्गं न्यवेदयत्।८६

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे चाण्डालाज्ञया हरिश्चन्द्रस्यखड्गग्रहणवर्णनंनाम पञ्चविंशोऽध्यायः॥२५॥

* षड्विंशोऽध्यायः *

पुत्रार्थेहरिश्चन्द्रस्यविलापः पश्चाद्दम्पत्योर्मरणायोद्योगवर्णनम्

सूत उवाच

ततोऽथ भूपतिःप्राह राज्ञींस्थित्वाह्यधोमुखः। अत्रोपविश्यतांबालेपापस्यपुरतोमम ।१
शिरस्ते च्छेदयिष्यामि हन्तुं शक्नोतिचेत्करः। एवमुक्त्वासमुद्यम्यखड्गं हन्तुं गतो नृपः ।२
न जानाति नृपः पत्नीं सा न जानाति भूपतिम्। अब्रवीद् भृशदुःखार्तास्वमृत्युमभिकाङ्क्षती। ३

स्त्र्युवाच

चाण्डाल! शृणु मे वाक्यं किञ्चित्त्वं यदि मन्यसे। मृतस्तिष्ठति मे पुत्रो नाऽतिदूरे बहिः पुरात्। ४
तं दहामि हतंयावदानयित्वातवान्तिकम्। तावत्प्रतीक्ष्यतांपश्चादसिनाघातयस्वमाम्। ५
तेनाऽथबाढमित्युक्त्वाप्रेषिताबालकंप्रति। साजगामाऽतिदुखार्ताविलपन्तीसुदारुणम्। ६
भार्या तस्य नरेन्द्रस्य सर्पदष्टं हि बालकम्। हा पुत्र हा वत्सशिशोइत्येवंवदतीमुहुः। ७
कृशाविवर्णामलिनापांसुध्वस्तशिरोरुहा। श्मशानभूमिमागत्यबालंस्थाप्याविशद्भुवि। ८
"राजन्नद्य स्वबालं तं पश्यसीह महीतले। रममाणं स्वसखिभिर्दष्टंदुष्टाऽहिनामृतम्"
तस्या विलापशब्दं तमाकर्ण्य स नराधिपः। शवसन्निधिमागत्य वस्त्रमस्याक्षिपत्तदा। ९
तां तथा रुदतींभार्यांनाभिजानातिभूमिपः। चिरप्रवाससन्तप्तांपुनर्जातामिवाऽबलाम्। १०
साऽपि तं चारुकेशान्तं पुरो दृष्ट्वाजटालकम्। नाभ्यजानान्नृपवरंशुष्कवृक्षत्वचोपमम्। ११
भूमौ निपतितंबालं दृष्ट्वाऽऽशीविषपीडितम्। नरेन्द्रलक्षणोपेतमचिन्तयदसौ नृपः। १२
अस्य पूर्णेन्दुवद्वक्त्रं शुभमुन्नसमव्रणम्। दर्पणप्रतिमोत्तुङ्गकपोलयुगशोभितम् ।१३
नीलान्केशान्कुञ्चिताग्रान्सान्द्रान्दीर्घांस्तरङ्गिणः। राजीवसदृशे नेत्रे ओष्ठौ बिम्बफलोपमौ। १४
विशालवक्षा दीर्घाक्षो दीर्घबाहून्नतांसकः। विशालपादोगम्भीरःसूक्ष्माङ्गुल्यवनीधरः। १५
मृणालपादो गम्भीरनाभिरुद्धतकन्धरः। अहो कष्टं नरेन्द्रस्यकस्याऽप्येष कुले शिशुः। १६
जातो नीतः कृतान्तेन कालपाशाद् दुरात्मना।

सूत उवाच

एवं दृष्ट्वाऽथ तं बालं मातुरङ्के प्रसारितम् ।।१७।।
स्मृतिमभ्यागतो राजाहाहेत्यश्रूण्यपातयत्। सोऽप्युवाचचवत्सोमेदशामेतामुपागतः। १८
नीतो यदि च घोरेण कृतान्तेनाऽऽत्मनो वशम्। विचारयित्वा राजाऽसौहरिश्चन्द्रस्तथा स्थितः। १९
ततो राज्ञी महादुःखवेशादिदमभाषत।

राज्ञ्युवाच

हा वत्स! कस्य पापस्य त्वपध्यानादिदं महत् ।।२०।।
दुःखमापतितं घोरं तद्रूपं नोपलभ्यते। हा नाथ राजन्भवता मामपास्यसुदुःखिताम्। २१
कस्मिन्संस्थीयते स्थानेविश्रब्धंकेनहेतुना। राज्यनाशः सुहृत्त्यागोभार्यातनयविक्रयः। २२
हरिश्चन्द्रस्य राजर्षेः किंविधातः कृतं त्वया। इतितस्यावचःश्रुत्वाराजास्थानच्युतस्तदा। २३
प्रत्यभिज्ञाऽय देवीं तां पुत्रं च निधनं गतम्। कष्टंममैवपत्नीयंबालकश्चाऽपि मे सुतः। २४
ज्ञात्वापपात सन्तप्तो मूर्च्छामतिजगाम ह। सा चतंप्रत्यभिज्ञायतामवस्थामुपागतम्। २५
मूर्च्छिता निपपातार्ता निश्चेष्टा धरणीतले। चेतनां प्राप्यराजेन्द्रो राजपत्नीचतौसमम्। २६

विलेपतुः सुसन्तप्तौ शोकभारेण पीडितौ ।

राजोवाच

हा वत्स! सुकुमारं ते वदनं कुञ्चितालकम् ।।२७।।
पश्यतो मे मुखं दीनं हृदयं किं न दीर्यते। तात तातेति मधुरं ब्रुवाणं स्वयमागतम्।२८
उपगुह्य कदा वक्ष्ये वत्स वत्सेसि सौहृदात्। कस्य जानुप्रणीतेन पिङ्गेन क्षितिरेणुना।२९
ममोत्तरीयमुत्सङ्गं तथाङ्गं मलमेष्यति। न वाऽलं मम सम्भूतं मनो हृदयनन्दन।३०
"मयाऽसि पितृमान्पित्राविक्रीतोयेनवस्तुवत्।" गतंराज्यमशेषंमेसबान्धवधनंमहत्।
"हीनदैवानृशंसेन दृष्टो मे तनयस्ततः।" अहं महाहिदष्टस्य पुत्रस्याऽऽननपङ्कजम्।३१
निरीक्षन्नद्य घोरेण विषेणाऽधिकृतोऽधुना। एवमुक्त्वा तमादाय बालकं बाष्पगद्गदः।३२
परिष्वज्य च निश्चेष्टो मूर्च्छया निपपात ह। ततस्तं पतितंदृष्ट्वाशैव्याचैवमचिन्तयत्।३३
अयं स पुरुषव्याघ्रः स्वरेणैवोपलक्ष्यते। विद्वज्जनमनश्चन्द्रो हरिश्चन्द्रो न संशयः।३४
तथाऽस्य नासिका तुङ्गा तिलपुष्पोपमा शुभा। दन्ताश्च मुकुलप्रख्याः ख्यातकीर्तेर्महात्मनः।३५
श्मशानमागताः कस्माद्यद्येवं स नरेश्वरः। विहाय पुत्रशोकं सा पश्यन्तीपतितंपतिम्।३६
प्रहृष्टा विस्मता दीना भर्तृपुत्रार्तिपीडिता। वीक्षन्तीसातदाऽपप्तन्मूर्च्छयाधरणीतले।३७
प्राप्य चेतश्च शनकैः सा गद्गदमभाषत। धिक्त्वां दैव ह्यकरुण निर्मर्याद जुगुप्सित!।३८
येनायममरप्रख्यो नीतो राजा श्वपाकताम्। राज्यनाशं सुहृत्त्यागंभार्यातनयविक्रयम्।३९
प्रापयित्वाऽपियेनाऽद्य चाण्डालोऽयं कृतो नृपः। नाऽद्य पश्यामि ते छत्रं सिंहासनमथाऽपि वा।४०
चामरव्यजनेवाऽपि कोऽयंविधिविपर्ययः। यस्याऽस्यव्रजतःपूर्वंराजानोभृत्यतांगताः।४१
स्वोत्तरीयैः प्रकुर्वन्ति विरजस्कं महीतलम्। सोऽयं कपालसँल्लग्ने घटीपटनिरन्तरे।४२
मृतनिर्माल्यसूत्रान्तर्लग्नकेशसुदारुणे। वसानिष्पन्दसंशुष्कमहापटलमण्डिते।४३
भस्माङ्गारार्धदग्धास्थिमज्जासङ्घट्टभीषणे। गृध्रगोमायुनादार्ते पुष्टक्षुद्रविहङ्गमे।४४
चिताधूमायतपटेनीलीकृतदिगन्तरे। कुणपास्वादनमुदा सम्प्रकृष्टनिशाचरे।४५
चरत्यमेध्ये राजेन्द्रः श्मशानेदुःखपीडितः। एवमुक्त्वाऽथसंश्लिष्यकण्ठेराज्ञोनृपात्मजा।४६
कष्टंशोकसमाविष्टाविललापाऽऽर्तया गिरा। राजन्स्वप्नोऽथ तथ्यं वा यदेतन्मन्यते भवान्।४७
तत्कथ्यतां महाभाग मनो वै मुह्यते मम। यद्येतदेवं धर्मज्ञ! नास्ति धर्मे सहायता।४८
तथैव विप्रदेवादिपूजने सत्यपालने। नास्ति धर्मः कुतः सत्यं नार्जवं नाऽनृतांशता।४९
यत्र त्वं धर्मपरमः स्वराज्यादवरोपितः ।

सूत उवाच

इति तस्या वचः श्रुत्वा निःश्वस्योष्णं सगद्गदः ।।५०।।
कथयामास तन्वङ्ग्यै यथा प्राप्तःश्वपाकताम्। रुदित्वा सा तु सुचिरं निःश्वस्योष्णं सुदुःखिता।५१
स्वपुत्रमरणं भीरुर्यथावत्तं न्यवेदयत्। श्रुत्वा राजा तथा वाक्यं निपपात महीतले।५२
मृतपुत्रं समानीय जिह्वया विलिहन्मुहुः। हरिश्चन्द्रमथो प्राह शैव्या गद्गदया गिरा।५३
कुरुष्व स्वामिनः प्रेष्यं छेदयित्वा शिरो मम। स्वामिद्रोहो न तेऽस्त्वद्य माऽसत्यो भव भूपते!।५४
माऽसत्यंतवराजेन्द्रपरद्रोहस्तु पातकम्। एतदाकर्ण्य राजा तु पपात भुविमूर्च्छितः।५५
क्षणेन चेतनां प्राप्य विललापाऽतिदुःखितः ।

राजोवाच

कथं प्रिये! त्वया प्रोक्तं वचनं त्वतिनिष्ठुरम् ।।५६।।

यदशक्यं भवेद्वक्तुं तत्कर्म क्रियते कथम् ।

पत्न्युवाच

मया च पूजिता गौरी देवा विप्रास्तथैव च ।।५७।।

भविष्यसिपतिस्त्वंमेह्यन्यस्मिञ्जन्मनिप्रभो! । श्रुत्वाराजातदावाक्यंनिपपातमहीतले ।५८

मृतस्य पुत्रस्य तदा चुञ्चुम्ब दुःखितो मुखम् ।

राजोवाच

प्रिये! न रोचते दीर्घं कालं क्लेशं मयाऽशितुम् ।।५९।।

नात्मायत्तोऽहंतन्वङ्गिपश्यमेमन्दभाग्यताम् । चाण्डालेनाननुज्ञातःप्रवेक्ष्ये ज्वलनं यदि ।६०

चाण्डालदासतांयास्येपुनरप्यन्यजन्मनि । नरकञ्चवरम्प्राप्य खेदं प्राप्स्यामिदारुणम् ।६१

तापं प्राप्स्यामि सम्प्राप्य महारौरवरौरवे । मग्नस्यदुःखजलधौ वरम्प्राणैर्वियोजनम् ।६२

एकोऽपि बालको योऽयमासीद्वंशकरःसुतः । मम दैवानुयोगेन मृतः सोऽपि बलीयसा । ।६३

कथं प्राणान्विमुञ्चामि परायत्तोऽस्मि दुर्गतः । तथाऽपि दुःखबाहुल्यात्त्यक्ष्यामि तु निजां तनुम् ।६४

त्रैलोक्येनास्ति तद्दुःखं नासिपत्रवनेतथा । वैतरिण्यांकुतस्तद्वद्यादृशं पुत्रविप्लवे ।६५

सोऽहं सुतशरीरेण दीप्यमाने हुताशने । निपतिष्यामि तन्वङ्गि!क्षन्तव्यं तन्ममाऽधुना ।६६

न वक्तव्यंत्वयाकिंचिदतः कमललोचने । ममवाक्यञ्च तन्वङ्गि! निबोधाऽऽहतमानसा ।६७

अनुज्ञाताऽथ गच्छ त्वं विप्रवेश्मशुचिस्मिते । यदिदत्तंयदिहुतं गुरवोयदि तोषितोः ।६८

सङ्गमः परलोके मे निजपुत्रेण चेत्त्वया । इह लोके कुतस्त्वेतद्भविष्यति समीप्सितम् ।६९

यन्मयाहसता किंचिद्रहसित्वांशुचिस्मिते । अशेषमुक्तं तत्सर्वं क्षन्तव्यंममयास्यतः ।७०

राजपत्नीति गर्वेणनावज्ञेयः स मे द्विजः । सर्वयत्नेनतोष्यःस्यात्स्वामीदैवतवच्छुभे ।७१

राज्ञ्युवाच

अहमप्यत्र राजर्षे! निपतिष्ये हुताशने । दुःखभारासहादेव सह यास्यामि वै त्वया ।७२

त्वया सह मम श्रेयो गमनं नाऽन्यथा भवेत् । सह स्वर्गञ्च नरकं त्वया भोक्ष्यामि मानद! ।७३

श्रुत्वा राजा तदोवाच एवमस्तु पतिव्रते! ।।७४।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे हरिश्चन्द्रोपाख्याने राज्ञोहुताशनप्रवेशोद्योगवर्णनंनामषड्विंशोऽध्यायः ।।२६।।

* सप्तविंशोऽध्यायः *

हरिश्चन्द्रस्यधर्मपरीक्षोत्तरणवर्णनम्

सूत उवाच

ततः कृत्वा चितांराजाआरोप्यतनयंस्वकम् । भार्ययासहितो राजाबद्धाञ्जलिपुटस्तदा । १

चिन्तयन्परमेशानींशताक्षीं जगदीश्वरीम् । पञ्चकोशान्तरगतांपुच्छब्रह्मस्वरूपिणीम् । २

रक्ताम्बरपराधीनांकरुणारससागराम् । नानायुधधरामम्बां जगत्पालनतत्पराम् । ३

तस्यचिन्तयमानस्यसर्वेदेवाः सवासवाः । धर्मं प्रमुखतःकृत्वासमाजग्मुस्त्वरान्विताः । ४

आगत्य सर्वे प्रोचुस्ते राजञ्छृणुमहाप्रभो! । अहं पितामहःसाक्षाद्धर्मश्चभगवान्स्वयम् । ५

साध्या सविश्वे मरुतो लोकपालाः सचारणाः । नागाः सिद्धाः सगन्धर्वा रुद्राश्चैव तथाऽश्विनौ । ६

एते चान्येऽथबहवोविश्वामित्रस्तथैवच । विश्वत्रयेण योमैत्रीं कर्तुमिच्छतिधर्मतः ।७

विश्वामित्रः स तेऽभीष्टमाहर्तुं सम्यगिच्छति ।

धर्म उवाच

मा राजन्साहसं कार्षीर्धर्मोऽहं त्वामुपागतः ।।८।।

तितिक्षादमसत्त्वाद्यैस्त्वद्गुणैः परितोषितः ।

इन्द्र उवाच

हरिश्चन्द्र! महाभाग! प्राप्तःशक्रोऽस्मि तेऽन्तिकम् ।।९।।

त्वयाऽद्यभार्यापुत्रेणजितालोकास्सनातनाः ।आरोहत्रिदिवंराजन्भार्यापुत्रसमन्वितः।१०

सुदुष्प्रापं नरैरन्यैर्जितमात्मीयकर्मभिः ।

सूत उवाच

ततोऽमृतमयं वर्षमपमृत्युविनाशनम् ।।११।।

इन्द्रः प्रासृजदाकाशाच्चितामध्यगते शिशौ।पुष्पवृष्टिश्च महती दुन्दुभिस्वनएव च।१२

समुत्तस्थौमृतःपुत्रोराज्ञास्तस्य महात्मनः।सुकुमारतनुःस्वस्थः प्रसन्नःप्रीतमानसः।१३

ततोराजाहरिश्चन्द्रपरिष्वज्यसुतन्तदा ।सभार्यःस्वश्रियायुक्तोदिव्यमाल्याम्बरावृतः।१४

स्वस्थः सम्पूर्णहृदयो मुदा परमयावृतः।बभूव तत्क्षणादिन्द्रो भूपञ्चैवमभाषत।१५

सभार्यस्त्वं सपुत्रश्चस्वर्लोकं सद्गतिंपराम्।समारोहमहाभागनिजानांकर्मणांफलम्।१६

हरिश्चन्द्र उवाच

देवराजाननुज्ञातःस्वामिनाश्वपचेन हि।अकृत्वा निष्कृतिं तस्यनारोक्ष्येवैसुरालयम्।१७

धर्म उवाच

तवैवं भाविनं क्लेशमवगम्याऽऽत्ममायया।आत्माश्वपाचतांनीतोदर्शितंतच्चपक्वणम्।१८

इन्द्र उवाच

प्रार्थ्यतेयत्परंस्थानं समस्तैर्मनुजैर्भुवि।तदारोह हरिश्चन्द्र स्थानंपुण्यकृतांनृणाम्।१९

हरिश्चन्द्र उवाच

देवराज नमस्तुभ्यं वाक्यंचेदं निबोध मे।मच्छोकमग्नमनसः कोसले नगरे नराः।२०

तिष्ठन्ति तानपास्यैवं कथं यास्याम्यहंदिवम्।ब्रह्महत्यासुरापानंगोवधःस्त्रीवधस्तथा।२१

तुल्यमेभिर्महत्पापं भक्तत्यागादुदाहृतम्।भजन्तंभक्तमत्याज्यंत्यजतःस्यात्कथंसुखम्।२२

तैर्विना न प्रयास्यामितस्माच्छक्र! दिवंव्रज।यदितेसहिताःस्वर्गंमयायान्तिसुरेश्वर!।२३

ततोऽहमपि यास्यामि नरकं वाऽपि तैः सह ।

इन्द्रउवाच

बहूनि पुण्यपापानि तेषां भिन्नानि वै नृप! ।।२४।।

कथं सङ्घातभोज्यं त्वं भूप! स्वर्गमभीप्ससि ।

हरिश्चन्द्रउवाच

भुङ्क्तेशक्र! नृपो राज्यं प्रभावात्प्रकृतेर्ध्रुवम् ।।२५।।

यजते च महायज्ञैः कर्मपूर्तं करोति च।तच्च तेषां प्रभावेण मया सर्वमनुष्ठितम्।२६

उपदादान्न सन्त्यक्ष्येतानहंस्वर्गलिप्सया।तस्माद्यन्ममदेवेशकिञ्चिदस्तिसुचेष्टितम्।२७

दत्तमिष्टमथो जप्तं सामान्यं तैस्तदस्तु नः।बहुकालोपभोज्यं च फलंयन्ममकर्मगम्।२८

तदस्तु दिनमप्येकं तैः समं त्वत्प्रसादतः ।

सूत उवाच

एवं भविष्यतीत्युक्त्वा शक्रस्त्रिभुवनेश्वरः ।।२९।।

प्रसन्नचेता धर्मश्च विश्वामित्रश्च गाधिजः।गत्वा तु नगरं सर्वेचातुर्वर्ण्यसमाकुलम्।३०

हरिश्चन्द्रस्य निकटेप्रोवाचविबुधाधिपः।आगच्छन्तुजनाःशीघ्रं स्वर्गलोकंसुदुर्लभम्।३१

धर्मप्रसादात्सम्प्राप्तं सर्वैर्युष्माभिरेव तु।हरिश्चन्द्रोऽपि तान्सर्वाञ्जनान्नगरवासिनः।३२

प्राह राजा धर्मपरो दिवमारुह्यतामिति ।

सूत उवाच

तदिन्द्रस्य वचः श्रुत्वा प्रीतास्तस्य च भूपतेः ।।३३।।

ये संसारेषु निर्विण्णास्ते धुरं स्वसुतेषु वै। कृत्वा प्रहृष्टमनसो दिवमारुरुहुर्जनाः।३४

विमानवरमारूढाः सर्वे भास्वरविग्रहाः। तदा सम्भूतहर्षास्ते हरिश्चन्द्रश्च पार्थिवः।३५

राज्येऽभिषिच्य तनयं रोहिताख्यं महामनाः। अयोध्याख्ये पुरे रम्येहृष्टपुष्टजनान्विते।३६

तनयं सुहृदश्चापि प्रतिपूज्याऽभिनन्द्य च। पुण्येनलभ्यांविपुलांदेवादीनांसुदुर्लभाम् ।३७

सम्प्राप्य कीर्तिमतुलां विमाने स महीपतिः। आसाञ्चक्रे कामगमेक्षुद्रघण्टाविराजिते।३८

तत्स्तर्हि समालोक्यश्लोकमन्त्रंतदाजगौ। दैत्याचार्यो महाभागःसर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित्।३९

शुक्र उवाच

अहो तितिक्षामाहात्म्यमहोदानफलं महत्। यदागतोहरिश्चन्द्रोमहेन्द्रस्यसलोकताम्।४०

सूत उवाच

एतत्ते सर्वमाख्यातं हरिश्चन्द्रस्यचेष्टितम्। यःश्रृणोतिचदुःखार्तःससुखंलभतेऽन्वहम्।४१

स्वर्गार्थी प्राप्नुयात्स्वर्गं सुतार्थी सुतमाप्नुयात्। भार्यार्थी प्राप्नुयाद्भार्यां राज्यार्थी राज्यमाप्नुयात्।४२

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे हरिश्चन्द्राख्यानश्रवणफलवर्णनंनाम सप्तविंशोऽध्यायः ।।२७।।

* अष्टाविंशोऽध्यायः *

शताक्षीचरित्रवर्णनेतयादुर्गमाख्यदानवस्यवधवर्णनम्

जनमेजय उवाच

विचित्रमिदमाख्यानं हरिश्चन्द्रस्य कीर्तितम्। शताक्षीपादभक्तस्यराजर्षेर्धार्मिकस्यच।१

शताक्षी सा कुतो जातादेवी भगवती शिवा। तत्कारणं वद मुने सार्थकंजन्ममेकुरु।२

को हि देव्यागुणाञ्छृण्वंस्तृप्तिंयास्यतिशुद्धधीः ।

पदेपदेऽश्वमेधस्यफलमक्षय्यमश्नुते ।।३।।

व्यास उवाच

श्रृणु राजन्प्रवक्ष्यामि शताक्षीसम्भवं शुभम्। तवाऽवाच्यं न मे किञ्चिद्देवीभक्तस्य विद्यते।४

दुर्गमाख्यो महादैत्यः पूर्वं परमदारुणः। हिरण्याक्षाऽन्वये जातो रुरुपुत्रो महाखलः।५

देवानां तु बलं वेदो नाशे तस्य सुरा अपि। नङ्क्ष्यन्त्येवनसन्देहो विधेयंतावदेवतत्।६

विमृश्यैतत्तपश्चर्यां गतः कर्तुं हिमालये। ब्रह्माणं मनसा ध्यात्वावायुभक्षोव्यतिष्ठत।७

सहस्रवर्षपर्यन्तं चकार परमं तपः। तेजसा तस्य लोकास्तु सन्तप्ताः ससुरासुराः।८

ततः प्रसन्नो भगवान्हंसारूढश्चतुर्मुखः। ययौ तस्मै वरं दातुं प्रसन्नमुखपङ्कजः।९

समाधिस्थं मीलिताक्षं स्फुटमाह चतुर्मुखः। वरं वरय भद्रन्ते यत्ते मनसि वर्तते।१०

तवाऽद्य तपसा तुष्टो वरदेशोऽहमागतः। श्रुत्वाब्रह्ममुखाद्वाणींव्युथितः ससमाधितः।११

पूजयित्वा वरं वव्रेवेदान्देहि सुरेश्वर। त्रिषु लोकेषु ये मन्त्रा ब्राह्मणेषु सुरेष्वपि।१२

विद्यन्ते तेतु सान्निध्ये ममसन्तु महेश्वर। बलं च देहि येन स्याद्देवानां च पराजयः।१३

इति तस्य वचः श्रुत्वा तथाऽस्त्विवतिवचोवदन्। जगामसत्यलोकंतुचतुर्वेदेश्वरः परः।१४

ततः प्रभृति विप्रैस्तु विस्मृता वेदराशयः। स्नानसन्ध्यानित्यहोमश्राद्धयज्ञजपादयः।१५

विलुप्ता धरणीपृष्ठे हाहाकारो महानभूत्। किमिदं किमिदं चेतिविप्राऊचुः परस्परम्।१६

वेदाभावात्तदस्याभिः कर्तव्यं किमतः परम्। इति भूमौ महानर्थे जाते परमदारुणे।१७
निर्जराः सजरा जाता हविर्भागाद्यभावतः। रुरोध स तदा दैत्यो नगरीममरावतीम्।१८
अशक्तास्तेन ते योद्धुं वज्रदेहासुरेण च। पलायनं तदा कृत्वानिर्गतानिर्जराःक्वचित्।१९
निलयं गिरिदुर्गेषु रत्नसानुगुहासु च। संस्थिताः परमां शक्तिं ध्यायन्तस्ते पराम्बिकाम्।२०
अग्नौ होमाद्यभावात्तु वृष्ट्यभावोऽप्यभून्नृप। वृष्टेरभावे संशुष्कं निर्जलंचापिभूतलम्।२१
कूपवापीतडागाश्च सरितः शुष्कतां गताः। अनावृष्टिरियं राजन्नभूच्च शतवार्षिकी।२२
मृताः प्रजाश्च बहुधा गोमहिष्यादयस्तथा। गृहेगृहे मनुष्याणामभवच्छवसङ्ग्रहः।२३
अनर्थे त्वेवमुद्भूते ब्राह्मणाः शान्तचेतसः। गत्वाहिमवतः पार्श्वेरिराधयिषवः शिवाम्।२४
समाधिध्यानपूजाभिर्देवीं तुष्टुवुरन्वहम्। निराहारास्तदासक्तास्तामेव शरणं ययुः।२५
दयां कुरु महेशानि! पामरेषु जनेषु हि। सर्वापराधयुक्तेषुनैतच्छ्लाघ्यं तवाऽम्बिके।२६
कोपं संहर देवेशि! सर्वान्तर्यामिरूपिणि। त्वया यथा प्रेर्यतेऽयंकरोति सतथा जनः।२७
नान्यागतिर्जनस्याऽस्यकिंपश्यसिपुनः पुनः। यथेच्छसितथाकर्तुंसमर्थाऽसिमहेश्वरि ।२८
समुद्धर महेशानि! सङ्कटात्परमोत्थितात्। जीवनेन विनाऽस्माकं कथं स्यात्स्थितिरम्बिके!।२९
प्रसीदं त्वं महेशानि प्रसीद जगदम्बिके!। अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिके! ते नमो नमः।३०
नमः कूटस्वरूपायै चिद्रूपायै नमो नमः। नमो वेदान्तवेद्यायै भुवनेश्यै नमो नमः।३१
नेति नेतीति वाक्यैर्या बोध्यते सकलागमैः। तां सर्वकारणांदेवींसर्वभावेनसन्नताः ।३२
इति सम्प्रार्थिता देवी भुवनेशी महेश्वरी। अनन्ताक्षिमयं रूपं दर्शयामास पार्वती।३३
नीलाञ्जनसमप्रख्यं नीलपद्मायतेक्षणम्। सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनम् ।३४
बाणमुष्टिं च कमलं पुष्पपल्लवमूलकान्। शाकादीन्फलसंयुक्ताननन्तरससंयुतान्।३५
क्षुत्तृड्जरापहान्हस्तैर्बिभ्रती च महाधनुः। सर्वसौन्दर्यसारं तद्रूपं लावण्यशोभितम्।३६
कोटिसूर्यप्रतीकाशं करुणारससागरम्। दर्शयित्वा जगद्धात्री साऽनन्तनयनोद्भवा।३७
मोचयामास लोकेषु वारिधाराः सहस्रशः। नवरात्रं महावृष्टिरांभून्नेत्रोद्भवैर्जलैः।३८
दुःखितान्वीक्ष्य सकलान्नेत्राश्रूणि विमुञ्चती। तर्पितास्तेन ते लोका ओषध्यः सकला अपि।३९
नदीनदप्रवाहास्तैर्जलैः समभवन्नृप। निलीय संस्थिताः पूर्वं सुतास्ते निर्गता बहिः।४०
मिलित्वा ससुरा विप्रा देवीं समभितुष्टुवुः। नमो वेदान्तवेद्ये ते नमो ब्रह्मस्वरूपिणि!।४१
स्वमायया सर्वजगद्विधात्र्यै ते नमो नमः। भक्तकल्पद्रुमे! देवि! भक्तार्थं देहधारिणि।४२
नित्यतृप्तेनिरुपमे भुवनेश्वरि ते नमः। अस्मच्छान्त्यर्थमतुलं लोचनानां सहस्रकम्।४३
त्वया यतो धृतं देवि! शताक्षी त्वं ततो भव। क्षुधया पीडितामातः! स्तोतुंशक्तिर्नचाऽस्ति नः।४४
कृपां कुरु महेशानि! वेदानप्याहराऽम्बिके!।

व्यास उवाच

इति तेषां वचः श्रुत्वा शाकान्स्वकरसंस्थितान् ।।४५।।
स्वादूनि फलमूलानि भक्षणार्थं ददौ शिवा। नानाविधानि चाऽन्नानि पशुभोज्यानि यानि च।४६
काम्यानन्तरसैर्युक्तान्यानवीनोद्भवं ददौ। शाकम्भरीति नामाऽपि तद्दिनात्समभून्नृप।४७
ततः कोलाहलेजातेदूतवाक्येनबोधितः। ससैन्यः सायुधोयोद्धुंदुर्गमाख्योऽसुरोययौ।४८
सहस्राक्षौहिणी युक्तः शरान्मुचंस्त्वरान्वितः। रुरोध देवसैन्यं तद्यद्देव्यग्रेस्थितंपुरा।४९
तथा विप्रगणं चैव रोधयामास सर्वतः। ततः किलकिलाशब्दः समभूद्देवमण्डले।५०
त्राहि त्राहीतिवाक्यानि प्रोचुःसर्वेद्विजामरः। ततस्तेजोमयं चक्रंदेवानांपरितः शिवा।५१

चकाररक्षणार्थाय स्वयंतस्माद्बहिःस्थिता। ततः समभवद्युद्धंदेव्यादैत्यस्यचोभयोः।५२
शरवर्षसमाच्छन्नसूर्यमण्डलमद्भुतम् । परस्परशरोद्धर्षसमुद्भूताग्निसुप्रभम्।५३
कठोरज्याटणत्कारबधिरीकृतदिक्तटम् । ततो देवीशरीरात्तु निर्गतास्तीव्रशक्तयः।५४
कालिका तारिणी बाला त्रिपुर भैरवी रमा। बगला चैव मातङ्गी तथा त्रिपुरसुन्दरी।५५
कामाक्षी तुलजा देवीजम्भिनीमोहिनीतथा। छिन्नमस्तागुह्यकालीदशसाहस्रबाहुका।५६
द्वात्रिंशच्छक्तयश्चान्याश्चतुष्षष्टिमिताः पराः। असङ्ख्यातास्ततो देव्यः समुद्भूतास्तु सायुधाः।५७
मृदङ्गशङ्खवीणादिनादितं सङ्गरस्थलम्। शक्तिभिर्दैत्यसैन्ये तु नाशितेऽक्षौहिणीशते।५८
अग्रेसरः समभवद्दुर्गमो वाहिनीपतिः। शक्तिभिः सह युद्धं च चकार प्रथमं रिपुः।५९
महद्युद्धं समभवद्यत्राऽभूद्रक्तवाहिनी। अक्षौहिण्यस्तु ताः सर्वाविनष्टा दशभिर्दिनैः।६०
तत एकादशे प्राप्ते दिने परमदारुणे। रक्तमाल्याम्बरधरो रक्तगन्धानुलेपनः।६१
कृत्वोत्सवं महान्तं तु युद्धाय रथसंस्थितः। संरम्भेणैवमहताशक्तिःसर्वाविजित्यच।६२
महादेवीरथाग्रे तु स्वरथं संन्यवेशयत्। ततोऽभवन्महद्युद्धं देव्या दैत्यस्य चोभयोः।६३
प्रहरद्वयपर्यन्तं हृदयत्रासकारकम्। ततः पञ्चदशात्युग्रबाणान्देवी मुमोच ह।६४
चतुर्भिश्चतुरो वाहान्बाणेनैकेन सारथिम्। द्वाभ्यां नेत्रेभुजौद्वाभ्यांध्वजमेकेनपत्रिणा।६५
पञ्चभिर्हृदयं तस्य विव्याध जगदम्बिका। ततो वमन्स रुधिरं ममार पुर ईशितुः।६६
तस्य तेजस्तु निर्गत्य देवीरूपेविवेश ह। हतेतस्मिन्महावीर्येशान्तमासीज्जगत्त्रयम्।६७
ततो ब्रह्मादयः सर्वे तुष्टुवुर्जगदम्बिकाम्। पुरस्कृत्य हरीशानौभक्त्यागद्गदयागिरा।६८

देवा ऊचुः

जगद्भ्रमविवर्तैककारणे परमेश्वरि!। नमः शाकम्भरि शिवे! नमस्ते! शतलोचने!।६९
सर्वोपनिषदुद्घुष्टे! दुर्गमासुरनाशिनी!। नमो मायेश्वरिशिवे! पञ्चकोशान्तरस्थिते।७०
चेतसा निर्विकल्पेन यांध्यायन्तिमुनीश्वराः। प्रणवार्थस्वरूपांतांभजामोभुवनेश्वरीम्।७१
अनन्तकोटिब्रह्माण्डजननीं दिव्यविग्रहाम। ब्रह्मविष्ण्वादिजननींसर्वभावैर्नतावयम्।७२
कः कुर्यात्पामरान्दृष्ट्वा रोदनं सकलेश्वरः। सदयां परमेशानीं शताक्षीं मातरं विना।७३

व्यास उवाच

इतिस्तुतासुरैर्देवीब्रह्माविष्ण्वादिभिर्वरैः। पूजिताविविधैर्द्रव्यैःसन्तुष्टाऽभूच्चतत्क्षणे।७४
प्रसन्ना सा तदा देवी वेदानाहृत्यसा ददौ। ब्राह्मणेभ्योविशेषेणप्रोवाचपिकभाषिणी।७५
ममेयं तनुरुत्कृष्टा पालनीया विशेषतः। यया विनाऽनर्थ एषजातो दृष्टोऽधुनैव हि।।७६
पूज्याऽहं सर्वदासेव्यायुष्माभिः सर्वदैवहि। नातःपरतरंकिञ्चित्कल्याणायोपदिश्यते।७७
पठनीयं ममैतद्धि माहात्म्यं सर्वदोत्तमम्। तेनतुष्टाभविष्यामिहरिष्यामितथाऽऽपदः।७८
दुर्गमासुरहन्त्रीत्वाद्दुर्गेति ममनाम यः। गृह्णातिशताक्षीतिमायांभित्त्वाव्रजत्यसौ।७९
किमुक्ते नाऽत्र बहुना सारंवक्ष्यामितत्त्वतः। संसेव्याऽहं सदादेवाः सर्वैरपिसुरासुरैः।८०

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाऽन्तर्हितादेवी देवानांचैवपश्यताम्। सन्तोषंजनयन्त्येवंसच्चिदानन्दरूपिणी ।८१
एतत्ते सर्वमाख्यातं रहस्यं परमं महत्। गोपनीयं प्रयत्नेन सर्वकल्याणकारकम्।८२
य इमं शृणुयान्नित्यमध्यायं भक्तितत्परः। सर्वान्कामानवाप्नोति देवीलोके महीयते।८३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे शताक्षीचरित्रवर्णनंनामाऽष्टाविंशोऽध्यायः।।२८।।

* एकोनत्रिंशोऽध्यायः *

पराशक्तेःसर्वोत्कृष्टत्ववर्णनम्

व्यास उवाच

इत्येवं सूर्यवंश्यानां राज्ञां चरितमुत्तमम्। सोमवंशोद्भवानां च वर्णनीयं मयाकियत्।१
पराशक्तिप्रसादेन महत्त्वंप्रतिपेदिरे। राजन्सुनिश्चितं विद्धि पराशक्तिप्रसादतः।२
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेववा। तत्तदेवाऽवगच्छ त्वं पराशक्त्यंशसम्भवम्।३
एते चाऽन्ये च राजानः पराशक्तेरुपासकाः। संसारतरुमूलस्य कुठारा अभवन्नृप।४
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन संसेव्या भुवनेश्वरी। पलालमिव धान्यार्थी त्यजेदन्यमशेषतः।५
आमथ्य वेददुग्धाब्धिं प्राप्तं रत्नंमया नृप!। पराशक्तिपदाम्भोजंकृतकृत्योऽस्म्यहंततः।६
पञ्चब्रह्मासनारूढा नास्त्यन्या काऽपि देवता। तत एव महादेव्या पञ्चब्रह्मासनंकृतम्।७
पञ्चभ्यस्त्वधिकं वस्तु वेदेऽव्यक्तमितीर्यते। यस्मिन्नोतं च प्रोतंचसैवश्रीभुवनेश्वरी।८
तामविज्ञाय राजेन्द्र! नैवमुक्तो भवेन्नरः। यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः।९
तदा शिवामविज्ञाय दुःखस्याऽन्तोभविष्यति। अतएवश्रुतौ प्राहुःश्वेताश्वतरशाखिनः।१०
ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढाम्।।११।।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन जन्मसाफल्यहेतवे। लज्जया वा भयेनाऽपि भक्त्या वा प्रेमयुक्तया
सर्वसङ्गं परित्यज्य मनो हृदि निरुध्य च।।१२।।
तन्निष्ठस्तत्परो भूयादितिवेदान्तडिण्डिमः। येनकेनमिषेणापिस्वपंस्तिष्ठन्व्रजन्नपि ।१३
कीर्तयेत्सततं देवीं सवै मुच्येत बन्धनात्। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन भज राजन्महेश्वरीम्।१४
विराड्रूपां सूत्ररूपां तथाऽन्तर्यामिरूपिणीम् ।
सोपानक्रमतः पूर्वंततः शुद्धेतुचेतसि ।।१५।।
सच्चिदानन्दलक्ष्यार्थरूपां तांब्रह्मरूपिणीम्। आराधयपरांशक्तिंप्रपञ्चोल्लासवर्जिताम्।१६
तस्यां चित्तलयोयःसतस्याआराधनं स्मृतम्। राजन्राज्ञांपराशक्तिभक्तानांचरितंमया ।१७
धार्मिकाणांसूयसोमवंशजानांमनस्विनाम्। पावनं कीर्तिदं धर्मबुद्धिदं सद्गतिप्रदम्।१८
कथितं पुण्यदं पश्चात्किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।

जनमेजय उवाच

गौरीलक्ष्मीसरस्वत्यो दत्ताः पूर्वं पराम्बया ।।१९।।
हराय हरये तद्वन्नाभिपद्मोद्भवाय च। तुषाराद्रेश्च दक्षस्य गौरी कन्येति विश्रुतम्।२०
क्षीरोदधेश्च कन्येतिमहालक्ष्मीरितिस्मृतम्। मूलदेव्युद्भवानाञ्चकथंकन्यात्वमन्ययोः।२१
असम्भाव्यंमिदं भाति संशयोऽत्रमहामुने!। छिन्धिज्ञानासिनातंत्वंसंशयच्छेदतत्परः।२२

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि रहस्यम्परमाद्भुतम्। देवीभक्तस्य ते किञ्चिदवाच्यं नहिविद्यते।२३
देवीत्रयं यदा देवत्रयायादात्पराम्बिका। तदाप्रभृति ते देवाः सृष्टिकार्याणि चक्रिरे।२४
कस्मिंश्चित्समये राजन्दैत्या हालाहलाभिधाः। महापराक्रमा जातास्त्रैलोक्यं तैर्जितं क्षणात्।२५
ब्रह्मणो वरदानेन रजताचलम्। रुरुधुर्निजसेनाभिस्तथा वैकुण्ठमेव च।२६
कामारिः कैटभारिश्च युद्धोद्योगञ्च चक्रतुः। षष्टिवर्षसहस्राणामभूद्युद्धं महोत्कटम्।२७

हाहाकारो महानासीद्देवदानवसेनयोः। महताऽथ प्रयत्नेन ताभ्यां ते दानवा हताः।२८
स्वस्वस्थानेषु गत्वा तावभिमानं च चक्रतुः। स्वशक्त्योर्निकटे राजन्यद्वशादेवतेहताः।२९
अभिमानं तयोर्ज्ञात्वाच्छलहास्यञ्चचक्रतुः। महालक्ष्मीश्चगौरीचहास्यंदृष्ट्वातयोस्तुतौ।३०
देवावतीव संक्रुद्धौ मोहितावादिमायया। दुरुत्तरं च ददतुरवमानपुरःसरम्।३१
ततस्तेदेवतेतस्मिन्क्षणेत्यक्त्वातुतौपुनः। अन्तर्हितेचाऽभवतांहाहाकारस्तदाह्यभूत्।३२
निस्तेजस्कौचनिः शक्तीविक्षिप्तौचविचेतनौ। अवमानात्तयोःशक्त्योर्जातौहरिहरौतदा।३३
ब्रह्मा चिन्तातुरोजातः किमेतत्समुपस्थितम्। प्रधानौ देवतामध्ये कथं कार्या क्षमावमू।३४
अकाण्डे किन्निमित्तेनसङ्कटेसमुपस्थितम्। प्रलयोभविताकिंवाजगतोऽस्यनिरागसः।३५
निमित्तं नैव जानेऽहंकथंकार्याप्रतिक्रिया। इतिचिन्तातुरोऽत्यर्थंदध्यौमीलितलोचनः।३६
पराशक्तिप्रकोपात्तु जातमेतदिति स्म ह। जानंस्तदा सावधानः पद्मजोऽभून्नृपोत्तम।३७
ततस्तयोश्च यत्कार्यं स्वयमेवाऽकरोत्तदा। स्वशक्तेश्चप्रभावेणकियत्कालंतपोनिधिः।३८
ततस्तयोस्तु स्वस्त्यर्थं मन्वादीन्स्वसुतानथ। आह्वयामास धर्मात्मा सनकादींश्च सत्वरः।३९
उवाच वचनं तेभ्यः सन्नतेभ्यस्तपोनिधिः। कार्यासक्तोहमधुना तपः कर्तुंनचक्षमः।४०
पराशक्तेस्तु तोषार्थं जगद्धारयुतोऽस्म्यहम्। शिवविष्णूचविक्षिप्तौपराशक्तिप्रकोपतः।४१
तस्मात्तां परमां शक्तिं यूयं सन्तोषयन्त्वथ। अत्यद्भुतं तपः कृत्वाभक्त्यापरमयायुताः।४२
यथा तौ पूर्ववृत्तौ च स्यातां शक्तियुतावपि। तथाकुरुतमत्पुत्रायशोवृद्धिर्भवेद्धिवः ।४३
कुले यस्य भवेज्जन्मतयोः शक्त्योस्तुतत्कुलम्। पावयेज्जगतींसर्वांकृतकृत्यंस्वयंभवेत् ।४४

व्यास उवाच

पितामहवचः श्रुत्वा गताः सर्वे वनान्तरे। रिराधयिषवः सर्वे दक्षाद्या विमलान्तराः।४५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे भगवतींसमाराधयिषूणांदेवानांतपःकरणवर्णनंनामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥२९॥

त्रिंशोऽध्यायः

गौरीजन्मपीठस्थानशिवविभ्रान्तिवर्णनम्

व्यास उवाच

ततस्ते तु वनोद्देशे हिमाचलतटाश्रयाः। मायाबीजजपासक्तास्तपश्चेरुः समाहिताः।१
ध्यायतां परमां शक्तिं लक्षवर्षाण्यभून्नृप। ततः प्रसन्ना देवी सा प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ।२
पाशाङ्कुशवराभीतिचतुर्बाहुस्त्रिलोचना। करुणारससम्पूर्णा सच्चिदानन्दरूपिणी।३
दृष्ट्वा तां सर्वजननीं तुष्टवुर्मुनयोऽमलाः। नमस्ते विश्वरूपायै वैश्वानरसुमूर्तये।४
नमस्तेजसरूपायै सूत्रात्मवपुषे नमः। यस्मिन्सर्वे लिङ्गदेहा ओतप्रोता व्यवस्थिताः।५
नमः प्राज्ञस्वरूपायै नमोऽव्याकृतमूर्तये। नमः प्रत्यक्स्वरूपायै नमस्ते ब्रह्ममूर्तये।६
नमस्ते सर्वरूपायै सर्वलक्ष्यात्ममूर्तये। इति स्तुत्वा जगद्धात्रीं भक्तिगद्गदया गिरा।७
प्रणेमुश्चरणाम्भोजं दक्षाद्या मुनयोऽमलाः। ततः प्रसन्नासा देवी प्रोवाचपिकभाषिणी।८
वरं ब्रूत महाभागा वरदाऽहं सदामता। तस्यास्तुवचनंश्रुत्वाहरविष्ण्वोस्तनोःशमम्।९
तयोस्तच्छक्तिलाभं च वव्रिरे नृपसत्तम। दक्षोऽथ पुनरप्याह जन्म देवि! कुले मम।१०
भवेत्तवाऽम्ब येनाऽहं कृतकृत्यो भवे इति। जपंध्यानंतथापूजांस्थानानिविविधानिच।११

वद मे परमेशानि! स्वमुखेनैव केवलम् ।

देव्युवाच

मच्छक्त्योरवमानाच्च जाताऽवस्था तयोर्द्वयोः ।।१२।।

नैतादृशः प्रकर्तव्यो मेऽपराधः कदाचन। अधुना मत्कृपालेशाच्छरीरे स्वस्थतातयोः।१३
भविष्यति च तेशक्तीत्वद्गृहेक्षीरसागरे। जनिष्यतस्तत्रताभ्यांप्राप्स्यतःप्रेरिते मया।१४
मायाबीजं हि मन्त्रो मे मुख्यः प्रियकरः सदा। ध्यानं विराट्स्वरूपं मेऽथवा त्वत्पुरतः स्थितम्।१५
सच्चिदानन्दरूपम्वा स्थानं सर्वं जगन्मम। युष्माभिः सर्वदाचाऽहंपूज्याध्येयाचसर्वदा।१६

व्यास उवाच

इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवी मणिद्वीपाधिवासिनी। दक्षाद्यामुनयःसर्वे ब्रह्माणं पुनराययुः।१७
ब्रह्मणे सर्ववृत्तान्तं कथयामासुरा दरात्। हरोहरिश्चस्वस्थौतौस्वस्वकार्यक्षमनृपौ ।१८
जातौ पराम्बाकृपया गर्वेण रहितौ तदा। कदाचिदथ काले तु महः शाक्तमवातरत्।१९
दक्षगेहे महाराज त्रैलोक्येऽप्युत्सवोऽभवत्। देवाः प्रमुदिताः सर्वेपुष्पवृष्टिञ्च चक्रिरे।२०
नेदुर्दुन्दुभयः स्वर्गे करकोणाहता नृप!। मनांस्यासन्प्रसन्नानिसाधूनाममलात्मनाम्।२१
सरितोमार्गवाहिन्यः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः। मङ्गलायान्तु जातायां जातं सर्वत्रमङ्गलम्।२२
तस्या नाम सतीञ्चक्रे सत्यत्वात्परसम्विदः। ददौ पुनः शिवायाऽथ तस्य शक्तिस्तु याऽभवत्।२३

सा पुनर्ज्वलने दग्धा दैवयोगान्मनोर्नृप! ।

जनमेजय उवाच

अनर्थकरमेतत्ते श्रावितं वचनं मुने! ।।२४।।

एतादृशं महद्वस्तु कथं दग्धं हुताशने। यन्नामस्मरणान्नृणां संसाराऽग्निभयं न हि।२५

केन कर्मविपाकेन मनोर्दग्धं तदेव हि ।

व्यास उवाच

शृणु राजन्पुरावृत्तं सतीदाहस्य कारणम् ।।२६।।

कदाचिदथ दुर्वासागतो जाम्बूनदेश्वरीम्। ददर्श देवीं तत्राऽसौमायाबीजंजजापसः।२७
ततः प्रसन्ना देवेशी निजकण्ठगतांस्रजम्। भ्रमद्भ्रमरसंसक्तां मकरन्दमदाकुलाम्।२८
ददौ प्रसादभूतां तां जग्राह शिरसामुनिः। ततो निर्गत्य तरसा व्योममार्गेणतापसः।२९
आजगाम सयत्राऽऽस्तेदक्षः साक्षात्सतीपिता। सन्दर्शनार्थमम्बाया ननाम च सतीपदे।३०
पृष्ठोदक्षेणसमुनिर्मालाकस्यास्त्यलौकिकी। कथंलब्धात्वयानाथदुर्लभाभुविमानवैः ।३१
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य प्रोवाचाऽश्रुयुतेक्षणः। देव्याः प्रसादमतुलं प्रेमगद्गदितान्तरः।३२
प्रार्थयामास तां मालांतंमुनिंससतीपिता। अदेयंशक्तिभक्तायनास्तित्रैलोक्यमण्डले।३३
इति बुद्ध्या तु तां मालां मनवेस समर्पयत्। गृहीताशिरसामालामनुनानिजमन्दिरे।३४
स्थापिताशयनंयत्र दम्पत्योरतिसुन्दरम्। पशुकर्मरतोरात्रौ मालागन्धेन मोदितः।३५
अभवत्स महीपालस्तेन पापेन शङ्करे। शिवे द्वेषमतिर्जातो देव्यां सत्यां तथा नृप!।३६
राजंस्तेनाऽपराधेन तज्जन्यो देहएव च। सत्या योगाऽग्निनादग्धः सतीधर्मदिदृक्षया।३७

पुनश्च हिमवत्पृष्ठे प्रादुरासीत्तु तन्महः ।

जनमेजय उवाच

दह्यमाने सतीदेहे जाते किमकरोच्छिवः ।।३८।।

प्राणाधिका सती तस्य तद्वियोगेन कातरः ।

व्यास उवाच

ततः परं तु यज्जातं मया वक्तुं न शक्यते ।।३९।।

त्रैलोक्यप्रलयो जातः शिवकोपाग्निना नृप! । वीरभद्रः समुत्पन्नोभद्रकालीगणान्वितः ।४०

त्रैलोक्यनाशनोद्युक्तो वीरभद्रो यदाऽभवत् । ब्रह्मादयस्तदा देवा शङ्करं शरणं ययुः ।४१

जाते सर्वस्वनाशेऽपिकरुणानिधिरीश्वरः । अभयंदत्तवांस्तेभ्यो वस्तवक्त्रेणतंमनुम् ।४२

अजीवयन्महात्माऽसौ ततः खिन्नो महेश्वरः । यज्ञवाटमुपागम्य रुरोद भृशदुःखितः ।४३

अपश्यत्तांसतींवह्नौदह्यमानांतुचित्कलाम् । स्कन्धेऽप्यारोपयामासहासतीतिवदन्मुहुः ।४४

बभ्रामभ्रान्तचित्तः सन्नानादेशेषु शङ्करः । तदा ब्रह्मादयो देवाश्चिन्तामापुरनुत्तमाम् ।४५

विष्णुस्तु त्वरया तत्र धनुरुद्यम्य मार्गणैः । चिच्छेदाऽवयवान्सत्यास्तत्तत्स्थानेषु तेऽपतन् ।४६

तत्तत्स्थानेषु तत्रासीन्नानामूर्तिधरो हरः । उवाचचततो देवान्स्थानेष्वेतेषुयेशिवाम् ।४७

भजन्तिपरया भक्त्यातेषां किञ्चन्नदुर्लभम् । नित्यंसन्निहिता यत्र निजाङ्गेषुपराम्बिका ।४८

स्थानेष्वेतेषुयेमर्त्याः पुरश्चरणकर्मिणः । तेषांमन्त्राः प्रसिध्यन्तिमायाबीजम्विशेषतः ।४९

इत्युक्त्वा शङ्करस्तेषु स्थानेषुविरहातुरः । कालं निन्येनृपश्रेष्ठ! जपध्यानसमाधिभिः ।५०

जनमेजय उवाच

यानि स्थानानि तानि स्युः सिद्धपीठानि चाऽनघ! ।

कतिसंख्यानि नामानि कानि तेषां च मे वद? ।।५१।।

तत्र स्थितानां देवीनां नामानिच कृपाकर! । कृतार्थोऽहं भवे येन तद्वदाशु महामुने ।५२

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि देवीपीठानि साम्प्रतम् । येषांश्रवणमात्रेण पापहीनो भवेन्नरः ।५३

येषुयेषुचपीठेषुपास्येयंसिद्धिकाङ्क्षिभिः । भूतिकामैरभिध्येयातानिवक्ष्यामितत्त्वतः ।५४

वाराणस्यां विशालाक्षी गौरीमुखनिवासिनी । क्षेत्रे वै नैमिषारण्ये प्रोक्ता सा लिङ्गधारिणी ।५५

प्रयागे ललिता प्रोक्ता कामुकी गन्धमादने । मानसे कुमुदा प्रोक्ता दक्षिणेचोत्तरेतथा ।५६

विश्वकामा भगवती विश्वकामप्रपूरिणी । गोमन्ते गोमती देवी मन्दरेकामचारिणी ।५७

मदोत्कटा चैत्ररथे जयन्ती हस्तिनापुरे । गौरी प्रोक्ता कान्यकुब्जेरम्भातुमलयाचले ।५८

एकाम्रपीठे सम्प्रोक्तादेवी साकीर्तिमत्यपि । विश्वेविश्वेश्वरीं प्राहुः पुरुहूताञ्चपुष्करे ।५९

केदारपीठे सम्प्रोक्ता देवीसन्मार्गदायिनी । मन्दा हिमवतः पृष्ठे गोकर्णेभद्रकर्णिका ।६०

स्थानेश्वरी भवानी तु बिल्वकेबिल्वपत्रिका । श्रीशैलेमाधवीप्रोक्ताभद्राभद्रेश्वरेतथा ।६१

वराहशैले तु जया कमला कमलालये । रुद्राणी रुद्रकोट्यां तु काली कालञ्जरे तथा ।६२

शालग्रामे महादेवी शिवलिङ्गे जलप्रिया । महालिङ्गे तु कपिला माकोटेमुकुटेश्वरी ।६३

मायापुर्यां कुमारी स्यात्सन्ताने ललिताम्बिका ।

गयायां मङ्गला प्रोक्ता विमला पुरुषोत्तमे ।।६४।।

उत्पलाक्षी सहस्राक्षे हिरण्याक्षे महोत्पला । विपाशायाममोघाक्षीपाडला पुण्ड्रवर्धने ।६५

नारायणी सुपार्श्वे तु त्रिकूटेरुद्रसुन्दरी । विपुलेविपुला देवी कल्याणीमलयाचले ।६६

सह्याद्रावेकवीरा तु हरिश्चन्द्रे तु चन्द्रिका । रमणा रामतीर्थे तु यमुनायां मृगावती ।६७

कोटवी कोटतीर्थे तु सुगन्धा माधवे वने । गोदावर्यांत्रिसन्ध्यातुगङ्गाद्वारेरतिप्रिया ।६८

शिवकुण्डे शुभा नन्दा नन्दिनी देविकातटे । रुक्मिणी द्वारवत्या तुराधावृन्दावनेवने ।६९

देवकी मथुरायां तु पातालेपरमेश्वरी। चित्रकूटेतथासीताविन्ध्येविन्ध्याधिवासिनी।७०
करवीरे महालक्ष्मीरुमादेवी विनायके। आरोग्या वैद्यनाथे तु महाकाले महेश्वरी।७१
अभयेत्युष्णतीर्थेषु नितम्बा विन्ध्यपर्वते। माण्डव्येमाण्डवीनामस्वाहामाहेश्वरीपुरे ।७२
छगलण्डे प्रचण्डा तु चण्डिकाऽमरकण्टके। सोमेश्वरे वरारोहा प्रभासे पुष्करावती।७३
देवमाता सरस्वत्यां पारावारा तटे स्मृता। महालये महाभागापयोष्ण्यांपिङ्गलेश्वरी।७४
सिंहिका कृतशौचे तु कार्त्तिके त्वतिशाङ्करी। उत्पलावर्तके लोलासुभद्राशोणसङ्गमे।७५
माता सिद्धवने लक्ष्मीरनङ्गा भरताश्रमे। जालन्धरे विश्वमुखी तारा किष्किन्धपर्वते।७६
देवदारुवने पुष्टिर्मेधा काश्मीरमण्डले। भीमादेवी हिमाद्रौ तु तुष्टिर्विश्वेश्वरी तथा।७७
कपालमोचने शुद्धिर्माता कायावरोहणे। शङ्खोद्धारे धरा नाम धृतिः पिण्डारके तथा।७८
कला तु चन्द्रभागायामच्छोदे शिवधारिणी। वेणायाममृता नाम बदर्यामुर्वशी तथा।७९
औषधिश्चोत्तरकुरौ कुशद्वीपे कुशोदका। मन्मथा हेमकूटे तु कुमुदे सत्यवादिनी।८०
अश्वत्थे वन्दनीया तु निधिर्वैश्रवणालये। गायत्री वेदवदने पार्वती शिवसन्निधौ।८१
देवलोके तथेन्द्राणी ब्रह्मास्येषु सरस्वती। सूर्यबिम्बे प्रभा नाम मातृणांवैष्णवीमता।८२
अरुन्धती सतीनां तु रामासु च तिलोत्तमा। चित्ते ब्रह्मकला नाम शक्तिः सर्वशरीरिणाम्।८३
इमान्यष्टशतानिस्युःपीठानिजनमेजय! । तत्संख्याकास्तदीशान्योदेव्यश्चपरिकीर्तिताः।८४
सतीदेव्यङ्गभूतानि पीठानि कथितानि च। अन्यान्यपि प्रसङ्गेन यानिमुख्यानिभूतले।८५
यः स्मरेच्छृणुयाद्वाऽपि नामाष्टशतमुत्तमम्। सर्वपापविनिर्मुक्तो देवलोकं परं व्रजेत्।८६
एतेषु सर्वपीठेषु गच्छेद्यात्राविधानतः। सन्तर्पयेच्च पित्रादीञ्छ्राद्धादीनि विधाय च।८७
कुर्याच्च महतीं पूजां भगवत्या विधानतः। क्षमापयेज्जगद्धात्रीं जगदम्बां मुहुर्मुहुः।८८
कृतकृत्यंस्वमात्मानंजानीयाज्जनमेजय । भक्ष्यभोज्यदिभिःसर्वान्ब्रह्मणान्भोजयेत्ततः।८९
सुवासिनीः कुमारीश्च बटुकादींस्तथा नृप!। तस्मिन्क्षेत्रे स्थिता ये तु चाण्डालाद्या अपि प्रभो!।९०
देवरूपाः स्मृताः सर्वे पूजनीयास्ततो हि ते। प्रतिग्रहादिकं सर्वं तेषु क्षेत्रेषु वर्जयेत्।९१
यथाशक्ति पुरश्चर्यां कुर्यान्मन्त्रस्यसत्तमः। मायाबीजेनदेवेशींतत्तत्पीठाधिवासिनीम्।९२
पूजयेदनिशं राजन्पुरश्चरणकृद्भवेत्। वित्तशाठ्यं न कुर्वीत देवीभक्तिपरो नरः।९३
य एवं कुरुते यात्रां श्रीदेव्याः प्रीतमानसः। सहस्रकल्पपर्यन्तं ब्रह्मलोके महत्तरे।९४
वसन्ति पितरस्तस्य सोऽपिदेवीपुरेतथा। अन्तेलब्ध्वापरंज्ञानंभवेन्मुक्तोभवाम्बुधेः।९५
नामाऽष्टशतजापेनबहवः सिद्धतां गताः। यत्रैतल्लिखितं साक्षात्पुस्तकेवाऽपितिष्ठति।९६
ग्रहमारीभयादीनि तत्र नैव भवन्ति हि। सौभाग्यं वर्धते नित्यं यथापर्वणिवारिधिः।९७
न तस्य दुर्लभं किञ्चिन्नामाऽष्टशतजापिनः। कृतकृत्यो भवेन्नूनं देवीभक्तिपरायणः।९८
नमन्ति देवतास्तं वै देवीरूपो हि स स्मृतः। सर्वथा पूज्यते देवै किं पुनर्मनुजोत्तमैः।९९
श्राद्धकाले पठेदेतन्नामाष्टशतमुत्तमम्। तृप्तास्तत्पितरः सर्वे प्रयान्ति परमां गतिम्।१००
इमानि मुक्तिक्षेत्राणिसाक्षात्संविन्मयानिच। सिद्धपीठानिराजेन्द्रसंश्रयेन्मतिमान्नरः ।१०१
पृष्टं यत्तत्त्वया राजन्नुक्तंसर्वंमहेशितुः। रहस्याऽतिरहस्यं च किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।१०२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे देवीपीठवर्णनंनाम त्रिंशोऽध्यायः ॥३०॥

* एकत्रिंशोऽध्यायः *

हिमालयगृहेपार्वतीजन्मविषयेदेव्याकथनवर्णनम्

जनमेजय उवाच

धराधराधीशमौलावाविरासीत्परं महः। यदुक्तं भवता पूर्वं विस्तरात्तद्वदस्व मे। १
को विरज्येत मतिमान्पिबञ्छक्तिकथामृतम्। सुधां तु पिबतां मृत्युः स नैतच्छृण्वतो भवेत्। २

व्यास उवाच

धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि शिक्षितोऽसि महात्मभिः।
भाग्यवानसि यद्देव्यां निर्व्याजा भक्ति रस्ति ते ॥३॥

शृणु राजन्पुरा वृत्तं सतीदेहेऽग्निभर्जिते। भ्रान्तः शिवस्तुबभ्रामक्वचिद्देशेस्थिरोऽभवत्। ४
प्रपञ्चभानरहितः समाधिगतमानसः। ध्यायन्देवीस्वरूपं तु कालं निन्येसआत्मवान्। ५
सौभाग्यरहितं जातं त्रैलोक्यं सचराचरम्। शक्तिहीनंजगत्सर्वंसाब्धिद्वीपंसपर्वतम्। ६
आनन्दः शुष्कतां यातः सर्वेषां हृदयान्तरे। उदासीनाः सर्वलोकाश्चिन्ताजर्जरचेतसः। ७
सदादुःखोदधौमग्ना रोगग्रस्तास्तदाऽभवन्। ग्रहाणां देवतानांचवैपरीत्येनवर्तनम्। ८
अधिभूताधिदैवानां सत्यभावान्नृपाऽभवन्। अथाऽस्मिन्नेव काले तु तारकाख्यो महासुरः। ९
ब्रह्मदत्तवरो दैत्योऽभवत्त्रैलोक्यनायकः। शिवौरसस्तु यः पुत्रः सतेहन्ताभविष्यति। १०
इति कल्पितमृत्युः स देवदेवैर्महासुरः। शिवौरससुताभावाज्जगर्ज च ननन्द च। ११
तेन चोपद्रुताः सर्वे स्वस्थानात्प्रच्युताः सुराः। शिवौरससुताभावाच्चिन्तामापुर्दुरत्ययाम्। १२
नाङ्गना शङ्करस्यास्तिकथंतत्सुतसम्भवः। अस्माकंभाग्यहीनानांकथंकार्यंभविष्यति। १३
इति चिन्तातुराः सर्वे जग्मुर्वैकुण्ठमण्डले। शशंसुर्हरिमेकान्ते स चोपायं जगाद ह। १४
कुतश्चिन्तातुराः सर्वे कामकल्पद्रुमाश्रिताः। जागर्तिभुवनेशानीमणिद्वीपाधिवासिनी। १५
अस्माकमनयादेवतदुपेक्षाऽस्तिनान्यथा। शिक्षैवेयंजगन्मात्राकृताऽस्मच्छिक्षणाय च। १६
लालने ताडने मातुर्नाऽकारुण्यं यथाऽर्भके। तद्वदेव जगन्मातुर्नियन्त्र्या गुणदोषयोः। १७
अपराधो भवत्येव तनयस्य पदेपदे। कोऽपरः सहते लोके केवलं मातरं विना। १८
तस्माद्यूयं पराम्बां तां शरणं यात मा चिरम्। निर्व्याजया चित्तवृत्त्या सा वः कार्यं विधास्यति। १९
इत्यादिश्य सुरान्सर्वान्महाविष्णुःस्वजायया। संयुतोनिर्जगामाशुदेवैः सहसुराधिपः। २०
आजगाम महाशैलं हिमवन्तं नगाधिपम्। अभवंश्च सुराः सर्वे पुरश्चरणकर्मिणः। २१
अम्बायज्ञविधानज्ञा अम्बायज्ञं च चक्रिरे। तृतीयादि व्रतान्याशु चक्रुः सर्वे सुरा नृप। २२
केचित्समाधिनिष्णाताः केचिन्नामपरायणाः। केचित्सूक्तपराः केचिन्नामपारायणोत्सुकाः। २३
मन्त्रपारायणपराः केचिच्छ्राद्धादिकारिणः। अन्तर्यागपराःकेचित्केचिन्न्यासपरायणाः। २४
हृल्लेखया पराशक्तेः पूजां चक्रुरतन्द्रिताः। इत्येव बहुवर्षाणि कालोऽगाज्जनमेजय!। २५
अकस्माच्चैत्रमासीयनवम्यां च भृगोर्दिने। प्रादुर्बभूव पुरतस्तन्महः श्रुतिबोधितम्। २६
चतुर्दिक्षु चतुर्वेदैर्मूर्तिमद्भिरभिष्टुतम्। कोटिसूर्यप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्। २७
विद्युत्कोटिसमानाभमरुणं तत्परं महः। नैव चोर्ध्वं न तिर्यक्च न मध्येपरिजग्रभत्। २८
आद्यन्तरहितं तत्तु न हस्ताद्यङ्गसंयुतम्। न च स्त्रीरूपमथवा न पुंरूपमथोभयम्। २९
दीप्त्याविधानं नेत्राणांतेषामासीन्महीपते!। पुनश्च धैर्यमालम्ब्य यावत्ते ददृशुःसुराः। ३०
तावत्तदेव स्त्रीरूपेणाऽऽभादिव्यं मनोहरम्। अतीवरमणीयाङ्गीं कुमारींनवयौवनाम्। ३१

उद्यत्पीनकुचद्वन्द्वनिन्दिताम्भोजकुड्मलाम् । रणत्किङ्किणिकाजालसिञ्जन्मञ्जीरमेखलाम् ।३२
कनकाङ्गदकेयूरग्रैवेयकविभूषिताम् । अनर्घ्यमणिसम्भिन्नगलबन्धविराजिताम् ।३३
तनुकेतकसंराजन्नीलभ्रमरकुन्तलाम् । नितम्बबिम्बसुभगां रोमराजिविराजिताम् ।३४
कर्पूरशकलोन्मिश्रताम्बूलपूरिताननाम् । कनत्कनकताटङ्कविटङ्कवदनाम्बुजाम् ।३५
अष्टमीचन्द्रबिम्बाभललाटामायतभ्रुवम् । रक्ताऽरविन्दनयनामुन्नसां मधुराधराम् ।३६
कुन्दकुड्मलदन्ताग्रां मुक्ताहारविराजिताम् । रत्नसम्भिन्नमुकुटां इन्द्ररेखावतंसिनीम् ।३७
मल्लिकामालतीमालाकेशपाशविराजिताम् । काश्मीरबिन्दुनिटिलां नेत्रत्रयविलासिनीम् ।३८
पाशाङ्कुशवराभीतिचतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् । रक्तवस्त्रपरीधानां दाडिमीकुसुमप्रभाम् ।३९
सर्वशृङ्गारवेषाढ्यां सर्वदेवनमस्कृताम् । सर्वाशापूरिकां सर्वमातरं सर्वमोहिनीम् ।४०
प्रसादसुमुखीमम्बां मन्दस्मितमुखाम्बुजाम् । अव्याजकरुणामूर्तिं ददृशुः पुरतः सुराः ।४१

दृष्ट्वा तां करुणामूर्तिं प्रणेमुः सकलाः (सादरं)सुराः ।
वक्तुं नाशक्नुवन्किञ्चिद् बाष्पसंरुद्धनिःस्वनाः ।।४२।।
कथञ्चित्स्थैर्यमालम्ब्य भक्त्या चाऽऽनतकन्धराः ।
प्रेमाश्रुपूर्णनयनास्तुष्टुवुर्जगदम्बिकाम् ।।४३।।

देवा ऊचुः

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यैभद्रायैनियताःप्रणताः स्मताम् ।४४

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ।।४५।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु ।।४६।।
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम् ।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनांशिवाम् ।।४७।।

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि । तन्नो देवि प्रचोदयात् ।४८
नमो विराट्स्वरूपिण्यै नमः सूत्रात्ममूर्तये । नमोऽव्याकृतरूपिण्यैनमःश्रीब्रह्ममूर्तये ।४९
यदज्ञानाज्जगद्भाति रज्जुसर्पस्रगादिवत् । यज्ज्ञानाल्लयमाप्नोति नुमस्तां भुवनेश्वरीम् ।५०
नुमस्तत्पदलक्ष्यार्थां चिदेकरसरूपिणीम् । अखण्डानन्दरूपांतांवेदतात्पर्यभूमिकाम् ।५१
पञ्चकोशातिरिक्तां तामवस्थात्रयसाक्षिणीम् । पुनस्त्वम्पदलक्ष्यार्थां प्रत्यगात्मस्वरूपिणीम् ।५२
नमः प्रणवरूपायै नमो ह्रीङ्कारमूर्तये । नानामन्त्रात्मिकायै ते करुणायै नमो नमः ।५३
इति स्तुता तदा देवैर्मणिद्वीपाधिवासिनी । प्राह वाचामधुरयामत्तकोकिलनिःस्वना ।५४

श्रीदेव्युवाच

वदन्तु विबुधाः कार्यं यदर्थमिह सङ्गताः । वरदाऽहं सदा भक्तकामकल्पद्रुमाऽस्मिच ।५५

तिष्ठन्त्यां मयि का चिन्ता युष्माकं भक्तिशालिनाम् ।
समुद्धरामि मद्भक्तान्दुःखसंसारसागरात् ।।५६।।

इति प्रतिज्ञांमेसत्यांजानीथविबुधोत्तमाः!। इतिप्रेमाकुलांवाणींश्रुत्वासन्तुष्टमानसाः ।५७

निर्भया निर्जरा राजन्नूचुर्दुःखं स्वकीयकम् ।

देवा ऊचुः

नाऽज्ञातं किञ्चिदप्यत्र भवत्याऽस्ति जगत्त्रये ।।५८।।

सर्वज्ञया सर्वसाक्षिरूपिण्यापरमेश्वरि!। तारकेणासुरेन्द्रेण पीडिताः स्मोदिवानिशम् ।५९

शिवाङ्गजाद्वधस्तस्य निर्मितो ब्रह्मणा शिवे!। शिवाङ्गना तु नैवाऽस्ति जानाति त्वं महेश्वरि!।६०
सर्वज्ञपुरतः किं वा वक्तव्यं पामरैर्जनैः। एतदुद्देशतः प्रोक्तमपरं तर्कयाऽम्बिके।६१
सर्वदा चरणाम्भोजे भक्तिः स्यात्तव निश्चला। प्रार्थनीयमिदं मुख्यमपरं देहहेतवे।६२
इति तेषां वचः श्रुत्वा प्रोवाच परमेश्वरी। मम शक्तिस्तुयागौरीभविष्यतिहिमालये।६३
शिवायसाप्रदेयास्यात्सावःकार्यं विधास्यति।
भक्तिर्मच्चरणाम्भोजे भूयाद्युष्माकमादरात् ।।६४।।
हिमालयो हि मनसा मामुपास्तेऽतिभक्तितः। ततस्तस्यगृहेजन्ममममप्रियकरंमतम् ।६५

व्यास उवाच

हिमालयोऽपितच्छ्रुत्वाऽत्यनुग्रहकरं वचः। बाष्पैः संरुद्धकण्ठाक्षो महाराज्ञीं वचोऽब्रवीत्।६६
महत्तरंतंकुरुषेयस्यानुग्रहमिच्छसि ।नोचेत्काऽहंजडः स्थाणुः क्वत्वंसच्चित्स्वरूपिणी।६७
असम्भाव्यंजन्मशतैस्त्वत्पितृत्वंममाऽनघे! ।अश्वमेधादिपुण्यैर्वापुण्यैर्वातत्समाधिजैः ।६८
अद्य प्रपञ्चे कीर्तिः स्याज्जगन्माता सुताऽभवत्।
अहो हिमालयस्याऽस्य धन्योऽसौ भाग्यवानिति ।।६९।।
यस्यास्तु जठरे सन्ति ब्रह्माण्डानां च कोटयः। सैव यस्य सुता जाता को वा स्यात्तत्समो भुवि।७०
न जानेऽस्मत्पितृणां किं स्थानं स्यान्निर्मितं परम्।
एतादृशानां वासाय येषां वंशेऽस्ति मादृशः ।।७१।।
इदं यथा च दत्तं मे कृपया प्रेमपूर्णया। सर्ववेदान्तसिद्धं च त्वद्रूपं ब्रूहि मे तथा।७२
योगं च भक्ति सहितं ज्ञानं च श्रुतिसम्मतम्। वदस्वपरमेशानित्वमेवाऽहं ततो भवे।७३

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वाप्रसन्नमुखपङ्कजा। वक्तुमारभताऽम्बा सा रहस्यं श्रुतिगूहितम्।७४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे देवान्प्रतिभविताहिमालय गृहेजन्मेतिदेवीवाक्यवर्णनंनामैकत्रिंशोऽध्यायः।३१।

* द्वात्रिंशोऽध्यायः *

देव्यास्वनिगूढतत्त्वप्रतिपादनवर्णनम्

श्रीदेव्युवाच

शृण्वन्तु निर्जराः सर्वे व्याहरन्त्या वचो मम। यस्य श्रवणमात्रेणमद्रूपत्वं प्रपद्यते।१
अहमेवाऽऽस पूर्वं तु नान्यत्किञ्चिन्नगाधिप। तदात्मरूपं चित्संवित्परब्रह्मैकनामकम्।२
अप्रतर्क्यमनिर्देश्यमनौपम्यमनामयम् ।तस्य काचित्स्वतः सिद्धा शक्तिर्मायेति विश्रुता।३
नसतीसानासतीसानोभयात्माविरोधतः। एतद्विलक्षणाकाचिद्वस्तुभूताऽस्तिसर्वदा।४
पावकस्योष्णतेवेयमुष्णांशोरिव दीधितिः। चन्द्रस्य चन्द्रिकेवेयं ममेयंसहजाध्रुवा।५
तस्यांकर्माणिजीवानांजीवाः कालाश्चसञ्चरे। अभेदेनविलीनाःस्युःसुषुप्तौव्यवहारवत्।६
स्वशक्तेश्चसमायोगादहंबीजात्मतां गता। स्वाधारावरणात्तस्यादोषत्वंचसमागतम्।७
चैतन्यस्य समायोगान्निमित्तत्वं च कथ्यते। प्रपञ्चपरिणामाच्च समवायित्वमुच्यते।८
केचित्तां तप इत्याहुस्तमः केचिज्जडं परे। ज्ञानं मायांप्रधानंचप्रकृतिंशक्तिमप्यजाम्।९
विमर्श इतितां प्राहुः शैवशास्त्रविशारदाः। अविद्यामितरे प्राहुर्वेदतत्त्वार्थचिन्तकाः।१०
एवंनानाविधानिस्युर्नामानिनिगमादिषु ।तस्याजडत्वंदृश्यत्वाज्ज्ञाननाशात्ततोऽसती।११
चैतन्यस्य न दृश्यत्वं दृश्यत्वे जडमेव तत्। स्वप्रकाशंचचैतन्यंन परेण प्रकाशितम्।१२

अनवस्थादोषसत्त्वान्न स्वेनाऽपि प्रकाशितम्। कर्मकर्त्रीविरोधः स्यात्तस्मात्तद्दीपवत्स्वयम्।१३
प्रकाशमानमन्येषां भासकं विद्धि पर्वत!। अत एव च नित्यत्वंसिद्धसम्वित्तनोर्मम।१४
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादौदृश्यस्य व्यभिचारतः। सम्विदो व्यभिचारश्च नाऽनुभूतोऽस्ति कर्हिचित्।१५
यदि तस्याऽप्यनुभवस्तर्ह्ययं येन साक्षिणा। अनुभूतःसएवात्र शिष्टःसम्विद्वपुः पुरा।१६
अत एवच नित्यत्वंप्रोक्तंसच्छास्त्रकोविदैः। आनन्दरूपता चास्याः परप्रेमास्पदत्वतः।१७
मा नभूवं हिभूयासमिति प्रेमात्मनि स्थितम्। सर्वस्याऽन्यस्य मिथ्यात्वादसङ्गत्वं स्फुटं मम।१८
अपरिच्छिन्नताऽप्येवमत एवमतामम। तच्च ज्ञानंनाऽऽत्मधर्मो धर्मत्वे जडताऽऽत्मनः।१९
ज्ञानस्य जडशेषत्वं न दृष्टं न च सम्भवि। चिद्धर्मत्वंतथानास्तिचितश्चिन्नहिभिद्यते।२०
तस्मादात्मा ज्ञानरूपः सुखरूपश्च सर्वदा। सत्यः पूर्णोऽप्यसङ्गश्चद्वैतजालविवर्जितः।२१
स पुनः कामकर्मादियुक्तया स्वीयमायया। पूर्वानुभूतसंस्कारात्कालकर्मविपाकतः।२२
अविवेकाच्च तत्त्वस्य सिसृक्षावान्प्रजायते। अबुद्धिपूर्वः सर्गोऽयंकथितस्तेनगाधिप।२३
एतद्धियन्मया प्रोक्तं ममरूपमलौकिकम्। अव्याकृतं तदव्यक्तं मायाशबलमित्यपि।२४
प्रोच्यते सर्वशास्त्रेषु सर्वकारणकारणम्। तत्त्वानामादिभूतं च सच्चिदानन्दविग्रहम्।२५
सर्वकर्मघनीभूतमिच्छाज्ञानक्रियाश्रयम्। ह्रीङ्कारमन्त्रवाच्यं तदादितत्त्वं तदुच्यते।२६
तस्मादाकाश उत्पन्नः शब्दतन्मात्ररूपकः। भवेत्स्पर्शात्मकोवायुस्तेजोरूपात्मकंपुनः।२७
जलं रसात्मकंपश्चात्ततोगन्धात्मिकाधरा। शब्दैकगुणआकाशोवायुःस्पर्शरवान्वितः।२८
शब्दस्पर्शरूपगुणं तेजइत्युच्यते बुधैः। शब्दस्पर्शरूपरसैरापो वेदगुणाः स्मृताः।२९
शब्दस्पर्शरूपसरसगन्धैः पञ्चगुणा धरा। तेभ्योऽभवन्महत्सूत्रं यल्लिङ्गं परिचक्षते।३०
सर्वात्मकं तत्सम्प्रोक्तं सूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः। अव्यक्तं कारणोदेहः सचोक्तः पूर्वमेवहि।३१
यस्मिञ्जगद्बीजरूपं स्थितं लिङ्गोद्भवोयतः। ततः स्थूलानिभूतानिपञ्चीकरणमार्गतः।३२
पञ्चसंख्यानिजायन्तेतत्प्रकारस्त्वथोच्यते। पूर्वोक्तानिचभूतानिप्रत्येकंविभजेद्द्विधा।३३
एकैकं भागमेकस्य चतुर्धा विभजेद्गिरे!। स्वस्वेतरद्वितीयांशेयोजनात्पञ्च पञ्च ते।३४
तत्कार्यं च विराड्देहः स्थूलदेहोऽयमात्मनः। पञ्चभूतस्थसत्त्वांशैः श्रोत्रादीनां समुद्भवः।३५
ज्ञानेन्द्रियाणांराजेन्द्रप्रत्येकंमिलितैस्तुतैः। अन्तःकरणमेकंस्याद्वृत्तिभेदाच्चतुर्विधम्।३६

यदा तु सङ्कल्पविकल्पकृत्यंतदा भवेत्तन्मनइत्यभिख्यम्।
स्याद् बुद्धिसञ्ज्ञं च यदा प्रवेत्ति सुनिश्चितं संशयहीनरूपम्॥३७॥

अनुसन्धानरूपं तच्चित्तं च परिकीर्तितम्। अहंकृत्यात्मवृत्त्या तु तदहङ्कारतां गतम्।३८
तेषांरजोंशैर्जातानिक्रमात्कर्मेन्द्रियाणि च। प्रत्येकं मिलितैस्तैतुप्राणोभवतिपञ्चधा।३९
हृदि प्राणो गुदेऽपानो नाभिस्थस्तु समानकः। कण्ठदेशेऽप्युदानः स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः।४०
ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्चैव पञ्च कर्मेन्दियाणि च। प्राणादिपञ्चकंचैवधियाचसंहितं मनः।४१
एतत्सूक्ष्मशरीरं स्यान्ममलिङ्गंयदुच्यते। तत्रयाप्रकृतिःप्रोक्तासाराजन्द्विविधास्मृता।४२
सत्त्वात्मिकातुमायास्यादविद्यागुणमिश्रिता। स्वाश्रयंयातुसंरक्षेत्सामायेतिनिगद्यते।४३

तस्यां यत्प्रतिबिम्बं स्याद्बिम्बभूतस्य चेशितुः।
स ईश्वरः समाख्यातः स्वाश्रयज्ञानवान्परः॥४४॥

सर्वज्ञः सर्वकर्ता च सर्वाऽनुग्रहकारकः। अविद्यायांतुयत्किञ्चित्प्रतिबिम्बंनगाधिप!।४५
तदेवजीवसञ्ज्ञं स्यात्सर्वदुःखाश्रयं पुनः। द्वयोरपीह सम्प्रोक्तं देहत्रयमविद्यया।४६
देहत्रयाभिमानाच्चाप्यभून्नामत्रयंपुनः। प्राज्ञस्तुकारणात्मास्यात्सूक्ष्मदेही तु तैजसः।४७

स्थूलदेहीतुविश्वाख्यस्त्रिविधः परिकीर्तितः।एवमीशोऽपिसम्प्रोक्तईशसूत्रविराट्पदैः।४८
प्रथमो व्यष्टिरूपस्तुसमष्ट्यात्मापरः स्मृतः।सहिसर्वेश्वरः साक्षाज्जीवानुग्रहकाम्यया।४९
करोतिविविधंविश्वंनानाभोगाश्रयं पुनः।मच्छक्तिप्रेरितोनित्यंमयिराजन्प्रकल्पितः।५०

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां सप्तमस्कन्धे देवीगीतायांदेव्याव्यष्टिसमष्टिरूपवर्णनंनाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

* त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः *

देवीद्वाराविद्याविद्ययोर्वर्णनंस्वरूपदर्शनंदेवैःकृतातत्स्तुतिवर्णनम्

देव्युवाच

मन्मायाशक्तिसंक्लृप्तंजगत्सर्वंचराचरम्।साऽपिमत्तःपृथङ्मायानास्त्येवपरमार्थतः।१
व्यवहारदृशासेयंविद्यामायेतिविश्रुता ।तत्त्वदृष्ट्यातुनास्त्येवतत्त्वमेवाऽस्तिकेवलम्।२
साऽहंसर्वं जगत्सृष्ट्वा तदन्तः प्रविशाम्यहम्।मायाकर्मादिसहिता गिरेप्राणपुरःसुरा।३
लोकान्तरगतिर्नोचेत्कथंस्यादिति हेतुना।यथायथाभवन्त्येवमायाभेदास्तथातथा।४
उपाधिभेदाद्भिन्नाऽहं घटाकाशादयोयथा।उच्चनीचादिवस्तूनिभासयन्भास्करः सदा।५
नदुष्यतितथैवाऽहंदोषैर्लिप्ताकदाऽपिन ।मयाबुद्ध्यादिकर्तृत्वमध्यस्यैवाऽपरेजनाः।६
वदन्तिचाऽऽत्माकर्मेतिविमूढान सुबुद्धयः।अज्ञानभेदतस्तद्वन्मायाया भेदतस्तथा।७
जीवेश्वरविभागश्च कल्पितो माययैव तु।घटाकाशमहाकाशविभागः कल्पितो यथा।८
तथैव कल्पितो भेदो जीवात्मपरमात्मनोः।यथा जीवबहुत्वं च माययैच नचस्वतः।९
तथेश्वरबहुत्वं चमाययानस्वभावतः।देहेन्द्रियादिसङ्घातवासनाभेदभेदिता।१०
अविद्या जीवभेदस्य हेतुर्नाऽन्यः प्रकीर्तितः।गुणानां वासनाभेदभेदिताया धराधर!।११
माया सा परभेदस्य हेतुर्नान्यः कदाचन।मयि सर्वमिदं प्रोतमोतं च धरणीधर!।१२
ईश्वरोऽहं च सूत्रात्मा विराडात्माऽहमस्मि च।ब्रह्माऽहं विष्णुरुद्रौ च गौरी ब्राह्मी च वैष्णवी।१३

सूर्योऽहं तारकाश्चाऽहं तारकेशस्तथाऽस्म्यहम् ।
पशुपक्षिस्वरूपाऽहं चाण्डालोऽहं च तस्करः ।।१४।।

व्याधोऽहं क्रूरकर्माऽहं सत्कर्माऽहंमहाजनः।स्त्रीपुन्नपुंसकाकारोऽप्यहमेव न संशयः।१५
यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु दृश्यते श्रूयतेऽपि वा।अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्याऽहं सर्वदा स्थिता।१६
न तदस्ति मया त्यक्तं वस्तु किञ्चिच्चराचरम्।यद्यस्ति चेत्तच्छून्यं स्याद्वन्ध्यापुत्रोपमं हि तत्।१७
रज्जुर्यथा सर्पमालाभेदैरेका विभाति हि।तथैवेशादिरूपेण भाम्यहं नाऽत्र संशयः।१८
अधिष्ठानातिरेकेण कल्पितं तन्नभासते।तस्मान्मत्सत्तयैवैतत्तत्सत्तावन्नान्यथाभवेत्।१९

हिमाचल उवाच

यथा वदसिदेवेशिसमष्ट्यात्मवपुस्त्विदम्।तथैवद्रष्टुमिच्छामियदिदेविकृपामयि ।२०

व्यास उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वासर्वे देवाः सविष्णवः।ननन्दुर्मुदितात्मानः पूजयन्तश्चतद्वचः।२१
अथ देवमतं ज्ञात्वा भक्तकामदुघा शिवा।अदर्शयन्निजं रूपं भक्तकामप्रपूरिणी।२२
अपश्यंस्ते महादेव्या विराड्रूपंपरात्परम्।द्यौर्मस्तकं भवेद्यस्य चन्द्रसूर्यौचचक्षुषी।२३
दिशःश्रोत्रेवचोवेदाःप्राणोवायुःप्रकीर्तितः।विश्वंहृदयमित्याहुःपृथिवीजघनंस्मृतम्।२४
नभस्तलंनाभिसरोज्योतिश्चक्रमुरःस्थलम्।महर्लोकस्तुग्रीवास्याजनोलोकोमुखंस्मृतम्।२५
तपोलोकोरराटिस्तु सत्यलोकादधः स्थितः।इन्द्रादयो बाहवः स्युः शब्दः श्रोत्रं महेशितुः।२६

नासत्यदस्रौनासेस्तोगन्धोघ्राणंस्मृतोबुधैः। मुखमग्निःसमाख्यातोदिवारात्रीचपक्ष्मणी।२७
ब्रह्मस्थानं भ्रूविजृम्भोऽप्यापस्तालुः प्रकीर्तिताः।
रसोजिह्वा समाख्याता यमो दंष्ट्राः प्रकीर्तिताः ॥२८॥
दन्ताःस्नेहकला यस्य हासो माया प्रकीर्तिता। सर्गस्त्वपाङ्गमोक्षः स्याद्व्रीडोर्ध्वोष्ठो महेशितुः।२९
लोभः स्यादधरोष्ठोऽस्याधर्ममार्गस्तुपृष्ठभूः। प्रजापतिश्चमेढ्रंस्याद्यःस्रष्टाजगतीतले ।३०
कुक्षिः समुद्रा गिरयोऽस्थीनि देव्या महेशितुः।
नद्योनाड्यः समाख्याता वृक्षाः केशाः प्रकीर्तिताः ॥३१॥
कौमारयौवनजरावयोऽस्य गतिरुत्तमा। बलाहकास्तु केशाः स्युः सन्ध्ये ते वाससी विभोः।३२
राजञ्छ्रीजगदम्बायाश्चन्द्रमास्तु मनः स्मृतः। विज्ञानशक्तिस्तु हरी रुद्रोऽन्तःकरणं स्मृतम्।३३
अश्वादि जातयः सर्वाः श्रोणिदेशे स्थिता विभोः।
अतलादिमहालोकाः कट्यधोभागतां गताः ॥३४॥
एतादृशं महारूपं ददृशुः सुरपुङ्गवाः। ज्वालामालासहस्राढ्यं लेलिहानं च जिह्वया।३५
दंष्ट्राकटकटारावं वमन्तं बह्निमक्षिभिः। नानायुधधरं वीरं ब्रह्मछत्रौदनं च यत्।३६
सहस्रशीर्षनयनं सहस्रचरणं तथा। कोटिसूर्यप्रतीकाशं विद्युत्कोटिसमप्रभम्।३७
भयङ्करं महाघोरं हृदक्ष्णोस्त्रासकारकम्। ददृशुस्ते सुराः सर्वे हाहाकारं च चक्रिरे।३८
विकम्पमानहृदयामूर्च्छामापुर्दुरत्ययाम् ।स्मरणं च गतं तेषां जगदम्बेयमित्यपि।३९
अथ तेयेस्थितोवेदाश्चतुर्दिक्षुमहाविभोः। बोधयामासुरत्युग्रंमूर्छातोमूर्च्छितान्सुरान्।४०
अथ ते धैर्यमालम्ब्य लब्ध्वा च श्रुतिमुत्तमाम्। प्रेमाश्रुपूर्णनयनारुद्धकण्ठास्तुनिर्जराः ।४१
बाष्पगद्गदया वाचा स्तोतुं समुपचक्रिरे।

देवाऊचुः

अपराधं क्षमस्वाऽम्ब ! पाहि दीनांस्त्वदुद्भवान् ॥४२॥
कोपं संहर देवेशि! सभयारूपदर्शनात्। का ते स्तुतिः प्रकर्तव्या पामरैर्निर्जरैरिह।४३
स्वस्याऽप्यज्ञेय एवाऽसौ यावान्यश्च स्वविक्रमः। तदर्वाग्जायमानानां कथं स विषयो भवेत्।४४
नमस्ते भुवनेशानि! नमस्ते प्रणवात्मिके!। सर्ववेदान्तसंसिद्धे! नमो ह्रीङ्कारमूर्तये।४५
यस्मादग्निःसमुत्पन्नो यस्मात्सूर्यश्च चन्द्रमाः। यस्मादोषधयः सर्वास्तस्मै सर्वात्मने नमः।४६
यस्मा न्चदेवाःसम्भूताः साध्याः पक्षिणएव च। पशवश्चमनुष्याश्चतस्मैसर्वात्मनेनमः ।४७
प्राणापानौ व्रीहियवौ तपः श्रद्धाऋतं तथा। ब्रह्मचर्यंविधिश्चैवयस्मात्तस्मैनमोनमः ।४८
सप्तप्राणार्चिषोयस्मात्समिधः सप्तएवच। होमाःसप्ततथालोकास्तस्मैसर्वात्मनेनमः।४९
यस्मात्समुद्रागिरयः सिन्धवः प्रचरन्ति च। यस्मादोषधयः सर्वारसास्तस्मैनमोनमः।५०
यस्माद्यज्ञःसमुद्भूतोदीक्षायूपश्च दक्षिणाः। ऋचोयजूंषिसामानितस्मैसर्वात्मनेनमः ।५१
नमः पुरस्तात्पृष्ठे च नमस्ते पार्श्वयोर्द्वयोः। अध ऊर्ध्वंचतुर्दिक्षुमातर्भूयोनमोनमः।५२
उपसंहर देवेशि ! रूपमेतदलौकिकम्। तदेव दर्शयाऽस्माकं रूपं सुन्दरसुन्दरम्।५३

व्यास उवाच

इति भीतान्सुरान्दृष्ट्वा जगदम्बा कृपार्णवा। संहृत्य रूपं घोरं तद्दर्शयामास सुन्दरम्।५४
पाशाङ्कुशवराभीतिधरं सर्वाङ्गकोमलम्। करुणापूर्णनयनं मन्दस्मितमुखाम्बुजम्।५५
दृष्ट्वा तत्सुन्दरं रूपं तदा भीतिविवर्जिता। शान्तचित्ताः प्रणेमुस्ते हर्षगद्गदनिःस्वनाः।५६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे श्रीदेवीविराड्रूपदर्शनसहितंदेवकृततत्स्तववर्णनंनाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ।३३।

* चतुस्त्रिंशोऽध्यायः *

भगवत्यादेवान्प्रतिस्वरूपसाक्षात्कारोपाययोगप्रतिपादनपुरःसरंसमुपदेशवर्णनम्

श्रीदेव्युवाच

क्व यूयं मन्दभाग्या वै क्वेदं रूपं महाद्भुतम्। तथापि भक्तवात्सल्यादीदृशं दर्शितंमया।१
न वेदाध्ययनैर्योगैर्न दानैस्तपसेज्यया। रूपं द्रष्टुमिदं शक्यं केवलं मत्कृपां विना।२
प्रकृतंशृणुराजेन्द्र! परमात्माऽत्रजीवताम्। उपाधियोगात्सम्प्राप्तःकर्तृत्वादिकमप्युत।३
क्रियाः करोति विविधा धर्माधर्मैकहेतवः। नानायोनीस्ततः प्राप्यसुखदुःखैश्चयुज्यते।४
पुनस्तत्संस्कृतिवशान्नानाकर्मरतः सदा। नानादेहान्समाप्नोति सुखदुःखैश्च युज्यते।५
घटीयन्त्रवदेतस्य न विरामः कदाऽपि हि। अज्ञानमेव मूलं स्यात्ततः कामः क्रियास्ततः।६
तस्मादज्ञाननाशाय यतेत नियतं नरः। एतद्धि जन्मसाफल्यं यदज्ञानस्य नाशनम्।७
पुरुषार्थसमाप्तिश्च जीवन्मुक्तदशाऽपि च। अज्ञाननाशने शक्ता विद्यैव तु पटीयसी।८
न कर्म तज्जंनोपास्तिर्विरोधाभावतोगिरे। प्रत्युताशा ज्ञाननाशेकर्मणानैवभाव्यताम्।९
अनर्थदानि कर्माणि पुनः पुनरुशन्ति हि। ततोरागस्ततोदोषस्ततोऽनर्थोमहान्भवेत्।१०
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन ज्ञानं सम्पादयेन्नरः। कुर्वन्नेवेह कर्माणीत्यतः कर्माऽप्यवश्यकम्।११
ज्ञानादेव हि कैवल्यमतः स्यात्तत्समुच्चयः। सहायतां व्रजेत्कर्म ज्ञानस्य हितकारि च।१२
इति केचिद्वदन्त्यत्र तद्विरोधान्न सम्भवेत्। ज्ञानाद्धृद् ग्रन्थिभेदःस्याद्धृद्ग्रन्थौ कर्मसम्भवः।१३
यौगपद्यं न सम्भाव्यं विरोधात्तु ततस्तयोः। तमः प्रकाशयोर्यद्वद्यौगपद्यंनसम्भवि।१४
तस्मात्सर्वाणि कर्माणि वैदिकानि महामते। चित्तशुद्ध्यन्तमेव स्युस्तानि कुर्यात्प्रयत्नतः।१५
शमो दमस्तितिक्षा च वैराग्यंसत्त्वसम्भवः। तावत्पर्यन्तमेव स्युःकर्माणिनततःपरम्।१६
तदन्ते चैव संन्यस्यसंश्रयेद्गुरुमात्मवान्। श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठंचभक्त्यानिर्व्याजयापुनः।१७
वेदान्तश्रवणं कुर्यान्नित्यमेवमतन्द्रितः। तत्त्वमस्यादिवाक्यस्य नित्यमर्थं विचारयेत्।१८
तत्त्वमस्यादिवाक्यं तु जीवब्रह्मैक्यबोधकम्। ऐक्ये ज्ञाते निर्भयस्तु मद्रूपो हिप्रजायते।१९
पदार्थावगतिः पूर्वं वाक्यार्थावगतिस्ततः। तत्पदस्य चवाक्यर्थोगिरेऽहंपरिकीर्तितः।२०
त्वम्पदस्य च वाच्यार्थो जीव एव न संशयः। उभयोरैक्यमसिना पदेनप्रोच्यतेबुधैः।२१
वाच्यार्थयोर्विरुद्धत्वादैक्यंनैव घटेत ह। लक्षणाऽतः प्रकर्तव्यातत्त्वमोः श्रुतिसंस्थयोः।२२
चिन्मात्रं तु तयोर्लक्ष्यं तयोरैक्यस्य सम्भवः। तयोरैक्यं तथा ज्ञात्वा स्वाभेदेनाऽद्वयो भवेत्।२३
देवदत्तः स एवायमितिवल्लक्षणा स्मृता। स्थूलादिदेहरहितो ब्रह्म सम्पद्यते नरः।२४
पञ्चकृतमहाभूतसम्भूतः स्थूलदेहकः। भोगालयो जराव्याधिसंयुतः सर्वकर्मणाम्।२५
मिथ्याभूतोऽयमाभाति स्फुटं मायामयत्वतः। सोऽयं स्थूल उपाधिः स्यादात्मनो मे नगेश्वर!।२६
ज्ञानकर्मेन्द्रिययुतं प्राणपञ्चकसंयुतम्। मनोबुद्धियुतं चैतत्सूक्ष्मं तत्कवयो विदुः।२७
अपञ्चीकृतभूतोत्थंसूक्ष्मदेहोऽयमात्मनः। द्वितीयोऽयमुपाधिःस्यात्सुखादेरवबोधकः।२८
अनाद्यनिर्वाच्यमिदमज्ञानं तु तृतीयकः। देहोऽयमात्मनोभातिकारणात्मा नगेश्वर!।२९
उपाधिविलये जाते केवलात्माऽवशिष्यते। देहत्रयेपञ्चकोशाअन्तःस्थाःसन्तिसर्वदा।३०
पञ्चकोशपरित्यागे ब्रह्म पुच्छं हि लभ्यते। नेति नेतीत्यादिवाक्यैर्मम रूपं यदुच्यते।३१

न जायते म्रियते तत्कदाचिन्नाऽयं भूत्वा न बभूवकश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥३२॥

हतं चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यतेहतम्। उभौ तौनविजानीतौ नाऽयं हन्तिनहन्यते।३३
अणोरणीयान्महतो महीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महिमानमस्य ॥३४॥
आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।३५
इन्द्रियाणिहयानाहुर्विषयांस्तेषुगोचरान् ।आत्मेन्द्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।३६
यस्त्वविद्वान्भवति चाऽमनस्कश्च सदाऽशुचिः। न तत्पदमवाप्नोति संसारं चाऽधिगच्छति।३७
यस्तु विज्ञानवान्भवति समनस्कः सदा शुचिः। स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते।३८
विज्ञानसारथिर्यस्तु मनः प्रग्रहवान्नरः। सोऽध्वनः पारमाप्नोति मदीयं यत्परं पदम्।३९
इत्थं श्रुत्या च मत्या च निश्चत्याऽऽत्मानमात्मना ।
भावयेन्मामात्मरूपां निदिध्यासनतोऽपि च ॥४०॥
योगवृत्तेः पुरास्वस्मिन्भावयेदक्षरत्रयम्। देवीप्रणवसञ्ज्ञस्यध्यानार्थंमन्त्रवाच्ययोः।४१
हकारः स्थूलदेहः स्याद्रकारः सूक्ष्मदेहकः। ईकारः कारणात्माऽसौ ह्रींकारोऽहं तुरीयकम्।४२
एवं समष्टिदेहेऽपि ज्ञात्वा बीजत्रयं क्रमात्। समष्टिव्यष्ट्योरेकत्वं भावयेन्मतिमान्नरः।४३
समाधिकालात्पूर्वं तु भावयित्वैवमादृतः। ततो ध्यायेन्निलीनाक्षोदेवीमां जगदीश्वरीम्।४४
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाऽभ्यन्तरचारिणौ ।
निवृत्तविषयाकाङ्क्षो वीतदोषो विमत्सरः ॥४५॥
भक्त्या निर्व्याजया युक्तो गुहायां निःस्वने स्थले ।
हकारं विश्वमात्मानं रकारे प्रविलापयेत् ॥४६॥
रकारं तैजसं देवमीकारे प्रविलापयेत्। ईकारं प्रज्ञमात्मानं ह्रीङ्कारे प्रविलापयेत्।४७
वाच्यवाचकताहीनं द्वैतभावविवर्जितम्। अखण्डं सच्चिदानन्दं भावयेत्तच्छिखान्तरे।४८
इत ध्यानेन मां राजन्साक्षात्कृत्य नरोत्तमः। मद्रूप एव भवति द्वयोरप्येकता यतः।४९
योगयुक्त्याऽनया दृष्ट्वा मामात्मानं परात्परम्। अज्ञानस्य सकार्यस्य तत्क्षणे नाशको भवेत्।५०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे देवीगीतायांज्ञानस्यमोक्षार्थत्ववर्णनंनाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३४॥

* पञ्चत्रिंशोऽध्यायः *

श्रीदेव्याहिमालयकृतेमन्त्रसिद्धिसाधनवर्णनम्

हिमालय उवाच

योगं वद महेशानि! साङ्गं सम्वित्प्रदायकम्। कृतेन येन योग्योऽहं भवेयं तत्त्वदर्शने।१

श्रीदेव्युवाच

न योगो नभसः पृष्ठे न भूमौ न रसातले। ऐक्यं जीवात्मनोराहुर्योगंयोगविशारदाः।२
तत्प्रत्यूहाः षडाख्यातायोगविघ्नकरानघ!। कामक्रोधौलोभमोहौमदमात्सर्यसञ्ज्ञकौ।३
योगाङ्गैरेवभित्त्वातान्योगिनो योगमाप्नुयुः। यमं नियममासनप्राणायामौततः परम्।४
प्रत्याहारं धारणाख्यं ध्यानंसार्धंसमाधिना। अष्टाङ्गान्याहुरेतानियोगिनांयोगसाधने।५
अहिंसा स्त्यमस्त्येयं ब्रह्मचर्यं दयाऽऽर्जवम्। क्षमाधृतिर्मिताहारः शौचंचेतियमादश।६
तपः सन्तोष आस्तिक्यं दानंदेवस्यपूजनम्। सिद्धान्तश्रवणंचैवह्रीर्मतिश्चजपोहुतम्।७
दशैते नियमाः प्रोक्ता मया पर्वतनायक!। पद्मासनं स्वतिकं च भद्रं वज्रासनं तथा।८
वीरासनमिति प्रोक्तं क्रमादासनपञ्चकम्। ऊर्वोरुपरि विन्यस्य सम्यक्पादतले शुभे।९

अङ्गुष्ठौचनिबध्नीयाद्धस्ताभ्यांव्युत्क्रमात्ततः। पद्मासनमितिप्रोक्तंयोगिनांहृदयङ्गमम् ।१०
जानूर्वोरन्तरे सम्यक्कृत्वा पादतले शुभे। ऋजुकायोविशेद्योगीस्वस्तिकंतत्प्रचक्षते।११
सीवन्याः पार्श्वयोर्न्यस्य गुल्फयुग्मं सुनिश्चितम् ।
वृषणाऽधः पादपार्ष्णी पार्ष्णिभ्यां परिबन्धयेत् ।।१२।।
भद्रासनमिति प्रोक्तं योगिभिः परिपूजितम्। उर्वोः पादौ क्रमान्न्यस्य जान्वोः प्रत्यङ्मुखाङ्गुली।१३
करौ विदध्यादाख्यातं वज्रासनमनुत्तमम्। एकं पादमधःकृत्वा विन्यस्योरुं तथोत्तरे।१४
ऋजुकायो विशेद्योगी वीरासनमितीरितम्। इडयाऽऽकर्षयेद्वायुं बाह्यं षोडशमात्रया।१५
धारयेत्पूरितं योगी चतुःषष्ट्या तु मात्रया। सुषुम्नामध्यगंसम्यग्द्वात्रिंशन्मात्रयाशनैः।१६
नाड्या पिङ्गलया चैव रेचयेद्योगवित्तमः। प्राणायाममिमं प्राहुर्योगशास्त्रविशारदाः।१७
भूयोः भूयः क्रमात्तस्यबाह्यमेवं समाचरेत्। मात्रावृद्धिः क्रमेणैव सम्यग्द्वादश षोडश।१८
जपध्यानादिभिः सार्धं सगर्भं तं विदुर्बुधाः। तदपेतं विगर्भं च प्राणायामंपरेविदुः।१९
कमादभ्यस्यतः पुंसो देहस्वेदोद्गमोऽधमः। मध्यमः कम्पसंयुक्तो भूमित्यागः परो मतः।२०
उत्तमस्यगुणावाप्तिर्यावच्छीलनमिष्यते । इन्द्रियाणां विचरतांविषयेषु निरर्गलम्।२१
बलादाहरणं तेभ्यः प्रत्याहारोऽभिधीयते। अङ्गुष्ठगुल्फजानूरुमूलाधारलिङ्गनाभिषु ।२२
हृद्ग्रीवाकण्ठदेशेषु लम्बिकायांततोनसि। भ्रूमध्येमस्तकेमूर्ध्निद्वादशान्तेयथाविधि।२३
धारणं प्राणमरुतो धारणेति निगद्यते। समाहितेन मनसा चैतन्यान्तरवर्तिना।२४
आत्मन्यभीष्टदेवानांध्यानंध्यानमिहोच्यते। समत्वभावनानित्यंजीवात्मपरमात्मनोः।२५
समाधिमाहुर्मुनयः प्रोक्तमष्टाङ्गलक्षणम्। इदानीं कथये तेऽहं मन्त्रयोगमनुत्तमम्।२६
विश्वं शरीरमित्युक्तं पञ्चभूतात्मकं नग!। चन्द्रसूर्याग्नितेजोभिर्जीवब्रह्मैक्यरूपकम्।२७
तिस्रः कोट्यस्तदर्धेन शरीरे नाडयो मताः। तासु मुख्या दश प्रोक्तास्ताभ्यस्तिस्रो व्यवस्थिताः।२८
प्रधानामेरुदण्डेऽत्रचन्द्रसूर्याग्निरूपिणी । इडा वामे स्थितानाडीशुभ्रातुचन्द्ररूपिणी।२९
शक्तिरूपा तु सा नाडी साक्षादमृतविग्रहा। दक्षिणेयापिङ्गलाख्या पुंरूपासूर्यविग्रहा।३०
सर्वतेजोमयी सा तु सुषुम्ना वह्निरूपिणी। तस्यामध्ये विचित्राख्ये इच्छाज्ञानक्रियात्मकम्।३१
मध्ये स्वम्भूलिङ्गंतु कोटिसूर्यसमप्रभम्। तदूर्ध्वं मायाबीजं तुहरात्माबिन्दुनादकम्।३२
तदूर्ध्वं तु शिखाकाराकुण्डलीरक्तविग्रहा। देव्यात्मिकातुसाप्रोक्तामदभिन्नानगाधिप।३३
तद्बाह्ये हेमरूपाभं वादिसान्तचतुर्दलम्। द्रुतहेमसमप्रख्यं पद्मं तत्र विचिन्तयेत्।३४
तदूर्ध्वं त्वनलप्रख्यं षड्दलं हीरकप्रभम्। बादिलान्तषडर्णेन स्वाधिष्ठानमनुत्तमम्।३५
मूलमाधारषट्कोणं मूलाधारं ततो विदुः। स्वशब्देन परंलिङ्गंस्वाधिष्ठानंततोविदुः।३६
तदूर्ध्वं नाभिदेशे तु मणिपूरंमहाप्रभम्। मेघाभं विद्युदाभं च बहुतेजोमयं ततः।३७
मणिवद्भिन्नं तत्पद्मं मणिपद्मंतथोच्यते। दशभिश्च दलैर्युक्तं डादिफान्ताक्षरान्वितम।३८
विष्णुनाऽधिष्ठितं पद्मं विष्ण्वालोकनकारणम्। तदूर्ध्वेऽनाहतं पद्ममुद्यदादित्यसन्निभम्।३९
कादिठान्तदलैरर्कपत्रैश्च समधिष्ठितम्। तन्मध्ये बाणलिङ्गं तु सूर्यायुतसमप्रभम्।४०
शब्दब्रह्ममयं शब्दानाहतं तत्र दृश्यते। अनाहताख्यं तत्पद्मं मुनिभिः परिकीर्तितम्।४१
आनन्दसदनं तत्तु पुरुषाधिष्ठितं परम्। तदूर्ध्वं तु विशुद्धाख्यं दलं षोडशपङ्कजम्।४२
स्वरैः षोडशभिर्युक्तं धूम्रवर्णमहाप्रभम्। विशुद्धं तनुतेयस्माज्जीवस्यहंसलोकनात्।४३
विशुद्धंपद्ममाख्यातमाकाशाख्यं महाद्भुतम्। आज्ञाचक्रंतदूर्ध्वेतुआत्मनाऽधिष्ठितंपरम्।४४
आज्ञासङ्क्रमणं तत्र तेनाज्ञेति प्रकीर्तितम्। द्विदलं हक्षसंयुक्तं पद्मं तत्सुमनोहरम्।४५

कैलासाख्यं तदूर्ध्वं तु रोधिनी तु तदूर्ध्वतः। एवंत्वाधारचक्राणिप्रोक्तानितवसुव्रत ।४६
सहस्रारयुतं बिन्दुस्थानं तदूर्ध्वमीरितम्। इत्येतत्कथितं सर्वं योगमार्गमनुत्तमम्।४७
आदौ पूरकयोगेनाऽप्याधारे योजयेन्मनः। गुदमेढ्रान्तरेशक्तिस्तामाकुञ्च्यप्रबोधयेत्।४८
लिङ्गभेदक्रमेणैव बिन्दुचक्रं च प्रापयेत्। शम्भुना तांपरांशक्तिमेकीभूतांविचिन्तयेत्।४६
तत्रोत्थितामृतं यत्तु द्रुतलाक्षारसोपमम्। पाययित्वा तु तां शक्तिंमायाख्यां योगसिद्धिदाम्।५०
षट्चक्रदेवतास्तत्र सन्तर्प्यामृतधारया। आनयेत्तेन मार्गेण मूलाधारं ततः सुधीः।५१
एवमभ्यस्यमानस्याऽप्यहन्यहनि निश्चितम्। पूर्वोक्तदूषिता मन्त्राः सर्वे सिध्यन्ति नाऽन्यथा।५२
जरामरणदुःखाद्यैर्मुच्यते भवबन्धनात्। ये गुणाः सन्ति देव्यामेजगन्मातुर्यथा तथा।५३
ते गुणाः साधकवरे भवन्त्येव न चान्यथा। इत्येवं कथितं तात! वायुधारणमुत्तमम्।५४
इदानीं धारणाख्यं तु शृणुष्वाऽवहितो मम। दिक्कालाद्यनवच्छिन्नदेव्यां चेतो विधाय च।५५
तन्मयो भवति क्षिप्रं जीवब्रह्मैक्ययोजनात्। अथवासमलंचेतो यदिक्षिप्रंनसिद्ध्यति।५६
तदाऽवयवयोगेन योगी योगान्समभ्यसेत्। मदीयहस्तपादादावङ्गे तु मधुरे नग!।५७
चित्तं संस्थापयेन्मन्त्री स्थानस्थानजयात्पुनः। विशुद्धचित्तः सर्वस्मिन्रूपे संस्थापयेन्मनः।५८
यावन्मनो लयं याति देव्यां सम्विदिपर्वत। तावदिष्टमनुं मन्त्रीजपहोमैःसमभ्यसेत्।५६
मन्त्राभ्यासेन योगेन ज्ञेयज्ञानाय कल्पते। न योगेन विना मन्त्रो न मन्त्रेण विना हि सः।६०
द्वयोरभ्यासायोगोहि ब्रह्मसंसिद्धिकारणम्। तमः परिवृते गेहे घटो दीपेन दृश्यते।६१
एवं माया वृतोह्यात्मा मनुना गोचरीकृतः। इति योगविधिः कृत्स्नः साङ्गः प्रोक्तो मयाऽधुना।
गुरूपदेशतो ज्ञेयो नान्यथा शास्त्रकोटिभिः।।६२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे देवीगीतायांमन्त्रसिद्धिसाधनवर्णनंनामपञ्चत्रिंशोऽध्यायः ।।३५।।

षट्त्रिंशोऽध्यायः

श्रीदेव्या ब्रह्मतत्त्वोपदेशवर्णनम्

देव्युवाच

इत्यादियोगयुक्तात्मा ध्यायेन्मां ब्रह्मरूपिणीम् ।
भक्त्या निर्व्याजया राजन्नासने समुपस्थितः ।।१।।
आविः सन्निहितं गुहाचरं नाममहत्पदम्। अत्रैतत्सर्वमर्पितमेजत्प्राणन्निमिषच्चयत्।२
एतज्जानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ।
यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणुं च यस्मिँल्लोका निहता लोकिनश्च ।।३।।
तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ्मनः। तदेतत्सत्यममृतं तद्वेद्धव्यं सौम्य विद्धि।४
धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं ह्युपासानिशितं सन्धयीत ।
आयम्य तद्भावगतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाऽक्षरं सौम्य! विद्धि ।।५।।
प्रणवोधनुःशरोह्यात्माब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते। अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयोभवेत्।६
यस्मिन्द्यौश्च पृथिवी चाऽन्तरिक्षमोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैः ।
तमेवैकं जानथात्मानमन्या वाचो विमुञ्चथामृतस्यैष सेतुः ।।७।।
अराइव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः। स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः।८
ओमित्येवं ध्यायथाऽऽत्मानं स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ।
दिव्ये ब्रह्मपुरे व्योम्नि आत्मा सम्प्रतिष्ठितः ।।६।।

मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय ।
तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा आनन्दरूपममृतं यद्विभाति ॥१०॥
भिद्यतेहृदयग्रन्थिश्छिद्यन्तेसर्वसंशयाः ।क्षीयन्तेचाऽस्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे।११
हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम्। तच्छुभ्रंज्योतिषांज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः।१२
न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः ।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदंविभाति ॥१३॥
ब्रह्मैवेदममृतंपुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्दक्षिणतश्चोत्तरेण ।
अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वं वरिष्ठम् ॥१४॥
एतादृगनुभवो यस्य स कृतार्थो नरोत्तमः। ब्रह्मभूतःप्रसन्नात्मानशोचतिनकाङ्क्षति।१५
द्वितीयाद्वैभयंराजंस्तदभावाद्बिभेतिन ।नतद्वियोगोमेऽप्यस्तिमद्वियोगोऽपितस्यन।१६
अहमेव स सोऽहं वै निश्चितंविद्धि पर्वत!। मद्दर्शनं तु तत्र स्याद्यत्र ज्ञानीस्थितोमम।१७
नाहं तीर्थे न कैलासेवैकुण्ठेवानकर्हिचित्। वसामिकिन्तुमज्ज्ञानिहृदयाम्भोजमध्यमे।१८
मत्पूजाकोटिफलदं सकृन्मज्ज्ञानिनोऽर्चनम्। कुलंपवित्रंतस्यास्तिजननीकृतकृत्यका।१९
विश्वम्भरा पुण्यवती चिल्लयो यस्य चेतसः। ब्रह्मज्ञानं तु यत्पृष्टं त्वया पर्वतसत्तम।२०
कथितं तन्मयासर्वंनाऽतो वक्तव्यमस्ति हि। इदंज्येष्ठायपुत्रायभक्तियुक्तायशीलिने।२१
शिष्याय च यथोक्त य वक्तव्यं नाऽन्यथा क्वचित् ।
यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ॥२२॥
तस्यैते कथिताः ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः। येनोपदिष्टा विद्येयं स एव परमेश्वरः।२३
यस्याऽयं सुकृतं कर्तुमसमर्थस्ततो ऋणी। पित्रोरप्यधिकः प्रोक्तोब्रह्मजन्मप्रदायकः।२४
पितृजातं जन्म नष्टं नेत्थं जातं कदाचन। तस्मै न द्रुह्येदित्यादिनिगमोऽप्यवदन्नग।२५
तस्माच्छास्त्रस्य सिद्धान्तो ब्रह्मदाता गुरुःपरः। शिवे रुष्टे गुरुस्त्रातागुरौरुष्टेनशङ्करः।२६
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्रीगुरुं तोषयेन्नग। कायेन मनसा वाचा सर्वदा तत्परो भवेत्।२७
अन्यथा तु कृतघ्नः स्यात्कृतघ्ने नाऽस्ति निष्कृतिः ।
इन्द्रेणाथर्वणायोक्ता शिरश्छेदप्रतिज्ञया ॥२८॥
अश्विभ्यां कथने तस्यशिरश्छिन्नंचवज्रिणा। अश्वीयंतच्छिरोनष्टंदृष्ट्वावैद्यौसुरोत्तमौ ।२९
पुनः संयोजितं स्वीयं ताभ्यांमुनिशिरस्तदा। इतिसङ्कटसम्पाद्याब्रह्मविद्यानगाधिप ।
लब्धा येन स धन्यः स्यात्कृतकृत्यश्च भूधर!॥३०॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे देवीगीतायांब्रह्मविद्योपदेशवर्णनंनाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

* सप्तत्रिंशोऽध्यायः *

श्रीदेव्याहिमालयकृतस्वकीयात्रैविध्यभक्तिमहिमवर्णनम्

हिमालय उवाच

स्वीयांभक्तिंवदस्वाऽम्बयेनज्ञानंसुखेनहि ।जायेतमनुजस्यास्यमध्यमस्याविरागिणः।१

देव्युवाच

मार्गास्त्रयो मे विख्यातामोक्षप्राप्तौनगाधिप!। कर्मयोगोज्ञानयोगोभक्तियोगश्चसत्तम ।२
त्रयाणामप्ययंयोग्यः कर्तुं शक्योऽस्ति सर्वथा। सुलभत्वान्मानसत्वात्कायचित्ताद्यपीडनात्।३
गुणभेदान्मनुष्याणां साभक्तिस्त्रिविधामता। परपीडांसमुद्दिश्यदम्भंकृत्वापुरः सरम्।४

मात्सर्यक्रोधयुक्तो यस्तस्यभक्तिस्तुतामसी। परपीडादिरहितः स्वकल्याणार्थमेवच।५
नित्यं सकामो हृदयं यशोऽर्थी भोगलोलुपः। तत्तत्फलसमावाप्त्यै मामुपास्तेऽतिभक्तितः। ६
भेदबुद्ध्या तु मां स्वस्मादन्यां जानाति पामरः।
तस्य भक्तिः समाख्याता नगाधिप! तु राजसी ॥७॥
परमेशार्पणं कर्म पापसङ्क्षालनाय च। वेदोक्तत्वादवश्यं तत्कर्तव्यं तु मयाऽनिशम्। ८
इति निश्चितबुद्धिस्तु भेदबुद्धिमुपाश्रितः। करोति प्रीतयेकर्मभक्तिः सानगसात्त्विकी। ९
परभक्तेः प्रापिकेयं भेदबुद्ध्यवलम्बनात्। पूर्वप्रोक्तेह्युभे भक्ती न परप्रापिके मते।१०
अधुना परभक्तिं तु प्रोच्यमानां निबोध मे। मद्गुणश्रवणं नित्यं ममनामानुकीर्तनम्।११
कल्याणगुणरत्नानामाकरायां मयि स्थिरम्। चेतसोवर्तनंचैवतैलधारासमं सदा।१२
हेतुस्तु तत्रकोवाऽपिनकदाचिद्भवेदपि। सामीप्यसार्ष्टिसायुज्यसालोक्यानांनचैषणा।१३
मत्सेवातोऽधिकं किञ्चिन्नैव जानाति कर्हिचित्।
सेव्यसेवकताभावात्तत्र मोक्षं न वाञ्छति ॥१४॥
परानुरक्त्या मामेव चिन्तयेद्यो ह्यतन्द्रितः। स्वाभेदेनैव मां नित्यंजानातिनविभेदतः।१५
मद्रूपत्वेन जीवानां चिन्तनं कुरुतेतु यः। यथास्वस्यात्मनिप्रीतिस्तथैवचपरात्मनि।१६
चैतन्यस्य समानत्वान्न भेदंकुरुते तु यः। सर्वत्रवर्तमानानां सर्वरूपां च सर्वदा।१७
नमते यजते चैवाऽप्याचाण्डालान्तमीश्वर। न कुत्राऽपि द्रोहबुद्धिंकुरुतेभेदवर्जनात्।१८
मत्स्थानदर्शने श्रद्धा मद्भक्तदर्शने तथा। मच्छास्त्रश्रवणे श्रद्धा मन्त्रतन्त्रादिषु प्रभो!।१९
मयिप्रेमाकुलमती रोमाञ्चिततनुः सदा। प्रेमाश्रुजलपूर्णाक्षः कण्ठगद्गदनिश्वनः।२०
अनन्येनैव भावेन पूजयेद्यो नगाधिप!। मामीश्वरीं जगद्योनिं सर्वकारणकारणम्।२१
व्रतानि मम दिव्यानि नित्यनैमित्तिकान्यपि। नित्यं यः कुरुते भक्त्या वित्तशाठ्यविवर्जितः।२२
मदुत्सवदिदृक्षा च मदुत्सवकृतिस्तथा। जायते यस्य नियतं स्वभावादेव भूधर!।२३
उच्चैर्गायंश्च नामानि ममैव खलु नृत्यति। अहङ्कारादिरहितो देहतादात्म्यवर्जितः।२४
प्रारब्धेन यथा यच्च क्रियते तत्तथा भवेत्। नमेचिन्ताऽस्तितत्राऽपिदेहसंरक्षणादिषु।२५
इति भक्तिस्तु या प्रोक्ता परभक्तिस्तु सा स्मृता।
यस्यां देव्यतिरिक्तं तु न किञ्चिदपि भाव्यते ॥२६॥
इत्थं जाता पराभक्तिर्यस्य भूधर! तत्त्वतः। तदैव तस्यचिन्मात्रेमद्रूपे विलयोभवेत्।२७
भक्तेस्तु या पराकाष्ठासैवज्ञानं प्रकीर्तितम्। वैराग्यस्य च सीमासाज्ञानेतदुभयंयतः।२८
भक्तौकृतायांयस्यापि प्रारब्धवशतो नग!। न जायते ममज्ञानंमणिद्वीपं स गच्छति।२९
तत्र गत्वाऽखिलान्भोगाननिच्छन्नपि चर्च्छति। तदन्ते मम चिद्रूपज्ञानं सम्यग्भवेन्नग!।३०
तेनमुक्तःसदैवस्याज्ज्ञानान्मुक्तिर्नचाऽन्यथा। इहैवयस्यज्ञानंस्याद्हृद्गतप्रत्यगात्मनः।३१
मम संवित्परतनोस्यस्तप्राणा व्रजन्ति न। ब्रह्मैव संस्तदाप्नोति ब्रह्मैव ब्रह्मवेदयः।३२
कण्ठचामीकरसममज्ञानात्तु तिरोहितम्। ज्ञानादज्ञाननाशेन लब्धमेव हि लभ्यते।३३
विदिताविदितादन्यन्नगोत्तम वपुर्मम। यथाऽऽदर्शेतथाऽऽत्मनि यथा जलेतथा पितृलोके।३४
छायातपौ यथा स्वच्छौ विविक्तौतद्वदेव हि। ममलोकेभवेज्ज्ञानंद्वैतभावविवर्जितम्।३५
यस्तु वैराग्यवानेव ज्ञानहीनो म्रियेत चेत्। ब्रह्मलोकेवसेन्नित्यं यावत्कल्पंततःपरम्।३६
शुचीनां श्रीमतां गेहे भवेत्तस्य जनिः पुनः। करोति साधनं पश्चात्ततोज्ञानंहिजायते।३७
अनेकजन्मभी राजज्ञानं स्यान्नैकजन्मना। ततः सर्वप्रयत्नेन ज्ञानार्थं यत्नमाश्रयेत्।३८

नोचेन्महान्विनाशः स्याज्जन्मैतद् दुर्लभं पुनः। तत्राऽपि प्रथमे वर्णेवेदप्राप्तिश्चदुर्लभा। ३९
शमादिषट्कसम्पत्तिर्योगसिद्धिस्तथैव च। तथोत्तमगुरुप्राप्तिः सर्वमेवाऽत्र दुर्लभम्। ४०
तथेन्द्रियाणां पटुता संस्कृतत्वंमनोस्तथा। अनेकजन्मपुण्यैस्तुमोक्षेच्छाजायतेततः। ४१
साधने सफलेऽप्येवं जायमानेऽपि यो नरः। ज्ञानार्थं नैव यतते तस्यजन्मनिरर्थकम्। ४२
तस्माद्राजन्यथाशक्त्याज्ञानार्थंयत्नमाश्रयेत्। पदेपदेऽश्वमेधस्यफलमाप्नोतिनिश्चितम्। ४३

घृतमिव पयसि निगूढं भूते भूते च वसति विज्ञानम्।
सततं मन्थयितव्यं मनसा मन्थानभूतेन ॥४४॥
ज्ञानं लब्ध्वा कृतार्थः स्यादिति वेदान्तडिण्डिमः।
सर्वमुक्तं समासेन किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥४५॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांसप्तमस्कन्धे देवीगीतायांभक्तिमहिमवर्णनंनाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥

* अष्टत्रिंशोऽध्यायः *

श्रीदेव्यामहोत्सवव्रतस्थानानांवर्णनम्

हिमालय उवाच

कति स्थानानि देवेशि! द्रष्टव्यानिमहीतले। मुख्यानिचपवित्राणिदेवीप्रियतमानिच। १
व्रतान्यपि तथा यानि तुष्टिदान्युत्सवा अपि। तत्सर्वं वद मे मातः कृतकृत्योयतोनरः। २

श्रीदेव्युवाच

सर्वं दृश्यं मम स्थानं सर्वेकालाव्रतात्मकाः। उत्सवाः सर्वकालेषुयतोऽहंसर्वरूपिणी। ३

तथाऽपिभक्तवात्सल्यात्किञ्चिकिञ्चिदथोच्यते।
शृणुष्वावहितोभूत्वानगराजवचोमम ॥४॥

कोलापुरं महास्थानं यत्र लक्ष्मीःसदास्थिता। मातुः पुरं द्वितीयं च रेणुकाधिष्ठितं परम्। ५
तुलजापुरं तृतीयं स्यात्सप्तशृङ्गंतथैवच। हिङ्गुलायामहास्थानंज्वालामुख्यास्तथैवच। ६
शाकम्भर्याःपरंस्थानं भ्रामर्याःस्थानमुत्तमम्। श्रीरक्तदन्तिकास्थानं दुर्गास्थानं तथैव च। ७

विन्ध्याचलनिवासिन्याः स्थानं सर्वोत्तमोत्तमम्।
अन्नपूर्णामहास्थानं काञ्चीपुरमनुत्तमम् ॥८॥

भीमादेव्याः परं स्थानं विमलास्थानमेव च। श्रीचन्द्रलामहास्थानं कौशिकीस्थानमेव च। ९
नीलाम्बायाः परं स्थानं नीलपर्वतमस्तके। जाम्बूनदेश्वरीस्थानं तथा श्रीनगरंशुभम्। १०
गुह्यकाल्यामहास्थानंनेपाले यत्प्रतिष्ठितम्। मीनाक्ष्याः परमंस्थानंयच्चप्रोक्तंचिदम्बरे। ११
वेदारण्यंमहास्थानंसुन्दर्याः समधिष्ठितम्। एकाम्बरं महास्थानं परशक्त्याप्रतिष्ठितम्। १२
महालसापरं स्थानं योगेश्वर्यास्तथैव च। तथानीलसरस्वत्याः स्थानंचीनेषुविश्रुतम्। १३
वैद्यनाथे तु बगलास्थानं सर्वोत्तमं मतम्। श्रीमच्छ्रीभुवनेश्वर्यामणिद्वीपंममस्मृतम्। १४
श्रीमत्त्रिपुरभैरव्याः कामाख्यायोनिमण्डलम्। भूमण्डले क्षेत्ररत्नं महामायाऽधिवासितम्। १५
नाऽतः परतरं स्थानं क्वचिदस्ति धरातले। प्रतिमासं भवेद्देवी यत्रसाक्षाद्रजस्वला। १६
तत्रत्या देवताः सर्वाः पर्वतात्मकतां गताः। पर्वतेषु वसन्त्येव महत्यो देवता अपि। १७
तत्रत्या पृथिवी सर्वा देवीरूपा स्मृता बुधैः। नातः परतरं स्थानं कामाख्यायोनिमण्डलात्। १८
गायत्र्याश्चपरंस्थानंश्रीमत्पुष्करमीरितम्। अमरेशेचण्डिकास्यात्प्रभासेपुष्करेक्षिणी। १९

नैमिषे तु महास्थाने देवी सा लिङ्गधारिणी। पुरुहूता पुष्कराक्षेआषाढौचरतिस्तथा।२०
चण्डमुण्डी महास्थाने दण्डिनी परमेश्वरी। भारभूतौभवेद्भूतिर्नाकुले नकुलेश्वरी।२१
चन्द्रिकातुहरिश्चन्द्रेश्रीगिरौशाङ्करीस्मृता ।जप्येश्वरेत्रिशूलास्यात्सूक्ष्माचाम्रातकेश्वरे।२२
शाङ्करीतुमहाकाले शर्वाणीमध्यमाभिधे। केदाराख्ये महाक्षेत्रे देवी सा मार्गदायिनी।२३
भैरवाख्ये भैरवी सा गयायां मङ्गला स्मृता। स्थाणुप्रिया कुरुक्षेत्रे स्वायम्भुव्यपि नाकुले।२४
कनखले भवेदुग्रा विश्वेशा विमलेश्वरे। अट्टहासे महानन्दा महेन्द्रे तु महान्तका।२५
भीमेभीमेश्वरी प्रोक्ता स्थानेवस्त्रापथेपुनः। भवानीशाङ्करीप्रोक्ता रुद्राणीत्वर्धकोटिके।२६
अविमुक्ते विशालाक्षी महाभागा महालये। गोकर्णेभद्रकर्णीस्याद्भद्रा स्याद्भद्रकर्णके।२७

उत्पलाक्षी सुवर्णाक्षे स्थाण्वी शास्थाणुसञ्ज्ञके।
कमलालये तु कमला प्रचण्डा छगलण्डके ।।२८।।

कुरण्डले त्रिसन्ध्यास्यान्माकोटे मुकुटेश्वरी। मण्डलेशे शाण्डकी स्यात्काली कालञ्जरे पुनः।२९
शङ्कुकर्णेध्वनिः प्रोक्तास्थूलास्यात्स्थूलकेश्वरे। ज्ञानिनां हृदयाम्भोजे हृल्लेखा परमेश्वरी।३०
प्रोक्तानीमानिस्थानानिदेव्याः प्रियतमानिच। तत्तत्क्षेत्रस्यमाहात्म्यंश्रुत्वापूर्वंनगोत्तम।३१
तदुक्तेन विधानेन पश्चाद्देवीं प्रपूजयेत्। अथवा सर्वक्षेत्राणि काश्यां सन्ति नगोत्तम।३२
तत्र नित्यंवसेन्नित्यंदेवीभक्तिपरायणः। तानि स्थानानिसम्पश्यञ्जपन्देवींनिरन्तरम्।३३

ध्यायंस्तच्चरणाम्भोजं मुक्तो भवति बन्धनात्।
इमानि देवीनामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।।३४।।

भस्मीभवन्ति पापानितत्क्षणान्नग! सत्वरम्। श्राद्धकालेपठेदेतान्यमलानि द्विजाग्रतः।३५
मुक्तास्तत्पितरः सर्वे प्रयान्ति परमां गतिम्। अधुना कथयिष्यामि व्रतानि तव सुव्रत!।३६
नारीभिश्च नरैश्चैव कर्तव्यानि प्रयत्नतः। व्रतमनन्ततृतीयाख्यं रसकल्याणिनीव्रतम्।३७
आर्द्रानन्दकरं नाम्ना तृतीयाया व्रतं च यत्। शुक्रवारव्रतं चैव तथा कृष्णचतुर्दशी।३८
भौमवारव्रतं चैव प्रदोषव्रतमेव च। यत्र देवो महादेवी देवीं संस्थाप्य विष्टरे।३९
नृत्यं करोति पुरतः सार्धं देवैर्निशामुखे। तत्रोपोष्य रजन्यादौ प्रदोषेपूजयेच्छिवाम्।४०
प्रतिपक्षं विशेषेण तद्देवीप्रीतिकारकम्। सोमवार व्रतं चैव ममातिप्रियकृन्नग।४१
तत्रापि देवीं सम्पूज्य रात्रौ भोजनमाचरेत्। नवरात्रद्वयं चैव व्रतं प्रीतिकरं मम।४२
एवमन्यान्यपि विभो नित्यनैमित्तिकानि च। व्रतानिकुरुते यो वै मत्प्रीत्यर्थं विमत्सरः।४३
प्राप्नोति मम सायुज्यं स मे भक्तः स मे प्रियः। उत्संवानपि कुर्वीत दोलोत्सवमुखान्विभो!।४४
शयनोत्सवं यथा कुर्यात्तथा जागरणोत्सवम्। रथोत्सवं च मेकुर्याद्दमनोत्सवमेवच।४५
पवित्रोत्सवमेवापि श्रावणे प्रीतिकारकम्। ममः भक्तः सदाकुर्यादेवमन्यान्महोत्सवान्।४६
मद्भक्तान्भोजयेत्प्रीत्या तथा चैव सुवासिनीः। कुमारीर्बटुकांश्चापि मद्बुद्ध्या तद्गतान्तरः।४७
वित्तशाठ्येन रहितो यजेदेतान्सुमादिभिः। य एवं कुरुते भक्त्या प्रतिवर्षमतन्द्रितः।४८
स धन्यः कृतकृत्योऽसौ मत्प्रीतेःपात्रमञ्जसा। सर्वमुक्तं समासेनममप्रीतिप्रदायकम्।

नाऽशिष्याय प्रदातव्यं नाऽभक्ताय कदाचन।।४९।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे देवीगीतायांश्रीदेव्यामहोत्सवव्रतस्थानवर्णनंनामाष्टत्रिंशोऽध्यायः ।। ३८ ।।

-----

* एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः *

श्रीदेव्याःपूजाविधिवर्णनम्

हिमालय उवाच

देवदेवि! महेशानि! करुणासागरेऽम्बिके। ब्रूहि पूजाविधिंसम्यग्यथावदधुना निजम्।१

श्रीदेव्युवाच

वक्ष्ये पूजाविधिं राजन्नम्बिकायायथा प्रियम्। अत्यन्तश्रद्धया सार्धं शृणुपर्वतपुङ्गव।२
द्विविधा मम पूजा स्याद् बाह्या चाभ्यन्तराऽपि च।
बाह्याऽपि द्विविधा प्रोक्ता वैदिकी तान्त्रिकी तथा ।।३।।
वैदिक्यर्चाऽपि द्विविधा मूर्तिभेदेन भूधर!। वैदिकी वैदिकैःकार्यावेददीक्षासमन्वितैः।४
तन्त्रोक्तदीक्षावद्भिस्तुतान्त्रिकीसंश्रिताभवेत्। इत्थंपूजारहस्यंचनज्ञात्वाविपरीतकम्।५
करोति यो नरो मूढः स पतत्येव सर्वथा। तत्रयावैदिकीप्रोक्ताप्रथमातांवदाम्यहम्।६
यन्मे साक्षात्परं रूपं दृष्टवानसि भूधर!। अनन्तशीर्षनयनमनन्तचरणं महत्।७
सर्वशक्तिसमायुक्तं प्रेरकं यत्परात्परम्। तदेव पूजयेन्नित्यं नमेद्ध्यायेत्स्मरेदपि।८
इत्येतत्प्रथमार्चायाः स्वरूपं कथितं नग!। शान्तः समाहितमना दम्भाऽहङ्कारवर्जितः।६
तत्परो भव तद्याजी तदेव शरणं व्रज। तदेव चेतसा पश्य जप ध्यायस्व सर्वदा।१०
अनन्यया प्रेमयुक्तभक्त्या मद्भावमाश्रितः। यज्ञैर्यज तपोदानैर्मामेव परितोषय।११
इत्थं ममाऽनुग्रहतोमोक्ष्यसे भवबन्धनात्। मत्परा ये मदासक्तचित्ताभक्तवरामताः।१२
प्रतिजाने भवादस्मादुद्धराम्यचिरेण तु। ध्यानेन कर्मयुक्तेन भक्तिज्ञानेन वा पुनः।१३
प्राप्याऽहं सर्वथा राजन्न तु केवलकर्मभिः। धर्मात्सञ्जायतेभक्तिर्भक्त्यासञ्जायतेपरम्।१४
श्रुतिस्मृतिभ्यामुदितं यत्स धर्मःप्रकीर्तितः। अन्यशास्त्रेण यः प्रोक्तो धर्माभासः स उच्यते।१५
सर्वज्ञात्सर्वशक्तेश्च मत्तो वेदः समुत्थितः। अज्ञानस्य ममाभावादप्रमाणानचश्रुतिः।१६
स्मृतयश्च श्रुतेरर्थं गृहीत्वैवच निर्गताः। मन्वादीनां श्रुतीनांचततःप्रामाण्यमिष्यते।१७
क्वचित्कदाचित्तन्त्रार्थकटाक्षेण परोदितम्। धर्मं वदन्ति सोंऽशस्तु नैव ग्राह्योऽस्ति वैदिकैः।१८
अन्येषां शास्त्रकर्तॄणामज्ञानप्रभवत्वतः। अज्ञानदोषदुष्टत्वात्तदुक्तेर्न प्रमाणता।१६
तस्मान्मुमुक्षुर्धर्मार्थं सर्वथा वेदमाश्रयेत्। राजाज्ञा च यथा लोके हन्यते न कदाचन।२०
सर्वेशान्या ममाज्ञासा श्रुतिस्त्याज्या कथंनृभिः।
मदाज्ञारक्षणार्थंतुब्रह्मक्षत्रियजातयः ।।२१।।
मया सृष्टास्ततो ज्ञेयं रहस्यं मे श्रुतेर्वचः। यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभूधर।२२
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदा वेषान्बिभर्म्यहम्। देवदैत्यविभागश्चाऽप्यत एवाऽभवन्नृप!।२३
ये न कुर्वन्ति तद्धर्मंतच्छिक्षार्थंमयासदा। सम्पादितास्तुनरकास्त्रासोयच्छ्रवणाद्भवेत्।२४
योवेदधर्ममुज्झित्य धर्ममन्यं समाश्रयेत्। राजा प्रवासयेद्देशान्निजादेतानधर्मिणः।२५
ब्राह्मणैर्न च सम्भाष्याः पङ्क्तिग्राह्या न च द्विजैः।
अन्यानि यानि शास्त्राणि लोकेऽस्मिन्विविधानि च।।२६।।
श्रुतिस्मृतिविरुद्धानि तामसान्येव सर्वशः। वामं कापालकं चैव कौलकं भैरवागमः।२७
शिवेन मोहनार्थाय प्रणीतो नान्यहेतुकः। दक्षशापाद् भृगोः शापाद्दधीचस्यचशापतः।२८
दग्धा ये ब्राह्मणवरा वेदमार्गबहिष्कृताः। तेषामुद्धरणार्थाय सोपानक्रमतः सदा।२६
शैवाश्च वैष्णवाश्चैव सौराःशाक्तास्तथैवच। गाणपत्याआगमाश्चप्रणीताः शङ्करेणतु।३०

तत्र वेदाविरुद्धोंऽशोऽप्युक्त एव क्वचित्क्वचित् ।
वैदिकैस्तद्ग्रहे दोषो न भवत्येव कर्हिचित् ।।३१।।

सर्वथावेदभिन्नार्थे नाऽधिकारी द्विजोभवेत् । वेदाधिकारहीनस्तु भवेत्तत्राधिकारवान् ।३२
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वैदिको वेदमाश्रयेत् । धर्मेण सहितं ज्ञानं परं ब्रह्म प्रकाशयेत् ।३३
सर्वैषणाः परित्यज्य मामेव शरणं गताः । सर्वभूतदयावन्तो मानाऽहङ्कारवर्जिताः ।३४
मच्चित्ता मद्गतप्राणा मत्स्थानकथने रताः । संन्यासिनोवनस्थाश्चगृहस्थाब्रह्मचारिणः ।३५
उपासने सदा भक्त्या योगमैश्वरसंज्ञितम् । तेषां नित्यावियुक्तानामहमज्ञानजं तमः ।३६
ज्ञानसूर्यप्रकाशेन नाशयामि न संशयः । इत्थं वैदिकपूजायाः प्रथमाया नगाधिप! ।३७
स्वरूपमुक्तं संक्षेपाद् द्वितीयाया अथो ब्रुवे । मूर्तौ वा स्थण्डिले वाऽपि तथा सूर्येन्दुमण्डले ।३८
जलेऽथ वा बाणलिङ्गे यन्त्रे वाऽपि महापटे । तथा श्रीहृदयाम्भोजे ध्यात्वा देवीं परात्पराम् ।३९
सगुणां करुणापूर्णांतरुणीमरुणारुणाम् । सौन्दर्यसारसीमां तां सर्वावयवसुन्दराम् ।४०
शृङ्गाररससम्पूर्णां सदा भक्ताऽऽर्तिकातराम् । प्रसादसुमुखीमम्बां चन्द्रखण्डशिखण्डिनीम् ।४१
पाशाङ्कुशवराभीतिधरामानन्दरूपिणीम् । पूजयेदुपचारैश्च यथावित्तानुसारतः ।४२
यावदान्तरपूजायामधिकारो भवेन्न हि । तावद् बाह्यामिमां पूजांश्रयेज्जातेतुतांत्यजेत् ।४३

आभ्यन्तरा तु या पूजा सा तु सम्विल्लयः स्मृतः ।
सम्विदेव परंरूपमुपाधिरहितंमम ।।४४।।

अतः सम्विदि मद्रूपे चेतः स्थाप्यं निराश्रयम् । सम्विद्रूपातिरिक्तं तु मिथ्या मायामयं जगत् ।४५
अतः संसारनाशाय साक्षिणीमात्मरूपिणीम् । भावयेन्निर्मनस्केनयोगयुक्तेन चेतसा ।४६
अतः परं बाह्यपूजाविस्तारः कथ्यते मया । सावधानेन मनसा शृणु पर्वतसत्तम! ।४७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे श्रीदेव्यापूजाविधिवर्णनंनामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ।। ३९ ।।

* चत्वारिंशोऽध्यायः *

देव्याबाह्यपूजाविधिवर्णनम्

श्रीदेव्युवाच

प्रातरुत्थाय शिरसि संस्मरेत्पद्ममुज्ज्वलम् । कर्पूराभं स्मरेत्तत्रश्रीगुरुंनिजरूपिणम् । १
सुप्रसन्नं लसद्भूषाभूषितं शक्तिसंयुतम् । नमस्कृत्य ततो देवींकुण्डलींसंस्मरेद्बुधः । २

प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे प्रतिप्रयाणेऽप्यमृतायमानाम् ।
अन्तः पदव्यामनुसञ्चरन्तीमानन्दरूपामबलां प्रपद्ये ।।३।।

ध्यात्वैवं तच्छिखामध्ये सच्चिदानन्दरूपिणीम् । मां ध्यायेदथ शौचादिक्रियाः सर्वाः समापयेत् । ४
अग्निहोत्रं ततो हुत्वा मत्प्रीत्यर्थं द्विजोत्तमः । होमान्ते स्वासने स्थित्वा पूजासङ्कल्पमाचरेत् । ५
भूतशुद्धिं पुरा कृत्वा मातृकान्यासमेव च । हृल्लेखामातृकान्यासं नित्यमेव समाचरेत् । ६
मूलाधारे हकारं च हृदये च रकारकम् । भ्रूमध्ये तद्वदीकारं ह्रीङ्कारं मस्तके न्यसेत् । ७
तत्तन्मन्त्रोदितानन्यान्न्यासान्सर्वान्समाचरेत् । कल्पयेत्स्वात्मनोदेहेपीठंधर्मादिभिः पुनः । ८
ततो ध्यायेन्महादेवीं प्राणायामैर्विजृम्भिते । हृदम्भोजे मम स्थाने पञ्चप्रेतासने बुधः । ९
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः । एते पञ्च महाप्रेताः पादमूले मम स्थिताः ।१०
पञ्चभूतात्मका ह्येते पञ्चावस्थात्मकाअपि । अहंत्वव्यक्तचिद्रूपातदतीताऽस्मिसर्वथा ।११
ततो विष्टरतां याताः शक्तितन्त्रेषु सर्वदा । ध्यात्वैवं मानसैर्भोगैः पूजयेन्मांजपेदपि ।१२

जप समर्प्य श्रीदेव्यै ततोऽर्घ्यस्थापनं चरेत्। पात्रासादनकं कृत्वा पूजाद्रव्याणि शोधयेत्।१३
जलेन तेन मनुनाचाऽस्त्रमन्त्रेणदेशिकाः। दिग्बन्धं च पुरा कृत्वा गुरून्नत्वाततः परम्।१४
तदनुज्ञां समादाय बाह्यपीठे ततः परम्। हृदिस्थांभावितांमूर्तिममदिव्यांमनोहराम्।१५
आवाहयेत्ततः पीठे प्राणस्थापनविद्यया। आसनावाहने चार्घ्यं पाद्याद्याचमनं तथा।१६
स्नानं वासोद्वयं चैव भूषणानि च सर्वशः। गन्धपुष्पंयथायोग्यंदत्त्वादेव्यैस्वभक्तितः।१७
यन्त्रस्थानामावृतीनां पूजनं सम्यगाचरेत्। प्रतिवारमशक्तानां शुक्रवारो नियम्यते।१८
मूलदेवीप्रभारूपाः स्मर्तव्या अङ्गदेवताः। तत्प्रभापटलव्याप्तं त्रैलोक्यञ्च विचिन्तयेत्।१९
पुनरावृत्तिसहितां मूलदेवीं च पूजयेत्। गन्धादिभिः सुगन्धैस्तुतथापुष्पैः सुवासितैः।२०
नैवेद्यैस्तर्पणैश्चैव ताम्बूलैर्दक्षिणादिभिः। तोषयेन्मां त्वत्कृतेन नाम्नां साहस्रकेण च।२१
कवचेन च सूक्तेनाऽहं रुद्रेभिरिति प्रभो! देव्यथर्वशिरोमन्त्रैर्हृल्लेखोपनिषद्भवैः।२२
महाविद्यामहामन्त्रैस्तोषयेन्मां मुहुर्मुहुः। क्षमापयेज्जगद्धात्रीं प्रेमार्द्रहृदयो नरः।२३
पुलकाङ्कितसर्वाङ्गैर्बाष्परुद्धाक्षिनिःस्वनः। नृत्यगीतादिघोषेण तोषयेन्मां मुहुर्मुहुः।२४
वेदपारायणैश्चैव पुराणैः सकलैरपि। प्रतिपाद्या यतोऽहं वै तस्मात्तैस्तोषयेच्च माम्।२५
निजं सर्वस्वमपि मे सदेहं नित्यशोऽर्पयेत्। नित्यहोमं ततः कुर्याद् ब्राह्मणांश्च सुवासिनीः।२६
बटुकान्पामरानन्यान्देवीबुद्ध्यातु भोजयेत्। नत्वापुनः स्वहृदयेव्युत्क्रमेणविसर्जयेत्।२७
सर्वं हृल्लेखया कुर्यात्पूजनं मम सुव्रत! हृल्लेखा सर्वमन्त्राणां नायिकापरमास्मृता।२८
हृल्लेखादर्पणे नित्यमहं तत्प्रतिबिम्बिता। तस्माद्धृल्लेखया दत्तंसर्वमन्त्रैः समर्पितम्।२९
गुरुं सम्पूज्य भूषाद्यैः कृतकृत्यत्वमावहेत्। य एवं पूजयेद्देवीं श्रीमद्भुवनसुन्दरीम्।३०
नतस्य दुर्लभं किञ्चित्कदाचित्क्वचिदस्तिहि। देहान्तेतुमणिद्वीपंममयात्येवसर्वथा।३१
ज्ञेयो देवीस्वरूपोऽसौदेवा नित्यं नमन्ति तम्। इति ते कथितं राजन्महादेव्याः प्रपूजनम्।३२
विमृश्यैतदशेषेणाऽप्यधिकारानुरूपतः। कुरु मे पूजनं तेन कृतार्थस्त्वं भविष्यसि।३३
इदं तु गीताशास्त्रं मे नाऽशिष्यायवदेत्क्वचित्। नाऽभक्ताय प्रदातव्यंन धूर्तायचदुर्हृदे।३४
एतत्प्रकाशनं मातुरुद्घाटनमुरोजयोः। तस्मादवश्यं यत्नेन गोपनीयमिदं सदा।३५
देयं भक्ताय शिष्याय ज्येष्ठपुत्राय चैव हि। सुशीलाय सुवेषाय देवीभक्तियुताय च।३६
श्राद्धकाले पठेदेतद्ब्राह्मणानां समीपतः। तृप्तास्तत्पितरः सर्वे प्रयान्ति परमं पदम्।३७

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा सा भगवती तत्रैवाऽन्तरधीयत। देवाश्च मुदिताः सर्वे देवीदर्शनतोऽभवन्।३८
ततो हिमालये जज्ञे देवी हैमवती तु सा। यागौरीतिप्रसिद्धाऽसीद्दत्तासाशङ्करायच।३९
ततः स्कन्दः समुद्भूतस्तारकस्तेन पातितः। समुद्रमन्थने पूर्वं रत्नान्यासुर्नराधिप।४०
तत्र देवैः स्तुता देवी लक्ष्मीप्राप्त्यर्थमादरात्। तेषामनुग्रहार्थाय निर्गता तु रमाततः।४१
वैकुण्ठाय सुरैर्दत्ता तेन तस्य शमोऽभवत्। इतितेकथितं राजन्देवीमाहात्म्यमुत्तमम्।४२
गौरीलक्ष्म्योःसमुत्पत्तिविषयं सर्वकामदम्। न वाच्यं त्वेतदन्यस्मै रहस्यं कथितं यतः।४३
गीता रहस्यभूतेयं गोपनीया प्रयत्नतः। सर्वमुक्तं समासेनयत्पृष्टं तत्त्वयाऽनघ!।४४
पवित्रं पावनं दिव्यं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।४५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे देवीगीतायां बाह्यपूजाविधिवर्णनंनामचत्वारिंशोऽध्यायः।।४०।।

खशरद्व्वब्धि (२३५०) पद्यैस्तु द्वैपायनमुखच्युतैः देवीभागवतस्याऽस्य सप्तमः स्कन्ध ईरितः।१।

।।श्रीगणेशायनमः।।

देवीभागवतपुराणम्

अष्टमस्कन्धः

* प्रथमोऽध्यायः *

व्यासजनमेजयसम्वादेभुवनकोषवर्णनप्रसङ्गेमनुनादेवीसमाराधनवर्णनम्

जनमेजय उवाच

सूर्यचन्द्रान्वयोत्थानां नृपाणांसत्कथाश्रितम्। चरितंभवताप्रोक्तंश्रुतंतदमृतास्पदम् ।१
अधुना श्रोतुमिच्छामि सा देवी जगदम्बिका। मन्वन्तरेषु सर्वेषु यद्यद्रूपेण पूज्यते।२
यस्मिन्यस्मिंश्च वै स्थाने येन येन च कर्मणा।
"शरीरेण च देवेशी पूजनीया फलप्रदा। येनैव मन्त्रबीजेन यत्र यत्र च पूज्यते।।"
देव्या विराट्स्वरूपस्य वर्णनं च यथातथम् ।।३।।
येन ध्यानेन तत्सूक्ष्मे स्वरूपेस्यान्मतेर्गतिः। तत्सर्वं वदविप्रर्षे येनश्रेयोऽहमाप्नुयाम्।४

व्यास उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि देव्याराधनमुत्तमम्। यत्कृतेन श्रुतेनापि नरः श्रेयोऽत्र विन्दते।५
एवमेतन्नारदेन पृष्टो नारायणः पुरा। तस्मै यदुक्तवान्देवो योगचर्याप्रवर्तकः।६
एकदा नारदः श्रीमान्पर्यटन्पृथिवीमिमाम्। नारायणाश्रमं प्राप्तोगतखेदश्चतस्थिवान्।७
तस्मै योगात्मने नत्वा ब्रह्मदेवतनूद्भवः। पर्यपृच्छदिमं चाऽर्थं यत्पृष्टो भवताऽनघ!।८

नारद उवाच

देवदेव! महादेव! पुराण पुरुषोत्तम!। जगदाधार! सर्वज्ञ! श्लाघनीयोरुसद्गुण!।९
जगतस्तत्त्वमाद्यं यत्तन्मे वद यथेप्सितम्। जायते कुत एवेदं कुतश्चेदं प्रतिष्ठितम्।१०
कुतोऽन्तं प्राप्नुयात्काले कुत्र सर्वफलोदयः। केन ज्ञातेनमावैषामोहभूर्नाशमाप्नुयात्।११
कयाऽर्चयाकिञ्जपेनकिन्ध्यानेनाऽऽत्महृत्कजे ।
प्रकाशो जायते देवतमस्यर्कोदयोयथा ।।१२।।
एतत्प्रश्नोत्तरं देव! ब्रूहि सर्वमशेषतः। यथा. लोकस्यतरेदन्धतमसं त्वञ्जसैव हि।१३

व्यास उवाच

एवं देवर्षिणा पृष्टः प्राचीनो मुनिसत्तमः। नारायणो महायोगीप्रतिनन्द्यवचोऽब्रवीत।१४

नारायण उवाच

शृणु देवर्षिवर्याऽत्र जगतस्तत्त्वमुत्तमम्। येन ज्ञातेनमर्त्यो हि जायते न जगद्भ्रमे।१५
जगतस्तत्त्वमित्येव देवी प्रोक्तामयाऽपि हि। ऋषिभिर्देवगन्धर्वैरन्यैश्चाऽपि मनीषिभिः।१६
सा जगत्सृजते देवी तया च प्रतिपाल्यते। तया च नाश्यतेसर्वमितिप्रोक्तंगुणत्रयात्।१७
तस्याः स्वरूपंवक्ष्यामि देव्याः सिद्धर्षिपूजितम्। स्मरतांसर्वपापघ्नं कामदंमोक्षदंतथा।१८
मनुः स्वायम्भुवस्त्वाद्यः पद्मपुत्रः प्रतापवान् ।
शतरूपापतिः श्रीमान्सर्वमन्वन्तराधिपः ।।१९।।
स मनुः पितरं देवं प्रजापतिमकल्मषम्। भक्त्या पर्यचरत्पूर्वं तमुवाचात्मभूः सुतम्।२०
पुत्र पुत्र! त्वयाकार्यं देव्याराधनमुत्तमम्। तत्प्रसादेन ते तात प्रजासर्गः प्रसिद्ध्यति।२१

एवमुक्तः प्रजास्रष्टा मनुः स्वायम्भुवोविराट्। जगद्योनिं तदादेवींतपसाऽतर्पयद्विभुः।२२
तुष्टाव देवीं देवेशीं समाहितमतिः किल। आद्यांमायां सर्वशक्तिंसर्वकारणकारणाम्।२३

मनुरुवाच

नमो नमस्ते देवेशि! जगत्कारणकारणे!। शङ्खचक्रगदाहस्ते! नारायणहृदाश्रिते!।२४
वेदमूर्ते! जगन्मातः! कारणस्थानरूपिणि!। वेदत्रयप्रमाणज्ञे! सर्वदेवनुते! शिवे!।२५
माहेश्वरि!महाभागे!महामाये! महोदये!। महादेवप्रियावासे! महादेवप्रियङ्करि!।२६
गोपेन्द्रस्य प्रिये! ज्येष्ठे!महानन्दे!महोत्सवे!। महामारीभयहरे! नमो देवादिपूजिते!।२७
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके!। शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि नमोऽस्तुते!।२८
यतश्चेदं यया विश्वमोतं प्रोतञ्च सर्वदा। चैतन्यमेवमाद्यन्तरहितं तेजसां निधिम्।२९
ब्रह्मा यदीक्षणात्सर्वं करोति चहरिः सदा। पालयत्यपि विश्वेशः संहर्ता यदनुग्रहात्।३०
मधुकैटभसम्भूतभयार्तः पद्मसम्भवः। यस्याः स्तवेन मुमुचे घोरदैत्यभवाम्बुधे।३१

त्वं ह्रीः कीर्तिः स्मृतिः कान्तिः कमला गिरिजा सती।
दाक्षायणी वेदगर्भा बुद्धिदात्री सदाऽभया।।३२।।

स्तोष्ये त्वां च नमस्यामि पूजयामि जपामि च। ध्यायामि भावये वीक्षे श्रोष्ये देवि! प्रसीद मे।३३
ब्रह्मावेदनिधिः कृष्णो लक्ष्म्यावासः पुरन्दरः। त्रिलोकाधिपतिः पाशी यादसाम्पतिरुत्तमः।३४
कुबेरोनिधिनाथोऽभूद्यमोजातः परेतराट्। नैर्ऋतो रक्षसांनाथः सोमोजातोह्यपोमयः।३५
त्रिलोकवन्द्यो लोकेशि! महामाङ्गल्यरूपिणि!। नमस्तेऽस्तु पुनर्भूयो जगन्मातर्नमोनमः।३६

नारायण उवाच

एवंस्तुता भगवती दुर्गा नारायणी परा। प्रसन्ना प्राह देवर्षे! ब्रह्मपुत्रमिदम्वचः।३७

श्रीदेव्युवाच

वरम्वरय राजेन्द्र! ब्रह्मपुत्र! यदिच्छसि। प्रसन्नाऽहंस्तवेनाऽत्रभक्त्याचाऽऽराधनेनच।३८

मनुरुवाच

यदि देवि! प्रसन्नाऽसि भक्त्या कारुणिकोत्तमे!।
तदा निर्विघ्नतः सृष्टिः प्रजायाः स्यात्तवाऽऽज्ञया।।३९।।

श्रीदेव्युवाच

प्रजासर्गः प्रभवतु ममाऽनुग्रहतः किल। निर्विघ्नेन चराजेन्द्र! वृद्धिश्चाप्युत्तरोत्तरम्।४०
यः कश्चित्पठतेस्तोत्रं मद्भक्त्या त्वत्कृतं सदा। तेषां विद्याप्रजासिद्धिःकीर्तिःकान्त्युदयःखलु।४१
जायन्ते धनधान्यानि शक्तिरप्रहता नृणाम्। सर्वत्र विजयो राजन्सुखं शत्रुपरिक्षयः।४२

नारायण उवाच

एवं दत्त्वा वरान्देवी मनवेब्रह्मसूनवे। अन्तर्धानं गताचाऽऽसीत्पश्यतस्तस्य धीमतः।४३
अथ लब्धवरो राजा ब्रह्मपुत्रः प्रतापवान्। ब्रह्माणमब्रवीत्तात! स्थानं मे दीयतां हरः।४४

यत्राऽहं समधिष्ठाय प्रजाः स्रक्ष्यामि पुष्कलाः।
यक्ष्यामि यज्ञदेवेशं तत्समादिशमा चिरम्।।४५।।

इति पुत्रवचः श्रुत्वा प्रजापतिपतिर्विभुः। चिन्तयामाससुचिरं कथंकार्यम्भवेदिदम्।४६
सृजतो मे गतः कालो विपुलोऽनन्तसङ्ख्यकः। धरावार्भिः प्लुता मग्ना रसं याताऽखिलाश्रया।४७
इदं मच्चिन्तितं कार्यं भगवानादिपूरुषः। करिष्यति सहायो मे यदादेशोऽहमाश्रितः।४८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोशप्रसङ्गेदेव्यामनवेवरदानवर्णनंनाम प्रथमोऽध्यायः।।१।।

* द्वितीयोऽध्यायः *

भगवताधरण्युद्धारवर्णनम्

नारायण उवाच

एवं मीमांसतस्तस्य पद्मयोनेः परन्तप!। मन्वादिभिर्मुनिवरैर्मरीच्याद्यैः समन्ततः।१
ध्यायतस्तस्यनासाग्राद्विरञ्चेः सहसाऽनघ। वाराहपोतो निरगादेकाङ्गुलप्रमाणतः।२
तस्यैव पश्यतः खस्थः क्षणेन किलनारद!। करिमात्रं प्रववृधे तदद्भुततमं ह्यभूत्।३
मरीचिमुख्यैर्विप्रेन्द्रैः सनकाद्यैश्च नारद!। तद्दृष्ट्वा सौकरं रूपं तर्कयामास पद्मभूः।४
किमेतत्सौकरव्याजं दिव्यं सत्त्वमवस्थितम्। अत्याश्चर्यमिदञ्जातं नासिकाया विनिःसृतम्।५
दृष्टोऽङ्गुष्ठशिरोमात्रःक्षणाच्छैलेन्द्रसन्निभः। आहोस्विद्भगवान्किम्वायज्ञोमेखेदयन्मनः।६
इति तर्कयतस्तस्य ब्रह्मणः परमात्मनः। वराहरूपो भगवाञ्जगर्जाऽचलसन्निभः।७
विरञ्चिं हर्षयामास संहतांश्च द्विजोत्तमान्। स्वगर्जशब्दमात्रेण दिक्प्रान्तमनुनादयन्।८
तेनिशम्यस्वखेदस्यक्षयिष्णुं घुर्घुरस्वनम्। जनस्तपःसत्यलोकवासिनोऽमरवर्यकाः।९
छंन्दोमयैः स्तोत्रवरैर्ऋक्सामाथर्वसम्भवैः। वचोभिः पुरुषं त्वाद्यं द्विजेन्द्राः पर्यवाकिरन्।१०
तेषां स्तोत्रं निशम्याऽद्यो भगनान्हरिरीश्वरः। कृपावलोकमात्रेणाऽनुगृहीत्वाऽऽपआविशत्।११
तस्याऽन्तर्विशतः क्रूरसटाघातप्रपीडितः। समुद्रोऽथाब्रवीद्देव रक्ष मां शरणार्तिहन्।१२
इत्याकर्ण्य समुद्रोक्तं वचनं हरिरीश्वरः। विदारयञ्जलचराञ्जगामाऽन्तर्जले विभुः।१३
इतस्ततोऽभिधावन्सन्विचिन्वन्पृथिवीं धराम्। आघ्रायाऽऽघ्राय सर्वेशो धरामासादयच्छनैः।१४
अन्तर्जलगतां भूमिं सर्वसत्त्वाश्रयां तदा। भूमिं स देवदेवेशो दंष्ट्रयोदाजहार ताम्।१५
तां समुद्धृत्य दंष्ट्राग्रे यज्ञेशो यज्ञपूरुषः। शुशुभे दिग्गजोयद्वदुद्धृत्याथसुपद्मिनीम्।१६
तं दृष्ट्वा देवदेवेशो विरञ्चिः समनुः स्वराट्। तुष्टाव वाग्भिर्देवेशं दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरम्।१७

ब्रह्मोवाच

जितन्ते! पुण्डरीकाक्ष! भक्तानामार्तिनाशन!। खर्वीकृतसुराधार! सर्वकामफलप्रद!।१८
इयं च धरणी देव शोभते वसुधा तव। पद्मिनीव सुपत्राढ्या मतङ्गजकरोद्धृता।१९
इदं च ते शरीरं वै शोभते भूमिसङ्गमात्। उद्धृताम्बुजशुण्डाग्रकरीन्द्रतनुसन्निभम्।२०
नमो नमस्ते देवेश सृष्टिसंहारकारकः। दानवानां विनाशाय कृतनानाकृते प्रभो।२१
अग्रतश्च नमस्तेऽस्तु पृष्ठतश्च नमो नमः। सर्वामराधारभूत! वृहद्धाम नमोऽस्तु ते।२२
त्वयाऽहञ्च प्रजासर्गे नियुक्तः शक्तिबृंहितः। त्वदाज्ञावशतः सर्गं करोमि विकरोमि च।२३
त्वत्सहायेन देवेशा अमराश्च पुरा हरे!। सुधां विभेजिरे सर्वेयथाकालंयथाबलम्।२४
इन्द्रस्त्रिलोकीसाम्राज्यंलब्धवांस्त्वन्निदेशतः। भुनक्तिलक्ष्मींबहुलां सुरसङ्घप्रपूजितः।२५
बह्निः पावकतां लब्ध्वाजाठरादिविभेदतः। देवासुरमनुष्याणां करोत्याप्यायनं तथा।२६
धर्मराजोऽथ पितॄणामधिपः सर्वकर्मदृक्। कर्मणां फलदाताऽसौ त्वन्नियोगादधीश्वरः।२७
नैर्ऋतो रक्षसामीशो यक्षोविघ्नविनाशनः। सर्वेषां प्राणिनांकर्मसाक्षीत्वत्तः प्रजायते।२८
वरुणोयादसामीशो लोकपालोजलाधिपः। त्वदाज्ञाबलमाश्रित्य लोकपालत्वमागतः।२९
वायुर्गन्धवहः सर्वभूतप्राणनकारणम्। जातस्तव निदेशेन लोकपालो जगद्गुरुः।३०
कुबेरः किन्नरादीनां यक्षाणां जीवनाश्रयः। त्वदाज्ञान्तर्गतः सर्वलोकपेषु च मान्यभूः।३१
ईशानः सर्वरुद्राणामीश्वरान्तकरः प्रभुः। जातो लोकेशवन्द्योऽसौ सर्वदेवाऽधिपालकः।३२

नमस्तुभ्यं भगवते! जगदीशायकुर्महे। यस्यांऽशभागाः सर्वेहिजाता देवाः सहस्रशः।३३

नारद उवाच

एवं स्तुतो विश्वसृजा भगवानादिपूरुषः। लीलाऽवलोकमात्रेणाऽप्यनुग्रहमवासृजत्।३४
तत्रैवाऽभ्यागतं दैत्यं हिरण्याक्षं महासुरम्। रुन्धानमध्वनो भीमं गदयाऽताडयद्धरिः।३५
तद्रक्तपङ्कदिग्धाङ्गो भगवानादिपूरुषः। उद्धृत्य धरिणीं देवोदंष्ट्रयालीलयाऽप्सुताम्।३६
निवेश्य लोकनाथेशो जगामस्थानमात्मनः। एतद्भगवतश्चित्रं धरण्युद्धरणं परम्।३७
शृणुयाद्यः पुमान्याऽश्च पठेच्चरितमुत्तमम्। सर्वपापविनिर्मुक्तो वैष्णवीं गतिमाप्नुयात्।३८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे धरण्युद्धारवर्णनंनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

* तृतीयोऽध्यायः *

स्वायम्भुवमनुवंशकीर्त्तनम्

नारायण उवाच

महीं देवः प्रतिष्ठाप्य यथास्थाने च नारद!। वैकुण्ठलोकमगमद्ब्रह्मोवाचस्वमात्मजम्।१
स्वायम्भुव! महाबाहो! पुत्रतेस्विनाम्वर!। स्थानेमहीमयेतिष्ठप्रजाः सृजयथोचितम्।२
देशकालविभागेन यज्ञेशं पुरुषं यज। उच्चावचपदार्थैश्च यज्ञसाधनकैर्विभो!।३
धर्ममाचर शास्त्रोक्तं वर्णाश्रमनिबन्धनम्। एतेन क्रमयोगेन प्रजावृद्धिर्भविष्यति।४
पुत्रानुत्पाद्य गुणतःकीर्त्या कान्त्याऽत्मरूपिणः। विद्याविनयसम्पन्नान्सदाचारवतां वरान्।५
कन्याश्च दत्त्वा गुणवद्यशोवद्भ्यः समाहितः। मनः सम्यक्समाधाय प्रधानपुरुषे परे।६
भक्तिसाधनयोगेन भगवत्परिचर्यया। गतिमिष्टां सदा वन्द्यां योगिनांगमिताभवान्।७
इत्यश्वास्यतु मनुं पुत्रं पद्मयोनिः प्रजापतिः। प्रजासर्गे नियम्यामुं स्वधामप्रत्यपद्यत।८
प्रजाः सृजत पुत्रेति पितुराज्ञां समादधत्। स्वायम्भुवः प्रजासर्गमकरोत्पृथिवीपतिः।९
प्रियव्रतोत्तानपादौ मनुपुत्रौ महौजसौ। कन्यास्तिस्रः प्रसूताश्च तासां नामानि मे शृणु।१०
आकूतिः प्रथमाकन्या द्वितीयादेवहूतिका। तृतीया चप्रसूतिर्हिविख्यातालोकपावनी।११
आकूतिंरुचये प्रादात्कर्दमायचमध्यमाम्। दक्षायाऽदात्प्रसूतिं चयासांलोकइमाः प्रजाः।१२
रुचेः प्रजज्ञे भगवान्यज्ञोनामाऽऽदिपुरुषः। आकूत्यांदेवहूत्यांचकपिलोऽसौचकर्दमात्।१३
साङ्ख्याचार्यः सर्वलोकेविख्यातःकपिलो विभुः। दक्षात्प्रसूत्यां कन्याश्च बहुशो जज्ञिरे प्रजाः।१४
यासां सन्तानसम्भूतादेवतिर्यङ्नरादयः। प्रसूतालोकविख्याताः सर्वे सर्गप्रवर्तकाः।१५
यज्ञश्च भगवान्स्वायम्भुवमन्वन्तरे विभुः। मनुं ररक्ष रक्षोभ्योयामैर्देवगणैर्वृतः।१६
कपिलोऽपि महायोगी भगवान्स्वाऽश्रमे स्थितः। देवहूत्यै परं ज्ञानं सर्वाविद्यानिवर्तकम्।१७
सविशेषं ध्यानयोगमध्यात्मज्ञाननिश्चयम्। कापिलं शास्त्रमाख्यातं सर्वाज्ञानविनाशनम्।१८
उपदिश्यमहायोगीसययौपुलहाश्रमम्। अद्याऽपि वर्तते देवः साङ्ख्याचार्योमहाशयः।१९
यन्नामस्मरणेनाऽपिसाङ्ख्ययोगश्चसिद्ध्यति। तंवन्देकपिलंयोगाचार्यंसर्ववरप्रदम्।२०
एवमुक्तं मनोः कन्यावंशवर्णनमुत्तमम्। पठतां शृण्वतां चाऽपि सर्वपापविनाशनम्।२१
अतः परं प्रवक्ष्यामि मनुपुत्रान्वयं शुभम्। यदाकर्णनमात्रेण परं पदमवाप्नुयात्।२२
द्वीपवर्षसमुद्रादिव्यवस्था यत्सुतैः कृता। व्यवहारप्रसिद्ध्यर्थं सर्वभूतसुखाप्तये।२३

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोशविस्तारेस्वायम्भुवमनुवंशकीर्त्तनंनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

* चतुर्थोऽध्यायः *

प्रियव्रतवंशवर्णनम्

नारायण उवाच

मनोः स्वायम्भुवस्यासीज्ज्येष्ठः पुत्रः प्रियव्रतः। पितुः सेवापरोनित्यंसत्यधर्मपरायणः। १
प्रजापतेर्दुहितरं सुरूपां विश्वकर्मणः। बर्हिष्मतीं चोपयेमे समानां शीलकर्मभिः। २
तस्यां पुत्रान्दश गुणैरन्वितान्भावितात्मनः। जनयामास कन्यां चोर्जस्वतीं च यवीयसीम्। ३
आग्नीध्रश्चेध्मजिह्वश्च यज्ञबाहुस्तृतीयकः। महावीरश्चतुर्थस्तु पञ्चमो रुक्मशुक्रकः। ४
घृतपृष्ठश्च सवनो मेधातिथिरथाऽष्टमः। वीतिहोत्रः कविश्चेति दशैतेवह्निनामकाः। ५
एतेषां दशपुत्राणां त्रयोऽप्यासन्विरागिणः। कविश्च सवनश्चैव महावीर इति त्रयः। ६
आत्मविद्यापरिष्णाताः सर्वेते ह्यूर्ध्वरेतसः। आश्रमेपरहंसाख्येनिःस्पृहाह्यभवन्मुदा। ७
अपरस्यां च जायायां त्रयः पुत्राश्च जज्ञिरे। उत्तमस्तामसश्चैव रैवतश्चेतिविश्रुताः। ८
मन्वन्तराधिपतय एते पुत्रा महौजसः। प्रियव्रतः स राजेन्द्रो बुभुजे जगतीमिमाम्। ९
एकादशार्बुदाब्दानामव्याहतबलेन्द्रियः । यदा सूर्यः पृथिव्याश्च विभागे प्रथमेऽतपत्। १०
भागेद्वितीयेतत्राऽऽसीदन्धकारोदयः किल। एवंव्यतिकरंराजाविलोक्यमनसाचिरम्। ११
प्रशास्ति मयि भूम्यां च तमःप्रादुर्भवेत्कथम्। एवं निवारयिष्यामिभूमौयोगबलेन च। १२
एवं व्यवसितो राजा पुत्रः स्वायम्भुवस्य सः। रथेनाऽऽदित्यवर्णेन सप्तकृत्वः प्रकाशयन्। १३
तस्याऽपि गच्छतो राज्ञो भूमौयद्रथनेमयः। पतितास्तेसमुद्राख्यांभेजिरे लोकहेतवे। १४
जाताः प्रदेशास्ते सप्तद्वीपाभूमौविभागशः। रथनेमिसमुत्थास्तेपरिखाः सप्तसिन्धवः। १५
यतआसंस्ततः सप्तभुवोद्वीपाहितेस्मृताः। जम्बुद्वीपःप्लक्षद्वीपः शाल्मलीद्वीपसञ्ज्ञकः। १६
कुशद्वीपः क्रौञ्चद्वीपः शाकद्वीपश्च पुष्करः। तेषां च परिमाणंतुद्विगुणंचोत्तरोत्तरम्। १७
समन्ततश्चोपक्लृप्तं बहिर्भागक्रमेणच। क्षारोदेक्षुरसोदौ च सुरोदश्च घृतोदकः। १८
क्षीरोदो दधिमण्डोदः शुद्धोदश्चेति ते स्मृताः। सप्तैते प्रतिविख्याताः पृथिव्यां सिन्धवस्तदा। १९
प्रथमो जम्बुद्वीपाख्यो यः क्षारोदेनवेष्टितः। तत्पतिंविदधेराजा पुत्रमाग्नीध्रसञ्ज्ञकम्। २०
प्लक्षद्वीपे द्वितीयेऽस्मिन्द्वीपेक्षुरससंप्लुते। जातस्तदधिपः प्रैयव्रत इध्मादिजिह्वकः। २१
शाल्मलीद्वीप एतस्मिन्सुरोदधिपरिप्लुते। यज्ञबाहुं तदधिपं करोति स्म प्रियव्रतः। २२
कुशद्वीपेऽतिरम्ये च घृतोदेनोपवेष्टिते। हिरण्यरेता राजाऽभूत्प्रियव्रततनूजनिः। २३
क्रौञ्चद्वीपे पञ्चमे तु क्षीरोदपरिसप्लुते। प्रैयव्रतो घृतपृष्ठः पतिरासीन्महाबलः। २४
शाकद्वीपे चारुतरे दधिमण्डोदसङ्कुले। मेधातिथिरभूद्राजा प्रियव्रतसुतो वरः। २५
पुष्करद्वीपके शुद्धोदकसिन्धुसमाकुले। वीतिहोत्रो बभूवाऽसौ राजा जनकसम्मतः। २६
कन्यामूर्जस्वतीं नाम्नीं ददावुशनसे विभुः। आसीत्तस्यां देवयानी कन्या काव्यस्य विश्रुता। २७
एवं विभज्य पुत्रेभ्यः सप्तद्विपान्प्रियव्रतः। विवेकवशगोभूत्वायोगमार्गाश्रितोऽभवत्। २८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोशविषयेप्रियव्रतवंशवर्णनंनाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

-----

* पञ्चमोऽध्यायः *

सविस्तरंद्वीपवर्षविभेदवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

देवर्षे! शृणु विस्तारं द्वीपवर्षविभेदतः। भूमण्डलस्य सर्वस्य यथा देवप्रकल्पितम्। १
समासात्सम्प्रवक्ष्यामिनाऽलंविस्तरतः क्वचित्।
जम्बुद्वीपः प्रथमतः प्रमाणेलक्षयोजनः ।।२।।
विशालो वर्तुलाकारो यथाऽब्जस्यचकर्णिका। नववर्षाणियस्मिंश्चनवसाहस्रयोजनैः ।३
आयामैःपरिसंख्यानि गिरिभिः परितः श्रितैः। अष्टाभिर्दीर्घरूपैश्चसुविभक्तानिसर्वतः ।४
धनुर्वत्संस्थिते ज्ञेये द्वे वर्षे दक्षिणोत्तरे। दीर्घाणि तत्र चत्वारि चतुरस्रमिलावृतम्। ५
इलावृतं मध्यवर्षं यन्नाभ्यां सुप्रतिष्ठितः। सौवर्णोगिरिराजोऽयंलक्षयोजनमुच्छ्रितः। ६
कर्णिकारूप एवाऽयं भूगोलकमलस्य च। मूर्ध्निद्वात्रिंशत्सहस्रयोजनैर्विततस्त्वयम्। ७
मूले षोडशसाहस्रस्तावताऽन्तर्गतः क्षितौ। इलावृतस्योत्तरतोनीलः श्वेतश्चशृङ्गवान्। ८
त्रयो वै गिरयः प्रोक्ता मर्यादावधयस्त्रिषु। रम्यकाख्ये तथावर्षे द्वितीये च हिरण्मये। ९
कुरुवर्षे तृतीये तु मर्यादां व्यञ्जयन्ति ते। प्रागायता उभयतः क्षारोदावधयस्तथा। १०
द्विसहस्रपृथुतरास्ता एकैकशः क्रमात्। पूर्वात्पूर्वाच्चोत्तरस्यां दशांशादधिकांशतः। ११
दैर्घ्य एव ह्रसन्तीमे नानानदनदीयुताः। इलावृताद्दक्षिणतो निषधो हेमकूटकः। १२
त्रयो हिमालयश्चेति प्राग्विस्तीर्णाः सुशोभनाः। अयुतोत्सेधभाजस्ते योजनैः परिकीर्तिताः। १३
हरिवर्षं किम्पुरुषं भारतं च यथातथतम्। विभागात्कथयन्त्येते मर्यादागिरयस्त्रयः। १४
इलावृतात्पश्चिमतो माल्यवान्नाम पर्वतः। पूर्वेणच ततः श्रीमान् गन्धमादनपर्वतः। १५
आनीलनिषधं त्वेतौ चायतौ द्विसहस्रतः। योजनैः पृथुतांयातौमर्यादाकारकौगिरी। १६
केतुमालाख्यभद्राश्ववर्षयोः प्रथितौ च तौ। मन्दरश्च तथा मेरुमन्दरश्च सुपार्श्वकः। १७
कुमुदश्चेति विख्याता गिरयो मेरुपादकाः। योजनायुतविस्तारोन्नाहा मेरोश्चतुर्दिशम्। १८
अवष्टम्भकरास्तेतु सर्वतोऽभिविराजिताः। एतेषु गिरिषु प्राप्ताः पादपाश्चूतजम्बुना। १९
कदम्बन्यग्रोध इति चत्वारः पर्वताः स्थिताः। केतवोगिरिराजेषुएकादशशतोच्छ्रयाः ।२०
तावद्विटपविस्ताराः शताख्यपरिणाहिनः। चत्वारश्च ह्रदास्तेषुपयोमध्विक्षुसज्जलाः। २१
यदुपस्पर्शिनो देवा योगैश्वर्याणि विन्दते। देवोद्यानानि चत्वारि भवन्ति ललनासुखाः। २२
नन्दनं चैत्ररथकं वैभ्राजं सर्वभद्रकम्। येषु स्थित्वाऽमरगणा ललनायूथसंयुतः। २३
उपदेवगणैर्गीतमहिमानो महाशयाः। विहरन्ति स्वतन्त्रास्ते यथाकामं यथासुखम्। २४
मन्दरोत्सङ्गसंस्थस्य देवचूतस्य मस्तकात्। एकादशशतोच्छ्रायात्फलान्यमृतभाञ्जि च। २५
गिरिकूटप्रमाणानि सुस्वादूनि मृदूनि च। तेषां विशीर्यमाणानां फलानांसुरसेन च। २६
अरुणोदसवर्णेन अरुणोदा प्रवर्तते। नदी रम्यजला देवदैत्यराजप्रपूजिता। २७
अरुणाख्या महाराज! वर्तते पापहारिणी। पूजयन्ति च तां देवीं सर्वकामफलप्रदाम्। २८
नानोपहारबलिभिः कल्मषघ्न्यभयप्रदाम्। तस्याः कृपावलोकेन क्षेमारोग्यंव्रजन्तिते। २९
आद्या माया तुलाऽनन्ता पुष्टिरीश्वरमालिनी। दुष्टनाशकरी कान्तिदायिनीति स्मृता भुवि। ३०
अस्याः पूजाप्रभावेण जाम्बूनदमुदावहत् ।।३१।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनलोकवर्णने द्वीपवर्षविभेदवर्णनंनाम पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।

* षष्ठोऽध्यायः *

अरुणोदादिनदीनांनिस्सरणस्थानवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अरुणोदा नदी या तु मया प्रोक्ता चनारद!। मन्दरान्निपतन्ती सा पूर्वेणेलावृतं प्लवेत्।१
यज्जोषणाद्भवान्याश्चाऽनुचरीणांस्त्रियामपि। यक्षगन्धर्वपत्नीनां देहगन्धवहोऽनिलः।२
वासयत्यभितो भूमिं दशयोजनसङ्ख्यया। एवं जम्बूफलानां च तुङ्गदेशनिपातनात्।३
विशीर्यतामनस्थीनां कुञ्जराङ्गप्रमाणिनाम्। रसेनचनदी जम्बूनाम्नीमेर्वाख्यमन्दरात्।४
पतन्ती भूमिभागे च दक्षिणेलवृतंगता। देवीजम्बूफलास्वादतुष्टाजम्ब्वादिनीस्मृता।५
तत्रत्यानां च लोकानां देवनागर्षिरक्षसाम्। पूजनीयपदा मान्या सर्वभूतदयाकरी।६
पावनी पापिनांरोगनाशिनी स्मरतामपि। कीर्तिताविघ्नसंहर्त्रीमाननीयादिवौकसाम्।७
कोकिलाक्षी कामकला करुणा कामपूजिता। कठोरविग्रहा धन्या नाकिमान्या गभस्तिनी।८
एभिर्नामपदैः कामं जपनीया सदा नृणाम्। जम्बूनदीरोधसोर्या मृत्तिकातीरवर्तिनी।९
जम्बूरसेनानुविद्ध्यमाना वाय्वर्कयोगतः। विद्याधरामरस्त्रीणां भूषणं विविधं महत्।१०
जाम्बूनदंसुवर्णं च प्रोक्तंदेवविनिर्मितम्। यत्सुवर्णचविविधायोषिद्भिः कामुकाः सदा।११
मुकुटं कटिसूत्रं च केयूरादीन्प्रकुर्वते। महाकदम्बः सम्प्रोक्तः सुपार्श्वगिरिसंस्थितः।१२
तस्य कोटरदेशेभ्यः पञ्चधाराश्चयाः स्मृताः। सुपार्श्वगिरिमूर्ध्नीहपतन्त्येताभुवंगताः ।१३
मधुधाराः पञ्च तास्तुपश्चिमेलावृतंप्लुताः। याश्चोपभुज्यमानानांदेवानांमुखगन्धभृत्।१४
वायुः समन्ततो गच्छञ्छतयोजनवासनः। धारेश्वरी महादेवी भक्तानांकार्यकारिणी।१५
देवपूज्या महोत्साहा कालरूपा महानना। वसते कर्मफलदा कान्तारग्रहणेश्वरी।१६
करालदेहा कालाङ्गी कामकोटिप्रवर्तिनी। इत्येतैर्नामभिः पूज्या देवी सर्वसुरेश्वरी।१७
एवं कुमुदरूढोयो नाम्ना शतबलो वटः। तत्स्कन्धेभ्योऽधोमुखाश्च नदाः कुमुदमूर्धतः।१८
पयोदधिमधुघृतगुडाऽन्नाद्यम्बरादिभिः । शय्यासनाद्याभरणैः सर्वे कामदुघाश्च ते।१९
उत्तरेणेलावृतं ते प्लावयन्ति समन्ततः। मीनाक्षी तत्तले देवी देवासुरनिषेविता।२०
नीलाम्बरा रौद्रमुखीनीलालकयुता चसा। नाकिनां देवसङ्घानां फलदा वरदा च सा।२१
अतिमान्याऽतिपूज्या चमत्तमातङ्गगामिनी। मदनोन्मादिनी मानप्रियामानप्रियान्तरा।२२
मारवेगधरा मारपूजिता मारमादिनी। मयूरवरशोभाढ्या शिखिवाहनगर्भभूः।२३
एभिर्नामपदैर्वन्द्या देवी सा मीनलोचना। जपतां स्मरतां मानदात्री चेश्वरसङ्गिनी।२४
तेषां नदानां पानीयपानानुगतचेतसाम्। प्रजानां न कदाचित्स्याद्वलीपलितलक्षणम्।२५
क्लमस्वेदादि दौर्गन्ध्यं जरामयमृतिभ्रमाः। शीतोष्णवातवैवर्ण्यमुखोपप्लवसञ्चयाः।२६
नापदश्चैव जायन्तेयाधवज्जीवंसुखम्भवेत्। नैरन्तर्येण तत्स्याद्वै सुखं निरतिशायकम्।२७
तत ऊर्ध्वम्प्रवक्ष्यामि सन्निवेशं च तद्गिरेः। सुवर्णमयनाम्नो वै सुमेरोः पर्वताः पृथक्।२८
गिरयो विंशतिपराः कर्णिकाया इवेहते। केसरीभूय सर्वेऽपि मेरोर्मूलविभागके।२९
परितश्चोपक्लृप्तास्ते तेषां नामानि शृण्वतः। कुरङ्गः कुरगश्चैव कुशुम्भोऽथो विकङ्कतः।३०
त्रिकूटः शिशिरश्चैव पतङ्गो रुचकस्तथा। निषधश्च शितीवासः कपिलः शङ्खएव च।३१
वैदूर्यश्चारुधिश्चैव हंसो ऋषभ एव च। नागः कालञ्जरश्चैव नारदश्चेति विंशतिः।३२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोष वर्णनेऽरुणोदादिनदीनांनिसर्गस्थानवर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः।६।

* सप्तमोऽध्यायः *

मेरोश्चतुरस्रमष्टसङ्ख्यकगिरीणाम्वर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

गिरी मेरुञ्च पूर्वेण द्वौ चाऽष्टादशयोजनैः। सहस्रै रायतौ चोदग्द्विसहस्रपृथूच्चकौ।१
जठरो देवकूटश्चतावेतौ गिरिवर्यकौ। मेरो पश्चिमतोऽद्री द्वौ पवमानस्तथाऽपरः।२
पारियात्रश्चतौ तावद्विख्यातौतुङ्गविस्तरौ। मेरोर्दक्षिणतःख्यातौकैलासकरवीरकौ ।३
प्रागायतौ पूर्ववृत्तौ महापर्वतराजकौ। एवं चोत्तरतो मेरोस्त्रिशृङ्गमकरौ गिरी।४
एतश्चाद्रिवरैरष्टसङ्ख्यैः परिवृतो गिरिः। सुमेरुः काञ्चनगिरिः परिभ्राजन्नविर्यथा।५
मेरोर्मूर्धनि धातुर्हि पुरी पङ्कजजन्मनः। मध्यतश्चोपक्लृप्तेयंदशसाहस्रयोजनैः ।६
समानचतुरस्रां च शातकौम्भमयीं पुरीम्। वर्णयन्ति महात्मानः परावरविदो बुधाः।७
तां पुरीमनुलोकानामष्टानामीशिषां परा। पुर्यः प्रख्यातसौवर्णरूपास्ताश्चयथादिशम्।८
यथारूपं सार्धनेत्रसहस्रप्रमिताः कृताः। मेरोर्नव पुराणि स्युर्मनोवत्यमरावती।९
तेजोवती संयमनी यथा कृष्णाङ्गनाऽपरा। श्रद्धावती गन्धवती तथा चान्यामहोदया।१०
यशोवती च ब्रह्मेन्द्रवह्न्यादीनां यथाक्रमम्। तत्रैव यज्ञलिङ्गस्य विष्णोर्भगवतो विभोः।११
वामपादाङ्गुष्ठनखनिर्भिन्नस्यच नारद!। अण्डोर्ध्वभागरन्ध्रस्यमध्यात्सम्विशतीदिवः।१२
मूर्धन्यवततारेयं गङ्गा संविशती विभोः। लोकानामखिलानां च पापहारिजलाकुला।१३
इयं च साक्षाद्भगवत्पदी लोकेषु विश्रुता। कालेन महता सा तु युगसाहस्रकेण तु।१४
दिवो मूर्धानमागत्य देवी देवनदीश्वरी। यत्तद्विष्णुपदंनाम स्थानं त्रैलोक्यविश्रुतम्।१५
औत्तानपादिर्यत्राऽऽस्ते ध्रुवः परमपावनः। भगवत्पादयुगलपद्मकोशरजो दधत्।१६
अद्याप्यास्ते स राजर्षिःपदवीमचलांश्रितः। तत्र सप्तर्षयस्तस्य प्रभावज्ञामहाशयाः।१७
प्रदक्षिणंप्रक्रमन्तिसर्वलोकहितेप्सवः । आत्यन्तिकीसिद्धिरियंतपतांसिद्धिदायिनी।१८
आद्रियन्ते च शिरसा जटाजूटोषितेन च। ततोविष्णुपदाद्देवी नैकसाहस्रकोटिभिः।१९
विमानैराकुले देवयानेऽवतरती च सा। चन्द्रमण्डलमाप्लाव्य पतन्ती ब्रह्मसद्मनि।२०
चतुर्धा भिद्यमाना सा ब्रह्मलोके च नारद!। चतुर्भिर्नामभिर्देवी चतुर्दिशमभिसृता।२१
सरिताञ्च नदीनाञ्च पतिमेवान्वपद्यते। सीता चाऽलकनन्दा च चतुर्भद्रेति नामभिः।२२
सीताच ब्रह्मसदनाच्छिखरेभ्यः क्षमाभृताम्। केसराभिधनाम्नांच प्रसवन्तीचस्वर्णदी।२३
गन्धमादनमूर्ध्नीह पतिता पापहारिणी। अन्तरेण तु भद्राश्ववर्षं प्राच्यां समागता।२४
क्षारोदधिं गता सातुद्युनदीदेवपूजिता। ततो माल्यवतः शृङ्गाद् द्वितीयापरिनिर्गता।२५
ततो वेगवती भूत्वा केतुमालं समागता। चक्षुर्नाम्नी देवनदी प्रतीच्यां दिश्युपागता।२६
सरितां पतिमाविष्टा सा गङ्गा देववन्दिता। ततस्तृतीया धारा तु नाम्ना ख्याता च नारद!।२७
पुण्याऽचालकनन्दा वैदक्षिणेनाब्जभूपदात्। वनानिगिरिकूटानि समतिक्रम्यचागता।२८
हेमकूटं गिरिवरं प्राप्ताऽतोऽपीह निर्गता। अतिवेगवतीभूत्वा भारतं चागताऽपरा।२९
दक्षिणं जलधिं प्राप्ता तृतीया सा सरिद्वरा। यस्याःस्नानाय रततां मनुजानां पदेपदे।३०
राजसूयाश्वमेधादि फलं तु न हि दुर्लभम्। ततश्चतुर्थी धारा तु शृङ्गवत्पर्वतात्पुनः।३१
भद्राभिधासंस्रवन्ती कुरूनन्तर्पयचोत्तरान्। समुद्रंसमनुप्राप्ता गङ्गा त्रैलोक्यपावनी।३२
अन्ये नदाश्च नद्यश्च वर्षे वर्षेऽपि सन्ति हि। बहुशोमेरुमन्दारप्रसूताश्चैव नारद!।३३

तत्राऽपि भारतम्वर्षं कर्मक्षेत्रमुशन्ति हि। अन्यानि चाऽष्टवर्षाणिभौमस्वर्गप्रदानिच। ३४
स्वर्गिणां पुण्यशेषस्यभोगस्थानानिनारद!। पुरुषाणांचाऽयुतायुर्वज्राङ्गादेवसन्निभाः। ३५
पुरुषानागसाहस्त्रैर्दशभिः परिकल्पिताः। महासौरतसन्तुष्टाःकलत्राढ्याःसुखान्विताः। ३६
एकवर्षोनके चायुष्याप्तगर्भाःस्त्रियोऽपि हि। त्रेतायुगसमः कालो वर्तते सर्वदैव हि। ३७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोषवर्णनेपर्वतनदीवर्षादिवर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः ।।७।।

* अष्टमोऽध्यायः *

इलावृतभद्राश्ववर्षयोर्वर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

तेषु वर्षेषु देवेशाः पूर्वोक्तैः स्तवनैः सदा। पूजयन्ति महादेवीं जपध्यानसमाधिभिः। १
सर्वर्तुकुसुमश्रेणी शोभितावनराजयः। फलानां पल्लवानाञ्च यत्र शोभा निरन्तरम्। २
तेषु काननवर्षेषु वर्षपर्वतसानुषु। गिरिद्रोणीषु सर्वासु निर्मलोदकराशिषु। ३
विकचोत्पलमालासु हंससारससञ्चयैः। विमिश्रितेषु तेष्वेव पक्षिभिः कूजितेषु च। ४
जलक्रीडादिभिश्चित्रविनोदैः क्रीडयन्ति च। सुन्दरीललितभ्रूणां विलासायतनेषु च। ५
तत्रत्या विहरन्त्यत्र स्वैरं युवतिभिःसह। नवस्वपि च वर्षेषु भगवानादिपूरुषः। ६
"नारायणाख्यो लोकानामनुग्रहरसैकदृक्"।
देवीमाराधयन्नास्ते स च सर्वैश्चपूज्यते। आत्मव्यूहेनेज्ययाऽसौसन्निधत्ते समाहितः। ७
इलावृते तु भगवान्पद्मजाक्षिसमुद्भवः। एक एव भवो देवो नित्यं वसति साऽङ्गनः। ८
तत्क्षेत्रेनाऽपरः कश्चित्प्रवेशंवितनोतिच। भवान्याः शापतस्तत्रपुमान्स्त्रीभवतिस्फुटम्। ९
भवानीनाथकैः स्त्रीणामसंख्यैर्गणकोटिभिः। संरुध्यमानो देवेशो देवं सङ्कर्षणं भजन्। १०
आत्मना ध्यानयोगेन सर्वभूतहितेच्छया। तां तामसीं तुरीयां चमूर्तिंप्रकृतिमात्मनः। ११
उपधावते चैकाग्रमनसा भगवानजः।

श्रीभगवानुवाच

ॐ नमो भगवतेमहापुरुषायसर्वगुणसङ्ख्यानायाऽनन्तातायाऽव्यक्ताय नम इति। १२

श्रीभगवानुवाच

भजे भजन्या रणपादपङ्कजं भगस्य कृत्स्नस्य परं परायणम् ।
भक्तेष्वलम्भावितभूतभावनं भवापहं त्वा भवभावमीश्वरम् ।।१३।।
न यस्य मायागुणकर्मवृत्तिभिर्निरीक्षतो ह्यण्वपि दृष्टिरज्यते ।
ईशे यथा नो जितमन्युरंहसा कस्तं न मन्येत जिगीषुरात्मनः ।।१४।।
असद्दृशो यः प्रतिभाति मायया क्षीबेव मध्वासवताम्रलोचनः ।
न नागवध्वोऽर्हण ईशिरे ह्रिया यत्पादयोः स्पर्शनधर्षितेन्द्रियाः ।।१५।।
यमाहुरस्य स्थितिजन्मसंयमं त्रिभिर्विहीनं यमनन्तमृषयः ।
न वेद सिद्धार्थमिव क्वचित्स्थितं भूमण्डलं मूर्धसहस्रधामसु ।।१६।।
यस्याऽऽद्यासीद्गुणविग्रहो महान्विज्ञानधिष्ण्यो भगवानजःकिल ।
यत्सम्भृतोऽहं त्रिवृता स्वतेजसा वैकारिकं तामसमैन्द्रियं सृजे ।।१७।।
एते वयं यस्य वशे महात्मनः स्थिताः शकुन्ता इव सूत्रयन्त्रिताः ।
महानहंवैकृततामसेन्द्रियाः सृजाम सर्वे यदनुग्रहादिदम् ।।१८।।

यन्निर्मितां कर्ह्यपि कर्मपर्वणींमायां जनोऽयं गुरु (गुण) सर्गमोहितः ।
न वेद निस्तारणयोगमञ्जसा तस्मै नमस्ते विलयोदयात्मने ॥१९॥

नारायण उवाच

एवं स भगवान्रुद्रो देवं सङ्कर्षणं प्रभुम्। इलावृतमुपासीत देवीगणसमाहितः।२०
तथैव धर्मपुत्रोऽसौ नाम्ना भद्रश्रवा इति। तत्कुलस्याऽपि पतयः पुरुषा भद्रसेवकाः।२१
भद्राश्ववर्षे तां मूर्तिं वासुदेवस्य विश्रुताम्। हयमूर्तिभिदातां तुहयग्रीवपदाङ्किताम्।२२
परमेण समाध्यन्यवारकेण नियन्त्रिताम्। एवमेव च तां मूर्तिं गृणन्त उपयान्तिच।२३

भद्रश्रवस ऊचुः

ॐ नमो भगवते धर्मायाऽऽत्मविशोधनाय नम इति ।
अहो विचित्रं भगवद्विचेष्टितं घ्नन्तं जनोऽयं हि मिषन्न पश्यति ।
ध्यायन्न सद्यर्हि विकर्म सेवितुं निर्हृत्य पुत्रं पितरं जिजीविषुः ॥२४॥
वदन्ति विश्वं कवयः स्म नश्वरं पश्यन्ति चाऽध्यात्मविदो विपश्चितः ।
तथाऽपि मुह्यन्ति तवाऽज मायया! सुविस्मितं कृत्यमजंनतोऽस्मितम् ॥२५॥
विश्वोद्भवस्थाननिरोधकर्म ते ह्यकर्तरङ्गीकृतमप्यपावृतः ।
युक्तंन चित्रं त्वयि कार्यकारणे सर्वात्मनि व्यतिरिक्ते च वस्तुतः ॥२६॥
वेदान्युगान्ते तमसा तिरस्कृतान्रसातलाद्यो नृतुरङ्गविग्रहः ।
प्रत्याददे वै कवयेऽभियाचते तस्मै नमस्तेऽवितथेहिताय ते ॥२७॥

एवं स्तुवन्ति देवेशं हयशीर्षं हरिं च ते। भद्रश्रवसनामानो वर्णयन्ति च तद्गुणान्।२८
एषां चरितमेतद्धि यः पठेच्छ्रावयेच्च यः। पापकञ्चुकमुत्सृज्य देवीलोकं व्रजेच्च सः।२९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोषवर्णनइलावृतभद्राश्ववर्षयोर्वर्णनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ॥८॥

* नवमोऽध्यायः *

हरिवर्षकेतुमालरम्यकवर्षाणांक्रमेणवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

हरिवर्षे च भगवान्नृहरिः पापनाशनः। वर्तते योगयुक्तात्मा भक्तानुग्रहकारकः। १
तस्य तद्दयितं रूपं महाभागवतोऽसुरः। पश्यन्भक्तिसमायुक्तः स्तौति तद्गुणतत्त्ववित्। २

प्रह्लाद उवाच

ॐ नमो भगवते नरसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे आविराविर्भव वज्रदंष्ट्रकर्माशयान्।
रन्धय रन्धय तमो ग्रस ग्रस ॐ स्वाहा। अभयं ममाऽऽत्मनि भूयिष्ठाः। ॐ क्षौं।
स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी ॥३॥
माऽगारदारात्मजवित्तबन्धुषु सङ्गो यदि स्याद्भगवत्प्रियेषु नः ।
यः प्राणवृत्त्या परितुष्ट आत्मवान्सिद्ध्यत्यदूरान्न तथेन्द्रियप्रियः ॥४॥
यत्सङ्गलब्धं निजवीर्यवैभवं तीर्थं मुहुः संस्पृशतां हि मानसम् ।
हरत्यजोऽन्तः श्रुतिभिर्गतोऽङ्गजं को वै न सेवेत मुकुन्दविक्रमम् ॥५॥
यस्यास्ति भक्तिर्भगवत्यकिञ्चना सर्वैर्गणैस्तत्र समासते सुराः ।
हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा मनोरथे नासति धावतो बहिः ॥६॥

हरिर्हि साक्षाद्भगवाञ्छरीरिणामात्मा झषाणामिवतोयमीप्सितम् ।
हित्वा महांस्तं यदि सज्जते गृहे तदा महत्त्वं वयसा दम्पतीनाम् ॥७॥
तस्माद्रजोरागविषादमन्युमानस्पृहाभयदैन्याधिमूलम् ।
हित्वा गृहं संसृतिचक्रवालं नृसिंहपादं भजतां कुतो भयम् ॥८॥
एवं दैत्यपतिः सोऽपि भक्त्याऽनुदिनमीडते। नृहरिं पापमातङ्गहरिं हृत्पद्मवासिनम्।९
केतुमाले च वर्षे हि भगवान्स्मररूपधृक्। आस्ते तद्वर्षनाथानां पूजनीयश्च सर्वदा।१०
एतेनोपासते स्तोत्रजालेन च रमाऽब्धिजा। तद्वर्षनाथा सततं महतां मानदायिका।११

रमोवाच

ॐह्रांह्रींहूं ॐ नमोभगवतेहृषीकेशायसर्वगुणविशेषैर्विलक्षितात्मनेआकूतीनां।
चित्तीनां चेतसां विशेषाणां चाऽधिपतये षोडशकलायच्छन्दोमयायाऽन्नमया।
याऽमृतमयायसर्वमयायसहसेओजसेबलायकान्तायकामायनमस्तेउभयत्रभूयात्।
स्त्रियो व्रतैस्त्वां हृषीकेश्वरं स्वतो ह्याराध्य लोके पतिमाशासतेऽन्यम् ।
तासां न ते वै परिपान्त्यपत्यं प्रियं धनायूंषि यतोऽस्वतन्त्राः ।१२
स वै पतिः स्यादकुतोभयः स्वतः समन्ततः पाति भयाऽऽतुरं जनम् ।
स एक एवेतरथा मिथो भयं नैवात्मलाभादधि मन्यते परम् ।१३
या तस्य ते पादसरोरुहार्हणं न कामयेत्साऽखिलकामलम्पटा ।
तदेव रासीप्सितमीप्सितोऽर्चितो यद्भग्नयाञ्चा भगवन्प्रतप्यते ।१४
मत्प्राप्तयेऽजेशसुरासुरादयस्तप्यन्त उग्रं तप ऐन्द्रिये धियः ।
ऋते भवत्पादपरायणान्न मां विन्दन्त्यहं त्वद्धृदया यतोऽजित ।१५
स त्वं ममाऽप्यच्युत शीर्ष्णि वन्दितं कराम्बुजं यत्त्वदधायि सात्वताम् ।
बिभर्षि मां लक्ष्म वरेण्य! मायया क ईश्वरस्येहितमूहितुं विभुः ।१६
एवं कामं स्तुवन्त्येवलोकबन्धुस्वरूपिणम्। प्रजापतिमुखावर्षनाथाः कामस्यसिद्धये।१७
रम्यके नामवर्षे च मूर्तिंभगवतः पराम्। मात्स्यांदेवासुरैर्वन्द्यांमनुःस्तौतिनिरन्तरम्।१८

मनुरुवाच

ॐ नमोभगवतेमुख्यातमायनमःसत्त्वायप्राणायौजसे बलायमहामत्स्यायनमः।
अन्तर्बहिश्चाऽखिललोकपालकैरदृष्टरूपो विचरस्युरुस्वनः ।
स ईश्वरस्त्वं य इदं वशे नयन्नाम्ना यथा दारुमयीं नरः स्त्रियम् ।१९
यं लोकपालाः किल मत्सरज्वरा हित्वा यतन्तोऽपि पृथक् समेत्य च ।
पातुं न शेकुर्द्विपदश्चतुष्पदः सरीसृपं स्थाणु यदत्र दृश्यते ।२०
भवान्युगान्तार्णव ऊर्मिमालिनि क्षोणीमिमामोषधिवीरुधां निधिम् ।
मया सहोरुक्रमतेऽज ओजसा तस्मै जगत्प्राणगणात्मने नमः ।२१
एवं स्तौति च देवेशं मनुः पार्थिवसत्तमः। मत्स्यावतारं देवेशं संशयच्छेदकारणम्।२२
ध्यानयोगेन देवस्य निर्धूताशेषकल्मषः। आस्ते परिचरन्भक्त्या महाभागवतोत्तमः।२३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोषवर्णनेहरिवर्षकेतुमालरम्यकवर्षवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ।९।

-----

* दशमोऽध्यायः *

हिरण्मयकिम्पुरुषवर्षयोर्वर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

हिरण्मये नाम वर्षे भगवान्कूर्मरूपधृक्। आस्ते योगपतिःसोऽयमर्यम्णापूज्यईड्यते। १

अर्यमोवाच

ॐ नमोभगवतेअकूपराय सर्वसत्त्वगुणविशेषणाय नोपलक्षित-
स्थानाय नमो वर्ष्मणे नमो भूम्ने नमोऽवस्थानाय नमस्ते ।
यद्रूपमेतन्निजमाययाऽर्पितमर्थस्वरूपं बहुरूपरूपितम् ।
सङ्ख्या न यस्याऽस्त्ययथोपलम्भनात्तस्मै नमस्तेऽव्यपदेशरूपिणे ।।२।।
जरायुजं स्वेदजमण्डजोद्भिदं चराचरं देवर्षिपितृभूतमैन्द्रियम् ।
द्यौः खं क्षितिः शैलसरित्समुद्रं द्वीपग्रहर्क्षेत्यभिधेय एकः ।।३।।
यस्मिन्नसङ्ख्येयविशेषनामरूपाकृतौ कविभिः कल्पितेयम् ।
संख्या यया तत्त्वदृशाऽपनीयते तस्मै नमः साङ्ख्यनिदर्शनाय ते ।।४।।

एवं स्तुवति देवेशमर्यमा सह वर्षपैः। गीयते चाऽपि भजते सर्वभूतभवं प्रभुम्। ५
तथोत्तरेषु कुरुषु भगवान्यज्ञपूरुषः। आदिवाराहरूपोऽसौ धरण्या पूज्यते सदा। ६
सम्पूज्यविधिवद्देवंतद्भक्त्याऽऽर्द्रऽऽहृत्कजा । भूमिःस्तौतिहरिंयज्ञवाराहंदैत्यमर्दनम्। ७

भूरुवाच

ॐ नमो भगवते मन्त्रतत्त्वलिङ्गाय यज्ञक्रतवे महाऽध्वरावयवाय ।
महावराहाय नमः कर्मशुक्लाय त्रियुगाय नमस्ते ।।८।।
यस्य स्वरूपं कवयो विपश्चितो गुणेषु दारुष्विव जातवेदसम् ।
मथ्नन्ति मथ्ना मनसा दिदृक्षवो गूढं क्रियार्थैर्नम ईरितात्मने ।।९।।
द्रव्यक्रियाहेत्वयनेशकर्तृभिर्मायागुणैर्वस्तुभिरीक्षितात्मने ।
यान्वीक्षयाऽङ्गातिशयाऽऽत्मबुद्धिभिर्निरस्तमायाकृतयेनमोऽस्तु ते ।।१०।।
करोति विश्वस्थितिसंयमोदयं यस्येप्सितं नेप्सितुमीक्षितुगुणैः ।
माया यथाऽयो भ्रमते तदाश्रयं ग्राव्णो नमस्ते गुणकर्मसाक्षिणे ।।११।।
प्रमथ्य दैत्यं प्रतिवारणं मृधे यो मां रसाया जगदादिसूकरः ।
कृत्वाऽग्रदंष्ट्रं निरगादुदन्वतः क्रीडन्निवेभःप्रणताऽस्मितं विभुम् ।।१२।।

किम्पुरुषे वर्षेऽस्मिन्भगवन्तं दाशरथिं च सर्वेशम् ।
सीतारामं देवं श्रीहनुमानादि पूरुषंस्तौति ।।१३।।

हनुमानुवाच

ॐ नमो भगवते उत्तमश्लोकाय नम इति।
आर्यलक्षणशीलव्रताय नमः उपशिक्षितात्मने उपासितलोकाय नमः।
साधुवादनिकषणाय नमो ब्रह्मण्यदेवाय महापुरुषाय महाभागाय नम इति।
यत्तद्विशुद्धानुभवात्ममेकं स्वतेजसा ध्वस्तगुणव्यवस्थम् ।
प्रत्यक्प्रशान्तं सुधियोपलम्भनं ह्यनामरूपं निरहं प्रपद्ये ।।१४।।
मर्त्यावतारस्त्विह मर्त्यशिक्षणं रक्षोवधायैव न केवलं विभो! ।
कुतोऽन्यथा स्याद्रमतः स्व आत्मनः सीताकृतानि व्यसनानीश्वरस्य ।।१५।।

न वै स आत्माऽऽत्मवतां सुहृत्तमः सक्तस्त्रिलोक्यां भगवान्वासुदेवः ।
न स्त्रीकृतं कश्मलमश्नुवीत न लक्ष्मणं चाऽपि विहातुमर्हति ।।१६।।
न जन्म नूनं महतो न सौभगं न वाङ् न बुद्धिर्नाऽऽकृतिस्तोषहेतुः ।
तैर्यद्विसृष्टानापि नो वनौकसश्चकार सख्ये बत लक्ष्मणाग्रजः ।।१७।।
सुरोऽसुरो वाऽप्यथवा नरोऽनरः सर्वात्मना यः सुकृतज्ञमुत्तमम् ।
भजेत रामं मनुजाकृतिं हरिं या उत्तराननयत्कोसलान्दिवम् ।।१८।।

नारायण उवाच

एवं किम्पुरुषेवर्षे सत्यसन्धं दृढव्रतम् । रामं राजीवपत्राक्षं हनुमान्वानरोत्तमः ।१६
स्तौति गायति भक्त्याचसम्पूजयति सर्वशः । यएतच्छृणुयाच्चित्रं रामचन्द्रकथानकम् ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति रामसलोकताम् ।।२०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोषवर्णनेहिरण्मयकिम्पुरुषवर्षयोर्वर्णनंनामदशमोऽध्यायः ।।१०।।

* एकादशोऽध्यायः *

भारतवर्षवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

भारताख्येच वर्षेऽस्मिन्नहमादिजपूरुषः । तिष्ठामि भवता चैव स्तवनंक्रियतेऽनिशम् । १

नारद उवाच

ॐ नमो भगवते उपशमशीलायोपरतानात्म्याय नमोऽकिञ्चनवित्ताय ।
ऋषिऋषभायनरनारायणायपरमहंसपरमगुरवेआत्मारामाधिपतयेनमोनम इति ।
कर्ताऽस्य सर्गादिषु यो न बध्यते न हन्यते देहगतोऽपि दैहिकैः ।
द्रष्टुर्न दृश्यस्य गुणैर्विदूष्यते तस्मै नमोऽसक्तविविक्तसाक्षिणे ।।२।।
इदं हि योगेश्वर! योगनैपुणं हिरण्यगर्भो भगवाञ्जगाद यत् ।
यदन्तकाले त्वयि निर्गुणे मनो भक्त्या दधीतोज्झितदुष्कलेवरः ।।३।।
यथैहिकामुष्मिककामलम्पटः सुतेषु दारेषु धनेषु चिन्तयन् ।
शङ्केत विद्वान्कुकलेवरात्ययाद्यस्तस्य यत्नः श्रम एव केवलम् ।।४।।
तन्नः प्रभो त्वं कुकलेवरार्पितां त्वं माययाऽहंममतामधोक्षज! ।
भिन्द्याम येनाऽऽशु वयं सुदुर्भिदां विधेहि योगं त्वयि नः स्वभावजम् ।५
एवंस्तौतिसदादेवंनारायणमनामयम् । नारदो मुनिशार्दूलः प्रज्ञाताखिलसारदृक् । ६
अस्मिन्वैभारतेवर्षेसरिच्छैलास्तुसन्ति हि । तान्प्रवक्ष्यामिदेवर्षे शृणुष्वैकाग्रमानसः । ७
मलयो मङ्गलप्रस्थो मैनाकश्चत्रिकूटकः । ऋषभः कूटकः कोल्लः सह्योदेवगिरिस्तथा । ८
ऋष्यमूकश्च श्रीशैलो व्यङ्कटाद्रिर्महेन्द्रकः । वारिधारश्च विन्ध्यश्च शुक्तिमानृक्षपर्वतः । ६
पारियात्रस्तथा द्रोणश्चित्रकूटगिरिस्तथा । गोवर्धनो रैवतकः ककुभो नीलपर्वतः । १०
गौरमुखश्चेन्द्रकीलोगिरिः कामगिरिस्तथा । एतेचान्येप्यसङ्ख्यातागिरयोबहुपुण्यदाः । ११
एतदुत्पन्नसरितः शतशोऽथ सहस्रशः । पानावगाहनस्नानदर्शनोत्कीर्तनैरपि । १२
नाशयन्ति च पापानित्रिविधानि शरीरिणाम् । ताम्रपर्णीचन्द्रवशाकृतमालावटोदका । १३
वैहायसी च कावेरी वेणा चैव पयस्विनी । तुङ्गभद्रा कृष्णवेणा शर्करावर्तका तथा । १४
गोदावरी भीमरथी निर्विन्ध्या च पयोष्णिका । तापी रेवा च सुरसा नर्मदा च सरस्वती । १५
चर्मण्वतीच सिन्धुश्चअन्धशोणौमहानदौ । ऋषिकुल्यात्रिसामाच वेदस्मृतिर्महानदी । १६

कौशिकी यमुना चैव मन्दाकिनी दृषद्वती। गोमती सरयू रोधवती सप्तवती तथा।१७
सुषोमाचशतद्रुश्चचन्द्रभागा मरुद्वृधा। वितस्ताचअसिक्नीच विश्वाचेतिप्रकीर्तिताः।१८
अस्मिन्वर्षेलब्धजन्मपुरुषैः स्वस्वकर्मभिः। शुक्ललोहितकृष्णाख्यैर्दिव्यमानुषनारकाः।१९
भवन्ति विविधाभोगाः सर्वेषाञ्च निवासिनाम्। यथा वर्णविधानेनाऽपवर्गो भवति स्फुटम्।२०
एतदेव च वर्षस्यप्राधान्यं कार्यसिद्धितः। वदन्ति मुनयो वेदवादिनः स्वर्गवासिनः।२१

अहो अमीषां किमकारि शोभनं प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः ।
यैर्जन्म लब्धं नृषु भारताजिरे मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहा हि नः ।।२२।।
किं दुष्करैर्नः क्रतुभिस्तपोव्रतैर्दानादिभिर्वा द्युजयेन फल्गुना ।
न यत्र नारायणपादपङ्कजस्मृतिः प्रमुष्टाऽतिशयेन्द्रियोत्सवात् ।।२३।।
कल्पायुषां स्थानजयात्पुनर्भवात्क्षणायुषां भारतभूजयो वरम् ।
क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्विनः संन्यस्य संयान्त्यभयम्पदं हरेः ।।२४।।
न यत्र वैकुण्ठकथासुधापगा न साधवोभागवतास्तदाश्रयाः ।
न यत्र यज्ञेशमखा महोत्सवाः सुरेशलोकोऽपि न वै ससेव्यताम् ।।२५।।
प्राप्ता नृजातिं त्विह ये चजन्तवोज्ञानक्रियाद्रव्यकलापसम्भृताम् ।
न वै यतेरन्नपुनर्भवाय ते भूयो वनौका इव यान्ति बन्धनम् ।।२६।।
यैः श्रद्धाया बर्हिषि भागशो हविर्निरुप्तमिष्टं विधिमन्त्रवस्तुतः ।
एकः पृथङ्नामभिराहतो मुदागृह्णाति पूर्णः स्वयमाशिषां प्रभुः ।।२७।।
सत्यं दिशत्यर्थितमर्थितो नृणां नैवाऽर्थदो यत्पुनरर्थिता यतः ।
स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवम् ।।२८।।
"यद्यत्र नः स्वर्गसुखावशेषितं पूर्तस्य कृतस्य शोभनम् ।
तेनाऽब्जनाभेः स्मृतिमज्जन्म नः स्याद्वर्षे हरिर्भजतां शं तनोति ।।१।।"

नारायण उवाच

एवं स्वर्गगता देवाः सिद्धाश्चपरमर्षयः। प्रवदन्ति च माहात्म्यं भारतस्य सुशोभनम्।२९
जम्बूद्वीपस्य चाऽष्टौ हि उपद्वीपाः स्मृताः परे ।
हयमार्गान्विशोधद्भिः सागरैः परिकल्पिताः ।।३०।।
स्वर्णप्रस्थश्चन्द्रशुक्र आवर्तनरमाणकौ। मन्दरोपाख्यहरिणः पाञ्चजन्यस्तथैव च।३१
सिंहलश्च लङ्केति उपद्वीपाष्टकं स्मृतम्। जम्बुद्वीपस्यमानं हि कीर्तितं विस्तरेण च।३२
अतः परं प्रवक्ष्यामि प्लक्षादिद्वीपषट्ककम् ।।३३।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे ऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोषवर्णने भारतवर्षवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ।।११।।

* द्वादशोऽध्यायः *

प्लक्षादिद्वीपवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

जम्बुद्वीपो यथा चायं यत्प्रमाणेनकीर्तित। तावतासर्वतः क्षारोदधिना परिवेष्टितः।१
जम्ब्वाख्येन यथामेरुस्तथाक्षारोदकेनच। क्षारोदधिस्तुद्विगुणः प्लक्षाख्येनोपवेष्टितः।२
यथैवपरिखा बाह्योपवनेनहि वेष्ट्यते। प्लक्षाख्यश्च स्वयज्जम्बुप्रमाणो द्वीपरूपधृक्।३
हिरण्मयोऽग्निस्तत्रैव तिष्ठतीतिविनिश्चयः। प्रियव्रतात्मजस्तत्र सप्तजिह्वइतिस्मृतः।४
अग्निस्तदधिपस्त्विध्मजिह्वः स्वंद्वीपमेवच। विभज्यसप्तवर्षाणिस्वपुत्रेभ्योददौविभुः।५

स्वयमात्मविदां मान्यांयोगचर्यांसमाश्रितः। तेनैवचाऽऽत्मयोगेन भगवन्तमुपागतः।६
शिवञ्च यवसं भद्रं शान्तं क्षेमामृते तथा। अभयञ्चेति सप्तैव तद्वर्षाणि सदेक्षताम्।७
तेषुप्रोक्ता नदीः सप्तगिरयः सप्त चैव हि। अरुणा नृम्णाङ्गिरसी सावित्रीसुप्रभातिका।८
ऋतम्भरा सत्यम्भरा इति नद्यः प्रकीर्तिता। मणिकूटो वज्रकूट इन्द्रसेनस्तथैव च।९
ज्योतिष्मान्वै सुपर्णश्च हिरण्यष्ठीव एव च। मेघमालइतिख्याताः प्लक्षद्वीपस्य पर्वताः।१०
नदीनां जलमात्रेण दर्शनस्पर्शनादिभिः। निर्धूताशेषरजसो निस्तमस्काः प्रजास्तथा।११
हंसश्चैव पतङ्गश्च ऊर्ध्वायन इतीव च। सत्याङ्गसञ्ज्ञाश्चत्वारो वर्णाः प्लक्षस्यद्वीपके।१२
सहस्रायुः प्रमाणाश्च विविधोपमदर्शनाः। स्वर्गद्वारं त्रयीविद्याविधिनाऽर्कं यजन्ति ते।१३
प्रत्नस्य विष्णोरूपंचसत्यर्तस्य च ब्रह्मणः। अमृतस्यचमृत्योश्चसूर्यमात्मानमीमहि ।१४
प्लक्षादिषु च सर्वेषु पञ्चद्वीपेषु नारद!। आयुरिन्द्रियमोजश्च बलं बुद्धिः सहोऽपि च।१५
विक्रमः सर्वलोकानां सिद्धिरौत्पत्तिकीसदा। प्लक्षद्वीपात्परंचेक्षुरसोदःसरितांपतिः ।१६
प्लक्षद्वीपंसमग्रञ्चपरिवार्याऽवतिष्ठते । शाल्मलाख्यस्ततोद्वीपश्चास्माद्द्विगुणविस्तरः।१७
समानेन सुरोदेन सिन्धुनापरिवेष्टितः। यत्र वै शाल्मलीवृक्षः प्लक्षायामः प्रकीर्तितः।१८
स्थानं तत्पक्षिराजस्यगरुडस्यमहात्मनः। तस्यद्वीपस्यनाथोहियज्ञबाहुः प्रियव्रतात्।१९
जातः स एवसप्तभ्यः स्वपुत्रेभ्योददौधराम्। तद्वर्षाणाञ्चनामानि कथितानि निबोधत।२०
सुरोचनं सौमनस्यं रमणं देववर्षकम्। पारिभद्रं तथाचाऽप्यायनंविज्ञातनामकम्।२१
तेषुवर्षाद्रयः सप्त सप्तैवसरितः स्मृताः। सरसः शतशृङ्गश्च वामदेवश्च कन्दकः।२२
कुमुदः पुष्पवर्षश्च सहस्रश्रुतिरेव च। एते च पर्वताः सप्त नदीनामानि चोच्यते।२३
अनुमतिःसिनीवाली सरस्वती कुहूस्तथा। रजनीचैवनन्दाचराकेति परिकीर्तिताः।२४
तद्वर्षपुरुषाः सर्वे चातुर्वर्ण्यसमाह्वयाः। श्रुतधरोवीर्यधरो वसुन्धर इषुन्धरः।२५
भगवन्तं वेदमयं यजन्तेसोममीश्वरम्। स्वगोभिः पितृदेवेभ्योविभजन्कृष्णशुक्लयोः।२६
सर्वासां चप्रजानां च राजासोमः प्रसीदतु। एवंसुरोदाद्द्विगुणः स्वमानेनप्रकीर्तितः।२७
घृतोदेनाऽऽवृतः सोऽयं कुशद्वीपः प्रकाशते। यस्मिन्नास्तेकुशस्तम्बो द्वीपाख्याकारणो ज्वलन्।२८
स्वशष्परोचिषा काष्ठा भासयन्परितिष्ठते। हिरण्यरेतास्तद् द्वीपपतिः प्रैयव्रतः स्वराट्।२९
स्वपुत्रेभ्यश्च सप्तभ्यस्तद्द्वीपं सप्तधाभजत्। वसुश्च वसुदानश्च तथा दृढरुचिः परः।३०
नाभिगुप्तस्तुत्यव्रतौ विविक्तनामदेवकौ। तेषां वर्षेषु सप्तैवसीमागिरिवराः स्मृताः।३१
नद्यः सप्तैव सन्तीह तन्नामानि निबोधत। चक्रस्तथा चतुः शृङ्गः कपिलश्चित्रकूटकः।३२
देवानीकश्चोर्ध्वरोमा द्रविणः सप्त पर्वताः। रसकुल्यामधुकुल्या मित्रविन्दा तथैवच।३३
श्रुतविन्दा देवगर्भाघृतच्युन्मन्दमालिके। यत्पयोभिः कुशद्वीपवासिनः सर्व एव ते।३४
कुशलः कोविदश्चैवाऽप्यभियुक्तस्तथैव च। कुलकश्चेतिसञ्ज्ञाभिश्चतुर्वर्णाः प्रकीर्तिताः।३५
जातवेदसरूपं तं देवं कर्मजकौशलैः। यजन्ते देववर्याभाः सर्वे सर्वविदो जनाः।३६
परस्य ब्रह्मणः साक्षाज्जातवेदोऽसि हव्यवाट्। देवानां पुरुषाङ्गानां यज्ञेन पुरुषं यज।
एवं यजन्ते ज्वलनं सर्वे द्वीपाऽधिवासिनः।।३७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोषवर्णनेप्लक्षद्वीपकुशद्वीपवर्णनंनाम द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

* त्रयोदशोऽध्यायः *

क्रौञ्चद्वीपशाकद्वीपपुष्करद्वीपानाम्वर्णनम्

नारद उवाच

शिष्टद्वीपप्रमाणं च वद सर्वार्थदर्शन!।येन विज्ञातमात्रेण परानन्दमयो भवेत्।१

श्रीनारायण उवाच

कुशद्वीपस्य परितो घृतोदावरणंमहत्।ततोबहिः क्रौञ्चद्विपोद्विगुणः स्यात्स्वमानतः।२
क्षीरोदेनावृतोभातियस्मिन्क्रौञ्चाद्रिरस्तिच।नामनिर्वर्तकः सोऽयं द्वीपस्यपरिवर्तते।३
योऽसौ गुहस्यशक्त्याचभिन्नकुक्षिःपुराभवत्।क्षीरोदेनासिच्यमानोवरुणेनचरक्षितः।४
घृतपृष्ठो नामयस्य विभातिकिलनायकः।प्रियव्रतात्मजः श्रीमान्सर्वलोकनमस्कृतः।५
स्वद्वीपं तु विभज्यैव सप्तधा स्वात्मजान्ददौ।पुत्रनामसु वर्षेषुवर्षपान्सन्निवेशयन्।६
स्वयं भगवतस्तस्य शरणं सञ्जगाम ह।आमो मधुरुहश्चैव मेघपृष्ठः सुधामकः।७
भ्राजिष्ठोलोहितार्णश्च वनस्पतिरितीव च।नगानद्यश्च सप्तैव विख्याताभुवि सर्वतः।८
शुक्लोवैवर्धमानश्चभोजनश्चोपबर्हणः।नन्दश्च नन्दनः सर्वतोभद्रइतिकीर्तिताः।९
अभया अमृतौघा चाऽऽर्यकातीर्थवतीति च।वृत्तिरूपवतीशुक्लापवित्रवतिका तथा।१०
एतासामुदकं पुण्यं चातुर्वर्ण्येन पीयते।पुरुषऋषभौ तद्वद् द्रविणाख्यश्च देवकः।११
एते चतुर्वर्णजाताः पुरुषा निवसन्ति हि।तत्रत्याः पुरुषा आपोमयं देवमपाम्पतिम्।१२
पूर्णेनाऽञ्जलिनाभक्त्यायजन्तेविविधक्रियाः।आपःपुरुषवीर्याः स्थपुनन्तीर्भूर्भुवः वः स्वरः।१३
ता नः पुनीताऽमीवघ्नीः स्पृशतामात्मना भुवः।इति मन्त्रजपान्ते च स्तुवन्ति विविधैः स्तवैः।१४
एवं परस्तात्क्षीरोदात्परितश्चोपवेशितः।द्वात्रिंशल्लक्षसंख्याकयोजनायाममाश्रितः।१५
स्वमानेन च द्वीपोऽयं दधिमण्डोदकेन च।शाकद्वीपो विशिष्टोऽयं यस्मिञ्छाको महीरुहः।१६
स्वक्षेत्रव्यपदेशस्य कारणं स हि नारद!।प्रैयव्रतोऽधिपस्तस्यमेधातिथिरितिस्मृतः।१७
विभज्यसप्तवर्गाणिपुत्रनामानि तेषु च।सप्त पुत्रान्निजान्स्थाप्य स्वयंयोगगतिंगतः।१८
पुरोजवोमनः पूर्वजवोऽथ पवमानकः।धूम्रानीकश्चित्ररेफो बहुरूपोऽथ विश्वधृक्।१९
मर्यादागिरयः सप्त नद्यः सप्तैव कीर्तिताः।ईशान ऊरुशृङ्गोऽथ बलभद्रः शतकेशरः।२०
सहस्रस्रोतको देवपालोऽप्यन्ते महाशनः।एतेऽद्रयः सप्त चोक्ताः सरिन्नामानि सप्त च।२१
अनघाप्रथमायुर्दा उभयस्पृष्टिरेव च।अपराजिता पञ्चपदी सहस्रश्रुतिरेव च।२२
ततो निजधृतिश्चोक्ताःसप्तःनद्यो महोज्ज्वलाः।तद्वर्षपुरुषाः सर्वे सत्यव्रतक्रतुव्रतौ।२३
दानव्रतानुव्रतौ च चतुर्वर्णा उदीरिताः।भगवन्तं प्राणवायुं प्राणायामेन संयुताः।२४
यजन्ति निर्धूतरजस्तमसः परमं हरिम्।अन्तः प्रविश्य भूतानि यो बिभर्त्यात्मकेतुभिः।२५
अन्तर्यामीश्वरः साक्षात्पातु नो यद्वशेइदम्।परस्ताद्दधिमण्डोदात्ततस्तुबहुविस्तरः।२६
पुष्करद्वीपनामाऽयं शाकद्वीपद्विसङ्गुणः।स्वसमानेन स्वादूदकेनाऽयं परिवेष्टितः।२७
यत्राऽऽस्ते पुष्करभ्राजदग्निचूडानिभानि च।पत्राणि विशादानीह स्वर्णपत्रायुतायुतम्।२८
श्रीमद्भगवतश्चेदमासनं परमेष्ठिनः।कल्पितं लोकगुरुणा सर्वलोकसिसृक्षया।२९
तद्द्वीप एक एवाऽयं मानसोत्तरनामकः।अर्वाचीनपराचीनवर्षयोरवधिर्गिरिः।३०
उच्छ्रायायामयोः संख्याऽयुतयोजनसम्मिता।यत्रदिक्षु च चत्वारि चतसृषुपुराणिह।३१
इन्द्रादिलोकपालानां यदुपर्यर्कनिर्गमः।मेरुप्रदक्षिणीकुर्वन्भानुः पर्येति यत्र हि।३२

सम्वत्सरात्मकंचक्रंदेवाऽहोरात्रतोभ्रमन् ।प्रैयव्रतोऽधिपोवीतिहोत्रः स्वात्मजकद्वयम् ।३३
वर्षद्वये परिस्थाप्य वर्षनामधरं क्रमात् ।रमणो धातकिश्चैव तत्तद्वर्षपती उभौ ।३४
कृताः स्वयं पूर्वजवद्भगवद्भक्तितत्पराः।तद्वर्षपुरुषा ब्रह्मरूपिणं परमेश्वरम् ।३५
सकर्मकेन योगेन यजन्ति परिशीलिताः।यत्तत्कर्ममयं लिङ्गं ब्रह्मलिङ्गं जनोऽर्चयेत् ।
एकान्तमद्वयं शान्तं तस्मै भगवते नमः ।।३६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोषवर्णने क्रौञ्चशाकपुष्करद्वीपानाम्वर्णनंनामत्रयोदशोऽध्यायः ।।१३।।

* चतुर्दशोऽध्यायः *

लोकालोकाचलवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

ततः परस्तादचलोलोकालोकेतितामकः। अन्तराले चलोकालोकयोर्यः परिकल्पितः। १
यावदस्ति च देवर्षे! ह्यन्तरंमानसोत्तरात् । सुमेरोस्तावतीशुद्धाकाञ्चनीभूमिरस्तिहि । २
दर्पणोदरतुल्या सा सर्वप्राणिविवर्जिता। यस्यां पदार्थः प्रहितोनकिञ्चित्प्रत्युदीयते। ३
अतः सर्वप्राणिसङ्घरहितासा च नारद!। लोकलोक इति व्याख्या यदत्रपरिकल्पिता। ४
लोकालोकान्तरेचाऽस्यवर्ततिसर्वदास्थितिः । ईश्वरेणसलोकानांत्रयाणामन्तगः कृतः। ५
सूर्यादीनां ध्रुवान्तानां रश्मयो यद्वशादिह। अर्वाचीनाश्च त्रींल्लोकानातन्वनाः कदाऽपि हि। ६
पराचीनत्वभाजोहि न भवन्ति च नारद!। तावदुन्नहनायामः पर्वतेन्द्रो महोदयः। ७
एतावांल्लोकविन्यासोऽयं संस्थामानलक्षणैः। कविभिः स तु पञ्चाशत्कोटिभिर्गणितस्य च। ८
भूगोलस्य चतुर्थांशो लोकालोकाचलोमुने!। तस्योपरिचतुर्दिक्षुब्रह्मणाचात्मयोनिना। ९
निवेशितादिग्गजा ये तन्नामानिनिबोधत। ऋषभः पुष्पचूडोऽथवामनोऽथापराजितः।१०
एते समस्तलोकस्य स्थितिहेतव ईरिताः। तेषां च स्वविभूतीनां बहुवीर्योपबृंहणम्।११
विशुद्धसत्त्वंचैश्वर्यंवर्धयन्भगवान्हरिः । आस्तेसिद्ध्यष्टकोपेतोविष्वक्सेनादिसंवृतः।१२
निजायुधैः परिवृतो भुजदण्डैः समन्ततः। आस्ते सकललोकस्य स्वस्तयेपरमेश्वरः।१३
आकल्पमेवंवेषंसगतोविष्णुः सनातनः। स्वमायारचितस्याऽस्य गोपीथायात्मसाधनः।१४
योऽन्तर्विस्तार एतेन ह्यलोकपरिमाणकम्। व्याख्यातं यद्बहिर्लोकालोकाचल इतीरणात्।१५
ततः परस्ताद्योगेशगतिं शुद्धां वदन्ति हि। अण्डमध्यगतः सूर्योद्यावाभूम्योर्यदन्तरम्।१६
सूर्याण्डगोलयोर्मध्ये कोट्यः स्युः पञ्चविंशतिः ।
मृतेऽण्ड एष एतस्मिञ्जातो मार्तण्डशब्दभाक् ।।१७।।
हिरण्यगर्भ इति यद्धिरण्याण्डसमुद्भवः। सूर्येण हि विभज्यन्तेदिशः खंद्यौर्महीभिदा।१८
स्वर्गापवर्गौ नरका रसौकांसिचसर्वशः। देवतिर्यङ्मनुष्याणांसरीसृपसवीरुधाम् ।१९
सर्वजीवनिकायानां सूर्य आत्मा दृगीश्वरः। एतावान्भूमण्डलस्य सन्निवेश उदाहृतः।२०
एतेन हि दिवो मानं वर्णयन्ति च तद्विदः। द्विदलानांचनिष्पावादीनांचदलयोर्यथा ।२१
अन्तरेण तयोरन्तरिक्षं तदुभयसन्धितम्। यन्मध्यगश्च भगवान्भानुर्वै तपतां वरः।२२
आतपेन त्रिलोकीं च प्रतपत्येव भासयन्। उत्तरायणमासाद्य गतिमान्द्यं वितन्वते।२३
आरोहणस्थानमसौ गत्वाऽह्नोदैर्घ्यमाचरेत्। दक्षिणायनमासाद्यगतिशैघ्र्यंवितन्वते ।२४
अवरोहस्थानमसौगच्छन्ह्रस्वंदिनं चरेत्। विषुवत्सञ्ज्ञमासाद्यगतिसाम्यंवितन्वते।२५

समस्थानमथाऽऽसाद्यदिनसाम्यंकरोति च। यदाच मेषतुलयोः सञ्चरेद्धि दिवाकरः।२६
समानानि त्वहोरात्राण्यातनोति त्रयीमयः। वृषादिपञ्चसु यदा राशिष्वर्को विरोचते।२७
तदाऽहानि च वर्धन्ते रात्रयोऽपि ह्रसन्ति च। वृश्चिकादिषु सूर्यो हि यदा सञ्चरते रविः।२८
तदाऽपीमान्यहोरात्राणि भवन्ति विपर्ययात्।।२९।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे सूर्यगतीनाम्वर्णनंनाम चतुर्दशोऽध्यायः।।१४।।

* पञ्चदशोऽध्यायः *

भानुगतिवर्णनेराशिचक्रवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अतः परं प्रवक्ष्यामि भानोर्गमनमुत्तमम्। शीघ्रमन्दादिगतिभिस्त्रिविधं गमनं रवेः।१
सर्वग्रहाणां त्रीण्येव स्थानानि सुरसत्तम!। स्थानं जारद्गवं मध्यं तथैरावतमुत्तरम्।२
वैश्वानरं दक्षिणतोनिर्दिष्टमितितत्त्वतः। अश्विनीकृत्तिकायाम्यानागवीथीतिशब्दिता।३
रोहिण्यार्द्रा मृगशिरो गजवीथ्यभिधीयते। पुष्याश्लेषा तथाऽऽदित्या वीथी चैरावती स्मृता।४
एतास्तु वीथयस्तिस्र उत्तरो मार्ग उच्यते। तथाद्वेचापिफल्गुन्यौमघाचैवार्षभीमता।५
हस्तश्चित्रा तथा स्वाती गोवीथीति तु शब्दिता।
ज्येष्ठा विशाखानुराधा वीथी जारद्गवी मता।।६।।
एतास्तुवीथयस्तिस्रोमध्यमोमार्गउच्यते। मूलाषाढोत्तराषाढाअजवीथ्यभिशब्दिता।७
श्रवणं च धनिष्ठा च मार्गी शतभिषक्तथा। वैश्वानरीभाद्रपदे रेवती चैव कीर्तिता।८
एतास्तु वीथयस्तिस्रो दक्षिणो मार्गउच्यते। उत्तरायणमासाद्ययुगाक्षान्तर्निबद्धयोः।९
कर्षणं पाशयोर्वायुबद्धयोरोहणं स्मृतम्। तदाभ्यन्तरगान्मण्डलाद्रथस्य गतेर्भवेत्।१०
मान्द्यं दिवसवृद्धिश्च जायतेसुरसत्तम!। रात्रिह्रासश्च भवति सौम्यायनक्रमो ह्ययम्।११
दक्षिणायनके पाशे प्रेरणादवरोहणम्। बर्हिमण्डलवेशेन गतिशैघ्र्यं तदा भवेत्।१२
तदा दिनाल्पता रात्रिवृद्धिश्च परिकीर्तिता। वैषुवेपाशसाम्यात्तु समावस्थानतो रवेः।१३
मध्यमण्डलवेशश्च साम्यं रात्रिदिनादिके। आकृष्येते यदा तौ तु ध्रुवेणसमधिष्ठितौ।१४
तदाऽभ्यन्तरतः सूर्यो भ्रमते मण्डलानि च। ध्रुवेण मुच्यमानेन पुना रश्मियुगेनतु।१५
तथैव बाह्यतः सूर्यो भ्रमते मण्डलानि च। तस्मिन्मेरौ पूर्वभागे पुर्यैन्द्री देवधानिका।१६
दक्षिणे वै संयमनी नाम याम्या महापुरी। पश्चान्निम्लोचनी नाम वारुणीवैमहापुरी।१७
तदुत्तरे पुरी सौम्या प्रोक्ता नाम विभावरी। ऐन्द्रपुर्यां रवेः प्रोक्तः उदयो ब्रह्मवादिभिः।१८
संयमन्यां च मध्याह्ने निम्लोचन्यां निमीलनम्।
विभावर्यां निशीथः स्यात्तिग्मांशोः सुरपूजितः।।१९।।
प्रवृत्तेश्च निमित्तानि भूतानांतानिसर्वशः। मेरोश्चतुर्दिर्दिशंभानोः कीर्तितानिमयामुने।२०
मेरुस्थानां सदा मध्यं गत एव विभातिहि। सव्यंगच्छन्दक्षिणेनकरोतिस्वर्णपर्वतम्।२१
उदयास्तमये चैव सर्वकालं तु सम्मुखे। दिशास्वशेषासु तथा सुरर्षे! विदिशासु च।२२
यैर्यत्र दृश्यते भास्वान्स तेषामुदयःस्मृतः। तिरोभावं च यत्रैति तत्रैवाऽस्तमनं रवेः।२३
नैवास्तमनमर्कस्य नोदयः सर्वदा सतः। उदयास्तमनाख्यं हि दर्शनादर्शनं रवेः।२४
शक्रादीनांपुरे तिष्ठन्स्पृशत्येष पुरत्रयम्। विकर्णौद्वौविकर्णस्थस्त्रीन्कोणान्द्वेपुरेतथा।२५

सर्वेषां द्वीपवर्षाणां मेरुरुत्तरतः स्थितः। यैर्यत्र दृश्यते भानुःसैवप्राचीतिचोच्यते।२६
तद्वामभागतो मेरुर्वर्ततेति विनिर्णयः। यदि चैन्द्र्याः प्रचलते घटिकादशपञ्चभिः।२७
याम्या तदा योजनानां सपादं कोटियुग्मकम्। सार्धद्वादशलक्षाणिपञ्चनेत्रसहस्रकम्।२८
प्रक्रामति सहस्रांशुः कालमार्गप्रदर्शकः। एवं ततो वारुणीं चसौम्यामैन्द्रींसहस्रदृक्।२९
पर्येति कालचक्रात्मा द्युमणिः कालबुद्धये। तथाचाऽन्ये ग्रहाः सोमादयो ये दिग्विचारिणः।३०
नक्षत्रैः सह चोद्यन्ति सह चाऽस्तं व्रजन्ति ते। एवं मुहूर्तेनरथोभानोरष्टशताधिकम्।३१
योजनानां चतुस्त्रिंशल्लक्षाणि भ्रमति प्रभुः। त्रयीमयश्चतुर्दिक्षु पुरीषु च समीरणात्।३२
प्रवहाख्यात्सदा कालचक्रं पर्येतिभानुमान्। यस्यचक्रंरथस्यैकंद्वादशारंत्रिनाभिकम्।३३
षण्नेमि कवयस्तं च वत्सरात्मकमूचिरे। मेरुमूर्धनि तस्याऽक्षो मानसोत्तरपर्वते।३४
कृतेतरविभागो यः प्रोतं तत्र रथाङ्गकम्। तैलकारकयन्त्रेण चक्रसाम्यं परिभ्रमन्।३५
मानसोत्तरनाम्नीह गिरौपर्येति चांऽशुमान्। तस्मिन्नक्षेकृतंमूलंद्वितीयोऽक्षोध्रुवेकृतः।३६
तुर्यमानेन तैलस्य यन्त्राक्षवदितीरितः। कृतोपरितनो भागः सूर्यस्य जगताम्पतेः।३७
रथनीडस्तु षट्त्रिंशल्लक्षयोजनमायतः। तत्तुर्यभागतः सोऽयंपरिणाहेन कीर्तितः।३८
तावानर्करथस्याऽत्रयुगस्तस्मिन्हयाः शुभाः। सप्तच्छदोऽभिधानाश्चसूरसूतेनयोजिताः।३९
वहन्ति देवमादित्यं लोकानांसुखहेतवे। पुरस्तात्सवितुः सूतोऽरुणः पश्चान्नियोजितः।४०
सौत्ये कर्मणि संयुक्तो वर्तते गरुडाग्रजः। तथैव बालखिल्याख्यात्रृषयोऽङ्गुष्ठपर्वकाः।४१
प्रमाणेनपरिख्याताः षष्टिसाहस्रसङ्ख्यकाः। स्तुवन्तिपुरतः सूर्यंसूक्तवाक्यैः सुशोभनैः।४२
तथा चाऽन्येचऋषयो गन्धर्वा अप्सरोरगाः। ग्रामण्योयातुधानाश्चदेवाः सर्वेपरेश्वरम्।४३
एकैकशः सप्तसप्त मासिमासि विरोचनम्। सार्धलक्षोत्तरं कोटिनवकंभूमिमण्डलम्।४४
द्विसहस्रं योजनानां सगव्यूत्यूत्तरं क्षणात्। पर्येति देवदेवेशोविश्वव्यापीनिरन्तरम्।४५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायामष्टमस्कन्धे भुवनकोषवर्णनेसूर्यगतिवर्णनंनाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥

* षोडशोऽध्यायः *

सोमादिगतिवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अथाऽतः श्रूयतः चित्रंसोमादीनांगमादिकम्। तद्गत्यनुसृता नृणांशुभाशुभनिदर्शना।१
यथा कुलालचक्रेण भ्रमता भ्रमतां सह। तदाश्रयाणां च गतिरन्याकीटादिनांभवेत्।२
एवं हि राशिवृन्देन कालचक्रेण तेन च। मेरुं धुरं च सरतां प्रादक्षिण्येन सर्वदा।३
ग्रहाणां भानुमुख्यानां गतिरन्यैव दृश्यते। नक्षत्रान्तरगामित्वाद्भान्तरे गमनं तथा।४
गतिद्वयं चाऽविरुद्धं सर्वत्रैष विनिर्णयः। स एव भगवानादिपुरुषो लोकभावनः।५

नारायणोऽखिलाधारो लोकानां स्वस्तये भ्रमन्।
कर्मशुद्धिनिमित्तं तु आत्मानं वै त्रयीमयम्॥६॥

कविभिश्चैव वेदेनविजिज्ञास्योऽर्कधाऽभवत्। षट्सुक्रमेणऋतुषुवसन्तादिषुचस्वयम्।७
यथोपजोषमृतुजान्गुणान्वै विदधाति च। तमेनं पुरुषाः सर्वे त्रय्या च विद्यया सदा।८
वर्णाश्रमाचारपथा तथाऽऽम्नातैश्च कर्मभिः। उच्चावचैः श्रद्धयाचयोगानाञ्च वितानकैः।९
अञ्जसा च यजन्ते येश्रेयोविन्दन्तितेमतम्। अथैषआत्मालोकानांद्यावाभूम्यन्तरेणच।१०

कालचक्रग्रतोभुङ्क्ते मासान्द्वादशराशिभिः। सम्वत्सरस्यावयवान्मासः पक्षद्वयंदिवा।११
नक्तञ्चेति सपादर्क्षद्वयमित्युपदिश्यते। यावता षष्ठमंशं स भुञ्जीत ऋतुरुच्यते।१२
सम्वत्सरस्याऽवयवः कविभिश्चोपवर्णितः। यावताऽर्धेनचाकाशवीथ्यांप्रचरते रविः।१३
तम्प्राक्तना वर्णयन्ति अयनं मुनिपूजिताः। अथ यावन्नभोमण्डलं सह प्रतिगच्छति।१४
कात्स्र्न्येन सह भुञ्जीत कालं तंवत्सरं विदुः। सम्वत्सरंपरिवत्सरमिडावत्सरमेवच ।१५
अनुवत्सरमिद्वत्सरमितिपञ्चकमीरितम्। भानोर्मान्द्यशैघ्र्यसमगतिभिःकालवित्तमैः।१६
एवं भानोर्गतिः प्रोक्ता चन्द्रादीनां निबोधत। एवं चन्द्रोऽर्करश्मिभ्यो लक्षयोजनमूर्द्ध्वतः।१७
उपलभ्यमानो मित्रस्य सम्वत्सरभुजिं च सः। पक्षाभ्यां चौषधीनाथो भुङ्क्तेमासभुजिं च सः।१८
सपादाभाभ्यांदिवसभुक्तिंपक्षभुजिं चरेत्। एवंशीघ्रगतिः सोमो भुङ्क्तेनूनंभचक्रकम्।१६
पूर्यमाणकलाभिश्चामराणां प्रीतिमावहन्। क्षीयमाणकलाभिश्च पितॄणांचित्तरञ्जकः।२०
अहोरात्राणि तन्वानः पूर्वापरसुघस्रकैः। सर्वजीवनिकायस्य प्राणो जीवः सएवहि।२१
भुङ्क्ते चैकैकनक्षत्रं मुहूर्तत्रिंशताविभुः। स एवषोडशकलः पुरुषोऽनादिरुत्तमः।२२
मनोमयोऽप्यन्नमयोऽमृतधामा सुधाकरः। देवपितृमनुष्यादिसरीसृपसवीरुधाम् ।२३
प्राणाप्यायनशीलत्वात्स सर्वमय उच्यते। ततो भचक्रं भ्रमति योजनानां त्रिलक्षतः।२४
मेरुप्रदक्षिणेनैव योजितंचेश्वरेणतु। अष्टाविंशतिसङ्ख्यानिगणितानिसहाऽभिजित्।२५
ततः शुक्रो द्विलक्षेण योजनानामथोपरि। पुरः पश्चात्सहैवासावर्कस्य परिवर्तते।२६
शीघ्रमन्दसमानाभिर्गतिभिर्विचरन्विभुः। लोकानामनुकूलोऽयं प्रायः प्रोक्तः शुभावहः।२७
वृष्टिविष्टम्भशमनो भार्गवः सर्वदा मुने!। शुक्राद् बुधः समाख्यातोयोजनानांद्विलक्षतः।२८
शीघ्रमन्दसमानाभिर्गतिभिः शुक्रवत्सदा। यदाऽर्काद् व्यतिरिच्येत सौम्यः प्रायेण तत्र तु।२६
अतिवाताभ्रपातानांवृष्ट्यादिभयसूचकः। उपरिष्टात्ततो भौमो योजनानां द्विलक्षतः।३०
पक्षैस्त्रिभिस्त्रिभिः सोऽयंभुङ्क्ते राशीनथैकशः।
द्वादशापिचदेवर्षे! यदिवक्रोनजायते ।।३१।।
प्रायेण शुभकृत्सोऽयं ग्रहौघानां च सूचकः। ततोद्विलक्षमानेनयोजनानांचगीष्पतिः।३२
एकैकस्मिन्नथो राशौभुङ्क्तेसम्वत्सरंचरन्। यदिवक्रोभवेन्नैवाऽनुकूलोब्रह्मवादिनाम्।३३
ततः शनैश्चरो घोरो लक्षद्वयपरो मितः। योजनैः सूर्यपुत्रोऽयं त्रिंशन्मासैः परिभ्रमन्।३४
एकैकराशौ पर्येति सर्वान्राशीन्महाग्रहः। सर्वेषामशुभो मन्दः प्रोक्तः कालविदां वरैः।३५
तत उत्तरतः प्रोक्तमेकादशसुलक्षकैः। योजनैः परिसंख्यातं सप्तर्षीणां च मण्डलम्।३६
लोकानां शं भावयन्तो मुनयः सप्त ते मुने। यत्तद्विष्णुपदं स्थानं दक्षिणंक्रमते चते।३७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यांसंहितायामष्टमस्कन्धे ससूर्यगतिंसोमादिगतिवर्णनंनाम षोडशोऽध्यायः ।।१६।।

* सप्तदशोऽध्यायः *

ध्रुवमण्डलसंस्थानवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अथर्षिमण्डलादूर्ध्वं योजनानां प्रमाणतः। लक्षैस्त्रयोदशमितैः परमं वैष्णवं पदम्।१
महाभागवतः श्रीमान्वर्तते लोकवन्दितः। औत्तानपादिरिन्द्रेण वह्निना कश्यपेन च।२
धर्मेण सह चैवाऽऽस्ते समकालयुजा ध्रुवः। बहुमानंदक्षिणतः कुर्वद्भिः प्रेक्षकैः सदा।३

आजीव्यः कल्पजीविनामुपास्ते भगवत्पदम्। ज्योतिर्गणानां सर्वेषां ग्रहनक्षत्रभादिनाम्। ४
कालेनाऽनिमिषेणाऽयंभ्राम्यतांव्यक्तरंहसा। अवष्टम्भस्थाणुरिवविहितश्चेश्वरेण सः। ५
भासते भासयन्भासा स्वीययादेवपूजितः। मेढिस्तम्भेयथायुक्तः पशवः कर्षणार्थकाः। ६
मण्डलानि चरन्तीमे सवनत्रितयेन च। एवं ग्रहादयः सर्वे भगणाद्या यथाक्रमम्। ७
अन्तर्बहिर्विभागेनकालचक्रेनियोजिताः। ध्रुवमेवाऽवलम्ब्याऽऽशुवायुनोदीरिताश्चरन्। ८
आकल्पान्तञ्चक्रमन्तिखेश्येनाद्याःखगा इव। कर्मसारथयो वायुवशगाः सर्वएवते। ९
एवं ज्योतिर्गणाः सर्वे प्रकृतेः पुरुषस्य च। संयोगानुगृहीतास्ते भूमौननिपतन्ति च। १०
ज्योतिश्चक्रं केचिदेतच्छिशुमारस्वरूपकम्। सोपयोगं भगवतो योगधारणकर्मणि। ११
यस्यार्वाक्शिरसः कुण्डलीभूतवपुषो मुने। पुच्छाग्रे कल्पितोयोऽयंध्रुवउत्तानपादजः। १२

लाङ्गूलेऽस्यचसम्प्रोक्तः प्रजापतिरकल्मषः।
अग्निरिन्द्रश्चधर्मश्चतिष्ठन्तेसुरपूजिताः ॥१३॥

धाता विधाता पुच्छान्तेकट्यां सप्तर्षयस्ततः। दक्षिणावर्तभोगेनकुण्डलाकारमीयुषः। १४
उत्तरायणभानीह दक्षपार्श्वेऽर्पितानि च। दक्षिणायनभानीह सव्ये पार्श्वेऽर्पितानि च। १५
कुण्डलाभोगवेशस्य पार्श्वयोरुभयोरपि। समसङ्ख्याश्चावयवा भवन्ति कजनन्दन!। १६
अजवीथी पृष्ठभागे आकाशसरिदौदरे। पुनर्वसुश्च पुष्यश्च श्रोण्यौ दक्षिणवामयोः। १७
आर्द्राश्लेषे पश्चिमयोः पादयोर्दक्षवामयोः। अभिजिच्चोत्तराषाढा नासयोर्दक्षवामयोः। १८
यथासङ्ख्यं च देवर्षे! श्रुतिश्च जलभं तथा। कल्पितेकल्पनाविद्भिर्नेत्रयोर्दक्षवामयोः। १९
धनिष्ठा चैव मूलं च कर्णयोर्दक्षवामयोः। मघादीन्यष्टभानीह दक्षिणायनगानि च। २०
युञ्जीत वामपार्श्वीयवङ्क्रिषु क्रमतो मुने। तथैवमृगशीर्षादीन्युदग्भानि च यानिहि। २१
दक्षपार्श्वे वङ्क्रिकेषुप्रातिलोम्येनयोजयेत्। शततारातथाज्येष्ठास्कन्धयोर्दक्षवामयोः। २२
अगस्तिश्चोत्तरहनावधरायां हनौ यमः। मुखेष्वङ्गारकः प्रोक्तो मन्दः प्रोक्त उपस्थके। २३
बृहस्पतिश्च ककुदि वक्षस्यर्को ग्रहाधिपः। नारायणश्च हृदये चन्द्रो मनसि तिष्ठति। २४
स्तनयोरश्विनौ नाभ्यामुशनाः परिकीर्तितः। बुधः प्राणापानयोश्च गले राहुश्चकेतवः। २५
सर्वाङ्गेषुतथा रोमकूपे तारागणाः स्मृताः। एतद्भगवतो विष्णोः सर्वदेवमयं वपुः। २६
सन्ध्यायांप्रत्यहंध्यायेत्प्रयतोवाग्यतोमुनिः। निरीक्षमाणश्चोत्तिष्ठन्मन्त्रेणानेनधीश्वरः। २७
नमो ज्योतिर्लोकाय कालायाऽनिमिषाम्पतये महापुरुषायाऽभिधीमहीति। २८

ग्रहर्क्षतारामयमाधिदैविकं पापापहं मन्त्रकृतां त्रिकालम्।
नमस्यतः स्मरतो वा त्रिकालं नश्येत तत्कालजमाशु पापम्॥२९॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे ध्रुवमण्डलसंस्थानवर्णनंनामसप्तदशोऽध्यायः॥१७॥

* अष्टादशोऽध्यायः *

सराहुमण्डलाद्यवस्थानमधोलोकवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अधस्तात्सवितुः प्रोक्तमयुतं राहुमण्डलम्। नक्षत्रवच्चरति च सैहिकेयोऽतदर्हणः। १
सूर्याचन्द्रमसोरेव मर्दनः सिंहिकासुतः। अमरत्वं च खेटत्वं लेभे योविष्णवनुग्रहात्। २

यददस्तरणेर्बिम्बं तपतो योजनायुतम्। तच्छादकोऽसुरो ज्ञेयोऽप्यर्कसाहस्रविस्तरम्।३
त्रयोदशसहस्रं तु सोमस्याच्छादको ग्रहः। यः पर्वसमयेवैरानुबन्धीच्छादकोऽभवत्।४
सूर्याचन्द्रमसोर्दूराद्धवेच्छादनकारकः। तन्निशम्योभयत्राऽपि विष्णुनाप्रेरितं स्वकम्।५
चक्रं सुदर्शनं नाम ज्वालामालातिभीषणम्। तत्तेजसा दुःसहेन समन्तात्परिवारितम्।६
मुहूर्तोद्विजमानस्तु दूराच्चकितमानसः। आरान्निवर्तते सोऽयमुपराग इतीव ह।७
उच्यतेलोकमध्येतुदेवर्षे! अवबुध्यताम्। ततोऽधस्तात्समाख्यातालोकाः परमपावनाः।८

सिद्धानां चारणानां च विद्याध्राणां च सत्तम!।
योजनायुतविख्याता लोकाः पुण्य निषेविताः ॥९॥

ततोऽप्यधस्ताद्देवर्षेयक्षाणां च सरक्षसाम्। पिशाचप्रेतभूतानां विहाराजिरमुत्तमम्।१०
अन्तरिक्षं च तत्प्रोक्तंयावद्वायुः प्रवातिहि। यावन्मेघास्ततोयन्तितत्प्रोक्तंज्ञानकोविदैः।११
ततोऽधस्ताद्योजनानांशतं यावद्द्विजोत्तम!। पृथिवीपरिसंख्यातासुपर्णश्येनसारसाः।१२
हंसादयः प्रोत्पतन्ति पार्थिवाः पृथिवीभवाः। भूसन्निवेशावस्थानंयथावदुपवर्णितम्।१३
अधस्तादवनेः सप्त देवर्षे! विवराः स्मृताः। एकैकशोयोजनानामायामोच्छ्रायतः पुनः।१४
अयुतान्तरविख्याताः सर्वर्तुसुखदायकाः। अतलं प्रथमं प्रोक्तं द्वितीयं वितलं तथा।१५
तृतीयं सुतलं प्रोक्तं चतुर्थं वै तलातलम्। महातलं पञ्चमं च षष्ठं प्रोक्तं रसातलम्।१६
सप्तमं विप्र! पातालं सप्तैते विवराः स्मृताः। एतेषुबिलस्वर्गेषु दिवोऽप्यधिकमेवच।१७
कामभोगैश्वर्यसुखसमृद्धभुवनेषु च। नित्योद्यानविहारेषु सुखास्वादः प्रवर्तते।१८
दैत्याश्च काद्रवेयाश्च दानवा बलशालिनः। नित्यप्रमुदितारक्ताःकलत्रापत्यबन्धुभिः।१९
सुहृद्भिरनुजीवाद्यैः संयुताश्च गृहेश्वराः। ईश्वरादप्रतिहतकामा मायाविनश्च ते।२०
निवसन्ति सदाहृष्टाः सर्वर्तुसुखसंयुताः। मयेन मायाविभुना येषुयेषु च निर्मिताः।२१
पुरः प्रकामशोभक्ता मणिप्रवरशालिनः। विचित्रभवनाट्टालगोपुराद्याः सहस्रशः।२२
सभाचत्वरचैत्यानि शोभाढ्याः सुरदुर्लभाः। नागासुराणांमिथुनैः सपारावतसारिकैः।२३
कीर्णकृत्रिमभूमिश्चविवरेशगृहोत्तमैः। अलङ्कृताश्चकासन्ति उद्यानानि महान्ति च।२४
मनः प्रसन्नकारीणिफलपुष्पविशालिभिः। ललनानां विलासार्हस्थानैःशोभितभाञ्जिच।२५
नानाविहङ्गमव्रातसंयुक्तजलराशिभिः। स्वच्छार्णपूरितह्रदैः पाठीनसमलङ्कृतैः।२६
जलजन्तुक्षुब्धनीरनीरज्ञातैरनेकशः। कुमुदोत्पलकह्लारनीलरक्तोत्पलैस्तथा।२७
तेषु कृतनिकेतानां विहारैः सङ्कुलानि च। इन्द्रियोत्सवकारैश्च तथैवविविधैः स्वरैः।२८
अमराणां च परमांश्रियंचाऽतिशयन्ति च। यत्र नैवभयं क्वापि कालाङ्गैर्दिनरात्रिभिः।२९
यत्राहिप्रवराणांचशिरःस्थैर्मणिरश्मिभिः। नित्यंतमः प्रबाध्येतसदाप्रस्फुटकान्तिभिः।३०
न वा एतेषु वसतां दिव्यौषधिरसायनैः। रसान्नपानस्नानाद्यैराधयो न च व्याधयः।३१
वलीपलितजीर्णत्व वैवर्ण्यस्वेद गन्धताः। अनुत्साहवयोऽवस्थान बाधन्ते कदाचन।३२
कल्याणानां सदा तेषां न चमृत्युभयंकुतः। भगवत्तेजसोऽन्यत्रचक्राच्चैवसुदर्शनात्।३३
यस्मिन्प्रविष्टे दैतेयवधूनां गर्भराशयः। प्रायोभयात्पतन्त्येव स्रवन्ति ब्रह्मपुत्रक!।३४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे राहुमण्डलाद्यवस्थानवर्णनंनामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

* एकोनविंशोऽध्यायः *

अतलादिवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

प्रथमे विवरे विप्र! अतलाख्ये मनोरमे। मयपुत्रो बलोनाम वर्ततेऽखर्वगर्वकृत्।१
षण्णवत्योयेन सृष्टामायाः सर्वार्थसाधिकाः। मायाविनोयाश्चसद्योधारयन्तिचकाश्चन।२
जृम्भमाणस्य यस्यैव बलस्य बलशालिनः। स्त्रीगणाउपपद्यन्ते त्रयोलोकविमोहनाः।३
पुंश्चल्यश्चैव स्वैरिण्यः कामिन्यश्चेति विश्रुताः। या वै बिलायनं प्रेष्ठंप्रविष्टं पुरुषं रहः।४
रसेन हाटकाख्येनसाधयित्वा प्रयत्नतः। स्वविलासावलोकानुरागस्मितविगूहनैः।५
सँल्लापविभ्रमाद्यैश्च रमयन्त्यपि ताः स्त्रियः। यस्मिन्नुपयुक्ते जनो मनुते बहुधा स्वयम्।६
ईश्वरोऽहमहं सिद्धो नागायुतबलो महान्। आत्मानं मन्यमानः सन्मदान्धइवकथ्यते।७
एवंप्रोक्तास्थितिश्चात्रअतलस्य च नारद!। द्वितीयविवरस्याऽत्र वितलस्यनिबोधत।८
भूतलाधस्तले चैव वितले भगवान्भवः। हाटकेश्वरनामाऽयं स्वपार्षदगणैर्वृतः।९
प्रजापतिकृतस्याऽपिसर्गस्यबृंहणाय च। भवान्यामिथुनीभूयास्ते देवाधिपूजितः।१०
भवयोर्वीर्यसम्भूता हाटकी सरिदुत्तमा। समिद्धो मरुता वह्निरोजसाऽपिबतीव हि।११
तन्निष्ठ्यूतं हाटकाख्यं सुवर्णं दैत्यवल्लभम्। दैत्याङ्गनाभूषणार्हंसदातं धारयन्ति हि।१२
तद्बिलाधस्तलात्प्रोक्तंसुतलाख्यम्बिलेश्वरम्। पुण्यश्लोको बलिर्नामा आस्ते वैरोचनिर्मुने!।१३
महेन्द्रस्यचदेवस्यचिकीर्षुः प्रियमुत्तमम्। त्रिविक्रमोऽपि भगवान्सुतलेबलिमानयत्।१४
त्रैलोक्यलक्ष्मीमाक्षिप्य स्थापितः किलदैत्यराट्। इन्द्रादिष्वप्यलब्धा या सा श्रीस्तमनुवर्तते।१५
तमेव देवदेवेशमाराधयति भक्तितः। व्यपेतसाध्वसोऽद्यापि वर्तते सुतलाधिपः।१६
भूमिदानफलं ह्येतत्पात्रभूतेऽखिलेश्वरे। वर्णयन्ति महात्मानो, नैतद्युक्तञ्च नारद!।१७
वासुदेवे भगवति पुरुषार्थप्रदे हरौ। एतद्दानफलम्विप्र! सर्वथा न हि युज्यते।१८
यस्यैव देवदेवस्यनामाऽपि विवशोगृणन्। स्वकीयकर्मबन्धीयगुणान्विधुनुतेऽञ्जसा।१९
यत्क्लेशबन्धहानाय साङ्ख्ययोगादिसाधनम्। कुर्वतेयतयोनित्यंभगवत्यखिलेश्वरे ।२०
न चाऽयं भगवानस्माननुजग्राह नारद!। मायामयञ्च भोगानामैश्वर्यं व्यतनोत्परम्।२१
सर्वक्लेशादिहेतुं तदात्मानुस्मृतिमोषणम्। यं साक्षाद्भगवान्विष्णुः सर्वोपायविदीश्वरः।२२
याच्ञाछलेनाऽपहृतं सर्वस्वं देहशेषकम्। अप्राप्तान्योपाय ईशः पाशैर्वारुणसम्भवैः।२३
बन्धयित्वाऽवमुच्याऽपि गिरिदर्यामिवाऽब्रवीत्। असाविन्द्रो महामूढो यस्य मन्त्री बृहस्पतिः।२४
प्रसन्नमिममत्यर्थमयाचल्लोकसम्पदम् । त्रैलोक्यमिदमैश्वर्यं कियदेवाऽतितुच्छकम्।२५
आशिषाम्प्रभवं मुक्त्वा यो मूढो लोकसम्पदि। अस्मत्पितामहः श्रीमान्प्रह्लादो भगवत्प्रियः।२६
दास्यम्वव्रे विभोस्तस्य सर्वलोकोपकारकः। पित्र्यमैश्वर्यमतुलं दीयमानञ्चविष्णुना।२७
पितर्युपरतेवीरे नैवेच्छद्भगवत्प्रियः। तस्याऽतुलानुभावस्य सर्वलोकोपधीमतः।२८
अस्मद्विधो नाल्पपक्वेतरदोषोऽवगच्छति। एवंदैत्यपतिः सोऽयं बलिः परमपूजितः।२९
सुतले वर्तते यस्यद्वारपालोहरिः स्वयम्। एकदादिग्विजये राजारावणोलोकरावणः।३०
प्रविशन्सुतले येन भक्तानुग्रहकारिणा। पादाङ्गुष्ठेन प्रक्षिप्तो योजनायुतमत्र हि।३१
एवंभूतानुभावोऽयं बलिः सर्वसुखैकभुक्। आस्ते सुतलराजस्थो देवदेवप्रसादतः।३२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे अतलवितलसुतलानाम्वर्णनंनाममैकोनविंशोऽध्यायः।।१९।।

* विंशोऽध्यायः *

तलातलादिस्थितिवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

ततोऽधस्ताद्विवरकं तलातलमुदीरतम्। दानवेन्द्रो मयो नाम त्रिपुराधिपतिर्महान्। १
त्रिलोक्याः शङ्करेणाऽयंपालितो दग्धपूस्त्रयः। देवदेवप्रसादात्तुलब्धराज्यसुखास्पदः। २
आचार्यो मायिनांसोऽयं नानामायाविशारदः। पूज्यते राक्षसैर्घोरैः सर्वकार्यसमृद्धये। ३
ततोऽधस्तात्सुविख्यातं महातलमिति स्फुटम्। सर्पाणां काद्रवेयाणां गणः क्रोधवशो महान्। ४
अनेकशिरसाम्विप्र! प्रधानान्कीर्तयामि ते। कुहकस्तक्षकश्चैव सुषेणः कालियस्तथा। ५
महाभोगा महासत्त्वाः क्रूरा क्रूरस्वजातयः। पतत्रिराजाधिपतेरुद्विग्नाः सर्व एव ते। ६
स्वकलत्रापत्यसुहृत्कुटुम्बस्य च सङ्गताः। प्रमत्ता विहरन्त्येवनानाक्रीडाविशारदाः। ७
ततोऽधस्ताच्च विवरे रसातलसमाह्वये। दैतेया निवसन्त्येव पणयो दानवाश्च ये। ८
निवातकवचा नामहिरण्यपुरवासिनः। कालेया इतिचप्रोक्ताः प्रत्यनीकाहविर्भुजाम्। ९
महौजसश्चोत्पत्त्यैव महासाहसिनस्तथा। सकलेशस्य च हरेस्तेजसा हतविक्रमाः। १०
बिलेशया इव सदा विवरे निवसन्ति हि। ये वै वाग्भिः सरमयाशक्रदूत्यानिरन्तरम्। ११
मन्त्रवर्णाभिरसुरास्ताडिता बिभ्यति स्म ह। ततोऽप्यधस्तात्पाताले नागलोकाधिपालकाः। १२
वासुकिप्रमुखाः शङ्खः कुलिकः श्वेत एव च। धनञ्जयो महाशंखो धृतराष्ट्रस्तथैवच। १३
शङ्खचूडः कम्बलाश्वतरो देवोपदत्तकः। महामर्षा महाभोगा निवसन्ति विषोल्बणाः। १४
पञ्चमस्तकवन्तश्च फणासप्तकभूषिताः। केचिद्दशफणाः केचिच्छतशीर्षास्तथाऽपरे। १५
सहस्रशिरसःकेऽपिरोचिष्णुमणिधारकाः। पातालरन्ध्रतिमिरनिकरं स्वमरीचिभिः। १६
विधमन्ति च देवर्षे! सदा सञ्जातमन्यवः। अस्य मूलप्रदेशे हि त्रिंशत्साहस्रकेऽन्तरे। १७
योजनैः परिसङ्ख्यातेतामसीभगवत्कला। अनन्ताख्यासमास्तेहि सर्वदेवप्रपूजिता। १८
अहमित्यभिमानस्य लक्षणं यं प्रचक्षते। सङ्कर्षणं सात्वतीयाः कर्षणं द्रष्टृदृश्ययोः। १९
इदं भूमण्डलं यस्य सहस्रशिरसः प्रभोः। अनन्तमूर्तेः शेषस्य ध्रियमाणञ्च शीर्षके। २०
पृथ्वीगोलमशेषं हि सिद्धार्थइवलक्ष्यते। यस्यकालेनदेवस्य सञ्जिहीर्षो समम्विभोः। २१
चराचरं भ्रुवोरन्तर्विवरादुदपद्यत। साङ्कर्षणो नाम रुद्रो व्यूहैकादशशोभितः। २२
त्रिलोचनश्च त्रिशिखं शूलमुत्तम्भयन्स्वयम्। उदतिष्ठन्महासत्त्वो महाभूतक्षयङ्करः। २३
यस्याङ्घ्रिकमलद्वन्द्वशोणाच्छनखमण्डले। विराजन्मणिबिम्बेषु महाहिपतयोऽनिशम्। २४
एकान्तभक्तियोगेनसह सात्त्वतपुङ्गवैः। प्रणमन्तं स्वमूर्ध्ना ते स्वमुखानि समीक्षते। २५
स्फुरत्कुण्डलमाणिक्यप्रभामण्डलभाञ्ज्यपि। सुकपोलानि चारूणि गण्डस्थलद्युमन्ति च। २६
नागराजकुमार्योऽपि चार्वङ्गविलसत्त्विषः। विशदैर्विपुलैस्तद्वद्धवलैः सुभगैस्तथा। २७
रुचिरैर्भुजदण्डैश्च शोभमाना इतस्ततः। चन्दनागुरुकाश्मीरपङ्कलेपेन भूषिताः। २८
तदभिमर्षसञ्जातकामवेशसमायुताः। ललितस्मितसंयुक्ताः सव्रीडं लोकयन्ति च। २९
अनुरागमदोन्मत्तविघूर्णारुणलोचनम्। करुणावलोकनेत्रंचआशासानास्तथाऽऽशिषः। ३०
सोऽनन्तो भगवान्देवोऽनन्तसत्त्वो महाशयः। अनन्तगुणवार्धिश्च आदिदेवो महाद्युतिः। ३१
संहृतामर्षरोषादिवेगो लोकशुभाय च। आस्ते महासत्त्वनिधिः सर्वदेवप्रपूजितः। ३२
ध्यायमानः सुरैः सिद्धैरसुरैश्चोरगैस्तथा। विद्याधरैश्चगन्धर्वैर्मुनिसङ्घैश्चनित्यशः। ३३

अनारतमदोन्मत्तलोकविह्वललोचनः ।वाक्यामृतेन विबुधान्स्वपार्षदगणानपि।३४
आप्यायमानः सविभुर्वैजयन्तीस्रजंदधत्।अम्लानाभिनवैः स्वच्छैस्तुलसीदलसञ्चयैः।३५
माद्यन्मधुकरव्रातघोषश्रीसंयुतां सदा।नीलवासा देवदेव एककुण्डलभूषितः।३६
हलस्य ककुदि न्यस्तसुपीवरभुजोऽव्ययाः।महेन्द्रः काञ्चनीं यद्वद्वरत्रां च मतङ्गमः।
उदारलीलो देवेशो वर्णितः सात्त्वतर्षभैः।।३७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यासंहितायामष्टमस्कन्धे तलातलवर्णनेऽनन्तवर्णनंनाम विंशोऽध्यायः ।। २० ।।

* एकविंशोऽध्यायः *

अनन्तमहिमवर्णनपूर्वकंनरकस्वरूपवर्णनम्

नारायण उवाच

तस्याऽनुभावं भगवान्ब्रह्मपुत्रः सनातनः।सभायां ब्रह्मदेवस्य गायमान उपासते।।१।।
उत्पत्तिस्थितिलयहेतवोऽस्य कल्पाः सत्त्वाद्याःप्रकृतिगुणा यदीक्षयाऽऽसन्।
यद्रूपं ध्रुवमकृतं यदेकमात्मन्नानाधात्कथमु ह वेद तस्य वर्त्म।।२।।
मूर्तिं नः पुरुकृपया बभार सत्त्वं संशुद्धं सदसदिदं विभाति यत्र।
यल्लीलां मृगपतिराददेऽनवद्यामादातुं स्वजनमनांस्युदारवीर्यः।।३।।
यन्नाम श्रुतमनुकीर्त्तयेदकस्मादार्त्तो वा यदि पतितः प्रलम्भनाद्वा।
हन्त्यंहः सपदि नृणामशेषमन्यं कं शेषाद्भगवत आश्रयेन्मुमुक्षुः।।४।।
मूर्धन्यर्पितमणुवत्सहस्रमूर्ध्नो भूगोलं सगिरिसरित्समुद्रसत्त्वम्।
आनन्त्यादनमितविक्रमस्य भूम्नः को वीर्याण्यधिगणयेत्सहस्रजिह्वः।।५।।
एवम्प्रभावो भगवाननन्तो दुरन्तवीर्योरुगुणानुभावः।
मूले रसायाः स्थित आत्मतन्त्रो यो लीलयाक्ष्मां स्थितये बिभर्ति।।६।।
एता ह्येवेह तु नृभिर्गतयो मुनिसत्तम!।गन्तव्या बहुशो यद्वद्यथाकर्मविनिर्मिताः।७
यथोपदेशं च कामान्सदा कामयमानकैः।एतावतीर्हि राजेन्द्र मनुष्यमृगपक्षिषु।८
विपाकगतयः प्रोक्ता धर्मस्य वशगास्तथा।उच्चावचा विसदृशा यथाप्रश्नं निबोधत।९

नारद उवाच

वैचित्र्यमेतल्लोकस्य कथं भगवता कृतम्।समानत्वे कर्मणां च तन्नो ब्रूहियथातथम्।१०

नारायण उवाच

कर्तुः श्रद्धावशादेव गतयोऽपिपृथग्विधाः।त्रिगुणत्वात्सदातासांफलंविसदृसंत्विह ।११
सात्त्विक्या श्रद्धया कर्तुः सुखित्वंजायते सदा।दुःखित्वं च तथा कर्तू राजस्या श्रद्धया भवेत्।१२
दुःखित्वं चैवमूढत्वंतामस्याश्रद्धयोदितम्।तारतम्यात्तुश्रद्धानांफलवैचित्र्यमीरितम्।१३
अनाद्यविद्याविहितकर्मणां परिणामजाः।सहस्रशः प्रवृत्तास्तु गतयो द्विजपुङ्गव!।१४
तद्भेदान्वर्णयिष्यामि प्राचुर्येण द्विजोत्तम!।त्रिजगत्याअन्तरालेदक्षिणस्यांदिशीहवै।१५
भूमेरधस्तादुपरि त्वतलस्य च नारद!।अग्निष्वात्ताः पितृगणा वर्तन्ते पितरश्च ह।१६
वसन्तियस्यां स्वीयानांगोत्राणां परमाशिषः।सत्याः समाधिना शीघ्रं त्वाशासानाः परेण वै।१७
पितृराजोऽपि भगवान्सम्परेतेषु जन्तुषु।विषयं प्रापितेष्वेषु स्वकीयैः पुरुषैरिह।१८
सगणो भगवत्प्रोक्ताज्ञापरो दमधारकः।यथाकर्म यथादोषं विदधाति विचारदृक्।१९
स्वान्गुणान्धर्मतत्त्वज्ञान्सर्वानाज्ञाप्रवर्तकान् ।सदा प्रेरयति प्राज्ञो यथादेशनियोजितान्।२०

नरकानेकविंशत्या सङ्ख्यया वर्णयन्ति हि। अष्टाविंशमितान्केचित्ताननुक्रमतो ब्रुवे।२१
तामिस्र अन्धतामिस्रो रौरवोऽपि तृतीयकः। महारौरवनामाचकुम्भीपाकोऽपरोमतः।२२
कालसूत्रं तथा चाऽसिपत्रारण्यमुदाहृतम्। शूकरस्यमुखंचान्धकूपोऽथ कृमिभोजनः।२३
सन्दंशस्तप्तमूर्तिश्च वज्रकटङ्क एव च। शाल्मली चाऽथ देवर्षे! नाम्ना वैतरणी तथा।२४
पूयोदः प्राणरोधश्च तथा विशसनं मतम्। लालाभक्षः सारमेयादनमुक्तमतः परम्।२५
अवीचिरप्ययः पानं क्षारकर्दम एव च। रक्षोगणाख्यसम्भोजः शूलप्रोतोऽप्यतः परम्।२६
दन्दशूकोऽवटारोधः पर्यावर्तनकः परम्। सूचीमुखमिति प्रोक्ता अष्टाविंशतिनारकाः।२७
इत्येते नारका नाम यातनाभूमयः पराः। कर्मभिश्चापि भूतानां गम्याः पद्मजसम्भव!।२८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे नरकस्वरूपवर्णनंनामैकविंशोऽध्यायः ।।२१।।

* द्वाविंशोऽध्यायः *

नरकप्रदपातकवर्णनम्

नारद उवाच

कर्मभेदाः कतिविधाः सनातनमुने! मम। श्रोतव्याः सर्वथैवेते यातनाप्राप्तिभूमयः।१

श्रीनारायण उवाच

यो वै परस्य वित्तानि दारापत्यानि चैव हि। हरते स हि दुष्टात्मायमानुचरगोचरः।२
कालपाशेन सम्बद्धो याम्यैरतिभयानकैः। तामिस्रनामनरके पात्यते यातनास्पदे।३
ताडनं दण्डनञ्चैव सन्तर्जनमतः परम्। याम्याः कुर्वन्ति पाशाढ्याः कश्मलं याति चैव हि।४
मूर्च्छामायाति विवशो नारकी पद्मभूसुत!। यः पतिं वञ्चयित्वातुदारादीनुपभुञ्ज्यति।५
अन्धतामिस्रनरके पात्यते यमकिङ्करैः। पात्यमानो यत्र जन्तुर्वेदनापरवान्भवेत्।६
नष्टदृष्टिर्नष्टमतिर्भवत्येवाऽविलम्बतः। वनस्पतिर्भज्यमानमूलो यद्वद्भवेदिह।७
तस्मादप्यन्धतामिस्रनाम्ना प्रोक्तः पुरातनैः। एतन्ममाहमिति यो भूतद्रोहेण केवलम्।८
पुष्णाति प्रत्यहं स्वीयकुटुम्बं कार्यलम्पटः। एतद्विहाय चाऽत्रैव स्वाऽशुभेनपतेदिह।९
रौरवे नाम नरके सर्वसत्त्वभयावहे। इह लोकेऽमुना ये तु हिंसिता जन्तवः पुरा।१०
त एव रुरवो भूत्वा परत्र पीडयन्ति तम्। तस्माद्रौरवमित्याहुः पुराणज्ञामनीषिणः।११
रुरुः सर्पादतिक्रूरो जन्तुरुक्तः पुरातनैः। एवं महारौरवाख्यो नरको यत्र पूरुषः।१२
यातनां प्राप्यमाणो हि यः परं देहसम्भवः। क्रव्यादा नाम रुरवस्तंक्रव्येघातयन्तिच।१३
य उग्रः पुरुषः क्रूरः पशुपक्षिगणानपि। उपरन्धयते मूढो याम्यास्तं रन्धयन्ति च।१४
कुम्भीपाके तप्ततैले उपर्यपि च नारद!। यावन्ति पशुरोमाणि तावद्वर्षसहस्रकम्।१५
पितृविप्रब्राह्मणध्रुक्कालसूत्रे स नारके। अग्न्यर्काभ्यां तप्यमाने नारकी विनिवेशितः।१६
क्षुत्पिपासादह्यमानोऽन्तःशरीरस्तथा बहिः। आस्तेशेतेचेष्टतेचाऽवतिष्ठतिचधावति।१७
निजवेदपथाद्यो वै पाखण्डं चोपयाति च। अनापद्यपि देवर्षे! तं पापं पुरुषं भटाः।१८
असिपत्रवनं नाम नरकं वेशयन्ति च। कशया प्रहरन्त्येव नारकी तद्गतस्तदा।१९
इतस्ततो धावमान उत्तालमतिवेगतः। असिपत्रैश्छिद्यमान उभयत्र च धारभिः।२०

सञ्छिमानसर्वाङ्गो हा हतोऽस्मीति मूर्छितः। वेदनां परमां प्राप्तः पतत्येव पदेपदे।२१
स्वधर्मानुगतं भुङ्क्ते पाखण्डफलमल्पधीः। यो राजा राजपुरुषो दण्डयेद्वै त्वधर्मतः।२२
द्विजे शरीरदण्डं च पापीयान्नारकी च सः। नरके सूकरमुखे पात्यते यमकिङ्करैः।२३
विनिष्पिष्टावयवको बलवद्भिस्तथेक्षुवत्। आर्तस्वरेण स्वनयन्मूर्छितः कश्मलं गतः।२४
सम्पीड्यमानो बहुधा वेदनां यात्यतीव हि। विविक्तपरपीडो योऽप्यविविक्तपरव्यथाम्।२५
ईश्वराङ्कितवृत्तीनांव्यथामाचरते स्वयम्। स चाऽन्धकूपे पतति तदभिद्रोहयन्त्रिते।२६
तत्राऽसौ जन्तुभिः क्रूरैः पशुभिर्मृगपक्षिभिः। सरीसृपैश्चमशकैर्यूकामत्कुणजातिभिः ।२७
मक्षिकाभिश्च तमसि दण्डशूकैश्च पीड्यते। परिक्रामतिचैवाऽत्र कुशरीरेच जन्तुवत्।२८
यस्तुसम्विहितैः पञ्चयज्ञैःकाकैश्चसंस्तुतः। अश्नातिचासम्विभज्ययत्किञ्चिदुपपद्यते।२९
स पापपुरुषः क्रूरैर्याम्यैश्च कृमिभोजने। नरकाधमके दुष्टकर्मणा परिपात्यते।३०
लक्षयोजनविस्तीर्णे कृमिकुण्डे भयङ्करे। कृमिरूपं समासाद्यभक्ष्यमाणश्चतैः स्वयम्।३१
अप्रत्ताप्रहुतादो यः पातमाप्नोति तत्र वै। यस्तु स्तेयेन च बलाद्धिरण्यं रत्नमेव च।३२
ब्राह्मणस्याऽपहरति अन्यस्याऽपिचकस्यचित्। अनापदिच देवर्षे तममुत्र यमानुगाः।३३
अयस्मयै रग्निपिण्डैः सदृशैर्निष्कुषन्ति च। योऽगम्यांयोषितंगच्छेदगम्यं पुरुषञ्चया।३४
तावमुत्राऽपि कशया ताडयन्तो यमानुगाः। तिग्मयालोहमय्याचसूर्म्याऽप्यालिङ्गयन्ति तम्।३५
तांचापियोषितंसूर्म्याऽऽलिगयन्तियमानुगाः। यस्तुसर्वाभिगमनः पुरुषः पायसञ्चयी।३६
निरयेऽमुत्र तं याम्याः शाल्मलीं रोपयन्ति तम्। वज्रकण्टकसंयुक्तां शाल्मलीं तामयस्मयीम्।३७
राजन्या राजपुरुषा ये वा पाखण्डवर्तिनः। धर्मसेतुं विभिन्दन्ति ते परेत्य गता नराः।३८
वैतरण्यां पतन्त्येव भिन्नमर्यादपातकाः। नद्यां निरयदुर्गस्य परिखायां च नारद!।३९
यादोगणैः समन्तात्तु भक्ष्यमाणाइतस्ततः। नात्मनावियुजन्त्येवनाऽसुभिश्चापि नारद!।४०
स्वीयेन कर्मपाकेनोपतपन्ति च सर्वतः। विण्मूत्रपूयरक्तैश्च केशास्थिनखमांसकैः।४१
मेदोवसासंयुतायां नद्यामुपपतन्ति ते। वृषली पतयो ये च नष्टशौचा गतत्रपाः।४२
आचारनियमैस्त्यक्ताः पशुचर्यापरायणाः। तेऽत्रानुकष्टगतयो विण्मूत्रश्लेष्मरक्तकैः।४३
श्लेष्ममलसमापूर्णे निपतन्ति दुराग्रहाः। तदेव खादयन्त्येतान्यमानुचरवर्गकाः ।४४
ये श्वानगर्दभादीनां पतयोवै द्विजातयः। मृगयारसिका नित्यमतीर्थे मृगघातकाः।४५
परेतांस्तान्यमभटालक्षीभूतान्नराधमान्। इषुभिश्चविभिन्दन्तितांस्तान्दुर्नयमागतान्।४६
ये दम्भा दम्भयज्ञेषु पशून्घ्नन्ति नराधमाः। तानमुष्मिन्यमभटा नरके वैशसे तदा।४७
निपात्य पीडयन्त्येवकशाघातैर्दुरासदैः। यो भार्यां च सवर्णाम्वैद्विजोमदनमोहितः।४८
रेतः पाययते मूढोऽमुत्र तंयमकिङ्कराः। रेतः कुण्डेपातयन्ति रेतः सम्पाययन्ति च।४९
ये दस्यवोऽग्निदाश्चैवगरदाः सार्थघातकाः। ग्रामान्सार्थान्विलुम्पन्ति राजानो राजपूरुषाः।५०
तान्परेतान्यमभटा नयन्ति श्वानकादनम्। विंशत्यधिकसंख्याताः सारमेयामहाद्भुताः।५१
सप्तशत्या समाख्याता रभसं खादयन्ति ते। सारमेयादनं नाम नरकं दारुणं मुने!।
अतः परं प्रवक्ष्यामि अवीचिप्रमुखान्मुने!।।५२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे नरकप्रदपातकवर्णनंनाम द्वाविंशोऽध्यायः।।२२।।

* त्रयोविंशोऽध्यायः *

अवशिष्टनरकवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

ये नराः सर्वदा साक्ष्ये अनृतं भाषयन्ति च। दाने विनिमयेऽर्थस्य देवर्षे! पापबुद्धयः।१
तेप्रेत्याऽमुत्रनरकेअवीच्याख्येऽतिदारुणे । योजनानांशतोच्छ्रायाद्गिरिमूर्ध्नः पतन्तिहि।२
अनाकाशेऽधः शिरसस्तदवीचीतिनामके। यत्र स्थलं दृश्यते च जलवद्वीचिसंयुतम्।३
अवीचिमत्ततस्तत्र तिलशश्छिन्नविग्रहः। म्रियते नैव देवर्षे! पुनरेवाऽवरोप्यते।४
यो वा द्विजो वा राजन्यो वैश्यो वा ब्रह्मसम्भव!। सोमपीथस्तत्कलत्रं सुरां वा पिबतीव हि।५
प्रमादतस्तु तेषां वै निरये परिपातनम्। कुर्वन्तियमदूतास्ते पानं कार्ष्णायसो मुने!।६
वह्निना द्रवमाणस्य नितरां ब्रह्मसम्भव!। सम्भावनेन स्वस्यैवयोऽधमोऽपिनराधमः।७
विद्याजन्मतपोवर्णाश्रमाचारवतो नरान्। वरीयसोऽपि न बहु मन्यते पुरुषाधमः।८
स नीयते यमभटैः क्षारकर्दमनामके। निरयेऽर्वाक्शिरा घोरां दुरन्तयातनाश्नुते।९
ये वै नरा यजन्त्यन्यं नरमेधेन मोहिताः। स्त्रियोऽपि वा नरपशुं खादन्त्यत्र महामुने।१०
पशवो निहतास्ते तु यमसद्मनि सङ्गताः। सौनिका इव ते सर्वे विदार्य सितधारया।११
असृक्पिबन्ति नृत्यन्ति गायन्तिबहुधा मुने!। यथेह मांसभोक्तारः पुरुषादादुरासदाः।१२
अनागसोऽपि येऽरण्ये ग्रामे वाब्रह्मपुत्रक!। वैश्रम्भकैरुपसृतान्विश्रम्भय्यजिजीविषून्।१३
शूलसूत्रादिषु प्रोतान्क्रीडनोत्कारकानिव। पातयन्ति च ते प्रेत्य शूलप्रोतेपतन्तिहि।१४
शूलादिषु प्रोतदेहाः क्षुत्तृड्भ्यां चाऽतिपीडिताः। तिग्मतुण्डैः कङ्कबकैरितश्चेतश्च ताडिताः।१५
पीडिता आत्मशमलं बहुधा संस्मरन्ति हि। ये भूतानुद्वेजयन्ति नरा उल्वणवृत्तयः।१६
यथा सर्पादिकास्तेऽपि नरके निपतन्तिहि। दन्दशूकाभिधानेचयत्रोत्तिष्ठन्तिसवतः।१७
पञ्चाननाः सप्तमुखा ग्रसन्ति नरकागतान्। यथा बिलेशया विप्रक्रूरबुद्धिसमन्विताः।१८
येऽवटेषु कुसूलादिगुहादिषु निरुन्धते। तानमुत्रोद्यतकराः कीनाशपरिसेवकाः।१९
तेष्वेवोपविशित्वा च वह्निना सगरेण च। धूमेन च निरुन्धन्ति पापकर्मरतान्नरान्।२०
योऽतिथीन्समयप्राप्तान्दिधक्षुरिवचक्षुषा। पापेनेहाऽऽलोकयेच्च स्वयं गृहपतिर्द्विजः।२१
तस्याऽपिपापदृष्टेर्हि निरये यमकिङ्कराः। अक्षिणी वज्रतुण्डा ये कङ्काः काकवटादयः।२२
गृध्राः क्रूरतराश्चापि प्रसह्योत्पाटयन्ति हि। य आढ्याभिमतिर्याति अहङ्कृत्याऽतिगर्वितः।२३
तिर्यक्प्रेक्षणएवात्राऽभिविशङ्कीनराधमः। चिन्तयाऽर्थस्य सर्वत्रायतिव्ययस्वरूपया।२४
शुष्यद्धृदयवक्त्रश्च निर्वृतिं नैव गच्छति। ग्रहवद्रक्षते चाऽर्थं स प्रेतो यमकिङ्करैः।२५
सूचीमुखे च नरके पात्यते निजकर्मणा। वित्तग्रहं च पुरुषं वायका इव याम्यकाः।२६
किङ्कराः सर्वतोऽङ्गेषु सूत्रैः परिवयन्ति हि। एते बहुविधाविप्रनरकाः पापकर्मणाम्।२७
नराणां शतशः सन्ति यातनास्थानभूमयः। सहस्रशोऽपिदेवर्षेउक्तानुक्तांस्तथाऽपिहि।२८
विशन्तिनरकानेतान्यातनाबहुलान्मुने । तथाधर्मपराश्चाऽपिलोकान्यान्तिसुखोद्गतान्।२९
स्वधर्मो बहुधा गीतो यथा तव महामुने!। देवीपूजनरूपो हि देव्याराधनलक्षणः।३०
येनाऽनुष्ठितमात्रेण नरो न नरकं व्रजेत्। सा देवी भवपाथोधेरुद्धर्त्री पूजिता नृणाम्।३१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामष्टमस्कन्धे अवशिष्टनरकवर्णनंनाम त्रयोविंशोऽध्यायः॥२३॥

* चतुर्विंशोऽध्यायः *

समाराधनविधानेतिथ्यादिक्रमेणदेवीपूजननिरूपणम्

नारद उवाच

धर्मश्च कीदृशस्तात देव्याराधनलक्षणः। कथमाराधिता देवी सा ददाति परं पदम्। १
आराधनविधिः को वा कथमाराधिता कदा। केन सा दुर्गनरकाद्दुर्गात्राणप्रदाभवेत्। २

श्रीनारायण उवाच

देवर्षे! शृणु चित्तैकाग्र्येण मे विदुषाम्वर!। यथाप्रसीदतेदेवी धर्माराधनतः स्वयम्। ३
स्वधर्मो यादृशः प्रोक्तस्तं च मेशृणु नारद। अनादाविहसंसारेदेवीसम्पूजितास्वयम्। ४
परिपालयते घोरसङ्कटादिषु सा मुने!। सादेवी पूज्यते लोकेयथावत्तद्विधिं शृणु। ५
प्रतिपत्तिथिमासाद्य देवीमाज्येन पूजयेत्। घृतं दद्याद्ब्राह्मणाय रोगहीनो भवेत्सदा। ६
द्वितीयायां शर्करया पूजयेज्जगदम्बिकाम्। शर्करां प्रददेद्विप्रे दीर्घायुर्जायते नरः। ७
तृतीयादिवसे देव्यै दुग्धंपूजनकर्मणि। क्षीरंदत्त्वाद्विजाग्र्याय सर्वदुःखातिगोभवेत्। ८
चतुर्थ्यां पूजनेऽपूपा देया देव्यै द्विजाय च। अपूपा एव दातव्या नविघ्नैरभिभूयते। ९
पञ्चम्यां कदलीजातं फलं देव्यै निवेदयेत्। तदेव ब्राह्मणे देयं मेधावान्पुरुषो भवेत्। १०
षष्ठीतिथौ मधुप्रोक्तं देवीपूजनकर्मणि। ब्राह्मणाय च दातव्यं मधुकान्तिर्यतो भवेत्। ११
सप्तम्यां गुडनैवेद्यं देव्यै दत्त्वाद्विजाय च। गुडं दत्त्वा शोकहीनो जायते द्विजसत्तम। १२
नारिकेलमथाष्टम्यां देव्यै नैवेद्यमर्पयेत्। ब्राह्मणायप्रदातव्यं तापहीनो भवेन्नरः। १३
नवम्यांलाजमम्बायैचार्पयित्वा द्विजाय च। दत्त्वासुखाधिको भूयादिहलोकेपरत्रच। १४
दशम्यामर्पयित्वा तु देव्यै कृष्णतिलान्मुने। ब्राह्मणाय प्रदत्त्वा तुयमलोकाद्भयंन हि। १५
एकादश्यां दधि तथादेव्यै चार्पयते तु यः। ददाति ब्राह्मणायैतद्देवीप्रियतमो भवेत्। १६
द्वादश्यां पृथुकान्देव्यै दत्त्वाऽऽचार्याययोद्ददेत्। तानेवचमुनिश्रेष्ठसदेवीप्रियतांव्रजेत्। १७
त्रयोदश्यां च दुर्गायै चणकान्प्रददाति च। तानेवदत्त्वाविप्रायप्रजासन्ततिमान्भवेत्। १८
चतुर्दश्यां च देवर्षे! देव्यै सक्तून्प्रयच्छति। तानेव दद्याद्विप्रायशिवस्य दयितोभवेत्। १९
पायसं पूर्णिमातिथ्यामपर्णायै प्रयच्छति। ददाति च द्विजाग्र्याय पितृनुद्धरतेऽखिलान्। २०
तत्तिथौ हवनं प्रोक्तं देवीप्रीत्यै महामुने!। तत्तत्तिथ्युक्तवस्तूनामशेषारिष्टनाशनम्। २१
रविवारे पायसं च नैवेद्यं परिकीर्तितम्। सोमवारे पयः प्रोक्तं भौमे च कदलीफलम्। २२
बुधवारे च सम्प्रोक्तं नवनीतं नवं द्विजः। गुरुवारे शर्करां च सितां भार्गववासरे। २३
शनिवारे घृतं गव्यं नैवेद्यं परिकीर्तितम्। सप्तविंशतिनक्षत्रनैवेद्यं श्रूयतां मुने!। २४
घृतं तिलंशर्करांचदधिदुग्धंकिलाटकम्। दधिकूर्चीं मोदकं चफेणिकां घृतमण्डकम्। २५
कंसारं वटपत्रं च घृतपूरमतः परम्। वटकं कोकरसकं पूरणं मधु सूरणम्। २६
गुडं पृथुकद्राक्षे च खर्जूरं चैव चारकम्। अपूपं नवनीतं च मुद्गं मोदक एव च। २७
मातुलिङ्गमिति प्रोक्तं भनैवेद्यं च नारद!। विष्कम्भादिषुयोगेषुप्रवक्ष्यामिनिवेदनम्। २८
पदार्थानां कृतेष्वेषु प्रीणाति जगदम्बिका। गुडं मधु घृतं दुग्धं दधि तक्रंत्वपूपकम्। २९
नवनीतं कर्कटीं च कूष्माण्डं चाऽपि मोदकम्। पनसं कदलं जम्बुफलमाम्रफलं तिलम्। ३०
नारङ्गं दाडिमञ्चैवं बदरीफलमेव च। धात्रीफलं पायसञ्च पृथुकं चणकं तथा। ३१
नारिकेलं जम्भफलं कसेरुं सूरणं तथा। एतानि क्रमशो विप्र! नैवेद्यानि शुभानि च। ३२
विष्कम्भादिषु योगेषु निर्णीतानिमनीषिभिः। अथनैवेद्यमाख्यास्येकरणानांपृथङ्मुने। ३३
कंसारं मण्डकं फेणी मोदकं वटपत्रकम्। लड्डुकं घृतपूरं च तिलं दधि घृतं मधु। ३४

करणानामिदंप्रोक्तंदेवीनैवेद्यमादरात् । अथाऽन्यत्सम्प्रवक्ष्यामि देवीप्रीतिकरं परम्।३५
विधानं नारद मुने शृणु तत्सर्वमादृतः। चैत्रशुद्धतृतीयायां नरो मधुकवृक्षकम्।३६
पूजयेत्पञ्च खाद्यं च नैवेद्यमुपकल्पयेत्। एवं द्वादशमासेषु तृतीयातिथिषु क्रमात्।३७
शुक्लपक्षे विधानेन नैवेद्यमभिदध्महे। वैशाखमासे नैवेद्यं गुडयुक्तं च नारद!।३८
ज्येष्ठमासे मधु प्रोक्तं देवीप्रीत्यर्थमेव तु। आषाढे नवनीतञ्च मधुकस्य निवेदनम्।३६
श्रावणे दधि नैवेद्यं भाद्रमासे च शर्करा। आश्विने पायसं प्रोक्तं कार्तिके पय उत्तमम्।४०
मार्गे फेण्युत्तमा प्रोक्ता पौषे च दधिकूर्चिका। माघे मासिचनैवेद्यंघृतंगव्यंसमाहरेत्।४१
नारिकेलं च नैवेद्यं फाल्गुने परिकीर्तितम्। एवं द्वादशनैवेद्यैर्मासे च क्रमतोऽर्चयेत्।४२
मङ्गलावैष्णवी माया कालरात्रिर्दुरत्या। महामाया मतङ्गी च काली कमलवासिनी।४३
शिवा सहस्रचरणा सर्वमङ्गलरूपिणी। एभिर्नामपदैर्देवीं मधूके परिपूजयेत्।४४
ततः स्तुवीत देवेशीं मधूकस्थां महेश्वरीम्। सर्वकामसमृद्ध्यर्थं व्रतपूर्णत्वसिद्धये।४५
नमः पुष्करनेत्रायै जगद्धात्र्यै नमोऽस्तुते। माहेश्वर्यै महादेव्यै महामङ्गलमूर्तये।४६
परमा पापहन्त्री च परमार्गप्रदायिनी। परमेश्वरी प्रजोत्पत्तिः परब्रह्मस्वरूपिणी।४७
मददात्री मदोन्मत्ता मानगम्या महोन्नता। मनस्विनी मुनिध्येयामर्तण्डसहचारिणी।४८
जयलोकेश्वरि! प्राज्ञे! प्रलयाबुदसन्निभे!। महामोहविनाशार्थं पूजिताऽसि सुरासुरैः।४६
यमलोकाभावकर्त्रीयमपूज्या यमाग्रजा। यमनिग्रहरूपा च यजनीये! नमोनमः।५०
समस्वभावा सर्वेशी सर्वसङ्गविवर्जिता। सङ्गनाशकरीकाम्यरूपा कारुण्यविग्रहा।५१
कङ्कालक्रूरा कामाक्षी मीनाक्षी मर्मभेदिनी। माधुर्यरूपशीला च मधुरस्वरपूजिता।५२
महामन्त्रवती मन्त्रगम्या मन्त्रप्रियङ्करी। मनुष्यमानसगमा मन्मथारि प्रियङ्करी।५३
अश्वत्थवटनिम्वाम्रकपित्थबदरीगते! । पनसार्ककरीरादिक्षीरवृक्षस्वरूपिणि! ।५४
दुग्धवल्लीनिवासार्हे दयनीये दयाधिके। दाक्षिण्यकरुणारूपे जयसर्वज्ञवल्लभे।५५
एवं स्तवेन देवेशीं पूजनान्ते स्तुवीत ताम्। व्रतस्य सकलं पुण्यं लभते सर्वदा नरः।५६
नित्यं यः पठतेस्तोत्रंदेवीप्रीतिकरंनरः। आधिव्याधिभयंनास्तिरिपुभीतिर्नतस्य हि।५७
अर्थार्थीचाऽर्थमाप्नोति धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात्। कामानवाप्नुयात्कामी मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात्।५८
ब्राह्मणोवेदसम्पन्नोविजयीक्षत्त्रियोभवेत् । वैश्यश्चधनधान्याढ्योभवेच्छुद्रः सुखाधिपः।५६
स्तोत्रमेतच्छ्राद्धकाले यः पठेत्प्रयतो नरः। पितृणामक्षया तृप्तिर्जायते कल्पवर्तिनी।६०
एवमाराधनं देव्याः समुक्तं सुरपूजितम्। यः करोति नरोभक्त्यासदेवीलोकभाग्भवेत्।६१
देवीपूजनतो विप्रसर्वे कामा भवन्तिहि। सर्वपापहतिः शुद्धा मतिरन्ते प्रजायते।६२
यत्र तत्र भवेत्पूज्यो मान्यो मानधनेषु च। जायते जगदम्बायाः प्रसादेन विरञ्चिज!।६३
नरकाणां न तस्याऽस्ति भयं स्वप्नेऽपि कुत्रचित्। महामायाप्रसादेन पुत्रपौत्रादिवर्धनः।६४
देवीभक्तोभवत्येव नाऽत्रकार्या विचारणा। इत्येवं तेसमाख्यातं नरकोद्धारलक्षणम्।६५
पूजनं हि महादेव्याः सर्वमङ्गलकारकम्। मधूकपूजनं तद्वन्मासानां क्रमतो मुने!।६६
सर्वं समाचारेद्यस्तु पूजनं मधुकाह्वयम्। न तस्य रोगबाधादि भयमुद्भवतेऽनघ!।६७
अथाऽन्यदपि वक्ष्यामि प्रकृतेः पञ्चकं परम्। नाम्ना रूपेणचोत्पत्त्याजगदानन्ददायकम्।६८
साख्यानं च समाहात्म्यं प्रकृतेः पञ्चकं मुने!। कुतूहलकरं चैव शृणु मुक्तिविधायकम्।६६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यामष्टमस्कन्धे-समाराधनविधानेदेवीपूजननिरूपणं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः॥२४॥ स्कन्धश्चाऽयं समाप्तः॥
नन्दाग्निवसुभिः (८३६) पद्यैर्द्वैपायनमुखच्युतैः देवीभागवतस्याऽस्याऽष्टमःस्कन्ध उदीरितः॥१॥

।।श्रीगणेशायनमः।।

देवीभागवत पुराणम्

नवमः स्कन्धः

* प्रथमोऽध्यायः *

नारायणनारदसम्वादेप्रकृतिचरित्रवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

गणेशजननी दुर्गाराधालक्ष्मीः सरस्वती। सावित्रीचसृष्टिविधौप्रकृतिः पञ्चधास्मृता। १

नारद उवाच

आविर्बभूव सा केन का वा साज्ञानिनाम्वर!। किंवातल्लक्षणंसाधोबभूवपञ्चधाकथम्। २
सर्वासां चरितं पूजाविधानंगुणईप्सितः। अवतारः कुत्रकस्यास्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि। ३

श्रीनारायण उवाच

प्रकृतेर्लक्षणं वत्स! को वा वक्तुं क्षमो भवेत्। किञ्चित्तथाऽपि वक्ष्यामि यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रतः। ४
प्रकृष्टवाचकः प्रश्च कृतिश्च सृष्टिवाचकः। सृष्टौ प्रकृष्टा या देवी प्रकृतिः साप्रकीर्तिता। ५
गुणे सत्त्वे प्रकृष्टे च प्रशब्दो वर्तते श्रुतः। मध्यमे रजसि कृश्चतिशब्दस्तमसिस्मृतः। ६
त्रिगुणात्मस्वरूपा या सा च शक्तिसमन्विता। प्रधाना सृष्टिकरणे प्रकृतिस्तेन कथ्यते। ७
प्रथमे वर्तते प्रश्च कृतिश्च सृष्टिवाचकः। सृष्टेरादौ च या देवी प्रकृतिः सा प्रकीर्तिता। ८
योगेनाऽऽत्मा सृष्टिविधौ द्विधारूपो बभूवसः। पुमांश्च दक्षिणार्धाङ्गो वामार्धा प्रकृतिः स्मृता। ९
सा च ब्रह्मस्वरूपा च नित्या सा च सनातनी। यथाऽऽत्मा चतथा शक्तिर्यथाऽग्नौ दाहिकास्थिता। १०
अत एव हि योगीन्द्रैः स्त्रीपुम्भेदो न मन्यते। सर्व ब्रह्ममयं ब्रह्मञ्छश्वत्सदपि नारद। ११
स्वेच्छामयस्येच्छया च श्रीकृष्णस्य सिसृक्षया। साऽऽविर्बभूव सहसा मूलप्रकृतिरीश्वरी। १२
तदाज्ञया पञ्चविधा सृष्टिकर्मविभेदिका। अथ भक्तानुरोधाद्वा भक्तानुग्रहविग्रहा। १३
गणेशमाता दुर्गा या शिवरूपा शिवप्रिया। नारायणीविष्णुमायापूर्णब्रह्मस्वरूपिणी। १४
ब्रह्मादिदेवैर्मुनिभिर्मनुभिःपूजिता स्तुता। सर्वाधिष्ठात्री देवी सा शर्वरूपासनातनी। १५
धर्मसत्यापुण्यकीर्तिर्यशोमङ्गलदायिनी। सुखमोक्षहर्षदात्री शोकार्तिदुःखनाशिनी। १६
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणा। तेजः स्वरूपा परमा तदधिष्ठातृदेवता। १७
सर्वशक्तिस्वरूपा च शक्तिरीशस्य सन्ततम्। सिद्धेश्वरी सिद्धिरूपा सिद्धिदा सिद्धिरीश्वरी। १८

बुद्धिर्निद्रा क्षुत्पिपासा छाया तन्द्रा दया स्मृतिः।
जातिः क्षान्तिश्च भ्रान्तिश्च शान्तिः कान्तिश्च चेतना ॥१९॥

तुष्टिः पुष्टिस्तथा लक्ष्मीर्धृतिर्मायातथैवच। सर्वशक्तिस्वरूपासाकृष्णस्यपरमात्मनः। २०
उक्तः श्रुतौ श्रुतगुणश्चाऽतिस्वल्पोयथागमम्। गुणोऽस्त्यनन्तोऽनन्ताया अपरां च निशामय। २१
शुद्धसत्त्वस्वरूपा या पद्मा सा परमात्मनः। सर्वसम्पत्स्वरूपा सा तदधिष्ठातृदेवता। २२

कान्ताऽतिदान्ता शान्ता च सुशीला सर्वमङ्गला।
लोभमोहकामरोषमदाहङ्कारवर्जिता ॥२३॥

भक्तानुरक्ता पत्युश्चसर्वाभ्यश्च पतिव्रता। प्राणतुल्या भगवतः प्रेमपात्रं प्रियम्वदा।२४
सर्वसस्यात्मिका देवी जीवनोपायरूपिणी। महालक्ष्मीश्च वैकुण्ठे पतिसेवारता सती।२५
स्वर्गे च स्वर्गलक्ष्मीश्चराजलक्ष्मीश्चराजसु। गृहेषुगृहलक्ष्मीश्चमर्त्यानांगृहिणांतथा।२६
सर्वप्राणिषु द्रव्येषु शोभारूपा मनोहरा। कीर्तिरूपा पुण्यवतां प्रभारूपा नृपेषु च।२७
वाणिज्यरूपा वणिजां पापिनां कलहाङ्कुरा। दयारूपाचकथितावेदोक्तासर्वसम्मता।२८
सर्वपूज्यासर्ववन्द्या चान्यां मत्तोनिशामय। वाग्बुद्धिविद्याज्ञानाधिष्ठात्रीचपरमात्मनः।२९
सर्वविद्यास्वरूपा या सा च देवी सरस्वती। सा बुद्धिः कविता मेधा प्रतिभा स्मृतिदा नृणाम्।३०
नानाप्रकारसिद्धान्तभेदार्थकलना मता। व्याख्या बोधस्वरूपा च सर्वसन्देहभञ्जिनी।३१
विचारकारिणी ग्रन्थकारिणीशक्तिरूपिणी। स्वरसङ्गीतसन्धानतालकारणरूपिणी ।३२
विषयज्ञानवाग्रूपाप्रतिविश्वोपजीविनी । व्याख्यावादकरीशान्तावीणापुस्तकधारिणी।३३
शुद्धसत्त्वस्वरूपा च सुशीला श्रीहरिप्रिया। हिमचन्दनकुन्देन्दुकुमुदाम्भोजसन्निभा ।३४
यजन्ती परमात्मानं श्रीकृष्णं रत्नमालया। तपः स्वरूपा तपसांफलदात्रीतपस्विनाम्।३५
सिद्धिविद्यास्वरूपा च सर्वसिद्धिप्रदा सदा। यया विना तु विप्रौघो मूको मृतसमः सदा।३६
देवी तृतीया गदिता श्रुत्युक्ता जगदम्बिका। यथागमं यथा किञ्चिदपरांत्वंनिबोधमे।३७
माता चतुर्णां वर्णानां च छन्दसाम्। सन्ध्यावन्दनमन्त्राणां तन्त्राणां च विचक्षणा।३८
द्विजातिजातिरूपा च जपरूपा तपस्विनी। ब्रह्मण्यतेजोरूपा च सर्वसंस्काररूपिणी।३९
पवित्ररूपा सावित्री गायत्री ब्रह्मणः प्रिया। तीर्थानि यस्याः संस्पर्शं वाञ्छन्तिह्यात्मशुद्धये।४०
शुद्धस्फटिकसङ्काशा शुद्धसत्त्वस्वरूपिणी। परमानन्दरूपा च परमा च सनातनी।४१
परब्रह्मस्वरूपा च निर्वाणपददायिनी। ब्रह्मतेजोमयी शक्ति स्तदधिष्ठातृदेवता।४२
यत्पादरजसा पूतं जगत्सर्वं च नारद!। देवी चतुर्थी कथिता पञ्चमीं वर्णयामि ते।४३
पञ्चप्राणाधिदेवी या पञ्च प्राणस्वरूपिणी। प्राणाधिकप्रियतमा सर्वाभ्यः सुन्दरीपरा।४४
सर्वयुक्ता च सौभाग्यगानिगी गौरवान्विता। वामाङ्गार्धस्वरूपाचगुणेनतेजसासमा ।४५
परावरा सारभूता परमाद्या सनातनी। परमानन्दरूपा च धन्या मान्या च पूजिता।४६
रासक्रीडाधिदेवी श्रीकृष्णस्यपरमात्मनः। रासमण्डलसम्भूतारासमण्डलमण्डिता ।४७
रासेश्वरी सुरसिका रासावासनिवासिनी। गोलोकवासिनी देवी गोपीवेषविधायिका।४८
परमाह्लादरूपाचसन्तोषहर्षरूपिणी । निर्गुणा च निराकारा निर्लिप्ताऽऽत्मस्वरूपिणी।४९
निरीहा निरहङ्कारा भक्तानुग्रहनुग्रहा। वेदानुसारिध्यानेन विज्ञाता सा विचक्षणैः।५०
दृष्टिदृष्टा न सा चेशेः सुरेन्द्रैर्मुनिपुङ्गवैः। वह्निशुद्धांशुकधरा नानालङ्कारभूषिता।५१
कोटिचन्द्रप्रभा पुष्टसर्वश्रीयुक्तविग्रहा। श्रीकृष्णभक्तिदास्यैककरा च सर्वसम्पदाम्।५२
अवतारे च वाराहे वृषभानुसुता च या। यत्पादपद्मसंस्पर्शात्पवित्रा च वसुन्धरा।५३
ब्रह्मादिभिरदृष्टाया सर्वैर्दृष्टा च भारते। स्त्रीरत्नसारसम्भूता कृष्णवक्षःस्थले स्थिता।५४
यथाऽम्बरे नवघने लोला सौदामनी मुने!। षष्टिवर्षसहस्राणि प्रतप्ते ब्रह्मणा पुरा।५५
यत्पादपद्मनखरदृष्टये चाऽऽत्मशुद्धये। न धदृष्टं च स्वप्नेऽपिप्रत्यक्षस्याऽपिकाकथा।५६
तेनैव तपसा दृष्टा भुवि वृन्दावने वने। कथिता पञ्चमी देवी सा राधाच प्रकीर्तिता।५७
अंशरूपाः कलारूपाः कलांशांशांशसम्भवाः। प्रकृतेः प्रतिविश्वेषु देव्यश्च सर्वयोषितः।५८

परिपूर्णतमाः पञ्च विद्यादेव्यः प्रकीर्तिताः। या याः प्रधानांशरूपावर्णयामिनिशामय।५९
प्रधानांशस्वरूपा सा गङ्गा भुवनपावनी। विष्णुविग्रहसम्भूता द्रवरूपा सनातनी।६०
पापिपापेध्मदाहाय ज्वलदग्निस्वरूपिणी। सुखस्पर्शा स्नानपानैर्निर्वाणपददायिनी।६१
गोलोकस्थानप्रस्थानसुखसोपानरूपिणी। पवित्ररूपा तीर्थानां सरितां च परावरा।६२
शम्भुमौलिजटामेरुमुक्तापङ्क्तिस्वरूपिणी। तपः सम्पादिनीसद्योभारतेषुतपस्विनाम्।६३
चन्द्रपद्मक्षीरनिभा शुद्धसत्त्वस्वरूपिणी। निर्मला निरहङ्कारा साध्वी नारायणप्रिया।६४
प्रधानांशस्वरूपाचतुलसीविष्णुकामिनी। विष्णुभूषणरूपाच विष्णुपादस्थितासती।६५
तपः सङ्कल्पपूजादिसङ्घसम्पादिनी मुने!। सारभूता च पुष्पाणांपवित्रा पुण्यदासदा।६६
दर्शनस्पर्शनाभ्याञ्च सद्योनिर्वाणदायिनी। कलौ कलुषशुष्केध्मदहनायाऽग्निरूपिणी।६७
यत्पादपद्मसंस्पर्शात्सद्यः पूता वसुन्धरा। यत्स्पर्शदर्शने चैवेच्छन्ति तीर्थानि शुद्धये।६८
यया विनाचविश्वेषुसर्वं कर्म च निष्फलम्। मोक्षदायामुमुक्षूणांकामिनांसर्वकामदा।६९
कल्पवृक्षस्वरूपाया भारते वृक्षरूपिणी। भारतीनां प्रीणनाय जाता या परदेवता।७०
प्रधानांशस्वरूपा या मनसा कश्यपात्मजा। शङ्करप्रियशिष्या च महाज्ञानविशारदा।७१
नागेश्वरस्याऽनन्तस्य भगिनी नागपूजिता। नागेश्वरीनागमातासुन्दरी नागवाहिनी।७२
नागेन्द्रगणसंयुक्ता नागभूषणभूषिता। नागेन्द्रवन्दिता सिद्धा योगिनी नागशायिनी।७३
विष्णुरूपा विष्णुभक्ता विष्णुपूजापरायणा। तपः स्वरूपा तपसां फलदात्री तपस्विनी।७४
दिव्यं त्रिलक्षवर्षं च तपस्तप्त्वा च या हरेः। तपस्विनीषु पूज्याचतपस्विषुचभारते।७५
सर्वमन्त्राधिदेवी च ज्वलन्ती ब्रह्मतेजसा। ब्रह्मस्वरूपा परमा ब्रह्मभावनतत्परा।७६
जरत्कारुमुनेः पत्नीकृष्णांशस्यपतिव्रता। आस्तीकस्यमुनेर्माताप्रवरस्यतपस्विनाम्।७७
प्रधानांशस्वरूपा या देवसेना च नारद!। मातृकासुपूज्यतमा सा षष्ठी च प्रकीर्तिता।७८
पुत्रपौत्रादिदात्री च धात्री त्रिजगतांसती। षष्ठांशरूपा प्रकृतेस्तेन षष्ठी प्रकीर्तिता।७९
स्थानेशिशूनांपरमावृद्धरूपाच योगिनी। पूजा द्वादशमासेषु यस्या विश्वेषुसन्ततम्।८०
पूजा च सूतिकागारे पुरा षष्ठदिने शिशोः। एकविंशतिमे चैव पूजा कल्याणहेतुकी।८१
मुनिभिर्नमिताचैषा नित्यकामाऽप्यतः परा। मातृकाच दयारूपा शश्वद्रक्षणकारिणी।८२
जले स्थले चाऽन्तरिक्षे शिशूनां सद्मगोचरे। प्रधानांशस्वरूपाचदेवीमङ्गलचण्डिका।८३
प्रकृतेर्मुखसम्भूता सर्वमङ्गलदा सदा। सृष्टौ मङ्गलरूपा च संहारे कोपरूपिणी।८४
तेन मङ्गलचण्डी सा पण्डितैः परिकीर्तिता। प्रतिमङ्गलवारेषु प्रतिविश्वेषु पूजिता।८५
पुत्रपौत्रधनैश्वर्ययशोमङ्गलदायिनी। परितुष्टा सर्ववाञ्छाप्रदात्री सर्वयोषिताम्।८६
रुष्टा क्षणेन संहर्तुं शक्ता विश्वं महेश्वरी। प्रधानांशस्वरूपा सा काली कमललोचना।८७
दुर्गाललाटसम्भूता रणे शुम्भनिशुम्भयोः। दुर्गार्धांशस्वरूपा सा गुणेन तेजसासमा।८८
कोटिसूर्यसमाजुष्टपुष्टजाज्वलविग्रहा। प्रधाना सर्वशक्तीनां बला बलवती परा।८९
सर्वसिद्धप्रदा देवी परमा योगरूपिणी। कृष्णभक्ता कृष्णतुल्या तेजसा विक्रमैर्गुणैः।९०
कृष्णभावनया शश्वत्कृष्णवर्णा सनातनी। संहर्तुं सर्वब्रह्माण्डं शक्ता निःश्वासमात्रतः।९१
रणं दैत्यैः समंतस्याः क्रीडयालोकशिक्षया। धर्मार्थकाममोक्षांश्च दातुंशक्ताचपूजिता।९२
ब्रह्मादिभिः स्तूयमाना मुनिभिर्मनुभिर्नरैः। प्रधानांशस्वरूपा सा प्रकृतेश्च वसुन्धरा।९३

आधाररूपा सर्वेषां सर्वसस्या प्रकीर्तिता। रत्नाकरा रत्नगर्भा सर्वरत्नाकराश्रया।९४
प्रजाभिश्च प्रजेशैश्च पूजिता वन्दितासदा। सर्वोपजीव्यरूपाच सर्वसम्पद्विधायिनी।९५
यया विना जगत्सर्वं निराधारं चराचरम्। प्रकृतेश्चकला या यास्तानिबोधमुनीश्वर!।९६
यस्य यस्य च या पत्नी तत्सर्वं वर्णयामि ते। स्वाहादेवी वह्निपत्नी प्रतिविश्वेषु पूजिता।९७
यया विना हविर्दानं न ग्रहीतुं सुराः क्षमाः। दक्षिणा यज्ञपत्नीच दीक्षा सर्वत्रपूजिता।९८
यया विना हि विश्वेषु सर्वकर्म हि निष्फलम्। स्वधा पितॄणां पत्नी च मुनिभिर्मनुभिर्नरैः।९९
पूजिता पितृदानंहिनिष्फलंचययाविना। स्वस्तिदेवीवायुपत्नी प्रतिविश्वेषुपूजिता।१००
आदानञ्च प्रदानञ्च निष्फलञ्चयया विना। पुष्टिर्गणपतेः पत्नी पूजिता जगतीतले।१०१

यया विना परिक्षीणाः पुमांसो योषितोऽपि च।
अनन्तपत्नी तुष्टिश्च पूजिता वन्दिता भवेत् ।।१०२।।

ययाविनानसन्तुष्टाः सर्वे लोकाश्च सर्वतः। ईशानपत्नी सम्पत्तिः पूजिताचसुरैर्नरैः।१०३
सर्वे लोका दरिद्राश्च विश्वेषु च यया विना। धृतिः कपिलपत्नी च सर्वैः सर्वत्रपूजिता।१०४
सर्वे लोकाः अधैर्याश्चजगत्सुचययाविना। सत्यपत्नी सती मुक्तैः पूजिताजगतीप्रिया।१०५
ययाविनाभवेल्लोकोबन्धुतारहितः सदा। मोहपत्नीदया साध्वी पूजिताचजगत्प्रिया।१०६
सर्वे लोकाश्च सर्वत्र निष्फलाश्च यया विना। पुण्यपत्नी प्रतिष्ठा सा पूजिता पुण्यदा सदा।१०७
यया विना जगत्सर्वं जीवन्मृतसमं मुने। सुकर्मपत्नीसंसिद्धा कीर्तिर्धन्यैश्चपूजिता।१०८
यया विना जगत्सर्वं यशोहीनंमृतंयथा। क्रिया तूद्योगपत्नी च पूजिता सर्वसम्मता।१०९
यया विना जगत्सर्वं विधिहीनञ्च नारद!। अधर्मपत्नी मिथ्यासा सर्वधूर्तैश्च पूजिता।११०
ययाविना जगत्सर्वमुच्छिन्नं विधिनिर्मितम्। सत्ये अदर्शना या च त्रेतायां सूक्ष्मरूपिणी।१११
अर्धावयवरूपा च द्वापरे चैव सम्वृता। कलौ महाप्रगल्भाच सर्वत्र व्यापिकाबलात्।११२
कपटेन समं भ्रात्रा भ्रमते च गृहेगृहे। शान्तिर्लज्जा च भार्ये द्वे सुशीलस्य च पूजिते।११३
याभ्यांविनाजगत्सर्वमुन्मत्तामिवनारद!। ज्ञानस्यतिस्रोभार्याश्चबुद्धिर्मेधाधृतिस्तथा।११४
याभिर्विना जगत्सर्वं मूढं मत्तसमं सदा। मूर्तिश्च धर्मपत्नी सा कान्तिरूपा मनोहरा।११५
परमात्माचविश्वौघोनिराधारोययाविना। सर्वत्रशोभारूपारूपाचलक्ष्मीर्मूर्तिमतीसती।११६
श्रीरूपामूर्तिरूपाचमान्याधन्याऽतिपूजिता। कालाग्निरुद्रपत्नीचनिद्रासासिद्धयोगिनी।११७
सर्वेलोकाः समाच्छन्नाययायोगेनरात्रिषु। कालस्यतिस्रोभार्याश्चसन्ध्यारात्रिर्दिनानिच।११८
याभिर्विनाविधाताचसंख्यांकर्तुंन शक्यते। क्षुत्पिपासे लोभभार्येधन्येमान्ये च पूजिते।११९
याभ्यांव्याप्तंजगत्सर्वंनित्यंचिन्ताऽऽतुरंभवेत्। प्रभाचदाहिकाचैवद्वेभार्येतेजसस्तथा ।१२०

याभ्यां विना जगत्स्रष्टुं विधातुं च न हीश्वरः।
कालकन्ये मृत्युजरे प्रज्वारस्य प्रियाप्रिये ।।१२१।।
याभ्यां जगत्समुच्छिन्नं विधात्रानिर्मितं विधौ।
निद्रा कन्या च तन्द्रा सा प्रीतिरन्या सुखप्रिये ।।१२२।।

याभ्यांव्याप्तंजगत्सर्वंविधिपुत्रविधेर्विधौ। वैराग्यस्य च द्वेभार्ये श्रद्धाभक्तिश्चपूजिते।१२३
याभ्यां शश्वज्जगत्सर्वं यज्जीवन्मुक्तिमन्मुने। अदितिर्देवमाता च सुरभीचगवां प्रसूः।१२४
दितिश्चदैत्यजननीकद्रूश्चविनतादनुः। उपयुक्ताः सृष्टिविधावेतास्तु कीर्तिताः कलाः।१२५

कला अन्याः सन्ति बह्व्यस्तासु काश्चिन्निबोध मे।
रोहिणी चन्द्रपत्नी च सञ्ज्ञासूर्यस्य कामिनी ।।१२६।।

शतरूपा मनोर्भार्याचीन्द्रस्यंच गेहिनी। ताराबृहस्पतेर्भार्याविसिष्ठस्याप्यऽरुन्धती।१२७
अहल्या गौतमस्त्रीसाऽप्यनसूयाऽत्रिकामिनी। देवहूतीकर्दमस्य प्रसूतिर्दक्षकामिनी।१२८
पितृणांमानसीकन्यामेनकासाऽम्बिकाप्रसूः । लोपामुद्रातथाकुन्तीकुबेरकामिनी तथा।१२९
वरुणानी प्रसिद्धाचबलेर्विंध्यावलिस्तथा। कान्ताचदमयन्ती चयशोदादेवकी तथा।१३०
गान्धारी द्रौपदी शैव्या सा च सत्यवती प्रिया। वृषभानुप्रिया साध्वी राधामाता कुलोद्वहा।१३१
मन्दोदरीचकौसल्यासुभद्राकौरवी तथा। रेवती सत्यभामाचकालिन्दीलक्ष्मणातथा।१३२
जाम्बवती नाग्नजितिर्मित्रविन्दा तथाऽपरा। लक्ष्मणा रुक्मिणी सीता स्वयं लक्ष्मीः प्रकीर्तिता।१३३
कालीयोजनगन्धा च व्यासमातामहासती। बाणपुत्रीतथोषाचचित्रलेखा चतत्सखी।१३४
प्रभावती भानुमती तथा मायावती सती। रेणुका च भृगोर्मातारामाताचरोहिणी।१३५
एकनन्दा च दुर्गा सा श्रीकृष्णभगिनी सती। बह्व्यः सत्यः कलाश्चैव प्रकृतेरेवभारते।१३६
या याश्च ग्रामदेव्यः स्युस्ताः सर्वाः प्रकृतेः कलाः। कलांशांशसमुद्भूताः प्रतिविश्वेषु योषितः।१३७
योषितामवमानेन प्रकृतेश्च पराभवः। ब्राह्मणी पूजिता येन पतिपुत्रवती सती।१३८
प्रकृतिः पूजिता तेनवस्त्राऽलङ्कारचन्दनैः। कुमारीचाऽष्टवर्षीया वस्त्राऽलङ्कारचन्दनैः।१३९
पूजितायेन विप्रस्य प्रकृतिस्तेन पूजिता। सर्वाः प्रकृतिसम्भूता उत्तमाधममध्यमाः।१४०
सत्त्वांशाश्चोत्तमा ज्ञेयाः सुशीलाश्च पतिव्रताः। मध्यमा रजसश्चांशास्ताश्च भोग्याः प्रकीर्तिताः।१४१
सुखसम्भोगवश्याश्चस्वकार्यतत्पराः सदा। अधमास्तमसश्चांऽशाअज्ञातकुलसम्भवाः।१४२
दुर्मुखाः कुलहा धूर्ताः स्वतन्त्राः कलहप्रियाः। पृथिव्यां कुलटा याश्च स्वर्गे चाऽप्सरसां गणाः।१४३
प्रकृतेस्तमसश्चांशाः पुंश्चल्यःपरिकीर्तिताः। एवं निगदितं सर्वं प्रकृते रूपवर्णनम्।१४४
ताःसर्वाःपूजिताः पृथ्व्यां पुण्यक्षेत्रे च भारते। पूजिता सुरथेनाऽऽदौ दुर्गादुर्गार्तिनाशिनी।१४५
ततः श्रीरामचन्द्रेण रावणस्य वधार्थिना। तत्पश्चाज्जगतां माता त्रिषु लोकेषुपूजिता।१४६
जाताऽऽदौदक्षकन्यायानिहत्यदैत्यदानवान्। ततो देहं परित्यज्य यज्ञे भर्तुश्चनिन्दया।१४७
जज्ञे हिमवतः पत्न्यांलेभेपशुपतिंपतिम्। गणेशश्चस्वयंकृष्णः स्कन्दोविष्णुकलोद्भवः।१४८
बभूवतुस्तौ तनयौ पश्चात्तस्याश्च नारद!। लक्ष्मीर्मङ्गलभूपेन प्रथमं परिपूजिता।१४९
त्रिषु लोकेषु तत्पश्चाद्देवतामुनिमानवैः। सावित्रि चाऽश्वपतिना प्रथमं परिपूजिता।१५०
तत्पश्चात्त्रिषु लोकेषु देवतामुनिपुङ्गवैः। आदौ सरस्वतीदेवी ब्रह्मणा परिपूजिता।१५१
तत्पश्चात् त्रिषु लोकेषु देवतामुनिपुङ्गवैः। प्रथमं पूजिता राधा गोलोके रासमण्डले।१५२
पौर्णमास्यां कार्त्तिकस्य कृष्णेन परमात्मना। गोपिकाभिश्चगोपैश्च बालिकाभिश्च बालकैः।१५३
गवां गणैः सुरभ्या च तत्पश्चादाज्ञया हरेः। तदा ब्रह्मादिभिर्देवैर्मुनिभिः परया मुदा।१५४
पुष्पधूपादिभिर्भक्त्या पूजिता वन्दिता सदा। पृथिव्यां प्रथमं देवीसुयज्ञेनैव पूजिता।१५५
शङ्करेणोपदिष्टेन पुण्यक्षेत्रे च भारते। त्रिषु लोकेषु तत्पश्चादाज्ञया परमात्मनः।१५६
पुष्पधूपादिभिर्भक्त्यापूजितामुनिभिः सदा। कला या याः समुद्भूताः पूजितास्ताश्च भारते।१५७
पूजिता ग्रामदेवश्चग्रामेच नगरे मुने। एवं ते कथितं सर्वं प्रकृतेश्चरितं शुभम्।१५८
यथागमं लक्षणं च किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।१५९।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे प्रकृतिचरित्रवर्णनंनामप्रथमोऽध्यायः।।१।।

* द्वितीयोऽध्यायः *

पञ्चप्रकृतितद्भर्तृगणोत्पत्तिवर्णनम्

नारद उवाच

समासेन श्रुतं सर्वं देवीनां चरितं प्रभो!। विबोधनाय बोधस्य व्यासेनवक्तुमर्हसि। १
सृष्टेराद्या सृष्टिविधौ कथमाविर्बभूव ह। कथं वा पञ्चधा भूता वद वेदविदाम्बर!। २
भूता ययांशकलया तयात्रिगुणयाभवे। व्यासेनतासांचरितंश्रोतुमिच्छामिसाम्प्रतम्। ३
तासां जन्मानुकथनं पूजाध्यानविधिं बुध!। स्तोत्रं कवचमैश्वर्यं शौर्यं वर्णय मङ्गलम्। ४

श्रीनारायण उवाच

नित्य आत्मा नभो नित्यं कालो नित्यो दिशो यथा।
विश्वानां गोलकं नित्यं नित्यो गोलोक एव च।।५।।

तदेकदेशो वैकुण्ठो नम्रभागानुसारकः। तथैव प्रकृतिर्नित्या ब्रह्मलीला सनातनी। ६
यथाऽग्नौ दाहिका चन्द्रे पद्मे शोभाप्रभारवौ। शश्वद्युक्तानभिन्नासातथाप्रकृतिरात्मनि। ७
विना स्वर्णं स्वर्णकारः कुण्डलंकर्तुमक्षमः। विना मृदा घटं कर्तुं कुलालोहिनहीश्वरः। ८

न हि क्षमस्तथाऽऽत्मा च सृष्टिं स्रष्टुं तया विना।
सर्वशक्तिस्वरूपा सा यया च शक्तिमान्सदा।।९।।

ऐश्वर्यवचनः शश्च क्तिः पराक्रमएव च। तत्स्वरूपातयोर्दात्रीसाशक्तिः परिकीर्तिता। १०
ज्ञानं समृद्धिसम्पत्तिर्यशश्चैव बलम्भगः। तेन शक्तिर्भगवती भगरूपा च सा तदा। ११
तया युक्तः सदाऽऽत्मा च भगवांस्तेन कथ्यते। स च स्वेच्छामयो देवः साकारश्च निराकृतिः। १२
तेजोरूपं निराकारं ध्यायन्ते योगिनः सदा। वदन्ति च परं ब्रह्म परमानन्दमीश्वरम्। १३
अदृश्यं सर्वद्रष्टारं सर्वज्ञं सर्वकारणम्। सर्वदं सर्वरूपं तं वैष्णवास्तन्न मन्वते। १४
वदन्तिचैव ते कस्य तेजस्तेजस्विनाविना। तेजोमण्डलमध्यस्थंब्रह्मतेजस्विनंपरम्। १५
स्वेच्छामयं सर्वरूपं सर्वकारणकारणम्। अतीव सुन्दरं रूपं बिभ्रतं सुमनोहरम्। १६
किशोरवयसं शान्तं सर्वकान्तम्परात्परम्। नवीननीरदाभासधामैकं श्यामविग्रहम्। १७
शरन्मध्याह्नपद्मौघशोभामोचनलोचनम्। मुक्ताच्छविविनिन्द्यैकदन्तपङ्क्तिमनोरमम्। १८
मयूरपिच्छचूडञ्च मालतीमाल्यमण्डितम्। सुनसं सस्मितं कान्तंभक्तानुग्रहकारणम्। १९
ज्वलदग्निविशुद्धैकपीतांशुकसुशोभितम्। द्विभुजं मुरलीहस्तं रत्नभूषणभूषितम्। २०
सर्वाधारञ्च सर्वेशं सर्वशक्तियुतं विभुम्। सर्वैश्वर्यप्रदं सर्वं स्वतन्त्रं सर्वमङ्गलम्। २१
परिपूर्णतमंसिद्धं सिद्धेशं सिद्धिकारकम्। ध्यायन्ते वैष्णवाः शश्वद्देवदेवं सनातनम्। २२
जन्ममृत्युजराव्याधिशोकभीतिहरं परम्। ब्रह्मणो वयसा यस्य निमेष उपचर्यते। २३
सचाऽऽत्मा स परं ब्रह्मकृष्णइत्यभिधीयते। कृषिस्तद्भक्तिवचनोनश्चतद्दास्यवाचकः। २४
भक्तिदास्यप्रदाता यः स च कृष्णः प्रकीर्तितः। कृषिश्चसर्ववचनो नकारोबीजमेवच। २५
स कृष्णः सर्वस्रष्टाऽऽदौसिसृक्षन्नेकएवच। सृष्ट्युन्मुखस्तदंशेन कालेन प्रेरितः प्रभुः। २६
स्वेच्छामयः स्वेच्छया च द्विधारूपो बभूव ह। स्त्रीरूपोवामभागांशो दक्षिणांशःपुमान्स्मृतः। २७
तां ददर्श महाकामीकामाधारां सनातनः। अतीव कमनीयाञ्च चारुपङ्कजसन्निभाम्। २८
चन्द्रबिम्बविनिन्द्यैकनितम्बयुगलाम्पराम्। सुचारुकदलीस्तम्भनिन्दितश्रोणिसुन्दरीम्। २९
श्रीयुक्तश्रीफलाकारस्तनयुग्ममनोरमाम्। पुष्पजुष्टांसुवलितांमध्यक्षीणांमनोहराम्। ३०
अतीवसुन्दरींशान्तांसस्मितांवक्रलोचनाम्। वह्निशुद्धांशुकाधानांरत्नभूषणभूषिताम्। ३१

शश्वच्चक्षुश्चकोराभ्यांपिबन्तींसततंमुदा । कृष्णस्यमुखचन्द्रंचचन्द्रकोटिविनिन्दितम् ।३२
कस्तूरीविन्दुना सार्धमधश्चन्दनबिन्दुना । समंसिन्दूरबिन्दुञ्च भालमध्येचबिभ्रतीम् ।३३
वक्रिमं कबरीभारं मालतीमाल्यभूषितम् । रत्नेन्द्रसारहारञ्च दधतीं कान्तकामुकीम् ।३४
कोटिचन्द्रप्रभामृष्टपुष्टशोभासमन्विताम् । गमनेन राजहंसगजगर्वविनाशिनीम् ।३५
दृष्ट्वा तां तु तयासार्धंरासेशोरासमण्डले । रसोल्लासेषुरसिको रासक्रीडाञ्चकार ह ।३६
नानाप्रकारश्रृङ्गारं श्रृङ्गारो मूर्तिमानिव । चकार सुखसम्भोगं यावद्वै ब्रह्मणोदिनम् ।३७
ततः स च परिश्रान्तस्तस्या योनौ जगत्पिता । चकार वीर्याधानञ्च नित्यानन्दे शुभक्षणे ।३८
गात्रतो योषितस्तस्याः सुरतान्तेचसुव्रत! । निःससारश्रमजलं श्रान्तायास्तेजसाहरेः ।३९
महाक्रमणक्लिष्टाया निःश्वासश्च बभूव ह । तदा वव्रे श्रमजलंतत्सर्वं विश्वगोलकम् ।४०
स च निःश्वासवायुश्चसर्वाधारो बभूव ह । निःश्वासवायुः सर्वेषां जीविनां च भवेषु च ।४१
बभूव मूर्तिमद्वायोर्वामाङ्गात्प्राणवल्लभा । तत्पत्नी सा च तत्पुत्राः प्राणाः पञ्च च जीविनाम् ।४२
प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः । बभूवुरेव तत्पुत्रा अधः प्राणाश्चपञ्च च ।४३
धर्मतोयाधिदेवश्च बभूव वरुणो महान् । तद्वामाङ्गाच्च तत्पत्नी वरुणानी बभूव सा ।४४
अथ सा कृष्णचिच्छक्तिः कृष्णगर्भंदधार ह । शतमन्वन्तरंयावज्ज्वलन्तीब्रह्मतेजसा ।४५
कृष्णप्राणाधिदेवी सा कृष्णप्राणाऽधिकप्रिया । कृष्णस्य सङ्गिनी शश्वत्कृष्णवक्षः स्थलस्थिता ।४६
शतमन्वन्तरान्तेचकालेऽतीतेतु सुन्दरी । सुषावडिम्भंस्वर्णाभं विश्वाधारालयंपरम् ।४७
दृष्ट्वा डिम्भं च सा देवी हृदयेन व्यदूयत । उत्ससर्ज च कोपेन ब्रह्माण्डगोलके जले ।४८
दृष्ट्वा कृष्णश्च तत्त्यागं हाहाकारं चकार ह । शशापदेवींदेवेशस्तत्क्षणं च यथोचितम् ।४९
यतोऽपत्यं त्वया त्यक्तं कोपशीले! च निष्ठुरे! । भव त्वमनपत्याऽपि चाऽद्यप्रभृति निश्चितम् ।५०
या यास्त्वदंशरूपाश्च भविष्यन्ति सुरस्त्रियः । अनपत्याश्च ताः सर्वास्त्वत्समा नित्ययौवनाः ।५१
एतस्मिन्नन्तरे देवीजिह्वाग्रात्सहसा ततः । आविर्बभूव कन्यैका शुक्लवर्णा मनोहरा ।५२
श्वेतवस्त्रपरीधाना वीणापुस्तकधारिणी । रत्नभूषणभूषाढ्या सर्वशास्त्राधिदेवता ।५३
अथ कालान्तरे सा च द्विधारूपा बभूव ह । वामार्धाङ्गाच्चकमलादक्षिणार्धाच्चराधिका ।५४
एतस्मिन्नन्तरे कृष्णो द्विधारूपो बभूव सः । दक्षिणार्धश्च द्विभुजोवामार्धश्चचतुर्भुजः ।५५
उवाच वाणीं कृष्णस्तां त्वमस्यकामिनीभव । अत्रैवमानिनीराधातवभद्रंभविष्यति ।५६
एवं लक्ष्मीं च प्रददौ तुष्टो नारायणाय च । स जगामचवैकुण्ठंताभ्यांसार्धंजगत्पतिः ।५७
अनपत्ये च ते द्वे च जाते राधांशसम्भवे । भूता नारायणाङ्गाच्च पार्षदाश्च चतुर्भुजाः ।५८
तेजसा वयसा रूपगुणाभ्यां च समा हरेः । बभूवुः कमलाङ्गाच्चदासीकोट्यश्चतत्समाः ।५९
अथ गोलोकनाथस्यलोम्नां विवरतोमुने! । भूताश्चासंख्यगोपाश्चवयसातेजसासमाः ।६०
रूपेण च गुणेनैव बलेन विक्रमेण च । प्राणतुल्यप्रियाः सर्वे बभूवुः पार्षदा विभोः ।६१
राधाऽङ्गलोमकूपेभ्यो बभूवुर्गोपकन्यकाः । राधातुल्याश्चताः सर्वाराधादास्यः प्रियम्वदाः ।६२
रत्नभूषणभूषाढ्याः शश्वत्सुस्थिरयौवनाः । अनपत्याश्चताः सर्वाः पुंसः शापेनसन्ततम् ।६३
एतस्मिन्नन्तरे विप्र! सहसा कृष्णदेवता । आविर्बभूवदुर्गा सा विष्णुमायासनातनी ।६४
देवी नारायणीशाना सर्वशक्तिस्वरूपिणी । बुद्ध्यधिष्ठात्री देवी सा कृष्णस्य परमात्मनः ।६५
देवीनां बीजरूपा च मूलप्रकृतिरीश्वरी । परिपूर्णतमा तेजः स्वरूपा त्रिगुणात्मिका ।६६
तप्तकाञ्चनवर्णाभा कोटिसूर्यसमप्रभा । ईषद्धास्यप्रसन्नास्या सहस्रभुजसंयुता ।६७
नानाशस्त्रास्त्रनिकरं बिभ्रती सा त्रिलोचना । वह्निशुद्धांशुकाधाना रत्नभूषणभूषिता ।६८

यस्याश्चांऽशांशकलया बभूवुः सर्वयोषितः। सर्वे विश्वस्थिता लोका मोहिताः स्युश्च मायया।६९
सवश्चर्यप्रदात्री च कामिनां गृहवासिनाम्। कृष्णभक्तिप्रदा या च वैष्णवानां च वैष्णवी।७०
मुमुक्षूणांमोक्षदात्रीसुखिनां सुखदायिनी। स्वर्गेषुस्वर्गलक्ष्मीश्च गृहलक्ष्मीर्गृहेषु च।७१
तपस्विषुतपस्याच श्रीरूपा तु नृपेषु च। या वह्नौ दाहिकारूपा प्रभारूपाच भास्करे।७२
शोभारूपा च चन्द्रे च सा पद्मेषु च शोभना। सर्वशक्तिस्वरूपायाश्रीकृष्णेपरमात्मनि ।७३
ययाचशक्तिमानात्माययाचशक्तिमञ्जगत्। ययाविनाजगत्सर्वंजीवन्मृतमिवस्थितम् ।७४
या च संसारवृक्षस्य बीजरूपा सनातनी। स्थितिरूपाबुद्धिरूपा फलरूपा च नारद!।७५
क्षुत्पिपासादयारूपा निद्रा तन्द्रा क्षमा मतिः। शान्तिलज्जातुष्टिपुष्टिभ्रान्तिकान्त्यादिरूपिणी।७६
साचसंस्तूय सर्वेशं तत्पुरः समुवासह। रत्नसिंहासनं तस्यै प्रददौ राधिकेश्वरः।७७
एतस्मिन्नन्तरे तत्र सस्त्रीकश्चचतुर्मुखः। पद्मनाभेर्नाभिपद्मान्निस्ससार महामुने!।७८
कमण्डलुधरः श्रीमांस्तपस्वी ज्ञानिनां वरः। चतुर्मुखैस्तं तुष्टाव प्रज्वलन्ब्रह्मतेजसा।७९
सा तदा सुन्दरी सृष्टा शतचन्द्रसमप्रभा। वह्निशुद्धांशुकाधाना रत्नभूषणभूषणा।८०
रत्नसिंहासने रम्ये संस्तूय सर्वकारणम्। उवास स्वामिना सार्धं कृष्णस्यपुरतोमुदा।८१
एतस्मिन्नन्तरे कृष्णो द्विधारूपो बभूव सः। वामाऽर्धाङ्गो महादेवो दक्षिणे गोपिकापतिः।८२
शुद्धस्फटिकसङ्काशः शतकोटिरविप्रभः। त्रिशूलपट्टिशधरो व्याघ्रचर्माम्बरो हरः।८३
तप्तकाञ्चनवर्णाभो जटाभारधरः परः। भस्मभूषितगात्रश्च सस्मितश्चन्द्रशेखरः।८४
दिगम्बरो नीलकण्ठः सर्पभूषणभूषितः। बिभ्रद्दक्षिणहस्तेनरत्नमालां सुसंस्कृताम्।८५
प्रजपन्पञ्चवक्त्रेण ब्रह्मज्योतिः सनातनम्। सत्यस्वरूपंश्रीकृष्णं परमात्मानमीश्वरम्।८६
कारणं कारणानाञ्च सर्वमङ्गलमङ्गलम्। जन्ममृत्युजराव्याधिशोकभीतिहरं परम्।८७
संस्तूय मृत्योर्मृत्युं तं यतो मृत्युञ्जयाभिधः। रत्नसिंहासने रम्ये समुवासहरे पुरः।८८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां नवमस्कन्धे पञ्चप्रकृतितद्भर्तृगणोत्पत्तिवर्णनंनाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

* तृतीयोऽध्यायः *

ब्रह्मविष्णुमहेश्वरादिदेवतोत्पत्तिवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अथ डिम्भो जले तिष्ठन्यावद्वैब्रह्मणो वयः। ततः सकालेसहसा द्विधाभूतो बभूव ह।१
तन्मध्ये शिशुरेकश्च शतकोटिरविप्रभः। क्षणं रोरूयमाणश्च स्तनान्धः पीडितः क्षुधा।२
पित्रामात्रापरित्यक्तोजलमध्येनिराश्रयः। ब्रह्माण्डासङ्ख्यनाथोयोददर्शोर्ध्वमनाथवत्।३
स्थूलात्स्थूलतमः सोऽपि नाम्ना देवो महाविराट्।
परमाणुर्यथा सूक्ष्मात्परः स्थूलात्तथाऽप्यसौ ।।४।।
तेजसाषोडशांशोऽयं कृष्णस्यपरमात्मनः। आधारः सर्वविश्वानांमहाविष्णुश्चप्राकृतः।५
प्रत्येकं लोमकूपेषुविश्वानिनिखिलानिच। अस्याऽपितेषांसंख्याचकृष्णोवक्तुंनहिक्षमः।६
सङ्ख्या चेद्रजसामस्ति विश्वानां न कदाचन। ब्रह्मविष्णुशिवादीनां तथा सङ्ख्या न विद्यते।७
प्रतिविश्वेषु सन्त्येवं ब्रह्मविष्णुशिवादयः। पातालाद् ब्रह्मलोकान्तं ब्रह्माण्डं परिकीर्तितम्।८
ततऊर्ध्वं च वैकुण्ठोब्रह्माण्डाद्बहिरेवसः। ततऊर्ध्वंचगोलोकःपञ्चाशत्कोटियोजनः।९
नित्यःसत्यः स्वरूपश्चयथाकृष्णस्तथाऽप्ययम्। सप्तद्वीपमितापृथ्वीसप्तसागरसंयुता ।१०
ऊनपञ्चाशदुपद्वीपाऽसङ्ख्यशैलवनान्विता। ऊर्ध्वंसप्तस्वर्गलोकाब्रह्मलोकसमन्विताः।११

पातालानि चसप्ताऽधश्चैवं ब्रह्माण्डमेव च। ऊर्ध्वं धरायाभूर्लोकोभुवर्लोकस्ततः परम्।१२
ततः परश्च स्वर्लोकोजनलोकस्तथा परः। ततः परस्तपोलोकस्सत्यलोकस्ततः परः।१३
ततः परं ब्रह्मलोकस्तप्तकाञ्चनसन्निभः। एवं सर्वं कृत्रिमं च बाह्याभ्यन्तरमेव च।१४
तद्विनाशे विनाशश्च सर्वेषामेव नारद!। जलबुद्बुदवत्सर्वं विश्वसङ्घमनित्यकम्।१५
नित्यौगोलोकवैकुण्ठौप्रोक्तौशश्वदकृत्रिमौ। प्रत्येकं लोमकूपेषुब्रह्माण्डंपरिनिश्चितम्।१६

एषां सङ्ख्यां न जानाति कृष्णोऽन्यस्याऽपि का कथा।
प्रत्येकं प्रतिब्रह्माण्डं ब्रह्मविष्णुशिवादयः ।।१७।।

तिस्रः कोट्यः सुराणां च सङ्ख्यासर्वत्रपुत्रक। दिगीशाश्चैवदिक्पालानक्षत्राणिग्रहादयः।१८
भुवि वर्णाश्च चत्वारोऽप्यधो नागाश्चराचराः। अथ कालेऽत्रसविराडूर्ध्वंदृष्ट्वापुनः पुनः।१९
डिम्भान्तरे च शून्यं च नद्वितीयञ्चकिञ्चन। चिन्तामवापक्षुद्युक्तो रुरोद च पुनः पुनः।२०
ज्ञानं प्राप्य तदा दध्यौ कृष्णं परमपूरुषम्। ततो ददर्श तत्रैव ब्रह्मज्योतिः सनातनम्।२१
नवीनजलदश्यामं द्विभुजं पीतवाससम्। सस्मितं मुरलीहस्तं भक्तानुग्रहकातरम्।२२
जहासबालकस्तुष्टोदृष्ट्वाजनकमीश्वरम् । वयं तदा ददौ तस्मै वरेशः समयोचितम्।२३
मत्समोज्ञानयुक्तश्चक्षुत्पिपासादिवर्जितः । ब्रह्माण्डासङ्ख्यनिलयोभववत्स! लयावधि।२४
निष्कामो निर्भयश्चैवसर्वेषां वरदो भव। जरामृत्युरोगशोकपीडादिवर्जितो भव।२५
इत्युक्त्वा तस्य कर्णे स महामन्त्रं षडक्षरम्। त्रिः कृत्वश्च प्रजजाप वेदाङ्गप्रवरं परम्।२६
प्रणवादि चतुर्थ्यन्तं कृष्ण इत्यक्षरद्वयम्। वह्निजायान्तमिष्टं च सर्वविघ्नहरं परम्।२७
मन्त्रं दत्त्वा तदाहारं कल्पयामास वै विभुः। श्रूयतां तद्ब्रह्मपुत्र! निबोधकथयामिते।२८
प्रतिविश्वंयन्नैवेद्यंददातिवैष्णवोजनः । तत्षोडशांशोविषयिणोविष्णोः पञ्चदशास्यवै।२९
निर्गुणस्याऽऽत्मनश्चैवपरिपूर्णतमस्य च। नैवेद्येचैवकृष्णस्य नहिकिञ्चित्प्रयोजनम्।३०
यद्यद्ददाति नैवेद्यं तस्मै देवाय यो जनः। स च खादतितत्सर्वंलक्ष्मीनाथोविराट्तथा।३१
तं च मन्त्रवरं दत्त्वा तमुवाच पुनर्विभुः। वरमन्यं किमिष्टं ते तन्मे ब्रूहि ददामि च।३२
कृष्णस्य वचनं श्रुत्वातमुवाचविराड् विभुः। कृष्णंतंबालकस्तावद्वचनंसमयोचितम् ।३३

बालक उवाच

वरो मे त्वत्पदाम्भोजे भक्तिर्भवतु निश्चला। सततं यावदायुर्मे क्षणं वा सुचिरञ्चवा।३४
त्वद्भक्तियुक्तलोकेऽस्मिञ्जीवन्मुक्तश्चसन्ततम्। त्वद्भक्तिहीनो मूर्खश्च जीवन्नपि मृतो हि सः।३५
किं तज्जपेन तपसा यज्ञेन पूजनेन च। व्रतेन चोपवासेन पुण्येन तीर्थसेवया।३६
कृष्णभक्तिविहीनस्यमूर्खस्यजीवनंवृथा । येनाऽऽत्मना जीवितश्च तमेव न हिमन्यते।३७
यावदात्मा शरीरेऽस्ति तावत्स शक्तिसंयुतः। पश्चाद्यान्ति गते तस्मिन्स्वतन्त्रा सर्वशक्तयः।३८
स च त्वञ्च महाभाग सर्वात्माप्रकृते परः। स्वेच्छामयश्चसर्वाद्योब्रह्मज्योतिः सनातनः।३९
इत्युक्त्वा बालकस्तत्रविरराम च नारद!। उवाचकृष्णः प्रत्युक्तिंमधुरांश्रुतिसुन्दरीम्।४०

श्रीकृष्ण उवाच

सुचिरं सुस्थिरं तिष्ठ यथाऽहं त्वं तथा भव। ब्रह्मणोऽसंख्यपाते च पातस्ते न भविष्यति।४१
अंशेन प्रतिब्रह्माण्डे त्वञ्चक्षुद्रविराड्भव। त्वन्नाभिपद्माद्ब्रह्माचविश्वस्त्रभविष्यति।४२
ललाटे ब्रह्मणश्चैव रुद्राश्चैकादशैव ते। शिवांशेन भविष्यन्ति सृष्टिसंहरणाय वै।४३
कालाग्निरुद्रस्तेष्वेको विश्वसंहारकारकः। पाता विष्णुश्चविषयीरुद्रांशेनभविष्यति।४४
मद्भक्तियुक्तः सततं भविष्यसि वरेण मे। ध्यानेनकमनीयंमांनित्यंद्रक्ष्यसिनिश्चितम्।४५

मातरं कमनीयां च मम वक्षःस्थलस्थिताम्। यामि लोकं तिष्ठ वत्सेत्युक्त्वा सोऽन्तरधीयत।४६
गत्वा स्वलोकं ब्रह्माणं शङ्करं समुवाच ह। स्रष्टारं स्रष्टुमीशं च संहर्तुं चैवतत्क्षणम्।४७

श्रीभगवानुवाच

सृष्टिं स्रष्टुं गच्छ वत्स! नाभिपद्मोद्भवोभव। महाविराड्लोमकूपेक्षुद्रस्य चविधेशृणु।४८
गच्छ वत्स महादेव! ब्रह्मभालोद्भवो भव। अंशेन च महाभाग स्वयं च सुचिरं तप।४९
इत्युक्त्वाजगतां नाथो विरराम विधेः सुत!। जगाम ब्रह्मा तंनत्वाशिवश्चशिवदायकः।५०
महाविराड्लोमकूपे ब्रह्माण्डगोलकेजले। बभूव च विराड् क्षुद्रोविराडंशेनसाम्प्रतम्।५१
श्यामो युवा पीतवासाः शयानो जलतल्पके। ईषद्धास्यः प्रसन्नास्यो विश्वव्यापी जनार्दनः।५२
तन्नाभिकमले ब्रह्मा बभूव कमलोद्भवः। सम्भूय पद्मदण्डे च बभ्राम युगलक्षकम्।५३
नाऽन्तं जगाम दण्डस्यपद्मनालस्य पद्मजः। नाभिजस्यचपद्मस्यचिन्तामापपितातव।५४
स्वस्थानं पुनरागम्य दध्यौ कृष्णपदाम्बुजम्। ततो ददर्श क्षुद्रं तंध्यानेनदिव्यचक्षुषा।५५
शयानं जलतल्पे च ब्रह्माण्डगोलकाप्लुते। यल्लोमकूपे ब्रह्माण्डं तं च तत्परमीश्वरम्।५६
श्रीकृष्णंचाऽपि गोलोकं गोपगोपीसमन्वितम्। तंसंस्तूयवरंप्रापततः सृष्टिंचकारसः।५७
बभूवुर्ब्रह्मणः पुत्रा मानसाः सनकादयः। ततोरुद्रकलाश्चाऽपि शिवस्यैकादश स्मृताः।५८
बभूव पाता विष्णुश्च क्षुद्रस्य वामपार्श्वतः। चतुर्भुजश्चभगवान्श्वेतद्वीपेसचाऽवसत्।५९
क्षुद्रस्य नाभिपद्मे च ब्रह्मा विश्वं ससर्जह। स्वर्गं मर्त्यं च पातालं त्रिलोकीं सचराचरम्।६०
एवं सर्व लोमकूपे विश्वं प्रत्येकमेव च। प्रतिविश्वे क्षुद्रविराड् ब्रह्मविष्णुशिवादयः।६१
इत्येवं कथितंब्रह्मन्कृष्णसङ्कीर्तनंशुभम्। सुखदंमोक्षदं ब्रह्मन! किंभूयः श्रोतुमिच्छसि।६२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे ब्रह्मविष्णुमहेश्वरादिदेवतोत्पत्तिवर्णनंनाम तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

सरस्वतीस्तोत्रपूजाकवचादिवर्णनम्

नारद उवाच

श्रुतं सर्वं मया पूर्वं त्वत्प्रसादात्सुधोपमम्। अधुना प्रकृतीनां च व्यस्तंवर्णनपूजनम्।१
कस्याः पूजा कृता केन कथं मर्त्ये प्रचारिता। केनवापूजिताकावाकेनकावास्तुताप्रभो।२
तासां स्तोत्रं च ध्यानं च प्रभावं चरितं शुभम्। काभिः केभ्यो वरो दत्तस्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि।३

श्रीनारायण उवाच

गणेशजननी दुर्गाराधालक्ष्मीः सरस्वती। सावित्रीचसृष्टिविधौप्रकृतिः पञ्चधास्मृता।४
आसां पूजा प्रसिद्धा चप्रभावः परमाद्भुतः। सुधोपमं च चरितं सर्वमङ्गलकारणम्।५
प्रकृत्यंशाः कला याश्च तासांचचरितंशुभम्। सर्वंवक्ष्यामितेब्रह्मन्सावधानोनिशामय।६
काली वसुन्धरा गङ्गाषष्ठीमङ्गलचण्डिका। तुलसीमनसानिद्रास्वधास्वाहाचदक्षिणा।७
संक्षिप्तमासां चरितं पुण्यदं श्रुतिसुन्दरम्। जीवकर्मविपाकञ्चतच्चवक्ष्यामिसुन्दरम्।८
दुर्गायाश्चैव राधाया विस्तीर्णं चरितं महत्। तद्वत्पश्चात्प्रवक्ष्यामिसंक्षेपक्रमतः शृणु।९
आदौसरस्वतीपूजाश्रीकृष्णेनविनिर्मिता। यत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठ! मूर्खोभवतिपण्डितः।१०
आविर्भूता यथा देवी वक्त्रतः कृष्णयोषितः। इयेष कृष्णंकामेनकामुकीकामरूपिणी।११
स च विज्ञाय तद्भावं सर्वज्ञः सर्वमातरम्। तामुवाच हितं सत्यं परिणामे सुखावहम्।१२

श्रीकृष्ण उवाच

भज नारायणं साध्वि! मदंशं च चतुर्भुजम्। युवानं सुन्दरं सर्वगुणयुक्तं च मत्समम्॥१३
कामज्ञं कामिनीनां च तासां च कामपूरकम्। कोटिकन्दर्पलावण्यलीलालङ्कृतमीश्वरम्॥१४
कान्ते! कान्तं च मां कृत्वा यदि स्थातुमिहेच्छसि।
त्वत्तो बलवती राधा न भद्रं ते भविष्यति॥१५॥
योतस्माद्बलवान्वाणि! ततोऽन्यंरक्षितुंक्षमः। कथंपरान्साधयतियदिस्वयमनीश्वरः ।१६
सर्वेशः सर्वशास्ताऽहं राधां बाधितुमक्षमः। तेजसा मत्समा सा च रूपेणाचगुणेनच।१७
प्राणाधिष्ठातृदेवी सा प्राणांस्त्यक्तुं च कः क्षमः।
प्राणतोऽपि प्रियःपुत्रः केषां वाऽस्ति च कश्चन॥१८॥
त्वं भद्रे! गच्छ वैकुण्ठं तव भद्रंभविष्यति। पतिंतमीश्वरंकृत्वामोदस्वसुचिरंसुखम् ।१९
लोभमोहकामक्रोधमानहिंसाविवर्जिता। तेजसा त्वत्समा लक्ष्मी रूपेण च गुणेन च।२०
तया सार्धं तव प्रीत्या शश्वत्कालः प्रयास्यति। गौरवंचहरिस्तुल्यंकरिष्यतिद्वयोरपि ।२१
प्रतिविश्वेषुतां पूजांमहतीं गौरवान्विताम्। माघस्यशुक्लपञ्चम्यांविद्यारम्भेचसुन्दरि!।२२
मानवा मनवो देवा मुनीन्द्राश्च मुमुक्षवः। वसवो योगिनः सिद्धानागागन्धर्वराक्षसाः।२३
मद्वरेण करिष्यन्ति कल्पेकल्पे लयावधि। भक्तियुक्ताश्च दत्त्वावैचोपचाराणि षोडश।२४
कण्वशाखोक्तविधिना ध्यानेनस्तवनेन च। जितेन्द्रियाः संयताश्चघटेचपुस्तकेऽपिच।२५
कृत्वा सुवर्णगुटिकां गन्धचन्दनचर्चिताम्। कवचं ते ग्रहीष्यन्ति कण्ठेवादक्षिणेभुजे।२६
पठिष्यन्ति च विद्वांसः पूजाकालेचपूजिते। इत्युक्त्वापूजयामासतांदेवींसर्वपूजिताम्।२७
ततस्तत्पूजनं चक्रुर्ब्रह्मविष्णुशिवादयः। अनन्तश्चापि धर्मश्च मुनींद्राः सनकादयः।२८
सर्वे देवाश्च मुनयो नृपाश्च मान वादयः। बभूव पूजिता नित्या सर्वलोकैः सरस्वती।२९

नारद उवाच

पूजाविधानं कवचं ध्यानंचाऽपि निरन्तरम्। पूजोपयुक्तं नैवेद्यंपुष्पं चचन्दनादिकम्।३०
वद वेदविदांश्रेष्ठ! श्रोतुं कौतूहलं मम। वर्तते हृदये शश्वत्किमिदं श्रुतिसुन्दरम्।३१

श्रीनारायण उवाच

शृणु नारद! वक्ष्यामि कण्वशाखोक्तपद्धतिम्। जगन्मातुः सरस्वत्याः पूजाविधिसमन्विताम्।३२
माघस्यशुक्लपञ्चम्यांविद्यारम्भेदिनेऽपि च। पूर्वेऽह्निसमयंकृत्वातत्राऽह्निसंयतः शुचिः।३३
स्नात्वा नित्यक्रियाः कृत्वा घटं संस्थाप्य भक्तितः।
स्वशाखोक्तविधानेन तान्त्रिकेणाऽथवा पुनः॥३४॥
गणेशम्पूर्वमभ्यर्च्य ततोऽभीष्टां प्रपूजयेत्। ध्यानेनवक्ष्यमाणेनध्यात्वाऽऽवाह्यघटेध्रुवम्।३५
ध्यात्वा पुनः षोडशोपचारेण पूजयेद्व्रती। पूजोपयुक्तनैवेद्यं यच्च वेदे निरूपितम्।३६
वक्ष्यामि सौम्य! तत्किञ्चिद्यथाधीतं यथागमम्।
नवनीतं दधि क्षीरं लाजांश्च तिललड्डुकम्॥३७॥
इक्षुमिक्षुरसं शुक्लवर्णं पक्वगुडं मधु। स्वस्तिकं शर्करा शुक्लधान्यस्याक्षतमक्षतम्।३८
अस्विन्नशुक्लधान्यस्य पृथुकं शुक्लमोदकम्। घृतसैन्धवसंयुक्तं हविष्यान्नं यथोदितम्।३९
यवगोधूमचूर्णानांपिष्टकंघृतसंयुतम् । पिष्टकंस्वस्तिकस्याऽपिपक्वरम्भाफलस्यच।४०
परमान्नं च सघृतं मिष्टान्नं च सुधोपमम्। नारिकेलं तदुदकं कसेरुं मूलमार्द्रकम्।४१
पक्वरम्भाफलं चारु श्रीफलं बदरीफलम्। कालदेशोद्भवं चारुफलं शुक्लं च संस्कृतम्।४२
सुगन्धशुक्लपुष्पं च सुगन्धं शुक्लचन्दनम्। नवीनं शुक्लवस्त्रं च शङ्खञ्च सुन्दरं मुने!।४३

माल्यंच शुक्लपुष्पाणांशुक्लहारंचभूषणम् । यादृशं चश्रुतौध्यानंप्रशस्यंश्रुतिसुन्दरम् ।४४
तन्निबोध महाभाग! भ्रमभञ्जनकारणम् । सरस्वतीं शुक्लवर्णांसस्मितांसुमनोहराम् ।४५
कोटिचन्द्रप्रभामुष्टपुष्टश्रीयुक्तविग्रहाम् । वह्निशुद्धांशुकाधानां वीणापुस्तकधारिणीम् ।४६
रत्नसारेन्द्रनिर्माणनवभूषणभूषिताम् । सुपूजितां सुरगणैर्ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ।४७
वन्दे भक्त्या वन्दितां च मुनीन्द्रमनुमानवैः । एवं ध्यात्वाचमूलेनसर्वंदत्त्वाविचक्षणः ।४८
संस्तूय कवचं धृत्वा प्रणमेद्दण्डवद्भुवि । येषां चेयमिष्टदेवी तेषां नित्या क्रियामुने ।४९
विद्यारम्भेच वर्षान्तेसर्वेषां पञ्चमीदिने । सर्वोपयुक्तो मूलञ्च वैदिकाष्टाक्षरः परः ।५०
येषां येनोपदेशो वा तेषां स मूल एव च । सरस्वतीचतुर्थ्यन्तं वह्निजायान्तमेव च ।५१
लक्ष्मीमायादिकं चैव मन्त्रोऽयंकल्पपादपः । पुरानारायणश्चेमंवाल्मीकायकृपानिधिः ।५२
प्रददौ जाह्नवीतीरे पुण्यक्षेत्रे च भारते । भृगुर्ददौ च शुक्राय पुष्करे सूर्यपर्वणि ।५३
चन्द्रपर्वणि मारीचो ददौ वाक्पतये मुदा । भृगोश्चैव ददौ तुष्टो ब्रह्मा बदरिकाश्रमे ।५४
आस्तिकस्य जरत्कारुर्ददौक्षीरोदसन्निधौ । विभाण्डकोददौमेरावृष्यशृङ्गाय धीमते ।५५
शिवः कणादमुनये गौतमाय ददौ मुदा । सूर्यश्च याज्ञवल्क्याय तथा कात्यायनायच ।५६
शेषः पाणिनये चैव भारद्वाजाय धीमते । ददौ शाकटायनाय सुतले बलिसंसदि ।५७
चतुर्लक्षजपेनैव मन्त्रसिद्धोभवेन्नृणाम् । यदिस्यान्मन्त्रसिद्धोहिबृहस्पतिसमोभवेत् ।५८
कवचं शृणु विप्रेन्द्र! यद्दत्तं ब्रह्मणा पुरा । विश्वस्रष्ट्वा विश्वजयं भृगवे गन्धमादने ।५९

भृगुरुवाच

ब्रह्मन्ब्रह्मविदां श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानविशारदः! सर्वज्ञ! सर्वजनक! सर्वेश! सर्वपूजित! ।६०
सरस्वत्याश्च कवचं ब्रूहि विश्वजयं प्रभो! । अयातयामं मन्त्राणां समूहसंयुतं परम् ।६१

ब्रह्मोवाच

शृणुवत्स प्रवक्ष्यामिकवचं सर्वकामदम् । श्रुतिसारं श्रुतिसुखं श्रुत्युक्तंश्रुतिपूजितम् ।६२
उक्तं कृष्णेन गोलोके मह्यं वृन्दावने वने । रासेश्वरेण विभुना रासे वै रासमण्डले ।६३
अतीव गोपनीयंच कल्पवृक्षसमं परम् । अश्रुताद्भुतमन्त्राणां समूहैश्च समन्वितम् ।६४
यद्धृत्वाभगवाञ्छुक्रः सर्वदैत्येषु पूजितः । यद्धृत्वापठनाद्ब्रह्मन्बुद्धिमांश्चबृहस्पतिः ।६५
पठनाद्धारणाद्वाग्मीकवीन्द्रोवाल्मिकोमुनिः । स्वायम्भुवोमनुश्चैवयद्धृत्वासर्वपूजितः ।६६
कणादो गौतमः कण्वः पाणिनिःशाकटायनः । ग्रन्थं चकार यद्धृत्वा दक्षः कात्यायनः स्वयम् ।६७
धृत्वा वेदविभागञ्च पुराणान्यखिलानिच । चकारलीलामात्रेणकृष्णद्वैपायनः स्वयम् ।६८
शातातपश्च सम्वर्तो वशिष्ठश्च पराशरः । यद्धृत्वापठनाद् ग्रन्थं याज्ञवल्क्यश्चकारसः ।६९
ऋष्यशृङ्गो भरद्वाजश्चास्तिको देवलस्तथा । जैगीषव्योययातिश्चधृत्वासर्वत्रपूजिताः ।७०
कवचस्यास्यविप्रेन्द्र ऋषिरेव प्रजापतिः । स्वयं छन्दश्च बृहतीदेवताशारदाऽम्बिका ।७१
सर्वतत्त्वपरिज्ञानसर्वार्थसाधनेषु च । कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः ।७२
श्रींह्रींसरस्वत्यैस्वाहाशिरोमेपातुसर्वतः । श्रीं वाग्देवतायैस्वाहाभालंमे सर्वदाऽवतु ।७३

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रे पातु निरन्तरम् ।
ॐ श्रीं ह्रीं भगवत्यै सरस्वत्यै स्वाहा नेत्रयुग्मं सदाऽवतु ॥७४॥
ॐ ऐं ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासां मे सर्वदाऽवतु ।
ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा चोष्ठं सदाऽवतु ॥७५॥
ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मयै स्वाहेति दन्तपङ्क्तिं सदाऽवतु ।
ऐमित्येकाक्षरो मन्त्रो मम कण्ठं सदाऽवतु ॥७६॥

ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवां स्कन्धौ मे श्रीं सदाऽवतु ।
ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा वक्षः सदाऽवतु ।।७७।।
ॐ ह्रीं विद्याधिस्वरूपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाम् ।
ॐ ह्रीं क्लीं वाण्यै स्वाहेति मम हस्तौ सदाऽवतु ।।७८।।

ॐ सर्ववर्णात्मिकायै पादयुग्मं सदाऽवतु। ॐ वागधिष्ठातृदेव्यैस्वाहा मां सर्वदाऽवतु।७६
ॐसर्वकण्ठवासिन्यै स्वाहा प्राच्यांसदाऽवतु। ॐ सर्वजिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहाऽग्निदिशि रक्षतु।८०
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा। सततं मन्त्रराजोऽयं दक्षिणे मां सदाऽवतु।८१
ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु। ॐ ऐं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहा मां वारुणेऽवतु।८२

ॐ सर्वाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदाऽवतु ।
ॐ ऐं श्रीं क्लीं गद्यवासिन्यै स्वाहा मामुत्तरेऽवतु ।।८३।।

ऐं सर्वशास्त्रवासिन्यै स्वाहैशान्यां सदाऽवतु। ॐ ह्रीं सर्वपूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदाऽवतु।८४
ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहाऽधो मां सदाऽवतु। ॐ ग्रन्थबीजस्वरूपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु।८५
इति ते कथितं विप्र! ब्रह्ममन्त्रौघविग्रहम्। इदं विश्वजयं नामकवचं ब्रह्मरूपकम्।८६
पुरा श्रुतं कर्मवक्त्रात्पर्वते गन्धमादने। तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित्।८७
गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालङ्कारचन्दनैः। प्रणम्य दण्डवद्भूमौ कवचं धारयेत्सुधीः।८८
पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धं तु कवचं भवेत्। यदि स्यात्सिद्धकवचोबृहस्पतिसमो भवेत्।८६
महावाग्मी कवीन्द्रश्च त्रैलोक्यविजयी भवेत्। शक्नोति सर्वं जेतुञ्च कवचस्य प्रसादतः।६०
इदं च कण्वशाखोक्तं कवचं कथितं मुने!। स्तोत्रपूजाविधानंचध्यानं च वन्दनंशृणु।६१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे सरस्वतीस्तोत्रपूजाकवचादिवर्णनंनामचतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

* पञ्चमोऽध्यायः *

याज्ञवल्क्यकृतसरस्वतीस्तोत्रवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

वाग्वदेवतायाः स्तवनं श्रूयतां सर्वकामदम्। महामुनिर्याज्ञवल्क्योयेनतुष्टाव तां पुरा।१
गुरुशापाच्च स मुनिर्हतविद्यो बभूव ह। तदाऽऽजगाम दुःखार्तोरविस्थानंसुपुण्यदम्।२
सम्प्राप्य तपसा सूर्यं लोलार्के दृष्टिगोचरे। तुष्टाव सूर्यं शोकेन रुरोद च मुहुर्मुहुः।३
सूर्यस्तं पाठयामास वेदं वेदाङ्गमीश्वरः। उवाच स्तौहि वाग्देवींभक्त्याचस्मृतिहेतवे।४

तमित्युक्त्वा दीननाथोऽप्यन्तर्धानञ्चकार सः।
मुनिः स्नात्वा च तुष्टाव भक्तिनम्रात्मकन्धरः।।५।।

याज्ञवल्क्य उवाच

कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम्। गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं चदुःखितम्।६

ज्ञानं देहि स्मृतिं विद्या शक्तिं शिष्यप्रबोधिनीम् ।
ग्रन्थकर्तृत्वशक्तिं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितम् ।।७।।
प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभाम् ।
लुप्तं सर्वं दैवयोगान्नवीभूतं पुनः कुरु ।।८।।

यथाऽङ्कुरं भस्मनि च करोति देवता पुनः। ब्रह्मस्वरूपापरमाज्योतीरूपासनातनी।६
सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमोनमः। विसर्गबिन्दुमात्रासुयदधिष्ठानमेवच ।१०

यदधिष्ठात्री या देवी तस्यै नीत्यै नमोनमः। व्याख्यास्वरूपा सा देवी व्याख्याधिष्ठातृरूपिणी।११
ययाविनाप्रसङ्ख्यावान्सङ्ख्यांकर्तुंनशक्यते। कालसंख्यास्वरूपायातस्यैदेवोन्नमोनमः।१२
भ्रमसिद्धान्तरूपायातस्यैदेव्यै नमोनमः। स्मृतिशक्तिज्ञानशक्तिबुद्धिशक्तिस्वरूपिणी।१३
प्रतिभाकल्पनाशक्तिर्या चतस्यैनमोनमः। सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै।१४
बभूव मूकवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः। तदाऽऽजगामभगवानात्माश्रीकृष्णईश्वरः।१५
उवाच स च तांस्तौहिवाणीमिष्टांप्रजापते!। सचतुष्टावतांब्रह्माचाज्ञयापरमात्मनः।१६
चकार तत्प्रसादेन तदा सिद्धान्तमुत्तमम्। यदाप्यनन्तं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुन्धरा।१७
बभूव मूकवत्सोऽपिसिद्धान्तंकर्तुमक्षमः। तदा तां सचतुष्टावसन्त्रस्तः कश्यपाज्ञया।१८
ततश्चकार सिद्धान्तं निर्मलं भ्रमभञ्जनम्। व्यासः पुराणसूत्रञ्च पप्रच्छ वाल्मिकिं यदा।१९
मौनीभूतश्च सस्मार तामेव जगदम्बिकाम्। तदा चकार सिद्धान्तं तद्वरेणमुनीश्वरः।२०
सम्प्राप्य निर्मलं ज्ञानं भ्रमान्ध्यध्वंसदीपकम्। पुराणसूत्रंश्रुत्वाचव्यासः कृष्णकलोद्भवः।२१
तां शिवां वेद दध्यौ च शतवर्षंचपुष्करे। तदात्वत्तो वरं प्राप्यसत्कवीन्द्रो बभूवह।२२
तदावेदविभागञ्च पुराणञ्च चकार सः। यदा महेन्द्रः पप्रच्छतत्त्वज्ञानं सदाशिवम्।२३
क्षणंतामेव संचिन्त्यतस्मैज्ञानं ददौविभुः। पप्रच्छशब्दशास्त्रञ्चमहेन्द्रश्चबृहस्पतिम्।२४
दिव्यं वर्षसहस्रं चसत्वां दध्यौ च पुष्करे। तदा त्वत्तोवरंप्राप्यदिव्यवर्षसहस्रकम्।२५
उवाचशब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरम्। अध्यापिताश्च ये शिष्या यैरधीतंमुनीश्वरैः।२६
ते चतां परिसञ्चिन्त्य प्रवर्तन्ते सुरेश्वरीम्। त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीन्द्रैर्मनुमानवैः।२७
दैत्येन्द्रैश्च सुरैश्चापिब्रह्मविष्णुशिवादिभिः। जडीभूतसहस्रास्यः पञ्चवक्त्रश्चतुर्मुखः।२८
यां स्तोतुं किमहं स्तौमि तामेकास्येन मानवः। इत्युक्त्वा याज्ञवल्क्यश्च भक्तिनम्रात्मकन्धरः।२९
प्रणनाम निराहारो रुरोद च मुहुर्मुहुः। ज्योतिरूपा महामाया तेन दृष्टाऽप्युवाचतम्।३०
सुकवीन्द्रोभवेत्युक्त्वावैकुण्ठञ्चजगाम ह। याज्ञवल्क्यकृतं वाणीस्तोत्रमेतत्तुयः पठेत्।३१
स कवीन्द्रो महावाग्मी बृहस्पतिसमोभवेत्। महामूर्खश्च दुर्बुद्धिर्वर्षमेकं यदापठेत्।३२
स पण्डितश्च मेधावी सुकवीन्द्रो भवेद् ध्रुवम्।। ३३।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे याज्ञवल्क्यकृतंसरस्वतीस्तोत्रंनाम पञ्चमोऽध्यायः।। ५।।

षष्ठोऽध्यायः

लक्ष्मीगङ्गासरस्वतीनांभूलोकावतारवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

सरस्वती तु वैकुण्ठे स्वयं नारायणान्तिके। गङ्गाशापेनकलहात्कलया भारतेसरित्।१
पुण्यदा पुण्यरूपाच पुण्यतीर्थस्वरूपिणी। पुण्यवद्भिर्निषेव्या चस्थितिः पुण्यवतांमुने।२
तपस्विनां तपोरूपा तपसः फलरूपिणी। कृतपापेध्मदाहाय ज्वलदग्निस्वरूपिणी।३
ज्ञानात्सरस्वतीतोयेमृता ये मानवा भुवि। तेषांस्थितिश्चवैकुण्ठेसुचिरं हरिसंसदि।४
भारतेकृतपापश्च स्नात्वातत्र च लीलया। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकेवसेच्चिरम्।५
चातुर्मास्यांपौर्णमास्यामक्षयायां दिनक्षये। व्यतीपाते च ग्रहणेऽन्यस्मिन्पुण्यदिनेऽपि च।६
अनुषङ्गेण यः स्नातो हेतुनाऽश्रद्धयाऽपिवा। सारूप्यं लभते नूनं वैकुण्ठेस हरेरपि।७
सरस्वतीमनुं तत्र मासमेकं च यो जपेत्। महामूर्खः कवीन्द्रश्च स भवेन्नाऽत्रसंशयः।८

नित्यं सरस्वतीतोये यः स्नायान्मुण्डयन्नरः। न गर्भवासं कुरुते पुनरेव स मानवः।९
इत्येवं कथितं किञ्चिद्भारतीगुणकीर्तनम्। सुखदं कामदंसारं भूयः किंश्रोतुमिच्छसि।१०

सूत उवाच

नारायणवचः श्रुत्वा नारदो मुनिसत्तमः। पुनः पप्रच्छ सन्देहमिमं शौनक! सत्वरम्।११

नारद उवाच

कथं सरस्वती देवी गङ्गाशापेन भारते। कलया कलहेनैव बभूव पुण्यदा सरित्।१२
श्रवणे श्रुतिसाराणां वर्धते कौतुकं मम। कथाऽमृते न मे तृप्तिःकेन श्रेयसि तृप्यते।१३
कथं शशाप सा गङ्गा पूजितां तां सरस्वतीम्। सा तु सत्त्वस्वरूपा या पुण्यदा शुभदा सदा।१४
तेजस्विनोर्द्वयोर्वादकारणं श्रुतिसुन्दरम्। सुदुर्लभं पुराणेषु तन्मे व्याख्यातुमर्हसि।१५

श्रीनारायण उवाच

शृणु नारद! वक्ष्यामि कथामेतां पुरातनीम्। यस्याःश्रवणमात्रेणसर्वपापात्प्रमुच्यते ।१६
लक्ष्मीः सरस्वती गङ्गा तिस्रो भार्या हरेरपि। प्रेम्णा समास्तास्तिष्ठन्ति सततं हरिसन्निधौ।१७
चकार सैकदागङ्गाविष्णोर्मुखनिरीक्षणम्। सस्मिताच सकामा च सकटाक्षंपुनः पुनः।१८
विभुर्जहास तद्वक्त्रं निरीक्ष्य चक्षणं तदा। क्षमां चकार तद्दृष्ट्वा लक्ष्मीर्नैवसरस्वती।१९
बोधयामास पद्मातां सत्त्वरूपा च सस्मिता। क्रोधाविष्टा च सा वाणी न च शान्ता बभूव ह।२०
उवाच वाणी भर्तारं रक्तास्या रक्तलोचना। कम्पिताकामवेगेन शश्वत्प्रस्फुरिताधरा।२१

सरस्वत्युवाच

सर्वत्र समताबुद्धिः सद्भर्तुः कामिनीम्प्रति। धर्मिष्ठस्य वरिष्ठस्यविपरीता खलस्यच।२२
ज्ञातं सौभाग्यमधिकंगङ्गायांते गदाधर। कमलायाञ्चतत्तुल्यं न च किञ्चिन्मयिप्रभो।२३
गङ्गायाः पद्मयासार्धंप्रीतिश्चाऽस्तिसुसम्मता। क्षमाञ्चकार तेनेदं विपरीतंहरिप्रिया।२४
किंजीवनेनमेऽत्रैवदुर्भगायाश्चसाम्प्रतम् । निष्फलं जीवनन्तस्या या पत्युः प्रेमवञ्चिता।२५
त्वां सर्वे सत्त्वरूपञ्च ये वदन्तिमनीषिणः। तेचमूर्खा न वेदज्ञा नजानन्ति मतिं तव।२६
सरस्वतीवचः श्रुत्वादृष्ट्वा तांकोपसंयुताम्। मनसाचसमालोच्यसजगामबहिः सभाम्।२७
गते नारायणे गङ्गामुवाच निर्भयं रुषा। वागधिष्ठातृदेवी सा वाक्यं श्रवणदुष्करम्।२८

हे निर्लज्जे! हे सकामे! स्वामिगर्वं करोषि किम्।
अधिकं स्वामिसौभाग्यं विज्ञापयितुमिच्छसि।।२९।।

मानंचूर्णंकरिष्यामितवाऽद्यहरिसन्निधौ । किं करिष्यति ते कान्तोममैवंकान्तवल्लभे।३०
इत्येवमुक्त्वा गङ्गायाः केशं ग्रहीतुमुद्यता। वारयामास तां पद्मा मध्यदेशंसमाश्रिता।३१
शशाप वाणी तां पद्मां महाबलवती सती। वृक्षरूपा सरिद्रूपा भविष्यसिनसंशयः।३२
विपरीतं यतो दृष्टा किंचन्नोवक्तुमर्हसि। सन्तिष्ठति सभामध्येयथावृक्षोयथासरित्।३३
शापं श्रुत्वा तु सा देवी न शशाप चुकोप ह। तत्रैव दुःखिता तस्थौ वाणी धृत्वा करेण च।३४
अत्युन्नतां तुतांदृष्ट्वाकोपप्रस्फुरिताधराम्। उवाच गङ्गा तां देवींपद्मांचारक्तलोचनाम्।३५

श्रीगङ्गोवाच

त्वमुत्सृजमहोग्राञ्चचपद्मेकिं मेकरिष्यति। दुःशीलामुखरानष्टानित्यंवाचालरूपिणी।३६
वागधिष्ठात्री देवीयंसततंकलहप्रिया। यावती योग्यता चाऽस्या यावतीशक्तिरेव।३७
तथा करोतु वादञ्च मया सार्धंचदुर्मुखी। स्वबलं यन्मम बलं विज्ञापयितुमिच्छति।३८

जानन्तुसर्वे ह्युभयोः प्रभावंविक्रमंसति। इत्येवमुक्त्वा सा देवी वाण्यैशापंददाविति।३६

सरित्स्वरूपा भवतु सा या त्वां (तां) च शशाप ह।

अधोमर्त्ये सा प्रयातु सन्ति यत्रैव पापिनः ।।४०।।

कलौ तेषाञ्चपापानिग्रहीष्यन्तिन संशयः। इत्येवं वचनं श्रुत्वा तां शशापसरस्वती।४१

त्वमेव यास्यसि महीं पापिपापं लभिष्यसि। एकस्मिन्नन्तरे तत्र भगवानाजगामह।४२

चतुर्भुजश्चतुर्भिश्च पार्षदैश्च चतुर्भुजैः। सरस्वतीं करे धृत्वा वासयामास वक्षसि।४३

बोधयामास सर्वज्ञः सर्वज्ञानं पुरातनम्। श्रुत्वा रहस्यं तासाञ्च शापस्य कलहस्य च।४४

उवाच दुःखितास्ताश्च वाचं सामयिकींविभुः।

श्रीभगवानुवाच

लक्ष्मि! त्वं कलया गच्छ धर्मध्वजगृहं शुभे!।।४५।।

अयोनिसम्भवा भूमौतस्यकन्याभविष्यसि। तत्रैव दैवदोषेण वृक्षत्वञ्च लभिष्यसि।४६

मदंशस्याऽसुरस्यैवशङ्खचूडस्यकामिनी ।भूत्वा पश्चाच्चमत्पत्नी भविष्यसिनसंशयः।४७

त्रैलोक्यपावनी नाम्ना तुलसीतिचभारते। कलया च सरिद्भावं शीघ्रं गच्छ वरानने।४८

भारतं भारतीशापान्नाम्ना पद्मावती भव। गङ्गे! यास्यसि पश्चात्त्वमंशेन विश्वपावनी।४६

भारतं भारतीशापात्पापदाहाय पापिनाम्। भगीरथस्य तपसा तेन नीता सुकल्पिते।५०

नाम्ना भागीरथी पूता भविष्यसि महीतले। मदंशस्य समुद्रस्यजाया जायेममाज्ञया।५१

मत्कलांशस्य भूपस्य शन्तनोश्च सुरेश्वरि। गङ्गाशापेन कलया भारतंगच्छभारति!।५२

कलहस्य फलं भुङ्क्ष्व सपत्नीभ्यां सहाऽच्युते!।

स्वयं च ब्रह्मसदने ब्रह्मणः कामिनी भव ।।५३।।

गङ्गा यातु शिवस्थानमत्र पद्मैव तिष्ठतु। शान्ता चक्रोधरहिता मद्भक्ता सत्त्वरूपिणी।५४

महासाध्वी महाभागासुशीलाधर्मचारिणी। यदंशकलया सर्वा धर्मिष्ठाश्च पतिव्रताः।५५

शान्तरूपाः सुशीलाश्च प्रतिविश्वेषु पूजिताः। तिस्रो भार्यास्त्रिशीलाश्च त्रयो भृत्याश्च बान्धवाः।५६

ध्रुवं वेदविरुद्धाश्च न ह्येते मङ्गलप्रदाः। स्त्रीपुंवच्च गृहे येषां गृहिणां स्त्रीवशः पुमान्।५७

निष्फलं च जन्म तेषामशुभं च पदेपदे। मुखे दुष्टायोनिदुष्टा यस्य स्त्री कलहप्रिया।५८

अरण्यं तेन गन्तव्यं महारण्यं गृहाद्वरम्। जलानां च स्थलानांचफलानांप्राप्तिरेवच।५६

सततं सुलभा तत्र न तेषां गृह एव च। वरमग्नौ स्थितिर्हिस्रंजन्तूनांसन्निधौसुखम्।६०

ततोऽपि दुःखं पुंसां च दुष्टस्त्रीसन्निधौ ध्रुवम्।

व्याधिज्वाला विषज्वाला वरं पुंसां वरानने! ।।६१।।

दुष्टस्त्रीणां मुखज्वाला मरणादतिरिच्यते। पुंसां च स्त्रीजितां चैव भस्मान्तं शौचमध्रुवम्।६२

यदह्नि कुरुते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत्। निन्दितोऽत्र परत्रैव सर्वत्र नरकं व्रजेत्।६३

यशः कीर्तिविहीनो योजीवन्नपिमृतोहिसः। बह्वीनांचसपत्नीनांनैकत्रश्रेयसेस्थितिः ।६४

एकभार्यः सुखी नैव वहुभार्यः कदाचन। गच्छ गङ्गे! शिवस्थानं ब्रह्मस्थानंसरस्वति।६५

अत्र तिष्ठतु मद्गेहे सुशीला कमलालया। सुसाध्या यस्य पत्नीचसुशीलाचपतिव्रता।६६

इह स्वर्गे सुखं तस्य धर्मो मोक्षः परत्र च। पतिव्रतायस्यपत्नीसचमुक्तः शुचिः सुखी।

जीवन्मृतोऽशुचिर्दुःखी दुःशीलापतिरेव च।।६७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे लक्ष्मीगङ्गासरस्वतीनांभूलोकेऽवतरणवर्णनंनाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

* सप्तमोऽध्यायः *

गङ्गादीनांशापोद्धारवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

इत्युक्त्वा जगतां नाथोविररामच नारद!। अतीव रुरुदुर्देव्यः समालिङ्ग्य परस्परम्। १
ताश्च सर्वाःसमालोक्य क्रमेणोचुस्तदेश्वरम्। कम्पिताः साश्रुनेत्राश्चशोकेनचभयेनच। २

सरस्वत्युवाच

विशापं देहि हे नाथ! दुष्टमाजन्मशोचनम्।
सत्स्वामिना परित्यक्ताः कुतो जीवन्ति ताः स्त्रियः।। ३।।

देहत्यागंकरिष्यामि योगेन भारते ध्रुवम्। अत्युन्नतो हि नियतंपातुमर्हतिनिश्चितम्। ४

गङ्गोवाच

अहं केनाऽपराधेन त्वया त्यक्ता जगत्पते!। देहत्यागंकरिष्यामि निर्दोषाया वधं लभ। ५
निर्दोषकामिनीत्यागं करोति यो नरो भुवि। सयातिनरकंघोरंकिन्तुसर्वेश्वरोऽपिवा। ६

पद्मोवाच

नाथ! सत्त्वस्वरूपस्त्वं कोपः कथमहो तव। प्रसादं कुरु भार्येद्वेसदीशस्यक्षमावरा। ७
भारते भारतीशापाद्यास्यामि कलया ह्यहम्। कियत्कालं स्थितिस्तत्र कदा द्रक्ष्यामि ते पदम्। ८
दास्यन्तिपापिनः पापंसद्यः स्नानावगाहनात्। केनतेनविमुक्ताऽहमागमिष्यामितेपदम्। ९
कलया तुलसीरूपं धर्मध्वजसुतासती। भुक्त्वाकदालभिष्यामित्वत्पादाम्बुजमच्युत। १०
वृक्षरूपा भविष्यामि त्वदधिष्ठातृदेवता। समुद्धरिष्यसि कदा तन्मे ब्रूहि कृपानिधे!। ११
गङ्गा सरस्वतीशापाद्यदियास्यति भारते!। शापेनमुक्तापापाच्चकदात्वांचलभिष्यति। १२
गङ्गाशापेन वा वाणीयदि यास्यतिभारतम्। कदाशापाद्विनिर्मुच्यलभिष्यतिपदंतव। १३
तां वाणीं ब्रह्मसदनं गङ्गां वा शिवमन्दिरम्। गन्तुं वदसिहेनाथ! तत्क्षमस्वचतेवचः। १४
इत्युक्त्वा कमला कान्तपादं धृत्वाननाम सा। स्वकेशैर्वेष्टनं कृत्वा रुरोदच पुनः पुनः। १५
"उवाच पद्मनाभस्तां पद्मांकृत्वा स्ववक्षसि। ईषद्धास्यप्रसन्नास्यो भक्तानुग्रहकातरः। १६

श्रीभगवानुवाच

त्वद्वाक्यमाचरिष्यामिस्ववाक्यञ्च सुरेश्वरि!। समतांचकरिष्यामिशृणुत्वंकमलेक्षणे। १७
भारती यातु कलया सरिद्रूपा च भारते। अर्धा सा ब्रह्मसदनं स्वयं तिष्ठतु मद्गृहे। १८
भगीरथेन सा नीता गङ्गा यास्यति भारते। पूतं कर्तुं त्रिभुवनं स्वयं तिष्ठतु मद्गृहे। १९
तत्रैवचन्द्रमौलेश्चमौलिंप्राप्स्यतिदुर्लभम्। ततः स्वभावतः पूताऽप्यतिपूजाभविष्यति। २०
कलांशांशेन गच्छ त्वं भारते वामलोचने!। पद्मावती सरिद्रूपा तुलसी वृक्षरूपिणी। २१
कलेः पञ्चसहस्रे च गते वर्षे च मोक्षणम्। युष्माकं सरितांचैव मद्गेहेचागमिष्यथ। २२
सम्पदा हेतुभूता च विपत्तिः सर्वदेहिनाम्। विना विपत्तेर्महिमा केषां पद्मभवे भवेत्। २३
मन्मन्त्रोपासकानां चसतांस्नानावगाहनात्। युष्माकंमोक्षणंपापाद्दर्शनात्स्पर्शनात्तथा। २४

पृथिव्यां यानि तीर्थानि सन्त्यसङ्ख्यानि सुन्दरि!।
भविष्यन्ति च पूतानि मद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।।२५।।

मन्मन्त्रोपासका भक्ता विभ्रमन्ति च भारते। पूतं कर्तुं तारितुंचसुपवित्रांवसुन्धराम्। २६

मद्भक्ता यत्र तिष्ठन्ति पादं प्रक्षालयन्ति च। तत्स्थानं चमहातीर्थंसुपवित्रंभवेद्ध्रुवम्।२७
स्त्रीघ्नो गोघ्नः कृतघ्नश्चब्रह्मघ्नोगुरुतल्पगः। जीवन्मुक्तोभवेत्पूतो मद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।२८
एकादशीविहीनश्च सन्ध्याहीनोऽथनास्तिकः। नरघातीभवेत्पूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।२९
असिजीवी मसीजीवीधावको ग्रामयाचकः। वृषवाहो भवेत्पूतो मद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।३०
विश्वासघाती मित्रघ्नो मिथ्यासाक्ष्यस्य दायकः। स्थाप्यहारी भवेत्पूतो मद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।३१
अत्युग्रवान्पुंदूषकश्च जारकः पुंश्चलीपतिः। पूतश्च वृषलीपुत्रो मद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।३२
शूद्राणां सूपकारश्च देवलो ग्रामयाजकः। अदीक्षितो भवेत्पूतो मद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।३३
पितरं मातरं भार्यां भ्रातरं तनयं सुताम्। गुरोः कुलं च भगिनींचक्षुर्हीनंचबान्धवम्।३४
श्वश्रूंच श्वशुरं चैव यो न पुष्णाति सुन्दरि!। सनहापातकीपूतोमद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।३५
अश्वत्थनाशकश्चैवमद्भक्तनिन्दकस्तथा । शूद्रान्नभोजी विप्रश्च पूतो मद्भक्तदर्शनात्।३६
देशद्रव्यापहारी च विप्रद्रव्यापाहारकः। लाक्षालोहरसानां च विक्रेता दुहितुस्तथा।३७
महापातकिनश्चैव शूद्राणां शवदाहकः। भवेयुरेते पूताश्च मद्भक्तस्पर्शदर्शनात्।३८

श्रीमहालक्ष्मीरुवाच

भक्तानां लक्षणं ब्रूहि भक्तानुग्रहकातर!। तेषां तु दर्शनस्पर्शात्सद्यः पूता नराधमाः।३९
हरिभक्तिविहीनाश्चमहाहङ्कारसंयुताः । स्वप्रशंसारता धूर्ताः शठाश्च साधुनिन्दकाः।४०
पुनन्ति सर्वतीर्थानि येषां स्नानावगाहनात्। येषाञ्च पादरजसापूतापादोदकान्मही।४१
येषां सन्दर्शनं स्पर्शं ये वा वाञ्छन्ति भारते। सर्वेषां परमोलाभोवैष्णवनांसमागमः।४२
नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः। तेपुनन्त्यपि कालेनविष्णुभक्ताः क्षणादहो।४३

सूत उवाच

महालक्ष्मीवचःश्रुत्वालक्ष्मीकान्तश्च सस्मितः। निगूढतत्त्वंकथितुमपिश्रेष्ठोपचक्रमे।४४

श्रीभगवानुवाच

भक्तानां लक्षणंलक्ष्मि! गूढंश्रुतिपुराणयोः। पुण्यस्वरूपं पापघ्नं सुखदंभुक्तिमुक्तिदम्।४५
सारभूतं गोपनीयंनवक्तव्यं खलेषु च। त्वां पवित्रां प्राणतुल्यां कथयामि निशामय।४६
गुरुवक्त्राद्विष्णुमन्त्रोयस्यवक्त्रकर्णेपतिष्यति। वदन्तिवेदास्तंचापिपवित्रंचनरोत्तमम्।४७
पुरुषाणां शतं पूर्वं तथातज्जन्ममात्रतः। स्वर्गस्थंनरकस्थंवामुक्तिमाप्नोतितत्क्षणात्।४८
यैः कैश्चिद्यत्र वा जन्मलब्धंयेषुचजन्तुषु। जीवन्मुक्तास्तुतेपूतायान्तिकालेहरेः पदम्।४९
मद्भक्तियुक्तोमर्त्यश्चसमुक्तोमद्गुणान्वितः। मद्गुणाधीनवृत्तिर्यः कथाविष्टश्चसन्ततम्।५०
मद्गुणश्रुतिमात्रेण सानन्दःपुलकान्वितः। सगद्गदः साश्रुनेत्रः स्वात्मविस्मृतएवच।५१
न वाञ्छति सुखं मुक्तिंसालोक्यादिचतुष्टयम्। ब्रह्मत्वममरत्वं वातद्वाञ्छा ममसेवने।५२
इन्द्रत्वंच मनुत्वं च ब्रह्मत्वंचसुदुर्लभम्। स्वर्गराज्यादिभोगंचस्वप्नेऽपिचनवाञ्छति।५३
भ्रमन्तिभारतेभक्तास्तादृग्जन्मसुदुर्लभम्। मद्गुणश्रवणाः श्राव्यगानैर्नित्यंमुदान्विताः।५४
ते यान्ति च महीं पूत्वा नरं तीर्थं ममाऽलयम्। इत्येवं कथितं सर्वं पद्मे! कुरु यथोचितम्।५५
तदाज्ञया तास्तच्चक्रुर्हरिस्तस्थौ सुखासने।।५६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांनवमस्कन्धे गङ्गादीनांशापोद्धारवर्णनंनाम सप्तमोऽध्यायः।।७।।

* अष्टमोऽध्यायः *

कलेर्माहात्म्यवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

सरस्वती पुण्यक्षेत्रमाजगाम च भारते। गङ्गाशापेन कलया स्वयं तस्थौ हरेः पदे।१
भारती भारतं गत्वा ब्राह्मी च ब्रह्मणः प्रिया। वाण्यधिष्ठातृदेवीसातेनवाणीप्रकीर्तिता।२
सरोवाप्यां च स्रोतस्सु सर्वत्रैव हिदृश्यते। हरिः सरस्वांस्तस्येयंतेननाम्नासरस्वती।३
सरस्वती नदी सा च तीर्थरूपाऽतिपावनी। पापिनांपापदाहायज्वलदग्निस्वरूपिणी।४
पश्चाद्भागीरथी नीता महीं भगीरथेन च। सा वै जगाम कलया वाणीशापेन नारद।५
तत्रैव समये ताञ्च दधार शिरसा शिवः। वेगं सोढुमयं शक्तो भुवः प्रार्थनया विभुः।६
पद्मा जगाम कलया सा च पद्मावती नदी। भारतं भारतीशापात्स्वयंतस्थौ हरेः पदे।७
ततोऽन्यया सा कलया लेभेजन्मचभारते। धर्मध्वजसुतालक्ष्मीर्विख्याताातुलसीतिच।८
पुरासरस्वतीशापात्पश्चाच्च हरिशापतः। बभूव वृक्षरूपा सा कलया विश्वपावनी।९
कलेः पञ्चसहस्रं च वर्षं स्थित्वाच भारते। जग्मुस्ताश्च सरिद्रूपंविहायश्रीहरेः पदम्।१०
यानि सर्वाणि तीर्थानि काशीं वृन्दावनं विना। यास्यन्ति सार्धं ताभिश्च वैकुण्ठमाज्ञया हरेः।११
शालग्रामः शक्तिशिवौजगन्नाथश्चभारतम्। कलेर्दशसहस्रान्तेत्यक्त्वायान्तिनिजंपदम्।१२
साधवश्च पुराणानि शङ्खानि श्राद्धतर्पणे। वेदोक्तानि च कर्माणिययुस्तैः सार्धमेव च।१३
देवपूजा देवनाम तत्कीर्तिगुणकीर्तनम्। वेदाङ्गानि च शास्त्राणि ययुस्तैः सार्धमेवच।१४
सन्तश्च सत्यं धर्मश्च वेदाश्च ग्रामदेवताः। व्रतं तपश्चाऽनशनं ययुस्तैः सार्धमेव च।१५
वामाचाररताः सर्वे मिथ्याकपटसंयुताः। तुलसीरहिता पूजा भविष्यति ततः परम्।१६
शठाः क्रूरादाम्भिकाश्चमहाहङ्कारसंयुताः। चोराश्चसहिंसकाः सर्वेभविष्यन्तिततः परम्।१७
पुंसो भेदःस्त्रीविभेदोविवाहोवाऽपि निर्भयः। स्वस्वामिभेदो वस्तूनां भविष्यति ततः परम्।१८
सर्वे स्त्रीवशगाः पुंसः पुंश्चल्यश्च गृहेगृहे। तर्जनैर्भर्त्सनैः शश्वत्स्वामिनं ताडयन्ति च।१९
गृहेश्वरी चगृहिणीगृहीभृत्याधिकोऽधमः। चेटीदाससमोवध्वाः श्वश्रूश्चश्वशुरस्तथा।२०
कर्तारो बलिनोगेहे योनिसम्बन्धिबान्धवाः। विद्यासम्बन्धिभिः सार्धं सम्भाषाऽपि न विद्यते।२१
यथाऽपरिचितालोकास्तथा पुंसश्च बान्धवाः। सर्वकर्माक्षमाः पुंसो योषितामाज्ञया विना।२२
ब्रह्मक्षत्रविशः शूद्राजात्याचारविर्जिताः। सन्ध्या च यज्ञसूत्रं च भवेल्लुप्तं न संशयः।२३
म्लेच्छाचारा भविष्यन्ति वर्णाश्चत्वारएव च। म्लेच्छशास्त्रं पठिष्यन्ति स्वशास्त्राणि विहाय च।२४
ब्रह्मक्षत्रविशां वंशाः शूद्राणांसेवकाः कलौ। सूपकारा धावकाश्चवृषवाहाश्च सर्वशः।२५
सत्यहीना जनाः सर्वे सस्यहीना च मेदिनी। फलहीनाश्च तरवोऽपत्यहीनाश्च योषितः।२६
क्षीरहीनास्तथागावः क्षीरं सर्पिर्विवर्जितम्। दम्पती प्रीतिहीनौ च गृहिणः सत्यवर्जिताः।२७
प्रतापहीना भूपाश्च प्रजाश्च करपीडिताः। जलहीना महानद्यो दीर्घिकाकन्दरादयः।२८
धर्महीना पुण्यहीना वर्णाश्चत्वारएव च। लक्षेषु पुण्यवान्कोऽपि न तिष्ठतिततः परम्।२९
कुत्सिता विकृताकारा नरा नार्यश्च बालकाः। कुवार्ता कुत्सितः शब्दो भविष्यति ततः परम्।३०
केचिद्ग्रामाश्च नगरा नरशून्या भयानकाः। केचित्स्वल्पकुटीरेण नरेण च समन्विताः।३१
अरण्यानि भविष्यन्ति ग्रामेषु नगरेषु च। अरण्यवासिनः सर्वे जनाश्च करपीडिताः।३२
सस्यानि च भविष्यन्ति तडागेषु नदीषु च। प्रकृष्टवंशजा हीनाभविष्यन्तिकलौयुगे।३३

अलीकवादिदो धूर्ताः शठाश्चासत्यवादिनः। प्रकृष्टानि च क्षेत्राणिसस्यहीनानिनारद।३४
हीनाः प्रकृष्टाधनिनोदेवभक्ताश्च नास्तिकाः। हिंसकाश्च दयाहीनाः पौराश्च नरघातिनः।३५
वामना व्याधियुक्ताश्च नरा नार्यश्च सर्वतः। स्वल्पायुषोगदायुक्तायौवनैरहिताः कलौ।३६
पलिताः षोडशे वर्षे महावृद्धाश्च विंशतौ। अष्टवर्षा च युवती रजोयुक्ता चगर्भिणी।३७
वत्सरान्तप्रसूता स्त्री षोडशेचजरान्विता। पतिपुत्रवतीकाचित्सर्वावन्ध्याः कलौयुगे।३८
कन्याविक्रयिणः सर्वे वर्णाश्चत्वार एव च। मातृजायावधूनां च जारोपेतान्नभक्षकाः।३९

कन्यानां भगिनीनाम्वा जारोपात्तान्नजीविनः ।
हरेर्नाम्नां विक्रयिणो भविष्यन्ति कलौ युगे ।।४०।।

स्वयमुत्सृज्य दानञ्च कीर्तिवर्धनहेतवे। ततः पश्चात्स्वदानं च स्वयमुल्लङ्घयिष्यति।४१
देववृत्तिं ब्रह्मवृत्तिं वृत्तिं गुरुकुलस्य च। स्वदत्तां परदत्तां वा सर्वमुल्लङ्घयिष्यति।४२
कन्यकागामिनःकेचित्केचिच्च श्वश्रुगामिनः। केचिद्वधूगामिनश्च केचिद्वै सर्वगामिनः।४३
भगिनीगामिनः केचित्सपत्नीमातृगामिनः। भ्रातृजायागामिनश्च भविष्यन्ति कलौयुगे।४४
अगम्यागमनं चैव करिष्यन्ति गृहे गृहे। मातृयोनिं परित्यज्य विहरष्यन्ति सर्वतः।४५
पत्नीनां निर्णयो नास्तिभर्तृणां चकलौयुगे। प्रजानांचैवग्रामाणांवस्तूनांचविशेषतः।४६
अलीकवादिनः सर्वे सर्वे चौराश्च लम्पटाः। परस्परं हिंसकाश्च सर्वे च नरघातिनः।४७
ब्रह्मक्षत्रविशां वंशा भविष्यन्ति च पापिनः। लाक्षालोहरसानाञ्च व्यापारं लवणस्य च।४८
वृषवाहा विप्रवंशाः शूद्राणां शवदाहिनः। शूद्रान्नभोजिनः सर्वे सर्वे च वृषलीरताः।४९
पञ्चयज्ञविहीनाश्च कुहूरात्रौ च भोजिनः। यज्ञसूत्रविहीनाश्च सन्ध्याशौचविहीनकाः।५०
पुंश्चली वार्धुषाजीवा कुट्टनी च रजस्वला। विप्राणांरन्धनागारेभविष्यतिचपाचिका।५१
अन्नानां नियमो नास्ति योनीनांच विशेषतः। आश्रमाणां जनानां च सर्वे म्लेच्छाः कलौ युगे।५२
एवं कलौ सम्प्रवृत्ते सर्वं म्लेच्छमयं भवेत्। हस्तप्रमाणे वृक्षे च अङ्गुष्ठे चैव मानवे।५३
विप्रस्य विष्णुयशसः पुत्रः कल्किर्भविष्यति। नारायणकलांशश्च भगवान्बलिनाम्वरः।५४
दीर्घेण करवालेन दीर्घघोटकवाहनः। म्लेच्छशून्याञ्च पृथिवीं त्रिरात्रेण करिष्यति।५५

निर्म्लेच्छाम्वसुधां कृत्वा चाऽन्तर्धानं करिष्यति ।
अराजका च वसुधा दस्युग्रस्ता भविष्यति ।।५६।।

स्थूलाऽप्रमाणषड्रात्रं वर्षधाराप्लुता मही। लोकशून्या वृक्षशून्यागृहशून्याभविष्यति।५७
ततश्च द्वादशादित्याः करिष्यन्त्युदयंमुने!। प्राप्नोतिशुष्कतांपृथ्वीसमातेषांचतेजसा।५८
कलौ गते च दुर्धर्षे प्रवृत्ते च कृते युगे। तपः सत्त्वसमायुक्तो धर्मः पूर्णो भविष्यति।५९
तपस्विनश्च धर्मिष्ठा वेदज्ञा ब्राह्मणा भुवि। पतिव्रताश्च धर्मिष्ठा योषितश्च गृहे गृहे।६०
राजानः क्षत्रिया सर्वे विप्रभक्ता मनस्विनः। प्रतापवन्तो धर्मिष्ठाः पुण्यकर्मरताः सदा।६१
वैश्या वाणिज्यनिरता विप्रभक्ताश्चधार्मिकाः। शूद्राश्च पुण्यशीलाश्च धर्मिष्ठा विप्रसेविनः।६२
विप्रक्षत्रविशां वंशा देवीभक्तिपरायणाः। देवीमन्त्ररताः सर्वेदेवीध्यानपरायणाः।६३
श्रुतिस्मृतिपुराणज्ञाः पुमांस ऋतुगामिनः। लेशोनास्ति ह्यधर्मस्य पूर्णोधर्मः कृते युगे।६४
धर्मस्त्रिपाच्च त्रेतायां द्विपाच्च द्वापरे ततः। कलौ वृत्ते चैकपाच्च सर्वलुप्तिस्ततः परम्।६५
वाराःसप्ततथा विप्रा तिथयः षोडशस्मृताः। तथा द्वादशमासाश्च ऋतवश्चषडेवच।६६
द्वौ पक्षौ चाऽयने द्वेच चतुर्भिः प्रहरैर्दिनम्। चतुर्भिः प्रहरैः रात्रिर्मासस्त्रिंशद्दिनैस्तथा।६७
वर्षं पञ्चविधं ज्ञेयंकालसंख्याविधिक्रमे। यथाचाऽऽयान्तियान्त्येवयथायुगचतुष्टयम्।६८

वर्षे पूर्णे नराणाञ्च देवानाञ्च दिवानिशम्। शतत्रये षष्ट्यधिके नराणाञ्च युगे कृते।६९
देवानाञ्च युगं ज्ञेयंकालसङ्ख्याविदां मतम्। मन्वन्तरंतुदिव्यानांयुगानामेकसप्ततिः।७०
मन्वन्तरसमं ज्ञेयमायुष्यञ्च शचीपतेः। अष्टाविंशतिमे चेन्द्रे गते ब्रह्मदिवानिशम्।७१
अष्टोत्तरशते वर्षे गते पातश्च ब्रह्मणः। प्रलयः प्राकृतो ज्ञेयस्तत्राऽदृष्टा वसुन्धरा।७२
जलप्लुतानि विश्वानि ब्रह्मविष्णुशिवादयः। ऋषयो ज्ञानिनः सर्वे लीनाः सत्ये चिदात्मनि।७३
तत्रैव प्रकृतिर्लीना तत्र प्राकृतिको लयः। लये प्राकृतिके जाते पाते च ब्रह्मणो मुने।७४
निमेषमात्रं कालश्च श्रीदेव्याः प्रोच्यते मुने!। एवं नश्यन्ति सर्वाणि ब्रह्माण्डान्यखिलानि च।७५
निमेषान्तरकालेन पुनः सृष्टिक्रमेण च। एवं कतिविधासृष्टिर्लयः कतिविधोऽपि वा।७६

कति कल्पा गताऽऽयाताः सङ्ख्यां जानाति कः पुमान्।
सृष्टीनाञ्च लयानाञ्च ब्रह्माण्डानाञ्च नारद!।।७७।।
ब्रह्मादीनाञ्च ब्रह्माण्डे सङ्ख्यां जानाति कः पुमान्।
ब्रह्माण्डानाञ्च सर्वेषामीश्वरश्चैक एव सः।।७८।।

सर्वेषां परमात्मा चसच्चिदानन्दरूपधृक्। ब्रह्मादयश्चतस्यांशास्तस्यांशश्चमहाविराट्।७९
तस्यांऽशश्च विराट् क्षुद्रः सैवेयं प्रकृतिः परा। तस्याः सकाशात्सञ्जातोऽप्यर्धनारीश्वरस्ततः।८०
सैवकृष्णो द्विधाभूतोद्विभुजश्च चतुर्भुजः। चतुर्भुजश्चवैकुण्ठेगोलोकेद्विभुजःस्वयम्।८१
ब्रह्मादितृणपर्यन्तं सर्वं प्राकृतिकं भवेत्। यद्यत्प्राकृतिकं सृष्टं सर्वं नश्वरमेव च।८२
एवं विधं सृष्टिहेतुं सत्यं नित्यं सनातनम्। स्वेच्छामयं परंब्रह्मनिर्गुणंप्रकृतेः परम्।८३
निरुपाधि निराकारं भक्तानुग्रहकातरम्। करोतिब्रह्माब्रह्माण्डंयज्ज्ञानात्कमलोद्भवः।८४
शिवोमृत्युञ्जयश्चैव संहर्ता सर्वसत्त्ववित्। यज्ज्ञानाद्यस्यतपसासर्वेशस्तुतपोमहान्।८५
महाविभूतियुक्तश्चसर्वज्ञः सर्वदर्शनः। सर्वव्यापी सर्वपाता प्रदातासर्वसम्पदाम्।८६
विष्णुः सर्वेश्वरःश्रीमान्यद्भक्त्या तस्यसेवया। महामायाचप्रकृतिः सर्वशक्तिमयीश्वरी।८७
सैवप्रोक्ताभगवतीसच्चिदानन्दरूपिणी। यज्ज्ञानाद्यस्य तपसा यद्भक्त्या यस्य सेवया।८८
सावित्री वेदमाता च वेदाधिष्ठातृदेवता। पूज्याद्विजानां वेदज्ञायज्ज्ञानाद्यस्यसेवया।८९
सर्वविद्याधिदेवी सा पूज्या च विदुषां परा। यत्सेवयायत्तपसासर्वविश्वेषुपूजिता।९०
सर्वग्रामाधिदेवी सा सर्वसम्पत्प्रदायिनी। सर्वेश्वरी सर्ववन्द्यासर्वेषां पुत्रदायिनी।९१
सर्वस्तुता च सर्वज्ञासर्वदुर्गार्तिनाशिनी। कृष्णवामांशसम्भूता कृष्णप्राणाधिदेवता।९२
कृष्णप्राणाधिका प्रेम्णा राधिका शक्तिसेवया। सर्वाधिकं च रूपञ्च सौभाग्यं मानगौरवे।९३
कृष्णवक्षः स्थलस्थानं पत्नीत्वे प्रापसेवया। तपश्चकार सा पूर्वं शतशृङ्गे च पर्वते।९४
दिव्यवर्षसहस्रञ्च पतिप्राप्त्यर्थमेव च। जातेशक्तिप्रसादे तु दृष्ट्वा चन्द्रकलोपमाम्।९५
कृष्णोवक्षः स्थले कृत्वा रुरोदकृपया विभुः। वरं तस्यै ददौसारं सर्वेषामपिदुर्लभम्।९६
ममवक्षः स्थले तिष्ठममभक्ता च शाश्वती। सौभाग्येनच मानेनप्रेम्णाऽथोगौरवेणच।९७
त्वं मे श्रेष्ठा च ज्येष्ठाचप्रेयसीसर्वयोषिताम्। वरिष्ठाचगरिष्ठाचसंस्तुतापूजितामया।९८
सततं तव साध्योऽहंवश्यश्चप्राणवल्लभे!। इत्युक्त्वा चजगन्नाथश्चकार ललनां ततः।९९
सपत्नीरहितांतांचचकारप्राणवल्लभाम्। अन्या यायाश्चतादेव्यः पूजिताः शक्तिसेवया।१००
तपस्तु यादृशं यासां तादृक्तादृक्फलं मुने!। दिव्यंवर्षसहस्रञ्चतपस्तप्त्वा हिमाचले।१०१
दुर्गा च तत्पदं ध्यात्वा सर्वपूज्या बभूव ह। सरस्वती तपस्तप्त्वापर्वते गन्धमादने।१०२
लक्षवर्षं च दिव्यं च सर्ववन्द्याबभूव सा। लक्ष्मीर्युगशतं दिव्यंतपस्तप्त्वाच पुष्करे।१०३

सर्वसम्पत्प्रदात्रीचजातादेवीनिषेवणात् । सावित्री मलयेतप्त्वा पूज्यावन्द्याबभूवसा ।१०४
षष्टिवर्षसहस्रञ्च दिव्यं ध्यात्वा च तत्पदम् । शतमन्वन्तरं तप्तंशङ्करेण पुरा विभो! ।१०५
शतमन्वन्तरं चेदं ब्रह्मा शक्तिं जजाप ह । शतमन्वन्तरंविष्णुस्तप्त्वा पाता बभूव ह ।१०६
दशमन्वन्तरं तप्त्वाश्रीकृष्णः परमंतपः । गोलोकंप्राप्तवान्दिव्यंमोदतेऽद्याऽपि यत्रहि ।१०७
दशमन्वन्तरं धर्मस्तप्त्वा वै भक्ति संयुतः । सर्वप्राणः सर्वपूज्यः सर्वाधारो बभूवसः ।१०८
एवं देव्याश्च तपसा सर्वेदेवाश्च पूजिताः । मुनयो मनवो भूपा ब्राह्मणाश्चैव पूजिताः ।१०९
एवं ते कथितं सर्वं पुराणं सयथागमम् । गुरुवक्त्राद्यथाज्ञातं किं भूयः श्रोतुमिच्छासि ।११०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे नारायणनारद सम्वादेसकलिमाहात्म्यंशक्तिप्रादुर्भावोनामाऽष्टमोध्यायः ।८।

* नवमोऽध्यायः *

शक्त्युत्पत्तिप्रसङ्गेभूमिशक्तेरुत्पत्तिवर्णनम्

नारद उवाच

देव्या निमेषमात्रेण ब्रह्मणः पात एव च । तस्य पातः प्रकृतिकः प्रलयः परिकीर्तितः ।१
प्रलये प्राकृते चोक्ता तत्राऽदृष्टावसुन्धरा । जलप्लुतानिविश्वानिसर्वेलीनाः परात्मनि ।२
वसुन्धरा तिरोभूता कुत्र वा सा च तिष्ठति । सृष्टेर्विधानसमयेसाऽऽविर्भूता कथंपुनः ।३
कथम्बभूव सा धन्या मान्यासर्वाश्रियाजया । तस्याश्चजन्मकथनं वद मङ्गलकारणम् ।४

श्रीनारायण उवाच

सर्वादिसृष्टौसर्वेषां जन्म देव्या इति श्रुतिः । आविर्भावस्तिरोभावः सर्वेषुप्रलयेषुच ।५
श्रूयतां वसुधाजन्म सर्वमङ्गलकारणम् । विघ्ननिघ्नकरं पापनाशनं पुण्यवर्धनम् ।६
अहो केचिद्वदन्तीति मधुकैटभमेदसा । बभूव वसुधा धन्या तद्विरुद्धमतः शृणु ।७
ऊचतुस्तौ पुरा विष्णुं तुष्टौ युद्धेन तेजसा । आवांवध्यौनयत्रोर्वीपाथसासम्वृतेतिच ।८
तयोर्जीवनकाले न प्रत्यक्षा साऽभवत्स्फुटम् । ततो बभूव मेदश्च मरणानन्तरं तयोः ।९
मेदिनीति च विख्यातेत्युक्तमेतन्मतं शृणु । जलधौता कृता पूर्वं वर्धिता मेदसा यतः ।१०
कथयामि ते तज्जन्म सार्थकं सर्वमङ्गलम् । पुरा श्रुतं यच्छ्रुत्युक्तं धर्मवक्त्राच्चपुष्करे ।११
महाविराट्शरीरस्य जलस्थस्यचिरं स्फुटम् । मनो बभूवकालेनसर्वांगव्यापकंध्रुवम् ।१२
तच्च प्रविष्टं सर्वेषां तल्लोम्नां विवरेषु च । कालेन महता पश्चाद्बभूव वसुधा मुने! ।१३
प्रत्येकं प्रतिलोम्नां च कूपेषु संस्थिता सदा । आविर्भूतातिरोभूतासजलाचपुनः पुनः ।१४
आविर्भूता सृष्टिकालेतज्जलोपर्युपस्थिता । प्रलयेचतिरोभूताजलस्याऽभ्यन्तरेस्थिता ।१५
प्रतिविश्वेषु वसुधा शैलकाननसंयुता । सप्तसागरसंयुक्ता सप्तद्वीपसमन्विता ।१६
हेमाद्रिमेरुसंयुक्ता ग्रहचन्द्रार्कसंयुता । ब्रह्मविष्णुशिवाद्यैश्चसुरैर्लोकैस्तदाज्ञया ।१७
पुण्यतीर्थसमायुक्ता पुण्यभारतसंयुता । काञ्चनीभूमिसंयुक्ता सप्तस्वर्गसमन्विता ।१८
पातालसप्तं तदधस्तदूर्ध्वं ब्रह्मलोककः । ध्रुवलोकश्च तत्रैव सर्वं विश्वं च तत्रवै ।१९
एवं सर्वाणि विश्वानि पृथिव्यां निर्मितानि च । नश्वराणि च विश्वानि सर्वाणि कृत्रिमाणि वै ।२०
प्रलये प्राकृते चैव ब्रह्मणश्चनिपातने । महाविराडादिसृष्टौ सृष्टः कृष्णेन चाऽऽत्मना ।२१
नित्यौ च स्थितिप्रलयौकाष्ठाकालेश्वरैः सह । नित्याऽधिष्ठातृदेवी सा वाराहे पूजिता सुरैः ।२२
मुनिभिर्मनुभिर्विप्रैर्गन्धर्वादिभिरेव च । विष्णोर्वराहरूपस्य पत्नी सा श्रुतिसम्मता ।२३

तत्पुत्रो मङ्गलो ज्ञेयो घटेशो मङ्गलात्मजः ।

नारद उवाच

पूजिता केन रूपेण वाराहे च सुरैर्मही ।।२४।।

वाराहे चैव वाराही सर्वैः सर्वाश्रया सती। मूलप्रकृतिसम्भूता पञ्चीकरणमार्गतः।२५

तस्याः पूजाविधानं चाऽप्यधश्चोर्ध्वमनेकशः। मङ्गलंमङ्गलस्यापिजन्मवासं वदप्रभो!।२६

श्रीनारायण उवाच

वाराहे च वराहश्च ब्रह्मणा संस्तुतः पुरा। उद्दधार महीं हत्वा हिरण्याक्षं रसातलात्।२७

जले तां स्थापयामास पद्मपत्रं यथा ह्रदे। तत्रैव निर्ममे ब्रह्मा विश्वं सर्वंमनोहरम्।२८

दृष्ट्वा तदधिदेवीं च सकामां कामुको हरिः। वाराहरूपी भगवान् कोटिसूर्यसमप्रभः।२९

कृत्वारतिकलां सर्वां मूर्तिं च सुमनोहराम्। क्रीडां चकार रहसिदिव्यवर्षमहर्निशम्।३०

सुखसम्भोगसंस्पर्शान्मूर्च्छां सम्प्राप सुन्दरी। विदग्धाया विदग्धेन सङ्गमोऽतिसुखप्रदः।३१

विष्णुस्तदङ्गसंश्लेषाद् बुबुधे न दिवानिशम्। वर्षान्ते चेतनाम्प्राप्य कामी तत्याज कामुकीम्।३२

पूर्वरूपं वराहं च दधार स च लीलया। पूजां चकार तां देवींध्यात्वाचधरणींसतीम्।३३

धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैः सिन्दूरैरनुलेपनैः। वस्त्रैः पुष्पैश्च बलिभिः सम्पूज्योवाच तां हरिः।३४

श्रीभगवानुवाच

सर्वाधारा भवशुभे सर्वैः सम्पूजिता सुखम्। मुनिभिर्मनुभिर्देवैः सिद्धैश्चदानवादिभिः।३५

अम्बुवाचीत्यागदिने गृहारम्भे प्रवेशने। वापीतडागारम्भे च गृहे च कृषिकर्मणि।३६

तवपूजां करिष्यन्ति मद्वरेण सुरादयः। मूढा ये न करिष्यन्ति यास्यन्तिनरकं च ते।३७

वसुधोवाच

वहामिसर्वं वाराहरूपेणाऽहं तवाऽऽज्ञया। लीलामात्रेण भगवन्विश्वं च सचराचरम्।३८

मुक्तां शुक्तिं हरेरर्चां शिवलिङ्गं शिवां तथा। शङ्खं प्रदीपंयन्त्रंचमाणिक्यंहीरकंतथा।३९

यज्ञसूत्रञ्च पुष्पञ्च पुस्तकं तुलसीदलम्। जपमालां पुष्पमालांकर्पूरं च सुवर्णकम्।४०

गोरोचनं चन्दनं च शालग्रामजलं तथा। एतान्वोढुमशक्ताऽहं क्लिष्टा च भगवञ्छृणु।४१

श्रीभगवानुवाच

द्रव्याण्येतानि ये मूढाअर्पयिष्यन्तिसुन्दरि!। यास्यन्तिकालसूत्रंते दिव्यंवर्षशतंत्वयि।४२

इत्येवमुक्त्वा भगवान्विरराम च नारद!। बभूव तेन गर्भेण तेजस्वी मङ्गलग्रहः।४३

पूजां चक्रुः पृथिव्याश्च तेसर्वेचाऽऽज्ञयाहरेः। कण्वशाखोक्तध्यानेनतुष्टुवुश्चस्तवेनते।४४

ददुर्मूलेन मन्त्रेण नैवेद्यादिकमेव च। संस्तुता त्रिषु लोकेषु पूजिता सा बभूव ह।४५

नारद उवाच

किं ध्यानं स्तवनं तस्यामूलमन्त्रं च किम्वद। गूढं सर्वपुराणेषु श्रोतुं कौतुहलं मम।४६

श्रीनारायण उवाच

आदौ च पृथिवी देवी वराहेण च पूजिता। ततोहिब्रह्मणापश्चात्पूजितापृथिवीतदा।४७

ततः सर्वैर्मुनीन्द्रैश्च मनुभिर्मानवादिभिः। ध्यानं च स्तवनं मन्त्रं शृणु वक्ष्यामि नारद!।४८

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वसुधायै स्वाहेत्यनेन मन्त्रेण विष्णुना पूजिता पुरा ।

श्वेतपङ्कजवर्णाभां शरच्चन्द्रनिभाननाम् ।।४९।।

चन्दनोक्षिप्तसर्वाङ्गीं रत्नभूषणभूषिताम्। रत्नाधारां रत्नगर्भां रत्नाकरसमन्विताम्।५०

वह्निशुद्धांशुकाधानांसस्मितांवन्दितांभजे । ध्यानेनाऽनेनसादेवीसर्वैश्चपूजिताऽभवत्।५१

स्तवनं शृणु विप्रेन्द्र! कण्वशाखोक्तमेव च।

श्रीनारायण उवाच

जये! (जय) जये! जलाधारे! जलशीले! जलप्रदे! ।।५२।।
यज्ञसूकरजाये त्वं जयं देहि जयावहे!।मङ्गले! माङ्गलाधारे! मङ्गल्ये! मङ्गलप्रदे!।५३
मङ्गलार्थं मङ्गलेशे! मङ्गलं देहि मे भवे!।सर्वाधारे! च सर्वज्ञे! सर्वशक्तिसमन्विते!।५४
सर्वकामप्रदे! देवि! सर्वेष्टं देहि मे भवे!।पुण्यस्वरूपे! पुण्यानां बीजरूपे! सनातनि!।५५
पुण्याश्रये! पुण्यवतामालयेपुण्यदे! भवे!।सर्वसस्यालये! सर्वसस्याढ्ये! सर्वसस्यदे!।५६
सर्वसस्यहरे काले सर्वसस्यात्मिके! भवे!।भूमे भूमिपसर्वस्वे! भूमिपालपरायणे!।५७
भूमिपानां सुखकरे! भूमिं देहि च भूमिदे!।इदं स्तोत्रं महापुण्यं प्रातरुत्थाययः पठेत्।५८
कोटिजन्मसु स भवेद्बलवान्भूमिपेश्वरः।भूमिदानकृतं पुण्यं लभ्यते पठनाज्जनैः।५६
भूमिदानहरात्पापान्मुच्यते नाऽत्र संशयः।अम्बुवाचीभूकरणपापात्स मुच्यते ध्रुवम्।६०
अन्यकूपे कूपखननपापात्स मुच्यते ध्रुवम्।परभूमिहरात्पापान्मुच्यते नाऽत्र संशयः।६१
भूमौ वीर्यत्यागपापाद् भूमौ दीपादिस्थापनात्।
पापेन मुच्यते सोऽपि स्तोत्रस्य पठनान्मुने।।६२।।
अश्वमेधशतं पुण्यं लभते नाऽत्र संशयः।भूमिदेव्यामहास्तोत्रं सर्वकल्याणकारकम्।६३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायांनवमस्कन्धे भूमिस्तोत्रवर्णनंनाम नवमोऽध्यायः।।६।।

* दशमोऽध्यायः *

पृथिव्यांकृतापराधानांनरकफलाप्तिवर्णनम्

नारद उवाच

भूमिदानकृतं पुण्यं पापं तद्धरणेन च।परभूहरणात्पापं कूपे कूपखनने तथा।१
अम्बुवाच्यांभूखननेवीर्यस्यत्यागएवच।दीपादिस्थापनात्पापंश्रोतुमिच्छामियत्नतः।२
अन्यद्वा पृथिवीजन्यं पापं यत्पृच्छते परम्।यदस्ति तत्प्रतीकारं वद वेदविदाम्वर!।३

श्रीनारायण उवाच

वितस्तिमात्रां भूमिंचयोददातिचभारते।सन्ध्यापूतायविप्रायसयाति शिवमन्दिरम्।४
भूमिंचसर्वसस्याढ्यांब्राह्मणाय ददातिच।भूमिरेणुप्रमाणाब्दमन्तेविष्णुपदेस्थितिः।५
ग्रामं भूमिं च धान्यञ्चब्राह्मणायददातियः।सर्वपापाद्विनिर्मुक्तौचोभौदेवीपुरस्थितौ।६
भूमिदानं च तत्काले यः साधुश्चानुमोदते।स च प्रयातिवैकुण्ठेमित्रगोत्रसमन्वितः।७
स्वदत्तां परदत्तां वा ब्रह्मवृत्तिं हरेत्तु यः।स तिष्ठति कालसूत्रे यावच्चन्द्रदिवाकरौ।८
तत्पुत्रपौत्रप्रभृतिर्भूमिहीनः श्रिया हतः।पुत्रहीनो दरिद्रश्च घोरं याति च रौरवम्।६
गवां मार्गं विनिष्कृष्य यश्च सस्यं ददातिच।दिव्यंवर्षशतंचैवकुम्भीपाकेच तिष्ठति।१०
गोष्ठं तडागं निष्कृष्य मार्गं सस्यंददाति यः।सतिष्ठत्यसिपत्रे चयावदिन्द्राश्चतुर्दश।११
पञ्च पिण्डाननुद्धृत्य परकूपे च स्नाति यः।प्राप्नोति नरकं चैवस्नानंनिष्फलमेवच।१२
कामी भूमौ च रहसि वीर्यत्यागं करोति यः।भूमिरेणुप्रमाणं च वर्षंतिष्ठतिरौरवे।१३
अम्बुवाच्यां भूकरणं यः करोति च मानवः।स याति कृमिदंशं च स्थितिरत्र चतुर्युगम्।१४
परकीये लुप्तकूपे कूपं मूढः करोति यः।पुष्करिण्याञ्च लुप्तायांपुष्करिणींददातियः।१५
सर्वं फलं परस्यैव तप्तकुण्डं व्रजेच्च सः।तत्र तिष्ठति सन्तप्तो यावदिन्द्राश्चतुर्दश।१६

परकीये तडागे च पङ्कमुद्धृत्यचोन्मृजेत्। रेणुप्रमाणवर्षं च ब्रह्मलोके वसेन्नरः।१७
पिण्डं पित्रे भूमिभर्तुर्नप्रदाय च मानवः। श्राद्धं करोति योमूढोनरकंयातिनिश्चितम्।१८
भूमौदीपंयोऽर्पयतिसचान्धः सप्तजन्मसु। भूमौशङ्खंचसंस्थाप्यकुष्ठंजन्मान्तरेलभेत्।१९
मुक्तां माणिक्यहीरौ च सुवर्णं च मणिं तथा। पञ्च संस्थापयेद् भूमौ स चाऽन्धः सप्तजन्मसु।२०
शिवलिङ्गं शिवामर्चां यश्चाऽर्पयति भूतले। शतमन्वन्तरं यावत्कृमिभक्षस्स तिष्ठति।२१
शङ्खंयन्त्रं शिलातोयं पुष्पं च तुलसीदलम्। यश्चार्पयतिभूमौ चसतिष्ठेन्नरके ध्रुवम्।२२
जपमालां पुष्पमालां कर्पूरं रोचनं तथा। यो मूढश्चार्पयेद्भूमौस याति नरकं ध्रुवम्।२३
भूमौचन्दनकाष्ठं च रुद्राक्षं कुशमूलकम्। संस्थाप्य भूमौ नरके वसेन्मन्वतरावधि।२४
पुस्तकं यज्ञसूत्रञ्च भूमौ संस्थापयेन्नरः। न भवेद्विप्रयोनौ च तस्य जन्मान्तरे जनिः।२५
ब्रह्महत्यासमं पापमिह वै लभते ध्रुवम्। ग्रन्थियुक्तं यज्ञसूत्रं पूज्यं च सर्ववर्णकैः।२६
यज्ञं कृत्वा तु यो भूमिं क्षीरेण न हि सिञ्चति। सयातितप्तभूमिंचसन्तप्तः सप्तजन्मसु।२७
भूकम्पे ग्रहणे योहि करोति खननं भुवः। जन्मान्तरे महापापोह्यङ्गहीनो भवेद्ध्रुवम्।२८
भवनं यत्र सर्वेषां भूमिस्तेन प्रकीर्तिता। काश्यपी कश्यपस्येयमचलास्थिररूपतः।२९
विश्वम्भरा धारणाच्चाऽनन्ताऽनन्तस्वरूपतः। पृथिवी पृथुकन्यात्वा द्विस्तृतत्वान्महामुने!।३०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे पृथिव्युपाख्यानेनरकफलप्राप्तिवर्णनंनामदशमोऽध्यायः ।।१०।।

* एकादशोऽध्यायः *

गङ्गोपाख्यानवर्णनम्

नारद उवाच

श्रुतं पृथिव्युपाख्यानमतीव सुमनोहरम्। गङ्गोपाख्यानमधुना वद वेदविदाम्वर!।१
भारते भारतीशापात्सा जगामसुरेश्वरी। विष्णुस्वरूपा परमा स्वयं विष्णुपदीतिच।२
कथं कुत्र युगे केन प्रार्थिता प्रेरिता पुरा। तत्क्रमंश्रोतुमिच्छामिपापघ्नंपुण्यदं शुभम्।३

श्रीनारायण उवाच

राजराजेश्वरः श्रीमान्सगरः सूर्यवंशजः। तस्य भार्या च वैदर्भी शैव्या च द्वे मनोहरे।४
तत्पत्न्यामेकपुत्रश्च बभूव सुमनोहरः। असमञ्ज इति ख्यातः शैव्यायां कुलवर्धनः।५
अन्या चाऽऽराधयामास शङ्करं पुत्रकामुकी। बभूव गर्भस्तस्याश्च हरस्य च वरेणह।६
गते शताब्देपूर्णे चमांसपिण्डंसुषावसा। तद्दृष्ट्वासाशिवंध्यात्वारुरोदोच्चैः पुनः पुनः।७
शम्भुर्ब्राह्मणरूपेण तत्समीपं जगाम ह। चकार सम्विभज्यैतत्पिण्डं षष्टिसहस्रधा।८
सर्वे बभूवुः पुत्राश्च महाबलपराक्रमाः। ग्रीष्ममध्याह्नमार्तण्डप्रभामुष्टकलेवराः।९
कपिलस्य मुनेः शापाद् बभूवुर्भस्मसाच्च ते। राजा रुरोद तच्छ्रुत्वा जगाम गहने वने।१०
तपश्चकाराऽसमञ्जो गङ्गानयनकारणात्। लक्षवर्षं तपस्तप्त्वा ममार कालयोगतः।११
अंशुमांस्तस्य तनयो गङ्गानयनकारणात्। तपः कृत्वा लक्षवर्षं ममार कालयोगतः।१२
भगीरथस्तस्य पुत्रो महाभागवतः सुधीः। वैष्णवो विष्णुभक्तश्च गुणवानजरामरः।१३
तपः कृत्वा लक्षवर्षं गङ्गानयनकारणात्। ददर्श कृष्णं ग्रीष्मस्थसूर्यकोटिसमप्रभम्।१४
द्विभुजं मुरलीहस्तं किशोरं गोपवेषिणम्। गोपालसुन्दरीरूपं भक्तानुग्रहरूपिणम्।१५

स्वेच्छामयं परम्ब्रह्म परिपूर्णतमं प्रभुम्। ब्रह्मविष्णुशिवाद्यैश्च स्तुतंमुनिगणैर्नुतम्।१६
निर्लिप्तं साक्षिरूपं च निर्गुणं प्रकृतेः परम्। ईषद्धास्यप्रसन्नास्यं भक्तानुग्रहकारणम्।१७
वह्निशुद्धांशुकाधानं रत्नभूषणभूषितम्। तुष्टाव दृष्ट्वानृपतिः प्रणम्य च पुनः पुनः।१८
लीलया च वरं प्रापवाञ्छितं वंशतारणम्। कृत्वाच स्तवनं दिव्यंपुलकाङ्कितविग्रहः।१९

श्रीभगवानुवाच

भारतं भारतीशापाद्गच्छशीघ्रं सुरेश्वरि। सगरस्य सुतान्सर्वान्पूतान्कुरु ममाज्ञया।२०
त्वत्स्पर्शवायुना पूता यास्यन्ति मम मन्दिरम्। बिभ्रतो मम मूर्तीश्च दिव्यस्यन्दनगामिनः।२१
मत्पार्षदा भविष्यन्ति सर्वकालं निरामयाः। समुच्छिद्य कर्मभोगान्कृताञ्जन्मनि जन्मनि।२२
कोटिजन्मार्जितं पापं भारतेयत्कृतंनृभिः। गङ्गायावातस्पर्शेननश्यतीति श्रुतौ श्रुतम्।२३
स्पर्शनाद्दर्शनाद्देव्याः पुण्यं दशगुणं ततः। मौसलस्नानमात्रेण सामान्यदिवसेनृणाम्।२४
शतकोटिजन्मपापं नश्यतीति श्रुतौ श्रुतम्। यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यादिकानिच।२५

जन्मसङ्ख्यार्जितान्येव कामतोऽपि कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति मौसलस्नानतो नृणाम्॥२६॥

पुण्याहस्नानतः पुण्यं वेदा नैव वदन्ति च। किञ्चिद्वदन्तितेविप्र फलमेवयथागमम्।२७
ब्रह्मविष्णुशिवाद्याश्चसर्वं नैव वदन्ति च। सामान्यदिवसस्नानसङ्कल्पंशृणुसुन्दरि!।२८
पुण्यं दशगुणंचैव मौसलस्नानतः परम्। ततस्त्रिंशद्गुणं पुण्यंरविसङ्क्रमणे दिने।२९
अमायां चाऽपि तत्तुल्यं द्विगुणंदक्षिणायने। ततो दशगुणंपुण्यं नराणामुत्तरायणे।३०
चातुर्मास्यां पौर्णमास्यामनन्तं पुण्यमेव च। अक्षयायांच तत्तुल्यंचैदद्वेदेनिरूपितम्।३१
असङ्ख्यपुण्यफलदमेतेषुस्नानदानकम्। सामान्यदिवसस्नानाद्दानाच्छतगुणंफलम्।३२
मन्वन्तराद्यायां तिथौ युगाद्यायां तथैव च। माघस्य सितसप्तम्यां भीष्माष्टम्यां तथैव च।३३
अथाप्यशोकाष्टम्यांच नवम्यां चतथाहरेः। ततोऽपिद्विगुणंपुण्यंनन्दायांतवदुर्लभम्।३४
दशहरादशम्यां तु युगाद्यादिसमं फलम्। नन्दासमञ्च वारुण्यांमहत्पूर्वे चतुर्गुणम्।३५
ततश्चतुर्गुणं पुण्यं द्विमहत्पूर्वकेसति। पुण्यं कोटिगुणंचैवसामान्यस्नानतोऽपि यत्।३६
चन्द्रोपरागसमये सूर्ये दशगुणं ततः। पुण्यमर्धोदये काले ततः शतगुणं फलम्।३७
इत्येवमुक्त्वा देवेशो विरराम तयोः पुरः। तमुवाच ततोगङ्गाभक्तिनम्रात्मकन्धरा।३८

गङ्गोवाच

यामिचेद्भारतं नाथ! भारतीशापतः पुरा। तवाऽऽज्ञयाचराजेन्द्र! तपसाचैवसाम्प्रतम्।३९

दास्यन्ति पापिनो मह्यं पापानि यानिकानि च।
तानिमेकेननश्यन्तितमुपायं वदप्रभो॥४०॥

कतिकालं परिमितं स्थितिर्मे तत्र भारते। कदायास्यामि देवेश तद्विष्णोःपरमंपदम्।४१
ममाऽन्यद्वाञ्छितं यद्यत्सर्वं जानासि सर्ववित्। सर्वान्तरात्मन्सर्वज्ञतदुपायंवदप्रभो।४२

श्रीभगवानुवाच

जानामि वाञ्छितं गङ्गे तव सर्वसुरेश्वरि!। पतिस्ते द्रवरूपायालवणोदोभविष्यति।४३
स ममांशस्वरूपश्च त्वंचलक्ष्मीस्वरूपिणी। विदग्धायाविदग्धेनसङ्गमोगुणवान्भुवि।४४
यावत्यः सन्तिनद्यश्चभारत्याद्याश्चभारते। सौभाग्यात्वंचतास्वेव लवणोदस्य सौरते।४५
अद्यप्रभृति देवेशि कलेः पञ्चसहस्रकम्। वर्षं स्थितिस्ते भारत्याः शापेनभारतेभुवि।४६

नित्यं त्वमब्धिना सार्धं करिष्यसि रहो रतिम् ।
त्वमेव रसिका देवि! रसिकेन्द्रेण संयुता ।।४७।।
त्वांस्तोष्यन्तिचस्तोत्रेणभगीरथकृतेनच । भारतस्थाजनाः सर्वेपूजयिष्यन्तिभक्तितः ।४८
कण्वशाखोक्तध्यानेन ध्यात्वा त्वां पूजयिष्यति ।
यः स्तौति प्रणमेन्नित्यं सोऽश्वमेधफलं लभेत् ।।४९।।
गङ्गागङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि । मुच्यते सर्वपापेभ्योविष्णुलोकंसगच्छति ।५०
सहस्रपापिनां स्नानाद्यत्पापं ते भविष्यति । प्रकृतेर्भक्तसंस्पर्शादेवतद्धिविनङ्क्ष्यति ।५१
पापिनां तु सहस्राणांशवस्पर्शेनयत्त्वयि । तन्मन्त्रोपासकस्नानात्तदघञ्चविनङ्क्ष्यति ।५२
तत्रैव त्वमधिष्ठानं करिष्यस्यघमोचनम् । सार्धंसरिद्भिः श्रेष्ठाभिःसरस्वत्यादिभिः शुभे! ।५३
तत्तुतीर्थम्भवेत्सद्यो यत्र तद्गुणकीर्तनम् । त्वद्रेणुस्पर्शमात्रेण पूतोभवति पातकी ।५४
रेणुप्रमाणवर्षञ्च देवीलोकेवसेद्ध्रुवम् । ज्ञानेन त्वयिये भक्त्या मन्नामस्मृतिपूर्वकम् ।५५
समुत्सृजन्तिप्राणांश्च तेगच्छन्ति हरेः परम् । पार्षदप्रवरास्तेचभविष्यन्तिहरेश्चिरम् ।५६
लयम्प्राकृतिकंतेचद्रक्ष्यन्तिचाप्यसंख्यकम् । मृतस्यबहुपुण्येनतच्छवंत्वयिविन्यसेत् ।५७
प्रयातिसचवैकुण्ठंयावदह्नः स्थितिस्त्वयि । कायव्यूहंततः कृत्वा भोजयित्वास्वकर्मकम् ।५८
तस्मैददामिसारूप्यंकरोमितंचपार्षदम् । अज्ञानीत्वज्जलस्पर्शाद्यदि प्राणान्समुत्सृजेत् ।५९
तस्मै ददामि सालोक्यं करोमि तञ्च पार्षदम् । अन्यत्र वा त्यजेत्प्राणांस्त्वन्नामस्मृतिपूर्वकम् ।६०
तस्मै ददामि सालोक्यं यावद्वै ब्रह्मणो वयः । अन्यत्र वा त्यजेत्प्राणांस्त्वन्नामस्मृतिपूर्वकम् ।६१
तस्मैददामि सारूप्यमसंख्यंप्राकृतंलयम् । रत्नेन्द्रसारनिर्माणयानेन सह पार्षदैः ।६२
सद्यः प्रयातिगोलोकं ममतुल्योभवेद्ध्रुवम् । तीर्थेऽप्यतीर्थे मरणेविशेषोनास्तिकश्चन ।६३
मन्मन्त्रोपासकानान्तुनित्यंनैवेद्यभोजिनाम् । पूतंकर्तुंस शक्तो हिलीलयाभुवनत्रयम् ।६४
रत्नेन्द्रसारयानेन गोलोकंसम्प्रयान्तिच । मद्भक्ताबान्धवायेषां तेऽपिपश्वादयोऽपिहि ।६५
प्रयान्ति रत्नयानेन गोलोकंचातिदुर्लभम् । यत्र यत्र स्मृतास्तेच ज्ञानेनज्ञानिनःसति ।६६
जीवन्मुक्ताश्च ते पूता मद्भक्तेः सन्निधानतः । इत्युक्त्वा श्रीहरिस्तांश्च प्रत्युवाच भगीरथम् ।६७
स्तुहि गङ्गामिमांभक्त्यापूजाञ्चकुरुसाम्प्रतम् ।
भगीरथस्तांतुष्टावपूजयामासभक्तितः ।।६८।।
कौथुमोक्तेन ध्यानेन स्तोत्रेणापि पुनः पुनः । प्रणनामच श्रीकृष्णंपरमात्मानमीश्वरम् ।६९
भगीरथश्च गङ्गा च सोऽन्तर्धानञ्चकार ह ।

नारद उवाच

केन ध्यानेन स्तोत्रेण केन पूजाक्रमेण च ।।७०।।
पूजाञ्चकार नृपतिर्वद वेदविदाम्वर! ।

श्रीनारायण उवाच

स्नात्वा नित्यक्रियां कृत्वा धृत्वा धौते च वाससी ।।७१।।
सम्पूज्यदेवषट्कंचसंयतो भक्तिपूर्वकम् । गणेशञ्चदिनेशं च वह्निंविष्णुंशिवंशिवाम् ।७२
सम्पूज्यदेवषट्कं च सोऽधिकारीचपूजने । गणेशं विघ्ननाशाय आरोग्यायदिवाकरम् ।७३
वह्निंशौचाय विष्णुञ्चलक्ष्म्यर्थम्पूजयेन्नरः । शिवंज्ञानायज्ञानेशंशिवांच मुक्तिसिद्धये ।७४
सम्पूज्यैतांल्लभेत्प्राज्ञो विपरीतमतोऽन्यथा । दध्यावनेनध्यानेन तद्ध्यानंशृणु नारद! ।७५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे गङ्गोपाख्यानवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ।।११।।

* द्वादशोऽध्यायः *

कण्वशाखोक्तगङ्गाध्यानस्तोत्रादिवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

ध्यानञ्च कण्वशाखोक्तंसर्वपापप्रणाशनम्। श्वेतपङ्कजवर्णाभांगङ्गां पापप्रणाशिनाम्।१
कृष्णविग्रहसम्भूतांकृष्णतुल्याम्परांसतीम् ।वह्निशुद्धांशुकाधानांरत्नभूषणभूषिताम्।२
शरत्पूर्णेन्दुशतकमृष्टशोभाकरां पराम्।ईषद्धास्यप्रसन्नास्यांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम्।३
नारायणप्रियां शान्तां तत्सौभाग्यसमन्विताम् ।
विभ्रतीं कबरीभारं मालतीमाल्यसंयुतम् ।।४।।
सिन्दूरबिन्दुललितंसार्धं चन्दनबिन्दुभिः।कस्तूरीपत्रकंगण्डेनानाचित्रसमन्वितम्।५
पक्वबिम्बविनिन्द्याच्छचार्वोष्ठपुटमुत्तमम् ।मुक्तापङ्क्तिप्रभामुष्टदन्तपङ्क्तिमनोरमम्।६
सुचारुवक्त्रनयनं सकटाक्षं मनोहरम्।कठिनं श्रीफलाकारं स्तनयुग्मं च बिभ्रतीम्।७
बृहच्छ्रोणिं सुकठिनां रम्भास्तम्भविनिन्दिताम् ।
स्थलपद्मप्रभामुष्टपदपद्मयुगं वरम् ।।८।।
रत्नपादुकसंयुक्तं कुङ्कुमाक्तं सयावकम्।देवेन्द्रमौलिमन्दारमकरन्दकणारुणम् ।९
सुरसिद्धमुनीन्द्रैश्च दत्तार्घसंयुतं सदा।तपस्विमौलिनिकरभ्रमरश्रेणिसंयुतम् ।१०
मुक्तिप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वभोगदम्।वरांवरेण्यां वरदां भक्तानुग्रहकारिणीम्।११
श्रीविष्णोःवरदात्रीञ्च भजे विष्णुपदीं सतीम्।इत्यनेनैव ध्यानेन ध्यात्वा त्रिपथगां शुभाम्।१२
दत्त्वा सम्पूजयेद्ब्रह्मन्नुपचाराणि षोडश।आसनं पाद्यमर्घञ्च स्नानीयंचाऽनुलेपनम्।१३
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं शीतलञ्जलम्।वसनं भूषणं माल्यं गन्धमाचमनीयकम्।१४
मनोहरं सुतल्पञ्च देयान्येतानि षोडश।दत्त्वाभक्त्याच प्रणमेत्संस्तूयसम्पुटाञ्जलिः।१५
सम्पूज्यैवम्प्रकारेण सोऽश्वमेधफलं लभेत् ।

नारद उवाच

श्रोतुमिच्छामि देवेश! लक्ष्मीकान्त! जगत्पते! ।।१६।।
विष्णोर्विष्णुपदीस्तोत्रं पापघ्नं पुण्यकारकम् ।

श्रीनारायण उवाच

शृणु नारद! वक्ष्यामि पापघ्नं पुण्यकारकम् ।।१७।।
शिवसङ्गीतसम्मुग्धश्रीकृष्णाङ्गसमुद्भवाम् ।राधाङ्गद्रवसंयुक्तां तां गङ्गांप्रणमाम्यहम्।१८
यज्जन्म सृष्टेरादौचगोलोकेरासमण्डले।सन्निधाने शङ्करस्य तां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।१९
गोपैर्गोपीभिराकीर्णे शुभेराधामहोत्सवे।कार्तिकीपूर्णिमायाञ्चतांगङ्गांप्रणमाम्यहम्।२०
कोटियोजनविस्तीर्णादैर्घ्येलक्षगुणाततः ।समावृतायागोलोकंतांगङ्गांप्रणमाम्यहम्।२१
षष्टिलक्षयोजना या ततो दैर्घ्ये चतुर्गुणा।समावृताया वैकुण्ठेतांगङ्गांप्रणमाम्यहम्।२२
त्रिंशल्लक्षयोजना या दैर्घ्ये पञ्चगुणा ततः।आवृता ब्रह्मलोकेयातां गङ्गांप्रणमाम्यहम्।२३
त्रिंशल्लक्षयोजना या दैर्घ्ये चतुर्गुणाततः।आवृता शिवलोकेयातां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।२४
लक्षयोजनविस्तीर्णा दैर्घ्ये सप्तगुणा ततः।आवृता ध्रुवलोकेयातांगङ्गां प्रणमाम्यहम्।२५
लक्षयोजनविस्तीर्णादैर्घ्ये पञ्चगुणा ततः।आवृताचन्द्रलोकेयातां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।२६
षष्टिसहस्रयोजनायादैर्घ्ये दशगुणा ततः।आवृता सूर्यलोकेया तां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।२७
लक्षयोजनविस्तीर्णा दैर्घ्ये पञ्चगुणा ततः।आवृतायातपोलोकेतांगङ्गांप्रणमाम्यहम्।२८

सहस्त्रयोजनायामा दैर्घ्ये दशगुणा ततः। आवृता जनलोकेया तां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।२९
दशलक्षयोजनाया दैर्घ्ये पञ्चगुणा ततः। आवृता यामहर्लोके तां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।३०
सहस्रयोजनायामा दैर्घ्ये शतगुणा ततः। आवृता या चकैलासेतां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।३१
शतयोजनविस्तीर्णा दैर्घ्ये दशगुणा ततः। मन्दाकिनीयेन्द्रलोकेतांगङ्गांप्रणमाम्यहम्।३२
पाताले भोगवती चैव विस्तीर्णा दशयोजना। ततो दशगुणा दैर्घ्ये तां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।३३
क्रोशैकमात्रविस्तीर्णाततःक्षीणा चकुत्रचित्। क्षितौ चालकनन्दा या तां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।३४
सत्येया क्षीरवर्णा च त्रेतायामिन्दुसन्निभा। द्वापरेचन्दनाभायातांगङ्गांप्रणमाम्यहम्।३५
जलप्रभा कलौ या च नाऽन्यत्र पृथिवीतले। स्वर्गे च नित्यं क्षीराभा तां गङ्गां प्रणमाम्यहम्।३६
यत्तोयकणिकास्पर्शे पापिनांज्ञानसम्भवम्। ब्रह्महत्यादिकं पापंकोटिजन्मार्जितंदहेत्।३७
इत्येवं कथिता ब्रह्मन्गङ्गापद्यैकविंशतिः। स्तोत्ररूपं च परमं पापघ्नं पुण्यजीवनम्।३८
नित्यं यो हि पठेद्भक्त्या सम्पूज्य च सुरेश्वरीम्। सोऽश्वमेधफलं नित्यं लभते नाऽत्र संशयः।३९
अपुत्रो लभतेपुत्रंभार्याहीनोलभेत्स्त्रियम्। रोगात्प्रमुच्यतेरोगीबन्धान्मुक्तोभवेद्ध्रुवम्।४०
अस्पष्टकीर्तिः सुयशामूर्खोभवतिपण्डितः। यः पठेत्प्रातरुत्थायगङ्गास्तोत्रमिदंशुभम्।४१
शुभं भवेच्च दुःस्वप्ने गङ्गास्नानफलं लभेत्।

श्रीनारायण उवाच

स्तोत्रेणाऽनेन गङ्गाञ्च स्तुत्वाचैव भगीरथः ।।४२।।
जगाम तां गृहीत्वा चयत्रनष्टाश्च सागराः। वैकुण्ठंते ययुस्तूर्णंगङ्गायाः स्पर्शवायुना।४३
भगीरथेन सा नीता तेनभागीरथीस्मृता। इत्येवंकथितं सर्वंगङ्गोपाख्यानमुत्तमम्।४४
पुण्यदं मोक्षदं सारं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।

नारद उवाच

कथं गङ्गा त्रिपथगा जाता भुवनपावनी ।।४५।।
कुत्र वा केन विधिना तत्सर्वं वद मे प्रभो!। तत्रस्थाश्च जना येयेतेचकिंचक्रुरुत्तमम्।४६
एतत्सर्वं तु विस्तीर्णं कृत्वा वक्तुमिहाऽर्हसि।

श्रीनारायण उवाच

कार्तिक्यां पूर्णिमायां तु राधायाः सुमहोत्सवः ।।४७।।
कृष्णः सम्पूज्यतांराधामुवासरासमण्डले। कृष्णेन पूजितांतां तुसम्पूज्यहृष्टमानसः।४८
ऊषुर्ब्रह्मादयः सर्वे ऋषयः शौनकादयः। एतस्मिन्नन्तरे कृष्णसङ्गीता च सरस्वती।४९
जगौसुन्दरतालेन वीणया च मनोहरम्। तुष्टो ब्रह्मा ददौ तस्यै रत्नेन्द्रसारहारकम्।५०
शिवोमणीन्द्रसारं तु सर्वब्रह्माण्डदुर्लभम्। कृष्णः कौस्तुभरत्नंचसर्वरत्नात्परंवरम्।५१
अमूल्यरत्ननिर्माणं हारसारं च राधिका। नारायणश्चभगवान्ददौ मालां मनोहराम्।५२
अमूल्यरत्ननिर्माणं लक्ष्मीः कनककुण्डलम्। विष्णुमाया भगवतीमूलप्रकृतिरीश्वरी।५३
दुर्गानारायणीशाना ब्रह्मभक्तिं सुदुर्लभाम्। धर्मबुद्धिं च धर्मश्च यशश्च विपुलं भवे।५४
वह्निशुद्धांशुकं वह्निर्वायुश्च मणिनूपुरान्। एतस्मिन्नन्तरेशम्भुर्ब्रह्मणाप्रेरितो मुहुः।५५
जगौ श्रीकृष्णसङ्गीतं रासोल्लाससमन्वितम्। मूर्च्छाम्प्रापुः सुराः सर्वे चित्रपुत्तलिका यथा।५६
कष्टेन चेतनां प्राप्य ददृशू रासमण्डले। स्थलं सर्वं जलाकीर्णं राधाकृष्णविहीनकम्।५७
अत्युच्चैः रुरुदुः सर्वेगोपागोप्यः सुराद्विजाः। ध्यानेनब्रह्माबुबुधेसर्वंतीर्थमभीप्सितम्।५८

गतश्च राधया सार्धं श्रीकृष्णो द्रवतामिति। ततोब्रह्मादयः सर्वे तुष्टुवुः परमेश्वरम्।५९
स्वमूर्तिं दर्शयविभो वाञ्छितं वरमेवनः। एतस्मिन्नन्तरेतत्र वाग्बभूवाऽशरीरिणी।६०
तामेव शुश्रुवुः सर्वे सुव्यक्तांमधुरान्विताम्। सर्वात्माऽहमियंशक्तिर्भक्तनुग्रह विग्रहा।६१
ममाप्यस्याश्चदेहेन कर्त्तव्यं च किमावयोः। मनवो मानवाः सर्वे मुनयश्चैव वैष्णवाः।६२
मन्मन्त्रपूता मां द्रष्टुमागमिष्यन्ति मत्पदम्। मूर्तिं द्रष्टुं च सुव्यक्तां यदीच्छत सुरेश्वराः!।६३
करोतुशम्भुस्तत्रैवं मदीयं वाक्यपालनम्। स्वयं विधातस्त्वंब्रह्मन्नाज्ञांकुरुजगद्गुरुम्।६४
कर्तुं शास्त्रविशेषं च वेदाङ्गं सुमनोहरम्। अपूर्वमन्त्रनिकरैः सर्वाभीष्टफलप्रदैः।६५
स्तोत्रैश्च निकरैर्ध्यानैर्युतंतं पूजाविधिक्रमैः। मन्मन्त्रकवचस्तोत्रंकृत्वायत्नेनगोपनम्।६६
भवन्ति विमुखा येन जना मां तत्करिष्यति। सहस्रेषु शतेष्वेको मन्मन्त्रोपासको भवेत्।६७
जना मन्मन्त्रपूताश्च गमिष्यन्ति च मत्पदम्। अन्यथा न भविष्यन्ति सर्वे गोलोकवासिनः।६८
निष्फलं भविता सर्वं ब्रह्माण्डं चैव ब्रह्मणः। जनाः पञ्चप्रकाराश्चयुक्ताः स्रष्टुं भवे भवे।६९
पृथिवीवासिनः केचित्केचित्स्वर्गनिवासिनः। इदं कर्तुं महहादेवः करोतिदेवसंसदि।७०
प्रतिज्ञां सुदृढांसद्यस्ततो मूर्तिं च द्रक्ष्यति। इत्येवमुक्त्वा गगने विरराम सनातनः।७१
तच्छ्रुत्वा जगतां धाता तमुवाच शिवं मुदा। ब्रह्मणो वचनंश्रुत्वाज्ञानेशोज्ञानिनांवरः।७२
गङ्गातोयं करे कृत्वा स्वीकारं च चकार सः। संयुक्तंविष्णुमायाया मन्त्रोघैः शास्त्रमुत्तमम्।७३
वेदसारं करिष्यामि प्रतिज्ञापालनाय च। गङ्गातोयमुपस्पृश्य मिथ्या यदि वदेज्जनः।७४
स याति कालसूत्रं च यावद्वै ब्रह्मणोवयः। इत्युक्ते शङ्करे ब्रह्मन्गोलोके सुरसंसदि।७५
आविर्बभूव श्रीकृष्णोराधयासहितस्ततः। तं सुदृष्ट्वा च संहृष्टास्तुष्टुवुः पुरुषोत्तमम्।७६
परमानन्दपूर्णाश्च चक्रुश्च पुनरुत्सवम्। कालेन शम्भुर्भगवान्मुक्तिदीपं चकार सः।७७
इत्येवं कथितं सर्वं सुगोप्यं च सुदुर्लभम्। स एव द्रवरूपा सा गङ्गागोलोकसम्भवा।७८
राधाकृष्णाङ्गसम्भूताभुक्तिमुक्तिफलप्रदा। स्थानेस्थानेस्थापितासाकृष्णेनचपरमात्मना।७९
कृष्णस्वरूपा परमा सर्वब्रह्माण्डपूजिता।।८०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे गङ्गोपाख्यानं नाम द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

* त्रयोदशोऽध्यायः *

गङ्गोपाख्यानवर्णनम्

नारद उवाच

कलेः पञ्चसहस्राब्दे समतीते सुरेश्वर!। क्व गता सा महाभाग! तन्मेव्याख्यातुमर्हसि।१

श्रीनारायण उवाच

भारतं भारतीशापात्समागत्येश्वरेच्छया। जगाम तत्र वैकुण्ठे शापान्ते पुनरेव सा।२
भारती भारतं त्यक्त्वा तञ्जगाम हरेः पदम्। पद्मावती च शापान्ते गङ्गा सा चैवनारद।३
गङ्गासरस्वतीलक्ष्मीश्चैतास्तिस्रः प्रियाहरेः। तुलसीसहिताब्रह्मंश्चतस्रःकीर्तिताः श्रुतौ।४

नारद उवाच

केनोपायेन सादेवीविष्णुपादाब्जसम्भवा। ब्रह्मकमण्डलुस्थाच श्रुताशिवप्रियाचसा।५
बभूव सा मुनिश्रेष्ठ! गङ्गा नारायणप्रिया। अहो केन प्रकारेणतन्मे व्याख्यातुमर्हसि।६

श्रीनारायण उवाच

पुरा बभूव गोलोके सा गङ्गा द्रवरूपिणी। राधाकृष्णाङ्गसम्भूतातदंशातत्स्वरूपिणी।७
द्रवाधिष्ठातृदेवी या रूपेणाऽप्रतिमा भुवि। नवयौवनसम्पन्ना सर्वाऽऽभरणभूषिता।८
शरन्मध्याह्नपद्मास्या सस्मिता सुमनोहरा। तप्तकाञ्चवर्णाभा शरच्चन्द्रसमप्रभा।९
स्निग्धाप्रभाऽतिसुस्निग्ध शुद्धसत्त्वस्वरूपिणी। सुपीनकठिनश्रोणिः सुनितम्बयुगम्बरा।१०
पीनोन्नतं सुकठिनं स्तनयुग्मं सुवर्तुलम्। सुचारु नेत्रयुगलं सुकटाक्षं सुवङ्क्रिमम्।११
वङ्क्रिमंकबरीभारंमालतीमाल्यसंयुतम्। सिन्दूरबिन्दुललितं सार्धंचन्दनबिन्दुभिः।१२
कस्तूरीपत्रिकायुक्तं गण्डयुग्मं मनोरमम्। बन्धूककुसुमाकारमधरोष्ठं च सुन्दरम्।१३
पक्वदाडिमबीजाभदन्तपङ्क्तिसमुज्वलम्। वाससी वह्निशुद्धे च नीवीयुक्तेचबिभ्रती।१४
सा सकामा कृष्णपार्श्वे समुवास सुलज्जिता। वाससा मुखमाच्छाद्य लोचनाभ्यां विभोर्मुखम्।१५
निमेषरहिताभ्यां च पिबन्ता सततं मुदा। प्रफुल्लवदना हर्षान्नवसङ्गमलालसा।१६
मूर्च्छिता प्रभुरूपेण पुलकाङ्कितविग्रहा। एतस्मिन्नन्तरे तत्र विद्यमाना च राधिका।१७
गोपीत्रिंशत्कोटियुक्ता चन्द्रकोटिसमप्रभा। कोपेनाऽऽरक्तपद्मास्या रक्तपङ्कजलोचना।१८
पीताचम्पकवर्णाभा गजेन्द्रमन्दगामिनी। अमूल्यरत्ननिर्माणनानाभूषणभूषिता।१९
अमूल्यरत्नखचितममूल्यं वह्निशौचकम्। पीतवस्त्रस्य युगलं नीवीयुक्तं च बिभ्रती।२०
स्थलपद्मप्रभामुष्टं कोमलं च सुरञ्जितम्। कृष्णदत्तार्घ्यसंयुक्तंविन्यसन्ती पदाम्बुजम्।२१
रत्नेन्द्रसारनिर्माणविमानादवरुह्य सा। सेव्यमाना च ऋषिभिः श्वेतचामरवायुना।२२
कस्तूरीबिन्दुभिर्युक्तं चन्दनेनसमन्वितम्। दीप्तदीपप्रभाकारं सिन्दूरबिन्दुशोभितम्।२३
दधती भालमध्ये च सीमन्ताधः स्थलोज्वले। पारिजातप्रसूनानांमालायुक्तं सुवङ्क्रिमम्।२४
सुचारुकबरीभारं कम्पयन्ती सुकम्पिता। सुचारुरागसंयुक्तमौष्ठं कम्पयती रुषा।२५
गत्वोवास कृष्णपार्श्वे रत्नसिंहासने शुभे। सखीनां च समूहैश्चपरिपूर्णाविभोः प्रिया।२६
तांदृष्ट्वाचसमुत्तस्थौकृष्णः सादरपूर्वकम्। सम्भाष्यमधुरालापैः सस्मितश्च ससम्भ्रमः।२७
प्रणेमुरतिसन्त्रस्ता गोपा नम्राऽऽत्मकन्धराः। तुष्टुवुस्ते च भक्त्या च तुष्टाव परमेश्वरः।२८
उत्थाय गङ्गा सहसा स्तुतिं बहुचकार सा। कुशलं परिपप्रच्छ भीताऽतिविनयेन च।२९
नम्रभागस्थिता त्रस्ता शुष्ककण्ठोष्ठतालुका। ध्यानेनशरणायत्ताश्रीकृष्णचरणाम्बुजे।३०
तां हृत्पद्मस्थितां कृष्णोभीतायै चाऽभयंददौ। बभूवस्थिरचित्तासासर्वेश्वरवरेण च।३१
ऊर्ध्वसिंहासनस्थांचराधां गङ्गाददर्शसा। सुस्निग्धांसुखदृश्यांचज्वलन्तींब्रह्मतेजसा।३२
असंख्यब्रह्मणः कर्त्रीमादिसृष्टेःसनातनीम्। सदाद्वादशवर्षीयांकन्याऽभिनवयौवनाम्।३३
विश्ववृन्दे निरुपमां रूपेणच गुणेन च। शान्तांकान्तामनन्तांतामाद्यन्तरहितांसतीम्।३४
शुभां सुभद्रां सुभगां स्वामिसौभाग्यसंयुताम्। सौन्दर्यसुन्दरीं श्रेष्ठां सर्वासु सुन्दरीषु च।३५
कृष्णार्धाङ्गां कृष्णसमां तेजसा वयसा त्विषा। पूजितां च महालक्ष्मीं लक्ष्म्या लक्ष्मीश्वरेण च।३६
प्रच्छाद्यमानां प्रभया सभामीशस्य सुप्रभाम्। सखीदत्तञ्च ताम्बूलं भुक्तवन्तीञ्च दुर्लभम्।३७
अजन्यांसर्वजननांधन्यांमान्यांचमानिनीम्। कृष्णप्राणाधिदेवीञ्चप्राणप्रियतमांरमाम्।३८
दृष्ट्वा रासेश्वरीं तृप्तिं न जगाम सुरेश्वरी। निमेषरहिताभ्याञ्चलोचनाभ्यांपपौच ताम्।३९
एतस्मिन्नन्तरे राधा जगदीशमुवाच सा। वाचा मधुरयाशान्ताविनीतासस्मितामुने।४०

राधोवाच

केयं प्राणेश! कल्याणी सस्मिता त्वन्मुखाम्बुजम् ।
पश्यन्ती सस्मितं पार्श्वे सकामा वक्रलोचना ।।४१।।

मूर्च्छां प्राप्नोति रूपेण पुलकाङ्कितविग्रहा। वस्त्रेण मुखमाच्छाद्यनिराक्षन्तीपुनः पुनः ।४२
त्वंचापितांसंनिरीक्ष्यसकामः सस्मितःसदा। मयिजीवतिगोलोकेभूतादुर्वृत्तिरीदृशी ।४३
त्वमेव चैव दुर्वृत्तं वारं वारं करोषिच। क्षमांकरोमिप्रेम्णाचस्त्रीजातिः स्निग्धमानसा।४४
संगृह्येमां प्रियामिष्टां गोलोकाद्गच्छलम्पट। अन्यथा न हितेभद्रंभविष्यतिव्रजेश्वर।४५
दृष्टस्त्वं विरजायुक्तो मयाचन्दनकानने। क्षमाकृतामया पूर्वं सखीनां वचनादहो।४६
त्वया मच्छब्दमात्रेण तिरोधानं कृतं पुरा। देहं तत्याज विरजा नदीरूपा बभूव सा।४७
कोटियोजनविस्तीर्णाततोदैर्घ्येचतुर्गुणा । अद्यापिविद्यमानासातवसत्कीर्तिरूपिणी।४८
गृहं मयि गतायां च पुनर्गत्वा तदन्तिके। उच्चै रुरोद विरजे विरजे चेति संस्मरन्।४६
तदातोयात्समुत्थायसायोगात्सिद्धयोगिनी। सालङ्कारामूर्तिमतीददौतुभ्यंचदर्शनम्।५०
ततस्तां च समाक्षिप्य वीर्याधानं कृतं त्वया। ततो बभूवुस्तस्यांचसमुद्राः सप्तएवच।५१
दृष्टस्त्वं शोभया गोप्या युक्तश्चपककानने। सद्यो मच्छब्दमात्रेण तिरोधानं कृतं त्वया।५२
शोभा देहं परित्यज्य जगाम चन्द्रमण्डले। ततस्तस्याः शरीरंचस्निग्धंतेजोबभूवह।५३
सम्विभज्य त्वया दत्तं हृदयेनविदूयता। रत्नायकिञ्चित्स्वर्णायकिञ्चिन्मणिवरायच।५४

किञ्चित्स्त्रीणां मुखाब्जेभ्यः किञ्चिद्राज्ञे च किञ्चन ।
किञ्चित्किसलेभ्यश्च पुष्पेभ्यश्चाऽपि किञ्चन ।।५५।।

किञ्चित्फलेभ्यःपक्वेभ्यःसस्येभ्यश्चापिकिञ्चन। नृपदेवगृहेभ्यश्चसंस्कृतेभ्यश्चकिञ्चन ।५६
किञ्चिन्नूतनपत्रेभ्योदुग्धेभ्यश्चाऽपि किञ्चन। दृष्टस्त्वं प्रभया गोप्यायुक्तोवृन्दावनेवने।५७
सद्यो मच्छब्दमात्रेण तिरोधानंकृतं त्वया। प्रभादेहं परित्यज्य जगाम सूर्यमण्डले।५८
ततस्तस्याः शरीरं च तीव्रं तेजो बभूव ह। सम्विभज्यत्वया दत्तं प्रेम्णाप्ररुदतापुरा।५६
विसृष्टं चक्षुषोः कृष्ण! लज्जया मद्भयेन च। हुताशनायकिञ्चिच्च यक्षेभ्यश्चापिकिञ्चन।६०
किञ्चित्पुरुषसिंहेभ्यो देवेभ्यश्चाऽपि किञ्चन। किञ्चिद्विष्णुजनेभ्यश्च नागेभ्योऽपि च किञ्चन।६१
ब्राह्मणेभ्यो मुनिभ्यश्च तपस्विभ्यश्च किञ्चन। स्त्रीभ्यःसौभाग्ययुक्ताभ्यो यशस्विभ्यश्चकिञ्चन।६२
तत्तु दत्त्वा चसर्वेभ्यः पूर्वंप्ररुदितंत्वया। शान्तिगोप्यायुतस्त्वंचदृष्टोऽसिरासमण्डले।६३
वसन्तेपुष्पशय्यायां माल्यवांश्चन्दनोक्षितः। रत्नप्रदीपैर्युक्ते च रत्ननिर्माणमन्दिरे।६४
रत्नभूषणभूषाढ्यो रत्नभूषितया सह। तया दत्तं च च ताम्बूलं भुक्तवांश्च पुराविभो।६५
सद्यो मच्छब्दमात्रेणतिरोधानंकृतंत्वया। शान्तिर्देहंपरित्यज्यभियालीनात्वयिप्रभो।६६
ततस्तस्याः शरीरञ्च गुण श्रेष्ठं बभूव ह। सम्विभज्य त्वयादत्तं प्रेम्णा प्ररुदतापुरा।६७
विश्वेतुविपिनकिञ्चिद्ब्रह्मणेचमयिप्रभो । शुद्धसत्त्वस्वरूपायैकिञ्चिल्लक्ष्म्यैपुराविभो।६८
त्वन्मन्त्रोपासकेभ्यश्चशाक्तेभ्यश्चापि किञ्चन। तपस्विभ्यश्च धर्माय धर्मिष्ठेभ्यश्च किञ्चन।६६
मया पूर्वं च त्वं दृष्टो गोप्या च क्षमया सह। सुवेषयुक्तोमालावान्गन्धचन्दनचर्चितः।७०
रत्नभूषितया गन्धचन्दनोक्षितया सह। सुखेन मूर्च्छितस्तल्पे पुष्पचन्दनचर्चिते।७१
श्लिष्टो निद्रितया सद्यः सुखेन नवसङ्गमात्। मयाप्रबोधिता साचभवांश्चस्मरणंकुरु।७२

गृहीतं पीतवस्त्रञ्च मुरली च मनोहरा। वनमालाकौतुभश्चाप्यमूल्यं रत्नकुण्डलम्।७३
पश्चात्प्रदत्तं प्रेम्णा च सखीनां वचनादहो। लज्जया कृष्णवर्णोऽभूद्भवान्पापेनयः प्रभो।७४
क्षमा देहं परित्यज्य लज्जया पृथिवीं गता। ततस्तस्याः शरीरञ्च गुणश्रेष्ठं बभूवह।७५
सम्विभज्य त्वया दत्तं प्रेम्णाप्ररुदता पुनः। किञ्चिद्दत्तंविष्णवेचवैष्णवेभ्यश्चकिञ्चन।७६
धार्मिकेभ्यश्चधर्मायदुर्बलेभ्यश्चकिञ्चन। तपस्विभ्योऽपिदेवेभ्यः पण्डितेभ्यश्चकिञ्चन।७७
एतत्ते कथितं सर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि। त्वद्गुणं चैव बहुशोनजानामिपरंप्रभो।७८
इत्येवमुक्त्वा साराधारक्तपङ्कजलोचना। गङ्गांवक्तुंसमारेभेनम्रास्यांलज्जितांसतीम्।७९
गङ्गा रहस्यं विज्ञाय योगेन सिद्धयोगिनी। तिरोभूय सभामध्येस्वजलं प्रविवेशसा।८०
राधा योगेनविज्ञायसर्वत्राऽवस्थिताञ्च ताम्। पानंकर्तुंसमारेभेगण्डूषात्सिद्धयोगिनी।८१
गङ्गा रहस्यं विज्ञाय योगेन सिद्धयोगिनी। श्रीकृष्णचरणाम्भोजे विवेशशरणं ययौ।८२
गोलोके सा च वैकुण्ठे ब्रह्मलोकादिके तथा। ददर्श राधा सर्वत्र नैव गङ्गा ददर्श सा।८३
सर्वत्र जलशून्यं च शुष्कपङ्कञ्च गोलकम्। जलजन्तुसमूहैश्च मृतदेहैः समन्वितम्।८४
ब्रह्मविष्णुशिवानन्तधर्मेन्द्रेन्दुदिवाकराः। मनवो मुनयः सर्वे देवसिद्धतपस्विनः।८५
गोलोकञ्च समाजग्मुः शुष्ककण्ठोष्ठतालुकाः। सर्वे प्रणेमुर्गोविन्दं सर्वेशंप्रकृतेः परम्।८६
वरं वरेण्यं वरदं वरिष्ठं वरकारणम्। गोपिकागोपवृन्दानां सर्वेषां प्रवरं प्रभुम्।८७
निरीहं च निराकारंनिर्लिप्तं च निराश्रयम्। निर्गुणञ्च निरुत्साहंनिर्विकारंनिरञ्जनम्।८८
स्वेच्छामयंचसाकारं भक्तानुग्रहकारकम्। सत्त्वस्वरूपं सत्यंशंसाक्षिरूपंसनातनम्।८९
परं परेशं परमं परमात्मामनीश्वरम्। प्रणम्य तुष्टुवुः सर्वे भक्तिनम्रात्मकन्धराः।९०
सगद्गदाः साश्रुनेत्राः पुलकाङ्कितविग्रहाः। सर्वे संस्तूय सर्वेशं भगवन्तं परात्परम्।९१
ज्योतिर्मयं परं ब्रह्म सर्वकारणकारणम्। अमूल्यरत्ननिर्माणचित्रसिंहासनस्थितम्।९२
सेव्यमानं च गोपालैः श्वेतचामरवायुना। गोपालिकानृत्यगीतं पश्यन्तंसस्मितंमुदा।९३
प्राणाधिकप्रियतमाराधावक्षः स्थलस्थितम्। तया प्रदत्तं ताम्बूलं भुक्तवन्तं सुवासितम्।९४
परिपूर्णतमं रासे ददृशुश्च सुरेश्वरम्। मुनयोमानवाः सिद्धास्तपसा च तपस्विनः।९५
प्रहृष्टमनसः सर्वे जग्मुः परमविस्मयम्। परस्परंस नालोक्य प्रोचुस्तेच चतुर्मुखम्।९६
निवेदितंजगन्नाथंस्वाभिप्रायमभीप्सितम्। ब्रह्मातद्वचनंश्रुत्वाविष्णुंकृत्वास्वदक्षिणे।९७
वामतो वामदेवञ्च जगाम कृष्णसन्निधिम्। परमानन्दयुक्तञ्च परमानन्दरूपिणीम्।९८
सर्वं कृष्णमयं धाता ददर्श रासमण्डले। सर्वं समानवेषञ्च समानासनसंस्थितम्।९९
द्विभुजं मुरलीहस्तं वनमालाविभूषितम्। मयूरपिच्छचूडं च कौस्तुभेनविराजितम्।१००
अतीव कमनीयं च सुन्दरं शान्तविग्रहम्। गुणभूषणरूपेणतेजसावयसा त्विषा।१०१
परिपूर्णतमं सर्वं सर्वैश्वर्यसमन्वितम्। किं सेव्यं सेवकं किं वा दृष्ट्वा निर्वक्तुमक्षमः।१०२
क्षणं तेजः स्वरूपं च रूपं तत्र स्थितं क्षणम्। निराकारंचसाकारंददर्शद्विविधंक्षणम्।१०३
एकमेव क्षणं कृष्णं राधया रहितं परम्। प्रत्येकासनसंस्थञ्च तया सार्धं च तत्क्षणम्।१०४
राधारूपधरं कृष्णं कृष्णरूपं कलत्रकम्। किं स्त्रीरूपं च पुरुषं विधाता ध्यातुमक्षमः।१०५
हृत्पद्मस्थं श्रीकृष्णं ध्यात्वा ध्यानेन चक्षुषा। चकार स्तवनं भक्त्या परिहारमनेकधा।१०६

ततः स्वचक्षुरुन्मील्य पुनश्च तदनुज्ञया। ददर्श कृष्णमेकं च राधावक्षःस्थलस्थितम् ।१०७
स्वपार्षदैः परिवृतं गोपीमण्डलमण्डितम्। पुनः प्रणेमुस्तं दृष्ट्वा तुष्टुवुः परमेश्वरम् ।१०८
तदभिप्रायमाज्ञाय तानुवाच रमेश्वरः। सर्वात्मा स च सर्वज्ञः सर्वेशः सर्वभावनः ।१०९

श्रीभगवानुवाच

आगच्छ कुशलं ब्रह्मन्नागच्छ कमलापते! इहागच्छ महादेव! शश्वत्कुशलमस्तु वः ।११०
आगता हि महाभागा गङ्गानयनकारणात्। गङ्गा च चरणाम्भोजे भयेन शरणं गता ।१११
राधेमां पातुमिच्छन्तीदृष्ट्वा मत्सन्निधानतः। दास्यामीमांचभवतांयूयकुरुतनिर्भयाम् ।११२
श्रीकृष्णस्य वचः श्रुत्वा सस्मितः कमलोद्भवः। तुष्टाव राधामाराध्यां श्रीकृष्णपरिपूजिताम् ।११३
वक्त्रैश्चतुर्भिः संस्तूय भक्तिनम्रात्मकन्धरः। धाता चतुर्णां वेदानामुवाच चतुराननः ।११४

चतुरानन उवाच

गङ्गा त्वदङ्गसम्भूता प्रभोश्च रासमण्डले। युवयोर्द्रवरूपा सा मुग्धयोः शङ्करस्वनात् ।११५
कृष्णांशा च त्वदंशाचत्वत्कन्यासदृशीप्रिया। त्वन्मन्त्रग्रहणंकृत्वाकरोतुतवपूजनम् ।११६
भविष्यतिपतिस्तस्यावैकुण्ठेशश्चतुर्भुजः । भूस्थायाकलयातस्याः पतिर्लवणवारिधिः ।११७
गोलोकस्था च या गङ्गा सर्वत्रस्था तथाऽम्बिके। तदम्बिका त्वं देवेशी सर्वदा सा त्वदात्मजा ।११८
ब्रह्मणो वचनं श्रुत्वा स्वीचकारच सस्मिता। बहिर्बभूवसाकृष्णपादाङ्गुष्ठनखाग्रतः ।११९
तत्रैव सत्कृता शान्ता तस्थौ तेषां च मध्यतः। उवासतोयादुत्थायतदधिष्ठातृदेवता ।१२०
तत्तोयं ब्रह्मणाकिञ्चित्स्थापितं चकमण्डलौ। किञ्चिद्दधारशिरसिचन्द्रार्धकृतशेखरः ।१२१
गङ्गायैराधिकामन्त्रं प्रददौ कमलोद्भवः। तत्स्तोत्रं कवचं पूजां विधानं ध्यानमेवच ।१२२
सर्वं तत्सामवेदोक्तं पुरश्चर्याक्रमं तथा। गङ्गा तामेव सम्पूज्य वैकुण्ठं प्रययौ सह ।१२३
लक्ष्मी सरस्वती गङ्गा तुलसी विश्वपावनी। एतानारायणस्यैव चतस्रोयोषितोमुने ।१२४
अथ तं सस्मितः कृष्णोब्रह्माणंसमुवाचसः। सर्वकालस्यवृत्तान्तंदुर्बोधमविपश्चितम् ।१२५

श्रीकृष्ण उवाच

गृहाण गङ्गांहेब्रह्मन्! हेविष्णो! हेमहेश्वर! शृणुकालस्य वृत्तान्तं मत्तोब्रह्मन्निशामय ।१२६
यूयं च येऽन्ये देवाश्च मुनयो मनवस्तथा। सिद्धा यशस्विनश्चैवये येऽत्रैवसमागताः ।१२७
एते जीवन्ति गोलोके कालचक्रविवर्जिते। जलप्लुते सर्वविश्वंजातंकल्पक्षयोऽधुना ।१२८
ब्रह्माद्यायेऽन्यविश्वस्थास्तेविलीनाऽधुना मयि। वैकुण्ठं च विनासर्वंजलमग्नंचपद्मज ।१२९
गत्वा सृष्टिं कुरु पुनर्ब्रह्मलोकादिकं भवम्। स्वं ब्रह्माण्डंविरचयपश्चाद्गङ्गा प्रयास्यति ।१३०
एवमन्येषु विश्वेषु सृष्टौ ब्रह्मादिकम्पुनः। करोम्यहं पुनः सृष्टिं गच्छशीघ्रं सुरैः सह ।१३१
गतो बहुतरः कालो युष्माकंचचतुर्मुखाः। गताः कतिविधास्तेचभविष्यन्तिचवेधसः ।१३२
इत्युक्त्वाराधिकानाथो जगामाऽन्तःपुरे मुने। देवा गत्वापुनः सृष्टिं चक्रुरेवप्रयत्नतः ।१३३
गोलोके च स्थितागङ्गा वैकुण्ठे शिवलोकके। ब्रह्मलोके स्थिताऽन्यत्र यत्रयत्र पुरः स्थितः ।१३४
तत्रैव सा गता गङ्गा चाज्ञयापरमात्मनः। निर्गताविष्णुपादाब्जात्तेनविष्णुपदीस्मृता ।१३५
इत्येवं कथितं ब्रह्मन्गङ्गोपाख्यानमुत्तमम्। सुखदं मोक्षदं सारं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।१३६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे गङ्गोपाख्यानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ।।१३।।

* चतुर्दशोऽध्यायः *

कृष्णेनगङ्गाविवाहवर्णनम्

नारद उवाच

लक्ष्मी सरस्वती गङ्गा तुलसी विश्वपावनी। एतानारायणस्यैव चतस्त्रश्चप्रियाइति। १
गङ्गा जगाम वैकुण्ठमिदमेव श्रुतं मया। कथं सा तस्य पत्नी च बभूवेति चनःश्रुतम्। २

श्रीनारायण उवाच

गङ्गाजगामवैकुण्ठं तत्पश्चाज्जगतां विधिः। गत्वोवाच तया सार्धंप्रणम्यजगदीश्वरम्। ३

ब्रह्मोवाच

राधाकृष्णाङ्गसम्भूता या देवी द्रवरूपिणी। नवयौवनसम्पन्ना सुशीला सुन्दरी वरा। ४
शुद्धसत्त्वस्वरूपा च क्रोधाऽहङ्कारवर्जिता।
तदङ्गसम्भवा नाऽन्यं वृणोतीयं चतंविना ॥५॥
तत्राऽतिमानिनी राधासा चतेजस्विनीवरा।
समुद्युक्तापातुमिमांभीतेयंबुद्धिपूर्वकम् ॥६॥
विवेश चरणाम्भोजे कृष्णस्य परमात्मनः। सर्वत्र गोलकं शुष्कं दृष्ट्वाऽहमगमं तदा। ७
गोलोके यत्र कृष्णश्च सर्ववृत्तान्तप्राप्तये। सर्वान्तरात्मासर्वेषांज्ञात्वाऽऽभिप्रायमेवच। ८
बहिश्चकार गङ्गाञ्च पादाङ्गुष्ठनखाग्रतः। दत्त्वाऽस्यैराधिकामन्त्रंपूरयित्वाचगोलकम्। ९
प्रणम्य तां च राधेशंगृहीत्वाऽत्रागमं प्रभो!। गान्धर्वेणविवाहेन गृहाणेमांसुरेश्वरीम्। १०
सुरेश्वरेषु रसिको रसिकेयं समागता। त्वं रत्नंपुंसु देवेश! स्त्रीरत्नं स्त्रीष्वियं सती। ११
विदग्धायाविदग्धेनसङ्गमोगुणवान्भवेत्। उपस्थितांस्वयंकन्यांनगृह्णातीहयः पुमान्। १२
तं विहाय महालक्ष्मी रुष्टा याति न संशयः। यो भवेत्पण्डितः सोऽपि प्रकृतिं नाऽवमन्यते। १३
सर्वे प्राकृतिकाः पुंसः कामिन्य प्रकृतेःकलाः। त्वमेव भगवान्नाथोनिर्गुणः प्रकृतेः परः। १४
अर्धाङ्गं द्विभुजः कृष्णो योऽर्धाङ्गेनचतुर्भुजः। कृष्णवामाङ्गसम्भूताबभूव राधिकापुरा। १५
दक्षिणांशः स्वयंसाचवामांशः कमलातथा। तेनेयं त्वां वृणोत्येवयतस्त्वद्देहसम्भवा। १६
एकाङ्गं चैव स्त्रीपुंसोर्यथा प्रकृतिपूरुषौ। इत्येवमुक्त्वाधाता तां तं समर्प्य जगामसः। १७
गान्धर्वेणविवाहेन तां जग्राहहरिः स्वयम्। नारायणः करं धृत्वा पुष्पचन्दनचर्चितम्। १८
रेमेरमापतिस्तत्र गङ्गया सहितो मुदा। गङ्गा पृथ्वीं गतायासा स्वस्थानं पुनरागता। १९
निर्गताविष्णुपादाब्जात्तेनविष्णुपदीतिच। मूर्च्छांसम्प्रापसादेवी नवसङ्गमलीलया। २०
रसिका सुखसम्भोगाद्रसिकेश्वरसंयुता। तां दृष्ट्वादुःखिता वाणीपद्मयावर्जिताऽपिच। २१
नित्यमीर्ष्यति तां वाणी न च गङ्गा सरस्वतीम्। गङ्गा शशाप कोपेन भारते च हरिप्रिया। २२
गङ्गया सह तस्यैव तिस्रो भार्यारमापतेः!। सार्धं तुलस्यापश्चाच्चचतस्त्रश्चाऽभवन्मुने। २३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे गङ्गायाः कृष्णपत्नीत्ववर्णनंनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

--०--

* पञ्चदशोऽध्यायः *

तुलस्याआख्यानवर्णनम्

नारद उवाच

नारायण प्रिया साध्वी कथंसाचबभूवह। तुलसी कुत्र सम्भूता का वासापूर्वजन्मनि। १
कस्यवासाकुले जाताकस्यकन्याकुलेसती। केनवातपसा सा च सम्प्राप्ताप्रकृतेः परम्। २
निर्विकारं निरीहञ्च सर्वविश्वस्वरूपकम्। नारायणं परं ब्रह्म परमेश्वरमीश्वरम्। ३
सर्वाराध्यञ्च सर्वेशं सर्वज्ञंसर्वकारणम्। सर्वाधारं सर्वरूपं सर्वेषां परिपालकम्। ४
कथमेतादृशी देवी वृक्षत्वं समवाप ह। कथं साऽप्यसुरग्रस्ता सम्बभूव तपस्विनी। ५
सुस्निग्धं मे मनो लोलं प्रेरयन्मां मुहुर्मुहुः। छेत्तुमर्हसि सन्देहं सर्वसन्देहभञ्जन!। ६

नारायण उवाच

मनुश्चदक्षसावर्णिः पुण्यवान्वैष्णवः शुचिः। यशस्वी कीर्तिमांश्चैवविष्णोरंशसमुद्भवः। ७
तत्पुत्रो ब्रह्मसावर्णिर्धर्मिष्ठोवैष्णवः शुचिः। तत्पुत्रोधर्मसावर्णिर्वैष्णवश्चजितेन्द्रियः। ८
तत्पुत्रो रुद्रसावर्णिर्भक्तिमान्विजितेन्द्रियः। तत्पुत्रो देवसावर्णिर्विष्णुव्रतपरायणः। ९
तत्पुत्र इन्द्रसावर्णिर्महाविष्णुपरायणः। वृषध्वजश्च तत्पुत्रो वृषध्वजपरायणः। १०
यस्याऽऽश्रमे स्वयंशम्भुरासीद्देवयुगत्रयम्। पुत्रादपिपरःस्नेहोनृपेतस्मिञ्छिवस्यच। ११
न च नारायणंमेने न लक्ष्मीं न सरस्वतीम्। पूजां च सर्वदेवानां दूरीभूताञ्चकारसः। १२
भाद्रे मासि महालक्ष्मीपूजां मत्तो बभञ्जह। तथामाघीयपञ्चम्यां विस्तृतांसर्वदैवतैः। १३
पापः सरस्वतीपूजां दूरीभूताञ्चकार सः। यज्ञंचविष्णुपूजांच निन्दन्तं तं दिवाकरः। १४
चुकोप देवो भूपेन्द्रं शशापशिवकारणात्। भ्रष्टश्रीस्त्वंच भवेति तं शशापदिवाकरः। १५
शूलं गृहीत्वा तं सूर्यमधावच्छङ्करः स्वयम्। पित्रा सार्द्धं दिनेशश्च ब्रह्माणंशरणंययौ। १६
शिवस्त्रिशूलहस्तश्च ब्रह्मलोकं ययौक्रुधा। ब्रह्मा सूर्यम्पुरस्कृत्य वैकुण्ठञ्च ययौभिया। १७
ब्रह्मकश्यपमार्तण्डाः सन्त्रस्ता शुष्कतालुकाः। नारायणञ्चसर्वेशं ते ययुः शरणं भिया। १८
मूर्ध्ना प्रणेमुस्ते गत्वा तुष्टुवुश्च पुनःपुनः। सर्वं निवेदनं चक्रुर्भयस्य कारणं हरौ। १९
नारायणश्च कृपया तेभ्यश्च ह्यभयं ददौ। स्थिरा भवत हे भीताभयंकिंचमयिस्थिते। २०
स्मरन्ति ये यत्र तत्र मां विपत्तौ भयान्विताः। तांस्तत्र गत्वा रक्षामि चक्रहस्तस्त्वरान्वितः। २१
पाताऽहं जगतां देवाः कर्ताच सततं सदा। स्रष्टाच ब्रह्मरूपेण संहर्ता शिवरूपतः। २२
शिवोऽहंत्वमहञ्चापिसूर्योऽहंत्रिगुणात्मकः। विधायनानारूपञ्च करोमिसृष्टिपालनम्। २३
यूयं गच्छत भद्रं वोभविष्यतिभयंकुतः। अद्यप्रभृतिमद्वरेण भयं वो नास्तिशङ्करात्। २४
सर्वेशो वैसभगवाञ्छंकरश्च सताम्पतिः। भक्ताधीनश्चभक्तानां भक्तात्मा भक्तवत्सलः। २५
सुदर्शनः शिवश्चैव मम प्राणाधिकः प्रियः। ब्रह्माण्डेषु न तेजस्वी हे ब्रह्मन्ननयोः परः। २६
शक्तः स्रष्टुं महादेवः सूर्यकोटिञ्चलीलया। कोटिञ्च ब्रह्मणामेवंनासाध्यंशूलिनः प्रभोः। २७

बाह्यज्ञानं नैव किञ्चिद्ध्यायते मां दिवानिशम्।
मन्मन्त्रान्मद्गुणान्भक्त्या पञ्चवक्त्रेण गायति ॥२८॥

अहमेवंचिन्तयामितत्कल्याणंदिवानिशम्। यथाचमां प्रपद्यन्ते तांस्तथैवभजाम्यहम्। २९
शिवस्वरूपोभगवाञ्छिवाधिष्ठातृदेवता। शिवं भवति तस्माच्च शिवं तेन विदुर्बुधाः। ३०
एतस्मिन्नन्तरे तत्र जगाम शङ्करः स्थितः। शूलहस्तो वृषारूढो रक्तपङ्कजलोचनः। ३१

अवरुह्यवृषात्तूर्णंभक्तिनम्रात्मकन्धरः । ननाम भक्त्या तं शान्तं लक्ष्मीकान्तंपरात्परम् ।३२
रत्नसिंहासनस्थं च रत्नालङ्कारभूषितम् । किरीटिनं कुण्डलिनं चक्रिणं वनमालिनम् ।३३
नवीननीरदश्यामं सुन्दरञ्च चतुर्भुजम् । चतुर्भुजैः सेवितं च श्वेतचामरवायुना ।३४
चन्दनोक्षितसर्वाङ्गं भूषितं पीतवाससम् । लक्ष्मीप्रदत्तताम्बूलं भुक्तवन्तञ्च नारद! ।३५
विद्याधरीनृत्यगीतं पश्यन्तं सस्मितंसदा । ईश्वरं परमात्मानं भक्तानुग्रहविग्रहम् ।३६
तं ननाम महादेवो ब्रह्मणा नमितश्च सः । ननाम सूर्यो भक्त्या च संत्रस्तश्चन्द्रशेखरम् ।३७
कश्यपश्च महाभक्त्या तुष्टावच ननाम च । शिवः संस्तूय सर्वेशं समुवास सुखासने ।३८
सुखासने सुखासीनं विश्रान्तं चन्द्रशेखरम् । श्वेतचामरवातेन सेवितं विष्णुपार्षदैः ।३९
पीयूषतुल्यमधुरं वचनं सुमनोहरम् ।

विष्णुरुवाच

आगतोऽसि कथं चाऽत्र वद कोपस्य कारणम् ।।४०।।

महादेव उवाच

वृषध्वजञ्च मद्भक्तं मम प्राणाधिकम्प्रियम् । सूर्यः शशाप इति मे प्रकोपस्यतुकारणम् ।४१
पुत्रवत्सलशोकेन सूर्यं हन्तुं समुद्यतः । स ब्रह्माणं प्रपन्नश्च सूर्यश्च स विधिस्त्वयि ।४२
त्वयि ये शरणापन्नाध्यानेनवचसाऽपिवा । निरापदोविशङ्कास्ते जरामृत्युश्चतैर्जितः ।४३
प्रत्यक्षं शरणापन्नास्तत्फलं किं वदामि भोः । हरिस्मृतिश्चाभयदा सर्वमङ्गलदासदा ।४४
किं मे भक्तस्य भविता तन्मे ब्रूहि जगत्प्रभो! । श्रीहतस्याऽस्य सूर्यशापेन हेतुना ।४५

विष्णुरुवाच

कालोऽतियातो दैवेन युगानामेकविंशतिः । वैकुण्ठंघटिकार्धेनशीघ्रंगच्छत्वमालयम् ।४६
वृषध्वजो मृतः कालाद्दुर्निवार्यात्सुदारुणात् । रथध्वजश्च तत्पुत्रो मृतः सोऽपि श्रिया हतः ।४७
तत्पुत्रौ च महाभागौ धर्मध्वजकुशध्वजौ । हृतश्रियौसूर्यशापात्स्मृतौपरमवैष्णवौ ।४८
राज्यभ्रष्टौ श्रियाभ्रष्टौ कमलातपसारतौ । तयोश्च भार्ययोर्लक्ष्मीः कलयाचभविष्यति ।४९
सम्पद्युक्तौतदा तौ च नृपश्रेष्ठौभविष्यतः । मृतस्ते सेवकः शम्भोगच्छयूयञ्चगच्छत ।५०
इत्युक्त्वा च सलक्ष्मीकः सभातोऽभ्यन्तरङ्गतः । देवाजग्मुः सम्प्रहृष्टाः स्वाश्रमंपरमंमुदा ।५१
शिवश्च तपसे शीघ्रं परिपूर्णतमो ययौ ।।५२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे शक्तिप्रादुर्भावोनाम पञ्चदशोऽध्यायः ।।१५।।

* षोडशोऽध्यायः *

सीताचरित्रेरामवृत्तवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

लक्ष्मीं तौ च समाराध्यचोग्रेणतपसामुने! । वरमिष्टञ्चप्रत्येकं सम्प्रापतुरभीप्सितम् ।१
महालक्ष्मीवरेणैव तौ पृथ्वीशौबभूवतुः । पुण्यवन्तौ पुत्रवन्तौ धर्मध्वजकुशध्वजौ ।२
कुशध्वजस्य पत्नीचदेवीमालावतीसती । सा सुषावचकालेन कमलांशांसुतांसतीम् ।३
सा च भूयिष्ठकालेन ज्ञानयुक्ता बभूव ह । कृत्वावेदध्वनिंस्पष्टमुत्तस्थौसूतिकागृहात् ।४
वेदध्वनिं सा चकार जातमात्रेणकन्यका । तस्मात्तां चवेदवतींप्रवदन्ति मनीषिणः ।५
जातमात्रेणसुस्नाता जगाम तपसे वनम् । सर्वैर्निषिद्धायत्नेन नारायणपरायणा ।६

एकमन्वन्तरं चैव पुष्करे च तपस्विनी। अत्युग्रां च तपस्यां चलीलयाहिचकारसा।७
तथाऽपिपुष्टा न क्लिष्टा नवयौवनसंयुता। शुश्राव सा च सहसा सुवाचमशरीरिणीम्।८
जन्मान्तरे च ते भर्ता भविष्यति हरिः स्वयम्। ब्रह्मादिभिर्दुराराध्यं पतिं लप्स्यसि सुन्दरि!।९
इतिश्रुत्वाच सा हृष्टा चकार ह पुनस्तपः। अतीवनिर्जनस्थाने पर्वते गन्धमादने।१०
तत्रैव सुचिरं तप्त्वा विश्वस्य समुवास सा। ददर्श पुरतस्तत्र रावणं दुर्निवारणम्।११
दृष्ट्वा साऽतिथिभक्त्याचपाद्यंतस्मैददौकिल। सुस्वादभूतंचफलंजलंचापिसुशीतलम्।१२
तच्च भुक्त्वा स पापिष्ठश्चोवासतत्समीपतः। चकारप्रश्नमितितांकात्वंकल्याणिवर्तसे।१३
तां दृष्ट्वा स वरारोहां पीनश्रोणिपयोधराम्। शरत्पद्मोत्सवास्यां च सस्मितां सुदतीं सतीम्।१४
मूर्च्छामवाप कृपणः कामबाणप्रपीडितः। स करेण समाकृष्य शृङ्गारं कर्तुमुद्यतः।१५
सती चुकोप दृष्ट्वा त स्तम्भितं च चकार ह। स जडो हस्तपादैश्च किञ्चद्वक्तुं न च क्षमः।१६
तुष्टाव मनसा देवीं प्रययौ पद्मलोचनाम्। सा तुष्टा तस्यस्तवनंसुकृतंचचकार ह।१७
सा शशाप मदर्थे त्वं विनङ्क्ष्यसि सबान्धवः। स्पृष्टाऽहं च त्वया कामाद् बलं चाप्यवलोकय।१८
इत्युक्त्वा सा च योगेन देहत्यागञ्चकार सा। गङ्गायांतांचसंन्यस्यस्वगृहं रावणोययौ।१९
अहोकिमद्भुतंदृष्टं किंकृतंवाऽनयाऽधुना। इतिसञ्चिन्त्यसञ्चिन्त्य विललाप पुनः पुनः।२०
सा च कालान्तरे साध्वी बभूव जनकात्मजा। सीतादेवीति विख्याता यदर्थे रावणो हतः।२१
महातपस्विनी सा च तपसा पूर्वजन्मतः। लेभे रामञ्च भर्तारं परिपूर्णतमं हरिम्।२२
सम्प्राप तपसाऽऽराध्यं दुराराध्यं जगत्पतिम्। सारमासुचिरंरेमे रामेण सह सुन्दरी।२३
जातिस्मरा न स्मरति तपसश्च क्लमं पुरा। सुखेनतज्जहौसर्वंदुःखंचापि सुखं फले।२४
नानाप्रकारविभवं चकार सुचिरं सती। सम्प्राप्य सुकुमारंतमतीवनवयौवना।२५
गुणिनं रसिकं शान्तं कान्तं देवमतुत्तमम्। स्त्रीणां मनोज्ञं रुचिरं तथा लेभे यथेप्सितम्।२६
पितुः सत्यपालनार्थं सत्यसन्धो रघूद्वहः। जगाम काननंपश्चात्कालेन च बलीयसा।२७
तस्थौ समुद्रनिकटे सीतया लक्ष्मणेन च। ददर्श तत्र वह्निञ्च विप्ररूपधरं हरिः।२८
रामञ्च दुःखितं दृष्ट्वा स च दुःखी बभूव ह। उवाचकिञ्चित्सत्येष्टं सत्यंसत्यपरायणः।२९

द्विज उवाच

भगवञ्छ्रूयतां राम कालोऽयं यदुपस्थितः। सीताहरणकालोऽयं तवैवसमुपस्थितः।३०
दैवञ्च दुर्निवार्यञ्च न च दैवात्परोबली। जगत्प्रसूं मयिन्यस्य छायांरक्षान्तिकेऽधुना।३१
दास्यामिसीतां तुभ्यञ्च परीक्षासमये पुनः। देवैः प्रस्थापितोऽहञ्चनचविप्रोहुताशनः।३२
रामस्तद्वचनं श्रुत्वा न प्रकाश्य च लक्ष्मणम्। स्वीकारंवचसश्चक्रे हृदयेन विदूयता।३३
वह्निर्योगेनसीताया मायासीतां चकार ह। तत्तुल्यगुणसर्वाङ्गां ददौ रामाय नारद!।३४
सीतां गृहीत्वा स ययौ गोप्यं वक्तुं निषिध्य च। लक्ष्मणो नैव बुबुधे गोप्यमन्यस्य का कथा।३५
एतस्मिन्नन्तरे रामो ददर्शकानकं मृगम्। सीता तं प्रेरयामास तदर्थे यत्नपूर्वकम्।३६
संन्यस्य लक्ष्मणोरामो जानक्या रक्षणेवने। स्वयं जगाम तूर्णं तंविव्याधसायकेनच।३७
लक्ष्मणेति च शब्दं स कृत्वा च मायया मृगः। प्राणांस्तत्याज सहसा पुरो दृष्ट्वा हरिं स्मरन्।३८
मृगदेहं परित्यज्य दिव्यरूपं विधाय च। रत्ननिर्माणयानेन वैकुण्ठं स जगाम ह।३९
वैकुण्ठंलोकद्वार्यासीत्किङ्करो द्वारपालयोः। पुनर्जगाम तद्द्वारमादेशाद्द्वारपालयोः।४०
अथ शब्दं च सा श्रुत्वालक्ष्मणेतिचविक्लवम्। तंहिसाप्रेरयामासलक्ष्मणं रामसन्निधौ।४१

गते च लक्ष्मणे रामं रावणो दुर्निवारणः। सीतां गृहीत्वाप्रययौलङ्कामेव स्वलीलया।४२
विषसाद च रामश्च वने दृष्ट्वा च लक्ष्मणम्। तूर्णं च स्वाश्रमंगत्वा सीतांनैवददर्शसः।४३
मूर्च्छां सम्प्राप सुचिरं विललाप भृशं पुनः। पुनः पुनश्च बभ्राम तदन्वेषणपूर्वकम्।४४
कालेनप्राप्य तद्वार्तां गोदावरीनदीतटे। सहायान्वानरान्कृत्वाबबन्ध सागरं हरिः।४५
लङ्कां गत्वा रघुश्रेष्ठो जघान सायकेन च। कालेय प्राप्य तं हत्वारावणंबान्धवैः सह।४६
तां च वह्निपरीक्षां च कारयामाससत्वरम्। हुताशस्तत्रकालेतुवास्तवींजानकींददौ।४७
उवाच छायावह्निं च रामञ्च विनयान्विता। करिष्यामीति किमहं तदुपायंवदस्व मे।४८

श्रीरामाग्नी ऊचतुः

त्वं गच्छ तपसे देवि! पुष्करञ्च सुपुण्यदम्। कृत्वा तपस्यां तत्रैव स्वर्गलक्ष्मीर्भविष्यसि।४६
सा च तद्वचनं श्रुत्वा प्रतप्य पुष्करे तपः। दिव्यं त्रिलक्षवर्षञ्च स्वर्गलक्ष्मीर्बभूव ह।५०
सा च कालेन तपसा यज्ञकुण्डसमुद्भवा। कामिनी पाण्डवानाञ्च द्रौपदी द्रुपदात्मजा।५१
कृते युगे वेदवती कुशध्वजसुता शुभा। त्रेतायां रामपत्नी च सीतेति जनकात्मजा।५२
तच्छाया द्रौपदीदेवी द्वापरे द्रुपदात्मजा। त्रिहायिणीच सा प्रोक्ताविद्यमानायुगत्रये।५३

नारद उवाच

प्रियाः पञ्च कथं तस्या बभूवुर्मुनिपुङ्गव!। इति मच्चित्तसन्देहं भञ्ज सन्देहभञ्जन!।५४

श्रीनारायण उवाच

लङ्कायां वास्तवी सीतारामंसम्प्रापनारद!। रूपयौवनसम्पन्ना छाया च बहुचिन्तया।५५
रामाग्न्योराज्ञया तप्तुमुपास्ते शङ्करं पदम्। कामातुरा पतिव्यग्रा प्रार्थयन्ती पुनः पुनः।५६
पतिं देहि पतिं देहि पतिं देहि त्रिलोचन!। पतिं देहि पतिं देहि पञ्चवारञ्चकार सा।५७
शिवस्तत्प्रार्थनां श्रुत्वाप्रहस्यरसिकेश्वरः। प्रिये तव प्रियाः पञ्च भविष्यन्तिवरंददौ।५८
तेन सा पाण्डवानाञ्चबभूवकामिनीप्रिया। इति ते कथितं सर्वं प्रस्तावंवास्तवंशृणु।५६
अथ सम्प्राप्य लङ्कायां सीतां रामो मनोहराम्। विभीषणाय तां लङ्कां दत्त्वाऽयोध्यां ययौ पुनः।६०
एकादशसहस्राब्दं कृत्वा राज्यं च भारते। जगामसर्वलोकैश्च सार्धं वैकुण्ठमेव च।६१
कमलांशा वेदवती कमलायां विवेश सा। कथितं पुण्यमाख्यानंपुण्यदं पापनाशनम्।६२
सततं मूर्तिमन्तश्च वेदाश्चत्वार एव च। सन्ति यस्याश्चजिह्वाग्रे सा च वेदवतीश्रुता।६३
धर्मध्वजसुताख्यानं निबोध कथयामि ते।।६४।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे महालक्ष्म्यावेदवतीरूपेणराजगृहेजन्मवर्णनं नामषोडशोऽध्यायः।।१६।।

* सप्तदशोऽध्यायः *

धर्मध्वजसुतायास्तुलस्याः कथावर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

धर्मध्वजस्य पत्नी च माधवीतिचविश्रुता। नृपेण सार्धं साऽऽरामेरेमे च गन्धमादने।१
शय्यां रतिकरीं कृत्वा पुण्यचन्दनचर्चिताम्। चन्दनालिप्तसर्वाङ्गी पुष्पचन्दनवायुना।२
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी रत्नभूषणभूषिता। कामुकी रसिका सृष्टा रसिकेन च संयुता।३
सुरते विरतिर्नास्ति तयोः सुरतिविज्ञयोः। गतं दैवं वर्षशतं न ज्ञातञ्च दिवानिशम्।४
ततो राजा मतिं प्राप्य सुरताद्विरराम च। कामुकीसुन्दरीकिञ्चिन्नच तृप्तिं जगामसा।५

दधार गर्भं सा सद्यो दैवादब्दशतंसती। श्रीगर्भा श्रीयुता सा च सम्बभूव दिनेदिने। ६
शुभेक्षणे शुभदिने शुभयोगे च संयुते। शुभलग्ने शुभांशे च शुभस्वामिग्रहान्विते। ७
कार्त्तिकीपूर्णिमायान्तु सितवारेचपाद्मज!। सुषावसाचपद्मांशां पद्मिनीतांमनोहराम्। ८
शरत्पार्वणचन्द्रास्यां शरत्पङ्कजलोचनाम्। पक्वबिम्बाधरोष्ठीञ्च पश्यन्तीं सस्मितां गृहम्। ९
हस्तपादतलारक्तां निम्ननाभिं मनोरमाम्। तदधस्त्रिवलीयुक्तां नितम्बयुगवर्तुलाम्। १०
शीते सुखोष्णसर्वाङ्गीं ग्रीष्मे च सुखशीतलाम्। श्यामां सुकेशीं रुचिरां न्यग्रोधपरिमण्डलाम्। ११
पीतचम्पकवर्णाभां सुन्दरीष्वेव सुन्दरीम्। नरानार्यश्च तां दृष्ट्वा तुलनांदातुमक्षमाः। १२
तेन नाम्नांच तुलसींतांवदन्तिमनीषिणः। साच भूमिष्ठमात्रेण योग्या स्त्रीप्रकृतिर्यथा। १३
सर्वैर्निषिद्धा तपसे जगाम बदरीवनम्। तत्र देवाब्दलक्षञ्च चकार परमं तपः। १४
मनसानारायणः स्वामीभवितेतिचनिश्चिता। ग्रीष्मेपञ्चतपाःशीते तोयवस्त्राचप्रावृषि। १५
आसनस्था वृष्टिधारा सहन्तीतिदिवानिशम्। विंशत्सहस्रवर्षञ्च फलतोयाशनाचसा। १६
त्रिंशत्सहस्रवर्षञ्च पत्राहारातपस्विनी। चत्वारिंशत्सहस्राब्दं वाय्वाहारा कृशोदरी। १७
ततो दशसहस्राब्दं निराहारा बभूव सा। निर्लक्ष्याञ्चैकपादस्थां दृष्ट्वा तां कमलोद्भवः। १८
समाययौ परं दातुं वरं बदरिकाश्रमम्। चतुर्मुखञ्च सा दृष्ट्वा ननाम हंसवाहनम्। १९

तामुवाच जगत्कर्ता विधाता जगतामपि।

ब्रह्मोवाच

वरं वृणीष्व तुलसि! यत्ते मनसि वाञ्छितम् ॥२०॥
हरिभक्तिं हरेर्दास्यमजरामरतामपि।

तुलस्युवाच

शृणुतात!प्रवक्ष्यामि यन्मेमनसि वाञ्छितम् ॥२१॥
सर्वज्ञस्यापि पुरतः कालज्ञाममसाम्प्रतम्। अहंतु तुलसीगोपीगोलोकेऽहंस्थितापुरा। २२
कृष्णप्रियाकिङ्करीचतदंशातत्सखीप्रिया। गोविन्दरतिसम्भुक्तामतृप्तांमांचमूर्च्छिताम्। २३
रासेश्वरी समागत्य ददर्शरासमण्डले। गोविन्दंभर्त्सयामासमां शशाप रुषाऽन्विता। २४
याहि त्वं मानवीं योनिमित्येवं च शशाप ह। मामुवाच स गोविन्दो मदंशं च चतुर्भुजम्। २५
लभिष्यसितपस्तप्त्वाभारतेब्रह्मणोवरात्। इत्येवमुक्त्वा देवेशोऽप्यन्तर्धानञ्चकारसः। २६
देव्या भियातनुंत्यक्त्वाप्राप्तंजन्मगुरो! भुवि। अहंनारायणंकान्तं शान्तंसुन्दरविग्रहम्। २७

साम्प्रतं तं पतिं लब्धुं वरये त्वं च देहि मे।

ब्रह्मदेवउवाच

सुदामा नाम गोपश्च श्रीकृष्णाङ्गसमुद्भवः ॥२८॥
तदंशश्चातितेजस्वी लेभे जन्म च भारते। साम्प्रतं राधिकाशापाद्दनुवंशसमुद्भवः। २९
शङ्खचूडेति विख्यातस्त्रैलोक्येनचतत्समः। गोलोकेत्वांपुरादृष्ट्वा कामोन्मथितमानसः। ३०
विलम्भितुंनशशाकराधिकायाः प्रभावतः। सचजातिस्मरस्तस्मात्सुदामाऽभूच्चसागरे। ३१
जातिस्मरा त्वमपि सा सर्वं जानासि सुन्दरि!। अधुना तस्य पत्नी त्वं सम्भविष्यति शोभने!। ३२
पश्चान्नारायणं शान्तं कान्तमेव वरिष्यसि। शापान्नारायणस्यैव कलया दैवयोगतः। ३३
भविष्यसि वृक्षरूपा त्वं पूता विश्वपावनी। प्रधाना सर्वपुष्पेषु विष्णुप्राणाधिका भवेः। ३४
त्वया विना च सर्वेषां पूजाचविफलाभवेत्। वृन्दावनेवृक्षरूपा नाम्नावृन्दावनीति च। ३५
त्वत्पत्रैर्गोपिगोपाश्चपूजयिष्यन्तिमाधवम्। वृक्षाधिदेवीरूपेणसार्धं कृष्णेनसन्ततम्। ३६

विहरिष्यसि गोपेन स्वच्छन्दं मद्वरेण च। इत्येवं वचनं श्रुत्वा सस्मिताहृष्टमानसा। ३७
प्रणनाम च ब्रह्माणं तं च किञ्चिदुवाच सा।

तुलस्युवाच

यथा मे द्विभुजे कृष्णे वाञ्छा च श्यामसुन्दरे ॥३८॥
सत्यम्ब्रवीमि हे तात! न तथा चचतुर्भुजे। अतृप्ताऽहञ्चगोविन्दे दैवाच्छृङ्गारभङ्गतः। ३९
गोविन्दस्यैव वचनात्प्रार्थयामिचतुर्भुजम्। त्वत्प्रसादेनगोविन्दं पुनरेव सुदुर्लभम्। ४०
ध्रुवमेव लभिष्यामि राधाभीतिं प्रमोचय।

ब्रह्मदेव उवाच

गृहाण राधिकामन्त्रं ददामि षोडशाक्षरम् ॥४१॥
तस्याश्चप्राणतुल्यात्वंमद्वरेणभविष्यसि। शृङ्गारं युवयोर्गोप्यंन ज्ञास्यति च राधिका। ४२
राधासमात्वंसुभगेगोविन्दस्यभविष्यसि। इत्येवमुक्त्वादत्त्वा च देव्यावैषोडशाक्षरम्। ४३
मन्त्रञ्चैव जगद्धाता स्तोत्रञ्च कवचम्परम्। सर्वम्पूजाविधानञ्च पुरश्चर्याविधिक्रमम्। ४४
परां शुभाशिषञ्चैव पूजाञ्चैव चकार सा। बभूव सिद्धा सा देवी तत्प्रसादाद्रमा यथा। ४५
सिद्धं मन्त्रेण तुलसी वरम्प्राप यथोदितम्। बुभुजे चमहाभोगं यद्विश्वेषुच दुर्लभम्। ४६
प्रसन्नमनसा देवी तत्याज तपसः क्लमम्। सिद्धे फले नराणाञ्च दुःखञ्च सुखमुत्तमम्। ४७
भुक्त्वा पीत्वा च सन्तुष्टा शयनञ्च चकार सा।
तल्पे मनोरमे तत्र पुष्पचन्दनचर्चिते ॥४८॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे नारायणनारद सम्वादे धर्मध्वजसुतातुलस्युपाख्यानं नाम सप्तदशोऽध्यायः।१७।

* अष्टादशोऽध्यायः *

शङ्खचूडेनसहतुलस्याः सङ्गतिवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

तुलसी परितुष्टा च सुष्वाप हृष्टमानसा। नवयौवनसम्पन्ना वृषध्वजवराङ्गना। १
चिक्षेप पञ्चबाणश्च पञ्च बाणांश्चताम्प्रति। पुष्पायुधेन सा दग्धा पुष्पचन्दनचर्चिता। २
पुलकाञ्चितसर्वाङ्गीकम्पितारक्तलोचना। क्षणं सा शुष्कतां प्राप क्षणंमूर्च्छामवापह। ३
क्षणमुद्विग्नताम्प्राप क्षणं तन्द्रां सुखावहाम्। क्षणञ्च दहनं प्राप क्षणंप्रापप्रसन्नताम्। ४
क्षणं सा चेतनाम्प्राप क्षणम्प्राप विषण्णताम्। उत्तिष्ठन्ती क्षणं तल्पाद्गच्छन्ती निकटे क्षणम्। ५
भ्रमन्ती क्षणमुद्वेगान्निवसन्ती क्षणं पुनः। क्षणमेव समुद्वेगात्सुष्वाप पुनरेव सा। ६
पुष्पचन्दनतल्पञ्च तद्बभूवातिकण्टकम्। विषहारि सुखं दिव्यं सुन्दरञ्च फलंजलम्। ७
निलयञ्च बिलाकारां सूक्ष्मवस्त्रं हुताशनः। सिन्दूरपत्रकञ्चैव व्रणतुल्यञ्च दुःखदम्। ८
क्षणं ददर्श तन्द्रायां सुवेषं पुरुषं सती। सुन्दरं च युवानं च सस्मितं रसिकेश्वरम्। ९
चन्दनोक्षितसर्वाङ्गं रत्नभूषणभूषितम्। आगच्छन्तंमाल्यवन्तंपिबन्तंतन्मुखाम्बुजम्। १०
कथयन्तं रतिकथां ब्रुवन्तंमधुरं मुहुः। सम्भुक्तवन्तंतल्पेचसमाश्लिष्यन्तमीप्सितम्। ११
पुनरेवतु गच्छन्तममागच्छन्तं च सन्निधौ। यान्तंक्व यासिप्राणेशतिष्ठत्येवमुवाचसा। १२
पुनश्च चेतनां प्राप्य विललापपुनः पुनः। एवं सा यौवनं प्राप्य तस्थौ तत्रैव नारद!। १३
शङ्खचूडो महायोगीजैगीषव्यान्मनोहरम्। कृष्णमन्त्रञ्च सम्प्राप्य कृत्वासिद्धंतुपुष्करे। १४

कवचञ्च गलेबद्ध्वा सर्वमङ्गलमङ्गलाम्। ब्रह्मणश्च वरम्प्राप्य यत्ते मनसिवाञ्छितम्।१५
आज्ञया ब्रह्मणः सोऽपिबदरीञ्च समाययौ। आगच्छन्तं शङ्खचूडं ददर्श तुलसी मुने।१६
नवयौवनसम्पन्नं कामदेवसमप्रभम्। श्वेतचम्पकवर्णाभं रत्नभूषणभूषितम्।१७
शरत्पार्वणचन्द्रास्यं शरत्पङ्कजलोचनम्। रत्नसारविनिर्माणविमानस्थं मनोहरम्।१८
रत्नकुण्डलयुग्मेन मण्डस्थलविराजितम्। पारिजातप्रसूनानांमालावन्तञ्चसुस्मितम्।१९
कस्तूरीकुङ्कुमायुक्तंसुगन्धिचन्दनान्वितम्। सा दृष्ट्वासन्निधावेनंमुखमाच्छाद्यवाससा।२०
सस्मिता तं निरीक्षन्ती सकटाक्षम्पुनः पुनः। बभूवाऽतिनम्रमुखीनवसङ्गमलज्जिता।२१
शरदिन्दुविनिन्द्यैकस्वमुखेन्दुविराजिता। अमूल्यरत्ननिर्माणयावकावलिसंयुता।२२
मणीन्द्रसारनिर्माणक्वणन्मञ्जीररञ्जिता। दधती कबरीभारं मालतीमाल्यसंयुतम्।२३
अमूल्यरत्ननिर्माणमकराकृतिकुण्डला। चित्रकुण्डलयुग्मेन गण्डस्थलविराजिता।२४
रत्नेन्द्रसारहारेण स्तनमध्यस्थलोज्ज्वला। रत्नकङ्कणकेयूरशङ्खभूषणभूषिता।२५
रत्नाङ्गुलीयकैर्दिव्यैरङ्गुल्यावलिराजिता। दृष्ट्वातांललितांरम्यांसुशीलांसुन्दरींसतीम्।२६
उवास तत्समीपे च मधुरं तामुवाच सः।

शङ्खचूडउवाच

का त्वं कस्य च कन्या च धन्या मान्या च योषिताम्।।२७।।
का त्वं मानिनि! कल्याणि! सर्वकल्याणदायिनि!।
मौनीभूते किङ्करे मां सम्भाषां कुरु सुन्दरि!।।२८।।

इत्येवं वचनं श्रुत्वा सकामा वामलोचना। सस्मिता नम्रवदना सकामं तमुवाच सा।२९

तुलस्युवाच

धर्मध्वजसुताऽहञ्च तपस्यायांतपोवने। तपस्विन्यहंतिष्ठामिकस्त्वंगच्छयथासुखम्।३०
कामिनीं कुलजाताञ्चरहस्येकाकिनींसतीम्। न पृच्छतिकुलेजातइत्येवंमेश्रुतौश्रुतम्।३१
लम्पटोऽसत्कुले जातो धर्मशास्त्रार्थवर्जितः। येनाऽश्रुतः श्रुतेरर्थः स कामीच्छति कामिनीम्।३२
आपातमधुरामत्तामन्तकां पुरुषस्य ताम्। विषकुम्भाकाररूपाममृतास्याञ्च सन्ततम्।३३
हृदये क्षुरधाराभां शश्वन्मधुरभाषिणीम्। स्वकार्यपरिनिष्पत्त्यै तत्परांसततं च ताम्।३४
कार्यार्थे स्वामिवशगामन्यथैवावशां सदा। स्वान्तर्मलिनरूपाञ्च प्रसन्नवदनेक्षणाम्।३५
श्रुतौ पुराणे यासाञ्च चरित्रमतिदूषितम्। तासुकोविश्वसेत्प्राज्ञःप्रज्ञावांश्चदुराशयः।३६
तासां कोवा रिपुर्मित्रं प्रार्थयन्ति नवं नवम्। दृष्ट्वा सुवेषं पुरुषमिच्छन्तिहृदये सदा।३७
बाह्ये स्वार्थं सतीत्वञ्च ज्ञापयन्ती प्रयत्नतः। शश्वत्कामा च रामा च कामाधारा मनोहरा।३८
बाह्येछलात्खेदयन्ती स्वान्तर्मैथुनमानसा। कान्तं हसन्तीरहसिबाह्येऽतीवसुलज्जिता।३९
मानिनी मैथुनाभावे कोपनाकलहाङ्कुरा। सुप्रीता भूरिसम्भोगात्स्वल्पमैथुनदुःखिता।४०
सुमिष्टान्नाच्छीततोयादाकाङ्क्षन्तीच मानसे। सुन्दरं रसिकं कान्तं युवानं गुणिनं सदा।४१
सुतात्परमभिस्नेहं कुर्वन्ती रसिकोपरि। प्राणाधिकं प्रियतमं सम्भोगकुशलं प्रियम्।४२
पश्यन्ती रिपुतुल्यञ्च वृद्धं वा मैथुनाक्षमम्। कलहं कुर्वतीशश्वत्तेन सार्धं सुकोपना।४३
वाचया भक्षयन्ती तं सर्पमाखुमिवोल्वणम्। दुःसाहसस्वरूपा च सर्वदोषाश्रयासदा।४४
ब्रह्मविष्णुशिवादीनां दुःसाध्या मोहरूपिणी। तपोमार्गार्गलाशश्वन्मोक्षद्वारकपाटिका।४५
हरेर्भक्तिव्यवहिता सर्वमायाकरण्डिका। संसारकारागारे च शश्वन्निगडरूपिणी।४६

इन्द्रजालस्वरूपा च मिथ्या च स्वप्नरूपिणी। बिभ्रती बाह्यसौन्दर्यमधोऽङ्गमतिकुत्सितम्।४७
नानाविण्मूत्रपूयानामाधारं मलसंयुतम्। दुर्गन्धि दोषसंयुक्तंरक्तारक्तमसंस्कृतम्।४८
मायारूपामायिनांचविधिनानिर्मितापुरा। विषरूपामुमुक्षूणामदृश्याऽप्यभिवाञ्छताम्।४९
इत्युक्त्वा तुलसी तं च विरराम च नारद!। सस्मितः शङ्खचूडश्च प्रवक्तुमुपचक्रमे।५०

शङ्खचूड उवाच

त्वयायत्कथितंदेविनचसर्वमलीककम् ।किञ्चित्सत्यमलीकंचकिञ्चिन्मत्तोनिशामय।५१
निर्मितं द्विविधं धात्रा स्त्रीरूपं सर्वमोहनम्। कृत्वारूपंवास्तवंचप्रशस्यंचाप्रशंसितम्।५२
लक्ष्मीः सरस्वती दुर्गा सावित्री राधिकादिका। सृष्टिसूत्रस्वरूपा च आद्या सृष्टिर्विनिर्मिता।५३
एतासामंशरूपं च स्त्रीरूपं वास्तवं स्मृतम्। तत्प्रशस्यं यशोरूपं सर्वमङ्गलकारकम्।५४
शतरूपा देवहूतीस्वधा स्वाहा च दक्षिणा। छायावतीरोहिणीचवरुणानीशचीतथा।५५
कुवेरस्यचपत्नीयाऽप्यदितिश्चदितिस्तथा। लोपामुद्राऽनसूयाचकोटवीतुलसी तथा।५६
अहल्याऽरुन्धती मेना तारा मन्दोदरी तथा। दमयन्ती वेदवतीगङ्गा चमनसा तथा।५७
पुष्टिस्तुष्टिः स्मृतिर्मेधा कालिकाचवसुन्धरा। षष्ठीमङ्गलचण्डीचमूर्तिश्चधर्मकामिनी।५८

स्वस्ति श्रद्धा च शान्तिश्च कान्तिः क्षान्तिस्तथा परा ।
निद्रा तन्द्रा क्षुत्पिपासा सन्ध्या रात्रिदिनानि च ।।५९।।

सम्पत्तिर्धृतिकीर्ती च क्रिया शोभाप्रभाशिवा। यत्स्त्रीरूपञ्चसम्भूतमुत्तमन्तुयुगेयुगे।६०
कलाकलांशरूपञ्च स्वर्वेश्यादिकमेव च। तदप्रशस्यं विश्वेषु पुंश्चलीरूपमेव च।६१
सत्त्वप्रधानं यद्रूपं तद्युक्तञ्च प्रभावतः। तदुत्तमं च विश्वेषु साध्वीरूपं च शंसितम्।६२
तद्वास्तवं च विज्ञेयं प्रवदन्ति मनीषिणः। रजोरूपं तमोरूपं कलासुविविधं स्मृतम्।६३
मध्यमा रजसश्चांशास्तास्तु भोगेषु लोलुपाः। सुखसम्भोगवश्याश्च स्वकार्ये निरताः सदा।६४
कपटामोहकारिण्यो धर्मार्थविमुखाः सदा। रजोरूपस्य साध्वीत्वमतो नैवोपजायते।६५
इदं मध्यमरूपं च प्रवदन्ति मनीषिणः। तमोरूपं दुर्निवार्यमधमं तद्विदुर्बुधाः।६६
नपृच्छतिकुलेजातः पण्डितश्चपरस्त्रियम्। निर्जनेनिर्जले वाऽपि रहस्यपिपरस्त्रियम्।६७
आगच्छामि त्वत्समीपमाज्ञयाब्रह्मणोऽधुना। गान्धर्वेणविवाहेनत्वांग्रहीष्यामिशोभने।६८
अहमेव शङ्खचूडो देवविद्रावकारकः। दनुवंश्यो विशेषेण सुदामाऽहं हरेः पुरा।६९
अहमष्टसु गोपेषु गोपोऽपि पार्षदेषु च। अधुना दानवेन्द्रोऽहं राधिकायाश्च शापतः।७०
जातिस्मरोऽहंजानामिकृष्णमन्त्रप्रभावतः। जातिस्मरात्वंतुलसीसम्भुक्ताहरिणापुरा।७१
त्वमेव राधिका कोपाज्जातासि भारते भुवि। त्वां सम्भोक्तुमुत्सुकोऽहं नाऽलं राधाभयात्ततः।७२
इत्येवमुक्त्वा स पुमान्विरराम महामुने। सस्मितं तुलसीतुष्टा प्रवक्तुमुपचक्रमे।७३

तुलस्युवाच

एवम्विधोवुधोनित्यंविश्वेषुचप्रशंसितः ।कान्तमेवंविधंकान्ताशश्वदिच्छतिकामतः।७४
त्वयाऽहमधुनासत्यं विचारेणपराजिता। सनिन्दितश्चाप्यशुचिर्यः पुमांश्चस्त्रियाजितः।७५
निन्दतिपितरोदेवावान्धवाः स्त्रीजितंनरम्। स्त्रीजितंमनसामातापिताभ्राताचनिन्दति।७६
शुद्धो विप्रो दशाहेन जातके मृतके यथा। भूमिपो द्वादशाहेन वैश्यः पञ्चदशाहतः।७७
शूद्रो मासेन वेदेषु मातृवद्धीनसङ्करः। अशुचिः स्त्रीजितः शुद्ध्येचितादहनकालतः।७८
नगृह्णन्तीच्छयातस्यपितरः पिण्डतर्पणम्। न गृह्णन्त्येव देवाश्च तस्यपुष्पजलादिकम्।७९

किं वा ज्ञानेन तपसा जपहोमप्रपूजनैः। किं विद्यया च यशसास्त्रीभिर्यस्यमनोहृतम्।८०
विद्याप्रभावज्ञानार्थंमयात्वंचपरीक्षितः। कृत्वापरीक्षांकान्तस्यवृणोतिकामिनी वरम्।८१
वराय गुणहीनाय वृद्धायाज्ञानिने तथा। दरिद्राय च मूर्खाय रोगिणे कुत्सिताय च।८२
अत्यन्तकोपयुक्ताय वाऽत्यन्तदुर्मुखाय च। पङ्गवे चाङ्गहीनाय चान्धाय बधिराय च।८३
जडाय चैव मूकाय क्लीबतुल्यायपापिने। ब्रह्महत्यांलभेत्सोऽपिस्वकन्यांप्रददातियः।८४
शान्ताय गुणिने चैव यूने च विदुषेऽपि च। साधवे च सुतां दत्त्वादशयज्ञफलंलभेत्।८५
यः कन्यापालनं कृत्वा करोतियदिविक्रयम्। विक्रेताधनलोभेनकुम्भीपाकंसगच्छति।८६
कन्यामूत्रं पुरीषं च तत्र भक्षति पातकी। कृमिभिर्दंशितः काकैर्यावन्दिद्राश्चतुर्दश।८७
तदन्ते व्याधिसंयुक्तः सलभेज्जन्म निश्चितम्। विक्रीणाति मांसभारं वहत्येव दिवानिशम्।८८
इत्येवमुक्त्वा तुलसी विरराम तपोनिधे!।

ब्रह्मोवाच

किं करोषि शङ्खचूड! संवादमनया सह ।।८९।।
गान्धर्वेण विवाहेन त्वं चास्या ग्रहणं कुरु। पुरुषेष्वसि रत्नंत्वंस्त्रीषुरत्नंत्वियंसती।९०
विदग्धायाविदग्धेनसङ्गमोगुणमान्भवेत्। निर्विरोधसुखं राजन्कोवात्यजतिदुर्लभम्।९१
योऽविरोधसुखत्यागी स पशुर्नात्रसंशयः। किंपरीक्षसित्वंकान्तमीदृशंगुणिनंसति।९२
देवानामसुराणाञ्च दानवानां विमर्दकम्। यथा लक्ष्मीश्च लक्ष्मीशे यथा कृष्णे च राधिका।९३
यथामयि च सावित्री भवानी च भवेयथा। यथाधरावराहेचदक्षिणाच यथाऽध्वरे।९४
यथाऽत्रेरनसूया च दमयन्ती यथा नले। रोहिणी च यथा चन्द्रेयथाकामेरतिः सति।९५
यथा दितिः कश्यपे च वसिष्ठेऽरुन्धती सती। यथाऽहल्या गौतमे चदेवहूतिश्चकर्दमे।९६
यथा बृहस्पतौ तारा शतरूपा मनौ यथा। यथा च दक्षिणा यज्ञे यथास्वाहाहुताशने।९७
यथा शची महेन्द्रे च यथा पुष्टिर्गणेश्वरे। देवसेना यथा स्कन्दे धर्मेमूर्तिर्यथासती।९८
सौभाग्या सुप्रिया त्वं च शङ्खचूडे तथा भव। अनेन सार्धं सुचिरंसुन्दरेणचसुन्दरि।९९
स्थाने स्थाने विहारं च यथेच्छं कुरु सन्ततम्। पश्चात्प्राप्स्यसि गोलोके श्रीकृष्णं पुनरेव च।१००
चतुर्भुजं च वैकुण्ठे शङ्खचूडे मृते सति।।१०१।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे शङ्खचूडेनसहतुलस्याः सङ्गतिवर्णनंनामाऽष्टादशोऽध्यायः।।१८।।

* एकोनविंशोऽध्यायः *

शङ्खचूडेनसहतुलसीसङ्गमवर्णनम्

नारद उवाच

विचित्रमिदमाख्यानं भवता समुदाहृतम्। श्रुतेन येन मे तृप्तिर्न कदाऽपि हि जायते।१
ततः परं तु यज्जातं तत्त्वं वद महामते!।

श्रीनारायण उवाच

इत्येवमाशिषं दत्त्वा स्वालयं च ययौ विधिः ।।२।।
गान्धर्वेण विवाहेन जगृहे तां च दानवः। स्वर्गे दुन्दुभिवाद्यञ्च पुष्पवृष्टिर्बभूव ह।३
स रेमे रामया सार्धं वासगेहे मनोरमे। मूर्च्छां सा प्राप तुलसी नवसङ्गमसङ्गता।४
निमग्ना निर्जलेसाध्वीसम्भोगसुखसागरे। चतुःषष्टिकमलामानंचतुःषष्टिविधंसुखम्।५

कामशास्त्रे यन्निरुक्तं रसिकानां यथेप्सितम्। अङ्गप्रत्यङ्गसंश्लेषपूर्वकं स्त्रीमनोहरम्।६
तत्सर्वं रसशृङ्गारं चकार रसिकेश्वरः। अतीवरम्यदेशे च सर्वजन्तुविवर्जिते।७
पुष्पचन्दनतल्पे च पुष्पचन्दनवायुना। पुष्पोद्याने नदीतीरे पुष्पचन्दनचर्चिते।८
गृहीत्वा रसिको रासे पुष्पचन्दनचर्चिताम्। भूषितो भूषणेनैव रत्नभूषण भूषिताम्।९
सुरते विरतिर्नास्ति तयोः सुरतिविज्ञयोः। जहार मानसं भर्तुर्लोलया लीलया सती।१०
चेतनां रसिकायाश्च जहार रसभाववित्। वक्षसश्चन्दनं राज्ञस्तिलकं विजहार सा।११
सचजहार तस्याश्च सिन्दूरंबिन्दुपत्रकम्। तद्वद्वक्षस्युरोजे च नखरेखां ददौ मुदा।१२
सा ददौ तद्वामपार्श्वे करभूषणलक्षणम्। राजा तदोष्ठपुटके ददौ रदनदंशनम्।१३
तद्गण्डयुगले सा चप्रददौ तच्चतुर्गुणम्। आलिङ्गनं चुम्बनं च जङ्घादिमर्दनं तथा।१४
एवं परस्परं क्रीडांचक्रतुस्तौ विजानतौ। सुरते विरते तौ च समुत्थाय परस्परम्।१५
सुवेषं चक्रतुस्तत्रयद्यन्मनसि वाञ्छितम्। चन्दनैः कुङ्कुमारक्तैः सातस्यतिलकंददौ।१६
सर्वाङ्गे सुन्दरे रम्ये चकार चानुलेपनम्। सुवासं चैव ताम्बूलं वह्निशुद्धे चवाससी।१७
पारिजातस्य कुसुमं जरारोगहरं परम्। अमूल्यरत्ननिर्माणमङ्गुलीयकमुत्तमम् ।१८
सुन्दरं च मणिवरं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्। दासी तवाहमित्येवं समुच्चार्य पुनः पुनः।१९
ननाम परया भक्त्या स्वामिनं गुणशालिनम्। सस्मिता तन्मुखाम्भोजं लोचनाभ्यां पुनः पुनः।२०
निमेषरहिताभ्यां चाऽप्यपश्यत्कामसुन्दरम्। स च तां च समाकृष्य चकार वक्षसि प्रियाम्।२१
सस्मितं वातयाऽऽच्छन्नं ददर्शमुखपङ्कजम्। चुचुम्ब कठिने गण्डेबिम्वोष्ठौपुनरेवच।२२
ददौ तस्यै वस्त्रयुग्मं वरुणादाहृतं चयत्। तदाहृतां रत्नमालां त्रिषुलोकेषुदुर्लभाम्।२३
ददौ मञ्जीरयुग्मं च स्वाहाया आहृतं च यत्। केयूरयुग्मं छायाया रोहिण्याश्चैव कुण्डलम्।२४
अङ्गुलीयकरत्नानि रत्याश्च करभूषणम्। शङ्खञ्च रुचिरं चित्रं यद्दत्तं विश्वकर्मणा।२५
विचित्रपद्मकश्रेणीं शय्याञ्चापि सुदुर्लभाम्। भूषणानि च दत्त्वाचभूपोहासंचकारह।२६
निर्ममे कबरीभारे तस्यामाङ्गल्यभूषणम्। सुचित्रं पत्रकंगण्डमण्डलेऽस्याः समंतथा।२७
चन्द्रलेखात्रिभिर्युक्तं चन्दनेन सुगन्धिना। परीतंपरितश्चित्रैः सार्धं कुङ्कुमबिन्दुभिः।२८
ज्वलत्प्रदीपाकारञ्च सिन्दूरतिलकं ददौ। तत्पादपद्मयुगले स्थलपद्मविनिन्दिते।२९
चित्रालक्तकरागञ्च नखरेषु ददौ मुदा। स्ववक्षसि मुहुर्न्यस्य सरागं चरणाम्बुजम्।३०
हे देवि! तव दासोऽहमित्युच्चार्य पुनः पुनः। रत्नभूषितहस्तेनतां च कृत्वास्ववक्षसि।३१
तपोवनं परित्यज्य राजा स्थानान्तरं ययौ। मलये देवनिलये शैले शैले तपोवने।३२
स्थानेस्थानेऽतिरम्येचपुष्पोद्याने च निर्जने। कन्दरे कन्दरे सिन्धुतीरेचैवातिसुन्दरे।३३
पुष्पभद्रानदीतीरे नीरवातमनोहरे। पुलिने पुलिने दिव्ये नद्यां नद्यां नदे नदे।३४
मधौमधुकराणाञ्च मधुरध्वनिनादिते। विस्पन्दने सुरसने नन्दने गन्धमादने।३५
देवोद्याने नन्दनेच चित्रचन्दनकानने। चम्पकानां केतकीनां माधवीनाञ्च माधवे।३६
कुन्दानां मालतीनाञ्च कुमुदाम्भोजकानने। कल्पवृक्षे कल्पवृक्षे पारिजातवने वने।३७
निर्जने काञ्चने स्थाने धन्ये काञ्चनपर्वते। काञ्चीवने किञ्जलके कञ्चुके काञ्चनाकरे।३८
पुष्पचन्दनतल्पेषु पुंस्कोकिलरुतश्रुते। पुष्पचन्दनसंयुक्तः पुष्पचन्दनवायुना।३९
कामुक्याकामुकः कामात्सरेमे रामयासह। न हितृप्तो दानवेन्द्रस्तृप्तिं नैव जगाम सा।४०
हविषा कृष्णवर्त्मेव ववृधे मदनस्तयोः। तया सह समागत्य स्वाश्रमं दानवस्ततः।४१

रम्यं क्रीडालयंगत्वा विजहार पुनः पुनः। एवं स बुभुजेराज्यं शङ्खचूडः प्रतापवान्।४२
एकमन्वन्तरं पूर्णं राजा राजेश्वरो महान्। देवानामसुराणाञ्च दानवानाञ्च सन्ततम्।४३
गन्धर्वाणांकिन्नराणांराक्षसानाञ्च शान्तिदः। हृताधिकारादेवाश्चचरन्तिभिक्षुकायथा।४४
ते सर्वेऽतिविषण्णाश्च प्रजग्मुर्ब्रह्मणः सभाम्। वृत्तान्तं कथयामासू रुरुदुश्चभृशं मुहुः।४५
तदा ब्रह्मा सुरैः सार्धं जगाम शङ्करालयम्। सर्वेशं कथयामास विधाता चन्द्रशेखरम्।४६
ब्रह्मा शिवश्च तैः सार्धं वैकुण्ठञ्च जगामह। दुर्लभं परमं धाम जरामृत्युहरं परम्।४७
सम्प्राप च वरं द्वारमाश्रमाणां हरे रहो। ददर्श द्वारपालांश्च रत्नसिंहासनस्थितान्।४८
शोभितान्पीतवस्त्रैश्चरत्नभूषणभूषितान्। वनमालान्वितान्सर्वाञ्श्यामसुन्दरविग्रहान्।४९
शङ्खचक्रगदापद्मधरां श्रीवचतुर्भुजान्। सस्मितान्स्मेरवक्त्रास्यान्पद्मनेत्रान्मनोहरान्।५०
ब्रह्मा तान्कथयामास वृत्तान्तं गमनार्थकम्। तेऽनुज्ञाञ्च ददुस्तस्मै प्रविवेश तदाज्ञया।५१
एवं षोडश द्वाराणि निरीक्ष्य कमलोद्भवः। देवैः सार्धं तानतीत्यप्रविवेश हरेः सभाम्।५२
देवर्षिभिः परिवृतां पार्षदैश्च चतुर्भुजैः। नारायणस्वरूपैश्च सर्वैः कौस्तुभभूषितैः।५३
नवेन्दुमण्डलाकारां चतुरस्रांमनोहराम्। मणीन्द्रहारनिर्माणां हीरासारसुशोभिताम्।५४
अमूल्यरत्नखचितां रचितां स्वेच्छया हरेः। माणिक्यमालाजालाभां मुक्तापङ्क्तिविभूषिताम्।५५
मण्डिताम्मण्डलाकारै रत्नदर्पणकोटिभिः। विचित्रैश्चित्ररेखाभिर्नानाचित्रविचित्रिताम्।५६
पद्मरागेन्द्ररचितां रुचिरां मणिपङ्कजैः। सोपानशतकैर्युक्तां स्यमन्तकविनिर्मितैः।५७
पट्टसूत्रग्रन्थियुक्तैश्चारुचन्दनपल्लवैः। इन्द्रनीलस्तम्भवर्यैर्वेष्टितां सुमनोहराम्।५८
सद्रत्नपूर्णकुम्भानां समूहैश्चसमन्विताम्। पारिजातप्रसूनानांमालाजालैर्विराजिताम्।५९
कस्तूरीकुङ्कुमारक्तैः सुगन्धिचन्दनद्रुमैः। सुसंस्कृतां तु सर्वत्र वासितां गन्धवायुना।६०
विद्याधरीसमूहानां नृत्यजालैर्विराजिताम्। सहस्रयोजनायामां परिपूर्णाञ्च किङ्करैः।६१
ददर्श श्रीहरिं ब्रह्मा शङ्करश्च सुरैः सह। वसन्तं तन्मध्यदेशे यथेन्दुं तारकावृतम्।६२
अमूल्यरत्ननिर्माणचित्रसिंहासनेस्थितम्। किरीटिनंकुण्डलिनं वनमालाविभूषितम्।६३
चन्दनोक्षितसर्वाङ्गं बिभ्रतं केलिपङ्कजम्। पुरतो नृत्यगीतञ्च पश्यन्तं सस्मितम्मुदा।६४
शान्तंसरस्वतीकान्तंलक्ष्मीधृतपदाम्बुजम्। लक्ष्म्याप्रदत्तताम्बूलंभुक्तवन्तंसुवासितम्।६५
गङ्गया परया भक्त्या सेवितं श्वेतचामरैः। सर्वैश्च स्तूयमानञ्च भक्तिनम्रात्मकन्धरैः।६६
एवं विशिष्टं दृष्ट्वा परिपूर्णतमं प्रभुम्। ब्रह्मादयः सुराः सर्वे प्रणम्य तुष्टुवुस्तदा।६७
पुलकाञ्चितसर्वाङ्गाः साश्रुनेत्राश्चगद्गदाः। भक्ताश्च परयाभक्त्या भीतानम्रात्मकन्धराः।६८
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा विधाता जगतामपि। वृत्तान्तं कथयामास विनयेन हरेः पुरः।६९
हरिस्तद्वचनं श्रुत्वा सर्वज्ञः सर्वभाववित्। प्रहस्योवाच ब्रह्माणं रहस्यञ्च मनोहरम्।७०

श्रीभगवानुवाच

शङ्खचूडस्य वृत्तान्तं सर्वं जानामि पद्मज!। मद्भक्तस्य च गोपस्य महातेजस्विनः पुरा।७१
शृणु तत्सर्व वृत्तान्तमितिहासम्पुरातनम्। गोलोकस्यैव चरितं पापघ्नं पुण्यकारकम्।७२
सुदामा नाम गोपश्च पार्षदप्रवरो मम। स प्राप दानवीं योनिं राधाशापात्सुदारुणात्।७३
तत्रैकदाऽहमगमं स्वालयाद्रासमण्डलम्। विरजामपिनीत्वा च मम प्राणाधिकापरा।७४
सामांविरजया सार्धंविज्ञायकिङ्करीमुखात्। पश्चात्क्रुद्धासाऽऽजगामनददर्शचतत्रमाम्।७५
विरजाञ्चनदीरूपांमांज्ञात्वाचतिरोहितम्। पुनर्जगाम सा दृष्ट्वा स्वालयंसखिभिः सह।७६

मां दृष्ट्वामन्दिरेदेवीसुदाम्नासहितम्पुरा। भृशं सा भर्त्सयामासमौनीभूतञ्चसुस्थिरम्।७७
तच्छ्रुत्वाऽसहमानश्च सुदामा तां चुक्रोप ह। स च ताम्भर्त्सयामास कोपेन मम सन्निधौ।७८
तच्छ्रुत्वा कोपयुक्ता सा रक्तपङ्कजलोचना। बहिष्कर्तुञ्चकाराज्ञांसन्त्रस्तंममसंसदि।७९
सखीलक्षं समुत्तस्थौ दुर्वारं तेजसोल्वणम्। बहिश्चकार तं तूर्णञ्जल्पन्तञ्च पुनः पुनः।८०
सा च तत्ताडनं तासां श्रुत्वा रुष्टा शशाप ह। याहि रे दानवीं योनिमित्येवंदारुणम्वचः।८१
तं गच्छन्तं शपन्तञ्च रुदन्तं मां प्रणम्य च। वारयामासतुष्टासारुदती कृपया पुनः।८२
हे वत्स तिष्ठ मा गच्छ क्वयासीतिपुनः पुनः। समुच्चार्यचतत्पश्चाज्जगामसाचविक्लवम्।८३
गोप्यश्च रुरुदुः सर्वा गोपाश्चाऽपि सुदुःखिताः। ते सर्वे राधिका चापि तत्पश्चाद्बोधिता मया।८४
आयास्यतिक्षणार्धेन कृत्वा शापस्य पालनम्। सुदामंस्त्वमिहागच्छेत्युक्त्वा सा च निवारिता।८५
गोलोकस्य क्षणार्धेनचैकंमन्वन्तरम्भवेत्। पृथिव्या जगतां धातरित्येववचनं ध्रुवम्।८६
इत्येवं शङ्खचूडश्च पुरस्तत्रैव यास्यति। महाबलिष्ठोयोगेशः सर्वमायाविशारदः।८७
मम शूलं गृहीत्वा च शीघ्रंगच्छत भारतम्। शिवः करोतु संहारं मम शूलेन रक्षसः।८८
ममैव कवचं कण्ठे सर्वमङ्गलकारकम्। बिभर्त्ति दानवः शश्वत्संसारे विजयी ततः।८९
तस्मिन्ब्रह्मन्स्थिते चैव न कोऽपि हिंसितुं क्षमः। तद्याचनां करिष्यामि विप्ररूपोऽहमेव च।९०
सतीत्वहानिस्तत्पत्न्या यत्र काले भविष्यति। तत्रैव काले तन्मृत्युरिति दत्तो वरस्त्वया।९१
तत्पत्न्याश्चोदरेवीर्यमर्पयिष्यामि निश्चितम्। तत्क्षणेचैवतन्मृत्युर्भविष्यतिनसंशयः।९२
पश्चात्सा देहमुत्सृज्य भविष्यति ममप्रिया। इत्युक्त्वाजगतांनाथो ददौशूलंहराय च।९३
शूलं दत्त्वा ययौ शीघ्रं हरिरभ्यन्तरे मुदा। भारतञ्च ययुर्देवा ब्रह्मरुद्रपुरोगमाः।९४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे शङ्खचूडेनसहतुलसीसङ्गमवर्णनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ॥१९॥

* विंशोऽध्यायः *

शङ्खचूडेनदेवानांसङ्ग्रामोद्योगवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

ब्रह्माशिवं संनियोज्य संहारे दानवस्य च। जगामस्वालयंतूर्णं यथास्थानं सुरोत्तमाः।१
चन्द्रभागानदीतीरे वटमूले मनोहरे। तत्रतस्थौ महादेवो देवविस्तारहेतवे।२
दूतं कृत्वाचित्ररथंगन्धर्वेश्वरमीप्सितम्। शीघ्रं प्रस्थापयामासशङ्खचूडान्तिकंमुदा।३
सर्वेश्वराज्ञया शीघ्रं ययौ तन्नगरं परम्। महेन्द्रनगरोत्कृष्टं कुवेरभवनाधिकम्।४
पञ्चयोजनविस्तीर्णंदैर्घ्येतद्द्विगुणंभवेत्। स्फटिकाकारमणिभिर्निर्मितंयानवेष्टितम्।५
सप्तभिः परिखाभिश्च दुर्गमाभिः समन्वितम्। ज्वलदग्निनिभैः शश्वत्कल्पितं रत्नकोटिभिः।६
युक्तञ्च वीथिशतकैर्मणिवेदिविचित्रितैः। परितो वणिजांसौधैर्नानावस्तुविराजितैः।७
सिन्दूराकारमणिभिर्निर्मितैश्च विचित्रितैः। भूषितंभूषितैर्दिव्यैराश्रमैः शतकोटिभिः।८
गत्वा ददर्श तन्मध्ये शङ्खचूडालयं परम्। अतीववलयाकारं यथा पूर्णेन्दुमण्डलम्।९
ज्वलदग्निशिखाक्ताभिः परिखाभिश्चतसृभिः। तद्दुर्गमञ्चशत्रूणामन्येषांसुगमंसुखम्।१०
अत्युच्चैर्गगनस्पर्शिमणिशृङ्गविराजितम्। राजितंद्वादशद्वारैर्द्वारपालसमन्वितम्।११
मणीन्द्रसारनिर्माणैः शोभितं लक्षमन्दिरैः। शोभितंरत्नसोपानैरत्नस्तम्भविराजितम्।१२

तद्दृष्ट्वा पुष्पदन्तोऽपि वरं द्वारं ददर्श सः। द्वारेनियुक्तं पुरुषंशूलहस्तञ्च सस्मितम्।१३
तिष्ठन्तं पिङ्गलाक्षं च ताम्रवर्णं भयङ्करम्। कथयामासवृत्तान्तं जगाम तदनुज्ञया।१४
अतिक्रम्य च तद्द्वारं जगामाभ्यन्तरं पुनः। न कोऽपि रक्षतिश्रुत्वादूतरूपंरणस्यच।१५
गत्वासोऽभ्यन्तरद्वारं द्वारपालमुवाच ह। रणस्यसर्ववृत्तान्तं विज्ञापयत माचिरम्।१६
स च तं कथयित्वा च दूतो गन्तुमुवाच ह। सगत्वा शङ्खचूडं तं ददर्श सुमनोहरम्।१७
राजमण्डलमध्यस्थं स्वर्णसिंहासने स्थितम्। मणीन्द्ररचितं दिव्यं रत्नदण्डसमन्वितम्।१८
रत्नकृत्रिमपुष्पैश्च प्रशस्तैः शोभितं सदा। भृत्येनमस्तकन्यस्तं स्वर्णच्छत्रं मनोहरम्।१९
सेवितं पार्षदगणै रुचिरैः श्वेतचामरैः। सुवेषं सुन्दरं रम्यं रत्नभूषणभूषितम्।२०
माल्येन लेपनं सूक्ष्मं सुवस्त्रं दधतं मुने। दानवेन्द्रैः परिवृतं सुवेषैश्च त्रिकोटिभिः।२१
शतकोटिभिरन्यैश्च भ्रमद्भिरस्त्रपाणिभिः। एवम्भूतं च तं दृष्ट्वा पुष्पदन्तः सविस्मयः।२२
उवाच स च वृत्तान्तं यदुक्तं शङ्करेण च।

पुष्पदन्त उवाच

राजेन्द्र! शिवभृत्योऽहं पुष्पदन्ताभिधः प्रभो! ।।२३।।

यदुक्तं शङ्करेणैव तद्ब्रवीमि निशामय। राज्यं देहि च देवानामधिकारं च साम्प्रतम्।२४
देवाश्च शरणापन्ना देवेशं श्रीहरिं परम्। हरिर्दत्त्वाऽस्य शूलं च तेनप्रस्थापितः शिवः।२५
पुष्पभद्रानदीतीरे वटमूले त्रिलोचनः। विषयं देहि तेषाञ्च युद्धं वा कुरुनिश्चितम्।२६
गत्वा वक्ष्यामि किं शम्भुमथ तद्वद मामपि। दूतस्य वचनं श्रुत्वाशङ्खचूडः प्रहस्यच।२७
प्रभातेऽहं गमिष्यामि त्वं च गच्छेत्युवाचह। सगत्वोवाचतंतूर्णंवटमूलस्थमीश्वरम्।२८
शङ्खचूडस्यवचनंतदीयंतन्मुखोदितम्। एतस्मिन्नन्तरेस्कन्द! आजगामशिवान्तिकम्।२९
वीरभद्रश्च नन्दी च महाकालः शुभद्रकः। विशालाक्षश्चबाणश्चपिङ्गलाक्षो विकम्पनः।३०
विरूपो विकृतिश्चैव मणिभद्रश्च बाष्कलः। कपिलाख्यो दीर्घदंष्ट्रो विकटस्ताम्रलोचनः।३१
कालकण्ठोबली भद्रः कालजिह्वः कुटीचरः। बलोन्मत्तोरणश्लाघीदुर्जयोदुर्गमस्तथा।३२
अष्टौ चभैरवा रौद्रारुद्राश्चैकादशस्मृताः। वसवोऽष्टौवासवश्चादित्याद्वादशस्मृताः।३३
हुताशनश्च चन्द्रश्च विश्वकर्माऽश्विनौ च तौ। कुबेरश्च यमश्चैव जयन्तो नलकूबरः।३४
वायुश्च वरुणश्चैव बुधश्च मङ्गलस्तथा। धर्मश्च शनिरीशानः कामदेवश्च वीर्यवान्।३५
उग्रदंष्ट्रा चोग्रदण्डा कोटरा कैटभी तथा। स्वयं चाष्टभुजा देवी भद्रकालीभयङ्करी।३६
रत्नेन्द्रसारनिर्माणविमानोपरि संस्थिता। रक्तवस्त्रपरीधाना रक्तमाल्यानुलेपना।३७
नृत्यन्ती च हसन्ती च गायन्ती सुस्वरं मुदा। अभयं ददाति भक्तेभ्योऽभया सा च भयं रिपुम्।३८
बिभ्रतीं विकटां जिह्वां सुलोलांयोजनायताम्। शङ्खचक्रगदापद्मखड्गचर्मधनुः शरान्।३९
खर्परं वर्तुलाकारं गम्भीरं योजनायतम्। त्रिशूलं गगनस्पर्शि शक्तिंच योजनायतम्।४०
मुद्गरं मुसलं वज्रं खेटं फलकमुज्ज्वलम्। वैष्णवास्त्रं वारुणास्त्रं वाह्नेयंनागपाशकम्।४१
नारायणास्त्रं गान्धर्वं ब्रह्मास्त्रं गारुडं तथा। पर्जन्यास्त्रं पाशुपतंजृम्भणास्त्रं च पार्वतम्।४२
माहेश्वरास्त्रं वायव्यं दण्डं सम्मोहनं तथा। अव्यर्थमस्त्रकं दिव्यंदिव्यास्त्रशतकंपरम्।४३
आगत्य तत्र तस्थौ च योगिनीनां त्रिकोटिभिः। सार्धं च डाकिनीनां च विकटानां त्रिकोटिभिः।४४
भूतप्रेतपिशाचाश्चकूष्माण्डा ब्रह्मराक्षसाः। वेतालाराक्षसाश्चैव यक्षाश्चैव तु किन्नराः।४५
ताभिश्चैव सह स्कन्दः प्रणम्य चन्द्रशेखरम्। पितुः पार्श्वेसहायार्थंसमुवासतदाज्ञया।४६

अथ दूते गते तत्रशङ्खचूडः प्रतापवान्। उवाच तुलसीं वार्तां गत्वाऽभ्यन्तरमेव च।४७
रणवार्ताञ्च सा श्रुत्वा शुष्ककण्ठोष्ठतालुका। उवाचमधुरं साध्वी हृदयेन विदूयता।४८

तुलस्युवाच

हे प्राणवन्धो! हे नाथ! तिष्ठ मे वक्षसि क्षणम्।
हे प्राणाधिष्ठातृदेव! रक्ष मे जीवितं क्षणम्॥४६॥
भुङ्क्ष्व जन्म समासाद्य यन्मे मनसि वाञ्छितम्।
पश्यामि त्वां क्षणं किञ्चिल्लोचनाभ्यां च सादरम्॥५०॥

आन्दोलयन्ते प्राणा मे मनोदग्धञ्च सन्ततम्। दुःस्वप्नश्चमयादृष्टश्चाद्यैव चरमे निशि।५१
तुलसी वचनं श्रुत्वा भुक्त्वा पीत्वा नृपेश्वरः। उवाचवचनंप्राज्ञो हितंसत्यंयथोचितम्।५२

शङ्खचूड उवाच

कालेन योजितं सर्वं कर्मभोगनिबन्धनम्। शुभं हर्षः सुखं दुःखं भयंशोकश्च मङ्गलम्।५३
काले भवन्ति वृक्षाश्च स्कन्धवन्तश्च कालतः। क्रमेण पुष्पवन्तश्च फलवन्तश्च कालतः।५४
तेषां फलानि पक्वानि प्रभवन्त्येव कालतः। तेसर्वे फलिताः कालेपातंयान्तिचकालतः।५५

काले भवन्ति विश्वानि काले नश्यन्ति सुन्दरि!।
कालात्स्रष्टा च सृजति पाता पाति च कालतः॥५६॥

संहर्ता संहरेत्काले क्रमेण सञ्चरन्ति ते। ब्रह्मविष्णुशिवादीनामीश्वरः प्रकृतिः परा।५७
स्रष्टा पाता च संहर्ता स चात्मा कालनर्तकः। काले स एव प्रकृतिं स्वाभिन्नां स्वेच्छया प्रभुः।५८

निर्माय कृतवान्सर्वान्विश्वस्थांश्च चराचरान्।
सर्वेशः सर्वरूपश्च सर्वात्मा परमेश्वरः॥५६॥

जनं जनेन जनिता जनं पाति जनेन यः। जनं जनेन हरते तं देवं भज साम्प्रतम्।६०
यस्याज्ञया वातिवातः शीघ्रगामीचसाम्प्रतम्। यस्याज्ञयाचतपनस्तपत्येव यथाक्षणम्।६१
यथाक्षणं वर्षतीन्द्रो मृत्युश्चरति जन्तुषु। यथाक्षणं दहत्यग्निश्चन्द्रो भ्रमतिशीतवान्।६२
मृत्योर्मृत्युं कालकालं यमस्यचयमम्परम्। विभुं स्रष्टुश्च स्रष्टारं मातुश्चमातृकम्भवे।६३
संहर्तारञ्च संहर्तुस्तं देवं शरणम्व्रज। को वा बन्धुश्च केषां वा सर्वबन्धुं भज प्रिये।६४

अहं को वा च त्वं का वा विधिना योजितः पुरा।
त्वया सार्धं कर्मणा च पुनस्तेन नियोजितः॥६५॥

अज्ञानी कातरः शोके विपत्तौन च पण्डितः। सुखे दुःखे भ्रमत्येव कालनेमिक्रमेणच।६६
नारायणं तं सर्वेशं कान्तं यास्यसि निश्चितम्। तपः कृतं यदर्थे च पुरा बदरिकाश्रमे।६७
मया त्वं तपसालब्धाब्रह्मणस्तु वरेण च। हर्यर्थे यत्तव तपोहरिं प्राप्स्यसिकामिनि।६८
वृन्दावने च गोविन्दं गोलोके त्वं लभिष्यसि। अहं यास्यामि तल्लोकं तनुं त्यक्त्वा च दानवीम्।६९

तत्र द्रक्ष्यसि मां त्वं च द्रक्ष्यामि त्वां च साम्प्रतम्।
अगमं राधिकाशापाद्भारतं च सुदुर्लभम्॥७०॥

पुनर्यास्यामि तत्रैवकः शोको मे शृणुमेप्रिये!। त्वञ्चदेहंपरित्यज्यदिव्यंरूपंविधायच।७१
तत्कालं प्राप्स्यसिहरिंमा कान्तेकातराभव। इत्युक्त्वाचदिनान्तेचतयासार्धंमनोहरम्।७२
सुष्वाप शोभने तल्पे पुष्पचन्दनचर्चिते। नानाप्रकारविभवं चकार रत्नमन्दिरे।७३
रत्नप्रदीपसंयुक्ते स्त्रीरत्नं प्राप्यसुन्दरीम्। निनाय रजनीं राजा क्रीडाकौतुकमङ्गलैः।७४

कृत्वा वक्षसि तां कान्तां रुदतीमतिदुःखिताम्।
कृशोदरीं निराहारां निमग्नां शोकसागरे॥७५॥

पुनस्तां बोधयामास दिव्यज्ञानेन ज्ञानवित्। पुराकृष्णेन यद्दत्तं भाण्डीरेतत्त्वमुत्तमम्।७६
स च तस्यैददौसर्वं सर्वशोकहरं परम्। ज्ञानं सम्प्राप्य सा देवी प्रसन्नवदनेक्षणा।७७
क्रीडां चकार हर्षेण सर्वं मत्वेति नश्वरम्। तौ दम्पती च क्रीडन्तौ निमग्नौ सुखसागरे।७८
पुलकाञ्चितसर्वाङ्गौ मूर्च्छितौ निर्जने मुने!। अङ्गप्रत्यङ्गसंयुक्तौ सुप्रीतौ सुरतोत्सुकौ।७९
एकाङ्गौ च तथा तौ द्वौ चार्धनारीश्वरोयथा। प्राणेश्वरञ्च तुलसीमेनेप्राणाधिकंपरम्।८०

प्राणाधिकाञ्च तां मने राजा प्राणेश्वरीं सतीम्।
तौ स्थितौ सुखसुप्तौ च तन्द्रितौ सुन्दरौ समौ ॥८१॥

सुवेषौ सुखसम्भोगादचेष्टौ सुमनोहरौ। क्षणं सुचेतनौ तौ च कथयन्तौरसाश्रयात्।८२
कथां मनोरमां दिव्यां हसन्तौ चक्षणंपुनः। क्षणञ्चकेलिसंयुक्तौ रसभावसमन्वितौ।८३
सुरते विरतिर्नास्ति तौ त तद्विषयपण्डितौ। सततं जययुक्तौ द्वौ क्षणंनैव पराजितौ।८४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे शङ्खचूडेनसहदेवानां-सङ्ग्रामोद्योगवर्णनं नाम विंशोऽध्यायः ॥२०॥

* एकविंशोऽध्यायः *

शङ्करशङ्खचूडसमागमवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

श्रीकृष्णं मनसा ध्यात्वारक्षः कृष्णपरायणः। ब्राह्मेमुहूर्तउत्थायपुष्पतल्पान्मनोहरात्।१
रात्रिवासः परित्यज्य स्नात्वा मङ्गलवारिणा। धौते च वाससी धृत्वा कृत्वा तिलकमुज्ज्वलम्।२
चकाराह्निकमावश्यमभीष्टदेववन्दनम्। दध्याज्यमधुलाजांश्चददर्श वस्तु मङ्गलम्।३
रत्नश्रेष्ठं मणिश्रेष्ठं वस्त्रश्रेष्ठञ्च काञ्चनम्। ब्राह्मणेभ्यो ददौ भक्त्यायथानित्यंचनारद!।४

अमूल्यरत्नं यत्किञ्चिन्मुक्तामाणिक्यहीरकम्।
ददौविप्राय गुरवे यात्रामङ्गलहेतवे ॥५॥

गजरत्नमश्वरत्नं धनरत्नं मनोहरम्। ददौ सर्वं दरिद्राय विप्राय मङ्गलाय च।६
भाण्डाराणांसहस्राणिनगराणां द्विलक्षकम्। ग्रामाणां शतकोटिञ्च ब्राह्मणाय ददौ मुदा।७
पुत्रं कृत्वा तु राजेन्द्रंसर्वेषु दानवेषु च। पुत्रं समर्प्यभार्यां तां राज्यं च सर्वसम्पदम्।८
प्रजानुचरसङ्घञ्च भाण्डारं वाहनादिकम्। स्वयंसन्नाहयुक्तश्च धनुष्पाणिर्बभूव ह।९
भृत्यद्वारा क्रमेणैच चकारसैन्यसञ्चयम्। अश्वानाञ्च त्रिलक्षेण लक्षेण वरहस्तिनाम्।१०
रथानामयुतेनैव धानुष्काणां त्रिकोटिभिः। त्रिकोटिभिर्वर्मिणाञ्च शूलिनाञ्च त्रिकोटिभिः।११
कृतासेनाऽपरिमिता दानवेन्द्रेण नारद!। तस्यां सेनापतिश्चैव युद्धशास्त्रविशारदः।१२
महारथः स विज्ञेयो रथिनां प्रवरो रणे। त्रिलक्षाक्षौहिणीसेनापतिंकृत्वा नराधिपः।१३
त्रिंशदक्षौहिणीवाद्यं भाण्डौघञ्च चकार ह। वहिर्बभूव शिबिरान्मनसाश्रीहरिंस्मरन्।१४
रत्नेन्द्रसारनिर्माणविमानमारुरोह सः। गुरुवर्गान्पुरस्कृत्यप्रययौ शङ्करान्तिकम्।१५
पुष्पभद्रानदीतीरे यत्राऽक्षयवटः शुभः। सिद्धाश्रमञ्च सिद्धानां सिद्धिक्षेत्रं च नारद!।१६
कपिलस्य तपः स्थानं पुण्यक्षेत्रञ्च भारते!। पश्चिमोदधिपूर्वेच मलयस्यच पश्चिमे।१७
श्रीशैलोत्तरभागे च गन्धमादनदक्षिणे। पञ्चयोजनविस्तीर्णादैर्घ्येशतगुणा तथा।१८
शुद्धस्फटिकसङ्काशा भारते च सुपुण्यदा। शाश्वती जलपूर्णाच पुष्पभद्रा नदी शुभा।१९

लवणाब्धि प्रियाभार्या शश्वत्सौभाग्यसंयुता। शरावतीमिश्रिता च निर्गता सा हिमालयात्।२०
गोमतीं वामतः कृत्वा प्रविष्टा पश्चिमोदधौ। तत्रगत्वाशङ्खचूडो ददर्श चन्द्रशेखरम्।२१
वटमूले समासीनं सूर्यकोटिसमप्रभम्। कृत्वा योगासनंदृष्ट्वामुद्रायुक्तञ्च सस्मितम्।२२
शुद्धस्फटिकसङ्काशं ज्वलन्तं ब्रह्मतेजसा। त्रिशूलपट्टिशधरं व्याघ्रचर्माम्बरं वरम्।२३
भक्तमृत्युहरं शान्तं गौरीकान्तं मनोहरम्। तपसां फलदातारं दातारं सर्वसम्पदाम्।२४
आशुतोषं प्रसन्नास्यं भक्तानुग्रहकातरम्। विश्वनाथं विश्ववीजंविश्वरूपञ्चविश्वजम्।२५
विश्वम्भरं विश्ववरं विश्वसंहारकारकम्। कारणं कारणानाञ्च नरकार्णवतारणम्।२६
ज्ञानप्रदं ज्ञानबीजं ज्ञानानन्दं सनातनम्। अवरुह्य विमानाच्च तं दृष्ट्वा दानवेश्वरः।२७
सर्वैः सार्धं भक्तियुक्तः शिरसा प्रणनाम सः। वामतो भद्रकालीञ्च स्कन्दञ्च तत्पुरः स्थितम्।२८
आशिषं च ददौ तस्मै कालीस्कन्दश्चशङ्करः। उत्तस्थुरागतंदृष्ट्वा सर्वेनन्दीश्वरादयः।२९
परस्परञ्च भाषन्ते चक्रुस्तत्र च साम्प्रतम्। राजा कृत्वा च सम्भाषामुवास शिवसन्निधौ।३०

प्रसन्नात्मा महादेवो भगवांस्तमुवाच ह।

महादेव उवाच

विधाता जगतां ब्रह्मा पिता धर्मस्य धर्मवित् ।।३१।।

मरीचिस्तस्य पुत्रश्चवैष्णवश्चापिधार्मिकः। कश्यपश्चापि तत्पुत्रोधर्मिष्ठश्चप्रजापतिः।३२

दक्षः प्रीत्या ददौ तस्मै भक्त्या कन्यास्त्रयोदश ।
तास्वेका च च दनुः साध्वी तत्सौभाग्यविवर्धिता ।।३३।।

चत्वारिंशद्दनोः पुत्रा दानवास्तेजसोल्वणाः। तेष्वेकोविप्रचित्तिश्च महाबलपराक्रमः।३४
तत्पुत्रो धार्मिकोदम्भोविष्णुभक्तोजितेन्द्रियः। जजापपरमंमन्त्रंपुष्करेलक्षवत्सरम् ।३५
शुक्राचार्यं गुरुं कृत्वा कृष्णस्य परमात्मनः। तदा त्वां तनयं प्रापपरंकृष्णपरायणम्।३६
पुरा त्वं पार्षदो गोपीगोपेष्वपि सुधार्मिकः। अधुना राधिकाशापाद्भारतेदानवेश्वरः।३७
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं तुच्छं मेनेचवैष्णवः। सालोक्यसार्ष्टिसायुज्यसामीप्यंच हरेरपि।३८
दीयमानं नगृह्णन्ति वैष्णवाः सेवनं विना। ब्रह्मत्वममरत्वं वा तुच्छं मेने च वैष्णवः।३९
इन्द्रत्वं वा मनुत्वं वा नमेने गणनासु च। कृष्णभक्तस्य ते किं वादेवानांविषये भ्रमे।४०
देहि राज्यं च देवानां मत्प्रीतिंरक्षभूमिप!। सुखं स्वराज्ये त्वंतिष्ठदेवास्तिष्ठन्तुवैपदे।४१
अलं भूतविरोधेन सर्वे कश्यपवंशजाः। यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च।४२

ज्ञातिद्रोहस्य पापानि कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।
स्वसम्पदाञ्च हानिं च यदि राजेन्द्र! मन्यसे ।।४३।।

सर्वावस्था च समतां केषां याति च सर्वदा। ब्रह्मणश्चतिरोभावोलयेप्राकृतिकेसदा ।४४
आविर्भावः पुनस्तस्यप्रभावादीश्वरेच्छया। ज्ञानवृद्धिश्चतपसास्मृतिलोपश्चनिश्चितम्।४५
करोति सृष्टिं ज्ञानेन स्रष्टा सोऽपि क्रमेण च। परिपूर्णतमो धर्मः सत्येसत्याश्रयेसदा।४६
त्रिभागः सोऽपित्रेयातांद्विभागो द्वापरेस्मृतः। एकभागः कलौपूर्वंतदंशश्चक्रमेणच।४७
कलामात्रं कलेः शेषे कुह्वां चन्द्रकला यथा। यादृक्तेजो रवेर्ग्रीष्मेनतादृक्छिशिरेपुनः।४८
दिनेषु यादृङ्मध्याह्नेसायं प्रातर्न तत्समम्। उदयं याति कालेनबालतां च क्रमेण च।४९
प्रकाण्डतां चतत्पश्चात्कालेऽस्तं पुनरेति सः। दिने प्रच्छन्नतांयातिकालेनदुर्दिनेघने ।५०
राहुग्रस्ते कम्पितश्च पुनरेव प्रसन्नताम्। परिपूर्णतमश्चन्द्रः पूर्णिमायां च जायते।५१
तादृशो न भवेन्नित्यं क्षयं याति दिने दिने। पुनश्च पुष्टिमायाति परं कुह्वा दिनेदिने।५२

सम्पद्युक्तः शुक्लपक्षे कृष्णे म्लानश्च यक्ष्मणा। राहुग्रस्ते दिनेम्लानोदुर्दिनेनविरोचिते।५३
काले चन्द्रोभवेच्छुक्लोभ्रष्टश्रीः कालभेदतः। भविष्यतिबलिश्चेन्द्रोभ्रष्टश्रीः सुतलेऽधुना।५४
कालेनपृथ्वी सस्याढ्या सर्वाधारा वसुन्धरा। काले जले निमग्ना सा तिरोभूताऽम्बुविप्लुता।५५
काले नश्यन्ति विश्वानि प्रभवन्त्येव कालतः। चराचरश्च कालेननश्यन्तिप्रभवन्तिच।५६
ईश्वरस्यैव समता ब्रह्मणः परमात्मनः। अहं मृत्युञ्जयो यस्मादसङ्ख्यं प्रकृतं लयम्।५७
अदर्शं चापि द्रक्ष्यामि बारम्बारं पुनः पुनः। स च प्रकृतिरूपं च स एव पुरुषः स्मृतः।५८
स चात्मा स च जीवश्च नानारूपधरः परः। करोति सततं योहितन्नामगुणकीर्तनम्।५९
काले मृत्युं स जयति जन्म रोगभयं जराम्। स्रष्टा कृतो विधिस्तेन पाता विष्णुः कृतो भवेत्।६०
अहं कृतश्च संहर्ता भयं विषयिणः कृता। कालाग्निरुद्रंसंहारे नियोज्य विषये नृप!।६१
अहं करोमि सततं तन्नामगुणकीर्तनम्। तेन मृत्युञ्जयोऽहं च ज्ञानेनाऽनेन निर्भयः।६२
मृत्युर्मृत्युभयाद्याति वैनतेयादिवोरगाः। इत्युक्त्वा स च सर्वेशः सर्वभावेनतत्परः।६३
विरराम च शम्भुश्च सभामध्ये च नारद। राजातद्वचनं श्रुत्वा प्रशशंस पुनः पुनः।६४
उवाच मधुरं देवं परं विनयपूर्वकम्।

शङ्खचूड उवाच

त्वया यत्कथितं देव! नान्यथा वचनं स्मृतम् ।।६५।।
तथाऽपि किञ्चिद्यथार्थं श्रूयतां मन्निवेदनम्। ज्ञातिद्रोहेमहत्पापंत्वयोक्तमधुनाचयत्।६६
गृहीत्वातस्यसर्वस्वंकुतः प्रस्थापितो बलिः। मया समुद्धृतंसर्वमूर्ध्वमैश्वर्यमीश्वर।६७
सुतलाच्च समुद्धर्तुं नालं तत्र गदाधरः। सभ्रातृको हिरण्याक्षः कथं देवैश्च हिंसितः।६८
शुम्भादयश्चासुराश्चकथं देवैर्निपातिताः। पुरा समुद्रमथने पीयूषं भक्षितं सुरैः।६९
क्लेशभाजो वयं तत्र ते सर्वे फलभोगिनः। क्रीडाभाण्डमिदं विश्वंप्रकृतेः परमात्मनः।७०
यस्मै यत्र स ददाति तस्यैश्वर्यं भवेत्तदा। देवदानवयोर्वादः शश्वन्नैमित्तिकः सदाः।७१
पराजयो जयस्तेषां कालेऽस्माकंक्रमेण च। तदाऽऽवयोर्विरोधंवागमनंनिष्फलंपरम्।७२
समसम्वन्धिनो बन्धोरीश्वरस्यमहात्मनः। इयं तेमहतीलज्जायुद्धेऽस्माभिः सहाधुना।७३
जये ततोऽधिका कीर्तिर्हानिश्चैव पराजये। इत्येतद्वचनं श्रुत्वा प्रहस्य च त्रिलोचनः।७४
यथोचितमुत्तरं तमुवाच दानवेश्वरम्।

महादेव उवाच

युष्माभिः सह युद्धे मे ब्रह्मवंशसमुद्भवैः ।।७५।।
का लज्जा महती राजन्न कीर्तिर्वा पराजये। युद्धमादौ हरेरेव मधुना कैटभेन च।७६
हिरण्यकशिपोश्चैव सह तेनाऽऽत्मना नृप!। हिरण्याक्षस्य युद्धं च पुनस्तेनगदाभृता।७७
त्रिपुरैः सह युद्धं च मयाऽपि च पुराकृतम्। सर्वेश्वर्या सर्वमातुः प्रकृत्याश्च बभूव ह।७८
सह शुम्भादिभिः पूर्वं समरः परमाद्भुतः। पार्षदप्रवरस्त्वं च कृष्णस्य परमात्मनः।७९
येये हताश्च दैतेया न हि केऽपि त्वया समाः। का लज्जामहतीराजन्ममयुद्धेत्वयासह।८०
सुराणां शरणस्यैव प्रेषितश्च हरेरहो। देहि राज्यं च देवानामिति मे निश्चितं वचः।८१
युद्धं वा कुरु मत्सार्धं वाग्व्यये किं प्रयोजनम्। इत्युक्त्वा शङ्करस्तत्रविरराम चनारद।८२
उत्तस्थौ शङ्खचूडश्च ह्यमात्यैः सह सत्वरम् ।।८३।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायण नारदसम्वादे शङ्खचूडकृतेप्रबोधवाक्यवर्णनंनामैकविंशोऽध्यायः।२१।

* द्वाविंशोऽध्यायः *

देवासुरपराक्रमवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

शिवं प्रणम्य शिरसा दानवेन्द्रः प्रतापवान्। समारुरोह यानं च सहामात्यैः स सत्वरः।१
शिवः स्वसैन्यं देवांश्च प्रेरयामास सत्वरम्। दानवेन्द्रः ससैन्यश्चयुद्धारम्भेबभूव ह।२
स्वयं महेन्द्रो युयुधे सार्धं च वृषपर्वणा। भास्करो युयुधेविप्रचित्तिना सह सत्वरः।३
दम्भेन सह चन्द्रश्च चकार परमं रणम्। कालस्वरेण कालश्च गोकर्णेन हुताशनः।४
कुबेरः कालकेयेन विश्वकर्मा मयेन च। भयङ्करेण मृत्युश्च संहरेण यमस्तथा।५
विकङ्कणेन वरुणश्चञ्चलेन समीरणः। बुधश्च घृतपृष्ठेन रक्ताक्षेण शनैश्चरः।६
जयन्तो रत्नसारेण वसवो वर्चसाङ्गणैः। अश्विनौ च दीप्तिमता धूम्रेण नलकूवरः।७
धुरन्धरेण धर्मश्च उषाक्षेण च मङ्गलः। शोभाकरेण वै भानुः पिठरेण च मन्मथः।८
गोधामुखेनचूर्णेनखड्गेन च ध्वजेनव। काञ्चीमुखेन पिण्डेन धूम्रेणसह नन्दिना।९
विश्वेन च पलाशेनादित्याद्या युयुधुःपरे। एकादश च रुद्रा वै एकादशभयङ्करैः।१०
महामारी च युयुधे चोग्रचण्डादिभिः सह। नन्दीश्वरादयः सर्वे दानवानां गणैः सह।११
युयुधुश्च महायुद्धे प्रलयेऽपि भयङ्करे। वटमूले च शम्भुश्च तस्थौ काल्या सुतेन च।१२
सर्वे च युयुधुः सैन्यसमूहाः सततं मुने!। रत्नसिंहासने रम्ये कोटिभिर्दानवैः सह।१३
उवास शङ्खचूडश्च रत्नभूषणभूषितः। शङ्करस्य च ये योधा दानवैश्च पराजिताः।१४
देवाश्च दुद्रुवुः सर्वे भीताश्च क्षतविग्रहाः। चकार कोपं स्कन्दश्च देवेभ्यश्चाभयंददौ।१५
बलञ्च स्वगणानाञ्च वर्धयामास तेजसा। सोऽयमेकश्च युयुधे दानवानां गणैः सह।१६
अक्षौहिणीनां शतकं समरे च जघान सः। असुरान्पातयामास काली कमललोचना।१७
पपौ रक्तं दानवानामतिक्रुद्धा ततः परम्। दशलक्षगजेन्द्राणां शतलक्षञ्च च कोटिशः।१८
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप लीलया। कबन्धानां सहस्रञ्च ननर्त समरे मुने!।१९
स्कन्दस्य शरजालेन दानवाः क्षतविग्रहाः। भीताश्च दुद्रुवुः सर्वे महारणपराक्रमाः।२०
वृषपर्वा विप्रचित्तिर्दम्भश्चापि विकङ्कणः। स्कन्देन सार्धं युयुधुस्ते सर्वेविक्रमेणच।२१
महामारीचयुयुधे नवभूवपराङ्मुखी। बभूवुस्तेच संक्षुब्धाः स्कन्दस्यशक्तिपीडिताः।२२
न दुद्रुवुर्भयात्स्वर्गे पुष्पवृष्टिर्बभूव ह। स्कन्दस्य समरं दृष्ट्वा महारुद्रसमुल्वणम्।२३
दानवानां क्षयकरं यथा प्राकृतिकोलयः। राजा विमानमारुह्य चकार बाणवर्षणम्।२४
नृपस्य शरवृष्टिश्च घनस्य वर्षणं यथा। महाघोरान्धकारश्च वह्न्युत्थानं बभूव च।२५
देवाः प्रदुद्रुवुः सर्वेऽप्यन्ये नन्दीश्वरादयः। एक एव कार्त्तिकेयस्तथौ समरमूर्धनि।२६

पर्वतानाञ्च सर्पाणां शिलानां शाखिनां तथा।
नृपश्चकार वृष्टिं च दुर्वाराञ्च भयङ्करीम्।।२७।।

नृपस्य शरवृष्ट्या च प्रहितः शिवनन्दनः। नीहारेण च सान्द्रेण प्रहितोभास्करोयथा।२८
धनुश्चिच्छेद स्कन्दस्य दुर्वहञ्च भयङ्करः। बभञ्जच रथं दिव्यं चिच्छेद रथपीठकान्।२९
मयूरंजर्जरीभूतं दिव्यास्त्रेणचकार सः। शक्तिंचिक्षेपसूर्याभां तस्य वक्षस्यघातिनीम्।३०
क्षणं मूर्च्छाञ्च सम्प्राप बभूवचेतनः पुनः। गृहीत्वा तद्धनुर्दिव्यं यद्दत्तं विष्णुना पुरा।३१
रत्नेन्द्रसारनिर्माणयानमारुह्य कार्त्तिकः। शस्त्रास्त्रंचगृहीत्वा च चकार रणमुल्वणम्।३२

सर्पांश्चपर्वतांश्चैववृक्षांश्चप्रस्तरांस्तथा ।सर्वांश्चिच्छेदकोपेनदिव्यास्त्रेणशिवात्मजः।३३
वह्निंनिर्वापयामास पार्जन्येन प्रतापवान्। रथं धनुश्च चिच्छेद शङ्खचूडस्य लीलया।३४
सन्नाहं सारथिञ्चैवकिरीटंमुकुटोज्वलम्। चिक्षेपशक्तिं शुक्लाभां दानवेन्द्रस्यवक्षसि।३५
मूर्च्छां सम्प्राप्य राजा च चेतनश्च बभूवह। आरुरोह यानमन्यद्धनुर्जग्राह सत्वरः।३६
चकार शरजालञ्च मायया मायिनाम्वरः। गुहं चच्छाद समरे शरजालेन नारद!।३७
जग्राह शक्तिमव्यग्रां शतसूर्यसमप्रभाम्। प्रलयाग्निशिखारूपांविष्णोश्चतेजसावृताम्।३८
चिक्षेप तां च कोपेन महावेगेन कार्त्तिके। पपातशक्तिस्तद्गात्रे वह्निराशिरिवोज्वला।३९

मूर्च्छां सम्प्राप शक्त्या च कार्त्तिकेयो महाबलः ।
काली गृहीत्वा तं क्रोडे निनाय शिवसन्निधौ ।।४०।।

शिवस्तं चापिज्ञानेनजीवयामास लीलया। ददौ बलमनन्तं च समुत्तस्थौप्रतापवान्।४१
काली जगाम समरंरक्षितुंकार्त्तिकस्य या। वीरास्तामनुजग्मुश्चते च नन्दीश्वरादयः।४२
सर्वे देवाश्च गन्धर्वा यक्षराक्षसकिन्नरा। वाद्यभाण्डाश्च बहुशः शतशो मधुवाहकाः।४३
सा च गत्वाऽथ संग्रामंसिंहनादञ्चकार च। देव्याश्चसिंहनादेन प्रापुर्मूर्च्छाञ्चदानवाः।४४
अट्टाट्टहासमशिवं चकार च पुनः पुनः। दृष्ट्वा पपौ च माध्वीकं ननर्त रणमूर्धनि।४५
उग्रदंष्ट्रा चोग्रदण्डाकोटवी च पपौ मधु। योगिनीडाकिनीनाञ्च गणाः सुरगणादयः।४६
दृष्ट्वा कालीं शङ्खचूडः शीघ्रमाजौ समाययौ। दानवाश्च भयम्प्रापू राजा तेभ्योऽभयं ददौ।४७

काली चिक्षेप वह्निञ्च प्रलयाग्निशिखोपमम् ।
राजा निर्वापयामास पार्जन्येनचलीलया ।।४८।।

चिक्षेप वारुणं सा च तीव्रञ्च महदद्भुतम्। गान्धर्वेण चचिच्छेद दानवेन्द्रश्च लीलया।४९
माहेश्वरं प्रचिक्षेप कालीवह्निशिखोपमम्। राजा जघान तं शीघ्रं वैष्णवेनचलीलया।५०
नारायणास्त्रं सा देवी चिक्षेप मन्त्रपूर्वकम्। राजा ननाम तद्दृष्ट्वा चावरुह्य रथादसौ।५१
ऊर्ध्वंजगाम तच्चास्त्रं प्रलयाग्निशिखोपमम्। पपात शङ्खचूडश्च भक्त्या तं दण्डवद्भुवि।५२
ब्रह्मास्त्रं सा च चिक्षेप यत्नतो मन्त्रपूर्वकम्। ब्रह्मास्त्रेण महाराजो निर्वापञ्च चकार स।५३
तदा चिक्षेप दिव्यास्त्रं सादेवीमन्त्रपूर्वकम्। राजादिव्यास्त्रजालेन तन्निर्वाणञ्चकारच।५४
देवीचिक्षेपशक्तिं च यत्नतोयोजनायताम्। राजा दिव्यास्त्रजालेन शतखण्डाञ्चकारह।५५
जग्राह मन्त्रपूतञ्च देवी पाशुपतं रुषा। निक्षेपणं निरोद्धुञ्च वाग्बभूवाऽशरीरिणी।५६
मृत्युः पाशुपते नास्ति नृपस्य च महात्मनः। यावदस्ति च मन्त्रस्य कवचं च हरेरिति।५७
यावत्सतीत्वमस्त्येव सत्याश्चनृपयोषितः। तावदस्यजरामृत्युर्नास्तीतिब्रह्मणोवचः।५८
इत्याकर्ण्य भद्रकाली न तच्चिक्षेपशस्त्रकम्। शतलक्षं दानवानां जग्रासलीलयाक्षुधा।५९
ग्रस्तुं जगाम वेगेन शङ्खचूडं भयङ्करी। दिव्यास्त्रेण सुतीक्ष्णेन वारयामास दानवः।६०
खड्गं चिक्षेपसा देवीग्रीष्मसूर्योपमं यथा। दिव्यास्त्रेण दानवेन्द्रशतखण्डञ्चकारसः।६१
पुनर्ग्रस्तुं महादेवी वेगेनच जगाम तम्। सर्वसिद्धेश्वरः श्रीमान्ववृधे दानवेश्वरः।६२
वेगेन मुष्टिना काली कोपयुक्ता भयङ्करी। बभञ्जच रथं तस्य जघान सारथिं सती।६३
सा च शूलं च चिक्षेप प्रलयाग्निशिखोपमम्। वामहस्तेन जग्राह शङ्खचूडः स्वलीलया।६४
मुष्ट्या जघान तं देवी महाकोपेन वेगतः। बभ्राम च तया दैत्यः क्षणंमूर्च्छामवाप च।६५
क्षणेन चेतनां प्राप्य समुत्तस्थौ प्रतापवान्। न चकार बाहुयुद्धं देव्यासहननामताम्।६६

देव्याश्चास्त्रंसचिच्छेदजग्राहचस्वतेजसा । नास्त्रंचिक्षेप तां भक्तोमातृभक्त्यातुवैष्णवः।६७
गृहीत्वा दानवं देवी भ्रामयित्वापुनः पुनः। ऊर्ध्वं च प्रापयामास महावेगेनकोपिता।६८
ऊर्ध्वात्पपात वेगेनशङ्खचूडः प्रतापवान्। निपत्यचसमुत्तस्थौप्रणम्यभद्रकालिकाम्।६९
रत्नेन्द्रसारनिर्माणं विमानं सुमनोहरम्। आरुरोह हर्षयुक्तो न विश्रान्तो महारणे।७०
दानवानां च क्षतजं सादेवीचपपौक्षुधा। पीत्वाभुक्त्वाभद्रकालीजगामशंकरान्तिकम्।७१
उवाच रणवृत्तान्तं पौर्वापर्यंयथाक्रमम्। श्रुत्वा जहास शम्भुश्चदानवानां विनाशनम्।७२
लक्षं च दानवेन्द्राणामवशिष्टंरणेऽधुना। भुञ्जन्त्यानिर्गतंवक्त्रात्तदन्यं भुक्तमीश्वर।७३
सङ्ग्रामे दानवेन्द्रं च हन्तुंपाशुपतेन वै। अवध्यस्तव राजेतिवाग्बभूवाशरीरिणी।७४
राजेन्द्रश्च महाज्ञानी महाबलपराक्रमः। न च चिक्षेप मय्यस्त्रं चिच्छेद मम सायकम्।७५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे कालीशङ्खचूडयुद्धवर्णनंनामद्वाविंशोऽध्यायः।२२।

* त्रयोविंशोऽध्यायः *

शङ्खचूडवधवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

शिवस्तत्त्वं समाकर्ण्य तत्त्वज्ञानविशारदः। ययौ स्वयं च समरे स्वगणैः सहनारद।१
शङ्खचूडः शिवं दृष्ट्वा विमानादवरुह्य च। ननाम परया भक्त्या शिरसा दण्डवद्भुवि।२
तम्प्रणम्य च वेगेन विमानमारुरोह सः। तूर्णं चकार सन्नाहं धनुर्जग्राह दुर्वहम्।३
शिवदानवयोर्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा। न बभूवतुरन्योन्यं ब्रह्मञ्जयपराजयौ।४
न्यस्तशस्त्रश्च भगवान्न्यस्तशस्त्रश्च दानवः। रथस्थः शङ्खचूडश्चवृषस्थोवृषभध्वजः।५
दानवानां च शतकमुद्धृतं च बभूवह। रणे ये ये मृता शम्भुर्जीवयामास तान्विभुः।६
एतस्मिन्नन्तरे वृद्धोब्राह्मणः परमातुरः। आगत्य च रणस्थानमुवाच दानवेश्वरम्।७

वृद्धब्राह्मण उवाच

देहि भिक्षांचराजेन्द्रमह्यंविप्रायसाम्प्रतम्। त्वंसर्वसम्पदांदातायन्मेमनसिवाञ्छितम्।८
निरीहाय च वृद्धायतृषितायचसाम्प्रतम्। पश्चात्त्वांकथयिष्यामिपुरः सत्यंचकुर्विति।९
ओमित्युवाचराजेन्द्र ! प्रसन्नवदनेक्षणः। कवचार्थी जनश्चाहमित्युवाचाऽतिमायया।१०
तच्छ्रुत्वा कवचं दिव्यं जग्राह हरिरेव च। शङ्खचूडस्य रूपेण जगाम तुलसीं प्रति।११
गत्वातस्यां मायया च वीर्याधानं चकार च। अथशम्भुर्हरेः शूलं जग्राह दानवं प्रति।१२
ग्रीष्ममध्याह्नमार्तण्डप्रलयाग्निशिखोपमम्। दुर्निवार्यं च दुर्धर्षमव्यर्थं वैरिघातकम्।१३
तेजसा चक्रतुल्यञ्च सर्वशस्त्रास्त्रसारकम्। शिवकेशवयोरन्यदुर्वहं च भयङ्करम्।१४
धनुः सहस्रं दैर्घ्येण प्रस्थेण शतहस्तकम्। सजीवं ब्रह्मरूपञ्च नित्यरूपमनिर्दिशम्।१५
संहर्तुं सर्वं ब्रह्माण्डमलंयत्स्वीयलीलया। चिक्षेप तोलनं कृत्वा शङ्खचूडे च नारद!।१६
राजा चापं परित्यज्य श्रीकृष्णचरणाम्बुजम्। ध्यानं चकार भक्त्या च कृत्वा योगासनं धिया।१७
शूलं च भ्रमणं कृत्वा पपात दानवोपरि। चकार भस्मसात्तं च सरथं चाऽथ लीलया।१८
राजा धृत्वा दिव्यरूपं किशोरंगोपवेषकम्। द्विभुजं मुरलीहस्तं रत्नभूषणभूषितम्।१९
रत्नेन्द्रसारनिर्माणं वेष्टितं गोपकोटिभिः। गोलोकादागतं यानमारुरोह पुरं ययौ।२०

गत्वा ननाम शिरसा स राधाकृष्णयोर्मुनि!। भक्त्याचचरणाम्भोजं रासे वृन्दावने वने।२१
सुदामानं च तौ दृष्ट्वा प्रसन्नवदनेक्षणौ। क्रोडे चक्रतुरत्यन्तं प्रेम्णाऽतिपरिसंयुतौ।२२
अथ शूलं च वेगन प्रयतौ तं च सादरम्। अस्थिभिः शङ्खचूडस्य शङ्खजातिर्बभूवह।२३
नानाप्रकाररूपेण शश्वत्पूता सुरार्चने। प्रशस्तं शङ्खतोयं च देवानां प्रीतिदं परम्।२४
तीर्थतोयस्वरूपं च पवित्रं शम्भुनाविना। शङ्खशब्दोभवेद्यत्रतत्रलक्ष्मीः सुसंस्थिरा।२५
स स्नातः सर्वतीर्थेषु यः स्नातः शङ्खवारिणा। शङ्खो हरेरधिष्ठानंयत्रशङ्खस्ततोहरिः।२६
तत्रैववसतेलक्ष्मीर्दूरीभूतममङ्गलम् । स्त्रीणां च शङ्खध्वनिभिः शूद्राणांचविशेषतः।२७
भीता रुष्टा याति लक्ष्मीस्तत्स्थलादन्यदेशतः। शिवोऽपि दानवं हत्वा शिवलोकं जगाम ह।२८
प्रहृष्टो वृषभारूढः स्वगणैश्च समावृतः। सुराः स्वविषयं प्रापुः परमानन्दसंयुताः।२९
नेदुर्दुन्दुभयः स्वर्गे जगुर्गन्धर्वकिन्नराः। बभूव पुष्पवृष्टिश्च शिवस्योपरि सन्ततम्।
प्रशशंसुः सुरास्तं च मुनीन्द्रप्रवरादयः ।।३०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां नवमस्कन्धे शङ्खचूडवधवर्णनं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ।।२३।।

* चतुर्विंशोऽध्यायः *

तुलसीमाहात्म्यकीर्त्तनम्

नारद उवाच

नारायणश्च भगवान्वीर्याधानं चकार ह। तुलस्यांकेन रूपेण तन्मे व्याख्यातुमर्हसि।१

श्रीनारायण उवाच

नारायणश्च भगवान्देवानां साधनेषु च। शङ्खचूडस्य कवचं गृहीत्वा विष्णुमायया।२
पुनर्विधाय तद्रूपं जगाम तत्सतीगृहम्। पातिव्रत्यस्य नाशेन शङ्खचूडजिघांसया।३
दुन्दुभिं वादयामास तुलसीद्वारसन्निधौ। जयशब्दं चतद्द्वारे बोधयामाससुन्दरीम्।४
तच्छ्रुत्वा च रवं साध्वी परमानन्दसंयुता। राजमार्गे गवाक्षेण ददर्शपरमादरात्।५
ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्वा कारयामास मङ्गलम्। बन्दिभ्यो भिक्षुकेभ्यश्च वाचिभ्यश्च धनं ददौ।६
अवरुह्य रथाद्देवो देव्याश्च भवनं ययौ। अमूल्यरत्ननिर्माणं सुन्दरं सुमनोहरम्।७
तं दृष्ट्वा च पुरतः कान्तं सा तं कान्तं मुदऽन्विता ।
तत्पादं क्षालयामास ननाम च रुरोद च ।।८।।
रत्नसिंहासने रम्ये वासयामास कामुकी। ताम्बूलं चददौतस्मैकर्पूरादिसुवासितम्।९
अद्य मे सफलं जन्म जीवनं च बभूव ह। रणे गतं च प्राणेशं पश्यन्त्याश्च पुनर्गृहे।१०
सस्मिता सकटाक्षं च सकामापुलकाङ्किता। पप्रच्छ रणवृत्तान्तंकान्तंमधुरयागिरा।११

तुलस्युवाच

असंख्यविश्वसंहर्त्रा सार्धमाजौ तव प्रभो!। कथं बभूव विजयस्तन्मे ब्रूहि कृपानिधे।१२
तुलसीवचनं श्रुत्वा प्रहस्य कमलापतिः। शङ्खचूडस्य रूपेण तामुवाचाऽमृतं वचः।१३

श्रीभगवानुवाच

आवयोः समरः कान्ते पूर्णमब्दं बभूव ह। नाशो बभूव सर्वेषां दानवानां चकामिनि।१४
प्रीतिं च कारयामास ब्रह्मा च स्वयमावयोः। देवानामधिकारश्चप्रदत्तोब्रह्मणाऽऽज्ञया ।१५
मयाऽऽगतं स्वभवनं शिवलोकं शिवो गतः। इत्युक्त्वा जगतां नाथः शयनंचचकारह।१६

रेमे रमापतिस्तत्र रमया सह नारद!। सा साध्वी सुखसम्भोगादाकर्षणव्यतिक्रमात्।१७
सर्वं वितर्कयामास कस्त्वमेवेत्युवाच सा।

तुलस्युवाच

को वा त्वं वद मायेश!। भुक्ताऽहं मायया त्वया ।।१८।।
दूरीकृतं मत्सतीत्वं यदतस्त्वां शपामि हे। तुलसीवचनं श्रुत्वा हरिः शापभयेन च।१९
दधार लीलया ब्रह्मन्सुमूर्तिं सुमनोहराम्। ददर्श पुरतो देवी देवदेवं सनातनम्।२०
नवीननीरदश्यामं शरत्पङ्कजलोचनम्। कोटिकन्दर्पलीलाभं रत्नभूषणभूषितम्।२१
ईषद्धास्यंप्रसन्नास्यं शोभितंपीतवाससम्। तंदृष्ट्वाकामिनीकामंमूर्च्छांसम्प्रापलीलया।२२
पुनश्च चेतनाम्प्राप्य पुनः सा तमुवाच ह।

तुलस्युवाच

हे नाथ! ते दया नास्ति पाषाणसदृशस्य च ।।२३।।
छलेन धर्मभङ्गेन ममस्वामी त्वया हतः। पाषाणहृदयस्त्वं हि दयाहीनो यतः प्रभो!।२४
तस्मात्पाषाणरूपस्त्वं भवे देव भवाधुना। येवदन्ति चसाधुं त्वांतेभ्रान्ताहिनसंशयः।२५
भक्तोविनाऽपराधेन परार्थे च कथं हतः। भृशं रुरोद शोकार्ता विलाप मुहुर्मुहुः।२६
ततश्च करुणां दृष्ट्वा करुणारससागरः। नयेन तां बोधयितुमुवाच कमलापतिः।२७

श्रीभगवानुवाच

तपस्त्वया कृतं भद्रे! मदर्थे भारते चिरम्। त्वदर्थे शङ्खचूडश्च चकार सुचिरं तपः।२८
कृत्वा त्वां कामिनीं सोऽपि विजहार च तत्क्षणात्।
अधुना दातुमुचितं तवैव तपसः फलम् ।।२९।।
इदं शरीरं त्यक्त्वा चदिव्यदेहं विधाय च। रामे रम मया सार्धं त्वं रमासदृशी भव।३०
इयं तनुर्नदीरूपा गण्डकीति च विश्रुता। पूता सुपुण्यदा नृणां पुण्ये भवतु भारते।३१
तव केशसमूहश्च पुण्यवृक्षो भविष्यति। तुलसीकेशसम्भूता तुलसीतिच विश्रुता।३२
त्रिषु लोकेषु पुष्पाणां पत्राणां देवपूजने। प्रधानरुपातुलसी भविष्यति वरानने!।३३
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले गोलोके ममसन्निधौ। भवत्वं तुलसी वृक्षवरा पुष्पेषु सुन्दरी।३४
गोलोके विरजातीरे रासे वृन्दावने वने। भाण्डीरे चम्पकवने रम्ये चन्दनकानने।३५
माधवीकेतकीकुन्दमालिकामालतीवने। वासस्तेऽत्रैव भवतु पुण्यस्थानेषु पुण्यदः।३६
तुलसीतरुमूलेषु पुण्यदेशेषु पुण्यदम्। अधिष्ठानञ्चतीर्थानां सर्वेषाञ्च भविष्यति।३७
तत्रैव सर्वदेवानां ममाधिष्ठानमेव च। तुलसीपत्रपतनप्राप्तये च वरानने।३८
स स्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः। तुलसीपत्रतोयेन योऽभिषेकं समाचरेत्।३९
सुधाघटसहस्राणां या तुष्टिस्तु भवेद्धरेः। सा च तुष्टिर्भवेन्नूनं तुलसीपत्रदानतः।४०
गवामयुतदानेन यत्फलं तत्फलं भवेत्। तुलसीपत्रदानेन तत्फलं कार्त्तिके सति!।४१
तुलसीपत्रतोयञ्च मृत्युकाले च योलभेत्। मुच्यतेसर्वपापेभ्योविष्णुलोकेमहीयते।४२
नित्यंयस्तुलसीतोयं भुङ्क्तेभक्त्याचमानवः। लक्षाश्वमेधजंपुण्यंसम्प्राप्नोतिसमानवः।४३
तुलसींस्वकरे कृत्वाधृत्वादेहेचमानवः। प्राणांस्त्यजतितीर्थेषुविष्णुलोकंसगच्छति।४४
तुलसीकाष्ठनिर्माणमाला गृह्णातियो नरः। पदे पदेऽश्वमेधस्य लभतेनिश्चितंफलम्।४५
तुलसीं स्वकरे कृत्वा स्वीकारं यो नरक्षति। स यातिकालसूत्रञ्चयावच्चन्द्रदिवाकरौ।४६
करोतिमिथ्याशपथं तुलस्यांयोऽत्रमानवः। स यातिकुम्भीपाकंचयावदिन्द्राश्चतुर्दश।४७

तुलसीतोयकणिकां मृत्युकालेच योलभेत्। रत्नयानं समारुह्य वैकुण्ठेप्राप्यतेध्रुवम्।४८
पूर्णिमायाममायां च द्वादश्यां रविसङ्क्रमे। तैलाभ्यङ्गं च कृत्वा च मध्याह्ने निशि सन्ध्ययोः।४६
आशौचेऽशुचिकाले ये रात्रिवासोऽन्विता नराः। तुलसीं ये विचिन्वन्ति ते छिन्दन्ति हरेः शिरः।५०
त्रिरात्रं तुलसीपत्रं शुद्धं पर्युषितं सति!। श्राद्धे व्रते च दाने च प्रतिष्ठायां सुरार्चने।५१
भूगतं तोयपतितं यद्दत्तं विष्णवे सति!। शुद्धं च तुलसीपत्रंक्षालनादन्यकर्मणि।५२
वृक्षाधिष्ठातृदेवी या गोलोकेव निरामये। कृष्णेनसार्धंनित्यंचनित्यक्रीडांकरिष्यसि।५३
नद्यधिष्ठातृदेवीया भारते च सुपुण्यदा। लवणोदस्य सापत्नी मदंशस्य भविष्यति।५४
त्वं च स्वयं महासाध्वी वैकुण्ठेममसन्निधौ। रमासमाचरामाचभविष्यसिनसंशयः।५५
अहं च शैलरूपेण गण्डकीतीरसन्निधौ। अधिष्ठानं करिष्यामि भारते तव शापतः।५६
कोटिसंख्यास्तत्रकीटास्तीक्ष्णंदंष्ट्रावरायुधैः। तच्छिलाकुहरेचक्रंकरिष्यन्तिमदीयकम्।५७
एकद्वारं चतुश्चक्रंवनमालाविभूषितम्। नवीननीरदाकारं लक्ष्मीनारायणाभिधम्।५८
एकद्वारं चतुश्चक्रं नवीननीरदोपमम्। लक्ष्मीजनार्दनो ज्ञेयो रहितो वनमालया।५६
द्वारद्वये चतुश्चक्रं गोष्पदेन विराजितम्। रघुनाथाभिधं ज्ञेयं रहितं वनमालया।६०
अतिक्षुद्रं द्विचक्रं च नवीनजलदप्रभम्। तद्वामनाभिधं ज्ञेयं रहितं वनमालया।६१
अतिक्षुद्रं द्विचक्रं च वनमालाविभूषितम्। विज्ञेयं श्रीधरं रूपं श्रीप्रदं गृहिणां सदा।६२
स्थूलञ्चवर्तुलाकारं रहितं वनमालया। द्विचक्रं स्फुटमत्यन्तं ज्ञेयं दामोदराभिधम्।६३
मध्यमं वर्तुलाकारं द्विचक्रं बाणविक्षतम्। रणरामाभिधं ज्ञेयं शरतूणसमन्वितम्।६४
मध्यमंसप्तचक्रञ्च च्छत्रभूषणभूषितम्। राजराजेश्वरं ज्ञेयं राजसम्पत्प्रदं नृणाम्।६५
द्विसप्तचक्रं स्थूलञ्च नवनीरदसुप्रभम्। अनन्ताख्यं च विज्ञेयं चतुर्वर्गफलप्रदम्।६६
चक्राकारं द्विचक्रञ्च सश्रीकं जलदप्रभम्। सगोष्पदं मध्यमञ्च विज्ञेयं मधुसूदनम्।६७
सुदर्शनं चैकचक्रं गुप्तचक्रं गदाधरम्। द्विचक्रं हयवक्त्राभं हयग्रीवं प्रकीर्तितम्।६८
अतीव विस्तृतास्यञ्चद्विचक्रंविकटं सति!। नरसिंहं सुविज्ञेयं सद्योवैराग्यदं नृणाम्।६६
द्विचक्रंविस्तृतास्यञ्चवनमालासमन्वितम्। लक्ष्मीनृसिंहंविज्ञेयंगृहिणांचसुखप्रदम्।७०
द्वारदेशे द्विचक्रं च सश्रीकञ्च समं स्फुटम्। वासुदेवं तु विज्ञेयं सर्वकामफलप्रदम्।७१
प्रद्युम्नं सूक्ष्मचक्रञ्च नवीननीरदप्रभम्। सुषिरच्छिद्रबहुलं गृहिणाञ्च सुखप्रदम्।७२
द्वे चक्रे चैकलग्ने च पुष्ठं यत्र तुपुष्कलम्। सङ्कर्षणं सुविज्ञेयं सुखदं गृहिणां सदा।७३
अनिरुद्धं तु पीताभं वर्तुलं चातिशोभनम्। सुखप्रदं गृहस्थानां प्रवदन्ति मनीषिणः।७४
शालग्रामशिला यत्र तत्र सन्निहितोहरिः। तत्रैव लक्ष्मीर्वसति सर्वतीर्थसमन्विता।७५
यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्ति शालग्रामशिलार्चनात्।७६
छत्राकारे भवेद्राज्यं वर्तुले च महाश्रियः। दुःखं च शकटाकारे शूलाग्रे मरणं ध्रुवम्।७७
विकृतास्ये च दारिद्र्यं पिङ्गले हानिरेवच। भग्नचक्रेभवेद्व्याधिर्विदीर्णेमरणंध्रुवम्।७८
व्रतं दानं प्रतिष्ठा च श्राद्धञ्च देवपूजनम्। शालग्रामस्यसान्निध्यात्प्रशस्तं तद्भवेदिति।७६
स स्नातः सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दीक्षितः। सर्वयज्ञेषु तीर्थेषु व्रतेषु च तपः सु च।८०
पाठे चतुर्णां वेदानां तपसां करणे सति!। तत्पुण्यं लभते नूनं शालग्रामशिलार्चनात्।८१
"शालग्रामशिलातोयैर्योऽभिषेकं सदाचरेत्। सर्वदानेषुयत्पुण्यं प्रदक्षिणंभुवोयथा"
शालग्रामशिलातोयं नित्यं भुङ्क्तेच योनरः। सुरेप्सितं प्रसादञ्च लभतेनात्रसंशयः।८२

तस्य स्पर्शञ्च वाञ्छन्ति तीर्थानि निखिलानि च ।
जीवन्मुक्तो महापूतोऽप्यन्ते याति हरेः पदम् ॥८३॥

तत्रैवहरिणासार्धमसङ्ख्यंप्राकृतंलयम् ।यास्यत्येव हि दास्येचनियुक्तोदास्यकर्मणि।८४
यानिकानिचपापानिब्रह्महत्यासमानि च।तं दृष्ट्वा च पलायन्ते वैनतेयादिवोरगाः।८५
तत्पादरजसा देवी सद्यः पूतावसुन्धरा।पुंसां लक्षंतत्पितृणां निस्तरेत्तस्य जन्मतः।८६
शालग्रामशिलातोयं मृत्युकाले च यो लभेत्।सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति।८७
निर्वाणमुक्तिं लभते कर्मभोगात्प्रमुच्यते।विष्णोः पदे प्रलीनश्च भविष्यतिनसंशयः।८८
शालग्रामशिलां धृत्वा मिथ्यावाक्यं वदेत्तु यः।स याति कुम्भीपाके च यावद्वै ब्रह्मणो वयः।८९
शालग्रामशिलांधृत्वास्वीकारंयोनपालयेत् ।स प्रयात्यसिपत्रञ्च लक्षमन्वन्तरावधि।९०
तुलसीपत्रविच्छेदंशालग्रामेकरोतियः ।तस्यजन्मान्तरेकान्तेस्त्रीविच्छेदोभविष्यति।९१
तुलसीपत्रविच्छेदंशङ्खेयोहिकरोति यः।भार्याहीनोभवेत्सोऽपिरोगीचसप्तजन्मसु।९२
शालग्रामञ्चतुलसीं शङ्खं चैकत्रएव च।यो रक्षति महाज्ञानी स भवेच्छ्रीहरेः प्रियः।९३
सकृदेव हियो यस्यां वीर्याधानंकरोति च।तद्विच्छेदेतस्य दुःखं भवेदेवपरस्परम्।९४
त्वं प्रिया शङ्खचूडस्य चैकमन्वन्तरावधि।शङ्खेनसार्धं त्वद्भेदः केवलं दुःखदस्तथा।९५
इत्युक्त्वाश्रीहरिस्तांचविररामच नारद।सा च देहं परित्यज्य दिव्यरूपम्विधायच।९६
यथाश्रीश्चतथासाचाऽप्युवासहरिवक्षसि ।स जगाम तयासार्धम्वैकुण्ठं कमलापतिः।९७
लक्ष्मी सरस्वती गङ्गातुलसी चाऽपि नारद!।हरेः प्रियाश्चतस्रश्चबभूवुरीश्वरस्य च।९८
सद्यस्तद्देहजाता च बभूवगण्डकीनदी।ईश्वरःसोऽपि शैलश्च तत्तीरेपुण्यदोनृणाम्।९९
कुर्वन्ती तत्र कीटाश्च शिलां बहुविधां मुने!।जले पतन्ति या याश्च फलदास्ताश्च निश्चितम्।१००
स्थलस्थाः पिङ्गलाज्ञेयाश्चोपतापाद्रवेरिति।इत्येवंकथितंसर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।१०१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे तुलसीमाहात्म्येनसहशालग्राम-महत्त्ववर्णनंनाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥२४॥

* पञ्चविंशोऽध्यायः *

तुलसीपूजाकथनम्

नारद उवाच

तुलसीचयदापूज्याकृतानारायणप्रिया ।अस्याः पूजाविधानञ्चस्तोत्रञ्चवद साम्प्रतम्।१
केन पूजा कृता केन स्तुता प्रथमतो मुने।तत्र पूज्या सा बभूव केन वा वद मामहो।२

सूत उवाच

नारदस्य वचः श्रुत्वा प्रहस्य मुनिपुङ्गवः।कथां कथितुमारेभे पुण्यां पापहरांपराम्।३

श्रीनारायण उवाच

हरिः सम्पूज्य तुलसीं रेमे च रमया सह।रमासमानसौभाग्यां चकार गौरवेण च।४
सेहे च लक्ष्मीर्गङ्गा च तस्याश्च नवसङ्गमम्।सौभाग्यगौरवंकोपात्तेनसेहेसरस्वती ।५
सा तां जघान कलहे मानिनी हरिसन्निधौ।व्रीडया चापमानेन सान्तर्धानंचकारह।६
सर्वसिद्धेश्वरी देवी ज्ञानिनांसिद्धियोगिनी।जगामाऽदर्शनं कोपात्सर्वत्र च हरेरहो।७
हरिर्न दृष्ट्वा तुलसींबोधयित्वासरस्वतीम्।तदनुज्ञां गृहीत्वा च जगाम तुलसीवनम्।८

तत्रगत्वा च सुस्नातो हरिः स तुलसीं सतीम् । पूजयामास तां ध्यात्वा स्तोत्रं भक्त्या चकार ह ।९
लक्ष्मीमायाकामवाणीबीजपूर्वं दशाक्षरम् । वृन्दावनीति डेन्तञ्च वह्निजायान्तमेव च ।१०
अनेन कल्पतरुणा मन्त्रराजेन नारद । पूजयेद्यो विधानेन सर्वसिद्धिं लभेद्ध्रुवम् ।११
घृतदीपेन धूपेन सिन्दूर चन्दनेन च । नैवेद्येन च पुष्पेण चोपचारेण नारद! ।१२
हरिस्तोत्रेण तुष्टा सा चाभिर्भूतामहीरुहात् । प्रसन्नाचरणाम्भोजे जगामशरणंशुभा ।१३
वरंतस्यै ददौ विष्णुः सर्वपूज्या भवेरिति । अहं त्वां धारयिष्यामि स्वरूपां मूर्ध्नि वक्षसि ।१४
सर्वे त्वां धारयिष्यन्ति स्वमूर्ध्नि च सुरादयः । इत्युक्त्वा तां गृहीत्वा च प्रययौ स्वालयम्विभुः ।१५

नारद उवाच

किंध्यानंस्तवनंकिंवाकिंवापूजाविधानकम् । तुलस्याश्चमहाभागतन्मेव्याख्यातुमर्हसि ।१६

श्रीनारायण उवाच

अन्तर्हितायां तस्याञ्चहरिर्वृन्दावनेतदा । तस्याश्चक्रे स्तुतिं गत्वा तुलसींविरहातुरः ।१७

श्रीभगवानुवाच

वृन्दरूपाश्चवृक्षाश्चयदैकत्रभवन्तिच । विदुर्बुधास्तेनवृन्दां मत्प्रियां तांभजाम्यहम् ।१८
पुरावभूवयादेवीत्वादौवृन्दावनेवने । तेन वृन्दावनी ख्याता सौभाग्यांतांभजाम्यहम् ।१९
असङ्ख्येषुचविश्वेषुपूजितायानिरन्तरम् । तेनविश्वपूजिताख्यापूजिताञ्चभजाम्यहम् ।२०
असङ्ख्यानिचविश्वानिपवित्राणित्वयासदा । तांविश्वपावनींदेवींविरहेणस्मराम्यहम् ।२१
देवानतुष्टाःपुष्पाणांसमूहेनययाविना । तां पुष्पसारांशुद्धाञ्च द्रष्टुमिच्छामिशोकतः ।२२
विश्वे यत्प्राप्तिमात्रेण भक्तानन्दो भवेद् ध्रुवम् । नन्दिनी तेन विख्याता सा सीता भवतादिह ।२३
यस्या देव्यास्तुला नास्ति विश्वेषु निखिलेषु च । तुलसी तेन विख्याता तां यामि शरणं प्रियाम् ।२४
कृष्णजीवनरूपासा शश्वत्प्रियतमासती । तेनकृष्णजीवनीसा सा मे रक्षतुजीवनम् ।२५
इत्येवं स्तवनं कृत्वा तस्थौ तत्ररमापतिः । ददर्श तुलसीं साक्षात्पादपद्मनतांसतीम् ।२६
रुदतीमवमानेन मानिनीं मानपूजिताम् । प्रियां दृष्ट्वा प्रियःशीघ्रंवासयामास वक्षसि ।२७
भारत्याज्ञां गृहीत्वा च स्वालयञ्च ययौ हरिः । भारत्या सह तत्प्रीतिं कारयामास सत्वरम् ।२८
वरं विष्णुर्ददौ तस्यै सर्वपूज्या भवेरिति । शिरोधार्याचसर्वेषांवन्द्यामान्याममेतिच ।२९
विष्णोर्वरेण सा देवी परितुष्टा बभूव च । सरस्वती तामाकृष्यवासयामाससन्निधौ ।३०
लक्ष्मीगङ्गा सस्मिता च तां समाकृष्य नारद! । गृहं प्रवेशयामास विनयेनसतींतदा ।३१
वृन्दा वृन्दावनी विश्वपूजिताविश्वपाविनी । पुष्पसारानन्दनीचतुलसीकृष्णजीवनी ।३२
एतन्नामाष्टकं चैव स्तोत्रं नामार्थसंयुतम् । यः पठेत्तां च सम्पूज्यसोऽश्वमेधफलंलभेत् ।३३
कार्त्तिक्यां पूर्णिमायांचतुलस्याजन्ममङ्गलम् । तत्रतस्याश्चपूजाचविहिताहरिणापुरा ।३४
तस्यां यः पूजयेत्तां च भक्त्या च विश्वपावनीम् । सर्वपापाद्विनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ।३५
कार्तिके तुलसीपत्रं योददाति च विष्णवे । गवायुतदानस्य फलं प्राप्नोतिनिश्चितम् ।३६
अपुत्रो लभते पुत्रं प्रियाहीनोलभेत्प्रियाम् । बन्धुहीनोलभेद्बन्धूं स्तोत्रश्रवणमात्रतः ।३७
रोगी प्रमुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् । भयान्मुच्येत भीतस्तु पापान्मुच्येत पातकी ।३८
इत्येवं कथितं स्तोत्रं ध्यानं पूजाविधिं श्रृणु । त्वमेववेदेजानासिकण्वशाखोक्तमेवच ।३९

तद्वृक्षे पूजयेत्तां च भक्त्या चाऽऽवाहनं विना ।
तां ध्यात्वा चोपचारेण ध्यानं पातकनाशनम् ।।४०।।

तुलसीं पुष्पसारां च सतीं पूतांमनोहराम्। कृतपापेध्मदाहायज्वलदग्निशिखोपमाम्।४१
पुष्पेषु तुलनायस्या नास्ति वेदेषु भाषितम्। पवित्ररूपासर्वासुतुलसीसाचकीर्तिता ।४२
शिरोधार्या च सर्वेषामीप्सिता विश्वपावनी। जीवन्मुक्तां मुक्तिदां च भजे तां हरिभक्तिदाम्।४३
इति ध्यात्वा व सम्पूज्य स्तुत्वा च प्रणमेत्सुधीः। उक्तंतुलस्युपाख्यानं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।४४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे तुलसीपूजाविधिवर्णनंनाम पञ्चविंशोऽध्यायः।।२५।।

* षड्विंशोऽध्यायः *

सावित्र्युपाख्यानवर्णनम्

नारद उवाच

तुलस्युपाख्यानमिदं श्रुतं चाति सुधोपमम्। ततः सावित्र्युपाख्यानं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि। १
पुराकेन समुद्भूता सा श्रुता च श्रुतेः प्रसूः। केनवा पूजिता लोकेप्रथमे कैश्च वा परे। २

श्रीनारायण उवाच

ब्रह्मणा वेदजननी प्रथमे पूजिता मुने!। द्वितीये च वेदगणैस्तत्पश्चाद्विदुषां गणैः। ३
तदा चाऽश्वपतिर्भूपः पूजयामास भारते। तत्पश्चात्पूजयामासुर्वर्णाश्चत्वार एव च। ४

नारद उवाच

को वा सोऽश्वपतिर्ब्रह्मन्केन वा तेन पूजिता। सर्वपूज्या च सा देवीप्रथमेकैश्चवापरे। ५

श्रीनारायण उवाच

मद्रदेशे महाराजो बभूवाऽश्वपतिर्मुने!। वैरिणां वलहर्ता च मित्राणां दुःखनाशनः। ६
आसीत्तस्य महाराज्ञीमहिषीधर्मचारणी। मालतीतिसमाख्यातायथालक्ष्मीर्गदाभृतः। ७
सा च राज्ञी च वन्ध्या चवसिष्ठस्योपदेशतः। चकाराराधनंभक्त्यासावित्र्याश्चैवनारद। ८
प्रत्यादेशं न सा प्राप्ता महिषी न ददर्शताम्। गृहं जगाम दुःखार्ता हृदयेन विदूयता। ९
राजा तां दुःखितां दृष्ट्वा बोधयित्वा नयेन वै। सावित्र्यास्तपसे भक्त्या जगाम पुष्करं तदा।१०
तपश्चकार तत्रैव संयतः शतवत्सरम्। न ददर्श च सावित्र्याः प्रत्यादेशो बभूव च।११
शुश्रावाऽऽकाशवाणीं च नृपेन्द्रश्चाशरीरिणीम्।
गायत्र्या दशलक्षं चजपंत्वंकुरुनारद ।।१२।।
एतस्मिन्नन्तरे तत्र आजगाम पराशरः। प्रणनाम ततस्तं च मुनिर्नृपमुवाच च।१३

मुनिरुवाच

सकृज्जपश्च गायत्र्याः पापं दिनभवं हरेत्। दशवारं जपेनैव नश्येत्पापं दिवानिशम्।१४
शतवारं जपश्चैव पापं मासार्जितं हरेत्। सहस्रधा जपश्चैव कल्मषं मत्सरार्जितम्।१५
लक्षो जन्मकृतं पापं दशलक्षोऽन्यजन्मजम्। सर्वजन्मकृतं पापं शतलक्षाद्विनश्यति।१६
करोति मुक्तिं विप्राणां जपो दशगुणस्ततः। करंसर्पफणाकारंकृत्वातद्रन्ध्रमुद्रितम् ।१७
आनम्रमूर्धमचलं प्रजपेत्प्राङ्मुखो द्विजः। अनामिकामध्यदेशादधोऽवामक्रमेण च।१८
तर्जनीमूलपर्यन्तं जपस्यैवं क्रमः करे। श्वेतपङ्कजबीजानांस्फटिकानां च संस्कृताम्।१९
कृत्वा वा मालिकांराजञ्जपेत्तीर्थे सुरालये। संस्थाप्य मालामश्वत्थपत्रे पद्मेच संयतः।२०
कृत्वागोरोचनाक्तांचगायत्र्यास्नापयेत्सुधीः। गायत्रीशतकंतस्यांजपेच्चविधिपूर्वकम् ।२१
अथवा पञ्चगव्येन स्नात्वा मालां सुसंस्कृताम्। अथ गङ्गोदकेनैव स्नात्वा वाऽतिसुसंस्कृताम्।२२

एवं क्रमेण राजर्षे! दशलक्षं जपं कुरु। साक्षाद्रक्ष्यसि सावित्रींत्रिजन्मपातकक्षयात्।२३
नित्यं सन्ध्याञ्च हे राजन्करिष्यसि दिने दिने। मध्याह्ने चापि सायाह्ने प्रातरेव शुचिः सदा।२४
सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु। यदह्ना कुरुते कर्म न तस्य फलभाग्भवेत्।२५
नोपतिष्ठति यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम्। स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः।२६
यावज्जीवनवर्यन्तंत्रिसन्ध्यां यः करोति च। सचसूर्यसमो विप्रस्तेजसातपसासदा ।२७
तत्पादपद्मरजसा सद्यः पूतावसुन्धरा। जीवन्मुक्तःसतेजस्वीसन्ध्यापूतोहियोद्विज ।२८
तीर्थानि च पवित्राणि तस्यसंस्पर्शमात्रतः। ततः पापानियान्त्येववैनतेयादिवोरगा ।२९
नगृह्णन्तिसुराः पूजांपितरः पिण्डतर्पणम्। स्वेच्छयाचद्विजातेश्चत्रिसन्ध्यारहितस्यच।३०
मूलप्रकृत्यभक्तो यस्तन्मन्त्रस्याप्यनर्चकः। तदुत्सवविहीनश्च विषहीनो यथोरगः।३१
विष्णुमन्त्रविहीनश्च त्रिसन्ध्यारहितोद्विजः। एकादशीविहीनश्चविषहीनोयथोरगः ।३२
हरेरनैवेद्यभोजी धावको वृषवाहकः। शूद्रान्नभोजी यो विप्रो विषहीनो यथोरगः।३३
शूद्राणां शवदाही यः स विप्रो वृषलीपतिः। शूद्राणां सूपकारश्च विषहीनो यथोरगः।३४
शूद्राणां च प्रतिग्रही शूद्रयाजीचयोद्विजः। मसिजीवीअसिजीवीविषहीनोयथोरगः।३५
यः कन्याविक्रयी विप्रो यो हरेर्नामविक्रयी। यो विप्रोऽवीरान्नभोजी ऋतुस्नातान्नभोजकः।३६
भगजीवी वार्धुषिको विषहीनोयथोरगः। यो विद्याविक्रयीविप्रोविषहीनोयथोरगः।३७
सूर्योदये स्वपेद्यो हिमत्स्यभोजीचयोद्विजः। शिवापूजादिरहितोविषहीनोयथोरगः ।३८
इत्युक्त्वा च मुनिश्रेष्ठः सर्वपूजाविधिक्रमम्। तमुवाच च सावित्र्या ध्यानादिकमभीप्सितम्।३९
दत्त्वासर्वं नृपेन्द्रायययौ च स्वाश्रमे मुने। राजा सम्पूज्य सावित्रीं ददर्श वरमाप च।४०

नारद उवाच

किम्वा ध्यानं च सावित्र्याः किम्वा पूजाविधानकम् ।
स्तोत्रं मन्त्रञ्च किं दत्त्वा प्रययौ स पराशरः ।।४१।।

नृपः केन विधानेन सम्पूज्य श्रुतिमातरम्। वरञ्चकम्वा सम्प्रापसम्पूज्यतु विधानतः।४२
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामिसावित्र्याः परमंमहत्। रहस्यातिरहस्यञ्चश्रुतिसिद्धंसमासतः।४३

श्रीनारायण उवाच

जेष्ठकृष्णत्रयोदश्यां शुद्धकाले च यत्नतः। व्रतमेवञ्चतुर्दश्यां व्रतीभक्त्या समाचरेत्।४४
व्रतञ्चतुर्दशाव्दञ्च द्विसप्तफलसंयुतम्। दत्त्वा द्विसप्तनैवेद्यंपुष्पधूपादिकञ्चरेत्।४५
वस्त्रं यज्ञोपवीतञ्च भोजनं विधिपूर्वकम्। संस्थाप्य मङ्गलघटं फलशाखासमन्वितम्।४६
गणेशञ्च दिनेशञ्च व ह्निम्विष्णुंशिवंशिवाम्। सम्पूज्यपूजयेदिष्टंघटेआवाहितेद्विजः ।४७
शृणु ध्यानञ्च सावित्र्याश्चोक्तं माध्यन्दिने च यत्। स्तोत्रं पूजाविधानञ्च मन्त्रञ्च सर्वकामदम्।४८
तप्तकाञ्चनवर्णाभां ज्वलन्तीं ब्रह्मतेजसा। ग्रीष्ममध्याह्नमार्तण्डसहस्रसम्मितप्रभाम्।४९
ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां रत्नभूषणभूषिताम्। वह्निशुद्धांशुकाधानां भक्तानुग्रहविग्रहाम्।५०
सुखदांमुक्तिदांशान्तांकान्ताञ्चजगतांविधेः। सर्वसम्पत्स्वरूपाञ्चप्रदात्रींसर्वसम्पदाम्।५१
वेदाधिष्ठातृदेवीञ्च वेदशास्त्रस्वरूपिणीम्। वेदबीजस्वरूपाञ्च भजे ताम्वेदमातरम्।५२
ध्यात्वाध्यानेन नैवेद्यंदत्त्वापाणिंस्वमूर्धनि। पुनर्ध्यात्वाघटेभक्त्यादेवीमावाहयेद्व्रती।५३
दत्त्वाषोडशोपचारंवेदोक्तं मन्त्रपूर्वकम्। सम्पूज्य स्तुत्वा प्रणमेद्देवदेवीं विधानतः।५४
आसनंपाद्यमर्घ्यञ्च स्नानीयञ्चानुलेपनम्। धूपं दीपञ्च नैवेद्यं ताम्बूलंशीतलं जलम्।५५

वसनं भूषणं माल्यं गन्धमाचमनीयकम्। मनोहरं सुतल्पञ्चदेयान्येतानि षोडश।५६
दारुसारविकारञ्च हेमादिनिर्मितञ्च वा। देवाधारं पुण्यदञ्च मयातुभ्यं निवेदितम्।५७
तीर्थोदकञ्च पाद्यञ्च पुण्यदं प्रीतिदं महत्। पूजाङ्गभूतं शुद्धञ्च मयातुभ्यं निवेदितम्।५८
पवित्ररूपमर्घञ्च दूर्वापुष्पदलान्वितम्। पुण्यदं शङ्खतोयाक्तं मया तुभ्यं निवेदितम्।५९
सुगन्धंगन्धतोयञ्चस्नेहंसौगन्धकारकम् । मया निवेदितंभक्त्यास्नानीयंप्रतिगृह्यताम्।६०
गन्धद्रव्योद्भवं पुण्यं प्रीतिदंदिव्यगन्धदम्। मयानिवेदितंभक्त्यागन्धतोयं तवाऽम्बिके।६१
सर्वमङ्गलरूपञ्च सर्वञ्च मङ्गलप्रदम्। पुण्यदञ्च सुधूपं तं गृहाण परमेश्वरि!।६२
सुगन्धयुक्तं सुखदं मया तुभ्यं निवेदितम्। जगतां दर्शनार्थायप्रदीपं दीप्तिकारकम्।६३
अन्धकारध्वंसबीजं मया तुभ्यं निवेदितम्। तुष्टिदं पुष्टिदञ्चैव प्रीतिदं क्षुद्विनाशनम्।६४
पुण्यदं स्वादुरूपञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्। ताम्बूलप्रवरं रम्यं कर्पूरादिसुवासितम्।६५
तुष्टिदं पुष्टिदं चैव मया तुभ्यं निवेदितम्। सुशीतलं वारि शीतं पिपासानाशकारणम्।६६
जगतां जीवरूपञ्च जीवनं प्रतिगृह्यताम्। देहशोभास्वरूपञ्च सभाशोभाविवर्धनम्।६७
कार्पासजञ्च कृमिजं वसनं प्रतिगृह्यताम्। काञ्चनादिविनिर्माणंश्रीकरंश्रीयुतं सदा।६८
सुखदं पुण्यदं रत्नभूषणं प्रतिगृह्यताम्। नानावृक्षसमुद्भूतं नानारूपसमन्वितम्।६९
फलस्वरूपं फलदं फलञ्च प्रतिगृह्यताम्। सर्वमङ्गलरूपञ्च सर्वमङ्गलमङ्गलम्।७०
नानापुष्पविनिर्माणं बहुशोभासमन्वितम्। प्रीतिदं पुण्यदञ्चैव माल्यञ्चप्रतिगृह्यताम्।७१
पुण्यदञ्च सुगन्धाढ्यं गन्धञ्च देवि! गृह्यताम्। सिन्दूरञ्चवरंरम्यंभालशोभाविवर्धनम् ।७२
भूषणानाञ्च प्रवरं सिन्दूरम्प्रतिगृह्यताम्। विशुद्धग्रन्थिसंयुक्तं पुण्यसूत्रविनिर्मितम्।७३
पवित्रम्वेदमन्त्रेण यज्ञसूत्रञ्चगृह्यताम्। द्रव्याण्येतानि मूलेन दत्त्वास्तोत्रम्पठेत्सुधीः।७४
ततोविप्राय भक्त्याचव्रतीदद्याच्चदक्षिणाम्। सावित्रीतिचतुर्थ्यन्तं वह्निजायान्तमेवच।७५
लक्ष्मीमायाकामपूर्वं मन्त्रमष्टाक्षरम्विदुः। माध्यन्दिनोक्तं स्तोत्रञ्च सर्वकामफलप्रदम्।७६
विप्रजीवनरूपञ्च निबोध कथयामि ते। कृष्णेन दत्तां सावित्रीं गोलोके ब्रह्मणे पुरा।७७
नायाति सा तेन सार्धंब्रह्मलोके च नारद!। ब्रह्माकृष्णाज्ञया भक्त्या तुष्टाव वेदमातरम्।७८
तदा सा परितुष्टा च ब्रह्माणञ्चकमेपतिम् ।

ब्रह्मोवाच

सच्चिदानन्दरूपे! त्वं मूलप्रकृतिरूपिणि! ।।७९।।
हिरण्यगर्भरूपे त्वम्प्रसन्ना भव सुन्दरि!। तेजः स्वरूपे परमे परमानन्दरूपिणि!।८०
द्विजातीनांजातिरूपे! प्रसन्नाभवसुन्दरि!। नित्येनित्यप्रियेदेविनित्यानन्दस्वरूपिणि।८१
सर्वमङ्गलरूपेचप्रसन्नाभवसुन्दरि! । सर्वस्वरूपे विप्राणां मन्त्रसारे परात्परे।८२
सुखदे! मोक्षदे! देवि! प्रसन्ना भव सुन्दरि। विप्रपापेध्मदाहाय ज्वलदग्निशिखोपमे!।८३
ब्रह्मतेजःप्रदे देवि! प्रसन्ना भव सुन्दरि!। कायेन मनसा वाचा यत्पापंकुरुते नरः।८४
तत्त्वत्स्मरणमात्रेण भस्मीभूतं भविष्यति। इत्युक्त्वाजगतांधातातस्थौतत्रचसंसदि।८५
सावित्री ब्रह्मणासार्धं ब्रह्मलोकं जगाम सा। अनेनस्तवराजेन संस्तूयाऽश्वपतिर्नृपः।८६
ददर्शताञ्चसावित्रीम्वरम्प्रापमनोगतम् । स्तवराजमिमंपुण्यं सन्ध्यां कृत्वाचयः पठेत्।८७
पाठे चतुर्णां वेदानां यत्फलं लभते च तत् ।।८८।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे सावित्रीपूजाविधिकथनंनामषडविंशोऽध्यायः ।।२६।।

* सप्तविंशोऽध्यायः *

सावित्र्युपाख्यानेयमसावित्रीसम्वादवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

स्तुत्वाऽनेनसोऽश्वपतिः सम्पूज्यविधिपूर्वकम् ।
ददर्शतत्रतां देवींसहस्रार्कसमप्रभाम् ।।१।।

उवाच साचराजानंप्रसन्नासस्मितासती। यथामातास्वपुत्रञ्चद्योतयन्तीदिशस्त्विषा।२

सावित्र्युवाच

जानाम्यहंमहाराजयत्तेमनसिवाञ्छितम्। वाञ्छितंतवपत्न्याश्चसर्वंदास्यामिनिश्चितम्।३
साध्वीकन्याभिलाषञ्च करोति तवकामिनी।त्वंप्रार्थयसिपुत्रञ्चभविष्यतिक्रमेणच ।४
इत्युक्त्वा सातदा देवी ब्रह्मलोकं जगाम ह। राजाजगामस्वगृहंतत्कन्याऽऽदौबभूवह ।५
आराधनाच्च सावित्र्या बभूव कमलापरा। सावित्रीति च तन्नाम चकाराश्वपतिर्नृपः।६
कालेन सा वर्धमाना बभूव च दिनेदिने। रूपयौवनसम्पन्ना शुक्ले चन्द्रकला यथा।७
सा वरं वरयासास द्युमत्सेनात्मजं सदा। सत्यवन्तं सत्यशीलं नानागुणसमन्वितम्।८
राजा तस्मै ददौ ताञ्च रत्नभूषणभूषिताम्। सोऽपिसार्धंकौतुकेनतांगृहीत्वागृहंययौ ।९
स च सम्वत्सरेऽतीते सत्यवान् सत्यविक्रमः। जगाम फलकाष्ठार्थं प्रहर्षं पितुराज्ञया।१०
जगाम साध्वी तत्पश्चात्सावित्री दैवयोगतः। निपत्य वृक्षाद्दैवेन प्राणांस्तत्याज सत्यवान्।११
यमस्तं पुरुषं दृष्ट्वा बद्ध्वाऽङ्गुष्ठसमम्मुने। गृहीत्वा गमनञ्चक्रे तत्पश्चात्प्रययौ सती।१२
पश्चात्तां सुदतीं दृष्ट्वा यमः संयमनीपतिः। उवाच मधुरं साध्वीं साधूनाम्प्रवरोमहान्।१३

धर्मराज उवाच

अहोक्यासिसावित्रिगृहीत्वामानुषींतनुम्। यदियास्यसिकान्तेनसार्धं देहं तदात्यज।१४
गन्तुं मर्त्यो न शक्नोति गृहीत्वा पाञ्चभौतिकम् ।
देहञ्च ममलोकञ्च नश्वरं नश्वरः सदा ।।१५।।

भर्तुस्ते पूर्णकालोवै बभूवभारतेसति!। स्वकर्मफलभोगार्थं सत्यवान्यातिमद्गृहम्।१६
कर्मणा जायते जन्तुः कर्मणैव प्रलीयते। सुखं दुःखम्भयं शोकः कर्मणैव प्रणीयते।१७
कर्मणेन्द्रो भवेज्जीवो ब्रह्मपुत्रः स्वकर्मणा। स्वकर्मणा हरेर्दासो जन्मादिरहितोभवेत्।१८
स्वकर्मणा सर्वसिद्धिममरत्वं लभेद् ध्रुवम्। लभेत्स्वकर्मणा विष्णोः सालोक्यादिचतुष्टयम्।१९
सुरत्वञ्च मनुत्वञ्च राजेन्द्रत्वं लभेन्नरः। कर्मणा च शिवत्वञ्च गणेशत्वं तथैव च।२०
कर्मणाचमुनीन्द्रत्वं तपस्वित्वंस्वकर्मणा। स्वकर्मणाक्षत्रियत्वंवैश्यत्वञ्चस्वकर्मणा।२१
कर्मणैवच म्लेच्छत्वं लभते नात्र संशयः। स्वकर्मणा जङ्गमत्वं शैलत्वञ्च स्वकर्मणा।२२
कर्मणा राक्षसत्वञ्च किन्नरत्वंस्वकर्मणा। कर्मणैवाऽऽधिपत्यञ्चवृक्षत्वञ्च स्वकर्मणा।२३
कर्मणैव पशुत्वञ्च वनजीवी स्वकर्मणा। कर्मणा क्षुद्रजन्तुत्वं कृमित्वञ्च स्वकर्मणा।२४
दैतेयत्वं दानवत्वमसुरत्वं स्वकर्मणा। इत्येतदुक्त्वा सावित्री विरराम स वै यमः।२५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे सावित्र्युपाख्यानेयमसावित्रीसम्वाद-वर्णनंनाम सप्तविंशोऽध्यायः ।।२७।।

* अष्टाविंशोऽध्यायः *

यमसावित्रीसम्वादवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

यमस्य वचनंश्रुत्वासावित्री च पतिव्रता। तुष्टाव परया भक्त्या तमुवाचमनस्विनी। १

सावित्र्युवाच

किं कर्म तद्भवेत्केन कोवातद्धेतुरेव च। को वादेही च देहः कः कोवाऽत्रकर्मकारकः। २

किं वा ज्ञानञ्च बुद्धिः का को वा प्राणः शरीरिणाम्।
कानीन्द्रियाणि किं तेषां लक्षणं देवताश्च काः ॥३॥
भोक्ता भोजयिता को वा को वा भोगश्च निष्कृतिः।
को जीवः परमात्मा कस्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥४॥

धर्म उवाच

वेदप्रणिहितो धर्मः कर्म यन्मङ्गलं परम्। अवैदिकं तु यत्कर्म तदेवाऽशुभमेव च। ५
अहैतुकी देवसेवा सङ्कल्परहिता सती। कर्मनिर्मूलरूपा च सा एव परभक्तिदा। ६
को वा कर्मफलं भुङ्क्ते को वा निर्लिप्तएव च। ब्रह्मभक्तोयोनरश्चसचमुक्तः श्रुतः श्रुतौ। ७
जन्ममृत्युजराव्याधिशोकभीतिविवर्जितः। भक्तिश्च द्विविधा साध्वि! श्रुत्युक्ता सर्वसम्मता। ८
निर्वाणपददात्री च हरिरूपप्रदानृणाम्। हरिरूपस्वरूपां च भक्तिंवाञ्छन्तिवैष्णवाः। ९
अन्ये निर्वाणमिच्छन्तियोगिनोब्रह्मवित्तमाः। कर्मणो बीजरूपश्च सततं तत्फलप्रदः। १०
कर्मरूपश्च भगवान्परात्मा प्रकृतिः परा। सोऽपि तद्धेतुरूपश्च देहो नश्वर एव च। ११
पृथिवी वायुराकाशो जलं तेजस्तथैव च। एतानि सूत्ररूपाणि सृष्टिरूपविधौ यतः। १२
कर्म कर्ता च देही च आत्माभोजयितासदा। भोगोविभवभेदश्च निष्कृतिर्मुक्तिरेवच। १३
सदसद्भेदबीजं च ज्ञानं नानाविधंभवेत्। विषयाणांविभागानां भेदबीजंचकीर्त्तितम्। १४
बुद्धिर्विवेचना सा च ज्ञानबीजं श्रुतौ श्रुतम्। वायुभेदाश्चप्राणाश्चबलरूपाश्चदेहिनाम्। १५
इन्द्रियाणां च प्रवरमीश्वरांशमनूहकम्। प्रेमकं कर्मणां चैवदुर्निवार्यं च देहिनाम्। १६
अनिरूप्यमदृश्यं च ज्ञानभेदो मनः स्मृतम्। लोचनंश्रवणंघ्राणंत्वक्चरसनमिन्द्रियम्। १७
अङ्गिनामङ्गरूपं च प्रेरकं सर्वकर्मणाम्। रिपुरूपं मित्ररूपं सुखरूपं च दुःखदम्। १८
सूर्यो वायुश्च पृथिवीब्रह्माद्यादेवताः स्मृताः। प्राणदेहादिभृद्योहिसजीवःपरिकीर्तितः। १९
परमं व्यापकम्ब्रह्म निर्गुणः प्रकृते परः। कारणं कारणानाञ्चपरमात्मास उच्यते। २०
इत्येवं कथितं सर्वं त्वयापृष्टं यथागमम्। ज्ञानिनां ज्ञानरूपञ्चगच्छवत्सेयथासुखम्। २१

सावित्र्युवाच

त्यक्त्वा क्व यामि कान्तं वा त्वां वा ज्ञानार्णवं ध्रुवम्।
यद्यत्करोमि प्रश्नं च तद्भवान्वक्तुमर्हति ॥२२॥

कां कां योनिंयातिजीवः कर्मणाकेनवापुनः। केनवाकर्मणास्वर्गंकेन वा नरकं पितः। २३
केन वाकर्मणामुक्तिः केनभक्तिर्भवेद्गुरौ। केनवाकर्मणा योगी रोगी वा केन कर्मणा। २४
केनवादीर्घजीवीच केनाल्पायुश्च कर्मणा। केनवा कर्मणादुःखी सुखी वा केन कर्मणा। २५
अङ्गहीनश्चकाणश्चबधिरः केन कर्मणा। अन्धो वा पङ्गुरपि वा प्रमत्तःकेन कर्मणा। २६
क्षिप्तोऽतिलुब्धकश्चौरः केनवाकर्मणाभवेत्। केनसिद्धिमवाप्नोतिसालोक्यादिचतुष्टयम्। २७

केन वा ब्राह्मणत्वञ्च तपस्वित्वञ्च केन वा। स्वर्गभोगादिकं केन वैकुण्ठंकेन कर्मणा।२८
गोलोकंकेनवाब्रह्मन्सर्वोत्कृष्टंनिरामयम् । नरकोवाकतिविधः किंसङ्ख्योनामकिञ्चवा।२९
को वा कं नरकं यातिकियन्तंतेषुतिष्ठति। पापिनां कर्मणाकेनयोवाव्याधिः प्रजायते।
यद्यत्प्रियं मया पृष्टं तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ।।३०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे सावित्र्युपाख्यानेयमसावित्रीसम्वादवर्णनं नामाष्टाविंशोऽध्यायः।।२८।।

* ऊनत्रिंशोऽध्यायः *

सावित्रीम्प्रतियमवरदानं कर्मविपाककथनञ्च

श्रीनारायण उवाच

सावित्रीवचनं श्रुत्वा जगाम विस्मयं यमः। प्रहस्यवक्तुमारेभेकर्मपाकंतुजीविनाम् ।१

धर्म उवाच

कन्या द्वादशवर्षीया वत्से! त्वंवयसाऽधुना। ज्ञानंते पूर्वविदुषांज्ञानिनांयोगिनांपरम्।२
सावित्रीवरदानेन त्वं सावित्रीकला सती। प्राप्ता पुरा भूभृता च तपसातत्समासुते।३
यथा श्रीः श्रीपतेक्रोडेभवानीचभवोरसि। यथाऽदितिः कश्यपेचयथाऽहल्याचगौतमे।४
यथा शची महेन्द्रे च यथाचन्द्रेचरोहिणी। यथारतिः कामदेवे यथास्वाहा हुताशने।५
यथा स्वधा च पितृषु यथा संज्ञा दिवाकरे। वरुणानी च वरुणे यज्ञे चदक्षिणायथा।६
यथा वराहे पृथिवी देवसेना च कार्त्तिके। सौभाग्यासुप्रियात्वंचतथासत्यवतः प्रिये।७
अयं तुभ्यं वरो दत्तोऽप्यपरञ्च यथेप्सितम्। वृणुदेविमहाभागेददामिसकलेप्सितम् ।८

सावित्र्युवाच

सत्यवत औरसानां पुत्राणां शतकं मम। भविष्यति महाभागवरमेतन्मदीप्सितम्।९
मत्पितुः पुत्रशतकं श्वशुरस्य च चक्षुषी। राज्यलाभो भवत्वेवं वरमेतन्मदीप्सितम्।१०
अन्ते सत्यवता सार्धं यास्यामि हरिमन्दिरम्। समतीते लक्षवर्षे देहीदं मेजगत्प्रभो।११
जीवकर्मविपाकं च श्रोतुं कौतूहलं मम। विश्वनिस्तारबीजञ्चतन्मेव्याख्यातुर्हसि ।१२

धर्मराज उवाच

भविष्यतिमहासाध्विसर्वंमानसिकं तव। जीवकर्मविपाकञ्च कथयामि निशामय।१३
शुभानामशुभानाञ्च कर्मणां जन्मभारते। पुण्यक्षेत्रेचन्यान्यत्र सर्वञ्च भुञ्जते जनाः।१४
सुरादैत्या दानवाश्च गन्धर्वा राक्षसादयः। नराश्चकर्मजनका न सर्वे जीविनः सति!।१५
विशिष्टजीविनः कर्मभुञ्जते सर्वयोनिषु। शुभाशुभञ्च सर्वत्र स्वर्गेषु नरकेषु च।१६
विशेषतो जीविनश्च भ्रमन्ते सर्वयोनिषु। शुभाऽशुभं भुञ्जते च कर्म पूर्वार्जितं परम्।१७
शुभेन कर्मणा याति स्वर्लोकादिकमेव च। कर्मणा चाशुभेनैव भ्रमन्ति नरकेषु च।१८
कर्मनिर्मूलने भक्तिः सा चोक्ताद्विविधा सति!। निर्वाणरूपा भक्तिश्च ब्रह्मणः प्रकृतेरिह।१९
रोगीकुकर्मणाजीवश्चारोगीशुभकर्मणा । दीर्घजीवी चक्षीणायुः सुखी दुःखीचकर्मणा।२०
अन्धादयश्चाङ्गहीनाः कर्मणाकुत्सितेन च। सिद्ध्यादिकमवाप्नोतिसर्वोत्कृष्टेनकर्मणा।२१
सामान्यं कथितंदेवि! विशेषंशृणु सुन्दरि!। सुदुर्लभंसुगोप्यञ्चपुराणेषुस्मृतिष्वपि ।२२
दुर्लभा मानुषी जातिः सर्वजातिषु भारते। सर्वेभ्योब्राह्मणः श्रेष्ठःप्रशस्तः सर्वकर्मसु।२३

ब्रह्मनिष्ठो द्विजश्चैवगरीयान् भारतेसति!। निष्कामश्चसकामश्चब्राह्मणोद्विविधः सति।२४
सकामाच्च प्रधानश्च निष्कामो भक्त एव च। कर्मभोगी सकामश्चनिष्कामोनिरुपद्रवः।२५
स यादि देहं त्यक्त्वा च पदं यत्तन्निरामयम्। पुनरागमनं नाऽस्ति तेषां निष्कामिनां सति!।२६
सेवन्ते द्विभुजं कृष्णं परमात्मानमीश्वरम्। गोलोकं प्रति ते भक्ता दिव्यरूपविधारिणः।२७
सकामिनो वैष्णवाश्च गत्वा वैकुण्ठमेव च। भारतं पुनरायान्तितेषांजन्मद्विजातिषु।२८
कालेन ते च निष्कामा भवन्त्येव क्रमेण च। भक्तिंच निर्मलां तेभ्यो दास्यामि निश्चितं पुनः।२९
ब्राह्मणावैष्णवाश्चैव सकामाः सर्वजन्मसु। न तेषांनिर्मलाबुद्धिर्विष्णुभक्तिविवर्जिताः।३०
तीर्थाश्रिताद्विजा ये च तपस्यानिरताः सति!। तेयान्तिब्रह्मलोकंचपुनरायान्तिभारते।३१
स्वधर्मनिरता ये च तीर्थान्यत्रनिवासिनः। व्रजन्ति ते सत्यलोकंपुनरायान्तिभारते।३२
स्वधर्मनिरता विप्राः सूर्यभक्ताश्च भारते। व्रजन्ति ते सूर्यलोकं पुनरायान्ति भारते।३३
मूलप्रकृतिभक्ता ये निष्कामा धर्मचारिणः। मणिद्वीपं प्रयान्त्येवपुनरावृत्तिवर्जितम्।३४

स्वधर्मे निरता भक्त्रः शैवाः शाक्त्रश्चगाणपाः ।
तेयान्तिशिवलोकंचपुनरायान्तिभारते ।।३५।।

ये विप्रा अन्यदेवेज्याः स्वधर्मनिरताः सति। ते यान्ति सर्वलोकंचपुनरायान्तिभारते।३६
हरिभक्ताश्च निष्कामाः स्वधर्मनिरता द्विजाः। ते च यान्ति हरेर्लोकं क्रमाद्भक्तिबलादहो।३७
स्वधर्मरहिता विप्रा देवान्यसेवनाः सदा। भ्रष्टाचाराश्च कामाश्च तेयान्तिनरकंध्रुवम्।३८
स्वधर्मनिरता एवं वर्णाश्चत्वार एव च। भवन्त्येव शुभस्यैव कर्मणः फलभोगिनः।३९
स्वकर्मरहिता ये च नरकं यान्ति ते ध्रुवम्। भारते न भवन्त्येव कर्मणः फलभोगिनः।४०
स्वधर्मनिरता एवं वर्णाश्चत्वार एव च। स्वधर्मनिरता विप्राः स्वधर्मनिरताय च।४१
कन्या ददाति विप्राय चन्द्रलोकं प्रयान्ति ते। वसन्ति लभते साध्वि! यावदिन्द्राश्चतुर्दश।४२
सालङ्कृताया दानेनद्विगुणंफलमुच्यते। सकामायान्तितल्लोकंननिष्कामाश्च साधवः।४३
ते प्रयान्ति विष्णुलोकंफलसङ्घातवर्जिताः। गव्यं चरजतंस्वर्णवस्त्रंसर्पिः फलंजलम्।४४
ये ददत्येव विप्रेभ्यश्चन्द्रलोकं प्रयान्ति ते। वसन्ति ते चतल्लोकेयावन्मन्वन्तरंसति।४५
सुचिरात्सुचिरं वासं कुर्वन्ति तेनतेजनाः। येददतिसुवर्णाश्चगाश्चताम्रादिकंसति! ।४६
ते यान्तिसूर्यलोकं च शुचये ब्राह्मणाय च। वसन्ति ते तत्र लोके वर्षाणामयुतंसति।४७
विपुले सुचिरं वासं कुर्वन्ति च निरामयाः। ददाति भूमिं विप्रेभ्यो धनानि विपुलानि च।४८
स याति विष्णुलोकं च श्वेतद्वीपं मनोहरम्। तत्रैव निवसत्येव यावच्चन्द्रदिवाकरौ।४९
विपुले विपुलं वासं करोति पुण्यवान्मुने। गृहं ददाति विप्राय ये जनाभक्तिपूर्वकम्।५०
ते यान्ति विष्णुलोकं च सुचिरंसुखदायकम्। गृहरेणुप्रमाणं च विष्णुलोकेमहत्तमे।५१
विपुले विपुलं वासं कुर्वन्तिमानवाःसति। यस्मै यस्मै च देवाय यो ददातिगृहंनरः।५२
स याति तस्यलोकञ्च रेणुमानाब्दमेव च। सौधे चतुर्गुणं पुण्यंदेशेशतगुणं फलम्।५३
प्रकृष्टे द्विगुणंतस्मादित्याह कमलोद्भवः। योददाति तडागञ्च सर्वपापापनुत्तये।५४
स यातिजनलोकञ्च रेणुमानाब्दमेव च। वाप्यां फलं दशगुणं प्राप्नोति मानवः सदा।५५
सप्त वापीप्रदानेन तडागस्य फलं लभेत्। धनुश्चतुः सहस्रेण दैर्घ्यमानेननिश्चितम्।५६
न्यूना वा तावती प्रस्थे सा वापी परिकीर्तिता। दशवापीसमा कन्या यदि पात्रे प्रदीयेत।५७
फलं ददाति द्विगुणं यदि साऽलङ्कृता भवेत्। यत्फलञ्च तडागे च तदुद्धारे च तत्फलम्।५८

वाप्याश्च पङ्कोद्धरणे वापीतुल्यफलं लभेत्। अश्वत्थवृक्षमारोप्य प्रतिष्ठांयः करोतिच।५९
स प्रयाति तपोलोकं वर्षाणामयुतं सति। पुष्पोद्यानंयो ददातिसावित्रि! सर्वभूतये।६०
स वसेद्ध्रुवलोकञ्च वर्षाणामयुतं ध्रुवम्। यो ददाति विमानञ्च विष्णवेभारतेसति।६१
विष्णुलोके वसेत्सोऽपि यावन्मन्वन्तरं परम्। चित्रयुक्ते च विपुले फलं तस्य चतुर्गुणम्।६२
तस्यार्धं शिबिकादाने फलमेव लभेद्ध्रुवम्। योददाति भक्तियुक्तो हरयेदोलमन्दिरम्।६३
विष्णुलोके वसेत्सोऽपि यावन्मन्वन्तरंशतम्। राजमार्गसौधयुक्तंयः करोतिपतिव्रते।६४
वर्षाणामयुतं सोऽपि शक्रलोके महीयते। ब्राह्मणेभ्योऽथ देवेभ्यो दानेसमफलंलभेत्।६५
यद्धि दत्तञ्च तद् भुङ्क्ते न दत्तं नोपतिष्ठते। भुक्त्वा स्वर्गादिजं सौख्यं पुण्यवाञ्जन्म भारते।६६
लभेद्विप्रकुलेष्वेव क्रमेणैवोत्तमादिषु। भारते पुण्यवान्विप्रो भुक्त्वास्वर्गादिकंफलम्।६७
पुनः सोऽपि भवेद्विप्रश्चैवं च क्षत्रियादयः। क्षत्रियोवाऽथवैश्योवाकल्पकोटिशतेनच।६८
तपसा ब्राह्मणत्वञ्च न प्राप्नोति श्रुतौ श्रुतम्। नाभुक्तंक्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि।६९
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। दैवतीर्थसहायेन कायव्यूहहेन शुद्ध्यति।७०
एतत्ते कथितं किञ्चित्किम्भूयः श्रोतुमिच्छसि।।७१।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे सावित्र्युपाख्याने कर्मविपाककथनवर्णनं-नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ।।२९।।

* त्रिंशोऽध्यायः *

नानादानानांकर्मविपाककथनम्

सावित्र्युवाच

प्रयान्ति स्वर्गमन्यं च येनैवकर्मणायम!। मानवाः पुण्यवन्तश्चतन्मेव्याख्यातुमर्हसि।१

धर्मराज उवाच

अन्नदानञ्च विप्राय यः करोति च भारते। अन्नप्रमाणवर्षञ्च शिवलोके महीयते।२
अन्नदानं महादानमन्येभ्योऽपि करोति यः। अन्नदानप्रमाणञ्च शिवलोके महीयते।३
अन्नदानात्परं दानं न भूतं न भविष्यति। नाऽत्रपात्रपरीक्षास्यान्नकालनियमः क्वचित्।४
देवेभ्यो ब्राह्मणेभ्योवा ददाति चासनं यदि। महीयतेविष्णुलोकेवर्षाणामयुतं सति।५
यो ददाति च विप्राय दिव्यां धेनुं पयस्विनीम्। तल्लोममानवर्षञ्च विष्णुलोके महीयते।६
चतुर्गुणं पुण्यदिने तीर्थे शतगुणं फलम्। दानं नारायणक्षेत्रे फलं कोटिगुणं भवेत्।७
गां यो ददाति विप्राय भारते भक्तिपूर्वकम्। वर्षाणामयुतं चैवचन्द्रलोके महीयते।८
यश्चोभयमुखीदानं करोति ब्राह्मणाय च। तल्लोममानवर्षञ्च विष्णुलोके महीयते।९
यो ददाति ब्राह्मणाय श्वेतच्छत्रं मनोहरम्। वर्षाणामयुतं सोऽपि मोदते वरुणालये।१०
विप्राय पीडिताङ्गाय वस्त्रयुग्मं ददाति च। महीयते वायुलोके वर्षाणामयुतं सति।११
यो ददाति ब्राह्मणायशालग्रामं सवस्त्रकम्। महीयते स वैकुण्ठे यावच्चन्द्रदिवाकरौ।१२
यो ददाति ब्राह्मणाय दिव्यांशय्यांमनोहराम्। महीयतेचन्द्रलोकेयावच्चन्द्रदिवाकरौ।१३
यो ददाति प्रदीपं चदेवेभ्योब्राह्मणाय च। यावन्मन्वन्तरं सोऽपि वह्निलोके महीयते।१४
करोति गजदानं च यदि विप्राय भारते। यावदिन्द्रोनरस्तावदिन्द्रस्यार्धासनेवसेत्।१५
भारते योऽश्वदानं च करोति ब्राह्मणाय च। मोदते वारुणे लोकेयावदिन्द्राश्चतुर्दश।१६

प्रकृष्टां शिविकां यो हि ददाति ब्राह्मणाय च। मोदते वारुणेलोकेयावदिन्द्राश्चतुर्दश।१७
प्रकृष्टां वाटिकां यो हि ददाति ब्राह्मणाय च। महीयते वायुलोकेयावन्मन्वतरं सति!।१८
यो ददाति च विप्राय व्यजनं श्वेतचामरम्। महीयते वायुलोके वर्षाणामयुतं ध्रुवम्।१९
धान्यं रत्नं यो ददाति चिरञ्जीवी भवेत्सुधीः। दाता ग्रहीता तौ द्वौ च ध्रुवं वैकुण्ठगामिनौ।२०
सततं श्रीहरेर्नाम भारते यो जपेन्नरः। स एव चिरजीवी च ततो मृत्युः पलायते।२१
यो नरो भारते वर्षे दोलनं कारयेत्सुधीः। पूर्णिमारजनीशेषे जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।२२
इहलोके सुखं भुक्त्वायात्यन्तेविष्णुमन्दिरम्। निश्चितंनिवसेत्तत्र शतमन्वन्तरावधि।२३
फलमुत्तरफल्गुन्यां ततोऽपि द्विगुणंभवेत्। कल्पान्तजीवीसभवेदित्याहकमलोद्भवः।२४
तिलदानं ब्राह्मणाय यः करोति च भारते। तिलप्रमाणवर्षं च मोदते शिवमन्दिरे।२५
ततः सुयोनिं सम्प्राप्य चिरजीवी भवेत्सुखी। ताम्रपात्रस्यदानेनद्विगुणंचफलंलभेत् ।२६

सालङ्कृतां च भोग्यां च सवस्त्रां सुन्दरीं प्रियाम्।
यो ददाति ब्राह्मणाय भारते च पतिव्रताम्॥२७॥

महीयते चन्द्रलोके यावदिन्द्राश्चतुर्दश। तत्र स्वर्वेश्यया सार्धं मोदते च दिवानिशम्।२८
ततो गन्धर्वलोके च वर्षाणामयुतं ध्रुवम्। दिवानिशं कौतुकेन चोर्वश्या सहमोदते।२९
ततो जन्मसहस्त्रञ्च प्राप्नोति सुन्दरीं प्रियाम्। सतीं सौभाग्ययुक्तञ्च कोमलां प्रियवादिनीम्।३०
प्रददाति फलं चारु ब्राह्मणाय च यो नरः। फलप्रमाणवर्षं च शक्रलोके महीयते।३१
पुनः सुयोनिं सम्प्राप्य लभतेसुतमुत्तमम्। सफलानां च वृक्षाणांसहस्त्रञ्चप्रशंसितम्।३२
केवलं फलदानं वा ब्राह्मणाय ददाति च। सुचिरं स्वर्गवासं च कृत्वा यातिचभारते।३३
नानाद्रव्यसमायुक्तं नानासस्यसमन्वितम्। ददाति यश्च विप्राय भारते विपुलंगृहम्।३४
सुरलोके वसेत्सोऽपियावन्मन्वन्तरंशतम्। ततः सुयोनिंसम्प्राप्यसमहाधनवान्भवेत्।३५
यो नरः सस्यसंयुक्तां भूमिं च सुचिरां सति। ददातिभक्त्याविप्रायपुण्यक्षेत्रेचभारते ।३६
महीयते च वैकुण्ठे मन्वन्तरशतं ध्रुवम्। पुनः सुयोनिंसम्प्राप्यमहांश्चभूमिपोभवेत्।३७
तं न त्यजति भूमिश्च जन्मनां शतकं परम्। श्रीमांश्च धनवांश्चैवपुत्रवांश्चप्रजेश्वरः।३८
सव्रजं च प्रकृष्टं च ग्रामं दद्याद् द्विजाय च। लक्षमन्वन्तरं चैव वैकुण्ठे समहीयते।३९
पुनः सुयोनिं सम्प्राप्य ग्रामलक्षसमन्वितम्। न जहाति चतंपृथ्वीजन्मनांलक्षमेव च।४०
सुप्रजं च प्रकृष्टं चपक्वसस्यसमन्वितम्। नानापुष्करिणीवृक्षफलवल्लीसमन्वितम्।४१
नगरं यश्च विप्राय ददाति भारते भुवि। महीयते सकैलासे दशलक्षेन्द्रकालकम्।४२
पुनः सुयोनिं सम्प्राप्य राजेन्द्रो भारते भवेत्। नगराणां चनियुतंसलभेन्नात्र संशयः।४३
धरा तं न जहात्येव जन्मनामयुतं ध्रुवम्। परमैश्वर्यनियुतो भवेदेव महीतले।४४
नगराणां च शतकं देशं यो हि द्विजातये। सुप्रकृष्टं मध्यकृष्टं प्रजायुक्तं ददाति च।४५
वापीतडागसंयुक्तं नानावृक्षसमन्वितम्। महीयते स वैकुण्ठे कोटिमन्वन्तरावधि।४६
पुनः सुयोनिं सम्प्राप्य जम्बुद्वीपपतिर्भवेत्। परमैश्वर्यसंयुक्तो यथा शक्रस्तथाभुवि।४७
महीतं न जहात्येव जन्मनां कोटिमेव च। कल्पान्तजीवी स भवेद्राजराजेश्वरोमहान्।४८
स्वाधिकारं समग्रं च यो ददाति द्विजातये। चतुर्गुणं फलं चान्ते भवेत्तस्य नसंशय।४९
जम्बुद्वीपं यो ददाति ब्राह्मणायतपस्विने। फलं शतगुणं चाऽन्ते भवेत्तस्य नसंशय।५०
जम्बुद्वीपमहीदातुः सर्वतीर्थानि सेवितुः। फलं सथगुणं चाऽन्ते भवेत्तस्य न संशयः।५१

सर्वदानप्रदातुश्च सर्वसिद्धेश्वरस्य च। अस्त्येव पुनरावृत्तिर्न भक्तस्य महेशितुः।५२
असङ्ख्यब्रह्मणां पातं पश्यन्ति भुवनेशितुः। निवसन्ति मणिद्वीपेश्रीदेव्याः परमेपदे।५३
देवीमन्त्रोपासकाश्च विहाय मानवीं तनुम्। विभूतिंदिव्यरूपञ्चजन्ममृत्युजराहरम् ।५४
लब्ध्वा देव्याश्चसारूप्यं देवीसेवाञ्चकुर्वते। पश्यन्तितेमणिद्वीपेसखण्डंलोकसङ्क्षयम्।५५

नश्यन्ति देवाः सिद्धाश्चविश्वानिनिखिलानिच।
देवीभक्तानश्यन्तिजन्ममृत्युजराहराः ॥५६॥

कार्त्तिके तुलसीदानं करोति हरये च यः। युगत्रयप्रमाणं च मोदते हरिमन्दिरे।५७
पुनः सुयोनिं सम्प्राप्य हरिभक्तिं लभेद्ध्रुवम्। जितेन्द्रियाणां प्रवरः सभवेद्भारतेभुवि।५८
मध्ये यः स्नाति गङ्गायामरुणोदयकालतः। युगषष्टिसहस्राणि मोदते हरिमन्दिरे।५९
पुनःसुयोनिं सम्प्राप्य विष्णुमन्त्रंलभेद्ध्रुवम्। त्यक्त्वाचमानुषंदेहंपुनर्यातिहरेः पदम्।६०
नास्ति तत्पुनरावृत्तिर्वैकुण्ठाच्च महीतले। करोति हरिदास्यं च तथा सारूप्यमेवच।६१
नित्यस्नायी च गङ्गायां स पूतः सूर्यवद्भुवि। पदेपदेऽश्वमेधस्यलभते निश्चितंफलम्।६२
तस्यैव पादरजसा सद्यः पूता वसुन्धरा। मोदते स च वैकुण्ठेयावच्चन्द्रदिवाकरौ।६३
पुनः सुयोनिं सम्प्राप्य हरिभक्तिं लभेद् ध्रुवम्। जीवन्मुक्तोऽतितेजस्वी तपस्वीप्रवरो भवेत्।६४
स्वधर्मनिरतः शुद्धो विद्वांश्चसजितेन्द्रियः। मीनकर्कटयोर्मध्येगाढंतपतिभास्करः ।६५
भारते यो ददात्येव जलमेव सुवासितम्। स मोदते च कैलासे यावदिन्द्राश्चतुर्दश।६६
पुनःसुयोनिं सम्प्राप्य रूपवांश्च सुखी भवेत्। शिवभक्तश्चतेजस्वीवेदवेदाङ्गपारगः ।६७
वैशाखे सक्तुदानं च यः करोति द्विजातये। सक्तुरेणुप्रमाणाब्दं मोदते शिवमन्दिरे।६८
करोति भारतेयो हि कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्। शतजन्मकृतं पापं मुच्यते नाऽत्र संशयः।६९
वैकुण्ठे मोदतेसोऽपि यादिन्द्राश्चतुर्दश। पुनः सुयोनिंसम्प्राप्यकृष्णेभक्तिंलभेद्ध्रुवम्।७०
इहैव भारते वर्षे शिवरात्रिं करोति यः। मोदते शिवलोके स सप्तमन्वन्तरावधि।७१
शिवाय शिवरात्रौ च बिल्वपत्रं ददाति च। पत्रमानयुगं तत्र मोदते शिवमन्दिरे।७२

पुनः सुयोनिं सम्प्राप्य शिवभक्तिं लभेद् ध्रुवम्।
विद्यावान्पुत्रवाञ्छ्री मान्प्रजावान्भूमिमान्भवेत् ॥७३॥

चैत्रमासेऽथवा माघे शङ्करं योऽर्चयेद्व्रती। करोति नर्तनंभक्त्यावेत्रपाणिर्दिवानिशम्।७४
मासं वाऽप्यर्धमासं वा दश सप्तदिनानि च। दिनमानयुगंसोऽपिशिवलोके महीयते।७५
श्रीरामनवमीं यो हि करोति भारते पुमान्। सप्तमन्वन्तरं यावन्मोदते विष्णुमन्दिरे।७६
पुनःसुयोनिं सम्प्राप्य रामभक्तिं लभेद् ध्रुवम्। जितेन्द्रियाणां प्रवरो महांश्च धनवान्भवेत्।७७
शारदीयां महापूजां प्रकृतेर्यः करोति च। महिषैश्छागलैर्मेषैः खड्गैर्भेकादिभिः सति!।७८
नैवेद्यैरुपहारैश्च धूपदीपादिभिस्तथा। नृत्यगीतादिभिर्वाद्यैर्नानाकौतुकमङ्गलम्।७९
शिवलोकेवसेत्सोऽपि सप्तमन्वन्तरावधि। पुनः सुयोनिंसम्प्राप्यनरोबुद्धिंचनिर्मलाम्।८०
अतुलांश्रियमाप्नोति पुत्रपौत्रविवर्धनीम्। महाप्रभावयुक्तश्च गजवाजिसमन्वितः।८१
राजराजेश्वरः सोऽपिभवेदेवन संशयः। ततः शुक्लाष्टमीम्प्राप्य महालक्ष्मीञ्चयोऽर्चयेत्।८२
नित्यं भक्त्या पक्षमेकं पुण्यक्षेत्रे च भारते। दत्त्वातस्यैप्रकृष्टानि चोपचाराणिषोडश।८३
गोलोके च वसेत्सोऽपि यावदिन्द्राश्चतुर्दश। पुनः सुयोनिं सम्प्राप्य राजराजेश्वरो भवेत्।८४

कार्त्तिकीपूर्णिमायाञ्च कृत्वा तु रासमण्डलम्।
गोपानां शतकं कृत्वा गोपीनां शतकं तथा ॥८५॥

शिलायां प्रतिमायाञ्च श्रीकृष्णं राधयासह। भारते पूजयेद्भक्त्याचोपहाराणिषोडश।८६
गोलोके वसतेसोऽपि यावद्वै ब्रह्मणो वयः। भारतं पुनरागत्यकृष्णेभक्तिंलभेद्दृढाम्।८७
क्रमेण सुदृढां भक्तिं लब्ध्वामन्त्रं हरेरहो। देहं त्यक्त्वा गोलोकं पुनरेव प्रयाति सः।८८
ततः कृष्णस्य सारूप्यं पार्षदप्रवरो भवेत्। पुनस्तत्पतनं नास्ति जरामृत्युहरोभवेत्।८९

शुक्लां वाऽप्यथवा कृष्णां करोत्येकादशीञ्च यः ।
वैकुण्ठे मोदते सोऽपि यावद्वै ब्राह्मणो वयः ।।९०।।

भारतम्पुनरागत्य कृष्णभक्तिं लभेद्ध्रुवम्। क्रमेण भक्तिं सुदृढां करोत्येकां हरेरहो।९१
देहं त्यक्त्वाचगोलोकंपुनरेवप्रयातिसः। ततः कृष्णस्य सारूप्यं सम्प्राप्यपार्षदोभवेत्।९२
पुनस्तत्पतनं नास्ति जरामृत्युहरोभवेत्। भाद्रे च शुक्लद्वादश्यां यः शक्रं पूजयेन्नरः।९३
षष्टिवर्षसहस्राणि शक्रलोके महीयते। रविवारे च सङ्क्रान्त्यां सप्तम्यां शुक्लपक्षके।९४
सम्पूज्यार्कंहविष्यान्नं यः करोति च भारते। महीयते सोऽर्कलोकेयावदिन्द्राश्चतुर्दश।९५
भारतम्पुनरागत्य चारोगीश्रीयुतोभवेत्। ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां सावित्रींयोहिपूजयेत्।९६
महीयते ब्रह्मलोके सप्तमन्वन्तरावधि। पुनर्महीं समागत्य श्रीमानतुलविक्रमः।९७
चिरजीवी भवेत्सोऽपि ज्ञानवान्सम्पदा युतः। माघस्य शुक्लपञ्चम्यां पूजयेद्य सरस्वतीम्।९८
संयतो भक्तितोदत्त्वाचोपचाराणिषोडश। महीयतेः मणिद्वीपे यावद्ब्रह्मदिवानिशम्।९९
सम्प्राप्य च पुनर्जन्मसभवेत्कविपण्डितः। गां सुवर्णादिकंयोहिब्राह्मणायददातिच।१००
नित्यं जीवनपर्यन्तं भक्तियुक्तश्च भारते। गवांलोमप्रमाणाब्दं द्विगुणं विष्णुमन्दिरे।१०१
मोदते हरिणा सार्धं क्रीडाकौतुकमङ्गलैः। तदन्ते पुनरागत्य राजराजेश्वरो भवेत्।१०२
श्रीमांश्च पुत्रवान्विद्वाञ्ज्ञानवान्सर्वतः सुखी। भोजयेद्योऽपि मिष्टान्नं ब्राह्मणेभ्यश्च भारते।१०३
विप्रलोमप्रमाणाब्दं मोदते विष्णुमन्दिरे। ततः पुनरिहाऽऽगत्यसुखीचधनवान्भवेत्।१०४
विद्वान्सुचिरजीवी च श्रीमानतुलविक्रमः। यो वक्ति वा ददात्येव हरेर्नामानि भारते।१०५
युगं नाम प्रमाणञ्च विष्णुलोके महीयते। ततः पुनरिहागत्य सुखीचधनवान्भवेत्।१०६
यदि नारायणक्षेत्रे फलं कोटिगुणम्भवेत्। नाम्नां कोटिंहरेर्याहि क्षेत्रेनारायणे जपेत्।१०७
सर्वपापविनिर्मुक्तो जीवन्मुक्तोभवेद् ध्रुवम्। न लभेत्स पुनर्जन्म वैकुण्ठे स महीयते।१०८
लभेद्विष्णोश्च सारूप्यं न तस्य पतनम्भवेत्। विष्णुभक्तिंलभेत्सोऽपिविष्णुसारूप्यमाप्नुयात्।१०९
शिवं यःपूजयेन्नित्यं कृत्वा लिङ्गञ्च पार्थिवम्। यावज्जीवनपर्यन्तं स याति शिवमन्दिरम्।११०
मृदो रेणुप्रमाणब्दं शिवलोकेमहीयते। ततः पुनरिहागत्य राजेन्द्रो भारते भवेत्।१११
शिलां च पूजयेन्नित्यंशिलातोयञ्चभक्षति। महीयते च वैकुण्ठे यावद्वै ब्रह्मणः शतम्।११२
ततो लब्ध्वापुनर्जन्महरिभक्तिञ्च दुर्लभाम्। महीयते विष्णुलोकेनतस्य पतनम्भवेत्।११३
तपांसिचैव सर्वाणिव्रतानिनिखिलानि च। कृत्वातिष्ठतिवैकुण्ठे यावदिन्द्राश्चतुर्दश।११४
ततो लब्ध्वा पुनर्जन्म राजेन्द्रो भारते भवेत्। ततोमुक्तोभवेत्पश्चात्पुनर्जन्मन विद्यते।११५
यः स्नात्वा सर्वतीर्थेषु भुवःकृत्वा प्रदक्षिणाम्। स तु निर्वाणतां याति न च जन्म भवेद्भुवि।११६
पुण्यक्षेत्रे भारतेचयोऽश्वमेधंकरोति च। अश्वलोममिताब्दं च शक्रस्यार्धासनम्भजेत्।११७
चतुर्गुणंराजसूये फलमाप्नोति मानवः। सर्वेभ्योऽपि मखेभ्योहिपरोदेवीमखः स्मृतः।११८
विष्णुना च कृतः पूर्वं ब्रह्मणा च वरानने। शङ्करेण महेशेन त्रिपुरासुरनाशने।११९
शक्तियज्ञः प्रधानश्च सर्वयज्ञेषु सुन्दरि!। नाऽनेन सदृशो यज्ञस्त्रिषुलोकेषु विद्यते।१२०

दक्षेण च कृतः पूर्व महान्सम्वादसंयुतः। बभूव कलहो यत्र दक्षशङ्करयोः सति!।१२१
शेपुश्च नन्दिनं विप्रा नन्दीविप्रांश्च कोपतः। यद्धेतोर्दक्षयज्ञञ्च बभञ्ज चन्द्रशेखरः।१२२
चकार देवीयज्ञं स पुरा दक्षः प्रजापतिः। धर्मश्च कश्यपश्चैव शेषश्चापि च कर्दमः।१२३
स्वायम्भुवो मनुश्चैव तत्पुत्रश्च प्रियव्रतः। शिवः सनत्कुमारश्च कपिलश्च ध्रुवस्तथा।१२४
राजसूयसहस्राणां फलमाप्नोतिनिश्चितम्। देवीयज्ञात्परो यज्ञो नास्ति वेदे फलप्रदः।१२५
वर्षाणां शतजीवी च जीवन्मुक्तो भवेद्ध्रुवम्। ज्ञानेन तेजसा चैव विष्णुतुल्यो भवेदिह।१२६
देवानाञ्च यथा विष्णुर्वैष्णनाञ्च नारदः। शास्त्राणाञ्चयथा वेदा वर्णानां ब्राह्मणोयथा।१२७
तीर्थानाञ्च यथागङ्गापवित्राणांशिवोयथा। एकादशी व्रतानाञ्च पुष्पाणांतुलसीयथा।१२८
नक्षत्राणां यथा चन्द्रः पक्षिणांगरुडोयथा। यथा स्त्रीणाञ्चप्रकृतीराधावाणीवसुन्धरा।१२९
शीघ्राणां चेन्द्रियाणाञ्च चञ्चलानां मनो यथा ।
प्रजापतीनां ब्रह्मा च प्रजानां च प्रजापतिः ।।१३०।।
वृन्दावनं वनानाञ्च वर्षाणां भारतंयथा। श्रीमतां च यथा श्रीश्च विदुषाञ्चसरस्वती।१३१
पतिव्रतानां दुर्गा च सौभाग्यानाञ्चराधिका। देवीयज्ञस्तथावत्सेसर्वयज्ञेषु भामिनि।१३२
अश्वमेधशतेनैव शक्रत्वञ्च लभेद् ध्रुवम्। सहस्रेण विष्णुपदं सम्प्राप्तः पृथुरेव च।१३३
स्नानञ्च सर्वतीर्थानां सर्वयज्ञेषु दीक्षणम्। सर्वेषां च व्रतानाञ्च तपसां फलमेव च।१३४
पाठे चतुर्णां वेदानां प्रदक्षिण्यं भुवस्तथा। फलभूतमिदं सर्वं मुक्तिदं शक्तिसेवनम्।१३५
पुराणेषु च वेदेषु चेतिहासेषु सर्वतः। निरूपितं सारभूतंदेवीपादाम्बुजार्चनम्।१३६
तद्वर्णनं च तद्ध्यानं तन्नामगुणकीर्तनम्। तत्स्तोत्रस्मरणं चैवं वन्दनं जपमेव च।१३७
तत्पादोदकनैवेद्यं भक्षणं नित्यमेव च। सर्वसम्मतमित्येवं सर्वेप्सितमिदं सति!।१३८
भज नित्यम्परम्ब्रह्म निर्गुणंप्रकृतिं पराम्। गृहाणस्वामिनम्वत्सेसुखम्वसचमन्दिरे।१३९
अयं ते कथितः कर्मविपाको मङ्गलो नृणाम्। सर्वेप्सितः सर्वमतस्तत्त्वज्ञानप्रदः परः।१४०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादश साहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे यमेनकर्मविपाककथनंनाम त्रिंशोऽध्यायः ।।३०।।

* एकत्रिंशोऽध्यायः *

सावित्रीकृतयमाष्टकपूर्वकंतस्यैशक्तिमन्त्रप्रदानवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

शक्तेरुत्कीर्तनं श्रुत्वा सावित्री यमवक्त्रतः। साश्रुनेत्रा सपुलका यमं पुनरुवाच सा।१

सावित्र्युवाच

शक्तेरुत्कीर्तनं धर्म सकलोद्धारकारणम्। श्रोतॄणां चैव वक्तॄणांजन्ममृत्युजराहरम्।२
दानवानाञ्च सिद्धानां तपसाञ्च परम्पदम्। योगानाञ्चैव वेदानांकीर्तनंसेवनम्विभोः।३
मुक्तित्वममरत्वञ्चसर्वसिद्धित्वमेव च। श्रीशक्तिसेवकस्यैव कलांनार्हन्तिषोडशीम्।४
भजामि केन विधिना वद वेदविदाम्बर। शुभकर्मविपाकञ्चश्रुतं नृणां मनोहरम्।५
कर्माशुभविपाकञ्च तन्मे व्याख्यातुमर्हसि। इत्युक्त्वाचसतीब्रह्मन्भक्तिनम्रात्मकन्धरा।६
तुष्टाव धर्मराजञ्च वेदोक्तेन स्तवेन च ।

सावित्र्युवाच

तपसा धर्ममाराध्य पुष्करे भास्करः पुरा ।।७।।

धर्मं सूर्यः सुतम्प्राप धर्मराजं नमाम्यहम्। समता सर्वभूतेषु यस्यसर्वस्यसाक्षिणः। ८
अतो यन्नाम शमनमिति तम्प्रणमाम्यहम्। येनान्तश्चकृतोविश्वे सर्वेषांजीविनांपरम्। ९
कामानुरूपं कालेनतं कृतान्तं नमाम्यहम्। विभर्ति दण्डं दण्डाय पापिनां शुद्धिहेतवे। १०
नमामि तं दण्डधरं यः शास्तासर्वजीविनाम्। विश्वञ्चकलयत्येवयः सर्वेषुचसन्ततम्। ११
अतीव दुर्निवार्यञ्चतं कालंप्रणमाम्यहम्। तपस्वीब्राह्मनिष्ठोयः सञ्यमीसं जितेन्द्रियः। १२
जीवानां कर्मफलदस्तं यमंप्रणमाम्यहम्। स्वात्मारामश्चसर्वज्ञोमित्रंपुण्यकृतांभवेत्। १३
पापिनां क्लेशदो यस्तं पुण्यमित्रंनमाम्यहम्। यज्जन्मब्रह्मणोंऽशेनज्वलन्तंब्रह्मतेजसा। १४
यो ध्यायति परम्ब्रह्म तमीशं प्रणमाम्यहम्। इत्युक्त्वासाच सावित्रीप्रणनामयमंमुने। १५
यमस्तां शक्तिभजनं कर्मपाकमुवाच ह। इदं यमाष्टकं नित्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्। १६
यमात्तस्य भयं नास्ति सर्वपापात्प्रमुच्यते। महापापी यदिपठेन्नित्यंभक्तिसमन्वितः। १७
यमः यरोति संशुद्धं कायव्यूहेन निश्चितम्।।१८।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे यमाष्टकवर्णनंनामैकत्रिंशोऽध्यायः।।३१।।

* द्वात्रिंशोऽध्यायः *

विविधपापानांनानानरककुण्डवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

मायावीजं महामन्त्रं प्रदत्त्वा विधिपूर्वकम्। कर्माशुभविपाकञ्च तामुवाच रवेः सुतः। १

धर्मराज उवाच

शुभकर्मविपाकान्न नरकं याति मानवः। कर्माशुभविपाकञ्च कथयामि निशामय। २
नानापुराणभेदेन नामभेदेनभामिनि!। नानाप्रकारं स्वर्गञ्च याति जीवः स्वकर्मभिः। ३
शुभकर्मविपाकान्न नरकं याति कर्मभिः। कुकर्मणाच नरकं याति नानाविधं नरः। ४
नरकाणाञ्च कुण्डानि सन्ति नानाविधानिच। नानाशास्त्रप्रमाणेनकर्मभेदेन यानि च। ५
विस्तृतानि च गर्तानि क्लेशदानि च दुःखिनाम्।
भयङ्कराणि घोराणि हे वत्से! कुत्सितानि च।।६।।
षडशीतिच कुण्डानिएवमन्यानिसन्तिच। निबोधतेषांनामानिप्रसिद्धानिश्रुतौसति!। ७
वह्निकुण्डं तप्तकुण्डं क्षारकुण्डं भयानकम्। विट्कुण्डं मूत्रकुण्डं च श्लेष्मकुण्डं च दुःसहम्। ८
गरकुण्डं दूषिकुण्डं वसाकुण्डं तथैव च। शुक्रकुण्डमसृक्कुण्डमश्रुकुण्डंचकुत्सितम्। ९
कुण्डंगात्रमलानाञ्चकर्णविट्कुण्डमेव च। मज्जाकुण्डंमांसकुण्डं नखकुण्डंचदुस्तरम्। १०
लोमकुण्डं केशकुण्डमस्थिकुण्डञ्चदुस्तरम्। ताम्रकुण्डंलोहकुण्डंप्रतप्तंक्लेशदंमहत्। ११
चर्मकुण्डं तप्तसुराकुण्डञ्चपरिकीर्तितम्। तीक्ष्णकण्टककुण्डञ्चविषोदंविषकुण्डकम्। १२
प्रतप्तकुण्डं तैलस्य कुन्तकुण्डञ्च दुर्वहम्। कृमिकुण्डं पूयकुण्डं सर्पकुण्डं दुरन्तकम्। १३
मशकुण्डं दंशकुण्डं भीमं गरलकुण्डकम्। कुण्डञ्च वज्रदंष्ट्राणांवृश्चिकानाञ्चसुव्रते। १४
शरकुण्डं शूलकुण्डंखड्गकुण्डञ्चभीषणम्। गोलकुण्डंनक्रकुण्डंकाककुण्डंशुचास्पदम्। १५
मन्थानकुण्डं बीजकुण्डं वज्रकुण्डञ्च च दुःसहम्।
तप्तंपाषाणकुण्डञ्च तीक्ष्णपाषाणकुण्डकम्।।१६।।
लालाकुण्डं मसीकुण्डं चूर्णकुण्डं तथैवच। चक्रकुण्डं वक्रकुण्डंकूर्मकुण्डंमहोल्वणम्। १७

ज्वालाकुण्डंभस्मकुण्डं दग्धकुण्डंशुचिस्मिते!। तप्तसूचीमसिपत्रंक्षुरधारंसूचीमुखम् ।१८
गोकामुखं नक्रमुखं गजदंशञ्चगोमुखम्। कुम्भीपाकंकालसूत्रं मत्स्योदंकृमिकन्तुकम्।१९
पांसुभोज्यं पाशवेष्टं शूलप्रोतं प्रकम्पनम्। उल्कामुखमन्धकूपं वेधनं ताडनं तथा।२०
जालरन्ध्रं देहचूर्णं दलनं शोषणं कषम्। शूर्पंज्वालामुखं चैव धूमान्धं नागवेष्टनम्।२१
कुण्डान्येतानि सावित्रि!पापिनांक्लेशदानि च। नियुतैः किन्नरगणै रक्षितानि च सन्ततम्।२२
दण्डहस्तैः पाशहस्तैर्मदमत्तैर्भयङ्करैः। पक्तिहस्तैर्गदाहस्तैरसिहस्तैः सुदारुणैः।२३
तमोयुक्तैर्दयाहीनैर्निवार्यैश्च न सर्वतः। तेजस्विभिश्च निःशङ्कैराताम्रपिङ्गलोचनैः।२४
योगयुक्तैः सिद्धयुक्तैर्नानारूपधरैर्भटैः। आसन्नमृत्युभिर्दृष्टैः पापिभिः सर्वजीविभिः।२५
स्वकर्मनिरतैः सर्वैः शाक्तैः सौरैश्च गणपैः। अदृश्यैः पुण्यकृद्भिश्चसिद्धैर्योगिभिरेवच।२६
स्वधर्मनिरतैर्वाऽपि विरतैर्वा स्वतन्त्रकैः। बलवद्भिश्च निःशङ्कैः स्वप्नदृष्टैश्चवैष्णवैः।२७
एतत्तेकथितंसाध्विकुण्डसङ्ख्यानिरूपणम् । येषांनिवासोयत्कुण्डेनिबोधकथयामिते ।२८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे सावित्र्युपाख्याने कुण्डसङ्ख्यानिरूपणं नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ।।३२।।

* त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः *

नानादुष्कृतकर्मणांविपाकवर्णनम्

धर्मराज उवाच

हरिसेवारतः शुद्धो योगसिद्धो व्रती सति!। तपस्वी ब्रह्मचारीचनयातिनरकंध्रुवम्।१
कटुवाचाबान्धवांश्च बललेपेन यो नरः। दग्धंकरोति बलवान्वह्निकुण्डं प्रयाति सः।२
स्वगात्रलोममानाब्दं तत्रस्थित्वाहुताशने। पशुयोनिमवाप्नोतिरौद्रदग्धांत्रिजन्मनि ।३
ब्राह्मणं तृषितं तप्तं क्षुधितं गृहमागतम्। न भोजयति यो मूढस्तप्तकुण्डं प्रयातिसः।४
तत्र तल्लोममानञ्च वर्षं स्थित्वा च दुःखदे। तप्तस्थले वह्नितल्पे पक्षी च सप्तजन्मसु।५
रविवारे च सङ्क्रान्त्याममायांश्राद्धवासरे। वस्त्राणांक्षारसंयोगं करोति केवलं नरः।६
स याति क्षारकुण्डञ्च सूत्रमानाब्दमेव च। स व्रजेद्रजकीं योनिं सप्तजन्मसु भारते।७
मूलप्रकृतिनिन्दांयः कुरुते मानवाधमः। वेदनिन्दां शास्त्रनिन्दां पुराणानां तथैव च।८
ब्रह्मविष्णुशिवादीनां तथानिन्दापरोजनः। गौरीवाण्यादिदेवीनांतथानिन्दापरो जनः।९
ते सर्वे निरये यान्ति तस्मिन्कुण्डे भयानके। नातः परतरं कुण्डं दुःखदं तु भविष्यति।१०
तत्र स्थित्वाऽनेककल्पान्सर्पयोनिं व्रजेत्पुनः। देवीनिन्दापराधस्यप्रायश्चित्तंनविद्यते ।११
स्वदत्ताम्परदत्ताम्वावृत्तिञ्च सुरविप्रयोः। षष्टिवर्षसहस्राणि विट्कुण्डञ्च प्रयातिसः।१२
तावन्त्येव चवर्षाणिविड्भोजीतत्रतिष्ठति। षष्टिवर्षसहस्राणि विट्कृमिश्च पुनर्भुवि।१३
परकीयतडागेच तडागं यः करोति च। उत्सृजेद्दैवदोषेण मूत्रकुण्डं प्रयाति सः।१४
तद्रेणुमानवर्षञ्च तद्भोजी तत्रतिष्ठति। पुनः पूर्णशताब्दञ्च स वृषो भारते भवेत्।१५
एकाकी मिष्टमश्नाति श्लेष्मकुण्डं प्रयाति च। पूर्णमब्दशतं चैव तद्भोजी तत्रतिष्ठति।१६
ततः पूर्णशताब्दं च स प्रेतो भारते भवेत्। श्लेष्ममूत्रपरं चैवपूयं भुङ्क्ते ततः शुचिः।१७
पितरं मातरं चैव गुरुं भार्यां सुतंसुताम्। यो न पुष्णात्यनाथञ्चगरकुण्डं प्रयातिसः।१८
पूर्णमब्दशतञ्चैव तद्भोजी तत्र तिष्ठति। ततो व्रजेद्भूतयोनिं शतवर्षं ततः शुचिः।१९

दृष्ट्वाऽतिथिं वक्रचक्षुः करोति यो हि मानवः। पितृदेवास्तस्य जलं न गृह्णन्ति च पापिनः।२०
यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च। इहैवलभतेचान्ते दूषिकाकुण्डमाव्रजेत्।२१
पूर्णमब्दशतञ्चैव तद्भोजी तत्र तिष्ठति। ततो व्रजेद्भूतयोनिंशतवर्षं ततः शुचिः।२२
दत्त्वा द्रव्यञ्च विप्रायचान्यस्मैदीयते यदि। स तिष्ठतिवसाकुण्डेतद्भोजीशतवत्सरम्।२३
कृकलासो भवेत्सोऽपि भारते सप्तजन्मसु। ततोभवेन्महारौद्रो दरिद्रोऽल्पायुरेव च।२४
पुमांसंकामिनी वाऽपि कामिनीं वा पुमानथ। यः शुक्रंपाययत्येवशुक्रकुण्डंप्रयातिसः।२५
पूर्णमब्दशतञ्चैव तद्भोजी तत्र तिष्ठति। कृमियोनिंशताब्दञ्च व्रजेद्भूत्वा ततः शुचिः।२६
सन्ताड्य च गुरुं विप्रं रक्तपातञ्चकारयेत्। सचतिष्ठत्यसृक्कुण्डेतद्भोजीशतवत्सरम्।२७
ततोलभेद्व्याघ्रजन्मसप्तजन्मसु भारते। ततः शुद्धिमवाप्नोति मानवाश्च क्रमेण च।२८
योऽश्रुतत्याज गायन्तं भक्तं दृष्ट्वा सगद्गदम्। श्रीकृष्णगुणसङ्कीर्ते हसत्येव च यो नरः।२९
स वसेदश्रुकुण्डेच तद्भोजीशतवर्षकम्। ततो भवेच्च चण्डालस्त्रिजन्मनि ततः शुचिः।३०
करोति शठतां तद्वन्नित्यं सुहृदि यो नरः। कुण्डं गात्रमलानाञ्च स प्रयाति शताब्दकम्।३१
ततः सगार्दभींयोनिमवाप्नोतित्रिजन्मनि। त्रिजन्मनिचशार्गालींततः शुद्धोभवेद्ध्रुवम्।३२
बधिरं यो हसत्येवनिन्दत्येवाभिमानतः। सवसेत्कर्णविट्कुण्डेतद्भोजीशतवत्सरम्।३३
ततो भवेत्स बधिरो दरिद्रः सप्तजन्मसु। सप्तजन्मन्यङ्गहीनस्ततः शुद्धिं लभेद्ध्रुवम्।३४
लोभात्स्वभरणार्थाय जीविनं हन्ति यो नरः। मज्जाकुण्डे वसेत्सोऽपि तद्भोजी लक्षवत्सरम्।३५
ततोभवेच्च शशको मीनश्च सप्तजन्मसु। त्रिजन्मनि वराहश्च कुक्कुटः सप्तजन्मसु।३६
एणादयश्च कर्मभ्यस्ततः शुद्धिंलभेद्ध्रुवम्। स्वकन्यापालनंकृत्वाविक्रीणातिचयोनरः।३७
अर्थलोभान्महामूढो मांसकुण्डं प्रयाति सः। कन्यालोमप्रमाणाब्दंतद्भोजीतत्रतिष्ठति।३८
तस्य दण्डप्रहारञ्च कुर्वन्ति यमकिङ्कराः। मांसभारं मूर्ध्नि कृत्वा रक्तधारांलिहन्क्षुधा।३९
ततो हि भारते पापीकन्याविट्कृमिर्गोभवेत्। षष्टिवर्षंमहत्याणिव्याधश्चसप्तजन्मसु।४०
त्रिजन्मनि वराहश्च कुक्कुटः सप्तजन्मसु। मण्डूको हि जलौकाश्चसप्तजन्मसुभारते।४१
सप्तजन्मसु काकश्च ततः शुद्धिं लभेद्ध्रुवम्। व्रतानामुपवासानां श्राद्धादीनाञ्च सङ्कुले।४२
करोति यः क्षौरकर्म सोऽशुचिःसर्वकर्मसु। सचतिष्ठतिकुण्डेचनश्रादीनाञ्चसुन्दरि।४३
तद्दैवदिनमानाब्दं तद्भोजी दण्डताडितः। सकेशं पार्थिवं लिङ्गं यो वाऽर्चयति भारते।४४
स तिष्ठतिकेशकुण्डे मृद्रेणुमानवर्षकम्। तदन्ते यावनीं योनिं प्रयाति हरकोपतः।४५
शताब्दाच्छुद्धिमाप्नोतिराक्षसः सभवेद्ध्रुवम्। पितृमात्रोर्विमुण्डे पिण्डंनवददातिच।४६
सचतिष्ठत्यस्थिकुण्डेस्वलोमाब्दंमहोल्बणे। ततःसुयोनिंसम्प्राप्यकुब्जश्चसप्तजन्मसु।४७
भवेन्महादरिद्रश्च ततः शुद्धो हि देहतः। यः सेवतेमहामूढोगुर्विणीञ्च स्वकामिनीम्।४८
प्रतप्ते ताम्रकुण्डे च शतवर्षंसतिष्ठति। अवीरान्नञ्चयोभुङ्क्ते ऋतुस्नातान्नमेव च।४९
लोहकुण्डे शताब्दञ्चस च तिष्ठति तप्तके। स व्रजेद्रजकीं योनिं काकानां सप्तजन्मसु।५०
महाव्रणी दरिद्रश्च ततः शुद्धो भवेन्नरः। यो हि चर्मात्तहस्तेन देवद्रव्यमुपस्पृशेत्।५१
शतवर्षप्रमाणञ्च चर्मकुण्डे स तिष्ठति। यः शूद्रेणाऽभ्यनुज्ञातो भुङ्क्ते शूद्रान्नमेव च।५२
स च तप्तसुराकुण्डे शताब्दं तिष्ठति द्विजः। ततोभवेच्छूद्रयाजीब्राह्मणः सप्तजन्मसु।५३
शूद्रश्राद्धान्नभोजीचततः शुद्धो भवेद्ध्रुवम्। वाग्दुष्टःकटुकोवाचाताडयेत्स्वामिनंसदा।५४
तीक्ष्णकण्टककुण्डे स तद्भोजी तत्र तिष्ठति। ताडितो यमदूतेन दण्डेन च चतुर्गुणम्।५५

तत उच्चैःश्रवा सप्तजन्मस्वेव ततः शुचिः। विषेणजीवनंहन्तिनिर्दयोयोहि मानवः।५६
विषकुण्डे च तद्भोजी सहस्राब्दञ्च तिष्ठति। ततोभवेन्नृघाती च व्रणी च शतजन्मसु।५७
सप्तजन्मसु कुष्ठीच ततः शुद्धो भवेद्ध्रुवम्। दण्डेन ताडयेद्गां हि वृषञ्च वृषवाहकः।५८
भृत्यद्वारा स्वतन्त्रो वापुण्यक्षेत्रे च भारते। प्रतप्तेतैलकुण्डेऽग्नौ तिष्ठतिस्मचतुर्युगम्।५९
गवां लोमप्रमाणाब्दं वृषो भवति तत्परम्। कुन्तेन हन्ति यो जीवंवह्निलोहेनहेलया।६०
कुन्तकुण्डेवसेत्सोऽपिवर्षाणामयुतं सति। ततःसुयोनिंसम्प्राप्यचोदरेव्याधिसंयुतः।६१
जन्मनैकेन क्लेशेन ततः शुद्धोभवेन्नरः। यो भुङ्क्ते चवृथामांसंमांसलोभीद्विजाधमः।६२
हरेरनैवेद्यभोजी कृमिकुण्डं प्रयाति सः। स्वलोममानवर्षञ्च तद्भोजी तत्र तिष्ठति।६३
ततो भवेन्म्लेच्छजातिस्त्रिजन्मनि ततो द्विजः। ब्राह्मणः शूद्रयाजी च शूद्रश्राद्धान्नभोजकः।६४
शूद्राणां शवदाहीच पूयकुण्डे वसेद् ध्रुवम्। यावल्लोमप्रमाणाब्दं यमदण्डेन सुव्रते।६५
ताडितो यमदूतेन तद्भोजी तत्र तिष्ठति। ततो भारतमागत्य सशूद्रः सप्तजन्मसु।६६
महारोगी दरिद्रश्च बधिरो मूक एव च। कृष्णं पद्मञ्च के यस्य तंसर्पं हन्तियो नरः।६७
स्वलोममानवर्षञ्च सर्पकुण्डं प्रयाति सः। सर्पेण भक्षितः सोऽथ यमदूतेन ताडितः।६८
वसेच्च सर्पविड्भोजीततः सर्पोभवेद् ध्रुवम्। ततोभवेन्मानवश्चस्वल्पायुर्दद्रुसंयुतः ।६९
महाक्लेशेनतन्मृत्युः सर्पेणभक्षिताद्ध्रुवम्। विधिप्रदत्तजीव्यांश्चक्षुद्रजन्तूंश्चहन्तियः।७०
स दंशमशयोः कुण्डे जन्तुमानाब्दमेव च। दिवानिशं भक्षितस्तैरनाहारश्चशब्दवान्।७१
हस्तपादादिबद्धश्च यमदूतेन ताडितः। ततो भवेत्क्षुद्रजन्तुर्जातिश्च यावनी भवेत्।७२
ततोभवेन्मानवश्च सोऽङ्गहीनस्ततः शुचिः। योमूढोमधुमश्नातिहत्वाचमधुमक्षिकाः।७३
स एव गारले कुण्डे जीवमानाब्दकं वसेत्। भक्षितो गरलैर्दग्धो यमदूतेन ताडितः।७४
ततो हिमक्षिकाजातिस्ततः शुद्धोभवेन्नरः। दण्डं करोत्यदण्ड्ये चविप्रेदण्डंकरोतिच।७५
स कुण्डं वज्रदंष्ट्राणां कीटानां याति सत्वरम्। स तल्लोमप्रमाणाब्दं तत्र तिष्ठत्यहर्निशम्।७६
शब्दकृद्भक्षितस्तैस्तु यमदूतेन ताडितः। करोति रोदनं भद्रे हाहाकारं क्षणेक्षणे।७७
पुनः सूकरयोनौच जायते सप्तजन्मसु। त्रिजन्मनि काकयोनौ ततः शुद्धो भवेन्नरः।७८
अर्थलोभेन यो मूढः प्रजादण्डंकरोतिसः। वृश्चिकानाञ्चकुण्डञ्चतल्लोमाब्दंवसेद्ध्रुवम्।७९
ततो वृश्चिकजातिश्च सप्तजन्मसु भारते। ततो नरश्चाङ्गहीनोव्याधिशुद्धोभवेद्ध्रुवम्।८०
ब्राह्मणः शस्त्रधारीयोह्यन्येषांधावकोभवेत्। सन्ध्याहीनश्चयोविप्रोहरिभक्तिविहीनकः।८१
स तिष्ठति स्वलोमाब्दं कुण्डेषुच शरादिषु। विद्धःशरादिभिःशश्वत्ततःशुद्धोभवेन्नरः।८२
कारागारे सान्धकारे प्रणिहन्ति प्रजाश्च यः। प्रमत्तः स्वस्य दोषेण गोलकुण्डं प्रयाति सः।८३
सपङ्कतप्ततोयाक्तं सान्धकारं भयङ्करम्। तीक्ष्णदंष्ट्रैश्च कीटैश्चसंयुक्तंगोलकुण्डकम्।८४
कीटैर्विद्धोवसेत्तत्र प्रजालोमाब्दमेव च। ततोभवेत्प्रजाभृत्यस्ततःशुद्धोभवेत्क्रमात्।८५
सरोवरादुत्थितांश्चनक्रादीन्हन्ति यो नरः। नक्रकण्टकमानाब्दंनक्रकुण्डं प्रयाति सः।८६
ततोनक्रादिजातीयो भवेन्नक्रादिषुध्रुवम्। ततः सद्यो विशुद्धोहिदण्डेनैव पुनः पुनः।८७
वक्षःश्रोणीस्तनास्यं च यः पश्यति परस्त्रियाः। कामेन कामुको यो हि पुण्यक्षेत्रे च भारते।८८
सवसेत्काकतुण्डे च काकैःसञ्चूर्णलोचनः। ततः स्वलोममानाब्दंभवेद्दग्धस्त्रिजन्मनि।८९
स्वर्णस्तेयी चयोमूढोभारतेसुरविप्रयोः। सचमन्थानकुण्डेवैस्वलोमाब्दंवसेद्ध्रुवम्।९०
ताडितो यमदूतेन मन्थानैश्छन्नलोचनः। तद्विड्भोजी च तत्रैवततश्चान्धस्त्रिजन्मनि।९१

सप्तजन्मदरिद्रश्च महाक्रूरश्च पातकी। भारते स्वर्णकारश्च स च स्वर्णवणिक्ततः। ९२
यो भारते ताम्रचौरोलोहचौरश्चसुन्दरि! सचस्वलोममानाब्दंबीजकुण्डंप्रयातिसः। ९३
तत्रैव बीजविड्भोजी बीजैश्च छन्नलोचनः। ताडितो यमदूतेन ततः शुद्धोभवेन्नरः। ९४
भारते देवचौरश्चदेवद्रव्यापहारकः। स दुस्तरे वज्रकुण्डे स्वलोमाब्दं वसेद्ध्रुवम्। ९५
देहदग्धोऽपि तद्वज्रैरनाहारश्च शब्दकृत्। ताडितो यमदूतैश्च ततः शुद्धो भवेन्नरः। ९६
रौप्यगव्यांशुकानां च यश्चौरं सुरविप्रयोः। तप्तपाषाणकुण्डे च स्वलोमाब्दं वसेद् ध्रुवम्। ९७
त्रिजन्मनि च कंसोऽपि श्वेतरूपस्त्रिजन्मनि। जन्मैकं श्वेतचिह्नश्च ततोऽन्ये श्वेतपक्षिणः। ९८
ततो रक्तविकारी च शूली वै मानवोभवेत्। सप्तजन्मसुचाल्पायुस्ततः शुद्धोभवेन्नरः। ९९
रैतं कांस्यमयं पात्रं यो हरेद्देवविप्रयोः। तीक्ष्णपाषाणकुण्डे च स्वलोमाब्दंवसेन्नरः। १००
सभवेदश्वजातिश्च भारते सप्तजन्मसु। ततोऽधिकाङ्गजातिश्च पादरोगीततः शुचिः। १०१
पुंश्चल्यन्नं च यो भुङ्क्ते पुंश्चलीजीव्यजीविनः। स्वलोममानवर्षञ्च लालाकुण्डे वसेद् ध्रुवम्। १०२
ताडितो यमदूतेन तद्भोजी तत्र दुःखितः। ततश्चक्षुः शूलरोगी ततः शुद्धः क्रमेण सः। १०३
म्लेच्छसेवी मसीजीवी यो विप्रो भारते भुवि। वसेत्स्वलोममानाब्दं मसीकुण्डे स दुःखभाक्। १०४
ताडितोयमदूतेन तद्भोजी तत्र तिष्ठति। ततस्त्रिजन्मनि भवेत्कृष्णवर्णः पशुः सति। १०५
त्रिजन्मनिभवेच्छागः कृष्णवर्णस्त्रिजन्मनि। ततः स तालवृक्षश्च ततः शुद्धोभवेन्नरः। १०६
धान्यादिशस्यं ताम्बूलं यो हरेत्सुरविप्रयोः। आसनंचतथातल्पंचूर्णकुण्डेप्रयातिसः। १०७
शताब्दं तत्र निवसेद्यमदूतेन ताडितः। ततो भवेन्मेषजातिः कुक्कुटश्च त्रिजन्मनि। १०८
ततोभवेद्वानरश्च कासव्याधियुतो भुवि। वंशहीनोदरिद्रश्च अल्पायुश्च ततः शुचिः। १०९
करोतिचक्रं विप्राणां हृत्वा द्रव्यञ्च योजनः। सवसेच्चक्रकुण्डेचशताब्दंदण्डताडितः। ११०
ततो भवेन्मानवश्च तैलकारस्त्रिजन्मनि। व्याधियुक्तो भवेद्रोगी वंशहीनस्ततः शुचि। १११
गोधनेषु च विप्रेषु करोति वक्रतां पुमान्। प्रयाति वक्रकुण्डं सतिष्ठेद्युगशत सति। ११२
ततो भवेत्स वक्राङ्गो हीनाङ्गः सप्तजन्मनि। दरिद्रोवंशहीनश्च भार्याहीनस्ततः शुचिः। ११३
ततो भवेद्गृध्रजन्मा त्रिजन्मनि च सूकरः। त्रिजन्मनि बिडालश्च मयूरश्चत्रिजन्मनि। ११४
निषिद्धं कूर्ममांसञ्च ब्राह्मणोयोहिभक्षति। कूर्मकुण्डेवसेत्सोऽपिशाताब्दंकूर्मभक्षितः। ११५
ततोभवेत्कूर्मजन्मा त्रिजन्मनि च सूकरः। त्रिजन्मनि बिडालश्च मयूरश्च ततः शुचिः। ११६
घृतं तैलादिकं चैव यो हरेत्सुरविप्रयोः। सयातिज्वालाकुण्डञ्चभस्मकुण्डञ्चपातकी। ११७
तत्र स्थित्वा शताब्दञ्च स भवेत्तैलपाचितः। सप्तजन्मनिमत्स्यश्चमूषकश्चततः शुचिः। ११८
सुगन्धि तैलं धात्रीं वा गन्धद्रव्यान्यदेव वा। भारते पुण्यवर्षेच यो हरेत्सुरविप्रयोः। ११९
स वसेद्दग्धकुण्डे च भवेद्दग्धो दिवानिशम्। स्वलोममानवर्षञ्चततोदुर्गन्धिकोभवेत्। १२०
दुर्गन्धिकः सप्तजन्म मृगनाभिस्त्रिजन्मनि। सप्तजन्मसु मन्थानस्ततोहिमानवोभवेत्। १२१
बलेनैव च्छलेनैव हिंसारूपेण वा सति! बलिष्ठश्च हरेद्भूमिं भारते परपैतृकीम्। १२२
स वसेत्तप्तसूचिं च भवेत्तापीदिवानिशम्। तप्ततैलेयथा जीवो दग्धोभवतिसन्ततम्। १२३
भस्मसान्न भवत्येव भोगे देही न नश्यति। सप्तमन्वन्तरम्पापी सन्तप्तस्तत्र तिष्ठति। १२४
शब्दं करोत्यनाहारो यमदूतेन ताडितः। षष्टिवर्षसहस्राणि विट्कृमिश्च भवेत्ततः। १२५
ततो भवेद्भूमिहीनो दरिद्रश्च ततः शुचि। ततः स्वयोनिंसम्प्राप्य शुभकर्माचरेत्पुनः। १२६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नानाकर्मविपाकफलकथनंनाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥३३॥

* चतुस्त्रिंशोऽध्यायः *

नानाकर्मविपाकफलवर्णनम्

यमधर्म उवाच

छिनत्तिजीवं खड्गेन दयाहीनः सुदारुणः। नरघातीं हन्ति नरमर्थलोभेन भारते।१
असिपत्रेवसेत्सोऽपियावदिन्द्राश्चतुर्दश । तेषु यो ब्राह्मणान्हन्तिशतमन्वन्तरंवसेत्।२
छिन्नाङ्ग सम्वसेत्सोऽपि खड्गधारेण सन्ततम्। अनाहारः शब्दमुच्चैर्यमदूतेन ताडितः।३
मन्थानः शतजन्मानि शतजन्मानिसूकरः। कुक्कुटः सप्तजन्मानि सृगालः सप्तजन्मसु।४
व्याघ्रश्च सप्तजन्मानि वृकश्चैव त्रिजन्मसु। सप्तजन्मसु मण्डूको ममदूतेन ताडितः।५
स भवेद् भारते वर्षे महिषश्च ततः शुचिः। ग्रामाणां नगराणां वा दहनं यः करोतिच।६
क्षुरधारे वसेत्सोऽपि च्छिन्नाङ्गस्त्रियुगं सति!। ततः प्रेतो भवेत्सद्यो वह्निवक्त्रो भ्रमन्महीम्।७
सप्तजन्मामेध्यभोजी कपोतः सप्तजन्मसु। ततो भवेन्महाशूली मानवः सप्तजन्मनि।८
सप्तजन्म गलत्कुष्ठी ततः शुद्धो भवेन्नरः। परकर्णे मुखं दत्त्वा परनिन्दां करोतियः।९
परदोषे महाश्लाघी देवब्राह्मणनिन्दकः। सूचीमुखेवसेत्सोऽपिसूचीविद्धोयुगत्रयम्।१०
ततो भवेद् वृश्चिकश्च सर्पश्च सप्तजन्मसु। वज्रकीटस्सप्तजन्मभस्मकीटस्ततः परम्।११
ततो भवेन्मानवश्च महाव्याधिस्ततः शुचिः। गृहिणां हि गृहं भित्त्वा वस्तुस्तेयं करोति यः।१२
गाश्च च्छागांश्च मेषांश्च याति गोकामुखे च सः। ताडितो यमदूतेन वसेत्तत्र युगत्रयम्।१३
ततोभवेत्सप्तजन्मगोजातिर्व्याधिसंयुतः। त्रिजन्मनिमेषजातिश्छागजातिस्त्रिजन्मनि।१४
ततो भवेन्मानवश्च नित्यरोगी दरिद्रकः। भार्याहीनो बन्धुहीनः सन्तापीचततः शुचिः।१५
सामान्यद्रव्यचौरश्च याति नक्रमुखञ्च सः। ताडितोयमदूतेत वसेत्तत्राब्दकत्रयम्।१६
ततो भवेत्सप्तजन्म गोपतिर्व्याधिसंयुतः। ततो भवेन्मानवश्चमहारोगी ततः शुचिः।१७
हन्ति गाश्च गजांश्चैव तुरगांश्च नगांस्तथा। स यातिगजदंशञ्चमहापापी युगत्रयम्।१८
ताडितो यमदूतेन नागदन्तेन सन्ततम्। स भवेद्गजजातिश्च तुरगश्च त्रिजन्मनि।१९
गोजातिर्म्लेच्छजातिश्च ततः शुद्धो भवेन्नरः। जलं पिबन्तीं तृषितां गां वारयति यः पुमान्।२०
नरकं गोमुखाकारं कृमितप्तोदकान्वितम्। तत्र तिष्ठति सन्तप्तो यावन्मन्वन्तरावधि।२१
ततो नरोऽपि गोहीनो महारोगीदरिद्रकः। सप्तजन्मान्त्यजातिश्चततः शुद्धो भवेन्नरः।२२
गोहत्यां ब्रह्महत्याञ्च करोति ह्यातिदेशिकीम्। यो हि गच्छत्यगम्याञ्च यः स्त्रीहत्यां करोति च।२३
भिक्षुहत्यां महापापी भ्रूणहत्याञ्चभारते। कुम्भीपाकेवसेत्सोऽपियावदिन्द्राश्चतुर्दश।२४
ताडितो यमदूतेन चूर्ण्यमानश्च सन्ततम्। क्षणं पतति वह्नौव क्षणंपततिकण्टके।२५
क्षणं पतेत्तप्ततैले तप्तो येन क्षणं क्षणम्। क्षणञ्च तप्तलोहेच क्षणञ्च तप्तताम्रके।२६
गृध्रो जन्मसहस्राणि शतजन्मानि सूकरः। काकश्च सप्तजन्मानि सर्पश्च सप्तजन्मसु।२७
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्ठायां जायतेकृमिः। नानाजन्मसु स वृषस्ततः कुष्ठी दरिद्रकः।२८

सावित्र्युवाच

विप्रहत्या च गोहत्याकिम्विधा चाऽऽतिदेशिकी ।
का वा नृणामगम्या च को वा सन्ध्याविहीनकः ।।२९।।

अदीक्षितः पुमान्कोवाकोवातीर्थप्रतिग्रही। द्विजः कोवाग्रामयाजीकोवाविप्रोऽथदेवलः।३०
शूद्राणां सूपकारश्च प्रमत्तो वृषलीपतिः। एतेषां लक्षणं सर्वं वद वेदविदाम्वर!।३१

धर्मराज उवाच

श्रीकृष्णे च तदर्चायामन्येषां प्रकृतौ सति। शिवे च शिवलिङ्गेचसूर्ये सूर्यमणौतथा।३२
गणेशेवाऽथ दुर्गायामेवं सर्वत्र सुन्दरि!। यः करोति भेदवुद्धिं व्रह्महत्यां लभेत्तु सः।३३
स्वगुरौ स्वेष्टदेवे च जन्मदातरि मातरि। करोति भेदबुद्धिंयो ब्रह्महत्यां लभेत्तु सः।३४
वैष्णवेषु च भक्तेषु ब्राह्मणेष्वितरेषु च। करोति भेदबुद्धिं यो ब्रह्महत्यां लभेत्तु सः।३५
विप्रपादोदके चैव शालग्रामोदके तथा। करोति भेदवुद्धिं यो ब्रह्महत्यां लभेत्तु सः।३६
शिवनैवेद्यके चैव हरिनैवेद्यके तथा। करोति भेदवुद्धिं यो ब्रह्महत्यां लभेत्तु सः।३७
सर्वेश्वरेश्वरेकृष्णे सर्वकारणकारणे। सर्वाद्ये सर्वदेवानां सेव्येसर्वान्तरात्मनि।३८
माययाऽनेकरूपे वाऽप्येक एवहिनिर्गुणे। करोतीशेन भेदं यो व्रह्महत्यां लभेत्तु सः।३६
शक्तिभक्ते द्वेपवुद्धिं शक्तिशास्त्रे तथैव च। द्वेषं यः कुरुते मर्त्यो व्रह्महत्यांलभेत्तु सः।४०
पितृदेवार्चनं यो वा त्यजेद्वेदनिरूपितम्। यः करोतिनिपिद्धं च व्रह्महत्यां लभेत्तुसः।४१
यो निन्दति हृषीकेशं तन्मन्त्रोपासकंतथा। पवित्राणां पवित्रञ्चज्ञानानन्दंसनातनम्।४२
प्रधानंवैष्णवानाञ्चदेवानांसेव्यमीश्वरम्। ये नार्चयन्ति निन्दन्ति व्रह्महत्यांलभन्तिते।४३
ये निन्दन्ति महादेवीं कारणव्रह्मरूपिणीम्। सर्वशक्तिस्वरूपाञ्च प्रकृतिं सर्वमातरम्।४४
सर्वदेवस्वरूपाञ्च सर्वेषां वन्दितां सदा। सर्वकारणरूपाञ्च व्रह्महत्यां लभन्ति ते।४५
कृष्णजन्माष्टमीं रामनवमीञ्चसुपुण्यदाम्। शिवरात्रिं तथा चैकादशीं वारे रवेस्तथा।४६
पञ्चपर्वाणिपुण्यानियेनकुर्वन्तिमानवाः। लभन्ति व्रह्महत्यांते चाण्डालाधिकपापिनः।४७
अम्वुवाच्यां भूखननं जलशौचादिकञ्च ये। कुर्वन्ति भारते वर्षे ब्रह्महत्यां लभन्तिते।४८
गुरुञ्च मातरं तातं साध्वीं भार्यां सुतं सुताम्। अनिन्द्यां यो न पुष्णाति व्रह्महत्यां लभेत्तु सः।४६
विवाहोयस्यनभवेन्न पश्यति सुतं तु यः। हरिभक्तिविहीनो यो ब्रह्महत्यांलभेत्तुसः।५०
हरेनैवेद्यभोजी नित्यं विष्णुं न पूजयेत्। पुण्यं पार्थिवलिङ्गञ्चब्रह्महाऽसौप्रकीर्तितः।५१
गोप्रहारं प्रकुर्वन्तं दृष्ट्वा यो न निवारयेत्। याति गोविप्रयोर्मध्ये गोहत्यांतुलभेत्तुसः।५२
दण्डैर्गास्ताडयेन्मूढो यो विप्रो वृषवाहनः। दिने दिने गोवधञ्च लभतेनात्र संशयः।५३
ददाति गोभ्य उच्छिष्टंभोजयेद्वृषवाहकम्। भुनक्तिवृषवाहान्नंसगोहत्यांलभेद्ध्रुवम्।५४
वृषलीपतिं याजयेद्यो भुङ्क्तेऽन्नंतस्ययोनरः। गोहत्याशतकंसोऽपिलभतेनात्रसंशयः।५५
पादं ददातिवह्नौयोगाश्चपादेनताडयेत्। गेहंविशेदधौताङ्घ्रिः स्नात्वागोवधमाप्नुयात्।५६
यो भुङ्क्ते स्निग्धपादेन शेते स्निग्धाङ्घ्रिरेवच। सूर्योदये च यो भुङ्क्ते स गोहत्यां ध्रुवम्।५७
अवीरान्नञ्च यो भुङ्क्ते योनिजीव्यस्य च द्विज। यस्त्रिसन्ध्याविहीनश्च गोहत्यां लभते च सः।५८
स्वभर्तरि च देवेवाभेदबुद्धिंकरोतिया। कटूक्त्याताडयेत्कान्तंसागोहत्यांलभेद्ध्रुवम्।५६
गोमार्गवर्जनं कृत्वा ददाति सस्यमेव वा। तडागेवा तु दुर्गे वासगोहत्यां लभेद्ध्रुवम्।६०
प्रायश्चित्ते गोवधस्य यः करोति व्यतिक्रमम्। पुत्रलोभादथाज्ञानात्स गोहत्यां लभेद्ध्रुवम्।६१
राजके दैवके यत्नाद्गोस्वामी गां न रक्षति। दुःखंददातियोमूढोगोहत्यांसलभेद्ध्रुवम्।६२
प्राणिनो लङ्घयेद्यो हि देवार्चामनलञ्जलम्। नैवेद्यं पुष्पमन्नञ्च गोहत्यांसलभेद्ध्रुवम्।६३
शश्वन्नास्तीति योवादीमिथ्यावादीप्रतारकः। देवद्वेषीगुरुद्वेषीसगोहत्यांलभेद्ध्रुवम्।६४
देवताप्रतिमां दृष्ट्वा गुरुं वा ब्राह्मणं सति। सम्भ्रमान्ननमेद्यो हिसगोहत्यांलभेद्ध्रुवम्।६५
न ददात्याशिषं कोपात्प्रणताय च यो द्विजः। विद्यार्थिने च विद्यां च स गोहत्यां लभेद् ध्रुवम्।६६
गोहत्याविप्रहत्याचकथिताचाऽऽतिदेशिकी। गम्यांस्त्रियंनृणामेवनिबोधकथयामिते।६७

स्वस्त्री गम्या चसर्वेषामितिवेदानुशासनम्। अगम्याचतदन्यायाचेतिवेदविदोविदुः ।६८
सामान्यं कथितं सर्वं विशेषंशृणुसुन्दरि। अत्यगम्याहियायाश्चनिबोधकथयामिताः।६९
शूद्राणां विप्रपत्नीच विप्राणां शूद्रकामिनी। अत्यगम्या चनिन्द्याचलोकेवेदेपतिव्रते।७०
शूद्रश्च ब्राह्मणीं गत्वा ब्रह्महत्याशतं लभेत्। तत्समं ब्राह्मणी चापि कुम्भीपाकं लभेद् ध्रुवम्।७१
शूद्राणां विप्रपत्नी च विप्राणां शूद्रकामिनी। यदि शूद्रां व्रजेद्विप्रोवृषलीपतिरेव सः।७२
स भ्रष्टो विप्रजातेश्च चाण्डालात्सोऽधमः स्मृतः। विष्ठासमश्च तत्पिण्डो मूत्रं तस्य च तर्पणम्।७३
न पितृणां सुराणां च तद्दत्तमुपतिष्ठति। कोटिजन्मार्जितं पुण्यं तस्यार्चा तपसाऽर्जितम्।७४
द्विजस्य वृषलीलोभान्नश्यत्येव न संशयः। ब्राह्मणश्चसुरापीतिर्विड्भोजीवृषलीपतिः।७५
तप्तमुद्रादग्धदेहस्तप्तशूलाङ्कितस्तथा । हरिवासरभोजी च कुम्भीपाकं व्रजेद्द्विजः।७६
गुरुपत्नीं राजपत्नीं सपत्नीं मातरं ध्रुवम्। सुतां पुत्रवधूंश्वश्रूं सगर्भांभगिनीं सतीम्।७७
सोदरभ्रातृजायाञ्चमातुलानींपितुः प्रसूम्। मातुः प्रसूं तत्स्वसारंभगिनींभ्रातृकन्यकाम्।७८
शिष्यां शिष्यस्य पत्नीं च भागिनेयस्य कामिनीम्। भ्रातुः पुत्रप्रियाञ्चैवाऽत्यगम्या आह पद्मजः।७९
एताः कामेन कान्ता यो व्रजेद्वै मानवाधमः। स मातृगामीवेदेषु ब्रह्महत्याशतं व्रजेत्।८०
अकर्मार्होप्यसंस्पृश्यो लोकेवेदेचनिन्दितः। स यातिकुम्भीपाकेचमहापापीसुदुष्करे।८१
करोत्यशुद्धां सन्ध्यां वा न सन्ध्यां वा करोति च। त्रिसन्ध्यं वर्जयेद्यो वा सन्ध्याहीनश्च स द्विजः।८२
वैष्णवञ्च तथा शैवं शाक्तं सौरञ्च गाणपम्। योऽहङ्कारान्नगृह्णाति मन्त्रं सोऽदीक्षितः स्मृतः।८३
प्रवाहमवधिं कृत्वा यावद्धस्तचतुष्टयम्। तत्रनारायणः स्वामी गङ्गागर्भान्तरेवसेत्।८४
तत्र नारायणक्षेत्रे मृतो याति हरेः पदम्। वाराणस्यां बदर्याञ्च गङ्गासागरसङ्गमे।८५
पुष्करे हरिहरक्षेत्रे प्रभासेकामरूस्थले। हरिद्वारे च केदारे तथामातृपुरेऽपि च।८६
सरस्वतीनदीतीरे पुण्ये वृन्दावने वने। गोदावर्याञ्चकौशिक्यांत्रिवेण्याञ्चहिमालये।८७
एषुतीर्थेषु यो दानं प्रतिगृह्णाति कामतः। सचतीर्थप्रतिग्राही कुम्भीपाकेप्रयाति सः।८८
शूद्रसेवी शूद्रयाजी ग्रामयाजीति कीर्तितः। तथादेवोपजीवीच देवलः परिकीर्तितः।८९
शूद्रपाकोपजीवी यः सूपकार इतिस्मृतः। सन्ध्यापूजनहीनश्च प्रमत्तः पतितः स्मृतः।९०
उक्तं सर्वं मयाभद्रे! लक्षणं वृषलीपतेः। एते महापातकिनः कुम्भीपाके प्रयान्ति ते।९१
कुण्डान्यन्यानि ये यान्ति निबोध कथयामि ते।।९२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारद-सम्वादे सावित्र्युपाख्याने नानाकर्मविपाकफलवर्णनंनाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ।।३४।।

* पञ्चत्रिंशोऽध्यायः *

अगम्यागमनादिनानाकर्मविपाकफलवर्णनम्

धर्मराज उवाच

देवसेवां विना साध्वि! न भवेत्कर्मकृन्तनम्। शुद्धकर्म शुद्धबीजं नरकश्च कुकर्मणा।१
पुंश्चल्यन्नञ्च यो भुङ्क्तेयोऽस्यां गच्छेत्पतिव्रते!। स द्विजः कालसूत्रञ्च मृतो याति सुदुर्गमम्।२
शतवर्षं कालसूत्रे स्थिरीभूतो भवेद् ध्रुवम्। तत्रजन्मनिरोगीचततः शुद्धो भवेद्द्विजः।३
पतिव्रता चैकपतौ द्वितीये कुलटा स्मृता। तृतीये धर्षिणीज्ञेया चतुर्थेपुंश्चलीत्यपि।४
वेश्या च पञ्चमे षष्ठे पुङ्गी चसप्तमेऽष्टमे। ततऊर्द्ध्वंमहावेश्यासाऽस्पृश्यासर्वजातिषु।५
यो द्विजः कुलटां गच्छेद्धर्षिणीं पुंश्चलीमपि। पुङ्गीं वेश्यां महावेश्यां मत्स्योदे याति निश्चितम्।६

शताब्दं कुलटागामी धृष्टागामी चतुर्गुणम्। षड्गुणं पुंश्चलीगामीं वेश्यागामी गुणाष्टकम्।७
पुङ्गीगामी दशगुणं वसेत्तत्र न संशयः। महावेश्याकामुकश्च ततो दशगुणं वसेत्।८
तत्रैव यातनां भुङ्क्ते यमदूतेन ताडितः। तित्तिरिः कुलटागामीधृष्ठागामी चवायसः।९
कोकिलः पुंश्चलीगामी वेश्यागामी वृकः स्मृतः। पुङ्गीगामी सूकरश्च सप्तजन्मनि भारते।१०
महावेश्याप्रगामी च जायते शाल्मलीतरूः। यो भुङ्क्ते ज्ञानहीनश्चग्रहणेचन्द्रसूर्ययोः।११
अरुन्तुदं स यात्येवाप्यन्नमानाब्दमेव च। ततो भवेन्मानवश्चाप्युदरे रोगपीडितः।१२
गुल्मयुक्तश्च काणश्च दन्तहीनस्ततः शुचिः। वाक्प्रदत्तां स्वकन्याञ्च योऽन्यस्मै प्रददाति च।१३
स वसेत्पांसुकुण्डे च तद्भोजी शतवत्सरम्। तद्द्रव्यहारी यः साध्वि पांसुवेष्टे शताब्दकम्।१४
निवसेच्छरशय्यायां मम दूतेन ताडितः। भक्त्या न पूजयेद्विप्रः शिवलिङ्गञ्चपार्थिवम्।१५
स यातिशूलिनः पापाच्छूलप्रोतं सुदारुणम्। स्थित्वाशताब्दंतत्रैवश्वापदःसप्तजन्मसु ।१६
ततो भवेद्देवलश्च सप्तजन्म ततः शुचिः। करोति कुण्ठितं विप्रं यद्भिया कम्पतेद्विजः।१७
प्रकम्पेन वसेत्सोऽपि विप्रलोमाब्दमेव च। प्रकोपवदनाकोपात्स्वामिनंयाचपश्यति ।१८
कटूक्तिं तं प्रवदति सोल्मुकं सम्प्रयाति हि। उल्कांददातितद्वक्त्रे सततं मम किङ्करः।१९
दण्डेन ताण्डयेन्मूर्ध्नि तल्लोमाब्दप्रमाणकम्। ततोभवेन्मानवी च विधवासप्तजन्मसु।२०
साभुक्त्वाचैववैधव्यंव्याधियुक्तात्ततः शुचिः। याब्राह्मणीशूद्रभोग्याचान्धकूपेप्रयातिसा।२१
तप्तशौदोदके ध्वान्ते तदाहारी दिवानिशम्। निवसेदतिसन्तप्ता मम दूतेन ताडिता।२२
शौचोदके निमग्ना सा यावदिन्द्राश्चतुर्दश। काकीजन्मसहस्राणि शतजन्मानिसूकरी।२३
शृगाली शतजन्मानि शतजन्मानि कुक्कुटी। पारावती सप्तजन्म वानरी सप्तजन्मसु।२४
ततोभवेत्सा चाण्डालीसर्वभोग्या च भारते। ततो भवेच्चरजकीयक्ष्मग्रस्ताचपुंश्चली।२५
ततः कुष्ठयुता तैलकारी शुद्धा भवेत्ततः। निवसेद्वेधने वेश्या पुङ्गी च दण्डताडने।२६
जलरन्ध्रे वसेद्वेश्या कुलटा देहचूर्णके। स्वैरिणी दलने चैव धृष्टा च शोषणे तथा।२७
निवसेद्यातनायुक्ता मम दूतेन ताडिता। विण्मूत्रभक्षा सततं यावन्मन्वन्तरं सति।२८
ततो भवेद्विट्कृमिश्च लक्षवर्षं ततः शुचिः। ब्राह्मणो ब्राह्मणीं गच्छेत्क्षत्रियां वाऽपि क्षत्रियः।२९
वैश्यो वैश्याञ्च शूद्रां वा शूद्रश्चाऽपि व्रजेद्यदि। सवर्णपरदारैश्च कषायंयान्तितेजनाः।३०
भुक्त्वा कषायतप्तोदं निवसेद्वा दशाब्दकम्। ततोविप्रोभवेच्छुद्धस्ततोवैक्षत्रियादयः ।३१
योषितश्चापि शुद्ध्यन्तीत्येवमाह पितामहः। क्षत्रियो ब्राह्मणीं गच्छेद्वैश्यो वाऽपि पतिव्रते!।३२
मातृगामी भवेत्सोऽपि शूर्पे चनरकेवसेत्। सूर्पाकारैश्चकृमिभिर्ब्राह्मण्यासहभक्षितः।३३
प्रतप्तमूत्रभोजी च मम दूतेन ताडितः। तत्रैव यातनां भुङ्क्ते यावदिन्द्राश्चतुर्दश।३४
सप्तजन्म वराहश्च छागलश्च ततः शुचिः। करे धृत्वा तु तुलसीं प्रतिज्ञांयोनपालयेत्।३५
मिथ्या वाशपथं कुर्यात्सचज्वालामुखंव्रजेत्। गङ्गातोयंकरेकृत्वाप्रतिज्ञांयोनपालयेत् ।३६
शिलां वा देवप्रतिमांसचज्वालामुखंव्रजेत्। दत्त्वादक्षिणहस्तञ्चप्रतिज्ञांयोनपालयेत्।३७
स्थित्वा देवगृहे वापि स च ज्वालामुखं व्रजेत्। अस्पृश्य ब्राह्मणं गाञ्च ज्वालावह्निं व्रजेद् द्विजः।३८
न पालयेत्प्रतिज्ञाञ्च स च ज्वालामुखं व्रजेत्। मित्रद्रोहीकृतघ्नश्चयश्चविश्वासघातकः ।३९
मिथ्यासाक्ष्यप्रदश्चैव स च ज्वालामुखं व्रजेत्। एतेतत्र वसन्त्येवयावदिन्द्राश्चतुर्दश।४०
तथाङ्गारप्रदग्धाश्च ममदूतेन ताडिताः। चाण्डालस्तुलसीं स्पृष्ट्वा सप्तजन्मततः शुचिः।४१
म्लेच्छोगङ्गाजलस्पर्शीपञ्चजन्मततः शुचिः। शिलास्पर्शीविट्कृमिश्चसप्तजन्मसुसुन्दरि।४२
अर्चास्पर्शी ब्रह्मकृमिः सप्तजन्म ततः शुचिः। पक्षहस्तप्रदाता च सर्पश्च सप्तजन्मसु।४३

ततो भवेद्ब्रह्महीनो मानवश्च ततः शुचिः। मिथ्यावादी देवगृहे देवलः सप्तजन्मसु।४४
विप्रादिस्पर्शकारी चव्याघ्रजातिर्भवेद् ध्रुवम्। ततोभवेच्चमूकः सवधिरश्चत्रिजन्मनि।४५
भार्याहीनोबन्धुहीनोवंशहीनस्ततः शुचिः। मित्रद्रोहीनकुलः कृतघ्नश्चाऽपिगण्डकः।४६
विश्वासघाती व्याघ्रश्च सप्तजन्मसुभारते। मिथ्यासाक्षीचवक्तव्यंमण्डूकः सप्तजन्मसु।४७
पूर्वान्सप्तपरान्सप्त पुरुषान्हन्ति चात्मनः। नित्यक्रियाविहीनश्चजडत्वेनयुतो द्विजः।४८
यस्याऽनास्था वेदवाक्येमन्दंहसतिसन्ततम्। व्रतोपवासहीनश्चसद्वाक्यपरनिन्दकः ।४९
धूम्रान्धे च वसेत्सोऽपिशताब्दंधूम्रभक्षकः। जलजन्तुर्भवेत्सोऽपिशतजन्मक्रमेणच ।५०
ततो नानाप्रकारश्च मत्स्यजातिस्ततः शुचिः। यः करोत्युपहासञ्चदेवब्राह्मणयोर्धने।५१
पातयित्वा स पुरुषान्दशपूर्वान्दशापरान्। सोऽयं याति च धूम्रान्धं धूमध्वान्तसमन्वितम्।५२
धूम्रक्लिष्टो धूम्रभोजी वसेत्तत्र चतुर्युगम्। ततो मूषकजातिश्च सप्तजन्मसु भारते।५३
ततो नानाविधाः पक्षिजातयः कृमिजातिभिः। ततोनानाविधावृक्षाः पशवश्चततोनरः।५४
विप्रोदैवज्ञजीवीचवैद्यजीवीचिकित्सकः। लाक्षालोहादिव्यापारीरसादिविक्रयीचयः।५५
स याति नागवेष्टञ्च नागैर्वेष्टितमेवच। वसेत्स लोममानाब्दं तत्रैव नागपाशितः।५६
ततो नानाविधाः पक्षिजातयश्च ततो नरः। ततो भवेत्स गणको वैद्यश्च सप्तजन्मसु।५७
गोपश्च कर्मकारश्च रङ्गकारस्ततः शुचिः। प्रसिद्धानि चकुण्डानिकथितानिपतिव्रते।५८
अन्यानिचाप्रसिद्धानिक्षुद्राणिसन्तितत्रवै। सन्तिपातकिनस्तेषुस्वकर्मफलभोगिनः।५९
भ्रमन्ति नानायोनिञ्च किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।६०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नानाकर्मविपाकफलकथनं नाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः।।३५।।

* षट्त्रिंशोऽध्यायः *

सकर्मक्लेशनिस्तारोपायभूतपञ्चदेवपूजावर्णनम्

सावित्र्युवाच

धर्मराज! महाभाग! वेदवेदाङ्गपारग!। नानापुराणेतिहासे यत्सारं तत्प्रदर्शय।१
सर्वेषु सारभूतं यत्सर्वेष्टं सर्वसम्मतम्। कर्मच्छेदबीजरूपं प्रशस्तं सुखदं नृणाम्।२
सर्वप्रदं च सर्वेषां सर्वमङ्गलकारणम्। भयं दुःखं न पश्यन्तियेन वै सर्वमानवाः।३
कुण्डानि ते न पश्यन्ति तेषुनैव पतन्ति च। न भवेद्येनजन्मादितत्कर्मवदसाम्प्रतम्।४
किमाकाराणि कुण्डानि तानि वा निर्मितानिच। केचकेनैवरूपेणतत्रतिष्ठन्तिपापिनः ।५
स्वदेहे भस्मसाद्भूते यातिलोकान्तरं नरः। केन देहेन वा भोगं करोतिचशुभाशुभम्।६
सुचिरं क्लेशभोगेन कथं देहो न नश्यति। देहो वा किं विधो ब्रह्मंस्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि।७

श्रीनारायण उवाच

सावित्रीवचनं श्रुत्वा धर्मराजोहरिं स्मरन्। कथांकथितुमारेभेकर्मबन्धनिकृन्तनीम् ।८

धर्मराज उवाच

वत्से! चतुर्षु वेदेषु धर्मेषु संहितासु च। पुराणेष्वितिहासेषु पाञ्चरात्रादिकेषु च।९
अन्येषु धर्मशास्त्रेषु वेदाङ्गेषु च सुव्रते!। सर्वेष्टं सारभूतञ्च पञ्चदेवानुसेवनम्।१०
जन्ममृत्युजराव्याधिशोकसन्तापनाशनम्। सर्वमङ्गलरूपञ्च परमानन्दकारणम्।११
कारणं सर्वसिद्धीनां नरकार्णवतारणम्। भक्तिवृक्षाङ्कुरकरं कर्मवृक्षनिकृन्तनम्।१२
विमोक्षसोपानमिदमविनाशपदं स्मृतम्। सालोक्यसार्ष्टिसारूप्यसामीप्यादिप्रदं शुभम्।१३

कुण्डानि यमदूतैश्च रक्षितानि सदा शुभे! । नहिपश्यन्तिस्वप्नेचपञ्चदेवार्चका नराः ।१४
देवीभक्तिविहीनायेतेपश्यन्ति ममालयम् । यान्तिये हरितीर्थम्वाश्रयन्तिहरिवासरम् ।१५
प्रणमन्ति हरिं नित्यं हर्यर्चां कलयन्ति च । नयान्तितेऽपिघोरांचममसंयमिनींपुरीम् ।१६
त्रिसन्धिपूताविप्राश्च शुद्धाचारसमन्विताः । निवृत्तिं नैव लप्स्यन्ति देवीसेवां विना नराः ।१७
स्वधर्मनिरताचाराः स्वधर्मनिरतास्तथा । गच्छन्तो मृत्युलोकञ्चदुर्दर्शाममकिङ्कराः ।१८
भीताः शिवोपासकेभ्योवैनतेयादिवोरगाः । स्वदूतंपाशहस्तंचगच्छन्तंवारयाम्यहम् ।१६
यास्यन्ति ते च सर्वत्र हरिदासाश्रयं विना । कृष्णमन्त्रोपासकाच्चवैनतेयादिवोरगाः ।२०
देवीमन्त्रोपासकानां नाम्नाञ्चैव निकृन्तनम् । करोतिनखलेखन्याचित्रगुप्तश्चभीतवत् ।२१
मधुपर्कादिकं तेषां कुरुते च पुनः पुनः । विलङ्घ्यब्रह्मलोकञ्चलोकंगच्छन्तिते सति ।२२
दुरितानि च नश्यन्ति येषां संस्पर्शमात्रतः । ते महाभाग्यवन्तोहिसहस्रकुलपावनाः ।२३
यथा च प्रज्वलद्वह्नौ शुष्काणि च तृणानि च । प्राप्नोति मोहः सम्मोहं तांश्च दृष्ट्वा च भीतवत् ।२४
कामश्च कामिनं यातिलोभक्रोधौततः सति । मृत्युः प्रलीयतेरोगोजराशोकोभयंतथा ।२५
कालः शुभाशुभं कर्म हर्षोभोगस्तथैव च । ये येनयान्ति तांपीडां कथितास्तेमयासति ।२६
श्रृणुदेहविवरणं कथयामि यथागमम् । पृथिवीवायुराकाशं तेजस्तोयमितिस्फुटम् ।२७
देहिनां देहवीजं च स्रष्टृसृष्टिविधौपरम् । पृथिव्यादिपञ्चभूतैर्योदेहानिर्मितोभवेत् ।२८
स कृत्रिमो नश्वरश्च भस्मसाच्च भवेदिह । बद्धोऽङ्गुष्ठप्रमाणश्चयोजीवः पुरुषः कृतः ।२६
विभर्ति सूक्ष्मं देहं तं तद्रूपंभोगहेतवे । स देहो न भवेद्भस्म ज्वलदग्नौ ममालये ।३०
जलेन नष्टो देही वा प्रहारे सुचिरंकृते । न शस्त्रेण नवाऽस्त्रेण सुतीक्ष्णकण्टके तथा ।३१
तप्तद्रवे तप्तलोहे तप्तपाषाण एव च । प्रतप्तप्रतिमाश्लेषे यत्पूर्वपतनेऽपि च ।३२
न दग्धो न च भग्नः सभुङ्क्ते सन्तापमेव च । कथितोदेहवृत्तान्तः कारणञ्चयथागमम् ।३३
कुण्डानां लक्षणं सर्वं वोधाय कथयामि ते ।।३४।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारद-सम्वादे देवपूजनात्सर्वारिष्टनिवृत्तिवर्णनंनाम षट्त्रिंशोऽध्यायः ।।३६।।

* सप्तत्रिंशोऽध्यायः *

कुण्डानाम्वर्णनम्

धर्मराज उवाच

पूर्णेन्दुमण्डलाकारं सर्वं कुण्डञ्चवर्तुलम् । निम्नं पाषाणभेदैश्च पाचितम्बहुभिः सति । १
न नश्वरं चाऽऽप्रलयं निर्मितं चेश्वरेच्छया । क्लेशदं पातकानाञ्च नानारूपं तदालयम् । २
ज्वलदङ्गाररूपञ्च शतहस्तशिखान्वितम् । परितः क्रोशमानञ्च वह्निकुण्डं प्रकीर्तितम् । ३
महाशब्दं प्रकुर्वद्भिः पापिभिः परिपूरितम् । रक्षितं मम दूतैश्चताडितैश्चापि सन्ततम् । ४
प्रतप्तोदकपूर्णञ्च हिंस्रजन्तुसमन्वितम् । महाघोरं काकुशब्दं प्रहारेण दृढेन च । ५
क्रोशार्धमानं तद्दूतैस्ताडितैर्मम पार्षदैः । तप्तक्षारोदकैः पूर्णं पुनः काकैश्चसङ्कुलम् । ६
सङ्कुलं पापिभिश्चैव क्रोशमानम्भयानकम् । त्राहीति शब्दं कुर्वद्भिर्ममदूतैश्च ताडितैः ।७
प्रचलद्भिरनाहारैः शुष्ककण्ठोष्ठतालुकैः । विड्भिरेव कृतम्पूर्णं क्रोशमानञ्चकुत्सितम् । ८
अतिदुर्गन्धिसंसक्तं व्याप्तं पापिभिरन्वहम् । ताडितैर्मम दूतैश्च तदाहारैः सुदारुणैः । ६
रक्षेति शब्दं कुर्वद्भिस्तत्कीटैरेव भक्षितैः । तप्तमूत्रद्रवैः पूर्णं मूत्रकीटैश्च सङ्कुलम् ।१०

युक्तं महापातकिभिस्तत्कीटैर्भक्षितैः सदा। गव्यूतिमानं ध्वान्ताक्तंशब्दकृद्भिश्च सन्ततम्।११
मद्दूतैस्ताडितैर्घोरैः शुष्ककण्ठोष्ठतालुकैः। श्लेष्मपूर्णम्प्रशमितं तत्कीटैः पूरितं सदा।१२
तद्भोजिभिः पापिभिश्चवेष्टितंवेष्टितैः सदा। क्रोशार्धं गरकुण्डञ्च गरभोजिभिरन्वितम्।१३
गरकीटैर्भक्षितैश्च पापिभिः पूर्णमेव च। ताडितैर्मम दूतैश्च शब्दकृद्भिश्च कम्पितैः।१४
सर्पाकारैर्वज्रदंष्ट्रैः शुष्ककण्ठैः सुदारुणैः। नेत्रयोर्मलपूर्णञ्च क्रोशार्धंकीटसंयुतम्।१५
पापिभिः सङ्कुलं शश्वद्द्रवद्भिः कीटभक्षितैः। वसारसेन सम्पूर्णंक्रोशतुर्यं सुदुःसहम्।१६
तद्भोजिभिः पातकिभिर्मम दूतैश्चताडितैः। शुक्रकुण्डं क्रोशमितं शुक्रकीटैश्चसंयुतम्।१७
पापिभिः सङ्कुलं शश्वद् द्रवद्भिः कीटभक्षितैः। दुर्गन्धि रक्तवर्णञ्च वापीमानंगभीरकम्।१८
तद्भोजिभिः पापिभिश्चसङ्कुलंकीटभक्षितम्। पूर्णंनेत्राश्रुभिस्तप्तं बहुपापिभिरन्वितम्।१९
वापितुर्यप्रमाणञ्च रुदद्भिः कीटभक्षितैः। नृणां गात्रमलैर्युक्तं तद्भक्षैः पापिभिर्युतम्।२०
ताडितैर्मम दूतैश्च व्यग्रैश्च कीटभक्षितैः। कर्णविट्परिपूर्णञ्च तद्भक्षैः पापिभिर्वृतम्।२१
वापीतुर्यप्रमाणञ्च ब्रुवद्भिः कीटभक्षितैः। मज्जापूर्णं नराणाञ्च महादुर्गन्धिसंयुतम्।२२
महापातकिभिर्युक्तं वापीतुर्यप्रमाणकम्। परिपूर्णं स्निग्धमासैर्मम दूतैश्च ताडितैः।२३
पापिभिः सङ्कुलञ्चैववापीमानंभयानकैः। कन्याविक्रयिभिश्चैव तद्भक्ष्यैः कीटभक्षितैः।२४
पाहीति शब्दं कुर्वद्भिस्त्रासितैश्च भयानकैः। वापीतुर्यप्रमाणञ्च नखादिकचतुष्टयम्।२५
पापिभिः संयुतं शश्वन्मम दूतैश्चताडितैः। प्रतप्तताम्रकुण्डञ्चताम्रोपर्युल्मुकान्वितम्।२६
ताम्राणां प्रतिमालक्ष्यैः प्रतप्तैर्व्याप्तंसदा। प्रत्येकम्प्रतिमाश्लिष्टैरुदद्भिः पापिभिर्युतम्।२७
गव्यूतिमानम्विस्तीर्णं मम दूतैश्च ताडितैः। प्रतप्तलोहधारञ्च ज्वलदङ्गारसंयुतम्।२८
लोहानाम्प्रतिमाश्लिष्टैः रुदद्भिः पापिभिर्युतम्। प्रत्येकम्प्रतिमाश्लिष्टैः शश्वत्प्रज्वलितैर्भिया।२९
रक्षरक्षेति शब्दञ्च कुर्वद्भिर्दूतताडितैः। महापातकिभिर्युक्तं द्विगव्यूतिप्रमाणकम्।३०
भयानकं ध्वान्तयुक्तं लोहकुण्डं प्रकीर्तितम्। चर्मकुण्डं तप्तसुराकुण्डं वाप्यर्धमेव च।३१
तद्भोजिपापिभिर्व्याप्तं ममदूतैश्चताडितैः। अतः शाल्मलिकुण्डञ्चवृक्षकण्टकशोभितम्।३२
लक्षपौरुषमानञ्च क्रोशमानञ्च दुःखदम्। धनुर्मानैः कण्टकैश्च सुतीक्ष्णैः परिवेष्टितम्।३३
प्रत्येकं विद्धगात्रैश्च महापातकिभिर्युतम्। वृक्षाग्रान्निपतद्भिश्च ममदूतैश्च पातितैः।३४
जलं देहीति शब्दञ्चकुर्वद्भिः शुष्कतालुकैः। महाभियाऽतिव्यग्रैश्चदण्डैः सम्भग्नमस्तकैः।३५
प्रचलद्भिर्यथा तप्ततैलजीविभिरेव च। विषोदैस्तक्षकाणाञ्च पूर्णञ्च क्रोशमानकम्।३६
तद्भक्षैः पापिभिर्युक्तंमम दूतैश्च ताडितैः। प्रतप्ततैलपूर्णञ्च कीटादिपरिवर्जितम्।३७
महापातकिभिर्युक्तंदग्धाङ्गारैश्च वेष्टितम्। काकुशब्दम्प्रकुर्वद्भिश्चलद्भिर्दूतपीडितैः।३८
ध्वान्तयुक्तं क्रोशमानं क्लेशदञ्च भयानकम्। शूलाकारैः सुतीक्ष्णाग्रैर्लोहशस्त्रैश्च वेष्टितम्।३९
शस्त्रतल्पस्वरूपञ्च क्रोशतुर्यप्रमाणकम्। वेष्टितन्तत्पातकिभिः कुन्तविद्धैश्चवेष्टितैः।४०
ताडितैर्मम दूतैश्च शुष्ककण्ठोष्ठतालुकैः। कीटैश्च शङ्कुप्रमितैः सर्पमानैर्भयङ्करैः।४१
तीक्ष्णदन्तैश्चविकृतैर्व्याप्तंध्वान्तयुतं सति। महापातकिभिर्युक्तं ममदूतैश्चताडितैः।४२
द्विगव्यूतिप्रमाणञ्चपूयकुण्डं प्रचक्षते। तद्भक्ष्यैः प्राणिभिर्युक्तं ममदूतैश्चताडितैः।४३
तालवृक्षप्रमाणैश्च सर्पकोटिभिरावृतम्। सर्पवेष्टितगात्रैश्च पापिभिः सर्पभक्षितैः।४४
सङ्कुलं शब्दकृद्भिश्च मम दूतैश्च ताडितैः। कुण्डत्रयं मशादीनां पूर्णंचमशकादिभिः।४५
सर्वं क्रोशार्धमानञ्च महापातकिभिर्युतम्। हस्तपादादिबद्धैश्च क्षतजौघेन लोहितैः।४६
हाहेति शब्दं कुर्वद्भिस्ताडितैर्मम पार्षदैः। वज्रवृश्चिकयोः कुण्डंताभ्याञ्चपरिपूरितम्।४७

वाप्यर्धं पापिभिर्युक्तं वज्रवृश्चिकदंशितैः। कुण्डत्रयं शरादीनां तैरेव परिपूरितम्।४८
तैर्विद्धैः पापिभिर्युक्तं वाप्यर्धं रक्तलोहितैः। तप्ततोयोदकैः पूर्णं सध्वान्तं गोलकुण्डकम्।४६
कीटैः सङ्कुलमानैश्चभक्षितैः पापिभिर्युतम्। वाप्यर्धमानंभीतैश्च पापिभिः कीटभक्षितैः।५०
रुदद्भिः क्रोशमानैश्च ममदूतैश्च ताडितैः। अतिदुर्गन्धिसंयुक्तं दुःखदं पापिनां सदा।५१
दारुणैर्विकृताकारैर्भक्षितं पापिभिर्युतम्। वाप्यर्धं परिपूर्णञ्च जलस्थैर्नक्रकोटिभिः।५२
विण्मूत्रम्लेष्मभक्षैश्चसंयुतंशतकोटिभिः। काकैश्चविकृताकारैर्भक्षितैः पापिभिर्युतम्।५३
मन्थानकुण्डं बीजकुण्डं ताभ्यां पूर्णं धनुः शतम्। भक्षितैः पापिभिर्युक्तंशब्दकृद्भिश्च सन्ततम्।५४
धनुः शतं जीवयुक्तं पापिभिः सङ्कुलं सदा। शब्दकृद्भिर्वज्रदंष्ट्रैः सान्द्रध्वान्तमयंपरम्।५५
वापीद्विगुणमानञ्च तप्तप्रस्तरनिर्मितम्। ज्वलदङ्गारसदृशं चलद्भिः पापिभिर्युतम्।५६
क्षुरधारोपमैस्तीक्ष्णैः पाषाणैर्निर्मितंपरम्। महापातकिभिर्युक्तंलालाकुण्डञ्चलोहितैः।५७
क्रोशमात्रञ्च गम्भीरं ममदूतैश्चताडितैः। तप्ताञ्जनाचलाकारैः परिपूर्णं धनुः शतम्।५८
चलद्भिः पापिभिर्युक्तं ममदूतैश्च ताडितैः। पूर्णंचूर्णद्रवैः क्रोशमानंपापिभिरन्वितम्।५६
तद्भोजिभिः प्रदग्धैश्च ममदूतैश्च ताडितैः। कुण्डंकुलालचक्रञ्च घूर्णमानं च सन्ततम्।६०
सुतीक्ष्णं षोडशारञ्च चूर्णितैःपापिभिर्युतम्। अतीव वक्रं निम्नं च द्विगव्यूतिप्रमाणकम्।६१
कन्दराकारनिर्माणं तप्तोदैश्च समन्वितम्। महापातकिभिर्युक्तं भक्षितैर्जलजन्तुभिः।६२
ज्वलद्भिः शब्दकृद्भिश्च ध्वान्तयुक्तं भयानकम्। कोटिभिर्विकृताकारैः कच्छपैश्च सुदारुणैः।६३
जलस्थैः संयुतं तैश्च भक्षितैः पापिभिर्युतम्। ज्वाला कलापैस्तेजोभिर्निर्मितैः क्रोशमानकम्।६४
शब्दकृद्भिः पातकिभिः संयुक्तंक्लेशदंसदा। क्रोशमानञ्चगम्भीरंतप्तभस्मभिरन्वितम्।६५
शश्वज्ज्वलद्भिः संयुक्तं पापिभिर्भस्मभक्षितैः। तप्तपाषाणलोहानांसमूहैः परिपूरितैः।६६
पापिभिर्दग्धगात्रैश्चयुक्तञ्चशुष्कतालुकैः। क्रोशमानंध्वान्तयुक्तंगम्भीरमतिदारुणम्।६७
ताडितैश्च प्रदग्धैश्च दग्धकुण्डं प्रकीर्तितम्। अतीवोर्मियुतंतोयं प्रतप्तक्षारसंयुतम्।६८
नाना प्रकारैर्विरुतैर्जलजन्तुभिरन्वितम्। द्विगव्यूतिप्रमाणञ्च गम्भीरं ध्वान्तसंयुतम्।६६
तद्भक्ष्यैः पापिभिर्युक्तं दंशितैजलजन्तुभिः। ज्वलद्भिः शब्दकृद्भिश्चनपश्यद्भिः परस्परम्।७०
प्रतप्तसूचीकुण्डञ्च कीर्तितं चभयानकम्। असीवधारापत्रस्याऽप्युच्चैस्तालतरोरधः।७१
क्रोशार्धमानं कुण्डञ्च पतत्पत्रसमन्वितम्। पापिनां रक्तपूर्णञ्च वृक्षाग्रात्पततांध्रुवम्।७२
परित्राहीतिशब्दञ्च कुर्वतामसतामपि। गम्भीरं ध्वान्तयुक्तञ्च रक्तकीटसमन्वितम्।७३
तदसीपत्रकुण्डञ्च कीर्तितं च भयानकम्। धनुः शतप्रमाणञ्च क्षुरधारास्त्रसंयुतम्।७४
पापिनां रक्तपूर्णञ्च क्षुरधारं भयानकम्। सूचीमुखास्त्रसंयुक्तं पापिरक्तौघपूरितम्।७५
पञ्चाशद्धनुरायामं क्लेशदञ्च सूचीमुखम्। कस्यचिज्जन्तुभेदस्य गोकाख्यस्य मुखाकृति।७६
कूपरूपं गभीरञ्च धनुर्विंशत्प्रमाणकम्। महापातकिनां चैव महाक्लेशप्रदं परम्।७७
तत्कीटभक्षितानां च नम्रास्यानां च सन्ततम्। कुण्डं नक्रमुखाकारं धनुः षोडशमानकम्।७८
गम्भीरं कूपरूपञ्च पापिनां सङ्कुलं सदा। धनुः शतप्रमाणञ्च कीर्तितं गजदंशनम्।७६
धनुस्त्रिंशत्प्रमाणञ्च कुण्डञ्च गोमुखाकृति। पापिनां क्लेशदं शश्वद्गोमुखं परिकीर्तितम्।८०
कालचक्रेण संयुक्तं भ्रममाणं भयानकम्। कुम्भाकारं ध्वान्तयुक्तं द्विगव्यूतिप्रमाणकम्।८१
लक्षपौरुषमानञ्च गम्भीरं विस्तृतं सति! कुत्रचित्तप्ततैलञ्च ताम्रादि कुण्डमेव च।८२
पापिनाञ्च प्रधानैश्च मूर्च्छितैः कृमिभिर्युतम्। परस्परञ्च नश्यद्भिःशब्द कृद्भिश्च सन्ततम्।८३
ताडितैर्यमदूतैश्च मुसलैर्मुद्गरैस्तथा। घूर्णमानैः पतद्भिश्च मूर्च्छितैश्च क्षणंक्षणम्।८४

पातितैर्यमदूतैश्च रुदन्त्यस्मात्क्षणं पुनः। यावन्तः पापिनः सन्ति सर्वकुण्डेषुसुन्दरि।८५
ततश्चतुर्गुणाः सन्ति कुम्भीपाके च दुःखदे। सुचिरंवध्यमानास्तेभोगदेहाननश्वराः ।८६
सर्वकुण्डं प्रधानञ्च कुम्भीपाकम्प्रकीर्तितम्। कालनिर्मितसूत्रेणनिबद्धा यत्रपापिनः।८७
उत्थापिताश्च दूतैश्च क्षणमेव निमज्जिताः। निःश्वासबद्धाः सुचिरंतथामोहंगताः पुनः।८८
अतीव क्लेशसंयुक्ता देयभोगेन सुन्दरि! प्रतप्ततोययुक्तञ्च कालसूत्रप्रकीर्तितम्।८९
अवटः कूपभेदश्च मत्स्योदः (दं) सउदाहृतः। प्रतप्ततोयपूर्णञ्च चतुर्विंशत्प्रमाणकम्।९०
व्याप्तं महापातकिभिर्व्यादग्धाङ्गैश्चसन्ततम्। मद्दूतैस्ताडितैः शश्वदवटोदंप्रकीर्तितम्।९१
यत्रोदस्पर्शमात्रेणसर्वव्याधिश्चपापिनाम्। भवेदकस्मात्पततांयस्मिन्कुण्डेधनुः शते।९२
अरुन्तुदैर्भक्षितैस्तु प्राणिभिर्यच्च सङ्कुलम्। हाहेति शब्दंकुर्वद्भिस्तदेवारुन्तुदं विदुः।९३
तप्तपांसुभिराकीर्णंज्वलद्भिस्तुषदग्धकैः। तद्भक्षैःपापिभिर्युक्तं पांसुभोजधनुः शतम्।९४
पातमात्रेण पापी च पांशेन वेष्टितो भवेत्। क्रोशमात्रेण कुम्भञ्च तत्पाशवेष्टनं विदुः।९५
पातमात्रेण पापी च शूलेन वेष्टितो भवेत्। धनुर्बिंशत्प्रमाणञ्चशूलप्रोतं प्रकीर्तितम्।९६
पततां पापिनां यत्र भवेदेव प्रकम्पनम्। अतीव हिमतोयाक्तं क्रोशार्धञ्चप्रकम्पनम्।९७
ददत्येव हि मे दूता यत्रोल्काः पापिनांमुखे। धनुर्विंशत्प्रमाणंतदुल्काभिश्चसुसङ्कुलम्।९८
लक्षपौरुषमानञ्च गम्भीरं च धनुःशतम्। नानाप्रकारकृमिभिः संयुक्तं च भयानकम्।९९
अत्यन्धकारव्याप्तञ्चकूपाकारञ्चवर्तुलम्। तद्भक्ष्यैः पापिभिर्युक्तंप्रणश्यद्भिः परस्परम्।१००
तप्ततोयप्रदग्धैश्च ज्वलद्भिः कीटभक्षितैः। ध्वान्तेन चक्षुषाचान्धैरन्धकूपः प्रकीर्तितः।१०१
नानाप्रकारशस्त्रौघैर्यत्र विद्धाश्च पापिनः। धनुर्विंशत्प्रमाणञ्चवेधनं तत्प्रकीर्तितम्।१०२
दण्डेन ताडिता यत्र ममदूतैश्च पापिनः। धनुः षोडशमानञ्च तत्कुण्डं दण्डताडनम्।१०३
निरुद्धाश्च महाजालैर्यथा मीनाश्चपापिनः। धनुर्विंशत्प्रमाणञ्चजालरन्ध्रंप्रकीर्तितम्।१०४
पततां पापिनां कुण्डेदेहश्चूर्णो भवेदिह। लोहबन्दीनिबद्धानां कोटिपौरुषमानकम्।१०५
गम्भीरध्वान्तसंयुक्तंधनुर्विंशत्प्रमाणकम्। मूर्च्छितानांजडानाञ्चदेहचूर्णप्रकीर्तितम्।१०६
दलिताः पापिनो यत्र मम दूतैश्च ताडिताः। धनुः षोडशमानञ्चतत्कुण्डंदलनंस्मृतम्।१०७
पतनेनैव पापी च शुष्ककण्ठौष्ठतालुकः। वालुकासु च तप्तासुधनुस्त्रिंशत्प्रमाणकम्।१०८
शतपौरुषमानञ्च गम्भीरं ध्वान्तसंयुतम्। शोषणं कुण्डमेतद्धि पापिनां परदुःखदम्।१०९
नानाचर्मकषायोदपरिपूर्णं धनुः शतम्। दुर्गन्धियुक्तंतद्भक्ष्यैः प्राणिभिः संकुलंकषम्।११०
शूर्पाकारमुखं कुण्डं धनुर्द्वादशमानकम्। तप्तलोहबालुकाभिः पूर्णं पातकिसंयुतम्।१११
दुर्गन्धियुक्तं तद्भक्ष्यैः पापिभिः सङ्कुलंसति! शूर्पाकारमुखंकुण्डंधनुर्द्वादशमात्रकम् ।११२
प्रतप्तबालुकापूर्णं महापातकिभिर्युतम्। अन्तरग्निशिखानाञ्च ज्वालाव्याप्तमुखं सदा।११३
धनुर्विंशतिमात्रञ्च प्रमाणं यस्य सुन्दरि! ज्वालाभिर्दग्धगात्रैश्चपापिभिर्व्याप्तमेवच।११४
तन्महाक्लेशदंशश्वत्कुण्डंज्वालामुखेस्मृतम्। पातमात्राद्यत्रपापीमूर्च्छितोवैनरोभवेत्।११५
तप्तेष्टकाभ्यन्तरितंवाप्यर्धंजिह्मकुण्डकम्। धूम्रान्धकारसंयुक्तं धूम्रान्धैः पापिभिर्युतम्।११६
धनुः शतं श्वासरन्ध्रैर्धूम्रान्धं परिकीर्तितम्। पातमात्राद्यत्र पापी नागैश्च वेष्टितो भवेत्।११७
धनुः शतं नागपूर्णं तन्नागैर्वेष्टितं भवेत्। षडशीति च कुण्डानिमयोक्तानि निशामय।११८
लक्षणं चाऽपि तेषाञ्च किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।।११९।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारद-सम्वादे सावित्र्युपाख्याने नानानरककुण्डानाम्वर्णनंनाम सप्तत्रिंशोऽध्यायः।।३७।।

* अष्टत्रिंशोऽध्यायः *

देवीभक्ति महिमवर्णनम्

सावित्र्युवाच

देवीभक्तिं देहि मह्यं साराणां चैव सारकम्। पुंसां मुक्तिद्वारबीजंनरकार्णवतारकम्।१
कारणं मुक्तिसाराणां सर्वाशुभविनाशनम्। दारकङ्कर्मवृक्षाणां कृतपापौघहारणम्।२
मुक्तिश्च कतिधाऽप्यस्ति किम्बा तासाञ्च लक्षणम्। देवीभक्तिं भक्तिभेदं निषेकस्याऽपि खण्डनम्।३
तत्त्वज्ञानविहीना च स्त्रीजातिर्विधिनिर्मिता। किञ्चिज्ज्ञानं सारभूतं वदवेदविदाम्वर।४
सर्वं दानञ्च यज्ञश्च तीर्थस्नानं व्रतं तपः। अज्ञानिज्ञानदानस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम्।५
पितुः शतगुणा माता गौरवेचेतिनिश्चितम्। मातुः शतगुणः पूज्योज्ञानदातागुरुः प्रभो।६

धर्मराज उवाच

पूर्वं सर्वो वरो दत्तो यस्तेमनसिवाञ्छितः। अधुनाशक्तिभक्तिस्तेवत्सेभवतुमद्वरात् ।७
श्रोतुमिच्छसि कल्याणि! श्रीदेवीगुणकीर्तनम्। वक्तॄणां पृच्छकानाञ्च श्रोतॄणां कुलतारणम्।८
शेषो वक्त्रसहस्रेण नहियद्वक्तुमीश्वरः। मृत्युञ्जयो न क्षमश्च वक्तुं पञ्चमुखेन च।९
धाता चतुर्णां वेदानां विधाता जगतामपि। ब्रह्मा चतुर्मुखेनैवनाऽलंविष्णुश्चसर्ववित्।१०
कार्त्तिकेयः षण्मुखेन नाऽपिवक्तुमलं ध्रुवम्। नगणेशः समर्थश्चयोगीन्द्राणांगुरोर्गुरुः।११
सारभूताश्चशास्त्राणां वेदाश्चत्वार एव च। कलामात्रं यद्गुणानांनविदन्तिबुधाश्चये।१२
सरस्वती जडीभूता नाऽलं तद्गुणवर्णने। सनत्कुमारो धर्मश्च सनन्दश्च सनातनः।१३
सनकः कपिलः सूर्यो येऽन्येचब्रह्मणः सुताः। विचक्षणानयद्वक्तुंकिञ्चाऽन्ये जडबुद्धयः।१४
नयद्वक्तुं क्षमासिद्धामुनीन्द्रायोगिनस्तथा। के चाऽन्येचवयंकेवा श्रीदेव्यागुणवर्णने।१५
ध्यायन्ते यत्पदाम्भोजं ब्रह्मविष्णुशिवादयः। अतिसाध्यं स्वभक्तानां तदन्येषां सुदुर्लभम्।१६
कश्चित्किञ्चिद्विजानाति तद्गुणोत्कीर्तनं शुभम्। अतिरिक्तं विजानाति ब्रह्माब्रह्मविशारदः।१७
ततोऽतिरिक्तं जानातिगणेशोज्ञानिनांगुरुः। सर्वाऽतिरिक्तंजानातिसर्वज्ञः शम्भुरेवसः।१८
तस्मै दत्तं पुरा ज्ञानं कृष्णेन परमात्मना। अतीव निर्जनेऽरण्येगोलोकं रासमण्डले।१९
तत्रैवकथितंकिञ्चित्तद्गुणोत्कीर्तनंशुभम्। धर्मञ्चकथयामासशिवलोकेशिवः स्वयम्।२०
धर्मस्तु कथयामास भास्वतेपृच्छतेतथा। यमाराध्यमत्पिताऽपिसम्प्रापतपसासति ।२१
पूर्वं स्वं विषयं चाऽहं नगृह्णामि प्रयत्नतः। वैराग्ययुक्तस्तपसेगन्तुमिच्छामिसुव्रते ।२२
तदा मां कथयामास पितातद्गुणकीर्तनम्। यथागमंतद्वदामिनिबोधाऽतीवदुर्गमम् ।२३
तद्गुणं सानजानातितदन्यस्यचकाकथा। यथाऽऽकाशोनजानातिस्वान्तमेववरानने।२४
सर्वात्मा सर्वभगवान्सर्वकारणकारणः। सर्वेश्वरश्च सर्वाद्यः सर्ववित्परिपालकः।२५
नित्यरूपी नित्यदेही नित्यानन्दोनिराकृतिः। निरङ्कुशोनिराशङ्कोनिर्गुणश्चनिरामयः ।२६
निर्लिप्तः सर्वसाक्षीचसर्वाधारः परात्परः। मायाविशिष्टप्रकृतिस्तद्विकाराश्चप्राकृताः।२७
स्वयं पुमांश्च प्रकृतिस्तावभिन्नौ परस्परम्। यथा वह्नेस्तस्य शक्तिर्नभिन्नाऽस्त्येव कुत्रचित्।२८
सेयंशक्तिर्महामाया सच्चिदानन्दरूपिणी। रूपंबिभर्त्यरूपा च भक्तानुग्रहहेतवे।२९
गोपालसुन्दरीरूपं प्रथमं सा ससर्ज ह। अतीवकमनीयञ्च सुन्दरं सुमनोहरम्।३०
नवीननीरदश्यामं किशोरं गोपवेषकम्। कन्दर्पकोटिलावण्यं लीलाधाममनोहरम्।३१
शरन्मध्याह्नपद्मानां शोभामोचनलोचनम्। शरत्पार्वणकोटीन्दुशोभाप्रच्छादनाननम्।३२

अमूल्यरत्ननिर्माणनानाभूषणभूषितम् । सस्मितं शोभितं शश्वदमूल्यपीतवाससा ।३३
परब्रह्मस्वरूपञ्च ज्वलन्तं ब्रह्मतेजसा । सुखदृश्यञ्चशान्तञ्च राधाकान्तमनन्तकम् ।३४
गोपीभिर्वीक्ष्यमाणञ्चसस्मिताभिश्च सन्ततम् । रासमण्डलमध्यस्थं रत्नसिंहासनस्थितम् ।३५
वंशीं क्वणन्तं द्विभुजं वनमालाविभूषितम् । कौस्तुभेन्द्रमणीन्द्रेण शश्वद्वक्षः स्थलोज्ज्वलम् ।३६
कुङ्कुमागुरुकस्तूरी चन्दनार्चितविग्रहम् । चारुचम्पकमालाक्तंमालतीमाल्यमण्डितम् ।३७
चारुचन्द्रकशोभाढ्यं चूडावङ्क्रिमराजितम् । एवंभूतञ्चध्यायन्तिभक्ताभक्तिपरिप्लुताः ।३८
यद्भयाज्जगतां धाता विधत्ते सृष्टिमेव च । कर्मानुसाराल्लिखितंकरोतिसर्वकर्मणाम् ।३९
तपसां फलदाता च कर्मणाञ्च यदाज्ञया । विष्णुः पाताचसर्वेषांयद्भयात्पातिसन्ततम् ।४०
कालाग्निरुद्रः संहर्त्ता सर्वविश्वेषुयद्भयात् । शिवोमृत्युञ्जयश्चैवज्ञानिनांचगुरोर्गुरुः ।४१
यज्ज्ञानाज्ज्ञानवानस्ति योगीशो ज्ञानवित्प्रभुः । परमानन्दयुक्तश्चभक्तिवैराग्यसंयुतः ।४२
यद्भयाद्वाति पवनः प्रवरः शीघ्रगामिनाम् । तपनश्चप्रतपतियद्भयात्सन्ततं सति! ।४३
यदाज्ञया वर्षतीन्द्रो मृत्युश्चरति जन्तुषु । यदाज्ञयादहेद्वह्निर्जलमेवं सुशीतलम् ।४४
दिशोरक्षन्ति दिक्पाला महाभीता यदाज्ञया । भ्रमन्तिराशिचक्राणिग्रहाश्चयद्भयेनच ।४५
भयात्फलन्ति वृक्षाश्च पुष्पन्त्यपि च यद्भयात् । यदाज्ञां तु पुरस्कृत्य कालः काले हरेद् भयात् ।४६
तथा जलस्थलस्थाश्च नजीवन्ति यदाज्ञया । अकालेनाहरेद्विद्धंरणेषु विषमेषु च ।४७
धत्तेवायुस्तोयराशिं तोयंकूर्मं तदाज्ञया । कूर्मोऽनन्तं सचक्षोणींसमुद्रान्साचपर्वतान् ।४८
सर्वाचैव क्षमारूपा नानारत्नं बिभर्ति या । यतः सर्वाणिभूतानिस्थीयन्तेहन्तितत्रहि ।४९
इन्द्रायुश्चैव दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः । अष्टाविंशेशक्रपातेब्रह्मणश्चदिवानिशम् ।५०
एवं त्रिंशद्दिनैर्मासो द्वाभ्यामाभ्यामृतुः स्मृतः । ऋतुभिः षड्भिरेवाब्दं ब्रह्मणो वै वयः स्मृतम् ।५१
ब्रह्मणश्च निपाते च चक्षुरुन्मीलनं हरेः । चक्षुरुन्मीलने तस्य लयं प्राकृतिकं विदुः ।५२
प्रलये प्राकृतेसर्वे देवाद्याश्च चराचराः । लीनाधाताविधाता च श्रीकृष्णनाभिपङ्कजे ।५३
विष्णुः क्षीरोदशायी चवैकुण्ठेयश्चतुर्भुजः । विलीनावामपार्श्वेचकृष्णस्यपरमात्मनः ।५४
यस्य ज्ञाने शिवो लीनो ज्ञानाधीशः सनातनः । दुर्गायां विष्णुमायायां विलीनाः सर्वशक्तयः ।५५
सा च कृष्णस्य बुद्धौ च बुद्ध्यधिष्ठातृदेवताः । नारायणांशः स्कन्दश्च लीनो वक्षसि तस्य च ।५६
श्रीकृष्णांशश्च तद्बाहौ देवाधीशो गणेश्वरः । पद्मांशाश्चैवपद्मायांसाराधायांचसुव्रते ।५७
गोप्यश्चाऽपि च तस्यां चसर्वाश्च देवयोषितः । कृष्णप्राणाधिदेवी सा तस्य प्राणेषु संस्थिता ।५८
सावित्री च सरस्वत्यां वेदाः शास्त्राणि यानि च । स्थिता वाणी च जिह्वायां तस्यैव परमात्मनः ।५९
गोलोकस्यचगोपाश्चविलीनास्तस्यलोमसु । तत्प्राणेषुचसर्वेषांप्राणावाताहुताशनाः ।६०
जठराग्नौ विलीनाश्च जलं तद्रसनाग्रतः । वैष्णवाश्चरणाम्भोजे परमानन्दसंयुताः ।६१
सारात्सारतराभक्ती रसपीयूषपायिनः । विराडंशाश्चमहतिलीनाकृष्णे महाविराट् ।६२
यस्यैव लोमकूपेषु विश्वानि निखिलानि च । यस्य चक्षुषउन्मेषेप्राकृतः प्रलयोभवेत् ।६३
चक्षुरुन्मीलनेसृष्टिर्यस्यैव पुनरेव सः । यावत्कालोनिमेषेण तावदुन्मीलनेन च ।६४
ब्रह्मणश्च शताब्देच सृष्टेः सूत्रलयः पुनः । ब्रह्मसृष्टिलयानाञ्चसंख्या नास्त्येवसुव्रते! ।६५
यथाभूरजसांचैवसङ्ख्यानं नैव विद्यते । चक्षुर्निमेषेप्रलयोयस्यसर्वान्तरात्मनः ।६६
उन्मीलने पुनः सृष्टिर्भवेदेवेश्वरेच्छया । स कृष्णः प्रलये तस्यांप्रकृतौलीन एव हि ।६७
एकैव च पराशक्तिर्निर्गुणः परमः पुमान् । सदेवेदमग्र आसीदिति वेदविदो विदुः ।६८
मूलप्रकृतिरव्यक्ताऽप्यव्याकृतपदाभिधा । चिदभिन्नत्वमापन्ना प्रलये सैव तिष्ठति ।६९

तद्गुणोत्कीर्तनं वक्तुं ब्रह्माण्डेषु च कः क्षमः। मुक्तयश्च चतुर्वेदैर्निरुक्ताश्च चतुर्विधाः।७०
तत्प्रधाना देवभक्तिर्मुक्तेरपि गरीयसी। सालोक्यदा भवेदेका तथासारूप्यदापरा।७१
सामीप्यदाऽथ निर्वाणप्रदा मुक्तिश्चतुर्विधा। भक्तास्ता नहि वाञ्छन्ति विना तत्सेवनं विभोः।७२
शिवत्वममरत्वञ्च ब्रह्मत्वं चावहेलया। जन्ममृत्युजराव्याव्याधिभयशोकादिकंधनम्।७३
दिव्यरूपधारणञ्च निर्वाणंमोक्षणंविदुः। मुक्तिश्चसेवारहिताभक्तिसेवाविवर्धिनी ।७४
भक्तिमुक्त्योरयंभेदो निषेकखण्डनं शृणु। विदुर्बुधानिषेकञ्चभोगञ्चकृतकर्मणाम्।७५
तत्खण्डनं च शुभदं श्रीविभोः सेवनंपरम्। तत्त्वज्ञानमिदंसाध्विस्थिरञ्चलोकवेदयोः।७६
निर्विघ्नं शुभदं चोक्तं गच्छ वत्से! यथासुखम्। इत्युक्त्वा सूर्यपुत्रश्च जीवयित्वा च तत्पतिम्।७७
तस्यै शुभाशिषं दत्त्वा गमनंकर्तुमुद्यतः। दृष्ट्वा यमञ्च गच्छन्तं सा सावित्रीप्रणम्यच।७८
रुरोद चरणौ धृत्वा साधुच्छेदेन दुःखिता। सावित्रीरोदनंश्रुत्वा यमश्चैवकृपानिधिः।७९

तामित्युवाच सन्तुष्टः स्वयं चैव रुरोद ह।

धर्म उवाच

लक्षवर्षं सुखं भुक्त्वा पुण्यक्षेत्रे च भारते ।।८०।।

अन्तेयास्यसि तल्लोकं यत्रदेवी विराजते। गत्वा च स्वगृहंभद्रे सावित्र्याश्चव्रतंकुरु।८१
द्विसप्तवर्षपर्यन्तं नारीणां मोक्षकारणम्। ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यांसावित्र्याश्चव्रतं शुभम्।८२
शुक्लाऽष्टम्यां भाद्रप्रदे महालक्ष्म्या यथाव्रतम्। द्व्यष्टवर्षं व्रतंचैवप्रत्यादेयंशुचिस्मिते।८३
करोति भक्त्या या नारी सा याति च विभोः पदम्। प्रति मङ्गलवारे च देवीं मङ्गलदायिनीम्।८४
प्रतिमासं शुक्लषष्ठ्यां षष्ठीं मङ्गलदायिनीम्। तथा चाऽऽषाढसङ्क्रान्त्यां मनसां सर्वसिद्धिदाम्।८५
राधां रासे च कार्त्तिक्यां कृष्णप्राणाधिकप्रियाम्। उपोष्य शुक्लाऽष्टम्याञ्च प्रतिमासं वरप्रदाम्।८६
विष्णुमायां भगवतीं दुर्गांदुर्गार्तिनाशिनीम्। प्रकृतिं जगदम्बाञ्चपतिपुत्रवतीषु च।८७
पतिव्रतासु शुद्धासु यन्त्रेषु प्रतिमासु च। या नारी पूजयेद्भक्त्या धनसन्तानहेतवे।८८
इह लोके सुखं भुक्त्वा यात्यन्ते श्रीविभोः पदम्। एवं देव्याविभूतिश्च पूजयेत्साधकोऽनिशम्।८९
सर्वकालं सर्वरूपा संसेव्या परमेश्वरी। नाऽतः परतरं किञ्चित्कृतकृत्यत्वदायकम्।९०
इत्युक्त्वा तां धर्मराजो जगाम निजमन्दिरम्। गृहीत्वा स्वामिनं सा च सावित्री च निजालयम्।९१
सावित्री सत्यवांश्चैवप्रययौच यथागमम्। अन्यांश्चकथयामासस्ववृत्तान्तंहिनारद ।९२
सावित्रीजनकः पुत्रान्सम्प्राप्तः प्रक्रमेण च। श्वशुरश्चक्षुषी राज्यं सा च पुत्रान्वरेण च।९३
लक्षवर्षं सुखं भुक्त्वा पुण्यक्षेत्रे च भारते। जगामस्वामिनासार्धंदेवीलोकंपतिव्रता ।९४
सवितुश्चाधिदेवी यामन्त्राधिष्ठातृदेवता। सावित्रीह्यपिवेदानांसावित्रीतेनकीर्तिता।९५
इत्येवं कथितं वत्स! सावित्र्याख्यानमुत्तमम्। जीवकर्मविपाकञ्च किं पुनः श्रोतुमिच्छसि।९६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारद-सम्वादे सावित्र्युपाख्यानवर्णनं नामाऽष्टत्रिंशोऽध्यायः ।।३८।।

* एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः *

लक्ष्म्युपाख्यानवर्णनम्

नारद उवाच

श्रीः मूलप्रकृतेर्देव्या गायत्र्यास्तु निराकृते। सावित्रीयमसम्वादेयश्रुतं वैनिर्मलं यशः।१
तद्गुणोत्कीर्तनं सत्यं मङ्गलानाञ्च मङ्गलम्। अधुना श्रोतुमिच्छामि लक्ष्म्युपाख्यानमीश्वर!।२

केनाऽऽदौ पूजितासाऽपिकिम्भूताकेनवापुरा। तद्गुणोत्कीर्तनंमह्यंवदवेदविदाम्बर! ।३

श्रीनारायण उवाच

सृष्टेरादौ पुरा ब्रह्मन्कृष्णस्य परमात्मनः। देवीवामांससम्भूता बभूव रासमण्डले।४
अतीव सुन्दरी श्यामान्यग्रोधपरिमण्डिता। यथाद्वादशवर्षीयाशश्वत्सुस्थिरयौवना ।५
श्वेतचम्पकवर्णाभा सुखदृश्या मनोहरा। शरत्पार्वणकोटीन्दुप्रभाप्रच्छादनानना ।६
शरन्मध्याह्नपद्मानां शोभामोचनलोचना। सा देवी द्विविधाभूता सहसैवेश्वरेच्छया।७
स्वीयरूपेण वर्णेन तेजसा वयसा त्विषा। यशसावाससाकृत्याभूषणेन गुणेन च।८
स्मितेन वीक्षणेनैवप्रेम्णावाऽनुनयेनच। तद्वामांसान्महालक्ष्मीर्दक्षिणांशाच्चराधिका।९
राधाऽऽदौ वरयामास द्विभुजंचपरात्परम्। महालक्ष्मीश्चतत्पश्चाच्चकमेकमनीयकम्।१०
कृष्णस्तद्गौरवेणैव द्विधारूपो बभूव ह। दक्षिणांसश्चद्विभुजोवामांसश्चचतुर्भुजः ।११
चतुर्भुजाय द्विभुजोमहालक्ष्मींददौपुरा। लक्ष्यतेदृश्यतेविश्वंस्निग्धदृष्ट्याययानिशम्।१२
देवीभूता च महती महालक्ष्मीश्च सा स्मृता। राधाकान्तश्च द्विभुजो लक्ष्मीकान्तश्चतुर्भुजः।१३
शुद्धसत्त्वस्वरूपाच गोपैर्गोपीभिरावृता। चतुर्भुजश्च वैकुण्ठं प्रययौ पद्मया सह।१४
सर्वांशेनसमौतौद्वौ कृष्णनारायणौ परौ। महालक्ष्मीश्चयोगेननानारूपाबभूव सा।१५
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीः परिपूर्णतमा रमा। शुद्धसत्त्वस्वरूपा चसर्वसौभाग्यसंयुता।१६
प्रेम्णा सा च प्रधाना च सर्वासु रमणीषु च। स्वर्गेषु स्वर्गलक्ष्मीश्च शक्रसम्पत्स्वरूपिणी।१७
पाताले नागलक्ष्मीश्च राजलक्ष्मीश्चराजसु। गृहलक्ष्मीर्गृहेष्वेवगृहिणांचकलांशतः ।१८
सम्पत्स्वरूपा गृहिणां सर्वमङ्गलमङ्गला। गवांप्रसूतिः सुरभिर्दक्षिणायज्ञकामिनी।१९
क्षीरोदसिन्धुकन्यासाश्रीरूपापद्मिनीषुच। शोभास्वरूपाचन्द्रे चसूर्यमण्डलमण्डिता।२०
विभूषणेषु रत्नेषु फलेषु च जलेषु च। नृपेषु नृपपत्नीषु दिव्यस्त्रीषु गृहेषु च।२१
सर्वसस्येषु वस्त्रेषु स्थानेषु संस्कृतेषु च। प्रतिमासु च देवानांमङ्गलेषु घटेषु च।२२
माणिक्येषु च मुक्तासु माल्येषु च मनोहरा। मणीन्द्रेषुच हीरेषु क्षीरेषुचन्दनेषुच।२३
वृक्षशाखासु रम्यासु नवमेघेषु वस्तुषु। वैकुण्ठेपूजिता साऽऽदौ देवी नारायणेन च।२४
द्वितीये ब्रह्मणाभक्त्या तृतीये शङ्करेणच। विष्णुनापूजिता सा च क्षीरोदेभारतेमुने।२५
स्वायम्भुवेन मनुना मानवेन्द्रैश्च सर्वतः। ऋषीन्द्रैश्च मुनीन्द्रैश्च सद्भिश्च गृहिभिर्भवे।२६
गन्धर्वैश्चैव नागाद्यैः पातालेषु च पूजिता। शुक्लाऽष्टम्यां भाद्रपदे कृतापूजाचब्रह्मणा।२७
भक्त्या च पक्षपर्यन्तं त्रिषु लोकेषु नारद!। चैत्रे पौषे च भाद्रेच पुण्ये मङ्गलवासरे।२८
विष्णुना पूजिता सा च त्रिषु लोकेषु भक्तितः। वर्षान्ते पौषसङ्क्रान्त्यां माघ्यामावाह्य मङ्गले।२९
मनुस्तां पूजयामास सा भूता भुवनत्रये। पूजिता सा महेन्द्रेण मङ्गलेनैव मङ्गला।३०
केदारेणैव नीलेन सुबलेन नलेन च। ध्रुवेणोत्तानपादेन शक्रेण बलिना तथा।३१
कश्यपेन च दक्षेण कर्दमेन विवस्वता। प्रियव्रतेन चन्द्रेण कुबेरेणैव वायुना।३२
यमेन वह्निना चैव वरुणेनैव पूजिता। एवं सर्वत्र सर्वेषुपूजिता वन्दिता सदा।३३
सर्वैश्वर्याधिदेवी स सर्वसम्पत्स्वरूपिणी ।।३४।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे लक्ष्म्युपाख्यानवर्णनं नामैकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ।।३९।।

* चत्वारिंशोऽध्यायः *

लक्ष्म्युत्पत्तिप्रसङ्गवर्णनम्

नारद उवाच

नारायणप्रिया सा च परावैकुण्ठवासिनी। वैकुण्ठाधिष्ठातृदेवी महालक्ष्मीः सनातनी।१
कथं बभूव सा देवी पृथिव्यां सिन्धुकन्यका। पुरा केन स्तुताऽऽदौ सा तन्मे व्याख्यातुमर्हसि।२

श्रीनारायण उवाच

पुरा दुर्वाससः शापाद्भ्रष्टश्रीश्च पुरन्दरः। बभूव देवसङ्घश्च मर्त्यलोके च नारद!।३
लक्ष्मीः स्वर्गादिकंत्यक्त्वारुष्टापरमदुःखिता। गत्वालीनाचवैकुण्ठेमहालक्ष्मीश्चनारद ।४
तदाशोकाद्ययुः सर्वे दुःखिता ब्रह्मणः सभाम्। ब्रह्माणञ्च पुरस्कृत्य ययुर्वैकुण्ठमेव च।५
वैकुण्ठे शरणापन्ना देवा नारायणे परे। अतीव दैन्ययुक्ताश्च शुष्ककण्ठौष्ठतालुकाः।६
तदा लक्ष्मीश्चकलयापुराणपुरुषाज्ञया। बभूव सिन्धुकन्या सा सर्वसम्पत्स्वरूपिणी।७
तथामथित्वाक्षीरोदंदेवादैत्यगणैः सह। सम्प्राप्ताश्च महालक्ष्मीं विष्णुस्ताञ्चददर्शह।८
सुरादिभ्यो वरं दत्त्वा वनमालाञ्च विष्णवे। ददौ प्रसन्नवदना तुष्टा क्षीरोदशायिने।९
देवाश्चाऽप्यसुरग्रस्तं राज्यं प्रापुश्च नारद!। तां सम्पूज्य च सम्भूयसर्वत्रचनिरापदः।१०

नारद उवाच

कथं शशाप दुर्वासा मुनिश्रेष्ठ! कदाचन। केन दोषेण वा ब्रह्मन्ब्रह्मिष्ठस्तत्त्ववित्पुरा।११
ममन्थुः केनरूपेण जलधिं ते सुरादयः। केन स्तोत्रेण वा देवी शक्रं साक्षाद्बभूवसा।१२
को वा तयोश्च सम्वादो बभूव तद्वद प्रभो! ।

श्रीनारायणउवाच

मधुपानप्रमत्तश्च त्रैलोक्याधिपतिः पुरा ।।१३।।
क्रीडाञ्चकाररहसिरम्भयासहकामुकः । कृत्वा क्रीडांतया सार्धं कामुक्याहृतमानसः।१४
तस्थौ तत्रमहारण्येकामोन्मथितमानसः। कैलासशिखरे यान्तं वैकुण्ठादृपिसत्तमम्।१५
दुर्वाससं ददर्शेन्द्रो ज्वलन्तं ब्रह्मतेजसा। ग्रीष्ममध्याह्नमार्तण्डसहस्रप्रभमीश्वरम् ।१६
प्रतप्तकाञ्चनाकारं जटाभारमहोज्ज्वलम्। शुक्लयज्ञोपवीतञ्च चीरदण्डौ कमण्डलुम्।१७
महोज्ज्वलञ्च तिलकं विभ्रन्तंचेन्दुसन्निभम्। समन्वितं शिष्यलक्षैर्वेदवेदाङ्गपारगैः।१८
दृष्ट्वा ननाम शिरसा सम्प्रमत्तः पुरन्दरः। शिष्यवर्गं तदा भक्त्या तुष्टावचमुदान्वितम्।१९
मुनिना च सशिष्येण दत्तास्तस्मै शुभाशिषः। विष्णुदत्तं पारिजातपुष्पञ्च सुमनोहरम्।२०
तज्जरारोगमृत्युघ्नंशोकघ्नंमोक्षकारकम् । शक्रः पुष्पंगृहीत्वा चप्रमत्तोराज्यसम्पदा।२१
पुष्पं स न्यस्तयामासतदैवकरिमस्तके। हस्ती तत्स्पर्शमात्रेण रूपेण च गुणेन च।२२
तेजसा वयसा कस्माद्विष्णुतुल्यो बभूवह। त्यक्त्वा शक्रं गजेन्द्रश्च जगाम घोरकाननम्।२३
न शशाक महेन्द्रस्तं रक्षितुं तेजसा मुने!। तत्पुष्पं त्यक्तवन्तञ्च दृष्ट्वा शक्रं मुनीश्वरः।२४
तमुवाच महारुष्टः शशाप च रुषान्वितः ।

मुनिरुवाच

अरे! श्रिया प्रमत्तस्त्वं कथं मामवमन्यसे ।।२५।।
मद्दत्तपुष्पं दत्तञ्च गर्वेण करिमस्तके। विष्णोर्निवेदितञ्चैव नैवेद्यं वा फलं जलम्।२६

प्राप्तिमात्रेण भोक्तव्यं त्यागेन ब्रह्महा भवेत्। भ्रष्टश्रीर्भ्रष्टबुद्धिश्च पुरभ्रष्टो भवेत्तु सः।२७
यस्त्यजेद्विष्णुनैवेद्यं भाग्येनोपस्थितं शुभम्। प्राप्तिमात्रेण यो भुङ्क्तेभक्तो विष्णुनिवेदितम्।२८
पुंसां शतं समुद्धृत्य जीवन्मुक्तः स्वयं भवेत्। नैवेद्यं भोजनं कृत्वा नित्यं यः प्रणमेद्धरिम्।२९
पूजयेत्तौति वा भक्त्या स विष्णुसदृशो भवेत्। तत्स्पर्शवायुना सद्यस्तीर्थौघश्च विशुध्यति।३०
तत्पादरजसा मूढ! सद्यः पूता वसुन्धरा। पुंश्चल्यन्नमवीरान्नं शूद्रश्राद्धान्नमेव च।३१
यद्धरेरनिवेद्यञ्च वृथा मांसस्य भक्षणम्। शिवलिङ्गप्रदानञ्च यद्दत्तं शूद्रयाजिना।३२
चिकित्सकद्विजान्नञ्च देवलान्नं तथैव च। कन्याविक्रयिणामन्नंयदन्नंयोनिजीविनाम्।३३
उच्छिष्टान्नं पर्युषितं सर्वभक्षावशेषितम्। शूद्रापतिद्विजानाञ्च वृषवाहद्विजान्नकम्।३४
अदीक्षितद्विजानाञ्च यदन्नं शवदाहिनाम्। अगम्यागामिनाञ्चैव द्विजानामन्नमेव च।३५
मित्रद्रुहां कृतघ्नानामन्नं विश्वासघातिनाम्। मिथ्यासाक्ष्यप्रदान्नञ्च ब्राह्मणान्नंतथैवच।३६
एते सर्वे विशुध्यन्ति विष्णोर्नैवेद्यभक्षणात्। श्वपचश्चेद् विष्णुसेवी वंशानां कोटिमुद्धरेत्।३७
हरेरभक्तो मनुजः स्वं च रक्षितुमक्षमः। अज्ञानाद्यदि गृह्णाति विष्णोर्निर्माल्यमेव च।३८
सप्तजन्मार्जितात्पापान्मुच्यते नाऽत्र संशयः। ज्ञात्वा भक्त्या च गृह्णाति विष्णोर्नैवेद्यमेव च।३९
कोटिजन्मार्जितात्पापान्मुच्यतेनिश्चितंहरे!। यस्मात्संस्थापितंपुष्पंगर्वेणकरिमस्तके ।४०
तस्माद्युष्मान्परित्यज्य यातु लक्ष्मीहरेः पदम्। नारायणस्य भक्तोऽहं न बिभेमि सुराद्विधेः।४१
कालान्मृत्योर्जरातश्चकानन्यान्गणयामिच। किंकरिष्यतितेतातकश्यपश्चप्रजापतिः ।४२
बृहस्पतिर्गुरुश्चैव निःशङ्कस्य च मे हरे!। इदं पुष्पं यस्य मूर्ध्नि तस्यैवपूजनम्परम्।४३
इति श्रुत्वा महेन्द्रश्च धृत्वा स चरणं मुनेः। उच्चै रुरोद शोकार्तस्तमुवाच भयाकुलः।४४

महेन्द्र उवाच

दत्तः समुचितः शापोमह्यंमायापहः प्रभो!। हृतां नयाचे सम्पत्तिं किञ्चिज्ज्ञानञ्चदेहिमे।४५
ऐश्वर्यं विपदां बीजं ज्ञानप्रच्छन्नकारणम्। मुक्तिमार्गकुठारश्च भक्तेश्चव्यवधायकम्।४६

मुनिरुवाच

जन्ममृत्युजराशोकरोगबीजाङ्कुरं परम्। सम्पत्तितिमिरान्धश्च मुक्तिमार्गंनपश्यति।४७
सम्पन्मत्तो विमूढश्च सुरामत्तः सएवच। बान्धवैर्वेष्टितः सोऽपिबन्धत्वेनैव हे हरे!।४८
सम्पत्तिमदमत्तश्च विषयान्धश्च विह्वलः। महाकामी राजसिकः सत्त्वमार्गं नपश्यति।४९
द्विविधो विषयान्धश्च राजसस्तामसः स्मृतः। अशास्त्रज्ञस्तामसश्च शास्त्रज्ञो राजसः स्मृतः।५०
शास्त्रं च द्विविधं मार्गं दर्शयेत्सुरपुङ्गव!। प्रवृत्तिबीजमेकञ्च निवृत्तेः कारणं परम्।५१
चरन्ति जीविनश्चादौ प्रवृत्तेर्दुःखवर्त्मनि। स्वच्छन्दंचप्रसन्नंचनिर्विरोधंचसन्ततम् ।५२
आयाति मधुनोलोभात्क्लेशेनसुखमानितः। परिणामेनाशबीजेजन्ममृत्युजराकरे ।५३
अनेकजन्मपर्यन्तं कृत्वाच भ्रमणं मुदा। स्वकर्मविहितायाञ्च नानायोन्यां क्रमेण च।५४
ततश्चेशानुग्रहाच्च सत्सङ्गं लभते च सः। सहस्रेषु शतेष्वेकोभवाब्धिपारकारणम्।५५
साधुस्तत्त्वप्रदीपेन मुक्तिमार्गं प्रदर्शयेत्। तदा करोति यत्नञ्च जीवोबन्धनखण्डने।५६
अनेकजन्मयोगेन तपसाऽनशनेन च। तदालभेन्मुक्तिमार्गंनिर्विघ्नं सुखदं परम्।५७
इदंश्रुतं गुरोर्वक्त्राद्यत्पृच्छसि पुरन्दर!। मुनेस्तद्वचनंश्रुत्वावीतरागो बभूव सः।५८
वैराग्यं वर्धयामास तस्य ब्रह्मन्दिने दिने। मुनेः स्थानाद् गृहं गत्वा स ददर्शाऽमरावतीम्।५९
दैत्यैरसुरसङ्घैश्च समाकीर्णां भयाकुलाम्। विषमोपप्लवांकुत्रबन्धुहीनाञ्चकुत्रचित्।६०

पितृमातृकलत्रादिविहीनामतिचञ्चलाम्। शत्रुग्रस्तां च तांदृष्ट्वा जगाम वाक्पतिंप्रति।६१
शक्रोमन्दाकिनीतीरे ददर्श गुरुमीश्वरम्। ध्यायमानं परंब्रह्म गङ्गातोये स्थितं परम्।६२
सूर्याभिसम्मुखं पूर्वमुखञ्च विश्वतोमुखम्। साश्रुनेत्रंपुलकिनंपरमानन्दसंयुतम् ।६३
वरिष्ठञ्च गरिष्ठञ्च धर्मिष्ठं श्रेष्ठसेवितम्। प्रेष्ठञ्चबन्धुवर्गाणामतिश्रेष्ठञ्च ज्ञानिनाम्।६४
ज्येष्ठञ्च भ्रातृवर्गाणामनिष्टं सुरवैरिणाम्। दृष्ट्वा गुरुं जपन्तं च तत्रतस्थौ सुरेश्वरः।६५
प्रहरान्ते गुरुंदृष्ट्वाचोत्थितं प्रणनाम सः। प्रणम्यचरणाम्भोजे रुरोदोच्चैर्मुहुर्मुहुः।६६
वृत्तान्तं कथयामास ब्रह्मशापादिकं तथा। पुनर्वरोपलब्धिञ्च ज्ञानप्राप्तिं सुदुर्लभाम्।६७
वैरिग्रस्ताञ्च स्वपुरीं क्रमेणैव सुरेश्वरः। शिष्यस्य वचनं श्रुत्वा सुबुद्धिर्वदताम्वरः।६८
बृहस्पतिरुवाचेदं कोपसंरक्तलोचनः।

गुरुरुवाच

श्रुतं सर्वं सुरश्रेष्ठ! मा रोदीर्वचनं शृणु ।।६९।।

न कातरो हि नीतिज्ञो विपत्तौचकदाचन। सम्पत्तिर्वाविपत्तिर्वानश्वराश्रमरूपिणी ।७०
पूर्वस्य कर्मायत्ता च स्वयं कर्तातयोरपि। सर्वेषां च भवत्येव शश्वज्जन्मनिजन्मनि।७१
चक्रनेमिक्रमेणैव तत्र का परिदेवना। उक्तं हि स्वकृतं कर्मभुज्यतेऽखिलभारते।७२
शुभाशुभञ्च यत्किञ्चित्तत्स्वकर्मफलभुक्पुमान्। नाऽभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।७३
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। इत्येवमुक्तं वेदे च कृष्णेन परमात्मना।७४
सामवेदोक्तशाखायां सम्बोध्य कमलोद्भवम्। जन्मभोगावशेषेचसर्वेषांकृतकर्मणाम् ।७५
अनुरूपं हि तेषाञ्च भारतेऽन्यत्र चैव हि। कर्मणा ब्रह्मशापं चकर्मणाचशुभाशिषम्।७६
कर्मणाच महालक्ष्मीं लभेद्दैन्यञ्चकर्मणा। कोटिजन्मार्जितं कर्म जीविनामनुगच्छति।७७
नहि त्यजेद्विना भोगं तच्छायेव पुरन्दर!। कालभेदे देशभेदे पात्रभेदे च कर्मणाम्।७८
न्यूनताधिकभावोऽपि भवेदेव हि कर्मणा। वस्तुदानेन वस्तूनां समं पुण्यं दिनेदिने।७९
दिनभेदे कोटिगुणमसङ्ख्याम्वाततोऽधिकम्। समेदेशे चवस्तूनांदानेपुण्यंसमंसुर!।८०
देशभेदे कोटिगुणमसङ्ख्यं वा ततोऽधिकम्। समे पात्रे समं पुण्यं वस्तूनां कर्तुरेव च।८१
पात्रभेदे शतगुणमसङ्ख्यं वा ततोऽधिकम्। यथा फलन्ति सस्यानि न्यूनान्यप्यधिकानि च।८२
कर्षकाणां क्षेत्रभेदे पात्रभेदे फलं तथा। सामान्यदिवसे विप्रदानं समफलं भवेत्।८३
अमायांरविसङ्क्रान्त्यांफलंशतगुणंभवेत्। चातुर्मास्यांपौर्णमास्यामनन्तंफलमेवच ।८४
ग्रहणे शशिनः कोटिगुणं च फलमेव च। सूर्यस्यग्रहणे वाऽपिततो दशगुणंभवेत्।८५
अक्षयायामक्षयं तदसंख्यं फलमुच्यते। एवमन्यत्र पुण्याहे फलाधिक्यं भवेदिति।८६
यथा दाने तथा स्नाने जपेऽन्यपुण्यकर्मसु। एवं सर्वत्र बोद्धव्यं नराणांकर्मणांफलम्।८७
यथा दण्डेन चक्रेणशरावेणभ्रमेण च। कुम्भं निर्माति निर्माता कुम्भकारोमृदाभुवि।८८
तथैव कर्मसूत्रेण फलं धाता ददाति च। यस्याऽऽज्ञया सृष्टमिदं तञ्च नारायणं भज।८९
स विधाता विधातुश्च पातुः पाताजगत्त्रये। स्रष्टुःस्रष्टाचसंहर्तुःसंहर्ताकालकालकः ।९०
महाविपत्तौ संसारे य स्मरेन्मधुसूदनम्। विपत्तौ तस्य सम्पत्तिर्भवेदित्याह शङ्करः।९१
इत्येवमुक्त्वा तत्त्वज्ञः समालिङ्ग्यसुरेश्वरम्। दत्त्वाशुभाशिषं चेष्टंबोधयामासनारद!।९२

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे लक्ष्म्युत्पत्तिवर्णनंनाम चत्वारिंशोऽध्यायः ।।४०।।

* एकचत्वारिंशोऽध्यायः *

लक्ष्म्युपाख्यानवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

हरिं ध्यात्वाहरिर्ब्रह्मञ्जगाम ब्रह्मणः सभाम्। बृहस्पतिं पुरस्कृत्य सर्वैः सुरगणैः सह।१
शीघ्रं गत्वा ब्रह्मलोकं दृष्ट्वा च कमलोद्भवम्। प्रणेमुर्देवताः सर्वाः सहेन्द्रागुरुणा सह।२
वृत्तान्तं कथयामाससुराचार्यो विधिम्प्रति। प्रहस्योवाचतच्छ्रुत्वामहेन्द्रंकमलासनः।३

ब्रह्मोवाच

वत्स! मद्वंशजातोऽसि प्रपौत्रो मे विचक्षणः। बृहस्पतेश्च शिष्यस्त्वं सुराणामधिपः स्वयम्।४
मातामहश्च दक्षस्ते विष्णुभक्तः प्रतापवान्। कुलत्रयं यस्यशुद्धंकथंसोऽहं कृतोभवेत्।५
मातापतिव्रता यस्यपिताशुद्धोजितेन्द्रियः। मातामहोमातुलश्चकथंसोऽहंकृतोभवेत्।६
जनः पैतृकदोषेण दोषान्मातामहस्य च। गुरुदोषात्त्रिभिर्दोषैर्हरिदोषी भवेद्ध्रुवम्।७
सर्वान्तरात्माभगवान्सर्वदेहेष्ववस्थितः। यस्य देहात्सप्रयातिसशवस्तत्क्षणेभवेत्।८
मनोऽहमिन्द्रियेशं च ज्ञानरूपो हि शङ्करः। विष्णुप्राणाच प्रकृतिर्बुद्धिर्भगवतीसती।९
निद्रादयः शक्तयश्च ताः सर्वाः प्रकृतेः कलाः। आत्मनः प्रतिबिम्बश्चजीवोभोगशरीरभृत्।१०
आत्मनीशे गते देहात्सर्वे यान्ति ससम्भ्रमाः। यथावर्त्मनिगच्छन्तंनरदेवमिवानुगाः।११
अहं शिवश्च शेषश्च विष्णुर्धर्मो महाविराट्। यूयंयदंशाभक्ताश्चतत्पुष्पंन्यक्कृतंत्वया।१२
शिवेन पूजितं पादपद्मं पुष्पेण येन च। तत्र दुर्वाससा दत्तं दैवेन न्यक्कृतं त्वया।१३
तत्पुष्पं मस्तके यस्यकृष्णपादाब्जप्रच्युतम्। सर्वेषांचसुराणांचतत्पूजापुरतोभवेत्।१४
दैवेन वञ्चितस्त्वं हि दैवञ्च बलवत्तरम्। भाग्यहीनं जनं मूढं को वारक्षितुमीश्वरः।१५
सा श्रीगताऽधुन्नाकोपात्कृष्णनिर्माल्यवर्जनात्। अधुनागच्छवैकुण्ठंमयाचगुरुणासह।१६
निषेव्य तत्र श्रीनाथं प्राप्स्यसि मद्वरात्। एवमुक्त्वा च स ब्रह्मा सर्वैः सुरगणैःसह।१७
तत्र गत्वा परं ब्रह्म भगवन्तं सनातनम्। दृष्ट्वा तेजःस्वरूपं तं प्रज्वलन्तं स्वतेजसा।१८
ग्रीष्ममध्याह्नमार्तण्डशतकोटिसमप्रभम्। शान्तमनादिमध्यान्तं लक्ष्मीकान्तमनन्तकम्।१९
चतुर्भुजैः पार्षदैश्च सरस्वत्या युतं प्रभुम्। भक्त्या चतुर्भिर्वेदैश्चगङ्गयापरिवेष्टितम्।२०
तं प्रणेमुः सुराः सर्वे मूर्ध्ना ब्रह्मपुरोगमाः। भक्तिनम्राः साश्रुनेत्रास्तुष्टुवुःपरमेश्वरम्।२१
वृत्तान्तं कथयामास स्वयं ब्रह्मा कृताञ्जलिः। रुरुदुर्देवताः सर्वाः स्वाधिकाराच्च्युताश्च ताः।२२
स ददर्श सुरगणं विपद्ग्रस्तं भयाकुलम्। रत्नभूषणशून्यं च वाहनादिविवर्जितम्।२३
शोभाशून्यं हतश्रीकं निष्प्रभं सभयं परम्। उवाच कातरं दृष्ट्वा भयभीतिविभञ्जनः।२४

श्रीभगवानुवाच

माभैर्ब्रह्मन् हे सुराश्चभयंकिंवोमयिस्थिते। दास्यामिलक्ष्मीमचलांपरमैश्वर्यवर्धिनीम्।२५
किञ्चमद्वचनं किञ्चिच्छ्रूयतांसमयोचितम्। हितं सत्यं सारभूतं परिणामसुखावहम्।२६
जनाश्चासंख्यविश्वस्थामदधीनाश्चसन्ततम्। यथातथाऽहंमद्भक्तपराधीनोऽस्वतन्त्रकः।२७
यंयं रुष्टो हि मद्भक्तो मत्परोहि निरङ्कुशः। तद्गृहेऽहं न तिष्ठामिपद्मयासहनिश्चितम्।२८
दुर्वासाः शङ्करांशश्च वैष्णवो मत्परायणः। तच्छापादागतोऽहं च सलक्ष्मीको हि वो गृहात्।२९
यत्र शङ्खध्वनिर्नास्ति तुलसी न शिवार्चनम्। न भोजनं चविप्राणांनपद्मातत्रतिष्ठति।३०
मद्भक्तानांचमेनिन्दा यत्र ब्रह्मन्भवेत्सुराः। महारुष्टा महालक्ष्मीस्ततो यातिपराभवम्।३१
मद्भक्तिहीनो यो मूढो भुङ्क्तेयोहरिवासरे। ममजन्मदिनेवापियातिश्रीस्तद्गृहादपि।३२

मन्नामविक्रयी यश्च विक्रीणाति स्वकन्यकाम्। यत्राऽतिथिर्न भुङ्क्ते च मत्प्रिया याति तद्गृहात्।३३
यो विप्रः पुंश्चलीपुत्रो महापापी च तत्पतिः। पापिनो यो गृहं याति शूद्रश्राद्धाऽन्नभोजकः।३४
महारुष्टा ततो यातिमन्दिरात्कमलालया। शूद्राणां शवदाहीचभाग्यहीनांद्विजाधमः।३५
याति रुष्टा तद्गृहाच्चदेवाः! कमलवासिनी। शूद्राणांसूपकारी यो ब्राह्मणोवृषवाहकः।३६
तत्तोयपानभीता च कमला यातितद्गृहात्। अशुद्धहृदयःक्रूरोहिंसकोनिन्दकोद्विजः ।३७
ब्राह्मणः शूद्रयाजी च याति देवि च तद्गृहात्। अवीरान्नञ्च यो भुङ्क्तेतस्माद्याति जगत्प्रसूः।३८
तृणं छिनत्तिनखरैस्तैर्वा यो विलिखेन्महीम्। निराशो ब्राह्मणो यत्र तद्गृहाद्याति मत्प्रिया।३९
सूर्योदये द्विजो भुङ्क्ते दिवाशायी (स्वापी) च ब्राह्मणः। दिवा मैथुनकारी च यस्तस्माद्याति मत्प्रिया।४०
आचारहीनोविप्रोयोयश्चशूद्रप्रतिग्रही ।अदीक्षितोहियो मूढस्तस्माद्वैयातिमत्प्रिया।४१
स्निग्धपादश्चनग्नो हि यःशेतेज्ञानदुर्बलः। शश्वद्धसतिवाचालोयातिसातद्गृहात्सती।४२
शिरःस्नातस्तु तैलेन योऽन्याङ्गं समुपस्पृशेत्। स्वाङ्गे च वादयेद्वाद्यं रुष्टा सा याति तद्गृहात्।४३
व्रतोपवासहीनो यः सन्ध्याहीनोऽशुचिर्द्विजः। विष्णुभक्तिविहीनस्तु तस्माद्याति च मत्प्रिया।४४
ब्राह्मणंनिन्दयेद्योहितंचयो द्वेष्टि सन्ततम्। जीवहिंसोदयाहीनोयातिसर्वप्रसूस्ततः ।४५
यत्र यत्र हरेरर्चा हरेरुत्कीर्तनं तथा। तत्र तिष्ठति सा देवी सर्वमङ्गलमङ्गला।४६
यत्र प्रशंसा कृष्णस्य तद्भक्तस्य पितामह!। सा च कृष्णप्रिया देवी तत्र तिष्ठति सन्ततम्।४७
यत्र शङ्खध्वनिः शङ्खः शिलाच तुलसीदलम्। तत्सेवावन्दनंध्यानंतत्रसापरितिष्ठति ।४८
शिवलिङ्गार्चनं यत्रतस्य चोत्कीर्तनंशुभम्। दुर्गार्चनंतद्गुणाश्च तत्र पद्मनिवासिनी।४९
विप्राणां सेवनं यत्र तेषाञ्च भोजनं शुभम्। अर्चनं सर्वदेवानां तत्र पद्ममुखी सती।५०
इत्युक्त्वाच सुरान्सर्वान्रमामाहरमापतिः। क्षीरोदसागरेजन्म कलयाऽऽकलयेतिच।५१
इत्युक्त्वा तां जगन्नाथो ब्रह्माणं पुनराह च। मथितासागरं लक्ष्मीं देवेभ्योदेहिपद्मज।५२
इत्युक्त्वा कमलाकान्तोजगामान्तः पुरंमुने!। देवाश्चिरेणकालेनययुः क्षीरोदसागरम्।५३
मन्थानं मन्दरं कृत्वा कूर्मं कृत्वा च भाजनम्। कृत्वा शेषं मन्थपाशं ममन्थुरसुराः सुराः।५४
धन्वन्तरिञ्चपीयूषमुच्चैः प्रवसमीप्सितम्। नानारत्नं हस्तिरत्नंप्रापुर्लक्ष्मींसुदर्शनम्।५५
वनमालांददौ सा च क्षीरोदशायिनेमुने!। सर्वेश्वराय रम्यायविष्णवे वैष्णवीसती।५६
देवैः स्तुता पूजिताच ब्रह्मणा शङ्करेण च। ददौ दृष्टिं सुरगृहे ब्रह्मशापविमोचनात्।५७
प्रापुर्देवाः स्वविषयं दैत्यग्रस्तं भयङ्करम्। महालक्ष्मीप्रसादेन वरदानेन नारद!।५८
इत्येवंकथितं सर्वंलक्ष्म्युपाख्यानमुत्तमम्। सुखदंसारभूतञ्च किं भूयःश्रोतुमिच्छसि।५९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे श्रीलक्ष्म्युपाख्यानवर्णनं नामैकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४१॥

* द्विचत्वारिंशोऽध्यायः *

महालक्ष्म्याध्यानस्तोत्रवर्णनम्

नारद उवाच

हरेरुत्कीर्तनं भद्रं श्रुतं तज्ज्ञानमुत्तमम्। ईप्सितंलक्ष्म्युपाख्यानंध्यानं स्तोत्रंवदप्रभो।१

श्रीनारायण उवाच

स्नात्वा तीर्थे पुरा शक्रा धृत्वा धौते च वाससी। घटं संस्थाप्य क्षीरोदे षड्देवान्पर्यपूजयत्।२
गणेशञ्च दिनेशञ्च वह्निं विष्णुं शिवं शिवाम्। एतान्भक्त्या समभ्यर्च्य पुष्पगन्धादिभिस्तदा।३
आवाह्य च महालक्ष्मींपरमैश्वर्यरूपिणीम्। पूजां चकार देवेशो ब्रह्मणा च पुरोधसा।४

पुरःस्थितेषु मुनिषु ब्राह्मणेषु गुरौ हरौ। देवादिषु सुदेशे च ज्ञानानन्दे शिवे मुने!।५
पारिजातस्यपुष्पञ्चगृहीत्वाचन्दनोक्षितम्। ध्यात्वादेवींमहालक्ष्मींपूजयामासनारद!।६
ध्यानञ्च सामवेदोक्तं यद्दत्तं ब्रह्मणे पुरा। हरिणा तेन ध्यानेन तन्निबोध वदामि ते।७
सहस्रदलपद्मस्थकर्णिकावासिनीं पराम्। शरत्पार्वणकोटीन्दुप्रभामुष्टिकरां पराम्।८
स्वतेजसा प्रज्वलन्तीं सुखदृश्यां मनोहराम्। प्रतप्तकाञ्चननिभशोभां मूर्तिमतीं सतीम्।९
रत्नभूषणभूषाढ्यां शोभितां पीतवाससा। ईषद्धास्यां प्रसन्नास्यां शश्वत्सुस्थिरयौवनाम्।१०
सर्वसम्पत्प्रदात्रीञ्च महालक्ष्मीं भजे शुभाम्। ध्यानेनाऽनेन तां ध्यात्वा नानागुणसमन्विताम्।११
सम्पूज्य ब्रह्मवाक्येन चोपचाराणिषोडश। ददौ भक्त्याविधानेनप्रत्येकं मन्त्रपूर्वकम्।१२
प्रशस्तानि प्रकृष्टानि वराणि विविधानि च। अमूल्यरत्नसारञ्चनिर्मितंविश्वकर्मणा।१३
आसनञ्वविचित्रञ्च महालक्ष्मि! प्रगृह्यताम्। शुद्धंगङ्गोदकमिदंसर्ववन्दितमीप्सितम्।१४
पापेध्मवह्निरूपञ्च गृह्यतां कमलालये!। पुष्पचन्दनदूर्वादि संयुतं जाह्नवीजलम्।१५
शङ्खगर्भस्थितं स्वर्घ्यंगृह्यतांपद्मवासिनि!। सुगन्धिपुष्पतैलञ्चसुगन्धामलकीफलम्।१६
देहसौन्दर्यबीजञ्च गृह्यतां श्रीहरेः प्रिये!। कार्पासजञ्च कृमिजं वसनंदेवि! गृह्यताम्।१७
रत्नस्वर्णविकारञ्च देहभूषाविवर्धनम्। शोभायै श्रीकरं रत्नं भूषणं देवि! गृह्यताम्।१८
सर्वसौन्दर्यबीजञ्चसद्यः शोभाकरं परम्। वृक्षनिर्यासरूपञ्चगन्धद्रव्यादिसंयुतम्।१९
श्रीकृष्णकान्ते! धूपञ्च पवित्रंप्रतिगृह्यताम्। सुगन्धियुक्तं सुखदंचन्दनं देवि! गृह्यताम्।२०
जगच्चक्षुःस्वरूपञ्च पवित्रं तिमिरापहम्। प्रदीपं सुखरूपञ्च गृह्यताञ्च सुरेश्वरि!।२१
नानोपचाररूपञ्चनानारससमन्वितम्। अतिस्वादुकरं चैव नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।२२
अन्नं ब्रह्मस्वरूपञ्च प्राणरक्षणकारणम्। तुष्टिदं पुष्टिदं चैव देव्यन्नं प्रतिगृह्यताम्।२३
शाल्यन्नजं सुपक्वं च शर्करागव्यसंयुतम्। स्वादुयुक्तंमहालक्ष्मि!परमान्नं प्रगृह्यताम्।२४
शर्करागव्यपक्वञ्च सुस्वादुसुमनोहरम्। मयानिवेदितंभक्त्या स्वस्तिकंप्रतिगृह्यताम्।२५
नानाविधानिरम्याणि पक्वान्नानिफलानि च। सुरभिस्तनसन्त्यक्तं सुस्वादुसुमनोहरम्।२६
मर्त्यामृतं सुगव्यञ्च गृह्यतामच्युतप्रिये!। सुस्वादुरससंयुक्तमिक्षुवृक्षसमुद्भवम्।२७
अग्निपक्वमतिस्वादुगुडञ्चप्रतिगृह्यताम्। यवगोधूमसस्यानां चूर्णरेणुसमुद्भवम्।२८
सुपक्वं गुडगव्याक्तं मिष्टान्नं देवि! गृह्यताम्। सस्यचूर्णोद्भवं पक्वं स्वस्तिकादिसमन्वितम्।२९
मया निवेदितंभक्त्यानैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्। शीतवायुप्रदञ्चैव दाहे च सुखदं परम्।३०
कमले गृह्यतां चेदं व्यजनं श्वेतचामरम्। ताम्बूलं च वरंरम्यंकर्पूरादिसुवासितम्।३१
जिह्वाजाड्यच्छेदकरंताम्बूलंप्रतिगृह्यताम्। सुवासितंसुशीतं चपिपासानाशकारणम्।३२
जगज्जीवनरूपञ्च जीवनं देवि! गृह्यताम्। देहसौन्दर्यबीजं च सदा शोभाविवर्धनम्।३३
कार्पासजं च कृमिजं वसनं देवि! गृह्यताम्। रत्नस्वर्णविकारञ्च देहभूषादिवर्धनम्।३४
शोभाधारं श्रीकरञ्चभूषणं देवि! गृह्यताम्। नानाऋतुषु निर्माणं बहुशोभाश्रयं परम्।३५
सुरभूपप्रियं शुद्धं माल्यं देवि! प्रगृह्यताम्। शुद्धिदं शुद्धरूपञ्च सर्वमङ्गलमङ्गलम्।३६
गन्धवस्तूद्भवं रम्यं गन्धं देवि! प्रगृह्यताम्। पुण्यतीर्थोदकञ्चैव विशुद्धं शुद्धिदं सदा।३७
गृह्यतां कृष्णकान्ते! त्वं रम्यमाचमनीयकम्। रत्नसारादिनिर्माणंपुष्पचन्दनचर्चितम्।३८
वस्त्रभूषणभूषाढ्यं सुतल्पं देवि! गृह्यताम्। यद्यद्द्रव्यमपूर्वञ्च पृथिव्यामपिदुर्लभम्।३९
देवभूषार्हभोग्यञ्च तद्द्रव्यं देवि! गृह्यताम्। द्रव्याण्येतानि दत्त्वा च मूलेनदेवपुङ्गवः।४०
मूलं जजाप भक्त्याच दशलक्षं विधानतः। जपेन दशलक्षेण मन्त्रसिद्धिर्बभूव ह।४१

मन्त्रश्च ब्रह्मणादत्तः कल्पवृक्षश्च सर्वतः। लक्ष्मीर्मायाकामवाणीङेता कमलवासिनी।४२
वैदिको मन्त्रराजोऽयं प्रसिद्धः स्वाहयाऽन्वितः। कुबेरोऽनेन मन्त्रेण परमैश्वर्यमाप्तवान्।४३
राजराजेश्वरोदक्षः सावर्णिर्मनुरेव च। मङ्गलोऽनेन मन्त्रेण सप्तद्वीपेऽवनीपतिः।४४
प्रियव्रतोत्तानपादौ केदारोनृप एव च। एते सिद्धाश्च राजेन्द्रा मन्त्रेणाऽनेन नारद!।४५
सिद्धे मन्त्रे महालक्ष्मीः शक्राय दर्शनं ददौ। रत्नेन्द्रसारनिर्माणविमानस्थावरप्रदा ।४६
सप्तद्वीपवतीं पृथ्वीं छादयन्ति त्विषा च सा। श्वेतचम्पकवर्णाभारत्नभूषणभूषिता ।४७
ईषद्धास्यप्रसन्नास्या भक्तानुग्रहकातरा। बिभ्रती रत्नमालाञ्च कोटिचन्द्रसमप्रभाम्।४८
दृष्ट्वा जगत्प्रसूंशान्तां तुष्टावैतां पुरन्दरः। पुलकाञ्चितसर्वाङ्गःसाऽश्रुनेत्रःकृताञ्जलिः।४६
ब्रह्मणा च प्रदत्तेन स्तोत्रराजेन संयुतः। सर्वाभीष्टप्रदेनैव वैदिकेनैव तत्र च।५०

पुरन्दर उवाच

नमः कमलवासिन्यै नारायण्यै नमो नमः। कृष्णप्रियायै सततं महालक्ष्म्यै नमो नमः।५१
पद्मपत्रेक्षणायै च पद्मास्यायै नमो नमः। पद्मासनायै पद्मिन्यै वैष्णव्यै च नमोनमः।५२
सर्वसम्पत्स्वरूपिण्यै सर्वाराध्यै नमोनमः। हरिभक्तिप्रदात्र्यै च हर्षदात्र्यै नमोनमः।५३
कृष्णवक्षः स्थितायै च कृष्णेशायै नमो नमः। चन्द्रशोभास्वरूपायै रत्नपद्मेचशोभने।५४
सम्पत्त्यधिष्ठातृदेव्यै महादेव्यै नमो नमः। नमोवृद्धिस्वरूपायै वृद्धिदायै नमोनमः।५५
वैकुण्ठे या महालक्ष्मीर्यालक्ष्मीः क्षीरसागरे। स्वर्गलक्ष्मीरिन्द्रगेहेराजलक्ष्मीर्नृपालये ।५६
गृहलक्ष्मीश्च गृहीणां गेहे च गृहदेवता। सुरभिः सागरेजातादक्षिणायज्ञकामिनी।५७
अदितिर्देवमाता त्वं कमलाकमलालया। स्वाहा त्वंचहविर्दानेकव्यदानेस्वधास्मृता।५८
त्वं हि विष्णुस्वरूपा च सर्वाधारा वसुन्धरा। शुद्धसत्त्वस्वरूपात्वंनारायणपरायणा ।५६
क्रोधहिंसावर्जिता च वरदा शारदा शुभा। परमार्थप्रदा त्वञ्च हरिदास्यप्रदा परा।६०
यया विना जगत्सर्वं भस्मीभूतमसारकम्। जीवन्मृतं च विश्वं च शश्वत्सर्वं यया विना।६१
सर्वेषाञ्च परामाता सर्वबान्धवरूपिणी। धर्मार्थकाममोक्षाणां त्वं च कारणरूपिणी।६२
यथा माता स्तनान्धानां शिशूनांशैशवे सजा। तथा त्वं सर्वदा माता सर्वेषां सर्वरूपतः।६३
मातृहीनः स्तनान्धस्तु स च जीवति दैवतः। त्वया हीनो जनः कोऽपि न जीवत्येव निश्चितम्।६४
सुप्रसन्नस्वरूपा त्वंमां प्रसन्नाभवाऽम्बिके!। वैरिग्रस्तं च विषयं देहिमह्यं सनातनि।६५
अहंयावत्त्वयाहीनो बन्धुहीनश्च भिक्षुकः। सर्वसम्पद्विहीनश्च तावदेव हरिप्रिये!।६६
ज्ञानं देहि च धर्मञ्च सर्वसौभाग्यमीप्सितम्। प्रभावञ्चप्रतापञ्च सर्वाधिकारमेव च।६७
जयं पराक्रमं युद्धे परमैश्वर्यमेव च। इत्युक्त्वा च महेन्द्रश्च सर्वैः सुरगणैः सह।६८
प्रणनाम साश्रुनेत्रो मूर्ध्ना चैव पुनः पुनः। ब्रह्मा च शङ्करश्चैवशेषोधर्मश्च केशवः।६६
सर्वेचक्रुः परीहारं सुरार्थ च पुनः पुनः। देवेभ्यश्चवरंदत्त्वा पुष्पमालां मनोहराम्।७०
केशवाय ददौ लक्ष्मीः सन्तुष्टा सुरसंसदि। ययुर्देवाश्च सन्तुष्टाः स्वं स्वं स्थानं च नारद!।७१
देवीययौ हरेः स्थानं हृष्टाक्षीरोदशायिनः। ययतुश्चैवस्वगृहं ब्रह्मेशानौ च नारद!।७२
दत्त्वाशुभाशिषं तौचदेवेभ्यः प्रीतिपूर्वकम्। इदं स्तोत्रंमहापुण्यंत्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।७३
कुबेरतुल्यः स भवेद्राजराजेश्वरो महान्। "पञ्चलक्षजपेनैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम्" ।७४
सिद्धस्तोत्रं यदिपठेन्मासमेकन्तु सन्ततम्। महासुखीचराजेन्द्रोभविष्यतिनसंशयः।७५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांनवमस्कन्धे महालक्ष्म्याध्यानस्तोत्रवर्णनंनाम द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ।।४२।।

* त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः *

स्वाहोपाख्यानवर्णनम्

नारद उवाच

नारायण महाभाग! नारायण! महाप्रभो!। रूपेणैव गुणेनैव यशसा तेजसा त्विषा। १
त्वमेव ज्ञानिनां श्रेष्ठः सिद्धानां योगिनां मुने!। तपस्विनां मुनीनाञ्च परो वेदविदाम्वर!। २
महालक्ष्म्या उपाख्यानं विज्ञातं महदद्भुतम्। अन्यत्किञ्चिदुपाख्यानं निगूढं वद साम्प्रतम्। ३
अतीवगोपनीयंयदुपयुक्तं च सर्वतः। अप्रकाश्यं पुराणेषु वेदोक्तं धर्मसंयुतम्। ४

श्रीनारायण उवाच

नानाप्रकारमाख्यानमप्रकाश्यं पुराणतः। श्रुतं कतिविधं गूढमास्ते ब्रह्मन्सुदुर्लभम्। ५
तेषु यत्सारभूतञ्च श्रोतुं किम्वा त्वमिच्छसि। तन्मे ब्रूहि महाभाग! पश्चाद्वक्ष्यामि तत्पुनः। ६

नारद उवाच

स्वाहा देवीं हविर्दाने प्रशस्ता सर्वकर्मसु। पितृदानेस्वधाशस्तादक्षिणासर्वतोवरा। ७
एतासां चरितं जन्मफलंप्राधान्यमेव च। श्रोतुमिच्छामित्वद्वक्त्राद्वदवेदविदाम्बर। ८

सूत उवाच

नारदस्यवचः श्रुत्वा प्रहस्यमुनिसत्तमः। कथां कथितुमारेभे पुराणोक्तांपुरातनीम्। ९

श्रीनारायण उवाच

सृष्टेः प्रथमतो देवाः स्वाहारार्थं ययुः पुरा। ब्रह्मलोकंब्रह्मसभामाजग्मुः सुमनोहराम्। १०
गत्वा निवेदनं चक्रुराहारहेतुकं मुने!। ब्रह्माश्रुत्वा प्रतिज्ञाय निषेवेश्रीहरिं परम्। ११

नारद उवाच

यज्ञरूपोहिभगवान्कलया च बभूव ह। यज्ञेयद्यद्धविर्दानं दत्तं तेभ्यश्च ब्राह्मणैः। १२

श्रीनारायण उवाच

हविर्ददति विप्राश्च भक्त्या च क्षत्रियादयः। सुरानैवप्राप्नुवन्ति तद्दानं मुनिपुङ्गव!। १३
देवा विषण्णास्ते सर्वे तत्सभां च ययुः पुनः। गत्वानिवेदनंचक्रुराहाराभावहेतुकम्। १४
ब्रह्मा श्रुत्वा तु ध्यानेन श्रीकृष्णं शरणं ययौ। पूजाञ्चकार प्रकृतेर्ध्यानेनैव तदाज्ञया। १५
प्रकृतेः कलया चैव सर्वशक्तिस्वरूपिणी। अतीव सुन्दरी श्यामा रमणीया मनोहरा। १६
ईषद्धास्यप्रसन्नास्या भक्तानुग्रहकातरा। उवाचेति विधेरग्रे पद्मयोने! वरं वृणु। १७
विधिस्तद्वचनं श्रुत्वा सम्भ्रमात्समुवाच ताम्।

प्रजापतिरुवाच

त्वमग्नेर्दाहिका शक्तिर्भव याऽतीव सुन्दरी ॥१८॥
दग्धुंनशक्तःप्रकृतीर्हुताशश्चत्वयाविना। त्वन्नामोच्चार्य मन्त्रान्ते यो दास्यतिहविर्नरः। १९
सुरेभ्यस्तत्प्राप्नुवन्तिसुराःसानन्दपूर्वकम्। अग्नेः सम्पत्स्वरूपाचश्रीरूपासागृहेश्वरी। २०
देवानांपूजिताशश्वन्नरादीनांभवाऽम्बिके!। ब्रह्मणश्चवचःश्रुत्वा सा विषण्णाबभूव ह। २१
तमुवाच ततो देवी स्वाभिप्रायं स्वयम्भुवम्।

स्वाहोवाच

अहं कृष्णं भजिष्यामि तपसा सुचिरेण च ॥२२॥
ब्रह्मंस्तदन्यं यत्किञ्चित्स्वप्नवद् भ्रममेव च। विधाता जगतस्त्वञ्च शम्भुर्मृत्युञ्जयो विभुः। २३
विभर्तिशेषो विश्वञ्चधर्मः साक्षीचधर्मिणाम्। सर्वाद्यपूज्योदेवानांगणेषुच गणेश्वरः। २४
प्रकृतिः सर्वसम्पूज्या यत्प्रसादात्पुराऽभवत्। ऋषयो मुनयश्चैव पूजिता यन्निषेवया। २५

तत्पादपद्मं नियतं भावेनचिन्तयाम्यहम्। पद्मास्यापाद्ममित्युक्त्वापद्मनाभानुसारतः।२६
जगाम तपसे देवी ध्यात्वा कृष्णं निरामयम्। तपस्तेपे वर्षलक्षमेकपादेन पद्मजा।२७
तदा ददर्श श्रीकृष्णं निर्गुणम्प्रकृतेः परम्। अतीव कमनीयञ्चरूपं दृष्ट्वा च रूपिणी।२८
मूर्च्छां सम्प्राप कालेन कामेशस्य च कामुकी। विज्ञायतदभिप्रायंसर्वज्ञस्तामुवाचह ।२६
समुत्थाप्य च तां क्रोडे क्षीणाङ्गीं तपसा चिरम् ।

श्रीभगवानुवाच

वाराहे वै त्वमंशेन मम पत्नी भविष्यसि ।।३०।।
नाम्ना नाग्नजितीकन्या कान्ते ! नग्नजितस्य च। अधुनाऽग्नेर्दाहिका त्वं भव पत्नी च भामिनी।३१
मन्त्राङ्गरूपापूजाचमत्प्रसादाद्भविष्यति । वह्निस्त्वांभक्तिभावेनसम्पूज्यचगृहेश्वरीम् ।३२
रमिष्यतित्वयासार्धंरामया रमणीयया। इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवो देवींसम्भाष्यनारद।३३
तत्राऽऽजगामसन्त्रस्तोवह्निर्ब्रह्मनिदेशतः । सामवेदोक्तध्यानेनध्यात्वातांजगदम्बिकाम्।३४
सम्पूज्य परितुष्टाव पाणिं जग्राह मन्त्रतः। तदा दिव्यं वर्षशतं स रेमे रामया सह।३५
अतीव निर्जने देशे सम्भोगसुखदे सदा। बभूव गर्भस्तस्याञ्च हुताशस्यच तेजसा।३६
तं दधार च सा देवी दिव्यंद्वादशवत्सरम्। ततः सुषाव पुत्रांश्च रमणीयान्मनोहरान्।३७
दक्षिणाग्निगार्हपत्याऽऽहवनीयान्क्रमेणच । ऋषयो मुनयश्चैव ब्राह्मणाः क्षत्रियादयः।३८
स्वाहान्तं मन्त्रमुच्चार्यहविर्दानञ्चचक्रिरे। स्वाहायुक्तञ्चमन्त्रञ्चयो गृह्णातिप्रशस्तकम्।३६
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य मन्त्रग्रहणमात्रतः। विषहीनां यथा सर्पा वेदहीनो यथा द्विजः।४०
पतिसेवाविहीनास्त्री विद्याहीनो यथा पुमान्। फलशाखाविहीनश्च यथा वृक्षो हि निन्दितः।४१
स्वाहाहीनस्तथामन्त्रो न हुतः फलदायकः। परितुष्टाद्विजाःसर्वे देवाःसम्प्रापुराहुतीः।४२
स्वाहान्तेनैवमन्त्रेण सफलं सर्वमेव च। इत्येवं कथितं सर्वं स्वाहोपाख्यानमुत्तमम्।४३
सुखदं मोक्षदं सारं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।

नारद उवाच

स्वाहा पूजाविधानञ्च ध्यानं स्तोत्रं मुनीश्वर! ।।४४।।
सम्पूज्य वह्निस्तुष्टाव येन तद्वद मे प्रभो! ।

श्रीनारायण उवाच

ध्यानञ्च सामवेदोक्तं स्तोत्रपूजाविधानकम् ।।४५।।
वदामि श्रूयतां ब्रह्मन्सावधानो मुनीश्वर!। सर्वयज्ञारम्भकाले शालग्रामे घटेऽथवा।४६
स्वाहां सम्पूज्य यत्नेन यज्ञं कुर्यात्फलाप्तये। स्वाहां मन्त्राङ्गयुक्तां च मन्त्रसिद्धिस्वरूपिणीम्।४७
सिद्धां च सिद्धिदां नृणां कर्मणां फलदां शुभाम्। इति ध्यात्वा च मूलेन दत्त्वा पाद्यादिकं नरः।४८
सर्वसिद्धिंलभेत्स्तुत्वामूलमन्त्रंमुने! शृणु। ॐ ह्रीं श्रींवह्निजायायैदेव्यैस्वाहेत्यनेनच।४६
यः पूजयेच्च तां भक्त्या सर्वेष्टं सम्भवेद् ध्रुवम् ।

वह्निरुवाच

स्वाहा वह्निप्रिया वह्निजाया सन्तोषकारिणी ।।५०।।
शक्तिः क्रिया कालदात्रीपरिपाककरी ध्रुवा। गतिः सदा नराणाञ्चदाहिकादहनक्षमा।५१
संसारसाररूपा च घोरसंसारतारिणी। देवजीवनरूपाच देवपोषणकारिणी।५२
षोडशैतानि नामानि यः पठेद्भक्तिसंयुतः। सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य इह लोके परत्र च।५३
नाङ्गहीने भवेत्तस्य सर्वकर्मसुशोभनम्। अपुत्रोलभते पुत्रं भार्याहीनो लभेत्प्रियाम्।५४
रम्भोपमां स्वकान्ताञ्च सम्प्राप्य सुखमाप्नुयात् ।।५५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे स्वाहोपाख्याने त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ।।४३।।

* चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः *

स्वधोपाख्यानवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

नारद! शृणुवक्ष्यामि स्वधोपाख्यानमुत्तमम्। पितॄणाञ्चतृप्तिकरंश्राद्धान्नफलवर्द्धनम्।१
सृष्टेरादौ पितृगणान्ससर्ज जगतां विधिः। चतुरश्च मूर्तिमतस्त्रींश्चतेजः स्वरूपिणः।२
दृष्ट्वा सप्तपितृगणान् सुखरूपान्मनोहरान्। आहारं ससृजे तेषां श्राद्धं तर्पणपूर्वकम्।३
स्नानं तर्पणपर्यन्तंश्राद्धंतुदेवपूजनम्। आह्निकञ्च त्रिसन्ध्यान्तंविप्राणाञ्चश्रुतौश्रुतम्।४
नित्यंनकुर्याद्योविप्रस्त्रिसन्ध्यांश्राद्धतर्पणम्। बलिंवेदध्वनिंसोऽपिविषहीनोयथोरगः।५
देवीसेवाविहीनश्च श्रीहरेरनिवेद्यभुक्। भस्मान्तं सूतकं तस्य न कर्मार्हश्च नारद!।६
ब्रह्मा श्राद्धादिकं सृष्ट्वा जगाम पितृहेतवे। न प्राप्नुवन्ति पितरोददति ब्राह्मणादयः।७
सर्वे च जग्मुः क्षुधिताः खिन्नास्तु ब्रह्मणः सभाम्। सर्वं निवेदनं चक्रुस्तमेव जगतां विधिम्।८
ब्रह्मा च मानसीं कन्यांससृजेच मनोहराम्। रूपयौवनसम्पन्नां शतचन्द्रनिभाननाम्।९
विद्यावतीं गुणवतीमतिरूपवतीं सतीम्। श्वेतचम्पकवर्णाभां रत्नभूषणभूषिताम्।१०
विशुद्धां प्रकृतेरंशां सस्मितां वरदां शुभाम्। स्वधाभिधाञ्च सुदतीं लक्ष्मीलक्षणसंयुताम्।११
शतपद्मपदन्यस्तपादपद्मञ्च बिभ्रतीम्। पत्नीं पितॄणां पद्मास्यांपद्मजां पद्मलोचनाम्।१२
पितृभ्यश्च ददौ ब्रह्मातुष्टेभ्यस्तुष्टिरूपिणीम्। ब्राह्मणानांचोपदेशंचकारगोपनीयकम्।१३
स्वधान्तं मन्त्रमुच्चार्य पितृभ्यो देयमित्यपि। क्रमेण तेन विप्राश्च पित्रेदानंददुःपुरा।१४
स्वाहा शस्ता देवदाने पितृदानेस्वधा स्मृता। सर्वत्र दक्षिणा शस्ता हतं यज्ञमदक्षिणम्।१५
पितरोदेवता विप्रामुनयोमनवस्तथा। पूजांश्चक्रुः स्वधां शान्तां तुष्टुवुः परमादरात्।१६
देवादयश्च सन्तुष्टाः परिपूर्णमनोरथाः। विप्रादयश्च पितरः स्वधादेवी वरेण च।१७
इत्येवंकथितंसर्वंस्वधोपाख्यानमेवच। सर्वेषाञ्च तुष्टिकरं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि।१८

नारद उवाच

स्वधापूजाविधानञ्च ध्यानंस्तोत्रं महामुने!। श्रोतुमिच्छामि यत्नेनवदवेदविदाम्बर।१९

श्रीनारायण उवाच

ध्यानञ्चस्तवनंब्रह्मन्वेदोक्तंसर्वमङ्गलम्। सर्वं जानासि च कथं ज्ञातुमिच्छसि वृद्धये।२०
शरत्कृष्णत्रयोदश्यां मघायां श्राद्धवासरे। स्वधां सम्पूज्य यत्नेन ततः श्राद्धं समाचरेत्।२१
स्वधां नाऽभ्यर्च्य यो विप्रः श्राद्धं कुर्यादहम्मतिः। न भवेत्फलभाक्सत्यं श्राद्धस्य तर्पणस्य च।२२
ब्रह्मणो मानसीं कन्यां शश्वत्सुस्थिरयौवनाम्। पूज्यां वै पितृदेवानां श्राद्धानां फलदां भजे।२३
इति ध्यात्वा शिलायां वा ह्यथवा मङ्गले तटे। दद्यात्पाद्यादिकं तस्यै मूलेनेति श्रुतौ श्रुतम्।२४
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वधादेव्यै स्वाहेति च महामुने!। समुच्चार्य च सम्पूज्य स्तुत्वा तां प्रणमेद् द्विजः।२५
स्तोत्रं शृणु मुनिश्रेष्ठ! ब्रह्मपुत्र विशारद!। सर्ववाञ्छाप्रदं नृणां ब्रह्मणा यत्कृतं पुरा।२६
स्वधोच्चारणमात्रेण तीर्थस्नायी भवेन्नरः। मुच्यते सर्वपापेभ्यो वाजपेयफलंलभेत्।२७
स्वधास्वधास्वधेत्येवं यदिवारत्रयं स्मरेत्। श्राद्धस्यफलमाप्नोतिबलेश्चतर्पणस्यच।२८
श्राद्धकाले स्वधास्तोत्रं यः शृणोति समाहितः। स लभेच्छ्राद्धसम्भूतं फलमेव न संशयः।२९
स्वधास्वधास्वधेत्येवं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः। प्रियां विनीतां स लभेत्साध्वीं पुत्रगुणान्विताम्।३०
पितॄणां प्राणतुल्यात्वंद्विजजीवनरूपिणी। श्राद्धाधिष्ठात्रीदेवीचश्राद्धादीनांफलप्रदा।३१

नित्या त्वं सत्यरूपाऽसिपुण्यरूपासिसुव्रते!। आविर्भावतिरोभावौसृष्टौचप्रलयेतव ।३२
ॐ स्वस्तिश्च नमः स्वाहा स्वधा त्वं दक्षिणा तथा ।
निरूपिताश्चतुर्वेदैः प्रशस्ताः कर्मिणाम्पुनः ।।३३।।
कर्मपूर्त्यर्थमेवैता ईश्वरेण विनिर्मिताः। इत्येवमुक्त्वा स ब्रह्मा ब्रह्मलोकेस्वसंसदि।३४
तस्थौ च सहसा सद्यः स्वधासाऽऽविर्बभूवह। तदापितृभ्यः प्रददौतामेवकमलाननाम् ।३५
तां सम्प्राप्ययुस्तेचपितरश्चप्रहर्षिताः। स्वधास्तोत्रमिदंपुण्यंयः शृणोतिसमाहितः।
स स्नातः सर्वतीर्थेषु वाञ्छितं फलमाप्नुयात् ।।३६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे स्वधोपाख्याने चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ।।४४।।

* पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः *

दक्षिणोपाख्यानवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

उक्तंस्वाहास्वधाख्यानंप्रशस्तंमधुरंपरम् । वक्ष्यामिदक्षिणाख्यानंसावधानोनिशामय। १
गोपी सुशीला गोलोके पुराऽसीत्प्रेयसी हरेः। राधा प्रधाना सध्रीची धन्या मान्या मनोहरा। २
अतीव सुन्दरीरामा सुभगा सुदती सती। विद्यावती गुणवती चाऽतिरूपवतीसती। ३
कलावती कोमलाङ्गी कान्ता कमललोचना। सुश्रोणी सुस्तनी श्यामा न्यग्रोधपरिमण्डिता। ४
ईषद्धास्यप्रसन्नास्या रत्नालङ्कारभूषिता। श्वेतचम्पकवर्णाभा बिम्बोष्ठी मृगलोचना। ५
कामशास्त्रेषु निपुणा कामिनीहंसगामिनी। भावानुरक्ता भावज्ञाकृष्णस्यप्रियभामिनी। ६
रसज्ञा रसिकारासे रासेशस्य रसोत्सुका। उवासाऽदक्षिणेक्रोडेराधायाः पुरतः पुरा। ७
सम्बभूवाऽऽनम्रमुखो भयेन मधुसूदनः। दृष्ट्वा राधाञ्च पुरतो गोपीनां प्रवरोत्तमाम्। ८
कामिनीं रक्तवदनां रक्तपङ्कजलोचनाम्। कोपेनकम्पिताङ्गी च कोपेन स्फुरिताधराम्। ९
वेगेन तां तु गच्छन्तीं विज्ञाय तदनन्तरम्। विरोधभीतोभगवानन्तर्धानं चकार सः।१०
पलायन्तञ्च कान्तञ्च शान्तं सत्त्वं सुविग्रहम्। विलोक्य कम्पिता गोप्यः सुशीलाद्यास्ततो भिया। ११
विलोक्य लम्पटं तत्रगोपीनांलक्षकोटयः। पुटाञ्जलियुताभीताभक्तिनम्रात्मकन्धराः।१२
रक्षरक्षेत्युक्तवन्त्यो देवीमिति पुनः पुनः। ययुर्भयेनशरणं तस्याश्चरणपङ्कजे।१३
त्रिलक्षकोटयो गोपाः सुदामादय एव च। ययुर्भयेन शरणं तत्पादाब्जे च नारद!।१४
पलायन्तञ्च कान्तञ्च विज्ञाय परमेश्वरी। पलायन्तीं सहचरीं सुशीलाञ्च शशाप सा। १५
अद्यप्रभृति गोलोकं सा चेदायाति गोपिका। सद्यो गमनमात्रेण भस्मसाच्च भविष्यति। १६
इत्येवमुक्त्वा तत्रैव देवदेवेश्वरी रुषा। रासेश्वरी रासमध्येरासेशमाजुहाव ह।१७
नाऽऽलोक्य पुरतः कृष्णं राधा विरहकातरा। युगकोटिसमं मेने क्षणभेदेन सुव्रता।१८
हे कृष्ण! प्राणनाथेशाऽऽगच्छ प्राणाधिकप्रिय!। प्राणाधिष्ठातृदेवेश! प्राणा यान्ति त्वया विना। १९
स्त्रीगर्वः पतिसौभाग्याद्वर्धते च दिनेदिने। सुखञ्च विपुलं यस्मात्तं सेवेद्धर्मतः सदा।२०
पतिर्बन्धुः कुलस्त्रीणामधिदेवः सदागतिः। परसम्पत्स्वरूपश्च मूर्त्तिमान्भोगदः सदा।२१
धर्मदः सुखदः शश्वत्प्रीतिदः शान्तिदः सदा। सम्मानैर्दीप्यमानश्चमानदोमानखण्डनः ।२२
सारात्सारतरः स्वामीबन्धूनां बन्धुवर्धनः। न च भर्तुः समोबन्धुर्बन्धोर्बन्धुषु दृश्यते।२३
भरणादेव भर्ता च पालनात्पतिरुच्यते। शरीरेशाच्च स स्वामी कामदः कान्तउच्यते।२४

बन्धुश्चसुखवृद्ध्याचप्रीतिदानात्प्रियः स्मृतः। ऐश्वर्यदानादीशश्चप्राणेशात्प्राणनायकः ।२५
रतिदानाच्च रमणः प्रियो नास्तिप्रियात्परः। पुत्रस्तुस्वामिनः शुक्राज्जायतेतेनसप्रियः।२६
शतपुत्रात्परः स्वामी कुलजानां प्रियः सदा। असत्कुलप्रसूताया कान्तंविज्ञातुमक्षमा।२७
स्नानञ्च सर्वतीर्थेषु सर्वयज्ञेषु दक्षिणा। प्रादक्षिण्यं पृथिव्याश्चसर्वाणि च तपांसिच।२८
सर्वाण्येव व्रतादीनि महादानानि यानि च। उपोषणानि पुण्यानि यानि यानि श्रुतानि च।२९
गुरुसेवा विप्रसेवा देवसेवादिकञ्च यत्। स्वामिनः पादसेवायाः कलां नार्हन्ति षोडशीम्।३०
गुरुविप्रेन्द्रदेवेषु सर्वेभ्यश्च पतिर्गुरुः। विद्यादाता यथा पुंसा कुलजानां तथाप्रियः।३१
गोपीनांलक्षकोटीनांगोपानाञ्चतथैव च। ब्रह्माण्डानामसङ्ख्यानांतत्रस्थानांतथैवच।३२
विश्वादिगोलकान्तानामीश्वरी यत्प्रसादतः। अहंनजानेतंकान्तंस्त्रीस्वभावोदुरत्ययः।३३
इत्युक्त्वा राधिका कृष्णं तत्र दध्यौ स्वभक्तितः। रुरोद प्रेम्णा सा राधा नाथनाथेति चाऽब्रवीत्।३४
दर्शनं देहिरमण दीना विरहदुःखिता। अथ सा दक्षिणादेवी ध्वस्तागोलोकतोमुने।३५
सुचिरं च तपस्तप्त्वा विवेश कमलातनौ। अथ देवादयः सर्वेयज्ञं कृत्वासुदुष्करम्।३६
नालभंस्तेफलं तेषांविषण्णाः प्रययुर्विधम्। विधिर्निवेदनंश्रुत्वादेवादीनांजगत्पतिम्।३७
दध्यौ च सुचिरं भक्त्या प्रत्यादेशमवापसः। नारायणश्चभगवान्महालक्ष्म्याश्चदेहतः ।३८
विनिष्कृष्यमर्त्यलक्ष्मींब्रह्मणे दक्षिणांददौ। ब्रह्माददौतां यज्ञाय पूरणार्थञ्चकर्मणाम्।३९
यज्ञः सम्पूज्य विधिवत्तां तुष्टाव तदामुदा। तप्तकाञ्चनवर्णाभांचन्द्रकोटिसमप्रभाम्।४०
अतीव कमनीयाञ्च सुन्दरीं सुमनोहराम्। कमलास्यांकोमलाङ्गींकमलायतलोचनाम्।४१
कमलासनपूज्यां च कमलाङ्गसमुद्भवाम्। वह्निशुद्धांशुकाधानां बिम्बोष्ठीं सुदतीं सतीम्।४२
बिभ्रतीं कबरीभारं मालतीमाल्यसंयुतम्। ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां रत्नभूषणभूषिताम्।४३
सुवेषाढ्याञ्च सुस्नातां मुनिमानसमोहिनीम्। कस्तूरीबिन्दुभिः सार्धं सुगन्धिचन्दनेन्दुभिः।४४
सिन्दूरबिन्दुनाऽल्पेनाऽप्यलकाधःस्थलोज्ज्वलाम्। सुप्रशस्तनितम्बाढ्यां बृहच्छ्रोणिपयोधराम्।४५
कामदेवाधाररूपां कामबाणप्रपीडिताम्। तां दृष्ट्वा रमणीयाञ्च यज्ञो मूर्च्छामवापह।४६
पत्नीं तामेव जग्राह विधिबोधितपूर्वकम्। दिव्यं वर्षशतञ्चैव तां गृहीत्वा तु निर्जने।४७
यज्ञो रेमे मुदा युक्तो रामेशो रमया सह। गर्भं दधार सा देवी दिव्यं द्वादशवर्षकम्।४८
ततः सुषाव पुत्रं च फलं वै सर्वकर्मणाम्। परिपूर्णे कर्मणि च तत्पुत्रः फलदायकः।४९
यज्ञो दक्षिणया सार्धं पुत्रेण चफलेन च। कर्मिणाम्फलदाता चेत्येवं वेदविदोविदुः।५०
यज्ञश्च दक्षिणां प्राप्य पुत्रञ्च फलदायकम्। फलं ददौ च सर्वेभ्यः कर्मणां चैव नारद!।५१
तदा देवादयस्तुष्टाः परिपूर्णमनोरथाः। स्वस्थाने ते ययुः सर्वेधर्मवक्त्रादिदं श्रुतम्।५२
कृत्वाकर्म च कर्ता च तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम्। तत्क्षणं फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदंमुने।५३
कर्मी कर्मणि पूर्णेच तत्क्षणेयदिदक्षिणाम्। नदद्याद्ब्राह्मणेभ्यश्चदैवेनाज्ञानतोऽथवा।५४
मुहूर्त समतीते तु द्विगुणा सा भवेद्ध्रुवम्। एकरात्रे च भवेच्छतगुणा च सा।५५
त्रिरात्रे तच्छतगुणा सप्ताहे द्विगुणा ततः। मासेलक्षगुणाप्रोक्ताब्राह्मणानां च वर्धते।५६
सम्वत्सरे व्यतीते तुसात्रिकोटिगुणाभवेत्। कर्मतद्यजमातानांसर्वंवैनिष्फलंभवेत् ।५७
स च ब्रह्मस्वहारी च न कर्माऽर्होऽशुचिर्नरः। दरिद्रोव्याधियुक्तश्च तेनपापेन पातकी।५८
तद्गृहाद्याति लक्ष्मीश्च शापं दत्त्वा सुदारुणम्। पितरोनैवगृह्णन्तितद्दत्तंश्राद्धतर्पणम् ।५९
एवं सुराश्च तत्पूजां तद्दत्तामग्निराहुतिम्। दत्तं न दीयते दानं ग्रहीतानैव याचते।६०
उभौ तौ नरके यातश्छिन्नरज्जौयथा घटः। नार्पयेद्यजमानश्चेद्याचितश्चापिदक्षिणाम्।६१

भवेद् ब्रह्मस्वापहारी कुम्भीपाकं व्रजेद् ध्रुवम्।वर्षलक्षं वसेत्तत्र यमदूतेन ताडितः।६२
ततो भवेत्स चाण्डालो व्याधियुक्तो दरिद्रकः।पातयेत्पुरुषान्सप्तपूर्वांश्चसप्तजन्मतः ।६३
इत्येवं कथितं विप्रः किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।

नारदउवाच

यत्कर्म दक्षिणाहीनं को भुङ्क्ते तत्फलं मुने! ।।६४।।
पूजाविधिं दक्षिणायाः पुरा यज्ञकृतं वद ।

श्रीनारायणउवाच

कर्मणोऽदक्षिणस्यैव कुत एव फलं मुने! ।।६५।।
सदक्षिणे कर्मणि च फलमेव प्रवर्तते।अदक्षिणं च यत्कर्म तद्भुङ्क्ते च बलिर्मुने।६६
वलये तत्प्रदत्तञ्च वामनेन पुरा मुने।अश्रोत्रियः श्राद्धद्रव्यमश्रद्धादानमेव च।६७
वृषलीपतिविप्राणां पूजाद्रव्यादिकञ्चयत्।असद्द्विजैः कृतं यज्ञमशुचेः पूजनञ्च यत्।६८
गुरावभक्तस्य कर्मबलिभुङ्क्तेनसंशयः।दक्षिणायाश्चयद्ध्यानंस्तोत्रंपूजाविधिक्रमम्।६९
तत्सर्वं कण्वशाखोक्तं प्रवक्ष्यामि निशामय।पुरा सम्प्राप्य तां यज्ञः कर्मदक्षाञ्च दक्षिणाम्।७०
मुमोहाऽस्याः स्वरूपेण तुष्टाव कामकातरः ।

यज्ञउवाच

पुरा गोलोकगोपी त्वं गोपीनां प्रवरावरा ।।७१।।
राधासमातत्सखीचश्रीकृष्णप्रेयसीप्रिया ।कार्त्तिकी पूर्णिमायांतुरासेराधामहोत्सवे।७२
आविर्भूतादक्षिणांसाल्लक्ष्म्याश्चतेनदक्षिणा।पुरात्वञ्चसुशीलाख्याताशीलेनशोभने ।७३
लक्ष्मी दक्षांसभागात्त्वं राधाशापाच्च दक्षिणा।गोलोकात्त्वं परिभ्रष्टा मम भाग्यादुपस्थिता।७४
कृपां कुरुमहाभागे! मामेव स्वामिनं कुरु।कर्मिणां कर्मणा देवी त्वमेवफलदासदा।७५
त्वया विना च सर्वेषां सर्वं कर्म च निष्फलम्।त्वया विना तथा कर्म कर्मिणां च न शोभते।७६
ब्रह्मविष्णुमहेशाश्च दिक्पालादय एव च।कर्मणश्च फलं दातुं न शक्ताश्चत्वयाविना।७७
कर्मरूपी स्वयं ब्रह्मा फलरूपी महेश्वरः।यज्ञरूपी विष्णुरहं त्वमेषां साररूपिणी।७८
फलदातृपरं ब्रह्म निर्गुणा प्रकृतिः परा।स्वयं कृष्णश्च भगवान्स चशक्तस्त्वयासह।७९
त्वमेव शक्तिः कान्ते मे शश्वज्जन्मनि जन्मनि।सर्वकर्मणि शक्तोऽहंत्वयासहवरानने।८०
इत्युक्त्वा च पुरस्तस्थौ यज्ञाधिष्ठातृदेवता।तुष्टा बभूव सा देवी भेजेतंकमलाकला।८१
इदं च दक्षिणास्तोत्रं यज्ञकालेच यः पठेत्।फलंच सर्वयज्ञानां प्राप्नोतिनाऽत्रसंशयः।८२
राजसूये वाजपेये गोमेधे नरमेधके।अश्वमेधे लाङ्गले च विष्णुयज्ञे यशस्करे।८३
धनदे भूमिदे पूर्ते फलदे गजमेधके।लोह यज्ञे स्वर्णयज्ञे रत्नयज्ञेऽथ ताम्रके।८४
शिवयज्ञे रुद्रयज्ञे शक्रयज्ञे च बन्धुके।वृष्टौ वरुणयागे च कण्डके वैरिमर्दने।८५
शुचियज्ञे धर्मयज्ञेऽध्वरे च पापमोचने।ब्रह्माणी कर्मयागे च योनियागे च भद्रके।८६
एतेषां च समारम्भे इदं स्तोत्रं च यः पठेत्।निर्विघ्नेनचतत्कर्मसर्वंभवतिनिश्चितम् ।८७
इदं स्तोत्रञ्च कथितं ध्यानंपूजाविधिं शृणु।शालग्रामेघटेवाऽपिदक्षिणांपूजयेत्सुधीः।८८
लक्ष्मीदक्षांससम्भूतां दक्षिणां कमलाकलाम्।सर्वकर्मसुदक्षाञ्च फलदां सर्वकर्मणाम्।८९
विष्णोः शक्तिस्वरूपाञ्च पूजितां वन्दितां शुभाम् ।
शुद्धिदां शुद्धिरूपाञ्च सुशीलां शुभदां भजे ।।९०।।
ध्यात्वाऽनेनैव वरदां मूलेन पूजयेत्सुधीः।दत्त्वा पाद्यादिकं देव्यै वेदोक्तेनैव नारद!।९१
ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं दक्षिणायै स्वाहेति च विचक्षणः।पूजयेद्विधिवद्भक्त्या दक्षिणां सर्वपूजिताम्।९२

इत्येवं कथितं ब्रह्मन्दक्षिणाख्यानमेव च। सुखदं प्रीतिदं चैव फलदं सर्वकर्मणाम्।६३
इदञ्च दक्षिणाख्यानं यः शृणोति समाहितः। अङ्गहीनञ्च तत्कर्मन भवेद्भारते भुवि।६४
अपुत्रोलभतेपुत्रंनिश्चितंचगुणान्वितम् । भार्याहीनो लभेद्भार्यांसुशीलांसुन्दरींपराम्।६५
वरारोहांपुत्रवतीं विनीतां प्रियवादिनीम्। पतिव्रतांचशुद्धांचकुलजां चवधूंवराम्।६६
विद्याहीनो लभेद्विद्यांधनहीनोलभेद्धनम्। भूमिहीनोलभेद्भूमिंप्रजाहीनोलभेत्प्रजाम्।६७
सङ्कटे बन्धुविच्छेदे विपत्तौबन्धनेतथा। मासमेकमिदं श्रुत्वा मुच्यते नाऽत्र संशयः।६८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे दक्षिणोपाख्याने पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ।।४५।।

* षट्चत्वारिंशोऽध्यायः *

षष्ठ्युपाख्यानवर्णनम्

नारद उवाच

अनेकानां च देवीनां श्रुतमाख्यानमुत्तमम्। अन्यासां चरितं ब्रह्मन्वद वेदविदाम्वर!।१

श्रीनारायण उवाच

सर्वासां चरितंविप्रवेदेषुच पृथक्पृथक्। पूर्वोक्तानाञ्च देवीनांकासांश्रोतुमिहेच्छसि।२

नारद उवाच

षष्ठी मङ्गलचण्डी च मनसाप्रकृतेः कला। उत्पत्तिमासांचरितंश्रोतुमिच्छामितत्त्वतः।३

श्रीनारायण उवाच

षष्ठांशा प्रकृतेर्या च सा च षष्ठीप्रकीर्तिता। बालकानामधिष्ठात्रीविष्णुमायाचबालदा।४
मातृकासु च विख्याता देवसेनाभिधा च या। प्राणाधिकप्रिया साध्वी स्कन्दभार्या च सुव्रता।५
आयुःप्रदा च बालानां धात्री रक्षणकारिणी। सततं शिशुपार्श्वस्था योगेन सिद्धियोगिनी।६
तस्याः पूजाविधिं ब्रह्मन्नितिहासमिदं शृणु। यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रेण सुखदंपुत्रदं परम्।७
राजा प्रियव्रतश्चाऽऽसीत्स्वायम्भुवमनोः सुतः। योगीन्द्रो नोद्वहद्भार्यां तपस्यासु रतः सदा।८
ब्रह्माज्ञया च यत्नेन कृतदारो बभूव ह। सुचिरं कृतदारश्च न लेभे तनयं मुने!।९
पुत्रेष्टियज्ञं तं चापि कारयामास कश्यपः। मालिन्यै तस्यकान्तायै मुनिर्यज्ञचरुं ददौ।१०
भुक्त्वा च तं चरुं तस्याः सद्यो गर्भो बभूव ह। दधार तं च सा देवी दैवं द्वादशवत्सरम्।११
ततः सुषाव सा ब्रह्मन्कुमारं कनकप्रभम्। सर्वावयवसम्पन्नं मृतमुत्तारलोचनम्।१२
तं दृष्ट्वा रुरुदुः सर्वा नार्यश्च बान्धवस्त्रियः। मूर्च्छामवाप तन्मातापुत्रशोकेन भूयसा।१३
श्मशानं च ययौ राजा गृहीत्वा बालकं मुने!। रुरोद तत्र कान्तारे पुत्रं कृत्वा स्ववक्षसि।१४
नोत्सृजद्बालकं राजा प्राणांस्त्यक्तुं समुद्यतः। ज्ञानयोगं विसस्मार पुत्रशोकात्सुदारुणात्।१५
एतस्मिन्नन्तरे तत्र विमानञ्च ददर्श सः। शुद्धस्फटिकसङ्काशं मणिराजविनिर्मितम्।१६
तेजसा ज्वलितं शश्वच्छोभितं क्षौमवाससा। नानाचित्रविचित्राढ्यं पुष्पमालाविराजितम्।१७
ददर्श तत्र देवीं च कमनीयांमनोहराम्। श्वेतचम्पकवर्णाभां शश्वत्सुस्थिरयौवनाम्।१८
ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां रत्नभूषणभूषिताम्। कृपामयीं योगसिद्धांभक्ताऽनुग्रहकातराम्।१९
दृष्ट्वा तां पुरतो राजा तुष्टाव परमादरम्। चकार पूजनं तस्या विहाय बालकं भुवि।२०
पप्रच्छ राजा तां तुष्टां ग्रीष्मसूर्यसमप्रभाम्। तेजसा ज्वलितां शान्तां कान्तां स्कन्दस्य नारद!।२१

राजोवाच

का त्वं सुशोभने! कान्ते! कस्य कान्ताऽसि सुव्रते! ।
कस्य कन्या वरारोहे! धन्या मान्या च योषिताम् ।।२२।।

नृपेन्द्रस्य वचः श्रुत्वा जगन्मङ्गलचण्डिका। उवाच देवसेनासा देवानां रणकारिणी।२३
देवानां दैत्यग्रस्तानां पुरासेना बभूव सा। जयं ददौ सा तेभ्यश्चदेवसेना च तेन सा।२४

श्रीदेवसेनोवाच

ब्रह्मणो मानसीकन्या देवसेनाऽहमीश्वरी। सृष्ट्वा मांमनसाधातादवौस्कन्दायभूमिप।२५
मातृकासुचविख्यातास्कन्दभार्याचसुव्रता। विश्वेषष्ठीतिविख्याताषष्ठांशाप्रकृतेः परा।२६
अपुत्राय पुत्रदाऽहं प्रियादात्री प्रियाय च। धनदाऽहंदरिद्रेभ्यः कर्मिभ्यश्च स्वकर्मदा।२७
सुखं दुःखं भयं शोको हर्षोमङ्गलमेव च। सम्पत्तिश्चविपत्तिश्च सर्वं भवति कर्मणा।२८
कर्मणा बहुपुत्रश्च वंशहीनः स्वकर्मणा। कर्मणा मृतपुत्रश्च कर्मणा चिरजीवनः।२९
कर्मणा गुणवांश्चैव कर्मणा चाऽङ्गहीनकः। कर्मणा बहुभार्यश्च भार्याहीनश्च कर्मणा।३०
कर्मणा रूपवान्धर्मी रोगी शश्वत्स्वकर्मणा। कर्मणा च भवेद्व्याधिः कर्मणाऽऽरोग्यमेव च।३१
तस्मात्कर्म परंराजन्सर्वेभ्यश्च श्रुतौश्रुतम्। इत्येवमुक्त्वासादेवीगृहीत्वाबालकंमुने!।३२
महाज्ञानेन सा देवी जीवयामास लीलया। राजा ददर्श तं बालंसस्मितं कनकप्रभम्।३३
देवसेना च पश्यन्तं नृपमापृच्छ्य सा तदा। गृहीत्वा बालकंदेवी गगनंगन्तुमुद्यता।३४
पुनस्तुष्टाव तां राजा शुष्ककण्ठौष्ठतालुकः। नृपस्तोत्रेण सादेवी परितुष्टा बभूव ह।३५

उवाच तं नृपं ब्रह्मन्! वेदोक्तं कर्म निर्मितम् ।

देव्युवाच

त्रिषु लोकेषु त्वं राजा स्वायम्भुवमनोः सुतः ।।३६।।

ममपूजाञ्चसर्वत्रकारयित्वास्वयं कुरु। तदादास्यामि पुत्रं ते कुलपद्मं मनोहरम्।३७
सुव्रतं नामविख्यातंगुणवन्तंसुपण्डितम्। जातिस्मरञ्चयोगीन्द्रंनारायणकलात्मकम्।३८
शतक्रतुकरं श्रेष्ठं क्षत्रियाणां च वन्दितम्। मत्तमातङ्गलक्षाणांधृतवन्तंबलं शुभम्।३९
धनिनं गुणिनं शुद्धं विदुषांप्रियमेव च। योगिनांज्ञानिनांचैवसिद्धिरूपंतपस्विनाम्।४०
यशस्विनञ्च लोकेषु दातारं सर्वसम्पदाम्। इत्येवमुक्त्वा सादेवीतस्मैतद्बालकंददौ।४१
राजा चकार स्वीकारं पूजार्थञ्च प्रियव्रतः। जगामदेवीस्वर्गञ्च दत्त्वातस्मैशुभं वरम्।४२
आजगाम सहामात्यः स्वगृहं हृष्टमानसः। आगत्य कथयामास वृत्तान्तं पुत्रहेतुकम्।४३
श्रुत्वा बभूवुः सन्तुष्टा नरा नार्यश्च नारद!। मङ्गलं कारयामास सर्वत्र पुत्रहेतुकम्।४४
देवीं च पूजयामास ब्राह्मणेभ्यो धनं ददौ। राजाचप्रतिमासेषुशुक्लषष्ठ्यांमहोत्सवम्।४५
षष्ठ्या देव्याश्च यत्नेन कारयामास सर्वतः। बालानां सूतिकागारे षष्ठाहे यत्नपूर्वकम्।४६
तत्पूजां कारयामास चैकविंशतिवासरे। बालानां शुभकार्ये च शुभाऽन्नप्राशने तथा।४७
सर्वत्र वर्धयामास स्वयमेव चकार ह। ध्यानं पूजाविधानञ्चस्तोत्रंमत्तो निशामय।४८
यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रेण कौथुमोक्तं च सुव्रत!। शालग्रामे घटेवाऽथवटमूलेऽथवा मुने।४९
भित्त्यां पुत्तलिकां कृत्वा पूजयेद्वाविचक्षणः। षष्ठांशां प्रकृतेः शुद्धां प्रतिष्ठाप्य च सुप्रभाम्।५०
सुपुत्रदां च शुभदां दयारूपां जगत्प्रसूम्। श्वेतचम्पकवर्णाभां रत्नभूषणभूषिताम्।५१
पवित्ररूपां परमां देवसेनां परांभजे। इतिध्यात्वा स्वशिरसि पुष्पंदत्त्वाविचक्षणः।५२
पुनर्ध्यात्वा च मूलेन पूजयेत्सुव्रतां सती म्। पाद्यार्घ्याचमनीयैश्चगन्धपुष्पप्रदीपकैः ।५३

नैवेद्यैर्विविधैश्चापि फलेन शोभनेन च। ॐ ह्रींषष्ठीदेव्यैस्वाहेति विधिपूर्वकम्।५४
अष्टाक्षरं महामन्त्रं यथाशक्ति जपेन्नरः। ततः स्तुत्वा च प्रणमेद्भक्तियुक्तः समाहितः।५५
स्तोत्रञ्च सामवेदोक्तं वरंपुत्रफलप्रदम्। अष्टाक्षरं महामन्त्रं लक्षधा यो जपेत्ततः।५६
सुपुत्रञ्च लभेन्नूनमित्याह कमलोद्भवः। स्तोत्रं शृणु मुनिश्रेष्ठ सर्वकामशुभावहम्।५७
वाञ्छाप्रदञ्च सर्वेषां गूढं वेदेषु नारद!। नमो देव्यै महादेव्यै सिद्ध्यैशान्त्यैनमोनमः।५८
शुभायै देवसेनायै षष्ठ्यै देव्यैनमोनमः। वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।५९
सुखदायै मोक्षदायै षष्ठ्यै देव्यै नमो नमः। षष्ठ्यै षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।६०
मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः। सारायै शारदायै च परादेव्यै नमो नमः।६१
वालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः। कल्याणदायै कल्याण्यैफलदायैचकर्मणाम्।६२
प्रत्यक्षायै स्वभक्तानां षष्ठ्यैदेव्यैनमोनमः। पूज्यायैस्कन्दकान्तायैसर्वेपांसर्वकर्मसु ।६३
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमोनमः। शुद्धसत्त्वस्वरूपायैवन्दितायै नृणां सदा।६४
हिंसाक्रोधवर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमोनमः। धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरी।६५
मानं देहि जयं देहि द्विषो जहि महेश्वरि!। धर्मं देहि यशोदेहि षष्ठीदेव्यै नमोनमः।६६
देहि भूमिं प्रजां देहि विद्यां देहि सुपूजिते!। कल्याणञ्च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः।६७
इति देवीञ्च संस्तूय लेभे पुत्रं प्रियव्रतः। यशस्विनं च राजेन्द्रः षष्ठीदेव्याः प्रसादतः।६८
षष्ठीस्तोत्रमिदंब्रह्मन्यः शृणोति तु वत्सरम्। अपुत्रो लभतेपुत्रं वरं सुचिरजीवनम्।६९
वर्षमेकं यो भक्त्या सम्पूज्येदंशृणोति च। सर्वपापाद्विनिर्मुक्तोमहावन्ध्याप्रसूयते।७०
वीरं पुत्रञ्च गुणिनं विद्यावन्तं यशस्विनम्। सुचिरायुष्यवन्तं च सूतेदेवीप्रसादतः।७१
काकवन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च याभवेत्। वर्षं श्रुत्वा लभेत्पुत्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः।७२
रोगयुक्ते च बाले च पिता माता शृणोति चेत्। मासेन मुच्यते बालः षष्ठीदेवीप्रसादतः।७३

इतिश्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारद सम्वादे षष्ठ्युपाख्याने षट्चत्वारिंशोऽध्यायः।।४६।।

* सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः *

मङ्गलचण्ड्युपाख्यानवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

कथितंषष्ठ्यु पाख्यानंब्रह्मपुत्र! यथाऽऽगमम्। देवीमङ्गलचण्डीच तदाख्यानंनिशामय।१
तस्याः पूजादिकं सर्वं धर्मवक्त्रेण यच्छ्रुतम्। श्रुतिसंमतमेवेष्टं सर्वेषां विदुषामपि।२
दक्षा या वर्तते चण्डीकल्याणेषुच मङ्गला। मङ्गलेषुचया दक्षा साच मङ्गलचण्डिका।३
पूज्यायावर्ततेचण्डीमङ्गलोऽपिमहीसुतः। मङ्गलाऽभीष्टदेवीया सावामङ्गलचण्डिका।४
मङ्गलो मनुवंश्यश्च सप्तद्वीपधरापतिः। तस्य पूज्याऽभीष्टदेवी तेन मङ्गलचण्डिका।५
मूर्तिभेदेन सा दुर्गा मूलप्रकृतिरीश्वरी। कृपारूपाऽतिप्रत्यक्षा योषितामिष्टदेवता।६
प्रथमे पूजिता सा च शङ्करेण परात्परा। त्रिपुरस्य वधे घोरे विष्णुना प्रेरितेन च।७
ब्रह्मन्ब्रह्मोपदेशेन दुर्गतेन च सङ्कटे। आकाशात्पतिते याने दैत्येन पातितेरुषा।८
ब्रह्मविष्णूपदिष्टश्च दुर्गां तुष्टाव शङ्करः। सा च मङ्गलचण्डी या बभूव रूपभेदतः।९
उवाच पुरतः शम्भोर्भयंनास्तीति ते प्रभो!। भगवान्वृषरूपश्चसर्वेशस्ते भविष्यति।१०
युद्धशक्तिस्वरूपाऽहं भविष्यामि न संशयः। मायात्मना च हरिणा सहायेनवृषध्वज।११

जहि दैत्यं स्वशत्रुं च सुराणां पदघातकम्। इत्युक्त्वान्तर्हिता देवी शम्भोः शक्तिर्बभूव सा।१२
विष्णुदत्तेन शस्त्रेण जघानतमुमापतिः। मुनीन्द्रपतिते दैत्ये सर्वे देवा महर्षयः।१३
तुष्टुवुः शङ्करं देवं भक्तिनम्रात्मकन्धराः। सद्यः शिरसि शम्भोश्च पुष्पवृष्टिर्बभूवह।१४
ब्रह्माविष्णुश्चसन्तुष्टोददौतस्मै शुभाशिषम्। ब्रह्मविष्णूपदिष्टश्चसुस्नातः शङ्करस्तथा।१५
पूजयामासतांभक्त्यादेवीं मङ्गलचण्डिकाम्। पाद्यार्घ्याचमनीयैश्च वस्त्रैश्चविविधैरपि।१६
पुष्पचन्दननैवेद्यैर्भक्त्या नानाविधैर्मुने!। छागैर्मेषैश्च महिषैर्गवयैः पक्षिभिस्तथा।१७
वस्त्रालङ्कारमाल्यैश्च पायसैः पिष्टकैरपि। मधुभिश्च सुधाभिश्च फलैर्नानाविधैरपि।१८
सङ्गीतैर्नर्तकैर्वाद्यैरुत्सवैर्नामकीर्तनैः। ध्यात्वा माध्यन्दिनोक्तेन ध्यानेन भक्तिपूर्वकम्।१९
ददौ द्रव्याणि मूलेन मन्त्रेणैव च नारद!। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्येदेवि! मङ्गलचण्डिके।२०
हूंहूं फट्स्वाहाऽप्येकविंशाक्षरो मन्त्रः। पूज्यः कल्पतरुश्चैव भक्तानां सर्वकामदः।२१
दशलक्षजपेनैव मन्त्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्। ध्यानञ्च श्रूयतां ब्रह्मन्वेदोक्तं सर्वसम्मतम्।२२
देवींषोडशवर्षीयांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम्। बिम्बोष्ठींसुदतींशुद्धां शतपद्मनिभानाम्।२३
श्वेतचम्पकवर्णाभां सुनीलोत्पललोचनाम्। जगद्धात्रीञ्च दात्रीञ्च सर्वेभ्यः सर्वसम्पदाम्।२४
संसारसागरे घोरे ज्योतिरूपां सदा भजे। देव्याश्च ध्यानमित्येवं स्तवनंश्रूयतांमुने।२५

महादेव उवाच

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि! मङ्गलचण्डिके!। हारिके! विपदां राशेर्हर्षमङ्गलकारिके!।२६
हर्षमङ्गलदक्षे! च हर्षमङ्गलदायिके!। शुभे मङ्गलदक्षे! च शुभे! मङ्गलचण्डिके!।२७
मङ्गले! मङ्गलार्हे! च सर्वमङ्गलमङ्गले!। सतां मङ्गलदे! देवि! सर्वेषां मङ्गलालये!।२८
पूज्ये! मङ्गलवारे च मङ्गलाभीष्टदेवते!। पूज्ये! मङ्गलभूपस्य मनुवंशस्य सन्ततम्।२९
मङ्गलाधिष्ठातृ! देवि! मङ्गलानाञ्च मङ्गले!। संसारमङ्गलाधारे! मोक्षमङ्गलदायिनि!।३०
सारे! च मङ्गलाधारे पारे! च सर्वकर्मणाम्। प्रतिमङ्गलवारे च पूज्ये! मङ्गसुखप्रदे!।३१
स्तोत्रेणानेन शम्भुश्चस्तुत्वामङ्गलचण्डिकाम्। प्रतिमङ्गलवारेचपूजांदत्त्वागतः शिवः।३२
प्रथमे पूजिता देवी शिवेन सर्वमङ्गला। द्वितीये पूजिता सा च मङ्गलेन ग्रहेण च।३३
तृतीये पूजिता भद्रा मङ्गलेन नृपेण च। चतुर्थे मङ्गलेवारे सुन्दरीभिः प्रपूजिता।३४
पञ्चमे मङ्गलाकाङ्क्षिनरैर्मङ्गलचण्डिका। पूजिता प्रतिविश्वेषु विश्वेशपूजिता सदा।३५
ततः सर्वत्र सम्पूज्या बभूव परमेश्वरी। देवैश्च मुनिभिश्चैव मानवैर्मनुभिर्मुने।३६
देव्याश्च मङ्गलस्तोत्रं यः शृणोतिनसमाहितः। तन्मङ्गलंभवेत्तस्य न भवेत्तदमङ्गलम्।
वर्धते पुत्रपौत्रैश्च मङ्गलञ्च दिने दिने।।३७।।

श्रीनारायण उवाच

उक्तं द्वयोरुपाख्यानं ब्रह्मपुत्र! यथागमम्। श्रूयतां मनसाख्यानं यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रतः।३८
सा च कन्या भगवती कश्यपस्य च मानसी। तेनैव मनसा देवी मनसा या च दीव्यति।३९
मनसा जायते या च परमात्मानमीश्वरम्। तेनसा मनसा देवी तेन योगेन दीव्यति।४०
आत्मारामा च सा देवी वैष्णवीसिद्ध योगिनी। त्रियुगञ्च तपस्तप्त्वा कृष्णस्य परमात्मनः।४१
जरत्कारुशरीरञ्च दृष्ट्वा यत्क्षीणमीश्वरः। गोपीपतिर्नाम चक्रे जरत्कारुरिति प्रभुः।४२
वाञ्छितञ्च ददौ तस्मैकृपयाच कृपानिधिः। पूजाञ्च कारयामास चकारचस्वयंप्रभुः।४३
स्वर्गे च नागलोके च पृथिव्यां ब्रह्मलोकतः। भृशं जगत्सुगौरीसासुन्दरीचमनोहरा।४४

जगद्गौरीतिविख्यातातेनसापूजितासती । शिवशिष्याचसादेवीतेन शैवी प्रकीर्तिता ।४५
विष्णुभक्ताऽतीवशश्वद्वैष्णवीतेनकीर्तिता । नागानांप्राणरक्षित्री यज्ञेपारीक्षितस्य च ।४६
नागेश्वरीति विख्याता सा नागभगिनीति च । विषं संहर्तुमीशा या तेन विषहरी स्मृता ।४७
सिद्धयोगहरात्प्राप तेनसा सिद्धयोगिनी । महाज्ञानञ्च योगञ्च मृतसञ्जीवनीं पराम् ।४८
महाज्ञानयुतांताञ्चप्रवदन्तिमनीषिणः । आस्तीकस्यमुनीन्द्रस्यमातासापितपस्विनी ।४९
आस्तीकमाताविज्ञाताजगत्यां सुप्रतिष्ठिता । प्रियामुनेर्जरत्कारोर्मुनीन्द्रस्यमहात्मनः ।५०
योगिनोविश्वपूज्यस्य जरत्कारुप्रियाततः । जरत्कारुर्जगद्गौरीमनसासिद्धियोगिनी ।५१
वैष्णवीनागभगिनीशैवी नागेश्वरी तथा । जरत्कारुप्रियाऽऽस्तीकमाताविषहरेतिच ।५२
महाज्ञानयुता चैव सा देवी विश्वपूजिता । द्वादशैतानि नामानि पूजाकाले तु यः पठेत् ।५३
तस्य नागभयं नास्ति तस्य वंशोद्भवस्य च । नागभीतेच शयने नागग्रस्तेचमन्दिरे ।५४
नागशोभे महादुर्गे नागवेष्टितविग्रहे । इदं स्तोत्रं पठित्वा तु मुच्यते नाऽत्र संशयः ।५५
नित्यं पठेद्यस्तं दृष्ट्वा नागवर्गः पलायते । दशलक्षजपेनैव स्तोत्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् ।५६
स्तोत्रसिद्धिर्भवेद्यस्यसविषंभोक्तुमीश्वरः । नागैश्च भूषणं कृत्वा सभवेन्नागवाहनः ।५७
नागासनो नागतल्पो महासिद्धो भवेन्नरः । अन्ते च विष्णुना सार्धं क्रीडत्येव दिवानिशम् ।५८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे मङ्गलचण्डीमनसयोः क्रमेणाख्यानवर्णनंनाम सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥४७॥

* अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः *

समनसाध्यानादिमनसोपाख्यानम्

श्रीनारायण उवाच

मत्तः पूजाविधानञ्च श्रूयतां मुनिपुङ्गव! । ध्यानञ्च सामवेदोक्तंप्रोक्तं देवीविधानकम् । १
श्वेतचम्पकवर्णाभांरत्नभूषणभूषिताम् । वह्निशुद्धांशुकाधानां नागयज्ञोपवीतिनीम् । २
महाज्ञानयुतां तां च प्रवरज्ञानिनां वराम् । सिद्धाधिष्ठातृदेवीञ्च सिद्धां सिद्धिप्रदां भजे । ३
इतिध्यात्वा च तां देवीं मूलेनैव प्रपूजयेत् । नैवेद्यैर्विविधैर्धूपैः पुष्पगन्धानुलेपनैः । ४
मूलमन्त्रैश्च वेदोक्तैर्भक्तानां वाञ्छितप्रदः । मुने कल्पतरुर्नाम सुसिद्धो द्वादशाक्षरः । ५
ॐ ह्रींश्रींक्लींऐं मनसादेव्यैस्वाहेतिकीर्त्तितः । पञ्चलक्षजपेनैवमन्त्रसिद्धिर्भवेन्नृणाम् । ६
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य स सिद्धोजगतीतले । सुधासमं विषंतस्यधन्वन्तरिसमो भवेत् । ७
ब्रह्मन्स्नात्वा तु सङ्क्रांत्यां गूढशाल सुयत्नतः । आवाह्य देवीमीशानां पूजयेद्योऽतिभक्तितः । ८
पञ्चम्यांमनसाध्यायन्देव्यैदद्याच्चयोबलिम् । धनवान्पुत्रवांश्चैवकीर्तिमान्सभवेद्ध्रुवम् । ९
पूजाविधानं कथितं तदाख्यानं निशामय । कथयामि महाभाग! यच्छ्रुतं धर्मवक्त्रतः ।१०
पुरा नागभयाक्रान्ता बभूवुर्मानवाभुवि । गतास्ते शरणं सर्वे कश्यपं मुनिपुङ्गवम् ।११
मन्त्रांश्च ससृजे भीतः कश्यपो ब्रह्मणान्वितः । वेदबीजानुसारेण चोपदेशेन ब्रह्मणः ।१२
मन्त्राधिष्ठातृदेवीं तां मनसा ससृजे तथा । तपसा मनसा तेन बभूवमनसा च सा ।१३
कुमारीसाचसम्भूता जगामशङ्करालयम् । भक्त्यासम्पूज्य कैलासेतुष्टावचन्द्रशेखरम् ।१४
दिव्यवर्षसहस्रं तं सिषेवे च मुनेः सुता । आशुतोषो महेशश्च तां च तुष्टो बभूव ह ।१५

महाज्ञानं ददौ तस्यै पाठयामास साम च। कृष्णमन्त्रं कल्पतरुं ददावष्टाक्षरं मुने!।१६
लक्ष्मीमायाकामबीजं ङेन्तं कृष्णपदं ततः। त्रैलोक्यमङ्गलंनाम कवचं पूजनक्रमम्।१७
पुरश्चर्याक्रमं चाऽपि वेदोक्तं सर्वसम्मतम्। प्राप्यमृत्युञ्जयान्मन्त्रंसासतीचमुनेःसुता।१८
जगाम तपसे साध्वी पुष्करं शङ्कराज्ञया। त्रियुगञ्चतपस्तप्त्वाकृष्णस्यपरमात्मनः।१६
सिद्धा बभूव सा देवीददर्शपुरतः प्रभुम्। दृष्ट्वा कृशाङ्गीं बालाञ्चकृपयाचकृपयानिधिः।२०
पूजाञ्च कारयामास चकार च स्वयं हरिः। वरञ्च प्रददौ तस्यै पूजिता त्वं भवे भव।२१
वरं दत्त्वा च कल्याण्यै ततश्चान्तर्दधे हरिः। प्रथमे पूजिता सा चकृष्णेनपरमात्मना।२२
द्वितीये शङ्करेणैव कश्यपेन सुरेण च। मुनिना मनुना चैव नागेन मानवादिभिः।२३
बभूव पूजितासा च त्रिषु लोकेषु सुव्रता। जरत्कारुमुनीन्द्राय कश्यपस्तां ददौपुरा।२४
अयाचितो मुनिश्रेष्ठोजग्राहब्राह्मणाज्ञया। कृत्वोद्वाहंमहायोगीविश्रान्तस्तपसाचिरम्।२५
सुष्वाप देव्या जघने वटमूले च पुष्करे। निद्रांजगामसमुनिःस्मृत्वानिद्रेशमीश्वरम्।२६
जगामाऽस्तंदिनकरःसायंकालउपस्थिते । सञ्चिन्त्यमनसासाध्वीमनसासापतिव्रता।२७
धर्मलोपभयेनैव चकाराऽऽलोचनं सती। अकृत्वा पश्चिमां सन्ध्यां नित्याञ्चैव द्विजन्मनाम्।२८
ब्रह्महत्यादिकं पापंलभिष्यति पतिर्मम। नोपतिष्ठतियःपूर्वांनोपास्तेयस्तुपश्चिमाम्।२६
स सर्वत्राऽशुचिर्नित्यं ब्रह्महत्यादिकं लभेत्। वेदोक्तमिति सञ्चिन्त्य बोधयामास सुन्दरी।३०
स च बुद्धो मुनिश्रेष्ठस्तां चुकोप भृशं मुने!।

मुनिरुवाच

कथं मे सुखिनः साध्वि! निद्राभङ्गः कृतस्त्वया ।।३१।।
व्यर्थ व्रतादिकंतस्यायाभर्तुश्चाऽपकारिणी। तपश्चाऽनशनञ्चैव व्रतं दानादिकञ्चयत्।३२
भर्तुरप्रियकारिण्याः सर्वभवतिनिष्फलम्। ययाप्रियःपूजितश्चश्रीकृष्णःपूजितस्तया।३३
पतिव्रताव्रतार्थञ्चपतिरूपोहरिः स्वयम्। सर्वदानं सर्वयज्ञः सर्वतीर्थनिषेवणम्।३४
सर्वव्रतं तपः सर्वमुपवासादिकञ्चयत्। सर्वधर्मश्च सत्यञ्च सर्वदेवप्रपूजनम्।३५
तत्सर्वंस्वामिसेवायाः कलांनार्हन्ति षोडशीम्। पुण्ये चभारतेवर्षेपतिसेवांकरोतिया ।३६
वैकुण्ठे स्वामिना सार्धं सा याति ब्रह्मणःपदम्। विप्रियं कुरुते भर्तुर्विप्रियं वदति प्रियम्।३७
असत्कुले प्रसूता हि तत्फलं श्रूयतांसति!। कुम्भीपाकंव्रजेत्साचयावचन्द्रदिवाकरौ।३८
ततोभवतिचाण्डालीपतिपुत्रविवर्जिता ।इत्युक्त्वाचमुनिश्रेष्ठो बभूव स्फुरिताधरः।३६
चकम्पे तेन सा साध्वी भयेनोवाच तं पतिम्।

साध्व्युवाच

सन्ध्यालोपभयेनैव निद्राभङ्गः कृतस्तव ।।४०।।
कुरुशान्तिं महाभाग दुष्टायाममसुव्रत। शृङ्गाराऽऽहारनिद्राणां यश्च भङ्गं करोति वै।४१
स व्रजेत्कालसूत्रम्बैयावच्चन्द्रदिवाकरौ। इत्युक्त्वा मनसादेवीस्वामिनश्चरणाम्बुजे।४२
पपात भक्त्या भीता च रुरोद च पुनः पुनः। कुपितञ्चमुनिं दृष्ट्वा श्रीसूर्यं शप्तुमुद्यतम्।४३
तत्राऽऽजगाम भगवान्सन्ध्यया सह नारद!। तत्राऽऽगत्य मुनिं सम्यगुवाच भास्करः स्वयम्।४४
विनयेन च भीतश्च तया सह यथोचितम्।

भास्करउवाच

सूर्यास्तसमयं दृष्ट्वा साध्वी धर्मभयेन च ।।४५।।
बोधयामास त्वां विप्र! शरणंत्वामहं गतः। क्षमस्वभगवन्ब्रह्मन्मांशप्तुंनोचितंमुने! ।४६

ब्राह्मणानां च हृदयं नवनीतसमं सदा। तेषां क्षणार्धं क्रोधश्च यतो भस्मभवेज्जगत्।४७
पुनःस्रुष्टुं द्विजः शक्तो न तेजस्वी द्विजात्परः। ब्राह्मणो ब्रह्मणो वंशः प्रज्वलन्ब्रह्मतेजसा।४८
श्रीकृष्णं भावयेन्नित्यं ब्रह्मज्योतिः सनातनम्। सूर्यस्य वचनं श्रुत्वा द्विजस्तुष्टो बभूव ह।४९
सूर्योजगाम स्वस्थानंगृहीत्वाब्राह्मणाशिषम्। तत्याजमनसांविप्रःप्रतिज्ञापालनायच ।५०
रुदतीं शोकसंयुक्तां हृदयेन विदूयता। सासस्मारगुरुं शम्भुमिष्टदेवं विधिं हरिम्।५१
कश्यपं जन्मदातारं विपत्तौ भयकर्शिता। तत्राऽऽजगामगोपीशो भगवाञ्छम्भुरेवच।५२
विधिश्च कश्यपश्चैव मनसापरिचिन्तितः। दृष्ट्वा विप्रोऽभीष्टदेवं निर्गुणंप्रकृतेःपरम्।५३
तुष्टाव परया भक्त्या प्रणनाम मुहुर्मुहुः। नमश्चकारशम्भुञ्च ब्रह्माणं कश्यपं तथा।५४
कथमागमनं देवा इतिप्रश्नं चकार सः। ब्रह्मातद्वचनंश्रुत्वा सहसा समयोचितम्।५५
प्रत्युवाच नमस्कृत्य हृषीकेशपदाम्बुजम्। यदित्यक्ता धर्मपत्नी धर्मिष्ठा मनसा सती।५६
कुरुष्वाऽस्यां सुतोत्पत्तिं स्वधर्मपालनाय वै। जायायां च सुतोत्पत्तिं कृत्वा पश्चात्त्यजेन्मुने!।५७
अकृत्वा तु सुतोत्पत्तिं विरागी यस्त्यजेत्प्रियाम्। स्रवते तस्य पुण्यञ्च चालन्याञ्च यथा जलम्।५८
ब्रह्मणो वचनं श्रुत्वा जरत्कारुर्मुनीश्वरः। चकारनाभिसंस्पर्शयोगेन मन्त्रपूर्वकम्।५९
मनसाया मुनिश्रेष्ठ! मुनिश्रेष्ठ उवाच ताम्।

जरत्कारुरुवाच

गर्भेणाऽनेन मनसे! तव पुत्रो भविष्यति ॥६०॥

जितेन्द्रियाणां प्रवरो धार्मिको ब्राह्मणाग्रणीः। तेजस्वी च तपस्वी च यशस्वी च गुणान्वितः।६१
वरो वेदविदाञ्चैव ज्ञानिनां योगिनां तथा। स च पुत्रो विष्णुभक्तो धार्मिकः कुलमुद्धरेत्।६२
नृत्यन्ति पितरः सर्वे जन्ममात्रेणवैमुदा। पतिव्रतासुशीला यासाप्रियाप्रियवादिनी।६३
धर्मिष्ठा पुत्रमाता च कुलस्त्री कुलपालिता। हरिभक्तिप्रदोबन्धुर्नचाऽभीष्टसुखप्रदः ।६४
यो बन्धुश्चेत्स च पिताहरिवर्त्मप्रदर्शकः। सागर्भधारिणीया च गर्भवासविमोचनी।६५
दयारूपा च भगिनीयमभीतिविमोचनी। विष्णुमन्त्रप्रदाताच स गुरुर्विष्णुभक्तिदः।६६
गुरुश्च ज्ञानदो यो हि यज्ज्ञानं कृष्णभावनम्। आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं यतो विश्वं चराचरम्।६७
आविर्भूतं तिरोभूतं किम्वा ज्ञानं तदन्यतः। वेदजं यज्ञजं यद्यत्तत्सारं हरिसेवनम्।६८
तत्त्वानां सारभूतञ्च हरेरन्यद्विडम्बनम्। दत्तंज्ञानंमया तुभ्यं स स्वामी ज्ञानदोहियः।६९
ज्ञानात्प्रमुच्यते बन्धात्स रिपुर्योहि बन्धतः। विष्णुभक्तियुतं ज्ञानं नो ददाति हि यो गुरुः।७०
स रिपुः शिष्यघाती च यतोबन्धान्नमोचयेत्। जननींगर्भजक्लेशाद्यमयातनया तथा।७१
न मोचयेद्यः स कथं गुरुस्तातो हि बान्धवः। परमानन्दरूपञ्च कृष्णमार्गमनश्वरम्।७२
न दर्शयेद्यः सततं कीदृशो बान्धवो नृणाम्। भज साध्वि परं ब्रह्माऽच्युतं कृष्णञ्च निर्गुणम्।७३
निर्मूलञ्चभवेत्पुंसा कर्म वै तस्यसेवया। मयाच्छलेनत्वं त्यक्ताक्षमस्वैतन्ममप्रिये।७४
क्षमायुतानां साध्वीनां सत्त्वात्क्रोधो न विद्यते। पुष्करे तपसे यामि गच्छ देवि! यथासुखम्।७५
श्रीकृष्णचरणाम्भोजेनिस्पृहाणांमनोरथाः। जरत्कारुवचः श्रुत्वामनसाशोककातरा।७६
साश्रुनेत्रा च विनयादुवाच प्राणवल्लभम्।

मनसोवाच

दोषो नाऽस्त्येव मे त्यक्तुं निद्राभङ्गेन ते प्रभो! ॥७७॥

यत्र स्मरामि त्वां नित्यं तत्र मामागमिष्यसि। बन्धुभेदः क्लेशतमः पुत्रभेदस्ततः परम्।७८
प्राणेशभेदः प्राणानां चिच्छेदात्सर्वतः परः। पतिः पतिव्रतानां तु शतपुत्राधिकम्प्रियः।७९

सर्वस्मात्तुप्रियः स्त्रीणांप्रियस्तेनोच्यतेबुधैः। पुत्रे यथैकपुत्राणां वैष्णवानांयथाहरौ।८०
नेत्रे यथैकनेत्राणां तृषितानां यथा जले। क्षुधितानां यथाऽन्नेच कामुकानाञ्चमैथुने।८१
यथापरस्वेचौराणांयथाजारेकुयोषिताम्। विदुषाञ्चयथाशास्त्रेवाणिज्येवणिजांयथा।८२
तथा शश्वन्मनः कान्ते साध्वीनांयोषितां प्रभो! इत्युक्त्वा मनसा देवी पपात स्वामिनः पदे।८३
क्षणञ्चकार क्रोडे तां कृपया चकृपानिधिः। नेत्रोदकेन मनसां स्नापयामासतांमुनिः।८४
साश्रुनेत्रा मुनेः क्रोडं सिषेचभेदकातरा। तदाज्ञानेन तौ द्वौ च विशोकौ सम्बभूवतुः।८५
स्मारं स्मारं पदाम्भोजं कृष्णस्य परमात्मनः। जगाम तपसे विप्रः स्वकान्तां सम्प्रबोध्य च।८६
जगाममनसाशम्भोः कैलासंमन्दिरंगुरोः। पार्वतीबोधयामासमनसां शोककर्शिताम्।८७
शिवश्चातीव ज्ञानेन शिवेन च शिवालयः। सुप्रशस्तेदिने साध्वी सुषुवे मङ्गलक्षणे।८८
नारायणांशं पुत्रं तं योगिनां ज्ञानिनां गुरुम्। गर्भस्थितो महाज्ञानं श्रुत्वा शङ्करवक्त्रतः।८९
सम्बभूवच योगीन्द्रोयोगिनांज्ञानिनांगुरुः। जातकं कारयामासवाचयामासमङ्गलम्।९०
वेदांश्चपाठयामासशिवायचशिवः शिशोः। मणिरत्नकिरीटांश्च ब्राह्मणेभ्योददौशिवः।९१
पार्वतीच गवां लक्षंरत्नानिविविधानि च। शम्भुश्च चतुरो वेदान्वेदाङ्गानितरांस्तथा।९२
बालकं पाठयामास ज्ञानं मृत्युञ्जयं परम्। भक्तिरस्त्यधिकाकान्तेऽभीष्टदेवेगुरौतथा।९३
यस्यास्तेनचतत्पुत्रो बभूवाऽऽस्तीकएवच। जगामतपसे विष्णोः पुष्करंशङ्कराज्ञया।९४
सम्प्राप्यच महामन्त्रं ततश्च परमात्मनः। दिव्यं वर्षत्रिलक्षञ्च तपस्तप्त्वा तपोधनः।९५
आजगाममहायोगीनमस्कर्तुं शिवं प्रभुम्। शङ्करञ्च नमस्कृत्य स्थित्वातत्रैवबालकः।९६
सा चाऽऽजगाम मनसा कश्यपस्याऽऽश्रमं पितुः। तां सपुत्रां सुतां दृष्ट्वा मुदम्प्राप प्रजापतिः।९७
शतलक्षञ्च रत्नानां ब्राह्मणेभ्यो ददौ मुने! ब्राह्मणान्भोजयामास सोऽसङ्ख्यान् श्रेयसे शिशोः।९८
अदितिश्च दितिश्चान्यामुदम्प्रापपरन्तप! सा सपुत्राच सुचिरं तस्थौतातालयेसदा।९९
तदीयं पुनराख्यानं वक्ष्यामि तन्निशामय। अथाभिऽमन्युतनये ब्रह्मशापपरीक्षिते।१००
बभूव सहसा ब्रह्मन्दैवदोषेण कर्मणा। सप्ताहे समतीते तु तक्षकस्त्वाञ्च धक्ष्यति।१०१
शशाप शृङ्गी तत्रैव कौशिक्याश्चजलेनवै। राजा श्रुत्वा तत्प्रवृत्तिंनिर्वातस्थानमागतः।१०२
तत्र तस्थौ च सप्ताहं देहरक्षणतत्परः। सप्ताहं समतीते तु गच्छन्तं तक्षकं पथि।१०३
धन्वन्तरिर्नृपं भोक्तुं ददर्श गामुकः पथि। तयोर्बभूव सम्वादः सुप्रीतिश्च परस्परम्।१०४
धन्वन्तरिर्मणिं प्राप तक्षकः स्वेच्छया ददौ। स ययौ तं गृहीत्वा तु सन्तुष्टो हृष्टमानसः।१०५
तक्षको भक्षयामास नृपं तं मञ्चके स्थितम्। राजा जगामतरसादेहं त्यक्त्वाऽपरत्रच।१०६
संस्कारं कारयामास पितुर्वैजनमेजयः। राजा चकार यज्ञञ्च सर्पसत्रं ततो मुने!।१०७
प्राणांस्तत्याज सर्पाणां समूहो ब्रह्मतेजस। स तक्षको वै भीतस्तु महेन्द्रं शरणं ययौ।१०८
सेन्द्रं च तक्षकं हन्तुं विप्रवर्गः समुद्यतः। अथदेवाश्चसेन्द्राश्चसञ्जग्मुर्मनसाऽन्तिकम्।१०९
तां तुष्टाव महेन्द्रश्च भयकातरविह्वलः। ततः आस्तीक आगत्य यज्ञञ्च मातुराज्ञया।११०
महेन्द्रतक्षकप्राणान्ययाचे भूमिपं परम्। ददौ वरं नृपश्रेष्ठः कृपया ब्राह्मणाज्ञया।१११
यज्ञं समाप्य विप्रेभ्यो दक्षिणाञ्च ददौ मुदा। विप्राश्च मुनयो देवा गत्वा च मनसान्तिकम्।११२
मनसांपूजयामासुस्तुष्टुवुश्चपृथक्पृथक्। शक्रः सम्भृतसम्भारो भक्तियुक्तः सदाशुचिः।११३
मनसां पूजयामास तुष्टाव परमादरम्। नत्वा षोडशोपचारं बलिञ्च तत्प्रियं तदा।११४
प्रददौ परितुष्टश्च ब्रह्मविष्णुशिवाज्ञया। सम्पूज्य मनसां देवीं प्रययुः स्वालयञ्च ते।११५

इत्येवं कथितं सर्वं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।

नारदउवाच

केन स्तोत्रेण तुष्टाव महेन्द्रो मनसां सतीम् ।।११६।।
पूजाविधिक्रमं तस्याः श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।

श्रीनारायण उवाच

सुस्नातः शुचिराचान्तो धृत्वा धौते च वाससी ।।११७।।
रत्नसिंहासने देवीं वासयामास भक्तितः। स्वर्गङ्गाया जलेनैव रत्नकुम्भस्थितेन च।११८
स्नापयामास मनसां महेन्द्रो वेदमन्त्रतः। वाससीवासयामास वह्निशुद्धे मनोहरे।११९
सर्वाङ्गे चन्दनं कृत्वा पादार्घ्यभक्तिसंयुतः। गणेशंचदिनेशंचवह्निंविष्णुं शिवंशिवाम्।१२०
सम्पूज्याऽऽदौ देवषट्कं पूजयामास तां सतीम्। ॐ ह्रीं श्रीं मनसादेव्यै स्वाहेत्येवं च मन्त्रतः।१२१
दशाक्षरेण मूलेन ददौ सर्वं यथोचितम्। दत्त्वा षोडशोपचारान्दुर्लभान्देवनायकः।१२२
पूजयामास भक्त्या च विष्णुना प्रेरितो मुदा। वाद्यं नानाप्रकारं च वादयामासतत्रवै।१२३
बभूव पुष्पवृष्टिश्च नभसो मनसोपरि। देवप्रियाज्ञया तत्र ब्रह्मविष्णुशिवाज्ञया।१२४
तुष्टाव साश्रुनेत्रश्च पुलकाङ्कितविग्रहः ।

पुरन्दर उवाच

देवि! त्वां स्तोतुमिच्छामि साध्वीनां प्रवरां वराम् ।।१२५।।
परात्परां च परमां नहि स्तोतुं क्षमोऽधुना। स्तोत्राणां लक्षणं वेदे स्वभावाख्यानतत्परम्।१२६
न क्षमः प्रकृते! वक्तुं गुणानां गणनांतव। शुद्धसत्त्वस्वरूपात्वंकोपहिंसाविवर्जिता।१२७
न च शक्तो मुनिस्तेन त्यक्तुं याञ्चा कृता यतः। त्वं मया पूजिता साध्वी जननी मे यथाऽदितिः।१२८
दयारूपा च भगिनी क्षमारूपा यथाप्रसूः। त्वया मे रक्षिताः प्राणाः पुत्रदाराः सुरेश्वरि!।१२९
अहं करोमि त्वत्पूजां प्रीतिश्च वर्धतां सदा। नित्यायद्यपिपूज्यात्वंसर्वत्रजगदम्बिके।१३०
तथाऽपितवपूजांचवर्धयामिसुरेश्वरि। येत्वामाषाढसङ्क्रान्त्यांपूजयिष्यन्तिभक्तितः।१३१
पञ्चम्यां मनसाख्यायां मासान्ते वा दिनेदिने। पुत्रपौत्रादयस्तेषांवर्धन्तेचधनानिवै।१३२
यशस्विनःकीर्तिमन्तो विद्यावन्तो गुणान्विताः। ये त्वां न पूजयिष्यन्ति निन्दन्त्यज्ञानतो जनाः।१३३
लक्ष्मीहीना भविष्यन्ति तेषांनागभयंसदा। त्वंस्वयंसर्वलक्ष्मीश्चवैकुण्ठेकमलालया।१३४
नारायणांशो भगवाञ्जरत्कारुर्मुनीश्वरः। तपसा तेजसा त्वां च मनसा ससृजे पिता।१३५
अस्माकं रक्षाणायैवतेनत्वंमनसाभिधा। मनसादेविशक्त्यात्वंस्वात्मनासिद्धयोगिनी।१३६
तेन त्वं मनसादेवी पूजिता वन्दिता भव। येभक्त्यामनसांदेवाः पूजयन्त्यनिशंभृशम्।१३७
तेन त्वां मनसांदेवी प्रवदन्तिमनीषिणः। सत्यस्वरूपादेवित्वंशश्वत्सत्यनिषेवणात्।१३८
यो हि त्वां भावयेन्नित्यं स त्वां प्राप्नोति तत्परः। इन्द्रश्च मनसां स्तुत्वा गृहीत्वा भगिनीवरम्।१३९
प्रजगाम स्वभवनं भूषया सपरिच्छदम्। पुत्रेण सार्धं सा देवी चिरंतस्थौपितुर्गृहे।१४०
भ्रातृभिः पूजिता शश्वन्मान्या वन्द्या च सर्वतः। गोलोकात्सुरभिर्ब्रह्मन् तत्राऽऽगत्य सुपूजिताम्।१४१
तां स्नापयित्वा क्षीरेण पूजयामाससादरम्। ज्ञानंचकथयामासगोप्यंसर्वंसुदुर्लभम्।१४२
तथा देवैः पूजिता सा स्वर्लोकं च पुनर्ययौ। इन्द्रस्तोत्रं पुण्यबीजंमनसांपूजयेत्पठेत्।१४३
तस्य नागभयंनास्तितस्यवंशोद्भवस्यच। विषं भवेत् सुधातुल्यं सिद्धस्तोत्रो यदा भवेत्।१४४
पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धस्तोत्रो भवेन्नरः। सर्पशायी भवेत्सोऽपि निश्चितं सर्पवाहनः।१४५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे मनसोपाख्यानं नामाऽष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ।।४८।।

* एकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः *

सुरभ्युपाख्यानवर्णनम्   नारद उवाच

का वा सा सुरभिर्देवीगोलोकादागताचया। तज्जन्मचरितंब्रह्मञ्छ्रोतुमिच्छामियत्नतः।१

श्रीनारायण उवाच

गवामधिष्ठातृदेवी गवामाद्या गवां प्रसूः। गवां प्रधाना सुरभिर्गोलोके सासमुद्भवा।२
सर्वादिसृष्टेश्चरितं कथयामि निशामय। बभूव तेन तज्जन्म पुरा वृन्दावने वने।३
एकदा राधिकानाथो राधया सह कौतुकी। गोपाङ्गनापरिवृतः पुण्यं वृन्दावनं ययौ।४
सहसा तत्र रहसिविजहार स कौतुकात्। बभूवक्षीरपानेच्छातस्यस्वेच्छामयस्यच ।५
ससृजे सुरभिं देवीं लीलया वामपार्श्वतः। वत्सयुक्तां दुग्धवतीवत्सोनाममनोरथः ।६
दृष्ट्वा सवत्सां श्रीदामा नवभाण्डे दुदोह च। क्षीरं सुधातिरिक्तं च जन्ममृत्युजराहरम्।७
तदुत्थं च पयः स्वादु पपौ गोपीपतिः स्वयम्। सरोबभूवपयसांभाण्डविस्रंसनेनच ।८
दीर्घं च विस्तृतं चैव परितः शतयोजनम्। गोलोकेऽयंप्रसिद्धश्चसोऽपिक्षीरसरोवरः ।९
गोपिकानाञ्चराधायाः क्रीडावापीबभूवसा। रत्नेन्द्ररचितापूर्णंभूताचाऽपीश्वरेच्छया ।१०
बभूव कामधेनूनां सहसा लक्षकोटयः। यावन्तस्तत्र गोपाश्च सुरभ्या लोमकूपतः।११
तासां पुत्राश्चबहवः सम्बभूवुरसङ्ख्यकाः। कथिता च गवांसृष्टिस्तयाचपूरितंजगत्।१२
पूजां चकार भगवान् सुरभ्याश्च पुरा मुने!। ततो बभूव तत्पूजा त्रिषु लोकेषुदुर्लभा।१३
दीपान्विता परदिनेश्रीकृष्णस्याऽऽज्ञयाहरेः। बभूवसुरभिःपूज्याधर्मवक्त्रादिदंश्रुतम् ।१४
ध्यानं स्तोत्रं मूलमन्त्रं यद्यत्पूजाविधिक्रमम्। वेदोक्तंचमहाभागनिबोधकथयामिते ।१५
ॐ सुरभ्यै नम इति मन्त्रस्तस्याः षडक्षरः। सिद्धो लक्षजपेनैव भक्तानां कल्पपादपः।१६
ध्यानं यजुर्वेदगीतं तस्याः पूजा च सर्वतः। ऋद्धिदा वृद्धिदा चैवमुक्तिदासर्वकामदा।१७
लक्ष्मीस्वरूपां परमां राधासहचरीं पराम्। गवामधिष्ठातृदेवीं गवामाद्यां गवांप्रसूम्।१८
पवित्ररूपां पूतां च भक्तानां सर्वकामदाम्। यया पूतं सर्वविश्वं तांदेवींसुरभिंभजे।१९
घटे वा धेनुशिरसि बन्धस्तम्भे गवामपि। शालग्रामे जलाग्नौ वासुरभिंपूजयेद्द्विजः।२०
दीपान्विता परदिने पूर्वाह्ने शक्तिसंयुतः। यः पूजयेच्च सुरभिं स वै पूज्योभवेद्भुवि।२१
एकदा त्रिषु लोकेषु वाराहे विष्णुमायया। क्षीरं जहारसुरभिश्चिन्तिताश्चसुरादयः।२२
ते गत्वा ब्रह्मलोके च ब्रह्माणं तुष्टुवुस्तदा। तदाज्ञया च सुरभिं तुष्टाव पाकशासनः।२३

पुरन्दर उवाच

नमो देव्यै महादेव्यै सुरभ्यै च नमो नमः। गवां बीजस्वरूपायै नमस्ते जगदम्बिके।२४
नमो राधाप्रियायै च पद्मांशायै नमो नमः। नमः कृष्णप्रियायै च गवां मात्रे नमो नमः।२५
कल्पवृक्षस्वरूपायै सर्वेषां सततं परे। क्षीरदायै धनदायै बुद्धिदायै नमोनमः।२६
शुभायै च सुभद्रायै गोप्रदायै नमो नमः। यशोदायै कीर्तिदायै धर्मदायै नमो नमः।२७
स्तोत्रश्रवणमात्रेण तुष्टा हृष्टा जगत्प्रसूः। आविर्बभूव तत्रैव ब्रह्मलोके सनातनी।२८
महेन्द्राय वरं दत्त्वा वाञ्छितं चाऽपि दुर्लभम्। जगाम सा च गोलोकं ययुर्देवादयो गृहम्।२९
बभूव विश्वं सहसा दुग्धपूर्णञ्च नारद!। दुग्धं घृतं ततो यज्ञस्ततः प्रीतिः सुरस्यच।३०
इदं स्तोत्रं महापुण्यं भक्तियुक्तश्च यः पठेत्। स गोमान्धनवांश्चैव कीर्तिमान्पुत्रवांस्तथा।३१
स स्नातः सर्वतीर्थेषुसर्वयज्ञेषुदीक्षितः। इहलोके सुखं भुक्त्वा यात्यन्तेकृष्णमन्दिरे।३२
सुचिरं निवसेत्तत्र करोति कृष्णसेवनम्। न पुनर्भवनं तत्र ब्रह्मपुत्रो भवेत्ततः।३३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां ९स्कन्धे सुरभ्युपाख्यानंनामैकोनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः।४९

* पञ्चाशत्तमोऽध्यायः *

देव्याः सावरणपूजावर्णनम्

नारद उवाच

श्रुतंसर्वमुपाख्यानंप्रकृतीनांयथातथम् । यच्छ्रुत्वा मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् । १
अधुना श्रोतुमिच्छामि रहस्यं वेदगोपितम् । राधायाश्चैव दुर्गाया विधानं श्रुतिचोदितम् । २
महिमा वर्णितोऽतीव भवता परयोर्द्वयोः । श्रुत्वातंतद्गतं चेतो न कस्यस्यान्मुनीश्वर । ३
ययोरंशोजगत्सर्वंयन्नियम्यंचराचरम् । ययोर्भक्त्या भवेन्मुक्तिस्तद्विधानंवदाऽधुना । ४

श्रीनारायण उवाच

शृणु नारद! वक्ष्यामि रहस्यं श्रुतिचोदितम् । यन्न कस्याऽपि चाऽऽख्यातं सारात्सारं परात्परम् । ५
श्रुत्वापरस्मैनोवाच्यंयतोऽतीवरहस्यकम् । मूलप्रकृतिरूपिण्याः सम्विदोजगदुद्भवे । ६
प्रादुर्भूतं शक्तियुग्मं प्राणबुद्ध्यधिदैवतम् । जीवानाञ्चैव सर्वेषां नियन्तृप्रेरकं सदा । ७
तदधीनं जगत्सर्वं विराडादि चराचरम् । यावत्तयोः प्रसादोन तावन्मोक्षोहि दुर्लभः । ८
ततस्तयोः प्रसादार्थंनित्यंसेवेततद्द्वयम् । तत्रादौराधिकामन्त्रं शृणु नारदभक्तितः । ९
ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्नित्यंसेवितोयः परात्परः । श्रीराधेतिचतुर्थ्यन्तं वह्नेर्जाया ततः परम् । १०
षडक्षरो महामन्त्रो धर्माद्यर्थप्रकाशकः । मायाबीजादिकश्चायं वाञ्छाचिन्तामणिः स्मृतः । ११
वक्त्रकोटिसहस्रैस्तुजिह्वाकोटिशतैरपि । एतन्मन्त्रस्यमाहात्म्यंवर्णितुं नैव शक्यते । १२
जग्राह प्रथमं मन्त्रं श्रीकृष्णो भक्तितत्परः । उपदेशान्मूलदेव्या गोलोके रासमण्डले । १३
विष्णुस्तेनोपदिष्टस्तु तेन ब्रह्माविराट् तथा । तेनधर्मस्तेनचाऽहमित्येषाहि परम्परा । १४
अहं जपामि तं मन्त्रं तेनाऽहमृषिरीडितः । ब्रह्माद्याः सकला देवा नित्यं ध्यायन्ति तां मुदा । १५
कृष्णार्चायां नाऽधिकारो यतो राधार्चनं विना । वैष्णवैः सकलैस्तस्मात्कर्तव्यं राधिकार्चनम् । १६
कृष्णप्राणाधिदेवीसातदधीनोविभुर्यतः । रासेश्वरीतस्य नित्यं तया हीनोनतिष्ठति । १७
राध्नोति सकलान्कामांस्तस्माद्राधेतिकीर्तिता । अत्रोक्तानां मनूनाञ्च ऋषिरस्म्यहमेव च । १८
छन्दश्चदेवीगायत्रीदेवताऽत्र च राधिका । तारोबीजंशक्तिबीजं शक्तिस्तुपरिकीर्तिता । १९
मूलावृत्त्याषडङ्गानि कर्तव्यानीतरत्र च । अथध्यायेन्महादेवीं राधिकांरासनायिकाम् । २०
पूर्वोक्तरीत्या तु मुने! सामवेदे विगीतया । श्वेतचम्पकवर्णाभां शरदिन्दुसमाननाम् । २१
कोटिचन्द्रप्रतीकाशां शरदम्भोजलोचनाम् । बिम्बाधरां पृथुश्रोणीं काञ्चीयुतनितम्बिनीम् । २२
कुन्दपङ्क्तिसमानाभदन्तपङ्क्तिविराजिताम् । क्षौमाम्बरपरीधानां वह्निशुद्धांशुकान्विताम् । २३
ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां करिकुम्भयुगस्तनीम् । सदा द्वादशवर्षीयां रत्नभूषणभूषिताम् । २४
शृङ्गारसिन्धुलहरीं भक्तानुग्रहकातराम् । मल्लिकामालतीमालाकेशपाशविराजिताम् । २५
सुकुमाराङ्गलतिकांरासमण्डलमध्यगाम् । वराभयकरांशान्तांशश्वत्सुस्थिरयौवनाम् । २६
रत्नसिंहासनासीनां गोपीमण्डलनायिकाम् । कृष्णप्राणाधिकां वेदबोधितां परमेश्वरीम् । २७
एवं ध्यात्वा ततो बाह्येशालग्रामेघटेऽथवा । यन्त्रे वाऽष्टदलेदेवीं पूजयेत्सुविधानतः । २८
आवाह्य देवीं तत्पश्चादासनादि प्रदीयताम् । मूलमन्त्रं समुच्चार्य चाऽऽसनादीनि कल्पयेत् । २९
पाद्यन्तु पादयोर्दद्यान्मस्तकेऽर्घ्यं समीरितम् । मुखे त्वाचमनीयं स्याद् त्रिवारं मूलविद्यया । ३०
मधुपर्कंततोदद्यादेकांगां च पयस्विनीम् । ततोनयेत्स्नानशालां ताञ्च तत्रैवभावयेत् । ३१
अभ्यङ्गादिस्नानविधिंकल्पयित्वाऽथवाससी । ततश्च चन्दनं दद्यान्नानालङ्कारपूर्वकम् । ३२
पुष्पमाला बहुविधास्तुलसीमञ्जरीयुताः । पारिजातप्रसूनानि शतपत्रादिकानि च । ३३

ततः कुर्यात्पवित्रं तत्परिवारार्चनं विभोः। अग्नीशासुरवायव्यमध्ये दिक्ष्वङ्गपूजनम्।३४
कृत्वा पश्चादष्टदले दक्षिणावर्ततोऽग्रतः। मालावतीमग्रदले वह्निकोणेच माधवीम्।३५
रत्नमालां दक्षिणेच नैर्ऋत्ये तु सुशीलकाम्। पश्चाद्दले शशिकलांपूजयेन्मतिमान्नरः।३६
मारुते पारिजातांचाप्युत्तरेचपरावतीम्। ईशानकोणेसम्पूज्या सुन्दरीप्रियकारिणी।३७
ब्राह्मयादयस्तु तद्वाह्येऽप्याशापालांस्तु भूपुरे। वज्रादिकान्यायुधानि देवीमित्थं प्रपूजयेत्।३८
ततो देवीं सावरणां गन्धाद्यैरुपचारकैः। राजोपचारसहितैः पूजयेन्मतिमान्नरः।३६
ततः स्तुवीतदेवेशीं स्तोत्रैर्नामसहस्रकैः। सहस्रसङ्ख्यञ्च जपं नित्यं कुर्यात्प्रयत्नतः।४०
य एवं पूजयेद्देवीं राधांरासेश्वरीं पराम्। सभवेद्विष्णुतुल्यस्तुगोलोकंयातिसन्ततम्।४१
यः कार्तिक्यां पौर्णमास्यां राधाजन्मोत्सवं बुधः। कुरुते तस्य सान्निध्यं दद्याद्रासेश्वरी परा।४२
केनचित्कारणेनैव राधावृन्दावने वने। वृषभानुसुता जाता गोलोकस्थायिनी सदा।४३
अत्रोक्तनां तु मन्त्राणां वर्णसंख्याविधानतः। पुरश्चरणकर्मोक्तं दशांशं होममाचरेत्।४४
तिलैस्त्रिस्वादुसंयुक्तैर्जुहुयाद्भक्तिभावतः ।

नारद उवाच

स्तोत्रं वद मुने! सम्यग्येन देवी प्रसीदति ।।४५।।

श्रीनारायण उवाच

नमस्ते परमेशानि! रासमण्डलवासिनि!। रासेश्वरि! नमस्तेऽस्तु कृष्णप्राणाधिकप्रिये!।४६
नमस्त्रैलोक्यजननि! प्रसीद करुणार्णवे!। ब्रह्मविष्ण्वादिभिर्देवैर्वन्द्यमानपदाम्बुजे!।४७
नमः सरस्वतीरूपे! नमः सावित्रि!शङ्करि!। गङ्गापद्मावतीरूपे! षष्ठि! मङ्गलचण्डिके!।४८
नमस्ते तुलसीरूपे!नमो लक्ष्मीस्वरूपिणि!। नमो दुर्गे! भगवति! नमस्ते सर्वरूपिणी!।४६
मूलप्रकृतिरूपां त्वांभजामः करुणार्णवाम्। संसारसागरादस्मादुद्धराम्ब! दयां कुरु।५०
इदं स्तोत्रं त्रिसन्ध्यंयः पठेद्राधांस्मरन्नरः। नतस्यदुर्लभंकिञ्चित्कदाचिच्चभविष्यति।५१
देहान्तेच वसेन्नित्यंगोलोकेरासमण्डले। इदं रहस्यं परमं नचाऽऽख्येयन्तुकस्यचित्।५२
अधुना शृणु विपेन्द्र! दुर्गादेव्याविधानकम्। यस्याः स्मरणमात्रेणपलायन्तेमहापदः।५३
एनां नभजतेयोहितादृङ्नास्त्येवकुत्रचित्। सर्वोपास्यासर्वमाताशैवीशक्तिर्महाद्भुता।५४
सर्वबुद्ध्यधिदेवीयमन्तर्यामिस्वपिणी ।दुर्गसङ्कटहन्त्रीति दुर्गेति प्रथिता भुवि।५५
वैष्णवानाञ्चशैवानामुपास्येयञ्चनित्यशः। मूलप्रकृतिरूपासासृष्टिस्थित्यन्तकारिणी।५६
तस्या नवाक्षरं मन्त्रं वक्ष्येमन्त्रोत्तमोत्तमम्। वाग्भवंशम्भुवनिताकामवीजंततः परम्।५७
चामुण्डायै पदं पश्चाद्विच्चे इत्यक्षरद्वयम्। नवाक्षरो मनुः प्रोक्तो भजतांकल्पपादपः।५८
ब्रह्मविष्णुमहेशाना ऋषयोऽस्य प्रकीर्तिताः। छन्दांस्युक्तानि सततं गायत्र्युष्णिगनुष्टुभः।५६
महाकालीमहालक्ष्मीः सरस्वत्यपिदेवताः। स्याद्रक्तदन्तिकाबीजं दुर्गाचभ्रामरीतथा।६०
नन्दाशाकम्भरीदेव्यौभीमा च शक्तयः स्मृताः। धर्मार्थकाममोक्षेषुविनियोगउदाहृतः ।६१
ऋषिच्छन्दोदैवतानि मौलौ वक्त्रे हृदि न्यसेत्। स्तनयोः शक्तिबीजानि न्यसेत्सर्वार्थसिद्धये।६२
बीजत्रयैश्चतुर्भिश्च द्वाभ्यां सर्वेण चैव हि। षडङ्गानिमनोः कुर्याज्जातियुक्तानिदेशिकः।६३
शिखायां लोचनद्वन्द्वंश्रुतंनासाननेषुच। गुदे न्यसेन्मन्त्रवर्णान्सर्वेण व्यापकं चरेत्।६४
खड्गचक्रगदाबाणचापानि परिघं तथा। शूलं भुशुण्डीञ्च शिरः शङ्खं सन्दधतींकरैः।६५
महाकालीं त्रिनयनां नानाभूषणभूषिताम्। नीलाञ्जनसमप्रख्यां दशपादाननां भजे।६६
मधुकैटभनाशार्थंयांतुष्टावाम्बुजासनः। एवंध्यायेन्महाकालींकामबीजस्वरूपिणीम्।६७

अक्षमालाञ्च परशुं गदेषु कुलिशानि च। पद्मं धनुष्कुण्डिकाञ्चदण्डंशक्तिमसिंतथा।६८
चर्माम्बुजं तथा घण्टां सुरापात्रञ्चशूलकम्। पाशं सुदर्शनञ्चैव दधतीमरुणप्रभाम्।६९
रक्ताम्बुजासनगतां मायाबीजस्वरूपिणीम्। महालक्ष्मींभजेदेवं महिषासुरमर्दिनीम्।७०
घण्टाशूले हलं शङ्खं मुसलञ्चसुदर्शनम्। धनुर्बाणान् हस्तपद्मैर्दधानां कुन्दसन्निभाम्।७१
शुम्भादिदैत्यसंहर्त्रीं वाणीबीजस्वरूपिणीम्। महासरस्वतीं ध्यायेत्सच्चिदानन्दविग्रहाम्।७२
यन्त्रमस्याः शृणु प्राज्ञ! त्र्यस्रंषट्कोणसंयुतम्। ततोऽष्टदलपद्मञ्चचतुर्विंशतिपत्रकम् ।७३
भूगृहेण समायुक्तं यन्त्रमेवं विचिन्तयेत्। शालग्रामे घटे वाऽपि यन्त्रेवाप्रतिमासुवा।७४
बाणलिङ्गेऽथवा सूर्ये यजेद्देवीमनन्यधीः। जयादिशक्तिसंयुक्ते पीठेदेवीं प्रपूजयेत्।७५
पूर्वकोणे सरस्वत्या सहितं पद्मजं यजेत्। श्रिया सह हरिं तत्रनैर्ऋते कोणकेयजेत्।७६
पार्वत्या सहितं शम्भुं वायुकोणेसमर्चयेत्। देव्याउत्तरतः पूज्यः सिंहोवामेमहासुरम्।७७
महिषं पूजयेदन्ते षट्कोणेषुयजेत्क्रमात्। नन्दजां रक्तदन्ताञ्चतथाशाकम्भरींशिवाम्।७८
दुर्गां भीमां भ्रामरीञ्च ततो वसुदलेषु च। ब्राह्मीं माहेश्वरी चैवकौमारींवैष्णवींतथा।७९
वाराहीं नारसिंहीञ्च ऐन्द्रीं चामुण्डकां तथा। पूजयेच्च ततः पश्चात्तत्त्वपत्रेषु पूर्वतः।८०
विष्णुमायां चेतनाञ्च बुद्धिं निद्रां क्षुधां तथा। छायां शक्तिं परां तृष्णां शान्तिं जातिञ्च लज्जया।८१
शान्तिं श्रद्धां कीर्तिलक्ष्म्यौ धृतिं वृत्तिं श्रुतिं स्मृतिम्।
दयां तुष्टिं ततः पुष्टिं मातृभ्रान्ती इति क्रमात्।।८२।।
ततो भूपुरकोणेषु गणेशं क्षेत्रपालकम्। बटुकं योगीनीश्चाऽपि पूजयेन्मतिमान्नरः।८३
इन्द्राद्यानपि तद्बाह्ये वज्राद्यायुधसंयुतान्। पूजयेदनयारीत्यादेवींसावरणां ततः।८४
राजोपचारान्विविधान्दद्यादम्बाप्रतुष्टये। ततो जपेन्नवार्णञ्च मन्त्रं मन्त्रार्थपूर्वकम्।८५
ततः सप्तशतीस्तोत्रं देव्या अग्रेतु सम्पठेत्। नाऽनेन सदृशं स्तोत्रंविद्यते भुवनत्रये।८६
ततश्चानेन देवेशीं तोषयेत्प्रत्यहं नरः। धर्मार्थकाममोक्षाणामालयं जायते नरः।८७
इतिकथितं विप्र! श्रीदुर्गाया विधानकम्। कृतार्थता येन भवेत्तदेतत्कथितं तव।८८
सर्वे देवा हरिब्रह्मप्रमुखा मनवस्तथा। मुनयो ज्ञाननिष्ठाश्च योगिनश्चाऽऽश्रमास्तथा।८९
लक्ष्म्यादयस्तथा देव्यः सर्वे ध्यायन्ति तांशिवाम्। तदैव जन्मसाफल्यं दुर्गास्मरणमस्ति चेत्।९०
चतुर्दशाऽपि मनवो ध्यात्वा चरणपङ्कजम्। मनुत्वं प्राप्तवन्तश्च देवाः स्वंस्वंपदंतथा।९१
तदेतत्सर्वमाख्यातं रहस्यातिरहस्यकम्। प्रकृतीनां पञ्चकस्य तदंशानाञ्चवर्णनम्।९२
श्रुत्वैतन्मनुजोनित्यंपुरुषार्थचतुष्टयम् । लभते नाऽत्र सन्देहः सत्यंसत्यंमयोदितम्।९३
अपुत्रो लभते पुत्रं विद्यार्थी प्राप्नुयाच्च ताम्। यं यं कामं स्मरेद्वापि तं तं श्रुत्वा समाप्नुयात्।९४
नवरात्रे पठेदेतद्देव्यग्रे तु समाहितः। परितुष्टा जगद्धात्री भवत्येव हि निश्चितम्।९५
नित्ममेकैकमध्यायं पठेद्यः प्रत्यहं नरः। तस्य वश्या भवेद्देवी देवीप्रियकरो हि सः।९६
शकुनांश्च परीक्षेतनित्यमस्मिन्यथाविधि। कुमारीदिव्यहस्तेन यद्वाबटुकराम्बुजात्।९७
मनोरथं तु सङ्कल्प्य पुस्तकं पूजयेत्ततः। देवीञ्च जगदीशानीं प्रणमेच्च पुनः पुनः।९८
सुस्नातां कन्यकां तत्राऽऽनीयाऽभ्यर्च्य यथाविधि। शलाकां रोपयेन्मध्ये तया स्वर्णेन निर्मिताम्।९९
शुभं वाऽप्यशुभं तत्र यदायाति च तद्भवेत्। उदासीनेऽप्युदासीनं कार्यं भवति निश्चितम्।१००

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां नवमस्कन्धे श्रीदेवीसावरणपूजाविधिवर्णनंनामपञ्चाशत्तमोऽध्यायः।।५०।।

।।समाप्तश्चाऽयं नवमस्कन्धः।। महादेवी प्रसन्ना वरदा भवतु

॥श्रीगणेशायनमः॥ श्रीमहालक्ष्म्यैनमः॥

देवीभागवत पुराणम्

दशमः स्कन्धः

* प्रथमोऽध्यायः *

मनुकृतंदेव्याराधनवर्णनम्

नारद उवाच

नारायण! धराधार! सर्वपालनकारण!। भवतोदीरितं देवीचरितं पापनाशनम्।१
मन्वन्तरेषु सर्वेषु सा देवी यत्स्वरूपिणी। यदाकारेण कुरुते प्रादुर्भावं महेश्वरी।२
तान्नः सर्वान्समाख्याहि देवीमाहात्म्यमिश्रितान्। यथा च येन येनेह पूजिता संस्तुताऽपि हि।३
मनोरथान्पूरयति भक्तानां भक्तवत्सला। तन्नः शुश्रूषमाणानां देवीचरितमुत्तमम्।४
वर्णयस्व कृपासिन्धो! येनाऽऽप्नोति सुखं महत्।

श्रीनारायण उवाच

आकर्णय महर्षे! त्वं चरितं पापनाशनम्॥५॥
भक्तानां भक्तिजननं महासम्पत्तिकारकम्। जगद्योनिर्महातेजा ब्रह्मा लोकपितामहः।६
आविरासीन्नाभिपद्माद्देवदेवस्य चक्रिणः। च चतुर्मुख आसाद्य प्रादुर्भावं महामते।७
मनुं स्वायम्भुवं नाम जनयामास मानसात्। स मानसो मनुः पुत्रो ब्रह्मणः परमेष्ठिनः।८
शतरूपां च तत्पत्नीं जज्ञेधर्मस्वरूपिणीम्। स मनुः क्षीरसिन्धोश्च तीरे परमपावने।९
देवीमाराधयामास महाभाग्यफलप्रदाम्। मूर्त्तिंच मृण्मयींतस्याविधायपृथिवीपतिः।१०
उपासते स्म तां देवीं वाग्भवंसजपन् रहः। निराहारोजितश्वासोनियमव्रतकर्शितः।११
एकपादेन सन्तिष्ठन् धरायामनिशं स्थिरः। शतवर्षं जितः कामः क्रोधस्तेनमहात्मना।१२
भजे स्थावरतां देव्याश्चरणौ चिन्तयन् हृदि। तस्य तत्तपसा देवीप्रादुर्भूताजगन्मयी।१३
उवाच वचनं दिव्यं वरं वरय भूमिप!। तत आनन्दजनकं श्रुत्वा वाक्यं महीपतिः।१४
वरयामास तान्हृत्स्थान् वरानमरदुर्लभान्।

मनुरुवाच

जय देवि! विशालाक्षि! जय सर्वान्तरस्थिते!॥१५॥
मान्ये! पूज्ये! जगद्धात्रि! सर्वमङ्गलमङ्गले!। त्वत्कटाक्षावलोकेनपद्मभूः सृजतेजगत्।१६
वैकुण्ठः पालयत्येव हरः संहरते क्षणात्। शचीपतिस्त्रिलोक्याश्चशासकोभवदाज्ञया।१७
प्राणिनः शिक्षयत्येव दण्डेन च परेतराट्। यादसामधिपः पाशी पालनं मादृशामपि।१८
कुरुते स कुबेरोऽपि निधीनां पतिरव्ययः। हुतभुङ्नैर्ऋतो वायुरीशानः शेष एवच।१९
त्वदंशसम्भवा एव त्वच्छक्तिपरिबृंहिताः। अथाऽपि यदि मे देवि वरो देयोऽस्ति साम्प्रतम्।२०
तदा प्रह्वाः सर्गकार्ये विघ्नानश्यन्तुमेशिवे!। वाग्भवस्याऽपिमन्त्रस्ययेकेचिदुपसेविनः।२१
तेषां सिद्धिःसत्वराऽपि कार्याणां जायतामपि। ये सम्वादमिमं देवि! पठन्ति श्रावयन्ति च।२२
तेषां लोके भुक्तिमुक्ती सुलभेभवतांशिवे!। जातिस्मरत्वंभवतुवक्तृत्वंसौष्ठवंतथा।२३
ज्ञानसिद्धिःकर्ममार्गसंसिद्धिरपिचाऽस्तु हि। पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च जायेदित्येवमेवचः।२४

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे मनुकृतंदेव्याः स्तवनंनाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

* द्वितीयोऽध्यायः *

विन्ध्यवासिनीप्रसङ्गे विन्ध्योपाख्यानम्

श्रीदेव्युवाच

भूमिपाल! महाबाहो! सर्वमेतद्भविष्यति। यत्त्वया प्रार्थितं तत्ते ददामि मनुजाधिप!।१
अहं प्रसन्ना दैत्येन्द्रनाशनाऽमोघविक्रमा। वाग्भवस्य जपेनैव तपसा ते सुनिश्चितम्।२
राज्यं निष्कण्टकं तेऽस्तु पुत्रा वंशकरा अपि। मयि भक्तिर्दृढा वत्स मोक्षान्ते सत्पदे भवेत्।३
एवं वरान्महादेवी तस्मै दत्त्वा महात्मने। पश्यतस्तु मनोरेव जगाम विन्ध्यपर्वतम्।४
योऽसौ विन्ध्याचलो रुद्धः कुम्भोद्भवमहर्षिणा। भानुमार्गावरोधार्थं प्रवृत्तो गगनं स्पृशन्।५
सा विन्ध्यवासिनी विष्णोरनुजावरदेश्वरी। बभूवपूज्यालोकानांसर्वेषांमुनिसत्तम! ।६

ऋषय ऊचुः

कोऽसौ विन्ध्याचलः सूत! किमर्थंगगनं स्पृशन्। भानुमार्गावरोधं च किमर्थं कृतवानसौ।७
कथं च मैत्रावरुणिः पर्वतं तं महोन्नतम्। प्रकृतिस्थं चकारेति सर्वंविस्तरतोवद।८
नहि तृप्यामहे साधो! त्वदास्यगलिताऽमृतम्। देव्याश्चरित्ररूपाख्यं पीत्वा तृष्णा प्रवर्धते।९

सूत उवाच

आसीद्विन्ध्याचलो नाम मान्यः सर्वधराभृताम्। महावनसमूहाढ्यो महापादपसम्वृतः।१०
[सुपुष्पितैरनेकैश्चलतागुल्मैस्तुसम्वृतः] मृगा। वराहा महिषा व्याघ्राः शार्दूलकाअपि।११
वानराः शशका ऋक्षाः शृगालाश्च समन्ततः। विचरन्तिसदाहृष्टाः पुष्टाः एवमहोद्यमाः।१२
नदीनदजलक्रान्तो देवगन्धर्वकिन्नरैः। अप्सरोभिः किम्पुरुषैः सर्वकामफलद्रुमैः।१३
एतादृशे विन्ध्यनगे कदाचित्पर्यटन्महीम्। देवर्षिः परमप्रीतोजगामस्वेच्छयामुनिः।१४
तं दृष्ट्वासनगो मङ्क्षु तूर्णमुत्थायसम्भ्रमात्। पाद्यमर्घ्यं तथादत्त्वावरासनमथाऽर्पयत्।१५
सुखोपविष्टं देवर्षिं प्रसन्नं नग ऊचिवान्।

विन्ध्य उवाच

देवर्षे! कथ्यतां जात आगमः कुत उत्तमः ।।१६।।
तवाऽऽगमनतो जातमनर्घ्यं ममममन्दिरम्। तव चङ्क्रमणंदेवाऽभयार्थं हि यथा रवेः।१७
अपूर्वं जन्मतो वृत्तं तद् ब्रूहि मम नारद! ।

नारद उवाच

ममाऽऽगमनमिन्द्रारे! जातं स्वर्णगिरेरथ ।।१८।।
तत्र दृष्टा मया लोकाः शक्राग्नियमपाशिनाम्। सर्वेषांलोकपालानांभवनानिसमन्ततः ।१९
मया दृष्टानि विन्ध्याग! नानाभोगप्रदानि च। इति चोक्त्वा ब्रह्मयोनिः पुनरुच्छ्वासमाविशात्।२०
उच्छ्वसन्तं मुनिं दृष्ट्वापुनः पप्रच्छशैलराट्। उच्छ्वासकारणंकिंतद्ब्रूहिदेवऋषेमम ।२१
इत्याकर्ण्य नगस्योक्तं देवर्षिरमितद्युतिः। अब्रवीच्छ्रूयतां वत्स! ममोच्छ्वासस्य कारणम्।२२
गौरीगुरुस्तु हिमवाञ्छिवस्य श्वशुरः किल। सम्बन्धित्वात्पशुपतेः पूज्य आसीत्क्ष्माभृताम्।२३
एवमेव च कैलासः शिवस्यावसथः प्रभुः। पूज्यः पृथ्वीभृतांजातोलोकेपापौघदारणः।२४
निषधः पर्वतो नीलो गन्धमादन एव च। पूज्याः स्वस्थानमासाद्य सर्वएवक्ष्माभृतः।२५
यं पर्येति च विश्वात्मासहस्रकिरणःस्वराट्। सग्रहर्क्षगणोपेतः सोऽयंकनकपर्वतः।२६
आत्मानं मनुते श्रेष्ठं वरिष्ठं चधराभृताम्। सर्वेषामहमेवाग्र्योनास्तिलोकेषुमत्समः ।२७
एवं मानाभिमानं तं स्मृत्वोच्छ्वासो मयोज्झितः। अस्तु नैतावताकृत्यं तपोबलवतां नग!।
प्रसङ्गतो मयोक्तं ते गमिष्यामि निजंगृहम्।।२८।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे विन्ध्योपाख्यानवर्णनं नामद्वितीयोऽध्यायः।२

* तृतीयोऽध्यायः *

मेरुगर्वापहारायविन्ध्योत्थानवर्णनम्

सूत उवाच

एवं समुपदिश्याऽयं देवर्षिः परमः स्वराट्। जगाम ब्रह्मणोलोकंस्वैरचारीमहामुनिः।१
गते मुनिवरे विन्ध्यश्चिन्तां लेभेऽनपायिनीम्। नैव शान्तिं स लेभे च सदाऽन्तः कृतशोचनः।२
कथं किन्त्वत्र मे कार्यं कथं मेरुं जयाम्यहम्। नैव शान्तिं लभे नाऽपि स्वास्थ्यं मे मानसे भवेत्।३
"धिगुत्साहं च मानं च धिङ्के कीर्तिं च धिक्कुलम्।"
धिग्बलं मे पौरुषं धिक् स्मृतं पूर्वैर्महात्मभिः। एवं चिन्तयमानस्य विन्ध्यस्य मनसि स्फुटम्।४
प्रादुर्भूता मतिः कार्ये कर्तव्या दोषकारिणी। मेरुप्रदक्षिणांकुर्वन्नित्यमेवदिवाकरः ।५
सग्रहर्क्षगणोपेतः सदा दृप्यत्ययंनगः। तस्य मार्गस्य संरोधं करिष्यामि निजैः करैः।६
तदा निरुद्धो द्युमणिः परिक्रामेत्कथं नगम्। एवं मार्गे निरुद्धे तु मया दिनकरस्यच।७
भग्नदर्पो दिव्यनगो भविष्यति विनिश्चितम्। एवं निश्चित्य विन्ध्याद्रिः खं स्पृशन्ववृधे भुजैः।८
महोन्नतैः शृङ्गवरैः सर्वं व्याप्य व्यवस्थितः। कदोदेष्यति भास्वांस्तं रोधयिष्याम्यहं कव।९
एवं सञ्चिन्तयानस्यसाव्यतीयाय शर्वरी। प्रभातं विमलं जज्ञे दिशोवितमिराः करैः।१०
कुर्वन्स निर्गतो भानुरुदयायोदये गिरौ। प्रकाशतेस्म विमलं नभो भानुकरैः शुभैः।११
विकाशं नलिनींभेजेमीलनञ्चकुमुद्वती। स्वानिकार्याणि सर्वेच लोकाः समुपतस्थिरे।१२
हव्यं कव्यं भूतबलिं देवानाञ्च प्रवर्धयन्। प्राह्णापराह्णविभागेन त्विषांपतिः।१३
एवं प्राचीं तथाऽऽग्नेयीं समाश्वास्य वियोगिनीम्। ज्वलन्तीं चिरकालीनविरहादिव कामिनीम्।१४
भास्करोऽथ कृशानोश्चदिशं नूनंविहायच। याम्यां गन्तुं ततस्तूर्णंप्रतस्थेकमलाकरः।१५
न शेकुश्चाऽग्रतो गन्तुं ततोऽनूरुर्व्यजिज्ञपत्।

अनूरुरुवाच

भानो! मानोन्नतो विन्ध्यो निरुध्य गगनं स्थितः ।।१६।।
स्पर्धते मेरुणा प्रेप्सुस्त्वद्दत्ताञ्च प्रदक्षिणाम्।

सूत उवाच

अनूरुवाक्यमाकर्ण्य सविता ह्यास चिन्तयन् ।।१७।।
अहोगगनमार्गोऽपिरुध्यतेचाऽतिविस्मयः। प्रायः शूरोनकिंकुर्यादुत्पथेवर्त्मनिस्थितः।१८
निरुद्धो नो वाजिमार्गो दैवंहि बलवत्तरम्। राहुबाहुग्रहव्यग्रो यः क्षणंनाऽवतिष्ठते।१९
स चिरंरुद्धमार्गोऽपिकिंकरोति विधिर्बली। एवंचमार्गे संरुद्धे लोकाः सर्वेचसेश्वराः।२०
नान्वविन्दन्त शरणं कर्तव्यं नाऽन्वपद्यत। चित्रगुप्तादयः सर्वे कालं जानन्ति सूर्यतः।२१
संरुद्धोविन्ध्यगिरिणाअहोदैवविपर्ययः ।यदा निरुद्धः सवितागिरिणा स्पर्धया तदा।२२
नष्टः स्वाहास्वधाकारो नष्टप्रायमभूज्जगत्। एवञ्च पाश्चिमा लोका दाक्षिणात्यास्तथैव च।२३
निद्रामीलितचक्षुष्का निशामेव प्रपेदिरे। प्राञ्चस्तथोत्तराहाश्चतीक्ष्णतापप्रतापिताः।२४
मृता नष्टाश्च भग्नाश्चविनाशमभजन्प्रजाः। हाहाभूतं जगत्सर्वं स्वधाकव्यविवर्जितम्।
देवाः सेन्द्राः समुद्विग्नाः किं कुर्म इतिवादिनः ।।२५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे देवीमाहात्म्ये विन्ध्योपाख्याननंनाम तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

ब्रह्मादिभीरुद्रप्रार्थनवर्णनम्

सूत उवाच

ततः सर्वे सुरगणा महेन्द्रप्रमुखास्तदा। पद्मयोनिं पुरस्कृत्य रुद्रं शरणमन्वयुः।१

उपतस्थुः प्रणतिभिः स्तोत्रैश्चारुविभूतिभिः ।
देवदेवं गिरिशयं ाशिलोलितशेखरम् ।।२।।

देवा ऊचुः

जयदेव! गणाध्यक्ष! उमालालितपङ्कज!। अष्टसिद्धिविभूतीनां दात्रे भक्तजनाय ते।३
महामायाविलसितस्थानाय परमात्मने। वृषाङ्कायामरेशाय कैलाशस्थितिशालिने।४
अहिर्बुध्न्याय मान्यायमनवे मानदायिने। अजाय बहुरूपाय स्वात्मारामाय शम्भवे।५
गणनाथाय देवाय गिरिशाय नमोऽस्तु ते। महाविभूतिदात्रे ते महाविष्णुस्तुताय च।६
विष्णुहृत्कञ्जवासाय महायोगरताय च। योगगम्याय योगाय योगिनां पतये नमः।७
योगीशाय नमस्तुभ्यं योगानां फलदायिने। दीनदानपरायाऽपि दयासागरमूर्तये।८
आर्तिप्रशमनायोग्रवीर्याय गुणमूर्त्तये। वृषध्वजाय कालाय कालकालाय ते नमः।९

सूत उवाच

एवं स्तुतः स देवेशो यज्ञभुग्भिर्वृषध्वजः। प्राहगम्भीरयावाचा प्रहसन्विबुधर्षभान्।१०

श्रीभगवानुवाच

प्रसन्नोऽहं दिविषदः! स्तोत्रेणोत्तमपूरुषाः!। मनोरथं पूरयामि सर्वेषां देवतर्षभाः!।११

देवा ऊचुः

सर्वदेवेश! गिरिश! शशिमौलिविराजित!। आर्तानांशङ्करस्त्वञ्चशं विधेहिमहाबल!।१२
पर्वतो विन्ध्यनामाऽस्तिमेरुद्वेष्टामहोन्नतः। भानुमार्गनिरोद्धाहिसर्वेषांदुःखदोऽनघ।१३

तद्वृद्धिंस्तम्भयेशान सर्वकल्याणकृद्भव! ।
भानुसञ्चाररोधेन कालज्ञानं कथम्भवेत् ।।१४।।
नष्टस्वाहास्वधाकारे लोके कः शरणं भवेत् ।
अस्माकञ्च भयार्तानां भवानेव हि दृश्यते ।।१५।।
दुःखनाशकरो देव प्रसीद ! गिरिजापते! ।

श्रीभगवानुवाच

नाऽस्माकं शक्तिरस्तीह तद्वृद्धिस्तम्भने सुराः ।।१६।।
इममेवं वदिष्यामो भगवन्तंरमाधवम् ।
सोऽस्माकं प्रभुरात्माच पूज्यः कारणरूपधृक् ।।१७।।
गोविन्दो भगवान्विष्णुः सर्वकारणकारणः ।
तं गत्वा कथयिष्यामः स दुःखान्तो भविष्यति ।।१८।।

इत्येवमाकर्ण्य गिरीशभाषितं देवाश्च सेन्द्राः सपयोजसम्भवाः ।
रुद्रं पुरस्कृत्य च वेपमाना वैकुण्ठलोकं प्रति जग्मुरञ्जसा ।।१९।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यांसंहितायां दशमस्कन्धे रुद्रप्रार्थनंनाम चतुर्थोऽध्यायः।।४।।

* पञ्चमोऽध्यायः *

स्तवप्रसन्नेनविष्णुनादेवेभ्योवरदानम्

सूत उवाच

ते गत्वा देवदेवेशं रमानाथं जगद्गुरुम्। विष्णुं कमलपत्राक्षं ददृशुः प्रभयान्वितम्।१
स्तोत्रेण तुष्टुवुर्भक्त्या गद्गदस्वरसत्कृताः ।

देवाऊचुः

जय विष्णो! रमेशाऽऽद्य महापुरुषपूर्वज! ।।२।।
दैत्यारे! कामजनक! सर्वकामफलप्रद!। महावराह! गोविन्द! महायज्ञस्वरूपक!।३
महाविष्णो! ध्रुवेशाऽऽद्य! जगदुत्पत्तिकारण!। मत्स्यावतारेवेदानामुद्धाराधाररूपक! ।४
सत्यव्रतधराधीश! मत्स्यरूपाय ते नमः। जयाऽकूपारदैत्यारे! सुरकार्यसमर्पक!।५
अमृताप्तिकरेशान! कूर्मरूपाय ते नमः। जयाऽऽदिदैत्यनाशारर्थमादिसूकररूपधृक्।६
मह्युद्धारकृतोद्योगकोलरूपाय ते नमः। नारसिंहं वपुः कृत्वा महादैत्यं ददार यः।७
करजैर्वरदृप्ताङ्गं तस्मै नृहरये नमः। वामनं रूपमास्थाय त्रैलोक्यैश्वर्यमोहितम्।८
बलिं सञ्छलयामास तस्मै वामनरूपिणे। दुष्टक्षत्त्रविनाशाय सहस्त्रकरशत्रवे।९
रेणुकागर्भजाताय जामदग्न्याय ते नमः। दुष्टराक्षसपौलस्त्यशिरश्छेदपटीयसे ।१०
श्रीमद्दाशरथे तुभ्यं नमोऽनन्तक्रमाय च। कंसदुर्योधनाद्यैश्चदैत्यैः पृथ्वीशलाञ्छनैः।११
भाराक्रान्तां महीं योऽसावुज्जहारमहाविभुः। धर्मं संस्थापयामासपापं कृत्वासुदूरतः।१२
तस्मै कृष्णाय देवाय नमोऽस्तु बहुधा विभो!। दुष्टयज्ञविघाताय पशुहिंसानिवृत्तये।१३
बौद्धरूपं दधौ योऽसौतस्मैदेवाय ते नमः। म्लेच्छप्रायेऽखिलेलोकेदुष्टराजन्यपीडिते।१४
कल्किरूपं समादध्यौ देवदेवाय ते नमः। दशावतारास्ते देवभक्तानां रक्षणाय वै।१५
दुष्टदैत्यविघाताय तस्मात्त्वं सर्वदुःखहृत्। जयभक्तार्तिनाशाय धृतं नारीजलात्मसु।१६
रूपंयेनत्वयादेव! कोऽन्यस्त्वत्तोदयानिधिः। इत्येवंदेवदेवेशंस्तुत्वाश्रीपीतवाससम् ।१७
प्रणेमुर्भक्तिसहिताः साष्टाष्टं बिबुधर्षभाः। तेषां स्तवं समाकर्ण्य देवः श्रीपुरुषोत्तमः।१८
उवाच विबुधान्सर्वान्हर्षयञ्छ्रीगदाधरः ।

श्रीभगवानुवाच

प्रसन्नोऽस्मि स्तवेनाऽहं देवास्तापं विमुञ्चथ ।।१९।।
भवतां नाशयिष्यामि दुःखं परमदुःसहम्। वृणुध्वञ्च वरं मत्तो देवाः परमदुर्लभम्।२०
ददामि परमप्रीतः स्तवस्याऽस्य प्रसादतः। य एतत्पठतेस्तोत्रंकल्यउत्थायमानवः।२१
मयि भक्तिं परां कृत्वा न तं शोकः स्पृशेत्कदा। अलक्ष्मीकालकर्णी च नाऽऽक्रामेत्तद् गृहं सुराः।२२
नोपसर्गा नवेतालानग्रहाब्रह्मराक्षसाः। न रोगावातिकाः पैत्ताः श्लेष्मसम्भविनस्तथा।२३
नाऽकालमरणं तस्यकदापिचभविष्यति। सन्ततिश्चिरकालस्थाभोगाः सर्वेसुखादयः।२४
सम्भविष्यन्ति तन्मर्त्यगृहे यस्तोत्रपाठकः। किंपुनर्बहुनोक्तेनस्तोत्रंसर्वार्थसाधकम् ।२५
एतस्यपठनान्नृणां भुक्तिमुक्ती न दूरतः। देवा भवत्सु यद्दुखं कथ्यतां तदसंशयम्।२६
नाशयामि न सन्देहश्चाऽत्र कार्योऽणुरेव च। एवंश्रीभगवद्वाक्यंश्रुत्वासर्वे दिवौकसः ।
प्रसन्नमनसः सर्वे पुनरूचुर्वृषाकपिम् ।।२७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे श्रीविष्णुनादेवेभ्योवरदानंनाम पञ्चमोऽध्यायः ।।५।।

* षष्ठोऽध्यायः *

अगस्त्यस्तुतिपूर्वकंदेवेभ्योमुनिनाप्रीतेनसान्त्वनादानम्

सूत उवाच

श्रीशस्य वचनाद्देवाः सन्तुष्टा सर्व एव हि। प्रसन्नमनसो भूत्वा पुनरेनं समूचिरे।१

देवा ऊचुः

देवदेव! महाविष्णो! सृष्टिस्थित्यन्तकारण!। विष्णो विन्ध्यनगोऽर्कस्य मार्गरोधं करोति हि।२
तेनभानुविरोधेन सर्व एव महाविभो!। अलब्धभोगभागा हि किं कुर्मः कुत्रयामहि।३

श्रीभगवानुवाच

या कर्त्री सर्वजगतामाद्या च कुलवर्धनी। देवी भगवती तस्याः पूजकः परमद्युतिः।४
अगस्त्यो मुनिवर्योऽसौ वाराणस्यां समासते। तत्तेजोवञ्चकोऽगस्त्यो भविष्यति सुरोत्तमाः!।५
तंप्रसाद्यद्विजवरमगस्त्यंपरमौजसम् । याचध्वंविबुधाः काशींगत्वानिःश्रेयसः पदीम्।६

सूत उवाच

एवं समुपदिष्टास्तेविष्णुनाविबुधोत्तमाः। प्रतीताः प्रणताः सर्वेजग्मुर्वाराणसींपुरीम्।७
क्षणेन विबुधश्रेष्ठागत्वाकाशीपुरींशुभाम्। मणिकर्णीं समाप्लुत्यसचैलंभक्तिसंयुताः।८
सन्तर्प्य देवाश्च पितृन्दत्त्वा दानंविधानतः। आगत्यमुनिवर्यस्यचाऽऽश्रमंपरमंमहत् ।९
प्रशान्तश्वापदाकीर्णनानापादपसङ्कुलम् । मयूरैः सारसैर्हंसैश्चक्रवाकैरुपाश्रितम्।१०
महावराहैः कोलैश्च व्याघ्रैः शार्दूलकैरपि। मृगैरुरुभिरत्यर्थंखड्गैः शरभकैरपि।११
समाश्रितं परमया लक्ष्म्या मुनिवरं तदा। दण्डवत्पतिताः सर्वे प्रणेमुश्च पुनः पुनः।१२

देवा ऊचुः

जयद्विजगणाधीश! मान्य पूज्य! धरासुर!। वातापीबलनाशाय नमस्ते कुम्भयोनये।१३
लोपामुद्रापते! श्रीमन्मित्रावरुणसम्भव!। सर्वविद्यानिधेऽगस्त्य! शास्त्रयोने! नमोऽस्तु ते।१४
यस्योदये प्रसन्नानि भवन्त्युज्ज्वलभाञ्ज्यपि। तोयानि तोयराशीनां तस्मै तुभ्यं नमोऽस्तुते।१५
काशपुष्पविकासाय लङ्कावासप्रियाय च। जटामण्डलयुक्ताय सशिष्यायनमोऽस्तुते।१६
जय सर्वामरस्तव्यगुणराशे! महामुने!। वरिष्ठाय च पूज्याय सस्त्रीकाय नमोऽस्तुते।१७
प्रसादः क्रियतां स्वामिन्वयं त्वां शरणं गताः। दुस्तराच्छैलजाद्दुःखात्पीडिताः परमद्युते!।१८
इत्येवं संस्तुतोऽगस्त्योमुनिः परमधार्मिकः। प्राह प्रसन्नयावाचाविहसन्द्विजसत्तमः।१९

मुनिरुवाच

भवन्तः परमश्रेष्ठा देवास्त्रिभुवनेश्वराः। लोकपालामहात्मानो निग्रहाऽनुग्रहक्षमाः।२०
योऽमरावत्यधीशानः कुलिशं यस्य चाऽऽयुधम्। सिद्ध्यष्टकञ्च यद्द्वारि स शक्रो मरुताम्पतिः।२१
वैश्वानरः कृशानुर्हि हव्यकव्यवहोऽनिशम्। मुखं सर्वामराणां हि सोऽग्निः किं तस्य दुष्करम्।२२
रक्षोगणाधिपोभामः सर्वेषांकर्मसाक्षिकः। दण्डव्यग्रकरोदेवः किंतस्याऽसुकरं सुराः!।२३
तथाऽपि यदि देवेशाः! कार्यं मच्छक्तिसिद्धिभृत्। अस्ति चेदुच्यतां देवाः करिष्यामि न संशयः।२४
एवं मुनिवरेणोक्तं निशम्यविबुधर्षभाः। प्रतीताः प्रणयोद्विग्नाः कार्यं निजगदुर्निजम्।२५
महर्षे! विन्ध्यगिरिणा! निरुद्धोऽर्कविनिर्गमः। त्रैलोक्यंतेनसाम्वष्टंहाहाभूतमचेतनम् ।२६
तद्वृद्धिंस्तम्भयमुने! निजयातपसः श्रिया। भवतस्तेजसाऽगस्त्यनूनंनम्रोभविष्यति ।
एतदेवाऽस्मदीयञ्च कार्यं कर्तव्यमस्ति हि।।२७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे अगस्त्यद्वारादेवसान्त्वनंनाम षष्ठोऽध्यायः।।६।।

* सप्तमोऽध्यायः *

विन्ध्यसमुन्नतिकुण्ठनवर्णनम्

सूत उवाच

इतिवाक्यं समाकर्ण्य विबुधानांद्विजोत्तमः। करिष्येकार्यमेतद्वः प्रत्युवाचततोमुनिः।१
अङ्गीकृते तदा कार्ये मुनिनाकुम्भजन्मना। देवाः प्रमुदिताः सर्वे बभूवुर्द्विजसत्तमाः।२
ते देवाः स्वानि धिष्ण्यानि भेजिरे मुनिवाक्यतः। पत्नीं मुनिवरः श्रीमानुवाच नृपकन्यकाम्।३
अये नृपसुते! प्राप्तो विघ्नोऽनर्थस्य कारकः। भानुमार्गनिरोधेनकृतो विन्ध्यमहीभृता।४
अज्ञातं कारणंतच्चस्मृतंवाक्यंपुरातनम्। काशीमुद्दिश्ययद्गीतंमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः।५
अविमुक्तं न मोक्तव्यं सर्वथैव मुमुक्षुभिः। किन्तु विघ्ना भविष्यन्ति काश्यां निवसतां सताम्।६
सोऽन्तरायोमयाप्राप्तः काश्यांनिवसताप्रिये। इत्येवमुक्त्वाभार्यांतां मुनिः परमतापनः।७
मणिकर्ण्यांसमाप्लुत्यदृष्ट्वाविश्वेश्वरंविभुम्। दण्डपाणिंसमभ्यर्च्यकालराजंसमागतः ।८
कालराजमहाबाहो! भक्तानां भयहारक!। कथं दूरयसे पुर्याः काशीपुर्यास्त्वमीश्वरः।६
त्वंकाशीवासविघ्नानां नाशकोभक्तरक्षकः। मांकिंदूरयसेस्वामिन्भक्तार्तिविनिवारक।१०
परापवादो नोक्तो मे न पैशुन्यं नचानृतम्। केनकर्मविपाकेन काश्या दूरं करोषिमाम्।११
एवं प्रार्थ्य च तं कालनाथं कुम्भोद्भवो मुनिः। जगाम साक्षिविघ्नेशं सर्वविघ्ननिवारणम्।१२
तं दृष्ट्वाऽभ्यर्च्य सम्प्रार्थ्य ततः पुर्या विनिर्गतः। लोपामुद्रापतिः श्रीमानगस्त्यो दक्षिणां दिशम्।१३
काशीविरहसन्तप्तो महाभाग्यनिधिर्मुनिः। संस्मृत्याऽनुक्षणंकाशींजगामसहभार्यया।१४
तपोयानमिवाऽऽरुह्य निमिषार्धेनवै मुनिः। अग्रे ददर्श तं विन्ध्यं रुद्धाम्बरमथोन्नतम्।१५
चकम्पे चाऽचलस्तूर्णं दृष्ट्वैवाऽग्रे स्थितं मुनिम्। गिरिः खर्वतरो भूत्वा विवक्षुरवनीमिव।१६
दण्डवत्पतितो भूमौ साष्टाङ्गंभक्तिभावितः। तं दृष्ट्वानम्रशिखरंविन्ध्यंनाममहागिरिम्।१७
प्रसन्नवदनोऽगस्त्योमुनिर्विन्ध्यमथाऽब्रवीत्। वत्सैवंतिष्ठतावत्त्वंयावदागम्यतेमया ।१८
अशक्तोऽहं गण्डशैलारोहणेतवपुत्रक!। एवमुक्त्वामुनिर्याम्यदिशम्प्रति गमोत्सुकः।१६
आरुह्य तस्य शिखराण्यवारुहदनुक्रमात्। गतो याम्यदिशंचापि श्रीशैलंप्रेक्ष्यवर्त्मनि।२०
मलयाचलमासाद्य तत्राऽऽश्रमपरोऽभवत्। साऽपिदेवीतत्रविन्ध्यमागतामनुपूजिता ।२१
लोकेषु प्रथिता विन्ध्यवासिनीति च शौनक! ।

सूतउवाच

एतच्चरित्रं परमं शत्रुनाशनमुत्तमम् ।।२२।।
अगस्त्यविन्ध्यनगयोराख्यानं पापनाशनम्। राज्ञांविजयदंतच्चद्विजानां ज्ञानवर्धनम्।२३
वैश्यानां धान्यधनदंशूद्राणांसुखदंतथा। धर्मार्थीधर्ममाप्नोति धनार्थीधनमाप्नुयात्।२४
कामानवाप्नुयात्कामी भक्त्या चाऽस्य सकृच्छ्रवात् ।
एवं स्वायम्भुवमनुर्देवीमाराध्य भक्तितः ।।२५।।
लेभे राज्यं धरायांश्च निजमन्वन्तराश्रयम्।।२६।।
इत्येतद्वर्णितं सौम्य! मयामन्वन्तराश्रितम्। आद्यंचरित्रंश्रीदेव्याः किंपुनः कथयामिते।२७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे विन्ध्यसमुन्नतिकुण्ठनंनाम सप्तमोऽध्यायः।।७।।

* अष्टमोऽध्यायः *

मनूत्पत्तिवर्णनम्

शौनक उवाच

आद्यो मन्वन्तरः प्रोक्तोभवताचाऽयमुत्तमः। अन्येषामुद्भवंब्रूहिमनूनां दिव्यतेजसाम्।१

सूत उवाच

एवमाद्यस्यचोत्पत्तिंश्रुत्वास्वायम्भुवस्यहि। अन्येषांक्रमशस्तेषांसम्भूतिंपरिपृच्छति ।२

नारदः परमो ज्ञानी देवीतत्त्वार्थकोविदः।

नारद उवाच

मनूनां मे समाख्याहि सूत्पतिञ्च सनातन! ।।३।।

श्रीनारायण उवाच

प्रथमोऽयं मनुः स्वायम्भुवउक्तोमहामुने!। देव्याराधनतो येन प्राप्तंराज्यमकण्टकम्।४

प्रियव्रतोत्तानपादौ मनुपुत्रौ महौजसौ। राज्यपालनकर्तारौ विख्यातौ वसुधातले।५

द्वितीयश्च मनुः स्वारोचिष उक्तोमनीषिभिः। प्रियव्रतसुतः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः।६

सस्वारोचिषनामाऽपिकालिन्दीकूलतोमनुः। निवासं कल्पयामाससर्वसत्त्वप्रियङ्करः।७

जीर्णपत्राशनो भूत्वा तपः कर्तुमनुव्रतः। देव्या मूर्तिं मृण्मयीं च पूजयामासभक्तितः।८

एवं द्वादश वर्षाणि वनस्थस्य तपस्यतः। देवी प्रादुरभूत्तात! सहस्रार्कसमद्युतिः।९

ततः प्रसन्नादेवेशी स्तवराजेन सुव्रता। ददौ स्वारोचिषायैव सर्वमन्वन्तराश्रयम्।१०

आधिपत्यंजगद्धात्रीतारिणीतिप्रथामगात्। एवंस्वारोचिषमनुस्तारिण्याराधनात्ततः।११

आधिपत्यञ्च लेभे स सर्वारातिविवर्जितम्। धर्मं संस्थाप्य विधिवद्राज्यं पुत्रैः समं विभुः।१२

भुक्त्वा जगाम स्वर्लोकं निजमन्वन्तराश्रयात्। तृतीय उत्तमोनाम प्रियव्रतसुतोमनुः।१३

गङ्गाकूले तपस्तप्त्वा वाग्भवं सञ्जपन्रहः। वर्षाणि त्रीण्युपवसन्देव्यनुग्रहमाविशत्।१४

स्तुत्वा देवीं स्तोत्रवरैर्भक्तिभावितमानसः। राज्यं निष्कण्टकं लेभे सन्ततिं चिरकालिकीम्।१५

राज्योत्थान्यानि सौख्यानि भुक्त्वा धर्मान्युगस्य च ।

सोऽप्याजगाम पदवीं राजर्षिवरभाविताम् ।।१६।।

चतुर्थस्तामसो नाम प्रियव्रतसुतो मनुः। नर्मदादक्षिणे कूले समाराध्य जगन्मयीम्।१७

महेश्वरीं कामराजकूटजापपरायणः। वासन्ते शारदे काले नवरात्रसपर्यया।१८

तोषयामास देवेशीं जलजाक्षीमनूपमाम्। तस्याः प्रसादमासाद्य नत्वा स्तोत्रैरनुत्तमैः।१९

अकण्टकं महद्राज्यं बुभुजे गतसाध्वसः। पुत्रान्बलोद्धताञ्छूरान्दशवीर्यनिकेतनान्।२०

उत्पाद्य निजभार्यायां जगामाऽम्बरमुत्तमम्। पञ्चमो मनुराख्यातोरैवतस्तामसानुजः।२१

कालिन्दीकूलमाश्रित्य जजाप कामसञ्ज्ञकम्। बीजं परमवाग्दर्पदायकं साधकाश्रयम्।२२

एतदाराधनादाप स्वाराज्यर्द्धिमनुत्तमाम्। बलमप्रहतं लोके सर्वसिद्धिविधायकम्।२३

सन्ततिं चिरकालीनां पुत्रपौत्रमयीं शुभाम्। धर्मान्व्यस्य व्यवस्थाप्य विषयानुपभुज्य च।२४

जगामाप्रतिमः शूरो महेन्द्रालयमुत्तमम् ।।२५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे चाक्षुषमनूत्पत्तिवर्णनंनामाऽष्टमोऽध्यायः।।८।।

* नवमोऽध्यायः *

चाक्षुषमनुवृत्तवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अथाऽतः श्रूयतांचित्रं देवीमाहात्म्यमुत्तमम्। अङ्गपुत्रेणमनुनायथाऽऽप्तंराज्यमुत्तमम्।१
अङ्गस्य राज्ञः पुत्रोऽभूच्चाक्षुषो मनुरुत्तमः। षष्ठः सपुलहं नाम ब्रह्मर्षिं शरणं गतः।२
ब्रह्मर्षे! त्वामहं प्राप्तः शरणं प्राणतार्तिहन्! शाधि मां किङ्करं स्वामिन्येनाऽहं प्राप्नुयां श्रियम्।३
मेदिन्याश्चाधिपत्यंमेस्याद्यथावदखण्डितम्। अव्याहतम्भुजबलंशस्त्रास्त्रनिपुणंक्षमम्।४
सन्ततिश्चिरकालीनाऽप्यखण्डं वयउत्तमम्। अन्तेऽपवर्गलाभश्च स्यात्तथोपदिशाऽद्य मे।५
इत्येवं वचनं तस्य मनोःकर्णपथेऽभवत्। प्रत्युवाचमुनिः श्रीमान्देव्याः संराधनम्परम्।६
राजन्नाकर्णय वचोममश्रोत्रसुखंमहत्। शिवोमाराधयाऽद्य त्वं तत्प्रसादादिदम्भवेत्।७

चाक्षुष उवाच

कीदृगाराधनं देव्यास्तस्याः परमपावनम्। केनाकारेण कर्तव्यं कारुण्याद्वक्तुमर्हसि।८

मुनिरुवाच

राजन्नाकर्ण्यतां देव्याः पूजनं परमव्ययम्। वाग्भवं बीजमव्यक्तं सञ्जप्यमनिशं तथा।९
त्रिकालं सञ्जपन्मर्त्यो भुक्तिमुक्तीलभेत्तु हि। नबीजं वाग्भवादन्यदस्तिराजन्यनन्दन।१०
जपात्सिद्धिकरं वीर्यबलवृद्धिकरंपरम्। एतस्यजापात्पाद्मोऽपिसृष्टिकर्तामहाबलः।११
विष्णुर्यज्जपतः सृष्टिपालकः परिकीर्तितः। महेश्वरोऽपि संहर्ता यज्जपादभवन्नृपः।१२
लोकपालास्तथाऽन्येऽपि निग्रहानुग्रहक्षमाः। यदाश्रयादभूवंस्ते बलवीर्यमदोद्धताः।१३
एवंत्वमपिराजन्यमहेशींजगदम्बिकाम्। समाराध्य महर्द्धिञ्वलप्स्यसेऽचिरकालतः।१४
एवं स मुनिवर्येण पुलहेन प्रबोधितः। अङ्गपुत्रस्तपस्तप्तुं जगाम विरजां नदीम्।१५
स च तेपे तपस्तीव्रंवाग्भवस्यजपेरतः। बीजस्य पृथिवीपालः शीर्णपर्णाशनोविभुः।१६
प्रथमेऽब्देपल्लवाशोद्वितीयेतोयभक्षणः। तृतीयेऽब्दे पवनभुक्तस्थौस्थाणुरिवाचलः।१७
एवं द्वादशवर्षाणित्यक्ताहारस्यभूभुजः। वाग्भवंजपतोनित्यं मतिरासीच्छुभान्विता।१८
तथा च देव्याः परमं मन्त्रं सञ्जपतोरहः। प्रादुरासीज्जगन्माता साक्षाच्छ्रीपरमेश्वरी।१९
तेजोमयी दुराधर्षा सर्वदेवमयीश्वरी। उवाचाङ्गतनूजन्तं प्रसन्ना ललिताक्षरम्।२०

देव्युवाच

पृथिवीपाल! ते यत्स्याच्चिन्तितं परमं वरम्। तद् ब्रूहि सम्प्रदास्यामि तपसा ते सुतोषिता।२१

चाक्षुष उवाच

जानासि देवदेवेशि! यत्प्रार्थ्यंमनसेप्सितम्। अन्तर्यामिस्वरूपेणतत्सर्वं देवपूजिते।२२
तथाऽपि मम भाग्येनजातंयत्तवदर्शनम्। ब्रवीमि देविमे देहिराज्यं मन्वन्तराश्रितम्।२३

श्रीदेव्युवाच

दत्तमन्वन्तरस्याऽस्य राज्यं राजन्यसत्तम! पुत्रा महाबलास्ते च भविष्यन्ति गुणाधिकाः।२४
राज्यंनिष्कण्टकंभाविमोक्षोऽन्तेचापिनिश्चितः। एवं दत्त्वा वरंदेवीमनवेवरमुत्तमम्।२५
जगामाऽदर्शनंसद्यस्तेनभक्त्याचसंस्तुता। सोऽपिराजामनुः षष्ठः प्रसादात्तुतदाश्रयात्।२६
बभूव मनुमान्योऽसौ सार्वभौमसुखैर्वृतः। पुत्रास्तस्यबलोद्युक्ताः कार्यभार सहादृताः।२७
देवीभक्ताश्च शूराश्च महाबलपराक्रमाः। अन्यत्र माननीयाश्च महाराज्यसुखास्पदाः।२८
एवं च चाक्षुषमनुर्देव्याराधनतः प्रभुः। बभूव मनुवर्योऽसौ जगामाऽन्ते शिवापदम्।२९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे देवीचरित्रे चाक्षुषमनुवृत्तवर्णनंनाम नवमोऽध्यायः॥९॥

* दशमोऽध्यायः *

सुरथनृपतिवृत्तान्तवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

सप्तमोमनुराख्यातो मनुर्वैवस्वतः प्रभुः। श्राद्धदेवः परानन्दभोक्तामान्यस्तुभूभुजाम्।१
स च वैवस्वतमनुः परदेव्याः प्रसादतः। तथा तत्तपसा चैव जातो मन्वन्तराधिपः।२
अष्टमोमनुराख्यातः सावर्णिः प्रथितः क्षितौ। स जन्मान्तरआराध्यदेवींतद्वरलाभतः।३
जातो मन्वन्तरपतिः सर्वराजन्यपूजितः। महापराक्रमी धीरो देवीभक्तिपरायणः।४

नारद उवाच

कथंजन्मान्तरेतेनमनुनाऽराधनंकृतम् ।
देव्याः पृथिव्युद्भवायास्तन्ममाऽऽख्यातुमर्हसि ।।५।।

श्रीनारायण उवाच

चैत्रवंशसमुद्भूतो राजास्वारोचिषेऽन्तरे। सुरथो नाम विख्यातोमहाबलपराक्रमः।६
गुणग्राही धनुर्धारी मान्यः श्रेष्ठः कविः कृती। धनसंग्रहकर्ता च दातायाचकमण्डले।७
अरीणांमर्दनोमानीसर्वास्त्रकुशलोबली । तस्यैकदाबभूवुस्तेकोलाविध्वंसिनोनृपाः।८
शत्रवः सैन्यसहिताः परिवार्यैनमूर्जिताः। रुरुधुर्नगरीं तस्य राज्ञो मानधनस्य हि।९
तदा स सुरथो नाम राजा सैन्यसमावृतः। निर्ययौ नगरात्स्वीयात्सर्वशत्रुनिबर्हणः।१०
तदा स समरे राजा सुरथः शत्रुभिर्जितः। अमात्यैर्मन्त्रिभिश्चैवतस्यकोशगतं धनम्।११
हृतं सर्वमशेषेण तदाऽतप्यत भूमिपः। निष्कासितश्च नगरात्स राजा परमद्युतिः।१२
जगामाऽश्वमथाऽऽरुह्य मृगयामिषतो वनम्। एकाकीविजनेऽरण्ये बभ्रामोद्भ्रान्तमानसः।१३
मुनेःकस्यचिदागत्यस्वाश्रमंशान्तमानसः। प्रशान्तजन्तुसंयुक्तंमुनिशिष्यगणैर्युतम्।१४
उवास कञ्चित्कालं स राजा परमशोभने। आश्रमे मुनिवर्यस्य दीर्घदृष्टेः सुमेधसः।१५

एकदा स महीपालो मुनिंपूजावसानके ।
कालेगत्वाप्रणम्याऽऽशुपप्रच्छविनयान्वितः ।।१६।।
मुने! मम मनोदुःखंबाधतेचाधिसम्भवम् ।
ज्ञाततत्त्वस्यभूदेव! निष्प्रज्ञस्यचसन्ततम् ।।१७।।

शत्रुभिर्निर्जितस्याऽपि हृतराज्यस्य सर्वशः। तथापि तेषुमनसिममत्वंजायतेस्फुटम।१८
किं करोमि क्व गच्छामि कथं शर्म लभे मुने!। त्वदनुग्रहमाशासे वदवेदविदाम्वर।१९

मुनिरुवाच

आकर्णय महीपाल! महाश्चर्यकरं परम्। देवीमाहात्म्यमतुलं सर्वकामप्रदं परम्।२०
जगन्मयी महामाया विष्णुब्रह्महरोद्भवा। सा बलादपहृत्यैवजन्तूनां मानसानि हि।२१
मोहाय प्रतिसंयच्छेदितिजानीहि भूमिप!। सासृजत्यखिलं विश्वंसापालयतिसर्वदा।२२
संहारे हररूपेण संहरत्येव भूमिप!। कामदात्री महामाया कालरात्रिर्दुरत्यया।२३
विश्वसंहारिणीकालीकमलाकमलालया । तस्यांसर्वंजगज्ञातंतस्यांविश्वंप्रतिष्ठितम्।२४
लयमेष्यति तस्याञ्च तस्मात्सैव परात्परा। तस्यादेव्याः प्रसादश्चयस्योपरिभवेन्नृप!।
स एव मोहमत्येति नाऽन्यथा धरणीपते!।।२५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे सुरथनृपतिवृत्तवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः।।१०।।

* एकादशोऽध्यायः *

मधुकैटभवधवर्णनम्

राजोवाच

कासादेवी! त्वयाप्रोक्ताब्रूहिकालविदाम्वर!। कामोहयतिसत्त्वानिकारणंकिंभवेद्द्विज ।१
कस्मादुत्पद्यते देवी किंरूपासाकिमात्मिका। सर्वमाख्याहिभूदेव!कृपयाममसर्वतः ।२

मुनिरुवाच

राजन्देव्याः स्वरूपंतेवर्णयामिनिशामय। यथा चोत्पतिता देवीयेनवासाजगन्मयी।३
यदा नारायणोदेवोविश्वंसंहृत्ययोगराट्। आस्तीर्यशेषंभगवान्समुद्रेनिद्रितोऽभवत्।४
तदा प्रस्वापवशगो देवदेवो जनार्दनः। तत्कर्णमलसञ्जातौ दानवौ मधुकैटभौ।५
ब्रह्माणं हन्तुमुद्युक्तौ दानवौ घोररूपिणौ। तदा कमलजोदेवो दृष्ट्वा तौ मधुकैटभौ।६
निद्रितं देवदेवेशं चिन्तामाप दुरत्ययाम्। निद्रितो भगवानीशो दानवौ च दुरासदौ।७
किं करोमिक्वगच्छामिकथं शर्म लभे ह्यहम्। एवं चिन्तयतस्तस्यपद्मयोनेर्महात्मनः।८
बुद्धिः प्रादुरत्तात तदा कार्यप्रसाधिनी। यस्यावशंगतोदेवो निद्रितो भगवान्हरिः।६
तां देवीं शरणं यामि निद्रां सर्वप्रसूतिकाम् ।

ब्रह्मोवाच

देवदेवि! जगद्धात्रि! भक्ताभीष्टफलप्रदे! ।।१०।।
जगन्माये महामाये समुद्रशयने शिवे!। त्वदाज्ञावशगाः सर्वे स्वस्वकार्यविधायिनः।११
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिर्मदोत्कटा । व्यापिनी वशगा मान्या महानन्दैकशेवधिः।१२
महनीया महाराध्या माया मधुमती मही। परापराणां सर्वेषां परमा त्वं प्रकीर्तिता।१३
लज्जापुष्टिः क्षमा कीर्तिः कान्तिः कारुण्यविग्रहा। कमनीया जगद्वन्द्या जाग्रदादिस्वरूपिणी।१४
परमापरमेशानी परानन्दापरायणा। एकाऽप्येकस्वरूपा च स द्वितीया द्वयात्मिका।१५
त्रयी त्रिवर्गनिलया तुर्या तुर्यपदात्मिका। पञ्चमी पञ्चभूतेशी षष्ठीषष्ठेश्वरीति च।१६
सप्तमी सप्तवारेशी सप्तसप्तवरप्रदा। अष्टमी वसुनाथा च नवग्रहमयीश्वरी।१७
नवरागकला रम्या नवसङ्ख्या नवेश्वरी। दशमी दशदिक्पूज्यादशाशाव्यापिनीरमा।१८
एकादशात्मिका चैकादशारुद्रनिषेविता। एकादशीतिथिप्रीता एकादशगणाधिपा।१६
द्वादशी द्वादशभुजा द्वादशादित्यजन्मभूः। त्रयोदशात्मिका देवी त्रयोदशगणप्रिया।२०
त्रयोदशाभिधा भिन्ना विश्वेदेवाधिदेवता। चतुर्दशेन्द्रवरदा चतुर्दशमनुप्रसूः।२१
पञ्चाधिकदशी वेद्या पञ्चाधिकदशी तिथिः। षोडशीषोडशभुजाषोडशेन्दुकलामयी ।२२
षोडशात्मकचन्द्रांशुव्याप्तदिव्यकलेवरा । एवं रूपाऽसि देवेशि! निर्गुणे! तामसोदये।२३
त्वया गृहीतो भगवान्देवदेवो रमापतिः। एतौ दुरासदौ दैत्यौ विक्रान्तौ मधुकैटभौ।२४

मुनिरुवाच

एतयोश्च वधार्थाय देवेशं प्रति बोधय। एवं स्तुता भगवती तामसी भगवत्प्रिया।२५
देवदेवं तदा त्यक्त्वा मोहयामास दानवौ। तदैव भगवान्विष्णुः परमात्मा जगत्पतिः।२६
प्रबोधमाप देवेशो ददृशे दानवोत्तमौ। तदा तौ दानवौ घोरौ दृष्ट्वा तं मधुसूदनम्।२७
युद्धायकृतसङ्कल्पौ जग्मतुः सन्निधिं हरेः। युयुधेचततस्ताभ्यां भगवान्मधुसूदनः।२८
पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः। तौ तदाऽतिबलोन्मत्तौजगन्मायाविमोहितौ।२६
व्रियताम्वर इत्येवमूचतुः परमेश्वरम्। एवं तयोर्वचः श्रुत्वा भगवानादिपूरुषः।३०

वव्रे वध्यावुभौ मेऽद्य भवेतामितिनिश्चितम्।तौ तदाऽतिबलौ देवं पुनरेवोचतुर्हरिम्।३१
आवां जहि न यत्रोर्वी पयसा च परिप्लुता।यथेत्युक्त्वा भगवता गदाशङ्खभृतानृप।३२
कृत्वाचक्रेण वैछिन्ने जघने शिरसी तयोः।एवं देवीसमुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुतानृप।३३
महाकाली महाराज सर्वयोगेश्वरेश्वरी।महालक्ष्म्यास्तथोत्पत्तिं निशामय महीपते!।३४

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधवर्णनं नामैकादशोऽध्यायः।।११।।

* द्वादशोऽध्यायः *

भगवत्याशुम्भादीनाम्वधवर्णनं सावर्णिमनुकृतेराज्ञेवरदानम्

मुनिरुवाच

महिषीगर्भसम्भूतो महाबलपराक्रमः।देवान्सर्वान्पराजित्य महिषोऽभूज्जगत्प्रभुः।१
सर्वेषांलोकपालानामधिकारान्महासुरः ।बलान्निर्जित्यबुभुजे त्रैलोक्यैश्वर्यमद्भुतम्।२
ततः पराजिताः सर्वे देवाः स्वर्गपरिच्युताः।ब्रह्माणञ्चपुरस्कृत्यतेजग्मुर्लोकमुत्तमम् ।३
यत्रोत्तमौ देवदेवौ संस्थितौ शङ्कराच्युतौ।वृत्तान्तंकथयामासुर्महिषस्यदुरात्मनः ।४
देवानाञ्चैव सर्वेषां स्थानानितरसाऽसुरः।विनिर्जित्य स्वयंभुङ्क्तेबलवीर्यमदोद्धतः।५
महिषासुरनामाऽसौदुष्टदैत्योऽमरेश्वरौ ।वधोपायश्चतस्याऽऽशुचिन्त्यतामसुरार्दनौ।६
एवं श्रुत्वा स भगवान्देवानामार्तियुग्वचः।चकार कोपं सुबहुं तथा शङ्करपद्मजौ।७
एवं कोपयुतस्याऽस्य हरेरास्यान्महीपते।तेजः प्रादुरभूद्दिव्यं सहस्रार्कसमद्युति।८
अथानुक्रमतस्तेजः सर्वेषां त्रिदिवौकसाम्।शरीरादुद्भवं प्राप हर्षयद्विबुधाधिपान्।९
यदभूच्छम्भुजं तेजो मुखमस्योदपद्यत।केशाबभूवुर्याम्येन वैष्णवेन च बाहवः।१०
सौम्येन च स्तनौजातौमाहेन्द्रेणच मध्यमः।वारुणेन ततोभूप! जङ्घोरूसम्बभूवतुः।११
नितम्बौ तेजसा भूमेः पादौ ब्राह्मेण तेजसा।पादाङ्गुल्योभानवेनवासवेन कराङ्गुलीः।१२
कौबेरेण तथा नासा दन्ताः सञ्जज्ञिरे तदा।प्रजापत्येनोत्तमेन तेजसावसुधाधिप।१३
पावकेन च सञ्जातं लोचनत्रितयंशुभम्।सान्ध्येन तेजसाजातेभृकुट्यौतेजसांनिधी।१४
कर्णौ वायव्यतो जातौ तेजसो मनुजाधिप!।सर्वेषां तेजसादेवीजातामहिषमर्दिनी।१५
शूलं ददौ शिवौविष्णुश्चक्रं शङ्खञ्च पाशभृत्।हुताशनोददौ शक्तिंमारुतश्चापसायकौ।१६
वज्रं महेन्द्रः प्रददौ घण्टाञ्चैरावताद्गजात्।कालदण्डंयमोब्रह्मा चाक्षमालाकमण्डलू।१७
दिवाकरो रश्मिमालां रोमकूपेषु संददौ।कालः खड्गं तथाचर्मनिर्गलंवसुधाधिप।१८
समुद्रो निर्मलं हारमजरे चाऽम्बरे नृप!।चूडामणिं कुण्डले च कटकानि तथाऽङ्गदे।१९
अर्धचन्द्रं निर्मलञ्च नूपुराणि तथा ददौ।ग्रैवेयकं भूषणञ्च तस्यै देव्यै मुदान्वितः।२०
विश्वकर्माचोर्मिकाश्च ददौ तस्यैधरापते!।हिमवान्वाहनं सिंहंरत्नानिविविधानिच।२१
पानपात्रं सुरापूर्णं ददौ तस्यै धनाधिपः।शेषश्च भगवान्देवो नागहारं ददौ विभुः।२२
अन्यैरशेषविबुधैर्मानिता सा जगन्मयी।तां तुष्टुवुर्महादेवीं देवामहिषपीडिताः।२३
नानास्तोत्रैर्महेशानीं जगदुद्भवकारिणीम्।तेषां निशम्यदेवेशी स्तोत्रंविबुधपूजिता।२४
महिषस्यवधार्थाय महानादञ्चकार ह।तेन नादेन महिषश्चकितोऽभूद्धरापते!।२५
आससादजगद्धात्रीं सर्वसैन्यसमावृतः।ततः स ययुधे देव्या महिषाख्यो महासुरः।२६
शस्त्रास्त्रैर्बहुधा क्षिप्तैः पूरयन्नम्बरान्तरम्।चिक्षुरो ग्रामणीः सेनापतिर्दुर्धरदुर्मुखौ।२७

बाष्कलस्ताम्रकश्चैव बिडालवदनोऽपरः। एतैश्चान्यैरसङ्ख्यातैः सङ्ग्रामान्तकसन्निभैः।२८
योधैः परिवृतो वीरो महिषोदानवोत्तमः। ततः साकोपताम्राक्षीदेवीलोकविमोहिनी।२६
जघानयोधान्समरे देवी महिषमाश्रितान्। ततस्तेषु हतेष्वेव सदैत्योरोषमूर्च्छितः।३०
आससाद तदा देवीं तूर्णं मायाविशारदः। रूपान्तराणि सम्भेजे माययादानवेश्वरः।३१
तानि तान्यस्य रूपाणि नाशयामाससातदा। ततोऽन्तेमाहिषंरूपंबिभ्राणममरार्दनम्।३२
पाशेन बद्ध्वासुदृढंछित्त्वाखड्गेन तच्छिरः। पातयामासमहिषंदेवीदेवगणान्तकम्।३३
हाहाकृतं ततः शेषसैन्यं भग्नं दिशो दश। तुष्टुवुर्देवदेवेशीं सर्वे देवाः प्रमोदिताः।३४
एवं लक्ष्मीः समुत्पन्नामहिषासुरमर्दिनी। राजञ्छृणुसरस्वत्याः प्रादुर्भावोयथाऽभवत्।३५
एकदा शुम्भनामाऽऽसीद्दैत्योमदबलोत्कटः। निशुम्भश्चापितद्भ्रातामयाबलपराक्रमः।३६
तेन सम्पीडिता देवाः सर्वे भ्रष्टश्रियो नृप। हिमवन्तमथासाद्य देवीं तुष्टवुरादरात्।३७

देवा ऊचुः

जयदेवेशि! भक्तानामार्त्तिनाशनकोविदे!। दानवान्तकरूपे! त्वमजरामरणेऽनघे!।३८
देवेशि! भक्तिसुलभे! महाबलपराक्रमे!। विष्णुशङ्करब्रह्मादिस्वरूपेऽनन्तविक्रमे!।३६
सृष्टिस्थितिकरे! नाशकारिके! कान्तिदायिनि!। महाताण्डवसुप्रीतेमोददायिनिमाधवि।४०
प्रसीद देवदेवेशि! प्रसीद करुणानिधे!। निशुम्भशुम्भसम्भूतभयापाराम्बुवारिधेः!।४१
उद्धराऽस्मान्प्रपन्नार्तिनाशिके! शरणागतान्। एवं संस्तुवतांतेषांत्रिदशानां धरापते!।४२
प्रसन्ना गिरिजाप्राह ब्रूतस्तवनकारणम्। एतस्मिन्नन्तरेतस्याः कोशरूपात्समुत्थिता।४३
कौशिकी! साजगत्पूज्यादेवान्प्रीत्येदमब्रवीत्। प्रसन्नाऽहंसुरश्रेष्ठास्तवेनोत्तमरूपिणी।४४
व्रियतां वर इत्युक्तेदेवाः सम्वव्रिरेवरम्। शुम्भनामाऽवरोभ्रातानिशुम्भस्तस्यविश्रुतः।४५
त्रैलोक्यमोजसा क्रान्तं दैत्येन बलशालिना। तद्वधश्चिन्त्यतां देवि! दुरात्मा दानवेश्वरः।४६
बोधते सततं देवि तिरस्कृत्य निजौजसा।

श्री देव्युवाच

देवशत्रुं पातयिष्ये निशुम्भं शुम्भमेव च।।४७।।
स्वस्थास्तिष्ठतभद्रंवः कण्टकंनाशयामि वः। इत्युक्त्वादेवदेवेशीदेवान्सेन्द्रान्दयामयी।४८
जगामाऽदर्शनं सद्यो मिषतां त्रिदिवौकसाम्। देवाः समागता हृष्टाः सुवर्णाद्रिगुहां शुभाम्।४६
चण्डमुण्डौ पश्यतः स्म भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः। दृष्ट्वा तां चारुसर्वाङ्गीं देवीं लोकविमोहिनीम्।५०
कथयामासतू राज्ञेभृत्यौतौ चण्डमुण्डकौ। देव! सर्वासुर! श्रेष्ठ! रत्नभोगार्ह! मानद!।५१
अपूर्वा कामिनी दृष्टा चाऽऽवाभ्यां रिपुमर्दन!। तस्याः सम्भोगयोग्यत्वमस्त्येव तव साम्प्रतम्।५२
तां समानय चार्वङ्गींभुङ्क्ष्व सौख्यसमन्वितः। तादृशीनासुरी नारीगन्धर्वीनदानवी।५३
न मानवी नाऽपि देवी यादृशी सा मनोहरा। एवं भृत्यवचः श्रुत्वाशुम्भः परबलार्दनः।५४
दूतं सम्प्रेषयामास सुग्रीवं नाम दानवम्। सदूतस्त्वरितं गत्वादेव्याः सविधमादरात्।५५
वृत्तान्तं कथयामास देव्यै शुम्भस्ययद्वचः। देवीशुम्भासुरोनामत्रैलोक्यविजयीप्रभुः।५६
सर्वेषां रत्नवस्तूनां भोक्ता मान्यो दिवौकसाम्। तदुक्तं शृणु मे देवि! रत्नभोक्ताऽहमव्ययः।५७
त्वं चाऽपि रत्नभूताऽसि भज मां चारुलोचने!। सर्वेषु यानि रत्नानिदेवासुरनरेषु च।५८
तानि मय्येव सुभगे! भज मां कामजै रसैः।

देव्युवाच

सत्यं वदसि हे दूत! दैत्यराजप्रियङ्करम्।।५६।।
प्रतिज्ञा या मया पूर्वं कृता साऽप्यनृता कथम्। भवेतां शृणुमेदूतयाप्रतिज्ञामयाकृता।६०

यो मे दर्पं विधुनुते योमे बलमपोहति। यो मे प्रतिबलो भूयात्स एवमम भोगभाक्।६१
ततः एनांप्रतिज्ञांमेसत्यांकृत्वाऽसुरेश्वरः। गृह्णातुपाणिंतरसातस्याऽशक्यंकिमत्रहि।६२
तस्माद्गच्छ महादूत! स्वामिनं ब्रूहि चाऽऽदृतः। प्रतिज्ञां चाऽपि मे सत्यां विधास्यति बलाधिकः।६३
एवं वाक्यं महादेव्याः समाकर्ण्य सदानवः। कथयामासशुम्भायदेव्यावृत्तान्तमादितः।६४
तदाप्रियं दूतवाक्यं शुम्भः श्रुत्वा महाबलः। कोपमाहारयामास महान्तं दनुजाधिपः।६५
ततो धूम्राक्षनामानं दैत्यंदैत्यपतिः प्रभुः। आदिदेश शृणु वचो धूम्राक्ष! मम चादृतः।६६
तां दुष्टां केशपाशेषु धृत्वाऽप्यानीयतां मम। समीपमविलम्बेन शीघ्रं गच्छस्वमेपुरः।६७
इत्यादेशं समासाद्य दैत्येशो धूम्रलोचनः। षष्ट्यासुराणां सहितः सहस्त्राणांमहाबलः।६८
तुहिनाचलमासाद्य देव्याः सविधमेव सः। उच्चैर्देवींजगादाऽऽशुभज दैत्यपतिंशुभे!।६९
शुम्भं नाम महावीर्यं सर्वभोगानवाप्नुहि। नोचेत्केशान्गृहीत्वात्वांनेष्येदैत्यपतिंप्रति।७०
इत्युक्ता सा ततो देवी दैत्येन त्रिदशारिणा। उवाच दैत्य! यद्ब्रूषे तत्सत्यं ते महाबल!।७१
राजा शुम्भासुरस्त्वं चकिंकरिष्यसितद्वद। इत्युक्तोदैत्यपोऽधावत्तूर्णंशस्त्रसमन्वितः।७२
भस्मसात्तं चकाराऽऽशु हुङ्कारेण महेश्वरी। ततः सैन्यंवाहनेन देव्या भग्नं महीपते!।७३
दिशोदशाभजच्छीघ्रंहाहाभूतमचेतनम् । तद्वृत्तान्तंसमाश्रुत्यसशुम्भोदैत्यराड्विभुः।७४
चुकोप च महाकोपाद् भ्रुकुटीकुटिलाननः। ततः कोपपरीतात्मादैत्यराजः प्रतापवान्।७५
चण्डं मुण्डं रक्तबीजं क्रमतः प्रैषयद्विभुः। ते च गत्वा त्रयो दैत्याविक्रान्ताबहुविक्रमाः।७६
देवीं ग्रहीतुमारब्धयत्नास्तेह्यभवन्बलात्। तानापतत एवाऽसौ जगद्धात्री मदोत्कटा।७७
शूलं गृहीत्वा वेगेन पातयामास भूतले। ससैन्यान्निहताञ्छ्रुत्वादैत्यांस्त्रीन्दानवेश्वरौ।७८
शुम्भश्चैवनिशुम्भश्च समाजग्मतुरोजसा। निशुम्भश्चैव शुम्भश्च कृत्वा युद्धमहोत्कटम्।७९
देव्याश्च वशगौजातौनिहतौ च तयाऽसुरौ। इति दैत्यवरं शुम्भंघातयित्वाजगन्मयी।८०
विबुधैः संस्तुता तद्वत्सक्षाद्वागीश्वरीपरा। एवंतेवर्णितोराजन्प्रादुर्भावोऽतिरम्यकः ।८१
काल्याश्चैवमहालक्ष्म्याः सरस्वत्याः क्रमेणच। परा परेश्वरी देवी जगत्सर्गं करोति च।८२
पालनं चैव संहारंसैव देवी दधाति हि। तां समाश्रय देवेशीं जगन्मोहनिवारिणीम्।८३
महामायां पूज्यतमां सा कार्यं ते विधास्यति ।

श्रीनारायणउवाच

इति राजा वचः श्रुत्वा मुनेः परमशोभनम् ।।८४।।
देवीं जगाम शरणं सर्वकामफलप्रदाम्। निराहारो यतात्मा च तन्मनाश्च समाहितः।८५
देवीमूर्तिं मृण्मयीं च पूजयामास भक्तितः। पूजनान्ते बलिं तस्यैनिजगात्रासृजंददत्।८६
तदा प्रसन्ना देवेशी जगद्योनिः कृपावती। प्रादुर्बभूव पुरतो वरं ब्रूहीति भाषिणी।८७
स राजा निजमोहस्य नाशनंज्ञानमुत्तमम्। राज्यंनिष्कण्टकंचैवयाचतिस्ममहेश्वरीम्।८८

श्रीदेव्युवाच

राजन्निष्कण्टकं राज्यं ज्ञानं वै मोहनाशनम्। भविष्यति मया दत्तमस्मिन्नेवभवेतव।८९
अन्यच्च शृणु भूपाल! जन्मान्तरविचेष्टितम्। भानोर्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता भवान्।९०
तत्र मन्वन्तरस्यापिपतित्वं बहुविक्रमम्। सन्ततिंबहुलाञ्चाऽपिप्राप्स्यतेमद्वराद्भवान्।९१
एवं दत्त्वा वरं देवीजगामाऽदर्शनं तदा। सोऽपि देव्याः प्रसादेनजातोमन्वन्तराधिपः।९२
एवं ते वर्णितं साधो! सावर्णेजन्म कर्म च। एतत्पठंस्तथाशृण्वन्देव्यनुग्रहमाप्नुयात् ।९३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे सलक्ष्मीसरस्वतीदेवीचरित्रंसावर्णिमनुवृत्तान्तवर्णनंनामद्वादशोऽध्यायः ।।१२।।

* त्रयोदशोऽध्यायः *

सवैवस्वतमनुपुत्राणांदेव्याराधनवर्णनंभ्रामरीवृत्तप्रतिपादनम्

श्रीनारायण उवाच

अथाऽतः श्रूयतां शेषमनूनां चित्रमुद्भवम्। यस्य स्मरणमात्रेण देवीभक्तिः प्रजायते।१
आसन्वैवस्वतमनोः पुत्राः षड् विमलोदयाः। करूषश्च पृषध्रश्च नाभागो दिष्ट एव च।२
शर्यातिश्चत्रिशङ्कुश्च सर्व एवमहाबलाः। ततः षडेव ते गत्वा कालिन्द्यास्तीरमुत्तमम्।३
निराहारा जितश्वासाः पूजां चक्रुस्ततः स्थिताः। देव्या महीमयीं मूर्तिं विनिर्माय पृथक्पृथक्।४
विविधैरुपचारैस्तां पूजयामासुरादृताः। ततश्च सर्व एवैते तपः सारा महाबलाः।५
जीर्णपर्णाशना वायुभक्षणास्तोयजीवनाः। धूम्रपानारश्मिपानाः क्रमशश्च बहुश्रमाः।६
ततस्तेषामादरेणाऽऽराधनं कुर्वतां सदा। विमला मतिरुत्पन्ना सर्वमोहविनाशिनी।७
बभूवुर्मनुपुत्रास्ते देवीपादैकचिन्तनाः। मत्या विमलया तेषामात्मन्येवाऽखिलं जगत्।८
दर्शनं सञ्जगामाऽऽशु तदद्भुतमिवाऽभवत्। एवं द्वादशवर्षान्ते तपसा जगदीश्वरी।९
प्रादुर्बभूव देवेशी सहस्रार्कसमद्युतिः। तां दृष्ट्वा विमलात्मानो राजपुत्राः षडेव ते।१०
तुष्टुवुर्भक्तिनम्रान्तः करणा भावसंयुता।

राजपुत्रा ऊचुः

महेश्वरि! जयेशानि! परमे! करुणालये! ॥११॥
वाग्भवाराधनप्रीते! वाग्भवप्रतिपादिते!। क्लीङ्कारविग्रहे! देवि! क्लीङ्कारप्रीतिदायिनि!।१२
कामराजमनोमोददायिनीश्वरतोषिणि! भोगवर्धिनि!।
महामाये मोदरे महासाम्राज्यदायिनि ॥१३॥
विष्णवर्क-हर-शक्रादिस्वरूपे भोगवर्धिनि। एवं स्तुता भगवती राजपुत्रैर्महात्मभिः।१४
प्रसादसुमुखी देवी प्रोवाच वचनं शुभम्।

श्रीदेव्युवाच

राजपुत्रा महात्मानो भवन्तस्तपसा युताः ॥१५॥
निष्कल्मषाः शुद्धधियो जाता वै मदुपासनात्। वरं मनोगतं सर्वं याचध्वमविलम्बितम्।१६
प्रसन्नाऽहं प्रदास्यामि युष्माकं मनसि स्थितम्।

राजपुत्राऊचुः

देवि! निष्कण्टकं राज्यं सन्ततिश्चिरजीविनी ॥१७॥
भोगा अव्याहताः कामंयशस्तेजोमतिश्च ह। अकुण्ठितत्वं सर्वेषामेष एव वरोहितः।१८

श्रीदेव्युवाच

एवमस्तु च सर्वेषांभवतां यन्मनोगतम्। अथाऽन्यदपि मे वाक्यंश्रूयतामादरादिदम्।१९
भवन्तः सर्व एवैते मन्वन्तरपतीश्वराः। सन्तत्या दीर्घया भोगैरनेकैरपि सङ्गमः।२०
अखण्डितबलैश्वर्यं यशस्तेजोविभूतयः। भवितारो मत्प्रसादाद्राजपुत्राः क्रमेण तु।२१

श्रीनारायण उवाच

एवं तेभ्यो वरान्दत्त्वा भ्रामरी जगदम्बिका। अन्तर्धानं जगामाऽऽशु भक्त्या तैः संस्तुता सती।२२
तेराजपुत्राः सर्वेऽपितस्मिञ्जन्मन्यनुत्तमम्। राज्यंमहीगतान्भोगान्बुभुजुश्चमहौजसः।२३
सन्ततिं चाऽखण्डितां ते समुत्पाद्य महीतले। वंशं संस्थाप्य सर्वेऽपि मनूनां पतयोऽभवन्।२४
भवान्तरे क्रमेणैव सावर्णिपदभागिनः। प्रथमो दक्षसावर्णिर्नवमो मनुरीरितः।२५
अव्याहतबलो देव्याः प्रसादादभवद्विभुः। द्वितीयो मेरुसावर्णिर्दशमो मनुरेव च।२६

बभूव मन्वन्तरपो महादेवीप्रसादतः। तृतीयो मनुराख्यातः सूर्यसावर्णिनामकः।२७
एकादशो महोत्साहस्तपसास्वेनभावितः। चतुर्थश्चन्द्रसावर्णिर्द्वादशोमनुराड्विभुः।२८
देवीसमाराधनेन जातो मन्वन्तरेश्वरः। पञ्चमो रुद्रसावर्णिस्त्रयोदशमनुः स्मृतः।२६
महाबलो महासत्त्वो बभूव जगदीश्वरः। षष्ठश्च विष्णुसावर्णिश्चतुर्दशमनुः कृती।३०
बभूव देवीवरतो जगतां प्रथितः प्रभुः। चतुर्दशैते मनवो महातेजोबलैर्युताः।३१
देव्याराधनतः पूज्याः वन्द्या लोकेषु नित्यशः। महाप्रतापिनः सर्वे भ्रामर्यास्तु प्रसादतः।३२

नारद उवाच

केयंसाभ्रामरीदेवीकथंजाताकिमात्मिका। तदाख्यानंवदप्राज्ञ! विचित्रं शोकनाशकम्।३३
नतृप्तिमधिगच्छामिपिबन्देवीकथामृतम्। अमृतं पिबतां मृत्युर्नाऽस्यश्रवणतोयतः।३४

श्रीनारायण उवाच

शृणुनारदवक्ष्यामिजगन्मातुर्विचेष्टितम्। अचिन्त्याव्यक्तरूपायविचित्रंमोक्षदायकम्।३५
यद्यच्चरित्रं श्रीदेव्यास्तत्सर्वं लोकहेतवे। निर्व्याजया करुणया पुत्रे मातुर्यथा तथा।३६
पूर्वं दैत्यो महानासीदरुणाख्यो महाबलः। पाताले दैत्यसंस्थाने देवद्वेषी महाखलः।३७
स देवाञ्जेतुकामश्च चकार परमं तपः। पद्मसम्भवमुद्दिश्य स नस्त्राता भविष्यति।३८
गत्वा हिमवतः पार्श्वे गङ्गाजलसुशीतले। पक्वपर्णाशनो योगी संनिरुध्य मरुद्गणम्।३६
गायत्रीजपसंसक्तः सकामस्तमसा युतः। दशवर्षसहस्राणि ततो वारिकणाशनः।४०
दशवर्षसहस्राणि ततः पवनभोजनः। दशवर्षसहस्राणि निराहारोऽभवत्ततः।४१
एवं तपस्यतस्तस्य शरीरादुत्थितोऽनलः। ददाहजगतीं सर्वां तदद्भुतमिवाऽभवत्।४२
किमिदंकिमिदंचेतिदेवाः सर्वेचकम्पिरे। सन्त्रस्ताः सकला लोका ब्रह्माणंशरणंययुः।४३
विज्ञापितं देववरैः श्रुत्वा तत्र चतुर्मुखः। गायत्रीसहितो हंससमारुढो ययौ मुदा।४४
प्राणमात्रावशिष्टं तं धमनीशतसङ्कुलम्। शुष्कोदरंक्षामगात्रं ध्यानमीलितलोचनम्।४५
ददर्श तेजसा दीप्तं द्वितीयमिव पावकम्। वरम्वरयभद्रंते वत्स! यन्मनसिस्थितम्।४६
श्रुतिमात्रेणसन्तोषकारकंवाक्यमूचिवान्। श्रुत्वा ब्रह्ममुखाद्वाणींसुधाधारमिवारुणः।४७
उन्मीमिलिताक्षः पुरतो ददर्श जलजोद्भवम्। गायत्रीसहितं देवं चतुर्वेदसमन्वितम्।४८
अक्षस्रक्कुण्डिकाहस्तं जपन्तं ब्रह्म शाश्वतम्। दृष्ट्वोत्थाय ननामाऽथ स्तुत्वा च विविधैः स्तवैः।४६
वरं वव्रेस्वबुद्धिस्थंमाभवेन्मृत्युरित्यपि। श्रुत्वाऽरुणवचोब्रह्माबोधयामाससादरम्।५०
ब्रह्मविष्णुमहेशाद्या मृत्युनाकवलीकृताः। तदाऽन्येषां तु कावार्ता मरणे दानवोत्तम!।५१
वरं योग्यं ततो ब्रूहि दातुं यः शक्यते मया। नाऽत्राऽऽग्रहं प्रकुर्वन्ति बुद्धिमन्तो जनाः क्वचित्।५२
इति ब्रह्मवचः श्रुत्वा पुनः प्रोवाचसादरम्। न युद्धेनचशस्त्रास्त्रान्न पुंभ्योनापियोषितः।५३

द्विपादभ्यो वा चतुष्पादभ्यो नोभयाकारतस्तथा।
भवेन्मे मृत्युरित्येवं देव! देहि वरम्प्रभो! ॥५४॥

बलञ्चविपुलंदेहियेनदेवजयोभवेत्। इतितस्यवचः श्रुत्वा तथाऽस्त्वितिबचोऽब्रवीत्।५५
दत्त्वा वरं जगामाऽऽशु पद्मजः स्वं निकेतनम्। ततोऽरुणाख्यो दैत्यस्तु पातालात्स्वाश्रयस्थितान्।५६
दैत्यानाकारयामास ब्रह्मणो वरदर्पितः। आगत्य तेऽसुराः सर्वे दैत्येशं तं प्रचक्रिरे।५७
दूतञ्च प्रेषयामासुर्युद्धार्थममरावतीम्। दूतवाक्यं तदा श्रुत्वा देवराड् भयकम्पितः।५८
देवैः सार्धंजगामाऽऽशुब्रह्मणः सदनम्प्रति। ब्रह्मविष्णू पुरस्कृत्य जग्मुस्तेशङ्करालयम्।५६
विचारञ्चक्रिरे तत्र ते वधार्थं सुरद्रुहाम्। एतस्मिन्समये तत्र दैत्यसेना समावृतः।६०

अरुणाख्यो दैत्यराजो जगामाऽऽशु त्रिविष्टपम्। सूर्येन्दुयमवह्नीनामधिकारान्पृथक्पृथक्।६१
स्वयञ्चकार तपसानानारूपधरोमुने!। स्वस्वस्थानच्युताः सर्वेजग्मुः कैलासमण्डलम्।६२
शशंसुः शङ्करं देवाः स्वस्वदुःखं पृथक्पृथक्। महान्विचारस्तत्राऽऽसीत्किं कर्तव्यमतः परम्।६३
न युद्धे न च शस्त्रास्त्रैर्न पुंभ्यो नाऽपि योषितः। द्विपाद्भ्यो वा चतुष्पाद्भ्यो नोभयाकारतोऽपि वा।६४
मृत्युर्भवेदिति ब्रह्मा प्रोवाचवचनंयतः। इति चिन्तातुराः सर्वे कर्तुं किञ्चिन्नचक्षमाः।६५
एतस्मिन्समये तत्र वागभूदशरीरिणीम्। भजध्वं भुवनेशानीं सावः कार्यंविधास्यति।६६
गायत्रीजपसंयुक्तो दैत्यराड् यदि तां त्यजेत्। मृत्युयोग्यस्तदा भूयादित्युच्चैस्तोषकारिणी।६७
श्रुत्वा दैवीं तथा वाणीं मन्त्रयामासुरादृताः। बृहस्पतिंसमाहूय वचनम्प्राह देवराट्।६८
गुरो! गच्छसुराणान्तु कार्यार्थमसुरम्प्रति। यथा भवेच्चगायत्रीत्यागस्तस्यतथाकुरु ।६९
अस्माभिः परमेशानी सेव्यतेध्यानयोगतः। प्रसन्नासा भगवतीसाहाय्यंतेकरिष्यति।७०
इत्यादिश्य गुरुं सर्वे जग्मुर्जाम्बूनदेश्वरीम्। साऽस्मान्दैत्यभयत्रस्तान्पालयिष्यति शोभना।७१
तत्र गत्वा तपश्चर्यां चक्रुः सर्वे सुनिष्ठिताः। मायाबीजजपासक्ता देवीमखपरायणाः।७२
वृहस्पतिस्ततः शीघ्रंजगामाऽसुरसन्निधौ। आगतं मुनिवर्यन्तं पप्रच्छाऽथसदैत्यराट्।७३
मुनेकुत्राऽऽगमः कस्मात्किमर्थमिति मे वद। नाऽहंयुष्मत्पक्षपातीप्रत्युतारातिरेवच ।७४
इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रोवाच मुनिनायकः। अस्मत्सेव्या च या देवी सा त्वया पूज्यतेऽनिशम्।७५
तस्मादस्मत्पक्षपाती न भवेस्त्वं कथंवद। इति तस्य वचः श्रुत्वामोहितोदेवमायया।७६
तत्याज परमं मन्त्रमभिमानेन सत्तम!। गायत्रीत्यागतो दैत्योनिस्तेजस्को बभूव ह।७७
कृतकार्योगुरुस्तस्मात्स्थानान्निर्गतवान्पुनः। ततोवृत्तान्तमखिलं कथयामासवज्रिणे।७८
सन्तुष्टास्ते सुराः सर्वे भेजिरे परमेश्वरीम्। एवम्बहुगतेकाले कस्मिंश्चित्समये मुने।७९
प्रादुरासीज्जगन्माता जगन्मङ्गलकारिणी। कोटिसूर्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पसुन्दरी।८०
चित्रानुलेपना देवी चित्रवासोयुगान्विता। विचित्रमाल्याभरणा चित्रभ्रमरमुष्टिका।८१
वराभयकरा शान्ता करुणामृतसागरा। नानाभ्रमरसंयुक्तपुष्पमालाविराजिता ।८२
भ्रमरीभिर्विचित्राभिरसङ्ख्याभिः समावृता। भ्रमरैर्गायमानैश्चह्रींकारमनुमन्वहम् ।८३
समन्ततः परिवृता कोटिकोटिभिरम्बिका। सर्वशृङ्गारवेषाढ्या सर्ववेदप्रशंसिता।८४
सर्वात्मिका सर्वमयी सर्वमङ्गलरूपिणी। सर्वज्ञा सर्वजननी सर्वा सर्वेश्वरी शिवा।८५
दृष्ट्वा तां तरलात्मानो देवा ब्रह्मपुरोगमाः। तुष्टुवुर्हृष्टमनसो विष्टरश्रवसं शिवाम्।८६

देवा ऊचुः

नमोदेविमहाविद्यसृष्टिस्थित्यन्तकारिणि!। नमः कमलपत्राक्षिसर्वाधारेनमोऽस्तुते ।८७
सविश्वतैजसप्राज्ञविराट्सूत्रात्मिके नमः।
नमोव्याकृतरूपायै कूटस्थायै नमोनमः ।।८८।।
दुर्गे! सर्वादिरहिते! दुष्टसंरोधनार्गले!। निरर्गलप्रेमगम्ये! भर्गे! देवि! नमोऽस्तु ते।८९
नमः श्रीकालिके! मातर्नमोनीलसरस्वति!। उग्रतारे! महोग्रे! ते नित्यमेव नमो नमः।९०
नमः पीतम्बरे देवि! नमस्त्रिपुरसुन्दरि!। नमोभैरवि! मातङ्गि! धूमावति! नमो नमः।९१
छिन्नमस्ते नमस्तेऽस्तु क्षीरसागरकन्यके। नमः शाकम्भरिशिवे! नमस्तेरक्तदन्तिके!।९२
निशुम्भशुम्भदलनि! रक्तबीजविनाशिनि!। धूम्रलोचननिर्णाशे! वृत्रासुरनिबर्हिणि!।९३
चण्डमुण्डप्रमथिनि! दानवान्तकरे! शिवे!। नमस्तेविजये! गङ्गे! शारदे! विकचानने!।९४
पृथ्वीरूपे! दयारूपे! तेजोरूपे! नमोनमः। प्राणरूपे! महारूपे! भूतरूपे! नमोऽस्तु ते।९५

विश्वमूर्ते! दयामूर्ते! धर्ममूर्ते! नमोनमः। देवमूर्ते! ज्योतिमूर्ते! ज्ञानमूर्ते नमोऽस्तुते।९६
गायत्रि! वरदे! देवि! सावित्रि! च सरस्वति!। नमः स्वाहेस्वधेमातर्दक्षिणे! तेनमोनमः।९७
नेति नेतीति वाक्यैर्याबोध्यतेसकलागमैः। सर्वप्रत्यक्स्वरूपांतांभजामः परदेवताम्।९८
भ्रमरैर्वेष्टिता यस्माद्भ्रामरीया ततः स्मृता। तस्यैदेव्यैनमोनित्यंनित्यमेवनमोनमः ।९९
नमस्ते पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्ते पुरतोऽम्बिके!। नमऊर्द्ध्वंनमश्चाऽधःसर्वत्रैवनमोनमः ।१००
कृपां कुरुमहादेवी! मणिद्वीपाधिवासिनि!। अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायिकेजगदम्बिके!।१०१
जयदेवि! जगन्मातर्जय देवि! परात्परे!। जय श्रीभुवनेशानि! जयसर्वोत्तमोत्तमे!।१०२
कल्याणगुणरत्नानामाकरे! भुवनेश्वरि!। प्रसीद परमेशानि! प्रसीद जगतोरणे!।१०३

श्रीनारायण उवाच

इति देववचः श्रुत्वा प्रगल्भं मधुरं वचः। उवाचजगदम्बा सा मत्तकोकिलभाषिणी।१०४

श्रीदेव्युवाच

प्रसन्नाऽहं सदा देवा वरदेशशिखामणिः। ब्रुवन्तुविबुधाः सर्वे यदेवस्याचिकीर्षितम्।१०५
देवीवाक्यं सुराः श्रुत्वाप्रोचुर्दुःखस्यकारणम्। दुष्टदैत्यस्यचरितंजगद्बाधाकरंपरम् ।१०६
देवब्राह्मणवेदानां हेलनं नाशनं तथा। स्थानभ्रंशं सुराराणाञ्च कथयामासुरादृताः।१०७
ब्रह्मणो वरदानञ्च यथावत्ते समूचिरे। श्रुत्वादेवमुखाद्वाणीं महाभगवती तदा।१०८
प्रेरयामास हस्तस्थान्भ्रमरान्भ्रमरी तदा। पार्श्वस्थानग्रभागस्थान्नानारूपधरांस्तदा।१०९
जनयामास बहुशो यैर्व्याप्तं भुवनत्रयम्। मटचीयूथवत्तेषां समुदायस्तु निर्गतः।११०
तदाऽन्तरिक्षं तैर्व्याप्तमन्धकारः क्षितावभूत्। दिवि पर्वतसृङ्गेषु द्रुमेषुविपिनेष्वपि।१११
भ्रमरा एव सञ्जातास्तदद्भुतमिवाऽभवत्। ते सर्वे दैत्यवक्षांसि दारयामासुरुद्गताः।११२
नरं मधुहरं यद्वन्मक्षिकाः कोपसंयुताः। उपायोनचशस्त्राणांतथाऽस्त्राणांतदाऽभवत्।११३
न युद्धं न चसम्भाषाकेवलंमरणंखलु। यस्मिन्यस्मिन्स्थलेयेयेस्थितादैत्यायथायथा।११४
तत्रैव च तथा सर्वे मरणं प्रापुरुत्स्मयाः। परस्परं समाचारो नकस्याप्यभवत्तदा।११५
क्षणमात्रेण ते सर्वे विनष्टा दैत्यपुङ्गवाः। कृत्वेत्थं भ्रमराः कार्यं देविनिकटमाययुः।११६
आश्चर्यमेतदाश्चर्यमितिलोकाः समूचिरे। किं चित्रं जगदम्बायायस्यामायेयमीदृशी।११७
ततो देवगणाः सर्वेब्रह्मविष्णुपुरोगमाः। निमग्ना हर्षजलधौ पूजयामासुरम्बिकाम्।११८
नानोपचारैर्विविधैर्नानोपायनपाणयः । जयशब्दं प्रकुर्वाणा मुमुचुः सुमनांसि च।११९
दिवि दुन्दुभयो नेदुर्ननृश्चाप्सरोगणाः। पेठुर्वेदान्मुनिश्रेष्ठागन्धर्वाद्या जगुस्तथा।१२०
मृदङ्गमुरजावीणाढक्काडमरुनिःस्वनैः । घण्टाशङ्खनिनादैश्चव्याप्तमासीज्जगत्त्रयम्।१२१
नानास्तोत्रैस्तदा स्तुत्वा मूर्ध्न्याधायाऽञ्जलींस्तदा। जय मातर्जयेशानीत्येवं सर्वे समूचिरे।१२२
ततस्तुष्टा महादेवी वरान्दत्त्वा पृथक्पृथक्। स्वस्मिंश्च विपुलां भक्तिंप्रार्थिता तैर्ददौ च ताम्।१२३
पश्यतामेव देवानामन्तर्धानंगता ततः। इति ते सर्वमाख्यातं भ्रामर्याश्चरितं महत्।१२४
पठतां शृण्वतां चैव सर्वपापप्रणाशनम्। श्रुतमाश्चर्यजनकं संसारार्णवतारकम्।१२५
एवं मनूनां सर्वेषां चरितं पापनाशनम्। देवीमाहात्म्यसंयुक्तं पठन्शृण्वन्शुभप्रदम्।१२६
यश्चैतत्पठते नित्यं शृणुयाद्योऽनिशं नरः। सर्वपापविनिर्मुक्तोदेवीसायुज्यमाप्नुयात्।१२७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादश साहस्र्यां संहितायां दशमस्कन्धे भ्रामरीचरित्रवर्णनंनाम त्रयोदशऽध्यायः ।।१३।।

दशमस्कन्धः समाप्तः ।। १० ।।

।।श्रीगणेशायनमः।।
श्रीमहालक्ष्म्यैनमः

देवीभागवत पुराणम्

एकादशः स्कन्धः

* प्रथमोऽध्यायः *

प्रातश्चिन्तनवर्णनम्

नारद उवाच

भगवन्भूतभव्येश! नारायण! सनातन!। आख्यातं परमाश्चर्यं देवीचारित्रमुत्तमम्।१
प्रादुर्भावः परो मातुः कार्यार्थमसुरद्रुहाम्। अधिकाराप्तिरुक्ताऽत्रदेवीपूर्णकृपावशात्।२
अधुनाश्रोतुमिच्छामि येन प्रीणातिसर्वदा। स्वभक्तान्परिपुष्णातितमाचारंवदप्रभो ।३

श्रीनारायण उवाच

शृणु! नारद! तत्त्वज्ञ! सदाचारविधिक्रमम्। यदनुष्ठानमात्रेण देवीं प्रीणाति सर्वदा।४
प्रातरुत्थाय कर्तव्यं यद्द्विजेन दिनेदिने। तदहं सम्प्रवक्ष्यामि द्विजानामुपकारकम्।५
उदयास्तमयं यावद्द्विजः सत्कर्मकृद्भवेत्। नित्यनैमित्तिकैर्युक्तः काम्यैश्चान्यैरगर्हितैः।६
आत्मैव न सहायार्थं पिता माताच तिष्ठति। न पुत्रदारानज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलम्।७
तस्माद्धर्मं सहायार्थं नित्यं सञ्चिनु साधनैः। धर्मेणैव सहायात्तुतमस्तरति दुस्तरम्।८
आचारः प्रथमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च। तस्मादस्मिन्समायुक्तो नित्यं स्यादात्मनो द्विजः।९
आचाराल्लभते चाऽऽयुराचाराल्लभते प्रजाः। आचारादन्नमक्षय्यमाचारोहन्ति पातकम्।१०
आचारः परमो धर्मो नृणां कल्याणकारकः। इह लोके सुखीभूत्वापरत्रलभतेसुखम्।११
अज्ञानान्धजनानां तु मोहितैर्भ्रामितात्मनाम्। धर्मरूपो महादीपोमुक्तिमार्गप्रदर्शकः।१२
आचारात्प्राप्यते श्रैष्ठ्यमाचारात्कर्म लभ्यते। कर्मणो जायते ज्ञानमिति वाक्यं मनोः स्मृतम्।१३
सर्वधर्मवरिष्ठोऽयमाचारः परमं तपः। तदेवज्ञानमुद्दिष्टं तेन सर्वं प्रसाध्यते।१४
यस्त्वाचारविहीनोऽत्र वर्तते द्विजसत्तमः। सशूद्रवद्बहिष्कार्योयथाशूद्रस्तथैव सः।१५
आचारो द्विविधः प्रोक्तः शास्त्रीयो लौकिकस्तथा ।
उभावपि प्रकर्तव्यौन त्याज्यौ शुभमिच्छता ।।१६।।
ग्रामधर्मा जातिधर्मा देशधर्माः कुलोद्भवाः। परिग्राह्या नृभिः सर्वे नैवताँल्लङ्घयेन्मुने।१७
दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः । दुःखभागी च सततं व्याधिनाव्याप्त एव च।१८
परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ। धर्ममप्यसुखोदर्कं लोकविद्विष्टमेव च।१९

नारद उवाच

बहुत्वादिहशास्त्राणांनिश्चयः स्यात्कथंमुने!। कियत्प्रमाणंतद्ब्रूहिधर्ममार्गविनिर्णयम्।२०

नारायण उवाच

श्रुतिस्मृती उभे नेत्रं पुराणं हृदयं स्मृतम्। एतत्त्रयोक्त एव स्याद्धर्मो नाऽन्यत्र कुत्रचित्।२१
विरोधोयत्र तुभवेत्त्रयाणांचपरस्परम्। श्रुतिस्तत्रप्रमाणंस्याद्द्वयोर्द्वधेश्रुतिर्वरा।२२

श्रुतिद्वैधंभवेद्यत्रतत्रधर्मावुभौस्मृतौ ।स्मृतिद्वैधं तु यत्रस्याद्विषयः कल्प्यतांपृथक्।२३
पुराणेषु क्वचिच्चैव तन्त्रदृष्टं यथातथम्।धर्मंवदन्ति तं धर्मं गृह्णीयान्न कथञ्चन।२४
वेदाविरोधि चेत्तन्त्रं तत्प्रमाणंन संशयः।प्रत्यक्षश्रुतिरुद्धं यत्तत्प्रमाणं भवेन्न च।२५
सर्वथा वेद एवासौ धर्ममार्गप्रमाणकः।तेनाऽविरुद्धं यत्किञ्चित्तत्प्रमाणंनचान्यथा।२६
योवेदधर्ममुज्झित्यवर्ततेऽन्यप्रमाणतः ।कुण्डानि तस्य शिक्षार्थंयमलोकेवसन्तिहि।२७
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वेदोक्तं धर्ममाश्रयेत्।स्मृतिः पुराणमन्यद्वा तन्त्रं वा शास्त्रमेवच।२८
तन्मूलत्वे प्रमाणं स्यान्नान्यथा तु कदाचन।येकुशस्त्राभियोगेनवर्तयन्तीह मानवान्।२९
अधोमुखोर्ध्वपादास्ते यास्यन्ति नरकार्णवम्।कामाचाराः पाशुपतास्तथा वै लिङ्गधारिणः।३०
तप्तमुद्राङ्किता ये च वैखानसमतानुगाः।ते सर्वे निरयं यान्ति वेदमार्गबहिष्कृताः।३१
वेदोक्तमेव सद्धर्मंतस्मात्कुर्यान्नरः सदा।उत्थायोत्थायबोद्धव्यंकिम्मयाऽद्यकृतंकृतम्।३२
दत्तं वा दापितंवापि वाक्येनाऽपि च भाषितम्।उपपापेषु सर्वेषु पातकेषुमहत्स्वपि।३३
अवाप्य रजनीयामं ब्रह्मध्यानं समाचरेत्।ऊरुस्थोत्तानचरणः सव्येचोरौ तथोत्तरम्।३४
उत्तानं किञ्चिदुत्तानं मुखमवष्टभ्य चोरसा।निमीलिताक्षः सत्त्वस्थोदन्तैर्दन्तान्न संस्पृशेत्।३५
तालुस्थाचलजिह्वश्च सम्वृतास्यः सुनिश्चलः।सन्निरुद्धेन्द्रियग्रामो नाऽतिनिम्नस्थितासनः।३६
द्विगुणंत्रिगुणंवापिप्राणायाममुपक्रमेत् ।ततोध्येयः स्थितोयोऽसौहृदयेदीपवत्प्रभुः।३७
धारयेत्तत्र चाऽऽत्मानं धारणां धारयेद् बुधः।सधूमश्च विधूमश्चसगर्भश्चाप्यगर्भकः।३८
सलक्ष्यश्चाप्यलक्ष्यश्चप्राणायामस्तुषड्विधः।प्राणायामसमोयोगः प्राणायामइतीरितः।३९
प्राणायाम इति प्रोक्तो रेचपूरककुम्भकैः।वर्णत्रयात्मका ह्येते रेचपूरककुम्भकाः।४०
स एव प्रणवः प्रोक्तः प्राणायामश्च तन्मयः।इडया वायुमारोप्यपूरयित्वोदरेस्थितम्।४१
शनैः षोडशमात्राभिरन्ययातं विरेचयेत्।एवं सधूमः प्राणानामायामः कथितोमुने!।४२

आधारे लिङ्गनाभिप्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे ।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश-दशदल-द्वादशार्धे चतुष्के ।
वासान्ते बालमध्ये ड़फकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां ।
हक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ।।४३।।

अरुणकमलसंस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा हरनियमितचिह्ना पद्मतन्तुस्वरूपा ।
रविहुतवहराकानायकाऽऽस्यस्तनाढ्यासकृदपियदिचित्तेसम्वसेस्यात्स मुक्तः।४४
स्थितिः सैव गतिर्यात्रा मतिश्चिन्ता स्तुतिर्वचः।अहं सर्वात्मिको देवः स्तुतिः सर्वं त्वदर्चनम्।४५

अहं देवी न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाऽहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं स्वात्मानमिति चिन्तयेत् ।।४६।।
प्रकाशमानां प्रथमे प्रयाणे प्रतिप्रयाणेऽप्यमृतायमानाम् ।
अन्तःपदव्यामनुसञ्चरन्तीमानन्दरूपामबलाम्प्रपद्ये ।।४७।।

ततो निजब्रह्मरन्ध्रे ध्यायेत्तं गुरुमीश्वरम्।उपचारैर्मानसैश्च पूजयेत्तु यथाविधि।४८
स्तुवीताऽनेन मन्त्रेण साधको नियतात्मवान्।गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवोमहेश्वरः ।
गुरुरेव परम्ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।४९।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे
प्रातश्चिन्तनं नाम प्रथमोऽध्यायः।।१।।

* द्वितीयोऽध्यायः *

शौचविधिवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

आचारहीनं न पुनन्ति वेदा यदप्यधीताः सह षड्भिरङ्गैः ।
छन्दांस्येनं मृत्युकाले त्यजन्ति नीडं शकुन्ता इव जातपक्षाः ।।१।।

ब्राह्मे मुहूर्तेचोत्थाय तत्सर्वं सम्यगाचरेत्। रात्रेरन्तिमयामे तु वेदाभ्यासञ्चरेद्बुधः।२
किञ्चित्कालंततः कुर्यादिष्टदेवानुचिन्तनम्। योगीतुपूर्वमार्गेण ब्रह्मध्यानंसमाचरेत्।३
जीवब्रह्मैक्यता येन जायते तु निरन्तरम्। जीवन्मुक्तश्च भवति तत्क्षणादेव नारद!।४
पञ्चपञ्च उषः कालः सप्तपञ्चाऽरुणोदयः। अष्टपञ्चाशद्भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयः स्मृतः।५
प्रातरुत्थाययः कुर्याद्विण्मूत्रंद्विजसत्तमः। नैर्ऋत्यामिषुविक्षेपमतीत्याभ्यधिकम्भुवः।६
विण्मूत्रेऽपि च कर्णस्थ आश्रमे प्रथमे द्विजः। निवीतं पृष्ठतः कुर्याद्वानप्रस्थगृहस्थयोः।७
कृत्वायज्ञोपवीतंतु पृष्ठतः कण्ठलम्बितम्। विण्मूत्रंतु गृही कुर्यात्कर्णस्थंप्रथमाश्रमी।८
अन्तर्धाय तृणैर्भूमिं शिरः प्रावृत्य वाससा। वाचं नियम्य यत्नेन ष्ठीवनश्वासवर्जितः।९
न फालकृष्टे न जले न चितायां न पर्वते। जीर्णदेवालये कुर्यान्न वल्मीके न शाद्वले।१०
न ससत्त्वेषु गर्तेषु न गच्छन्न पथि स्थितः। सन्ध्ययोरुभयोर्जप्येभोजनेदन्तधावने ।११
पितृकार्ये च दैवे च तथा मूत्रपुरीषयोः। उत्सारे मैथुने वाऽपि तथावैगुरुसन्निधौ।१२
यागे दाने ब्रह्मयज्ञे द्विजो मौनं समाचरेत्। देवता ऋषयः सर्वे पिशाचोरगराक्षसाः।१३
इतो गच्छन्तु भूतानि बहिर्भूमिं करोम्यहम्। इति सम्प्रार्थ्य पश्चात्तु कुर्याच्छौचं यथाविधि।१४
वाय्वग्नी विप्रमादित्यमापः पश्यं तथैवगाः। नकदाचनकुर्वीत विण्मूत्रस्यविसर्जनम्।१५
उदङ्मुखोदि वा कुर्याद्रात्रौ चेद्दक्षिणामुखः। तत्र आच्छाद्यविण्मूत्रं लोष्ठपर्णतृणादिभिः।१६
गृहीतलिङ्ग उत्थाय स गच्छेद्वारिसन्निधौ। पात्रे जलं गृहीत्वा तु गच्छेदन्यत्र चैव हि।१७
गृहीत्वा मृत्तिकां कूलाच्छ्वेतां ब्राह्मणसत्तम!। रक्तां पीतां तथा कृष्णां गृह्णीयुश्चान्यवर्णकाः।१८
अथवायायत्रदेशे सैवग्राह्याद्विजोत्तमैः। अन्तर्जलादेवगृहाद्वल्मीकान्मूषकोत्करात्।१९
कृतशौचावशिष्टाच्चन ग्राह्याः सप्तमृत्तिकाः। मूत्रात्तुद्विगुणंशौचेमैथुने त्रिगुणंस्मृतम्।२०
एका लिङ्गे करे तिस्र उभयोर्मृद्द्वयं स्मृतम्। मूत्रशौचं समाख्यातं शौचेतद् द्विगुणं स्मृतम्।२१
विट्शौचे लिङ्गदेशे तु प्रदद्यान्मृत्तिकाद्वयम्। पञ्चाऽपाने दशैकस्मिन्नुभयोः सप्तमृत्तिकाः।२२
वामपादम्पुरस्कृत्य पश्चाद्दक्षिणमेव च। प्रत्येकञ्च चतुर्वारं मृत्तिकां लेपयेत्सुधीः।२३
एवं शौचं गृहस्थस्यद्विगुणंब्रह्मचारिणः। त्रिगुणं वानप्रस्थस्ययतानाञ्चचतुर्गुणम्।२४
आर्द्रामलकमानातु मृत्तिका शौचकर्मणि। प्रत्येकं तु सदा ग्राह्यानातोन्यूनाकदाचन।२५
एतद्दिवास्याद्विट्शौचंतदर्धंनिशिकीर्तितम्। आतुरस्यतदर्धं तुमार्गस्थस्यतदर्धकम्।२६
स्त्रीशूद्राणामशक्तानां बालानां शौचकर्मणि। यथा गन्धक्षयः स्यात्तु तथा कुर्यादसङ्ख्यकम्।२७
गन्धलेपक्षयो यावत्तावच्छौचं विधीयते। सर्वेषामेव वर्णानामित्याह भगवान्मनुः।२८
वामहस्तेन शौचन्तु कुर्याद्वै दक्षिणेन न। नाभेरधो वामहस्तो नाभेरूर्ध्वं तु दक्षिणः।२९
शौचकर्मणि विज्ञेयोनाऽन्यथाद्विजपुङ्गवैः। जलपात्रंन गृह्णीयाद्विण्मूत्रोत्सर्जनेबुधः।३०

गृह्णीयाद्यदिमोहेनप्रायश्चित्तंहरेत्ततः । मोहाद्वाऽप्यथवाऽऽलस्यान्नकुर्याच्छौचमात्मनः।३१
जलाहारस्त्रिरात्रः स्यात्ततोजापाच्च शुध्यति। देशकालद्रव्यशक्तिस्वोपपत्तीश्चसर्वशः ।३२
ज्ञात्वाशौचं प्रकर्तव्यमालस्यं नाऽत्रधारयेत्। पुरीषोत्सर्जनेकुर्याद्गण्डूषान्द्वादशैव तु।३३
चतुरो मूत्रविक्षेपे नाऽतोन्यूनान्कदाचन। अधोमुखं नरः कृत्वा त्यजेत्तं वामतः शनैः।३४
आचम्य च ततः कुर्याद्दन्तधावनमादरात्। कण्टकिक्षीरवृक्षोत्थं द्वादशाङ्गुलमव्रणम्।३५
कनिष्ठिकाग्रवत्स्थूलं पूर्वार्धेकृतकूर्चकम्। करञ्जोदुम्बरौ चूतः कदम्बोलोध्रचम्पकौ।

बदरीति द्रुमाश्चेति प्रोक्ता दन्तप्रधावने।।३६।।

अन्नाद्यायव्यूहध्वंसे सोमो राजायमागमत्। समे मुखं प्रक्षाल्यते यशसाच भगेन च।३७
आयुर्बलं यशोवर्चः प्रजाः पशुवसूनि च। ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वन्नो देहि वनस्पते!।३८
अभावे दन्तकाष्ठस्य प्रतिषिद्धदिनेषु च। अपां द्वादशगण्डूषैर्विदध्याद्दन्तधावनम्।३९
सविताभक्षितस्तेन स्वकुलं तेन घातितम्। प्रतिपद्दर्शषष्ठीषु नवम्येकादशीरवौ।४०

दन्तानां काष्ठसंयोगाद्दहत्यासप्तमं कुलम्।।४१।।

कृत्वाऽलं पादशौचं ह्यमलमथ जलं त्रिः पिबेद् द्विविमृज्य
तर्जन्याङ्गुष्ठवत्या सजलमभिमृशेन्नासिकारन्ध्रयुग्मम्।
अङ्गुष्ठाऽनामिकाभ्यां नयनयुगयुतं कर्णयुग्मं कनिष्ठाऽङ्गुष्ठाभ्यां
नाभिदेशे हृदयमथतले नाऽङ्गुलीभिः शिरांसि ।।४२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे शौचविधिवर्णनंनाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

* तृतीयोऽध्यायः *

रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

"शुद्धंस्मार्तंचाचमनंपौराणंवैदिकंतथा ।
तान्त्रिकंश्रौतमित्याहुःषड्विधंश्रुतिचोदितम् ।।
विण्मूत्रादिकशौचञ्च शुद्धञ्च परिकीर्तितम् ।
स्मार्तपौराणिकं कर्म आचान्ते विधिपूर्वकम् ।।
वैदिकं श्रौतमित्यादि ब्रह्मयज्ञादिपूर्वकम् ।
अस्त्रविद्यादिकं कर्म तान्त्रिको विधिरुच्यते ।।"
स्मृत्वा चोङ्कारगायत्रीं निबध्नीयाच्छिखां तथा ।
पुनराचम्य हृदयं बाहू स्कन्धौ च संस्पृशेत् ।।१।।

क्षुतेनिष्ठीवनेचैव दन्तोच्छिष्टेतथाऽनृते। पतितानाञ्च सम्भाषेदक्षिणं श्रवणंस्पृशेत्।२
अग्निरापश्चवेदाश्चसोमः सूर्योऽनिलस्तथा। सर्वेनारद! विप्रस्यसर्वे तिष्ठन्ति दक्षिणे।३
ततस्तु गत्वा नद्यादौ प्रातः स्नानंविशोधनम्। समाचरेन्मुनिश्रेष्ठ! देहसंशुद्धिहेतवे।४
अत्यन्तमलिनो देहो नवद्वारैर्मलं वहन्। सदाऽऽस्तेतच्छोधनायप्रातः स्नानंविधीयते।५
अगम्यागमनात्पापं यच्च पापं प्रतिग्रहात्। रहस्याचरितं पापं मुच्यते स्नानकर्मणा।६
अस्नातस्य क्रियाः सर्वाभवन्तिविफलायतः। तस्मात्प्रातश्चरेत्स्नानंनित्यमेवदिनेदिने ।७
दर्भयुक्तश्चरेत्स्नानंतथासन्ध्याभिवन्दनम् । सप्ताहंप्रातरस्नायी सन्ध्याहीनस्त्रिभिर्दिनैः।८

द्वादशाहमनग्निः सन्द्विजः शूद्रत्वमाप्नुयात्। अल्पत्वाद्धोमकालस्य बहुत्वात्स्नानकर्मणः।९
प्रातर्नतु तथा स्नायाद्धोमकालेविगर्हितः। गायत्र्यास्तु परंनास्ति इह लोके परत्र च।१०
गायन्तं त्रायते यस्माद्गायत्रीत्यभिधीयते। प्रणवेन तु संयुक्तां व्याहृतित्रयसंयुताम्।११
वायुं वायौ जयेद्विप्रः प्राणसंयमनत्रयात्। ब्राह्मणः श्रुतिसम्पन्नः स्वधर्मनिरतः सदा।१२
स वैदिकं जपेन्मन्त्रं लौकिकं न कदाचन। गोशृङ्गे सर्षपोयावत्तावद्येषां न संस्थिरः।१३
न तारयन्त्युभौ पक्षौ पितॄनेकोत्तरंशतम्। सगर्भोजपसंयुक्तस्त्वगर्भो ध्यानमात्रकः।१४
स्नानाङ्गतर्पणं कृत्वा देवर्षिपितृतोषकम्। शुद्धेवस्त्रे परीधाय जलाद्वहिरुपागतः।१५
विभूतिधारणं कार्यं रुद्राक्षाणाञ्च धारणम्। क्रमयोगेन कर्तव्यं सर्वदा जपसाधकैः।१६

रुद्राक्षान्कण्ठदेशे दशनपरिमितान्मस्तके विंशती द्वे
षट् षट् कर्णप्रदेशे करयुगलकृते द्वादश द्वादशैव।
वाह्वोरिन्दोः कलाभिर्नयनयुगकृते त्वेकमेकं शिखायां
वक्षस्यष्टाधिकं यः कलयति शतकं स स्वयं नीलकण्ठः ॥१७॥

बद्ध्वा स्वर्णेनरुद्राक्षं रजतेनाऽथवामुने!। शिखायांधारयेन्नित्वंकर्णयोर्वासमाहितः।१८
यज्ञोपवीते हस्तेवा कण्ठे तुन्देऽथवानरः। श्रीमत्पञ्चाक्षरेणैव प्रणवेन तथापि वा।१९

निर्व्याजभक्त्या मेधावीरुद्राक्षंधारयेन्मुदा।
रुद्राक्षधारणंसाक्षाच्छिवज्ञानस्यसाधनम् ॥२०॥

रुद्राक्षं यच्छिखायां तत्तारतत्त्वमिति स्मरेत्। कर्णयोरुभयोर्ब्रह्मन्देवं देवीञ्च भावयेत्।२१
यज्ञोपवीतेवेदांश्चतथाहस्तेदिशः स्मरेत्। कण्ठे सरस्वतीं देवीं पावकञ्चापिभावयेत्।२२
सर्वाश्रमाणां वर्णानां रुद्राक्षाणां च धारणम्। कर्तव्यं मन्त्रतः प्रोक्तंद्विजानां नाऽन्यवर्णिनाम्।२३
रुद्राक्षधारणाद्रुद्रो भवत्येव न संशयः। पश्यन्नपि निषिद्धांश्चतथा शृण्वन्नपिस्मरन्।२४
जिघ्रन्नपि तथा चाऽश्नन्प्रलपन्नपिसन्ततम्। कुर्वन्नपिसदागच्छन्विसृजन्नपिमानवः।२५
रुद्राक्षधारणादेव सर्वपापैर्न लिप्यते। अनेन भुक्तं देवेन भुक्तं यत्तु तथा भवेत्।२६
पीतं रुद्रेण तत्पीतं घ्रातं घ्रातंशिवेन तत्। रुद्राक्षधारणे लज्जा येषामस्तिमहामुने!।२७
तेषांनास्तिविनिर्मोक्षः संसाराज्जन्मकोटिभिः। रुद्राक्षधारिणं दृष्ट्वापरिवादंकरोतियः।२८
उत्पत्तौतस्यसाङ्कर्यमस्त्येवेतिविनिश्चयः। रुद्राक्षधारणादेव रुद्रो रुद्रत्वमाप्नुयात्।२९
मुनयः सत्यसङ्कल्पा ब्रह्मा ब्रह्मत्वमागतः। रुद्राक्षधारणाच्छ्रेष्ठं न किञ्चिदपि विद्यते।३०
रुद्राक्षधारिणे भक्त्या वस्त्रं धान्यंददातियः। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकंसगच्छति।३१
रुद्राक्षधारिणं श्राद्धे भोजयेतविमोदतः। पितृलोकमवाप्नोति नाऽत्रकार्याविचारणा।३२
रुद्राक्षधारिणः पादौप्रक्षाल्याऽद्भिः पिवेन्नरः। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।३३
हारम्वा कटकम्वापिसुवर्णम्वाद्विजोत्तमः। रुद्राक्षसहितंभक्त्या धारयन्रुद्रतामियात्।३४
रुद्राक्षं केवलं वापि यत्र कुत्र महामते!। समन्त्रकं वा मन्त्रेण रहितम्भाववर्जितम्।३५

यो वा को वा नरोभक्त्या धारयेल्लज्जयाऽपि वा।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सम्यग्ज्ञानमवाप्नुयात् ॥३६॥

अहो रुद्राक्षमाहात्म्यं मया वक्तुं न शक्यते। तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकुर्याद्रुद्राक्षधारणम्।३७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे सदाचारवर्णने रुद्राक्षमहत्त्वविधानकथनंनाम तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

* चतुर्थोऽध्यायः *

रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनम्

नारद उवाच

एवं भूतानुभावोऽयं रुद्राक्षो भवताऽनघ!। वर्णितो महतां पूज्यः कारणंतत्र किं वद। १

श्रीनारायण उवाच

एवमेव पुरा पृष्टो भगवान्गिरिशः प्रभुः। षण्मुखेन च रुद्रस्तं यदुवाच शृणुष्व तत्। २

ईश्वर उवाच

शृणु षण्मुख! तत्त्वेन कथयामिसमासतः। त्रिपुरोनामदैत्यस्तु पुराऽसीत्सर्वदुर्जयः। ३
हतास्तेन सुराः सर्वेब्रह्मविष्ण्वादिदेवताः। सर्वैस्तुकथितेतस्मिंस्तदाऽहंत्रिपुरंप्रति । ४
अचिन्तयं महाशस्त्रमघोराखं मनोहरम्। सर्वदेवमयं दिव्यं ज्वलन्तं घोररूपि यत्। ५
त्रिपुरस्य वधार्थाय देवानां तारणाय च। सर्वविघ्नोपशमनमघोरास्त्रमचिन्तयम् । ६
दिव्यवर्षसहस्रंचक्षुरुन्मीलितंमया । पश्चान्ममाऽऽकुलाक्षिभ्यः पतिता जलबिन्दवः। ७
तत्राऽश्रुविन्दुतो जाता महारुद्राक्षवृक्षकाः। ममाऽऽज्ञयामहासेन सर्वेषांहितकाम्यया। ८
बभूवुस्ते च रुद्राक्षा अष्टत्रिंशत्प्रभेदतः। सूर्यनेत्रसमुद्भूताः कपिला द्वादश स्मृताः। ९

सोमनेत्रोत्थिताः श्वेतास्ते षोडशविधाः क्रमात् ।
वह्निनेत्रोद्भवाः कृष्णा दश भेदा भवन्ति हि ।।१०।।

श्वेतवर्णश्च रुद्राक्षोजातितोब्राह्मउच्यते। क्षात्रोरक्तस्तथामिश्रोवैश्यः कृष्णस्तुशूद्रकः। ११
एकवक्त्रः शिवः साक्षाद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति। द्विवक्त्रोदेवदेव्यौस्याद्विविधं नाशयेदघम्। १२

त्रिवक्त्रस्त्वनलः साक्षात्स्त्रीहत्यां दहति क्षणात् ।
चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा नरहत्यां व्यपोहति ।।१३।।

पञ्चवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निर्नाम नामतः। अभक्ष्यभक्षणोद्भूतैरगम्यागमनोद्भवैः । १४
मुच्यतेसर्वपापैस्तुपञ्चवक्त्रस्यधारणात् । षड्वक्त्रः कार्त्तिकेयस्तुसधार्योदक्षिणेकरे। १५
ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यतेनाऽत्र संशयः। सप्तवक्त्रो महाभागोह्यनङ्गो नाम नामतः। १६
तद्धारणान्मुच्यतेहिस्वर्णस्तेयादिपातकैः । अष्टवक्त्रो महासेनः साक्षाद्देवोविनायकः। १७
अन्नकूटं तूलकूटं स्वर्णकूटं तथैव च। दुष्टान्वयस्त्रियं वाऽथ संस्पृशंश्च गुरुस्त्रियम्। १८
एवमादीनि पापानि हन्ति सर्वाणि धारणात्। विघ्नास्तस्य प्रणश्यन्ति याति चाऽन्ते परं पदम्। १९
भवन्त्येते गुणा सर्वे ह्यष्टवक्त्रस्य धारणात्। नववक्त्रो भैरवस्तु धारयेद्वामबाहुके। २०
भुक्तिमुक्तिप्रदः प्रोक्तो मम तुल्यबलो भवेत्। भ्रूणहत्यासहस्राणिब्रह्महत्याशतानिच। २१
सद्यः प्रलयमायान्ति नववक्त्रस्य धारणात्। दशवक्त्रस्तुदेवेशः साक्षाद्देवोजनार्दनः। २२
ग्रहाश्चैव पिशाचाश्च वेतालाब्रह्मराक्षसाः। पन्नगाश्चोपशाम्यन्तिदशवक्त्रस्यधारणात्। २३
वक्त्रैकादशरुद्राक्षो रुद्रैकादशकं स्मृतम्। शिखायांधारयेद्यो वै तस्यपुण्यफलं शृणु। २४
अश्वमेधसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च। गवां शतसहस्रस्यसम्यग्दत्तस्य यत्फलम्। २५
तत्फलंलभतेशीघ्रंवक्त्रैकादशधारणात् । द्वादशाऽऽस्यस्यरुद्राक्षस्यैवकर्णेतुधारणात्। २६
आदित्यास्तोषिता नित्यं द्वादशास्ये व्यवस्थिताः। गोमेधे चाऽश्वमेधे च यत्फलं तदवाप्नुयात्। २७
शृङ्गिणां शस्त्रिणांचैवव्याघ्रादीनांभयंनहि। नचव्याधिभयंतस्यनैवचाधिः प्रकीर्तितः। २८
न च किञ्चिद्भयंतस्यन च व्याधिः प्रवर्तते। न कुतश्चिद्भयंतस्यसुखीचैवेश्वरोभवेत्। २९

हस्त्यश्वमृगमार्जारसर्पमूषकदर्दुरान् । खरांश्च श्वशृगालांश्च हत्वा बहुविधानपि।३०
मुच्यते नाऽत्रसन्देहो वक्त्रद्वादशधारणात्। वक्त्रत्रयोदशोवत्सरुद्राक्षोयदिलभ्यते ।३१
कार्त्तिकेयसमो ज्ञेयः सर्वकामार्थसिद्धिदः। रसो रसायनं चैवतस्यसर्वंप्रसिद्ध्यति।३२
तस्यैव सर्वभोग्यानि नाऽत्र कार्या विचारणा। मातरं पितरंचैवभ्रातरंवानिहन्तियः।३३
मुच्यते सर्वपापेभ्यो धारणात्तस्य षण्मुख!। चतुर्दशास्योरुद्राक्षोयदि लभ्येतपुत्रक।३४
धारयेत्सततं मूर्ध्नि तस्य पिण्डः शिवस्य तु। किं मुने बहुनोक्तेनवर्णनेन पुनः पुनः।३५
पूज्यते सततं देवैः प्राप्यते च परा गतिः। रुद्राक्षएकः शिरसाधार्योभक्त्याद्विजोत्तमैः।३६
षड्विंशदभिः शिरोमाला पञ्चाशद्धृदयेन तु। कलाक्षैर्बाहुवलयेअर्काक्षैर्मणिबन्धनम् ।३७
अष्टोत्तरशतेनाऽपिपञ्चाशद्भिः षडानन। अथवा सप्तविंशत्या कृत्वा रुद्राक्षमालिकाम्।३८
धारणाद्वा जपाद्वापि ह्यनन्तं फलमश्नुते। अष्टोत्तरशतैर्मालारुद्राक्षैर्धार्यते यदि।३९
क्षणेक्षणेऽश्वमेधस्य फलं प्राप्नोति षण्मुख!। त्रिः सप्तकुलमुद्धृत्यशिवलोकेमहीयते।४०

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादश साहस्त्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनंनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

* पञ्चमोऽध्यायः *

जपमालाविधानवर्णनम्

ईश्वर उवाच

लक्षणं जपमालायाः शृणु वक्ष्यामि षण्मुख!। रुद्राक्षस्य मुखंब्रह्माबिन्दूरुद्रइतीरितः।१
विष्णुः पुच्छंभवेच्चैवभोगमोक्षफलप्रदम्। पञ्चविंशतिभिश्चाक्षैः पञ्चवक्त्रैः सकण्टकैः।२
रक्तवर्णैः सितैर्मिश्रैः कृतरन्ध्रविदर्भितैः। अक्षसूत्रं प्रकर्तव्यं गोपुच्छवलयाकृति।३
वक्त्रं वक्त्रेण संयोज्य पुच्छंपुच्छेनयोजयेत्। मेरुमूर्ध्वमुखंकुर्यात्तदूर्ध्वंनागपाशकम् ।४
एवं सङ्ग्रथितां मालांमन्त्रसिद्धिप्रदायिनीम्। प्रक्षाल्यगन्धतोयेनपञ्चगव्येनचोपरि ।५

ततः शिवाम्भसाऽऽक्षाल्य ततो मन्त्रगणान्न्यसेत् ।
स्पृष्ट्वा शिवास्त्रमन्त्रेण कवचेनाऽवगुण्ठयेत् ॥६॥

मूलमन्त्रं न्यसेत्पश्चात्पूर्ववत्कारयेत्तथा। सद्योजातादिभिः प्रोक्ष्य यावदष्टोत्तरंशतम्।७
मूलमन्त्रं समुच्चार्य शुद्धभूमौ निधाय च। तस्योपरि न्यसेत्साम्बंशिवंपरमकारणम्।८
प्रतिष्ठिता भवेन्माला सर्वकामफलप्रदा। यस्य देवस्य योमन्त्रस्तांतेनैवाभिपूजयेत्।९
मूर्ध्नि कण्ठेऽथवा कर्णे न्यसेद्वाजपमालिकाम्। रुद्राक्षमालयाचैवंजप्तव्यंनियतात्मना ।१०
कण्ठे मूर्ध्नि हृदि प्रान्ते कर्णे बाहुयुगेऽथवा। रुद्राक्षधारणं नित्यं भक्त्यापरमयायुतः।११
किमत्र बहुनोक्तेन वर्णनेन पुनः पुनः। रुद्राक्षधारणं नित्यं तस्मादेतत्प्रशस्यते।१२
स्नाने दाने जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने। प्रायश्चित्ते तथा श्राद्धे दीक्षाकाले विशेषतः।१३
अरुद्राक्षधरो भूत्वा यत्किञ्चित्कर्म वैदिकम्। कुर्वन्विप्रस्तु मोहेन नरकेपततिध्रुवम्।१४
रुद्राक्षं धारयेन्मूर्ध्नि कण्ठे सूत्रे करेऽथवा। सुवर्णमणिसम्भिन्नं शुद्धंनान्यैर्धृतंशिवम्।१५
नाऽशुचिर्धारयेदक्षं सदाभक्त्यैव धारयेत्। रुद्राक्षतरुसम्भूतवातोद्भूततृणान्यपि ।१६
पुण्यलोकं गमिष्यन्ति पुनरावृत्तिदुर्लभम्। रुद्राक्षं धारयन्पापं कुर्वन्नपि च मानवः।१७
सर्वं तरति पाप्मानं जाबालश्रुतिराह हि। पशवो हि च रुद्राक्षधारणाद्यान्तिरुद्रताम्।१८

किमु ये धारयन्तिस्म नरा रुद्राक्षमालिकाम्। रुद्राक्षः शिरसाह्येकोधार्योरुद्रपरैः सदा।१९
ध्वंसनं सर्वदुःखानां सर्वपापविमोचनम्। व्याहरन्ति च नामानियेशम्भोः परमात्मनः।२०
रुद्राक्षालङ्कृता ये च ते वै भागवतोत्तमाः। रुद्राक्षधारणंकार्यंसर्वश्रेयोऽर्थिभिर्नृभिः ।२१
कर्णपाशेशिखायाञ्च कण्ठे हस्ते तथोदरे। महादेवश्च विष्णुश्च ब्रह्मा तेषां विभूतयः।२२
देवाश्चाऽन्येतथाभक्त्याखलुरुद्राक्षधारिणः। गोत्रर्षयश्च सर्वेषां कूटस्था मूलरूपिणः।२३
तेषां वंशप्रसूताश्च मुनयः सकला अपि। श्रौतधर्मपराः शुद्धाः खलु रुद्राक्षधारिणः।२४
श्रद्धा न जायते साक्षाद्वेदसिद्धे विमुक्तिदे। बहूनां जन्मनामन्ते महादेवप्रसादतः।२५
रुद्राक्षधारणे वाञ्छा स्वभावादेव जायते। रुद्राक्षस्य तु माहात्म्यं जाबालैरादरेणतु।२६
पठ्यते मुनिभिः सर्वैर्मया पुत्र! तथैव च। रुद्राक्षस्यफलं चैव त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।२७
फलस्य दर्शने पुण्यं स्पर्शात्कोटिगुणं भवेत्। शतकोटिगुणंपुण्यंधारणाल्लभतेनरः ।२८
लक्षकोटिसहस्राणि लक्षकोटिशतानि च। जपाच्च लभते नित्यंनात्रकार्याविचारणा।२९
हस्ते चोरसिकण्ठे च कर्णयोर्मस्तकेतथा। रुद्राक्षंधारयेद्यस्तु स रुद्रोनाऽत्रसंशयः।३०
अवध्यः सर्वभूतानां रुद्रवद्धि चरेद्भुवि। सुराणामसुराणां च वन्दनीयो यथा शिवः।३१
रुद्राक्षधारी सततंवन्दनीयस्तथा नरैः। उच्छिष्टो वाविकर्मस्थोयुक्तोवासर्वपातकैः।३२
मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्राक्षस्य तु धारणात्। कण्ठेरुद्राक्षमाबध्यश्चापिवाम्रियतेयदि ।३३
सोऽपिमुक्तिमवाप्नोतिकिंपुनर्मानुषोऽपिसः। जपध्यानविहीनोऽपिरुद्राक्षंयदिधारयेत्।३४
सर्वपापविनिर्मुक्तः स यातिपरमां गतिम्। एकंवाऽपिहिरुद्राक्षंकृत्वायत्नेनधारयेत् ।३५
एकविंशतिमुद्धृत्य रुद्रलोके महीयते। अतः परं प्रवक्ष्यामि रुद्राक्षस्यपुनर्विधिम्।३६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे रुद्राक्षजपमालाविधानवर्णनंनाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

* षष्ठोऽध्यायः *

रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनम्

ईश्वर उवाच

महासेन! कुशग्रन्थिपुत्रा जीवादयः परे। रुद्राक्षस्यतु नैकोऽपिकलामर्हतिषोडशीम्।१
पुरुषाणां यथाविष्णुर्ग्रहाणां च यथा रविः। नदीनां तु यथा गङ्गा मुनीनां कश्यपो यथा।२
उच्चैःश्रवा यथाऽश्वानांदेवानामीश्वरोयथा। देवीनांतु यथागौरीतद्वच्छ्रेष्ठमिदंभवेत्।३
नाऽतः परतरं स्तोत्रं नाऽतः परतरंव्रतम्। अक्षय्येषु च दानेषुरुद्राक्षस्तु विशिष्यते।४
शिवभक्ताय शान्तायदद्याद्रुद्राक्षमुत्तमम्। तस्यपुण्यफलस्याऽन्तं नचाऽहं वक्तुमुत्सहे।५
धृतरुद्राक्षकण्ठाय यस्त्वन्नं सम्प्रयच्छति। त्रिः सप्तकुलमुद्धृत्य रुद्रलोकं सगच्छति।६
यस्यभाले विभूतिर्न नाङ्गे रुद्राक्षधारणम्। नशम्भोर्भवने पूजा सविप्रः श्वपचाधमः।७
खादन्मांसंपिबन्मद्यंसङ्गच्छन्नन्त्यजानपि। पातकेभ्योविमुच्येतरुद्राक्षेशिरसिस्थिते ।८
सर्वयज्ञतपोदानवेदाभ्यासैश्च यत्फलम्। यत्फलं लभते सद्यो रुद्राक्षस्यतु धारणात्।९
वेदैश्चतुर्भिर्यत्पुण्यं पुराणपठनेन च। यत्तीर्थसेवनेनैव सर्वविद्यादिभिस्तथा।१०
तत्पुण्यं लभते सद्यो रुद्राक्षस्यतु धारणात्। प्रयाणकालेरुद्राक्षंबन्धयित्वाम्रियेद्यदि ।११
स रुद्रत्वमवाप्नोति पुनर्जन्म न विद्यते। रुद्राक्षं धारयेत्कण्ठे बाह्वोर्वा म्रियते यदि।१२

कुलैकविंशमुत्तार्य रुद्रलोके वसेन्नरः। ब्राह्मणोवापिचाण्डालो निर्गुणः सगुणोऽपिच।१३
भस्मरुद्राक्षधारी यः स देवत्वं शिवं व्रजेत्। शुचिर्वाऽप्यशुचिर्वाऽवि तथाऽभक्षस्य भक्षकः।१४
म्लेच्छो वाऽप्यथचाण्डालोयुतोवासर्वपातकैः। रुद्राक्षधारणादेवसरुद्रोनाऽत्रसंशयः।१५
शिरसा धार्यते कोटिः कर्णयोर्दशकोटयः। शतकोटिर्गलेबद्धोमूर्ध्निकोटिसहस्रकम्।१६
अयुतञ्चोपवीते तु लक्षकोटिर्भुजे स्थिते। मणिबन्धे तु रुद्राक्षो मोक्षसाधनकः परः।१७
रुद्राक्षधारको भूत्वा यत्किञ्चित्कर्म वैदिकम्। कुर्वन्विप्रः सदा भक्त्या महदाप्नोति तत्फलम्।१८
रुद्राक्षमालिकां कण्ठे धारयेद्भक्तिवर्जितः। पापकर्मातुयो नित्यंसमुक्तः सर्वबन्धनात्।१९
रुद्राक्षार्पितचेतायोरुद्राक्षस्तुनवै धृतः। असौ माहेश्वरो लोके नमस्यः सतुलिङ्गवत्।२०
अविद्यो वा सविद्यो वा रुद्राक्षस्यतु धारणात्। शिवलोकंप्रपद्येतकीकटेगर्दभोयथा।२१

स्कन्द उवाच

रुद्राक्षान्सन्दधे देव! गर्दभः केन हेतुना। कीकटेकेन वा दत्तस्तद्ब्रूहि परमेश्वर!।२२

श्रीभगवानुवाच

शृणु पुत्र! पुरावृत्तं गर्दभो विन्ध्यपर्वते। धत्ते रुद्राक्षभारं तु वाहितः पथिकेन तु।२३
श्रान्तोऽसमर्थस्तद्भारं वोढुंपतितवान्भुवि। प्राणैस्त्यक्तस्त्रिनेत्रस्तुशूलपाणिर्महेश्वरः।२४
मत्प्रसादान्महासेन! मदन्तिकमुपागतः। यावद्वक्त्रस्यसङ्ख्यानंरुद्राक्षाणांसुदुर्लभम्।२५
तावद्युगसहस्राणिशिवलोकेमहीयते। स्वशिष्येभ्यस्तुवक्तव्यंनाऽशिष्येभ्यः कदाचन।२६
अभक्तेभ्योऽपि मूर्खेभ्यः कदाचिन्न प्रकाशयेत्। अभक्तो वाऽस्तु भक्तोवा नीचो नीचतरोऽपि वा।२७
रुद्राक्षान्धारयेद्यस्तु मुच्यते सर्वपातकैः। रुद्राक्षधारणं पुण्यं केन वा सदृशं भवेत्।२८
महाव्रतमिदं प्राहुर्मुनयस्तत्त्वदर्शिनः। सहस्रं धारयेद्यस्तु रुद्राक्षाणां धृतव्रतः।२९
तं नमन्ति सुराः सर्वे यथा रुद्रस्तथैव सः। अभावे तु सहस्रस्य बाह्वोःषोडशषोडश।३०
एकं शिखायां करयोर्द्वादश द्वादशैव तु। द्वात्रिंशत्कण्ठदेशेतु चत्वारिंशच्च मस्तके।३१
एकैकं कर्णयोः षट्षट् वक्षस्यष्टोत्तरं शतम्। यो धारयति रुद्राक्षान्रुद्रवत् स तु पूज्यते।३२
मुक्ताप्रवालस्फटिकरौप्यवैडूर्यकाञ्चनैः। समेतान्धारयेद्यस्तु रुद्राक्षान्सशिवोभवेत्।३३
केवलानपि रुद्राक्षान्यद्यालस्याद्बिभर्ति यः। तं न स्पृशन्ति पापानि तमांसीव विभावसुम्।३४
रुद्राक्षमालयामन्त्रोजप्तोऽनन्तफलप्रदः। यस्याऽङ्गेनास्तिरुद्राक्षएकोऽपि बहुपुण्यदः।३५
तस्यजन्म निरर्थं स्यात्त्रिपुण्ड्ररहितं यथा। रुद्राक्षंमस्तकेधृत्वाशिरः स्नानंकरोतियः।३६
गङ्गास्नानफलं तस्य जायते नाऽत्र संशयः। एकवक्त्रः पञ्चवक्त्रएकादशमुखाः परे।३७
चतुर्दशमुखाः केचिद्रुद्राक्षालोकपूजिताः। भक्त्यासम्पूज्यते नित्यंरुद्राक्षः शङ्करात्मकः।३८
दरिद्रं वापि पुरुषं राजानं कुरुते भुवि। अत्र ते कथयिष्यामि पुराणं मतमुत्तमम्।३९
कोशलेषु द्विजः कश्चिद्गिरिनाथ इतिश्रुतः। महाधनी च धर्मात्मा वेदवेदाङ्गपारगः।४०
यज्ञकृद्दीक्षितस्तस्य तनयः सुन्दराकृतिः। नाम्नागुणनिधिः ख्यातस्तरुणः कामसुन्दरः।४१
गुरोः सुधिषणस्याऽथ पत्नींमुक्तावलीमथ। मोहयामास रूपेण यौवनेन मदेन च।४२
[illegible]तस्तु तया सार्धं कञ्चित्कालं ततो भिया। विषं ददौ च गुरवे येभे पश्चात्तु निर्भयः।४३
यदा माता पिता कर्मकिञ्चिज्ज्ञानातियत्क्षणे। मातरंपितरंचापिमारयामासतद्विषात्।४४
नानावि[illegible]ासभोगैश्च जाते द्रव्यव्यये ततः। ब्राह्मणानां गृहेचौर्यं चकार स तदाखलः।४५
सुरापानमदोन्मत्तस्तदाज्ञातिबहिष्कृतः। ग्रामान्निष्कासितः सर्वैस्तदासोऽभूद्वनेचरः।४६
मुक्तावल्या तया सार्धं जगाम गहनं वनम्। मार्गे स्थितो द्रव्यलोभाज्जघान ब्राह्मणान्बहून्।४७

एवं बहुगते काले ममार स तदाऽधमः। नेतुं तं यमदूताश्च समाजग्मुः सहस्रशः।४८
शिवलोकाच्छिवगणास्तैव च समागताः। तयोः परस्परं वादोबभूवगिरिजासुत!।४९
यमदूतास्तदा प्रोचुः पुण्यमस्यकिमस्तिहि। ब्रुवन्तुसेवकाः शम्भोर्यद्येनंनेतुमिच्छथ।५०
शिवदूतास्तदा प्रोचुरयंयस्मिन्स्थलेमृतः। दशहस्तादधोभूमेरुद्राक्षस्तत्रचाऽस्तिहि ।५१
तत्प्रभावेण हे दूत! नेष्यामः शिवसन्निधिम्। ततो विमानमारुह्यदिव्यरूपधरोद्विजः ।५२
गतोगुणनिधिर्दूतैः सहितः शङ्करालयम्। इति रुद्राक्षमाहात्म्यं कथितं तव सुव्रत!।५३
एवं रुद्राक्षमहिमा समासात्कथितो मया। सर्वपापक्षयकरो महापुण्यफलप्रदः।५४

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे रुद्राक्षमाहात्म्येगुणनिधिमो[illegible]वर्णनंनाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

* सप्तमोऽध्यायः *

रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

एवं नारद! षड्वक्त्रोगिरिशेनविबोधितः। रुद्राक्षमहिमानञ्चज्ञात्वाऽसीत्सकृतार्थकः।१
इत्थं भूतानुभावोऽयं रुद्राक्षो वर्णितो मया। सदाचारप्रसङ्गेन शृणुचान्यत्समाहितः।२
यथा रुद्राक्षमहिमा वर्णितोऽनन्तपुण्यदः। लक्षणं मन्त्रविन्यासंतथाऽहंवर्णयामिते।३
लक्षंतु दर्शनात्पुण्यंकोटिस्तत्स्पर्शनाद्भवेत्। तस्य कोटिगुणं पुण्यंलभतेधारणान्नरः।४
लक्षकोटिसहस्राणि लक्षकोटिशतानि च। तज्जपाल्लभते पुण्यं नरोरुद्राक्षधारणात्।५
रुद्राक्षाणांतु भद्राक्षधारणात्स्यान्महाफलम्। धात्रीफलप्रमाणंयच्छ्रेष्ठमेतदुदाहृतम् ।६
बदरीफलमात्रंतु प्रोच्यते मध्यमंबुधैः। अधमं चणमात्रं स्यात्प्रतिज्ञैषा मयोदिता।७
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चेति शिवाज्ञया। वृक्षा जाताः पृथिव्यां तु तज्जातीयाः शुभाक्षकाः।८
श्वेतास्तु ब्राह्मणा ज्ञेयाः क्षत्रिया रक्तवर्णकाः। पीता वैश्यास्तु विज्ञेयाः कृष्णाः शूद्राः प्रकीर्तिताः।९
ब्राह्मणो बिभृयाच्छ्वेतान्रक्तान्राजा तु धारयेत्। पीतान्वैश्यस्तु बिभृयात्कृष्णाञ्छूद्रस्तु धारयेत्।१०
समाः स्निग्धा दृढास्तद्वत्कण्टकैः संयुताः शुभाः। कृमिदष्टाञ्छिन्नभिन्नान्कण्टकै रहितांस्तथा।११
व्रणयुक्तानाऽऽवृतांश्चषड्रुद्राक्षांस्तुवर्जयेत्। स्वयमेवकृतद्वारोरुद्राक्षः स्यादिहोत्तमः।१२
यत्तु पौरुषयत्नेनकृतंतन्मध्यमं भवेत्। समान्स्निग्धान्दृढान्वृत्तान्क्षौमसूत्रेणधारयेत्।१३
सर्वगात्रेषु साम्येन समानाऽतिविलक्षणा। निघर्षे हेमलेखाभा यत्र लेखा प्रदृश्यते।१४
तदक्षमुत्तमं विद्यात्स धार्यः शिवपूजकैः। शिखायामेकरुद्राक्षं त्रिंशद्वै शिरसा बहेत्।१५
षट्त्रिंशच्च गले धार्याबाह्वोः षोडशषोडश। मणिबन्धेद्वादशाक्षान्स्कन्धेपञ्चाशतंभवेत्।१६
अष्टोत्तरशतैर्मालोपवीतञ्चप्रकल्पयेत् । द्विसरं त्रिसरं वापि बिभृयात्कण्ठदेशतः।१७
कुण्डले मुकुटे चैव कर्णिकाहारकेषु च। केयूरे कटके चैव कुक्षिवंशे तथैव च।१८
सुप्ते पीते सर्वकालं रुद्राक्षं धारयेन्नरः। त्रिशतं त्वधमं पञ्चशतं मध्यममुच्यते।१९
सहस्रमुत्तमं प्रोक्तं चैवं भेदेन धारयेत्। शिरसीशानमन्त्रेण कर्णे तत्पुरुषेण च।२०
अघोरेण ललाटे तु तेनैव हृदयेऽपि च। अघोरबीजमन्त्रेण करे यो धारयेत्पुनः।२१
पञ्चाशदक्षग्रथितां वामदेवेन चोदरे। पञ्चब्रह्मभिरङ्गैश्चाप्येवं रुद्राक्षधारणम्।२२
ग्रथितान्मूलमन्त्रेण सर्वानक्षांस्तु धारयेत्। एकवक्त्रस्तु रुद्राक्षः परतत्त्वप्रकाशकः।२३
परतत्त्वधारणाच्च जायते तत्प्रकाशनम्। द्विवक्त्रस्तु मुनिश्रेष्ठ ए! अर्धनारीश्वरो भवेत्।२४

धारणादर्धनारीशः प्रीयते तस्य नित्यशः। त्रिवक्त्रस्त्वनलः साक्षात्स्त्रीहत्यां दहति क्षणात्।२५
त्रिमुखश्चैव रुद्राक्षोऽप्यग्नित्रयस्वरूपकः। तद्धारणाच्च हुतभुक् तस्य तुष्यति नित्यशः।२६
चतुर्मुखस्तु रुद्राक्षः पितामहस्वरूपकः। तद्धारणान्महाश्रीमान्महदारोग्यमुत्तमम्।२७
महती ज्ञानसम्पत्तिः शुद्धये धारयेन्नरः। पञ्चमुखस्तु रुद्राक्षः पञ्चब्रह्मस्वरूपकः।२८
तस्यधारणमात्रेण सन्तुष्यति महेश्वरः। षड्वक्त्रश्चैव रुद्राक्षः कार्त्तिकेयाधिदैवतः।२९
विनायकं चाऽपि देवं प्रवदन्ति मनीषिणः। सप्तवक्त्रस्तु रुद्राक्षः सप्तमात्राधिदैवतः।३०
सप्ताश्वदैवतश्चैव मुनिसप्तकदैवतः। तद्धारणान्महाश्रीः स्यान्महदारोग्यमुत्तमम्।३१
महती ज्ञानसम्पत्तिः शुचिर्वै धारयेन्नरः। अष्टवक्त्रस्तु रुद्राक्षोऽप्यष्टमात्राधिदैवतः।३२
वस्वष्टकप्रीतिकरो गङ्गाप्रीतिकरः शुभः। तद्धारणादिमे प्रीता भवेयुः सत्यवादिनः।३३
नववक्त्रस्तु रुद्राक्षो यमदेव उदाहृतः। तद्धारणाद्यमभयं न भवत्येव सर्वथा।३४
दशवक्त्रस्तु रुद्राक्षो दशाशादैवतः स्मृतः। दशाशाप्रीतिजनको धारणेनात्रसंशयः।३५
एकादशमुखस्त्वक्षो रुद्रैकादशदैवतः। तमिन्द्रदैवतञ्चाहुः सदा सौख्यविवर्धनम्।३६
रुद्राक्षो द्वादशमुखो महाविष्णुस्वरूपकः। द्वादशादित्यदैवश्चबिभर्त्येव हि तत्परः।३७
त्रयोदशमुखश्चाक्षः कामदः सिद्धिदः शुभः। तस्य धारणमात्रेण कामदेवः प्रसीदति।३८
चतुर्दशमुखश्चाऽक्षो रुद्रनेत्रसमुद्भवः। सर्वव्याधिहरश्चैव सर्वारोग्यप्रदायकः।३९
मद्यं मांसञ्च लशुनं पलाण्डुं शिग्रुमेव च। श्लेष्मातकं विड्वराहं भक्षणे वर्जयेत्ततः।४०
ग्रहणे विषुवे चैव सङ्क्रमे अयने तथा। दर्शेच पौर्णमासेचपुण्येषु दिवसेष्वपि।
रुद्राक्षधारणात्सद्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥४१॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादश साहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे रुद्राक्षमाहात्म्यवर्णनंनाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

* अष्टमोऽध्यायः *

भूतशुद्धिप्रकरणवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

भूतशुद्धिप्रकारञ्च कथयामि महामुने!। मूलाधारात्समुत्थाय कुण्डलीं परदेवताम्।१
सुषुम्नामार्गमाश्रित्यब्रह्मरन्ध्रगतांस्मरेत्। जीवं ब्रह्मणि संयोज्य हंसमन्त्रेणसाधकः।२
पादादिजानुपर्यन्तं चतुष्कोणं सवज्रकम्। लम्बीजाऽढ्यं स्वर्णवर्णंस्मरेदेवनिमण्डलम्।३
जान्वाद्यानाभि चन्द्रार्धनिभं पद्मद्वयाङ्कितम्। वम्बीजयुक्तं श्वेताभमम्भसो मण्डलं स्मरेत्।४
नाभेर्हृदयपर्यन्तंत्रिकोणंस्वस्तिकान्वितम्। रम्बीजेनयुतं रक्तं स्मरेत्पावकमण्डलम्।५
हृदो भ्रूमध्यपर्यन्तं वृत्तं षड्बिन्दुलाञ्छितम्। यं बीजयुक्तं धूम्राभं नभस्वन्मण्डले स्मरेत्।६
आब्रह्मरन्ध्रं भ्रूमध्याद्वृत्तंस्वच्छंमनोहरम्। हम्बीजयुक्तमाकाशमण्डलंचविचिन्तयेत्।७
एवंभूतानि सञ्चिन्त्य प्रत्येकंसम्विलापयेत्। भुवं जले जलं ब्रह्मवह्निं वायौनभस्यमुम्।८
विलाप्य खमहङ्कारे महत्तत्त्वेऽप्यहङ्कृतिम्। महान्तं प्रकृतौ मायामात्मनि प्रविलापयेत्।९
शुद्धसम्विन्मयोभूत्वाचिन्तयेत्पापपूरुषम्। वामकुक्षिस्थितंकृष्णमङ्गुष्ठपरिमाणकम्।१०
ब्रह्महत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकम्। मदिरापानहृदयंगुरुतल्पकटीयुतम् ।११
तत्संसर्गिपदद्वन्द्वमुपपातकमस्तकम् । खड्गचर्मधरं कृष्णमधोवक्त्रं सुदुःसहम्।१२
वायुबीजं स्मरन्वायुं सम्पूर्यैनं विशोषयेत्। स्वशरीरयुतं मन्त्री वह्निबीजेन निर्दहेत्।१३

कुम्भके परिजप्तेन ततः पापनरोद्भवम्।बहिर्भस्म समुत्सार्य वायुबीजेन रेचयेत्।१४
सुधाबीजेन देहोत्थं भस्म सम्प्लावयेत्सुधीः।भूबीजेन घनीकृत्य भस्मतत्कनकाण्डवत्।१५
विशुद्धमुकुराकारं जपबीजं विहाय सः।मूर्धादिपादपर्यन्तान्यङ्गानि रचयेत्सुधीः।१६
आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पादयेच्चितः।सोऽहं मन्त्रेणचात्मानमानयेद्धृदयाम्बुजे।१७
कुण्डलीजीवमादायपरसङ्गात्सुधामयम् ।संस्थाप्यहृदयाम्भोजेमूलाधारगतांस्मरेत्।१८

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः।
शूलं कोदण्डमिक्षूद्भवमगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या।
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥१९॥

एवंध्यात्वाप्राणशक्तिंपरमात्मस्वरूपिणीम् ।विभूतिधारणंकार्यंसर्वाधिकृतिसिद्धये ।२०
विभूतेर्विस्तरं वक्ष्ये धारणे चमहाफलम्।श्रुतिस्मृतिप्रमाणोक्तंभस्मधारणमुत्तमम्।२१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायामेकादशस्कन्धे नारायणनारदसम्वादेभूतशुद्धिप्रकरणवर्णनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ॥८॥

* नवमोऽध्यायः *

शिरोव्रतविधानवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

इदं शिरोव्रतं चीर्णं विधिवद्यैर्द्विजातिभिः।तेषामेव परां विद्यां वदेदज्ञानबाधिकाम्।१
विधिवच्छ्रद्धयासार्धं च चीर्णंयैः शिरोव्रतम्।श्रौतस्मार्तसमाचारस्तेषामनुपकारकः ।२
शिरोव्रतसमाचारा देवब्रह्मादिदेवताः।देवता अभवन्विद्वन्! खलु नाऽन्येन हेतुना।३
शिरोव्रतस्य माहात्म्यं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्।ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्चदेवताः सकलाअपि।४
सर्वपातकयुक्तोऽपि मुच्यते सर्वपातकैः।शिरोव्रतमिदं येन चरितं विधिवद् बुधः।५
शिरोव्रतमिदं नाम शिरस्याथर्वणश्रुतेः।यदुक्तं तद्धिनैवान्यत्तत्तु पुण्येन लभ्यते।६
शाखाभेदेषुनामानिव्रतस्याऽस्यविभेदतः।पठ्यन्तेमुनिशार्दूलशाखास्वेकव्रतंहितत्।७
सर्वशाखासु वस्त्वेकं शिवाख्यंसत्यचिद्घनम्।तथातद्विषयंज्ञानंतथैवचशिरोव्रतम् ।८
शिरोव्रतविहीनस्तु सर्वधर्मविवर्जितः।अपि सर्वासु विद्यासुसोऽधिकारीनसंशयः।९
शिरोव्रतमिदं कार्यं पापकान्तारदाहकम्।साधनं सर्वविद्यानां यतस्तत्सम्यगाचरेत्।१०
श्रुतिराथर्वणी सूक्ष्मा सूक्ष्मार्थस्य प्रकाशिनी।यदुवाच व्रतं प्रीत्या तन्नित्यं सम्यगाचरेत्।११
अग्निरित्यादिभिर्मन्त्रैः षड्भिः शुद्धेन भस्मना।सर्वाङ्गोद्धूलनं कुर्याच्छिरोव्रतसमाह्वयम्।१२
एतच्छिरोव्रतंकुर्यात्सन्ध्याकालेषुसादरम् ।यावद्विद्यादयस्तावत्तस्यविद्याखलूत्तमा ।१३
द्वादशाब्दमथाब्दं वा तदर्धं च तदर्धकम्।प्रकुर्याद् द्वादशाहं वा सङ्कल्पेनशिरोव्रतम्।१४
शिरोव्रतेन यः स्नातस्तं तुनोपदिशेत्तुयः।तस्यविद्याविनष्टास्याद्धान्निर्घृणः सगुरुः खलु।१५
ब्रह्मविद्यागुरुः साक्षान्मुनिः कारुणिकः खलु।यथासर्वेश्वरः श्रीमान्मृदुः कारुणिकः खलु।१६
जन्मान्तरसहस्रेषु नरा ये धर्मचारिणः।तेषामेव खलु श्रद्धा जायते न कदाचन।१७
प्रत्युताऽज्ञानबाहुल्याद् द्वेष एव विजायते।अतः प्रद्वेषयुक्तस्य न भवेदात्मवेदनम्।१८
ब्रह्मविद्योपदेशस्य साक्षादेवाधिकारिणः।स एव नेतरेविद्वन्ये तु स्नाताः शिरोव्रतैः।१९
व्रतं पाशुपतं चीर्णं येर्द्विजरादरेण तु।तेषामेवोपदेष्टव्यमिति वेदानुशासनम्।२०

यः पशुस्तत्पशुत्वं च व्रतेनानेनसन्त्यजेत्। तान्हत्वानसपापीयान्भवेद्वेदान्तनिश्चयः।२१
त्रिपुण्ड्रधारणं प्रोक्तं जाबालैरादरेण तु। त्रियम्बकेन मन्त्रेण सतारेण शिवेन च।२२
त्रिपुण्ड्रन्धारयेन्नित्यं गृहस्थाश्रममाश्रितः। ओङ्कारेण त्रिरुक्तेन सहंसेन त्रिपुण्ड्रकम्।२३
धारयेद्भिक्षुको नित्यमिति जाबालिकीश्रुतिः। त्रियम्बकेन मन्त्रेणप्रणवेनशिवेनच।२४
गृहस्थश्च वानप्रस्थो धारयेच्चत्रिपुण्ड्रकम्। मेधावात्यादिनावाऽपिब्रह्मचारीदिनेदिने।२५
भस्मनासजलेनाऽपिधारयेच्च त्रिपुण्ड्रकम्। ब्राह्मणोविधिनोत्पन्नस्त्रिपुण्ड्रंभस्मनैवतु।२६
ललाटे धारयेन्नित्यं तिर्यग्भस्मावगुण्ठनम्। "महादेवस्य सम्बन्धात्तद्धर्मेऽप्यस्ति सङ्गतिः"।
सम्यक् त्रिपुण्ड्रधर्मं च ब्राह्मणो नित्यमाचरेत्।।२७।।
आदिब्राह्मणभूतेन त्रिपुण्ड्रं भस्मना धृतम्। यतोऽत एवविप्रस्तुत्रिपुण्ड्रंधारयेत्सदा।२८
भस्मना वेदसिद्धेनत्रिपुण्ड्रंदेहगुण्ठनम्। रुद्रलिङ्गार्चनंवाऽपि मोहतोऽपिचन त्यजेत्।२९
त्रियम्बकेन मन्त्रेण सतारेण तथैव च। पञ्चाक्षरेण मन्त्रेण प्रणवेन तथैव च।३०
ललाटे हृदये चैव दोर्द्वन्द्वे च महामुने!। त्रिपुण्ड्रं धारयेन्नित्यं संन्यासाश्रममाश्रितः।३१
त्रियायुषेण मन्त्रेण मेधावीत्यादिनाऽथवा। गौणेनभस्मनाधार्यंत्रिपुण्ड्रंब्रह्मचारिणा।३२
नमोऽन्तेन शिवेनैव शुद्रः शुश्रूषणे रतः। उद्धूलनं त्रिपुण्ड्रं च नित्यं भक्त्या समाचरेत्।३३
अन्येषामपि सर्वेषां विनामन्त्रेण सुव्रत!। उद्धूलनंत्रिपुण्ड्रञ्च कर्तव्यं भक्तितोमुने।३४
भूत्यैवोद्धूलनं तिर्यक् त्रिपुण्ड्रस्य च धारणम्। वरेण्यं सर्वधर्मेभ्यस्तत्त्वान्नित्यं समाचरेत्।३५
भस्माऽग्निहोत्रजंवाऽथविरजाग्निसमुद्भवम्। आदरेणसमादाय शुद्धेपात्रेनिधायतत्।३६
प्रक्षाल्य पादौ हस्तौचद्विराचम्यसमाहितः। गृहीत्वाभस्मतत्पञ्चब्रह्ममन्त्रैः शनैः शनैः।३७
प्राणायामत्रयं कृत्वा अग्निरित्यादिमन्त्रितम्। तैरेवसप्तभिर्मन्त्रैस्त्रिवारमभिमन्त्रयेत्।३८
ओमापोज्योतिरित्युक्त्वा ध्यात्वा मन्त्रानुदीरयेत्। सितेन भस्मना पूर्वं समुद्धूल्य शरीरकम्।३९
विपापोविरजोमर्त्योजायतेनाऽत्रसंशयः। ततोध्यात्वामहाविष्णुंजगन्नाथंजलाधिपम्।४०
संयोज्य भस्मना तोयमग्निरित्यादिभिःपुनः। विमृज्य साम्बं ध्यात्वा च समुद्धूल्योर्ध्वमस्तकम्।४१
ते च भावनया ब्रह्मभूतेन सितभस्मना। ललाटवक्षः स्कन्धेषु स्वाश्रमोचितमन्त्रतः।४२
मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैरनुलोमविलोमतः। त्रिपुण्ड्रं धारयेन्नित्यं त्रिकालेष्वपिभक्तितः।४३

इती श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे सशिरोव्रतंत्रिपुण्ड्रधारणवर्णनंनाम नवमोऽध्यायः।।९।।

* दशमोऽध्यायः *

गौणभस्मविवरणम्

श्रीनारायण उवाच

आग्नेयं गौणमज्ञानध्वंसकंज्ञानसाधकम्। गौणं नानाविधं विद्धि ब्रह्मन्ब्रह्मविदाम्बर।१
अग्निहोत्राग्निजं तद्वद्विरजानलजं मुने!। औपासनसमुत्पन्नं समिदग्निसमुद्भवम्।२
पचनाग्निसमुत्पन्नं दावानलसमुद्भवम्। त्रैवर्णिकानां सर्वेषामग्निहोत्रसमुद्भवम्।३
विरजानलजञ्चैव धार्यं भस्ममहामुने। औपासनसमुत्पन्नं गृहस्थानां विशेषतः।४
समिदग्निसमुत्पन्नं धार्यम्वै ब्रह्मचारिणा। शूद्राणां श्रोत्रियागारपचनाग्निसमुद्भवम्।५
अन्येषामपिसर्वेषां धार्यंदावानलोद्भवम्। कालश्चित्रापौर्णमासी देशः स्वीयः परिग्रहः।६
क्षेत्ररामाद्यरण्यं वा प्रशस्तः शुभलक्षणः। तत्र पूर्वत्रयोदश्यां सुस्नातः सुकृताह्निकः।७

अनुज्ञाप्यस्वमाचार्यं सम्पूज्यप्रणिपत्य च। पूजांवैशेषिकींकृत्वा शुक्लाम्बरधरः स्वयम्।८
शुद्धयज्ञोपवीतीच शुक्लमाल्यानुलेपनः। दर्भासने समासीनो दर्भमुष्टिं प्रगृह्य च।९
प्राणायामत्रयं कृत्वा प्राङ्मुखो वाऽप्युदङ्मुखः। ध्यात्वा देवञ्च देवीं च तद्विज्ञापनवर्त्मना।१०
व्रतमेतत्करोमीति भवेत्सङ्कल्पदीक्षितः। यावच्छरीरपातम्वा द्वादशाब्दमथाऽपिवा।११
तदर्धम्वा तदर्धम्वा मासद्वादशकं तु वा। तदर्धम्वा तदर्धम्वा मासमेकमथापि वा।१२
दिनद्वादशकं वाऽपि दिनषट्कमथापिवा। तदर्धं दिनमेकं वा व्रतसङ्कल्पनावधि।१३
अग्निमाधाय विधिवद्विरजाहोमकारणात्। हुत्वाऽऽज्येन समिद्भिश्च चरुणा च यथाविधि।१४
पूताहात्पुरतो भूयस्तत्त्वानां शुद्धिमुद्दिशन्। जुहुयान्मूलमन्त्रेण तैरेव समिदादिभिः।१५
तत्त्वान्येतानि मे देहे शुध्यन्तामित्यनुस्मरन्। पश्चाद् भूतादितन्मात्राः पञ्चकर्मेन्द्रियाणि च।१६
ज्ञानकर्मविभेदेन पञ्चपञ्च विभागशः। त्वगादिधातवः सप्त पञ्च प्राणादिवायवः।१७
मनोबुद्धिरहङ्कारो गुणाः प्रकृतिपूरुषौ। रागो विद्या कला चैव नियतिः काल एव च।१८
मायाचशुद्धविद्याचमहेश्वरसदाशिवौ। शक्तिश्च शिवतत्त्वञ्च तत्त्वानिक्रमशोविदुः।१९
मन्त्रैस्तु विरजैर्हुत्वा होताऽसौ विरजो भवेत्। अथ गोमयमादाय पिण्डीकृत्याऽभिमन्त्र्य च।२०
न्यस्याऽग्नौ तं च संरक्ष्य दिने तस्मिन्हविष्यभुक्। प्रभाते च चतुर्दश्यां कृत्वा सर्वम्पुरोदितम्।२१
तस्मिन्दिने निराहारः कालशेषंसमापयेत्। प्रातः पर्वणिचाप्येवं कृत्वा होमावसानतः।२२
उपसंहृत्य रुद्राग्निं गृहीत्वा भस्म यत्नतः। ततश्च जटिलोमुण्डः शिखैकजटएव च।२३
भूत्वा स्नात्वापुनर्वीतलज्जश्चेत्स्याद्दिगम्बरः। अन्यः काषायवसनश्चर्मचीराम्बरोऽथवा।२४
एकाम्बरो वल्कलवान्भवेद्दण्डी च मेखली। प्रक्षाल्य चरणौ पश्चाद् द्विराचम्याऽऽत्मनस्तनुम्।२५
सङ्कलीकृत्य तद्भस्म विरजानलसम्भवम्। अग्निरित्यादिभिर्मन्त्रैः षड्भिराथर्वणैः क्रमात्।२६
विमृज्याऽङ्गानिमूर्धादिचरणान्तंचतैः स्पृशेत्। ततस्तेनक्रमेणैवसमुद्धूल्यचभस्मना।२७
सर्वाङ्गोद्धूलनं कुर्यात्प्रणवेन शिवेन वा। ततश्च पुण्ड्रं रचयेत्त्रियायुषसमाह्वयम्।२८
शिवभावं समागम्य शिवभावमथाचरेत्। कुर्यात्त्रिसन्ध्यमप्येवमेतत्पाशुपतं व्रतम्।२९
भुक्तिमुक्तिप्रदञ्चैव पशुत्वं विनिवर्तयेत्। तत्पशुत्वं परित्यज्य कृत्वा पाशुपतं व्रतम्।३०
पूजनीयो महादेवो लिङ्गमूर्तिः सदाशिवः। भस्मस्नानं महापुण्यंसर्वसौख्यकरंपरम्।३१
आयुष्यं बलमारोग्यं श्रीपुष्टिवर्धनं यतः। रक्षार्थं मङ्गलार्थञ्च सर्वसम्पत्समृद्धये।३२
भस्मस्निग्धमनुष्याणांमहामारीभयंनच। शान्तिकंपौष्टिकंभस्मकामदञ्चत्रिधाभवेत्।३३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे भस्ममहत्त्वेपाशुपतव्रतवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥

* एकादशोऽध्यायः *

त्रिविधभस्ममाहात्म्यवर्णनम्

नारद उवाच

त्रिविधत्वं कथञ्चास्य भस्मनः परिकीर्तितम्। एतत्कथय मे देवमहत्कौतूहलंमम।१

श्रीनारायण उवाच

त्रिविधत्वं प्रवक्ष्यामि देवर्षे! भस्मनःशृणु। महापापक्षयकरं महाकीर्तिकरं परम्।२
गोमयंयोनिसम्बद्धंवद्धस्तेनैव गृह्यते। ब्राह्मैर्मन्त्रैस्तुसन्दग्धंतच्छान्तिकृदिहोच्यते।३
सावधानस्तु गृह्णीयान्नरो वै गोमयन्तु यत्। अन्तरिक्षे गृहीत्वा तत्षडङ्गेन दहेदतः।४

पौष्टिकं तत्समाख्यातं कामदञ्च ततः शृणु। प्रसादेनदहेदेतत्कामदं भस्म कीर्तितम्।५
प्रातरुत्थाय देवर्षे भस्मव्रतपरः शुचिः। गवां गोष्ठेषु गत्वा तु नमस्कृत्वातुगोकुलम्।६
गवांवर्णानुरूपाणांगृह्णीयाद्गोमयंशुभम्। ब्राह्मणस्यचगौः श्वेतारक्तागौः क्षत्रियस्यच।७
पीतवर्णा तु वैश्यस्य कृष्णा शुद्रस्य कथ्यते। पौर्णमास्याममावास्यामष्टम्यां वा विशुद्धधीः।८
प्रासादेन तु मन्त्रेणगृहीत्वागोमयंशुभम्। हृदयेन तु मन्त्रेण पिण्डीकृत्यतुगोमयम्।६
रविरश्मिसुसन्तप्तं शुचौदेशे मनोहरे। तुषेणवा वुसैर्वापि प्रासादेन तु निक्षिपेत्।१०
अरण्युद्भवमग्निं वा श्रोत्रियागारजं तु वा। तदग्नौ विन्यसेत्तञ्च शिवबीजेन मन्त्रतः।११
गृह्णीयादथ तत्राऽग्निकुण्डाद्भस्मविचक्षणः। नवपात्रंसमादाय प्रासादेन तु निक्षिपेत्।१२
केतकी पाटली तद्वदुशीरं चन्दनं तथा। नानासुगन्धिद्रव्याणि काश्मीरप्रभृतीनिच।१३
निक्षिपेत्तत्र पात्रे तु सद्यो मन्त्रेणशुद्धधीः। जलस्नानम्पुराकृत्वा भस्मस्नानमतः परम्।१४
जलस्नाने त्वशक्तश्चभस्मस्नानंसमाचरेत्। प्रक्षाल्यपादौहस्तौ च शिरश्चेशानमन्त्रतः।१५
समुद्धूल्य ततः पश्चादाननं तत्पुरुषेण तु। अघोरेण तु हृदयं नाभिं वामेन तत्परम्।१६
सद्योमन्त्रेण सर्वाङ्गं समुद्धूल्य विचक्षणः। पूर्ववस्त्रम्परित्यज्य शुद्धवस्त्रं परिग्रहेत्।१७
प्रक्षाल्यपादौहस्तौचपश्चादाचमनंचरेत्। भस्मनोद्धूलनाभावे त्रिपुण्ड्रंतुविधीयते।१८
मध्याह्नात्प्राग्जलैर्युक्तंपरतोजलवर्जितम्। तर्जन्यनामिकामध्यैस्त्रिपुण्ड्रञ्चसमाचरेत्।१६
मूर्ध्नि चैव ललाटेचकर्णे कण्ठे तथैव च। हृदये चैव ब्राह्वोश्च न्यासस्थानंहिचोच्यते।२०
पञ्चाङ्गुलैर्न्यसेन्मूर्ध्नि प्रासादेन तु मन्त्रतः। त्र्यङ्गुलैर्विन्यसेद्भाले शिरोमन्त्रेण देशिकः।२१
सद्येन दक्षिणे कर्णे वामदेवेन वामतः। अघोरेणतु कण्ठेच मध्याङ्गुल्या स्पृशेद्बुधः।२२
हृदयं हृदयेनैव त्रिभिरङ्गुलिभिः स्पृशेत्। विन्यसेद्दक्षिणेबाहौशिखामन्त्रेणदेशिकः।२३
वामबाहौ न्यसेद्धीमान्कवचेनत्रियङ्गुलैः। मध्येन संस्पृशेन्नाभ्यामीशान इति मन्त्रतः।२४
ब्रह्मविष्णुमहेशानास्तिस्रोरेखाइतिस्मृताः। आद्योब्रह्माततोविष्णुस्तदूर्ध्वन्तु महेश्वरः।२५
एकाङ्गुलेन न्यस्तं यदीश्वरस्तत्रदेवता। शिरो मध्ये त्वयं ब्रह्मा ईश्वरस्तु ललाटके।२६
कर्णयोरश्विनौ देवौ गणेशस्तुगले तथा। क्षत्रियश्चतथा वैश्यः शूद्रश्चोद्धूलनंत्यजेत्।२७
सर्वेषामन्त्यजातीनां मन्त्रेण रहितम्भवेत्। "अदीक्षितं मनुष्याणामपि मन्त्रं विना भवेत्"।२८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे त्रिविधभस्ममाहात्म्यवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ।।११।।

* द्वादशोऽध्यायः *

भस्ममाहात्म्यवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

देवर्षे शृणु तत्सर्वं भस्मोद्धूलनजं फलम्। सरहस्यविधानञ्च सर्वकामफलप्रदम्।१
कपिलायाः शकृत्स्वच्छंगृहीत्वागगनेऽपतत्। नक्लिन्नंनापिकठिनंनदुर्गन्धंनचोषितम्।२
उपर्यधः परित्यज्य गृह्णीयात्पतितं यदि। पिण्डीकृत्य शिवाग्न्यादौ तत्क्षिपेन्मूलमन्त्रितम्।३
आदाय वाससाऽऽच्छाद्य भस्माऽधाने विनिक्षिपेत्। सुकृते सुदृढे शुद्धे क्षालिते प्रोक्षिते शुभे।४
विन्यस्य मन्त्री मन्त्रेण पात्रे भस्म विनिक्षिपेत्। तैजसं दारवं चाऽथ मृण्मयं चैलमेव च।५
अन्यद्वा शोभनंशुद्धंभस्माधारंप्रकल्पयेत्। क्षौमे चैवाऽतिशुद्धेवाधनवद्भस्मनिक्षिपेत्।६
प्रस्थितोभस्मगृह्णीयात्स्वयंचानुचरोऽपिवा। नचायुक्तकरेदद्यान्नचाशुचितलेक्षिपेत्।७

न संस्पृशेत्तुनीचाङ्गैर्नक्षिपेन्नच लङ्घयेत्। तस्माद्भसितमादाय विनियुञ्जीतमन्त्रितम्।८
विभूतिधारणविधिः स्मृतिप्रोक्तोमयेरितः। यदीयाचरणेनैव शिवतुल्यो न संशयः।९
शैवैः सम्पादितंभस्मवैदिकैः शिवसन्निधौ। भक्त्यापरमयाग्राह्यंप्रार्थयित्वातु पूजयेत्।१०
तन्त्रोक्तवर्त्मना सिद्धं भस्मतान्त्रिकपूर्वकैः। यत्रकुत्रापिदत्तं चेत्तद्ग्राह्यंनैव वैदिकैः।११
शूद्रैः कापालिकैर्वाऽथपाखण्डैरपरैस्तु तत्। त्रिपुण्ड्रंधारयेद्भक्त्यामनसाऽपिनलङ्घयेत्।१२
श्रुत्या विधीयते यस्मात्तत्त्यागी पतितो भवेत्। त्रिपुण्ड्रधारणम्भक्त्या तथा देहावगुण्ठनम्।१३
द्विजः कुर्याद्धिमन्त्रेणतत्त्यागीपतितो भवेत्। उद्धूलनंत्रिपुण्ड्रञ्चभक्त्यानैवाचरन्तियेे।१४
तेषांनास्तिविनिर्मोक्षः संसाराज्जन्मकोटिभिः। येनभस्मोक्तमार्गेणधृतंन मुनिपुङ्गव!।१५
तस्यविद्धिमुनेजन्मनिष्फलंसौकरंयथा। येषाम्वपुर्मनुष्याणांत्रिपुण्ड्रेणविनास्थितम्।१६
श्मशानसदृशं तत्स्यान्नप्रेक्ष्यंपुण्यकृज्जनैः। धिग्भस्मरहितंभालंधिग्ग्राममशिवालयम्।१७
धिगनीशार्चनं जन्म धिग्विद्यामशिवाश्रयम्। त्रिपुण्ड्रंयेविनिन्दन्ति निन्दन्ति शिवमेव ते।१८
धारयन्ति च ते भक्त्या धारयन्तितमेव ते। यथाकृशानुरहितो भूधरो न विराजते।१९
अशेषसाधनेऽप्येव भस्महीनं शिवार्चनम्। उद्धूलनं त्रिपुण्ड्रञ्च श्रद्धया नाचरन्तिये।२०
तैः पूर्वाचरितं सर्वं विपरीतम्भवेदपि। भस्मना वेदमन्त्रेण त्रिपुण्ड्रस्यच धारणम्।२१
विना वेदोचिताचारंस्मार्तस्याऽनर्थकारणम्। कृतंस्यादकृतंतेन श्रुतमप्यश्रुतम्भवेत्।२२
अधीतमनधीतञ्च त्रिपुण्ड्रं योनधारयेत्। वृथा वेदा वृथा यज्ञा वृथा दानं वृथा तपः।२३
वृथाव्रतोपवासेनत्रिपुण्ड्रंयोनधारयेत्। भस्मधारणकंत्यक्त्वामुक्तिमिच्छतियः पुमान्।२४
विषपानेननित्यत्वंकुरुतेह्यात्मतनोहिसः। स्रष्टासृष्टिच्छलेनाहत्रिपुण्ड्रस्यचधारणम्।२५
ससर्जसललाटंहितिर्यगूर्ध्वं न वर्तुलम्। तिर्यग्रेखाः प्रदृश्यन्ते ललाटे सर्वदेहिनाम्।२६
तथापिमानवामूर्खा न कुर्वन्तित्रिपुण्ड्रकम्। न तद्ध्यातंन तन्मोक्षंतज्ज्ञानंन तत्तपः।२७
विनातिर्यक्त्रिपुण्ड्रञ्चविप्रेणयदनुष्ठितम्। वेदस्याऽध्ययनेशूद्रोनाधिकारीयथाभवेत्।२८
त्रिपुण्ड्रेण विना विप्रो नाधिकारी शिवार्चने। प्राङ्मुखश्चरणौ हस्तौ प्रक्षाल्याऽऽचम्य पूर्ववत्।२९
प्राणानायम्य सङ्कल्प्यभस्मस्नानं समाचरेत्। आदायभसितं शुद्धमग्निहोत्रसमुद्भवम्।३०
ईशानेन तु मन्त्रेण स्वमूर्धनि विनिक्षिपेत्। तत आदाय तद्भस्म मुखे च पुरुषेण तु।३१
अघोराख्येण हृदये गुह्ये वामाह्वये न च। सद्योजाताभिधानेन भस्मपादद्वये क्षिपेत्।३२
सर्वाङ्गं प्रणवेनैव मन्त्रेणोद्धूलनं ततः। एतदाग्नेयकं स्नानमुदितं परमर्षिभिः।३३
सर्वकर्मसमुद्ध्यर्थं कुर्यादादाविदं बुधः। ततः प्रक्षाल्यहस्तादीनुपस्पृश्ययथाविधि।३४
तिर्यक् त्रिपुण्ड्रं विधिनाललाटे हृदयेगले। पञ्चभिर्ब्रह्मभिर्वाऽपि कृतेनभसितेन च।३५
धृतमेतत्त्रिपुण्ड्रं स्यात्सर्वकर्मसु पावनम्। शूद्रैरन्त्यजहस्तस्थं न धार्यं भस्म च क्वचित्।३६
भस्मना साऽग्निहोत्रेण लिप्तः कर्म समाचरेत्। अन्यथा सर्वकर्माणि न फलन्ति कदाचन।३७
सत्यं शौचं जपोहोमस्तीर्थदेवादिपूजनम्। तस्यव्यर्थमिदं सर्वं यस्त्रिण्ड्रंनधारयेत्।३८
त्रिपुण्ड्रधृग्विप्रवरोयोरुद्राक्षधरः शुचिः। स हन्ति रोगदुरितव्याधिदुर्भिक्षतस्करान्।३९
समाप्नोतिपरम्ब्रह्म यतोनावर्तते पुनः। स पङ्क्तिपावनः श्राद्धे पूज्यो विप्रैः सुरैरपि।४०
श्राद्धे यज्ञे जपे होमे वैश्वदेवे सुरार्चने। धृतत्रिपुण्ड्रः पूतात्मा मृत्युञ्जयति मानवः।४१
भस्मधारणमाहात्म्यं भूयोऽपि कथयामि ते।।४२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे भस्मधारणमाहात्म्यवर्णनंनाम द्वादशोऽध्यायः।।१२।।

* त्रयोदशोऽध्यायः *

त्रिपुण्ड्रभस्मधारणमाहात्म्यवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

महापातकसङ्घाश्च पातकान्यपराण्यपि। नश्यन्ति मुनिशार्दूलसत्यं सत्यंनचान्यथा।१
एकं भस्म धृतं येन तस्य पुण्यफलंशृणु। यतीनांज्ञानदं प्रोक्तं वनस्थानां विरक्तिदम्।२
गृहस्थानां मुने तद्वद्धर्मवृद्धिकरं तथा। ब्रह्मचर्याश्रमस्थानां स्वाध्यायप्रदमेव च।३
शूद्राणांपुण्यदंनित्यमन्येषांपापनाशनम् । भस्मनोद्धूलनञ्चैवतथातिर्यकत्रिपुण्ड्रकम्।४
रक्षार्थं सर्वभूतानांविधत्तेवैदिकीश्रुतिः। भस्मनोद्धूलनंचैवतथातिर्यक्त्रिपुण्ड्रकम्।५
यज्ञत्वेनैव सर्वेषांविधत्ते वैदिकीश्रुतिः। भस्मनोद्धूलनंचैवतथातिर्यक्त्रिपुण्ड्रकम्।६
सर्वधर्मतयातेषांविधत्तेवैदिकीश्रुतिः । भस्मनोद्धूलनंचैव तथा तिर्यक्त्रिपुण्ड्रकम्।७
माहेश्वराणां लिङ्गार्थं विधत्ते वैदिकी श्रुतिः। भस्मनोद्धूलनञ्चैव तथा तिर्यक्त्रिपुण्ड्रकम्।८
विज्ञानार्थञ्च सर्वेषां विधत्ते वैदिकी श्रुतिः। शिवेनविष्णुनाचैवब्राह्मणावज्रिणातथा ।९
हिरण्यगर्भेण तदवतारैर्वरुणादिभिः। देवताभिर्धृतं भस्म त्रिपुण्ड्रोद्द्धूलनात्मकम्।१०

उमादेव्या च लक्ष्म्या च वाचा चाऽन्याभिरास्तिकैः ।
सर्वस्त्रीभिर्धृतं भस्म त्रिपुण्ड्रोद्धूलनात्मना ।।११।।

यक्षराक्षसगन्धर्वसिद्धविद्याधरादिभिः । मुनिभिश्चधृतंभस्मत्रिपुण्ड्रोद्धूलनात्मना।१२
ब्राह्मणैः क्षत्त्रियैर्वैश्यैः शूद्रैरपिच सङ्करैः। अपभ्रंशैर्धृतं भस्मत्रिपुण्ड्रोद्धूलनात्मना।१३
उद्धूलनं त्रिपुण्ड्रञ्च यैः समाचरितं मुदा। त एव शिष्टा विद्वांसो नेतरेमुनिपुङ्गव!।१४
शिवलिङ्गंमणिः सङ्ख्यंमन्त्रः पञ्चाक्षरस्तथा। विभूतिरौषधंपुंसांमुक्तिस्त्रीवश्यकर्मणि ।१५
भुनक्ति यत्र भस्माङ्गो मूर्खो वा पण्डितोऽपि वा। तत्र भुङ्क्ते महादेवः सपत्नीको वृषध्वजः।१६
भस्मसञ्छन्नसर्वाङ्गमनुगच्छति यः पुमान्। सर्वपातकयुक्तोऽपि पूजितो (पूज्यते) मानवोऽचिरात्।१७
भस्मसञ्छन्न सर्वाङ्गं यः स्तौति श्रद्धया सह। सर्वपातक युक्तोऽपि पूज्यते मानवोऽचिरात्।१८
त्रिपुण्ड्रधारिणे भिक्षाप्रदानेन हि केवलम्। तेनाऽधीतं श्रुतं तेन तेन सर्वमनुष्ठितम्।१९
येन विप्रेण शिरसित्रिपुण्ड्रं भस्मना कृतम्। कीकटेष्वपिदेशेषु यत्र भूतिविभूषणः।२०
मानवस्तुवसेन्नित्यंकाशीक्षेत्रसमंहितत् । दुःशीलः शीलयुक्तोवायोगयुक्तोऽप्यलक्षणः।२१
भूतिशासनयुक्तो वा सपूज्यो मम पुत्रवत्। छद्मनापि चरेद्यो हिभूतिशासनमैश्वरम्।२२
सोऽपि यां गतिमाप्नोति न तांयज्ञशतैरपि। सम्पर्काल्लीलयावापिभयाद्वाधारयेत्तुयः।२३
विधियुक्तो विभूतिं तु स च पूज्यो यथा ह्यहम्। शिवस्य विष्णोर्देवानां ब्रह्मणस्तृप्तिकारणम्।२४
पार्वत्याश्च महालक्ष्म्या भारत्यास्तृप्तिकारणम्। नदानेन नयज्ञेन नतपोभिः सुदुर्लभैः।२५
नतीर्थयात्रया पुण्यं त्रिपुण्ड्रेण च लभ्यते। दानं यज्ञाश्च धर्माश्चतीर्थयात्राश्च नारद!।२६
ध्यानंतपस्त्रिपुण्ड्रस्यकलांनार्हन्तिषोडशीम् । यथाराजास्वचिह्नाङ्कंस्वजनंमन्यतेसदा ।२७
तथा शिवस्त्रिपुण्ड्राङ्कं स्वकीयमिव मन्यते। द्विजातिर्वाऽन्यजातिर्वा शुद्धचित्तेन भस्मना।२८
धारयेद्यस्त्रिपुण्ड्राङ्कं रुद्रस्तेन वशीकृतः। त्यक्तसर्वाश्रमाचारो लुप्तसर्वक्रियोऽपिसः।२९
सकृत्तिर्यक्त्रिपुण्ड्राङ्कं धारयेत्सोऽपिमुच्यते। नास्य ज्ञानं परीक्षेतन कुलंनव्रतंतथा।३०
त्रिपुण्ड्राङ्कितभालेनपूज्यएवहि नारद!। शिवमन्त्रात्परोमन्त्रोनास्तितुल्यंशिवात्परम्।३१
शिवार्चनात्परं पुण्यं नहि तीर्थञ्च भस्मना। रुद्राग्नेर्यत्परं वीर्यंतद्भस्म परिकीर्तितम्।३२

ध्वंसनं सर्वदुःखानां सर्वपापविशोधनम्। अन्त्यजो वाऽधमो वापि मूर्खो वा पण्डितोऽपि वा। ३३
यस्मिन्देशे वसेन्नित्यं भूतिशासनसंयुतः। तस्मिन्सदाशिवः सोमः सर्वभूतगणैर्वृतः।
सर्वतीर्थैश्चसंयुक्तः सान्निध्यं कुरुते सदा।।३४।।
एतानि पञ्चशिवमन्त्रपवित्रितानि भस्मानिकामदहनाङ्गविभूषितानि।
त्रैपुण्ड्रकाणि रचितानि ललाटपट्टे लुम्पन्ति दैवलिखितानि दुरक्षराणि।।३५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्त्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे त्रिपुण्ड्रभस्मधारणमाहात्म्यवर्णनंनामत्रयोदशोऽध्यायः।।१३।।

* चतुर्दशोऽध्यायः *

विभूतिधारणमाहात्म्यवर्णनम्

नारायण उवाच

भस्मदिग्धशरीराय यो ददातिधनं मुदा। तस्य सर्वाणिपापानिविनश्यन्तिनसंशयः। १
श्रुतयः स्मृतयः सर्वाः पुराणान्यखिलान्यपि। वदन्ति भूतिमाहात्म्यं तत्तस्माद्धारयेद्द्विजः। २
सितेन भस्मनाकुर्यात्त्रिसन्ध्यंयस्त्रिपुण्ड्रकम्। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकेमहीयते। ३
योगीसर्वाङ्गकं स्नानमापादतलमस्तकम्। त्रिसन्ध्यमाचरेन्नित्यमाशु योगमवाप्नुयात्। ४
भस्मस्नानेन पुरुषः कुलस्योद्धारकोभवेत्। भस्मस्नानंजलस्नानादसंख्येयगुणान्वितम्। ५
सर्वतीर्थेषुयत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम्। तत्फलं लभते सर्वं भस्मस्नानान्न संशयः। ६
महापातकयुक्तो वा युक्तो वाऽप्युपपातकः। भस्मस्नानेनतत्सर्वं दहत्यग्निरिवेन्धनम्। ७
भस्मस्नानात्परं स्नानंपवित्रंनैवविद्यते। एवमुक्तं शिवेनादौ तदा स्नातः स्वयंशिवः। ८
तदा प्रभृति ब्रह्माद्यामुनयश्च शिवार्थिनः। सर्वकर्मसु यत्नेनभस्मस्नानं प्रचक्रिरे। ६
तस्मादेतच्छिरस्नानमाग्नेयं यः समाचरेत्। अनेनैव शरीरेणस हिरुद्रो न संशयः।१०
येभस्मधारिणं दृष्ट्वापरितृप्ता भवन्ति ते। देवासुरमुनीन्द्रैश्च पूज्या नित्यं न संशयः।११
भस्मसञ्च्छन्नसर्वाङ्गंदृष्ट्वोत्तिष्ठतियः पुमान्। तं दृष्ट्वादेवराजोऽपिदण्डवत्प्रणमिष्यति।१२
अभक्ष्यभक्षणं येषां भस्मधारणपूर्वकम्। तेषां तद्भक्ष्यमेव स्यान्मुने! नाऽत्रविचारणा।१३
यः स्नाति भस्मना नित्यं जले स्नात्वा ततः परम्।
ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थोऽथवाऽऽदरात्।।१४।।
सर्वपापविनिर्मुक्तः सयातिपरमांगतिम्। आग्नेयं भस्मनास्नानं यतीनाञ्चविशिष्यते।१५
आर्द्रस्नानाद्वरंभस्मस्नानमार्द्रवधोध्रुवः। आर्द्रंतु प्रकृतिंविद्यात्प्रकृतिंबन्धनं विदुः।१६
प्रकृतेस्तु प्रहाणाय भस्मनास्नानमिष्यते। भस्मना सदृशंब्रह्मन्नास्तिलोकत्रयेष्वपि।१७
रक्षार्थं मङ्गलार्थं च पवित्रार्थंपुरा सुरैः। भस्मदृष्ट्वा मुने पूर्वं दत्तं देव्यै प्रियेण तु।१८
तस्मादेतच्छिरः स्नानमाग्नेयं यः समाचरेत्। भवपाशैर्विनिर्मुक्तः शिवलोकेमहीयते।१६
ज्वररक्षः पिशाचाश्च पूतनाकुष्ठगुल्मकाः। भगन्दराणिसर्वाणिचाशीतिर्वातरोगकाः।२०
चतुः षष्टिः पित्तरोगाः श्लेष्माः सप्तत्रिपञ्चकाः।
व्याघ्रचौरभयंचैवाप्यन्येदुष्टग्रहाअपि ।।२१।।
भस्मस्नानेन नश्यन्ति सिंहेनेव यथा गजाः। शुद्धशीतजलेनैवभस्मनाचत्रिपुण्ड्रकम् ।२२
यो धारयेत्परंब्रह्मसप्राप्नोतिनसंशयः। "भस्मना च त्रिपुण्ड्रञ्चयः कोऽपिधारयेत्परम्
स ब्रह्मलोकमाप्नोतिमुक्तपापो न संशयः।" यथाविधिललाटेवै वह्निवीर्यप्रधारणात्।२३

नाशयेल्लिखितां यामीं ललाटस्थां लिपिं ध्रुवम्। कण्ठोपरिकृतं पापं नाशयेत्तत्रधारणात्। २४
कण्ठे च धारणात्कण्ठभोगादिकृतपातकम्। बाह्वोर्बाहुकृतं पापं वक्षसा मनसाकृतम्। २५
नाभ्यां शिश्नकृतं पापं गुदेगुदकृतंहरेत्। पार्श्वयोर्धारणाद्ब्रह्मन्परस्त्र्यालिङ्गनादिकम्। २६
तद्भस्मधारणं शस्तं सर्वत्रैव त्रिलिङ्गकम्। ब्रह्मविष्णुमहेशानां त्र्यग्नीनांचधारणम्। २७
गुणलोकत्रयाणां च धारणंतेनवैकृतम्। भस्मच्छन्नोद्विजोविद्वान्महापातकसम्भवैः। २८
दोषैर्वियुज्यते सद्यो मुच्यते चनसंशयः। भस्मनिष्ठस्यदह्यन्तेदोषाभस्माग्निसङ्गमात्। २९
भस्मस्नानविशुद्धात्मा आत्मनिष्ठ इति स्मृतः। भस्मना दिग्धसर्वाङ्गो भस्मदीप्तत्रिपुण्ड्रकः। ३०
भस्मशायी च पुरुषो भस्मनिष्ठ इतिस्मृतः। भूतप्रेतपिशाचाद्यारोगाश्चातीवदुःसहाः। ३१
भस्मनिष्ठस्यसान्निध्याद्विद्रवन्तिनसंशय। भासनाद्भसितंप्रोक्तंभस्मकल्मषभक्षणात्। ३२
भूतिर्भूतिकरी पुंसां रक्षा रक्षाकरी पुरा। त्रिपुण्ड्रधारणं दृष्ट्वा भूतप्रेतपुरः सराः। ३३
भीताः प्रकम्पिताः शीघ्रं नश्यन्त्येव न संशयः। स्मरणादेवरुद्रस्ययथापापंप्रणश्यति। ३४
अप्यकार्य सहस्राणि कृत्वा यः स्नाति भस्मना। तत्सर्वं दहते भस्म यथाऽग्निस्तेजसा वनम्। ३५
कृत्वाऽपि चाऽतुलं पापं मृत्युकालेऽपियो द्विजः। भस्मस्नायी भवेत्कश्चित्क्षिप्रं पापैः प्रमुच्यते। ३६
भस्मस्नानाद्विशुद्धात्माजितक्रोधोजितेन्द्रियः। मत्समीपंसमागम्यनसभूयोऽभिवर्तते। ३७
वनस्पतिगते सोमे भस्मोद्धूलितविग्रहः। अर्चितं शङ्करं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। ३८
आयुष्कामोऽथवा विद्वान्भूतिकामोऽथवा नरः। नित्यं वै धारयेद् भस्म मोक्षकामी च वै द्विजः। ३९
त्रिपुण्ड्रं परमं पुण्यं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम्। येघोराराक्षसाः प्रेतायेचान्येक्षुद्रजन्तवः। ४०
त्रिपुण्ड्रधारणं दृष्ट्वा पलायन्ते न संशयः। कृत्वा शौचादिकं कर्मस्नात्वातुविमलेजले। ४१
भस्मनोद्धूलनं कार्यमापादलमस्तकम्। केवलं वारुणं स्नानं देहे बाह्यमलापहम्। ४२
विभूतिस्नानमनघंबाह्यान्तरमलापहम्। त्यक्त्वाऽपिवारुणंस्नानंतत्परः स्यान्नसंशयः। ४३
कृतमप्यकृतं सत्यं भस्मस्नानंविना मुने!। भस्मस्नानंश्रुतिप्रोक्तमाग्नेयंस्नानमुच्यते। ४४
अन्तर्बहिश्च संशुद्धं शिवपूजाफलं लभेत्। यद्बाह्यमलमात्रस्य नाशकंस्नानमस्तितत्। ४५
तन्नाशयति तीव्रेण प्राणिबाह्यान्तरं मलम्। कृत्वाऽपि कोटिशो नित्यं वारुणं स्नानमादरात्। ४६
न भवत्येव पूतात्मा भस्मस्नानंविनामुने!। यद्भस्मस्नानमाहात्म्यंतद्वेदोवेदतत्त्वतः। ४७
यद्वा वेद महादेवः सर्वदेवशिखामणिः। भस्मस्नानमकृत्वैव यः कुर्यात्कर्म वैदिकम्। ४८
सतत्कर्मकलार्धार्ध मपिनाप्नोतिवस्तुतः। यः करिष्यतियत्नेनभस्मस्नानंयथाविधि। ४९
स एवैकः सर्वकर्मस्वधिकारी श्रुतिश्रुतः। पावनं पावनानां चभस्मस्नानंश्रुतिश्रुतम्। ५०
न करिष्यतियोमोहात्समहापातकीभवेत्। अनन्तैर्वारुणैः स्नानैर्यत्पुण्यंप्राप्यतेद्विजः। ५१
ततोऽनन्तगुणं पुण्यं भस्मस्नानादवाप्यते। कालत्रयेऽपि कर्तव्यंभस्मस्नानंप्रयत्नतः। ५२
भस्मस्नानंस्मृतंश्रौतंतत्त्यागीपतितोभवेत्। मूत्राद्युत्सर्जनान्तेतुभस्मस्नानंप्रयत्नतः। ५३
कर्तव्यमन्यथा पूता न भविष्यन्ति मानवाः। विधिवत्कृतशौचोऽपि भस्मस्नानं विना द्विजः। ५४
न भविष्यतिपूतात्मानाधिकार्येऽपि कर्मणि। अपानवायुनिर्यातिजृम्भणेस्कन्दनेक्षुते। ५५
श्लेष्मोद्गारेऽपि कर्तव्यं भस्मस्नानं प्रयत्नतः। श्रीभस्मस्नानमाहात्म्यस्यैकदेशोऽत्र वर्णितः। ५६
पुनश्च सम्प्रवक्ष्यामि भस्मस्नानोत्थितंफलम्। सावधानेनमनसाश्रोतव्यंमुनिपुङ्गव! ५७

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे विभूतिधारणमाहात्म्यवर्णनंनाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

* पञ्चदशोऽध्यायः *

त्रिपुण्डोर्ध्वपुण्ड्रधारणविधिवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अग्निरित्यादिभिर्मन्त्रैर्भस्मसंशोध्यसादरम् ।धारणीयंललाटादौत्रिपुण्ड्रंकेवलंद्विजैः ।१
ब्रह्मक्षत्रियवैश्याश्चएतेसर्वेद्विजाः स्मृताः।तस्माद्द्विजैः प्रयत्नेनत्रिपुण्ड्रंधार्यमन्वहम्।२
यस्योपनयनं ब्रह्मन् सएवद्विजउच्यते।तस्माच्छ्रौतंद्विजैः कार्यंत्रिपुण्ड्रस्यचधारणम्।३
विभूतिधारणं त्यक्त्वा यः सत्कर्मसमाचरेत्।तत्कृतं चाऽकृतप्रायं भवत्येवनसंशयः।४
न गायत्र्युपदेशोऽपि भस्मनो धारणं विना।ततो धृत्वैवभस्माङ्गेगायत्रीजपमाचरेत्।५
गायत्रीं मूलमेवाहुर्ब्राह्मण्ये मुनिपुङ्गवः।सा भस्मधारणाभावे न केनाप्युपदिश्यते।६
न तावदधिकारोऽस्ति गायत्रीग्रहणेमुने!।यावन्न भस्मभालादौधृतमग्निसमुद्भवम्।७
भस्महीनललाटत्वं न ब्राह्मण्यानुमापकम्।एवमेव मया ब्रह्मन्हेतुरुक्तः सुपुण्यदः।८
मन्त्रपूतं सितं भस्म ललाटे परिवर्तते।स एव ब्राह्मणो विद्वान्सत्यंसत्यंमयोच्यते।९
यस्यास्तिसहजाप्रीतिर्मणिवद्भस्मसङ्ग्रहे।सएवब्राह्मणोब्रह्मन्सत्यंसत्यंमयोच्यते ।१०
नयस्यसहजा प्रीतिर्मणिवद्भस्मसङ्ग्रहे।स चाण्डालइतिज्ञेयोजन्मजन्मान्तरेध्रुवम्।११
न यस्य सहजा प्रीतिस्त्रिपुण्ड्रोद्धूलनादिषु।च चाण्डाल इति ज्ञेयः सत्यं सत्यं मयोच्यते।१२
ये भस्मधारणं त्यक्त्वा भुञ्जन्ते च फलादिकम्।ते सर्वेनरकंघोरंप्राप्नुवन्तिनसंशयः।१३

"विभूतिधारणं त्यक्त्वा यः शिवं पूजयिष्यति ।
स दुर्भगः शिवद्वेष्टासद्वेषोनरकप्रदः ।
सर्वकर्मबहिर्भूतोभस्मधारणवर्जितः ।"
ञिभूतिधारणां त्यक्त्वाः याः कुर्वन्हेमतुलामपि ।
न तत्फलमवाप्नोति पतितो हि भवेद्धि सः ।।१४।।

यथोपवीतरहितैः सन्ध्या न क्रियते द्विजैः।तथा सन्ध्यानकर्तव्याविभूतिरहितैरपि।१५

गतोपवीतैः सन्ध्यायां कार्यः प्रतिनिधिः क्वचित् ।
जपादिकं तु सावित्र्यास्तथैवोपोषणादिकम् ।।१६।।
विभूतिधारणे त्वन्यो नाऽस्ति प्रतिनिधिः क्वचित् ।
विभूतिधारणं त्यक्त्वा यदि सन्ध्यां करोति यः ।।१७।।

प्रत्यवैत्यैवयेनासौनाऽधिकारीतदाद्विजः ।यथाश्रुत्वान्त्यजोवेदान्प्रत्यवैतितथाद्विजः।१८
प्रत्यवैति न सन्देहः सन्ध्याकृद्भस्मवर्जितः।सम्पादनीयंयत्नेनश्रौतंभस्मसदाद्विजैः ।१९
स्मार्तं वा तदभावेतुलौकिकंवासमाहितैः।यादृशंतादृशंवाऽस्तुपवित्रंभस्मसन्ततम् ।२०
धारणीयं प्रयत्नेन द्विजैः सन्ध्यादिकर्मसु।न सम्विशन्तिपापानिभस्मनिष्ठेततः सदा।२१
कर्तव्यमपि यत्नेन ब्राह्मणैर्भस्मधारणम्।मध्याङ्गुलित्रयेणैव स्वदक्षिणकरस्य तु।२२
षडङ्गुलायतं मानमपि चाधिकमानकम्।नेत्रयुग्मप्रमाणेन भाले दीप्तं त्रिपुण्ड्रकम्।२३
कदाचिद्भस्मनाकुर्यात्सरुद्रोनात्रसंशयः ।अकारोऽनामिकाप्रोक्त उकारोमध्यमाङ्गुलिः।२४
मकारस्तर्जनी तस्मात्त्रिपुण्ड्रं त्रिगुणात्मकम्।त्रिपुण्ड्रमध्यमातर्जन्यनामाभिरनुलोमतः ।२५
अत्र ते कथयाम्येनमितिहासं पुरातनम्।कदाचिदथदुर्वासाः पितृलोकंगताऽभवत्।२६
भस्मसन्दिग्धसर्वाङ्गो रुद्राक्षाभरणान्वितः।शिवशङ्करसर्वात्मच्छ्रीमातर्जगदम्बिके ।२७
नामानीति गृणन्नुच्चैस्तापसानां शिखामणिः।कव्यवाडादयस्ते तु प्रत्युत्थानाऽभिवादनैः।२८

आसनाद्युपचारैश्च सम्मानं बहु चक्रिरे। नानाकथाभिरन्योन्यसम्भाषां चक्रिरे तदा।२६
तस्मिंस्तु समये कुम्भीपाकस्थानां तु पापिनाम्। घोरः समभवच्छब्दो हा हताः स्मेति वादिनाम्।३०
मृताः स्मेति वदन्त्येके दग्धाः स्मेति परे जगुः। छिन्नाः स्मेति विभिन्नाः स्मेत्येवं रोदनकारिणः।३१
श्रुत्वा तु करुणं शब्दं दुःखितो मुनिराड् हृदि। पप्रच्छ पितृनाथांस्तान्केषां शब्दोऽयमित्यपि।३२
तेसमूचुर्मुनेऽत्रैव पुरी संयमनी परा। वर्तते यमराडत्र पापिनां भोगदायकः।३३
नानादूतैः कालरूपैः कृष्णवर्णैर्भयङ्करैः। सहितोऽत्रैव तत्पुर्या नायको विद्यतेऽनघ!।३४
तत्र कुडान्यनेकानि पापिनां भोगदानिच। षडशीतिर्घोररूपैर्दूतैः परिवृतानि च।३५
तत्र मुख्यतमं कुण्डं कुम्भीपाकाभिधंमहत्। वर्तते तद्गतानाञ्च यातनानां तु वर्णनम्।३६
कर्तुं न शक्यते कैश्चिदपिवर्षशतैरपि। ये शिवद्रोहिणः सन्तितथादेवी विनिन्दकाः।३७
ये विष्णुद्रोहिणः सन्तिपतन्त्यत्रैवतेमुने!। येवेदनिन्दकाः सन्तिसूर्यस्यचगणेशितुः।३८
ब्राह्मणानां द्रोहिणो ये पतन्त्यत्रैव ते मुने!। कामाचाराश्चये सन्ति तप्तमुद्राङ्किताश्चये।३९
त्रिशूलधारिणो ये च पतन्त्यत्रैव ते मुने!। मातृपितृगुरुज्येष्ठपुराणस्मृतिनिन्दकाः।४०
ये धर्मदूषकाः सन्ति पतन्त्यत्रैव ते मुने!। तेषामयं महाघोरः शब्दः श्रवणदारुणः।४१
श्रूयतेऽस्माभिरनिशं वैराग्यंयच्छ्रुतेर्भवेत्। इतितेषांवचः श्रुत्वामुनिराट् तद्दिदृक्षया।४२
उत्थायचलितस्तूर्णंययौकुण्डसमीपतः। अवाङ्मुखोददर्शाऽधस्तस्मिन्नेवक्षणेमुने।४३
तत्रत्यानां पापिनां तु स्वर्गाधिकमभूत्सुखम्। हसन्ति केचिद्गायन्तिनृत्यन्ति च तथा परे।४४
परस्परं रमन्ते तेऽप्युन्मत्ताः सुखवर्धनात्। मृदङ्गमुरजावीणाढक्कादुन्दुभिनिस्वनाः।४५
समुद्भूतास्तु मधुराः पञ्चमस्वरभूषिताः। वसन्तवल्लीपुष्पाणां सुगन्धमरुतो बबुः।४६
मुनिस्तु चकितो दृष्ट्वा यमदूताश्च विस्मिताः। शीघ्रंते कथयामासुर्धर्मराजायवेदिने।४७
महाराजमहाश्चर्यमधुनैवाभवद्विभो!। स्वर्गादप्यधिकंसौख्यंकुम्भीपाकस्थपापिनाम्।४८
निमित्तं नैवजानीमः कस्मादिदमभूद्विभो!। चकिताः स्मवयं सर्वेप्राप्तादेवत्वदन्तिकम्।४९
निशम्य दूतवाणींतां धर्मराट् शीघ्रमुत्थितः। महामाहिषमारूढो ययौते यत्रपापिनः।५०
तां वार्तां प्रेषयामास दूतद्वाराऽमरावतीम्। श्रुत्वातांदेवराजोऽपिप्राप्तोदेवगणैः सह।५१
ब्रह्मलोकात्पद्मजोऽपि वैकुण्ठाद्विष्टरश्रवाः। तत्तल्लोकाच्च दिक्पालाः समाजग्मुर्गणैः सह।५२
परिवार्य स्थिता सर्वे कुम्भीपाकमितस्ततः। अपश्यंस्तद्गताञ्जीवान्स्वर्गाधिकसुखान्वितान्।५३
चकिताएव ते सर्वेनविदुस्तस्यकारणम्। अहो पापस्यभोगार्थंकुण्डमेतद्विनिर्मितम्।५४
तत्र सौख्यं यदा जातं तदा पापात् तु किं भयम्। उच्छिन्ना वेदमर्यादा परमेशकृता कथम्।५५
भगवान्स्वस्य सङ्कल्पं वितथं कृतवान्कथम्। आश्चर्यमेतदाश्चर्यमेतदित्येवभाषिणः।५६
तटस्था अभवन्सर्वे न विदुस्तत्र कारणम्। एतस्मिन्नन्तरे शौरिः सम्मन्त्र्य विबुधादिभिः।५७
ययौ कैश्चित्सुरगणैः सहितः शङ्करालयम्। पार्वत्यासहितं देवं कोटिकन्दर्पसुन्दरम्।५८
रमणीयतमाङ्गं तं लावण्यखनिमद्भुतम्। सदा षोडशवर्षीयं नानाऽलङ्कारभूषितम्।५९
नानागणैः परिवृतं लालयन्तं परां शिवाम्। ददर्श चन्द्रमौलिं च चतुर्वेदं ननाम ह।६०
वृत्तान्तं कथयामास चमत्कृतमतिस्फुटम्। एतस्य कारणंदेव न जानीमः कमनञ्चन।६१
वद तत्कारणं देव सर्वज्ञोऽसि यतः प्रभो। विष्णुवाक्यंतदा श्रुत्वा प्रसन्नमुखपङ्कजः।६२
उवाच मधुरं वाक्यं मेघगम्भीरया गिरा। शृणुविष्णोतन्निमित्तं नाश्चर्यं त्वत्रविद्यते।६३
भस्मनो महिमैवायंभस्मनाकिंभवेन्नहि। कुम्भीपाकं गतोद्रष्टुं दुर्वासाः शैवसंमतः।६४
अवाङ्मुखो ददर्शाऽधस्तदावायुवशाद्धरे!। भालभस्मकणास्तत्रपतिता दैवयोगतः।६५

तेन जातमिदंसर्वंभस्मनोमहिमात्वयम्। इतः परं तु तत्तीर्थं पितृलोकनिवासिनाम्।६६
भविष्यति न सन्देहो यत्र स्नात्वा सुखी भवेत्।
पितृतीर्थन्तु तन्नाम्नाऽप्यत ऊर्ध्वम्भविष्यति ।।६७।।
मल्लिङ्गस्थापनं तत्र कार्यं देव्याश्चसत्तम। पूजयिष्यन्तिते तत्र पितृलोकनिवासिनः।६८
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि तत्र श्रेष्ठमिदम्भवेत्। पित्रीश्वरीपूजया तु त्रैलोक्यं पूजितं भवेत्।६९

श्रीनारायण उवाच

इति देव वचः श्रुत्वा देवं मूर्ध्नाप्रणम्य च। तदनुज्ञांसमादाय ययौ देवान्तिकंहरिः।७०
तत्सर्वं कथयामासकारणंशङ्करोदितम्। साधु साध्वितितेप्रोचुरमरा मौलिचालनैः।७१
शशंसुर्भस्ममाहात्म्यं हरिब्रह्मादयः सुराः। पितरश्चैव सन्तुष्टास्तीर्थलाभात्परन्तप।७२
तत्तीर्थतीरेलिङ्गं च देव्यामूर्तियथाविधि। स्थापयामासुरमराः पूजयामासुरन्वहम्।७३
तत्रयेप्राणिनोऽभूवन्पापभोगार्थमास्थिताः। ते विमानंसमारुह्यगताः कैलासमण्डलम्।७४
नाम्ना भद्रगणास्तेतु वसन्त्यद्यापितत्रहि। पुनश्च दूरदेशे तु कुम्भीपाको विनिर्मितः।७५
निरुद्धं शैवगमनंदेवैस्तत्र तु तद्दिनात्। इति ते सर्वमाख्यातं भस्ममाहात्म्यमुत्तमम्।७६
नाऽतः परतरं किञ्चिदधिकं विद्यते मुने!। ऊर्ध्वपुण्ड्रविधिं चैवाऽप्यधिकारीविभेदतः।७७
प्रवक्ष्ये मुनिशार्दूलवैष्णवागमलोकनात्। ऊर्ध्वपुण्ड्रप्रमाणानिदिव्यान्यङ्गुलिभेदतः।७८
वर्णाभिमन्त्रदेवांश्च प्रवक्ष्यामि फलानिच। पर्वताग्रे नदीतीरे शिवक्षेत्रे विशेषतः।७९
सिन्धुतीरे च वल्मीकेतुलसीमूलमाश्रिते। मृदएतास्तुसंग्राह्या वर्जयेदन्यमृत्तिकाः।८०
श्यामं शान्तिकरं प्रोक्तं रक्तंवश्यकरम्भवेत्। श्रीकरं पीतमित्याहुर्धर्मदं श्वेतमुच्यते।८१
अङ्गुष्ठः पुष्टिदः प्रोक्तोमध्यमायुष्करीभवेत्। अनामिकाऽन्नदानित्यमुक्तिदाचप्रदेशिनी।८२
एतैरङ्गुलिभेदैस्तु कारयेन्न नखैः स्पृशेत्। वर्तिदीपावलिकृतिं वेणुपत्राकृतिं तथा।८३
पद्मस्य मुकुलाकारं तथा कुर्यात्प्रयत्नतः। मत्स्यकूर्माकृतिंवाऽपिशङ्खाकारंततः परम्।८४
दशाङ्गुलिप्रमाणं तु उत्तमोत्तममुच्यते। नवाङ्गुलं मध्यमं स्यादष्टाङ्गुलमतः परम्।८५
सप्तषट्पञ्चभिः पुण्ड्रं मध्यमं त्रिविधं स्मृतम्। चतुस्त्रिद्व्यङ्गुलैः पुण्ड्रं कनिष्ठं त्रिविधं भवेत्।८६
ललाटे केशवं विद्यान्नारायणमथोदरे। माधवं हृदि विन्यस्य गोविन्दं कण्ठकुकूपके।८७
उदरे दक्षिणे पार्श्वे विष्णुरित्यभिधीयते। तत्पार्श्वबाहुमध्ये मधुसूदनमेव च।८८
त्रिविक्रमंकर्णदेशे वामकुक्षौतु तु वामनम्। श्रीधरं बाहुके वामे हृषीकेशं तुकर्णके।८९
पृष्ठे च पद्मनाभं तु ककुद्दामोदरं स्मरेत्। द्वादशैतानि नामानि वासुदेवेति मूर्धनि।९०
पूजाकालेचहोमेचसायं प्रातः समाहितः। नामान्युच्चार्य विधिना धारयेदूर्ध्वपुण्ड्रकम्।९१
अशुचिर्वाऽप्यनाचारोमनसा पापमाचरेत्। शुचिरेवभवेन्नित्यंमूर्ध्निपुण्ड्राङ्कितोनरः।९२
ऊर्ध्वपुण्ड्रधरो मर्त्योम्रियतेयत्रकुत्रचित्। श्वपाकोऽपिविमानस्थोममलोकेमहीयते।९३
एकान्तिनो महाभागा मत्स्वरूपविदोऽमलाः। सान्तरालान्प्रकुर्वन्ति पुण्ड्रान्विष्णुपदाकृतीन्।९४
परमैकान्तिनोऽप्येवंमत्पादैकपरायणाः। हरिद्राचूर्णसंयुक्ताञ्छूलाकारांस्तुवाऽमलान्।९५
अन्ये तु वैष्णवाः पुण्ड्रानच्छिद्रानपि भक्तितः। प्रकुर्वीरन्दीपपद्मवेणुपत्रोपमाकृतीन्।९६
अच्छिद्रानपि सच्छिद्रान्कुर्युः केवलवैष्णवाः। अच्छिद्रकरणेतेषांप्रत्यवायोनविद्यते।९७
एकान्तिनां प्रपन्नानां परमैकान्तिनामपि। अच्छिद्रपुण्ड्राकरणे प्रत्यवायोमहान्भवेत्।९८
ऊर्ध्वपुण्ड्रं तु यः कुर्याद्दण्डाकारं तु शोभनम्। मध्ये च्छिद्रं वैष्णवाश्च नमोऽन्तैः केशवादिभिः।९९
निमलान्यूर्ध्वपुण्ड्राणि सान्तरालानियोनरः। करोतिविपुलंतत्रमन्दिरंमेकरोतिसः।१००

ऊर्ध्वपुण्ड्रस्य मध्ये तुविशालेसुमनोहरे। लक्ष्म्यासाकंसहासीनोरमतेविष्णुरव्ययः ।१०१
निरन्तरालंय कुर्यादूर्ध्वपुण्ड्रंद्विजाधमः। सहि तत्रस्थितंविष्णुंश्रियञ्चैवव्यपोहति।१०२
अच्छिद्रमूर्ध्वपुण्ड्रं तु यः करोति विमूढधीः। सपर्यायेणतानेतिनरकानेकविंशतिम् ।१०३
ऋजूनि स्फुटपार्श्वानि सान्तरालानि विन्यसेत्। ऊर्ध्वपुण्ड्राणि दण्डाब्जदीपमत्स्यनिभानि च।१०४
शिखोपवीतवद्धार्यमूर्ध्वपुण्ड्रंद्विजेन च। विनाकृताश्चेद्विफलाः क्रियाः सर्वा महामुने।१०५
तस्मात्सर्वेषु कार्येषु कार्यं विप्रस्य धीमतः। ऊर्ध्वपुण्ड्रंत्रिशूलञ्च वर्तुलञ्चतुरस्रकम्।१०६
अर्धचन्द्रादिकं लिङ्गं वेदनिष्ठो न धारयेत्। जन्मनालब्धजातिस्तुवेदपन्थानमाश्रितः ।१०७
पुण्ड्रान्तरं भ्रमाद्वाऽपि ललाटे नैव धारयेत्। ख्यातिकान्त्यादिसिद्ध्यर्थं चाऽपि विष्ण्वागमादिषु।१०८
स्थितंपुण्ड्रान्तरंनैवधारयेद्वैदिकोजनः । तिर्यक्त्रिपुण्ड्रंसन्त्यज्यश्रौतंकथमपिभ्रमात्।१०९
ललाटेभस्मनातिर्यक्त्रिपुण्ड्रस्यचधारणम् । विनापुण्ड्रान्तरंमोहाद्धारयन्नारकीभवेत्।११०
वेदमार्गैकनिष्ठस्तु मोहेनाप्यङ्कितो यदि। पतत्येव न सन्देहस्तथा पुण्ड्रान्तरादपि।१११
नाङ्कनं विग्रहे कुर्याद्वेदमार्गं समाश्रितः। श्रौतधर्मैकनिष्ठानां लिङ्गं तु श्रौतमेव हि।११२
अश्रौतधर्मनिष्ठानामश्रौतंलिङ्गमीरितम् । देवतावेदसिद्धायास्तासांलिङ्गन्तुवैदिकम्।११३
अश्रोततन्त्रनिष्ठा यास्तासामश्रौतमेव हि। वेदसिद्धोस्य महादेवः साक्षात् संसारमोचकः ।११४
भक्तानामुपकाराय श्रौतंलिङ्गं दधाति च। वेदसिद्धस्य विष्णोश्च श्रौतं लिङ्गं न चेतरत्।११५
प्रादुर्भावविशेषाणामपि तस्य तदेव हि। श्रौतंलिङ्गंतुविज्ञेयंत्रिपुण्ड्रोद्धूलनादिकम्।११६
अश्रौतमूर्ध्वपुण्ड्रादिनैव तिर्यक्त्रिपुण्ड्रकम्। वेदमार्गैकनिष्ठानांवेदोक्तेनैव वर्त्मना।११७
ललाटे भस्मना तिर्यक्त्रिपुण्ड्रंधार्यमेव हि। यस्तु नारायणं देवं प्रपन्नः परमं पदम्।११८
धारयेत्सर्वदा शूलं ललाटे गन्धवारिणा।।११९।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे त्रिपुण्ड्रोर्ध्वपुण्ड्रधारणविधिवर्णनंनामपञ्चदशोऽध्यायः ।१५।

* षोडशोऽध्यायः *

सन्ध्योपासननिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

अथाऽतः श्रूयताम्पुण्यं सन्ध्योपासनमुत्तमम्। भस्मधारणमाहात्म्यं कथितञ्चैव विस्तरात्।१
प्रातः सन्ध्याविधानञ्च कथयिष्यामि तेऽनघ!। प्रातः सन्ध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्।२
ससूर्यांपश्चिमांसन्ध्यांतिस्रः सन्ध्या उपासते। तद्भेदानपिवक्ष्यामिशृणुदेवर्षिसत्तम! ।३
उत्तमा तारकोपेता मध्यमा लुप्ततारका। अधमा सूर्यसहिता प्रातः सन्ध्यात्रिधामता।४
उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमाऽस्तमिते रवौ। अधमातारकोपेतासायंसन्ध्यात्रिधामता ।५
विप्रोवृक्षो मूलकान्यत्र सन्ध्या वेदः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम् ।
तस्मान्मूलं यत्नतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न शाखा ।।६।।
सन्ध्या येन नविज्ञातासन्ध्यायेनानुपासिता। जीवमानोभवेच्छूद्रोमृतःश्वाचैवजायते।७
तस्मान्नित्यं प्रकर्तव्यं सन्ध्योपासनमुत्तमम्। तदभावेऽन्यकर्मादावधिकारीभवेन्नहि ।८
उदयास्तमयादूर्ध्वंयावत्स्याद्घटिकात्रयम्। तावत्सन्ध्यामुपासीतप्रायश्चित्तंततःपरम्।९
कालातिक्रमणेजातेचतुर्थार्घ्यंप्रदापयेत् । अथवाऽष्टशतंदेवींजप्त्वाऽऽदौतांसमाचरेत्।१०
यस्मिन्काले तु यत्कर्म तत्कालाधीश्वरीञ्च ताम्। सन्ध्यामुपास्य पश्चात्तु तत्कालीनं समाचरेत्।११

गृहे साधरणा प्रोक्ता गोष्ठे वै मध्यमा भवेत्। नदीतीरे चोत्तमास्याद्देवीगेहेतदुत्तमा।१२
यतो देव्याउपासेयंततोदेव्यास्तुसन्निधौ। सन्ध्यात्रयं प्रकर्तव्यंतदानन्त्यायकल्पते।१३
एतस्या अपरं दैवं ब्राह्मणानां नविद्यते। न विष्णूपासना नित्यानशिवोपासनातथा।१४
यथा भवेन्महादेव्या गायत्र्याः श्रुतिचोदिता। सर्ववेदसारभूतागायत्र्यास्तुसमर्चना ।१५
ब्रह्मादयोऽपि सन्ध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च। वेदा जपन्ति तां नित्यं वेदोपास्या ततः स्मृता।१६
तस्मात्सर्वे द्विजाः शाक्तानशैवानचवैष्णवाः। आदिशक्तिमुपासन्तेगायत्रीवेदमातरम् ।१७
आचान्तः प्राणमायम्य केशवादिकनामभिः। केशवश्च तथा नारायणो माधव एव च।१८
गोविन्दो विष्णुरेवाऽथ मधुसूदनएव च। त्रिविक्रमो वामनश्चश्रीधरोऽपि ततः परम्।१६
हृषीकेशः पद्मनाभो दामोदर अतः परम्। सङ्कर्षणो वासुदेवः प्रद्युम्नोऽप्यनिरुद्धकः।२०
पुरुषोत्तमाधोक्षजौ च नारसिंहोऽच्युतस्तथा। जनार्दन उपेन्द्रश्च हरिः कृष्णोऽन्तिमस्तथा।२१
ॐकारपूर्वकं नाम चतुर्विंशतिसङ्ख्यया। स्वाहाऽन्तैः प्राशयेद्वारि नमोऽन्तैः स्पर्शयेत्तथा।२२
केशवादित्रिभिः पीत्वा द्वाभ्यां प्रक्षालयेत्करौ। मुखं प्रक्षालयेद् द्वाभ्यां द्वाभ्यामुन्मार्जनं तथा।२३
एकेनपाणिंसम्प्रोक्ष्यपादावपिशिरोऽपिच। सङ्कर्षणादिदेवानांद्वादशाङ्गानिसंस्पृशेत् ।२४
दक्षिणेनोदकं पीत्वा वामेन संस्पृशेद्बुधः। तावन्न शुध्यतेतोयंयावद्वामेननस्पृशेत्।२५
गोकर्णाकृतिहस्तेन माषमात्रं जलंपिबेत्। ततोन्यूनाधिकंपीत्वासुरापानीभवेद्द्विजः।२६
संहताङ्गुलिना तोयं पाणिना दक्षिणेनतु। मुक्ताङ्गुष्ठ कनिष्ठाभ्यांशेषेणाऽऽचमनंविदुः।२७
प्राणायामं ततः कृत्वा प्रणवस्मृतिपूर्वकम्। गायत्रींशिरसा सार्धंतुरीयपदसंयुताम्।२८
दक्षिणे रेचयेद्वायुं वामेन पूरितोदरम्। कुम्भेनधारयेन्नित्यं प्राणायामं विदुर्बुधाः।२६
पीडयेद्दक्षिणांनाडीमङ्गुष्ठेनतथोत्तराम् । कनिष्ठानामिकाभ्यां तु मध्यमांतर्जनींत्यजेत्।३०
रेचकः पूरकश्चैव प्राणायामोऽथ कुम्भकः। प्रोच्यते सर्वशास्त्रेषु योगिभिर्यतमानसैः।३१
रेचकः सृजते वायुं पूरकः पूरयेत्तुतम्। साम्येनसंस्थितिर्यत्तत्कुम्भकः परिकीर्तितः।३२
नीलोत्पलदलश्यामं नाभिमध्ये प्रतिष्ठितम्। चतुर्भुजंमहात्मानं पूरके चिन्तयेद्धरिम्।३३
कुम्भकेतु हृदि स्थानेध्यायेत्तुकमलासनम्। प्रजापतिं जगन्नाथं चतुर्वक्त्रंपितामहम्।३४
रेचके शङ्करं ध्यायेल्ललाटस्थं महेश्वरम्। शुद्धस्फटिकसङ्काशं निर्मलं पापनाशनम्।३५
पूरके विष्णुसायुज्यं कुम्भकेब्रह्मणोगतिम्। रेचकेन तृतीयं तु प्राप्नुयादीश्वरं परम्।३६
पौराणाचमनाद्यञ्च प्रोक्तं देवर्षिसत्तम!। श्रौतमाचमनाद्यञ्च शृणु पापापहं मुने!।३७
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य गायत्रीं तु तदित्यृचम्। पादादौव्याहृतीस्तिस्रः श्रौताचमनमुच्यते।३८
गायत्रीं शिरसा सार्धं जपेद्व्याहृतिपूर्विकाम्। प्रतिप्रणवसंयुक्तांत्रिरयं प्राणसंयमः।३६
"सलक्षणं तु प्राणानामायामं कीर्त्यतेऽधुना। नानापापैकशमनं महापुण्यफलप्रदम्"
पञ्चाङ्गुलीभिर्नासाग्रंपीडयेत्प्रणवेन तु। सर्वपापहरा मुद्रा वानप्रस्थगृहस्थयोः।४०
कनिष्ठाऽनामिकाऽङ्गुष्ठैर्यतेश्च ब्रह्मचारिणः। आपोहिष्ठेति तिसृभिः प्रोक्षणं स्यात्कुशोदकैः।४१
ऋगन्ते मार्जनं कुर्यात्पादान्ते वा समाहितः। नवप्रणवयुक्तेन आपोहिष्ठेत्यनेन तु।४२
नश्येदघं मार्जने न सम्वत्सरसमुद्भवम्। तत आचमनं कृत्वा सूर्यश्चेतिपिबेदपः।४३
अन्तः करणसम्भिन्नं पापं तस्य विनश्यति। प्रणवेनव्याहृतिभिर्गायत्र्याप्रणवाद्यया ।४४
आपोहिष्ठेति सूक्तेन मार्जनं चैव कारयेत्। उद्धृत्य दक्षिणेहस्तेजलंगोकर्णवत्कृते।४५
नीत्वा तं नासिकाग्रं तु वामकुक्षौ स्मरेदघम्। पुरुषं कृष्णवर्णञ्च ऋतञ्चेतिपठेत्ततः।४६

द्रुपदाम्वा ऋचं पश्चाद्दक्षनासापुटेन च। श्वासमार्गेण तं पापामानयेत्करवारिणि।४७
नाऽवलोक्यैवतद्वारि वामभागेऽश्मनिक्षिपेत्। निष्पापंतुशरीरंमेसञ्जातमितिभावयेत् ।४८
उत्थायतु ततः पादौद्वौमासौसन्नियोजयेत्। जलाञ्जलिंगृहीत्वातुतर्जन्यङ्गुष्ठवर्जितम् ।४६
वीक्ष्य भानुं क्षिपेद्वारि गायत्र्या चाऽभिमन्त्रितम्। त्रिवारं मुनिशार्दूल विधिरेषोऽर्घ्यमोचने।५०
ततः प्रदक्षिणांकुर्यादसावादित्यमन्त्रतः। मध्याह्नेसकृदेवस्यात्सन्ध्ययोस्तुत्रिवारतः।५१
ईषन्नम्रः प्रभाते तु मध्याह्ने दण्डवत्स्थितः। आसने चोपविष्टस्तु द्विजः सायंक्षिपेदपः।५२
उदकं प्रक्षिपेद्यस्मात्तत्कारणमत शृणु। त्रिंशत्कोट्योमहावीरा मन्देहानामराक्षसाः।५३
कृतघ्ना दारुणा घोराःसूर्यमिच्छन्तिखादितुम्। ततोदेवगणाः सर्वेऋषयश्चतपोधनाः।५४
उपासते महासन्ध्यां प्रक्षिपन्त्युदकाञ्जलीन्। दह्यन्ते तेनदैत्यास्तेवज्रीभूतेनवारिणा।५५
एतस्मात्कारणाद्विप्राः सन्ध्यां नित्यमुपासते। महापुण्यस्य जननं सन्ध्योपासनमीरितम्।५६
अर्घ्याङ्गभूतमन्त्रोऽयं प्रोच्यते शृणुनारद!। यदुच्चारणमात्रेण साङ्गंसन्ध्याफलंभवेत्।५७

सोहमर्कोऽस्म्यहं ज्योतिरात्मा ज्योतिरहं शिवः ।
आत्मज्योतिरहं शुक्लः सर्वज्योती रसोऽस्म्यहम् ।।५८।।

आगच्छ वरदे! देवि! गायत्रि! ब्रह्मरूपिणि!। जपानुष्ठानसिद्ध्यर्थंप्रविश्यहृदयं मम।५६

उत्तिष्ठ देवि गन्तव्यं पुनरागमनाय च ।।६०।।

अर्घ्येषु देवि! गन्तव्यं प्रविश्य हृदयं मम। ततः शुद्धः स्थलेनैजमासनं स्थापयेद्बुधः।

तत्राऽऽरुह्य जपेत्पश्चाद्गायत्रीं वेदमातरम् ।।६१।।

अत्रैव खेचरीमुद्रा प्राणायामोत्तरंमुने!। प्रातः सन्ध्याविधाने च कीर्तिता मुनिपुङ्गव!।६२
तन्नामार्थं प्रवक्ष्यामि सादरं शृणु नारद!। चित्तं चरतिखेयस्माज्जिह्वाचरतिखे गता।६३
भ्रुवोरन्तर्गता दृष्टिर्मुद्रा भवति खेचरी। न चाऽऽसनंसिद्धसमं नकुम्भसदृशोऽनिलः।६४
न खेचरीसमा मुद्रा सत्यं सत्यं च नारद!। घण्टावत्प्रणवोच्चाद्वायुं निर्जित्ययत्नतः।६५
स्थिरासने स्थिरो भूत्वा निरहङ्कारनिर्ममः। लक्षणं नारद मुने! शृणुसिद्धासनस्यच।६६

योनिस्थानकमङ्घ्रिमूलघटितं कृत्वा दृढं
विन्यसेन्मेढ्रेपादमथैकमेव हृदयं कृत्वा समंविग्रहम् ।
स्थाणुः संयमितेन्द्रियोऽचलदृशा पश्यन्भ्रुवोरन्तरं
तिष्ठत्येतदतीव योगिसुखदं सिद्धासनं प्रोच्यते ।।६७।।

आयातु वरदादेवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं छन्दसां मातरिदं ब्रह्म जुषस्व मे।६८
यदह्नात्कुरुते पापं तदह्नात्प्रतिमुच्यते। यद्रात्र्यात्कुरुते पापं तद्रात्र्यात्प्रतिमुच्यते।६६
सर्ववर्णे! महादेवि! सन्ध्याविद्येसरस्वति!। अजरे! अमरे! देवि! सर्वदेवि! नमोऽस्तुते।७०
तेजोसीत्यादिमन्त्रेण देवीमावाहयेत्ततः। यत्कृतं त्वदनुष्ठानं तत्सर्वं पूर्णमस्तु मे।७१
ततः शापविमोक्षाय विधानं सम्यगाचरेत्। ब्रह्मशापस्ततो विश्वामित्रस्य च तथैव च।७२
वशिष्ठशाप इत्येतत्त्रिविधं शापलक्षणम्। ब्रह्मणः स्मरणेनैव ब्रह्मशापो निवर्त्यते।७३
विश्वामित्रस्मरणतोविश्वामित्रस्यशापतः। वसिष्ठस्मरणादेव तस्यशापोविनश्यति।७४

हृत्पद्ममध्ये पुरुषं प्रमाणं सत्यात्मकं सर्वजगत्स्वरूपम् ।
ध्यायामि नित्यं परमात्मसञ्ज्ञं चिद्रूपमेकं वचसामगम्यम् ।।७५।।

अथ न्यासविधिं वक्ष्ये सन्ध्याया अङ्गसम्भवम्। ॐकारं पूर्ववद्योज्यं ततो मन्त्रानुदीरयेत्।७६
भूरित्युक्त्वा च पादाभ्यां नम इत्येव चोच्चरेत्। भुवः पूर्वन्तु जानुभ्यां स्वः कटिभ्यां नमो वदेत्।७७
महर्नाभ्यै जनश्चैव हृदयाय ततस्तपः। कण्ठाय च ततः सत्यं ललाटे परिकीर्तयेत्।७८

अङ्गुष्ठाभ्यां तत्सवितुस्तर्जनीभ्यांवरेण्यकम्। भर्गो देवस्य मध्याभ्यां धीमहीत्येव कीर्तयेत्।७६
अनामाभ्यांकनिष्ठाभ्यां धियो यो नःपदम्वदेत्। प्रचोदयात्करपृष्ठतलयोर्विन्यसेत्सुधीः ।८०
ब्रह्मात्मनेतत्सवितुर्हृदयाय नमस्तथा। विष्ण्वात्मने वरेण्यञ्च शिरसे नम इत्यपि।८१
भर्गोदेवस्य रुद्रात्मने शिखायैप्रकीर्तितम्। शक्त्यात्मने धीमहीतिकवचायततः परम्।८२
कालात्मने धियोयोनोनेत्रत्रय उदीरतम्। प्रचोदयाच्च सर्वात्मनेऽस्त्रायपरिकीर्तितम्।८३
अक्षरन्यासमेवाऽग्रे कथयामि महामुने!। गायत्रीवर्णसम्भूतन्यास पापहरः परः।८४
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य वर्णन्यासः प्रकीर्तितः। तत्कारमादावुच्चार्य पादाङ्गुष्ठद्वये न्यसेत्।८५
सकारं गुल्फयोस्तद्वद्विकारं जङ्घयोर्न्यसेत्। जान्वोस्तुकारं विन्यस्य ऊर्वोश्चैव वकारकम्।८६
रेकारञ्च गुदे न्यस्यणिकारं लिङ्गएव च। कट्यां यकारमेवात्र भकारं नाभिमण्डले।८७
गोकारं हृदये न्यस्य देकारंस्तनयोर्द्वयोः। वकारंहृदि विन्यस्य स्यकारंकण्ठकूपके।८८
धीकारं मुखदेशे तु मकारं तालुदेशके। हिकारं नासिकाग्रे तु धिकारं नेत्रमण्डले।८९
भ्रूमध्ये चैव योकारं योकारञ्च ललाटके। नकारं वै पूर्वमुखे प्रकारं दक्षिणे मुखे।९०
चोकारं पश्चिममुखेदकारंचोत्तरेमुखे। योकारं मूर्ध्नि विन्यस्यतकारंव्यापकंन्यसेत्।९१
एतन्न्यासविधिं केचिन्नेच्छन्ति जपतत्पराः। ततो ध्यायेन्महादेवीं जगन्मातरमम्बिकाम्।९२
भास्वज्जपाप्रसूनाभां कुमारीं परमेश्वरीम्। रक्ताम्बुजासनारूढां रक्तगन्धानुलेपनाम्।९३
रक्तमाल्याम्बरधरां चतुरास्यां चतुर्भुजाम्। द्विनेत्रां स्रुक्स्रुवौ मालां कुण्डिकाञ्चैव बिभ्रतीम्।९४
सर्वाभरणसन्दीप्तामृग्वेदाध्यायिनीं पराम्। हंसपत्रामाहवनीयमध्यस्थांब्रह्मदेवताम् ।९५
चतुष्पदामष्टकुक्षिंसप्तशीर्षांमहेश्वरीम् । अग्निवक्त्रांरुद्रशिखांविष्णुचित्तांतुभावयेत्।९६
ब्रह्मा तु कवचं यस्या गोत्रं साङ्ख्यायनं स्मृतम्। आदित्यमण्डलान्तःस्थां ध्यायेद्देवीं महेश्वरीम्।९७
एवं ध्यात्वाविधानेन गायत्रींवेदमातरम्। ततोमुद्राः प्रकुर्वीतदेव्याः प्रीतिकराः शुभाः।९८
सम्मुखं सम्पुटञ्चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखञ्चैव चतुष्कं पञ्चकन्तथा।९९
षण्मुखाधोमुखञ्चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटंयमपाशञ्चग्रथितंसम्मुखोन्मुखम्।१००
विलम्बं मुष्टिकञ्चैव मत्स्यं कूर्मवराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवंतथा।१०१
चतुर्विंशति मुद्राश्च गायत्र्याः सम्प्रदर्शयेत्। शताक्षरां च गायत्रींसकृदावर्तयेत्सुधीः।१०२
चतुर्विंशन्त्यक्षराणि गायत्र्याः कीर्तितानि हि। जातवेदसनाम्नीञ्चत्र्यृचमुच्चारयेदतः ।१०३
त्र्यम्बकस्यर्चमावृत्य गायत्री शतवर्णका। भवतीयं महापुण्यासकृज्जप्या बुधैरियम्।१०४
ॐकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवः स्वस्तथैवच। चतुर्विंशत्यक्षराञ्च गायत्रीं प्रोच्चरेत्ततः।१०५
एवं नित्यं जपं कुर्याद्ब्राह्मणो विप्रपुङ्गवः। स समग्रं फलम्प्राप्यसन्ध्यायासुखमेधते।१०६

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे सन्ध्योपासननिरूपणंनाम षोडशोऽध्यायः ।।१६।।

* सप्तदशोऽध्यायः *

सन्ध्यादिकृत्यप्रतिपादनम्

श्रीनारायण उवाच

भिन्नपादा तु गायत्री ब्रह्महत्याप्रणाशिनी। अभिन्नपादागायत्री ब्रह्महत्याम्प्रयच्छति।१
अच्छिन्नपादागायत्रीजपंकुर्वन्तियेद्विजाः। अधोमुखाश्चतिष्ठन्तिकल्पकोटिशतानिच ।२
सम्पुटैकाषडोङ्कारा गायत्री विविधामता। धर्मशास्त्रपुराणेषु इतिहासेषु सुव्रत!।३

पञ्चप्रणवसंयुक्तांजपेदित्यनुशासनम् । जपसङ्ख्याऽष्टभागान्ते पादोजप्यस्तुरीयकः । ४
सद्विजः प्ररमोज्ञेयः परंसायुज्यमाप्नुयात् । अन्यथाप्रजपेद्यस्तु स जपोविफलो भवेत् । ५
सम्पुटैकाषडोङ्कारभवेत्साऊर्ध्वरेतसाम् । गृहस्थोब्रह्मचारीवा मोक्षार्थीतुरीयांजपेत् । ६
तुरीयपादो गायत्र्याः परोरजसेसावदोम् । ध्यानमस्यप्रवक्ष्यामिजपसाङ्गफलप्रदम् । ७
हृदि विकसितपद्मं सार्कसोमाग्निबिम्बं प्रणवमयमचिन्त्यं यस्यपीठं प्रकल्प्यम् ।
अचलपरमसूक्ष्मं ज्योतिराकाशसारं भवतु मम मुदेऽसौ सच्चिदानन्दरूपः । ८
त्रिशूलयोनी सुरभिमक्षमालाञ्च लिङ्गकम् । अम्बुजञ्च महामुद्रामिति सप्त प्रदर्शयेत् । ९
या सन्ध्या सैव गायत्री सच्चिदानन्दरूपिणी । भक्त्या तां ब्राह्मणो नित्यं पूजयेच्च नमेत्ततः । १०
ध्यातस्य पूजां कुर्वीत पञ्चभिश्चोपचारकैः । लंपृथिव्यात्मने गन्धमर्पयामिनमोनमः । ११
हमाकाशात्मने पुष्पंचार्पयामि नमो नमः । यञ्च वाय्वात्मने धूपं चार्पयामि ततोवदेत् । १२
रञ्च वह्न्यात्मने दीपमर्पयामि ततो वदेत् । वममृतात्मने तस्मै नैवेद्यमपि चार्पयेत् । १३
यं रं लं वं हमितिच पुष्पाञ्जलिमथार्पयेत् । एवंपूजांविधायाथचान्ते मुद्राः प्रदर्शयेत् । १४
ध्यायेत्तु मनसादेवींमन्त्रमुच्चारयेच्छनैः । न कम्पयेच्छिरोग्रीवां दन्तान्नैवप्रकाशयेत् । १५
विधिनाऽष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरेव वा । दशवारमशक्तो वा नाऽतो न्यूनं कदाचन । १६
तत उद्वासयेद्देवीमुत्तमेत्यनुवाकतः । न गायत्रीं जपेद्विद्वाञ्जलमध्ये कथञ्चन । १७
यतः साऽग्निमुखी प्रोक्तेत्याहुः केचिन्महर्षयः । सुरभिर्ज्ञानशूर्पञ्चकूर्मोयोनिश्च पङ्कजम् । १८
लिङ्गं निर्वाणकञ्चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेत् । यदक्षरपदभ्रष्टं स्वरव्यञ्जनवर्जितम् । १९
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि कश्यपप्रियवादिनि! । गायत्रीतर्पणं चातः करणीयं महामुने! । २०
गायत्रीछन्द आख्यातं विश्वामित्र ऋषिःस्मृतः । सविता देवता प्रोक्ता विनियोगश्च तर्पणे । २१
भूरित्युक्त्वा च ऋग्वेदपुरुषं तर्पयामि च । भुव इत्येतदुक्त्वा च यजुर्वेदमथो वदेत् । २२
स्वर्व्याहृतिं समुक्त्वा च सामवेदं समुच्चरेत् । महइत्येतददुक्त्वाऽन्तेऽथर्ववेदंचतर्पयेत् । २३
जनः पदान्त इतिहास पुराणमितीरयेत् । तपः सर्वागमं चैव पुरुषं तर्पयामि च । २४
सत्यं च सत्यलोकाख्यपुरुषं तर्पयामि च । ॐ भूर्भूर्लोकपुरुषं तर्पयामि ततो वदेत् । २५
भुवश्चेति भुवर्लोकपुरुषं तर्पयामि च । स्वः स्वर्गलोकपुरुषं तर्पयामि ततः परम् । २६
ॐ भूरेकपदां नाम गायत्रींतर्पयामिच । भुवो द्विपदां गायत्रीं तर्पयामीति कीर्तयेत् । २७
स्वश्च त्रिपदां गायत्रीं तर्पयामि ततो वदेत् । ॐ भूर्भुवः स्वश्चेति तथा गायत्रीं च चतुष्पदाम् । २८
उषसीं चैवगायत्रींसावित्रींचसरस्वतीम् । वेदानांमातरंपृथ्वीमजांवैवतुकौशिकीम् । २९
साङ्कृतिं वै सार्वजितिं गायत्रींतर्पणेवदेत् । तर्पणान्ते चशान्त्यर्थंजातवेदसमीरयेत् । ३०
मानस्तोकेति मन्त्रं च शान्त्यर्थं प्रजपेत्सुधीः । ततोऽपि त्र्यम्बको मन्त्रः शान्त्यर्थः परिकीर्तितः । ३१
तच्छंयोरिति मन्त्रं च जपेच्छान्त्यर्थमेवतु । अतोदेवाइतिद्वाभ्यांसर्वाङ्गस्पर्शनंचरेत् । ३२
स्योनापृथिविमन्त्रेणभूम्यैकुर्यात्प्रणामकम् । यथाविधिंचगोत्रादीनुच्चरेद्द्विजसत्तम! । ३३
एवं विधानं सन्ध्यायाः प्रातः काले प्रकीर्तितम् । सन्ध्याकर्म समाप्यान्तेऽप्यग्निहोत्रं स्वयं हुनेत् । ३४
पञ्चायतनपूजाञ्च ततः कुर्यात्समाहितः । शिवांशिवंगणपतिंसूर्यंविष्णुंतथाऽर्चयेत् । ३५
पौरुषेण तु सूक्तेन व्याहृत्या वा समाहितः । मूलमन्त्रेणवाकुर्याद्ह्रीश्चतेइतिमन्त्रतः । ३६
भवानीं तु यजेन्मध्येतथेशान्यांतुमाधवम् । आग्नेय्यांगिरिजानाथंगणेशंरक्षसांदिशि । ३७
वायव्यामर्चयेत्सूर्यमिति देवस्थितिक्रमः । षोडशानुपचारांश्च षोडशर्ग्भिर्हरेन्नरः । ३८
देवीमभ्यर्च्य पुरतो यजेदन्याननुक्रमात् । न देवीपूजनात्पुण्यमधिकं क्वचिदीक्ष्यते । ३९

अतएवतुसन्ध्यासुसन्ध्योपास्तिः श्रुतीरिता। नाक्षन्ते रर्चयेद्विष्णुंनतुलस्यागणेश्वरम् ।४०
दूर्वाभिर्नार्चयेद्दुर्गां केतकैर्न महेश्वरम्। मल्लिकाजातिकुसुमं कुटजं पनसं तथा।४१
किंशुकं बकुलं कुन्दं लोध्रंतुकरवीरकम्। शिंशपाऽपराजितापुष्पंबन्धूकागस्त्यपुष्पके।४२
मदन्तं सिन्दुवारं च पालाशकुसुनं तथा। दूर्वाङ्कुरं विल्वदलं कुशमञ्जरिका तथा।४३
शल्लकी माधवीपुष्पमर्कमन्दारपुष्पकम्। केतकीं कर्णिकारं च कदम्बकुसुमं तथा।४४
पुन्नागश्चम्पकस्तद्वद्यथिकातगरौ , तथा। एवमादिनी पुष्पाणि देवीप्रियकराणिच।४५
गुग्गुलस्य भवेद्धूपो दीपः स्यात्तिलतैलतः। कृत्वेत्थं देवतापूजांततोमूलमनुंजपेत्।४६
एवं पूजां समाप्यैव वेदाभ्यासं चरेद्बुधः। ततः स्ववृत्त्याकुर्वीतपोष्यवर्गार्थसाधनम्।
तृतीयदिनभागे तु नियमेन विचक्षणः।।४७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे गायत्र्युपासनासहितंतदङ्गवर्णनंनाम सप्तदशोऽध्यायः।।१७।।

* अष्टादशोऽध्यायः *

श्रीमातुःपूजनक्रमवर्णनम्

नारद उवाच

पूजाविशेषं श्रीदेव्याः श्रोतुमिच्छामि मानद!। येनाश्रितेन मनुजः कृतकृत्यत्वमाबहेत्।१

श्रीनारायण उवाच

देवर्षे! शृणुवक्ष्यामिश्रीमातुः पूजनक्रमम्। भुक्तिमुक्तिप्रदंसाक्षात्समस्तापन्निवारणम् ।२
आचम्य मौनी सङ्कल्प्य भूतशुद्ध्यादिकंचरेत्। मातृकान्यासपूर्वंतुषडङ्गन्यासमाचरेत् ।३
शङ्खस्य स्थापनं कृत्वा सामान्यार्घ्यं विधाय च। पूजाद्रव्याणि चाऽस्त्रेण प्रोक्षयेन्मतिमान्नरः।४
गुरोरनुज्ञामादाय ततः पूजां समारभेत्। पीठपूजां पुरा कृत्वा देवीं ध्यायेत्ततः परम्।५
आसानाद्युपचारैश्च भक्तिप्रेमयुतः सदा। स्नापयेत्परदेवीं तां पञ्चामृतरसादिभिः।६
पौण्ड्रेक्षुरसपूर्णैस्तु कलशैः शतसङ्ख्यकैः। स्नापयेद्योमहेशानींन सभूयोऽभिजायते।७
यश्च चूतरसैरेवं स्नापयेज्जगदम्बिकाम्। वेदपारायणं कृत्वा रसेनेक्षद्भवेन वा।८
तद्गेहं न त्यजेन्नित्यं रमा चैव सरस्वती। यस्तु द्राक्षारसेनैव वेदपारायणं चरन्।९
अभिषिञ्चेन्महेशानीं सकुटुम्बो नरोत्तमः। रसरेणुप्रमाणं च देवीलोके महीयते।१०
कर्पूरागुरुकाश्मीरकस्तूरीपङ्कपङ्किलैः ।सलिलैः स्नापयेद्देवीं वेदपारायणं चरन्।११
भस्मीभवन्ति पापानि शतजन्मार्जितानि च। यो दुग्धकलशैर्देवींस्नापयेद्वेदपाठतः।१२
आकल्पं स वसेन्नित्यं तस्मिन्वै क्षीरसागरे। यस्तु दध्नाऽभिषिञ्चेत्तां दधिकुल्यापतिर्भवेत्।१३
मधुना च घृतेनैव तथा शर्करयाऽपि च। स्नापयेन्मधुकुल्यादिनदीनां स पतिर्भवेत्।१४
सहस्रकलशैर्देवीं स्नापयेद्भक्तितत्परः। इहलोके सुखीभूत्वाऽप्यन्यलोके सुखीभवेत्।१५
क्षौमं वस्त्रद्वयं दत्त्वा वायुलोकं सगच्छति। रत्ननिर्मितभूषाणांदातानिधिपतिर्भवेत् ।१६
काश्मीरचन्दनं दत्त्वा कस्तूरीबिन्दुभूषितम्। तथासीमन्तसिन्दूरंचचरणेऽलक्तपत्रकम् ।१७
इन्द्रासने समारूढो भवेद्देवपतिः परः। पुष्पाणि विविधान्याहुः पूजाकर्मणिसाधवः।१८
तानि दत्त्वा यथालाभं कैलासंलभतेस्वयम्। बिल्वपत्राण्यमोघानियोदद्यात्परशक्तये ।१९
तस्य दुःखं कदाचिच्च क्वचिच्च न भविष्यति। बिल्वपत्रत्रये रक्तचन्दनेन तुसँल्लिखेत्।२०
मायाबीजत्रयं यत्नात्सुस्फुटं चातिसुन्दरम्। मायाबीजादिकंनामचतुर्थ्यन्तंसमुच्चरेत्।२१

नमोऽन्तं परया भक्त्या देवीचरणपङ्कजे। समर्पयेन्महादेव्यै कोमलं तच्च पत्रकम्।२२
य एवं कुरुते भक्त्या मनुत्वं लभते हि सः। यस्तु कोटिदलैरेव कोमलैरतिनिर्मलैः।२३
पूजयेद्भुवनेशानीं ब्रह्माण्डाधिपतिर्भवेत्। कुन्दपुष्पैर्नवीनैस्तु .लुलितैरष्टगन्धतः।२४
कोटिसङ्ख्यैः पूजयेत्तुप्राजापत्यंलभेद्ध्रुवम्। मल्लिकामालतीपुष्पैरष्टगन्धेनलोलितैः।२५
कोटिसङ्ख्यैः पूजया तु जायते स चतुर्मुखः। दशकोटिभिरप्येवं तैरेवकुसुमैर्मुने।२६
विष्णुत्वं लभते मर्त्यो यत्सुरेष्वपि दुर्लभम्। विष्णुनैतद् व्रतं पूर्वं कृतं स्वपदलब्धये।२७
शतकोटिभिरप्येवं सूत्रात्मत्वं व्रजेद्ध्रुवम्। व्रतमेतत्पुरा सम्यक्कृतं भक्त्या प्रयत्नतः।२८
तेन व्रतप्रभावेण हिरण्योदरतां व्रजेत्। जपाकुसुमपुष्पस्य बन्धूककुसुमस्य च।२६
दाडिमीकुसुमस्याऽपि विधिरेष उदीरितः। एवमन्यानि पुष्पाणि श्रीदेव्यै विधिनाऽर्पयेत्।३०
तस्यपुण्यफलस्यान्तंन जानातीश्वरोऽपिसः। तत्तदृतूद्भवैः पुष्पैर्नामसाहस्रसङ्ख्यया।३१
समर्पयेन्महादेव्यै प्रतिवर्षमतन्द्रितः। य एवं कुरुते भक्त्या महापातकसंयुतः।३२
उपपातकयुक्तोऽपि मुंच्यते सर्वपातकैः। देहान्ते श्रीपदाम्भोजं दुर्लभं देवसत्तमैः।३३
प्राप्नोतिसाधकवरो मुने! नास्त्यत्रसंशयः। कृष्णागुरुं सकर्पूरं चन्दनेनसमन्वितम्।३४
सिह्लकञ्चाऽऽज्यसंयुक्तंगुग्गुलेनसमन्वितम्। धूपं दद्यान्महादेव्यैयेनस्याद्धूपितंगृहम्।३५
तेन प्रसन्ना देवेशी ददाति भुवनत्रयम्। दीपं कर्पूरखण्डैश्च दद्याद्देव्यै निरन्तरम्।३६
सूर्यलोकमवाप्नोति नाऽत्र कार्या विचारणा। शतदीपांस्तथा दद्यात्सहस्रान्वासमाहितः।३७
नैवेद्यं पुरतोदेव्याः स्थापयेत्पर्वताकृतिम्। लेह्यैश्चोष्यैस्तथापेयैः षड्रसैस्तुसमाहितैः।३८
नानाफलानि दिव्यानि स्वादूनि रसवन्ति च। स्वर्णपात्रस्थितान्नानि दद्याद्देव्यै निरन्तरम्।३६
तृप्तायां श्रीमहादेव्यां भवेत्तृप्तं जगत्त्रयम्। यतस्तदात्मकंसर्वं रज्जौ सर्पो यथा तथा।४०
ततः पानीयकं दद्याच्छुभंगङ्गाजलंमहत्। कर्पूरवालासंयुक्तं शीतलं कलशस्थितम्।४१
ताम्बूलञ्च ततो देव्यै कर्पूरशकलान्वितम्। एलालवङ्गसंयुक्तं मुखसौगन्ध्यदायकम्।४२
दद्याद्देव्यै महाभक्त्या येन देवी प्रसीदति। मृदङ्गवीणामुरजढक्कादुन्दुभिनिःस्वनैः।४३
तोषयेज्जगतां धात्रीं गायनैरतिमोहनैः। वेदपारायणैः स्तोत्रैः पुराणादिभिरप्युत।४४
छत्रञ्च चामरे द्वे च दद्याद्देव्यै समाहितः। राजोपचारान् श्रीदेव्यैनित्यमेव समर्पयेत्।४५
प्रदक्षिणां नमस्कारं कुर्याद्देव्या अनेकधा। क्षमापयेज्जगद्धात्रीं जगदम्बां मुहुर्मुहुः।४६
सकृत्स्मरणमात्रेण यत्र देवी प्रसीदति। एतादृशोपचारैश्च प्रसीदेदत्र कः स्मयः।४७
स्वभावतोभवेन्मातापुत्रेऽतिकरुणावती। तेन भक्तौ कृतायान्तु वक्तव्यं किंततः परम्।४८
अत्र ते कथयिष्यामि पुरावृत्तं सनातनम्। बृहद्रथस्य राजर्षेः प्रियं भक्तिप्रदायकम्।४६
चक्रवाकोऽभवत्पक्षी क्वचिद्देशे हिमालये। भ्रमन्नानाविधान्देशान्ययौ काशीपुरम्प्रति।५०
अन्नपूर्णामहास्थाने प्रारब्धवशतो द्विजः। जगामलीलयातत्र कणलोभादनाथवत्।५१
कृत्वा प्रदक्षिणामेकां जगामच विहायसा। देशान्तरं विहायैवपुरीं मुक्तिप्रदायिनीम्।५२
कालान्तरे ममाराऽसौ गतः स्वर्गपुरीं प्रति। बुभुजेविषयान्सर्वान्दिव्यरूपधरो युवा।५३
कल्पद्वयं तथा भुक्त्वापुनःप्रापभुवम्प्रति। क्षत्रियाणांकुलेजन्म प्राप सर्वोत्तमोत्तमम्।५४
बृहद्रथेतिनाम्नाऽभूत्प्रसिद्धः क्षितिमण्डले। महायज्वा धार्मिकश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः।५५
त्रिकालज्ञः सार्वभौमो यमीपरपुरञ्जयः। पूर्वजन्मस्मृतिस्तस्य वर्तते दुर्लभा भुवि।५६
इति श्रुत्वा किम्वदन्तीं मुनयः समुपागताः। कृतातिथ्या नृपेन्द्रेण विष्टरेषूपुरेवते।५७
पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे संशयोऽस्ति महान्नृप!। केन पुण्यप्रभावेण पूर्वजन्मस्मृतिस्तव।५८

त्रिकालज्ञानमेवाऽपि केन पुण्यप्रभावतः। ज्ञानं तवेति तज्ज्ञातुमागताः स्म तवाऽन्तिकम्।५९
वद निर्व्याजया वृत्त्या तदस्माकं यथातथम् ।

श्रीनारायण उवाच

इति तेषां वचः श्रुत्वा राजा परमधार्मिकः ।।६०।।
उवाच सकलं ब्रह्मंस्त्रिकालज्ञानकारणम्। श्रूयतां मुनयः सर्वे मम ज्ञानस्य कारणम्।६१
चक्रवाकः स्थितः पूर्वंनीचयोनिगतोऽपिवा। अज्ञानतोऽपिकृतवानन्नपूर्णाप्रदक्षिणाम् ।६२
तेनपुण्यप्रभावेणस्वर्गेकल्पद्वयस्थितिः । त्रिकालज्ञानताऽप्यस्मिन्नभूज्जन्मनि सुव्रत!।६३
को वेद जगदम्बायाः पदस्मृतिफलं कियत्। स्मृत्वा तन्महिमानं तु पतन्त्यश्रूणि मेऽनिशम्।६४
धिगस्तुजन्मतेषाम्वैकृतघ्नानांतुपापिनाम् । येसर्वमातरं देवींस्वोपास्यांनभजन्तिहि।६५
न शिवोपासना नित्या न विष्णूपासना तथा। नित्योपास्तिः परा देव्या नित्या श्रुत्यैव चोदिता।६६
किं मया बहु वक्तव्यं स्थाने संशयवर्जिते। सेवनीयम्पदाम्भोजं भगवत्यानिरन्तरम्।६७
नातः परतरं किञ्चिदधिकं जगतीतले। सेवनीया परा देवी निर्गुणा सगुणाऽथवा।६८

श्रीनारायण उवाच

इति तस्य वचः श्रुत्वाराजर्षेर्धार्मिकस्यच। प्रसन्नहृदयाः सर्वे गताः स्वस्वनिकेतनम्।६९
एवम्प्रभावा सा देवी तत्पूजायाः फलं कियत्। अस्तीति केन प्रष्टव्यं वक्तव्यं वा न केनचित्।७०
येषां तु जन्मसाफल्यं तेषां श्रद्धा तु जायते। येषांतुजन्मसाङ्कर्यंतेषांश्रद्धानजायते ।७१

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे अष्टादशोऽध्यायः।।१८।।

* एकोनविंशोऽध्यायः *

मध्याह्नसन्ध्याविवरणकथनम्

श्रीनारायण उवाच

अथाऽतः श्रूयतां ब्रह्मन्सन्ध्यां माध्याह्निकीं शुभाम् ।
यदनुष्ठानतोऽपूर्वं जायतेऽत्युत्तमं फलम् ।।१।।
सावित्रीं युवतीं श्वेतवर्णाञ्चैव त्रिलोचनाम्। वरदां चाऽक्षमालाढ्यां त्रिशूलाभयहस्तकाम्।२
वृषारूढां यजुर्वेदसंहितां रुद्रदेवताम्। ततो गुणयुताञ्चैव भुवर्लोकव्यवस्थिताम्।३
आदित्यमार्गसञ्चारकर्त्रीं मायां नमाम्यहम्। आदिदेवीमथ ध्यात्वाऽऽचमनादि च पूर्ववत्।४
अथ चाऽर्घ्यप्रकरणं पुष्पाणि चिनुयात्ततः। तदलाभे बिल्वपत्रं तोयेनामिश्रयेत्ततः।५
ऊर्ध्वं च सूर्याभिमुखं क्षिप्त्वाऽर्घ्यं प्रतिपादयेत्। प्रातः सन्ध्यादिवत्सर्वमुपसंहारपूर्वकम्।६
मध्याह्ने केचिदिच्छन्ति सावित्रींतुतदित्यृचम्। असम्प्रदायं तत्कर्म कार्यहानिस्तु जायते।७
कारणंसन्ध्योश्चात्रमन्देहानामराक्षसाः । भक्षितुंसूर्यमिच्छन्तिकारणंश्रुतिचोदितम्।८
अतस्तु कारणाद्विप्रः सन्ध्यांकुर्यात्प्रयत्नतः। सन्ध्ययोरुभयोर्नित्यंगायत्र्याप्रणवेनच ।९
अम्भस्तु प्रक्षिपेत्तेन नाऽन्यथा श्रुतिघातकः। आकृष्णेनेतिमन्त्रेण पुष्पैर्वाऽम्बुविमिश्रितम्।१०
अलाभे बिल्वदूर्वादिपत्रेणोक्तेनपूर्वकम्। अर्घ्यंदद्यात्प्रयत्नेन साङ्गं सन्ध्याफलंलभेत्।११
अत्रैवतर्पणंवक्ष्ये शृणु देवर्षिसत्तम!। भुवः पुनः पूरुषं तु तर्पयामि नमो नमः।१२
यजुर्वेदं तर्पयामि मण्डलं तर्पयामि च। हिरण्यगर्भञ्च तथाऽन्तरात्मानं तथैवच।१३
सावित्रीञ्चततो देवमातरं साङ्कृतिं तथा। सन्ध्यां तथैवयुवतींरुद्राणींनीमृजांतथा।१४
सर्वार्थानां सिद्धिकरीं सर्वमन्त्रार्थसिद्धिदाम्। भूर्भुवः स्वः पुरुषं तु इति मध्याह्नतर्पणम्।१५

उदुत्यमिति सूक्तेन सूर्योपस्थानमेव च। चित्रं देवानामितिच सूर्योपस्थानमाचरेत्।१६
ततो जपं प्रकुर्वीत मन्त्रसाधनतत्परः। जपस्याऽपि प्रकारन्तु वक्ष्यामि शृणुनारद!।१७
कृत्वोंत्तानौ करौ प्रातः सायंचाऽधःकरौतथा। मध्याह्ने हृदयस्थौतुकृत्वाजपमुदीरयेत् ।१८
पर्वद्वयमनामिक्याः कनिष्ठादिक्रमेण तु। तर्जनीमूलपर्यन्तं करमाला प्रकीर्तिता।१९
गोघ्नः पितृघ्नो मातृघ्नो भ्रूणहा गुरुतल्पगः। ब्रह्मस्वक्षेत्रहारी च यश्चविप्रः सुरांपिबेत्।२०
स गायत्र्याः सहस्रेण पूतो भवति मानवः। मानसं वाचिकंपापंविषयेन्द्रियसङ्गजम्।२१
तत्किल्विषं नाशयतित्रीणि जन्मानिमानवः। गायत्रींयोनजानातिवृथातस्यपरिश्रमः ।२२
पठेच्च चतुरो वेदान् गायत्रींचैकतो जपेत्। वेदानां चाऽऽवृतेस्तद्वद्गायत्रीजप उत्तमः।२३
इति मध्याह्नसन्ध्यायाः प्रकारःकीर्तितो मया। अतः परंप्रवक्ष्यामिब्रह्मयज्ञविधिक्रमम्।२४

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे मध्याह्नसन्ध्याप्रतिपादनंनामैकोनविंशोऽध्यायः ।।१९।।

* विंशोऽध्यायः *

ब्रह्मयज्ञादिकीर्त्तनम्

श्रीनारायण उवाच

त्रिराचम्य द्विजः पूर्वं द्विर्मार्जनमथाचरेत्। उपस्पृशेत्सव्यपाणिं पादौचप्रोक्षयेत्ततः।१
शिरसि चक्षुषि तथा नासायां श्रोत्रदेशके। हृदये चतथामौलौप्रोक्षणं सम्यगाचरेत्।२
देशकालौ समुच्चार्य ब्रह्मयज्ञमथाचरेत्। द्वौ दर्भौ दक्षिणे हस्ते वामे त्रीनासनेसकृत्।३
उपवीते शिखायां च पादमूले सकृत्सकृत्। विमुक्तये सर्वपापक्षयार्थं चैव मेव हि।४
सूत्रोक्तदेवताप्रीत्यै ब्रह्मयज्ञंकरोम्यहम्। गायत्रीं त्रिर्जपेत्पूर्वं चाऽग्निमीले ततः परम्।५
यदङ्गेति ततः प्रोच्य अग्निर्वै इति कीर्तयेत्। अथैमहाव्रतं चैवपन्थाएतच्च कार्तयेत्।६
अथाऽतः संहितायाश्च विदा मघवदित्यपि। महाव्रतस्येति तथा इषेत्वोर्जेइतीवहि।७
अग्न आयाहि चेत्येवं शन्नो देवीरितीति च। अथतस्यसमाम्नायोवृद्धिरादैजितीवहि ।८
अथ शिक्षांप्रवक्ष्यामिपञ्चसम्वत्सरेतिच। मयरसतजभेभ्येत्येवगौर्ग्माइत्येवकीर्तयेत्।९
अथाऽतोधर्मजिज्ञासाअथाऽतोब्रह्म इत्यपि। तच्छंयोरिति च प्रोच्यब्रह्मणेनमइत्यपि।१०
तर्पणं चैव देवानां ततः कुर्यात्प्रदक्षिणम्। प्रजापतिश्च ब्रह्मा च वेदा देवास्तथर्षयः।११
सर्वाणि चैव च्छन्दांसि तथोङ्कारस्तथैव च। वषट्कारो व्याहृतयः सावित्री च ततः परम्।१२
गायत्रीचैवयज्ञाश्चद्यावापृथिवीइत्यपि । अन्तरिक्षंत्वहोरात्राणिचसाङ्ख्याअतः परम्।१३
सिद्धाः समुद्रा नद्यश्च गिरयश्चततः परम्। क्षेत्रौषधिवनस्पत्योगन्धर्वाप्सरसस्तथा ।१४
नागा वयांसि गावश्च साध्याविप्रास्तथैव च। यक्षा रक्षांसि भूतानीत्यमेवमन्तानि कीर्तयेत्।१५
अथो निवीती भूत्वा च ऋषीन्सन्तर्पयेदपि। शतर्चिनोमाध्यमाश्चगृत्समदस्तथैवच ।१६
विश्वामित्रो वामदेवोऽत्रिर्भरद्वाज एव च। वसिष्ठश्चप्रगाथश्चपावमान्यस्ततः परम्।१७
क्षुद्रसूक्ता महासूक्ताः सनकश्च सनन्दनः। सनातनस्तथैवाऽत्र सनत्कुमार एव च।१८
कपिलासुरिनामानौ वोहलिः पञ्चशीर्षकः। प्राचीनावीतिना तच्च कर्तव्यमथ तर्पणम्।१९
सुमन्तुर्जैमिनिर्वैशम्पायनः पैलसूत्रयुक्। भाष्यभारतपूर्वञ्च महाभारत इत्यपि।२०
धर्माचार्याइमे सर्वे तृप्यन्त्वितिचकीर्तयेत्। जानन्तिबाहविगार्ग्यगौतमाश्चैवशाकलः।२१

बाभ्रव्यमाण्डव्ययुतो माण्डूकेयस्ततः परम्। गार्गीवाचक्रवीचैववडवाप्रातिथेयिका ।२२
सुलभायुक्तमैत्रेयी कहोलश्च ततः परम्। कौषीतकम्महाकौषीतकं वै तर्पयेत्ततः।२३
भारद्वाजं च पैङ्ग्यञ्च महापैङ्ग्यं सुयज्ञकम्। साङ्ख्यायनमैतरेयं महैतरेयमेव च।२४
बाष्कलं शाकलं चैव सुजातवक्त्रमेवच। औदवाहिचसौजामिंशौनकंचाश्वलायनम्।२५
ये चाऽन्ये सर्वाचार्यास्ते सर्वे तृप्तिमाप्नुयुः। ये केचाऽस्मत्कुलेजाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।२६
ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्। एवं ते ब्रह्मयज्ञस्य विधिरुक्तो महामुने!।२७
यश्चाऽयं कुरुते ब्रह्मयज्ञस्य विधिमुत्तमम्। सर्ववेदाङ्गपाठस्य फलमाप्नोति साधकः।२८
वैश्वदेवे ततः कुर्यान्नित्यश्राद्धं तथैव च। अतिथिभ्योऽन्नदानं च नित्यमेवसमाचरेत्।२९
गोग्रासं च ततो दत्त्वा भुञ्जीत ब्राह्मणैः सह। अह्नस्तु पञ्चमे भागे प्रकुर्यादितदुत्तमम्।३०
इतिहासपुराणाद्यैः षष्ठसप्तमकौ नयेत्। अष्टमे लोकयात्रा तु बहिः सन्ध्यां ततः पुनः।३१
अथ सायन्तनीं सन्ध्यां प्रवक्ष्यामि महामुने!। यदनुष्ठानमात्रेणमहामाया प्रसीदति।३२
आचम्य प्राणानायम्य साधकः स्थिरमानसः। बद्धपद्मासनो योगी सायंकाले स्थिरो भवेत्।३३
श्रुतिस्मृत्यादिकर्मादौ सगर्भः प्राणसंयमः। अगर्भोध्यानमात्रंतुसचामन्त्रः प्रकीर्तितः।३४
भूतशुद्ध्यादिकंकृत्वा नान्यथाकर्मकीर्तितम्। सलक्षोदेवतांध्यात्वापूरकुम्भकरेचकैः ।३५
ध्यानं प्रकुर्यात्सन्ध्यायां सायंकाले विचक्षणः। वृद्धां सरस्वतीं देवीं कृष्णाङ्गीं कृष्णवाससम्।३६
शङ्खचक्रगदापद्महस्तां गरुडवाहनाम्। नानारत्नलसद्भूषां क्वणन्मञ्जीरमेखलाम्।३७
अनर्घ्यरत्नमुकुटां तारहारवलीयुताम्। ताटङ्कबद्धमाणिक्यकान्तिशोभिकपोलकाम्।३८
पीताम्बरधरां देवीं सच्चिदानन्दरूपिणीम्। सामवेदेन सहितां संयुतां सत्त्ववर्त्मना।३९
व्यवस्थितां च स्वर्लोके आदित्यपथगामिनीम्। आवाहयाम्यहं देवीमायान्तीं सूर्यमण्डलात्।४०
एवं ध्यात्वा च तां देवां सन्ध्यासङ्कल्पमाचरेत्। आपोहिष्ठेति मन्त्रेण अग्निश्चेति तथैव च।४१
विदध्यादाचमनकं शेषं पूर्ववदीरितम्। गायत्रीमन्त्रमुच्चार्य श्रीनारायणप्रीतये।४२
अर्घ्यंदद्याच्चसूर्यायसाधकः शुद्धमानसः। उभौपादौसमौकृत्वाहस्तेकृत्वाजलाञ्जलिम्।४३
देवं ध्यात्वा मण्डलस्थं क्षिपेदर्घ्यं ततः क्रमात्। अर्घ्यं दद्यात्तुयो नीरे मूढात्मा ज्ञानवर्जितः।४४
उल्लङ्घ्य स्मृतिमन्त्रांश्च प्रायश्चित्ती भवेद्द्विजः। ततः सूर्यमुपस्थायाऽप्यसावादित्यमन्त्रतः।४५
गायत्र्याश्च जपं कुर्यादुपविश्य ततोवृसीम्। सहस्रंवातदर्धम्वाश्रीदेवीध्यानपूर्वकम् ।४६
यथा प्रातः पुनस्तद्वदुपस्थानादिकं चरेत्। सायंसन्ध्यातर्पणे चक्रमेणपरिकीर्तयेत्।४७
वसिष्ठ ऋषिरेवाऽत्र सरस्वत्याः प्रकीर्तितः। देवताविष्णुरूपासाछन्दश्चैवसरस्वती ।४८
सायङ्कालीनसन्ध्यायास्तर्पणे विनियोगकः। स्वरित्युक्त्वा च पुरुषं सामवेदंतथैवच।४९
मण्डलञ्चेति सम्प्रोच्य हिरण्यगर्भकं तथा। तथैव परमात्मानं ततोऽपि च सरस्वतीम्।५०
वेदमातरमेवाऽत्र सङ्कृतिं तद्वदेव च। सन्ध्यां वृद्धां तथाविष्णुरूपिणीमुषसींतथा।५१
निर्मृजीं च तथा सर्वसिद्धीनां कारिणीं तथा। सर्वमन्त्राधिपतिकां भूर्भुवः स्वश्च पूरुषम्।५२
इत्येवं तर्पणं कार्यं सन्ध्यायाः श्रुतिसम्मतम्। सायं सन्ध्याविधानं च कथितं पापनाशनम्।५३
सर्वदुःखहरं व्याधिनाशकं मोक्षदं तथा। सदाचारेषु सन्ध्यायाः प्राधान्यंमुनिपुङ्गव!।५४
सन्ध्याचरणतो देवी भक्ताभीष्टं प्रयच्छति ।।५५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे ब्रह्मयज्ञादिकीर्त्तनंनाम विंशोऽध्यायः ।।२०।।

* एकविंशोऽध्यायः *

गायत्रीपुरश्चरणविधिकथनम्

श्रीनारायण उवाच

अथाऽतः श्रूयतां ब्रह्मन्! गायत्र्याः पापनाशनम्। पुरश्चरणकंपुण्यंयथेष्टफलदायकम् ।१
पर्वताग्रे नदीतीरे बिल्वमूले जलाशये। गोष्ठे देवालयेऽश्वत्थे उद्याने तुलसीवने।२
पुण्यक्षेत्रे गुरोः पार्श्वे चित्तैकाग्र्यस्थलेऽपि च। पुरश्चरणकृन्मन्त्री सिद्ध्यत्येव न संशयः।३
यस्यकस्यापिमन्त्रस्यपुरश्चरणमारभेत् । व्याहृतित्रयसंयुक्तांगायत्रींचाऽऽयुतंजपेत्।४
नृसिंहार्कवराहाणांतान्त्रिकंवैदिकंतथा । विनाजप्त्वातुगायत्रींतत्सर्वंनिष्फलम्भवेत्।५
सर्वे शाक्ताद्विजाः प्रोक्तानशैवानचवैष्णवाः। आदिशक्तिमुपासन्तेगायत्रींवेदमातरम् ।६
मन्त्रं संशोध्य यत्नेन पुरश्चरणतत्परः। मन्त्रशोधनपूर्वाङ्गमात्मशोधनमुत्तमम् ।७
आत्मतत्त्वशोधनाय त्रिलक्षं प्रजपेद्बुधः। अथवा चैकलक्षं तु श्रुतिप्रोक्तेनवर्त्मना।८
आत्मशुद्धिं विना कर्तुर्जपहोमादिकाः क्रियाः। निष्फलास्तास्तु विज्ञेयाः कारणं श्रुतिचोदितम्।६
तपसा तापयेद्देहं पितृन्देवांश्च तर्पयेत्। तपसा स्वर्गमाप्नोति तपसा विन्दते महत्।१०
क्षत्रियो बाहुवीर्येण तरेदापद आत्मनः। धनेन वैश्यः शूद्रस्तु जपहोमैर्द्विजोत्तमः।११
अत एव तु विप्रेन्द्र! तपः कुर्यात्प्रयत्नतः। शरीरशोषणं प्राहुस्तापसास्तप उत्तमम्।१२
शोधयेद्विधिमार्गेण कृच्छ्रचान्द्रायणादिभिः। अथान्नशुद्धिकरणंवक्ष्यामि शृणुनारद!।१३
अयाचितोञ्छशुक्लाख्यभिक्षावृत्तिचतुष्टयम्। तान्त्रिकैर्वैदिकैश्चैवं प्रोक्ताऽन्नस्य विशुद्धता।१४
भिक्षान्नं शुद्धमानीयकृत्वाभागचतुष्टयम्। एकंभागंद्विजेभ्यस्तु गोग्रासस्तुद्वितीयकः।१५
अतिथिभ्यस्तृतीयस्तु तदूर्ध्वं तु स्वभार्ययोः। आश्रमस्य यथा यस्य कृत्वा ग्रासविधिं क्रमात्।१६
आदौ क्षिप्त्वा तु गोमूत्रं यथाशक्ति यथाक्रमम्। तदूर्ध्वं ग्राससङ्ख्या स्याद्वानप्रस्थगृहस्थयोः।१७
कुक्कुटाण्डप्रमाणं तु ग्रासमानंविधीयते। अष्टौग्रासागृहस्थस्यवनस्थस्यतदर्धकम् ।१८
ब्रह्मचारी यथेष्टञ्च गोमूत्रविधिपूर्वकम्। प्रोक्षणं नववारञ्च षड्वारञ्च पत्रवारकम्।१६
निश्छिद्रञ्च करं कृत्वासावित्रीञ्चतदित्यचम्। मन्त्रमुच्चार्यमनसाप्रोक्षणेविधिरुच्यते ।२०
चौरोवा यदिचाण्डालोवैश्यः क्षत्रस्तथैवच। अन्नं दद्यात्तुयः कश्चिदधमोविधिरुच्यते।२१
शूद्रान्नं शूद्रसम्पर्कं शूद्रेण च सहाशनम्। ते यान्ति नरकं घोरं यावच्चन्द्रदिवाकरौ।२२
गायत्रीच्छन्दो मन्त्रस्य यथा सङ्ख्याक्षराणि च। तावल्लक्षाणि कर्तव्यं पुरश्चरणकं तथा।२३
द्वात्रिंशल्लक्षमानन्तु विश्वामित्रमतं तथा। जीवहीनो यथा देहः सर्वकर्मसु न क्षमः।२४
पुरश्चरणहीनस्तु तथा मन्त्रः प्रकीर्तितः। ज्येष्ठाषाढौ भाद्रपदं पौषं तु मलमासकम्।२५
अङ्गारं शनिवारञ्च व्यतीपातञ्चवैधृतिम्। अष्टमीं नवमीं षष्ठीं चतुर्थीञ्च त्रयोदशीम्।२६
चतुर्दशीममावास्यां प्रदोषञ्च तथानिशाम्। यमाग्निरुद्रसर्पेन्द्रवसुश्रवणजन्मभम् ।२७
मेषकर्कतुलाकुम्भान्मकरञ्चैव वर्जयेत्। सर्वाण्येतानि वर्ज्यानिपुरश्चरणकर्मणि।२८
चन्द्रतारानुकूले च शुक्लपक्षे विशेषतः। पुरश्चरणकं कुर्यान्मन्त्रसिद्धिः प्रजायते।२६
स्वस्तिवाचनकं कुर्यान्नान्दीश्राद्धं यथाविधि। विप्रान्सन्तर्प्य यत्नेन भोजनाच्छादनादिभिः।३०
आरभेत्तु ततः पश्चादनुज्ञानपुरः सरम्। प्रत्यङ्मुखः शिवस्थाने द्विजश्चान्यतमे जपेत्।३१
काशीपुरी च केदारो महाकालोऽथ नासिकम्। त्र्यम्बकञ्चमहाक्षेत्रंपञ्चदीपाइमे भुवि।३२
सर्वत्रैवहि दीपस्तु कूर्मासनमितिस्मृतम्। प्रारम्भदिनमारभ्य समाप्तिदिवसावधि।३३

न न्यूनं नातिरिक्तञ्च जपंकुर्याद्दिने दिने। नैरन्तर्येण कुर्वन्ति पुरश्चर्यां मुनीश्वराः।३४
प्रातरारभ्य विधिवज्जपेन्मध्यदिनावधि। मनः संहरणं शौचं ध्यानं मन्त्रार्थचिन्तनम्।३५
गायत्रीच्छन्दो मन्त्रस्य यथा सङ्ख्याक्षराणिच। तावल्लक्षाणि कर्तव्यं पुरश्चरणकं तथा।३६
जुहुयात्तद्दशांशेन सघृतेन पयोऽन्धसा। तिलैः पत्रैः प्रसूनैश्च यवैश्च मधुरान्वितैः।३७
कुर्याद्दशांशतो होमं ततः सिद्धोभवेन्मनुः। गायत्रीचैव संसेव्या धर्मकामार्थमोक्षदा।३८
नित्ये नैमित्तिकेकाम्येत्रितये तु परायणः। गायत्र्यास्तु परं नास्ति इहलोकेपरत्र च।३९
मध्याह्नमितभुङ्मौनी त्रिस्नानार्चनतत्परः। जले लक्षत्रयं धीमाननन्यमानसक्रियः।४०
कर्मणा यो जपेत्पश्चात्कर्मभिः स्वेच्छयाऽपि वा। यावत्कार्यं न सिद्ध्येत् (त्तु) तावत्कुर्याज्जपादिकम्।४१
सामान्यकाम्यकर्मादौ यथावद्विधिरुच्यते। आदित्यस्योदये स्नात्वा सहस्रम्प्रत्यहं जपेत्।४२
आयुरारोग्यमैश्वर्यंधनञ्चलभते ध्रुवम्। षण्मासंवात्रिमासंवावर्षान्ते सिद्धिमाप्नुयात्।४३
पद्मानां लक्षहोमेन घृताक्तानां हुताशने। प्राप्नोति निखिलं मोक्षं सिध्यत्येवनसंशयः।४४
मन्त्रसिद्धिं विना कर्तुर्जपहोमादिकाः क्रियाः। काम्यम्वा यदि वा मोक्षः सर्वं तन्निष्फलम्भवेत्।४५
पञ्चविंशतिलक्षेण दध्ना क्षीरेण वा हुतात्। स्वदेहेसिध्यतेजन्तुर्महर्षीणांमतं तथा।४६
अष्टाङ्गयोगसिद्ध्या च नरः प्राप्नोति यत्फलम्। तत्फलं सिद्धिमाप्नोति नाऽत्र कार्या विचारणा।४७
शक्तो वाऽपि त्वशक्तो वा आहारं नियतञ्चरेत्। षण्मासात्तस्य सिद्धिः स्याद् गुरुभक्तिरतः सदा।४८
एकाहं पञ्चगव्याशी चैकाहं मारुताशनः। एकाहं ब्राह्मणान्नाशीगायत्रीजपकृद्भवेत्।४९
स्नात्वा गङ्गादितीर्थेषु शतमन्तर्जलेजपेत्। शतेनाऽऽपस्ततः पीत्वासर्वपापैः प्रमुच्यते।५०
चान्द्रायणादिकृच्छ्रस्य फलं प्राप्नोति निश्चितम्। राजा वा यदि वा विप्रस्तपः कुर्यात्स्वके गृहे।५१
गृहस्थो ब्रह्मचारी वा वानप्रस्थोऽथवाऽपि च। अधिकारपरत्वेनफलंयज्ञादिपूर्वकम् ।५२
श्रौतस्मार्तादिकं कर्म क्रियते मोक्षकाङ्क्षिभिः। साग्निकश्च सदाचारो विद्वद्भिश्चसुशिक्षितः।५३
ततः कुर्यात्प्रयत्नेनफलमूलोदकादिभिः। भिक्षान्नंशुद्धमश्नीयादष्टौग्रासान्स्वयंभुजेत्।५४
एवं पुरश्चरणकंकृत्वामन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्। देवर्षेयदनुष्ठानाद्दारिद्र्यंविलयम्व्रजेत् ।
यच्छ्रुत्वाऽपि च पुण्यानां महतीं सिद्धिमाप्नुयात्।।५५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे गायत्रीपुरश्चरणविधिकथनंनामैकविंशोऽध्यायः।।२१।।

* द्वाविंशोऽध्यायः *

वैश्वदेवादिविधिनिरूपणम्

श्रीनारायण उवाच

अथाऽतः श्रूयतां ब्रह्मन्वैश्वदेवाविधानकम्। पुरश्चर्याप्रसङ्गेन ममाऽपिस्मृतिमागतम्।१
देवयज्ञो ब्रह्मयज्ञो भूतयज्ञस्तथैव च। पितृयज्ञो मनुष्यस्य यज्ञश्चैव तु पञ्चमः।२
पञ्चसूना गृहस्थस्यचुल्लीपेषण्युपस्करः। कण्डणी चोदकुम्भश्चतेषांपापस्यशान्तये।३
न चुल्लायां नायसे पात्रेनभूमौ नचखर्परे। वैश्वदेवंप्रकुर्वीतकुण्डेवास्थण्डिलेऽपि वा।४
न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखेनोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत।५
पटकेन भवेद्व्याधिः शूर्पेण धननाशनम्। पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु।६
फलैर्दधिघृतैः कुर्यान्मूलशाकोदकादिभिः। अलाभे येन केनापि काष्ठमूलतृणादिभिः।७
जुहुयात्सर्पिषाभ्यक्तं तैलक्षारविर्जितम्। दध्यक्तं वा पायसाक्तंतदभावेऽम्भसाऽपिवा।८
शुष्कैः पर्युषितैः कुष्ठी उच्छिष्टेनद्विषां वशी। रूक्षैर्दरिद्रतां यातिक्षारंहुत्वाव्रजत्यधः।९

अङ्गारान्भस्ममिश्रांस्तु निर्हृत्योत्तरतोऽनलात्। जुहुयाद्वैश्वदेवं तु न क्षारादिविमिश्रितम्।१०
अकृत्वा वैश्वदेवं तु योभुङ्क्ते मूढधीर्द्विजः। समूंढोनरकंयातिकालसूत्रमवाक्शिराः ।११
शाकं वा यदि वा पत्रं मूलं वा यदिवा फलम्। सङ्कल्पयेद्यदाहारंतेनाग्नौजुहुयादपि ।१२
अकृते वैश्वदेवे तु भिक्षौभिक्षार्थमागते। उद्धृत्यवैश्वदेवार्थं भिक्षांदत्त्वाविसर्जयेत्।१३
वैश्वदेवकृतं दोषं शक्तोभिक्षुर्व्यपोहितुम्। न तु भिक्षुकृतं दोषं वैश्वदेवो व्यपोहति।१४
यतिश्च ब्रह्मचारीच पक्वान्नस्वामिनावुभौ। तयोरन्नमदत्त्वा तु भुक्त्वाचान्द्रायणंचरेत्।१५
वैश्वदेवानन्तरञ्च गोग्रासं प्रतिपादयेत्। तद्विधानं प्रवक्ष्यामि शृणु देवर्षिपूजित! ।१६
सुरभिर्वैष्णवी माता नित्यं विष्णुपदेस्थिता। गोग्रासञ्चमयादत्तंसुरभेप्रतिगृह्यताम् ।१७
गोभ्यश्च नमइत्येव पूजां कृत्वागवेऽर्पयेत्। गोग्रासेन तुगोमातासुरभिः सम्प्रसीदति।१८
ततो गोदोहनं कालं तिष्ठेच्चैव गृहाङ्गणे। अतिथिर्यत्र भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते।१६
स तस्मैदुष्कृतंदत्त्वापुण्यमादाय गच्छति। मातापितागुरुर्भ्राताप्रजादासः समाश्रितः।२०
अभ्यागतोऽतिथिश्चाग्निरेतेपोष्याउदाहृताः । एवंज्ञात्वातुयोमोहान्नकरोतिगृहाश्रमम् ।२१
तस्यनायं तु नपरोलोकोभवति धर्मतः। यत्फलं सोमयागेनप्राप्नोति धनवान्द्विजः।२२
सम्यक्पञ्चमहायज्ञैदरिद्रस्तेनचाऽऽप्नुयात् । अथप्राणाग्निहोत्रंतुवक्ष्यामि मुनिपुङ्गव!।२३
यज्ज्ञात्वा मुच्यतेजन्तुर्जन्ममृत्युजरादिभिः। परिज्ञानेन मुच्यन्तेनराः पातककिल्विषैः।२४
विधिना भुज्यते येन मुच्यते स ऋणत्रयात्। कुलान्युद्धरते विप्रो नरकानेकविंशितम्।२५
सर्वयज्ञफलप्राप्तिः सर्वलोकेषु गच्छति। हृत्पुण्डरीकमरणिर्मनो मन्थानसञ्ज्ञकम्।२६
वायुरज्वा मथेदग्निंचक्षुरध्वर्युरेव च। तर्जनीमध्यमाङ्गुष्ठैः प्राणस्यैवाहुतिं क्षिपेत्।२७
मध्यमानामिकाङ्गुष्ठैरुदानस्याहुतिं क्षिपेत्। कनिष्ठानामिकाङ्गुष्ठैर्व्यानस्यतदन्तरम् ।२८
कनिष्ठातर्जन्यङ्गुष्ठैरुदानस्याहुतिंक्षिपेत् । सर्वाङ्गुलैर्गृहीत्वाऽन्नंसमानस्याहुतिंक्षिपेत् ।२६
स्वाहान्तान्प्रणवाद्यांश्चनाममन्त्रांश्चवै पठेत्। मुखे चाहवनीयस्तु हृदयेगार्हपत्यकः।३०
नाभौचदक्षिणाग्निः स्यादधः सभ्या वसथ्यकौ। वाग्घोताप्राणउद्गाताचक्षुरध्वर्युरेवच ।३१
मनो ब्रह्मा भवेच्छ्रोत्रमाग्नीध्रस्थानएव च। अहङ्कारः पशुश्चाऽत्र प्रणवः पयईरितम्।३२
बुद्धिश्च पत्नी सम्प्रोक्ता यदधीनो गृहाश्रमी। उरोवेदिस्तु रोमाणि दर्भाः स्युः स्रुक् स्रुवौ करौ।३३
प्राणमन्त्रस्य च ऋषीरुक्मवर्णः क्षुधाग्निकः। देवतादित्यएवात्रगायत्रीच्छन्दउच्यते ।३४
प्राणाय तथा स्वाहा मन्त्रान्ते कीर्त्तयेदपि। इदमादित्य देवाय नममेति वदेदपि।३५
अपानमन्त्रस्य च तथागोक्षीरधवलाकृतिः। श्रद्धाग्निऋषिरेवात्रसोमोवैदेवतास्मृता ।३६
उष्णिक्छन्दस्तथाऽपानाय स्वाहेत्यपि कीर्तयेत्। सोमायेदञ्च न ममेत्यत्रोहः परिकीर्तितः।३७
व्यानमन्त्रस्य चाख्यातोऽम्बुजवर्णहुताशनः। ऋषिरुक्तोदेवताग्निरनुष्टुपूछन्दईरितम् ।३८
व्यानाय च तथा स्वाहाऽग्नयेदं न ममेत्यपि। उदानमन्त्रस्य तथा शक्रगोपसवर्णकः।३६
ऋषिरग्निः समाख्यातो वायुर्वैदेवता स्मृता। बृहतीछन्दआख्यातमुदानायचपूर्ववत् ।४०
वायवे चेदं न मम एवं चैवोच्चरेद्द्विजः। समानवायुमन्त्रस्य विद्युद्वर्णो विरूपकः।४१
ऋषिरग्निः समाख्यातः पर्जन्योदेवतामता। पङ्क्तिश्छन्दः समाख्यातंसमानायचपूर्ववत्।४२
पर्जन्यायेदमित्युक्त्वा षष्ठीञ्चैववाहुतिंक्षिपेत्। वैश्वानरोमहानग्निर्ऋषिर्वै परिकीर्तितः।४३
गायत्रीच्छन्द आख्यातं देवस्त्वात्मा भवेदपि। स्वाहान्तो मन्त्र आख्यातः परमात्मन उच्चरेत्।४४
इदं नममचेत्येवं जातं प्राणाग्निहोत्रकम्। एतज्ज्ञात्वा विधिं कृत्वा ब्रह्मभूयायकल्पते।४५
प्राणाग्निहोत्रविद्येयं सङ्क्षेपात्कथिता हि ते ।।४६।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे वैश्वदेवादिविधिनिरूपणं नामद्वाविंशोऽध्यायः ।।२२।।

* त्रयोविंशोऽध्यायः *

तप्तकृच्छ्रादिलक्षणवर्णनम्

श्रीनारायण उवाच

अमृतापिधानमित्येवमुच्चार्यसाधकोत्तमः। उच्छिष्टभाग्भ्यः पात्रान्नंदद्यादन्तेविचक्षणः। १

ये के चाऽस्मत्कुले जाता दासदास्योऽन्नकाङ्क्षिणः ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मया दत्तेन भूतले ।।२।।

रौरवेऽपुण्यनिलये पद्मार्बुदनिवासिनाम्। अर्थिनामुदकं दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठतु। ३
पवित्रग्रन्थिमुत्सृज्यमण्डलेभुविनिक्षिपेत्। पात्रेतुनिक्षिपेद्यस्तुसविप्रः पङ्क्तिदूषकः। ४
उच्छिष्टस्तेन संस्पृष्टः शुना शूद्रेण च द्विजः। उपोष्यरजनीमेकां पञ्चगव्येनशुध्यति। ५
अनुच्छिष्टेन संस्पृष्टैः स्नानमेव विधीयते। एकाहुतिप्रदानेन कोटियज्ञफलंलभेत्। ६
पञ्चभिः पञ्चकोटीनां तदनन्तफलं स्मृतम्। प्राणाग्निहोत्रवेत्ते योह्यन्नदान्नंकरोतिच। ७
दातुश्चैव तुयत्पुण्यंभोक्तुश्चैवतुयत्फलम्। प्राप्नुतस्तौतदेवद्वावुभौतौस्वर्गगामिनौ । ८
स पवित्रकरो भुङ्क्ते यस्तु विप्रोविधानतः। ग्रासेग्रासेफलंतस्यपञ्चगव्यसमम्भवेत् । ६
पूजाकालत्रये नित्यं जपस्तर्पणमेवच। होमोब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते। १०
अधः शयानोधर्मात्माजितक्रोधोजितेन्द्रियः। लघुमिष्टहिताशीचविनीतः शान्तचेतसा। ११
नित्यं त्रिषणस्नायी नित्यंसशुभभाषणः। स्त्री शूद्रपतितव्रात्यनास्तिकोच्छिष्टभाषणम्। १२
चाण्डालभाषणञ्चैव न कुर्यान्मुनिसत्तम!। नत्वा नैव च भाषेत जपहोमार्चनादिषु। १३
मैथुनस्य तथाऽऽलापं तद्गोष्ठीमपि वर्जयेत्। कर्मणा मनसावाचासर्वावस्थासुसर्वदा। १४
सर्वत्र मैथुनत्यागो ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते। राज्ञश्चैव गृहस्थस्य ब्रह्मचर्यमुदाहृदातम्। १५
ऋतुस्नातेषु दारेषु सङ्गतिर्वा विधानतः। संस्कृतायां सवर्णायांमृतुं दृष्ट्वा प्रयत्नतः। १६
रात्रौ तु गमनं कार्यं ब्रह्मचर्यं हरेन्नतत्। ऋणत्रयमसंशोध्य त्वनुत्पाद्य सुतानपि। १७
तथायज्ञाननिष्ट्वाचमोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः । अजागलस्य यज्जन्मतज्जन्मश्रुतिचोदितम्। १८
अतः कार्यंतु विप्रेन्द्र! ऋणत्रयविशोधनम्। तेदेवानामृषीणाञ्चपितृणाममृणिनस्तथा। १६
ऋषिभ्यो ब्रह्मचर्येण पितृभ्यस्तुतिलोदकैः। मुच्येद्यज्ञेनदैवेभ्यः स्वाश्रमंधर्ममाचरंत्। २०

क्षीराहारी फलाशी वा शाकाशी वा हविष्यभुक् ।
भिक्षाशी वा जपेद्विद्वान्कृच्छ्रचान्द्रायणादिकृत् ।।२१।।

लवणं क्षारमम्लञ्च गृञ्जनं कांस्यभोजनम्। ताम्बूलञ्च द्विभुक्तञ्चदुष्टवासः प्रमत्तनम्। २२
श्रुतिस्मृतिविरोधञ्च जपं रात्रौ विवर्जयेत्। वृथानकालं गमयेद्द्यूतस्त्रीस्वापवादतः। २३
गमयेद्देवतापूजास्तोत्रागमविलोकनैः । भूशय्या ब्रह्मचारित्वं मौनचर्या तथैव च। २४
नित्यं त्रिषवणस्नानं शूद्रकर्मविवर्जनम्। नित्यपूजानित्यदानमानन्दस्तुतिकीर्तनम्। २५
नैमित्तिकार्चनञ्चैव विश्वासो गुरुदेवयोः। जपनिष्ठस्य धर्मायि द्वादशैते सुसिद्धिदाः। २६
नित्यंसूर्यमुपस्थायतस्यचाभिमुखोजपेत् । देवताप्रतिमादौवावह्नौवाऽभ्यर्च्यतन्मुखः। २७
स्नानपूजाजपध्यानहोमतर्पणतत्परः । निष्कामोदेवतायाञ्च सर्वकर्मनिवेदकः। २८
एवमादींश्च नियमान्पुरश्चरणकृच्चरेत्। तस्माद्द्विजः प्रसन्नात्मा जपहोमपरायणः। २६
तपस्यध्ययनेयुक्तो भवेद्भूतानुकम्पकः। तपसा स्वर्गमाप्नोति तपसा विन्दतेमहत्। ३०

तपोयुक्तस्य सिद्ध्यन्ति कर्माणि नियतात्मनः। विद्वेषणंसंहरणं मारणंरोगनाशनम् ।३१
येन येनाऽथ ऋषिणा यदर्थंदेवताः स्तुताः। ससकामः समृद्ध्ये ततेषांतेषांतथातथा।३२
तानि कर्माणि वक्ष्यामि विधानानि च कर्मणाम्। पुरश्चरणमादौ च कर्मणां सिद्धिकारकम्।३३
स्वध्यायाभ्यसनस्यादौप्राजापत्यंचरेद्द्विजः । केशश्मश्रुलोमनावापयित्वाततः शुचिः।३४
तिष्ठेदहनि रात्रौतुशुचिरासीत वाग्यतः। सत्यवादीपवित्राणिजपेद्व्याहृतयस्तथा।३५
ॐकाराद्यास्तु ता जप्त्वा सावित्रीञ्च तदित्यृचम्। आपोहिष्ठेति सूक्तञ्च पवित्रं पापनाशनम्।३६
पुनन्त्यः स्वस्तिमत्यश्चपावमान्यस्तथैवच। सर्वत्रैतत्प्रयोक्तव्यमादावन्तेचकर्मणाम्।३७
आसहस्रादाशताद्वाप्यादशादथवा जपेत्। ॐकारं व्याहृतीस्तिस्रः सावित्रीमथवायुतम्।३८
तर्पयित्वाऽद्भिराचार्यानृषींश्छन्ददांसि देवताः। अनार्षेणनभाषेतशूद्रेणाऽपिन गर्हितैः।३९
नाऽपि चोदक्यया वध्वापतितैर्नान्त्यजैर्नृभिः। नदेवब्राह्मणद्विष्टैर्नाचार्यगुरुनिन्दकः ।४०
न मातृपितृविद्विष्टैर्नावमन्येत कञ्चन। कृच्छ्राणामेष सर्वेषां विधिरुक्तोऽनुपूर्वशः।४१
प्राजापत्यस्य कृच्छ्रस्य तथा सान्तपनस्य च। पराकस्य च कृच्छ्रस्य विधिश्चान्द्रायणस्य च।४२
पञ्चभिः पातकैः सर्वैर्दुष्कृतैश्च प्रमुच्यते। तप्तकृच्छ्रेण सर्वाणिपापानिदहतिक्षणात्।४३
त्रिभिश्चान्द्रायणैः पूतोब्रह्मलोकंसमश्नुते। अष्टभिर्देवताः साक्षात्पश्येत वरदास्तदा।४४
छन्दांसि दशभिर्ज्ञात्वा सर्वान्कामान्समश्नुते। त्र्यहं प्रातस्त्र्यहं सायं त्र्यहमद्यादयाचितम्।४५
त्र्यहं परञ्च नाश्नीयात्प्राजापत्यंचरेद्द्विजः। गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिः सर्पिकुशोदकम्।४६
एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम्। एकैकं ग्रासमश्नीयादहानित्रीणिपूर्ववत्।४७
त्र्यहं चोपवसेदित्थमतिकृच्छ्रं चरेद्द्विजः। एवमेवत्रिभिर्युक्तंमहासान्तपनंस्मृतम्।४८
तप्तकृच्छ्रंचरन्विप्रो जलक्षीरघृतानिलान्। प्रतित्र्यहंपिबेदुष्णान्सकृत्स्नायीसमाहितः।४९
नियतस्तु पिबेदापः प्रजापत्यविधिः स्मृतः। यतात्मनोऽप्रमत्तस्य द्वादशाहमभोजनम्।५०
पराकोनाम कृच्छ्रोऽयं सर्वपापप्रणोदनः। एकैकं तु ह्रसेत्पिण्डं कृष्णेशुक्लञ्च वर्धयेत्।५१
अमावास्यां न भुञ्जीत एवं चान्द्रायणे विधिः। उपस्पृश्य त्रिषवणमेतच्चान्द्रायणं स्मृतम्।५२
चतुरः प्रातरश्नीयाद्विप्रः पिण्डान्कृताह्निकः। चतुरोऽस्तमिते सूर्ये शिशुचान्द्रायणं स्मृतम्।५३
अष्टावष्टौ समश्नीयात्पिण्डान्मध्यंदिने स्थिते। नियतात्मा हविष्यस्य यतिचान्द्रायणं व्रतम्।५४
एतद्रुद्रास्तथादित्या वसवश्च चरन्ति हि। सर्वे कुशलिनो देवा मरुतश्च भुवा सह।५५
एकैकंसप्तरात्रेणपुनातिविधिवत्कृतम् । त्वगसृक्पिशितास्थीनिमेदोमज्जावसास्तथा।५६
एकैकं सप्तरात्रेण शुद्ध्यत्येव न संशयः। एभिर्व्रतैर्विपूतात्मा कर्म कुर्वीत नित्यशः।५७
एवंशुद्धस्यकर्माणिसिद्ध्यन्त्येवनसंशयः । शुद्धात्माकर्मकुर्वीतसत्यवादीजितेन्द्रियः।५८
इष्टान्कामांस्ततः सर्वान्सम्प्राप्नोति न संशयः। त्रिरात्रमेवोपवसेद्रहितः सर्वकर्मणा।५९
त्रीणि नक्तानि वा कुर्यात्ततः कर्म समारभेत्। एवं विधानं कथितं पुरश्चर्याफलप्रदम्।६०
गायत्र्याश्च पुरश्चर्या सर्वकामप्रदायिनी। कथिता तव देवर्षे! महापापविनाशिनी।६१
आदौ कुर्याद्व्रतं मन्त्री देहशोधनकारकम्। पुरश्चर्यांततः कुर्यात्समस्तफलभाग्भवेत्।६२
इति ते कथितं गुह्यं पुरश्चर्याविधानकम्। एतत्परस्मै नोवाच्यंश्रुतिसारंयतः स्मृतम्।६३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे नारायणनारदसम्वादे तप्तकृच्छ्रादिलक्षणवर्णनंनाम त्रयोविंशोऽध्यायः ।।२३।।

* चतुर्विंशोऽध्यायः *

सदाचारनिरूपणम्

नारद उवाच

नारायणमहाभागगायत्र्यास्तुसमासतः । शान्त्यादिकान्प्रयोगांस्तुवदस्वकरुणानिधे । १

श्रीनारायण उवाच

अतिगुह्यमिदं पृष्टं त्वया ब्रह्मतनूद्भव! । न कस्याऽपि च वक्तव्यं दुष्टाय पिशुनाय च । २
अथशान्तिःपयोक्ताभिःसमिद्भिर्जुहुयाद्द्विजः । शमीसमिद्भिः शाम्यन्तिभूतरोगग्रहादयः । ३
आर्द्राभिः क्षीरवृक्षस्यसमिद्भिर्जुहुयाद्द्विजः । जुहुयाच्छकलैर्वाऽपिभूतरोगादिशान्तये । ४
जलेनतर्पयेत्सूर्यंपाणिभ्यांशान्तिमाप्नुयात् । जानुदघ्नेजलेजप्त्वासर्वान्दोषाञ्छमंनयेत् । ५
कण्ठदघ्ने जले जप्त्वा मुच्येत्प्राणान्तिकाद्भयात् । सर्वेभ्यः शान्तिकर्मभ्यो निमज्याऽप्सु जपः स्मृतः । ६
सौवर्णे राजतेवाऽपिपात्रेताम्रमयेऽपि वा । क्षीरवृक्षमयेवाऽपिनिर्व्रणे मृण्मयेऽपि वा । ७
सहस्रं पञ्चगव्येन हुत्वा सुज्वलितेऽनले । क्षीरवृक्षमयैः काष्ठैः शेषं सम्पादयेच्छनैः । ८
प्रत्याहुति स्पृशञ्जप्त्वा सहस्रं पात्रसंस्थितम् । तेन तं प्रोक्षयद्देशं कुशैर्मन्त्रमनुस्मरन् । ९
बलिंकिरंस्ततस्तस्मिन्ध्यायेत्तु परदेवताम् । अभिचारसमुत्पन्ना कृत्यापापञ्चनश्यति । १०
देवभूतपिशाचाद्यान् यद्येवं कुरुते वशे । गृहं ग्रामं पुरं राष्ट्रं सर्वं तेभ्यो विमुच्यते । ११
निखने मुच्यतेतेभ्योलिखनेमध्यतोऽपि च । मण्डलेशूलमालिख्यपूर्वोक्तेचक्रमेऽपिवा । १२
अभिमन्त्र्य सहस्रं तन्निखनेत्सर्वशान्तये । सौवर्णं राजतंवाऽपिकुम्भं ताम्रमयंचवा । १३
मृण्मयं वानवंदिव्यं सूत्रवेष्टितमव्रणम् । स्थण्डिलेसैकतेस्थाप्यपूरयेन्मन्त्रविज्जलैः । १४
दिग्भ्य आहृत्य तीर्थानिचतसृभ्योद्विजोत्तमैः । एलाचन्दनकर्पूरजातीपाटलमल्लिकाः । १५
बिल्वपत्रं तथा क्रान्तां देवींव्रीहियवांस्तिलान् । सर्षपान्क्षीरवृक्षाणां प्रवालानि च निक्षिपेत् । १६
सर्वाण्यभिविधायैवं कुशकूर्चसमन्वितम् । स्नातः समाहितोविप्रः सहस्रंमन्त्रयेद्बुधः । १७
दिक्षु सौरानधीयीरन्मन्त्रान्विप्रास्त्रयीविदः । प्रोक्षयेत्पाययेदेनं नीरंतेनाभिषिञ्चयेत् । १८
भूतरोगाभिचारेभ्यः स निर्मुक्तः सुखीभवेत् । अभिषेकेणमुच्येतमृत्योरास्यगतोनरः । १९
अवश्यं कारयेद्विद्वान्राजा दीर्घजिजीविषुः । गावो देयाश्चऋत्विग्भ्यअभिषेकेशतंमुने! । २०
दक्षिणा येन वा तुष्टिर्यथा शक्त्याऽथवा भवेत् । जपेदश्वत्थमालभ्यमन्दवारेशतंद्विजः । २१
भूतरोगाभिचारेभ्यो मुच्यते महतो भयात् । गुडूच्याः पर्वविच्छिन्नाः पयोक्ता जुहुयाद्द्विजः । २२
एवं मृत्युञ्जयो होमः सर्वव्याधिविनाशनः । आम्रस्य जुहुयात्पत्रैः पयोक्तैर्ज्वरशान्तये । २३
वचाभिःपयसाक्ताभिः क्षयं हुत्वाविनाशयेत् । मधुत्रितयहोमेनराजयक्ष्माविनश्यति । २४
निवेद्य भास्करायाऽन्नं पायसं होमपूर्वकम् । राजयक्ष्माभिभूतञ्च प्राशयेच्छान्तिमाप्नुयात् । २५
लताः पर्वसु विच्छिद्यसोमस्यजुहुयाद्द्विजः । सोमेसूर्येणसंयुक्तेपयोक्ताः क्षयशान्तये । २६
कुसुमैः शंखवृक्षस्यहुत्वाकुष्ठंविनाशयेत् । अपस्मारविनाशः स्यादपामार्गस्यतण्डुलैः । २७
क्षीरवृक्षसमिद्धोमादुन्मादोऽपि विनश्यति । औदुम्बरसमिद्धोमादतिमेहः क्षयंव्रजेत् । २८
प्रमेहं शमयेद्धुत्वा मधुनेक्षुरसेन वा । मधुत्रितयहोमेन नयेच्छान्तिं मसूरिकाम् । २९
कपिलासर्पिषा हुत्वानयेच्छान्तिंमसूरिकाम् । उदुम्बरवटाऽश्वत्थैर्गोगजाश्वामयंहरेत् । ३०
पिपीलिमधुवल्मीके गृहे जाते शतं शतम् । शमीसमिद्भिरन्नेन सर्पिषा जुहुयाद्द्विजः । ३१
तदुत्थं शान्तिमायाति शेषैस्तत्र बलिं हरेत् । अभ्रस्तनितभूकम्पालक्ष्यादौवनवेतसः । ३२

सप्ताहं जुहुयादेवं राष्ट्रे राज्यं सुखीभवेत्। यांदिशंशतजप्तेनलोष्टेनाऽभिप्रताडयेत् ।३३
ततोऽग्निमारुतारिभ्यो भयं तस्य विनश्यति। मनसैवजपेदेनांबद्धोमुच्येतबन्धनात् ।३४
भूतरोगविषादिभ्यः स्पृशञ्जप्त्वा विमोचयेत्। भूतादिभ्यो विमुच्येत जलं पीत्वाऽभिमन्त्रितम्।३५
अभिमन्त्र्यशतं भस्मन्यसेद्भूतादिशान्तये। शिरसाधारयेद्भस्ममन्त्रयित्वातदित्यृचा।३६
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सुखी जीवेच्छतं समाः। अशक्तः कारयेच्छान्तिं विप्रं दत्त्वा तु दक्षिणाम्।३७
अथ पुष्टिं श्रियं लक्ष्मीं पुष्पैर्हुत्वाऽप्नुयाद् द्विजः। श्रीकामो जुहुयात्पद्मै रक्तैः श्रियमवाप्नुयात्।३८
हुत्वाश्रियमवाप्नोतिजातीपुष्पैर्नवैः शुभैः। शालितण्डुलहोमेनश्रियमाप्नोतिपुष्कलाम्।३६
समिद्भिर्बिल्ववृक्षस्यहुत्वाश्रियमवाप्नुयात् । बिल्वस्यशकलैर्हुत्वापत्रैः पुष्पैः फलैरपि।४०
श्रियमाप्नोति परमां मूलस्यशकलैरपि। समिद्भिर्बिल्ववृक्षस्य पायसेन च सर्पिषा।४१
शतं शतं च सप्ताहं हुत्वाश्रियमवाप्नुयात्। लाजैस्त्रिमधुरोपेतैर्होमेकन्यामवाप्नुयात्।४२
अनेन विधिना कन्यावरमाप्नोतिवाञ्छितम्। रक्तोत्पलशतंहुत्वासप्ताहंहेमचाप्नुयात्।४३
सूर्यबिम्बे जलं हुत्वा जलस्थं हेमचाऽऽप्नुयात्। अन्नं हुत्वाऽऽप्नुयादन्नं व्रीहीन्व्रीहिपतिर्भवेत्।४४
करीषचूर्णैर्वत्सस्य हुत्वा पशुमवाप्नुयात्। प्रियङ्गुपायसाज्यैश्चमवेद्धोमादिभिः प्रजा।४५
निवेद्य भास्करायाऽन्नं पायसं होमपूर्वकम्। भोजयेत्तदृतुस्नातां पुत्रं परमवाप्नुयात्।४६
सप्ररोहाभिरार्द्राभिरायुर्हुत्वा समाप्नुयात्। समिद्भिः क्षीरवृक्षस्य हुत्वाऽऽयुषमावाप्नुयात्।४७
सप्ररोहाभीरार्द्राभिरक्ताभिर्मधुरत्रयैः । व्रीहीणां च शतंहुत्वाहेमचाऽऽयुरवाप्नुयात्।४८
सुवर्णकुड्मलं हुत्वा शतमायुरवाप्नुयात्। दूर्वाभिः पयसावाऽपिमधुनासर्पिषाऽपिवा।४६
शतं शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति। शमीसमिद्भिरन्नेन पयसा वा च सर्पिषा।५०
शतं शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति। न्यग्रोधसमिधो हुत्वा पायसं होमयेत्ततः।५१
शतं शतं च सप्ताहमपमृत्युं व्यपोहति। क्षीराहारोजपेन्मृत्योः सप्ताहाद्विजयीभवेत्।५२
अनश्नन्वाग्यतोजप्त्वात्रिरात्रंमुच्यतेयमात् । निमज्याप्सुजपेदेवंसद्योमृत्योर्विमुच्यते ।५३
जपेद्बिल्वं समाश्रित्य मासं राज्यमवाप्नुयात्। बिल्वं हुत्वाऽऽप्नुयाद्राज्यं समूलफलपल्लवम्।५४
हुत्वा पद्मशतं मासं राज्यमाप्नोत्यकण्टकम्। यवागूं ग्राममाप्नोति हुत्वा शालिसमन्वितम्।५५
अश्वत्थसमिधोहुत्वायुद्धादौजयमाप्नुयात् । अर्कस्यसमिधोहुत्वासर्वत्रविजयीभवेत् ।५६
संयुक्तैः पयसा पत्रैः पुष्पैर्वा वेतसस्य च। पायसेन शतं हुत्वा सप्ताहंवृष्टिमाप्नुयात्।५७
नाभिदघ्ने जले जप्त्वा सप्ताहंवृष्टिमाप्नुयात्। जलेभस्मशतंहुत्वामहावृष्टिंनिवारयेत् ।५८
पालाशाभिरवाप्नोति समिद्भिर्ब्रह्मवर्चसम्। पलाशकुसुमैर्हुत्वासर्वमिष्टमवाप्नुयात् ।५६
पयो हुत्वाऽऽप्नुयान्मेधामाज्यं बुद्धिमवाप्नुयात्। अभिमन्त्र्य पिबेद् ब्राह्मं रसं मेधामवाप्नुयात्।६०
पुष्पहोमे भवेद्वासस्तन्तुभिस्तद्विधं पटम्। लवणं मधुसम्मिश्रं हुत्वेष्टं वशमानयेत्।६१
नयेदिष्टं वशंहुत्वालक्ष्मीपुष्पैर्मधुप्लुतैः। नित्यमञ्जलिनाऽत्मानमभिषिञ्चेज्जलेस्थितः।६२
मतिमारोग्यमायुष्यमग्र्यं स्वास्थ्यमवाप्नुयात्। कुर्याद्विप्रोऽन्यमुद्दिश्य सोऽपि पुष्टिमवाप्नुयात्।६३
अथ चारुविधिर्मासं सहस्रं प्रत्यहं जपेत्। आयुष्कामः शुचौदेशेप्राप्नुयादायुरुत्तमम्।६४
आयुरारोग्यकामस्तु जपेन्मासद्वयं द्विजः। भवेदायुष्यमारोग्यंश्रियैमासत्रयं जपेत्।६५
आयुःश्रीपुत्रदाराद्याश्चतुर्भिश्चयशोजपात्। पुत्रदाराऽऽयुरारोग्यश्रियंविद्याञ्च पञ्चभिः।६६
एवमेववोत्तरान्कामान्मासैरेवोत्तरैर्व्रजेत् । एकपादोजपेदूर्ध्वबाहुः स्थित्वा निराश्रयः।६७

मासं शतत्रयं विप्रः सर्वान्कामानवाप्नुयात्। एवं शतोत्तरं जप्त्वासहस्रंसर्वमाप्नुयात्।६८
रुद्ध्वाप्राणमपानञ्च जपेन्मासं शतत्रयम्। यदिच्छेत्तदवाप्नोतिसहस्रात्परमाप्नुयात्।६९
एकपादो जपेदूर्ध्वबाहू रुद्ध्वाऽनिलं वशः। मासंशतमाप्नोतियदिच्छेदितिकौशिकः।७०
एवंशतत्रयंजप्त्वासहस्रंसर्वमाप्नुयात् । निमज्ज्याऽऽप्सुजपेन्मासंशतमिष्टमवाप्नुयात्।७१
एवं शतत्रयं जप्त्वा सहस्रं सर्वमाप्नुयात्। एकपादो जपेदूर्ध्वबाहूरुद्ध्वा निराश्रयः।७२
नक्तमश्नन्हविष्यान्नं वत्सरादृषितामियात्। गीरमोघा भवेदेवंजप्त्वासम्वत्सरद्वयम्।७३
त्रिवत्सरं जपेदेवं भवेत्त्रैकालदर्शनम्। आयाति भगवान्देवश्चतुः सम्वत्सरं जपेत्।७४
पञ्चभिर्वत्सरैरेवमणिमादिगुणोभवेत् । एवंषड्वत्सरं जप्त्वाकामरूपित्वमाप्नुयात्।७५
सप्तभिर्वत्सरैरेवममरत्वमवाप्नुयात् । मनुत्वं नवभिः सिद्धमिन्द्रत्वं दशभिर्भवेत्।७६
एकादशभिराप्नोति प्राजापत्यं सुवत्सरैः। ब्रह्मत्वं प्राप्नुयादेवं जप्त्वा द्वादशवत्सरान्।७७
एतेनैव जितालोकास्तपसा नारदादिभिः। शाकमन्ये परे मूलं फलमन्ये पयः परे।७८
घृतमन्ये परे सोममपरे चरुवृत्तयः। ऋषयः पक्षमश्नन्ति केचिद्भैक्ष्याशिनोऽहनि।७९
हविष्यमपरेऽश्नन्तः कुर्वन्त्येव परन्तपः। अथ शुद्ध्यै रहस्यानांत्रिसहस्रञ्जपेद्द्विजः।८०
मासं शुद्धो भवेत्स्तेयात्सुवर्णस्य द्विजोत्तमः। जपेन्मासं त्रिसाहस्रं सुरापः शुद्धिमाप्नुयात्।८१
मासंजपेत्त्रिसाहस्रं शुचिः स्याद्गुरुतल्पगः। त्रिसहस्रं जपेन्मासंकुटींकृत्वावनेवसन्।८२
ब्रह्महा मुच्यते पापादितिकौशिकभाषितम्। द्वादशाहंनिमज्ज्याप्सुसहस्रं प्रत्यहंजपेत्।८३
मुच्येरन्नंहसः सर्वे महापातकिनोद्विजाः। त्रिसाहस्रञ्जपेन्मासम्प्राणानायम्यवाग्यतः।८४
महापातकयुक्तो वा मुच्यते महतो भयात्। प्राणायामसहस्रेणब्रह्महाऽपिविशुध्यति ।८५
षट्कृत्वस्त्वभ्यसेदूर्ध्वं प्राणापानौसमाहितः। प्राणायामो भवेदेष सर्वपापप्रणाशनः।८६
सहस्रमभ्यभसेन्मासंक्षितिपः शुचितामियात्। द्वादशाहंत्रिसाहस्रञ्जपेद्धिगोवधेद्विजः ।८७
अगम्याऽऽगमनस्तेयहननाभक्ष्यभक्षणे । दशसाहस्रमभ्यस्तागायत्री शोधयेद् द्विजम्।८८
प्राणायामशतं कृत्वा मुच्यते सर्वकिल्विषात्। सर्वेषामेव पापानां सङ्करे सतिशुद्धये।८९
सहस्रमभ्यसेन्मासं नित्यजापी वने वसन्। उपवाससमं जप्यं त्रिसहस्रंतदित्यृजम्।९०
चतुर्विंशतिसाहस्रमभ्यस्तात्कृच्छ्रसञ्ज्ञिता। चतुः षष्टि सहस्राणि चान्द्रायणसमानि तु।९१
शतकृत्वोऽभ्यसेन्नित्यं प्राणानायम्यसन्ध्ययोः। तदित्यृचमवाप्नोति सर्वपापक्षयं परम्।९२
निमज्ज्याऽप्सुजपेन्नित्यंशतकृत्वस्तदित्यृचम्। ध्यायन्देवींसूर्यरूपांसर्वपापैः प्रमुच्यते।९३
इति ते सम्यगाख्याताः शान्तिशुद्ध्यादिकल्पनाः। रहस्यातिरहस्याश्च गोपनीयास्त्वया सदा।९४
इति सङ्क्षेपतः प्रोक्तः सदाचारस्यसङ्ग्रहः। विधिनाचरणादस्यमायादुर्गाप्रसीदति ।९५
नैमित्तिकञ्च नित्यञ्च काम्यं कर्म यथाविधि। आचरेन्मनुजः सोऽयं भुक्तिमुक्तिफलाप्तिभाक्।९६
आचारः प्रथमो धर्मो धर्मस्य प्रभुरीश्वरी। इत्युक्तः सर्वशास्त्रेषु सदाचारफलम्महत्।९७
आचारवान्सदापूतः सदैवाऽऽचारवान्सुखी। आचारवान्सदाधन्यः सत्यंसत्यञ्चनारद।९८
देवीप्रसादजनकं सदाचारविधानकम्। यदपि शृणुयान्मर्त्योमहासम्पत्तिसौख्यभाक्।९९
सदाचारेणसिद्धेच्चऐहिकामुष्मिकंसुखम् । तदेवतेमयाप्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि।१००

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायामेकादशस्कन्धे सदाचारनिरूपणं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः।।२४।।

एकादशस्कन्धः समाप्तः।।११।।

।।श्रीगणेशाय नमः।।

देवीभागवत पुराणम्

द्वादशः स्कन्धः

* प्रथमोऽध्यायः *

गायत्रीविचारवर्णनम्

नारद उवाच

सदाचारविधिदेव! भवता वर्णितः प्रभो!। तस्याऽप्यतुलमाहात्म्यंसर्वपापविनाशनम्।१
श्रुतं भवन्मुखाम्भोजच्युतं देवीकथाऽमृतम्। व्रतानि यानि चोक्तानि चान्द्रायणमुखानि ते।२
दुःखसाध्यानि जानीमः कर्तृसाध्यानि तानि च। तदस्मात्साम्प्रतं यत्तु सुखसाध्यं शरीरिणाम्।३
देवीप्रसादजनं सुखानुष्ठानसिद्धिदम्। तत्कर्म वदमेस्वामिन्कृपापूर्वं सुरेश्वर!।४
सदाचारविधौ यश्च गायत्रीविधिरीरितः। तस्मिन्मुख्यतमं किं स्यात्किम्वा पुण्याधिकप्रदम्।५
ये गायत्रीगता वर्णास्तत्त्वसङ्ख्यास्त्वयेरिताः। तेषां के ऋषयः प्रोक्ताः कानि च्छन्दांसि वै मुने!।६
तेषां का देवताः प्रोक्ताः सर्वं कथय मे प्रभो!। महत्कौतूहलं मे च मानसे परिवर्तते।७

श्रीनारायण उवाच

कुर्यादन्यन्नवा कुर्यादनुष्ठानादिकं तथा। गायत्रीमात्रनिष्ठस्तु कृतकृत्यो भवेद्द्विजः।८
सन्ध्याऽसु चाऽर्घ्यदानञ्च गायत्रीजपमेव च। सहस्रत्रितयं कुर्वन्सुरैः पूज्योभवेन्मुने!।९

न्यासान्करोतु वा मा वा गायत्रीमेव चाऽभ्यसेत्।
ध्यात्वा निर्व्याजया वृत्त्या सच्चिदानन्दरूपिणीम् ।।१०।।

यदक्षरैकसंसिद्धेः स्पर्धते ब्राह्मणोत्तमः। हरिशङ्करकञ्जोत्थसूर्यचन्द्रहुताशनैः।११
अथाऽतः श्रूयतां ब्रह्मन्वर्णऋष्यादिकास्तथा। छन्दांसि देवतास्तद्वत्क्रमात्तत्त्वानि चैव हि।१२
वामदेवोऽत्रिर्वसिष्ठः शुक्रः कण्वः पराशरः। विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनको महान्।१३
याज्ञवल्क्योभरद्वाजो जमदग्निस्तपोनिधिः। गौतमो मुद्गलश्चैव वेदव्यासश्च लोमशः।१४

अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्यो माण्डुकस्तथा।
दुर्वासास्तपसां श्रेष्ठो नारदः कश्यपस्तथा ।।१५।।

इत्येते ऋषयः प्रोक्ता वर्णानां क्रमशो मुने!। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्च्वबृहतीपङ्क्तिरेवच।१६
त्रिष्टुभं जगती चैव तथाऽतिजगती मता। शक्वर्यतिशक्वरी च धृतिश्चाऽतिधृतिस्तथा।१७
विराट्प्रस्तारपङ्क्तिश्चकृतिः प्रकृतिराकृतिः। विकृतिः संकृतिश्चैवाक्षरपङ्क्तिस्तथैवच।१८

भूर्भुवः स्वरितिच्छन्दस्तथा ज्योतिष्मती स्मृतम्।
इत्येतानि च छन्दांसि कीर्तितानि महामुने! ।।१९।।

दैवतानि शृणु प्राज्ञ! तेषामेवानुपूर्वशः। आग्नेयं प्रथमं प्रोक्तं प्राजापत्यं द्वितीयकम्।२०
तृतीयञ्च तथा सौम्यमीशानञ्च चतुर्थकम्। सावित्रं पञ्चमं प्रोक्तं षष्ठमादित्यदैवतम्।२१
बार्हस्पत्यं सप्तमं तु मैत्रावरुणमष्टमम्। नवमं भगदैवत्यं दशमं चार्यमेश्वरम्।२२
गणेशमेकादशकं त्वाष्ट्रं द्वादशकं स्मृतम्। पौष्णं त्रयोदशं प्रोक्तमैद्राग्नञ्च चतुर्दशम्।२३
वायव्यं पञ्चदशकं वामदेव्यञ्च षोडशम्। मैत्रावरुणिदैवत्यं प्रोक्तं सप्तदशाक्षरम्।२४
अष्टादशं वैश्वदेवमूनविंशं तु मातृकम्। वैष्णवं विंशतितमं वसुदैवतमीरितम्।२५

एकविंशतिसङ्ख्याकं द्वाविंशंरुद्रदैवतम्। त्रयोविंशञ्चकौबेरमाश्विनंतत्त्वसङ्ख्यकम्। २६
चतुर्विंशतिवर्णानां देवतानाञ्च सङ्ग्रहः। कथितः परमश्रेष्ठोमहापापैकशोधनः।
यदाकर्णनमात्रेण साङ्गं जाप्यफलं मुने!।। २७।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वादशस्कन्धे गायत्रीविचारो नाम प्रथमोऽध्यायः ।।१।।

* द्वितीयोऽध्यायः *

गायत्रीशक्त्यादिकथनम्

श्रीनारायण उवाच

वर्णानांशक्तयः काश्चताः शृणुष्वमहामुने!। वामदेवीप्रियासत्याविश्वाभद्राविलासिनी। १
प्रभावती जया शान्ता कान्ता दुर्गा सरस्वती। विद्रुमा च विशालेशा व्यापिनी विमला तथा। २
तमोऽपहारिणीसूक्ष्मा विश्वयोनिर्जयावशा। पद्मालयापराशोभाभद्राचत्रिपदास्मृता । ३
चतुर्विंशतिवर्णानां शक्तयः समुदाहृताः। अतः परं वर्णवर्णान्व्याहरामि यथातथम्। ४
चम्पका अतसीपुष्पसन्निभं विद्रुमं तथा। स्फटिकाकारकञ्चैव पद्मपुष्पसमप्रभम्। ५
तरुणादित्यसङ्काशं शङ्खकुन्देन्दुसन्निभम्। प्रवालपद्मपत्राभं पद्मरागसमप्रभम्। ६
इन्द्रनीलमणिप्रख्यं मौक्तिकं कुङ्कुमप्रभम्। अञ्जनाभञ्च रक्तञ्च वैदूर्यं क्षौद्रसन्निभम्। ७
हारिद्रकुन्ददुग्धाभं रविकान्तिसमप्रभम्। शुकपुच्छनिभं तद्वच्छतपत्रनिभं तथा। ८
केतकीपुष्पसङ्काशं मल्लिकाकुसुमप्रभम्। करवीरश्च इत्येते क्रमेण परिकीर्तिताः। ९
वर्णाः प्रोक्ताश्च वर्णानां महापापविशोधनाः। पृथिव्यापस्तथातेजोवायुराकाशएवच । १०
गन्धो रसश्च रूपञ्च शब्दः स्पर्शस्तथैवच। उपस्थं पायुपादञ्चपाणीवागपिचक्रमात्। ११
घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक्श्रोत्रञ्च त परम्। प्राणोऽपानस्तथा व्यानः समानश्च ततः परम्। १२
तत्त्वान्येतानि वर्णानां क्रमशः कीर्तितानि तु। अतः परं प्रवक्ष्यामिवर्णमुद्राः क्रमेणतु। १३
सुमुखं सम्पुटञ्चैव विततं विस्तृतं तथा। द्विमुखं त्रिमुखञ्चैव चतुः पञ्चमुखं तथा। १४
षण्मुखाऽधोमुखञ्चैव व्यापकाञ्जलिकं तथा। शकटं यमपाशञ्चग्रथितंसन्मुखोन्मुखम्। १५
विलम्बम्मुष्टिकञ्चैव मत्स्यं कूर्मं वराहकम्। सिंहाक्रान्तं महाक्रान्तं मुद्गरं पल्लवं तथा। १६
त्रिशूलयोनी सुरभिश्चाक्षमालाचलिङ्गकम्। अम्बुजञ्चमहामुद्रास्तुर्यरूपाः प्रकीर्तिताः। १७
इत्येताः कीर्तिता मुद्रावर्णानां ते महामुने!। महापापक्षयकराः कीर्तिदाः कान्तिदामुने!। १८

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वादशस्कन्धे गायत्रीशक्त्या दिप्रतिपादनंनामद्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

* तृतीयोऽध्यायः *

गायत्रीमन्त्रकवचवर्णनम्

नारद उवाच

स्वामिन्सर्वजगन्नाथ! संशयोऽस्ति ममप्रभो!। चतुः षष्टिकलाभिज्ञपातकाद्योगविद्वर। १
मुच्यतेकेन पुण्येन ब्रह्मरूपः कथं भवेत्। देहश्च देवतारूपो मन्त्ररूपो विशेषतः। २
कर्म तच्छ्रोतुमिच्छामि न्यासञ्च विधिपूर्वकम्। ऋषिश्छन्दोऽधिदैवञ्च ध्यानञ्च विधिवत्प्रभो!। ३

श्रीनारायण उवाच

अस्त्येकं परमं गुह्यं गायत्रीकवचं तथा। पठनाद्धारणान्मर्त्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते। ४

सर्वान्कामानवाप्नोति देवीरूपश्च जायते। गायत्रीकवचस्याऽस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।५
ऋषयोऋग्यजुः सामाऽथर्वश्छन्दांसि नारद! । ब्रह्मरूपादेवतोक्ता गायत्री परमाकला।६
तद्बीजंभर्गइत्येषाशक्तिरुक्तामनीषिभिः । कीलकञ्चधियः प्रोक्तंमोक्षार्थे विनियोजनम्।७
चतुर्भिर्हृदयं प्रोक्तं त्रिभिर्वर्णैः शिरः स्मृतम्। चतुर्भिः स्याच्छिखा पश्चात्त्रिभिस्तु कवचं स्मृतम्।८
चतुर्भिर्नेत्रमुद्दिष्टं चतुर्भिः स्यात्तदस्त्रकम्। अथध्यानंप्रवक्ष्यामिसाधकाभीष्टदायकम्।९
मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाऽङ्कुशकशा शुभ्रं कपालंगुणं शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।१०
गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे। ब्रह्मसन्ध्यातु मेपश्चादुत्तरायांसरस्वती।११
पार्वतीमे मे दिशं रक्षेत्पावकी जलशायिनी। यातुधानीदिशं रक्षेद्यातुधानभयङ्करी।१२
पावमानी दिशं रक्षेत्पवमानविलासिनी। दिशं रौद्री च मे पातुरुद्राणी रुद्ररूपिणी।१३
ऊर्ध्वंब्रह्माणि (णी) मेरक्षेदधस्ताद्वैष्णवीतथा। एवं दशदिशोरक्षेत्सर्वाङ्गंभुवनेश्वरी।१४
तत्पदं पातुमे पादौ जङ्घेमे सवितुः पदम्। वरेण्यं कटिदेशेतु नाभिं भर्गस्तथैव च।१५
देवस्यमे तद्धृदयं धीमहीति च गल्लयोः। धियः पदञ्च मे नेत्रेयः पदंमे ललाटकम्।१६
नः पातु मे पदं मूर्ध्नि शिखायांमेप्रचोदयात्। तत्पदंपातुमूर्धानंसकारः पातुभालकम्।१७
चक्षुषी तु विकारार्णस्तुकारस्तु कपोलयोः। नासापुटं वकरार्णोरिकारस्तुमुखे तथा।१८
णिकार ऊर्ध्वमोष्ठन्तुयकारस्त्वधरोष्ठकम्। आस्यमध्येभकारार्णोर्गोकारश्चिबुकेतथा।१९
देकारः कण्ठदेशेतु वकारः स्कन्धदेशकम्। स्यकारोदक्षिणंहस्तंधीकारोवामहस्तकम्।२०
मकारो हृदयं रक्षेद्धिकार उदरे तथा। धिकारो नाभिदेशे तु योकारस्तु कटिं तथा।२१
गुह्यं रक्षतु योकार ऊरू द्वौ नः पदाक्षरम्। प्रकारोजानुनीरक्षेच्चोकारोजङ्घदेशकम् ।२२
दकारं गुल्फदेशे तु यकारः पदयुग्मकम्। तकारव्यञ्जनञ्चैव सर्वाङ्गम्मे सदाऽवतु।२३
इदं तु कवचं दिव्यं बाधाशतविनाशनम्। चतुः षष्टिकलाविद्यादायकं मोक्षकारकम्।२४
मुच्यते सर्वपापेभ्यः परंब्रह्माऽधिगच्छति। पठनाच्छ्रावणाद्वाऽपिगोसहस्रफलं लभेत्।२५

इति श्रीदेवीभागवतेमहापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांद्वादशस्कन्धे गायत्रीमन्त्रकवचं नाम तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

* चतुर्थोऽध्यायः *

गायत्रीहृदयवर्णनम्

नारद उवाच

भगवन्देवदेवेश ! भूतभव्यजगत्प्रभो! । कवचञ्च श्रुतं दिव्यं गायत्रीमन्त्रविग्रहम्।१
अधुनाश्रोतुमिच्छामि गायत्रीहृदयं परम्। यद्धारणाद्भवेत्पुण्यंगायत्रीजपतोऽखिलम्।२

श्रीनारायण उवाच

देव्याश्चहृदयं प्रोक्तंनारदाथर्वणेस्फुटम्। तदेवाऽहं प्रवक्ष्यामि रहस्याऽतिरहस्यकम्।३
विराड्रूपांमहादेवींगायत्रींवेदमातरम् । ध्यात्वातस्यास्त्वथाङ्गेषुध्यायेदेताश्चदेवताः।४
पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्याद्भावयेत्स्वतनौ तथा। देवीरूपे निजे देहे तन्मयत्वायसाधकः।५
नादेवोऽभ्यर्चयेद्देवमिति वेदविदो विदुः। ततोऽभेदायकाये स्वेभावयेद्देवता इमाः।६
अथ तत्सम्प्रवक्ष्यामि तन्मयत्वमथो भवेत्। गायत्रीहृदयस्याऽस्याऽप्यहमेव ऋषिः स्मृतः।७

गायत्रीच्छन्द उद्दिष्टं देवता परमेश्वरी। पूर्वोक्तेन प्रकारेण कुर्यादङ्गानि षट्क्रमात्।
आसने विजने देशे ध्यायेदेकाग्रमानसः ।।८।।

अथाऽर्थन्यासः। द्यौर्मूर्ध्नि दैवतम्। दन्तपङ्क्तावश्विनौ। उभे सन्ध्ये चौष्ठौ। मुखमग्निः। जिह्वा सरस्वती। ग्रीवायां तु बृहस्पतिः। स्तनयोर्वसवोऽष्टौ। बाह्वोर्मरुतः। हृदये पर्जन्यः। आकाशमुदरम्। नाभावन्तरिक्षम्। कट्योरिन्द्राग्नी। जघने विज्ञानघनः प्रजापतिः। कैलाशमलयेऊरू। विश्वेदेवा जान्वोः। जङ्घायां कौशिकः। गुह्यमयने। ऊरू पितरः। पादौ पृथिवी। वनस्पतयोऽङ्गुलीषु। ऋषयो रोमाणि। नखानि मुहूर्तानि। अस्थिषु ग्रहाः। असृङ्मांसमृतवः। सम्वत्सरा वै निमिषम्। अहोरात्रावादित्यश्चन्द्रमाः। प्रवरां दिव्यां गायत्रीं सहस्रनेत्रां शरणमहं प्रपद्ये। ॐ तत्सवितुर्वरेण्याय नमः। ॐ तत्पूर्वाजयाय नमः। तत्प्रातरादित्याय नमः। तत्प्रातरादित्यप्रतिष्ठायैनमः। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातरधीयानो अपापो भवति। सर्वतीर्थेषु स्नातो भवति। सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। अवाच्यवचनात्पूतो भवति। अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति। अभोज्यभोजनात्पूतो भवति। अचोष्यचोषणात्पूतो भवति। असाध्यसाधनात्पूतो भवति। दुष्प्रतिग्रहशतसहस्रात्पूतो भवति। सर्वप्रतिग्रहात्पूतोभवति। पङ्क्तिदूषणात्पूतो भवति। अनृतवचनात्पूतो भवति। अथाऽब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति। अनेनहृदयेनाऽधीतेन क्रतुसहस्रेणेष्टं भवति। षष्टिशतसहस्रगायत्र्या जप्यानि फलानि भवन्ति। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयेत्। तस्यसिद्धिर्भवति। य इदं नित्यमधीयानो ब्राह्मणः प्रातः शुचिः सर्वपापैः प्रमुच्यतइति। ब्रह्मलोके महीयते। इत्याह भगवान् श्रीनारायणः।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वादशस्कन्धे गायत्रीहृदयं नाम चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

* पञ्चमोऽध्यायः *

श्रीगायत्रीस्तोत्रवर्णनम्

नारद उवाच

भक्तानुकाम्पन्सर्वज्ञ ! हृदयंपापनाशनम्। गायत्र्याः कथितंतस्माद्गायत्र्याः स्तोत्रमारय। १

श्रीनारायण उवाच

आदिशक्ते जगन्मातर्भक्तानुग्रहकारिणि । सर्वत्रव्यापिकेऽनन्तेश्रीसन्ध्येतेनमोऽस्तुते। २
त्वमेवसन्ध्यागायत्रीसावित्री च सरस्वती। ब्राह्मीचवैष्णवीरौद्रीरक्तश्वेतासितेतरा। ३
प्रातर्बालाच मध्याह्ने यौवनस्थाभवेत्पुनः। वृद्धा सायं भगवतीचिन्त्यतेमुनिभिः सदा। ४
हंसस्थागरुडारूढा तथावृषभवाहिनी। ऋग्वेदाध्यायिनीभूमौ दृश्यते यातपस्विभिः। ५
यजुर्वेदं पठन्तीच अन्तरिक्षे विराजते। सासामगाऽपि सर्वेषु भ्राम्यमाणातथाभुवि। ६
रुद्रलोकं गता त्वंहिविष्णुलोकनिवासिनी। त्वमेवब्रह्मणोलोकेऽमर्त्यानुग्रहकारिणी। ७
सप्तर्षिप्रीतिजननीमाया बहुवरप्रदा। शिवयोः करनेत्रोत्था ह्यश्रुस्वेदसमुद्भवा। ८
आनन्दजननीदुर्गादशधा परिपठ्यते। वरेण्या वरदाचैव वरिष्ठा वरवर्णिनी। ९
गरिष्ठाचवरार्हाचावरारोहा च सप्तमी। नीलगङ्गातथा सन्ध्या सर्वदा भोगमोक्षदा। १०
भागीरथी मर्त्यलोके पाताले भोगवत्यपि। त्रिलोकवाहिनी देवी स्थानत्रयनिवासिनी। ११
भूर्लोकस्था त्वमेवाऽसि धरित्री शोकधारिणी। भुवो लोके वायुशक्तिः स्वर्लोके तेजसां निधिः। १२

महर्लोके महासिद्धिर्जनलोके जनेत्यपि। तपस्विनी तपोलोके सत्यलोकेतु सत्यवाक्।१३
कमलाविष्णुलोके च गायत्री ब्रह्मलोकदा। रुद्रलोकेस्थितागौरीहरार्धाङ्गनिवासिनी।१४
अहमो महतश्चैव प्रकृतिस्त्वं हि गीयसे। साम्यावस्थात्मिकात्वंहिशबलब्रह्मरूपिणी।१५
ततः परा पराशक्तिः परमा त्वं हि गीयसे। इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिर्ज्ञानशक्तिस्त्रिशक्तिदा।१६
गङ्गाच यमुनाचैव विपाशा च सरस्वती। सरयूर्देविका सिन्धुर्नर्मदैरावती तथा।१७
गोदावरी शतद्रूश्च कावेरीदेवलोकगा। कौशिकीचन्द्रभागाचवितस्ता च सरस्वती।१८
गण्डकी तापिनी तोया गोमती वेत्रवत्यपि। इडाच पिङ्गलाचैवसुषुम्नाचतृतीयका।१९
गान्धारीहस्तिजिह्वा च पूषापूषात्तथैव च। अलम्बुसा कुहूश्चैव शङ्खिनीप्राणवाहिनी।२०
नाडी च त्वं शरीरस्था गीयसे प्राक्तनैर्बुधैः। हृत्पद्मस्था प्राणशक्तिः कण्ठस्था स्वप्ननायिका।२१

तालुस्था त्वं सदाधारा बिन्दुस्था बिन्दुमालिनी ।
मूले तु कुण्डलीशक्तिर्व्यापिनी केशमूलगा ।।२२।।

शिखामध्यासनात्वंहिशिखाग्रेतुमनोन्मनी। किमन्यद्बहुनोक्तेनयत्किञ्चिज्जगतीत्रये ।२३
तत्सर्वंत्वंमहादेविश्रियेसन्ध्येनमोऽस्तुते । इतीदंकीर्तितंस्तोत्रंसन्ध्यायांबहुपुण्यदम्।२४
महापापप्रशमनं महासिद्धिविधायकम्। यइदं कीर्तयेत्स्तोत्रं सन्ध्याकालेसमाहितः।२५
अपुत्रः प्राप्नुयात्पुत्रं धनार्थी धनमाप्नुयात्। सर्वतीर्थतपोदानयज्ञयोगफलं लभेत्।२६
भोगान्भुक्त्वा चिरंकालमन्ते मोक्षमवाप्नुयात्। तपस्विभिः कृतं स्तोत्रं स्नानकाले तु यः पठेत्।२७
यत्रकुत्रजलेमग्नः सन्ध्यामज्जनजंफलम्। लभते नात्रसन्देहः सन्देहः सत्यंसत्यंचनारद।२८
श्रृणुयाद्योऽपितद्भक्त्यासतु पापात्प्रमुच्यते। पीयूषसदृशंवाक्यंसन्ध्योक्तं नारदेरितम्।२९

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायां द्वादशस्कन्धे श्रीगायत्रीस्तोत्रं नाम पञ्चमोऽध्यायः।।५।।

* षष्ठोऽध्यायः *

गायत्रीसहस्रनामस्तोत्रवर्णनम्

नारद उवाच

भगवन्सर्वधर्मज्ञ ! सर्वशास्त्रविशारद!। श्रुतिस्मृतिपुराणानां रहस्यं त्वन्मुखाच्छ्रुतम्।१
सर्वपापहरं देव येन विद्या प्रवर्तते। केन वा ब्रह्मविज्ञानं किं नु वा मोक्षसाधनम्।२
ब्राह्मणानांगतिः केन केन वामृत्युनाशनम्। ऐहिकामुष्मिकफलं केन वा पद्मलोचन!।३
वक्तुमर्हस्यशेषेण सर्वं निखिलमादितः ।

श्रीनारायण उवाच

साधु साधु महाप्राज्ञ! सम्यक्पृष्टं त्वयाऽनघ! ।।४।।

श्रृणु वक्ष्यामियत्नेनगायत्र्यष्टसहस्रकम्। नाम्नांशुभानां दिव्यानां सर्वपापविनाशनम्।५
सृष्ट्यादौ यद्भगवता पूर्वं प्रोक्तं ब्रवीमि ते। अष्टोत्तरसहस्रस्य ऋषिर्ब्रह्माप्रकीर्तितः।६
छन्दोऽनुष्टुप्तथादेवीगायत्रीदेवतास्मृता। हलोबीजनानितस्यैवस्वराः शक्तयईरिताः।७
अङ्गन्यासकरन्यासावुच्येते मातृकाक्षरैः। अथध्यानं प्रवक्ष्यामि साधकानांहितायवै।८

रक्तश्वेतहिरण्यनीलधवलैर्युक्तां त्रिनेत्रोज्ज्वलां ।
रक्तां रक्तनवस्रजं मणिगणैर्युक्तां कुमारीमिमाम् ।
गायत्रीं कमलासनां करतलव्यानद्धकुण्डाम्बुजां ।
पद्माक्षीञ्च वरस्रजञ्च दधतीं हंसाधिरूढां भजे ।।९।।

अचिन्त्यलक्षणाऽव्यक्ताप्यर्थमातृमहेश्वरी । अमृतार्णवमध्यस्थाप्यजिताचापराजिता ।१०
अणिमादिगुणाधाराप्यर्कमण्डलसंस्थिता । अजराऽजाऽपराधर्मा अक्षसूत्रधराऽधरा ।११
अकारादिक्षकारान्ताप्यरिषड्वर्गभेदिनी । अञ्जनादिप्रतीकाशाऽप्यञ्जनाद्रिनिवासिनी ।१२
अदितिश्चाऽजपा विद्याप्यरविन्दनिभेक्षणा । अन्तर्बहिः स्थिता विद्या ध्वंसिनी चाऽन्तरात्मिका ।१३
अजाचाऽजमुखावासाऽप्यरविन्दनिभानना । अर्धमात्राऽर्थदानज्ञाऽप्यरिमण्डलमर्दिनी ।१४
असुरघ्नी ह्यमावास्याप्यलक्ष्मीघ्नन्त्यजार्चिता । आदिलक्ष्मीश्चाऽऽदिशक्तिराकृतिश्चायतानना ।१५
आदित्यपदवीचाराप्यादित्यपरिसेविता । आचार्यावर्तनाचाराप्यादिमूर्तिनिवासिनी ।१६

आग्नेयी चामरी चाऽऽद्या चाऽऽराध्या चाऽऽसनस्थिता ।
आधारनिलयाधारा चाकाशान्तनिवासिनी ।।१७।।

आद्याक्षरसमायुक्ता चान्तराकाशरूपिणी । आदित्यमण्डलगताचान्तरध्वन्तनाशिनी ।१८
इन्दिरा चेष्टदा चेष्टा चेन्दरीवरनिभेक्षणा । इरावती चेन्द्रपदा चेन्द्राणीचेन्दुरूपिणी ।१९
इक्षुकोदण्डसंयुक्ता चेषुसन्धानकारिणी । इन्द्रनीलसमाकारा चेडापिङ्गलरूपिणी ।२०
इन्द्राक्षीचेश्वरी देवी चेहात्रयविवर्जिता । उमाचोषा ह्युडुनिभा उर्वारुकफलानना ।२१
उडुप्रभाचोडुमता ह्युडुपाह्युडुमध्यगा । ऊर्ध्वा चाप्यूर्ध्वकेशीचाप्यूर्ध्वाधोगतिभेदिनी ।२२
ऊर्ध्वबाहुप्रिया चोर्मिमाला वाग्ग्रन्थदायिनी । ऋतञ्चर्षिर्ऋतुमतीऋषिदेवनमस्कृता ।२३
ऋग्वेदा ऋणहर्त्री च ऋषिमण्डलचारिणी । ऋद्धिदा ऋजुमार्गस्थाऋजुधर्माऋतुप्रदा ।२४
ऋग्वेदनिलया ऋज्वी लुप्तधर्मप्रवर्तिनी । लूतारिवरसम्भूता लूतादिविषहारिणी ।२५
एकाक्षरा चैकमात्रा चैका चैकैकनिष्ठता । ऐन्द्री ह्यैरावतारूढा चैहिकामुष्मिकप्रदा ।२६
ओङ्काराह्योषधी चोता चोतप्रोतनिवासिनी । और्वाह्यौषधसम्पन्नाऔपासनफलप्रदा ।२७
अण्डमध्यस्थिता देवीचाःकारमनुरूपिणी । कात्यायनी कालरात्रिः कामाक्षी कामसुन्दरी ।२८
कमला कामिनी कान्ताकामदाकालकण्ठिनी । करिकुम्भस्तनभराकरवीरसुवासिनी ।२९
कल्याणी कुण्डलवती कुरुक्षेत्रनिवासिनी । कुरुविन्ददलाकारा कुण्डलीकुमुदालया ।३०

कालजिह्वा करालास्या कालिका कालरूपिणी ।
कमनीयगुणा कान्तिः कलाधारा कुमुद्वती ।।३१।।

कौशिकीकमलाकाराकामचारप्रभञ्जिनी । कौमारी करुणापाङ्गी ककुबन्ताकरिप्रिया ।३२
केसरी केशवनुता कदम्बकुसुमप्रिया । कालिन्दीकालिकाकाञ्चीकलशोद्भवसंस्तुता ।३३
काममाता क्रतुमती कामरूपा कृपावती । कुमारी कुण्डनिलया किरातीकीरव ।३४
कैकेयी कोकिलालापा केतकी कुसुमप्रिया । कमण्डलुधराकालीकर्मनिर्मूलकारिणी ।३५
कलहंसगतिः कक्षा कृतकौतुकमङ्गला । कस्तूरीतिलकाकम्रा करीन्द्रगमना कुहूः ।३६
कर्पूरलेपना कृष्णा कपिला कुहराश्रया । कूटस्थाकुधराकम्राकुक्षिस्थाऽखिलविष्टपा ।३७
खड्गखेटकरा खर्वाखेचरीखगवाहना । खट्वाङ्गधारिणी ख्याताखगराजोपरिस्थिता ।३८
खलघ्नी खण्डितजरा खण्डाख्यानप्रदायिनी । खण्डेन्दुतिलकागङ्गागणेशगुहपूजिता ।३९
गायत्रीगोमतीगीतागान्धारीगामलोलुपा । गौतमीगामिनीगाधागन्धर्वाप्सरसेविता ।४०
गोविन्दचरणाक्रान्ता गुणत्रयविभाजिता । गन्धर्वी गह्वरी गोत्रागिरीशा गहनागमी ।४१
गुहावासा गुणवती गुरुपापप्रणाशिनी । गुर्वी गुणवती गुह्या गोप्तव्यागुणदायिनी ।४२
गिरिजा गुह्यमातङ्गी गरुडध्वजवल्लभा । गर्वापहारिणी गोदा गोकुलस्थागदाधरा ।४३
गोकर्णनिलयासक्ता गुह्यमण्डलवर्तिनी । घर्मदा घनदा घण्टा घोरदानवमर्दिनी ।४४

घृणिमन्त्रमयी घोषा घनसम्पातदायिनी। घण्टारवप्रिया घ्राणा घृणिसन्तुष्टकारिणी।४५
घनारिमण्डलाघूर्णा घृताची घनवेगिनी। ज्ञानधातुमयी चर्चा चर्चिता चारुहासिनी।४६
चटुला चण्डिका चित्राचित्रमाल्यविभूषिता। चतुर्भुजाचारुदन्ताचातुरीचरितप्रदा।४७
चूलिकाचित्रवस्त्रान्ताचन्द्रमः कर्णकुण्डला। चन्द्रहासाचारुदात्रीचकोरीचन्द्रहासिनी।४८
चन्द्रिका चन्द्रधात्री च चौरी चौरा च चण्डिका ।
चञ्चद्वाग्वादिनी चन्द्रचूडा चोरविनाशिनी ।।४६।।
चारुचन्दनलिप्ताङ्गी चञ्चच्चामरवीजिता। चारुमध्या चारुगतिश्चन्दिलाचन्द्ररूपिणी।५०
चारुहोमप्रिया चार्वाचरिता चक्रबाहुका। चन्द्रमण्डलमध्यस्था चन्द्रमण्डलदर्पणा।५१
चक्रवाकस्तनीचेष्टाचित्राचारुविलासिनी । चित्स्वरूपाचन्द्रवतीचन्द्रमाश्चन्दनप्रिया।५२
चोदयित्री चिरप्रज्ञा चातका चारुहेतुकी। छत्रयाता छत्रधरा छाया छन्दः परिच्छदा।५३
छायादेवी च्छिद्रनखा छन्नेन्द्रियविसर्पिणी। छन्दोऽनष्टुप्प्रतिष्ठान्ता छिद्रोपद्रवभेदिनी।५४
छदा छत्रेश्वरी छिन्ना छुरिका छेदनप्रिया। जननी जन्मरहिता जातवेदा जगन्मयी।५५
जाह्नवी जटिला जेत्री जरामरणवर्जिता। जम्बूद्वीपवतीज्वाला जयन्तीजलशालिनी।५६
जितेन्द्रिया जितक्रोधाजितामित्राजगत्प्रिया। जातरूपमयीजिह्वाजानकीजगतीजरा।५७
जनित्री जह्नुतनया जगत्त्रयहितैषिणी। ज्वालामुखी जपवतीज्वरघ्नी जितविष्टपा।५८
जिताक्रान्तमयी ज्वाला जाग्रती ज्वरदेवता। ज्वलन्ती जलदा ज्येष्ठा ज्याघोषास्फोटदिङ्मुखी।५६
जम्भिनीजृम्भणाजृम्भाज्वलन्माणिक्यकुण्डला। झिंझिका झणनिर्घोषा झंझामारुतवेगिनी।६०
झल्लरीवाद्यकुशला ञरूपा ञभूजा स्मृता। टङ्कबाणसमायुक्ता टङ्किनी टङ्कभेदिनी।६१
टङ्कीगणकृताघोषा टङ्कनीयमहोरसा। टङ्कारकारिणी देवी ठठशब्दनिनादिनी।६२
डामरी डाकिनी डिम्भा डुण्डमारैकनिर्जिता। डामरीतन्त्रमार्गस्था डमड्डमरुनादिनी।६३
डिण्डी रवसहाडिम्भलसत्क्रीडापरायणा। ढुण्ढिविघ्नेशजननीढक्काहस्ताढिलिव्रजा।६४
नित्यज्ञाना निरुपमा निर्गुणा नर्मदा नदी। त्रिगुणा त्रिपदा तन्त्रीतुलसीतरुणातरुः।६५
त्रिविक्रमपदाक्रान्ता तुरीयपदगामिनी। तरुणादित्यसङ्काशा तामसी तुहिनातुरा।६६
त्रिकालज्ञानसम्पन्ना त्रिवली च त्रिलोचना। त्रिशक्तिस्त्रिपुरा तुङ्गा तुरङ्गवदना तथा।६७
तिमिङ्गिलगिलातीव्रात्रिस्रोतातामसादिनी । तन्त्रमन्त्रविशेषज्ञातनुमध्यात्रिविष्टपा।६८
त्रिसन्ध्या त्रिस्तनी तोषासंस्था तालप्रतापिनी ।
ताटङ्किनी तुषाराभा तुहिनाचलवासिनी ।।६६।।
तन्तुजालसमायुक्ता तारहारावलिप्रिया। तिलहोमप्रिया तीर्था तमालकुसुमाकृतिः।७०
तारका त्रियुता तन्वी त्रिशङ्कुपरिवारिता। तलोदरी तिलाभूषा ताटङ्कप्रियवाहिनी।७१
त्रिजटा तित्तिरी तृष्णा त्रिविधा तरुणाकृतिः। तप्तकाञ्चनसंकाशातप्तकाञ्चनभूषणा।७२
त्रैयम्बका त्रिवर्गा च त्रिकालज्ञानदायिनी। तर्पणा तृप्तिदा तृप्ता तामसीतुम्बुरुस्तुता।७३
तार्क्ष्यस्था त्रिगुणाकारा त्रिभङ्गीतनुवल्लरिः। थात्कारी थारवा थान्ता दोहिनी दीनवत्सला।७४
दानवान्तकरी दुर्गा दुर्गासुरनिबर्हिणी। देवरीतिर्दिवारात्रिर्द्रौपदी दुन्दुभिस्वना।७५
देवयानी दुरावासा दारिद्र्योद्भेदिनी दिवा। दामोदरप्रिया दीप्ता दिग्वासा दिग्विमोहिनी।७६
दण्डकारण्यनिलया दण्डिनी देवपूजिता। देववन्द्या दिविषदा द्वेषिणीदानवाकृतिः।७७
दीनानाथस्तुता दीक्षा दैवतादिस्वरूपिणी। धात्री धनुर्धराधेनुर्धारिणीधर्मचारिणी।७८
धुरंधरा धराधारा धनदा धान्यदोहिनी। धर्मशीला धनाध्यक्षा धर्मवेदविशारदा।७६

धृतिर्धन्या धृतपदा धर्मराजप्रियाध्रुवा। धूमावती धूमकेशी धर्मशास्त्रप्रकाशिनी।८०
नन्दा नन्दप्रिया निद्रानृनुता नन्दनात्मिका। नर्मदा नलिनी नीलानीलकण्ठसमाश्रया।८१
नारायणप्रिया नित्या निर्मला निर्गुणा निधिः। निराधारा निरुपमा नित्यशुद्धा निरञ्जना।८२
नादबिन्दुकलातीता नादबिन्दुकलात्मिका। नृसिंहिनी नगधरा नृपनागविभूषिता।८३
नरकक्लेशशमनी नारायणपदोद्भवा। निरवद्या निराकारा नारदप्रियकारिणी।८४

नानाज्योतिः समाख्यातानिधिदानिर्मलात्मिका।
नवसूत्रधरानीतिर्निरुपद्रवकारिणी ॥८५॥

नन्दजा नवरत्नाढ्या नैमिषारण्यवासिनी। नवनीतप्रियानारी नीलजीमूतनिस्वना।८६
निमेषिणी नदीरूपा नीलग्रीवानिशीश्वरी। नामावलिर्निशुम्भघ्नीनागलोकनिवासिनी।८७
नवजाम्बूनदप्रख्या नागलोकाधिदेवता। नूपुराक्रान्तचरणा नरचित्तप्रमोदिनी।८८
निमग्ना रक्तनयना निर्घातसमनिस्वना। नन्दनोद्याननिलया निर्व्यूहोपरिचारिणी।८९
पार्वती परमोदारा परब्रह्मात्मिकापरा। पञ्चकोशविनिर्मुक्ता पञ्चपातकनाशिनी।९०
परचित्तविधानज्ञा पञ्चिका पञ्चरूपिणी। पूर्णिमा परमा प्रीतिः परतेजः प्रकाशिनी।९१
पुराणी पौरुषी पुण्या पुण्डरीकनिभेक्षणा। पातालतलनिर्मग्ना प्रीता प्रीतिविवर्धिनी।९२
पावनी पादसहिता पेशला पवनाशिनी। प्रजापतिः परिश्रान्ता पर्वतस्तनमण्डला।९३
पद्मप्रिया पद्मसंस्था पद्माक्षी पद्मसम्भवा। पद्मपत्रा पद्मपदा पद्मिनी प्रियभाषिणी।९४
पशुपाशविनिर्मुक्ता पुरन्ध्री पुरवासिनी। पुष्कला पुरुषा पर्वा पारिजातसुमप्रिया।९५
पतिव्रता पवित्राङ्गी पुष्पहासपरायणा। प्रज्ञावतीसुता पौत्री पुत्रपूज्या पयस्विनी।९६
पट्टिपाशधरा पङ्क्तिः पितृलोकप्रदायिनी। पुराणीपुण्यशीलाचप्रणतार्तिविनाशिनी।९७
प्रद्युम्नजननी पुष्टा पितामहपरिग्रहा। पुण्डरीकपुरावासा पुण्डरीकसमानना।९८
पृथुजङ्घा पृथुभुजा पृथुपादा पृथूदरी। प्रवालशोभापिङ्गाक्षी पीतवासाः प्रचापला।९९
प्रसवा पुष्टिदा पुण्या प्रतिष्ठा प्रणवागतिः। पञ्चवर्णापञ्चवाणीपञ्चिका पञ्जरस्थिता।१००
परमाया परज्योतिः परप्रीतिः परागतिः। पराकाष्ठा परेशानी पाविनी पावकद्युतिः।१०१
पुण्यभद्रा परिच्छेद्या पुष्पहासा पृथूदरी। पीताङ्गी पीतवसनापीतशय्या पिशाचिनी।१०२
पीतक्रिया पिशाचघ्नी पाटलाक्षी पटुक्रिया। पञ्चभक्षप्रियाचारा पूतना प्राणघातिनी।१०३
पुन्नागवनमध्यस्था पुण्यतीर्थनिषेविता। पञ्चाङ्गी च पराशक्तिः परमाह्लादकारिणी।१०४
पुष्पकाण्डस्थिता पूषा पोषिताऽखिलविष्टपा। पानप्रिया पञ्चशिखा पन्नगोपरिशायिनी।१०५
पञ्चमात्रात्मिका पृथ्वीपथिकापृथुदोहिनी। पुराणन्यायमीमांसापाटलीपुष्पगन्धिनी।१०६
पुण्यप्रजा पारदात्री परमार्गैकगोचरा। प्रवालशोभा पूर्णाशा प्रणवा पल्लवोदरी।१०७
फलिनी फलदा फल्गुः फूत्कारी फलकाकृतिः। फणीन्द्रभोगशयना फणिमण्डलमण्डिता।१०८
बालबाला बहुमता बालातपनिभांशुका। बलभद्रप्रिया बन्द्या वडवा बुद्धिसंस्तुता।१०९
बन्दीदेवी बिलवती बडिशघ्नी बलिप्रिया। बान्धवीबोधिताबुद्धिर्बन्धुककुसुमप्रिया।११०
बालभानुप्रभाकारा ब्राह्मीब्राह्मणदेवता। बृहस्पतिस्तुता वृन्दा वृन्दावनविहारिणी।१११
बालाकिनी बिलाहारा बिलवासा बहूदका। बहुनेत्रा बहुपदा बहुकर्णाऽवतंसिका।११२
बहुबाहुयुता बीजरूपिणी बहुरूपिणी। बिन्दुनादकलातीता बिन्दुनादस्वरूपिणी।११३
बद्धगोधाङ्गुलित्राणा बदर्याश्रमवासिनी। वृन्दारका बृहत्स्कन्धा बृहतीबाणपातिनी।११४
वृन्दाध्यक्षा बहुनुता वनिता बहुविक्रमा। बद्धपद्मासनासीना बिल्वपत्रतलस्थिता।११५

बोधिद्रुमनिजावासा बडिस्था बिन्दुदर्पणा। बालाबाणासनवती बडवानलवेगिनी ।११६
ब्रह्माण्डवहिरन्तः स्था ब्रह्मकङ्कणसूत्रिणी। भवानी भीषणवती भाविनी भयहारिणी ।११७
भद्रकाली भुजङ्गाक्षी भारती भारताशया। भैरवी भीषणाकाराभूतिदाभूतिमालिनी ।११८
भामिनी भोगनिरता भद्रदा भूरिविक्रमा। भूतवासा भृगुलता भार्गवी भूसुरार्चिता ।११६
भागीरथी भोगवती भवनस्थाभिषग्वरा। भामिनीभोगिनीभाषाभवानीभूरिदक्षिणा ।१२०
भर्गात्मिका भीमवती भवबन्धविमोचिनी। भजनीया भूतधात्री रञ्जिता भुवनेश्वरी ।१२१
भुजङ्गवलया भीमा भेरुण्डा भागधेयिनी। मातामाया मधुमती मधुजिह्वा मधुप्रिया ।१२२
महादेवी महाभागा मालिनी मीनलोचना। मायातीता मधुमती मधुमांसा मधुद्रवा ।१२३
मानवी मधुसम्भूता मिथिलापुरवासिनी। मधुकैटभसंहर्त्री मेदिनी मेघमालिनी ।१२४
मन्दोदरी महामाया मैथिली मसृणप्रिया। महालक्ष्मीर्महाकाली महाकन्यामहेश्वरी ।१२५
माहेन्द्री मेरुतनया मन्दारकुसुमार्चिता। मञ्जुमञ्जीरचरणा मोक्षदा मञ्जुभाषिणी ।१२६
मधुरद्राविणी मुद्रा मलया मलयान्विता। मेधामरकतश्यामा मागधी मेनकात्मजा ।१२७
महामारी महावीरा महाश्यामा मनुस्तुता। मातृका मिहिराभासामुकुन्दपदविक्रमा ।१२८
मूलाधारस्थिता मुग्धा मणिपूरकवासिनी। मृगाक्षीमहिषाऽऽरूढामहिषासुरमर्दिनी ।१२६
योगाऽऽसनायोगगम्यायोगायौवनकाश्रया। यौवनीयुद्धमध्यस्थायमुनायुगधारिणी ।१३०
यक्षिणी योगयुक्ता च यक्षराजप्रसूतिनी। यात्रायानविधानयज्ञा यदुवंशसमुद्भवा ।१३१
यकारादिहकारान्ता याजुषी यज्ञरूपिणी। यामिनी योगनिरता यातुधानभयङ्करी ।१३२
रुक्मिणी रमणी रामा रेवती रेणुका रतिः। रौद्रीरौद्रप्रियाकारा राममातारतिप्रिया ।१३३
रोहिणी राज्यदा रेवा रमाराजीवलोचना। राकेशी रूपसम्पन्ना रत्नसिंहासनस्थिता ।१३४
रक्तमाल्याम्बरधरा रक्तगन्धानुलेपना। राजहंससमाऽऽरूढा रम्भा रक्तबलिप्रिया ।१३५
रमणीययुगाधारा राजिताऽखिलभूतला। रुरुचर्मपरीधाना रथिनी रत्नमालिका ।१३६
रोगेशी रोगशमनी राविणी रोमहर्षिणी। रामचन्द्रपदाक्रान्ता रावणच्छेदकारिणी ।१३७
रत्नवस्त्रपरिच्छन्नारथस्थारुक्मभूषणा। लज्जाधिदेवता लोला ललिता लिङ्गधारिणी ।१३८
लक्ष्मीर्लोला लुप्तविषालोकिनी लोकविश्रुता। लज्जा लम्बोदरी देवी ललना लोकधारिणी ।१३६
वरदा वन्दिता विद्यावैष्णवीविमलाकृतिः। वाराहीविरजावर्षावरलक्ष्मीर्विलासिनी ।१४०
विनता व्योममध्यस्था वारिजासनसंस्थिता। वारुणी वेणुसम्भूता वीतिहोत्रा विरूपिणी ।१४१
वायुमण्डलमध्यस्था विष्णुरूपा विधिप्रिया। विष्णुपत्नी विष्णुमती विशालाक्षी वसुन्धरा ।१४२
वामदेवप्रिया बेला वज्रिणी वसुदोहिनी। वेदाक्षरपरीताङ्गी वाजपेयफलप्रदा ।१४३
वासवी वामजननी वैकुण्ठनिलया वरा। व्यासप्रिया वर्मधरा वाल्मीकिपरिसेविता ।१४४
शाकम्भरी शिवा शान्ता शारदाशरणागतिः। शातोदरीशुभाचाराशुम्भासुरविमर्दिनी ।१४५
शोभावती शिवाकाराशङ्करार्धशरीरिणी। शोणाशुभाशयाशुभ्राशिरः सन्धानकारिणी ।१४६
शरावती शरानन्दा शरज्ज्योत्स्ना शुभानना। शरभा शूलिनी शुद्धाशबरी शुकवाहना ।१४७
श्रीमती श्रीधरानन्दा श्रवणानन्ददायिनी। शर्वाणीशर्वरीवन्द्या षड्भाषाषडृतुप्रिया ।१४८
षडाधारस्थितादेवी षण्मुखप्रियकारिणी। षडङ्गरूपसुमति सुरासुरनमस्कृता ।१४६
सरस्वती सदाधारासर्वमङ्गलकारिणी। सामगानप्रिया सूक्ष्मासावित्रासामसम्भवा ।१५०
सर्वावासा सदानन्दा सुस्तनीसागराम्बरा। सर्वैश्वर्यप्रियासिद्धिः साधुबन्धुपराक्रमा ।१५१

सप्तर्षिमण्डलगता सोममण्डलवासिनी। सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिकवर्जिता।१५२
सर्वोत्तुङ्गा सङ्गहीना सद्गुणा सकलेष्टदा। सरघा सूर्यतनया सुकेशी सोमसंहतिः।१५३
हिरण्यवर्णा हरिणी ह्रीङ्कारी हंसवाहिनी। क्षौमवस्त्रपरीताङ्गी क्षीराब्धितनयाक्षमा।१५४
गायत्री चैव सावित्री पार्वती च सरस्वती। वेदगर्भा वरारोहा श्रीगायत्री पराम्बिका।१५५
इतिसाहस्रकं नाम्नां गायत्र्याश्चैव नारद!। पुण्यदं सर्वपापघ्नं महासम्पत्तिदायकम्।१५६
एवं नामानिगायत्र्यास्तोषोत्पत्तिकराणि हि। अष्टम्याचविशेषेणपठितव्यंद्विजैः सह।१५७
जपं कृत्वा होमपूजाध्यानंकृत्वाविशेषतः। यस्मैकस्मैनदातव्यंगायत्र्यास्तुविशेषतः।१५८
सुभक्ताय सुशिष्याय वक्तव्यं भूसुराय वै। भ्रष्टेभ्यः साधकेभ्यश्चबान्धवेभ्योनदर्शयेत्।१५९
यद्गृहे लिखितं शास्त्रं भयं तस्य न कस्यचित्। चञ्चलाऽपि स्थिरा भूत्वा कमला तत्र तिष्ठति।१६०
इदं रहस्यं परमं गुह्याद्गुह्यतरं महत्। पुण्यप्रदं मनुष्याणां दरिद्राणां निधिप्रदम्।१६१
मोक्षप्रदं मुमुक्षूणां कामिनां सर्वकामदम्। रोगाद्वै मुच्यतेरोगीबद्धो मुच्येतबन्धनात्।१६२
ब्रह्महत्यासुरापानसुवर्णस्तेयिनो नराः। गुरुतल्पगतो वाऽपिपातकान्मुच्यतेसकृत्।१६३
असत्प्रतिग्रहाच्चैवाऽभक्ष्यभक्षाद्विशेषतः। पाखण्डानृतमुख्येभ्यः पठनादेव मुच्यते।१६४
इदं रहस्यममलं मयोक्तं पद्मजोद्भव!। ब्रह्मसायुज्यदं नृणां सत्यं सत्यं न संशयः।१६५

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांद्वादशस्कन्धे गायत्रीसहस्रनामस्तोत्रकथनं नाम षष्ठोऽध्यायः ।।६।।

* सप्तमोऽध्यायः *

दीक्षाविधिकथनम्

श्रीनारद उवाच

श्रुतं सहस्रनामाख्यं श्रीगायत्र्याः फलप्रदम्। स्तोत्रं महोन्नतिकरंमहाभाग्य करंपरम्।१
अधुना श्रोतुमिच्छामिदीक्षालक्षणमुत्तमम्। विनायेननसिध्येतदेवीमन्त्रेऽधिकारिता।२
ब्राह्मणानां क्षत्रियाणां विशांस्त्रीणांतथैव च। सामान्यविधिनासर्वंविस्तरेणवदप्रभो।३

श्रीनारायण उवाच

शृणु दीक्षां प्रवक्ष्यामि शिष्याणां भावितात्मनाम्। देवाग्निगुरुपूजादावधिकारो यथा भवेत्।४
दिव्यं ज्ञानं हि या दद्यात्कुर्यात्पापक्षयंतुया। सैवदीक्षेतिसम्प्रोक्तावेदतन्त्रविशारदैः।५
अवश्यं सा तु कर्तव्या यतो बहुफलामता। गुरुशिष्यावुभावत्राप्यतिशुद्धावपेक्षितौ।६
गुरुस्तु विधिवत्प्रातः कृत्यं सर्वंविधायच। स्नानसन्ध्यादिकंसर्वंयथाविधिविधायच।७
कमण्डलुकरो मौनी गृहं यायात्सरित्तटात्। यागमण्डममासाद्य विशेत्तत्रासनेवरे।८
आचम्य प्राणानायम्य गन्धपुष्पविमिश्रितम्। सप्तवारास्त्रमन्त्रेणजप्तंवारिसुसाधयेत्।९
वारिणा तेन मतिमानस्त्रमन्त्रं समुच्चरन्। प्रोक्षयेद्द्वारमखिलं ततः पूजां समाचरेत्।१०
ऊर्ध्वोदुम्बरके देवं गणनाथं तथा श्रियम्। सरस्वतीं नाममन्त्रैः पूजयेद्गन्धपुष्पकैः।११
द्वारदक्षिणशाखायां गङ्गां विघ्नेशमर्चयेत्। द्वारस्य वामशाखायांक्षेत्रपालंचसूर्यजाम्।१२
देहल्यां पूजयेदस्त्रदेवतामस्त्रमन्त्रशः। सर्वं देवीमयं दृश्यमिति सञ्चिन्त्य सर्वतः।१३
दिव्यानुत्सारयेद्विघ्नानस्त्रमन्त्रजपेन तु। अन्तरिक्षगतान्विघ्नान्पादघातैस्तु भूमिगान्।१४
वामशाखां स्पृशन्पश्चात्प्रविशेद्दक्षिणाङ्घ्रिणा। प्रविश्य कुम्भं संस्थाप्य सामान्यार्घ्यं विधाय च।१५
तेन चाऽर्घ्यजलेनाऽपि नैर्ऋत्यां दिशि पूजयेत्। वास्तुनाथं पद्मयोनिं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।१६

ततः कुर्यात्पञ्चगव्यं तेन चाऽर्घ्योदकेन च। तोरणस्तम्भपर्यन्तं प्रोक्षयेन्मण्डपं गुरुः।१७
सर्वं देवीमयं चेदं भावयेन्मनसा किल। मूलमन्त्रं जपन्भक्त्या प्रोक्षणंस्याच्छराणुना।१८
शरमन्त्रं समुच्चार्य ताडयेन्मण्डपक्षमाम्। हुं मन्त्रं तु समुच्चार्य कुर्यादभ्युक्षणं ततः।१६
धूपयेदन्तरं धूपैर्विकिरान्विकिरेत्ततः। मार्जयेत्तांस्तु मार्जन्या कुशनिर्मितया पुनः।२०
ईशानदिशि तत्पुञ्जं कृत्वासंस्थापयेन्मुने!। पुण्याहवाचनंकृत्वादीनानाथांश्चतोषयेत्।२१
विशेन्मृद्वासने पश्चान्नमस्कृत्य गुरुं निजम्। प्राङ्मुखो विधिवद्ध्यात्वा देयमन्त्रस्य देवताम्।२२
भूतशुद्ध्यादिकं कृत्वा पूर्वोक्तेनैव वर्त्मना। ऋष्यादिन्यासकंकुर्याद्देयमन्त्रस्यवैमुने! ।२३
न्यसेन्मुनिं तु शिरसि मुखे छन्दः समीरितम्। देवतांहृदयाम्भोजेगुह्येबीजंतुपादयोः ।२४
शक्तिं विन्यस्य पश्चात्तु तालत्रयरवात्ततः। दिग्बन्धं कारयेत्पश्चाच्छोटिकाभिस्त्रिभिर्नरः।२५
प्राणायामंततः कृत्वामूलमन्त्रमनुस्मरन्। मातृकां विन्यसेद्देहे तत्प्रकारस्तथोच्यते।२६
ॐ अं नम इति प्रोच्य न्यसेच्छिरसि मन्त्रवित्। एवमेवतुसर्वेषुन्यसेत्स्थानेषुवैमुने ।२७
मूलमन्त्रं षडङ्गं च न्यसेदङ्गेषु सत्तमः। अङ्गुष्ठादिष्वङ्गुलीषु हृदयादिषु च क्रमात्।२८
नमः स्वाहावषड्युक्तैर्हुंवौषट्फटपदान्वितैः। प्रणवादियुतैर्मन्त्रैः षड्भिरेवंषडङ्गकम्।२६
वर्णन्यासादिकं पश्चान्मूलमन्त्रस्य योजयेत्। स्थानेषु तत्तत्कल्पोक्तेष्विति न्यासविधिः स्मृतः।३०
ततो निजे शरीरेऽस्मिंश्चिन्तयेदासनं शुभम्। दक्षांसे चन्यसेद्धर्मं वामांसेज्ञानमेवच।३१
वामोरौ चाऽपि वैराग्यंदक्षोरावथ विन्यसेत्। ऐश्वर्यं मुखदेशे तुमुनेध्यायेदधर्मकम्।३२
वामपार्श्वे नाभिदेशेदक्षपार्श्वे तथा पुनः। नञादींश्चापिज्ञानादीन्पूर्वोक्तानेवविन्यसेत्।३३
पादाधर्मादयः प्रोक्ताः पीठस्यमुनिसत्तम!। अधर्माद्यास्तुगात्राणिस्मृतानिमुनिपुङ्गवैः।३४
मध्येऽनन्तं हृदि स्थानेन्यसेन्मृद्वासनेस्थले। प्रपञ्चपद्मंविमलंतस्मिन्सूर्येन्दुपावकान् ।३५

न्यसेत्कलायुतान्मन्त्री सङ्क्षेपात्ता वदाम्यहम्।
सूर्यस्य द्वादश कलास्ता इन्दोः षोडश स्मृताः।।३६।।
दश वह्नेः कलाः प्रोक्तास्ताभिर्युक्तांस्तु तान्स्मरेत्।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव न्यसेत्तेषामथोपरि।।३७।।

आत्मानमन्तरात्मानं परमात्मानमेव च। ज्ञानात्मानं न्यसेद्विद्वानित्थं पीठस्यकल्पना।३८
अमुकासनाय नमइतिमन्त्रेणसाधकः। आसनंपूजयित्वातुतस्मिन्ध्यायेत्पराम्बिकाम्।३६
कल्पोक्तविधिना मन्त्री देवमन्त्रस्य देवताम्। मानसैरुपचारैश्च पूजयेत्तां यथाविधि।४०
मुद्राः प्रदर्शयेद्विद्वान्कल्पोक्ता मोदकारिकाः। याभिर्विरचिताभिस्तु मोदो देव्यास्तु जायते।४१

श्रीनारायण उवाच

ततः स्वावमभागाग्रेषट्कोणोपरिवर्तुलम्। चतुरस्रयुतंसम्यङ्मध्येमण्डलमालिखेत् ।४२
मध्ये त्रिकोणं संलिख्यशङ्खमुद्रांप्रदर्शयेत्। षडङ्गानिचषट्कोणेष्वर्चयेत्कुसुमादिभिः ।४३
अग्न्यादिषु तु कोणेषु षडङ्गार्चनमाचरेत्। आधारपात्रमादाय शङ्खस्य मुनिसत्तम!।४४
अस्त्रमन्त्रेण सम्प्रोक्ष्य स्थापयेत्तत्रमण्डले। मंवह्निमण्डलायोक्त्वाततोदशकलात्मने।४५
अमुकदेव्याअर्घ्यपात्रस्थानायनमइत्यपि । मन्त्रोऽयमुक्तः शङ्खस्याप्याधारस्थापनेबुधैः।४६
आधारे पूर्वमारभ्य प्रदक्षिणक्रमेण तु। दश वह्निकलाः पूज्या वह्निमण्डलसंस्थिताः।४७
ततो वै मूलमन्त्रेण प्रोक्षितं शङ्खमुत्तमम्। स्थापयेत्तत्र चाधारे मूलमन्त्रमनुस्मरन्।४८
अं सूर्यमण्डलायोक्त्वा द्वादशान्ते कलात्मने। अमुकदेव्यर्घ्यपात्राय नम इत्युच्चरेत्ततः।४६
शं शङ्खाय पदं प्रोच्य नम इत्येतदुच्चरेत्। प्रोक्षयेत्तेन तं शङ्खं तस्मिन्द्वादश पूजयेत्।५०

सूर्यस्य द्वादशकलास्तपिन्याद्या यथाक्रमम्। विलोममातृकां प्रोच्य मूलमन्त्रं विलोमकम्।५१
जलैरापूरयेच्छङ्खं तत्रचेन्दोः कलांन्यसेत्। उंसोममण्डलायोक्त्वान्तेषोडशकलात्मने।५२
अमुकार्घ्यामृतायेति हृन्मन्त्रान्तो मनुःस्मृतः। पूजयेन्मनुना तेन जलंतुसृणिमुद्रया।५३
तीर्थान्यावाह्य तत्रैवाप्यष्टकृत्वोजपेन्मनुम्। षडङ्गानि जलेन्यस्य हृदासम्पूजयेदपः।५४
अष्टकृत्वो जपेन्मूलं छादयेन्मत्स्यमुद्रया। ततोदक्षिणदिग्भागेशङ्खस्यप्रोक्षणींन्यसेत्।५५
शङ्खाम्बु किञ्चिन्निक्षिप्य प्रोक्षयेत्तेन सर्वतः। पूजाद्रव्यंनिजात्मानंविशुद्धंभावयेत्ततः ।५६

श्रीनारायण उवाच

ततः स्वपुरतो वेद्यांसर्वतोभद्रमण्डलम्। संलिख्यकर्णिकामध्यंपूरयेच्छालितण्डुलैः।५७
आस्तीर्य दर्भांस्तत्रैव न्यसेत्कूर्चंसलक्षणम। आधारशक्तिमारभ्यपीठमन्वन्तमर्चयेत् ।५८
निर्व्रणं कुम्भमादायाप्यस्त्राद्भिः क्षालितान्तरम्। तन्तुना वेष्टयेत्तन्तुत्रिगुणेनारुणेन च।५६
नवरत्नोदरं कूर्चयुतं गन्धादिपूजितम्। स्थापयेत्तत्र पीठे तु तारमन्त्रेण देशिकः।६०
ऐक्यं कुम्भस्य पीठस्य भावयेत्पूरयेत्ततः। मातृकां प्रतिलोमेन जपंस्तीर्थोदकैर्मुने।६१
मूलमन्त्रं च सञ्जप्य पूरयेद्देवताधिया। अश्वत्थपनसाम्राणां कोमलैर्नवपल्लवैः।६२
छादयेत्कुम्भवदनंचषकं सफलाक्षतम्। संस्थापयेत मतिमान्वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत्।६३
प्राणस्थापनमन्त्रेण प्राणस्थापनमाचरेत्। आवाहनादिमुद्राभिर्मोदयेद्देवतां पराम्।६४
ध्यायेत्तां परमेशानीं कल्पोक्तेन प्रकारतः। स्वागतं कुशलप्रश्नं देव्या अग्रे समुच्चरेत्।६५
पाद्यं दद्यात्ततोऽप्यर्घ्यं ततश्चाचमनीयकम्। मधुपर्कं चसाभ्यङ्गं देव्यै स्नानंनिवेदयेत्।६६
वाससी च ततो दद्याद्रक्तेक्षौमेसुनिर्मले। नानामणिगणाकीर्णानाकल्पान्कल्पयेत्ततः।६७
मनुना पुटितैर्वर्णैर्मातृकाया विधानतः। देव्या अङ्गेषु विन्यस्य चन्दनाद्यैः समर्चयेत्।६८
गन्धः कालागरुभवः कर्पूरेण समन्वितः। काश्मीरं चन्दनं चापिकस्तूरीसहितंमुने।६६
कुन्दपुष्पादिपुष्पाणि परदेव्यै समर्पयेत्। धूपोऽगुरुपुरुव्रातोशीरचन्दनशर्कराः ।७०

मधुमिश्राः स्मृता देव्याः प्रिया धूपात्मना सदा ।
दीपाननेकान्दत्त्वाऽथ नैवेद्यं दर्शयित्सुधीः ।।७१।।

प्रतिद्रव्यं जलं दद्यात्प्रोक्षणीस्थं न चान्यथा। ततः कुर्यादङ्गपूजांकल्पोक्तावरणानिच ।७२
साङ्गां देवीमथाभ्यर्च्यवैश्वदेवं ततश्चरेत्। दक्षिणेस्थण्डिलंकृत्वातत्राधायहुताशनम्।७३

मूर्तिस्थां देवतां तत्राऽऽवाह्य सम्पूज्य च क्रमात् ।
तारव्याहृतिभिर्हुत्वा मूलमन्त्रेण वै ततः ।।७४।।

पञ्चविंशतिवारं तु पायसेन ससर्पिषा। हुनेत्पश्चाद्व्याहृतिभिः पुनश्च जुहुयान्मुने!।७५
गन्धाद्यैरर्चयित्वा च देवीं पीठे तु योजयेत्। वह्निं विसृज्य हविषा परितो विकिरेद् बलिम्।७६
देवतायाः पार्षदेभ्यो गन्धपुष्पादिसंयुतान्। पञ्चोपचारान्दत्त्वाथ ताम्बूलं छत्रचामरे।७७
दद्याद्देव्यै ततो मन्त्रंसहस्रावृत्तितोजपेत्। जपंसमर्प्यचैशान्यांविकिरेदिशिसंस्थिते ।७८
कर्करीं स्थापयेत्तस्यां दुर्गामावाह्य पूजयेत्। रक्षरक्षेतिचोच्चार्य्यनालमुक्तेनवारिणा ।७६
अस्त्रमन्त्रं जपन्देशं सेचयेत्तु प्रदक्षिणम्। कर्करीं स्थापयेत्स्थानेपूजयेच्चास्त्रदेवताम्।८०
पश्चाद्गुरुस्तु शिष्येणसहभुञ्जीतवाग्यतः। तस्यांरात्रौतुतद्वेद्यांनिद्रांकुर्यात्प्रयत्नतः ।८१

श्रीनारायण उवाच

ततः कुण्डस्य संस्कारं स्थण्डिलस्य च वा मुने!। प्रवक्ष्यामि समासेन यथाविधि विधानतः।८२
मूलमन्त्रं समुच्चार्य वीक्षयेदस्त्रमन्त्रतः। प्रोक्षयेत्ताडनं कुर्यात्तेनैव कवचेन तु।८३

अभ्युक्षणं समुद्दिष्टं तिस्रस्तिस्रस्ततः परम्। प्रागग्राउदगग्राश्चलिखेल्लेखाः समन्ततः।८४
प्रणवेन समभ्युक्ष्य पीठं देव्याः समर्चयेत्। आधारशक्तिमारभ्यपीठमन्त्रावसानकम्।८५
तस्मिन्पीठे समावाह्य शिवौ परमकारणौ। गन्धाद्यैरुपचारैश्च पूजयेत्तौसमाहितः।८६
देवीं ध्यायेदृतुस्नातां संसक्तां शङ्करेण तु। कामातुरां तयोः क्रीडां किञ्चित्कालं विभावयेत्।८७
अथवह्निं समादाय पात्रेणपुरतोन्यसेत्। क्रव्यादांशं परित्यज्यपूर्वोक्तै र्वीक्षणादिभिः।८८
संस्कृत्य वह्निरम्बीजमुच्चार्य तदनन्तरम्। चैतन्यं योजयेत्तस्मिन्प्रणवेनाभिमन्त्रयेत्।८९
सप्तवारं ततोधेनुमुद्रां संदर्शयेद् गुरुः। शरेण रक्षितं कृत्वा तनुत्रेणावगुण्ठयेत्।९०
अर्चितं त्रिः परिभ्राम्य प्रादक्षिण्येन सत्तमः। कुण्डोपरि जपंस्तारंजानुम्पृष्टमहीतलः।९१
शिवबीजधिया देव्यायोनौवह्निंविनिक्षिपेत्। आचामयेत्ततोदेवंदेवींचजगदम्बिकाम्।९२
चित्पिङ्गलहनदहपचयुग्मं ततः परम्। सर्वज्ञाज्ञापयस्वाहा मन्त्रोऽयं वह्निदीपने।९३
अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।९४
मन्त्रेणानेन तं वह्निं स्तुवीत परमादरात्। ततोन्यसेद्वह्निमन्त्रं षडङ्गं देशिकोत्तमः।९५
सहस्रार्चिः स्वस्तिपूर्णउत्तिष्ठपुरुषः स्मृतः। धूमव्यापी सप्तजिह्वो धनुर्धरइतिक्रमात्।९६

जातियुक्ताः षडङ्गाः स्युः पूर्वस्थानेषु विन्यसेत्।
ध्यायेद्वह्निं हेमवर्णं त्रिनेत्रं पद्मसंस्थितम्॥९७॥

इष्टशक्तिस्वस्तिकाभीर्धारकं मङ्गलं परम्। परिषिञ्चेत्ततः कुण्डं मेखलोपरिमन्त्रवित्।९८
दर्भैः परिस्तरेत्पश्चात्परिधीन्विन्यसेदथ। त्रिकोणवृत्तषट्कोणसाष्टपत्रं सभूपुरम्।९९
यन्त्रं विभावयेद्वह्नेः पूर्वंवा संलिखेदथ। तन्मध्ये पूजयेद्वह्निं मन्त्रेणाऽनेन वै मुने!।१००
वैश्वानर ततोजातवेदः पश्चादिहावह। लोहिताक्षपदं प्रोक्त्वा सर्वकर्माणि साधय।१०१
वह्निजायान्तको मन्त्रस्तेन वह्निं तु पूजयेत्। मध्ये षट्स्वपि कोणेषु हिरण्या गगना तथा।१०२
रक्ता कृष्णा सुप्रभा च बहुरूपाऽतिरक्तिका। पूजयेत्सप्तजिह्वास्ताकेशरेष्वङ्गपूजनम्।१०३
दलेषु पूजयेन्मूर्तीः शक्तिस्वस्तिकधारिणीः। जातवेदासप्तजिह्वो हव्यवाहन एव च।१०४
अश्वोदरजसञ्ज्ञोऽन्यः पुनर्वैश्वानराह्वयः। कौमारतेजाः स्याद्विश्वमुखोदेवमुखः स्मृतः।१०५
ताराग्नये पदाद्याः स्युर्नत्यन्तावह्निमूर्तयः। लोकपालांश्चतुर्दिक्षु वज्राद्यायुधसंयुतान्।१०६

श्रीनारायण उवाच

ततः स्रुक्स्रुवसंस्कारावाज्यसंस्कारएवच। कृत्वाहोमंततः कुर्यात्स्रु वेणाऽऽदायवैघृतम्।१०७
दक्षिणाद्घृतभागात्तु वह्नेर्दक्षिणलोचने। जुहुयादग्नये स्वाहेत्येवं वै वामतोऽन्यतः।१०८
सोमाय स्वाहेति मध्याद् घृतमादाय सत्तम। अग्नीषोमाभ्यां स्वाहेति मध्यनेत्रे हुनेत्ततः।१०९
पुनर्दक्षिणभागात्तु घृतमादाय वै मुखे। अग्नयेस्विष्टकृत्स्वाहेत्यनेनैव हुनेत्ततः।११०
सताराभिर्व्याहृतिभिर्जुहुयादथ साधकः। जुहुयादग्निमन्त्रेण त्रिवारंतु ततः परम्।१११
ततस्तु प्रणवेनैवाऽप्यष्टावष्टौ घृताहुतीः। गर्भाधानादिसंस्कारकृते तु जुहुयान्मुने!।११२
गर्भाधानं पुंसवनं सीमान्तोन्नयनं ततः। जातकर्मनामकर्मात्युपनिष्क्रमणं तथा।११३
अन्नाशनं तथाचूडा व्रतबन्धस्तथैव च। महानाम्न्यं व्रतं पश्चात्तथौपनिषदं व्रतम्।११४

गोदानोद्वाहकौ प्रोक्ताः संस्काराः श्रुतिचोदिताः।
ततः शिवं पार्वतीं च पूजयित्वा विसर्जयेत्॥११५॥

जुहुयात्पञ्चसमिधो वह्निमुद्दिश्य साधकः। पश्चादावरणानां चाप्येकैकामाहुतिंहुनेत्।११६
घृतं स्रु चिसमादाय चतुर्वारं स्रुवेण च। पिधाय तांतुतेनैव मुने! तिष्ठन्निजाऽऽसने।११७

वौषडंतेन मनुना वह्नेस्तु जुहुयात्ततः। महागणेशमन्त्रेण जुहुयादाहुतीर्दश।११८
वह्नौ पीठं समभ्यर्च्य देयमन्त्रस्य देवताम्। वह्नौ ध्यात्वा तु तद्वक्त्रे पञ्चविंशति सङ्ख्यया।११९
मूलमन्त्रेणजुहुयाद्वक्त्रैकीकरणाय च। वह्निदेवतयोरैक्यं भावयन्नात्मना सह।१२०
एकीभूतं भावयेत्तु ततस्तु साधकोत्तमः। षडङ्गं देवतानाञ्च जुहुयादाहुतीः पृथक्।१२१
एकादशैवजुहुयादाहुतीर्मुनिसत्तम!। एतेननाडीसन्धानं वह्निदेवतयोर्मुने!।१२२
एकैकक्रमयोगेनाप्यावृत्तीनां तथैव च। एकैकक्रमयोगेन घृतेन जुहुयान्मुने!।१२३
ततः कल्पोक्तद्रव्यैस्तु जुहुयादथा वा तिलैः। देवतामूलमन्त्रेण गजान्तकसहस्रकम्।१२४
एवं हुत्वा ततोदेवीं सन्तुष्टां भावयेन्मुने!। तथैवाऽवृतिदेवीश्च वह्न्याद्या देवता अपि।१२५
ततः शिष्यं च सुस्नातंकृतसन्ध्यादिकक्रियम्। वस्त्रद्वययुतंस्वर्णाभरणेनसमन्वितम्।१२६
कमण्डलुकरं शुद्धं कुण्डस्यान्तिकमानयेत्। नमःस्कृत्यततः शिष्योगुरूनथसभासदः।१२७
कुलदेवं नमस्कृत्य विशेत्तत्राऽथ विष्टरे। गुरुस्ततस्तुतंशिष्यंकृपादृष्ट्याविलोकयेत्।१२८
तच्चैतन्यं निजेदेहे भावयेत्सङ्गतं त्विति। ततः शिष्यतनुस्थानामध्वनांपरिशोधनम्।१२९
कुर्यात्तुहोमतोविद्वान्दिव्यदृष्ट्यवलोकनात्। येनजायेतशुद्धात्मायोग्योदेवाद्यनुग्रहे।१३०
ततौ ध्यायेत्तुशिष्यस्यषडध्वनः क्रमेणतु। पादयोस्तुकलाध्वानमन्धौतत्त्वाध्वकंपुनः।१३१
नाभौ तु भुवनाध्वानं वर्णाध्वानं तथा हृदि। पदाध्वानंतथाभालेमन्त्राध्वानंतुमूर्धनि।१३२
शिष्यं स्पृशंस्तुकूर्चेन तिलैराज्यपरिप्लुतैः। शोधयाम्यमुमध्वानंस्वाहेतिमनुमुच्चरन्।१३३
ताराढ्यं जुहुयादष्टवारं प्रत्यध्वमेव हि। षडध्वनस्ततस्तांस्तु लीनान्ब्रह्मणि भावयेत्।१३४
पुनरुत्पादयेत्तस्मात्सृष्टिमार्गेण वै गुरुः। आत्मस्थितंतच्चैतन्यं पुनः शिष्येतुयोजयेत्।१३५
पूर्णाहुतिं ततो हुत्वा देवतां कलशे नयेत्। पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वा वह्नेरङ्गाहुतिस्तथा।१३६
एकैकशो गुरुर्दत्त्वा विसृजेद्वह्निमात्मनि। ततः शिष्यस्य नेत्रेतु बध्नीयाद्वाससागुरुः।१३७
नेत्रमन्त्रेण तं शिष्यं कुण्डतो मण्डलं नयेत्। पुष्पाञ्जलिं मुख्यदेव्यां कारयेच्छिष्यहस्ततः।१३८
नेत्रबन्धं निराकृत्य वेशयेत्कुशविष्टरे। भूतशुद्धिं शिष्यदेहे कुर्यात् प्रोक्तेन वर्त्मना।१३९
मन्त्रोदितांस्तथा न्यासान्कृत्वा शिष्यतनौततः। मण्डलेवेशयेच्छिष्यमन्यस्मिनकुम्भसंस्थितान्।१४०
पल्लवाञ्छिष्यशिरसि विन्यसेन्मातृकां जपेत्। कलशस्थजलैः शिष्यं स्नापयेद्देवतात्मकैः।१४१
वर्धनीजलसेकञ्च कुर्याद्रक्षार्थमञ्जसा। ततः शिष्यः समुत्थाय वाससी परिधाय च।१४२
कृतभस्मावलेपश्च सम्विशेद्गुरुसन्निधौ। ततोगुरुः स्वकीयात्तुहृदयान्निर्गतांशिवाम्।१४३
प्रविष्टां शिष्यहृदये भावयेत्करुणानिधिः। पूजयेद्गन्धपुष्पाद्यैरैक्यं वैभावयंस्तयोः।१४४
ततस्त्रिंशो दक्षकर्णे शिष्यस्योपदिशेद् गुरुः। महामन्त्रं महादेव्याः स्वहस्तं शिरसि न्यसन्।१४५
अष्टोत्तरशतं हन्त्रं शिष्योऽपि प्रजपेन्मुने!। दण्डवत्प्रणमेद्भूमौ तं गुरुंदेवतात्मकम्।१४६
सर्वस्वमर्पयेत्तस्मै यावज्जीवमनन्यधीः। ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणांश्चाऽपि भोजयेत्।१४७
सुवासिनीः कुमारीश्च बटुकांश्चैवसर्वशः। दीनानाथान्दरिद्रांश्चवित्तशाठ्यविवर्जितः।१४८
कृतार्थतां स्वस्य बुद्ध्वा नित्यमाराधयेन्मनुम्। इति ते कथितः सम्यग्दीक्षाविधिरनुत्तमः।१४९
विमृश्यैतदशेषेण भज देवीपदाम्बुजम्। नान्यस्तु परमो धर्मोब्राह्मणस्याऽत्र विद्यते।१५०
वैदिकः स्वस्वगृह्योक्तक्रमेणोपदिशेन्मनुम्। तान्त्रिकस्तत्र रीत्या तु स्थितिरेषा सनातनी।१५१
तत्तदुक्तप्रयोगांस्ते ते ते कुर्युर्न चान्यथा।

श्रीनारायण उवाच

इति सर्वं मयाऽऽख्यातं यत्पृष्टं नारद! त्वया ।।१५२।।

अतः परं पराम्बाया भज नित्यं पदाम्बुजम्। नित्यमाराध्यतश्चाहं निर्वृतिंपरमांगतः।१५३

व्यास उवाच

इति राजन्नारदाय प्रोक्त्वासर्वमनुत्तमम्। समाधिमीलिताक्षस्तुदध्यौदेवीपदाम्बुजम्।१५४
नारायणस्तु भगवान्मुनिवर्यशिखामणिः। नारदोऽपि ततो नत्वा गुरुंनारायणं परम्।
जगाम सद्यस्तपसे देवीदर्शनलालसः।।१५५।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यांसंहितायां द्वादशस्कन्धे मन्त्रदीक्षाविधिकथनंनाम सप्तमोऽध्यायः।।७।।

* अष्टमोऽध्यायः *

पराशक्त्याविर्भाववर्णनम्

जनमेजय उवाच

भगवन्सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रवताम्वर!। द्विजातीनां तु सर्वेषांशक्त्युपास्तिः श्रुतीरिता। १
सन्ध्याकालत्रयेऽन्यस्मिन्काले नित्यतया विभो!। तां विहाय द्विजाः कस्माद् गृह्णीयुश्चाऽन्यदेवताः। २
दृश्यन्ते वैष्णवाः केचिद्गाणपत्यास्तथापरे। कापालिकाश्चीनमार्गरतावल्कलधारिणः। ३
दिगम्बरास्तथा बौद्धाश्चार्वाका एवमादयः। दृश्यन्ते बहवोलोकेवेदश्रद्धाविवर्जिताः। ४
किमत्र कारणं ब्रह्मंस्तद्भवान्वक्तुमर्हति। बुद्धिमन्तः पण्डिताश्च नानातर्कविचक्षणाः। ५
अपिसन्त्येववेदेषुश्रद्धयातुविवर्जिताः। नहिकश्चित्स्वकल्याणंबुद्ध्याहातुमिहेच्छति। ६
किमत्र कारणं तस्माद्वद वेदविदाम्वर!। मणिद्वीपस्य महिमा वर्णितो भवता पुरा। ७
कीदृक्तदस्ति यद्देव्याः परं स्थानंमहत्तरम्। तच्चाऽपिवदभक्तायश्रद्दधानायमेऽनघ। ८
प्रसन्नास्तु सदन्त्येव गुरवो गुह्यमप्युत।

सूत उवाच

इति राज्ञो वचः श्रुत्वा भगवान्बादरायणः।।६।।
निजगाद तत सर्वं क्रमेणैव मुनीश्वराः। यच्छ्रुत्वा तु द्विजातीनां वेदश्रद्धाविवर्धते। १०

व्यास उवाच

सम्यक्पृष्टं त्वया राजन्समये समयोचितम्। बुद्धिमानसि वेदेषुश्रद्धावांश्चैवलक्ष्यसे। ११
पूर्वं मदोद्धता दैत्या देवैर्युद्धंतु चक्रिरे। शतवर्षं महाराज! महाविस्मयकारकम्। १२
नानाशस्त्रप्रहरणं नानामायाविचित्रितम्। जगत्क्षयकरं नूनं तेषां युद्धमभून्नृप!। १३
पराशक्तिकृपावेशाद् देवैर्दैत्या जिता युधि। भुवं स्वर्गंपरित्यज्यगताः पातालवेश्मनि। १४
ततः प्रहर्षिता देवाः स्वपराक्रमवर्णनम्। चक्रुः परस्परं मोहात्साभिमाना समन्ततः। १५
जयोऽस्माकं कुतोनस्यादस्माकंमहिमायतः। सर्वोत्तरः कुत्रदैत्याः पमरानिष्पराक्रमाः। १६
सृष्टिस्थितिक्षयकरा वयं सर्वे यशस्विनः। अस्मदग्रेपामराणांदैत्यान चैवकाकथा। १७
पराशक्तिप्रभावं ते न ज्ञात्वा मोहमागताः। तेषामनुग्रहं कर्तुं तदैव जगदम्बिका। १८
प्रादुरासीत्कृपापूर्णा यक्षरूपेण भूमिप!। कोटिसूर्यप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्। १६
विद्युत्कोटिसमानाभं हस्तपादादिवर्जितम्। अदृष्टपूर्वं तद्दृष्ट्वा तेजः परमसुन्दरम्। २०
सविस्मयास्तदा प्रोचुः किमिदं किमिदं त्विति। दैत्यानां चेष्टितं किं वा माया काऽपि महीयसी। २१
केनचिन्निर्मिता वाऽथ देवानां स्मयकारिणी। सम्भूय तेतदासर्वे विचारंचक्रुरुत्तमम्। २२
यक्षस्य निकटे गत्वाप्रष्टव्यंकस्त्वमित्यपि। बलाबलं ततोज्ञात्वाकर्तव्यातुप्रतिक्रिया। २३

ततो वह्निं समाहूयप्रोवाचेन्द्रः सुराधिपः। गच्छवह्नेत्वमस्माकंयतोऽसिमुखमुत्तमम्।२४
ततो गत्वा तु जानीहि किमिदं यक्षमित्यपि। सहस्राक्षवचः श्रुत्वा स्वपराक्रमगर्वितः (गर्भितम्)।२५
वेगात्स निर्गतो वह्निर्ययौ यक्षस्य सन्निधौ। तदा प्रोवाच यक्षस्तं त्वं कोऽसीति हुताशनम्।२६
वीर्यंचत्वयिकिंयत्तद्वदसर्वंममाग्रतः। अग्निरस्मितथाजातवेदाअस्मीति सोऽब्रवीत्।२७
सर्वस्य दहने शक्तिर्मयि विश्वस्य तिष्ठति। तदा यक्षं परं तेजस्तदग्रे निदधौ तृणम्।२८
दहैनं यदि ते शक्तिर्विश्वस्य दहनेऽस्तिहि। तदा सर्वबलेनैवाऽकरोद्यत्नं हुताशनः।२९
न शशाक तृणं दग्धुं लज्जितोऽगात्सुरान्प्रति। पृष्टे देवैस्तुवृत्तान्तेसर्वंप्रोवाचहव्यभुक्।३०
वृथाऽभिमानोह्यस्माकं सर्वेशत्वादिके सुराः। ततस्तु वृत्रहा वायुंसमाहूयेदमब्रवीत्।३१
त्वयि प्रोतंजगत्सर्वंत्वच्चेष्टाभिस्तुचेष्टितम्। त्वंप्राणरूपः सर्वेषांसर्वशक्तिविधारकः।३२
त्वमेवगत्वाजानीहिकिमिदंयक्षमित्यपि। नान्यः कोऽपिसमर्थोऽस्तिज्ञातुंयक्षंपरंमहः।३३
सहस्राक्षवचः श्रुत्वागुणगौरवगुम्फितम्। साभिमानोजगामाऽऽशु यत्रयक्षंविराजते।३४
यक्षं दृष्ट्वा ततो वायुं प्रोवाच मृदुभाषया। कोऽसित्वंत्वयिकाशक्तिर्वदसर्वंममाग्रतः।३५
ततो यक्षवचः श्रुत्वागर्वेणमरुदब्रवीत्। मातरिश्वाऽहमस्मीतिवायुरस्मीतिचाब्रवीत्।३६
वीर्यं तु मयि सर्वस्य चालने ग्रहणेऽस्ति हि। मच्चेष्टयाजगत्सर्वंसर्वव्यापारवद्भवेत्।३७
इति श्रुत्वा वायुवाणीं निजगाद परं महः। तृणमेतत्तऽवाग्रे यत्तच्चालय यथेप्सितम्।३८
नो चेद्गर्वं विहायैनं लज्जितो गच्छ वासवम्। श्रुत्वा यक्षवचो वायुः सर्वशक्तिसमन्वितः।३९
उद्योगमकरोत्तच्च स्वस्थानान्नचचालह। लज्जितोऽगाद्देवपार्श्वंहित्वागर्वंसचानिलः।४०
वृत्तान्तमवदत्सर्वंगर्वनिर्वापकारणम्। नैतज्ज्ञातुं समर्थाः स्मिथ्यागर्वाभिमानिनः।४१
अलौकिकं भाति यक्षं तेजः परमदारुणम्। ततः सर्वे सुरगणाः सहस्राक्षं समूचिरे।४२
देवराडसि यस्मात्त्वं यक्षं जानीहि तत्त्वतः। तत इन्द्रोमहागर्वात्तद्यक्षं समुपाद्रवत्।४३
प्राद्रवच्च परं तेजो यक्षरूपं परात्परम्। अन्तर्धानं ततः प्राप तद्यक्षं वासवाऽग्रतः।४४
अतीव लज्जितो जातो वासवो देवराडपि। यक्षसम्भाषणाभावाल्लघुत्वं प्राप चेतसि।४५
अतः परं न गन्तव्यं मया तु सुरसंसदि। किं मया तत्र वक्तव्यंस्वलघुत्वं प्रापचेतसि।४६
देहत्यागो वरस्तस्मान्मानो हि महतां धनम्। माने नष्टे जीवितं तु मृतितुल्यं न संशयः।४७
इति निश्चित्य तत्रैव गर्वं हित्वा सुरेश्वरः। चरित्रमीदृशं यस्य तमेव शरणं गतः।४८
तस्मिन्नेव क्षणे जाता व्योमवाणी नभस्तले। मायाबीजं सहस्राक्ष जपतेनसुखीभव।४९
ततो जजाप परमं मायाबीजं परात्परम्। लक्षवर्षं निराहारो ध्यानमीलितलोचनः।५०
अकस्माच्चैत्रमासीयनवम्यां मध्यगेरवौ। तदेवाऽऽविरभूत्तेजस्तस्मिन्नेवस्थलेपुनः।५१
तेजोमण्डलमध्ये तु कुमारींनवयौवनाम्। भास्वज्जपाप्रसूनाभांबालकोटिरविप्रभाम्।५२
बालशीतांशुमुकुटां वस्त्रान्तर्व्यञ्जितस्तनीम्। चतुर्भिर्वरहस्तैस्तु वरपाशाङ्कुशाभयान्।५३
दधानां रमणीयाङ्गींकोमलाङ्गलतांशिवाम्। भक्तकल्पद्रुमामम्बांनानाभूषणभूषिताम्।५४
त्रिनेत्रां मल्लिकामालाकबरीजूटशोभिताम्। चतुर्दिक्षुचतुर्वेदैर्मूर्तिमद्भिरभिष्टुताम्।५५
दन्तच्छटाभिरंभितः पद्मरागीकृतक्षमाम्। प्रसन्नस्मेरवदनां कोटिकन्दर्पसुन्दराम्।५६
रक्ताम्बरपरीधानां रक्तचन्दनचर्चिताम्। उमाभिधानां पुरतो देवीं हैमवतीं शिवाम्।५७
निर्व्याजकरुणामूर्त्तिं सर्वकारणकारणाम्। ददर्श वासवस्तत्र प्रेमगद्गदितान्तरः।५८
प्रेमाऽश्रुपूर्णनयनो रोमाञ्चिततनुस्ततः। दण्डवत्प्रणनामाऽथ पादयोर्जगदीशितुः।५९
तुष्टावविविधैः स्तोत्रैर्भक्तिसन्नतकन्धरः। उवाचपरमप्रीतः किमिदं यक्षमित्यपि।६०

प्रादुर्भूतं च कस्मात्तद्वद सर्वं सुशोभने!।इति तस्यवचः श्रुत्वा प्रोवाचकरुणार्णवा।६१
रूपं मदीयं ब्रह्मैतत्सर्वकारणकारणम्।मायाधिष्ठानभूतं तु सर्वसाक्षिनिरामयम्।६२
सर्वे वेदा यत्पदमामनंति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण ब्रवीमि ।।६३।।
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म तदेवाऽऽहुश्च ह्रींमयम्।द्वेबीजेममममन्त्रौस्तोमुख्यत्वेनसुरोत्तम ।६४
भागद्वयवती यस्मात्सृजामि सकलं जगत्।तत्रैकभागः सम्प्रोक्तः सच्चिदानन्दनामकः।६५
माया प्रकृतिसञ्ज्ञस्तु द्वितीयोभाग ईरितः।साचमायापराशक्तिः शक्तिमत्यहमीश्वरी।६६
चन्द्रस्य चन्द्रिकेवेयं ममाभिन्नत्वमागता।साम्यावस्थात्मिकाचैषामायाममसुरोत्तम।६७
प्रलये सर्वजगतो मदभिन्नैव तिष्ठति।प्राणिकर्मपरीपाकवशतः पुनरेव हि।६८
रूपं तदेवमव्यक्तं व्यक्तीभावमुपैति च।अन्तर्मुखातु याऽवस्था सा मायेत्यभिधीयते।६९
बहिर्मुखा तु या माया तमः शब्देनसोच्यते।बहिर्मुखात्तमोरूपाज्जायतेसत्त्वसम्भवः ।७०
रजोगुणस्तदैव स्यात्सर्गादौ सुरसत्तम!।गुणत्रयात्मकाः प्रोक्ताब्रह्मविष्णुमहेश्वराः।७१
रजोगुणाधिको ब्रह्मा विष्णुःसत्त्वाधिको भवेत्।तमोगुणाधिको रुद्रः सर्वकारणरूपधृक्।७२
स्थूलदेहो भवेद्ब्रह्मा लिङ्गदेहो हरिः स्मृतः।रुद्रस्तुकारणो देहस्तुरीयात्वहमेव हि।७३
साम्यावस्थातु या प्रोक्ता सर्वान्तर्यामिरूपिणी।अत ऊर्ध्वं परं ब्रह्म मद्रूपंरूपवर्जितम्।७४
निर्गुणं सगुणं चेतिद्विधामद्रूपमुच्यते।निर्गुणं माययाहीनं सगुणं माययायुतम्।७५
साऽहं सर्वं जगत्सृष्ट्वा तदन्तः सम्प्रविश्य च।प्रेरयाम्यनिशंजीवंयथाकर्मयथाश्रुतम् ।७६
सृष्टिस्थितितिरोधाने प्रेरयाम्यहमेव हि।ब्रह्माणं च तथाविष्णुंरुद्रंवैकारणात्मकम्।७७
मद्भयाद्वाति पवनो भीत्या सूर्यश्च गच्छति।इन्द्राऽग्निमृत्यवस्तद्वत्साऽहं सर्वोत्तमा स्मृता।७८
मत्प्रसादाद्भवद्भिस्तुजयोलब्धोऽस्तिसर्वथा।युष्मानहंनर्तयामिकाष्ठपुत्तलिकोपमान्।७९
कदाचिद् देवविजयं दैत्यानां विजयं क्वचित्।स्वतन्त्रा स्वेच्छया सर्वं कुर्वे कर्माऽनुरोधतः।८०
तां मां सर्वात्मिकां यूयं विस्मृत्य निजगर्वतः।अहङ्कारावृताऽऽत्मानोमोहमाप्तादुरन्तकम्।८१
अनुग्रहं ततः कर्तुं युष्मद्देहादनुत्तमम्।निःसृतं सहसातेजो मदीयं यक्षमित्यपि।८२
अतः परं सर्वभावैर्हित्वा गर्वं तु देहजम्।मामेवशरणं यात सच्चिदानन्दरूपिणीम्।८३

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा च महादेवी मूलप्रकृतिरीश्वरी।अन्तर्धानं गता सद्यो भक्त्यादेवैरभिष्टुता।८४
ततः सर्वे स्वगर्वं तु विहाय पदपङ्कजम्।सम्यगाराधयामासुर्भगवत्याः परात्परम्।८५
त्रिसन्ध्यं सर्वदा सर्वे गायत्रीजपतत्पराः।यज्ञभागादिभिः सर्वेदेवींनित्यंसिषेविरे।८६
एवं सत्ययुगे सर्वे गायत्रीजपतत्पराः।तारहृल्लेखयोश्चाऽपि जपेनिष्णातमानसाः।८७
न विष्णूपासना नित्या वेदेनोक्ता तु कुत्रचित्।न विष्णुदीक्षा नित्याऽस्ति शिवस्याऽपि तथैव च।८८
गायत्र्युपासना नित्यासर्ववेदैः समीरिता।यया विना त्वधः पातो ब्राह्मणस्याऽस्ति सर्वथा।८९
तावता कृतकृत्यत्वं नान्यापेक्षा द्विजस्य हि।गायत्रीमात्रनिष्णातो द्विजो मोक्षमवाप्नुयात्।९०
कुर्यादन्यन्न वा कुर्यादिति प्राह मनुः स्वयम्।विहाय तां तु गायत्रीं विष्णूपास्तिपरायणः।९१
शिवोपास्तिरतो विप्रो नरकं याति सर्वथा।तस्मादाद्ययुगेराजन्गायत्रीजपतत्पराः ।
देवीपदाम्बुजरता आसन्सर्वे द्विजोत्तमाः।।९२।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांद्वादशस्कन्धे
पराशक्तेराविर्भावविवर्णनंनामाऽष्टमोऽध्यायः ।।८।।

* नवमोऽध्यायः *

ब्राह्मणादीनां गायत्रीभिन्नान्यदेवोपासनाश्रद्धाहेतुनिरूपणम्

व्यास उवाच

कदाचिदथ काले तु दशपञ्चसमा विभो!। प्राणिनां कर्मवशतो न ववर्ष शतक्रतुः।१
अनावृष्ट्याऽतिदुर्भिक्षमभवत्क्षयकारकम्। गृहे गृहे शवानांतुसङ्ख्याकर्तुं न शक्यते।२
केचिदश्वान्वराहान्वा भक्षयन्ति क्षुधार्दिताः। शवानि चमनुष्याणांभक्षयन्त्यपरेजनाः।३
बालकं बालजननी स्त्रियं पुरुष एव च। भक्षितुं चलिताः सर्वेक्षुधयापीडिता नराः।४
ब्राह्मणा बहवस्तत्र विचारं चक्रुरुत्तमम्। तपोधनो गौतमोऽस्तिसनः खेदंहरिष्यति।५
सर्वैर्मिलित्वा गन्तव्यं गौतमस्याश्रमेऽधुना। गायत्रीजपसंसक्तगौतमस्याश्रमेऽधुना ।६
सुभिक्षं श्रूयते तत्र प्राणिनोबहवो गताः। एवंविमृश्यभूदेवाः साग्निहोत्राः कुटुम्बिनः।७
सगोधनाः सदासाश्च गौतमस्याऽऽश्रमं ययुः। पूर्वदिशाद्ययुः केचित्केचिद्दक्षिणदेशतः।८
पाश्चात्त्या औत्तराहाश्च नानादिग्भ्यःसमाययुः। दृष्ट्वासमाजंविप्राणांप्रणनामसगौतमः ।९
आसनाद्युपचारैश्च पूजयामास वाडवान्। चकार कुशलप्रश्नं ततश्चागमकारणम्।१०
ते सर्वे स्वस्ववृत्तान्तं कथयामासुरुत्स्मयाः। दृष्ट्वा तान्दुःखितान्विप्रानभयं दत्तवान्मुनिः।११
युष्माकमेतत्सदनं भवद्दासोऽस्मि सर्वथा। काचिन्ताभवतांविप्रामयिदासेविराजति।१२
धन्योऽहमस्मिन्समये यूयं सर्वे तपोधनाः। येषां दर्शनमात्रेण दुष्कृतं सुकृतायते।१३
ते सर्वे पादरजसा पावयन्ति गृहं मम। को मदन्यो भवेद्धन्यो भवतां समनुग्रहात्।१४
स्थेयं सर्वैः सुखेनैव सन्ध्याजपपरायणैः।

व्यास उवाच

इति सर्वान्समाश्वास्य गौतमो मुनिराट् ततः ।।१५।।
गायत्रीं प्रार्थयामास भक्तिसन्नतकन्धरः। नमो देवि महाविद्ये वेदमातः परात्परे!।१६
व्याहृत्यादिमहामन्त्ररूपे प्रणवरूपिणि। साम्यावस्थात्मिकेमातर्नमोह्रीङ्काररूपिणि।१७
स्वाहास्वधास्वरूपेत्वां नमामि सकलार्थदाम्। भक्तकल्पलतां देवीमवस्थात्रयसाक्षिणीम्।१८
तुर्यातीतस्वरूपाञ्च सच्चिदानन्दरूपणिम्। सर्ववेदान्तसम्वेद्यां सूर्यमण्डलवासिनीम्।१९
प्रातर्बालां रक्तवर्णां मध्योह्नयुवतींपराम्। सायाह्नेकृष्णवर्णातांवृद्धांनित्यंनमाम्यहम्।२०
सर्वभूतारणे देवि! क्षमस्व परमेश्वरि!। इति स्तुता जगन्माता प्रत्यक्षं दर्शनं ददौ।२१
पूर्णपात्रं ददौ तस्मैयेनस्यात्सर्वपोषणम्। उवाचमुनिमम्बासायंयंकामंत्वमिच्छसि ।२२
तस्य पूर्तिकरं पात्रं मया दत्तंभविष्यति। इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवी गायत्रीपरमाकला।२३
अन्नानांराशयस्तस्मान्निर्गताः पर्वतोपमाः। षड्रसाविविधाराजंस्तृणानिविविधानिच।२४
भूषणानि च दिव्यानि क्षौमानि वसनानि च। यज्ञानां च समारम्भाः पात्राणि विविधानि च।२५
यद्यदिष्टमभूद्राजन्मुनेस्तस्य महात्मनः। सत्सर्वं निर्गतं तस्माद्गायत्रीपूर्णपात्रतः।२६
अथाऽऽहूयमुनीन्सर्वान्मुनिराड्गौतमस्तदा। धनं धान्यं भूषणानि वसनानिददौ मुदा।२७
गोमहिष्यादिपशवो निर्गताः पूर्णपात्रतः। निर्गतान्यज्ञसम्भारान्स्रुक्स्रुवप्रभृतीन् ददौ।२८
ते सर्वे मिलितायज्ञांश्चक्रिरे मुनिवाक्यतः। स्थानं तदेवभूयिष्ठमभवत्स्वर्गसन्निभम्।२९
यत्किञ्चित्त्रिषु लोकेषु सुन्दरं वस्तु दृश्यते। तत्सर्वं तत्र निष्पन्नंगायत्रीदत्तपात्रतः।३०
देवाङ्गनासमा दाराः शोभन्ते भूषणादिभिः। मुनयो देवसदृशा वस्त्रचन्दनभूषणैः।३१
नित्योत्सवः प्रववृते मुनेराश्रममण्डले। न रोगादिभयं किञ्चिन्न च दैत्यभयं क्वचित्।३२

स मुनेराश्रमो जातः समन्ताच्छतयोजनः। अन्येचप्राणिनोयेऽपितेऽपितत्रसमागताः ।३३
तांश्च सर्वान्पुपोषाऽयं दत्त्वाऽभयमथाऽऽत्मवान्। नानाविधैर्महायज्ञैर्विधिवत्कल्पितैः सुराः।३४
सन्तोषं परमं प्रापुर्मुनेश्चैव जगुर्यशः। सभायां वृत्रहा भूयो जगौ लोकं महायशाः।३५
अहो अयं नः किल कल्पपादपो मनोरथान्पूरयति प्रतिष्ठितः।
नोचेदकाण्डे क हविर्वपा वां सुदुर्लभा यत्र तु जीवनाशा ।।३६।।
इत्थं द्वादशवर्षाणि पुपोष मुनिपुङ्गवान्। पुत्रवन्मुनिराड्गर्वगन्धेन परिवर्जितः।३७
गायत्र्याः परमं स्थानं चकार मुनिसत्तमः। यत्र सर्वैर्मुनिवरैः पूज्यते जगदम्बिका।३८
त्रिकालं परया भक्त्या पुरश्चरणकर्मभिः। अद्यापि तत्र देवी सा प्रातर्बालातु दृश्यते।३९
मध्याह्ने युवती वृद्धा सायङ्काले तु दृश्यते। तत्रैकदा समायातो नारदो मुनिसत्तमः।४०
रणयन्महतींगायन्गायत्र्याःपरमान्गुणान्। निषसादसभामध्येमुनीनांभावितात्मनाम्।४१
गौतमादिभिरत्युच्चैः पूजितः शान्तमानसः। कथाश्चकारविविधायशसोगौतमस्यच ।४२
ब्रह्मर्षे देवसदसि देवराट् तव यद्यशः। जगौ बहुविधं स्वच्छं मुनिपोषणजं परम्।४३
श्रुत्वा शचीपतेर्वाणीं त्वां द्रष्टुमहमागतः। धन्योऽसि त्वंमुनिश्रेष्ठजगदम्बाप्रसादतः।४४
इत्युक्त्वा मुनिवीर्यं तं गायत्रीसदनं ययौ। ददर्श जगदम्बां तां प्रेमोत्फुल्लविलोचनः।४५
तुष्टाव विधिवद्देवीं जगाम त्रिदिवं पुनः। अथ तत्र स्थिता ये ते ब्राह्मणा मुनिपोषिताः।४६
उत्कर्षं तु मुनेः श्रुत्वाऽसूयया खेदमागताः। यथाऽस्य नयशोभूयात्कर्तव्यंसर्वथैवहि।४७
काले समागतेपश्चादिति सर्वैस्तुनिश्चितम्। ततः कालेनकियताऽप्यभूद्वृष्टिर्धरातले।४८
सुभिक्षमभवत्सर्वं देशेषु नृपसत्तम!। श्रुत्वा वार्तां सुभिक्षस्य मिलिताः सर्ववाडवाः।४९
गौतमं शप्तुद्योगं हाहा राजन्प्रचक्रिरे। धन्यौ तेषां च पितरौ ययोरुत्पत्तिरीदृशी।५०
कालस्य महिमा राजन्वक्तुं केन हि शक्यते। गौर्निर्मिता माययैका मुमूर्षुर्जरतीनृप।५१
जगाम सा चशालायांहोमकालेमुनेस्तदा। हुंहुंशब्दैर्वारितासाप्राणांस्तत्याजतत्क्षणे।५२
गौर्हताऽनेनदुष्टेनेत्येवं ते चुक्रुशुर्द्विजाः। होमं समाप्य मुनिराड्विस्मयं परमं गतः।५३
समाधिमीलिताक्षः संश्चिन्तयामास कारणम्। कृतंसर्वंद्विजैरेतदितिज्ञात्वातदैवसः ।५४
दधार कोपं परमं प्रलये रुद्रकोपवत्। शशाप च ऋषीन्सर्वान्कोपसंरक्तलोचनः।५५
वेदमातरि गायत्र्यां तद्ध्याने तन्मनोर्जपे। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वथा ब्राह्मणाधमाः।५६
वेदे वेदोक्तयज्ञेषु तद्वार्तासु तथैव च। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वथा ब्राह्मणाधमाः।५७
शिवे शिवस्य मन्त्रे च शिवशास्त्रे तथैव च। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।५८
मूलप्रकृत्याः श्रीदेव्यां तद्ध्याने तत्कथासु च। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।५९
देवीमन्त्रं तथा देव्याः स्थानेऽनुष्ठानकर्मणि। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६०
देव्युत्सवदिदृक्षायां देवीनामानुकीर्तने। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६१
देवीभक्तस्य सान्निध्ये देवीभक्तार्चने तथा। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६२
शिवोत्सवदिदृक्षायां शिवभक्तस्य पूजने। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६३
रुद्राक्षेबिल्वपत्रे च तथा शुद्धे च भस्मनि। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६४
श्रौतस्मार्तसदाचारेज्ञानमार्गे तथैव च। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६५
अद्वैतज्ञाननिष्ठायां शान्तिदान्त्यादिसाधने। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६६
नित्यकर्माद्यनुष्ठानेऽप्यग्निहोत्रादिसाधने। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६७
स्वाध्यायाध्ययनैश्चैव तथा प्रवचनेन च। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६८

गोदानादिषु दानेषु पितृश्राद्धेषु चैव हि। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।६९
कृच्छ्रचान्द्रायणे चैव प्रायश्चित्ते तथैव च। भवताऽनुन्मुखा यूयं सर्वदा ब्राह्मणाधमाः।७०
श्रीदेवीभिन्नदेवेषु श्रद्धाभक्तिसमन्विताः। शङ्खचक्राद्यङ्किताश्च भवत ब्राह्मणाधमाः।७१
कापालिकमतासक्त्त बौद्धशास्त्ररताः सदा। पाषण्डाचारनिरता भवत ब्राह्मणाधमाः।७२
पितृमातृसुताभ्रातृकन्याविक्रयिणस्तथा। भार्याविक्रयिणस्तद्वद्भवत ब्राह्मणाधमाः।७३
वेदविक्रयिणस्तद्वत्तीर्थविक्रयिणस्तथा। धर्मविक्रयिणस्तद्वद्भवत ब्राह्मणाधमाः।७४
पाञ्चरात्रे कामशास्त्रे तथा कापालिके मते। बौद्धे श्रद्धायुता यूयं भवत ब्राह्मणाधमाः।७५
मातृकन्यागामिनश्च भगिनीगामिनस्तथा। परस्त्रीलम्पटाः सर्वे भवत ब्राह्मणाधमाः।७६
युष्माकं वंशजाताश्च स्त्रियश्च पुरुषास्तथा। मद्दत्तशापदग्धास्ते भविष्यन्ति भवत्समाः।७७
किंमया बहुनोक्तेन मूलप्रकृतिरीश्वरी। गायत्री परमा भूयाद्युष्मासु खलु कोपिता।७८
अन्धकूपादिकुण्डेषु युष्माकं स्यात्सदा स्थितिः।

व्यास उवाच

वाग्दण्डमीदृशं कृत्वाऽप्युपस्पृश्य जलं ततः ।।७९।।
जगाम दर्शनार्थं च गायत्र्याः परमोत्सुकः। प्रणनाम महादेवीं साऽपि देवी परात्परा।८०
ब्राह्मणानां कृतिंदृष्ट्वास्मयं चित्ते चकार ह। अद्याऽपि तस्यावदनंस्मययुक्तं चदृश्यते।८१
उवाच मुनिवर्यं तं स्मयमानमुखाम्बुजा। भुजङ्गायार्पितंदुग्धं विषायैवोपजायते।८२
शान्तिं कुरु महाभाग! कर्मणो गतिरीदृशी। इति देवीं प्रणाम्याऽथ ततोऽगात्वाऽऽश्रमं प्रति।८३
ततो विप्रैः शापदग्धैर्विस्मृता वेदराशयः। गायत्रीविस्मृतासर्वैस्तदद्भुतमिवाऽभवत्।८४
ते सर्वेऽथ मिलित्वा तु पश्चात्तापयुतास्तथा। प्रणेमुर्मुनिवर्यंतं दण्डवत्पतिताभुवि।८५
नोचुः किञ्चन वाक्यं तु लज्जयाऽधोमुखाः स्थिताः।
प्रसीदेति प्रसीदेति प्रसीदेति पुनः पुनः ।।८६।।
प्रार्थयामासुरभितः परिवार्य मुनीश्वरम्। करुणापूर्णहृदयो मुनिस्तान्समुवाच ह।८७
कृष्णावतारपर्यन्तं कुम्भीपाकेभवेत्स्थितिः। नमे वाक्यंमृषाभूयादितिजानीथसर्वथा।८८
ततः परं कलियुगे भुविजन्म भवेद्धि वाम्। मदुक्तं सर्वमेतत्तु भवेदेव न चाऽन्यथा।८९
मच्छापस्य विमोक्षार्थं युष्माकंस्याद्यदीषणा। तर्हिसेव्यंसदासवर्गायत्रीपदपङ्कजम्।९०

व्यास उवाच

इतिसर्वान्विसृज्याऽथगौतमोमुनिसत्तमः। प्रारब्धमितिमत्वातुचित्तेशान्तिंजगामह।९१
एतस्मात्कारणाद्राजन्गते कृष्णे तु धीमति। कलौयुगेप्रवृत्तेतुकुम्भीपाकात्तुनिर्गताः।९२
भुविजाता ब्राह्मणाश्च शापदग्धाः पुरातुये। सन्ध्यात्रयविहीनाश्चगायत्रीभक्तिवर्जिताः।९३
वेदभक्तिविहीनाश्च पाषण्डमतगामिनः। अग्निहोत्रादिसत्कर्मस्वधास्वाहाविवर्जिताः।९४
मूलप्रकृतिमव्यक्तां नैव जानन्ति कर्हिचित्। तप्तमुद्राङ्किताः केचित्कामाचाररताः परे।९५
कापालिकाःकौलिकाश्च बौद्धाजैनास्तथापरे। पण्डिताअपितेसर्वेदुराचारप्रवर्तकाः।९६
लम्पटाः परदारेषु दुराचारपरायणाः। कुम्भीपाकं पुनः सर्वे यास्यन्तिनिजकर्मभिः।९७
तस्मात्सर्वात्मनाराजन्संसेव्या परमेश्वरी। न विष्णूपासना नित्या न शिवोपासना तथा।९८
नित्याचोपासना शक्तेर्यां विना तु पतत्यधः। सर्वमुक्तंसमासेन यत्पृष्टं तत्त्वयाऽनघ!।९९
अतः परं मणिद्वीपवर्णनं शृणु सुन्दरम्। यत्परस्थानमाद्याया भुवनेश्या भवारणेः।१००

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांद्वादशस्कन्धे ब्राह्मणादीनां गायत्रीभिन्नान्यदेवोपासनाश्रद्धाहेतुनिरूपणंनाम नवमोऽध्यायः।।९।।

* दशमोऽध्यायः *

मणिद्वीपवर्णनम्

व्यास उवाच

ब्रह्मलोकादूर्ध्वभागेसर्वलोकोऽस्तियः श्रुतः। मणिद्वीपः सएवाऽस्तियत्रदेवीविराजते।१
सर्वस्मादधिकोयस्मात्सर्वलोकस्ततः स्मृतः। पुरापराम्बयैवायंकल्पितोकल्पितोमनसेच्छया।२
सर्वादौ निजवासार्थं प्रकृत्या मूलभूतया। कैलाशादधिकोलोकोवैकुण्ठादपिचोत्तमः।३
गोलोकादपि सर्वस्मात्सर्वलोकोऽधिकः स्मृतः। न तत्समं त्रिलोक्यां तु सुन्दरं विद्यते क्वचित्।४
छत्रीभूतं त्रिजगतो भवसन्तापनाशकम्। छायाभूतंतदेवाऽस्तिब्रह्माण्डानांतुसत्तम!।५
बहुयोजनविस्तीर्णो गम्भीरस्तावदेव हि। मणिद्वीपस्यपरितोवर्तते सुधोदधिः।६
मरुत्सङ्घट्टनोत्कीर्णतरङ्गशतसङ्कुलः। रत्नाच्छवालुकायुक्तो झषशङ्खसमाकुलः।७
वीचिसङ्घर्षसञ्जातलहरीकणशीतलः। नानाध्वजसमायुक्तनानापोतगतागतैः।८
विराजमानः परितस्तीररत्नद्रुमोमहान्। तदुत्तरमयो धातुर्निर्मितो गगने ततः।९
सप्तयोजनविस्तीर्णः प्राकारो वर्तते महान्। नानाशस्त्रप्रहरणा नानायुद्धविशारदाः।१०
रक्षका निवसन्त्यत्र मोदमानाः समन्ततः। चतुर्द्वारसमायुक्तो द्वारपालशतान्वितः।११
नानागणैः परिवृतो देवीभक्तियुतैर्नृप। दर्शनार्थं समायान्तिये देवा जगदीशितुः।१२
तेषां गणा वसन्त्यत्र वाहनानि च तत्र हि। विमानशतसङ्घर्षघण्टास्वनसमाकुलः।१३
हयहेषाखुराघातबधिरीकृतदिङ्मुखः। गणैः किलकिलारावैर्वेत्रहस्तैश्च ताडिताः।१४
सेवका देवसङ्घानांभ्राजन्तेतत्रभूमिप!। तस्मिन्कोलाहलेराजन्नशब्दः केनचित्क्वचित्।१५
कस्यचिच्छ्रूयतेऽत्यन्तंनानाध्वनिसमाकुले। पदे पदे मिष्टवारिपरिपूर्णसरांसि च।१६
वाटिका विविधा राजन् रत्नद्रुमविराजिताः। तदुत्तरं महासारधातुनिर्मितमण्डलः।१७
सालोऽपरो महानस्ति गगनस्पर्शियच्छिरः। तेजसा स्याच्छतगुणः पूर्वसालादयं परः।१८
गोपुरद्वारसहितो बहुवृक्षसमन्वितः। यावृक्षजातयः सन्ति सर्वास्तास्तत्रसन्ति च।१९
निरन्तरं पुष्पयुताः सदा फलसमन्विताः। नवपल्लवसंयुक्ताः परसौरभसङ्कुलाः।२०
पनसा बकुला लोध्राः कर्णिकाराश्च शिंशपाः। देवदारुकाञ्चनारा आम्राश्चैव सुमेरवः।२१
लिकुचाहिङ्गुलाश्चैलालवङ्गाः कट्फलास्तथा। पाटलामुचुकुन्दाश्चफलिन्योजघनेफलाः।२२
तालास्तमालाः सालाश्च कङ्कोला नागभद्रकाः। पुन्नागाः पीलवः साल्वका वै कर्पूरशाखिनः।२३
अश्वकर्णा हस्तिकर्णास्तालपर्णाश्च दाडिमाः। गणिका बन्धुजीवाश्च जम्बीराश्च कुरण्डकाः।२४
चाम्पेया बन्धुजीवाश्च तथा वै कनकद्रुमाः। कालागुरुद्रुमाश्चैव तथा चन्दनपादपाः।२५
खर्जूरायूथिकास्तालपर्ण्यश्चैव तथेक्षवः। क्षीरवृक्षाश्च खदिराश्चिंचाभल्लातकास्तथा।२६
रुचकाः कुटजा वृक्षा बिल्ववृक्षास्तथैव च। तुलसीनां वनान्येवं मल्लिकानां तथैवच।२७
इत्यादितरुजातीनां वनान्युपवनानि च। नानावापीशतैर्युक्तान्येवं सन्ति धराधिप!।२८
कोकिलारावसंयुक्ता गुञ्जद्भ्रमरभूषिताः। निर्यासस्राविणः सर्वे स्निग्धच्छायास्तरूत्तमाः।२९
नानाऋतुभवा वृक्षा नानापक्षिसमाकुलाः। नानारसस्राविणीभिर्नदीभिरतिशोभिताः।३०
पारावतशुकव्रातसारिकापक्षमारुतैः। हंसपक्षसमुद्भूता वातव्रातैश्चलद्द्रुमम्।३१
सुगन्धग्राहिपवनपूरितं तद्वनोत्तमम्। सहितं हरिणीयूथैर्धावमानैरितस्ततः।३२
नृत्यद्बर्हिकदम्बस्य केकरावैः सुखप्रदैः। नादितं तद्वनं दिव्यं मधुस्राावि समन्ततः।३३

कांस्यसालादुत्तरे तु ताम्रसालः प्रकीर्तितः। चतुरस्रसमाकार उन्नत्या सप्तयोजनः।३४
द्वयोस्तु सालयोर्मध्ये सम्प्रोक्त कल्पवाटिका। येषां तरूणां पुष्पाणि काञ्चनाभानि भूमिप!।३५
पत्राणि काञ्चनाभानि रत्नबीजफलानि च। दशयोजनगन्धो हि प्रसर्पति समन्ततः।३६
तद्वनं रक्षितं राजन्वसन्तेनर्तुनाऽनिशम्। पुष्पसिंहासनासीनः पुष्पच्छत्रविराजितः।३७
पुष्पभूषाभूषितश्च पुष्पासवविघूर्णितः। मधुश्रीर्माधवश्रीश्च द्वेभार्ये तस्य सम्मते।३८
क्रीडतः स्मेरवदने सुमस्तबककन्दुकैः। अतीव रम्यं विपिनं मधुस्रावि समन्ततः।३९
दशयोजनपर्यन्तं कुसुमामोदवायुना। पूरितं दिव्यगन्धर्वैः साङ्गनैर्गानलोलुपैः।४०
शोभितं तद्वनं दिव्यं मत्तकोकिलनादितम्। वसन्तलक्ष्मीसंयुक्तंकामिकामप्रवर्धनम्।४१
ताम्रसालादुत्तरत्र सीससालः प्रकीर्तितः। समुच्छ्रयः स्मृतोऽप्यस्य सप्तयोजनसङ्ख्यया।४२
सन्तानवाटिकामध्ये सालयोस्तु द्वयोर्नृप!। दशयोजनगन्धस्तु प्रसूनानां समन्ततः।४३
हिरण्याभानि कुसुमान्युत्फुल्लानि निरन्तरम्। अमृतद्रवसंयुक्तफलानि मधुराणि च।४४
ग्रीष्मर्तुर्नायकस्तस्या वाटिकायानृपोत्तम!। शुक्रश्रीश्चशुचिश्रीश्चद्वेभार्येतस्यसम्मते।४५
सन्तापत्रस्तलोकास्तु वृक्षमूलेषु संस्थिताः। नानासिद्धैः परिवृतोनानादेवैः समन्वितः।४६
विलासिनीनां वृन्दैस्तु चन्दनद्रवपङ्किलैः। पुष्पमालाभूषितैस्तु तालवृन्तकराम्बुजैः।४७
प्राकारः शोभितोराजञ्छीतलाम्बुनिषेविभिः। सीससालादुत्तरत्राप्यारकूटमयः शुभः।४८
प्राकारो वर्तते राजन्मुनियोजनदैर्घ्यवान्। हरिचन्दनवृक्षाणां वाटीमध्येतयोः स्मृता।४९
सालयोरधिनाथस्तु वर्षर्तुर्मेघवाहनः। विद्युत्पिङ्गलनेत्रश्च जीमूतकवचः स्मृतः।५०
वज्रनिर्घोषमुखरश्चेन्द्रधन्वा समन्ततः। सहस्रशो वारिधारामुञ्चन्नास्ते गणाग्रतः।५१
नभः श्रीश्च नभस्यश्रीः स्वरस्यारस्यमालिनी। अम्बा दुलानिरत्निश्चाऽभ्रमन्ती मेघयन्तिका।५२
वर्षयन्ती चिपुणिका वारिधारा च सम्मताः। वर्षर्तोर्द्वादशप्रोक्ताः शक्तयोमदविह्वलाः।५३
नवपल्लववृक्षाश्च नवीनलतिकान्विताः। हरितानि तृणान्येव वेष्टिता यैर्धराऽखिला।५४
नदीनदप्रवाहाश्च प्रवहन्ति च वेगतः। सरांसि कलुषाम्बूनि रागिचित्तसमानि च।५५
वसन्ति देवाः सिद्धाश्च ये देवीकर्मकारिणः। वापीकूपतडागाश्च येदेव्यर्थसमर्पिताः।५६
ते गणा निवसन्त्यत्र सविलासाश्च साङ्गनाः। आरकूटमयादग्रे सप्तयोजनदैर्घ्यवान्।५७
पञ्चलोहात्मकः सालो मध्येमन्दारवाटिका। नानापुष्पलताकीर्णानानापल्लवशोभिता।५८
अधिष्ठाताऽत्र सम्प्रोक्तः शरदृतुरनामयः। इषलक्ष्मीरूर्जलक्ष्मीर्द्वे भार्ये तस्य सम्मते।५९
नानासिद्धा वसन्त्यत्र साङ्गनाः सपरिच्छदाः। पञ्चलोहमयादग्रे सप्तयोजनदैर्घ्यवान्।६०
दीप्यमानो महाशृङ्गैर्वर्तते रौप्यसालकः। पारिजाताटवीमध्ये प्रसूनस्तबकान्विता।६१
दशयोजनगन्धीनि कुसुमानि समन्ततः। मोदयन्ति गणान्सर्वान्ये देवीकर्मकारिणः।६२
तत्राऽधिनाथः सम्प्रोक्तो हेमन्तर्तुर्महोज्ज्वलः। सगणः सायुधः सर्वान् रागिणो रञ्जयन्नृप!।६३
सहश्रीश्च सहस्यश्रीर्द्वे भार्ये तस्य सम्मते। वसन्ति तत्रसिद्धाश्चयेदेवीव्रतकारिणः।६४
रौप्यसालमयादग्रे सप्तायोजनदैर्घ्यवान्। सौवर्णसालः सम्प्रोक्तस्तप्तहाटककल्पितः।६५
मध्ये कदम्बवाटी तु पुष्पपल्लवशोभिता। कदम्बमदिराधाराः प्रवर्तन्ते सहस्रशः।६६
याभिर्निपीतपीताभिर्निजानन्दोऽनुभूयते। तत्राधिनाथः सम्प्रोक्तः शैशिरर्तुर्महोदयः।६७
तपः श्रीश्च तपस्यश्रीर्द्वेभार्ये तस्य सम्मते। मोदमानः सहैताभ्यांवर्ततेशिशिराकृतिः।६८
नानाविलाससंयुक्तो नानागणसमावृतः। निवसन्ति महासिद्धा ये देवीदानकारिणः।६९
नानाभोगसमुत्पन्नमहानन्दसमन्विताः। साङ्गनाः परिवारैस्तु सङ्घशः परिवारिताः।७०

स्वर्णसालमयादग्रे मुनियोजनदैर्घ्यवान्। पुष्परागमयः सालः कुङ्कुमारुणविग्रहः।७१
पुष्परागमयी भूमिर्वनान्युपवनानि च। रत्नवृक्षालवालाश्च पुष्परागमयः स्मृताः।७२
प्राकारो यस्य रत्नस्य तद्रत्नरचिता द्रुमाः। वनभूः पक्षिणश्चैव रत्नवर्णजलानि तु।७३
मण्डपा मण्डपस्तः भाः सरांसि कमलानि च। प्राकारे तत्र तद्यत्स्यात्तत्सर्वं तत्समं भवेत्।७४
परिभाषेयमुद्दिष्टा रत्नसालादिषु प्रभो। तेजसा स्याल्लक्षगुणः पूर्वसालात्परो नृप!।७५

दिक्पाला निवसन्त्यत्र प्रतिब्रह्माण्डवर्तिनाम् ।
दिक्पालानां समष्ट्यात्मरूपाः स्फूर्जद्वरायुधाः ।।७६।।

पूर्वाशायां समुत्तुङ्गाश्रृङ्गा पूरमरावती। नानोपवनसंयुक्तो महेन्द्रस्तत्र राजते।७७

स्वर्गशोभा च या स्वर्गे यावती स्यात्ततोऽधिका ।
समष्टिशतनेत्रस्य सहस्रगुणतः स्मृता ।।७८।।

ऐरावतसमारूढो वज्रहस्तः प्रतापवान्। देवसेनापरिवृतो राजतेऽत्र शतक्रतुः।७९
देवाङ्गनागणयुता शची तत्र विराजते। वह्निकोणे वह्निपुरी वह्निपूः सदृशी नृप।८०
स्वाहास्वधासमायुक्ता वह्निस्तत्र विराजते। निजवाहनभूषाढ्यो निजदेवगणैर्वृतः।८१
याम्याशायां यमपुरी तत्र दण्डधरो महान्। स्वभटैर्वेष्टितो राजन्चित्रगुप्तपुरोगमैः।८२

निजशक्तियुतो भास्वत्तनयोऽस्ति यमो महान् ।
नैर्ऋत्यां दिशि राक्षस्यां राक्षसैः परिवारितः ।।८३।।

खड्गधारी स्फुरन्नास्ते निर्ऋतिर्निजशक्तियुक्। वारुण्यां वरुणो राजा पाशधारी प्रतापवान्।८४
महाझषसमारूढो वारुणीमधुविह्वलः। निजशक्तिसमायुक्तो निजयादोगणान्वितः।८५
समास्ते वारुणेलोकेवरुणानीरताकुलः। वायुकोणेवायुलोकोवायुस्तत्राऽधितिष्ठति।८६
वायुसाधनसंसिद्ध योगिभिः परिवारितः। ध्वजहस्तोविशालाक्षोमृगवाहनसंस्थितः।८७
मरुद्गणैः परिवृतोनिजशक्तिसमन्वितः। उत्तरस्यांदिशिमहान्यक्षलोकोऽस्तिभूमिप!।८८

यक्षाधिराजस्तत्राऽऽस्ते वृद्धिऋद्ध्यादिशक्तिभिः ।
नवभिर्निधिभिर्युक्तस्तुन्दिलो धननायकः ।।८९।।

मणिभद्रः पूर्णभद्रो मणिमान्मणिकन्धरः। मणिभूषोमणिस्रग्वी मणिकामुकधारकः।९०
इत्यादियक्षसेनानीसहितो निजशक्तियुक्। ईशानकोणे सम्प्रोक्तो रुद्रलोको महत्तरः।९१
अनर्घ्यरत्नखचितो यत्र रुद्रोऽधिदैवतम्। मन्युमान्दीप्तनयनो बद्धपृष्ठमहेषुधिः।९२
स्फूर्जद्धनुर्वामहस्तोऽधिज्यधन्वभिरावृतः। स्वसमानैरसङ्ख्यातरुद्रैः शूलवरायुधैः।९३
विकृतास्यैः करालास्यैर्वमद्वह्निभिरास्यतः। दशहस्तैः शतकरैः सहस्रभुजसंयुतैः।९४
दशपादैर्दशग्रीवैस्त्रिनेत्रैरुग्रमूर्तिभिः । अन्तरिक्षचरा ये च ये च भूमिचराः स्मृताः।९५
रुद्राध्यायेस्मृतारुद्रास्तैः सर्वैश्चसमावृतः। रुद्राणीकोटिसहितोभद्रकाल्यादिमातृभिः।९६
नानाशक्तिसमाविष्टडामर्यादिगणावृतः । वीरभद्रादिसहितो रुद्रो राजन्विराजते।९७
मुण्डमालाधरो नागवलयो नागकन्धरः। व्याघ्रचर्मपरीधानो गजचर्मोत्तरीयकः।९८
चिताभस्माङ्गलिप्ताङ्गः प्रमथादिगणावृतः। निनदड्डमरुध्वानैर्बधिरीकृतदिङ्मुखः ।९९
अट्टहासास्फोटशब्दैः सन्त्रासितनभस्तलः। भूतसङ्घसमाविष्टो भूतावासो महेश्वरः।

ईशानदिक्पतिः सोऽयं नाम्ना चेशान एव च ।।१००।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांद्वादशस्कन्धे मणिद्वीपवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः ।।१०।।

* एकादशोऽध्यायः *

पद्मरागादिमणिनिर्मितप्राकारवर्णनम्

व्यास उवाच

पुष्परागमयादग्रे कुङ्कुमारुणविग्रहः। पद्मरागमयः सालो मध्ये भूश्चैव तादृशी।१
दशयोजनवान्दैर्घ्ये गोपुरद्वारसंयुतः। तन्मणिस्तंभसंयुक्ता मण्डपाः शतशो नृप।२
मध्ये भुवि समासीनाश्चतुः षष्टिमिताः कलाः। नानायुधधरा वीरा रत्नभूषणभूषिताः।३
प्रत्येकलोकस्तासां तु तत्तल्लोकस्य नायकाः। समन्तात्पद्मरागस्य परिवार्य स्थिताः सदा।४
स्वस्वलोकजनैर्जुष्टाः स्वस्ववाहनहेतिभिः। तासां नामानि वक्ष्यामि शृणु त्वं जनमेजय!।५

पिङ्गलाक्षी विशालाक्षी समृद्धिर्वृद्धिरेव च।
श्रद्धा स्वाहा स्वधाऽभिख्या माया सञ्ज्ञा वसुन्धरा।।६।।

त्रिलोकधात्री सावित्री गायत्री त्रिदशेश्वरी। सुरूपा बहुरूपा च स्कन्दमाताऽच्युतप्रिया।७
विमला चामला तद्वदरुणी पुनरारुणी। प्रकृतिर्विकृतिः सृष्टिः स्थितिः संहृतिरेव च।८
सन्ध्या माता सती हंसी मर्दिका वज्रिका परा। देवमाता भगवती देवकी कमलासना।९
त्रिमुखी सप्तमुख्यन्या सुरासुरविमर्दिनी। लम्बोष्ठी चोर्ध्वकेशी च बहुशीर्षा वृकोदरी।१०
रथरेखाह्वया पश्चाच्छशिरेखा तथाऽपरा। गगनवेगा पवनवेगा चैव ततः परम्।११
अग्रे भुवनपाला स्यात् तपश्चान्मदनातुरा। अनङ्गाऽनङ्गमथना तथैवाऽनङ्गमेखला।१२
अनङ्गकुसुमा पश्चाद्विश्वरूपा सुरादिका। क्षयङ्करी भवेच्छक्तिरक्षोभ्या च ततः परम्।१३
सत्यवादिन्यश्च प्रोक्ता बहुरूपा शुचिव्रता। उदाराख्या च वागीशो चतुष्षष्टिमिताः स्मृताः।१४
ज्वलजिह्वाननाः सर्वावमन्त्यो वह्निमुल्वणम्। जलं पिवामः सकलं संहरामो विभावसुम्।१५
पवनं स्तम्भयामोऽद्य भक्षयामोऽखिलं जगत्। इति वाचं सङ्गिरन्ते क्रोधसंरक्तलोचनाः।१६
चाप-बाणधराः सर्वायुद्धायैवोत्सुकाः सदा। दंष्ट्राकटकटारवैर्बधिरीकृतदिङ्मुखाः।१७
पिङ्गोर्ध्वकेश्यः सम्प्रोक्ताश्चापबाणकराः सदा। शताक्षौहिणीका सेनाऽप्येकैकस्याः प्रकीर्तिता।१८
एकैकशक्तेः सामर्थ्यं लक्षब्रह्माण्डनाशने। शताक्षौहिणिका सेना तादृशी नृपसत्तम।१९
किं न कुर्याज्जगत्यस्मिन् न शक्यं वक्तुमेव तत्। सर्वापि युद्धसामग्री तस्मिन् साले स्थिता मुने!।२०
रथानां गणना नास्ति हयानां करिणां तथा। शस्त्राणां गणना तद्वद्गणानां गणना तथा।२१
पद्मरागमयादग्रे गोमेदमणिनिर्मितः। दशयोजनदैर्घ्येण प्राकारो वर्तते महान्।२२
आत्वज्जपाप्रसूनाभो मध्यभूस्तस्य तादृशी। गोमेदकल्पितान्येव तद्वासिसदनानि च।२३
पक्षिणः स्तम्भवर्याश्चवृक्षा वाप्यः सरांसि च। गोमेदकल्पिता एव कुङ्कुमारुणविग्रहाः।२४
तन्मध्यस्था महादेव्यो द्वात्रिंशच्छक्तयः स्मृताः। नानाशस्त्रप्रहरणा गोमेदमणिभूषिताः।२५
प्रत्येकलोकवासिन्यः परिवार्य समन्ततः। गोमेदसाले सन्नद्धा पिशाचवदना नृप।२६
स्वर्लोकवासिभिर्नित्यं पूजिताश्चक्रबाहवः। क्रोधरक्तेक्षणा भिन्धि पच च्छिन्धि दहेति च।२७
वदन्ति सततं वाचं युद्धोत्सुकहृदन्तराः। एकैकस्या महाशक्तेर्दशाऽक्षौहिणिका मता।२८
सेनातत्राऽप्येकशक्तिर्लक्षब्रह्माण्डनाशिनी। तादृशीनां महासेना वर्णनीया कथं नृप।२९
रथानां नैव गणना वाहनानां तथैव च। सर्वयुद्धसमारम्भस्तत्र देव्या विराजते।३०

तासां नामानि वक्ष्यामि पापनाशकराणि च। विद्या-ह्री-पुष्टयः प्रज्ञा सिंनीवाली कुहूस्तथा।३१
रुद्रा वीर्या प्रभा नन्दा पोषिणी ऋद्धिदा शुभा। कालरात्रिर्महारात्रिर्भद्रकाली कपर्दिनी।३२

विकृतिर्दण्डि-मुण्डिन्यौ सेन्दुकण्डा शिखण्डिनी।
निशुम्भशुम्भमथिनी महिषासुरमर्दिनी ॥३३॥

इन्द्राणी चैव रुद्राणी शङ्करार्धशरीरिणी। नारी नारायणी चैव त्रिशूलिन्यपि पालिनी।३४
अम्बिका ह्लादिनी पश्चादित्येव शक्तयः स्मृताः। यद्येताः कुपिता देव्यस्तदा ब्रह्माण्डनाशनम्।३५
पराजयो न चैतासां कदाचित् क्वचिद्वस्ति हि। गोमेदकमयादग्रे सद्वज्रमणिनिर्मितः।३६
दशयोजनतुङ्गोऽसौ गोपुरद्वारसंयुतः। कपाटशृङ्खलाबद्धो नववृक्षसमुज्ज्वलः।३७
सालस्तन्मध्यभूम्यापि सर्वं हरिमयं स्मृतम्। गृहाणि वीथयो रथ्यामहामार्गाङ्गणानि च।३८
वृक्षाऽऽल-वाल-तरवः सारङ्गा अपि तादृशाः। दीर्घिकाश्रेणयोवाप्यस्तडागाः कूपसंयुताः।३९
तत्र श्रीभुवनेश्वर्या वसन्ति परिचांबिकाः। एकैकालक्षदासीभिः सेविता मदगर्विता।४०
तालवृन्तधराः काश्चिच्चषकाढ्यकराम्बुजाः। काश्चित् ताम्बूलपात्राणि धारयन्त्योऽतिगर्विताः।४१
काश्चित् तुच्छत्रधारिण्यश्चामराणां विधारिकाः। नानावस्त्रधराः काश्चित् काश्चित् पुष्पकराम्बुजाः।४२

नानादर्शकराः काश्चित् काश्चित् कुङ्कुमलेपनम्।
धारयन्त्यः कज्जलं च सिन्दूरचषकं पराः ॥४३॥

काश्चिच्चित्रकनिर्मात्र्यः पादसंवाहने रताः। काश्चित् तु भूषाकारिण्यो नानाभूषाधराः पराः।४४
पुष्पभूषणनिर्मात्र्यः पुष्पशृङ्गारकारिकाः। नानाविलासचतुरा बह्व्य एवंविधाः पराः।४५
निबद्धपरिधानीया युवत्यः सकधा अपि। देवीकृपालेशवशात् तुच्छीकृतजगत्त्रयाः।४६
एता दूत्यः स्मृता देव्यः शृङ्गारमदगर्विताः। तासां नामानि वक्ष्यामि शृणु मे नृपसत्तम!।४७
अनङ्गरूपा प्रथमाऽप्यनङ्गमदना परा। तृतीया तु ततः प्रोक्ता सुन्दरी मदनातुरा।४८
ततो भुवनवेगास्यात् तथा भुवनपालिका। स्यात् सर्वशिशिराऽनङ्गवेदनाऽनङ्गमेखला।४९
विद्युद्दामसमानाङ्ग्यः क्वणत्काञ्चीगुणान्विताः। रणन्मञ्जीरचरणा बहिरन्तरितस्ततः।५०
धावमानास्तु शोभन्ते सर्वा विद्युल्लतोपमाः। कुशलाः सर्वकार्येषु वेत्रहस्ताः समन्ततः।५१
अष्टदिक्षु तथैतासां प्रकाराद्वहिरेव च। सदनानि विराजन्ते नानावाहनहेतिभिः।५२
वज्रसालादग्रभागे सालो वैदूर्यनिर्मितः। दशयोजनतुङ्गोऽसौ गोपुरद्वारभूषितः।५३
वैदूर्यभूमिः सर्वाऽपि गृहाणि विविधानि च। वीथ्यो रथ्या महामार्गाः सर्वे वैदूर्यनिर्मिताः।५४
वापी-कूप-तडागाश्च स्रवन्तीनां तटानि च। वालुका चैव सर्वाऽपि वैदूर्यमणिनिर्मिता।५५

तत्राऽष्टदिक्षु परितो ब्राह्म्यादीनां च मण्डलम्।
निजैर्गणैः परिवृतं भ्राजते नृपसत्तम ॥५६॥

प्रतिब्रह्माण्डमातुणां ताः समष्टय ईरिताः। ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा।५७
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्त मातरः। अष्टमी तु महालक्ष्मीर्नाम्ना प्रोक्तास्तु मातरः।५८
ब्राह्मरुद्रादिदेवानां समाकारास्तुताः स्मृताः। जगत्कल्याणकारिण्यः स्वस्वसेनासमावृताः।५९
तत्सालस्य चतुर्द्वार्षु वाहनानि महेशितुः। सज्ज्ञानि नृपते सन्ति सालङ्काराणि नित्यशः।६०

दन्तिनः कोटिशो वाहाः कोटिशः शिबिकास्तथा।
हंसाः सिंहाश्च गरुडा मयूरा वृषभास्तथा ॥६१॥

तद्युक्ताः स्यन्दनास्तद्वत् कोटिशो नृपनन्दन। पार्ष्णिग्राहसमायुक्ता ध्वजैराकाशचुम्बिनः।६२

कोटिशस्तु विमानानि नानाचिह्नान्वितानि च।
नानावादित्रयुक्तानि महाध्वजयुतानि च ।।६३।।

वैदूर्यमणिसालस्याऽप्यग्रे सालः परः स्मृतः। दशयोजनतुङ्गोऽसाविन्दनीलाश्मनिर्मितः।६४
तन्मध्यभूस्तथा वीथ्यो महामार्गा गृहाणि च। वापी-कूप-तडागाश्च सर्वे तन्मणिनिर्मिताः।६५
तत्र पद्मं सम्प्रोक्तं बहुयोजनविस्तृतम्। षोडशारं दीप्यमानं सुदर्शनमिवापरम्।६६
तत्र षोडश शक्तीनां स्थानानि विविधानि च। सर्वोपस्करयुक्तानि समृद्धानि वसन्ति हि।६७
तासां नामानि वक्ष्यामि शृणु मे नृपसत्तम। कराली विकराली च तथोमा च सरस्वती।६८
श्रीदुर्गोषा तथा लक्ष्मीः श्रुतिश्चैव स्मृतिर्धृतिः। श्रद्धा मेधा मतिः कान्तिरार्या षोडशशक्तयः।६९
नीलजीमूतसंकाशाः करवालकराम्बुजाः। समाः खेटकधारिण्यो युद्धोपक्रान्तमानसाः।७०
सेनान्यः सकला एताः श्री देव्या जगदीशितुः। प्रतिब्रह्माण्डसंस्थानां शक्तीनां नायिकाः स्मृताः।७१
ब्रह्माण्डक्षोभकारिण्यो देवीशक्त्युपबृंहिताः। नानारथसमारूढा नानाशक्तिभिरन्विताः।७२
एतत् पराक्रमं वक्तुं सहस्रास्योऽपि न क्षमः। इन्द्रनीलमहासालादग्रे तु बहुविस्तृतः।७३
मुक्ताप्राकार उदितो दशयोजनदैर्घ्यवान्। मध्यभूः पूर्ववत् प्रोक्ता तन्मध्येऽष्टदलाअम्बुजम्।७४
मुक्तामणिगणाकीर्णं विस्तृतं तु स-केसरम्। तत्र देवीसमाकारादे व्यायुधधराः सदा।७५
सम्प्रोक्ता अष्टमन्त्रिण्यो जगद्वार्ताप्रबोधिकाः। देवीसमानभोगास्ता इङ्गितज्ञास्तु पण्डिताः।७६
कुशलाः सर्वकार्येषु स्वामिकार्यपरायणाः। देव्यभिप्रायबोध्यस्ताश्चतुरा अतिसुन्दराः।७७
नानाशक्तिसमायुक्ताः प्रतिब्रह्मायवर्तिनाम्। प्राणिनां ताः समाचारं ज्ञानशक्त्या विदन्ति च।७८
तासां नामानि वक्ष्यामि मत्तः शृणुनृपोत्तम। अनङ्गकुसुमा प्रोक्ताऽप्यनङ्गकुसुमातुरा।७९
अनङ्गमदना तद्वदनङ्गमदनातुरा। भुवनपाला गगनवेगा चैव ततः परम्।८०
शशिरेखा च गगनरेखा चैव ततः परम्। पाशा-ऽङ्कुश-वरा-ऽभीतिधरा अरुणाविग्रहाः।८१
विश्वसम्बन्धिनी वार्ता बोधयन्ति प्रतिक्षमम्। मुक्तासालादग्रभागे महामारकतोऽपरः।८२
सालोत्तमः समुद्दिष्टो दशयोजनदैर्घ्यवान्। नानासौभाग्यसंयुक्तो नानाभोगसमन्वितः।८३
मध्यभूस्तादृशी प्रोक्ता सदनानि तथैव च। षट्कोणमत्र विस्तीर्णं कोणस्था देवताः शृणु।८४

पूर्वकोणे चतुर्वक्त्रो गायत्रीसहितो विधिः ।
कुण्डिका-ऽक्ष-गुणा-ऽभीति-दण्डायुधधरः परः ।।८५।।

तदायुधधरा देवी गायत्री परदेवता। वेदाः सर्वे मूर्तिमन्तः शास्त्राणि विविधानि च।८६
स्मृतयश्च पुराणानि मूर्तिमन्ति वसन्ति हि। ये ब्रह्मविग्रहाः सन्ति गायत्रीविग्रहाश्च ये।८७
व्याहृतीनां विग्रहाश्चते नित्यं तत्र सन्ति हि। रक्षः कोणे शङ्खचक्र गदाऽम्बुजकराऽम्बुजा।८८
सावित्री वर्तते तत्र महाविष्णुश्च तादृशः। ये विष्णुविग्रहाः सन्ति मत्स्यकूर्मादयोऽखिलाः।८९
सावित्रीविग्रहा ये च ते सर्वे तत्र सन्ति हि। वायुकोणे परश्वक्ष-माला-ऽभय-वरान्वितः।९०
महारुद्रो वर्ततेऽत्र सरस्वत्यपि तादृशी। ये ये तु रुद्रभेदाः स्युर्दक्षिणास्यादयो नृप।९१
गौरीभेदाश्च ये सर्वे ते तत्र निवसन्ति हि। चतुःषष्ट्यागमा ये चये चाऽन्येऽप्यागमाः स्मृताः।९२
ते सर्वे मूर्तिमन्तश्च तत्रैव निवसन्ति हि। अग्निकोणे रत्नकुम्भं तथा मणिकरण्डकम्।९३
दधानो निजहस्ताभ्यां कुबेरो धनदायकः। नानावीथीसमायुक्तो महालक्ष्मीसमन्वितः।९४

दिव्यानिधिपतिस्त्वास्ते स्वगणैः परिवेष्टितः। वारुणे तु महाकोणे मदनो रतिसंयुतः।६५
पाशाऽङ्कुश-धनुर्बाणधरो नित्यं विराजते। शृङ्गार मूर्तिमन्तस्तु तत्र संनिहिताः सदा।६६
ईशानकोणे विघ्नेशो नित्यं पुष्टिसमन्वितः। पाशाऽङ्कुशधरो वीरो विघ्नहर्ता विराजते।६७
विभूतयो गणेशस्य या याः सन्ति नृपोत्तम। ताः सर्वानि वसन्त्यत्र महैश्वर्यसमन्विताः।६८
प्रतिब्रह्माण्डसंस्थानां ब्रह्मादीनां समष्टयः। एते ब्रह्मादयः प्रोक्ताः सेवन्ते जगदीश्वरीम्।६६
महामारकतस्याऽग्रे शतयोजनदैर्घ्यवान्। प्रवालशालोस्त्यपरः कुङ्कुमारुणविग्रहः।१००
मध्यभूस्तादृशी प्रोक्तां सदनानि च पूर्ववत्। तन्मध्ये पञ्चभूतानां स्वामिन्यः पञ्च सन्ति च।१०१
हृल्लेखा गगना रक्ता चतुर्थी तु करालिका। महोच्छुष्मा पञ्चमी च पञ्चभूतसमप्रभाः।१०२

पाशा-ऽङ्कुश-वरा-ऽभीतिधारिण्योऽभितभूषणाः ।
देवीसमानवेषाढ्या नवयौवनगर्विताः ।।१०३।।

प्रवालशालादग्रे तु नवरत्नविनिर्मितः। बहुयोजनविस्तीर्णोमहाशालोऽस्ति भूमिप!।१०४
तत्र चाम्नायदेवीनां सदनानि बहून्यपि। नवरत्नमयान्येव तडागाश्च सरांसि च।१०५
श्रीदेव्या येऽवताराः स्युस्ते तत्र निवसन्ति हि। महाविद्या महाभेदाः सन्तितत्रैव भूमिप!।१०६
निजावरणदेवीभिर्निजभूणवाहनैः। सर्वेदेव्यो विराजन्ते कोटिसूर्यसमप्रभः।१०७
सप्तकोटिमहामन्त्रदेवताः सन्ति तत्र हि। नवरत्नमयादग्रे चिन्तामणिगृहं महत्।१०८
तत्रत्यं वस्तुमात्रं तु चिन्तामणिविनिर्मितम्। सूर्योद्‌गारोपलैस्तद्वच्चन्द्रोद्गारोपलैस्तथा।१०६

विद्युत्प्रभोपलैः स्तम्भाः कल्पितास्तु सहस्रशः ।
येषां प्रभाभिरन्तस्थंवस्तु किञ्चिन्न दृश्यते ।।११०।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कन्धे एकादशोऽध्यायः ।।११।।

* द्वादशोऽध्यायः *

व्यास उवाच

तदेव देवोसदनं मध्यभागे विराजते। सहस्रस्तम्भसंयुक्ताश्चत्वारस्तेषु मण्डपाः।१
शृङ्गारमण्डपश्चैको मुक्तिमण्डप एव च। ज्ञानमण्डपसंज्ञस्तु तृतीयः परिकीर्तितः।२
एकान्तमण्डपश्चैव चतुर्थः परिकीर्तितः। नानावितानसंयुक्ता नानाधूपैस्तु धूपिताः।३

कोटिसूर्यसमाः कान्त्या भ्राजन्ते मण्डपाः शुभाः ।
तन्मण्डपानां परितः काश्मीरवनिका स्मृता ।।४।।

मल्लिका कुन्दवनिका यत्र पुष्कलकाः स्थिताः। असङ्ख्याता मृगमदैः पूरितास्तत्स्रवा नृप!।५
महापद्माटवी तद्वद्रत्नसोपाननिर्मिता। सुधारसेन सम्पूर्णा गुञ्जन्मत्तमव्रती।६
हंसकारण्डवाकीर्णा गन्धपूरितदिक्तटा। वनिकानां सुगन्धैस्तु मणिद्वीपं सुवासितम्।७
शृङ्गारमण्डपे देव्योगायन्ति विविधैः स्वरैः। सभासदो देववशा मध्ये श्रीजगदम्बिका।८
मुक्तिमण्डपमध्ये तु मोचयत्यनिशं शिवा। ज्ञानोपदेशं कुरुते तृतीये नृप मण्डपे।६
चतुर्थमण्डपे चैव जगद्रक्षाविचिन्तनम्। मन्त्रिणीसहिता नित्यं करोति जगदम्बिका।१०
चिन्तामणिगृहे राजञ्छक्तितत्त्वात्मकैः सरैः। सोपानैर्दशभिर्युक्तो मञ्चकोऽप्यधिराजते।११
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः। एते मञ्चखुराः प्रोक्ताः फलकस्तु सदाशिवः।१२
तस्योपरि महादेवो भुवनेशो विराजते। या देवी निजलीलार्थं द्विधाभूता बभूव ह।१३

सृष्ट्यादौ तु स एवायं तदर्धाङ्गो महेश्वरः। कन्दर्पनाशोद्यत्कोटिकन्दर्पसुन्दरः ।१४
पञ्चवक्त्रस्त्रिनेत्रश्च मणिभूषणभूषितः। हरिणा-ऽभीति-परशून्वरं च निजबाहुभिः।१५
दधानः षोडशाब्दोऽसौ देवः सर्वेश्वरी महान्। कोटिसूर्यप्रतीकाशश्चन्द्रकोटिसुशीतलः ।१६
शुद्धस्फटिक सङ्काशस्त्रिनेत्रः शीतलद्युतिः। वामाङ्के सन्निषण्णाऽस्य देवी श्रीभुवनेश्वरी।१७
नवरत्नगणाकीर्ण-काञ्चीदामविराजिता। तप्तकाञ्चनसन्नद्ध - वैदूर्याङ्गदभूषणा।१८
कनच्छ्रीचक्रताटङ्क - विटङ्कवदनाम्बुजा। ललाटकान्तिविभव-विजितार्धसुधाकरा।१९
बिम्बकान्तितिरस्कारि-रदच्छदविराजिता। लसत्कुङ्कुमकस्तूरी-तिलकोद्भासितानना।२०
दिव्यचूडामणिस्फार-चञ्चच्चन्द्रकसूर्यका। उद्यत्कविसमस्वच्छ - नासाभरणभासुरा।२१
चिन्ताकलम्बितस्वच्छ-मुक्तागुच्छविराजिता। पाटीरपङ्ककर्पूर - कुङ्कुमालङ्कृतस्तनी।२२
विचित्रविविधाकल्पा कम्बुसङ्काशकन्धरा। दाडिमीफलबीजाभदन्तपङ्क्तिविराजिता।२३
अनर्घ्यरत्नघटित - मुकुटाञ्चितमस्तका। मत्तालिमालाविलस-दलकाढ्यमुखाम्बुजा।२४
कलङ्ककार्श्यनिर्मुक्त - शरच्चन्द्रनिभानना। जाह्नवीसलिलावर्त-शोभिनाभिविभूषिता।२५
माणिक्यशकलाबद्ध-मुद्रिकाङ्गुलिभूषिता। पुण्डरीकदलाकार - नयनत्रयसुन्दरी।२६
कल्पिताच्छमहाराग-पद्मरागोज्ज्वलप्रभा। रत्नकिङ्किणिकायुक्त-रत्नकङ्कणशोभिता।२७
मणिमुक्तासरापार - लसत्पदकसन्ततिः। रत्नाङ्गुलिप्रवितत - प्रभाजालसत्करा।२८
कञ्चुकीगुम्फितापार-नानारत्नततिद्युतिः। मल्लिकामोदिधम्मिल्ल-मल्लिकालिसरावृता।२९
सुवृत्तनिबिडोत्तुङ्ग-कुचभारालसा शिवा। वर-पाशाऽऽङ्कुशा-ऽभीति-लसद्बाहुचतुष्टया।३०
सर्वशृङ्गारवेषाढ्या सुकुमाराङ्गवल्लरी। सौन्दर्यधारासर्वस्वा निर्व्याजकरुणामयी।३१
निजसंलापमाधुर्य-विनिर्भर्त्सितकच्छपी। कोटिकोटिरवीन्दूनां कान्ति या बिभ्रती परा।३२
नानासखीभिर्दासीभिस्तथा देवाङ्गनादिभिः। सर्वाभिर्देवताभिस्तु समन्तात् परिवेष्टिता।३३

इच्छाशक्त्या ज्ञानशक्त्या क्रियाशक्त्या समन्विता ।
लज्जा तुष्टिस्तथा पुष्टिः कीर्तिः कान्तिः क्षमा दया ।।३४।।
बुद्धिर्मेधा स्मृतिर्लक्ष्मीर्मूर्तिमत्योऽङ्गनाः स्मृताः ।
जया च विजया चैवऽप्यजिता चाऽपराजिता ।।३५।।
नित्या विलासिनी दोग्ध्री त्वघोरा मङ्गला नवा ।
पीठशक्तय एतास्तु सेवन्ते यां पराम्बिकाम् ।।३६।।
यस्यास्तु पार्श्वभागे स्तो निधी तौ स्त्रङ्ख- पद्मकौ ।
नवरत्नवहा नद्यस्तथा वै काञ्चनस्त्रवाः ।।३७।।

सप्तधातुवहा नद्यो निधिभ्यां तु विनिर्गताः। सुधासिन्ध्वन्तगामिन्यस्ताः सर्वा नृपसत्तम।३८
सा देवी भुवनेशानी तद्वामाङ्के विराजते। सर्वेशत्वं महेशस्य यत्सङ्गादेव नाऽन्यथा।३९
चिन्तामणिगृहस्याऽस्य प्रमाणं शृणु भूमिप!। सहस्रयोजनायामं महान्तस्तत् प्रचक्षते।४०
तदुत्तरे महाशालाः पूर्वस्माद् द्विगुणाः स्मृता। अन्तरिक्षगतं त्वेतन्निराधारं विराजते।४१
संकोचश्च विकाशश्च जायतेऽस्य निरन्तरम्। पटवत् कार्यवशतः प्रलये सर्जने तथा।४२
शालानां चैव सर्वेषां सर्वकान्तिपरावधि। चिन्तामणिगृहं प्रोक्तं यत्र देवी महोमयी।४३
ये ये उपासकाः सन्ति प्रतिब्रह्माण्डवर्तिनः। देवेषु नागलोकेषु मनुष्येष्वितरेषु च।४४

श्रीदेव्यास्ते च सर्वेऽपि व्रजन्त्यत्रैव भूमिप!। देवीक्षेत्रे ये त्यजन्ति प्राणान् देव्यर्चने रताः।४५
ते सर्वे यान्ति तत्रैव यत्र देवी महोत्सव। घृतकुल्या दुग्धकुल्या दधिकुल्या मधुस्रवाः।४६
स्यन्दन्ति सरितः सर्वास्तथाऽमृतवहाः पराः। द्राक्षारसवहाः काश्चिज्जम्बूरसवहाः परा।४७
आम्रेक्षुरसवाहिन्यो नद्यस्तास्तु सहस्रशः। मनोरथफलावृक्षा वाप्यः कूपास्तथैव च।४८
यथेष्टहानफलदा न न्यूनं किञ्चिदस्ति हि। न रोगपलितं वाऽपि जरां वापि कदाचन।४६
न चिन्ता न च मात्सर्यं कामक्रोधादिकं तथा। सर्वे युवानः स-स्त्रीकाः सहस्रादित्यवर्चसः।५०
भजन्ति सततं देवी तत्र श्रीभुवनेश्वरीम्। केचित् सलोकतापन्नाःकेचित् समीप्यतां गताः।५१
सरूपतां गताः केचित् सार्ष्टितां च परे गताः। या यास्तु देवतास्तत्र प्रतिब्रह्माण्डवर्तिनाम्।५२
सनष्टयः स्थितास्तास्तु सेवन्ते जगदीश्वरीम्। सप्तकोटिमहामन्त्रामूर्तिमन्त उपासते।५३

महाविद्याश्च सकलाः साम्यावस्थात्मिकां शिवाम्।
कारणब्रह्मरूपां तां मायाशवलविग्रहाम् ।।५४।।
इत्थं राजन्! मया प्रोक्तं मणिद्वीपं महत्तरम्।
न सूर्य-चन्द्रौ नो विद्युत्कोटयोऽग्निस्तथैव च ।।५५।।

एतस्य भासा कोट्यंशकोट्यंशेनापि ते समाः। क्वचिद्विद्रुमसंकाशं क्वचिन्मरकतच्छवि।५६
विद्युद्भानुसमच्छायं मध्यसूर्यसमं क्वचित्। विद्युत्कोटिमहाधारा सारकान्तिततं क्वचित्।५७
क्वचित्सिन्दूरनीलेन्द्र-माणिक्यसदृशच्छवि। हीरसारमहागर्भधगद्धगितदिक्तटम् ।५८
कान्त्या दावानलसमं तप्तकाञ्चनसन्निभम्। क्वचिच्चन्द्रोपलोद्गारं सूर्योद्गारं च कुत्रचित्।५६
रत्नशृङ्गिसमायुक्तं रत्नप्राकारगोपुरम्। रत्नपत्रै रत्नफलैर्वृक्षैश्च परिमण्डितम्।६०
नृत्यन्मयूरसङ्घैश्च कपोतरणितोज्ज्वलम्। कोकिलाकाकलीलापैः शुकलापैश्च शोभितम्।६१
सुरम्यरमणीयाम्बु-लक्षावधिसरोवृतम्। तन्मध्यभागविलस - द्विकचद्रत्नपङ्कजैः।६२

सुगन्धिभिः समन्तात् तु वासितं शतयोजनम्।
मन्दमारुतसम्भिन्न - चलद्द्रुमसमाकुलम् ।।६३।।
चिन्तामणिसमूहानां ज्योतिषा वितताम्बरम्।
रत्नप्रभाभिरभितो धगद्धगितदिक्तटम् ।।६४।।

वृक्षव्रातमहागन्ध - वातव्रातसुपूरितम्। धूपधूपायितं राजन्! मणिदीपायुतोज्ज्वलम्।६५
मणिजालकसच्छिद्र-तरलोदरकान्तिभिः। दिङ्मोहजनकं चैतद्दर्पणोदरसंयुतम्।६६
ऐश्वर्यस्य समग्रस्य शृङ्गारस्याऽखिलस्य च। सर्वज्ञतायाः सर्वायास्तेजसश्चाऽखिलस्य च।६७
पराक्रमस्य सर्वस्य सर्वोत्तमगुणस्य च। सकलाया दयायाश्च समाप्तिरिह भूपते!।६८
राज्ञ आनन्दमारभ्य ब्रह्मलोकान्तभूमिषु। आनन्दा ये स्थिताः सर्वे तेऽत्रैवाऽन्तर्भवन्ति हि।६६
इति ते वर्णितं राजन्! मणिद्वीपं महत्तरम्। महादेव्याः परं स्थानं सर्वलोकोत्तमोत्तमम्।७०
एतस्य स्मरणात् सद्यः सर्वं पापं विनश्यति। प्राणोत्क्रमणसन्धौ तु स्मृत्वा तत्रैव गच्छति।७१
अध्यायपञ्चकं त्वेतत् पठेन्नित्यं समाहितः। भूतप्रेतपिशाचादि-बाधा तत्र भवेन्न हि।७२
नवीनगृहनिर्माणे वास्तुयागे तथैव च। पठितव्यं प्रयत्नेन कल्याणं तेन जायते।७३

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कन्धे द्वादशोऽध्यायः ।।१२।।

--०--

* त्रयोदशोऽध्यायः *

व्यास उवाच

इति ते कथितं भूप! यद्यत्पृष्टं त्वयाऽनघ!। नारायणेन यत्प्रोक्तं नारदाय महात्मने। १
श्रुत्वैतत् तु महादेव्या पुराणं परमाद्भुतम्। कृतकृत्यो भवेन्मर्त्यो देव्याः प्रियतमो हि सः। २
कुरु चाऽम्बामखं राजन् स्वपित्रुद्धरणाय वै। खिन्नोऽसि येन राजेन्द्र! पितुर्ज्ञात्वा तु दुर्गतिम्। ३
गृहाण त्वं महादेव्या मन्त्रं सर्वोत्तमोत्तमम्। यथाविधिविधानेन जन्मसाफल्यदायकम्। ४

सूत उवाच

तच्छ्रुत्वा नृपशार्दूलः प्रार्थयित्वा मुनीश्वरम्। तस्मादेव महामन्त्रं देवीप्रणवसंज्ञकम्। ५
दीक्षाविधिं विधानेन जग्राह नृपसत्तमः। तत आहूय धौम्यादीन् नवरात्रसमागमे। ६
अम्बायज्ञंचकाराऽऽशु वित्तशाठ्यविवर्जितः। ब्राह्मणैः पाठयामास पुराणं त्वेतदुत्तमम्। ७
श्रीदेव्यग्रेऽम्बिकाप्रीत्यै देवीभागवतं परम्। ब्राह्मणान् भोजयामासाऽप्यसङ्ख्यातान् सुवासिनीः। ८
कुमारीर्बटुकादींश्च दीनानाथांस्तथैव च। द्रव्यप्रदानैस्तान् सर्वान् सन्तोष्य वसुधाधिपः। ९
समाप्य यज्ञं संस्थाने संस्थितो यावदेव हि। तावदेव हि चाऽऽकाशान्नारदः समवातरत्। १०
रणयन् महतीं वीणां ज्वलदग्निशिखोपमः। ससम्भ्रमः समुत्थाय दृष्ट्वा तं नारदं मुनिम्। ११
आसनाद्युपचारैश्च पूजयामास भूमिपः। कृत्वा तु कुशलप्रश्नं पप्रच्छाऽऽगमकारणम्। १२

राजोवाच

कुत आगमनं साधो! ब्रूहि किं करवाणि ते?। सनाथोऽहं कृतार्थोऽहं त्वदागमनकारणात्। १३
इति राज्ञो वचः श्रुत्वा प्रोवाच मुनिसत्तमः। अद्याऽऽश्चर्यं मया दृष्टं देवलोके नृपोत्तम!। १४
तन्निवेदयितुं प्राप्तस्त्वत्सकाशे सुविस्मितः। पिता ते दुर्गतिं प्राप्तो निजकर्मविपर्ययात्। १५
स एवाऽयं दिव्यरूपवपुर्भूत्वाऽधुनैव हि। देव देवैः स्तुतः सम्यगप्सरोभिः समन्ततः। १६
विमानवरमारुह्य मणिद्वीपं गतोऽभवत्। देवीभागवतस्याऽस्यश्रवणोत्थफलेन च। १७
अम्बामखफलेनाऽपि पिता ते सुगतिं गतः। धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि जीवितं सफलं तव। १८
नरकादुधृतस्तातस्त्वया तु कुलभूषण!। देवलोके स्फीतकीर्तिस्तवाऽद्य विपुलाऽभवत्। १९

सूत उवाच

नारदोक्तं समाकर्ण्य प्रेमगद्गदितान्तरः। पपात पादाम्बुजयोर्व्यासस्याऽद्भुतकर्मणः। २०
तवाऽनुग्रहतो देव! कृतार्थोऽहं महामुने!। कि मया प्रतिकर्तव्यं १ नमस्कारादृते तव। २१
अनुग्राह्यः सदैवाऽहमेवमेव त्वया मुने!। इति राज्ञो वचः श्रुत्वाऽप्याशीर्भिरभिनन्द्य च। २२
उवाच वचनं श्लक्ष्णं भगवान् बादरायणः। राजन्! सर्वं परित्यज्य भज देवीपदाम्बुजम्। २३
देवीभागवतं चैव पठ नित्यं समाहितः। अम्बामखं सदा भक्त्या कुरु नित्यमतन्द्रितः। २४
अनायासेन तेन त्वं मोक्ष्यसे भवबन्धनात्। सन्त्यन्यानि पुराणानि हरिरुद्र-मुखानि च। २५
देवीभागवस्याऽस्य कलां नार्हति षोडशीम्। सारमेतत् पुराणानां वेदानां चैव सर्वशः। २६
मूलप्रकृतिरेवैषा यत्र तु प्रतिपाद्यते। समं तेन पुराणं स्यात् कथमन्यन्नृपोत्तम!?। २७
पाठे वेदसमं पुण्यं यस्य स्याज्जनमेजय!। पठितव्यं प्रयत्नेन तदेव विबुधोत्तमैः। २८
इत्युक्त्वा नृपवर्यं तं जगाम मुनिराट्ततः। जग्मुश्चैव यथास्थानं धौम्यादिमुनयोऽमलाः। २९
देवीभागवतस्यैव प्रशंसां चक्रुरुत्तमाम्। राजा शशास धरणीं ततः सन्तुष्टमानसः। ३०
देवीभागवतं चैव पठच्छृण्वन् निरन्तरम्॥३१॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे द्वादशस्कन्धे त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥

* चतुर्दशोऽध्यायः *

सूत उवाच

अर्धश्लोकात्मकं यत् तु देवीवक्त्राब्जनिर्गतम्। श्रीमद्भागवतं नाम वेदसिद्धान्तबोधकम्।१
उपदिष्टं विष्णवे यद्वटपत्रनिवासिने। शतकोटिप्रविस्तीर्णं तत्कृतं ब्रह्मणा पुरा।२
तत्सारमेकतः कृत्वा व्यासेन शुकहेतवे। अष्टादशसहस्रं तु द्वादशस्कन्धसंयुतम्।३
देवीभागवतं नाम पुराणं ग्रथितं पुरा। अद्यापि देवलोके तद्बहु विस्तीर्णमस्ति हि।४
नाऽनेन सदृशं पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्। प्रद पदेऽश्वमेधस्य फलमाप्नोति मानवः।५
पौराणिकं पूजयित्वा वस्त्राद्याभरणादिभिः। व्यासबुद्ध्या तन्मुखात् तु श्रुत्वैतत् समुपोषितः।६
लिखित्वा निजहस्तेन लेखकेनाऽथवा मुने!। प्रौष्ठपद्यां पौर्णमास्यां हेमसिंहसमन्वितम्।७
दद्यात्पौराणिकायाऽथ दक्षिणाञ्चपयस्विनीम्। सालङ्कृतां सवत्साञ्च कपिलां हेममालिनीम्।८
भोजयेद् ब्राह्मणानन्तेऽप्यध्यायपरिसम्मितान्। सुवासिनीस्तावतीश्च कुमारीवटुकैः सह।९
देवीबुद्ध्यापूजयेत्तान्वसनाभरणादिभिः। पायसान्नवरेणाऽपिगन्धस्त्रक्कुसुमादिभिः।१०
पुराणदानेनैतेन भूदानस्यफलं लभेत्। इहलोके सुखीभूत्वाऽप्यन्ते देवीपुरं व्रजेत्।११
नित्यं यः शृणुयाद्भक्त्या देवीभागवतं परम्। न तस्य दुर्लभं किञ्चित्कदाचित्कचिदस्ति हि।१२
अपुत्रो लभतेपुत्रान्धनार्थीधनमाप्नुयात्। विद्यार्थीप्राप्नुयाद्विद्यांकीर्तिमण्डितभूतलः।१३
वन्ध्या वा काकवन्ध्यावामृतवन्ध्या च याङ्गना। श्रवणादस्यतद्दोषान्निवर्तेतनसंशयः ।१४
यद्गेहे पुस्तकं चैतत्पूजितं यदि तिष्ठति। तद्गेहं न त्यजेन्नित्यं रमाचैव सरस्वती।१५
नेक्षन्ते तत्रवेतालडाकिनीराक्षसादयः। ज्वरितं तु नरंस्पृष्ट्वा पठेदेतत्समाहितः।१६
मण्डलान्नाशमाप्नोतिज्वरोदाहसमन्वितः। शतावृत्त्याऽस्यपठनात्क्षयरोगोविनश्यति।१७
प्रतिसन्ध्यंपठेद्यस्तुसन्ध्यांकृत्वासमाहितः। एकैकमस्यचाध्यायं सनरोज्ञानवान्भवेत्।१८
शकुनांश्चैव वीक्षेत कार्याकार्येषु चैव हि। तत्प्रकारः पुरस्तात्तकथितोऽस्तिमयामुने।१९
नवरात्रे पठेन्नित्यं शारदीयेऽतिभक्तितः। तस्याऽम्बिका तु सन्तुष्टा ददातीच्छाधिकं फलम्।२०
वैष्णवैश्चैव शैवैश्च रमोमाप्रीतये सदा। सौरैश्चगाणपत्यैश्च स्वेष्टशक्ते श्च तुष्टये।२१
पठितव्यं प्रयत्नेन नवरात्रचतुष्टये। वैदिकैर्निजगायत्रीप्रीतयेनित्यशो मुने!।२२
पठितव्यं प्रयत्नेनविरोधोनाऽत्रकस्यचित्। उपासनातुसर्वेषांशक्तियुक्ताऽस्तिसर्वदा ।२३
तच्छक्तेरेव तोषार्थं पठितव्यंसदा द्विजैः। स्त्रीशूद्रो न पठेदेतत्कदापि च विमोहितः।२४
शृणुयाद् द्विजवक्त्रात्तु नित्यमेवेति चस्थितिः। किम्पुनर्बहुनोक्तेन सारं वक्ष्यामि तत्त्वतः।२५
वेदसारमिदं पुण्यं पुराणं द्विजसत्तमाः!। वेदपाठसमं पाठे श्रवणे च तथैव हि।२६
सच्चिदानन्दरूपांतांगायत्रीप्रतिपादिताम्। नमामिह्रींमयीदेवींधियोयोनः प्रचोदयात्।२७
इति सूतवचः श्रुत्वानैमिषीयास्तपोधनाः। पूजयामासुरत्युच्चैः सूतंपौराणिकोत्तमम्।२८
प्रसन्नहृदयाः सर्वे देवीपादाम्बुजार्चकाः। निर्वृत्तिं परमां प्राप्ताः पुराणस्यप्रभावतः।२९
नमश्चक्रुः पुनः सूतंक्षमाप्य च मुहुर्मुहुः। संसारवारिधेस्तात! प्लवोऽस्माकंत्वमेवहि।३०
इति स मुनिवराणामग्रतः श्रावयित्वा सकलनिगमगुह्यं दौर्गमेतत्पुराणम्।
नतमथमुनिसङ्घं वर्धयित्वाऽऽशिषाम्बाचरणकमलभृङ्गो निर्जगामाऽथ सूतः।।३१।।

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणेऽष्टादशसाहस्र्यां संहितायांद्वादशस्कन्धे श्रीमद्देवीभागवतपुराणफलवर्णनंनाम चतुर्दशोऽध्यायः।।१४।।

।ॐ स्वस्ति। नमस्त्रिभुवनेश्यै श्रीमातृचरणार्पणमस्तु समाप्तमिदंश्रीमद्देवीभागवतंमहापुराणम्श्रीरस्तु

फिल्म प्रॉसेस, (फो॰ ३५-२०९९)
श्री अन्नपूर्णा ब्लाक वर्क्स, बाँसफाटक, वाराणसी